

सिंधी जैन ग्रन्थमाला

जैन आगमिक, दार्शनिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, कथा मक-इत्यादि विविधविषयगुम्फित
प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, प्राचीनगूर्जर, राजस्थानी आदि नाना भाषानिवद्ध
बहु उपयुक्त पुरातनवाक्य तथा नवीन संशोधना मक
साहित्यप्रकाशिनी जैन ग्रन्थावलि ।

कलकत्तानिवासी स्वर्गस्य श्रीमद् डालचन्दजी सिंधी की पुण्यस्मृतिनिमित्त
तद्युक्त श्रीमान् वहांदुरसिंहजी सिंधी कर्तृक
संस्थापित तथा प्रकाशित

सम्पादक तथा सञ्चालक

जिन विजय मुनि

[सम्मान्य समाज-माधवारकर प्राच्यविद्या संशोधन मन्दिर पूना, तथा गुजरात साहित्यसभा अहमदाबाद;
मूलपूर्वार्थ-गुजरात पुरातनत्वमन्दिर अहमदाबाद, जैनवाङ्मयाध्यापक विश्वभारती, शान्तिनिकेतन;
प्रकृतभाषादि-प्रधानाध्यापक भारतीय विद्या भवन बरार, तथा, जैन साहित्यसंशोधक ग्रन्थावलि-
पुरातनत्वमन्दिर ग्रन्थावलि-भारतीय विद्या ग्रन्थावलि-अन्तर्गत संस्कृत-पञ्चत-पारसी-
अपभ्रंश-प्राचीनगूर्जर-हिन्दी-आदि भाषामय अनेकानेक ग्रन्थ सरोधक-सम्पादक ।]

ग्रन्थांक ३

प्राप्तिस्थान

व्यवस्थापक - सिंधी जैन ग्रन्थमाला

अने कान्त विहार,
९, शान्तिनगर; पो० सापरमनी,
अहमदाबाद

} } { ४८, गरियाहाट रोड; पो० घालीगंज,
कलकत्ता

स्वायत्तम्]

संपादिका संरक्षित

[वि० सं० १९८९]

श्री मेरुतुङ्गाचार्यविरचित
प्रबन्धचिन्तामणि

संस्कृत ग्रन्थका
हिन्दी भाषान्तर

अनुवादक

पं० हजारीप्रसादजी द्विवेदी

[आचार्य-हिन्दी शिक्षार्पाठ, विश्वभारती, शान्तिनिकेतन]

सम्पादक

जिन विजय मुनि

[प्राकृत भाषादि प्रचानाच्यापक-भारतीय विद्या भवन, बम्बई;
सम्पादक-भारतीय विद्या-त्रैमासिक पत्रिका-इत्यादि]

प्रकाशन-कर्ता

संचालक-सिंघी जैन ग्रन्थमाला

अहमदाबाद-कलकत्ता

प्रबन्धचिन्तामणिका संकलना ।

इस ग्रन्थका संकलन और प्रकाशन निम्न प्रकारसे, ५ भागोंमें, पूर्ण होगा ।

(१) प्रथम भाग—

भिन्न भिन्न प्रतियोंके आधारपर संशोधित—विविध पाठान्तर समवेत—मूल ग्रन्थ; १ परिशिष्ट; मूलग्रन्थ और परिशिष्टमें आये हुये संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश भाषामय पद्योंकी अकारादिक्रमानुसार सूचि; पाठ संशोधनके लिये काममें लाई गई पुरातन प्रतियोंका सचित्र वर्णन । (छप गया)

(२) द्वितीय भाग—

प्रबन्धचिन्तामणिगत प्रबन्धोंके साथ सम्बन्ध और समानता रखनेवाले अनेकानेक पुरातन प्रबन्धोंका संग्रह; पद्यानुक्रमसूचि; विशेषनामानुक्रम; विस्तृत प्रस्तावना और प्रबन्ध संग्रहोंकी मूल प्रतियोंका सचित्र परिचय । (छप गया)

(३) तृतीय भाग—

प्रबन्ध चिन्तामणिके मूल संस्कृतका शुद्ध और सरल संपूर्ण हिन्दी भाषान्तर, विशिष्ट प्रास्ताविक वक्तव्यके साथ । (प्रस्तुत ग्रन्थ)

(४) चतुर्थ भाग—

पुरातन-प्रबन्ध-संग्रह नामक द्वितीय भागका संपूर्ण हिन्दी भाषान्तर । (छप रहा है)

(५) पञ्चम भाग—दो विभागोंमें

(१) पहले विभागमें—शिलाखेद, ताम्रपत्र, पुस्तक प्रशस्ति आदि जितने समकालीन साधन और ऐतिह्य प्रमाण उपलब्ध होते हैं उनका एकत्र संग्रह और तत्परिचायक उपयुक्त विस्तृत विवेचन; प्राकृतालीन और पद्यालीन अन्यान्य ग्रन्थोंमें उपलब्ध प्रमाणभूत प्रकरणों, उद्धरणों और अन्तरणोंका संग्रह; कुछ शिलाखेद, ताम्रपत्र और प्राचीन ताडपत्रोंके चित्र—इत्यादि ।

(२) दूसरे विभागमें—प्रबन्धचिन्तामणिप्रयित सब विषयोंका विवेचन करनेवाली विस्तृत प्रस्तावना—जिसमें तत्कालीन ऐतिहासिक, भौगोलिक, सामाजिक, धार्मिक और राजकीय परिस्थितिका संशोधन उद्देश्य और सिद्धान्तोंके किये जायगा । साथमें प्राचीन मन्दिर, मूर्तियां, पोथिया इत्यादिके अनेक चित्र भी दिये जायेंगे ।

समर्पण

*

परमधामप्रस्थित
पितृपादकी पुण्यप्रतिमाको
प्रणति पूर्वक



प्रबन्धचिन्तामणि विषयानुक्रम

प्रास्ताविक वक्तव्य

— प्रथम प्रकाश —

प्रारम्भिक मंगलादि कथन

- १ विक्रमार्क राजाका प्रबन्ध
- (१) महाकवि कालिदासकी उत्पत्तिका प्रबन्ध
- (२) सुवर्णपुरकी सिद्धिका प्रबन्ध
- (३) विक्रमादित्यके सत्त्वका प्रबन्ध
- (४) सत्त्वपरीक्षाका प्रबन्ध
- (५) विद्यासिद्धिका प्रबन्ध
- (६) निर्गर्वताका प्रबन्ध

२ सातवाहन राजाका प्रबन्ध

३ शीलव्रतके विषयमें भूपराजका प्रबन्ध

४ चनराजादि प्रबन्ध

चानदा वंशकी राज्यसंवत्सरावलि

— चौलुक्य वंशका प्रारंभ —

५ मूलराजका प्रबन्ध

छावाकी उत्पत्ति और विपत्तिका प्र०

मूलराजके वंशजोंकी राज्यसंवत्सरावलि

६ मुंजराज प्रबन्ध

— दूसरा प्रकाश —

७ भोज और भीमका प्रबन्ध

(१) भोजका विधानिच्छास

(२) भोजकी गुजरातके राजा भीमके प्रति प्रतिस्पर्धा

(३) राजा भोजकी गुजरातपर आक्रमण करनेकी इच्छा

(४) शिंगर कुञ्जचन्द्रकी सेनापति बनाना

(५) कुञ्जचन्द्रकी गुजरातपर चढ़ाई

(६) महाकवि मापका प्रबन्ध

(७) महाकवि धनपाठका प्रबन्ध

(८) सप्तदर्शनमें सप्तमार्गकी पृच्छा

(९) शीलव्रतके विषयमें भूपराजका प्रबन्ध

(१०)	मयूर, बाण और मानतुङ्गाचार्यका प्र०	५४
(११)	गूर्जर देशकी विदग्धताका प्र०	५६
(१२)	अनित्यता संबंधी ४ श्लोकोंका प्र०	५७
(१३)	भोजका भीमके पास ४ वस्तुयें माँगना	५९
(१४)	त्रिजैरे नांवूका प्र०	५८
(१५)	'एक अच्छा नहीं है' प्र०	५९
(१६)	इक्षुरसका प्रबन्ध	५९
(१७)	घुडसवारीका प्रबन्ध	५९
(१८)	गोपगृहिणीका प्रबन्ध	६०
(१९)	भोज और कर्णका संघर्ष	५९
(२०)	कर्णसे भीमका आधा भाग लेना	६३

— तीसरा प्रकाश —

८	सिद्धराजादि प्रबन्ध	६४-९१
(१)	मूलराज कुमारकी प्रजावत्सलताका प्रबन्ध	६४
(२)	कर्णराजा और मयण्डा देवीका वृत्तान्त	६५
(३)	सिद्धराज जयसिंहका जन्म	६६
(४)	सिद्धराजका राज्य-वर्णन — लीला वैद्यका प्रबन्ध	६७
(५)	उदयन मंत्रीका प्रबन्ध	५९
(६)	सान्तु मंत्रीका प्रबन्ध	६८
(७)	मयण्डा देवीका सोमेश्वरकी यात्रा करना	५९
(८)	सिद्धराजका मालवाके साथ संघर्ष	६९
(९)	सिद्धराज और हेमचन्द्राचार्यका मिलन	७१
(१०)	सिद्धराजका सिद्धपुरमें रुद्रमहालय बनवाना	७२
(११)	” पाटनमें सहस्रलिंग सरोवर बनवाना	७३
(१२)	” सौराष्ट्रके राजा खंगारकी विजय करना	७६
(१३)	” शशुंजयकी यात्रा करना	७७
(१४)	वादी श्रीदेवसूरिका चरित्र वर्णन	७८-८२
(१५)	पत्तनके बसाह आभङ्गका वृत्तान्त	८२
(१६)	सिद्धराजकी तत्त्वज्ञाना और सर्वदर्शन प्रति समान दृष्टि	८३
(१७)	सिद्धराजका प्रजाजनोंके साथ उदार व्यवहार	८४
(१८)	लक्षाधिपतिको क्रोडपति बना देना	५९
(१९)	सिद्धपुरके ब्राह्मणोंका कर माफ करना	८५
(२०)	बाराहीके पटेलोंको ब्रूचाका विरुद्ध देना	५९
(२१)	उष्टाके प्रार्थनासे वार्तालाप	५९

प्रबन्धचिन्तामणि विषयानुक्रम

(२२)	झालासामन्त मांगूकी शूरताका वर्णन	८६
(२३)	सिद्धराजकी सभामें म्लेच्छराजके दूतोंका आगमन	८७
(२४)	सिद्धराजका कोल्हापुरके राजाको चमत्कारके भ्रममें डालना	११
(२५)	कौतुकी सौलणकी वाक्चातुरी	११
(२६)	काशीराज जयचन्द्रकी सभामें सिद्धराजके दूतकी वाक्पटुता	८८
(२७)	मयणल्लादेवीके पिताकी मृत्युवार्ता	११
(२८)	पिताके पुण्यार्थ मयणल्लादेवीका सोमेश्वरकी यात्रा करना	८९
(२९)	सान्द्र मंत्रीकी बुद्धिमत्ताका एक प्रसंग	११
(३०)	सिद्धराजके एक सेवकके भाग्यका वृत्तान्त	११
(३१)	सिद्धराजकी स्तुतिके कुछ फुटकर पद्य	९०

— चतुर्थ प्रकाश —

९ कुमारपालादि प्रबन्ध	९३-१२१	
(१)	कुमारपालके पूर्वजादि	९३
(२)	सिद्धराजके भयसे कुमारपालका मारे मारे फिरना	९४
(३)	कुमारपालका राजगादीपर बैठना	९५
(४)	कुमारपालने राजद्रोहियोंका उच्छेद किया	११
(५)	कुमारपालका चाहमान राजा आनाकके साथ युद्ध	११
(६)	कुमारपालका उपकारियोंको सत्कृत करना	९६
(७)	गायक सोलाककी कलाप्रवीणता	९७
(८)	कौकणके राजा मल्लिकार्जुनका मंत्री आम्रड द्वारा उच्छेद	११
(९)	कुमारपालके साथ हेमचन्द्राचार्यके समागमका प्रसंग	९८
(१०)	हेमाचार्यके समागमसे कुमारपालके पुरोहितका विद्वेष	९९
(११)	कुमारपालका सोमेश्वर तीर्थके जीर्णोद्धारका प्रारंभ करवाना	१००
(१२)	उदयनमंत्रीसे हेमाचार्यका जीवनवृत्तान्त पूछना	१०१
(१३)	सोमेश्वरके उद्धारकी समाप्तिके निमित्त नियम लेना	१०२
(१४)	हेमचन्द्राचार्यका सोमेश्वरकी यात्रानिमित्त कुमारपालके साथ जाना	११
(१५)	हेमाचार्यका शिवकी स्तुति-पूजा करना	११
(१६)	कुमारपालकी तत्त्वज्ञाना और हेमाचार्यका शिवको प्रत्यक्ष करना	१०३
(१७)	कुमारपालका परमार्हत श्रावक बनना	१०४
(१८)	मंत्री उदयनका सौराष्ट्रके युद्धमें मारा जाना	११
(१९)	मंत्री बाहडका शत्रुंजयतीर्थोंद्वारा करवाना	१०५
(२०)	मंत्री आम्रमटका शकुनिकाविहारका उद्धार करवाना	१०६
(२१)	आम्रमटका शाकिनीप्रस्त होना	११

प्रबन्धचिन्तामणि

(२२)	कुमारपालका विद्याध्ययन करना	१०७
(२३)	बनारसके विश्वेश्वर कविका पत्तनमें आना	”
(२४)	हेमचन्द्रसूरिका समस्यापूरण करना	१०८
(२५)	आचार्य और मंत्रीके बीचमें ‘हरड्ड’ का वाग्बिलास	”
(२६)	उर्वशी शब्दकी व्युत्पत्ति	१०९
(२७)	सपादलक्षके राजाके नामका अर्थखंडन	१०२
(२८)	पं. उदयचन्द्रका प्रबन्ध	१०९
(२९)	कुमारपालका अभक्ष्य भक्षणके निमित्त प्रायश्चित्त करना	११०
(३०)	कुमारपालका अन्यान्य विहारोंका बनवाना	”
(३१)	यूकाविहारका प्रबन्ध	”
(३२)	सालिगधसहिकके उद्धारका प्रबन्ध	१११
(३३)	मठपति वृहस्पतिकी अविनय	”
(३४)	मंत्री आलिगकी स्पष्टनादिता	”
(३५)	पं० वामराशिकी क्षमाप्रदान करना	”
(३६)	सोरठके दो चारणोंकी कविताविषयक स्पर्धा	११२
(३७)	कुमारपालका तीर्थयात्रा करना	११३
(३८)	” स्वर्गसिद्धिकी इच्छा करना	”
(३९)	मंत्री चाहडका दानीपना	११४
(४०)	कुमारपाल द्वारा राणा लवणप्रसादका भविष्यकथन	११५
(४१)	हेमचन्द्रसूरिकी दूतारोग लगना	११६
(४२)	हेमचन्द्रसूरि और कुमारपालका स्वर्गवास	”
(४३)	अजयपालका राज्याभिषेक	११७
(४४)	” जैन मन्दिरोंका नाश करवाना	”
(४५)	” कपर्दी मंत्रीकी मरवा डालना	११८
(४६)	महाकवि रामचन्द्रकी हत्या	११९
(४७)	मंत्री आम्रभटका लडते हुए मरना	”
(४८)	अजयपालकी सन्तानोंका उल्लेख	”
(४९)	वीरधवलका प्रादुर्भाव	१२०

३० मंत्री वस्तुपाल-तेजपालका प्रबन्ध १२१-१३०

(१)	वस्तुपाल-तेजपालकी जन्ममार्ता	१२१
(२)	वीरधवलका तेजपालको अपना मंत्री बनाना	”
(३)	मंत्री तेजपालका धर्मभावसम्मुख होना	”
(४)	वस्तुपालकी तीर्थयात्राका वर्णन	१२३
(५)	मंत्री तेजपालका आबुपर मन्दिर बनवाना	१२५
(६)	वस्तुपालका शंखराजके साथ युद्ध करना	१२६

प्रबन्धचिन्तामणि विषयानुक्रम

(७)	मंत्रीका मुसलमान सुलतानके साथ मैत्रीका सम्बन्ध बान्धना	१२७
(८)	अनुपमाकी दानशीलता	१२८
(९)	वीरधवलकी रणशूरता	”
(१०)	वीरधवलकी मृत्यु	१२९
(११)	अनुपमाकी मृत्यु	”
(१२)	वस्तुपालकी मृत्यु	”

— पंचम प्रकाश —

११ प्रकीर्णक प्रबन्ध	१३१-१६२
(१)	विक्रमादित्यकी पात्र परीक्षा	१३१
(२)	मरे हुए नन्दका पुनर्जीवन	”
(३)	राजा शिलादित्य और मल्लवादी सूरिका प्रबन्ध	१३२
(४)	बौद्ध और जैनोमें वाद-विवाद	”
(५)	बलमी नगरीके विनाशकी कथा	१३३
(६)	श्री पुंजराजकी उत्पत्ति	१३४
(७)	श्रीमाताकी उत्पत्तिका वर्णन	१३५
(८)	चोड देशके गोवर्धन राजाकी न्यायप्रियताका उदाहरण	१३६
(९)	पुण्यसार राजाका वृत्तान्त	१३७
(१०)	कर्मसार राजाका प्रबन्ध	”
(११)	राजा लक्ष्मणसेन और उमापतिधरका प्रबन्ध	१३८
(१२)	काशीके जयचन्द्र राजाका प्रबन्ध	१३९
(१३)	जगद्देव क्षत्रियका प्रबन्ध	१४१
(१४)	पृथ्वीराजके तुंग झुभटका प्रबन्ध	१४३
(१५)	पृथ्वीराजका म्हेच्छोके हाथ मारा जाना	१४४
(१६)	कौंकण देशकी उत्पत्ति कैसे हुई	१४५
(१७)	ज्योतिषी वराहमिहिरका प्रबन्ध	”
(१८)	सिद्धयोगी नागार्जुनका वृत्तान्त	१४७
(१९)	स्तंभनक पार्श्वनाथका प्रादुर्भाव	१४८
(२०)	कवि भर्तृहरिकी उत्पत्तिका वर्णन	”
(२१)	याम्भट वैद्यका प्रबन्ध	१४९
(२२)	गिरनार तीर्थके निमित्त श्वेताम्बर-दिगम्बरमें लड़ाई	१५०
(२३)	सोमेश्वरका अपने भक्तोंकी परीक्षा करना	१५१
(२४)	पूर्वजन्मका किया भोगना	”
(२५)	जिन पूजाका माहात्म्य	१५२
	— ग्रन्थकारकी प्रशस्ति	१५३

परिशिष्ट—कुमारपालका अर्धिसाके साथ पाणिग्रहणका रूपकात्मक प्रबन्ध १५३-१५६

पुरातन प्रबन्ध संग्रह

प्रस्तुत प्रबन्धचिन्तामणिके भाषान्तरके साथ पुरातन-प्रबन्ध-संग्रहका भाषान्तर भी विद्वानोंको अवश्य अवलोकनीय है। इस संग्रहमें, ऐसे अनेक छोटे-छोटे और-और प्रबन्ध भी संगृहीत हैं जो प्र० चि० में बिल्कुल नहीं हैं; अथवा जिनमेंकी ऐतिहासिक बातें विशेष ज्ञातव्य हैं और जो प्र० चि० की पूरक हैं। खास करके वस्तुपाल-तेजपाल प्रबन्धके साथ सम्बन्ध रखनेवाली कितनीक बहुत ही महत्वकी ऐतिहासिक घटनाओंका इसमें सविशेष वर्णन किया गया है। धीरधवलकी मृत्युके बाद किस तरह बीसलदेवको राजगद्दी मिली और किस तरह मंत्री तेजपालने उसको गुजरातके साम्राज्यका स्वामी बनाया यह बात इसमें बड़ी स्पष्टता और विश्वसनीय ढंगसे बताई गई है। तदुपरान्त, नाडोलके राव लाखण, काशीके राजा जयचन्द्र, दिल्लीपति पृथ्वीराज चौहान आदिके विषयके भी कितने ही महत्वके उल्लेख इस संग्रहमें प्राप्त होते हैं।

इस तरह प्र० चि० वर्णित व्यक्तियोंके विषयकी कई नवीन बातें इस संग्रहके अवलोकनसे ज्ञात होगी। अतएव इतिहासके अभ्यासियोंके लिये यह संग्रह अवश्य अवलोकनीय है।

प्रास्ताविक वक्तव्य ।

श्री मेरुतुङ्गाचार्यरचित प्रबन्धचिन्तामणि नामक प्रसिद्ध ऐतिहासिक-प्रबन्ध-संग्रहात्मक संस्कृत ग्रन्थका यह हिन्दी भाषान्तर, आज सहर्ष हम हिन्दी भाषाभाषियोंकी सेवामें उपस्थित करते हैं ।

१. प्रबन्धचिन्तामणिका महत्त्व और प्रामाण्य ।

गुजरातके प्राचीन इतिहासकी विशिष्ट श्रुति और स्मृतिके आधारभूत जितने भी प्रबन्धात्मक और चरित्रात्मक ग्रन्थ-निबन्ध इत्यादि प्राकृत, संस्कृत या प्राचीन देशी भाषामें रचे हुए उपलब्ध होते हैं, उन सबमें इस प्रबन्धचिन्तामणिका स्थान सबसे विशिष्ट और अधिक महत्त्वका है ।

उस प्राचीन समयसे ही—जबसे इसकी रचना हुई है तबसे ही—इस ग्रन्थकी प्रतिष्ठा विद्वानोंमें खूब अच्छी तरह हो गई थी और जिनको कुछ ऐतिहासिक वृत्तान्तोंके जाननेकी उत्कण्ठा होती थी वे प्रायः इसका वाचन और अध्ययन किया करते थे । पिछले कई ग्रन्थकारोंने इस ग्रन्थका अपनी रचनाओंमें अच्छा उपयोग भी किया है, और आदरपूर्वक इसका उल्लेख भी किया है । इन ग्रन्थकारोंमें, सबसे पहले शायद जिनप्रभ सूरि हैं जो प्रायः इनके समकालीन थे । यद्यपि उन्होंने इनका कहीं नामोल्लेख नहीं किया है तथापि अपने महत्त्वके ग्रन्थ, विविधतीर्थरूपमें, जैसा कि हमने उसकी प्रस्तावनामें (पृ० ३, पंक्ति ४-५ पर) सूचित किया है, इस ग्रन्थका सर्व प्रथम उपयोग किया है । इसके बाद, इन जिनप्रभ सूरिके उत्तरावस्थाके समकालीन और इन्हींके पास कुछ गहन शास्त्रोंका अध्ययन भी करनेवाले मलबारी राजशेखर सूरिने, अपने प्रबन्धकोषमें, इस ग्रन्थका जैसा उपयोग किया है, उसका परिचय हमने, प्रबन्धकोषकी प्रस्तावनामें, ' प्रबन्ध-चिन्तामणि और प्रबन्धकोष ' इस शीर्षकके नीचे (पृ० २, कण्डिका ४ में) कराया है । राजशेखर सूरिने तो प्रकट रूपसे इस ग्रन्थका नामोल्लेख भी किया है । हेमचन्द्र सूरिके वृत्तान्तमें उन्होंने कहा है कि—' इन आचार्यके जीवनके सम्बन्धमें जो जो बातें प्रबन्धचिन्तामणि ग्रन्थमें लिखी गई हैं, उनका वर्णन हम यहां पर नहीं करना चाहते । ऐसा करना चर्चित-चर्वण मात्र होगा । '—इत्यादि । (देखो, प्र० को० पृ० ४७, प्रकरण ५७, पंक्ति १२-१६) । संवत् १४२२ में समाप्त होनेवाले जयसिंह-सूरि-रचित कुमारपालचरितमें, तथा संवत् १४६४ के पूर्वमें लिखे गये कुमारपालप्रबोधप्रबन्धमें (—यह ग्रन्थ शीघ्र ही प्रस्तुत ग्रन्थमालामें प्रकाशित होनेवाला है) ; और संवत् १४९२ में संकलित, जिनमण्डनोपाध्यायके कुमारपालप्रबन्धमें, इस ग्रन्थका खूब उपयोग किया गया है । सं० १४९७ में परिपूर्ण होनेवाले जिनहर्षगणीकृत वस्तुपालचरित्रमें भी इसका यथेष्ट आधार लिया गया है । सं० १५०० के बाद, प्रायः १०-१५ वर्षके बीचमें जिसकी रचना हुई जान पड़ती है, उस उपदेशतरंगिणी नामक ग्रन्थमें तो इस ग्रन्थसे प्रायः संकडों ही पद्य उद्धृत किये गये हैं और इसके अने - प्रबन्धोंका बहुत कुछ सार लिया गया है । एक जगह तो ग्रन्थकारने इसका प्रकट नामनिर्देश भी कर दिया है और लिख दिया है कि—' सर्वेऽपि प्रबन्धाः प्रबन्धचिन्तामणितो ज्ञेयाः । ' (बनारस आदित्य, पृ० ५८) । इसके बादके श्राद्धविधि, उपदेशसप्ततिका आदि १६ वीं शताब्दीमें बने हुए ग्रन्थोंमें, उनके कर्ताओंने भी अपने अपने ग्रन्थोंमें इस ग्रन्थका जहां-तहां आधार लिया है और इसमें बर्णित ऐतिहासिक उल्लेखोंका सार उद्धृत किया है । १७ वीं सदीमें, अकबरके समयमें होनेवाले हीरगिजय सूरिके प्रसिद्ध सश्याठी और अनुगामी विद्वान् महोपाध्याय धर्मतामर गणीने अपनी सुप्रचलित तपागच्छपट्टावलि और अन्य ग्रन्थोंमें भी

इस ग्रन्थके कई उल्लेखोंका आधार लिया है। इसी तरह १८ वीं शताब्दीमें बने हुए वस्तुपालरास, कुमारपाल-रास आदि भाषा ग्रन्थोंके रचयिताओंने भी अपनी अपनी कृतियोंमें इस ग्रन्थका बहुत कुछ उपयोग किया है, जिनका विशेष वर्णन करना आवश्यक नहीं है।

इस कथनसे ज्ञात होता है कि उस पुरातन समयसे ही मेरुतुङ्ग सूरिके इस महत्त्वके ग्रन्थकी अच्छी रच्यति और उपयोगिता स्थापित हो गई थी।

२. प्रबन्धचिन्तामणिकी वर्तमान नवीन युगमें प्रसिद्धि और उपयोगिता।

प्रवर्तमान नवीन कालके प्रारंभमें, सबसे पहले इंग्रेज विद्वान् श्री एलेक्जेंडर किन्लॉक फॉर्ब्स साहबको इसका परिचय हुआ और उन्होंने गुजरातके इतिहास विषयकी अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक 'रासमाला' में इसका सर्वप्रथम उपयोग किया। अपने ग्रन्थमें लिखे गये गुजरातके प्राचीन इतिहासका मुख्य ढांचा उन्होंने इसी ग्रन्थ परसे तैयार किया। वे अपने ग्रन्थमें, इस ग्रन्थका पद पद पर उल्लेख करते हैं और इसमें लिखी गई बातोंका संपूर्ण उपयोग करते हैं। उनके पीछे, भारतीय पुरातत्वके प्रखर पण्डित, जर्मन विद्वान्, डॉ० न्युहलरने इस ग्रन्थका खूब बारीकीके साथ अध्ययन किया और इसमें वर्णित ऐतिहासिक तथ्योंका सविशेष ऊहापोह किया। 'इन्डियन ऐन्टीकरी' नामक भारतीय-विद्या विषयक सुप्रसिद्ध पत्रिकाके सन् १८७७ के जुलाई मासके अंकमें उन्होंने 'अनहिलवाडके चालुक्योंके ११ दानपत्र' (Eleven land-grants of the Chalukyas of Anhilvad) इस शीर्षक नीचे, अणहिलपुरके राजकीय इतिहास पर प्रकाश डालनेवाला एक महत्त्वका लेख लिखा जिसमें इस प्रबन्धचिन्तामणि कथित बातोंका अच्छा अवलोकन किया। फिर उसके बादमें, डॉ० न्युहलरने, जर्मन भाषामें *Über das Leben des Jaina Monches Hemacandra* इस नामसे, आचार्य हेमचन्द्रका सविस्तर जीवनचरित्र लिखा, जिसमें उन्होंने प्रस्तुत प्रबन्धचिन्तामणिका पूरा पूरा उपयोग किया*। इसके बाद, बंबई सरकारने, बॉम्बे गेलेटियरके लिये जब गुजरातका प्राचीन इतिहास तैयार करवाया, तो उसके संकलनकर्ता प्रसिद्ध गुजराती पुरातत्त्वज्ञ डॉ० भगवानलाल इन्द्रजीने, इस ग्रन्थका बहुत सूक्ष्मताके साथ सागोपाग निरीक्षण किया और गुजरातके राजकीय इतिहासके साथ संबन्ध रखने वाली प्रायः सारी ऐतिहासिक उक्तियों और श्रुतियोंका जो जो इसमें निर्देश मिलता है उन सबका ठीक ठीक पर्यालोचन कर, यथायोग्य उनका उपयोग किया। तदुपरान्त, गुजरातके इतिहास विषयक भिन्न भिन्न प्रकारके पुस्तकों और निबन्धोंके रचयिता एतद्देशीय और विदेशीय सैंकड़ों ही विद्वानोंने जहाँ-तहाँ इस ग्रन्थका अनेकदाः आधार लिया है और उल्लेख किया है।

इस ग्रन्थकी ऐसी सार्वजनिक उपयोगिताको लक्ष्य कर, रासमालाके कर्ता विद्वान् फॉर्ब्स साहबकी, और तदनुसार डॉ० न्युहलरकी भी, यह खास इच्छा रही कि विस्तृत टीका-टिप्पणियोंके साथ इस ग्रन्थका संपूर्ण इंग्रेजी अनुवाद किया जाय। डॉ० न्युहलरकी इस इच्छाको, कथासरित्सागर आदि प्रसिद्ध संस्कृत कथाग्रन्थोंके सिद्धहस्त इंग्रेजी अनुवादक, इंग्रेज विद्वान्, श्रीउत्त सी. एच्. टॉनी, एम्. ए. ने पूरा किया। उन्होंने इस ग्रन्थका सुन्दर और संपूर्ण इंग्रेजी अनुवाद किया जिसको कलकत्ताकी एसियाटिक सोसाइटीने सन् १९०१ में छपा कर प्रकाशित किया। डॉ० न्युहलरकी उत्कण्ठा थी कि वे टॉनीके इस भाषान्तरके साथ, ऐतिहासिक और भौगोलिक विषयोंकी परिचायक ऐसी अपनी टीका-टिप्पणियाँ दे कर, इस ग्रन्थकी उपादेयताका महत्त्व बढ़ायेंगे; पर दुर्दैवसे इस कार्यके पूर्ण होनेके पहले ही उनका स्वर्गवास हो गया और उनकी वह इच्छा यो ही अपूर्ण रह गई। विद्वान् टॉनीने अपने इंग्रेजी अनुवादकी प्रस्तावनाके प्रारंभमें, जो इस बारेमें कुछ लिखा है, उसका भावार्थ यह है—

* डॉ० न्युहलरका यह बड़े महत्त्वका ग्रन्थ है। इसका इंग्रेजी अनुवाद *The Life of Hemacandracharya* इस नामसे, हमने अपने सहकाय मित्र डॉ० मणिलाल पटेल Ph. D. (गारुडगं-जर्मनी) द्वारा करवा कर, इसी सिंघी जैन ग्रन्थ-मालाके १२ वें नंबरमें प्रकाशित किया है। इंग्रेजी शता विद्वानोंके लिखे यह ग्रन्थ अवश्य पठनीय है।

“ राजतरंगिणीके अकेले अपवादको बाद किया जाय तो, संस्कृत साहित्यमें ऐतिहासिक कहलाने लायक एक भी कोई ग्रन्थ नहीं है—ऐसा जो आक्षेप नारांवार किया जाता है, वह इस प्रबन्धचिन्तामणि जैसे ग्रन्थके अस्तित्वसे, किसी अंशमें भौटा पाया जा सकता है। इस आक्षेपको निवार सिद्ध करना यह स्वर्गगत हो प्राय प्रोफेसर व्युहलरकी जीवन भरकी अभिलाषा थी। ग्रन्डरिस्स डेर इन्डो-आरिसेन् फिडोलोगी (Grundriss der Indo-Arischen Philologie) नामक ग्रन्थ-मालाके लिये, डॉ० न्युहलरकी रसप्रद जीवन कथाका आलेखन करनेवाले प्रो० जोलीने (Jolly), ई० स० १८७७ में श्रीयुत न्योल्डेके (Noldeke) नामक विद्वान् पर लिखे हुए न्युहलरके एक पत्रमेंसे अवतरण दिया है, जिसमें उन्होंने लिखा था कि— ‘ भारतवासियोंके पास कुछ भी ऐतिहासिक साहित्य नहीं है इस प्रकारकी मान्यता रखनेमें आपलोग, वर्तमान समयसे कुछ थोड़ेसे पिछड़े हुए मालूम दे रहे हैं। पिछले बीस वर्षोंमें ठीक ठीक विस्तृत ऐसे पाँच ऐतिहासिक ग्रन्थ मिल आये हैं, जो उनमें वर्णित घटनाओंके समकालीन ग्रन्थकारोंके बनाये हुए हैं। इनमेंसे ४ तो, जिनके नाम विक्रमांकचरित, गउडवहो, पृथ्वीराज-दिग्विजय और कीर्तिकौमुदी हैं, खुद मैंने खोज निकाले हैं। और एक डक्षनसे भी अधिक अन्य और ग्रन्थ खोज निकालनेकी तलाशमें हूँ। ’ यह प्रोफेसर न्युहलर-हीके श्रमका फल है कि जो इतने सारे ऐतिहासिक वृत्तांत, इतने ऐतिहासिक काव्य और इतनी ऐतिहासिक कथायें संपादित हो सकीं। इस ग्रन्थके इंग्रेजी अनुवादके करनेका काम जो मैंने हाथमें लिया वह भी डॉ० न्युहलर-हीकी सूचनाका परिणाम है; और जो कोई पाठक मेरी टिप्पणियोंके पढ़नेका कष्ट उठायेगा उसे स्पष्ट ज्ञात हो जायगा, कि उन्हींके उत्तेजन और साहाय्यके बिना मेरा यह काम अपने अन्तको न प्राप्त कर सकता। इस अनुवादके साथ ऐतिहासिक और भौगोलिक विषयोंकी पूर्ति करनेवाली टिप्पणियाँ लिखनेका उनका खास इरादा था। अगर यह बन पाता तो इस ग्रन्थकी उपयोगितामें खूब महत्त्वकी वृद्धि हो पाती; पर इस विचारके, कार्यरूपमें परिणत होनेके पहले ही, दुर्दैवसे उनका अवसान हो गया और अब यह बात ‘ मनकी बात मनमें ही रही ’ जैसी कहावतके योग्य हो गई। भारतके इतिहास विषयक साहित्यके बारेमें और उसमें भी खास करके गुजरातके इतिहासके साथ संबद्ध साहित्यके संबन्धमें, हरएक इंग्रेज विद्यार्थीको एक और नामका स्मरण हो जाता चाहिए और वह नाम है रासमालाके कर्ता श्री एलेक्जेंडर किन्लॉक फॉर्ब्सका। मि. ए. जे. नैर्न, बी. सी. एस. (Mr. A. J. Nairne, B. C. S.) ने फॉर्बस् साहबका जीवनचरित लिखा है, जो कर्नल वॉट्सन् द्वारा संपादित और सन् १८७८ में प्रकाशित, रासमालाकी आहृत्तिके प्रारम्भमें मुद्रित है। श्री फॉर्बस् साहब एक ऐसे इन्डियन सिविलियन थे, जिनको अपने मायका पासा जिन लोगोंके साथ डाला गया हो उन लोगोंके इतिहास, वाङ्मय और पुरातत्त्वके विषयमें पूरा रस रहता हो। इस विषयकी उनकी, उत्कण्ठा और सत्यनिष्ठापूर्ण अध्ययनशीलताकी प्रतीति, रासमालाके प्रत्येक पृष्ठ पर होती रहती है। जिन अनेक मूलभूत आधारोंके ऊपरसे उन्होंने अपना ग्रन्थ तैयार किया, उनमेंका यह एक प्रबन्धचिन्तामणि है। इस ऐतिहासिक ग्रन्थका उन्होंने इतना तो संपूर्ण उपयोग किया है कि जिसे देर कर मेरे मनमें, अपने इस अनुवादके करते समय, चारंवार यह उठ आता था कि मैं निरर्थक ही यह श्रम कर रहा हूँ। किन्तु प्रो० न्युहलरने मुझसे कहा था कि इस ग्रन्थका संपूर्ण इंग्रेजी अनुवाद हो ऐसी इच्छा स्वयं फॉर्ब्सने अनेक बार प्रदर्शित की थी*। और यही मेरे इस परिश्रमकी उपयोगिताका आधार है। लेकिन, मैं अपने मनको इस तरह भी प्रोत्साहित रखना चाहता हूँ कि—मध्यकालीन इस जैन यतिने लिख रखी हुई इन श्रुतपरंपराओंमें, जिनका विवरण या संक्षिप्तकरण करनेसे इनके मूलमें रही हुई आधी मोहकता नष्ट हो जाती है, न केवल भारतके इतिहासके अम्ब्यासियों-ही-को, किन्तु तदुपरान्त लोककथाओंके ज्ञाताओंको और मानव-नीति-शास्त्रके विद्वानोंको भी, रस प्राप्त होगा। ग्रन्थकार स्वयं भी कहता है कि—इस रचनाके करनेमें मेरा उद्देश्य जनमन रंजन करनेका है। ” इत्यादि।

*

३. प्रबन्धचिन्तामणिके मूल संस्कृत ग्रन्थका प्रथम प्रकाशन और गुजराती भाषान्तर ।

जैसा कि हमने, अपनी मूल आहृत्तिके प्रारम्भमें दिये हुए ‘ किञ्चित् प्रास्ताविक ’ शीर्षक वक्तव्यमें लिखा है, इस ग्रन्थके संस्कृत मूलका प्रथम प्रकाशन, गुजरातके शाही रामचन्द्र दीनानाथ नामक विद्वान्ने, संवत्

* फॉर्बस् साहबकी ऐसी इच्छा ही नहीं थी, बल्कि उन्होंने तो इसका पूरा इंग्रेजी अनुवाद खुद ही सबसे पहले कर लिया था और फिर उसका उपयोग रासमालामें किया था; ऐसा बम्बईकी फॉर्बस् समाज जो उनका ग्रन्थसंग्रह विद्यमान है उससे मालूम होता है। बम्बईके इस संग्रहमें फॉर्बस् साहबकी हाथकी लिखी हुई एक नोटबुक है जिसमें इस ग्रन्थके ३, ४ और ५ वें प्रकाशका इंग्रेजी भाषान्तर लिखा हुआ है। पहले दो प्रकाशकोंका भाषान्तर, शायद किसी दूसरी नोटबुकमें लिखा हुआ होगा जो अब उपलब्ध नहीं है। ही डीनीको इसकी खबर न होनेसे, शायद उन्होंने वैसा लिखा होगा। अपना वह भाषान्तर वैसा पूर्ण और शुद्ध न होगा जिससे फॉर्बस्को संतोष रहा हो, और इष्टीलिये उन्होंने इसका एक उत्तम भाषान्तर, योग्य संस्कृत पण्डितके हाथसे हो, ऐसी इच्छा डॉ० न्युहलरके आगे प्रदर्शित की हो।

१९४४ में, बम्बईसे किया था। उसीके साथ उन्होंने, इसका गुजराती भाषामें अनुवाद भी छपवा कर प्रकाशित किया था। शास्त्रीजीका यह अनुवाद — जिसे अनुवाद नहीं लेकिन एक तरहका विवरण कहना चाहिए — पुराने ढंगसे और पुरानी शैलीकी भाषामें किया गया था और इसमें उन्होंने अपनी तरफसे भी बहुतसे वाक्य और विचार, जो मूलमें सर्वथा नहीं थे, खूब फैला फैला कर लिख दिये थे। परन्तु साथमें कोई ऐतिहासिक पर्यालोचनकी दृष्टिसे उपयुक्त ऐसा कुछ भी नहीं लिखा गया था। अनुवादमें — खास करके प्राकृत गाथाओं और सुभाषित रूपसे उद्धृत पद्योंके भाषान्तरमें — तो अनेकानेक बड़ी बड़ी भद्दी भूँसे भी की गई हैं, जिनका यहाँ पर दिग्दर्शन कराना निरर्थक है। यहाँ पर इतना यह अवश्य कहना चाहिये कि इस उपयोगी ग्रन्थको सर्वसाधारणके लिये सुलभ बनानेका श्रेयस्कर कार्य, सबसे प्रथम उन्हीं शास्त्रीजीने किया और तदर्थ उनकी स्मृति सदैव आदरकी दृष्टिसे की जानी चाहिए।

जैसा कि, प्रथम भागरूप मूल ग्रन्थकी प्रस्तावनामें सूचित किया है, गुजरातके इतिहासकी दृष्टिसे इस ग्रन्थका महत्त्व लक्ष्यमें रख कर, हमने अहमदाबादके गुजरात पुरातत्त्व मन्दिरकी ओरसे — जिसके कि हम सर्व प्रधान संचालक और नियामक थे — इसकी एक सर्वांगपूर्ण सुविस्तृत आवृत्ति, विशुद्ध मूल और उत्तम गुजराती भाषान्तर आदिके साथ, प्रकट करनेका प्रयत्न करना शुरू किया था। यथानुक्रम, मूलका कुछ भाग संशोधित और संपादित कर, बम्बईके सुप्रसिद्ध कर्णाटक प्रेसमें छपनेको भी भेज दिया था और उसमें प्रायः प्रथमके दो प्रकाश जितना भाग छप भी चुका था। उसी बीचमें हमारा युरोप जाना हुआ और वह कार्य कुछ समयके लिये स्थगित रहा। करीब दो वर्षके बाद, वहाँसे हम जब वापस आये तो, देशमें राष्ट्रीय आन्दोलन बड़े जोरोंसे शुरू हुआ और हम भी उसमें संलग्न हो गये। सन् १९३० के अप्रैलमें, धारासणाके विख्यात नमक-सत्याग्रहमें सम्मिलित होनेके लिये, अहमदाबादसे ६०—७० जितने सत्याग्रहियोंकी एक जबरदस्त टोली छे कर हमने प्रस्थान किया। पर अहमदाबादसे दूरे ही स्टेशन पर, सरकारने हमको गिरफ्तार कर लिया और वहाँ जंगल-हीमें मॅजिस्ट्रेटने हमको छ महीनेकी सजा दे कर, पहले बम्बई और फिर वहाँसे नासिक जेलमें भेज दिया।

धर पाँडेसे, गुजरात पुरातत्त्व मन्दिरको भी — गुजरात विद्यापीठके साथ — सरकारने कब्जे कर, उसके विशाल ग्रन्थसमूहको जब्त कर लिया और उसकी वह सब स्थिति छिन-भिन्न हो गई। इस तरह प्रबन्धचिन्तामणिके विस्तृत प्रकाशनका जो आयोजन हमने गुजरात पुरातत्त्व मन्दिरकी ओरसे किया था, वह एक प्रकारसे उन्मूलित हो गया। इस परिस्थितिको जान कर, बम्बईकी 'फॉर्ब्स गुजराती साहित्य सभा'ने, जिसका भी प्रधान प्येय गुजरातकी प्राचीन संस्कृतिके विविध साधनोंको प्रकाशमें लानेका है, इस ग्रन्थके प्रकाशनका कार्य हाथमें लिया और हमारे विद्वान् मित्र एवं गुजरातके इतिहासके एक विशिष्ट अभ्यासी, साक्षर श्रीदुर्गाशंकर केवलराम शास्त्रीको वह कार्य सौंपा गया। यह जान कर हमने शास्त्रीजीको हमारे मूलके छपे हुए उक्त उन दो प्रकाशोंके एडवन्स फार्म भी उनके उपयोगके लिये भेज दिये। शास्त्रीजीने यथाशक्ति परिश्रम कर, पहले ग्रन्थका मूल भाग तैयार कर उसे प्रकट कराया और फिर उसका शुद्ध गुजराती भाषान्तर, कितनीक ऐतिहासिक टीका-टिप्पणियोंके साथ संपादित कर, उक्त समाकी ही ओरसे प्रकाशित कराया।

४. प्रबन्धचिन्तामणिका हमारा प्रकाशन।

जेठनिमासे मुक्त होने पर कैसे दानवीर बाबू श्री बहादुरसिंहजीकी प्रियकर प्रेरणासे हमारा जाना शान्ति-निकेतन — निम्बारतोमें हुआ और वहाँ पर रहते हुए कैसे इस 'सिंधी जैन ग्रन्थमाला' के प्रकाशनका कार्य प्रारंभ किया गया — इत्यादि बातें हमने, संक्षेपमें, इसके पहले भागमें उल्लिखित कर दी हैं जिनको यहाँ पर दृष्टानेकी आवश्यकता नहीं है।

उक्त रीतिसे फॉर्ब्स समाजी ओरसे इस ग्रन्थका, गुजराती भाषान्तर समेत, प्रकाशन होना चाह था, तब भी हमारे मनमें इसके प्रकाशनकी वह जो पूर्व कल्पना थी और इसके लिये जो साधन-सामग्री हमने वीसों वर्षोंसे इकट्ठी करनी शुरू की थी, उसका खयाल कर, हमने अपने उसी दंगसे, इस ग्रन्थका पुनः संपादन करना प्रारम्भ किया। और चूंकि इसका गुजराती भाषान्तर, हमारे साक्षरमित्र श्री दुर्गाशंकर शास्त्री कर चुके हैं, इसलिये हमने इसका हिन्दी भाषान्तर प्रकट करनेका मनोरथ किया। हिन्दी भाषा, यों भी सबसे अधिक व्यापक भाषा है और फिर अब तो यह राष्ट्रकी सर्व प्रधान भाषा बन रही है, इसलिये सिंधी जैन ग्रन्थमालाके कार्यका लक्ष्य हिन्दीकी ओर ही अधिक रखा गया है।

इंग्रेजी और गुजरातीमें एकसे अधिक भाषान्तर होने पर भी हिन्दीमें इसका कोई भाषान्तर आज तक नहीं हुआ था; और इसकी कमी कई हिन्दी भाषाभाषी विद्वानोंको बहुत असेसे खटक भी रही थी। हिन्दीके स्वर्गवासी प्रसिद्ध पण्डित और पुरातत्त्वज्ञ विद्वान्, चन्द्रधर शर्मा गुलेरीने बहुत वर्ष पहले हमसे अनुरोध किया था, और शायद नागरीप्रचारिणी पत्रिकाके एक लेखमें उन्होंने लिखा भी था, कि इस ग्रन्थका हिन्दी अनुवाद होना आवश्यक है। आशा है गुलेरीजीकी स्वर्गस्थित आत्मा आज इसे देख कर प्रसन्न होगी।

*

५. प्रस्तुत हिन्दी भाषान्तर।

पाठकोंके हाथमें जो हिन्दी भाषान्तर उपस्थित किया जा रहा है, इसका प्राथमिक कच्चा खर्चा, जब हम शान्तिनिकेतनमें थे तब (सन् १९३२ में), वहाँके हिन्दी शिक्षार्थीके विद्वान् आचार्य और हमारे सहृदय मित्र पं० श्रीहजारी प्रसादजी द्विवेदीने किया था, जिसको हमने अपने दंगसे यथेष्ट रूपमें संशोधित-परिवर्तित कर वर्तमान रूप दिया है। इससे संभव है कि विज्ञ पाठकोंको इसमें कहीं कहीं भाषाविषयक शैलीका कुछ सूक्ष्म भिन्नत्व माद्रम दे। हमारा प्रयत्न इस बातकी ओर रहा है कि भाषा जहाँ तक हो, सरल और सबको सुबोध हो; और जिनकी मातृभाषा खास हिन्दी न हो उनको भी इसके समक्षमें कोई कठिनाई न हो। इसलिये हमने इसमें ऐसे शब्दोंका बहुत ही कम प्रयोग किया है कि जो खास हिन्दीका विशेष परिचय न रखनेवाले—राज्यस्थानी या गुजराती भाषाभाषी—जनोंको बिल्कुल अपरिचित माद्रम दे।

इस ग्रन्थके संस्कृत मूलकी लेखशैली कुछ संकीर्ण और समास-बहुल है। वाक्य बड़े लंबे लंबे और कुछ जटिलसे हैं। क्रियापदोंका व्यवहार इसमें बहुत कम किया गया है। रचना कहीं तो शिथिलसा और कहीं निविड बन्धवादी है। इसलिये भाषान्तरमें भी हमें कहीं कहीं, मूलके अनुसार, कुछ लंबे वाक्य रखने पड़े हैं। भाषान्तरको हमने प्रायः संपूर्ण मूलानुसारी बनानेका लक्ष्य रखा है। मूलका कोई एक शब्द भी प्रायः छोड़ा नहीं गया है और ना-ही विशेष स्पष्टीकरणकी दृष्टिसे कोई अधिक शब्द या वाक्यांश बढ़ाया गया है। जहाँ कहीं मूलके संक्षिप्त सूचन या अप्याहृत कथनमें, पाठकोंके स्पष्टावबोधके लिये, किसी अधिक शब्द या वाक्यांशके पूर्तिकी विशेष आवश्यकता माद्रम दी, वहाँ उसे [] ऐसे पूरक ब्रैकेटमें समाविष्ट किया गया है। किसी खास शब्दका पर्याय वाचक दूसरा विशेष परिचित शब्द या उसका अर्थ बतलानेकी कहीं जरूरत दिखाई दी उसे () ऐसे गोल ब्रैकेटमें दिया गया है। प्रकरणोंकी कण्ठिकाओंके प्रारंभमें जो '१) २) ३)' ऐसे इकट्ठे गोल ब्रैकेटके साथ क्रमांक दिये गये हैं वे, हमारी मूल ग्रन्थकी आवृत्तियोंमें, इस ग्रन्थका अर्थानुसंधान बतलानेवाली कण्ठिकाओंके जो क्रमांक हमने दिये हैं, उसीके बोधक हैं। मूलमें जो संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश भाषाके अनेकानेक प्राचीन पद्य उद्धृत किये गये हैं उनको हमने दो भागोंमें विभक्त किया है। एक वे जो प्रायः सब प्रतियोंमें समान संख्यामें मिलते हैं और दूसरे वे जो खास कोई एकाध ही प्रतिमें

मिलते हैं। इस पिछले प्रकारके पद्योंको हमने पीछेसे लिखे गये अर्थात् प्रक्षिप्त माना है; और बाकीको मौलिक। इन दोनों तरहके पद्योंके लिये हमने दो प्रकारके क्रमांक दिये हैं। जो मौलिक हैं वे '१. २. ३.' इस प्रकारके चाट्ट अंकोंसे सूचित किये गये हैं और जो प्रक्षिप्त हैं वे '[१]-[२]-[३]'

इस प्रकार चोकौनी डबल ब्रैकेटवाले अंकोंसे बताये गये हैं। पद्योंकी तरह, मूल ग्रन्थमें, कुछ गद्य प्रकरण-कण्डिकायें भी प्रक्षिप्त हैं, जिनको हमने अपनी उस मूलावृत्तिमें तो जुदा तरहके टाईपोंमें और

{ } ऐसे अथवा [] ऐसे ब्रैकेटोंके बीचमें मुद्रित कीं हैं। यहाँ, इस भाषान्तरमें वे कण्डिकायें जुदा टाईपोंमें न छाप कर, शीफ उनके ऊपर, ब्लेक टाईपमें () ऐसे गोठ ब्रैकेटमें, अथवा चाट्ट टाईपमें [] ऐसे चोकौनी ब्रैकेटमें, उसकी ज्ञापक पंक्तियाँ लिख कर, उल्लिखित कर दीं हैं।

(—देखो, पृष्ठ १६, २०, ४८, ४९ इत्यादि।)

इस ग्रन्थमें जहाँ-यहाँ, जो प्रसङ्गोचित पद्य उद्धृत किये गये हैं उनमेंसे कुछ तो ऐतिहासिक घटना बताने-वाले हैं और कुछ सुभाषित स्वरूप हैं। इनमेंके कुछ पद्य द्विअर्थी अर्थात् श्लेषार्थक हैं जिनका स्वारस्य संस्कृत या प्राकृत भाषा-हीमें ठीक आस्वादित हो सकता है। हिन्दीमें उसका अर्थ ठीक अनुदित नहीं हो पाता। ऐसे पद्योंके अर्थके विषयमें जहाँ तक हो सका, तदन्तर्गत मुख्य भावार्थ बतलानेका ही प्रयत्न किया गया है। कोई कोई पद्य ऐसे भी दुरवबोध माद्धम देते हैं जिनका तात्पर्य ठीक ठीक समझमें नहीं आता। ऐसे स्थानोंमें जो अर्थ दिये गये हैं वे शंकित ही समझे जायँ—जैसा कि पृ. ७७ आदि पर सूचित किया गया है।

कहीं कहीं गद्य कथनमें भी ऐसी दुरवबोधता और अस्पष्टार्थता प्रतीत होती है और उसका ठीक ठीक तात्पर्य नहीं जाना जा सकता—जैसा कि पृ. ९४ परकी टिप्पणीमें सूचित किया गया है।

ग्रन्थकारने कहीं कहीं ऐसे अपरिचित शब्दोंका प्रयोग किया है जो शुद्ध संस्कृतके न हो कर देश्य भाषाके हैं और जिनका अर्थ ठीक ठीक समझमें नहीं आता। ऐसे शब्दोंके दिये गये अर्थ भी सर्वथा निर्भ्रान्त नहीं कहे जा सकते। इन सब शंकित स्थानों और अर्थोंके विषयमें पाठक हमें कोई दोष न दें ऐसी विज्ञप्ति है।

*

जब यह भाषान्तर छपाना शुरू किया गया तब हमारी इच्छा थी, कि हम इसके साथ, इस ग्रन्थमें वर्णित विशेष विशेष ऐतिहासिक और भौगोलिक नामोंके बारेमें, अन्यान्य साधनोंद्वारा उपलब्ध या ज्ञात बातोंका परिचय करानेवाली विस्तृत टिप्पणियाँ दें; और इसमें जो कुछ पारिभाषिक शब्दसमूह और लोकोक्तिरूप वाक्य-विन्यास उपलब्ध होते हैं उनको स्पष्ट करानेवाली व्याख्यात्मक पंक्तियाँ भी लिखें। किन्तु, जब हमने कुछ ऐसी टिप्पणियाँ और पंक्तियाँ लिखनी प्रारंभ की तो उनका कलेवर इतना बढ़ता हुआ दिखाई देने लगा जो मूल ग्रन्थसे भी कहीं अधिक बढ जानेकी आशंका कराने लगा। और ये सब टिप्पणियाँ लिखनेका तो हमारा उद्देश्य लोम है। क्यों कि इन्हीं टिप्पणियों द्वारा तो इस ग्रन्थका सारा महत्त्व प्रकट होनेवाला है। इसलिये फिर हमने यह विचार किया कि इन टिप्पणियों आदिका संकलनवाला एक पर्यालोचनात्मक पूरा भाग ही अलग निकाला जाय; जिसमें भाषान्तरवाला यह भाग अनपेक्षित रूपसे विस्तृत न हो; और जिनको केवल प्रबन्धचिन्तामणिका मूलगत ग्रन्थसार मात्र ही पढ़ना-समझना अपेक्षित हो उनको इसके पढ़नेमें कोई कठिनाता प्रतीत न हो। इसीलिये हमने पृष्ठ २, ११, १८ आदि पर जो टिप्पणियाँ दीं हैं उनमें यह सूचित कर दिया है कि इन बातोंका विशेष विवेचन या उद्घोष इस्के अगले भागमें किया जायगा—इत्यादि।

यह अगला भाग, पुरातनप्रबन्धसंग्रह नामक, मूल ग्रन्थके पूरकात्मक द्वितीय भागके, इसी तरहके

हिन्दी भाषान्तरके प्रकट होनेके बाद, (जो अब शीघ्र ही प्रेसमें जानेवाला है) प्रकट होगा—अर्थात् हमारी संकल्पित योजनाके अनुसार, वह इस प्रबन्धचिन्तामणका ५ वें भाग होगा ।

*

६. प्रबन्धचिन्तामणि वर्णित ऐतिहासिक तथ्योंके विषयमें कुछ स्वाभिप्राय ज्ञापन ।

इस ग्रन्थके पढ़नेवाले पाठकोंको यह बात लक्ष्यमें रखनी चाहिये कि—“यद्यपि ग्रन्थ प्रधानतया ऐतिहासिक प्रबन्धोंका संग्रहात्मक है, तथापि इसके सब-के-सब प्रबन्ध ऐतिहासिक नहीं हैं । खास करके अन्तिम प्रकाशमें जो पुण्यसार, कर्मसार, वासना, कृपाणिका इत्यादि शीर्षक ५-७ प्रबन्ध हैं वे पौराणिक ढंगके कथात्मक रूप हैं । उनमें ऐतिहासिकता खोज निकालना निरर्थक है । बाकीके अन्य बहुतसे—प्रायः सब ही—ऐतिहासिक माने जा सकते हैं; पर इनमेंसे भी कुछ प्रबन्धोंमें वर्णित व्यक्तियोंके विषयमें, अभी तक इतिहासविदोंमें थोड़ा बहुत मतभेद अवश्य है । दृष्टान्तके तौरपर, प्रथम प्रकाशमें प्रारंभ-ही-में दिये गये विक्रमार्क राजाके व्यक्तित्वके विषयमें विद्वानोंमें अभी तक कोई एक निर्णयात्मक विचार स्थिर नहीं हो पाया । वह राजा कौन था और कब हो गया इसके विषयमें अभी तक अनेक तर्क-वितर्क किये जा रहे हैं । नामके अतिरिक्त प्रबन्ध कथित और सब बातें तो एक कहानीकी अपेक्षा अन्य कोई अधिक महत्त्व नहीं रखती ।”

“यही बात सातवाहनवाले प्रबन्धके विषयमें कही जा सकती है । सातवाहन राजाका नाम यद्यपि शिलालेखों वगैरहमें उपलब्ध होता है, पर इस नामके कई राजा हो जानेसे और प्रबन्धमें वर्णित घटनाका कोई ऐतिहासिकत्व प्रतीत न होनेसे उसके विषयमें भी नामके अतिरिक्त प्रबन्धकथित समूचा वर्णन कल्पनात्मक ही मानना चाहिए ।

“सातवाहनके बाद भूपराजका जो प्रबन्ध है, उसके अस्तित्वके विषयका अभीतक अन्य कोई ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध नहीं हुआ है, पर उसके ऐतिहासिक पुरुष होनेका संभव माना जा सकता है ।”

“इस तरह इन कुछ दो चार नामोंकी व्यक्तियोंको छोड़ कर, बाकी जितने भी नाम इस ग्रन्थमें आये हुए हैं वे सब प्रायः ऐतिहासिक पुरुष हैं । हाँ उनमेंसे कुछ कुछ व्यक्तियोंका संबन्ध, परस्पर एक दूसरेके साथ, इस तरह जोड़ दिया गया है जो भ्रमात्मक है । उदाहरणके तौरपर, भोज-भीमके वर्णनवाले दूसरे प्रकाशमें, धाराके परमार राजा भोजदेवके साथ खास करके महाकवि वाण, मयूर, मानतुङ्ग और माघ आदिका जो परस्पर सम्बन्ध और समकालीनत्व वर्णन किया गया है वह सर्वथा भ्रान्त और निराधार है । ग्रन्थकारके पूर्ववर्ती और प्रसिद्ध विद्वान् प्रभाचन्द्र सूरिने, अपने प्रभावकचरित्रमें, इन व्यक्तियोंका वर्णन और ही राजाओंके समयमें दिया है और वह कुछ प्रमाणभूत भी सिद्ध होता है । तब फिर न माझम मेरुतुङ्ग सूरिने किस आधार पर, ऐसा भ्रान्तिपूर्ण यह वर्णन अपने इस महत्त्वके ग्रन्थमें प्रथित कर डाला है, सो समझमें नहीं आता । भोजप्रबन्धकी ये बहुतसी बातें कल्पनाप्रसूत और लोककथायें जैसी प्रतीत होती हैं । ग्रन्थकारने ये बातें किसी पुरातन प्रबन्ध आदिके आधार पर लिखी हैं या किसीके मुखसे सुन कर लिखी हैं इसके जाननेका कोई साधन अभीतक ज्ञात नहीं हुआ ।

“सिद्धराज और कुमारपालके समयके जितने वर्णन इसमें प्रथित हैं वे प्रायः सब-के-सब ऐतिहासिक और आधारभूत हैं । उनके घटनाक्रममें कुछ आगे-पीछे पनका संभव हो सकता है पर उनमेंका कोई वर्णन सर्वथा निर्मूल हो ऐसा नहीं माना जा सकता ।

“मेरुतुङ्ग सूरिके इस ग्रन्थमें, ऐतिहासिक दृष्टिसे, जो सबसे अधिक विशेष महत्त्वका उल्लेख पाया गया है

वह है अणहिलपुरके राजाओंके समयका कालक्रम-ज्ञापक निश्चित निर्देश। अणहिलपुरके राज्यसिंहासन पर, कौन राजा कब गद्दीपर बैठा और उसने कितने वर्ष राज्य किया इसका जो उल्लेख इस ग्रन्थमें किया गया है वैसा उल्लेख, पूर्वके अन्य किसी ग्रन्थमें नहीं मिलता। यद्यपि इस उल्लेखमें चावडा (चापोल्कट) वंशके जो संवत्सर निर्दिष्ट किये गये हैं उनकी निश्चितिके निर्णायक और समर्थक अन्य कोई जैसे प्रमाण अभीतक उपलब्ध नहीं हो पाये, तथापि उनके वाचक भी जैसे कोई प्रमाण अभीतक उपस्थित नहीं हुए और चौलुक्य वंशके राजाओंके राज्यकालकी जो संवत्सराब्धि इसमें दी गई है वह तो शिलालेख आदि अन्यान्य अनेक प्रमाणोंसे प्रायः सर्वथा निर्भ्रान्त सिद्ध हो चुकी है। इसलिये इसमें दी गई यह राजसंवत्सराब्धि बड़े ही महत्त्वकी ओर एक अद्वितीय ऐतिह्य वस्तु मात्रित हुई है।

७. प्रबन्धचिन्तामणिकी रचना कब और क्यों की गई।

मेरुतुङ्ग सूरिने यह ग्रन्थ कब और कहा बनाया इसका उल्लेख उन्होंने ग्रन्थके अन्तमें स्पष्ट कर ही दिया है। इस उल्लेखसे ज्ञात होता है, कि वि० सं० १३६१ में, काठियावाड़के वर्तमान वटवान शहरमें उन्होंने इस ग्रन्थको पूर्ण किया। यह वह समय है, जब गुजरातके स्वामीनर और स्वराज्यका सर्वनाश हुआ और विधर्मी यवनराज्य और पारवश्यका प्रादुर्भाव हुआ। मेरुतुङ्गके सामने ही अणहिलपुरका वह चौलुक्य वंश नामशेष हुआ, जिसके स्थापक पुरुषसे ले कर अन्तिम पुरुषके समय तककी गुजरातके राजकीय, सामाजिक और धार्मिक जीवनकी कुछ विशिष्ट स्मृतियां लिपिवद्ध करनेका उन्होंने इस ग्रन्थमें मौलिक प्रयत्न किया है। मेरुतुङ्ग सूरिके विचारसे, गुजरातमें—अणहिलपुर पाटनमें—वीरप्रकृति राजा वीरधवळ और उसके विचक्षण मंत्री वस्तुपाल-तेजपालके बाद और कोई वैसा स्मरणीय पुरुष पैदा नहीं हुआ जिसका नामनिर्देश वे अपने इस ग्रन्थमें करते। यद्यपि वीरधवळके बाद उसके वंशजोंने प्रायः ५०-५५ वर्षतक अणहिलपुरमें राज्यसिंहासनका उपभोग किया, पर उनका शासन प्रायः निष्प्राण और निस्तेजसा ही रहा। मेरुतुङ्ग सूरिको उस शासनकालमें कोई महत्त्व नहीं मालूम दिया और इसलिये उन्होंने उस समयकी किसी भी घटनाका उल्लेख अपने ग्रन्थमें नहीं आने दिया। उनके अभिप्रायमें, वीरधवळ और वस्तुपाल-तेजपालके साथ गुजरातके उद्योतिर्नय जीवनकी समाप्ति हो गई। चाहे मेरुतुङ्ग सूरिको, इतिहासके आत्माका दिव्य दर्शन हुआ हो या न हुआ हो, पर इसमें कोई शक नहीं कि उनका यह ग्रन्थलेखन, सचमुच, इतिहासदर्शनको एक अस्पष्ट पर सूक्ष्म कलाके आभासका उत्तम सूचन करता है। जब हम गुजरातके भूतकालीन राष्ट्रीय जीवन पर एक गहरी दृष्टि डालते हैं, तब हमें यह बहूत स्पष्टताके साथ दिखाई देता है, कि यथार्थ ही, गुजरातके भाग्याकारोंमें वीरधवळ और वस्तुपाल-तेजपालके बाद, अब तरु, वैसा कोई उद्योतिर्वर तेजस्वी तारक उदित नहीं हुआ। और जब तरु गुजरातमें पुनः वैसा पूर्ण स्वराज्य स्थापित नहीं हो पाता तब तरु हम इस अन्तर्दाहक अनुभूतिको मिटा नहीं सकते।

*

मेरुतुङ्ग सूरिने इस ग्रन्थकी रचना किस लिये की—यह भी उन्होंने ग्रन्थके प्रारम्भमें और अन्तमें, संक्षिप्त रूपमें सूचित किया है। वे कहते हैं कि—“ वारंवार सुनी जानेके कारण पुत्रांनी कथायें बुद्धिमानोंके मनको वैसा प्रसन्न नहीं कर पातीं। इसलिये मैं निकटवर्ती सपुत्रोंके वृत्तान्तोंसे [संकलित ऐसे] इस प्रबन्ध-चिन्तामणि ग्रन्थकी रचना कर रहा हूँ। ” (—देवी पृ० २, पृ ६ का अनुवाद)। इस कथनके भावको स्पष्ट करनेके लिये, इसके नीचे एक टिप्पणी दे कर हमने उसमें कहा है कि—“ पुत्राणे जमानेमें व्याख्यानकार और कथाकार प्रायः सदा उन्हीं कथा-व्याताओंको सुनाया करते थे जो महाभारत और रामायण आदि पुत्राण ग्रन्थोंमें

प्रसिद्ध हैं। एक-की-एक ही कथा वारंवार सुननेमें विद्व मनुष्योंके मनको विशेष आनन्द नहीं आता यह सर्वानुभव सिद्ध बात है। मेरुतुङ्ग सूरिने इस बातका विचार कर, लोगोंका मनरंजन करनेके लिये, कथाकारोंको, कुछ नई सामग्री प्राप्त हो इस उद्देशसे, कितनेएक इतिहास-वृत्तान्तोंसे अलङ्कृत ऐसे इस प्रबन्धचिन्तामणि नामक ग्रन्थकी रचना की।”

ग्रन्थके अन्तमें ये, इस रचनाके करनेमें एक दूसरा भी कारण बतलाते हुए लिखते हैं कि—“बहुश्रुत और गुणवान् ऐसे बृद्धजनोंकी प्राप्ति प्रायः दुर्लभ हो रही है और शिष्योंमें भी प्रतिभाका वैसा योग न होनेसे शास्त्र प्रायः नष्ट हो रहे हैं। इस कारणसे तथा भावी बुद्धिमानोंको उपकारक हो ऐसी परम इच्छासे, सुधासत्रके जैसा, सत्पुरुषोंके प्रबन्धोंका संघटन रूप यह ग्रन्थ मैंने बनाया है।” मेरुतुङ्ग सूरिका यह कथन बहुत अनुभवपूर्ण और भावि परिस्थितिका द्योतक है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि यदि मेरुतुङ्ग सूरि इस ग्रन्थकी रचना द्वारा, इन पुरातन ऐतिहास्य श्रुतियोंका, यह विशिष्ट संग्रह न कर जाते तो, आज हमें, उस जमानेकी इन इनीगिनी बातोंके जाननेका भी और कोई साधन उपलब्ध नहीं होता। यह सब-किसीको मंजूर करना पडेगा कि जैन धर्मके उस मध्यकालीन इतिहासकी जो अनेकानेक विश्वसनीय और प्रमाणभूत बातें, इस ग्रन्थमें उपलब्ध होती हैं और उसके साथ ही गुजरातके समूचे राष्ट्रीय इतिहासकी भी बहुत आधारभूत जो कथायें इसमें दृष्टिगोचर होती हैं, वैसी और किसी ग्रन्थमें विद्यमान नहीं हैं।”

८. प्रबन्धचिन्तामणिके उल्लेखों पर कुछ विद्वानोंके मिथ्या आक्षेप।

कुछ कुछ विद्वानोंका खयाल है कि—ग्रन्थकार जैनधर्मा हानेसे, उसने इस ग्रन्थमें अपने धर्मका प्रभाव बतलानेकी दृष्टिसे, बहुत कुछ अतिशयोक्तिपूर्ण कथन किया है; और उसके साथ अन्य धर्मकी—खास करके शैवधर्म और ब्राह्मण संप्रदायकी—लज्जुता बतानेका भी प्रयत्न किया है। इस ग्रन्थके उक्त इंग्रेजी अनुवादक मि. टॉर्नने अपनी प्रस्तावनामें, इस बारेमें लिखा है कि—‘जिस तरह, एक्वीटर स्ट्रीटके एक छप्परके नीचेके कोनेमें बैठ कर, पार्लियामेंटके संभाषणोंको लेखबद्ध करते समय, डॉ० ग्लोसनन् इस बातकी पूरी सावधानी रखता था कि ‘व्हीगके प्रतिपक्षी उसमेंसे किसी तरहका कोई लाभ न उठा पावे’—इसी तरह सभी शांकास्पद स्थानोंमें, यह अमर्षशील जैन ग्रन्थकार, स्पष्ट रूपसे महावीरके धर्मके दृढ़ श्रद्धालु अनुयायियों (अर्थात् जैनों) के पक्षकी ओर झुकता है; और जैन लोक, शैवोंकी तुलनामें कहीं नीचे न दिखाई दे इसकी सामधानी रखता है।’ इत्यादि। इसमें कोई शक नहीं कि—ग्रन्थकार जैन धर्मका एक विद्वान् धर्माचार्य है और इस ग्रन्थकी रचनामें उसका प्रधान उद्देश जैन धर्मकी पुरातन महत्ता और गौरव गाथाको, कालके कुटिल और प्रबल प्रवाहके कारण नष्ट होनेसे बचा रखनेका है। अतएव वह इसमें अपने धर्मका उत्कर्ष बतानेवाली श्रुतियों और उक्तियोंका यथेष्ट उपयोग करे, यह स्वाभाविक ही है। उस पुराने जमानेमें, जब धार्मिक वाद-विवादकी बड़ी प्रतिष्ठा थी और उसका खूब जोरदार प्रचार था; एवं सभी धर्मोंके और संप्रदायोंके अग्रणी विद्वान् गण अपनी अपनी विद्याका प्रचार और पराक्रम बतलानेके लिये, राजसभाओंमें, नामी पंडितानोंके मुष्टि-प्रहारोंकी नाई, वाक्प्रहारोंकी बड़ी सफ़्त कुस्ती किया करते थे, तब उन विद्वान् ग्रन्थकारोंकी तादृश्यक रचनाओंमें, ऐसी अमर्षशील भावना और लेखन-शैलीका दृष्टिगोचर होना नितान्त स्वाभाविक ही है। केवल जैन ग्रन्थकार ही इसमें अधिक उल्लेखनीय हैं सो बात नहीं है। संसारके सभी धर्मों, संप्रदायों, मतों और मंतव्योंके लेखक इससे मुक्त नहीं हैं। मेरुतुङ्ग सूरि भी उन्हींमेंका एक स्वधर्मप्रिय लेखक है, अतः उसके लेखमें, अपने धर्मको नीचा दिखाने-

वाली किसी उक्तिके न आने देनेकी सावचेतीका रखना, उसका कर्तव्य है। ब्राह्मण और शैव ग्रन्थकारोंने भी वैसा ही किया है; मुसलमान और ईसाई इतिहास-लेखकोंने भी वैसा ही किया है - और अब भी सब वैसा ही करते रहते हैं। इसलिये इसमें जैनधर्मके महत्त्वके प्रतिपादनका होना कोई खास दूषण नहीं है। रहीं बात अति-शयोक्तिकी - सो विशुद्ध इतिहासकी दृष्टिसे किसी भी प्रकारकी अतिशयोक्ति अवश्य ही आलोचनाय है और उसकी प्रामाणिकता विचारणीय है। पर जैसा कि हमने पहले ही सूचित कर दिया है, यह ग्रन्थ कोई विशुद्ध इतिहास ग्रन्थ नहीं है। यह तो कुछ पुरातन प्रकीर्ण पोथियोंमें यत्र-तत्र लिखित और कुछ कुछ बृद्ध जनोके मुनक्ते यथा-तथा श्रुत ऐसी इतिहासविषयक कथा-वार्ताओंका एकत्र संकलनवाला एक संग्रह मात्र है। अतः इसमेंकी कुछ उक्तियाँ अथवा घटनाएँ, विशुद्ध इतिहासकी दृष्टिसे, यदि भ्रान्तिपूर्ण, अतिशयोक्तिपूर्ण अथवा निर्मूलप्राय भी सिद्ध हों तो उसमें कोई आश्चर्यकी बात नहीं है। और खुद ग्रन्थकारको भी इस विषयमें कुछ आशंका हुई है, कि उनके इस संकलनमें, विद्वानोंको कुछ बातें संदिग्ध या भिन्नभाववालीं माद्रम दें। इसलिये उन्होंने ग्रन्थारंभमें यह बात भी इस तरह कह दी है कि—“यद्यपि विद्वानों द्वारा अपनी बुद्धि [संकलना] से कहे गये प्रबन्ध [कुछ कुछ] भिन्न भिन्न भावोंगळे अवश्य होते हैं, तथापि इस ग्रन्थकी रचना सुसंप्रदाय (योग्य परंपरा) के आधार पर की गई है; इसलिये चतुर जनोको [इसके विषयमें] वैसी चर्चा न करनी चाहिए। ” इस कथनको स्पष्ट करनेके इरादेसे इसके नीचे जो टिप्पणीं हमने दी है उसमें लिखा है कि—

“ मेरुतुङ्ग सूरिने इस ग्रन्थकी संकलना करनेमें कुछ तो पुराने प्रबन्ध-ग्रन्थोंकी सहायता ली और कुछ परंपरासे चली आती हुई मौखिक बातोंका आधार लिया। इस प्रकार परंपरासे सुनी हुई बातोंका परस्पर मिलान करनेमें विद्वानोंको अशक्य ही उनमें कुछ-न-कुछ भिन्न भाव माद्रम पड़ता रहता है। मेरुतुङ्ग सूरिको भी अपनी इस रचनामें कहीं कहीं ऐसा भिन्न भाव माद्रम हुआ है। इस भिन्न भावके निराकरण करनेका या सुलझासा करनेका उनके पास न तो कोई साधन था और न कोई उनको उसकी वैसी आवश्यकता थी। उन्होंने सिर्फ इतना ही कहना पर्याप्त समझा कि हमने जो बातें इस ग्रन्थमें संकलित कीं हैं वे एक सुसंप्रदाय द्वारा प्राप्त की हुई हैं। इसलिये इनके तथ्यातव्यके बारेमें चतुर मनुष्योंको चर्चा करनेसे कोई लाभ नहीं। प्रबन्धचिन्तामणिकी कुछ बातें ऐतिहासिक दृष्टिसे सर्वथा भ्रान्त भी माद्रम होती हैं लेकिन मेरुतुङ्ग सूरि उनके लिये निष्पक्ष और निराग्रह हैं। ”

यद्यपि यह बात ठीक है कि मेरुतुङ्ग सूरिका मुख्य लक्ष्य जैन धर्मके महत्त्वकी ओर रहा है; तथापि उन्होंने अन्य धर्मोंकी निन्दा करनेकी दृष्टिसे या अन्य धार्मिक जनोकी हीनता बतानेकी भावनासे इसमें कुछ भी नहीं लिखा है। “वन्निक प्रसङ्गोपात्त अन्य-धर्म-विषयक कुछ महत्त्वकी बातें भी उन्होंने उसी आदरकी दृष्टिसे लिखी हैं, जैसी अपने धर्मकी लिखी हैं। ” उदाहरणके तौरपर, मूलराजके प्रबन्धमें जो शिवपूजाका प्रमाण और शैलचार्य कंधडी नामक तपस्वीके तपकी महिमाका वर्णन किया गया है, वह सर्वथा वैसा ही आदरयुक्त पंक्तियोंमें लिखा गया है, जैसा जिनपूजा या किसी जैन आचार्यके बारेमें लिखा गया हो। इसी तरह सिद्धराजकी माता मयगण्डाकी शिवभाक्तिके विषयमें जो उल्लेख किया गया है वह भी वैसा ही निष्पक्ष भावसे भरा हुआ है। अगर मेरुतुङ्ग सूरिको शिवधर्मकी महत्ताके बारेमें अनादर होता तो वे इन उल्लेखोंको इसमें स्थान ही क्यों देते।

मुद्दयतया जैन श्रोताओं (श्रावकों) के सम्मुख, व्याख्यान समामें, जैन साधुओं-यतियोंके वाचने निमित्त, इस ग्रन्थकी रचना की गई है; इसलिये इसमें जैन व्यक्तियोंका और उनके कार्यकलापोंका ही अधिक वर्णन होना स्वाभाविक है। पर, उसके साथ ही मेरुतुङ्ग सूरिको, गुजरातके सर्व सामान्य प्रजाकीय और राष्ट्रीय जीवनकी उन्नायक इतर व्यक्तियों और उनकी कार्य-स्मृतियोंके तरफ भी अनुराग है; और इसलिये उन्होंने अपने इस संग्रहमें, उन इतर व्यक्तियोंकी जीवन-स्मृतियोंके भी, यथाश्रुत और यथाज्ञात वृत्तान्तोंको, जहाँ-वहाँ प्रथित

कर लेनेमें कोई संकोच नहीं किया। भोज-भोगप्रबन्धकी बहुतसी स्मृतियाँ इसी दृष्टिसे संगृहीत की गई हैं। सिद्धराजके प्रबन्धमेंकी भी बहुतसी बातें इसी आशयसे लिखी गई हैं।

*

१. मेरुतुङ्ग सूरिकी इतिहास-प्रियता।

मात्स्य देता है कि मेरुतुङ्ग सूरिको ऐतिहासिक बातोंमें कुछ अधिक रस था और ऐतिहासिक तथ्यपर पक्षपात था। इसलिये उन्होंने सिद्धराज और कुमारपालके जीवन विषयकी वैसे भी कुछ तथ्यभूत बातें उल्लिखित कर दी हैं जिससे उन व्यक्तियोंके, कुछ चरित्र-दुर्बलता और स्वभाव-रूपणता आदि दोषोंकी भी, हमको ज्ञांकी हो जाती है। हेमचन्द्र सूरि आदि विद्वानोंने अपनी रचनाओंमें ऐसे दोषोंका विस्फुल्ल भी आभास नहीं आने दिया है।

*

इस विषयमें, मेरुतुङ्ग सूरिने सबसे अधिक महत्त्वकी जो सत्य ऐतिहासिक बात लिख डाली है वह है मंत्रीवर वस्तुपाल-तेजपालकी माता कुमारदेवीके पुनर्लभकी। तत्कालीन सामाजिक और धार्मिक नीतिकी भावनाकी दृष्टिसे कुमारदेवीका वह पुनर्लभ अवश्य निन्दनीय और हीन कार्य समझा जाता था। वैसे कार्यकी समाज बड़ी झुलकी दृष्टिसे देखता था और उस कार्यके करनेवाली व्यक्तिको बड़े कठोर भावसे समाजसे बहिष्कृत और तिरस्कृत किये करता था। यह तो उस एक-अद्वितीय भाग्यवती कुमारदेवीका लोकोत्तर पुण्यकर्म ही था, जिसके प्रभावसे उसकी कुक्षीमें ऐसे प्रभावशाली पुत्ररत्न पैदा हुए जिनकी समता रखनेवाले पुरुष, सारे संसारके इतिहासमें भी इने-गिने ही दिखाई देंगे। इन पुत्र-पुत्रियोंके प्रतापके कारण कुमारदेवी तत्कालीन समाजमें बड़ी भारी प्रतिष्ठाकी पुण्यभूमि बन सकी और सारे देशके जनोंसे बड़ी श्रद्धाके साथ पूजा और प्रशंसा गई। बड़े-से-बड़े धर्माचार्यों, बड़े-से-बड़े कवियोंने, बड़े-से-बड़े राष्ट्रपुरुषोंने उसकी प्रतिमाकी पूजा की और उसके नामकी स्तुतियाँ गाईं। पर उसके जीवनका वह महत् प्रेमकार्य, जिसके वश हो कर उसने, अणहिलपुरके एक बड़े खानदानके प्राग्वाट कुटुंबके पराक्रमी युवक ठक्कुर आसराजके साथ पुनर्लभ किया था, उसकी स्मृतिका किंचित् आभास भी उन समकालीन कवियों और ग्रन्थकारोंने अपनी कृतियोंमें न आने दिया। क्यों कि वह कार्य समाज और धर्मको नापसन्द था। उसकी स्मृतिको जीवित रखना अप्रिय था। श्रेय और पूजनीय माता कुमारदेवीके पुण्य जीवनकी उस मानी गई कृष्णकलाका सूचन करना उन कवियोंके लिये बड़ा पातक कार्य था। महामात्य वस्तुपाल-तेजपाल जैसे जगत्श्रेष्ठ, पुण्यप्रभावक और धर्मावतार नरशिरोमणि विधवा-विवाहसे प्रसूत पुत्ररत्न थे, इस विचारको स्मृतिमें लाना भी उन ग्रन्थकारोंके लिये, शायद बड़ा दुःखद और दुर्विचारक कर्तव्य था। इसलिये उन्होंने अपनी कृतियोंमें इसकी कहीं भी स्मृति नहीं होने दी। उर्ध्वाना अनुगमन करनेवाले, वस्तुपाल-तेजपालके अन्यान्य पिछले प्रसिद्ध चरित्रकारोंने भी उस बातका कहीं सूचन नहीं होने दिया। परंतु मेरुतुङ्गने अपने ग्रन्थमें इस बातका बहुत ही संक्षेपमें पर बड़े स्पष्ट रूपसे उल्लेख कर दिया। ऐसा ही एक दूसरा स्पष्ट उल्लेख उन्हें ही राणा वीरध्वजकी माताके विषयमें भी किया है, जो भी इसी तरहका एक सामाजिक अपवादका ज्ञापक हो कर भी ऐतिहासिक तथ्य था। इन उल्लेखोंसे मेरुतुङ्ग सूरिकी सच्ची इतिहास-प्रियताका हमको अच्छा आभास हो जाता है।

बाकी उस समयके ग्रन्थकारोंके विषयमें, इससे अधिक विशुद्ध इतिहास-दृष्टिकी अपेक्षाकी कल्पना करना और उनमें धार्मिक या सांप्रदायिक भावनाके पोषक विचारोंका दोषारोप कर, उनके अबाधित कथनोंकी भी अपेक्षाकी दृष्टिसे देखना, एक प्रकारकी निजकी ऐतिहासिक दृष्टिकी विपरीतताका बोध कराना है।

*

१०. ग्रन्थकारके जीवनके विषयमें ।

ग्रन्थकार मेरुतुङ्ग सूरिके जीवन आदिके विषयमें कोई विशेष वस्तु ज्ञात नहीं होती । ये नागेन्द्र गच्छके आचार्य थे और इनके गुरुका नाम चन्द्रप्रम सूरि था । धर्मेश्व नामक विद्वान्— जो शायद इनके वृद्ध गुरुभ्राता या अन्य कोई गच्छवासी स्थविर साधु-पुरुष थे— उनके पाससे इन्होंने, इस ग्रन्थकी रचनामें बहुत कुछ ऐतिहासामग्री प्राप्त की थी । गुणचन्द्र नामक इनका प्रधान शिष्य था जिसने इस ग्रन्थकी पहली संपूर्ण प्रातिलिपि लिख कर तैयार की थी ।

इनकी एक और ग्रन्थकृति उपलब्ध होती है जिसका नाम महापुरुषचरित है । इस ग्रन्थमें ऋषभदेव, शान्तिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ और महाशरीर—इस प्रकार पाँच तीर्थकरोंका संक्षिप्त चरित वर्णन है । इसके अतिरिक्त और कोई इनकी कृति हमें अर्भातक ज्ञात नहीं हुई ।

*

अन्तमें हम आशा करते हैं कि हिन्दी-भाषा-भाषी जिज्ञासु जन, इस ग्रन्थके वाचन-मननसे अपने प्राचीन इतिहास विषयक ज्ञानमें उचित वृद्धि करेंगे; और खुद ग्रन्थकारने, ग्रन्थान्तमें जो नम्र निवेदन किया है उसकी तरफ लक्ष्य रखनेकी सूचना कर, उसी कथनको उद्धृत करते हुए, हम अपना यह प्रास्ताविक वक्तव्य समाप्त करते हैं ।

यथाश्रुतं सङ्कलितः प्रबन्धैर्ग्रन्थो मया मन्दाधियापि यत्नात् ।
मात्सर्यमुत्सार्य सुधीभिरेप प्रज्ञोद्गुरैरुन्नातिमेव नेयः ॥

मार्गशीर्षपूर्णिमा, वि० स० १९९७ }
भारतीय विद्या भवन
आन्ध्रप्रदेश (अन्धेरा), बम्बई. }

— जि न वि ज य

श्रीमेरुतुङ्गाचार्यविरचित

प्रबन्धचिन्तामणि

॥ ॐ नमः सर्वज्ञाय ॥

श्रीनाभिभूर्जिनः पातु परमेष्ठी भवान्तकृत् । श्रीभारत्योश्चतुर्द्वारमुचितं यच्चतुर्मुखी ॥ १ ॥
वृणामुपलतुल्यानां यस्य द्रावकरः करः । ध्यायामि तं कलावन्तं गुरुं चन्द्रप्रभं प्रभुम् ॥ २ ॥
गुम्फान् विधूय विविधान् सुखेवाधाय धीमताम् । श्रीमेरुतुङ्गस्तद्भवन्धाद् ग्रन्थं तनोत्यमुम् ॥ ३ ॥
रत्नाकरात् सद्गुरुसम्प्रदायात् प्रबन्धचिन्तामणिमुद्दिधीषोः ।

श्रीधर्मदेवः शतधोदितेतिवृत्तैश्च साहाय्यमिव व्यधत् ॥ ४ ॥

श्रीगुणचन्द्रगणेशः प्रबन्धचिन्तामणिं नवं ग्रन्थम् ।

भारतमिवाभिरामं प्रथमादर्शेश्च दर्शितवान् ॥ ५ ॥

भृशं श्रुतत्वान्न कथाः पुराणाः प्रीणन्ति चेतांसि तथा बुधानाम् ।

वृत्तैस्तदासन्नसतां प्रबन्धचिन्तामणिग्रन्थमहं तनोमि ॥ ६ ॥

बुधैः प्रबन्धाः स्वधियोच्यमाना भवन्त्यवश्यं यदि भिन्नभावाः ।

ग्रन्थे तथाप्यत्र सुसम्प्रदायाद् दृढे न चर्चा चतुरैर्विधेया ॥ ७ ॥

॥ ॐ सर्वज्ञको नमस्कार हो ॥

जिनकी चतुर्मुखी (चार मुख) लक्ष्मी और सरस्वतीका उचित द्वार है, और जो भवका अन्त करनेवाले हैं ऐसे श्री नाभि भू, परमेष्ठी जिन (रूपमनाथ) रक्षा करे ॥ १ ॥

उस कलागान् प्रभु चन्द्रप्रभ नामक गुरुका मैं ध्यान करता हूँ जिनका कर (=हाथ, किरण) पर्यरके समान मनुष्योंको भी द्रवित करनेवाला है ॥ २ ॥

१ इस श्लोकमें प्रत्यकारने ब्रह्मा और जिनदेव ऋषभ नाथकी एक साथ स्तुति की है । ब्रह्माके चार मुख होनेसे वे चतुर्मुख के नामसे प्रसिद्ध हैं । जैन शास्त्रोंमें वर्णन है कि भगवान् ऋषभदेव जब धर्मोपदेश देते थे तब वे भी श्रोताओंको चार मुखवाले दिखाई देते थे । इस लिये जिन भगवानको भी चतुर्मुख का विशेषण दिया जाता है । ब्रह्मा भी परमेष्ठी परसे प्रसिद्ध हैं और जिन भगवान् भी परमेष्ठी कहल्यते हैं । ब्रह्मा विष्णुके नाभिजन्मलमे पैदा हुए ऐसी पुराणोंमें प्रसिद्ध हैं इस लिये वे नाभिभू बहे जाते हैं और जिनदेव ऋषभनाथके पिताका नाम नाभिराज या इस लिये वे भी नाभिभू बहे जाते हैं ।

२ इस श्लोकमें प्रत्यकारने अपने गुरुको नमस्कार किया है जिनका नाम चन्द्रप्रभ था । चन्द्रप्रभ शब्दका श्लेषार्थ करने हुए गुरुकी तुलना चन्द्रमाके साथ की है । चन्द्रमा अपनी १६ कलाओंके कारण कलावन्त कहल्यता है, प्रत्यकारके गुरु भी अनेक विद्या-बन्धनोंमें अलङ्कृत होनेके कारण कलावन्त थे । चन्द्रमाके चर याने किरण चन्द्रजान् मणिकों-जो एक प्रकारका फयर ही है-द्रवित (जल्पितु मुक्त) करते हैं; वैसे ही चन्द्रप्रभ गुरुके चर याने हाथ यदि पत्थरपुत्र मनुष्यके मलिन क ऊपर भी पड़ते हैं तो उसको भी वे द्रवित (आर्द्र, -कोमलचित्त) बनाते हैं ।

विविध प्रकारके ग्रन्थों और प्रबन्धोंको छोड़ कर बुद्धिमानोंको सुखसे जिनका बोध हो सके इसलिये गद्यरचना द्वारा ही मैं मेरुतुंग इस ग्रन्थकी रचना करना चाहता हूँ ॥ ३ ॥

रत्नाकर (समुद्र) समान सद्गुरु सम्प्रदायसे, जब मेरी इस प्रबंधरूप चिन्तामणि (रत्न) के उद्धार करनेकी इच्छा हुई तो श्रीधर्मदेवने सैंकड़ों बार इतिहासकी बातें कह कहकर मानों मेरी सहायता की ॥४॥

जिस प्रकार महाभारत ग्रन्थका प्रथम आदर्श (पहली नकल) गणेश (गजाननने) तैयार किया, उसी प्रकार इस प्रबन्धचिन्तामणि नामक नये ग्रन्थका प्रथम आदर्श गुणचन्द्र नामक गणेश (गच्छपति) ने सुन्दर रित्तसे तैयार किया ॥ ५ ॥

बारंबार सुनी जानेके कारण पुरानी कथायें बुद्धिमानोंके मनको वैसा प्रसन्न नहीं कर पातीं । इस लिये मैं निकटवर्ती सत्पुरुषोंके वृत्तान्तोंसे [संकलित ऐसे] इस प्रबंधचिन्तामणि ग्रन्थकी रचना कर रहा हूँ ॥ ६ ॥

यद्यपि विद्वानों द्वारा अपनी बुद्धि [संकलना] से कहे गये प्रबंध [कुछ कुछ] भिन्न भिन्न भावों वाले अवश्य होते हैं; तथापि इस ग्रन्थकी रचना सुसम्प्रदाय (योग्य परंपरा) के आधारपर की गई है; इसलिये चतुर जनोंको [इसके विषयमें] वैसी चर्चा न करनी चाहिये ॥ ७ ॥

३ मेरुतुंग सूत्रिने इस ग्रन्थकी रचना की उसके पूर्व, कुछ गद्य और कुछ पद्यमें, कुछ प्राकृत और कुछ संस्कृतमें, कुछ पुरातन अपभ्रंश और कुछ अर्वाचीन देश्य भाषामें, इस प्रकारके कई छोटे बड़े प्रबन्धात्मक ग्रन्थ विद्यमान थे । उन ग्रन्थोंमेंसे अपनी मनोरञ्जिके अनुसार कितने एक विषय चुनकर मेरुतुंग ने सरल संस्कृत गद्य रचना द्वारा इस ग्रन्थका संवलन किया ।

४ ग्रन्थकार मेरुतुंगसूत्रिके धर्मदेव नामक कोई वृद्ध गुरुभ्राता अथवा गुरुजन थे जिन्होंने समय समय पर इतिहासकी सैंकड़ों पुरानी बातें सुना सुनाकर इस ग्रन्थकी रचना सामग्रीमें यथेष्ट सहायता दी । इस लिये ग्रन्थकारने अपने गुरुके बाद उनका भी सम्मानपूर्वक इस श्लोक द्वारा स्मरण और उपकृत भाव प्रदर्शित किया है ।

५ जैन ग्रन्थोंमें यति मुनियोंके अनुदायको गण नामसे भी उल्लिखित किया जाता है । गणका नायक जो सूत्रि-आचार्य होता है उसे गणेश-गणपति-गणनायक-आदि शब्दोंसे सम्बोधित किया जाता है । प्रबन्धचिन्तामणिका प्रथम आदर्श तैयार करनेवाले गुणचन्द्र नामक गणी थे जो शायद मेरुतुंगसूत्रिके प्रधान शिष्य हैं और उनके बाद उनके पट्टधर गणनायक बने हैं । गणेश शब्दसे, ग्रन्थकारने पुराण प्रसिद्ध देव गणपति (गजानन विनायक) जिन्होंने वेद व्यास कथित महाभारतकी प्रथम नकल की, उसके साथ यथा पर श्लेषार्थ कर अर्थ घटना बताई है ।

६ पुराणे जन्मनेमें व्याख्यानकार और कथाकार प्रायः सदा उन्हीं कथा-वाताओंको सुनाया करते थे जो महाभारत और रामायण आदि पुराण ग्रन्थोंमें प्रसिद्ध हैं । एककी एकही कथा बारंबार सुनकर विद्व मनुष्योंके मनको विशेष आनन्द नहीं आता यह सर्वानुभव सिद्ध बात है । मेरुतुंगसूत्रिने इस बातका विचार कर, कथाकारोंकी, लोगोंका मनोरंजन करनेके लिये कुछ नई सामग्री प्राप्त हो इस उद्देश्यसे, कितने एक इतिहास प्रसिद्ध और निकट समयवर्ती भेद पुराणोंके ऐतिहासिक वृत्तान्तोंसे अलंकृत ऐसे इस प्रबन्धचिन्तामणि नामक ग्रन्थकी रचना की । ग्रन्थकारका यह कथन सास ध्यान देने योग्य है ।

७ मेरुतुंगसूत्रिने इस ग्रन्थकी संकलना करनेमें कुछ तो पुराणे प्रबन्ध-ग्रन्थोंकी सहायता ली और कुछ परंपरासे सली आती हुई मौखिक बातोंका आधार लिया । इस प्रकार परंपरासे सुनी हुई बातोंका परस्पर मिलान करनेमें विद्वान्तोंको अवश्य ही उनमें कुछ न कुछ भिन्नभाव मालूम पड़ता रहता है । मेरुतुंगसूत्रिकी भी अपनी इस रचनामें और दूसरी अत्युत्कृत रचनामें कहीं कहीं ऐसी भिन्नभाव मालूम हुआ है । इस भिन्नभावका निराकरण करनेका या खुलसा करनेका उनके पास न तो कोई साधन था और न कोई उनकी उसकी आवश्यकता थी । उन्होंने फिर इतना ही कहना पर्याप्त समझा कि-हमने जो बातें इस ग्रन्थमें संकलित की हैं वे एक सुसम्प्रदाय द्वारा प्राप्त की हुई हैं । इस लिये इनके तथ्यात्मिक बरोंमें चतुर मनुष्योंको चर्चा करनेसे कोई लाभ नहीं । प्रबन्धचिन्तामणिकी कुछ बातें ऐतिहासिक दृष्टिसे सर्वथा भ्रान्त भी मालूम होती हैं लेकिन मेरुतुंग सूत्रि उनके लिये निष्पक्ष और निरपेक्ष हैं-यह बात इस श्लोकगत कथनसे स्पष्ट होती है ।

१. विक्रमार्क राजाका प्रबन्ध ।



१. इस पृथ्वीतल पर विक्रमादित्य [कालक्रमसे] अन्तिम राजा होते हुए भी, अपने शौर्य और दार्य आदि गुणोंसे वह प्रथम और अद्वितीय राजा हुआ। श्रोताओंके कानोंमें अमृतकासा आसिंचन करनेवाला उस राजाका इतिवृत्त बहुत कुछ विस्तृत है। हम यहाँ पर, ग्रंथकी आदिमें उसीका संक्षेपमें कुछ वर्णन करते हैं * ।

१) वह इस प्रकार है—अवन्ति देशके सुप्रतिष्ठान^१ नामक नगरमें असम साहसका एक मात्र निधि; दिव्य लक्षणों (चिह्नों) से लक्षित; सत्कर्म, पराक्रम इत्यादि गुणोंसे भरपूर ऐसा एक विक्रम नामक राजपूत (राजपुत्र) था। आजन्म दरिद्रतासे तंग होता हुआ भी वह अति नीति-परायण था; सैंकड़ों उपाय करके भी जब धन नहीं प्राप्त कर सका तो एक बार भट्ट मात्र नामक मित्र के साथ रोहणपर्वत को चला। उसके निकटवर्ती प्रधर नामक नगरमें [एक] कुम्हारके घर विश्राम करके प्रातःकाल उस कुम्हारसे भट्ट मात्रने कुदाल मांगा। उसने कहा—इस जगह खानके भीतर जाकर प्रातःकाल पुण्यात्मक नामका श्रवण करके, ललाटको हथेलीसे स्पर्श कर 'हा दैव !' ऐसा कहकर चोट मारनेसे, दुर्भाग्यी मनुष्यको भी अपनी प्राप्तिके अनुसार रत्न मिलते हैं। उस भट्ट मात्रने कुम्हारसे इस वृत्तान्तकी भली भाँति सुन लिया पर विक्रमसे इस प्रकारकी दीनता करानेमें वह असमर्थ था। उन साधनोंको साथ लेकर विक्रम जब उस स्थानमें कुदालका प्रहार करनेको उद्यत हुआ तो उस उसम उसने [अकस्मात्] विक्रमसे इस प्रकार कहा कि—'अवन्तीसे आए हुए किसी वैदेशिकसे घरका कुदाल समाचार पूछने पर उसने आपकी माताका मरण बताया है।' इस तत्त वज्र-शुची (हीरा छेदनेकी सुई—हीराकणी) के समान वचनको सुनकर विक्रमने हथेलीसे माथा ठोककर 'हा दैव !' ऐसा कहा और कुदालको हाथसे फेंक दिया। उस कुदालके अग्रभागसे फटी हुई ज़मीनमेंसे सवा लाख मूल्यका चमकता हुआ रत्न (हीरा) प्रादुर्भूत हुआ। भट्ट मात्र उसे लेकर

१ मध्यकालीन प्रबन्धकारोंकी यह मान्यता थी कि विक्रमादित्यके बाद उसके जैसा पराक्रमी, दूर, वीर, उदारचेता और कोई राजा नहीं हुआ। उसके पहलेके युगमें यद्यपि पुराणप्रसिद्ध अनेक राजा हुए जो इन गुणोंसे ब्येष्ट अलंकृत थे, तथापि वे भी विक्रमके जैसे सपूर्ण आदर्श नृपति नहीं थे। इसलिये इन गुणोंकी दृष्टिसे विक्रम उन राजाओंमें भी सर्व प्रथम स्थान प्राप्त करता है और इसीलिये इस पद्यमें, प्रयकारने उसको कालक्रमसे अन्तिम होनेपर भी गुणक्रममें वह सर्व प्रथम था, ऐसा कहा है। प्रबन्धचिन्तामणिका इंग्रेजी भाषामें जो अनुवाद डॉनी नामक इंग्रेज विद्वान्ने किया है, उसमें उसने अन्य इस शब्दका अर्थ अन्त्यज—हीन जातीय (of Lowest rank) ऐसा किया है, लेकिन वह भ्रमात्मक है। विक्रम हीन जातीय था ऐसा कहीं भी कोई उल्लेख नहीं मिलता। प्रबन्धोंमें विक्रमका कहीं तो राजपूत जातिके परमारवंश में उत्पन्न होना लिखा है और कहीं हूणवंश में; ये दोनों ही प्रसिद्ध राजवंश हैं। इस विषयकी विशेष चर्चा हम अगले भागमें करेंगे।

* इस प्रबन्धचिन्तामणिकी रचनाके पूर्व, विक्रमविषयक कई चरित्र और प्रबन्ध बने हुए विद्यमान थे। ये चरित्र-प्रबन्ध बहुत कुछ विस्तृत और विविध वर्णनवाले थे। उनमेंसे कुछ थोड़ेसे वर्णन, संक्षेप करके, मेधुंगारिने यहापर प्रथित किये हैं। विक्रम विषयक इस विविध साहित्यका विशेष परिचय हम यथास्थान अगले ग्रन्थमें लिखेंगे।

२ वर्तमान मालवेका प्राचीन नाम अवन्ती था।

३ मालवा याने अवन्तीमें सुप्रतिष्ठान नामक कोई नगरका उल्लेख कहीं नहीं मिलता। अवन्तीकी राजधानी प्राचीन काल ही से उज्जयिनी प्रख्यात है और विक्रमकी राजधानी यही उज्जयिनी थी। इसलिये संभव है कि प्रयकारने इसी उज्जयिनी को सुप्रतिष्ठान—जिसका प्रतिष्ठान—स्थापन स्व दृढ है—इस विशेषणसे उल्लिखित किया हो। उज्जयिनीके विशाल आदि और भी उपनाम थे, इसलिये यह भी समझ है कि यह सुप्रतिष्ठान भी उसका एक उपनाम हो। दक्षिण अर्थात् महाराष्ट्रकी पुरानी राजधानी प्रतिष्ठान नगरी थी—जो वर्तमानमें निजाम राज्यमें गोदावरीके कौंटेपर पैठण नामक कस्बेसे प्रसिद्ध है—उसकी प्रतिस्थायी भी शायद उज्जयिनीको सुप्रतिष्ठान नाम प्रदान किया गया हो।

विक्रम के साथ लौट आया। फिर उसके शोकरूपी शंकुकी शंकाको दूर करनेके लिये, भद्रमात्रने खानका वृत्तान्त बताते हुए, तत्काल ही उसकी माताका कुशल समाचार कहा। विक्रमने इसे भद्रमात्रकी सहज लोलपता समझकर उसके हाथसे रत्न छीन लिया, और फिर खानके पास पहुँचा और बोला—

२. गुरीबोंके दखितारूप घावको भरनेवाले इस रोहणगिरिको धिक्कार है जो [इस प्रकार] अर्थिजनों [याचकों] से 'हा दैव !' ऐसा कहलाकर फिर रत्न देता है।

यह कह कर उसने सब लोगोंके सामने उस रत्नकी वहाँ फेंक दिया। फिर देशान्तर भ्रमण करता हुआ अबन्तीकी सीमामें पहुँचा। वहाँ पर, नगरेकी मनोरम ध्वनि सुनकर और उसके कारणका वृत्तान्त जानकर उसका स्पर्श किया। फिर उस भद्रमात्रके साथ वह राजमन्दिरमें आया। [ज्योतिपीसे] विना पूछे हुए उसी मुहूर्तमें दिनभरके लिये मंत्रियोंसे उसे राज-पदपर अभिविक्त किया। उसने अपनी दूरदर्शितासे समझ लिया कि इस राज्यपर कोई प्रबल राक्षस या देवता क्रुद्ध होकर प्रतिदिन एक एक राजाका संहार करता है और राजाके अभावमें देशका विनाश करता है। इसलिये भक्ति या शक्तिसे उसका अनुनय करना उचित है। यह सोच, नाना प्रकारके भक्ष्य-भोग्य आदि बनवाकर, सायंकाल चंद्रशाला (राजमहलका ऊपरी हिस्सा) में सब कुल सजा कर रखा। रातकी आरती हो जानेके बाद, अंगरक्षकोंसे भारशुल्लामें लटकते हुए पलँगपर अपने पद्म-दुकूल आदिसे आच्छादित तर्कियाको रखवाकर, स्वयं प्रदीपच्छायामें—अर्थात् ऐसी जगहपर जहाँ प्रदीपका प्रकाश नहीं पड़ता था,—जाकर बैठ गया। हाथोंमें तलवार धारण किये हुए, और धैर्यमें जिसने तीनों लोकको जीत लिया वैसा वह चारों ओर [तीक्ष्ण दृष्टिसे] देखता रहा। एकाएक घोर अर्द्धरात्रिको खिड़कीके रास्ते पहले धुआँ उठा, फिर ज्वाला निकली और बादको साक्षात् प्रेतकी प्रतिमूर्तिके समान एक विकराल बेतालको उसने आते देखा। भूखसे उस बेतालका पेट फूट हो रहा था, [इसलिये पहले] उसने खूब इच्छापूर्वक उन भोग्य द्रव्योंको खाया, फिर गंध द्रव्योंको शरीरमें लगाया और पान खाकर सन्तुष्ट होकर फिर वहाँ पलँगपर वह बैठ गया और विक्रमादित्यसे बोला—'अरे मनुष्य ! मेरा नाम अग्निबेताल है, देवराज (इन्द्र) के प्रतीहार रूपसे मैं प्रसिद्ध हूँ। मैं प्रतिदिन एक एक राजाको मारता हूँ। पर [आज] तुम्हारी इस भक्तिसे संतुष्ट होकर मैंने तुम्हें अभयदानपूर्वक यह राज्य दे दिया है। पर इतना भक्ष्य-भोग्य मुझे सदैव देना। इस प्रकार दोनोंमें तै होनेके बाद, कुछ काल बीतनेपर, विक्रमराजाने [उससे] अपनी आयु पूछी। तब वह यह कहकर चला गया कि—'मैं तो नहीं जानता पर स्वामी (इन्द्र) से जानकर तुम्हें बताऊँगा।' फिर दूसरी रातको वह आया और विक्रमसे बोला कि—'इन्द्रने तुम्हारी आयु सौ सालकी बताई है।' राजाने अपने मित्रधर्मका अधिक आरोप करके इस प्रकार अनुरोध किया कि—'इन्द्रसे मेरी आयु सौ वर्षसे एक वर्ष अधिक या कम करा दो !' उसने यह अंगीकार किया और फिर दूसरे दिन आकर यह बात कही—'महेन्द्रके किये भी [तुम्हारी आयु] निम्नानवे या एक सौ एक वर्ष नहीं होगी।' इस निर्णयके जान लेनेपर, राजा दूसरे दिन उसके लिये भक्ष्य-भोग्य न बनवाकरके, लड़ाईके लिये सज्जित होकर रातमें तैयार रहा। वह बेताल भी यथारीति आकर उन भक्ष्य-भोग्योंको न पाकर क्रुद्ध हुआ और उसने राजा ऊपर आक्रमण किया। बड़ी देरतक उन दोनोंमें युद्ध होता

१ प्राचीन कालमें यह प्रथा थी कि राज्यकी ओरसे किसी साहस या दुष्कर कार्यके करने-करवानेकी घोषणा जब कराई जाती थी, तब एक विशिष्ट राजपुत्र, कुछ अन्य राजकर्मचारियों—सैनिकों आदिको साथ लेकर, नगरके प्रधान प्रधान राजमानोंके डोल या नगरा बजवाता हुआ घूमता फिरता और मुख्य मुख्य स्थानोंपर खड़ा होकर जो कार्य करना करवाना हो उसकी उद्घोषणा करता। जिस मनुष्यको वह कार्य करना अभीष्ट होता वह उस घोषणाके बाद उस डोल या नगराको अपना हाथ लगाता, जिससे वे राजकर्मचारी यह समझ लेते कि इस मनुष्यको वह कार्य करना सम्मत है। फिर उस मनुष्यको वे सम्मानके साथ प्रधान या राजाके पास ले जाते।

रहा। बादको पुण्यबलके सहायसे राजाने उसे पृथ्वी तलपर पटक दिया, और उसकी छातीपर पैर रखकर कहा कि—‘इष्ट देवताका स्मरण करो!’ तब वह बोला कि—‘मैं तुम्हारे अद्भुत साहससे संतुष्ट हूँ। तुम जो करनेको कहो उस आदेशका पालन करनेवाला मैं अग्नि नामक बेताल तुम्हें सिद्ध हुआ।’ ऐसा होनेपर उसका राज्य निष्कण्टक हुआ। इसी तरह अपने पराक्रमसे दिग्मण्डलको आक्रान्त करनेवाले उस राजाने छानब्रे प्रतिद्वन्द्वी राजाओंके राज्यको अपने अधिकारमें किया।

३. जंगली हाथी, तुम्हारे शत्रुओंके [उजड़ पड़े हुए] घरोंकी स्फटिक निर्मित दीवालपर दूसे अपनी परछाई देखकर, उसे प्रतिद्वंद्वी हाथी समझकर, क्रोधसे आघात करता है। [उस आघातके कारण] फिर जब उसका दाँत टूट जाता है तो उसे ही हथिनी समझकर धीरे धीरे साहस के साथ उसका स्पर्श करता है।

इस प्रकार, कालिदासदि महाकवियों द्वारा की हुई स्तुति (प्रशंसा) से अलंकृत होते हुए उसने चिरकाल तक विशाल साम्राज्यका उपभोग किया।

अब यहाँपर प्रसंगसे महाकवि कालिदासकी उत्पत्ति संक्षेपमें कहते हैं—

२) अ वन्ती नामक नगरीमें राजा विक्रमादित्यकी लड़की प्रियं गुमंजरी थी। वह अध्ययनके लिये वररुचि नामक पंडितको समर्पण की गई। बुद्धिमती होनेके कारण सभी शास्त्रोंको उसने उस पंडितसे कुछ ही दिनोंमें पढ़ लिया। वह पूर्ण यौवनावस्था प्राप्त कर चुकी थी, और नित्य अपने पिताकी सेवा करती थी। किसी समय, वसन्त कालमें दोपहरको—जब कि सूर्य सिरपर आगया था, वह खिड़कीके सामने एक सुखासन (सोफा) पर बैठी हुई थी; इसी समय उपाध्याय (वररुचि) रास्तेमें चलते हुए खिड़कीकी छायामें कुछ विश्राम लेने खड़े रहे। कुमारीने उन्हें देखा और खूब पके हुए आमके फलोंको दिखाया। उसने समझा कि वे (उपाध्याय) उन फलोंके लोलुप हैं, और बोली—‘आपको ये फल ठंडे रुचेंगे या गरम?’ उसकी इस बातकी चातुरीको न समझते हुए उस (उपाध्याय) ने कहा कि—‘गरम ही चाहते हैं’ इस प्रकार कह कर, उस उपाध्यायने अपना वस्त्र फैलाया जिसमें उसने ऊपरसे वे फल नीचे फेंके। लेकिन फल पृथ्वीपर गिर पड़े और उससे उनमें धूल लग गई। वररुचि हाथ में लेकर मुँहसे झूंक झूंक कर उस धूलको झाड़ने लगा। राजकन्याने उपहासके साथ कहा—‘क्या ये बहुत गरम हैं कि जिससे मुँहसे झूंक कर ठंडा कर रहे हो?’ उसकी इस बातसे चिढ़कर उस ब्राह्मणने कहा—‘ऐ अपनेको चतुर समझनेवाली अभिमानिनि! तू गुरुके साथ ऐसा मजाक कर रही है; जा तुझको पशुपाल पति मिले’। इस प्रकार उनका शाप सुनकर उसने कहा—‘आप तो त्रैविध हैं, लेकिन मैं तो, आपसे अधिक विद्यावान् होनेके कारण जो आदमी आपका भी गुरु होगा, उसीसे विवाह करूंगी।’ उसने इस प्रकार प्रतिज्ञा की। इसके बाद विक्रमादित्य जब कन्याके लिये उचित श्रेष्ठ वर पाने की चिन्तारूपी समुद्रमें डूब रहे थे, तो वह पंडित जिसे राजाने अभिलषित वर की खोज करनेका आग्रहपूर्वक आदेश कर रखा था, एक बार एक जंगलमें घूमता हुआ पिपासासे व्याकुल हुआ। जब

१ मूलमें यहाँपर ‘साहस्राङ्कः’ ऐसा सविभक्तिक पाठ है इसलिये इसे हाथीका विशेषण मान कर यह अर्थ किया गया है। प्रत्यंतरोंमें ‘साहसाङ्कः’ ऐसा निर्विभक्तिक पाठ भी मिलता है जो अर्थदृष्टिसे संबोधनात्मक हो सकता है। उस अर्थमें यह ‘हे साहसाङ्क!’ ऐसा विभक्तिक विशेषण हो सकता है। विक्रमका उपनाम साहसाङ्क, पा, इसके यथेष्ट प्रमाण मिलते हैं।

२ यह जो राजाकी स्तुतिका पद्य उद्धृत किया गया है वह महाकवि कालिदासका बनाया हुआ है, ऐसा मेस्तुंगका मतलब मालूम देता है।

चारों ओर कहीं जल नहीं मिला तो एक पशुपालको देखकर उससे जल मांगा। उसने जलके अभावमें दूध पीनेको कहा और बोला कि— 'करचंडी' करो। उसके ऐसा कहने पर वररुचि बड़ी चिन्तामें पड़ गया, क्यों कि उसने इसके पहले यह शब्द किसी भी कोप ग्रंथमें नहीं पढ़ा सुना था। उस पशुपालने उसके मस्तक पर हाथ रखकर और भैंसके नीचे बिठाकर, दोनों हथेलियों को जोड़कर 'करचंडी' नामक मुद्रा बताने पर, उसे पेट भर कर दूध पिटाया। उस (उपाध्याय) ने अपने मस्तक पर हाथ रखनेके कारण और एक 'करचंडी' इस विशेष शब्दके बतानेके कारण, उसे गुरुके समान समझा और फिर उसको ही उस राजकुमारीका समुचित पति निश्चित किया। भैंसोंसे हटाकर उसे अपने महलमें ले आया और ६ महिने तक उसके शरीरकी शुश्रूषा करते हुए "ओं नमः शिवाय" इस आशीर्वादको पढ़ाया। ६ महिने बाद जब पण्डितने समझ लिया कि ये अक्षर उसे कण्ठस्थ हो गये हैं तो एक दिन शुभ मुहूर्तमें उसको अच्छी तरह श्रृंगार कराके उसे राजसभामें ले गया। राजाको आशीर्वाद देते समय, बहुत बारका अभ्यस्त वह आशीर्वाद भी, समाक्षोभके कारण "उ शरट" इस प्रकारके शब्दमें बोल गया। उसकी इस ऊटपटांग बातसे राजा विस्मित हुआ। वररुचिने उसकी [मूर्खता छिपाने और] चतुरता बतानेके लिये राजाके सामने कहा—

४. उमाके साथ रुद्र जो, शङ्कर और शल्पाणि है।

रक्षा करें तुम्हारी हे राजन्, टंकारके बलसे जो गर्वित है ॥

इम प्रसिद्ध श्लोकद्वारा [जिसके चारों चरणोंके प्रथमाक्षरोंसे 'उशरट' शब्द बनता है] वररुचिने उसके पाण्डित्यकी गंभीरताका विस्तारपूर्वक विवेचन किया। उसकी बातसे प्रसन्न होकर, राजाने उस भैंस चरानेवालेसे अपनी पुत्रीका विवाह कर दिया। पर पण्डितके सिखानेसे वह सदा मौन ही रहा करता। राजकन्याने उसकी चतुरता जाननेके लिये, कोई नई लिखी हुई पुस्तकके संशोधनका उससे अनुरोध किया। उसने उस पुस्तकको हथेलीपर रखकर, नहरनी लेकर, सारे अक्षरोंको बिंदु और मात्रासे रहित कर दिया। उसे ऐसा करते देख राजपुत्रीने निर्णय किया कि यह तो मूर्ख है। तबसे सर्वत्र ही 'जामातृशुद्धि' की कहावत प्रचलित हुई। एक बार दीनाल परके चित्रमें भैंसोंका झुण्ड देखकर, आनंदित होकर, वह अपनी प्रतिष्ठा भूल गया और उनके बुलानेकी विह्वल बोली बोलने लगा। तत्र राजजुमाराने निश्चय किया कि यह निरापशुपाल-भैंसोंका चरवाहा है। फिर वह (चरवाहा) राजकन्याकी अज्ञा देखकर विद्रुताके लिये कालिकाकी आराधना करने लगा। अपनी पुत्रीके वैधव्यसे शंकित होकर राजाने रातके समय शुभ वेशमें दासीको भेजा। उसने यह कहकर कि— 'मैं तुझे तुष्टमान हुई हूँ' ज्यों ही उठाने लगी त्यों ही विष्णुकी आशंकासे, स्वयं कालिका देवीने ही प्रत्यक्ष होकर उसे अनुगृहीत किया। इम श्रृत्तान्तको सुनकर राजकुमारी प्रमुदित हुई और आकर बोली कि— 'क्या कुछ विशेष पाणी प्राप्त हुई है ?' उसके ऐसा कहनेपर वह तभीसे कालिदास नामसे प्रसिद्ध हुआ और उसने कुमार संभव प्रकृति ३ महाकाव्य और ६ प्रबंध बनाये।

—इस प्रकार यह कालिदासकी उत्पत्तिका प्रबंध है ॥ १ ॥

१ 'जामातृशुद्धि' की कहावत हिंदीमें या गुजराती भागमें प्रचलित हो ऐसा ज्ञात नहीं हुआ; लेकिन मगधी भागमें 'जरर शोष' नामकी कहावत प्रचलित है। विष्णुकी और और कथाओंमें भी इसका उल्लेख मिलता है। इससे ज्ञान होता है पुण्यमें समर्थमें यह कहावत गुजरात आदि देशोंमें भी प्रचलित होगी।

२ पुत्रीके वैधव्य प्राप्त होनेकी वृत्ता राजाको इत्यथि हुई कि वह पशुपाल आभरणान् उपहार करनेकी प्रतिज्ञा करके देवीकी आराधना करने बैठा था। मेरुगुप्तकी यह कथा बहुत ही स्थिर शैलीमें लिखी हुआ है, इत्यथि इसमें बहुतसी बातें अप्सिद्ध पत्नी हैं। दूसरे निबन्धमें वे बातें बुलानेके साथ लिखी हुई मिलती हैं।

३) एक वार, उस नगरका निवासी दां ता नामक सेठ, हाथमें भेंट लेकर आया और सभामें बैठे हुए विक्रमादित्यको प्रणाम करके कहने लगा—‘महाराज, मैंने शुभ मुहूर्तमें प्रधान बड़इयोसे एक धवलगृह (महल) बनवाया, और उसमें बड़े उत्सवके साथ प्रवेश किया। मैं जब रातको उसमें पलंग-पर पड़ा हुआ, आधा-सोया, आधा-जागा वाली अवस्थामें था उस समय ‘गिरता हूँ’ इस प्रकारकी मैंने आकस्मिक वाणी सुनी। मैं मारे डरके ‘मत गिरो’ यह कहता हुआ उसी समय वहाँसे भाग निकला। उस मकानके बनवानेके संबंधमें ज्योतिषियों और कारीगरोंको समय समय पर जो धन दान किया गया है वह मेरे ऊपर बृथा दण्ड ही हुआ। अब इस विषयमें महाराज जो उचित समझें करें !’ राजाने उस सेठकी बात भली भाँति सुनकर, उस धवलगृहका मूल्य जो तीन लाख उसने बताया, वह उसे चुकाकर, उसको स्वायत्त कर लिया। सायंकाल होनेपर; सर्वावसर’ यानि राजसभामें बैठकर, तत्संबंधी सब कार्योंसे निवृत्त होकर, उस घरमें सुखपूर्वक जा सोया। उसी ‘गिरता हूँ’ इस वाणीको सुनकर वह असम साहसी राजा बोला कि ‘जल्दी गिरो !’ और उसके ऐसा कहते ही पास ही गिरे हुए सुवर्ण पुरुषको उसने प्राप्त किया।

—इस तरह यह सुवर्ण पुरुषकी सिद्धिका प्रवन्ध है ॥ २ ॥

४) एक दूसरे अवसरपर कोई अभागा पुरुष, अपने हाथसे बनाये हुए एक लोहेका दुबला पतला दरिद्र नामक पुतला लेकर द्वारपर आया। जब द्वारपाल उसे राजाके पास ले गया तो उसने कहा कि—‘महाराज, आप जैसे स्वामीसे शासित इस अवन्तीपुरीमें सभी चीजें जल्दी बिक जाती हैं और मिल जाती हैं, ऐसी प्रसिद्धि जानकर मैंने चौरासी चौहटोंपर विक्रयके लिये इस दरिद्र-पुतलेको घुमाया, लेकिन किसीने इसे नहीं खरीदा और उलटी मेरी भर्त्सना की गई। आपकी इस नगरीका यह कलंक यद्यार्थ रीतिसे आपको बताकर, क्या मैं जैसे आया था वैसे ही चला जाऊँ ! यह आपसे पूछने आया हूँ।’ उसकी इस घटनाको पुरीका एक महान् कलंक समझकर राजाने उसी समय उसे एक लाख दीनार देकर, लोहेके उस दरिद्र-पुतलेको खरीद लिया और अपने खजानेमें रखवा दिया। ऐसा करनेपर उसी रातको, सुख पूर्वक सोये हुए राजाके निकट, पहले पहरमें हाथियोंकी अधिष्ठात्री देवता, दूसरेमें घोड़ोंकी अधिष्ठात्री देवता और तीसरेमें लक्ष्मीने आविर्भूत होकर कहा कि—‘महाराजने जब दरिद्र-पुतलेको खरीद लिया है तो, फिर हमारा यहाँ रहना उचित नहीं है’—यह कह, अनुज्ञा लेकर वे चले जानेको पूछने आये, तो राजाने अपना साहस भंग न हो इसलिये उनको जानेकी अनुमति दे दी। चौथे पहरमें कोई दिव्य तेजःसम्पन्न उदार पुरुष प्रकट हुआ और बोला कि—‘मैं सत्त्व (साहस) हूँ, जानेके लिये आपकी अनुज्ञा चाहता हूँ।’ उसके ऐसा पूछनेपर राजा हाथमें तलवार लेकर जब आत्मघात करनेको उद्यत हुआ तो फिर उसने हाथ पकड़कर कहा कि—‘मैं तुष्टमान हुआ’ और राजाको उस कृत्यसे रोका। सत्त्वके वहाँ रहनेपर हाथी आदिकी तीनों अधिष्ठात्री देवतायें लीटकर राजासे बोली—‘जानेके संकेतको नष्ट करके सत्त्वने हमें धोखा दिया है। इसलिये राजाको छोड़कर हम लोगोंका जाना अब उचित नहीं है। इस प्रकार वे भी बिना किसी यत्नके ही स्थिर होकर रह गईं।

[१] तभीतक धन है, तभीतक गुण है, और तभीतक समुज्ज्वल कीर्ति है, जबतक हे सत्त्व (साहस) ! तुम त्रितरूपी नगरमें खेल रहे हो।

१ सर्वावसर उस जगहका नाम है जहा राजा अपने मुख्य सिंहासन पर बैठकर सब कोई प्रजाजन और राजकीय पुरुषोंकी मुलाकात लेता देता है और राज्यके सब कार्योंका विचार करता है। दिवान-ए-आम या दरबार-ए-आम यह उर्दु शब्द इसका प्रायः समानार्थक हो सकता है।

[२] राज्य भी जाय, स्त्रियां भी जाय और इस लोकसे यश भी चला जाय; किन्तु हे सत्य ! हम तुम्हारे जानेकी अनुमति आजीवन नहीं दे सकते ।

—इस प्रकार यह विक्रमादित्यके सचका प्रबंध है ॥ ३ ॥

५) एक दूसरे अवसरपर, कोई विदेशी सामुद्रिक-शास्त्रज्ञ द्वारपालके द्वारा सभामें बैठे हुए विक्रमादित्यके पास ले जाया गया । प्रवेश करते ही राजाके लक्षणोंको देखकर वह सिर पीटने लगा । राजाने विपादका कारण पूछा, तो बोला—‘ महाराज, सभी अपलक्षणोंके निधान होनेपर भी तुम्हें छानवे देशोंकी साम्राज्य लक्ष्मीकी भोगते हुए देखकर, सामुद्रिक शास्त्रके ऊपर मेरा विराग हो गया है । मैं तुम्हारे अन्दर ऐसी कोई कावरी (चित्तकवरी) आंत नहीं देख रहा हूँ जिसके प्रभावसे तुम भी कोई राज्यकर्ता बनो । उसके इस वाक्यके सुनते ही विक्रमादित्य तलवार खींचकर जब अपने पेटमें मारने लगा तो उस (सामुद्रिकज्ञ) ने पूछा कि ‘ यह क्या ? ’ इस पर विक्रमने कहा—‘ पेट फाड़कर तुम्हें उसी प्रकारकी (कावरी) आंत दिखाता हूँ । तब उसने कहा कि—‘ मैंने पहले नहीं समझा था कि, तुम्हारा यह सचरूपी महालक्षण वचन लक्षणोंसे भी बढ़कर है । इसपर राजाने उसे पारितोषिक देकर विदा किया ।

—इस प्रकार यह सचपरीक्षाका प्रबंध है ॥ ४ ॥

६) इसके बाद एक अवसरपर, विक्रमने सुना कि दूसरेके शरीरमें प्रवेश करनेवाली विद्यासे तिरस्कृत होकर अन्य सारी कलायें निष्फल-सी हैं । यह सुनकर उस विद्याकी प्राप्तिके लिये श्री पर्वत पर भैरवानन्द योगीके पास जाकर उसने चिरकाल तक उस (योगी) की सेवा करनी शुरू की । योगीके पूर्वसेवक किसी ब्राह्मणने [राजासे यह कहा कि—तुम] मुझे छोड़कर (अकेले) गुरुसे पर-काय-प्रवेश विद्या न लेना । राजाने उसका अनुरोध मान लिया । जब गुरु विद्या देनेको उद्यत हुए तो उनसे कहा कि—‘ पहले इस ब्राह्मणको विद्या दीजिये, बादको मुझे ’ । ‘ राजन् ! यह (ब्राह्मण) विद्याके सर्वथा अयोग्य है ’ ऐसा गुरुके कहनेपर भी बार बार विक्रम अनुरोध करता रहा । तब गुरुने यह उपदेश देकर कि—‘ पीछे तुम पछताओगे ’ उस ब्राह्मणको भी विद्या दी । बादमें लौटकर दोनों उजयिनी पहुँचे । वहाँ पड़ताँके मर जानेसे राजपुरुषोंकी उदास देखकर और स्वयं परकाय-प्रवेश विद्याका अनुभव करनेके निमित्त, राजाने उस हाथीके शरीरमें अपनी आत्माका प्रवेश कराया । [इस प्रसंगका वर्णन करनेवाला यह एक पद्य है—]

५. ब्राह्मणको अंगरक्षक बनाकर राजा (परकाय-प्रवेश) विद्याके द्वारा अपने हाथीके शरीरमें प्रविष्ट हुआ । [बादमें] ब्राह्मण राजाके शरीरमें पैठ गया । तब राजा क्रीडा-शुक (महलके पीछेमेंका तोता) हुआ । बादमें (शुकरूपी) राजाने छिपकली के शरीरमें प्रवेश किया तो रानने उसकी मृत्यु समझी । (इस पर) ब्राह्मणने (जो राजाके शरीरमें प्रविष्ट हुआ बैठा था) शुकको जिलाया और विक्रमने फिर अपना शरीर पाया ॥ ५ ॥ इस तरह विक्रमको परकाय प्रवेश विद्या सिद्ध हुई ।

—इस प्रकार यह विद्यासिद्धिका प्रबंध है ॥ ५ ॥

७) फिर एक दूसरे अवसरपर, विक्रमादित्य राजपाटिका (बहिर्भ्रमण) में जा रहा था तब मार्गमें सिद्धसेन सूरिको आते देखा । उस नगरका (जैन) संघ उनके पीछे पीछे आ रहा था और बन्दी जन

१. ‘ राजपाटिका ’ यह प्राकृत ‘ रायनाडिया ’ और देस्य ‘ रदवाडी ’ शब्दना सङ्घट भाषातर है । पुराने समयमें राजा आदि रायनायक पुरुष प्रायः मध्याह्नोत्तर तीसरे प्रहरके अतमें या चतुर्थे प्रहरमें, राजमहलसे अनुचर आदिके साथ परिवारके साथ निकल कर, प्रधान राजमार्गसे होते हुए नगर या गाँवके बाहर जो राजनीय उद्यानादि स्थान होते थे उन्में जाते थे और वहापर फटे-दाटे टहर कर, सध्याकाल होते समय वापस निवासस्थान पर आते थे । राजार्जोना यह इस प्रकार टहलने या हवाखानेके लिये जो महल बाहर जाना होता था उसको राजपाटिका कहते थे ।

‘सर्वज्ञपुत्र’ कह कर उनकी स्तुति कर रहे थे। ‘सर्वज्ञपुत्र’ इस विरुद्धसे कुपित होकर विक्रमादित्य ने उनकी सर्वज्ञताकी परीक्षाके लिये मन-ही-मन प्रणाम किया। सिद्धसेन ने भी पूर्वगत श्रुतज्ञानके द्वारा राजाका मनोगत भाव समझकर, दाहिना हाथ उठाकर धर्मलाभ का आशीर्वाद दिया। राजाने जब आशीर्वाद देनेका कारण पूछा, तो महर्षिने कहा कि—तुम्हारे मानस नमस्कारके लिये यह आशीर्वाद दिया गया है। इस पर उनके ज्ञानसे चकित होकर राजाने उनके पारितोषिक निमित्त एक करोड़ सुवर्ण वितरण किया।

८) एक बार, एक दूसरे अवसरपर, राजाने कोशाच्यक्षसे अपने दिलाए हुए सुवर्णका वृत्तान्त पूछा, तो वह बोला कि—धर्मकी बहीमें मैंने श्लोक बनाकर सुवर्णका वृत्तान्त लिखा है; जो इस प्रकार है—

६. दूर-ही-से हाथ उठाकर ‘धर्मलाभ हो’ इस प्रकार कहनेवाले सिद्धसेन सूरिको राजाने एक कोटि [सुवर्ण] दिया।

इसके बाद श्री सिद्धसेन सूरिको सभामें बुलाकर राजाने जब कहा कि—उस सुवर्णको ग्रहण कीजिये। तो उन्होंने कहा कि—खाये हुए को खिलाना वृथा है। उसी सुवर्णसे ऋणप्रस्ता पृथ्वीको ऋणमुक्त कीजिये। इस प्रकारका उपदेश मिलनेपर, सूरिके सन्तोषसे सन्तुष्ट होकर राजाने उस बातको स्वीकार किया।

९) उसी रातको राजा वीरचर्या^१ निमित्त नगरमें घूम रहा था, उस समय एक तेलीको बारबार इस (श्लोकार्थ) को पढ़ते सुना—

७. ‘हमारा संदेश नारद! कृष्णको कहना।’

राजा सचेरा होनेतक रुका रहा पर उत्तरार्थ न सुन सका। उदास होकर राजमहलमें आकर सो गया। सबेरे सामयिक कृत्य करके राजाने उस तेलीको बुलाकर उत्तरार्थ पूछा। उसने कहा—

‘जगत् दासिद्रश्ये दुःखित है [इस लिये] बलिके बन्धनको छोड़ो ॥ ७ ॥’

यह सुनकर सिद्धसेन सूरिके उपदेशको फिरसे कहा हुआ समझकर पृथ्वीको ऋणमुक्त करना शुरू किया। [उज्जयिनीमें राजा विक्रमादित्य भट्टमात्रके साथ गुप्त वेश धारण करके महाकालके मंदिरमें नाटक देखने गया। कुछ समयके बाद नागरिकके लड़के द्वारा कराये जानेवाले नाटकमें सूत्रधारके मुखसे उसका वर्णन सुनकर राजाने भी उस नागरिकका धन ले लेनेके लिये मन-ही-मन लोभ किया। बादको कुछ समय बीतनेपर वह प्यासा होकर मुख्य वेश्याके घर परसे भट्टके पाससे पानी मंगवाया। वहां बुढ़िया वेश्या प्रधान पुरुषोंसे कह कर उसके लिये ईखका रस लेनेके लिये उपवनमें गई। काटनेवालोंसे ईख कटवाकर उसका रस निकलवाया पर उससे घड़िया बिलकुल नहीं भरी तो मनमें दुखी होकर ऊपरका शकोर भर कर ही बहुत देरसे आई। राजाके रस पी लेनेपर भट्टमात्रने उसकी देरी और उदासीका कारण पूछा। वह बोली—और और दिन तो एक ही ईखसे घड़ा और शकोर दोनों भर जाते थे लेकिन आज तो घड़ा भी नहीं भरा। इसका कारण समझमें नहीं आता। भट्टमात्रने फिर पूछा कि—तुम लोग तो बड़ी पकी बुढ़ियाली होती हो इसलिये इसका कारण जानकर और विचारकरके बताओ। फिर वेश्या बोली कि—पृथ्वीके मालिक (राजा) का मन प्रजाके प्रति विरुद्ध होगया है, इसलिये पृथ्वीका रस भी क्षीण होगया है। यह कारण उसने निवेदन किया तो राजा भी उसके बुद्धिकौशलसे चकित हुआ। वह फिर अपने घरकी शय्यापर सोया हुआ इस प्रकार विचार करने लगा कि—प्रजा-पीडन किये बिना, केवल विरुद्ध चिन्ता मात्रसे ही पृथ्वीके रसकी इस प्रकार हानि हुई! तो

१ वीरचर्या—उस जमानेके राजा अपनी प्रजाके सुख दुःखोंकी बातें स्वयं जानने—सुननेके लिये कभी कभी रातके समय, एकाकी गुप्तवेगमें महलोंसे बाहर निकल जाते थे और दो चार घंटे इधर उधर घूम फिर कर नगर चर्चोंका प्रत्यक्ष अनुभव करते थे। इसका नाम वीरचर्या है।

में अब प्रजाको पीड़ा नहीं पहुँचाऊँगा । ऐसा निश्चय करके राजा दूसरी रातको प्यासका बहाना करके परीक्षाके लिये फिर उसके घर गया । वह शीघ्र ही ईश्वरका रस ले आई और राजाको दिया जिसे पीकर वह [अपने महलमें आया और] शय्यापर सो गया । भद्र मात्रके पूंछनेपर वेदयाने भी [उसी तरह] निवेदन किया (बताया) कि—[आज] राजाका मन प्रजापर प्रसन्न है । राजाने भी रातबारी अपनी बात बताकर, परके चित्तको इस प्रकार पहचान लेनेके कारण, सन्तुष्ट होकर उस वृद्ध वेदयाको [पारितोषिकके ढंगपर] हार दिया ।—इस प्रकार यह राजाके मनके अनुसार होनेवाले पृथ्वीरसका प्रबंध है ।]

१०) इसके बाद एक बार श्री सिद्धसेन सूरीने, यह पूछे जानेपर कि—‘ मुझ (विक्रम) के समान क्या कोई [और भी] जैन राजा होगा ? ’ कहा—

८. एक हजार एक सौ निन्यानवे वर्ष पूर्ण होनेपर तुझ विक्रमादित्य के समान एक कुमार [पाळ] नामक राजा होगा ।

११) इसके बाद, एक दूसरे अवसरपर, जब राजा जगत्को ऋणमुक्त कर रहा था, अपने औदार्य गुणका अहंकार करते हुए उसने सोचा कि—‘ प्रातःकाल एक कीर्तिस्तम्भ बनवाऊँगा । [उसी दिन] रातको वीरचर्या निमित्त चतुष्पथमें घूम रहा था कि दो सांड़ उड़ते हुए सामने आये । उनसे डर कर राजा किसी दारिद्र्यग्रस्त ब्राह्मणकी पुरानी गोशालाके एक खंभेपर चढ़ गया । वे दोनों सांड़ भी साँगसे बारंबार उसी खंभेपर प्रहार करने लगे । इसी बीच उस ब्राह्मणने अकस्मात् जग कर, आकाशमें शुक्र और बृहस्पतिसे अवरुद्ध चन्द्रमण्डलको देखकर, गृहिणीको उठाया और चन्द्रमण्डलसे सूचित होनेवाले राजाका प्राणभय जान कर कहा कि—उसकी शान्तिके लिये हवनीय द्रव्यसे हवन करूँगा । राजा कान लगा कर यह बात सुन रहा था । गृहिणीने उससे कहा—‘ इस राजाने सारी पृथ्वीको तो ऋणमुक्त किया है, लेकिन मेरी सात कन्याओंके विवाहार्थ तो कुछ द्रव्य नहीं दिया । तो फिर शान्तिकर्म करके उसे व्यसन (संकट) से मुक्त करनेमें क्या लाभ है ? ’ इस प्रकार उसकी बात सुन कर वह सर्वथा गर्वसे रहित हुआ और उस संकटसे छूटकर और उस कीर्तिस्तम्भकी बातको भूलकर चिरकाल तक राज्य करता रहा ।

—इस प्रकार यह विक्रमादित्यकी निर्गर्वताका प्रबन्ध है ॥ ६ ॥

[इसके बाद एक दूसरी रातको एक धोत्रिनसे राजाने पूछा कि—‘ वखोंमें वाद क्यों लगी रहती है और वे गन्दे क्यों हैं ? ’ उसने कहा—

[३] हे महाराज, यह जो दक्षिण समुद्ररूपी दक्षिण नायककी वधु, रेवाकी प्रतिस्पर्द्धिनी, गोदावरी नामक प्रसिद्ध नदी, जिसका तट गोविन्दके प्रिय गोकुलोंसे आकुल है, उसका, जल, वर्षाकाल वीत जानेपर भी आपकी सेनाके हाथियोंके दौंटरूपी मूसलसे प्रक्षोभित घूलिके कारण, स्वच्छ नहीं हुआ ।

[४] उस राजाओंके राजाने धोत्रिनकी यह बात सुन कर भूक्षेप मात्रमें अपने शरीरके आमूषणोंके साथ एक लाख [का दान] दे दिया ।

[५] राजा विक्रमादित्यने चौर, मागध (भाट), ब्राह्मण और धोत्रिनसे कविता सुन कर [रातके] चारों पहर दान दिया ।]

—^१ इस प्रकार यहापर विक्रमके संबंधके [और भी] विविध प्रबंध, परंपरा द्वारा जानलेने चाहिए ।

^१ इस पंक्तिके लेखके बहुतगुणपर यह सूचित करना चाहते हैं कि विक्रमके विषयके जैसे ये प्रबन्ध हमने यहां लिखे हैं, वैसे और भी अनेक प्रबन्ध हैं, जिनका ज्ञान अन्यान्य ग्रंथों प्रबन्धों द्वारा प्राप्त करना चाहिए। हमने तो यहां पर कुछ दिग्दर्शन करनेके लिये ही ये मोटेसे प्रबन्ध लिख दिये हैं ।

१२) एक वार, आयुके अन्तमें विक्रमादित्य का शरीर कुछ कमजोर हुआ तो एक वैद्यने उपदेश दिया कि, कौवेका मांस खानेसे रोगकी शान्ति होगी। जब राजा उसे पकवाने लगा तो इससे वैद्यने राजाका प्रकृति-व्यत्यय देखकर कहा—इस समय धर्मोपघ ही बलवान है। क्यों कि प्रकृतिकी विकृति होनेसे उत्पात होता है। जीवनके लोभसे लोकोत्तर सत्त्व-प्रकृतिका त्याग करके काकमांस खाकर आप किसी तरह भी न जियेंगे। वैद्यके ऐसा कहनेपर उसको 'परमार्थब्रान्धव' कह कर राजाने उसकी प्रशंसा की और पारितोषिक देनेके लिये कहा। फिर और हाथी, घोड़ा, कोश इत्यादि सर्वस्य याचकोंको देकर, राजपुरुषों और नागरिकोंसे विदा लेकर, धवल गृहके किसी निर्जन प्रान्तमें तत्कालोचित दान और देव-पूजन करके कुशासनपर बैठ गया और सोच ही रहा था कि ब्रह्मद्वारसे प्राणोंकी निकाट दूँ; अकस्मात् आविर्भूत अप्सराओंके समूहको देखा। राजाने हाथ जोड़कर प्रणाम करके उनसे पूछा कि—'तुम लोग कौन है?' इस पर अप्सराओंने कहा कि—विस्तारके साथ कुछ कहनेका यह अवसर नहीं है; हम तो विदा लेनेके लिये ही यहां आई हैं। इस प्रकार कहकर जाती हुई अप्सराओंसे राजाने फिर कहा—'नवीन ब्रह्मने आप लोगोंको एक अद्वितीय रूप दे कर बनाया है। फिर भी जानना चाहता हूँ कि, यह अद्वितीय रूप नासिकाहीन क्यों है?' इस पर वे ताड़ी बजाकर हँसती हुई बोली—'अपने ही अपराधकी हमारे ऊपर डाळ रहे हो?' ऐसा कह कर वे चुप हो गईं। तब राजाने कहा—आप लोग तो स्वर्ग लोकमें रहती हैं। आपके ऊपर मेरे अपराधकी सम्भावना कैसे हो सकती है? इस तरह राजाका वचन समाप्त होनेपर उनमें की मुख्य सुमुखीने कहा—'हे राजन्, पूर्वतन पुण्यके प्रभावसे नव निधियोंने तुम्हारे महलमें अवतार ग्रहण किया था, हम लोग उन्हींकी अधिष्ठात्री देवतायें हैं। आपने जन्मसे महादान देते हुए भी एक ही निधिमैसे इतना ही मात्र दिया है कि जिससे आप नासाग्र देख नहीं सकते।' इस प्रकारका उनका कथन सुनकर हाथसे सिर ठोकते हुए राजाने कहा कि—'यदि मैं जानता कि नव निधियां अवतीर्ण हुई हैं तो उन्हें नौ ही पुरुषोंको दे देता। दैवने अज्ञान भावसे मुझे वाञ्छित किया।' उसके ऐसा कहते समय उन्होंने यह कह कर आश्वासित किया, कि—कल्पियुगमें तो आप ही एकमात्र उदार हैं। और वह परलोक प्राप्त हुआ। उसी दिनसे उस विक्रमादित्यका संवत्सर प्रवृत्त हुआ जो आज भी जगत्में वर्तमान है।

॥ श्रीविक्रमादित्यके दान विषयक ये विविध प्रबंध पूरे हुए ॥



२. सातवाहन राजाका प्रबन्ध ।



१३) दान और विद्वत्ताके विषयमें श्री सातवाहनकी कथा परम्परागत यथाश्रुतिके अनुसार जानना चाहिये । उसके पूर्व जन्मकी कथा इस प्रकार है—प्रतिष्ठानपुरमें सातवाहन राजा जब राजपाटिका (बहिर्भ्रमण) करने जा रहा था तो नगरके निकट नदीमें एक मछलीको हँसते देखा, जिसे लहरोंने पानीके किनारे फेंक दिया था । इस अस्वाभाविक बातको देखकर राजाको भय हुआ । उसने सभी पंडितोंसे इस संदेहको पूछते हुए एक ज्ञानसागर नामक जैन मुनिसे भी पूछा । अपने अतिशय ज्ञानके बलसे उसने राजाके पूर्वजन्मको जानकर इस प्रकार उपदेश दिया कि—‘ पिछले जन्ममें तुम इसी नगरमें रहते थे । तुम्हारे कुल-वंशमें कोई नहीं था । और तुम्हारी जीवनवृत्ति एकमात्र लकड़ीका बोझ ढोना था । तुम नित्य ही भोजनके अवसर पर इसी नदीके निकटवर्ती शिलातलपर बैठकर पानीसे सत्तू सानकर खाया करते थे । किसी दिन, एक महीनेके उपवासकी पारणाके लिये नगरमें जाते हुए एक जैन मुनिको घुटाकर वह सत्तूका पिंड उनको दानकर दिया । उस पात्रदानके माहात्म्यसे तुम सातवाहन नामक राजा हुए और वह मुनि देवता हुआ । वही देवता अपने अधिष्ठान वश होकर, उस काष्ठभारवाही जीवको तुम्हें इस राजाके रूपमें पहचानकर, प्रमादके कारण हँस पड़ा । ’ इस कथागत वस्तुका संग्रह सूचक यह [पुरातन] काव्य है—

९. मछलीके मुँहके हँसनेपर जो सातवाहन राजा भयभीत होगया था उससे मुनिने कहा कि जिसने सत्तूसे मुनिको पूर्व जन्ममें जो पारणा कराया था वही आप हैं और देवात् मछलीने आपको पहचान लिया इसलिये वह हँस रही ।

वह सातवाहन उस पूर्व जन्मके वृत्तान्तको जातिस्मृतिसे प्रत्यक्ष करके उस दिनसे दानधर्मकी आराधना करता हुआ सब महाकवियों और विद्वानोंका संग्रह करता रहा । उसने चार करोड़ सुवर्णसे चार गाथाओंको खरीदा और सात सौ गाथाओंवाला ‘ सातवाहन ’ नामक संग्रह गाथा कौश शास्त्र निर्माण कराया । इस प्रकार वह नाना सद्गुणोंका निधि बनकर चिरकाल तक राज्य करता रहा । वे चारों गाथायें ये हैं । जैसे—

[प्रबन्धचिन्तामणिकी मूल पाठकी जो आवृत्ति हमने तैयार की है उसमें यहाँ पर (देखो पृष्ठ ११) १० प्राकृत गाथायें दी हुई हैं । इन गाथाओंके क्रम आदिके विषयमें पुरानी प्रतियोंमें बहुत कुछ गड़बड़ मालूम देती है । कोई प्रतिमें तो ये गाथायें खरीदा नहीं दी गई हैं और ‘ गाथाचतुष्टयमेतद् ’ (अर्थात्—ये चार गाथायें इस प्रकार हैं) इस वाक्यके बदले ‘ तद्गाथाचतुष्टय बहुभुतेभ्यो ज्ञेय ’ (अर्थात्—ये चार गाथायें बहुभुत विद्वानों द्वारा ज्ञाननी चाहिए) ऐसा वाक्य है; और कुछ प्रतियोंमें पहली ५ गाथायें लिखी हुई मिलती हैं, कुछमें दूसरी ५ गाथायें, कुछमें दसों गाथायें मिलती हैं । हमने मूलमें, सप्रक्रीं दृष्टिसे इन दसों गाथाओंका पाठ दे दिया है । इनमें पहला गाथा-पत्रक है वह शृंगार विषयक वस्तुका वर्णनवाला है; दूसरा गाथा-पत्रक अन्यौक्तिद्वारा सत्यस्योके परेषकार भावका वर्णन करता है । इन गाथाओंका अर्थ इस प्रकार है—]

१० ‘ हार, ’ ‘ वेणीदंड, ’ ‘ खट्वाद्दगालि ’ और ‘ ताल ’ इन ४ वस्तुओंका वर्णन करनेवाली ४ गाथायें सातवाहन राजाने दसकोडि [सुवर्ण] दे कर प्रहण कीं ॥ १ ॥

१ विक्रमकी तरह सातवाहन राजाकी भी बहुतसी कथायें परंपरासे चली आती हैं । वि क्र म च रि त के समान सातवाहन चरित भी बना हुआ है । संस्कृतके कथासहितानर नामक प्रसिद्ध ग्रंथमें सातवाहनकी बहुतसी कथायें गूयी हुई हैं । वे सब कथायें मेहतुंगवदरि के समयमें बहुत प्रचलित थीं और लोक-प्रसिद्ध थीं इसलिये उन्होंने उन कथाओंको इस ग्रंथमें संकलित नहीं किया । वि क्र म के बाद सातवाहन प्रसिद्ध ऐतिहासिक दानशील राजा हो गया और उसने भी विद्वानोंको खूब धन दान किया, इसलिये सिद्ध उरुका नाम निर्देश करनेके निमित्त ही यह इतना-सा वृत्तान्त उसके विषयमें मेहतुंगवदरिने लिख दिया है । इसकी विशेष चर्चा अगले ऐतिहासिक विवेचनवाले भागमें की जायगी ।

[हारका वर्णन करनेवाली गायिका अर्थ इस प्रकार है—]

११. खूब पुष्ट और ऊंचे ऊठे हुए स्तनोंवाली स्त्रीके यक्षस्थलपर रहा हुआ [मोतीयोंका] हार स्थिर होकर रहनेकी ठीक जगह न मिलनेसे छातीपर उद्विग्न अथवा उन्मुख होकर इधर उधर फिरता रहता है—जैसे यमुना नदीके प्रवाहमें पानीके फेनके बुदबुदे इधर उधर फिरते रहते हैं ।

['वेणीदण्ड' का वर्णन करनेवाली गायिका अर्थ इस प्रकार है—]

१२. हे सुन्दरि, तेरा यह कृष्णकांति-वेणीदण्ड नितम्ब-विम्बर जो शोभ रहा है वह मानों ऐसा लगता है कि सुरतस्थानरूप महानिधिकी रक्षा करनेवाला कोई सुजंग है ।

['खट्वोद्गालि' के वर्णनवाली गायिका अर्थ इस प्रकार है—]

१३. सुरत-संभोगके समय जो संतोषदायक सुंदर सुखानुभव हुआ, उसका विरह होनेसे, हे प्रिय सखि ! यह खाट चूं चूं ऐसा शब्द कर रही है ।

['ताल' का वर्णन करनेवाली गायिका अर्थ इस प्रकार है—]

१४. हे शुक ! तूं इसे चांचके लगाने-ही-से गिर जानेवाला पका हुआ आमफल मत समझ । यह तो जरठ हो जानेसे वेस्वादवाला और उभडा हुआ तालफल है ।

[दूषण गायिका-यंचक है उसमें 'कदली वृक्ष', 'विन्ध्य गिरी', 'स्नेहाधार' और 'चन्दन वृक्ष' इन ४ वस्तुओंका अन्योक्तिमय वर्णन है। इसकी आखिरी १० वीं गायामें कहा गया है कि सालीवाहन राजाने ये गायामें ९ कोडि (प्रत्यंतरमें ४ कोडि) देकर ग्रहण कीं। इनका अर्थ क्रमशः इस प्रकार है—]

१५. जो पुरुष, केलके झाडके समान, दूसरोंकी फल देते हुए अपना विनाशका भी विचार नहीं करते, उनके सामने मरना भी बांछनीय है ।

१६. जिस तरह विन्ध्याचल पर्वत सदा सरस (हरे भरे) वृक्षोंको धारण करता है वैसे ही शुष्क- (निकम्मे) वृक्षोंको भी धारण करता है । उसी तरह बड़े पुरुष अपने उत्संगवर्ती—समीपवर्ती निर्गुणोंका भी त्याग नहीं करते ।

१७. वे मुञ्जार' जिन्होंने तृपित होकर प्रथम ही प्रथम जो स्नेहाधार (जलधारा) का जैसे तैसे करके पान किया है वे फिर आजन्म अन्य पानकी इच्छा नहीं करते ।

१८. शुष्क हो जानेपर भी जिस चन्दनके वृक्षका, सब जनोंको आनन्द देनेवाला ऐसा सुरभि गन्ध है वह जब सरस भाववाला (हरा फूला) होगा तब तो फिर कैसा ही होगा ।



३. शीलव्रतके विषयमें भूयराजका प्रबंध ।

१४) यह प्रबंध इस प्रकार है—कान्यकुब्ज देशमें, जो छत्तीस लाख गाँवोंका प्रगणा है, 'कल्याण कटक' नामक राजधानीमें भूयराज नामक राजा राज्य कर रहा था। किसी दिन प्रभात कालमें जब कि वह राजपाटिका करनेके लिये जा रहा था, उस समय खिड़की पर बैठे हुई किसी मृग-नयनीको देखता हुआ उसका अपहरण करनेके लिये अपने पानीयके अधिकारी पुरुषको आदेश किया। उसने उसे राज-भवनमें लाकर किसी संकेत स्थलपर रखकर राजाको निवेदन किया। वहाँ आकर राजाने उसका हाथ पकड़कर खींचना चाहा तो इसपर वह राजासे बोली—'स्वामिन्, आप तो सर्व देवताके अवतार हैं; अफसोस कि आपका इस नीच नगरमें क्यों अभिलाष है?' उसके इस वाक्यसे राजाकी कामाग्नि कुछ शान्त हुई, और वह बोला कि—'तुम कौन हो?' उसके यह कहनेपर कि 'मैं आपकी दासी हूँ'—राजाने कहा कि 'यह बात क्या ठीक कह रही हो!' तो उसने बताया कि 'आपका दास जो पानीयका अधिकारी है, मैं उसकी स्त्री, और आपकी दासानुदासी हूँ।' उसकी बातसे राजा चकित हुआ और उसकी कामपीडा सर्थया विछीन हो गयी। उसको अपनी पुत्री मानकर उसे विदा किया। उस (स्त्री)के शरीरमें हमारे हाथ लगे हैं, यह सोचकर उनके निग्रह (नष्ट करने) की इच्छासे रातको यह भ्रान्ति जन्माकर कि खिड़कीके रास्ते कोई प्रवेश कर रहा है, अपने ही पहरेदारोंसे अपने दोनों ही हाथ काटवा डाले। संधरे पहरेदारोंको मंत्रीलोग दण्ड देने लगे तो उन्हें रोककर मालव मण्डलमें महाकाळ देवके प्रासाद (मन्दिर) में जाकर उनकी आराधना करता रहा। देवताके आदेशसे जब दोनों मुजायें छग गईं तो अपने अन्तःपुरके साथ सारा मालवदेश उसी देवको समर्पण कर दिया और परमार [जातिके] राजपूतोंको उसकी रक्षाके अधिकारी नियुक्त करके स्वयं तापसी दीक्षा ग्रहण की।

—इस प्रकार शीलव्रत विषयक यह भूयराजका प्रबन्ध है ॥ ९ ॥

४. वनराजादि प्रबन्ध ।

१५) उसी कान्यकुब्ज देशके [अधिकारमें] गुर्जर धरित्री (गुजरात) भी एक प्रांतरूप है । उस गुजरातके वदीयार नामक देशके पश्चात्तराममें चापोत्कट वंशमें जन्म लेनेवाले एक बालकको उसकी माता झोलीमें रखकर और उसे 'वण' नामक वृक्षमें लटकाने लकड़ी चुन रही थी । कार्यवश वहां आये हुये श्री शीलुगुणसूरि नामक जैनाचार्यने यह देखकर कि, अपराह्नमें (दोपहरके बाद) भी उस वृक्षकी छाया नहीं झुक रही है, सोचा कि इस झोलीवाले बालकके पुण्यका ही यह प्रभाव है; और इस आशासे कि [भविष्यमें] यह जैन धर्मका प्रभावक पुरुष होगा, उसकी माताकी वृत्तिका उचित प्रबन्ध करवाकर उस बालकको उससे अपने अधीन ले लिया । वीरमती गणिनी नामक एक आर्या बालकका पालन करने लगी । गुरुने उसका नाम वनराज रखा । जब वह आठ वर्षका हुआ तो गुरुने देवपूजाके द्रव्योंको नष्ट करनेवाले चूहोंसे उस द्रव्यकी रक्षा करनेके काममें उसे नियुक्त किया । वह तो उन्हें बाणोंसे मारने लगा । गुरुके निषेध करने पर उसने कहा कि—'ये चूहे तो चौथे उपाय यानि दण्डसे ही साध्य हैं।' उसके जातक (जन्मकुण्डली) में राजयोग देखकर और यह निर्णय करके कि यह महा नृपति होनेवाला है, गुरुने उसे फिर उसकी माताको सौंप दिया । वह माताके साथ किसी पल्ली (गाँव) में रहने लगा । वहां उसका मामा रहता था जो डकैती करता था, उसका वह आदरपात्र बन गया और उसके साथ गाँवों और नगरोंमें, अपने पौरुषका आतंक बतलाता हुआ, चारों ओर छूट-पाट करने लगा ।

१६) एकबार काकर नामके गाँवमें किसी व्यवहारिके घरमें संध मारा और धन चुराते समय उसका हाथ दहीके भाण्डमें पड़ गया । तब यह सोचकर कि मैंने इस घरमें खाया है, सब कुछ वहीं छोड़कर निकल गया । दूसरे दिन उस व्यवहारिकी बहन श्रीदेवीने, रातको गुप्तरूपसे, उसे भाईके समान स्नेह बतलाकर अपने यहाँ बुलाया और पूछा—'मेरे घरमें प्रवेश करके तुमने सब सार प्रहण करके भी इस तरह क्यों छोड़ दिया ?' उसने कहा—

२०. कोप करनेका निमित्त मिलने पर भी उस मनुष्यके प्रति कैसे पापविचार किया जाय जिसके घरमें उपलब्ध (कमलपत्र) के समान सुकुमार हाथकी गीला* बनाया हो ।

उस छीने भी उसकी बात सुनकर और उसके चरित्रसे चमत्कृत होकर भोजन और वस्त्र आदिसे उसका उपकार किया । वनराजने उसके बदलेमें प्रतिज्ञा की कि—मेरे पद्मभिषेकके समय तुम्हीं बहन होकर टीका देना ।

१७) इसके बाद, एक दूसरे अवसरपर जब वह डकैती करने जा रहा था उस समय [उसके साथी] चौरोंने किसी एक जंगलमें जाम्बा नामक वनियेकी जा घेरा । ये चोर जो तीन थे उनको देखकर वनियेने अपने पासके पांच बाणोंसे दोको तोड़ डाले । चौरोंके पूछनेपर बोला कि—तुम तो तीन ही जन हो, इसलिये उससे अधिक दो बाण व्यर्थ हैं । ऐसा कहकर उसने उनके बतौर हुए एक चूहेके लक्ष्यको अपने बाणसे बाँध दिया था । उसके इस लक्ष्यवेषसे सन्तुष्ट होकर, वे उसे अपने साथ ले गये । उसकी ऐसी युद्ध-विद्यासे चकित होकर श्री वनराजने यह आदेश देकर विदा किया कि—मेरे पद्मभिषेकके समय तुम महामन्त्री होगे ।

* हाथ गीला बनानेका तात्पर्य भोजन करनेसे है ।

१८) बादमें कान्यकुब्ज देशसे एक पञ्चकुल (कर बसूल करनेवाला) गुजरात देश का कर उगाहने आया। यह गुजरात देश उस कान्यकुब्ज देशके राजाने अपनी 'महणका' नामक कन्याको दहेजमें दे दिया था। इस पञ्चकुलने उस वनराज नामक पुरुषको अपना सेलभृत् (शाखाधिकारी) बनाया। छ महाने तक देशसे कर बसूल कर २४ लाख पारूयक द्रम्म (चौदाके सिक्के ?) और ४ हजार अच्छी नस्लके तेजवान् घोड़े लेकर जब वह पञ्चकुल अपने देशको चला तो वनराजने सीराष्ट्र नामक घाटपर उसे मार डाला और फिर उस राजाके भयसे साठ भर तक किसी वनमें जाकर छिपा रहा।

१९) इसके बाद, अपने राग्याभियेकके लिये राजधानीका नगर बसानेकी इच्छासे एक अच्छी भूमि खोजने लगा। पीपलछा सरोवरके किनारे, अणद्विह्व नामका भाखुयाइ साखड़का लडका जो सुखपूर्वक बैठा था, उसने पूछा कि—'तुम यहांपर क्या देख रहे हो?' उसके प्रधानोंके यह कहनेपर कि नगर बसानेके योग्य अच्छी भूमि देखी जा रही है। यह बोला कि—'यदि उस नगरको मेरे नामपर बसाओ तो मैं वैसी भूमि बताऊँ।' यह कहकर वह जाते वृक्षके पास गया और वहां जितनी भूमिमें खरगोशके द्वारा कुत्ता ग्रासित होता रहता था उतनी भूमिको उसने बताया। उसी भूमिमें वनराजने अणद्विह्वपुर इस नामसे नया नगर बसाया।

[यहांपर, एक 'I' नामक प्रतिमें अणद्विह्वपुरकी प्रशंसा बतलानेवाले निम्नलिखित पद्य लिखे हुए मिलते हैं—]

[६] जो (नगर) हारका अनुरूपण करनेवाले प्राकार (खाई) से प्रकाशित हो रहा है, वह ऐसा लग रहा है मानों सत्ययुग वृत्तानकार होकर कलियुग उसकी रक्षा कर रहा है।

[७] जिस नगरमें रातके आरंभमें चन्द्रशाळा (ऊपरी तल) में खेलती हुई स्त्रियोंके मुखकी शोभासे आकाश ऐसा जान पड़ता है कि उसमें सैकड़ों चन्द्रमा उदय हुए हैं।

[८-९] जिस नगरके निजयी गुणके सामने लंका को शंका हो गई, चम्पा कांपने लगी, विदिशा क्रुश हो गई, काशीकी सम्पत्ति नष्ट हो गई, मिथिलाका आदर शिथिल हो गया, त्रिपुरीकी शोभा निपरीत हो गई, मधुराकी आकृति मन्थर (सुस्त, फीकी) पड़ गई और धारा भी निराधार हो गई।

[१०] जिस नगरके खीजन और कीरवेदरके सैन्यमें हम कोई अन्तर नहीं देखते क्यों कि दोनों ही 'गामेय-कर्ण' (खी-पक्षमें सोना है कानमें जिनके; और सेना-पक्षमें भीष्म और कर्ण हैं जिनमें) हैं।

[११] जिसके आगे प्रोढ़ शोभावाली अलकापुरीकी पुलक नहीं होता (आनंदित नहीं होती), लंका अति शंकावुला हो उठती है, उज्जयिनीकी भी कमी जात नहीं होती, चम्पा अति कांपती रहती है, कान्तिपुरी कान्तिरिभूषिता नहीं होती, अयोध्या अतियोध्या हो जाती है, ऐसा यह अद्भुत पचन (अणद्विह्वपुर) नगर है जिसमें लक्ष्मी सदा नाच करती रहती है। इस नगरकी जय हो।

२०) श्रीरिक्तमादित्यके संवत् ८०२ आठ सौ दोमें-प्रयंतरमें, संवत् ८०२ के वैशाख सुदी दूज, सोमवारको-उस जाति वृक्षके नीचे बड़ा भारी राजप्रासाद बनाकर राग्याभियेक लगनेके समय श्रीवनराजने काकर प्रामकी रहनेवाली उस प्रतिज्ञात बदन श्रीदेवीको बुलाकर उसके हाथसे तिलक करवाया। उस समय उसकी आयु पचास वर्षकी थी। यह जांबा नामक वणिक महामंत्री बनाया गया। पद्मासुर प्रामसे श्रीश्री लघुपशूरीको भक्तिसे साध ले आकर पवत्र गृहमें अपने मिश्रासनपर बैठाया और शृतशोमें श्रेष्ठ होनेके कारण एषान्न राग्य उर्ध्वे समर्पण किया। उन निःशुद्ध गृहिने उसका बार बार निषेध किया। किन्तु उसने

उनके प्रत्युपकारकी बुद्धिसे उन्हींकी आज्ञासे श्री पार्ष्णनाथकी प्रतिमासे अलंकृत पश्चात्तर नामक चैत्य बनवाया और उसमें देवकी आराधना करती हुई अपनी निजकी मूर्ति भी स्थापित की। धवल गृहमें कण्ठेद्वारी देवीका भी मन्दिर बनवाया।

२१. वनराज के समयसे ही गूर्जरोका यह राज्य जैन मंत्रों द्वारा स्थापित हुआ है इसलिये इसका द्वेषी कभी भी आनन्द प्राप्त नहीं कर सकता।

२१) संवत् ८०२ से लेकर ५९ वर्ष २ मास २१ दिन तक श्री वनराजने राज्य किया। श्री वनराज की पूरी आयु १०९ वर्ष २ मास २१ दिन की थी।

संवत् ८६२ की आपाद सुदी तृतीयाको अश्विनी नक्षत्र और सिंह लग्नके बीतते समय श्री वनराजके पुत्र श्री योगराजका राज्याभिषेक हुआ।

[B. P. प्रतिमें “संवत् ८०२ से लेकर ६० वर्ष तक श्री वनराजने राज्य किया। संवत् ८६२ वर्षमें श्री योगराजका राज्याभिषेक हुआ (P. प्रतिमें श्री योगराजने राज्य अलंकृत किया),” इतना ही पाठ है।]

२२) उस राजा (योगराज) के तीन लड़के हुए। किसी समय क्षेमराज नामक कुमारने राजाको इस प्रकार सूचित किया कि एक अन्य देशीय राजाके प्रवहण (जहाज) बवंडरमें पड़कर तितर बितर हो गये हैं। वे अन्यान्य बंदरगाहोंसे हटकर श्री सोमेश्वर पत्तनमें आ लगे हैं। उनमें १० हजार तेजस्वी घोड़े और १८ सौ (!) हाथी, तथा एक करोड़ किंमतवाली और और चीजे हैं। यह सब संपत्ति हमारे देशसे होकर अपने देशको जायगी। यदि महाराजकी आज्ञा हो तो उसे ले आया जाय। उसके ऐसी विज्ञप्ति करने पर राजाने वैसा करनेका निषेध किया।

उसके बाद जब वह सब स्वदेशकी अन्तिम सीमाके प्रान्तमें पहुँचा, तो बृद्धावस्थाके कारण राजाकी विकलताका विचार कर, तीनों कुमार अपनी सेना सजाकर उसपर द्रुत पडे, और आज्ञात चौर वृत्तिसे, उसके पाससे सब कुछ छीनकर अपने पिताके पास ले आये। भीतर-ही-भीतर कुपित किन्तु ऊपरसे मौन धारण किये हुए राजाने उनसे कुछ नहीं कहा। यह सब कुछ राजाको भेंटकर जब पूछा गया कि—क्षेमराज कुमारने यह अच्छा किया या बुरा! तो राजा बोला—यदि कहूँ कि अच्छा किया तो दूसरेके धन छटनेका पाप लगता है और यदि कहूँ कि अच्छा नहीं किया तो तुम लोगोंके मनमें बुरा लगता है। इससे यही सिद्ध होता है कि मौन ही रहना अच्छा है। फिर और भी सुनो! तुम्हारे प्रथम प्रदनेके उचरमें, दूसरेके धनके हरण करनेका जो मैंने निषेध किया था उसका कारण यह है कि—और और देशोंमें राजेगण, अन्यान्य राजाओंकी जब प्रशंसा करते हैं, तब गूर्जर देशमें चोरोंका राज्य है ऐसा कहकर वे नित्य उपहास किया करते हैं। जब हमारे स्थान पुरुष (प्रतिनिधि) इन बातोंके समाचार हमें देते हैं तो हमें सुनकर दुःख होता है और हमारे पूर्वजोंमें कुछ इस तरहकी बातें की थीं, इसकी हमें ग्लानि होती है। पूर्वजोंका यह कलङ्क यदि लोगोंके हृदयसे भूल जाय तो, अन्य सब राजाओंकी पंक्तिमें हम भी राज शब्दका सम्मान पावें। किंचित् धन लोभसे लुब्ध होकर तुम लोगोंने पूर्वजोंके इस कलङ्कको मांज-मूजकर फिरसे ताजा बना दिया। इसके बाद राजाने दावागारसे अपना धनुष्य मँगाकर यह आज्ञा दी कि तुम लोगोंमेंसे जो बलवान् हों वह इस धनुष्यको चढ़ावे। यथाक्रम सभी ऊठे पर जब कोई न चढ़ा सका तो राजाने खेलकी भाँति उसे चढ़ा दिया; और कहा—

२२. राजाकी आज्ञाका मंग करना, नीकरोंका वेतन काट लेना और खियोंको अलग शय्या देना—
दिना शस्त्र ही से हत्या करना कहल्यता है।

इस प्रकार नीतिशास्त्रके उपदेशानुसार, मेरी आज्ञा भंग करके बिना शत्रुके यथ करनेवाले तुम पुत्रोंको मैं क्या बंधूँ ? इसके बाद राजाने आयुके १२० वें वर्षमें प्रायोपवेशन (अन्न जलका त्याग) कर चित्तमें प्रवेश किया । इस राजाने भट्टारिका श्री योगीश्वरीका मन्दिर बनाया ।

२३) इस [योग राज नामक] राजाने ३५ वर्ष राज्य किया ।

सं० ८९७ से लेकर २५ वर्ष श्री क्षेमराजने राज्य किया ।

सं० ९२२ से लेकर २९ वर्ष तक श्री भूयङ्गने राज्य किया । इसने श्री पत्तन नगरमें भूयङ्गेश्वरका मन्दिर बनवाया ।

सं० ९५१ से लेकर २५ वर्ष तक श्री वैरसिंहने राज्य किया ।

सं० ९७६ से लेकर १५ वर्ष तक श्री रत्नादित्यने राज्य किया ।

सं० ९९१ से लेकर ७ वर्ष तक श्री सामन्तसिंहने राज्य किया ।

इस प्रकार चापोत्कट वंशमें सात राजा हुए । विक्रमादित्य संवत् ९९८ वर्ष तक [इस वंशका राज्य रहा ।]

[A प्रति और उसके साथ प्रायः मित्रता हुई D प्रतिमें यह राजागणों निम्नलिखित रूपसे मिलती है ।]

सं० *८....(?) श्रावण सुदी ४ से १० वर्ष १ मास १ दिन श्री योग राजने राज्य किया ।

सं० ८....श्रावण सुदी ५ उत्तरपादा नक्षत्र और धनुष लग्नमें रत्नादित्यका राज्याभिषेक हुआ ।

सं० ८....कार्तिक सुदी ९ से लेकर ३ वर्ष ३ मास ४ दिनतक इस राजाने राज्य किया ।

सं० ८....कार्तिक सुदी ९ रश्मिारको मघा नक्षत्र और वृषलग्नमें श्री वैरसिंह राज्यपर बैठा ।

सं० ८....ज्येष्ठ सुदी १० शुक्रवारसे लेकर ११ वर्ष ७ मास २ दिनतक इस राजाने राज्य किया ।

सं० ८....ज्येष्ठ सुदी १३ को हस्त नक्षत्र और सिंह लग्नमें श्री क्षेमराजदेवका राज्याभिषेक हुआ ।

सं० ९३....माघ सुदी १५ रश्मिारको, इस राजाको राज्य करते, ३८ वर्ष ३ महीना १० दिन व्यतीत हुए थे ।

सं० ९३५ वर्षमें आश्विन सुदी १ सोमवारको रोहिणी नक्षत्र और कुम्भ लग्नमें श्री चामुण्डराज देवका पद्मभिषेक हुआ ।

सं० ९....माघ वदी ३ सोमवारसे लेकर १३ वर्ष ४ मास १७ दिनतक इस राजाने राज्य किया ।

सं० ९३८ (?) माघ वदी ४ मंगलवारको स्वाती नक्षत्र और सिंह लग्नमें श्री आगङ्गदेव राज्यपर बैठा । इसने कर्क रापुरीमें आगङ्गेश्वर और कण्ठकेश्वरीके मंदिर बनवाये ।

सं० ९६५ पौष सुदी ९ बुधवारसे लेकर २६ वर्ष १ मास २० दिनतक इसने राज्य किया ।

सं० ९....पौष सुदी १० गुरुवारको आर्द्रा नक्षत्र और कुम्भ लग्नमें भूयङ्गदेव राज्यपर बैठा । इस राजाने भूयङ्गेश्वरका मंदिर और श्रीपत्तनमें प्रकार बनवाया ।

सं० ९....वर्षसे आषाढ़ सुदी १५ से लेकर २७ वर्ष ६ महिने ५ दिनतक इसने राज्य किया ।

इस प्रकार चापोत्कट वंशमें ८ पुरुष हुए । १९० वर्ष, २ मास, सात दिनतक इस वंशके राजाओंने राज्य किया ।]

* दिन प्रतियोगमें यह पाठ मिथ्या है उनमें इन सब्द सूचक अक्षरोंके विषयमें बड़ी गड़बड़ी है । कहीं कोई अक्षर लिखा हुआ मिथ्या है और कहीं कोई । पक्षियोंमें जो वर्ष मास आदि दिये गये हैं उनका इन अक्षरोंके साथ कोई मेल नहीं मिलता । इसलिये हमने इन अक्षरोंके स्थान शून्य ही रखे हैं । आगेके भागमें जो ऐतिहासिक विवेचन किया गया है उससे इन अक्षरोंकी निरर्थकता मान्य हो जायगी ।

चौलुक्यवंशका प्रारंभ ।

२३. हाथी (मातङ्ग होनेके कारण) सेवाके योग्य नहीं रहे, पहाड़ोंके पर गिर गये, कच्छप जड़ प्रीतिवाला है, शोपनागको दो जीमें हैं, इसलिये पृथ्वीको कौन धारण करने योग्य है—इस तरह चिन्ता करनेवाले विधाताकी सायंकालीन संध्याके चुल्लूसे कोई तलवारधारी वह सुभट उत्पन्न हुआ [जिससे चौलुक्यवंशका प्रारंभ हुआ ।]

[यह पद्य श्लेषार्थक है और उस अर्थ ही में इसका कवित्व है । एक समय ब्रह्मदेव सन्ध्या-कृत्य कर रहे थे उस समय पृथ्वीकी दशाका उन्हें विचार आया । पृथ्वीको धारण करने योग्य कौन कौन पदार्थ है इसका, विचार करते हुए उनके मनमें दिग्गजोंका खयाल आया—लेकिन वे असेव्य मालूम दिये क्यों कि वे मातंग कहलाते हैं । (संस्कृत भाषामें मातंग शब्दके दो अर्थ हैं—१ हाथी, और २ चंडाल) । फिर उन्हें कुलाचल पर्वतोंका खयाल आया, लेकिन वे पशु विहीन मान्य दिये । (पुराणोंमें पर्वतोंके पशु यानि पर इन्द्रेण वाट डाले ऐसी कथा प्रचलित है ।) संस्कृतमें पशु शब्दका अर्थ पाल भी होता है । फिर ब्रह्माका खयाल कूर्म यानि कच्छपकी ओर गया, लेकिन वह जड़प्रीतिवाला मालूम दिया । जो जड़के साथ प्रीति रखता हो वह पृथ्वीको धारण करने जैसा महान् कार्य करने योग्य कैसे हो सकता है ! (संस्कृतमें जड़ यानि मूर्ख और जल=पानी ऐसे दो अर्थ इसके होते हैं । कच्छपकी प्रीति जल यानि पानीके साथ होती ही है । इसके बाद ब्रह्माका प्यान फणितपति=शोपनागकी तरह गया—लेकिन वह उन्हें दो-जीभा मान्य दिया । सर्पके दो जीमें होती ही है । (संस्कृतमें द्विविह=दो-जभिका अर्थ चुगलखोर ऐसा निन्दात्मक भी होता है ।) इसलिये जो दो-जीभा हो वह पृथ्वीका भार उठाने लायक नहीं हो सकता । इस प्रकार ब्रह्मा इनकी अयोग्यताका खयाल कर चिन्तामग्न हो रहे थे और चुल्लूमें पानी भरकर संध्याकालि देनेका विचार कर रहे थे, उतनेमें उस चुल्लूमेंसे, हाथमें तलवार धारण किये हुए एक सुभट बाहर निकला और ब्रह्मदेवने उसे ही पृथ्वीका भार वहन करनेमें समर्थ और योग्य समझ कर उसे पृथ्वीका शासक नियत किया । उसकी जो संतान हुई वह चौलुक्यवंशके नामसे प्रसिद्ध हुई ।]

५. मूलराजका प्रबंध ।

२४) पूर्वोक्त श्री मूलराजके वंशज मुंजाळ देवके तीन पुत्र हुए जिनका नाम राज, धीज और दण्डक था । ये तीनों भाई तीर्थयात्राके लिये निकले । श्री सोमेश्वर को नमस्कार करके वहाँसे छोटते हुए अणहिल्ल पुरमें आए । वहाँ पर वे सामन्तसिंह राजाकी घुड़दौड़ देख रहे थे । राजाने विना ही कारण घोड़ेको फोड़ा मारा जिसे देखकर, राज नामक क्षत्रियने, जो कार्पटिक (कापड़िये) का वेरा धारण किये हुए था, पीड़ित होकर अपना सिर हिलोते हुए, आह ! आह ! ऐसा शब्द कहा । राजाके उसका कारण पूछने पर उसने कहा कि, घोड़ेकी यह अत्युत्तम विशेष चाळ जो न्युंछन करने योग्य है, उसको न समझकर आपने जो फोड़ा मारा वह मुझे जैसे अपने ही मर्मपर लगा अनुभूत हुआ । उसको इस बातसे चकित होकर राजाने वह घोड़ा उसीको चढ़नेके लिये दिया । घोड़ा और घुड़सगर दोनोंका सट्टा योग देखकर उसने पद पर उनका न्युंछन किया, और उसके इस आचरणसे किसी महत् कुलमाला उसे समझकर, अपनी छीला देवी नामक वहनका उसके साथ न्याह कर दिया । कुछ समय बाद जब वह गर्भवती हुई तो अकालमें ही उसकी मृत्यु हो गई । मंत्रियोंने, गर्भस्थ सन्तानका मरण न हो जाय इस विचारसे उसका पेट चीरकर सन्तानका उद्धार किया । मूल नक्षत्रमें जन्म होनेके कारण उसका नाम मूलराज रखा गया । उदय-कालीन सूर्यकी भौति जन्मसे ही तेजोमय होनेके कारण वह सबका आहरपात्र हो गया । अपने पराक्रमसे वह मामाके राज्यको यदाता रहा । सामन्तसिंह मदमत होकर उसको कर्मी राज्यसत्तार बिठा देता था और फिर

१ यह पद्य चौलुक्यवंशकी आद्य उत्पत्तिका श्लोक है । किसी कोई शिल्पकर्मसे यह लिया गया मान्य होता है । ब्रह्माके पुत्रमेंसे इस घराका मूल पुरुष पैदा हुआ और इसी लिये इस वंशका नाम चौलुक्य हुआ, यह पीछेके भाट श्लेषार्थी कल्पना है और इसका कोई ऐतिहासिक महत्त्व नहीं है यह अग्ने भगवते स्वर हो जायगा ।

होशमें आकर उठा देता था। तभीसे चापोत्कटों का दान उपहासके रूपमें मशहूर हुआ। वह इस प्रकार बार बार चिढ़ाया जानेपर एक दिन उसने अपने नौकरोंको तैयार किया और जब मानाने बेहोशीमें राज्यासनपर बिठाया तो उसे मारकर सचमुच ही वह राजा बन गया।

२५) सं० ९९३ के आपाढ़ सुदी १५ वृहस्पति वारको, अश्विनी नक्षत्र और सिंह लग्नमें, जन्मसे इक्कीसवें वर्षमें मूलराज का राज्याभिषेक हुआ।

[B. P. आदर्शमें 'सं० ९९८ में श्री मूलराज का राज्याभिषेक हुआ' ऐसा पाठ मिलता है।]

२४. शास्त्रमें तो सुना जाता है कि मूलार्क (मूल नक्षत्रका सूर्य) सब प्रकारका कल्याण करता है। लेकिन आश्चर्य है कि वर्तमानमें तो मूलराज ही ने ऐसा योग कर दिया है।

[१२] *उस विगुने स्वप्नमें आकर कहा कि चापोत्कट वंशके राजा है ह्य भूपतिके वंशमें वंशो-ज्ज्वला कन्या है। अगर तुमको यह दान की जाय तो निःशंक भावसे उसके साथ विवाह कर लेना क्यों कि यह मृगाक्षी अपने उदरमें सार्वभौम (चक्रवर्ती) राजाको धारण करेगी।

[१३] श्री गुर्जर मण्डलमें उसकी कुक्षिसे श्री राजिराजका पुत्र राजा श्री मूलराज पैदा हुआ। अपने अद्भुत महाप्रभावसे, जब यह दिग्बिजयके लिये उद्यम करता था तो उस समय केवल पृथ्वी ही नहीं कौंप उठती थी परंतु उसके साथ उसके स्वामी राजाओंके दिग् मी कौंप उठते थे।

[श्रीसीराष्ट्र मण्डलमें श्री सा....सिंहके साथ युद्ध हुआ यह प्रबंध प्रसिद्ध है*]

[१४] जिसने अपने शत्रुओंको जीत लिया ऐसे उस राजाको गूर्जरे शरोंकी राज्यश्री, उसके गुणोंसे आर्वागत होकर वाणरिपु (विष्णु) को लक्ष्मीकी तरह, स्वयं बरनेको आई।

[१५] उस महा इच्छावाले राजाने कच्छके राजा लक्षको, शत्रुको बुधी तरह घायल करनेवाले अपने वाणोंका लक्ष्य बनाया।

[१६] उस असामान्य पराक्रमीने लाटे शरके दुर्वारणीय सेनानायक वाण(र!)पको मारकर हावियोंको ग्रहण किया था।

१ गुजरातमें, उस जमानेमें शायद यह एक लोकोक्ति प्रचलित थी कि—'यह तो चाउडोंका दान है'। किया हुआ दान मिलेगा या नहीं और मिलनेपर भी वह हियर रूपसे रहेगा या नहीं—ऐसा जिस दान पर विश्वास नहीं किया जाता उसे लोग चाउडोंका दान कहकर उसका उपहास किया करते थे।

२ मूलराज शब्द पर यह श्रेय है। इसका दूसरा अर्थ मूलराज यानि मूलचंद्र यह निजाला गया। राज शब्द चंद्रमाका भी वाचक है। ज्योतिष शास्त्रके विधानानुसार सूर्य जब मूल नक्षत्रमें आता है तब वह मूलार्क योग कहलाता है। यह योग अनेक तरहके शुभ कल्याणोंका करनेवाला माना जाता है। लेकिन यह राजा तो मूलार्क नहीं है मूलराज (=मूलचंद्र) है, तो भी इसने अपने उदयकालमें वैसे ही अनेक कल्याणकारक योग कर बतलाए हैं, इसलिये यह स्वयं आश्चर्यकी बात है।

* १२ और १३ अंक वाले ये दोनों पद्य किसी पुरानी प्रशस्तिमेंसे उद्धृत किये गये मादम देते हैं। पहले पद्यमें यह बतलाया गया है कि—शायद शत्रु या अन्य किसी देवने मूलराजके पिता राजिराजको स्वप्नमें आकर यह कहा कि—चापोत्कट वंशका राजा, जो है ह्य वंशका है, उसकी गुणवती कन्यासे विवाह करनेके लिये तुमसे कहा जाय तो उसे निःशंक होकर स्वीकार लेना। क्यों कि उसकी कौलमें ऐसा गर्भ उत्पन्न होगा जो सार्वभौम राजा बनेगा। यह पद्य ऐतिहासिक दृष्टिसे महत्त्वका है। इसमें चापोत्कट वंशको है ह्य वंश कहा है। चावडाओंके मूल वंशका विचार करनेके लिये यह एक नया उल्लेख है। विशेष विचारके लिये अगला विवेचनात्मक भाग देखना चाहिए।

× यह पक्षित, मूल प्रतिमें अपूर्ण ही प्राप्त हुई है। इसका स्पष्ट कथन क्या है सो ज्ञात नहीं होता। सीराष्ट्रके किसी राजाके साथ मूलराजके युद्ध होनेका इसमें उल्लेख किया गया मादम देता है। यह पक्षित दूसरी प्रतिमें नहीं मिलती।

[१७] जिसने दानसे दारिद्र्यको नष्ट किया, शीर्षसे दुर्जनोंका दमन किया और कीर्तिसे रामचंद्रको भी म्लानकर दिया ऐसे उस राजाने चिरकाल तक राज्यका उपभोग किया ।

इत्यादि स्तुतियों द्वारा पंडित लोगोंने प्रशंसित होता हुआ वह इस प्रकार साम्राज्य कर रहा था, तब किसी अवसरपर सपादलक्ष देशका राजा, मूलराज पर चढ़ाई करनेके लिये गूर्ज रदेशकी सीमापर आया । दूसरी ओर, उसी समय तिलंगदेशके राजाका वारप नामक सेनापति भी चढ़ आया । इन दोनोंमेंसे किसी एकके साथ जब युद्ध शुरू होगा, तब दूसरी ओरसे दूसरा शत्रु आक्रमण कर बैठेगा; ऐसी परिस्थितिमें क्या करना चाहिए इसका विचार मूलराज अपने मंत्रियोंके साथ करने लगा, तो उन्होंने कहा कि कुछ समय कन्यादुर्गमें बैठकर व्यतीत कर देना अच्छा है; और जब नवरात्र आनेपर सपादलक्षका राजा अपनी बुलदेवीकी आराधनाके किये चला जाय, तब अवसर पाकर वारप नामक सेनापतिको जीत लिया जाय । और इसके बाद वापस आनेवाले सपादलक्षके राजाका भी पराजय किया जाय । उनके इस प्रकारके विचार सुनकर राजा बोला कि ऐसा करनेपर क्या लोगोंमें मेरे भाग निकलनेकी निंदा न होगी ? । इसपर वे मंत्री बोले—

२५. [परस्परके द्वन्द्व-युद्धमें] भेड़ा जो पीछे हटता है वह प्रहार करनेके लिये है, और सिंह भी आक्रमण करते समय क्रोधसे संकुचित होता है । हृदयमें वैरभावकी भर रखनेवाले और गूढ़ यंत्र चलावेवाले बुद्धिमान लोग किसी अयगणनाकी परवा न करके [सब कुछ] सह लेते हैं ।

इस प्रकार उनकी बात सुनकर मूलराजने कन्यादुर्गमें जाकर आश्रय लिया । इधर सपादलक्षके राजाने गूर्जरदेशमें ही सारा वर्षाकाल बिताया और जब नवरात्रके दिन आए तो उत्तरणभूमिमें ही शाकम्भरी नगरकी स्थापना कर गोत्रदेवी भी वहीं मंगा ली और वहीं नवरात्रकी पूजाका समारम्भ किया । मूलराजने यह हाल सुनकर मंत्रियोंके बतलाए हुए उपायको निरर्थक समझा । उसको तत्काल एक मति सूझ आई । राजकीय भेट-सौगाद भेजनेके बहाने उसने अपने सब आसपासके सामंतोंको बुलवा भेजा और फिर जासूसी काम करनेवाले अधिकारियोंके पाससे सभी राजपूतों और सैनिकोंको, वंश और चरित्रसे, पहचान कर उन्हें यथोचित दान आदिसे सम्मानित किया और समयका संकेत बताकर उन सबको सपादलक्ष देशके राजाके शिविरके आसपास तैनात कर दिया । निश्चित दिनपर स्वयं, अपनी प्रधान सौदनीपर बैठकर उसके पालकके साथ बहुत सी भूमि पार करके, प्रातःकाल जिसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सके उस तरह, सपादलक्ष नृपतिकी छावणीमें जा पहुँचा । सांडनी परसे उतरकर हाथमें तलवार लेकर मूलराजने अकेले ही वहाँ पहुँचकर द्वारपालसे कहा—इस समय राजा किस काममें होते हैं ? । जाकर अपने स्वामीको कहो कि मूलराज राजद्वारमें प्रवेश कर रहा है । यह कहता हुआ [द्वारपालने कुछ आनाकानी की तो] अपने भुजदण्डके बलसे उसे द्वारपरसे धटा दिया । फिर जब वह 'यह श्रीमूलराज द्वारमें प्रवेश कर रहे हैं'—इस प्रकार पुकार ही रहा था कि उतनेमें तो वह, उस राजाके तंबूके भीतर प्रवेश करके, राजाके पलंग पर ही स्वयं जा बैठा । यह देखकर क्षणभर तो वह राजा भयभीत होकर मौन ही रहा । फिर कुछ भय दूर करके उसने पूछा कि—'क्या आप ही श्रीमूलराज हैं ?' । मूलराजके मुँहसे 'हाँ' यह शब्द सुन कर जितनेमें यह कुछ समयोचित बोलना चाहता था, उतनेमें तो पूर्व संकेतित चार हजार सैनिकोंने उस राजाके बड़े डेरे (तंबू) को चारों ओरसे घेर लिया । इसके बाद मूलराजने उस राजासे इस प्रकार कहा—इस भ्रमण्डलमें, ऐसा कोई युद्धवीर राजा, जो मेरे सामने लड़ाईमें टिक सके, है या नहीं—इसका मैं सोच किया करता था और कोई वैसा वीर निकल आवे उसके लिये मैं सैकड़ों मित्रते मनाता था । माग्ययोगसे आप

उपस्थित हुए हैं। किन्तु भोजनके समय मक्खी पड़ जानेके समान, इस तिलक देशके तैल्लिप नामक राजाके सेनापतिको, जो मुझे जीतनेके लिये आया है, जब तक शिक्षा न दे लें तब तक आप पीछेसे हमला इत्यादि न करके रुक जाइये, यही अनुरोध करने में आपके पास आया हूँ। मूल राज ने जब ऐसा कहा तो उस राजाने इस प्रकार कहा—राजा होकर भी अपने प्राणोंकी परवा न करके, सामान्य सैनिककी भाँति अकेले ही इस प्रकार शत्रुगृहमें प्रवेश करके चले आये इसलिये [मैं तुम्हारे साहससे मुग्ध हूँ और] जब तक जीऊंगा तब तक तुम्हारे साथ हमारी सन्धि बनी रहेगी। उस राजाके ऐसा कहने पर 'ऐसा मत कहो, ऐसा मत कहो' इस प्रकार निवारण करता हुआ, उसके द्वारा भोजनार्थ निर्मंत्रित होनेपर, अवज्ञापूर्वक अस्वीकार करके, वह हाथमें तलवार लेकर उठ चला और उसी साँढनीपर सवार होकर, अपनी उस सेनासे परिवृत्त होकर उस वारप सेनापतिकी सेनापर द्रुत पड़ा। उसे मारकर उसके दस हजार घोड़े और १८ सौ हाथी छीन कर, जितनेमें पड़ाव डालनेकी तैयारी कर रहा था, उतनेमें तो अपने गुप्तचरोंसे यह सब हाल सुनकर वह सपादलक्ष का राजा वहाँसे भाग निकला।

२६) उस राजाने पत्तनमें श्रीमूलराज वसहि का [नामक जैन मन्दिर] और श्रीमुञ्जालदेव स्वामी (शिव) का प्रासाद बनवाया। वह प्रति सोमवारको शिवकी भक्ति करनेके निमित्त सोमेश्वर पत्तन (सोमनाथ पाटन) की यात्राको जाता था। उसकी इस प्रकारकी भक्तिसे सन्तुष्ट होकर सोमनाथ उपदेश देकर मण्डली नगरमें आये। उस राजाने वहाँ 'मूलेश्वर' नामका मन्दिर बनवाया। नमस्कार करनेकी इच्छासे हर्षित होकर वहाँपर नित्य आनेवाले उस राजाकी, उस प्रकारकी भक्तिसे सन्तुष्ट होकर, सोमनाथने यह कहा कि—मै समुद्रके साथ तुम्हारे नगरमें अवतीर्ण हूँगा। यह कहकर सोमेश्वर अणहिल्लपुरमें अवतीर्ण हुए। आये हुए समुद्रकी सूचना मिले इसलिये नगरके सभी जलाशयोंका पानी खारा होगया। उस राजाने वहाँपर त्रिपुररूप प्रासाद नामक शिवका मन्दिर बनवाया।

२७) इसके बाद, वह उस प्रासादके प्रबंधक होने योग्य किसी उचित तपस्वीकी खोज करते हुए उसने एक कान्यडी नामक तपस्वीका नाम सुना, जो सरस्वती नदीके किनारे, एकान्तर दिनको उपवास किया करता था और पारणाके दिन अनिर्दिष्ट भिक्षाके पाँच प्राप्तका आहार किया करता था। जब राजा उसकी वन्दना करने गया, तो उस समय उसे तीन दिनका ज्वर था। उसने अपने ज्वरको कंधामें संक्रामित कर दिया। राजाने उसे देखकर पूछा कि—यह कन्था (गुदड़ी) काँप क्यों रहीं है ?। राजाके साथ बात करनेमें असमर्थ होनेके कारण मैंने ज्वरको उसमें संक्रामित किया है—ऐसा कहनेपर, राजा बोला—यदि इतनी शक्ति है तो फिर ज्वरको सर्वथा दूर क्यों नहीं कर देते ?। राजाके यों कहनेपर उसने—

२६. पूर्वजन्मके सञ्चित हमारे जो कोई भी रोग हों वे अब उपस्थित हों। मैं उनसे अनृण होकर शिवके उस परम पदको प्राप्त होना चाहता हूँ।

शिवपुराणके इस वचनको कह कर बताया कि—'कर्म भोगे विना क्षय नहीं होते' यह जानते हुए मैं इसे कैसे दूर कर सकूँ ?। राजाने फिर त्रिपुररूप धर्मस्थानके प्रबंधक होनेके लिये उससे प्रार्थना की।

२७. अधिकार मिलनेसे तीन महीनोंमें, और मठका महन्त बननेसे तीन दिनोंमें [नरक प्राप्त होता है] ; और अगर शीघ्र ही नरकप्राप्तिकी इच्छा हो तो एक दिन पुरोहित बन जाओ।

इस सृष्टि-वाक्यके तत्त्वको जानते हुए, तपस्वी नौकासे संसार सागरको पार करके मैं फिर इस गोथ-दमें कैसे दूबना चाहूँ। इस वाक्यसे निविद्ध होकर राजाने [और कोई उपाय न सोच कर] ताम्र-शासनको

मण्डक (परोठे) में वेष्टित करके भिक्षाके लिये आये हुए उस तपस्वीके पत्रपुटमें छोड़ दिया । वह उसे न जानता हुआ लेकर वहाँसे लौट गया । यद्यपि सरस्वती नदीने पहले तो उसे मार्ग दे दिया था, पर इस वार बढ़ जानेसे जब उसे मार्ग नहीं मिला, तो वह जन्मकालसे लेकर अपने दोषोंका विचार करने लगा । तार्कालिक भिक्षा संबंधी दोषको जाननेके लिये जब उसे देखता है, तो उसमें उस राजाका दिया हुआ ताम्र-शासन मालूम दिया । इससे तपस्वीको क्रुद्ध जानकर, राजा वहाँ आया और उसकी सान्त्वनाके लिये वह जब अनुनय विनय करने लगा, तो उसने यह कह कर कि—मैंने स्वयं जो दाहिने हाथसे दान ग्रहण किया है वह अन्यथा कैसे होगा; अपने शिष्य वयज छ देव को राजाको सीपा । उस वयज छ देव ने कहा कि—शरीरमें उबटनके लिये हमको प्रतिदिन आठ पल उत्तम जातिका चंदन, चार पल कस्तूरी, एक पल कपूर तथा बचाँस वारांगनाएँ, और जागीरके साथ श्वेत छत्र प्रदान करो; तो मैं प्रबंधकका पद स्वीकार करूँगा । राजाने सब देनेका स्वीकार कर, त्रिपुरुष धर्म स्थान में उसे ' तपस्वियोंका राजा ' के पदपर अभिषिक्त किया । वह ' कंकू लो छ ' इस नामसे प्रसिद्ध हुआ । इस प्रकारके भोगोंको भोगते हुए भी वह अकुटिल भावसे ब्रह्मचर्य व्रतमें निरत रहा । एक बार रातको मूलराजकी रानी उसकी परीक्षा लेने लगी तो उसे पानका बीडा मार कर कुष्ठिनी बना दिया और फिर अनुनीत होकर उसे अपने उबटनके डेपसे और स्नानके मैले जलसे स्नान करवा कर नीरोग किया ।

यहाँपर लाखाककी उत्पत्ति और विपत्तिका प्रबंध भी दिया जाता है—

२८) प्राचीन कालमें, किसी परमार वंशमें, राजा कीर्तिराज देवकी कामलता नामकी लड़की थी । वह बाल्यकालमें, सखियोंके साथ, किसी महलके आंगनमें खेल रही थी । सखियोंने कहा कि अपना अपना वर वरण करो । घोर अन्धकारमें उस कामलताकी आँखोंका मार्ग बंद हो जानेसे, उसने फूलड़ नामक पशुपालका, जो उस महलके एक खंभेकी ओटमें खड़ा हुआ था और जिसे यह कुछ भी वृत्तान्त मालूम नहीं था, वरण कर लिया । इसके अनन्तर, कुछ वर्षोंके बाद, जब किसी अच्छे वरोंकी खोज उसके लिये की जाने लगी, तो पतिव्रता-व्रतके निर्वाहके विचारसे, उसने अपने माता पितासे अनुज्ञा लेकर उसी (पशुपाल)से विवाह किया । उन दोनोंका पुत्र लाखाक हुआ । वह कच्छदेशका राजा बना । यशोराजको उसने [अपने पराक्रमसे] खुश किया था और उसकी बड़ी कृपासे वह सबसे अजेय हो गया था । उसने ग्यारह वार मूलराजकी सेनाको प्राप्त किया था । एक वार, जब कि वह लाखाक, कपिलकोटके किलेमें रहा हुआ था उसी समय, राजा (मूलराज) ने स्वयं जाकर उसे घेर लिया । वह लक्ष (लाखाक) अपने माहेच नामक एक परम साहसी सुभटके आनेकी प्रतीक्षा करने लगा—जिसको कि उसने कहीं धाड़ पाड़नेके लिये भेजा था । यह बात जानकर मूलराजने उसके आगमनके मार्ग घेर लिये । कार्य समाप्त करके आते हुए उस मृत्युसे राजपुरुषोंने कहा ' हथियार रख दो ! ' अपने स्वामीके कार्यकी सिद्धिके लिये उसने वैसा ही करके युद्धके लिये प्रस्तुत लाखाकके पास आकर प्रणाम किया । इसके बाद संग्रामके अवसरपर—

२८. ' ऊगे हुए सूर्यने जो प्रताप नहीं बताया तो हे लाखा ! वह दिन निश्चय कहा जाता है । गिनती करनेसे तो आठ दिन मिल सकते हैं ।

१ इस वचनका भावार्थ यह मालूम देता है कि सूर्यका उदय होनेपर भी यदि जिस दिन उठना तेज नहीं दिखाई देता—अर्थात् कुशावा छाया रहता है तो लोक उस दिनको निश्चय=दुर्दिन मानते हैं । वीर पुरुष या तेजस्वी पुरुष उत्पन्न होकर भी यदि अपना कोई तेज नहीं बतलावे तो उसका उत्पन्न होना निरर्थक ही समझा जाता है ।

२ इस दूसरे वचनका भावार्थ यह ज्ञात होता है कि—वीर पुरुषको समय प्राप्त होनेपर शीघ्र ही अपना पराक्रम बतलानेके लिये उत्पन्न हो जाना चाहिए । दिनोंकी गिनती करते रहनेसे तो कुछ लाभ नहीं होता ।

इत्यादि प्रकारके बहुतसे बोध-वाक्य उस भृत्यके सुनकर और उसकी उत्कट वीरता देखकर लक्षका साइस खूब बढ़ा और उसने मूलराज के साथ बराबर तीन दिन तक द्वन्द्व-युद्ध किया। मूलराजने उसकी अजेयता देखकर चौथे दिन सोमेश्वरका स्मरण किया। रुद्रकी कला जब उसके अन्दर अवतीर्ण हुई, तो [उसके प्रभावसे] उसने लाखा को मार डाला। बादमें लाखाकी देह जब पृथ्वीपर गिरी हुई पड़ी थी तब हवाके संचारसे उसकी हिलती हुई दाढ़ीको मूलराजने पैसे छुआ। इसपर लक्षकी माताने कुपित होकर यह शाप दिया कि तुम्हारा वंश क्षति (कुष्ठ) रोगसे मरा करेगा।

२९. मूलराजने अपने प्रतापामिमें लक्षको होम करके उसकी बियोंके आँसुओंकी धाराको उन्मुक्त किया।

३०. सहसा उंचे जालमें आये हुए लक्षरूपी कच्छप (कछुआ और कच्छका राजा) को मारकर जिसने संप्रामरूपी सागरमें अपनी धी-बरताका परिचय दिया +।

३१. हे मूलराज ! दानरूपी लता, वलिके समयमें पृथ्वीमें पैदा हुई, दधीचिके समय उसकी जड़ जमी, रामके होनेपर उसमें अंकुर उगे, कर्णके समय उसमें डाल और टहनियां निकलीं, नागार्जुनके समय कलियाँ प्रकट हुईं, विक्रमादित्यके समय फूली और तुम्हारे समयमें आमूल फलवती हुई।

३२. तुम्हारे शत्रुओंके [सूने] महल, जो वर्षाकालमें, वादलोंके पानीसे ज्ञान करते हैं, उनके ऊपर जो तृण उग आये हैं उसके बहाने मानों वे कुस लिये हुए हैं, नाटीके पानीसे मानों श्राद्धकी अञ्जलि दे रहे हैं, और दीवालके ढाँकोंके गिरनेके मिससे पिण्डदान करते हैं; इस प्रकार अपने स्वामीके प्रेतके लिये वे प्रतिदिन श्राद्ध कर रहे हैं।

—इस प्रकार लाखा फूलोतकी उत्पत्ति और विपत्ति का यह प्रबंध है ॥ ११ ॥

२९) इस प्रकार उस राजाने पचपन वर्ष तक निष्कण्टक राज्य किया। एक बार सायंकालकी आरतीके अनन्तर राजाने एक दासको इनाममें पानका बाँडा दिया। उसने हाथमें लेकर देखा तो उसमें कृमि दिखाई दिये। राजाके आग्रह पूर्वक पृथ्वीपर उसने यह बात कही। इससे राजाको वैराग्य आया और उसने संन्यास ग्रहण किया और दाहिने पैरके अंगूठेमें अग्नि प्रज्वलित कर, आठ दिनतक गज दान इत्यादि महादान देता रहा।

३३. एकमात्र विनय भावके बशी भूत होकर उसने पैरमें लगी हुई उच्छ्रमकेश अग्निको सहन किया। अन्य प्रतापियोंकी तो बात ही क्या है, उसने सूर्यके मण्डलको भी भेद दिया।

इस प्रकारकी स्तुतियोंसे स्तुत होते हुए उसने स्वर्गरोहण किया।

सं० ९९८ से लेकर ५५ वर्ष श्री मूलराजने राज्य किया।

॥ श्रीमूलराज प्रबंध समाप्त ॥

१ यह श्लोक श्रेयार्थवाला है—लक्षहोम के दो अर्थ होते हैं—लक्ष=लाखा राजाका होम, और लक्ष=एक लाख बार होम। आकाशमें बादलोंकी वृष्टिका किसी कारणसे जब रुकान हो जाता है तो उसके प्रतिशारके लिये एक लाख आहुतियों वाला होम करनेका वैदिक शास्त्रोंमें विधान है। इधर, लाखाही शक्तियां, जो कभी रुदन नहीं करती थीं, उनके आयुस्की वृष्टिका प्रकार प्रकारके लिये, मूलराजने अपने प्रतापरूपी अग्निमें लाखाके होम दिया—भस्म कर दिया।

+ इस श्लोकमें 'कच्छपन्थ' और 'वीरता' शब्द पर श्रेय है। मूलराजने कच्छप=कच्छपनि लक्षराजको मारकर अपनी वीरता=श्रेय बुद्धिमत्ताका परिचय दिया। दूसरा अर्थ कच्छपन्थ यानि एक लाख कचुप, और उस अर्थमें धीरताका अर्थ मच्छीमार देना किया गया है।

मूलराजके वंशज ।

- [१८] अपने सारे शत्रुओंको समाप्त करके जब वह—(मूल राज)—कथाशेष होगया (मृत्युको प्राप्त हुआ) तो उसके बाद पृथ्वीमण्डलका आभूषण ऐसा चा मुण्ड राज राजा हुआ ।
- [१९] उसकी सेनाका साज, शत्रुओंकी खियोंके मनको संतप्त होनेकी विधा सिखानेमें निपुण पण्डित था और उसके सैन्यने इन्द्रको भी भयभीत कर दिया था ।
- [२०] उसके हाथरूपी कमलमें रहनेवाली, कोश (१ म्यान; २ कमल)में विलास करनेसे चमकती हुई तलवार रूपी भौरोंकी श्रेणीने राजाओंके वंशोंको भिन्न कर दिया ।
- ३०) संवत् १०५३ से लेकर १३ वर्षतक चा मुण्ड राज ने राज्य किया ।
- [२१] जिसकी कीर्ति तीनों लोकोंमें प्रकाशित हो रही है, और जो महीपतियोंमें श्रेष्ठ माना जाता है ऐसा बल्लभ राज नामक उसका पुत्र राजा हुआ ।
- [२२] वह दृढ़ पौरुषवाला राजा शत्रुओंकी नगरियोंको घेरे रहता था इसलिये विशेषज्ञोंने उसका नाम ' जगत्-क्षम्यन ' रक्खा था ।
- ३१) सं० १०६६ से लेकर ६ महीने तक राजा बल्लभ राज ने राज्य किया ।
- [२३] जिसमें रजोगुण और तमोगुणका अभाव था और जिसके जैसा यश प्राप्त करना औरोंके लिये अत्यंत दुर्लभ था, ऐसा दुर्लभ राज नामका उसका छोटा भाई [उसके बाद] राजा हुआ ।
- [२४] साँपकी भौंति, काल करवाल (कठिन तलवार) से सुरक्षित होकर उसका राज्य, निधानके समान, अन्धों (शत्रुओं)का भोग न हो सका ।
- [२५] सौभाग्यसे प्रकाशमान उस राजाका कर (१ हाथ; और २ मालगुजारी) सर्वथा अनुपभोग्य ऐसी परछी पर और ब्राह्मणोंको प्रदान की हुई भूमिपर, कमी नहीं पड़ा ।
- ३२) सं० १०६६ से लेकर ११ साल ६ महीने तक श्री दुर्लभ राज ने राज्य किया । इस राजा दुर्लभने पत्तनमें ' दुर्लभ सर ' नामक सरोवर बनवाया ।
- [२६] फिर, उसके भाईका लड़का ' भीम ' नामक राजा हुआ जिसकी प्रवृत्ति तीनों जगत्को अमीष्ट फल देनेवाली हुई ।

*

- [यहाँ A आदर्शका अनुसरण करनेवाली मुद्रित पुस्तकमें, यह समय-सूचक पाठ इस प्रकार है—]
- [इसके बाद सं० १५० (? १०५२) श्रावण सुदी ११ शुक्रवारको पुष्य नक्षत्र और वृष लग्नमें श्री चा मुण्ड राज का राज्यारोहण हुआ । इसने पत्तनमें चन्द्र नाथ देव और चाचि णेश्वर के मन्दिर बनाये ।
- सं० ५५ (? १०६५) आश्विन सुदी ५ से लेकर १३ वर्ष १ मास २४ दिन राज्य किया ।
- सं० १०५५ (? १०६५) आश्विन सुदी ६ मंगलवार, ज्येष्ठा नक्षत्र, मिथुन लग्नमें श्री बल्लभ राज देव गद्दी पर बैठा ।

इस राजाने जब मालवा देशकी धारानगरीके प्राकार (किलेको) घेर रक्खा था उसी समय शीली रोगसे इसकी मृत्यु हुई । इसके दो विरुद्ध थे—' राज मदन शंकर ' (राजारूपी कामदेवके लिये शिव) और ' जगत्क्षम्यन ' । सं० १० (? १०६६) चैत्र सुदी ५ से लेकर ५ महीने २९ दिन तक इस राजाने राज्य किया ।

सं० १५५ (१०६६) चैत्र सुदी ६ गुरुवारको, उत्तरापादा नक्षत्र और मकर लग्नमें, दुर्लभ राज नामक उसका भाई राज्यपर अभिविक्त हुआ। इसने पत्तनमें व्ययकरण (कचहरी), हस्तिशाला और घटी-गृह युक्त सात तट्टेवाला धवलगृह (राजप्रासाद) बनवाया। अपने भाई वल्लभराज के कल्याणार्थ मदनदाङ्कर प्रासाद बनवाया और दुर्लभसर नामक सरोवर भी बनवाया। इस तरह बारह वर्ष इसने राज्य किया।]

[प्रबन्धचिन्तामणिकी इस A संशानाली प्रतिमें चौलुक्य वंशके इन राजाओंका कालक्रम आदि कुछ मित्र क्रमसे लिखा हुआ मिश्रता है जिसका भी संग्रह करना ऐतिहासिक दृष्टिसे कुछ उपयोगी होगा ऐसा समझ कर हमने इन कोष्ठकान्तर्गत कठिकाओंमें उसे सुदृढ किया है। यह कालक्रम सूचक पाठ भी चाबडोंके कालक्रम सूचक उस द्वितीय पाठके समान अपूर्ण और अन्यवस्थित है। हमारा अनुमान होता है कि ग्रंथकारने पहले पहल जब यह कालक्रमके बतलानेवाले उल्लेखों और संवत्तोंका संग्रह करना शुरू किया होगा और वृद्ध जनोंसे तथा अन्यान्य लेखोंसे इस विषयके प्रमाण एकत्रित करने प्रारम्भ किये होंगे, उस समयका लिखा हुआ जो प्राथमिक असंशोधित आदर्श रहा होगा उस परसे यह A संशुद्ध आदर्श (तथा उसके समान जातीय अन्य आदर्श) की प्रतिलिपि हुई होगी और इसलिये इनमें यह असंशोधित कालक्रमवाला पाठ वैसाका वैसा नकल होता हुआ चला आया हुआ होना चाहिए। संशोधित पाठ वही है जो ऊपर मूलमें दिया गया है।]

*

३३) इसके बाद [A D प्रतिके अनुसार ' सं० १०५ (१०७८) ज्येष्ठ सुदी १२ मंगलवारको अश्विनी नक्षत्र, मकर लग्नमें '] श्री भीम नामक अपने पुत्रका राज्याभिषेक करके स्वयं तीर्थोपासनाकी वासनासे वाणारक्षीके प्रति प्रस्थान किया। मालवक मण्डलमें पहुँचनेपर वहाँके महाराजा मुञ्जने रोक कर इस प्रकार कहा कि—' छत्रचामरादि राज-चिन्होंका परित्याग करके कार्पटिक (संन्यासी) की भौति आगे जाओ, नहीं तो युद्ध करो '। बीच ही में उत्पन्न ऐसा इसे धार्मिक विघ्न समझकर, यह वृत्तान्त भीमराजको कहलाया और स्वयं कार्पटिकका वेश पहन कर तीर्थयात्रा की; और वहाँपर परलोक साधन किया।

३४) इसीके बाद मालवाके राजाओंके साथ गुजरातके राजाओंका दृढमूल ऐसा विरोधका बंधन बंध गया।

६. मुञ्जराज प्रबन्ध ।

३५) अब यहाँपर प्रसङ्गसे आया हुआ, मालवा मण्डल के मण्डनरूप श्री मुञ्जराज का चरित्र वर्णन किया जाता है—प्राचीन कालमें, उस मण्डलका परमार वंशी राजा, जिसका नाम श्री सिंह मठ था, राजपाटी निमित्त परिश्रमण करते हुए, उसने मुंजके वनमें एक सयःजात अति रूपयान् बालकको देखा और स्वकीय पुत्रके समान वात्सल्य भाव धारण करके उसे उठा लिया और महलमें लाकर रानीको समर्पण किया। मुंजके वनमें प्राप्त होनेके कारण उसका नाम मुञ्ज रक्खा। बादमें उसके एक सीन्धल नामक औरस पुत्र भी पैदा हुआ। [एक समय] निःशेष राजगुणोंके समूहसे भूषित ऐसे उस मुञ्जका राग्याभिषेक करनेकी इच्छासे राजा उसके महलमें गया। मुञ्ज अपनी स्त्रीको, जो उस समय वहाँ उपस्थित थी, किसी एक वेत्रासनकी ओटमें बिठाकर, प्रणाम पूर्वक राजाकी सेवा करने लगा। राजाने उस प्रदेशको निर्जन देखकर प्रारंभसे लेकर उसके जन्म आदिका वृत्तान्त कह सुनाया और फिर कहा कि—तुम्हारी भक्तिसे सन्तुष्ट होकर अपने औरस पुत्रको छोड़कर, तुम्हें राज्य दे रहा हूँ; पर इस सीन्धल नामक भाईके साथ पूरे प्रेमके व्यवहारके साथ वर्तना। इस प्रकारकी आज्ञा देकर राजाने उसका अभिषेक किया। कहीं, अपने जन्मका यह गुप्त वृत्तान्त बाहर न फैल जाय इस आशंकासे उसने अपनी उस स्त्रीको मार डाला। बादमें उसने अपने पराक्रमसे सारे भूतलको आक्रान्त किया और समस्त विद्वज्जनोंके चक्रवर्ती जैसे रुद्रादित्य नामक पंडितको महामंत्री बनाकर अपने राज्यकी चिन्ताका समस्त भार उसे सौंपा। उस सीन्धल नामक भाईको, जिसने अपने उरकट स्वभावके कारण राजाका कुछ आज्ञामंग किया था, स्वदेशसे निर्वासित कर, चिरकाल तक निष्कण्टक राज्य करता रहा।

३६) वह सीन्धल गूजर रातदेशमें आकर, अर्बुद पर्वतकी तलहट्टीमें काशहृद नगरके निकट अपना एक छोटा सा गाँव बसा कर रहने लगा। दीवालीकी रातको शिकार खेलने निकला। चोरोंको बध करनेवाली भूमिके निकट एक सूअरको चरते देख, उसने सूलीपरसे गिरे हुए एक चोरके शवको न देख कर, उसे घुटनोंसे दबा कर, जब वह अपना बाण चलाने लगा, तो उस शवने [मारनेका] संकेत किया। उसे हाथ लगा कर मना करते हुए, उस बाणसे सूअरको मार गिराया। बादमें जब सूअरको अपनी ओर खींचने लगा तो वह शव जोरोंका अट्टहास करके उठ खड़ा हुआ। इस पर सीन्धलने कहा—तुम्हारे किये हुए संकेतके समय सूअरपर प्रहार करना उचित था, या समझ बूझकर जो मैंने प्रहार किया वह ठीक था ? उसके इस वाक्यके पूरा होनेपर, वह छिद्रान्वेपी प्रेत, उसके ऐसे निःसीम साहससे सन्तुष्ट होकर बोला कि 'बरदान माँगो।' ऐसा कहनेपर—'मेरे बाण जमीनपर न गिरे' ऐसा माँगो; उस शवने कहा 'और भी कुछ माँगो।' इसपर उसने कहा कि—'मेरी मुजाओंमें सारी लक्ष्मी स्वार्थीन हो।' उसके साहससे चकित होकर उस प्रेतने कहा कि—तुम मालव मण्डलमें जाओ। वहाँ मुञ्ज राजाका विनाश निकट है, इसलिये तुम वहीं जाकर रहो। तुम्हारे ही वंशमें वहाँ राज्य रहेगा। इस प्रकार उसके कथनानुसार वह वहाँ गया और मुञ्ज राजासे कोई एक संपत्त शाली प्रदेश प्राप्त कर, कुछ काल बाद, फिर उसी प्रकार उद्धत भावसे वर्तने लगा। एक बार एक तेजीसे कुश माँगो। उसने नहीं दी। इसपर कुपित होकर, बलात्कार पूर्वक छीन कर, और उसे मरोड़ कर उसके गलेमें डाल दी। तेजीने राजाके आगे पुकार की। राजाने समझा युष्कार उसे सीधी करवाई। उसके ऐसे उरकट बलसे राजा मुञ्ज मयभीत हो गया। इसके बाद, माण्डिया करनेमें बड़े कुशल ऐसे कुछ कलावन्त विदेशसे वहाँपर आये। वे राजासे मिले। राजा उनसे अपने शरीरमें माण्डिया कराने लगा। वे भी अपनी कलासे हाथ पैर आदि अंग

उत्तर कर फिरसे बैठे चढा देते थे । इस प्रकार दो तीन बार कराया । प्रसन्न होकर राजा सौम्य लका भी इसी प्रकारका मर्दन करवाने लगा । उसके अंगोंके उत्तर लेनेपर जब वह निश्चैष्ट हो गया तो आँखें निकलवा लीं । [क्यों कि] सुसाजित अवस्थामें तो उसकी आँख निकालनेमें कौन समर्थ हो सकता था ! अतः इस प्रकार मुञ्जने उसकी आँखें निकलवा लीं और फिर उसे काठके पींजरेमें बंद करा दिया । उसके भोज नामक पुत्रका जन्म हुआ । उस पुत्रने सभी शास्त्रोंका खूब अभ्यास किया । छत्तीस प्रकारके आयुधोंका आकलन कर, बहत्तर कलारूपी समुद्रका पारगामी बना । इस तरह सभी लक्षणोंसे युक्त होकर वह बड़ा होने लगा । उसके जन्म समय किसी निमित्तज्ञ ज्योतिषोंने जन्मकुण्डली बना कर दी [जिसमें लिखा था कि—]

३४. पचपन वर्ष, सात मास, तीन दिनतक भोज राजा गौड़ देशके साथ दक्षिणापथका भोक्ता होगा । इस श्लोकके अर्थको जब मुञ्ज राजने समझा, तो सोचा कि इसके रहनेपर मेरे लड़केको राज्य नहीं होगा; इस आशंकासे उसने भोजको, बध करनेके लिये अन्त्यजोंके सुपुर्द किया । उन्होंने रातको उसकी मधुर मूर्ति देखकर, अनुकम्पाके साथ कापते हुए कहा कि—अपने इष्ट देवताको याद करो । इसपर भोजने निम्नलिखित काव्य, पत्रपर लिखकर, मुञ्ज राजको देनेके लिये समर्पण किया ।

३५. सत्ययुगके अलंकारके समान वह राजा मान्धाता चला गया । जिस रावणके शत्रु रामचन्द्रने महासागरमें सेतु बांधा था वह भी आज कहां है ? और फिर युधिष्ठिर प्रभृति अनेक राजा जो आपके समय तक हो गये हैं, सब चले गये; पर यह पृथ्वी किसीके भी साथ नहीं गई ! पर मैं समझता हूँ, तुम्हारे साथ तो जायगी !

राजा उसे पढ़कर मनमें अत्यन्त खिन्न हुआ और बालहत्या करनेवाले अपने आपकी निन्दा करने लगा । [२७] हाय, हे भोज ! मरण कालमें कहा हुआ तुम्हारा काव्य हृदय वेध रहा है । दौर्भाग्यके स्थान समान मुझ पापी, तुष्टको तुम्हीं शरण हो ।

[२८] हे गुणगार भोज ! तुझ बिना इस राज्यसे मुझे क्या काम है ? अरे कोई चिन्ता सजा दो, ताकि मैं मरकर जाकर भोजसे मिटूँ ।

तब मंत्रियोंने राजाको प्रबोधित करते हुए यह वाक्य कहा—

[२९] हे स्वामिन् ! यह अति अज्ञान सूचक है जो इस तरह अब आप बोल रहे हैं । जानना वहाँ प्रमाण है जो ऐसी कदर्थनाका कारण न हो ।

—इस प्रकार वारंवार विलाप करने लगा ।]

३७) बादमें, उनके पाससे अत्यन्त आदरके साथ बुलगाकर उसे युवराजकी पदवी देकर सम्मानित किया । तैलिप देव नामक तिलहृद्देशके राजाने सेना भेज कर उस (मुञ्ज) पर आक्रमण किया । उस समय रुद्रा दिव्य नामक महामंत्री रोगग्रस्त था; उसके बारंबार निषेध करनेपर भी मुञ्जने उसके ऊपर चढ़ाई करना चाहा । [मंत्रीने कहा—

[३०] हे महाराज ! हमारी सीख मान लीजिये, अगहैला न कीजिये । तुम्हारे उधर चले जानेपर इस (मुञ्ज) मंत्रीको भील भौंगनी पड़ेगी ।

[३१] तुम्हारे बैठे रहनेपर और मेरे लौघ (चले) जानेपर राजाका राज्य रुल जायगा । ऐसा होनेपर बड़ा ही अकाम होगा और उसकेलिये पुनः मालवके धनी जाने ।

[३२] हे स्वामिन् ! यह महेता (महत्तम=महामात्य) विनति करता है कि—अब हमारा यह आखिरी जुहार (नमस्कार) हो । हमें [जानेका] आदेश हो । क्यों कि हम तुम्हारे सिरपर राख पडती देख रहे हैं ।

इस प्रकार मंत्रीके निषेध करने पर भी वह सेनाके साथ चला ।]

[मंत्रीने आखिरमें कहा कि—] गोदा वरी नदीको सीमा मान उसे लौंघकर आगे प्रयाण न कीजियेगा । इस प्रकार मंत्रीने शपथ देकर आगे न जानेके लिये रोका था; तथापि मुञ्ज ने यह विचार कर कि पहले छ वार उसे जीता है, जोशमें आकर उस नदीको पार करके, सामने किनारे जाकर पड़ाव डाला । रुद्रादित्य ने जब राजाके उस वृत्तान्तको सुना, तो उसकी अधिनयशीलताके कारण कोई भावी विपद आनेवाली है, यह सोचकर स्वयं चिताग्रिमं प्रवेश किया । इसके अनन्तर तैलिपने छल और बलसे उसकी सेनाको तितर-बितर कर मुञ्ज राजाको गिरफ्तार कर लिया और भूजकी रस्तीसे बौध्र उसे कारागारमें बन्द कर दिया । काठके पिंजड़ेमें उसे रक्खा गया था और राजा तैलिपकी बहन मृणालवती उसकी परिचर्या करती रहती थी । मुञ्ज का उसके साथ पत्नीका-सा स्नेह सम्बन्ध हो गया । उधर पीछे रहे हुए उसके मंत्रियोंने एक सुरंग खुदवाई और उसके जरिये मुञ्जको संकेत करवाया । इतनेमें, एक बार जब वह दर्पणमें अपना प्रतिबिंब देख रहा था, तो उसी समय मृणालवती, अनजानमें, पीछे आ खड़ी हुई । उसने भी दर्पणमें अपने खुदयाके जर्जर मुखको देखा और फिर देखा कि युवक मुञ्ज राजा के मुँहके पास उसका मुँह अत्यन्त भद्दा दिखाई दे रहा है । इसलिये उसे उदास होते देख मुञ्ज ने कहा—

३६. मुञ्ज कहता है कि—रे मृणालवती ! गये हुए यौवनको हुरी मत; यदि सक्करकी डली पीसी जा कर सैकड़ों टुकड़ोंमें छिन-भिन्न हो जाय, तो भी वह मीठी चूर ही लगती है ।

इस प्रकार कह कर [उसे शान्त बनानेका प्रयत्न किया], बादमें अपने स्थानको जानेकी इच्छा-वाला होते हुए भी मृणालवतीका विरह वह नहीं सह सकता था, और भयसे उसे वह वृत्तान्त भी कह नहीं सकता था । बार बार [मृणालवतीके] पूछनेपर भी, अपनी चिन्ता न कह सका । बिना नमककी और अधिक नमक दी हुई रसोई खाकर भी जब वह उसका स्वाद नहीं जान सका तो, मृणालवती ने अत्यंत आप्रह और प्रेमपूर्वक पूछा; तब बोला कि मैं इस सुरङ्गके रास्ते अपने घर जानेवाला हूँ । यदि तुम भी वहाँ चलो तो मैं तुम्हें पटरानीके पदपर अभिविक्त करके अपने प्रसादका फल दिखाऊँ । इसपर उसने कहा कि क्षणमर प्रतीक्षा करो; तब तक मैं अपने गहनोंकी सन्दूक ले आऊँ । यह कहकर उस कात्यायिनी (दलती उमरकी विधवा) ने सोचा कि यह वहाँ जाकर मुझे छोड़ देगा, अपने भाई राजासे वह वृत्तान्त जाकर कह दिया । इस पर वह राजा, उसकी विदेश विडम्बना करनेके लिये, उसको बन्धनमें बाँधकर प्रतिदिन भिक्षाटन कराने लगा । वह घर घर घूमता हुआ, खिन्न होकर उदासीके इन बच्चोंको बोला करता । जैसे कि—

३७. वे नर मूर्ख हैं जो खीपर विश्वास करते हैं; जिस खीके चिचमें सौ, मनमें साठ, और हृदयमें बचीस आदमी बसा करते हैं ।

और भी—

३८. यह मुञ्ज जो इस प्रकार रस्तीमें बन्धा हुआ बंदरकी तरह घुमाया जा रहा है, वह बचपन-हीमें शौलीके टूट जानेसे गिरकर क्यों न मर गया, या आगमें जल कर राख क्यों न हो गया । तब किन्दी सज्जन पुरुषोंने दिलासा देते हुए कहा कि—

[३३] हे रनाकर, हे गुणपुञ्ज मुञ्ज ! चित्तमें इस प्रकार विषाद न करो । क्यों कि जिस प्रकार विधाता ढोल बजाता है उसी तरह मनुष्यको नाचना पड़ता है ।

फिर किसी और दयार्द्रचित्त सज्जनने कहा—

[३४] हे मुञ्ज ! इस प्रकार खेद न करो । क्यों कि भाग्यक्षय होनेपर वह रावण भी नष्ट हो गया, जिसका गढ़ तो ठंका था और जिस गढ़की खाई खुद समुद्र था और उस गढ़का मालिक खुद रावण दस मायवाला था ।

इसी प्रकार—

३९. हाथी गये, रथ गये, घोड़े गये, पायक और भृत्य भी चले गये । महता (महामात्य) रुद्रादित्य भी स्वर्गमें बैठे आमंत्रण कर रहा है !

वादमें, एक अवसरपर, किसी गृहस्थके घरपर वह भिक्षाके लिये ले जाया गया । उसकी स्त्री उस समय छोटे पादोंको छान पिछा रही थी । उसने उसको भिक्षाके लिये खड़ा देख कर गर्वसे कन्धा ऊँचा किया और मीख देनेका इन्कार किया । इसपर मुञ्ज बोला—

४०. हे भोली मुग्धे ! इन छोटेसे पादों (भँसके बच्चों) को देख कर ऐसा गर्व न कर । मुञ्जके तो चौदह सौ और छहत्तर हाथी थे, पर वे भी चले गये ।

उसने इस प्रकार उत्तर दिया—

[३५] जिसके घर चार बैल हैं, दो गाँव हैं और मीठा बोलने वाली ऐसी [में] स्त्री हैं, उस कुटुंबी (कण्ठी=किसान) को अपने घरपर हाथी बाँवनेकी क्या जरूरत है ?

एक दूसरी बार जब कि मुञ्जको इस प्रकार इधर उधर घुमाया जा रहा था, तब, राजा किसी बावडी पर बैठा हुआ उसे देख कर हँसने लगा । इस पर वह बोला—

[३६] ऐ धनके अन्धे मूढ़ ! मुझे विपत्तिप्रस्त देखकर हँसता क्या है ?—लक्ष्मी कभी कहीं स्थिर-होती देखी है ? तू क्या इस जलयंत्र-चक्र (अरहट) की घटियोंको नहीं देखता जो क्रमसे खाली होती हैं, भरती हैं और फिर खाली होती हैं !

इसी तरह पीछे लगकर चिढ़ानेवाले आदमियोंको देखकर उसने कहा—

[३७] मैं उन पर वारी जाता हूँ जो गोदावरी नदीके ऊपर ही अटक गये (मर गये), जिन्होंने न इन दुर्जनोंकी ऋद्धि देखी और न इस विह्वल मुञ्जको देखा ।

फिर अपनी मन्दबुद्धिताका स्मरण करता हुआ इस प्रकार बोला—

[३८] दासीको कर्मा प्रेम नहीं होता यह निश्चित जानना चाहिए । देखो, दासीने राजा मुञ्जेश्वर को घर घर मीख मँगता करवाया ।

[३९] और जो लोग अपना बडप्पन छोड़कर वैश्या और दासियोंमें राचते हैं वे मुञ्ज राजाके समान बहुत ही अनादर सहन करते हैं ।

[४०] हे * मर्कट (बंदर) ! इसलिये तुम अफसोस न करो कि मैं इस खाँके द्वारा खंडित किया जा रहा हूँ । राम, रावण, और मुञ्ज आदि कैसे कैसे लोग खिपाँसे खंडित नहीं हुए ?

* मदारी लोग बंदर और बंदरियाका जब खेल करते हैं तब, बंदरिया रुठकर बंदरका अपमान करती है और बंदरले पानी भरवाना चक्की चलाना आदि काम करवाती है । बंदर अपमानित होकर मुँह फेर बैठ जाता है और हाथसे अपने धिरेको पीटता है । इस दृश्यपर किलीक्री यह उक्ति है ।

[४१] ऐ यन्त्र, +चरखा ! तुम इसलिये न रोओ कि मैं इस स्त्री द्वारा भमाया (घुमाया) जा रहा हूँ । ये तो कटाक्ष फेंक कर ही (मनुष्योंको) घुमाया करती हैं, तो फिर हाथसे खींचने पर की बातका तो कहना ही क्या है ?

[४२] मुञ्ज कहता है कि, हे मृणालवती ! जो बुद्धि पीछे उत्पन्न होती है, वह अगर पहले ही हो जाय तो कोई विघ्न आकर घेर नहीं सकता ।

[४३] जो राजा दशरथ देवताओंके राजा (इन्द्र) के तो मित्र थे, और यज्ञ पुरुषके तेजःवंशके समान रामके पिता थे, वही पुत्रविरहके दुःखसे शय्यापर ही पड़े पड़े मर गये, उनका शरीर जलते हुए तेलके मटकेमें रक्खा गया और बहुत दिनोंके बाद उसका संस्कार हुआ । हाय, कर्मकी गति टेढ़ी है !

[४४] सिरपर विद्यु × (चंद्रमा और विधाता) के वक्र हो कर आ बैठने पर, शिवके सदृश जो सब देवताओंके गुरु हैं उनका भी कैसा हाल हो गया है सो तो देखो । उनके पास अलंकारमें तो मात्र नर-कपाल है जिसे देखते ही डर लगता है, परिवारमें जिसका साप शरीर छिन्न भिन्न है ऐसा एक भृंगी है, और सम्पत्तिमें एक ढलती उमरका बूढ़ा बैठ है ! फिर हम लोगोंके सिरपर जो विधि यानि विधाता वक्र हो कर आ बैठे तो क्या क्या हाल न हों ।

इस प्रकार चिरकाल तक भिक्षा मँगवाने बाद राजाकी आज्ञासे मुञ्ज को वन्य-भूमिमें ले गये । वहाँ पहले पहलनेका उसका वस्त्र ले लिया गया । तब वह बोला—

[४५] यह कमर जो हमेशा मतवाले हाथीके ऊपर ही बैठकर चलनेवाली थी, जो सदा विचित्र सिंहासनपर ही बैठती थी और जो अनेक रमणियोंके जघनस्थल पर लालित होती थी; वह आज इस प्रकार विधिवश विना वस्त्रकी कर दी गई !

तब मुञ्ज ने पूछा कि—‘ किस प्रकार मुझे मारोगे ? ’ [उत्तर मिला] ‘ वृक्षकी शाखामें लटका कर । ’ तब वह बोला—

[४६] कहाँ तो यह महावनमें रहा हुआ वृक्ष है और कहाँ हम संसारका पावन करनेवाले राजाओंके पुत्र ! अहो, कभी न घट सकनेवाली बातको घटानेमें पटु ऐसा यह विधिकी चरित्र बड़ा दुरवोध है !

उन्होंने कहा कि ‘ इष्ट देवताको याद करो ’ इस पर वह बोला—

४१. इस यशके पुंजके समान मुञ्जके गत होनेपर, लक्ष्मी है सो तो विष्णुके पास चली जायगी और वीरश्री है वह वीर मन्दिरमें चली जायगी; किन्तु [और कोई आश्रयस्थान न मिलनेसे] सरस्वती है सो निराश्रित हो जायगी ।

+ स्त्री जब चरखा चलाती है तब उसमेंसे हँ...हँ...इस प्रकारकी अवाज निकलती है । उस अवाजपर यह किरीकी अन्वेषिक है । स्त्री अपने हाथसे चरखेको घुमा रही है इसलिये मानों चरखा रो रहा है । कवि कहता है कि, भारं चरखा तू रो मत । स्त्रीके तो कटाक्ष मात्रसे भी मनुष्य घूमने लगते हैं, तो फिर तुझे तो यह अपने हाथसे फिर रही है ।

× यद्यपि ‘ विधौ घके मूर्ध्नि ’ इस वाक्याश पर श्लेष है । संस्कृतमें ‘ विद्यु ’ शब्द चंद्रका वाचक है और ‘ विधि ’ विधाताका । इन दोनों शब्दोंका उत्तमी विभक्तिके एक बचनमें ‘ विधौ ’ ऐसा रूप बनता है । विधके पद्यमें ‘ विपुके चक्र होनेपर; ’ और दूसरे पद्यमें ‘ विधिके चक्र होनेपर ’ ऐसा अर्थ घयया गया है ।

इस तरहके उसके अन्य बहुत वाक्य हैं जो परम्पराके अनुसार जानने चाहिये* ।

बादमें उस मुञ्ज को मारकर उसका सिर सूलीमें पिरोकर अपने आँगनमें रखवाया और उसमें रोज दही लगावा लगवाकर अपने अर्पणका पोषण करता रहा ।

४२. जो मुञ्ज यशका पुत्र था, हाथियोंका पति था, अ वन्तीका स्वामी था, सरस्वतीका पुत्र था, प्राचीन कालके जैसा कृती पुरुष था; वही कर्णाट देशके राजाके द्वारा अपने मंत्रीकी कुतुहलसे पकड़ा गया और सूलीपर चढ़ा दिया गया । हाय, कर्मकी गति कैसी विषम है ।

*

३८) उसके बाद, मालवा मण्डलके मंत्रियोंने जब यह वृत्तान्त सुना तो, उन्होने फिर उसके मतीजे भोज को राज्य पदपर अभिषिक्त किया ।

इस प्रकार श्रीमद्भक्तुल्लाचार्य रचित प्रबन्धचिन्तामणि ग्रन्थका 'राजा श्रीविक्रमादित्य प्रभृति महासाहसिक और परोपकार-आदि शुणरूपी रत्नोंसे अलङ्कृत राजाओंके चरित्र' नामक यह पदछल प्रकाश समाप्त हुआ ।

* मालूम होता है मुञ्जकी यह कथन क्या उस जमानेमें बहुत लोक प्रसिद्ध और लोक साहित्यकी विशेष वस्तु बनी हुई थी । मेघनुह्युरिने जो यहाँ पर ये कुछ संस्कृत, प्राकृत और देस्य पद्य दिये हैं वे या तो भिन्न भिन्न कर्तृक मुंज विषयक प्रबंधोंमेंसे उद्धृत किये गये हैं; या परंपरासे सुनकर लिख लिये गये हैं । मुञ्जकी इस कथामें एक तो संपत्तिकी अरिपयता और दूसरी स्त्रीकी अविश्वसनीयता और तीसरी मुंज जैसे महाबुद्धिमान् शक्तिवान् राजाकी, दुस्मनके द्वारा की गई नाशोत्पादक विटंबना-इन तीन बातोंका विचित्र संपटन हो जानेसे उपदेशकोंको अपने उपदेशकोलिये यह एक वास्तविक घटनाका बतलानेवाला कारण रखकर बोधदायक आख्यान ही मिल गया । अभी तक निश्चय नहीं हो सका कि इस कथामें ऐतिहासिक तथ्य कितना है और प्रबन्धकारोंकी बनावट कितनी है । यहाँपर जो पद्य दिये गये हैं वे तो प्रबन्धकारोंकी उपदेशात्मक उक्तिवों मात्र हैं । कुछ पद्य तो मेघनुह्युरिके मी पीछेके बने हुए हैं और किसीने प्रसंगोचित समझकर इस ग्रन्थमें प्रविष्ट कर दिये हैं ।

१. दही लगवानेका मतलब यह कि उसे देखकर बीए आवें और उस भस्मकपर बैठें । किसी दुस्मनका बहुत ही गुण चारना होता है तब लोग बोला करते हैं कि-उसके सिरपर तो कौए बैठेंगे । उसी लोकोक्तिका एक एक यह कथन है ।

७. भोज और भीमका प्रबन्ध ।

३९) इसके बाद [सं० १०७८ के साठ] जब मालवंमण्डल में श्री भोज राज राज्य करता था,

तब इधर गूर्जर भूमि में चौलुक्य चक्रवर्ति भीम पृथिवीका शासन करता था ।

एक रात्रिके अन्तमें राजा भोजने, अपने चित्तमें लक्ष्मीकी अस्थिरताको विचारते हुए और अपने जीवनको भी तरंगकी भाँति चञ्चल समझते हुए, प्रातः कृत्यके बाद, दानमण्डपमें बैठकर नौकरोंके द्वारा याचकोंको बुला, यथेच्छ सुवर्ण टंकोंका (सोनेकी मोहरोंका) दान देना प्रारंभ किया ।

४०) इस पर, रोहक नामक उसके मंत्रीने, खजानेका नाश होता देख, राजाके औदार्य गुणको दोष समझते हुए उसे रोकनेके लिये अन्य उपायोंसे समर्थ न होकर, एक दिन सर्वावसर (न्याय सभा) के उठ जाने बाद सभामण्डपके भारपट्ट पर खड़ियासे इन अक्षरोंको लिख दिया—**आपत्ति कालके लिये धनकी रक्षा करनी चाहिए ।**

प्रातः काल यथा समय राजाने उन अक्षरोंको पढ़ा । सभी परिजनोंमेंसे किसीने भी जब उस कार्यके करनेका स्वीकार नहीं किया तो राजाने उसके साथ यह लिख दिया—**भाग्यवानको आपत्ति कहाँ है ।**

इस पर मंत्रीने जवापमें लिखा कि—**कभी देव कुपित हो जाय तो ? !**

इस पर राजाने फिर उसके सामने लिख दिया कि—[तब तो] सञ्चित भी विनष्ट हो जायगा । इससे निरुत्तर होकर उस मंत्रीने अमय वचन माँगकर उस कथनको अपना लिखा बताया । बादमें राजाने कहा, कि मेरे मन्त्ररूपी हाथीको ज्ञानरूप अंशसे वशमें रखनेके लिये महामात्रके समान ५०० पण्डितोंका यह समूह यथेच्छ रूपसे अपना अपना प्राप्त प्राप्त किया करें ।

राजाने अपने जीवनका ध्येय सूचित करनेवाली ऐसी चार आर्याओंको अपने कङ्कणपर खुदवाई^१ जिनका अर्थ यह है—

४४. यही उपकार करनेका अवसर है; जब तक कि स्वभावतः ही चञ्चल ऐसी यह सम्पत्ति विद्यमान है । फिर वह विपत्ति कि जिसका उदय भी निश्चित है, उसके आनेपर उपकार करनेका अवसर कहाँ रहेगा ? ।

४५. हे पूर्णिमाके चन्द्रमा ! अपने किरण-समूहकी समृद्धिसे अभी आज इस सारे भुवनको उज्ज्वल कर दे । [फिर यह मौका न मिलेगा, क्यों कि] निर्दय विधाता चिरकाल तक किसीका सुस्थिर होना सह नहीं सकता ।

४६. ऐ सरोवर ! दिन और रात याचकोंका उपकार करनेका यही अवसर है । यह जल तो उन पुराने बादलोंके उदय होनेपर फिर सर्भ-सुलभ ही है ।

४७. ऐ किनारेके वृक्षोंको गिरा देनेवाली नदी ! यह सुदूर तक उन्नत दिखाई देनेवाला पानीका पूर तो कुछ ही दिनों तक ठहरेगा; पर यह एक पातक (पेड़का गिरा देना) तो चिरस्थायी होकर रहेगा । और फिर—

१ इसका मतलब यह है कि राजा भोजने अपने पास ५०० पण्डित रखे थे जिनके निर्वाहके लिये राज्यकी ओरसे स्थायी प्राप्तका प्रबन्ध कर दिया गया था ।

२ पुराने जमानेमें यह एक प्रथा थी कि—विचारशील लोग, जिस किसी सद्विचारको अपना जीवन-ध्येय बना लेते थे उसका सतत स्मरण रहा करे इसलिये उस विचारके द्युतको अपने हाथके कंकणपर उल्लोकी कण (खुदा) लेते थे और उसका संदेव अवलोकन किया करते थे । बलुगाल आदि अन्य भी महापुरुषोंने अपने जीवनद्युत कंकणपर खुदवा रखे थे ।

४८. सूर्यके अस्त होनेके पड़ते जो धन याचकोंको नहीं दे दिया गया, मैं नहीं जानता, वह धन प्रातःकाल किसका होगा ।

इस प्रकार अपना ही बनाया हुआ यह श्लोक जो मेरे कण्ठका आमरण-सा हो गया है उसको इष्ट मंत्रकी तरह जपता हुआ, हे मंत्रिन् ! मैं आप जैसे प्रेतके समान [लोमी] पुरुषसे कैसे ठगा जा सकता हूँ ।

४९) एक दूसरे अवसरपर, राजा राजपाटिकामें धूमता हुआ नदीके किनारे जा खडा हुआ । वहाँ सिरपर काठका भारा उठाए हुए और पानीको लाँच कर आते हुए किसी दरिद्री ब्राह्मणको देखा । उससे उसने पूछा कि—

४९. ' कितना है पानी ब्राह्मण ! ' उसने कहा—' घुटने तक है राजा । '

राजाने फिर पूछा—' तेरी अवस्था ऐसी क्यों ? ' वह बोला—' आप जैसे सब कहीं नहीं ! '

उसके इस वाक्यको सुनकर राजाने जो पारितोषिक उसे दिया, मंत्राने धर्म-खातेमें इस प्रकार छिड़ रखा—

५०. " जानुदत्त " (जानुतक) कहनेवाले ब्राह्मणको समुद्र होकर भोजने एक लाख, फिर एक लाख, फिर एक लाख; और उसपर दस मतवाले हाथी; इस प्रकार दान दिया ।

४२) एक दूसरी बार रातमें, आधीरातको राजाकी अचानक नींद खुली । उस समय आकाशमण्डलमें चंद्रमा नया ही उदित हुआ था । उसे देखकर वह अपने विचाररूपी समुद्रके उठते हुए तरंगके जैसा यह काव्यार्थ बोलने लगा—

५१. यह चंद्रमाके भीतर, बादलके टुकड़ेकी-सी जो लीला कर रहा है लोग उसे शशक (खर-गोश) कहते हैं, किन्तु मुझे वह ऐसा नहीं मादूम देता ।

राजाके वारंवार ऐसा कहनेपर, कोई चोर जो उसी समय सेंध मारकर, कौशगृहमें घुसा था, अपने प्रतिमाके वेगको रोकनेमें असमर्थ होकर बोल उठा—

' मैं तो चंद्रमाको ऐसा समझता हूँ कि तुम्हारे शत्रुओंकी विरहान्कत तरुणियों (स्त्रियों) के कटाक्षरूपी उरुपातके सेकड़ों ऋणके चिन्हसे वह अंकित हो रहा है । '

उसके ऐसा बोल पड़ने पर, अंगरक्षकोंने उसे पकड़ लिया और कारागारमें बंद कर दिया । इसके बाद प्रातःकाल, सभामें ले आये हुए उस चोरको राजाने जिस पारितोषिकसे पुरस्कृत किया, उसे धर्म-खाताके काममें नियुक्त अधिकारीने इस प्रकार छिड़ा—

५२. उस चोरको, जिसे मृत्युका भय लगा हुआ था, राजाने ऊपर छिड़े दो चरणोंके लिये प्रसन्न होकर यह दान दिया—दस करोड़ सुवर्ण मुद्राएँ और ऊपर आठ हाथी, जो दंतोंके आघातसे पर्वतका भेदन करते थे और जिनके मदसे मुदित हो कर भीरे गुजारव किया करते थे ।

[फिर एक बार खिड़कीकी जालीसे आते हुए चंद्रमाको देख कर बोला—

[४७] हे मृत्यु ! खिड़कीकी जालीमेंसे प्रवेश करनेके कारण जिसकी चाँदनी खंड खंड हो गई है, वह चंद्रमा, तुम्हारे वशःस्पष्ट पर आकर विराज रहा है ।

उसी समय घरमें प्रवेश करनेवाले चौरने कहा—

' यह चंद्रमा मामों तुम्हारे स्तनके संगकी आसक्तिके वश होकर आकाशमेंसे शंपापात कर नीचे कूदा है और दूरमें गिरनेके कारण खंड खंड हो गया है । '

इस चोरको भी उसी तरहका दान दिया गया और उसे धर्म-बहीमें लिख लिया गया ।]

४३) इसके बाद, एक बार, जब वह बही [राजाके आगे] बांची जाने लगी तो राजा अपनेको बड़ा उदार दानी मानकर घमंडरूपी भूतसे आविष्ट होनेकी भाँति—

५३. मैंने वह किया जो किसीने नहीं किया, वह दिया जो किसीने नहीं दिया, वह साधना की जो असाध्य थी; इसलिये [अब] हमारा चित्त दुःखित नहीं है ।

इस प्रकार वांस्वार अपने भाग्यकी प्रशंसा करने लगा । तब किसी पुराने मंत्राने, उसके अभिमानको दूर करनेकी इच्छासे, श्री विक्रम आदित्यकी धर्म-वही राजाको दिखाई । उसके ऊपरवाले विभागमें शुरूमें ही पहला काव्य इस प्रकार था—

५४. तुम्हारे मुखकमलमें ' सरस्वती ' बसती है, ' शोण ' तो तुम्हारा अधर ही है, और रामचन्द्रके वीर्यकी स्मृति दिलानेमें पटु ऐसी तुम्हारी दक्षिण मुजा ' समुद्र ' है । ये वाहिनियाँ (सेना और नदियाँ) सदा तुम्हारे पास रहती हैं; क्षणभर भी तुम्हारा साथ नहीं छोड़ती; और फिर तुम्हारे अंदर ही यह स्वच्छ मानस (मानसरोवर, मन) है; तो फिर हे राजन्, तुम्हें जलपानकी अभिलाषा क्यों हो ? ' १

इस काव्यके पारितोषिकमें राजाने इस प्रकार दान दिया था—

५५. आठ करोड़ स्वर्णमुद्रा, ९३ तुला मोती, मदमत्त भौरोंके कारण क्रोधसे उद्धत ऐसे ५० हाथी, चलनेमें चतुर ऐसे दस हजार घोड़े और सौ वेश्यायें;—यह सब जो पाण्डव राजाने दण्डके स्वरूपमें विक्रम राजाको भेंट किया था; वह उसने उस वैतालिकको दानमें दे दिया । २

इस प्रकार उस काव्यके अर्थकी जानकर, विक्रमकी उदारतासे अपने सारे गर्व सर्वस्वको पराजित मानकर, उस बही की पूजा करके उसे यथास्थान रखवा दिया ।

४४) एक समय, प्रतीहारने आकर सूचित किया—' महाराजके दर्शनके लिये उत्सुक ऐसा एक सरस्वती-कुटुम्ब द्वारपर खड़ा है । ' शीघ्र प्रवेश कराओ ' राजाकी ऐसी आज्ञा होनेपर पहले उसकी दासिने प्रवेश करके कहा—

५६. बाप भी विद्वान् है, बापका बेटा भी विद्वान् है, माँ भी विदुषी है, माँकी लड़की भी विदुषी है; जो उनकी त्रिचारी कानी दासी है वह भी विदुषी है; इसलिये हे राजन् ! मैं समझती हूँ कि यह सारा कुटुम्ब ही विद्याका एक पुञ्ज है ।

उसके इस हास्यकर वचनसे राजाने जरा हँसकर, उनमेंके सबसे बड़े पुरुषको बुलाया और यह समस्या दी—' असारसे सारका उद्धार करना चाहिये । ' ३

[उसने इसकी पूर्ति इस तरह की—]

५७. धनसे दान, वचनसे सत्य, और जैसे ही आयुसे धर्म और कीर्ति तथा शरीरसे परोपकार—इस प्रकार असारसे सारका उद्धार करना चाहिये ।

१ किसी समय विक्रम राजाने अपने नोकरके पीनेको पानी मागा तब पासमें बैठे हुए किसी कविने यह पद्य बनाया और राजाको सुनाया । इधमें, सरस्वती, शोण, दक्षिण समुद्र, मानस और वाहिनी इतने शब्दोंपर श्लेष है । ये सब शब्द दार्थक हैं, जिनमें एक अर्थ प्रसिद्ध जलाशय वाचक है और दूसरा अन्याय वाचक है । यथा—सरस्वती=१ नदी, २ विद्यादेवी; शोण= १ नद, २ लालवर्ण; दक्षिण समुद्र=१ महासागर, २ मुद्रावाला हाथ; वाहिनी=१ सेना, २ नदी; मानस=१ सरोवर, २ मन ।

२ इस पद्यमें जो सामग्री वर्णित की गई है वह विक्रम राजाको दक्षिणके पाण्डव राजाने दण्डके रूपमें दी थी और उठी सामग्रीको विक्रमने किसी वैतालिक यानि स्तुतिपाठक कविको, उक्त श्लेषकके कहेपर पारितोषिकके रूपमें—दानमें दे दिया; यह इच्छा तात्पर्य है ।

इसके बाद राजाने उसके पुत्रको [यह समस्या दी]—‘हिमालय नामक पर्वतोंका राजा है !’—
‘प्रवाल (तृणाकुर) की शय्याको शरीरका शरण’ बनाया। राजाके इस वाक्यको सुनकर उसने उत्तर दिया—
५८. वह जो हिमालय नामक पर्वतोंका राजा है, तुम्हारे प्रतापरूपी अग्निसे पिघल रहा है; और गिरहसे
आतुर बनी हुई भेना (हिमाडय-पत्नी भेनका) अपने शरीरको प्रवाल (तृणाकुरों) की शय्याके
शरण कर रही है।

इम प्रकार उसके समस्या पूरी कर देनेपर, ज्येष्ठकी पत्नीको राजाने समस्याका यह पद अर्पित किया—
किससे पिलाऊँ दूध ?

५९. जब रावण पैदा हुआ तो उसने एक शरीरपर दस मुँह देख कर उसकी माता बड़ी विस्मित हुई
और सोचने लगी कि कौनसे मुँहसे इमे दूध पिलाऊँ ?

—उसने इस प्रकार यह समस्या पूरी की।

इसके बाद राजाने दासीसे भी इम प्रकारका पद सयस्याके लिये दिया—‘कंठमें काक लटक रहा है।’
६०. पतिगिरहसे कराळ बनी हुई किसी स्त्रीने उस बेचारे कौवेको उड़ाया तो, बड़ा आश्चर्य मने
हे सखि ! यह देखा कि वह काक उसके कंठमें लटक रहा *।

उसने इस तरह पूरा किया। राजाने उस कुटुंबमेंकी लड़कीको भूलकर, अन्य सबको सत्कार
करके विदा किया।

बादमें राजाने जब सर्वासर (राजसभा) का विसर्जन किया और स्वयं चन्द्रशाखा (चाँदनी=महलके
ऊपरकी छत) की भूमिमें छत्र धारण करके टहल रहा था, तब द्वारपालने उस लड़कीका वृत्तान्त कहा।
राजाने उसे [बुलाकर] कहा—‘कुठ बोली’—‘नो वह बोली कि—

६१. हे राजन्, हे मुञ्जकुटके दीपक, हे समस्त पृथ्वीके पालक, राजाओंके चूडामणि ! इस भवनमें
रातमें भी, तुम इस प्रकार छत्र धारण करते हो वह उचित ही है। इससे न तो तुम्हारे मुखकी
कानिनी देखकर चंद्रमाको लज्जित होना पड़ता है और न भगवती अरुन्धतीको (पर पुरुषके
मुखदर्शनसे) दुःशीलताका भाजन होना पड़ता है।

उसके इस वाक्यके अनन्तर राजाने, जिसके चित्तको उसके सौन्दर्य और चातुर्यने हरण कर लिया था,
उससे विवाह करके अपनी मोगिनी बनाया।

* इस पद्यमें ‘काठ’ इस देश्य शब्दपर श्लेष है। काठ काग-काक-नीआ वाचक तो शब्द है ही—इसके सिवा
गलेमें जो एक लटकता हुआ छोटामा मांसपिंड है उसका नाम भी काक-काग (गूजपती-कागडा) है। कोई विचरिनी स्त्रीका
शरीर इनका कृषा होगया है कि जिससे उसके कंठमें लटकना हुआ काग सत्यता बहार दिलाई देता है। उसके धरके सामने आ
आकर कौआ बोल्ता है, जिसका यह अर्थ समझा जाता है कि, उसका स्वजन आनेवाला है। लेकिन उसके बारबार ऐसा
बोल्ने पर भी वह जन नहीं आता मान्द देता है तो फिर वह विचरिनी चिदकर उस कौवेको उडा देती है। इस कौवेके उडाते
समय उसके पासमें बैठी हुई सन्धिको उसके दुर्बल कंठमेंका वह काग नजर आया। इस अर्थकी घटना बतलानेके लिये कथिने
इस पद्यमें ‘काठ’ शब्दका प्रयोग कर उसकी समस्यापूर्ति कराई है। इस पद्यके गुजराती और इमजी भाषांतरकारोंने इन
पद्योंके कुछके कुछ उदाहरण अर्थ किये हैं।

भोजकी गूजरातके राजा भीमके प्रति प्रतिस्पर्धा ।

४५) इसके बाद, एक समय, संविपत्रके होते हुए भी, सन्धिमें शोष उत्पादनके विचारसे भोज राजाने गूर्जर देशकी बुद्धिमत्ताका ज्ञान प्राप्त करनेकी इच्छासे अपने सान्धिविप्रहिकके हाथ, भीमके पास यह [प्राकृत] गाथा लिख भेजी—

६२. ब्रीडा मात्रमें जिसने हाथीका कुम्भस्थल विदीर्ण किया हो और चारों दिशामें जिसका प्रताप फैल रहा हो उस सिंहाका, मृगके साथ न तो विप्रह ही [शोभता है] और न सन्धि ही [रहती है] ।

भीमने इस गाथाका उत्तर देनेके लिये सब महाकविधर्मसे गाथा माँगी । पर उनकी बनाई सब गाथाओंको निःसारार्थक देखकर वह सोचमें पड़ गया । उसी समय नगरमेंके जैन मन्दिरके अन्दर नाचनेके लिये सज्ज बनी हुई नर्तकीको खंभेके पास खड़ी हुई देखकर मंत्रीने वहाँ बैठे हुए किसी आचार्य-शिष्यसे स्तंभ-वर्णनके लिये कहा । वह बोला—

[४८] हे स्तंभ ! तुम जो इस मृगनयनी नवयौवनाकी, कंकणाभरण आदिसे सजित बाहुलतासे [विष्टित होकर भी] न स्वेद-युक्त होते हो, न हिलते हो और न काँपते हो; सो सचमुच ही तुम पत्थरके बने हो यह निश्चित होता है ।

[आचार्य-शिष्यकी विद्वत्ताकी यह बात जब मंत्रीने राजासे कही तो राजाने [उसके गुरु] आचार्यको बुलाकर उस विषयमें पूछा—

६३. विधाताने भीमको अन्धकके * पुत्रोंको मारनेके लिये ही निर्माण किया है । जिस भीमने सो [अन्धक पुत्रों] को कुछ नहीं गिना उसके सामने तुझ अकेलेकी क्या गणना है ! '

इस प्रकार गोविन्दाचार्यकी बनाई हुई चित्तको चमत्कृत कर देनेवाली इस गाथाको दूतके हाथ भेजकर, सन्धिके दोषको दूर किया ।

४६) बादमें किसी एक रातको, जाड़ेके दिनोंमें, राजा जब वीरचर्यामें घूम रहा था, तो किसी मन्दिरके सामने, किसी पुरुषको यह पढ़ते सुना—

६४. मेरा पेट भूखसे व्याकुल है, आँठ फट गये हैं, ऐसी अरस्यामें फंरते फंरते आग टंडी हो गई है, चिन्ताके समुद्रमें डूब रहा हूँ, शीतसे मापके फलकी तरह सिजुड़ गया हूँ । निद्रा अपमानिता खीनी भौंति कहीं दूर चली गई है; और सत्पात्रमें दी गई लक्ष्मीकी भौंति रात भी खतम नहीं हो रही है ।

यह सुनकर रात बिताकर सपेरे उसे बुलाकर पूँछा—' किस प्रकार तुमने रात्रिशोषमें शीतका अत्यन्त उपद्रव सहन किया ? ' । ' सत्पात्रमें दी गई लक्ष्मी ' इत्यादि कथनकी ओर संकेत करके उसने कहा था । [वह बोला—] ' महाराज ! मैं खूब गाढ़े तीन बलोंसे जाड़ा काटता हूँ । ' राजाने पूछा कि तुम्हारे ये तीन बल क्या हैं ? तब उसने फिर कहा—

६५. रातमें घुटने, दिनमें सूर्य और दोनों शामको आग, इस प्रकार हे राजन् ! घुटने, सूर्य और आगके चलपर मैं शीत काटता हूँ ।

जब उसने इस प्रकार कहा तो राजाने उसे तीन लाखका दान देकर सन्तुष्ट किया ।

६६. तुमने अपनी आमाको धारण करके बलि, कर्ण आदि उन त्यागमूर्ता धनवान पुरुषोंको मुक्तकर

* यद्यपि ' अन्धक ' इस शब्दरत्न श्रेय है । कीर्त्तिका निद्रा धृत्वाद् अन्धा या इत्येव्ये उत्तमो अन्धकः कृतः है । भोजका निद्रा विभुत्वं भी अन्धा या इत्येव्ये उत्तम विधानं भी अन्धकः सार्थकः है ।

दिया, जो सज्जनोंके चित्तरूपी कैदखानेमें आवद्ध थे ।

इस प्रकार जब वह सारज्ञान् काव्यका उद्गार प्रकट कर रहा था तो राजाने उसका परितोषिक देनेमें अपनेको असमर्थ समझ कर अनुरोधपूर्वक रोक दिया ।

[यहाँ P. B. नामक प्रतिमें निम्नांकित वर्णन अधिक पाया जाता है—]

[४९] शीतसे रक्षा करनेके लिये पटी (वस्त्र) नहीं है, आग सुलगानेके लिये सगड़ी नहीं है । कमर भूमिपर घिस गई है—सोनेको शय्या नहीं है, कुटियामें हवाके रोकनेका कोई उपाय नहीं है, खानेको मुड़ीमार चावल नहीं है, घड़ीमार भी मनमें संतोष नहीं है, शृंगार की कोई वृत्ति नहीं है, मनको प्रसन्न करनेवाली कोई प्रिया नहीं है, लेनदारोंसे संकटमें पडा हूँ; ऐसी दशामें हे भोजराज ! तुम्हारे कृपास्वामी हाथी द्वारा ही मेरी इस आपदाकी तटीका नाश हो सकता है ।

इस श्लोकमें आई हुई ग्यारह टी^१के हिसाबसे भोजराजाने उसे ११ लाखका दान दिया ।

एक बार, किसी विद्वत्कुलके निवासके लिये घर देखे जा रहे थे । उनके न मिलनेपर राजाने कहा कि जुटाइओ और मच्छीमारोंको उजाड़ दिया जाय । जब राजपुरुष उन्हें उजाड़ने लगे तो एक जुटाहा उन्हें रोऊकर राजाके पास गया, और बोला कि—महाराज ! क्यों हमें उजाड़ रहे हैं ? तो राजाने पूछा—क्या तू कविता करता है ? वह बोला—

[५०] जिसके चरणोंपर राजाओंके मुकुटके मणि छोटते रहते हैं ऐसे हे साहसांक महाराज ! मैं काव्य तो करता हूँ पर सुन्दर नहीं कर पाता । जैसा-तैसा करता हूँ पर सिद्ध नहीं होता । मैं उसका क्या करूँ ? मैं कविता करता हूँ, कपडा बुनता हूँ और अब जाता हूँ ।

धीवरकी बट्टू भी हाथमें मांस लेकर राजाके पास गई और बोली—

[५१] ' महाराज, तुम्हारी जय हो ! '—' तू कौन है ? '—' लुच्यक (धीवर) की बट्टू । '—' हाथमें यह क्या है ? '—' मांस । '—' सूखा क्यों है ? '—' यों ही '—और यदि महाराज ! आपको कौतुक हो तो कहती हूँ कि—तुम्हारे शत्रुओंकी प्रियाओंके आँसूकी नदीके किनारे सिद्धोंकी बियाँ गान करती हैं । गीतमें अन्ये होकर हरिण चरते नहीं । इसलिये उनका यह मांस दुर्बल हो गया है ।

इस प्रकार उक्ति-प्रयुक्तिमय ये दो काव्य सुनकर राजाने उन्हें नगरके भीतर स्थापन किया ।

एक बार, कोई विद्वान्, जो गर्वोद्धत था, उस नगरके निवासियोंको घरमें ही गरजनेवाले समझकर अवज्ञापूर्वक वादके लिये आया । नगरके सर्माप किसी पुरुषसे (बोधीसे) जो वस्त्र धो रहा था बोला—' अरे साड़ीका मैल धोनेवाले ! नगरमें क्या हाउचाउ हो रहा है ? ' वह बोला—

[५२] घोड़े तोरण लगे हुए मवानोंका टोने है, गाथें केसरके सहित कमलोंको चरती हैं, दही यहाँ-पर पीछा मिथता है, तिलमें यहाँ तैल नहीं होता और मकानोंके दरवानेके शिखरपर हिरण चरा करते हैं ।

इसके बाद, किसी बाटिकासे पूँजा—' तू कौन है ? ' तो वह बोली—

[५३] मेरे हुए जहाँ जींदा होंने हैं, जिनकी आयु बीत गई है वे उलूकसित होते हैं और अपने गोत्रमें जहाँ कलह होता है, मैं उस कुटुम्बी बाटिका हूँ ।

इसका अर्थ न समझकर उसने विचार किया, कि जहाँ बाटिका भी इस तरहकी विवायायी है वहाँके विद्वान् कैसे होंगे, वह उन्ठे पाँवें छोट गया ।

१ इस श्लोकमें ' टी ' विशेष अंतमें है ऐसे पटी, कटी, कुटी, घटी, तटी इत्यादि ११ शब्द आये हैं उन शब्दोंको गिनकर ११ लाखका मो बने उस कविको दान दिया ऐसा श्लोक शतरत्न है ।

४७) इसके बाद, एक दूसरे अवसरमें, राजा राजपाटीमें भ्रमणार्थ हाथीपर चढ़कर नगरके भीतर जा रहा था । उस समय किसी भिक्षुकको, पृथिवीपर गिरे हुए अन्न-कर्णोंको चुनते हुए देखकर बोला—

६७. अपना पेट भरनेमें भी जो असमर्थ हैं उनके जन्म लेनेसे क्या है ?

—इस प्रकार उसके पृथ्वी कहनेपर;

सुसमर्थ होकर भी जो परोपकारी नहीं उनके [जन्म लेने] से भी क्या है ?

६८. 'उनके [जन्म लेने] से भी क्या है'—यह कहनेपर, दानशूर भोज नरेन्द्र ने उसको सौ हाथी और एक करोड़ सुवर्ण मुद्रायें दीं ।

उसके इस वचनके अन्तमें [राजाने कहा]—

६९. हे जननि ! ऐसा पुत्र न जन जो दूसरोंके आगे प्रार्थना किया करें !

उसके इस वाक्यके पश्चात् [भिक्षुक बोला]—

उसको भी उदरमें न धारण कर जो दूसरोंकी प्रार्थनाका भंग करें ।

जब उसने इस प्रकार कहा तो राजाने पूछा—'तुम 'कौन हो ?' इस पर नगरके प्रधान पुरुषोंने कहा, कि आपके यहाँ, नाना भौतिके विद्वानोंकी घटामें जब अन्य किसी उपायसे प्रवेश न पा सका तो इसी प्रपञ्चसे स्वामिदर्शनकी इच्छा रखनेवाला यह [व्यक्ति] राज शेखर है । उसको उचित महादानोंसे पुरस्कृत करनेपर उस राज शेखर ने ये कवितायें पढ़ीं—

[५४] अच्छंखल मेवोंके नादसे नाचती हुई^१ मयूरियोंकी उजत आवाज़से आकुल, मेघागमन कालमें (वर्षामें) तो जमीनपर भी जल सुविधासे मिल जाता है । लेकिन, इस भयानक उष्णता भरे प्रीम्प कालमें करुणासे एक दूमरेकी ओर देखनेवाली और इवर उधर ताकती हुई मछलियोंका यदि तू पालन नहीं करता, तो, रे कासार (तालाव) तेरी फिर सारता ही क्या है !

७०. जिस सरोवरमें, मँदक मरे हुआँकी भौँति कोटरोंमें सो गये थे, कछुए पृथ्वीमें छिप गये थे, और गाढ़े पंकके ऊपर लोटनेसे मछलियाँ वारंवार मूर्च्छित हो रही थीं, उसी तालावमें, अकालके मेघने उतरकर ऐसा किया कि उसमें कुंभस्थल तक डूबे हुए हाथियोंके झुंड पानी पी रहे हैं ।

इस प्रकार अकालजलद राज शेखर की यह उक्ति है ।

*

राजा भोजकी गूजरातपर आक्रमण करनेकी इच्छा ।

४८) इसके बाद, किसी साल, वर्षा न होनेके कारण राजा भीमके देशमें (गूजरातमें) जब, कण और नृण भी नहीं मिलता था ऐसे कुसमयमें, राजपुरुषोंने भोजका आना बताया (अर्थात्—भोजराजाने गूजरात पर चढ़ाई करनेकी बात चलाई) । यह सुनकर भीमको चिन्ता हुई और उसने अपने दामर नामक सन्धि-विप्रेक्षिककी आदेश किया कि कुछ दण्ड देकर इस साल भोजको यहाँ आनेसे रोको । उसका यह आदेश पाकर वह वहाँ गया । वह दामर अत्यंत बुरूप समझा जाता था । भोजने [उसका उपहास करनेकी दृष्टिसे] कहा—

७१. ' हे ब्राह्मण ! तुम्हारे स्वामीके सन्धि-विप्रेक्ष पदपर तुम्हारे जैसे कितने दूत हैं ? ' [उत्तर—]

' यों तो बहुत ही हैं, हे मालव-नरेश ! पर वे सब गुणकी दृष्टिसे तीन प्रकारके हैं—अधम, मध्यम और उत्तम । [इनमें] जो जिस गुणके योग्य होता है उसीके अनुसार ये दूत उन उन

राज्योंमें भेजे जाते हैं ।' इस प्रकार भीतर ही भीतर हँसते हुए उत्तर देकर उसने धारा के स्वामी (भोज) को प्रसन्न किया ।

इस प्रकार उसकी वचन-चातुरीसे राजा चमत्कृत हुआ । गूर्जर देशके प्रति प्रयाण करनेका राजाने नगाड़ा बजवाया । प्रयाणके समय बंदीने यह स्तुतिपाठ किया—

७२. चौड़ [का राजा] समुद्रकी गोदमें प्रवेश कर रहा है और आन्ध्र [पति] पर्वतकी खोहमें निवास कर रहा है, कर्णाटका राजा पद्म बंध (पगड़ी बाँधना) नहीं करता है, गूर्जर [का राजा] निश्चरका आश्रय लेता है, चेदि [नरेश] अहोसे म्यान होगया है और राजाओंमें सुमट समान कान्यकुम्भ कूबड़ा होगया है—हे भोज ! तुम्हारे मात्र मेनातंत्रके प्रसारके भयसे ही सभी राजा लोक व्याकुल हो रहे हैं ।

७३. कौंकण [का राजा] कोनेमें, छाट (नरेश) दरवाजेके पास, कटिङ्ग [पति] आँगनमें सोया करते हैं । अरे कौशळ [नरेश], तू अभी नया है, मेरे पिता भी इस आसनपर सोया करते थे । इस प्रकार जिस (भोज) के कारणगृहमें रातमें प्रत्यर्थियोंमें स्थानप्राप्तिके लिये उठा हुआ पारस्परिक विरोध निरंतर बढ़ाता रहता है ।

प्रयाणके लिये नगाड़े बजवाये जानेके बाद, रातको समस्त राजाओंकी दुर्दशाका दृश्य दिखलानेवाला नाटक अभिनीत होने लगा । उसमें कोई क्रुद्ध राजा, कारागारके भीतर सामनेकी जमीनपर सुस्थ भागसे सोये हुए तैलिये राजाको उठाने लगा । तैलियेने उससे कहा—' मैं तो यहाँ पुस्त-दर-पुस्तनसे बास कर रहा हूँ, आप जैसे नये आये हुए राजाकी बातसे अपना पद कैसे छोड़ दूँ ! ' राजा भोजने हँसकर दामरसे नाटकके रसायतारकी प्रशंसा की । इसपर वह बोला—' महाराज ! यद्यपि नाटकमें रसकी जमावट बहुत उत्तम है तथापि इम नटकी, कथानायकके वृत्तान्तसे जो निस्तान्त अनभिज्ञता है वह बिल्कुल है । क्यों कि राजा तैलिये देव सूलीपर चढ़ाये हुए मुञ्ज के सिरसे पहचाना जाता है । समाके सामने जब उसने इस प्रकार कहा तो राजाको उसकी निर्मल्लानपर क्रोध हो आया और उसी समय उस सामग्रीके साथ, जो दूसरोंके जुटाये न लुट सकती थी, तिलङ्ग देशके प्रति प्रयाण किया ।

७९) बादमें तैलियेदेव को बड़ी भारी सेनाके साथ आता हुआ सुनकर भोज व्याकुल हुआ । उतनेमें उसे दामर ने [अपने] राजाके यहाँसे आये हुए एक कल्पित (जाड़ी) आदेशको दिखाकर कहा कि भीम भी चढकर भोगपुरतक आगया है । जलेपर नामक छिड़कनेके समान उसकी उस बातसे राजा भोज खूब संचित हो गया । उसने दामरसे कहा—इस वर्ष किसी तरह तुम अपने स्वामीको यहाँ आनेसे रोको । उसने बार बार इस प्रकार दीनताके साथ कहा और उस अवसरके जाननेवाले [दामर] को हाथीके साथ हथिनी भेंट दी । उनको लेकर वह पचनमें आया और भीमको परितुष्ट किया ।

५०) एक बार, जब वह धर्मशास्त्र सुन रहा था, उस समय अर्जुनका राजा-वेष (मत्स्य-वेष) सुनकर सोचा कि ' अम्बास करनेपर क्या कठिन है । ' फिर बराबर अम्बास करके उस विश्वविदित राधापेथको उसने सिद्ध किया और उसकी सारे नगरवासियोंको जान हो इसलिये नगरमें खूब सजावट कराई । किन्तु एक तैली और एक दर्जीके, अज्ञातसे उत्तरमें कोई भाग न लेने पर, राजाको उसकी खबर की गई । तैलीने चंद्रशाळा (ऊपर छन) पर खड़े होकर, पृथ्वीपर रखे हुए संकडे मुँहके पात्रमें तेल ढालकर; और दर्जनी पृथ्वीपर खड़े होकर ऊपरकी ओर उठाये सूतके दोरके अप्रमाणको आकाशसे पड़ती हुई सुईके छेदमें

विरो कर अपने अम्यास-कौशलका परिचय दिया; और फिर राजासे 'यदि शक्ति है तो स्वामी भी ऐसा कर दिखावें' ऐसा कह कर राजाका गर्व खंडित किया। [उसका राधावैध करना देखकर किसी कविने उसकी प्रशंसामें कहा—]

७४. हे भोजराज ! मैंने राधा-वैध (मत्स्य-वैध) का कारण जान लिया। वह यह कि आप 'धारा' के विपरीत (राधा) को नहीं सह सकते।

५१) विद्वानों द्वारा इस प्रकार प्रशंसित होते हुए उस राजाको नया नगर बसानेकी इच्छा हुई तो उसने पटह बजगया। उस समय धारा नामक एक वेदया अपने अग्निवेताल नामक पतिके साथ लंका जाकर उस नगरका निवेश देख आई; और उसने यह कह कर कि नगरको भेरा नाम देना, लंकाका प्रतिच्छन्द पट (मानचित्र) राजाको दिया। उसके अनुसार राजाने नई धारा नगरी बसाई।

*

दिगंबर कुलचन्द्रको सेनापति बनाना।

५२) किसी दिन वह राजा सार्यकालके सर्वावसरके बाद अपने नगरके भीतर [वीरचर्या निमित्त] घूम रहा था, उसी समय किसी दिगंबर विद्वानको यह कविता पढ़ते सुना—

७५. न किसी सुभटके सिरपर खड्गके टुकड़े किये, न तेजा घोड़ोंपर सवारी ही का और न गौरी स्त्रीको गले ही लगाई—इस प्रकार निरर्थक ही यह नग्न जन्म चला गया।

राजाने सचेरे ही उसको बुलाकर और वह संकेत सुनाकर उमकी शक्ति पूछी। वह बोला—

७६. महाराज ! रमणीय दीपोत्सवके वीत जानेपर जब हाथियोंका मद झरने लगेगा तो मैं अपनी शक्तिसे गौडदेशके साथ सारे दक्षिणापथको एक छत्रनीचे कर दूंगा।

उसने अपना ऐसा पौरुष प्रकट किया तो राजाने उसे [योग्य समझकर] सेनापतिके पद पर अभिषिक्त किया।

कुलचन्द्रकी गृजरातपर चढ़ाई।

५३) इधर, जब राजा भीम सिन्धु देशकी विजयमें रुका हुआ था, [यह दिगम्बर] सारे सामन्तोंके साथ, अणहिलपुर पर आक्रमण करके, उसके धवलगृहके घटिकाद्वार पर, कौडियों वपन करारकर उसने जयपत्र ग्रहण किया। तबसे सर्वत्र " कुलचन्द्रने लूट लिया " [कहावत] की प्रसिद्धि हुई। वह जयपत्र लेकर मालवामें गया। श्रीभोजको यह वृत्तान्त विदित किया। 'तुमने वहाँपर कोयला क्यों नहीं बोया ? [इन कौडियोंके बोनेसे तो यह सूचित होता है कि भविष्यमें] यहाँसे कर वसूल होकर गूर्जर देशमें जायगा।' इस प्रकार सरस्वती-कण्ठाभरण श्रीभोजने [यह भविष्यवचन] कहा।

५४) एक बार चन्द्रातप (चँदनी) में श्रीभोज राजा बैठे थे, पास-हीं-में कुलचंद्र भी था। पूर्ण चन्द्रमण्डलको देखकर [पुनः पुनः उसकी ओर देखकर] (राजाने) यह पढ़ा—

७७. जिन लोगोंका रात प्रियाके साथ क्षणमरकी तरह व्यतीत हो जाती है, चन्द्रमा उनके लिये शीतल है; किन्तु त्रिदिवोंके लिये तो उल्काके समान सन्तापदायक है।

उस कविके इस प्रकार आधा कहनेपर कुलचन्द्र बोला—

हम लोगोंके न तो प्रिया है और न विरह है, इसलिये दोनों ओरसे भ्रष्ट होनेके कारण हमको तो चंद्रमा दर्पणकी आकृतिके समान दिखाई देता है। न वह उष्ण है, न शीतल।

ऐसा कहनेके अनन्तर ही उसे पुरस्कारमें एक वेदया प्रदान की गई।

*

५५) इसके बाद, मालव मण्डलसे लौटे हुए दामर नामक सन्धि-विप्रहिकने भोजकी' सभोका वर्णन करते हुए [सबको] बहुत आश्चर्य उत्पन्न किया । और वहाँ (मालवामें) जाकर भीमके अलौकिक रूप सौन्दर्यके वर्णनसे भोजको उसे देखनेकी इच्छासे चञ्चल कर दिया । भोजने अनुरोध किया कि ' या तो भीमको यहाँ ले आओ या मुझे वहाँ ले चलो । ' इसी तरह भोजकी समाको देखनेके लिये उक्तपिठ भीमने भी वैसा ही अनुरोध किया । किसी एक समय, उपायोंका जाननेवाला वह (दामर) बहुतसा उपहार लेकर भीमको, जो विप्रका वेश धारण किए हुए था और हाथमें पानदान लिये था, साथ लेकर भोजकी समामें गया । प्रणाम करते हुए उस दामर को [भोजने भीमके] ले आनेके वृत्तान्तके बारेमें पूछा । उसने कहा— ' हमारे स्वामी स्तत्र हैं, जो काम उनको अभिमत नहीं उसे जबर्दस्ती कौन करा सकता है । महाराजको ऐसी दुराशा सर्वथा धारण नहीं करना चाहिये । ' भोजने भीमकी उम्र, वर्ण और आकृति पूछी । दामरने समामें बैठे हुए लोगोंके देखते हुए, पान-दान धारण करनेवालेको लक्ष्य करके कहा—स्वामिन् ।

७८. यही आकृति है, यही वर्ण है, यही रूप और यही अवस्था है । इसमें और उस राजामें अन्तर केवल काच और मणिके समान है ।

इस प्रकार उसके बतानेपर, चतुर चक्रवर्ती भोजने सामुद्रिक शास्त्रके आधारपर, उस निश्चल दृष्टि-वालेको ही राजा [यही भीम है ऐसा] जब समझ लिया तो, उपायन धस्तुयें (भेंटकी चीजें) ले आनेके बहानेसे उस सन्धि-विप्रहिक (दामर) ने उसे बहार भेज दिया । जब वे (भेंटकी) चीजें आ गईं तो दामरने उनका गुण वर्णन करके तथा इधर उधरकी बातें करके बहुत-सा काल काट दिया । जब राजाने कहा कि—' वह पान-दानवाला अभीतर कयों नहीं आया, कितना विलम्ब करता है ! ' तो उस (दामर) ने बताया कि वही तो भीम था । तब राजा उसके पीछे सैन्य दौडाने लगा । इसपर दामरने कहा—' बारह बारह योजनके अन्तरपर सगरीके घोड़े खड़े हैं, और एक घडीमें योजनभर चली जानेवाली करभियाँ (सौंदनियाँ) रची हैं । इन सारी सामग्रियोंसे भीम प्रतिक्षण बहुत-सी भूमि तै करता चला जा रहा है । आप उसे कैसे पकड़ेंगे ! ' उसके ऐसा बतानेपर वह देर तक हाथ मलता रहा ।

[यहाँपर Pb संज्ञक आदर्शमें निम्नलिखित प्रकरण अधिक पाये जाते हैं—]

इसके बाद एक दूसरे साल, भीम उस दामर को मालव मण्डलमें भेजनेकी इच्छासे वार्ता आदि (नीति) सिखा रहा था । दामरने उठकर वल्ल श्राद्ध लिया । तब भीमने [कारण] पूछा । वह बोला— आपका सिखाया हुआ यही छोट जाता हूँ । क्यों कि वहाँ जाकर तो मुझे रम्य ही अवसरोचित बोलना पड़ेगा । दूसरेका सिखाया कितना काम आ सकता है । इसके बाद राजाने उसकी अवसरोचित चातुरी जाननेके लिये, प्रच्छन्न भावसे, सोनेके डिम्बेको राखसे भरकर उसके हाथमें, यह सिखाकर भेंट देनेकी कहा कि भोजकी समामें सिगा अन्यत्र कहीं भी इसे न खोलना । उसे लेकर वह मालवामें गया । भोजकी समामें जाकर उस डिम्बेको, जो अनेक रेशमी बच्चोंसे घेष्टित था, राजाको भेंट किया । जब राजाने उसे खोलकर देखा तो भीतर राखका पुत्र था । तब राजाने कहा—' अजी, यह कैसी भेंट है ! ' हान्जिर जवाब दामरने तत्काल कहा—' महाराज श्रीभीमने एक कोटिहोन कराया है । यह उसीकी रक्षा है, जो तापके समान परित्र दे । प्राति-सम्बन्धसे उन्होंने आपकी भेंट किया है । ' उसके ऐसा कहनेपर, राजाने प्रसन्न होकर, अपने हाथसे सब टोंगोंको यह ढोड़ी ढोड़ी दी । उन सबोंने उससे तिलक करके उसका वंदन किया । अन्तःपुरमें भी वह रक्षा भेजी गई । बादमें वह दामर सम्मानित होकर, प्रति-प्राप्तके (भेंटके बदलेमें दी हुई भेंटके) साथ लौट आया । भीमको जब यह वृत्तान्त ज्ञात हुआ तो उसने भी उसकी पूजा (सम्मानना) की ।

पुनः एक बार भी म के चित्तमें कौतुक उत्पन्न हुआ। उसने एक बार डामर के हाथमें अपनी मुद्रासे मुद्रित (मुहर किया हुआ) लेख दिया और, हाथमें भेंटकी सामग्री देकर उसे मालघामें भेजा। उसने उस भेंटके साथ वह लेख राजाको दिया। राजाने जब खोलकर पढ़ा तो, उसमें लिखा मिला कि—‘ इसको आप शीघ्र ही मार डालिये । ’ तब विस्मयके साथ राजाने पूछा—‘ अजी, इसमें यह क्या लिखा है ? ’ तब उसे शीघ्रबुद्धिने कहा—‘ महाराज । मेरी जन्म-पत्रिकामें ऐसा लिखा है कि जहाँ इसका रुधिर पड़ेगा वहाँ बारह वर्षतक अकाल पड़ेगा । यही जानकर भी मैंने, स्वदेशके विनाशसे भीत होकर, प्रच्छन्न लेखके साथ मुझे यहाँ भेजा है । ऐसी स्थिति होनेपर आप अपनी रुचिके अनुसार करें । ’ उसके ऐसा कहनेपर राजाने कहा—‘ मैं अपने देशकी प्रजाको अनर्थमें नहीं पड़ने दूँगा । ’ इसके बाद, उसका सम्मान करके उसे विदा किया और वह अपने देशमें आया। उसकी बुद्धिके कौशलसे चमत्कृत होकर भी म उसे बहुत मानने लगा ।

*

महाकवि माघका प्रबन्ध ।

५६) इसके बाद, भोजराजा माघ पंडितकी विद्वत्ता और पुण्यवत्ताको सदा सुनकर उसके दर्शनकी उत्सुकतासे अनेक राजकीय आदेश बारंबार भेजकर श्रीमालनगरसे जाड़ेके दिनोंमें उसे अपने यहाँ बुलाया और अत्यन्त मानके साथ भोजनादिसे उसका सत्कार किया। बादमें राजोचित विनोदोंको दिखाकर और रातकी आरंभके अनन्तर अपने निकट ही, अपने ही समान पलंगपर सुलाकर, उसे अपनी निजकी शीतरक्षिका (रजाई, लिहाफ़) ओढने दी और चिरकाल तक उसके साथ प्रिय आलाप करता हुआ सुखपूर्वक सो गया। प्रातःकाल मागल्य तुर्यनादसे जब राजाकी नींद खुली तो माघ पंडितने घर जानेके लिये विदा माँगी। राजाने विभ्रमित होकर अगले दिनके भोजन आच्छादन आदिके सुखकी बात पूछी। उसने कहा—‘ उस अच्छे-बुरे अन्नकी बात रहने दीजिये । ’ और कहा कि शीतरक्षिका (रजाई) के भारसे तो मैं थक-सा गया। राजाने अपना खेद प्रकट करते हुए किसी प्रकार जानेकी अनुज्ञा दी। नगरके उपवन तक राजाने अनुगमन किया। माघ पंडितने भी कहा कि कभी अपने आगमनसे मुझे भी धन्य करें। राजाकी अनुज्ञा लेकर माघ पंडित अपने स्थानपर आया। उसके बाद, कितनेएक दिन बीतनेपर, भोजराजा उसकी विभव-सामग्री देखनेकी इच्छासे श्रीमालनगरमें आया। माघ पंडितके द्वारा अगवानी आदिसे यथोचित सत्कृत होकर वह अपनी सारी सेनाके साथ उसकी घुड़सालमें ठहरा। फिर वह अकेला माघ पंडितके महलमें गया। वहाँ उसने सञ्चारक भूमि (महलमें जानेकी पगडंडी) को काचसे जड़ी देखी। स्नान करनेके बाद, देवताके मन्दिरमें जानेपर, वहाँकी भूमिपर, जिसका गन्ध मरकतका था, शैवाल सहित जलकी भ्रान्तिसे धोती और चादरकी समेटने लगा। तब पुरोहितने उसका स्वरूप बतलाया। फिर देवताकी पूजा की। बाद जब मंत्रावसर समाप्त हुआ तो, भोजनके समय आई हुई रसोईका आश्वादन किया। ऐसे ऐसे व्यंजनों और फलोंको देखकर, जो उस काल और उस देशमें नहीं होते थे, वह चित्तमें बड़ा विभ्रित हुआ। संस्कार क्रिये दूध और चावलकी बनी रसोईका आकण्ठ उपभोग किया। भोजनके अन्तमें चन्द्रशालापर आरोहण करके, ऐसे ऐसे कान्धों, कयाओं, इतिहासों और नाटकोंको देखा, जिन्हें इसके पहले कहीं देखा या सुना नहीं था। जाड़ेके दिनोंमें भी उसे अरुमात् उम्र प्रीम ऋतु हो जानेकी भ्रान्ति हुई। उस समय सफेद स्वच्छ वस्त्र पहने, हाथमें तालके पंखे लिये हुए अनुचर उसको हवा करने लगे। उसने वस्त्रोंमें सुन्दर चन्दन लेन दिया गया और उस रातको उसने क्षणभरकी नाई विता दी। सबेर जब शंखके नादसे राजाकी नींद खुली तो माघ पंडितने शीतकालमें अरुमात् कैसे प्रीम ऋतु उतर आई इसका स्वरूप समझाया। [इस प्रकार प्रत्येक क्षण विस्मयके साथ विताता हुआ

कुछ दिनों तक वहाँ रहकर] स्वदेशगमनके लिये विदा माँगते हुए, अपने बनाये हुए नये भोजस्वामी मन्दिरके पुण्यको उसे समर्पण कर माछव मण्डलको प्रस्थान किया ।

माघ के जन्म दिनके समय उसके पिताने ज्योतिषीसे जन्मपत्र बनवाया था । ज्योतिषीने उसमें लिखा था कि पहले तो इसकी समृद्धि बराबर बढ़ती जायगी; पर बाद में (पिछली अवस्थामें) विभव नष्ट हो जायगा और चरणोंमें कुछ सूजन आ कर मृत्यु प्राप्त करेगा । माघ के पिताने अपने विभव-सम्भारसे प्रदृशका निवारण करना चाहा और यह सोचा कि मनुष्यकी आयु यदि सौ वर्ष की होगी, तो ३६ हजार दिन होंगे, एक नया कोश (निधि) बनवा कर उसमें उतनी ही संख्याके मणियोंका हार बनाकर रख दिया । इससे सैंकड़ों गुनी अधिक और समृद्धि रख दी । लड़केका नाम माघ रखा और अपने कुलके उचित शिक्षा दे कर और यह समझ कर कि मैंने अपना कर्तव्य पूरा कर दिया, वह मर गया । इसके बाद माघ कुबेरकी भौति विशाल समृद्धि-साम्राज्य पाकर, विद्वज्जनोंको उनकी इच्छाके अनुसार धन देने लगा । अपरिमित दानसे अर्थि-जनोंको कृतार्थ करते हुए और भोगकी विधिसे अपनेको अमानुषकी भौति दिखाते हुए, उसने ' शिशु पाठवध ' नामक महाकाव्य बनाया । इस काव्यको देखकर विद्वानोंका मन चमत्कृत हो गया । अन्तमें पुण्य-क्षय होने पर जब उसका धन क्षीण हो गया और विपत्तिका समय आ गया, तो उसने अपने देशमें रहना अयुक्त समझ कर, अपनी स्त्रीके साथ माछव मण्डल में जा कर धारा नगरीमें वास किया । राजा भोज के पास पत्नीको यह कह कर भेजा कि मेरा पुस्तक है उसे बंधक रख कर, राजाके पाससे कुछ भी द्रव्य ले आओ । स्वयं उसकी आशामें चिरकाल तक बैठा रहा । उधर भोजने उसकी स्त्रीकी वह अवस्था देखकर सन्ध्रमके साथ उस पुस्तकको हाथमें लिया और उसकी शलाका निकाल कर उसे खोला तो उसमें पहला ही यह काव्य देखा—

७९. कुमुदवनकी शोभा नष्ट हो गई और कमलोंका समूह शोभाविन्त हो उठा । धूरु हर्ष छोड़ रहा है और चकवा प्रीतिमान् हो रहा है । सूर्यका उदय हो रहा है और चन्द्रमाका अस्त ! अहो, दुर्भाग्यके खेतरा परिणाम ' ही ' विचित्र है !

काव्यका मर्म समझकर भोजने कहा कि सारे ग्रंथकी तो बात ही क्या है, इसी एक काव्यके मूल्यके लिये पृथ्वी भी दे दी जाय तो बड़ कम है । समयोचित और अनुच्छिद्य इम ' ही ' शब्दके पारितोषिकमें ही एक लाख रुपये दे कर राजाने उसे विदा किया । वह भी जब वहाँसे चला तो याचकोंने उसे माघकी पत्नी समझकर मॉगना शुरू किया । इस पर उसने वह सारा-का-सारा पारितोषिक उन याचकोंको दे दिया और स्वयं ज्यों की त्यों घर लौटी । उमने अपने पतिको, जिसके चरणमें कुछ सूजन हो आई थी, उस वृत्तान्तको कह सुनाया । इस पर माघने यह कह कर उसकी प्रशंसा की कि—' तुम्हीं मेरी शरीर-धारिणी कर्ति हो । ' इसी समय एक भिक्षुकको, जो उमके घरपर आया था, देखा । घरमें उसे देने योग्य कुछ न देखकर दुःखके साथ यह बोला—

८०. धनतो है नहीं, और दुःशा भी मुझे छोड़नी नहीं । मैं सुरी तरहसे बहका हुआ हूँ और फिर त्यागसे हाथ भी संकुचित नहीं होता । याचना करना लघुताका कारण है और आत्महत्यामें पाप लगता है । अतः हे प्राणों ! तुम स्वयं चले जाओ तो अच्छा है । मुझे इस प्रकार दुःख देनेसे क्या होगा ! ।

८१. दारिद्र्यकी आगका जो सन्ताप था वह तो सन्तोष रूपी जलसे शान्त हो गया; किन्तु दीन जनोकी आशा भंग करनेमें जो [सन्ताप] पैदा हुआ है, यह किमने शान्त होगा ! ।

८२. अकालमें भिक्षा वहाँ ! सुरी अवस्थायादोंको ऋण क्योंकर मिटे ! भू-स्वामियोंसे काम क्योंकर

करावें [। और दान भी कौन देना चाहे, जब कि] बिना दान दिये यह सूर्य भी अस्त हो जाता है । [इस प्रकार] हे गृहिणी ! कहाँ जायें, और क्या करें ? जीवन-विधि बड़ा गहन हो गया है ।
 ८३. भूखसे कातर बना हुआ यह पथिक मेरा घर पृथते पृथते कहींसे आया है, सो हे गृहिणी ! क्या कुल है कि इस बुभुक्षितको खानेको दिया जाय ?'-पार्वती वचनसे तो ' है ' यह कहा लेकिन फिर ' नहीं है ' यह बात बिना अक्षरोंके ही, चंचल नेत्रोंसे टपकते हुए बड़े बड़े अश्रुबिन्दुओंसे सूचित की ।

८४. हे प्राणों ! जाओ, याचकके व्यर्थ लौट जानेपर, चले जाओ; वादको भी तो जाना है; ' फिर ऐसा साथी कहाँ मिलेगा ? '

' फिर ऐसा साथी कहाँ मिलेगा ? '-इस वाक्यके बोलते ही माघ पण्डितकी मृत्यु हो गई ।

प्रातःकाल राजा भोज ने उस वृत्तान्तको सुनकर, श्रीमाल नगर में [अनेक] धनवान् सजातियोंके रहते हुए भी, जो ऐसा पुरुष-रत्न क्षुधापीडित हो कर मर गया, इसलिये उसने उस जातिका नाम ' भिल्लमाल ' * ऐसा रख दिया ।

इस प्रकार श्री माघपण्डितका प्रबन्ध समाप्त हुआ ।

*

महाकवि धनपालका प्रबन्ध ।

५७) प्राचीन कालमें, समृद्धिसे विशाल ऐसी विशाला (उजयिनी) नामक नगरीमें, मध्यदेशोत्पन्न संकाश्य गोत्रीय सर्वदेव नामक ब्राह्मण वास करता था । जैनदर्शनके संसर्गसे उसका मिथ्यात्व प्रायः शान्त हो गया था । उसने दो पुत्र थे जिनका नाम धनपाल और शोभन था । एक बार श्रीवर्द्धमान सूरि वहाँ आये । गुणानुरागी होनेके कारण सर्वदेव ने उन्हें अपने उपाश्रयमें निवास कराया और अपनी अनन्य भक्तिसे उन्हें सन्तुष्ट किया । उन्हें ' सर्वज्ञ-पुत्रक ' जानकर गुम हो जानेवाली पूर्वजोंकी निधिके बारेमें पूँछा । उन्होंने वचन-चातुरीसे पुत्रोंका आधा हिस्सा माँग लिया । संकेत बतानेपर निधि मिली । जब यह आधा भाग देने लगा तो सूरिने दोनों पुत्रोंमेंसे आधा हिस्सा माँगा । धनपाल ने, जिसकी मति मिथ्यात्वके कारण अन्धी हो रही थी, जैन मार्गकी निन्दा करते हुए नहीं कर दी । छोटे लड़के शोभन पर कृपा-परायण हो कर, पिताने उसको देना नहीं चाहा । इसपर उसने अपनी प्रतिज्ञाके भंग होनेके पापको तीर्थमें जाकर प्रक्षालन करनेकी इच्छासे, तीर्थके प्रति प्रस्थान करना निश्चित किया । पितृभक्त शोभन नामक छोटे पुत्रने, उसको उस आपद्से रोककर, पिताकी प्रतिज्ञाका पालन करनेके लिये जैन दीक्षाव्रत ग्रहण कर स्वयं गुरुका अनुसरण किया । धनपाल समस्त विचारोंका अध्ययन करके श्री भोजके प्रसाद-प्राप्त समस्त पंडित-मण्डलमें सुप्रतिष्ठ हुआ और फिर अपने सहोदरकी ईर्ष्यासे बारह वर्षतक अपने देशमें जैन दर्शनियोंका आगमन निषिद्ध कराया ।

* भीमाल नगरका दूसरा नाम भिल्लमाल भी है । वर्तमानमें वह स्थान इषी नामसे प्रसिद्ध है । श्रीमाली जातिके वैश्य और ब्राह्मण कुल इषी स्थानसे निकले हुए हैं । भीमालका दूसरा नाम भिल्लमाल ऐसा कब और क्यों पड़ा इसका अन्य कोई दूसरा ऐतिहासिक उल्लेख अभी तक प्राप्त नहीं हुआ । महाकवि माघकी जन्मभूमि भीमाल थी यह बात बधिके कथन ही से सिद्ध होती है, लेकिन उसकी मृत्युका जो यह कथन वृत्तान्त मेघनुल्लाचार्यने लिखा है और उसी प्रसंग परमे भोज राजाने भीमालका नाम भिल्लमाल रख दिया यह जो उल्लेख किया है, इसकी सत्यताके लिये और कोई सुनिश्चित प्रमाण जबतक प्राप्त न हो तबतक इस कथनको एक किंवदन्तीके रूपमें ही समझना चाहिए । माघ और भोजकी सम्बन्धीनता भी सन्देह्य है । और कम-से कम यह भोज प्रसिद्ध धारणसे परमारवंशीय राजा भोज तो किसी तरह सम्बन्धित नहीं है । इसकी विशेष विवेचना आगेले ऐतिहासिक अवलोकनवाले संदर्भमें ही जायगी ।

उम्र देशके उपासकोंद्वारा अत्यन्त अभ्यर्षनाके साथ गुरुको बुलायेपर, सकल शास्त्ररूपी समुद्रके पारको प्राप्त कर छेदनेवाला वह शोभन नामक तपोवन गुरुसे अनुमति लेकर वहाँ आया। धरामें प्रवेश करते ही, पंडित धनपालने, जो उस समय राजपाठिकामें [राजाके साथ] भ्रमणमें जा रहा था, उसे न पहचान कर, उत्पट्टामके माथ कहा—‘गर्दभदन्त (गधेके समान दाँतवाले) भद्रन्त, तुमको नमस्कार !’ इसपर उसने— ‘कपिके वृषणके समान मुँहवाले मित्र, तुम्हें सुख हो !’ [इस प्रकार प्रत्युत्तर दिया। तब चमत्कृत होकर धनपालने सोचा कि मैंने तो दिष्टगीमें भी ‘नमस्ते’ कहा और इतने तो ‘मित्र तुम्हें सुख हो’] इतना ही कहकर अपनी वचन-चांतुरीसे मुझे जीत लिया। फिर धनपालके यह कहने पर कि ‘आप किसके अतिथि हैं ?’ शोभन मुनि ने कहा—‘हमें आपके ही अतिथि समक्षिये !’ उसकी यह बात सुनकर एक विचारार्थिके साथ उन्हें अपने स्थानपर भेजकर वहीं ठहराया। स्वयं घर आकर धनपालने प्रिय आलसोंके साथ उसे संपरिकर भोजनके लिये निमंत्रित किया। पर वे तपोवन तो प्रासुक (अनुदिष्ट) आहार भोजी थे इसलिये उन्होंने निषेध किया। आपश्चर्चक जत्र उसने दोषका हेतु पूँछा तो कहा—

८५. मुनि श्लेष्ठ कुलसे भी मधुकरा वृत्तिके साथ भिक्षा ग्रहण करे परन्तु बृहस्पतिके समान श्रेष्ठ कुलीन एक ही गृहस्थके वहाँ भोजन न करे।

इसी प्रकार जैन धर्मके दश वैकालिक सूत्रमें भी कथन है—

८६. जो अनिश्चिन हो कर मधुकरके समान नाना स्थानोंमेंसे अपना भिक्षापिण्ड प्राप्त करते हैं उन्हीं बुद्ध और दान्त भिक्षुओंको साथ कहते हैं।

इस प्रकार, अपने धर्ममें और परधर्ममें भी, निषिद्ध ऐसे कल्पित आहारको त्याग करके हम लोग सुद्ध भोजन ग्रहण करते हैं। धनपाल उनके चरित्रमें चकित होकर चुप हो रहा और उठकर स्नान करने चला गया। स्नानके आरम्भमें ही अचानक भिक्षाचर्याके लिये आये हुए उन दो मुनियोंको देखा। उन्हें एक ब्राह्मणी, रमोई तैयार न होनेके कारण, दही देने लगी। मुनियोंने पूँछा कि दही कितने दिनोंका है ! तो धनपाल ने मजाक करते हुए कहा ‘क्या कोई उसमें कीड़े पड़ गये हैं ?’ ब्राह्मणाने जवाब दिया कि इसे दो दिन बीत चुके हैं। यह सुनकर दोनों मुनि बोले कि—हाँ कीड़े पड़ गये हैं ! यह सुनकर धनपाल उसे देखनेके लिये स्नानसे उठकर वहाँ आया। पात्रमें रखे हुए दहीके पास ही एक महार (लाल) का ढंला रखा जिस पर उन जीवोंने चढ़कर उसे दहीके समान ही सफेद कर दिया। धनपाल ने यह देखा और सोचा कि जैन धर्ममें जीवरक्षाकी ही प्रधानता है; और उसमें भी जीवोत्पत्ति नियमक ज्ञानका वैदग्य्य [विशिष्ट प्रकारका] है। जैसा कि कहा है—

८७. मृग और उडद ज्ञयादि दिदल धान्य जो कचे गोरसमें पड़े तो उसमें प्रम (क्षिरिद्रियादि)

जीवोंकी उत्पत्ति होती है; और तीन दिनोंके बाद दहीमें भी जीवोंकी उत्पत्ति हो जाया करती है।

यह बात एक जैन शास्त्रमें ही कही गई है। ऐसा निश्चय करके शोभन मुनिके शुभोपदेशसे सम्पूक् विद्याम पूर्वक उसने मगधका (जैन धर्म) ग्रहण किया। [इतने दिनोंके बाद अपने गिर्यात्रको समस्तते हुए, शोभनसे ही पूँछा कि मेरे भाईको भी कहीं देखा है ? शोभन ने वय, आत्मा और गुण आदिमें अपने-ही-से उसकी तुलना की। इसपर उसने अनुमानमें ममता कि यही मेरा भाई है। यह निश्चय करके आनन्दाश्रुत्पाग करने हुए उसे आश्रितान करके अपने लडकेको भेज कर उसके गुरुको भी बुलाया।] स्वभावतः ही धनपाल बड़ा मुद्विमान या अतर्क कर्मप्रवृत्ति प्रवृत्ति जैन-विचार-मंत्रोंमें भी बड़ा प्रवीण हुआ। प्रति दिन सत्तेरे दिन पूजाके अन्तमें—

८८. अहो ! मैंने इसके पहले मोहवश, कुछ ही नगरोंके स्वामीका, जो शरीर दे देनेपर भी दुर्ग्रहणाय है, मति-दान करते हुए अनुसरण किया । इस समय ऐसे त्रिभुवनपति प्रभु मिल गये हैं जो बुद्धि-ही-से आराध्य हैं और जो अपना पद तक दे देनेवाले हैं । इससे उन प्राचीन दिनोंका बीत जाना खेदकारक हो रहा है ।

८९. हे जिन ! जबतक मैंने तुम्हारा धर्म नहीं जाना था तबतक समझता था कि धर्म सब कहीं है । जिस प्रकार धतूरेके विपसे आतुर रोगीको सब कुछ सोना (पीतवर्ण) ही सोना दिखाई देता है; और कोई सफेद वस्तु नजर नहीं आती ।

[५५] घासके जैसे निःसार ऐसे उन करोड़ों श्लोकोंको पढ़ लेनेसे भी क्या होता है—यदि जिससे ' दूसरेको पीडा न पहुँचाना ' इतना भी ज्ञान प्राप्त नहीं होता ।

[५६] देशका मालिक [तुष्ट होनेसे] एक गाँव देता है, गाँवका मालिक एक खेत देता है, खेतका मालिक शिम्बिका (सेम, छीमा) देता है परन्तु सार्व (सर्वज्ञ जिन) तो सन्तुष्ट होकर अपनी सारी सम्पद दे देते हैं !

इत्यादि वाक्योंको पढ़ा करता । एक दिन राजाने धनपालको शिकार खेलनेके लिये साथ ले लिया । राजाने जब बाणसे मृगको विद्ध किया, तो उसके वर्णनके लिये धनपालके मुँहकी ओर देखा । धनपाल बोला—

९०. इस तरहका पौरुष रसातलको चला जाय । यह कुनीति है कि निर्दोष और शरणागतको मारा जाय । बलवान् भी जब दुर्बलको मारते हैं तो यह बड़े दुःखकी बात है । जगत् अराजक हो गया । उसकी इस निर्भर्त्सनासे क्रुद्ध राजाके यह पूछने पर कि यह क्या बात है—

९१. प्राणान्तके समय यदि तृण भक्षण करना चाहे तो वैरी भी छोड़ दिया जाता है, तो फिर ये पशु तो सदा तृण ही खाकर जीते रहते हैं, ये क्यों मारे जाते हैं ?

राजाको इस कथनसे अद्भुत रूपा उत्पन्न हुई । उसने धनुष्य बाणके भंगकी स्वीकार करके आजीवनके लिये मृगयाका त्याग किया । बादमें नगरकी ओर जब लौट रहा था, तो यज्ञमण्डपके यज्ञस्तंभमें बँधे हुए छाग (बकरे) की दीन बानी सुनकर पूँछा कि यह पशु क्या कह रहा है ? इस पर धनपालने कहा कि सुनिये—

९२. हे साधो, मैं स्वर्गफलको भोगनेके लिये तृपित नहीं हूँ, मैंने [इसके लिये] तुमसे प्रार्थना भी नहीं की । मैं तो केवल तृण खाकर ही सन्तुष्ट हूँ । तुम्हारा यह कार्य उचित नहीं । यदि तुम्हारे द्वारा यज्ञमें मारे हुए प्राणी निश्चय ही स्वर्गगामी होते हैं तो फिर अपने माता-पिता और पुत्रों तथा बाँधनोंका यज्ञ (बलिदान) क्यों नहीं करते ?

उसके इस वाक्यके अनन्तर जब राजाने कहा कि इसका क्या मतलब है ? तो फिर बोला कि—

९३. यूप (यज्ञ) करके, पशु मारकर और खूनका कीचड़ बना कर यदि स्वर्गमें जाया जाता है तो फिर नरकमें कैसे जाया जाता है ?

९४. सनातन यज्ञ तो उसका नाम है, जिसमें सत्य तो यूप हो, तप ही अग्नि हो और अपने सारे कर्म समिष् (काष्ठ) हो, अहिंसाकी [उसमें] आहुति दी जाय ।

इस प्रकार, शुक्र संवादमें कहे हुए बचनोंको उसने राजाके सामने पढ़ा और [ब्राह्मणोंको] जो हिंसा-शास्त्रके उपदेशक और हिंस-प्रकृति हैं, ब्रह्मरूपमें राक्षस बताते हुए, राजाको अर्हद्धर्म (जैन धर्म) की ओर प्रवृत्त किया ।

[इस जगद् Pl) आदर्शमें तो मूल ही में, पर B आदर्शके हाशियेपर निम्नलिखित कथोपकथन अधिक लिखा हुआ पाया जाता है ।]

इसके बाद जब राजा गौरी बन्दना करने लगा तो धन पा ल भैसको नमस्कार करता हुआ बोला—

[५७] अपवित्र वस्तु खाती है, विवेक-शून्य है, आसक्त होकर अपने पुत्रसे ही रति करती है, सुराग्रसे और साँगसे जीवोंको मारती है । हे राजन् ! ऐसी यह गौ क्लिप्त गुणसे बन्दनीय है !

[५८] दूध देनेके सामर्थ्यसे अगर यह गौ बन्दनीय है तो, भैस क्यों नहीं है ? भैससे इसमें थोड़ी भी तो विशेषता नहीं दिखाई देती ।

[५९] अभेद्य भक्षण करनेवाली गायोंका स्पर्श पापको हरनेवाला है, चेतनाहीन वृक्ष बन्दनीय है, छागका वध करनेसे स्वर्ग मिलता है, ब्राह्मणोंको खिलवाया हुआ अन्न पितरोंको स्वर्गमें पहुँचता है, उल-रूपपरायण देवता आस पुरुष हैं, अग्निमें हवन किया हुआ हवि देवताओंको प्रीति करता है—इस प्रकारकी स्पष्ट दोषयुक्त और ध्वर्थ श्रुतियोंके बचनोंकी लीलासे कौन ठीक मान सकता है ?

[६०] जिनका [प्राणी-] वध तो धर्म है, जल तीर्थ है, गौ बन्दनीय है, गृहस्थ गुरु है, अग्नि देवता है, और ब्राह्मण पात्र है उनके साथ परिचय रखनेसे फल ही क्या हो !

एक बार, जिनपूजा करनेमें, दूनारोंसे पंडित (धन पा ल) की विशेष एकाग्रता जानकर राजाने फलकी डाड़ी देते हुए कहा कि देवोंकी पूजा करो । धन पा ल शिव आदि देवताओंके स्थानों पर यों ही घूमकर जिन देवकी पूजा करके चला आया । चार पुरुषके मुँहसे राजाने सारा वृत्तान्त जानकर पूजाका ह्रास पहुँचा । उसने कहा कि महाराज ! जहाँ [पूजाका उचित] अवसर हुआ वहाँ पूजा की । राजाने पूछा—'अवसर कहाँ नहीं हुआ ?' पण्डित बोला—विष्णुके पास एकान्त कलत्र होनेसे; रुद्रके आधे शरीरमें पार्यती रहनेसे; ब्रह्माके यहाँ इस भयसे कि कहीं ध्यानमग्न होनेके कारण श्वाप न दे दें; विनायकके यहाँ इमलिये कि वे घालीभर मोदक खा रहे थे, उनका स्पर्श मने रोसा; चण्डिकाके यहाँ उनके श्लाघसे संतप्त महिष भेरे सामने न आ जाय इस भयसे, हनुमानके यहाँ उन्हें कोपपूर्ण देखकर यह भय हुआ कि कहीं चपेटादान न कर बैठें; इस तरह, [इन देवोंके स्थानमें] कहीं भी अवसर नहीं हुआ । और भी [शिवलिङ्गको देखकर तो मनमें विचार आया कि—]

[६१] इसके शिरके बिना पुष्पमाला व्यर्थ है, और जब ललाट ही नहीं है तो पट्ट बन्ध कैसे हो ? जिसके कान और आँख नहीं हैं उसके लिये गीत और नृत्य कैसे ? और जिसके पैर ही नहीं उसको मेरा प्रणाम कैसा ?

इत्यादि बातें कहने पर, राजाने कहा—'किर अवसर हुआ भी कहीं ?' तब पंडितने 'प्रशमरसनिमग्न' और 'नेत्रे सारसुधा' इत्यादि (वचन बोत्रकर) और इसी प्रकारकी बातें कह कर अन्तमें कहा कि [इस प्रकार] जैनालय में मरु अवसर रहता है, अतः वही मने पूजा की ।

[६२] इसके बाद—एक दूसरे दिन, शिवमन्दिरके द्वारदेशमें मृन्गीगणको देण कर राजाने धन पा ल से पूछा कि—यह दुर्बल क्यों है ? यह बोत्र—[मृन्गी शिवकी निम्न प्रकारकी विधि] लीलायें देखकर सोचता रहता है कि—

[६३] यदि यह (शिव) दिग्भर है तो इसको धनुषसे क्या काम है ? अगर धनुष्य है ही तो भरम क्यों ? यदि मम्म भी हुआ तो त्वी क्यों ? और यदि स्त्री है तो किर कामसे देण क्यों है ?—इस प्रकारकी अपने स्वामीकी परस्पर विरुद्ध चेष्टाओंको देखकर [यह मृन्गी देण हो रहा है और इनी लिये] शिवाजोमें गाठ बंधे हुए अश्वि-दोष शरीरको धारण कर रहा है ।

... ५८) इसके अनन्तर एक बार राजा सरस्वती कण्ठाभरण नामक प्रासादमें जा रहा था। उस समय धनपाल पंडितसे, जो सदा सर्वज्ञ-शासन (जैन धर्म) की प्रशंसा किया करता था, पूछा कि 'सर्वज्ञ तो कभी एक बार हुए थे। पर अब भी उस धर्ममें क्या कुछ ज्ञानातिशय है?' उसके ऐसा कहनेपर [धनपाल बोला—] 'अहंत विरचित (उपदिष्ट) अहंत श्री चूडामणि नामक ग्रन्थमें त्रैलोक्यके तानों काठके वस्तु विषयके स्वरूपका परिज्ञान आज भी वर्तमान है।' उसके ऐसा कहनेपर राजाने पूछा कि 'हम लोग अभी इस तीन दरवाजेके मण्डपमें स्थित हैं। किस रास्ते होकर यहाँसे बहार निकलेंगे?' राजाको इस प्रकार शास्त्रपर कलंक लगानेको उद्यत होते देखकर उसने 'बुद्धि यह तेरहवीं मात्रा है' इस लोकोक्तिको सत्य करते हुए, भोजपत्रपर राजाके प्रश्नका निर्णय लिख कर उसे मिट्टीके गोलेमें रख दिया, और उसे ताम्बूलमाहकको सोंपकर राजासे बोला कि 'महाराज, पधारिये!' राजाने अपनेको उसकी बुद्धिके जालमें फँसा समझा और सोचा कि इसने तीनमेंसे ही किसीका निर्णय किया होगा, इसलिये बद्दुयोंको चुलाकर मण्डपकी पद्मशिलाको हटवा दिया और उसी मार्गसे बहार निकला। फिर उस मिट्टीके गोलेको तोड़कर उसके लिखित अक्षरोंमें, निकलनेके लिये उसी मार्गके निर्णयको पढ़कर कौतुकसे चिन्तमें चकित होता हुआ जैन धर्मकी ही प्रशंसा की।

(यहाँ D पुस्तकमें निम्नलिखित पद्य अधिक पाये जाते हैं—)

[६४] जो चीज विष्णु दो आँखोंसे, शिव तीनसे, ब्रह्मा आठसे, कार्तिकेय बारहसे, रावण बीससे, इन्द्र दस सौसे और जनता असंख्य नेत्रोंसे भी नहीं देख पाती, बुद्धिमान पुरुष उसीको एक प्रज्ञा- (बुद्धि) रूपी नेत्रसे स्पष्ट देख लेता है।

(Pb आदर्शमें यहाँ निम्नलिखित एक और कथन अधिक पाया जाता है—)

एक बार जलाश्रय (तालाब) के अठ्ठे-दुरे-पनके विषयमें पूछ हुई [तो पण्डितने कहा—]

[६५] सचमुच ही तालाबोंमेंका टंडा और चंद्रमाकी किरणोंसे श्वेत बना हुआ जल खूब पी करके प्राणियोंकी सारी तृष्णा नष्ट हो जाती है और वे मनमें प्रमुदित होने हैं, परन्तु जब सूर्यकी किरणें उसे सोल लेती है तो [उसमेंके] अनन्त प्राणी विनष्ट हो जाते हैं और इसीलिये मुनि-लोग कुआँ बावड़ी आदिके वननिके विषयमें उदासीन भाव प्रकट करते हैं।

एक बार राजा अपने वनवाये हुए बहुत बड़े नये तालाबके पास गया। वहाँ पण्डितसे पूछा कि यह धर्मस्थान कैसा है। धनपाल बोला—

[६६] तड़ागके वहाने यह आपकी [एक] दानशाला है जिसमें सदा ही मछली आदि जलजन्तु अच्छी तरहकी रखे हैं और जिस स्थानपर बक, सारस, चक्रवाक आदि [मत्स्य भोजी दान ग्रहण करनेवाले] पात्र हैं; वहाँ कितना पुण्य होता होगा सो तो हम नहीं जान सकते।

इससे राजा [मनमें] कुपित हुआ। नगरको आते समय बालिकाके साथ एक बुद्धियाकी वृद्धावस्थासे सिर धुनती हुई देखकर राजाने पूछा— 'यह सिर क्यों धुन रही है।' तब धनपाल बोला—

[६७] क्या यह नंदी है, या विष्णु? क्या कामदेव है या चंद्रमा? क्या विधाता है अथवा विधापर है? क्या इन्द्र है, कि नल है, कि कुबेर है? ना, ना, यह नहीं है, यह भी नहीं है, यह भी नहीं है, विच्युल यह नहीं, यह भी नहीं, वह भी नहीं, और वह भी नहीं, यह तो क्रीड़ा करनेमें प्रवृत्त ऐसा है सग्ये! स्वयं राजा भोज देव है।

[इसके सिरके धुननेका यह मतलब है—ऐसा कह कर] इस शोकसे रष्ट राजा को संतुष्ट किया।

५९) इसके बाद, धनपालने ऋषभ-पञ्चाशिका स्तुतिकी रचना की। सरस्वतीकण्ठाभरण प्रासाद में उसकी बनाई प्रशस्ति-पट्टिकामें किसी समय राजाने [यह काव्य पढा—]

९५. इमने [अपने जन्ममें] पृथ्वीका उद्धार किया, शत्रुके वशःस्थलको विदारण किया, और बलिकी राजलक्ष्मी (विष्णुके पक्षमें बलि नामक राजा और भोजके पक्षमें बलशाही राजा) को आत्मसात् किया। इस प्रकार इस युवकने ये काम एक ही जन्ममें किये जो पुराण पुरुष (विष्णु) ने तान जन्ममें किये थे।

इस काव्यको पढ़कर उसके पारितोषिकमें एक सोनेका कलश दिया। उस प्रासादसे निकलकर उसीके द्वारके खंभोंपर मूर्तिमान् मदनको, जो रतिके साथ हस्तताल (ताळी) दे रहा था, देखकर राजाने धनपालसे उनके हंसनेका कारण पूछा। इस पर पंडित बोला—

९६. यह है त्रिभुवनमें संयमके लिये विस्फात ऐसा वह शिव, जो इस समय विरहकातर हो कर अपने शरीरमें ही स्त्रीको धारण किये है। इसीने हमें एक समय जीता था ! इस प्रकार प्रियाके हाथसे अपने हाथको बजाता हुआ और हंसता हुआ यह मदनदेव जयमान् हो रहा है।

[यहाँ D पुस्तकमें “अत्रदिशे शिवमरणे०” “दिवाद्या यदि तन्मिन्मय घृणा०” “अमेध्वमश्राति०” “पयःप्रदान०” “अत्युत्तमाङ्गे” इत्यादि पत्र पाये जाते हैं। पर चूँकि ये यहाँ अप्रासंगिक हैं और Pb आदर्शके अनुसार इसके पहले ही उल्लिखित हो चुके हैं इलिये फिर उद्धृत नहीं किये गये।]

९७. पाणिग्रहणके समय शिवका जो भूतिभूषित शरीर पुष्कलित हुआ उसकी जय हो—जिस शरीरमें [पुष्कलके बहाने] भस्मावशेष मदन मानों फिर अंडुरित हुआ है।

इस प्रकारके तथा इसीतरहके, अन्य अन्य प्रसिद्ध और सिद्ध सारस्वतकविओंके काव्योंको कह कह कर जब धनपाल राजाको रजित कर रहा था, उसी समय द्वारपालने एक व्यागरीका आना निवेदन किया। समामें प्रवेश करके, राजाको नमस्कार कर, उसने मोगकी बनी पट्टीपर लिखे हुए कुछ काव्योंको दिखाया। राजाके उसके प्रासिद्धानके वोरमें पूछने पर वह बोला कि—‘मेरा जहाज अरुन्धात् समुद्रमें एक जगह रुक गया, जहाजियोंने खोज करके देखा तो यहाँ एक शिवमन्दिर मिला, जिसके ऊपर चारों ओर जल बह रहा है पर भीतर पानीका अभाव है। उन्होंने उसकी एक दीवाल पर अक्षर देतकर उसे जाननेकी इच्छासे उसपर मोमकी पट्टी लगा दी। उसी के उमडे हुए अक्षर इस पट्टीपर हैं। राजाने जब यह सुना तो, उसपर [बैसी ही] गिट्टीकी पट्टी लागा कर, उसपर पड़े हुए उल्टे अक्षरोंको पंडितोंसे पढ़वाया।

९८. ‘उड़कपनसे ही, मेरी प्रातिके कारण ही यह उन्नतिकी परा कीटिकी प्राप्त हुआ है, और इस समय मेरी ही बातसे यह राजका उड़का उजाता है।’ इस प्रकार खिन्न होकर अपने पुत्ररूपी यदासे अवलंब दिया जाकर बृद्ध ‘गुणोंका समूह’ समुद्रके तीरपर तपस्याके लिये चला गया।

९९. जो धनुर्धारी प्रतिद्वंद्वियोंकी श्रियोंको वैवन्व व्रत देनेवाला है ऐसे उस राजाके दिश्विजयके लिये उद्यत होनेपर और क्रुद्ध होकर प्रति दिशामें उसके भ्रमण करनेपर, और श्रियोंकी तो बात ही क्या स्वयं रति मी मारे डरके अपने पतिको, मदान्ध भ्रमरियोंका नील चोला धारण किये हुए पुष्पधनुषको [मी हाथमें] नहीं लेने देती।

१००. चिन्तारूपी गंभीर कूपपर महाशोकरूपी चलती अरघट (घहारी) परसे निःश्वास फेंककर अपने बड़ी बड़ी आँखरूपी घट्टीयंत्रसे छोड़े हुए अश्रुधारको और नासिकाकी वंशप्रणालीके

विषम पथसे गिरते हुए इस वाप्य रूपां पानीपको, हे महाराज, तुम्हारे शत्रुओंकी स्त्रियों अविराम भावसे स्तनरूपी दो कलशोंमें ढोया करती हैं ।

इस प्रकार काव्योंके पूरा पढ़े जानेपर [आगे यह आधा काव्य मिला—]

१०१. 'अहो ! पूर्वकृत कर्मोंका परिणाम प्राणियोंके लिये सचमुच ही बड़ा विषम होता है ।'

इस काव्यका उत्तरार्द्ध छिन्न प्रभृति सैकड़ों पंडितोंके पूरा करनेपर भी ठीक नहीं जमता था तब राजाने धनपाल पंडितसे पूछा [तो उसने अपनी प्रतिभाके बलसे यह यथार्थ पाठ कहा]—' हरेरहे ! जो सिर शिवके सिर पर विराज रहे थे वे गुप्तोंके पैरोंसे लुण्ठित हो रहे हैं '। ' यही उत्तरार्द्ध ठीक जमता है ' इस प्रकार जब राजाने कहा तो पंडित बोला—'यदि पदबन्ध और अर्थ दोनों ही, श्री रामेश्वर प्रासादकी दीवालयपर ये इसीप्रकार न हों तो, इसके बाद आजीवन मैं कविताका त्याग कर दूँ ।' उसकी इस प्रतिज्ञाके सुननेके साथ ही राजाने जहाजके यात्रियोंको उसी समुद्रमें गोता लगवाकर मंदिरको खोज निकालनेकी आज्ञा दी । ६ महिने बाद उसे ब्रूंड निकाला और उसपर फिरसे मोमकी पट्टी लगा कर [देखकी नकल ली] उसमें यही उत्तरार्द्ध निकला । यह देखकर [राजाने] उसके उपयुक्त पारितोषिक दिया । इस प्रकार, इस खण्ड प्रशस्ति के अनेक काव्य परंपराके अनुसार समझने चाहिये ।

६०) एक बार राजाने सेनामें डील-ढाल होनेका कारण पंडितसे पूछा । उसने अपनी तिलक मंजरी [नामक कथा] की रचनाको व्यप्रताका कारण बताया । शीतकालकी एक रात्रिके अन्तिम प्रहरमें राजाको कोई विनोद नहीं मिल रहा था । उसने पंडितको बुला कर, स्वयं उसकी उस तिलक मंजरी कथाको पढ़ने लगा और पंडित उसकी व्याख्या करने लगा । राजाने उसके ' रस ' के गिरनेके भयसे उसके नीचे सोनेकी थालीमें कचोळक (कटोरा) रखा और इस तरह [बड़े चावके साथ] समाप्त किया । उस अद्भुत काव्यसे चित्तमें चमकृत होकर राजाने कहा कि—' यदि मुझे इस काव्यका कथानायक बनाओ और विनीता के स्थानमें अवन्तीका नाम रखो, तथा शक्रावतार तीर्थकी जगह महाकाळ को उल्लिखित करो तो जो माँगो यहाँ मैं तुम्हें दूंगा ।' राजाके ऐसा कहने पर उसने कहा कि—जिस प्रकार खद्योत और सूर्यमें, सरसों और सुमेरुमें, काच और काब्रनमें, तथा धरे और कल्पवृक्षमें महान् अन्तर है उसी तरह तुममें और उनमें है । ऐसा कहता हुआ—

१०२. हे दो मुँहवाली, निरक्षर, छोटेकी तराजू ! तुझे क्या कहूँ ? जो तू गुंजाके साथ सोनेको तौलते समय पाताल नहीं चली गई ।

इस प्रकार जब पंडित शिङ्क रहा था, तो राजाने उस मूल प्रतिको जलती आगमें इन्धन बना दिया । इस प्रकार वह दिया निर्वेद * होकर और दिया अवाद्मुख × होकर अपने मकानके पिछले भागमें एक पुराने मन्त्रपर जा बैठा और नीसासे डालता हुआ लंग होकर सो गया । बाळपेटिता ऐसी उसकी लङ्काने उसे भक्तिपूर्वक उठाकर स्नान-पान-भोजन आदि कराके, तिलक मञ्जरीकी प्रथम प्रतिके लेखनका स्मरण कर करके आधा ग्रंथ लिखा दिया । फिर पण्डितने उत्तरार्द्ध नया लिखकर ग्रंथ संपूर्ण किया ।

[यहाँ पर इसके आगे Pb आदर्शमें निम्न लिखित कथन पाया जाता है—]

पंडितने ग्रंथ संपूर्ण किया और फिर रुठ होकर नाणा गोंवमें चला गया । एक बार भोजकी सभामें धर्म नामक वारी आया । उस समय वहाँ ऐसा कोई विद्वान् नहीं था, जो उसके साथ प्रतिपाद करनेका साहस करता ।

* दिया निर्वेदका मतलब दोनों तरहसे निर्वेद हुआ । १ निर्वेद=निष्क्र हुआ ; २ निर्वेद=आनश्य हुआ ।

× दिया अवाद्मुख १=नीचा मुखवाला ; २=वाणीशून्य मुखवाला ।

तब भोजने बहुत मानके साथ धनपाठ को बुझाया। उसे आते सुन कर ही वह बारी भाग गया। लोगोंने हँसकर कहा—धर्मस्थ स्वरिता गतिः=धर्मकी गति शीघ्र होती है। [इस कथावस्तु को उसने चरितार्थ किया] राजाने सम्मान किया....और वहाँपर योगक्षेमके निर्वाह (गुजर) की क्या हाजत थी सो पूछी। पंडित बोला—

[६२] हे राजन्, इस समय हमारा और आपका घर समान है, क्योंकि दोनों ही पृथुकार्तस्वर पात्र (१ गर्भार आर्तनाटकपात्र, और २ विपुल सुवर्णपात्रपात्र) हैं, दोनों ही भूपित निःशेषपरिजन है (१ अलंकारहीन परिजनपात्र, और २ सारे परिजन जिसमें भूपित है, ऐसा) हैं, और दोनों ही विलसत्करैणुगटना (१ घृष्टिपूर्ण, और २ हाथियोंसे सुसज्जित) हैं।

(यहाँ P प्रतिमें निम्नलिखित और विदोष पंक्तियाँ पाई जाती हैं—)

एक बार उसने भोजकी समामें यह काव्य पढ़ा—

[६९] हे धाराके अरीघर ! पृथ्वीके राजाओंकी गणनामें कौतूहलवान् होकर इस प्रयाने आकाशमें खुदियामें लहरा मीच खींचकर तुम्हारी ही (अकेलेकी) गणना की। वहाँ रेगाये यह स्वर्गगा हो गई है और तुम्हारे समान पृथ्वीमें अन्य भूमिजव (राजा) का अमान होनेसे उसने उस खाटियाको फेंक दिया वही यह हिमाड्य बना है।

अन्य पंडित इस काव्य [की अयुक्ति] पर हँसे। पर धनपाठने कहा—

[७०] बास्मीकिने वानरोंमें आहत (मैगाये गये) पर्वतोंसे समुद्रको बँधनाया और व्यासने अर्जुनके बाणोंसे। तथापि उनकी बातें अयुक्ति नहीं समझी जाती। हम तो कुछ प्रस्तुत विषय ही कहते हैं, तथापि लोग मुँट फाड़ कर हँसने हैं। इसलिये हे प्रतिष्ठे, तुझे नमस्कार है।

एक बार किमी परिदितके यह कहनेपर कि—हे राजन्, महाभारतकी कथा सुनिये, उसपर परम आर्हत पंडितने कहा—

[७१] कानीन (कुमारी कन्याके पुत्र=प्याम) मुनि, जो अपनी भालूबधूके वैश्वयका दिव्यंस करने कात्रा है, उनकी रचना, जिसमें गोटक (विधवा पुत्र) के पाँच पुत्र पाण्डव नेता है, जो स्वयं कुंड (जातिवपनिका) कीक अण्ड उपनयिसे उत्पन्न पुत्र) है। कहा गया है कि ये पाँचो ममान जानिके हैं। इनका संकीर्ण करना भी यदि पुण्य-कर और कन्याण-कारक हो तो फिर पापकी दूसरी कौन भी गति होगी !

६१) गोमन मुनिकी 'गोमन चतुर्विंशतिकास्तुति' प्रसिद्ध ही है।

'इस समय क्या कोई [नया] प्रबंध आदि दिया जा रहा है?' राजाके यह पूछनेपर धनपाठने कहा—

[७२] गडमें उतरनेवादी गरम कजरीसे, जउ जानेकी आशंकाके कारण सरस्वती मेरे मुँहसे निकट कर चली गई है। इसलिये बैरियोंकी लपकीके फेज एकड़नेमें व्यप हायकाटे महाराज ! मेरे पाम अब कथिच नहीं रहा।

राजाने [प्रमत्त होकर दूध पीनेके लिए] भी गाये दिटसाईं। राजाने जब यह पूछा कि 'गाये भित्री ?' तो—

[७३] हे नरवर ! ये भी तो दूध देती नहीं है और ना ही इन मीनेसे एकको भी बडशा है। इन मीनेसे बड़ी मुश्किलसे बाँटामा जाती हुई २० गाये घर तक पहुँच सकती हैं।

इस प्रकार धनपाठने [उन मुँडी और बेकार गावोंकी] गान कही।

[७४] धनपाल कविका सरस वचन और मलयगिरिका सरस चन्दन, हृदयमें रखकर कौन निर्वृत (शान्त) नहीं होता ।

[इतर शोभन मुनि स्तुति करनेके ध्यानमें [लीन होनेसे] एक खीके घर तीन बार [भिक्षा लेने] गया । इससे उस खीका दृष्टिदोष लगा और वह मर गया । उसने अपने माईसे अन्त समयमें ९६ स्तुतियोंकी वृत्ति कराके अनशनपूर्वक सौधर्म स्वर्ग प्राप्त किया ।]

—इस प्रकार यह धनपाल पंडितका प्रबंध पूर्ण हुआ ।

*

६२) कभी, उस नगरका निवासी कोई ब्राह्मण, जिसकी वृत्ति केवल भिक्षा ही थी, एक पर्व दिनमें नगरके सब लोगोंके ज्ञानमें व्यस्त रहनेके कारण भिक्षा न पाकर खाली ताम्र-पात्रके साथ ही घर लौट आया । इसलिये ब्राह्मणी उसे फटकारने लगी । झगड़ा बढ़ा और ब्राह्मणने उसपर प्रहार किया । आरक्षक पुरुष (नगररक्षक=पुलीस) उसे कैद करके राजमंदिरमें लाये । राजाके पूछने पर, उसने यह खीरू पदा—

१०३. माँ मुझसे सन्तुष्ट नहीं रहती, और अपनी पतोइसे भी सन्तुष्ट नहीं रहती; वह (वहू) भी न मुझसे और न मौसे [सन्तुष्ट] है । मैं भी न उस (माँ) से और न उस (खी) से [सन्तुष्ट रहता हूँ] । हे राजन् ! बताओ इसमें दोष किसका है ?

इसका अर्थ पंडितोंके न समझने पर, राजाने अपनी बुद्धिसे उसके अभिप्रायको प्रायः समझ कर, उसे तीन लाख [दानमें] दिलवाये । और श्लोकके अर्थका व्याख्यान करते हुए कहा कि दारिद्र्य ही कष्टका मूल है ।

सब दर्शनोंसे सत्यमार्गकी पृच्छा ।

६३) बादमें, किसी समय, एक बार सब दर्शनोंको एकत्र बुलाकर राजाने मुक्तिका मार्ग पूछा । वे अपने अपने दर्शनका पक्षपात करने लगे । सत्यमार्ग जाननेकी इच्छासे राजाने उन सबको एकमत होनेको कहा । वे सब ६ महीने तक शारदाके आराधनमें लगे रहे । किसी रात्रिके अन्तमें शारदाने यह कहकर कि 'जागते हो ?' राजाको उठाया और

१०४. सौगत (बौद्ध) धर्म है सो तो सुनने लायक है (अर्थात् उसके सिद्धान्त सुननेमें अच्छे हैं); और आर्हत (जैन) धर्म है सो करने लायक है । व्यवहारमें वैदिक धर्मका अनुसरण करना योग्य है और परम पदकी प्राप्तिके लिए शिवका ध्यान धरना उचित है ।

(अथवा—अक्षय पदका ध्यान करना चाहिए) राजाको तथा दर्शनों (सब मतवाले पण्डितों) को यह श्लोक सुनाकर श्रीभारती तिरोहित हुई ।

१०५. 'अहिंसा' जिसका मुख्य लक्षण है वही धर्म है । भारती (सरस्वती) है वही सबकी मान्य देवी है । ध्यानसे मुक्ति प्राप्त होती है यही सब दर्शनोंका मंतव्य है ।

इन दो श्लोकोंको बनाकर उन्होंने राजाको मुक्तिका निर्णय बताया ।

*

शीता पण्डिताका प्रबन्ध ।

६४) बादमें, उस नगरकी निवासिनी शीता नामक रवनी (रसोई बनावेवाली) को किसी विदेदी—कार्पाटिकने सूर्य पर्वके दिन भोजन बनानेके लिए अन्न दे कर, स्वयं जलाशयमें स्नान करते समय कंगुनीके सेलका पान कर जानेसे, उसके घरपर आते ही, वमन करके मृत्यु प्राप्त हुआ । उसे देखकर, अपनेको द्रव्यके निमित्त मार डालनेका कलंक लगनेकी आशंकासे उस रवनीने मरनेके लिए उसी अन्नको खा लिया । वह [उसके पेटमें] टिक गया । और उसके प्रभावसे उसको प्रतिमाका बड़ा विभव प्रादुर्भूत हुआ । तीनों

वियाओंका कुछ अन्यास करके निज या नामक अपनी नव युवती कन्याके साथ श्री भोज की समाप्ति सुसोभित करती हुई श्री भोज से बोली—

१०६. श्रीमन्महाराज भोज की शूरताकी सीमा तो शत्रुओंके बुलोंका क्षय करने तक है, यशकी सीमा ठेठ ब्रह्माण्डरूपी माण्ड तक है, पृथ्वीकी सीमा समुद्रके तट तक है, श्रद्धाकी सीमा पार्वती-पति (शिव) के चरणद्रव्यमें प्रणाम करने तक है, लेकिन बाकी जो अन्य गुण हैं उनकी तो कोई सीमा ही नहीं है ।

इसके बाद निनोद-प्रिय राजाने कुच-वर्णनके लिए विजया को आज्ञा दी । वह बोली—

१०७. उस पतले शरीरवाली रमणीके स्तनमण्डलकी यदि, ऊँचाई चिवुक तक है; उत्पत्ति मुजलताने मूल तक है; विस्तार हृदय तक है और संहति कमलिनी सूत्र तक है; वर्णकी सीमा स्वर्णकी कसौटी तक है; और कठिनताकी सीमा हारेकी पानवाठी भूमि तक है; तो उसका लावण्य अस्त समय (जीवनकी समाप्ति) तक है ।

उसके इस वर्णनको सुनकर, उस आधे कवि राजाने कहा—

[७५] 'उस कमल-नयनीके दोनों कुचोंका क्या वर्णन किया जाय ?'—इसपर उसने आधा श्लोक यह कहा— सात द्वीपके 'कर' (महसुख) ग्रहण करनेवाले आप जैसे जहाँ 'कर' (हाथ) देते हैं । राजाने एक और आधा काव्य पढ़ा—

[७६] 'आघात किये हुए मुरजके समान गंभीर धनिवाले और भ्रमरोंके समान नील [वर्णवाले] बादलोंसे वह दिशा रुद्ध-सी क्यों हो गई है ?'

इसके उत्तरार्थमें उसने कहा—

['इस लिये कि] प्रथम विरहके खेदसे म्यान बनी हुई बाटा, जिसका मुख आँखोंके उगले हुए आँसुओंसे धो गया है, वह यहाँ वास करती है ।'

१०८. 'जगत्को आनंद देनेवाले उस सुरतको नमस्कार है'—इस प्रकार राजाके कहनेपर [क्यों कि] 'जिसे आनुपंगिक फल हे भोजराज, आप जैसे पुरुष हैं ।'

विजयाके इस विजयशाही वाक्यको सुनकर राजाने लजित होकर मुँह नीचा कर लिया । तब राजाने उसे [अपनी] भोगिनी बनाई । एक बार उसने जालके भीतरसे आते हुए चन्द्र-कर (किरण) के स्पर्श होनेपर [काव्य] पढ़ा—

[७७] हे कलंकके शृंगारवाले चन्द्र ! वस करो इस करस्पर्शनकी ठीलाकी । तुम तो शिवके निर्मान्य हो, इससे तुम्हारा स्पर्श करना उचित नहीं ।

[७८] अनुचम परायण (आलसी) राजाओंके समान, क्षणभरमें तारायें क्षीण हो गईं; ग्राम्य जनोंकी सभामें पंडितकी पण्डिताईके समान चन्द्रमाकी कान्ति म्यान हो गई; जैसे मानों पारने सोना खा लिया हो वैसे प्राची दिशा विगलवर्णा हो गई और निर्धन पुरुषोंके गुणकी तरह ये दीपक भी शोभा नहीं प्राप्त करते ।

[७९] कलिकाटमें स्वजनोंकी भाँति तारायें विरल हो गईं, मुनिके मनकी नाई आकाश सर्वत्र प्रसन्न हो गया, सज्जनोंके चित्तसे दुर्जनकी तरह अन्धकार दूर हो रहा है और निरुचमियोंकी लक्ष्मीकी तरह रात जल्दी जल्दी बीत रही है ।

इस प्रकार यहाँ पर बहुत कुछ वक्तव्य (काव्य आदि कहने लायक) है जो परंपरा द्वारा जान लेना चाहिए ।

—इस प्रकार शीता पंडिताका मबंध समाप्त हुआ ।

मयूर, वाण और मानतुङ्गाचार्यका प्रबन्ध ।

६५) मयूर और वाण नामक दो साला-बहनोंई पंडित, अपनी विद्वत्तासे एक दूसरेके साथ स्पर्धा करते हुए भोजकी साममें लब्धप्रतिष्ठ हुए । एक बार वाण पण्डित बहनसे मिलने गया और उसके घर जाकर रातको द्वारपर सो गया । [उस रातको रूठी हुई] उसकी मानवती बहनको बहनोई द्वारा मनाती सुना । [वाण ने] उसपर ध्यान दिया तो उसने यह सुना—

१०९. हे तन्वंगी, प्रायः [सारी] रात वीत चली, चन्द्रमा क्षीणसा हो रहा है, यह प्रदीप मानों निद्राके अधीन होकर झूम रहा है, और मानकी सीमा तो प्रणाम करने तक ही होती है, अहो ! तो भी तुम क्रोध नहीं छोड़ रही हो ?—

[काव्यके] ये तीन पद वारंवार उसे कहते सुनकर [वह चौथा पाद इस प्रकार बोल उठा—]

‘ हे चण्डि ! कुचोंके निकटवर्ती होनेसे तुम्हारा हृदय भी [उनके जैसा] कठिन हो गया है ! ’

भाईके मुँहसे यह चौथा पाद सुनकर वह लजित हो गई और कुपित होकर उसे शाप दिया कि ‘ तुम कुष्टी हो ! ’ उस पतिव्रताके व्रतके प्रभावसे उसे उसी समय कुष्ठ रोग उत्पन्न हो गया । प्रातःकाल शालसे शरीर टककर राजसभामें आया । मयूर ने मयूरकी भौंति कोमल वाणीसे उसे ‘ वरकोदी ’ यह प्राकृत शब्द कहा । इसपर चतुर चक्रवर्ती राजाने उसकी ओर विस्मयके साथ देखा । प्रसंगान्तर उठनेपर वाण ने देवताराधनका विचार किया और लजित भावसे वहाँसे उठकर नगरकी सीमापर गया । वहाँ पर एक स्तंभ खड़ा कर नीचे खदिर काष्ठके अंगारसे भरा हुआ कुंड बनवाया । स्तंभके सिरेपर लटकाए हुए छींकेपर स्वयं बैठ गया । वहा सूर्यदेवकी स्तुति बनाना प्रारम्भ किया । प्रति काव्यके अन्तमें छींकेकी एक एक रस्सी चाकूसे काटने लगा । इस प्रकार पाँच काव्योंके अन्तमें उसने पाँच रस्सिया काट दीं । इसके बाद छींकेके अप्रमाणमें लगा रहकर उसने छठे काव्यसे सूर्यदेवको प्रत्यक्ष किया । उसके प्रसादसे तत्काल ही वह तेजवान् काञ्चनकी कान्तिवाला हो गया । दूसरे दिन उत्तम वर्णके चन्दनका शरीरमें लेप करके और दिव्य श्वेत वस्त्र लपेट कर [राजसभामें] गया । उसके शरीरसौन्दर्यको [पूर्ववत्] राजाने देखा तो मयूर ने सूर्यके वरका फल बताया । यह सुनकर वाण ने वाणकी भौंति इस वाणीसे मयूरका मर्म वेध किया कि ‘ यदि देवाराधन इतना सरल है तो तुम भी कुछ कोई विचित्र कार्य करके दिखाओ न ? ’ उसके ऐसा कहनेपर मयूर ने जवाब दिया कि— ‘ नीरोग आदमीको वैधसे क्या काम ? फिर भी तुम्हारी बातको सच कर दिखानेके लिए अपने हाथपैर छुरीसे काट देता हूँ और तुमने तो छठे काव्यमें सूर्यको प्रसन्न किया है, परन्तु मैं प्रथम काव्यके छठे अक्षरमें ही भवानीको प्रसन्न करता हूँ । ’ यह प्रतिज्ञा कर सुखासनपर बैठकर चण्डिकाके मंदिरके पिछवाड़े जाकर बैठ गया । वहाँ ‘ मा भांशीविभ्रमम् ’ (ऐसे आदि वाज्यवाली चण्डिका-स्तुति प्रारम्भ की) इसके छठे अक्षरपर ही चण्डिका प्रत्यक्ष हुई और उसकी कृपासे उसका शरीरपल्लव प्रत्यक्ष तक सुन्दर हो गया । अपने सामने ही उस प्रसादको देखकर राजा और अन्य राजपुरुषोंने सामने आकर उसका जय-जय-कार किया और बड़े समारोह के साथ उसका नगरमें प्रवेश कराया ।

‘ वरकोदी ’ यह प्राकृत शब्द द्वि-अर्थी है । ‘ वर कोदी ’ और ‘ वरक ओदी ’ ऐसा इसका पदच्छेद किया जाता है । पहले पदमें वर=अच्छा, कोदी=कुष्टी अर्थात् अच्छे कुष्टी (कुष्ठरोगी) बने ऐसा व्यंग्य है । दूसरे पदमें वरक=शाल ओदी=जपर डाली अर्थात् ‘ शाल ओदकर आये हो ! ’ ऐसा आश्चर्यचोतक वचन है ।

६६) इसी अवसर पर, मिथ्यादृष्टि वालोंके धर्मको इस प्रकार विजयी होते देख, सम्यग्दर्शन (जैन) द्वेषी कुछ प्रधान पुरुषोंने राजासे कहा—‘ यदि जैनधर्ममें भी कोई ऐसा प्रभाव बतलाने वाला हो तो इवेतावर स्वदेशमें रहे, नहीं तो शीघ्र ही निर्वासित कर दिये जायँ । ’ इस प्रकार उनके वचनके पश्चात् श्रीमान तुंग्याचार्य को वहाँ बुलाकर राजाने कहा कि अपने देवताओंके कुछ चमत्कार दिखाइये । वे बोले—‘ हमारे देवता तो मुक्त हैं, उनके चमत्कार क्या हो सकते हैं; तथापि उनके किंकर देवताओंके प्रभावका आविर्भाव देखिये । ’ इस प्रकार कहके अपने शरीरको चँवालोंस हथकड़ियों और बेड़ियोंसे कसवाकर उस नगरके श्री-युगादि देवके मंदिरके पिछले भागमें बैठ गये । ‘ भक्ता मर ’ इस आदि वाक्यवाली मंत्रगर्भ नई स्तुति बनाने लगे । इसके प्रति काव्यके अन्तमें एक एक बेड़ी टूटती जाती थी । बेड़ियोंकी संख्याके बराबर काव्य बनाकर स्तव पूरा किया और उस मंदिरको अपने सम्मुख परिवर्तित कर शासनका प्रभाव दिखाया ।

—इस प्रकार श्रीमानतुङ्गाचार्यका प्रबन्ध पूर्ण हुआ ।

*

गूर्जर देशकी चिदग्भताका प्रबन्ध ।

६७) बादमें, किसी एक अवसर पर, राजा अपने देशके पंडितोंके पंडित्यकी प्रशंसा करता हुआ गूर्जर देशके पण्डितोंको अनिदग्ध (असहृदय) कह कर निन्दा करने लगा । इस पर वहाँके स्थानीय [गूर्जर] पुरुषने कहा कि हमारे देशके तो लियँ और ग्वाला लोकके साथ भी आपने देशका कोई बड़ा पंडित तक समानता नहीं कर सकता । जब उसने ऐसी बात कही तो राजा उसे मिथ्याभाषी बनानेकी इच्छासे अपना मनोभाव झिपा कर, कुछ दिन तक चुप-चाप रहा । इधर उस स्थान-पुरुषने भी म को यह वृत्तान्त कहलाया । भी म ने स्वदेशकी सीमा पर कुछ रसिक वेश्याओं और कुछ ग्वाल-वेष-धारी पंडितोंको नियुक्त किया । कोई बैसा गोप प्रताप देवी नामक वेश्याको साथ लेकर रसिक जनोंके लिये अमृतकी सार-भूत ऐसी धारा नगरी के निकट आया । वहाँ उस वेश्याको सजनेके लिये छोड़कर, सबेरे ही गोप [राजसभाके समीप पहुँचा] राजदौवारिकने उसको राजाके सम्मुख उपस्थित किया । श्री भोज ने कहा कि ‘ कुछ कहो ’ इस पर—

११०. हे भोज देव ! यह तुम्हारे गलेमें जो कण्ठा पडा है वह मुझे बहुत अच्छा लग रहा है । मादम दे रहा है कि तुम्हारे मुखमें जो सरस्वती और वक्षःस्थलमें लक्ष्मी बस रही है उन दोनोंकी सीमा इतने विभक्त कर दी है ।

इस प्रकार उसकी उक्ति सुनकर विस्मयसे मनमें चकित होकर उसके सामने देख रहा था कि उतनेमें उस उत्तम परिच्छद धारिणी वेश्याको भी देखा । उसके प्रति भोज ने यह आकस्मिक वचन कहा—‘ यहाँ क्या ! ’ इसके अनन्तर वह बुद्धि-निधि सुमुखी, जो स्वजाति (स्त्री जाति) की होनेके कारण मानों सरस्वतीकी खास कृपा-पात्र थी और शरीरधारिणी प्रतिभाकी भौति [दिखाई देती थी], राजाके गंभीर वचनके भी तत्त्वको समझकर उसको [प्राकृत भाषामें] जवाब दिया कि—‘ पूछते हैं ’ उसके इस उचित वचनसे भोज का मुख-कमल विकसित हो गया । उसको कोशाप्यक्षसे तीन लाख दिखानेको कहा पर वह (कोशाप्यक्ष) इस तत्त्वको न समझकर तीन बार कहनेपर भी चुप-चाप बैठा रहा । जब वह नहीं देने लगा तो राजा प्रकाश ही बोला, कि देशकी परिस्थिति और स्वभावकी कृपणताके कारण इसे तीन ही लाख दिया रहा हूँ, यदि उदारताके साथ दिया जाय तो इतना बड़ा साम्राज्य भी देना कम ही है । इस आदेशको सुनकर समस्त राजजोकरने राजासे प्रार्थना की कि उन दो वाक्योंका अन्वय क्या है ? इस पर वह बोला—‘ इसके फटाशोंकी दोनों अंजन रेखाओंको कान तक फैली हुई देखकर मैंने कहा कि ‘ यहाँ क्या ! ’ इतने

जवाब दिया कि—‘दोनों नेत्र कान तक फैली हुई अंजन रेखाके वहाने कानोंके पास यह निर्णय करने गये हैं कि क्या यह वही श्री भोज हैं जिनके बारेमें आप लोगोंने पहले सुन रखा है? यही बात ये पूछते हैं।’ प्राकृत भाषामें, व्याकरणके नियमसे द्विवचनका प्रयोग बहुवचनसे होता है। इसी बातकी आशंका करके इसने ‘पुच्छंति’ ऐसा जवाब दिया है। अपनी लुद्धिसे वृहस्पतिकी भी अवज्ञा करनेवाले ऐसे जो पण्डित हैं उनके लिये भी जो अर्थ अविषयीभूत है, उसे सहसा ही कहती हुई यह मानों प्रत्यक्षरूपा भारती ही है। सो इसके पारितोषिकमें तीन लाख क्या चीज है? इसके बाद तीन बार ‘तीन लक्ष’ देनेके लिये कहनेके कारण अपने सामने ही उसे नव लाख दिखवाया। इस तरह राजा भोज को गूर्जर जनोकी चतुरता माझ्म हो गई तो उसने कहा—‘विवेक तो गूर्जर देश ही में है।’ [और तब राजाने ‘मा ल वी य पंडित और गूर्जर गोपाल समान हैं’ इस वृद्धजनोकी वाणीको सत्य मानकर उन्हें विदा किया।]

इस प्रकार यह वेश्या और गोपका भ्रन्ध है।

*

६८) वह राजा लक्ष्मणसे ही—

१११. मनुष्य यदि मृत्युको सिरपर बैठी हुई देखे तो उसे आहार भी अच्छा न लगे; तो फिर अकृत्य (अनुचित कार्य) करनेकी तो बात ही कहाँ हो।

इस तत्त्वको जाननेके कारण धर्म कार्यमें अप्रमत्त रहता। एक बार [रातको] मित्रा भंगके अनन्तर ‘कोई विद्वान् आ कर [कहता है] कि एक तेज घोड़ेपर सवार हो कर तुम्हारे पास प्रेतपति (यमराज) आ रहा है, इस लिए उसके अनुसार धर्म-कर्मके लिए सजित हो जाइए’ इस वचनको बोलनेके लिए नियुक्त किये हुए पंडितको प्रतिदिन उचित दान देता रहा। एक बार अपराह्नमें राजा सिंहासन पर बैठा हुआ पान देनेवालेके दिये हुए बीड़ेसे पानके पत्तेको पहले ही मुँहमें डाल लिया। जब नातिविदोने उसका कारण पूछा तो इस प्रकार कहा—‘यमराजके दौतके भीतर पड़े हुए मनुष्योंके लिये वही वस्तु अपनी है जो या तो दान कर दी गई है, या उपभोगमें ली गई है। और तो संशयवाली है। तथा और भी—

११२. [मनुष्यको] नित्य ही उठ उठ कर विचारना चाहिये कि आज मैंने कौनसा सुकृत किया। [दिनके पूरा होने पर] आयुका एक टुकड़ा ले कर रवि अस्त हो जायगा।

११३. लोग मुझे पूछते रहते हैं कि आपका शरीर तो कुशल है। [लेकिन यह नहीं सोचते कि—] हम लोगोंको कुशल कैसे! आयु तो दिन-प्रतिदिन घीतती ही जा रही है।

११४. [इस लिये] फल जो करना है उसे आज ही कर लेना चाहिये, जो दोपहरके बाद करना है उसे उसके पहले ही कर लेना चाहिये। मृत्यु इसकी प्रतीक्षा नहीं करती कि इसने किया है या नहीं किया।

११५. क्या मृत्युकी मोत हो गई है, बुढ़ापा बूढ़ा हो गया है, विपत्तियाँ विपदायें पड़ गई हैं और व्याधियाँ बीमार हो गई हैं जो ये आदमी दर्प करते रहते हैं?

इस प्रकार अनित्यता संबंधी चार श्लोकोंका यह भ्रन्ध है।

*

भोजका भीमके पास चार वस्तुयें माँगना।

६९) अन्य किसी दिन भोजनें भीम राजाके पास दूतके मुखसे चार चीजें माँगी। एक वस्तु यह ‘जो यहाँ है, वहाँ नहीं;’ दूसरी ‘वहाँ है, यहाँ नहीं;’ तीसरी ‘जो दोनों जगह है;’ और चौथी ‘जो

कहीं भी नहीं है।' विद्वानोंके लिये भी इसका अर्थ समझना सन्दिग्ध होनेसे अणु हिल्लपुरमें इसके लिये दौड़ी पिटवाई जा रही थी तब किसी गणिकाने उस दौड़ीको छू कर विज्ञापित किया कि—(१) गणिका, (२) तपस्वी, (३) दानेश्वर और (४) जुआड़ी रूप इन चार चीजोंको भेज दीजिये। उसके कहने पर राजाने उस दूतको ये चीजें सौंप दी। 'ऐसा ही होना चाहिये' यह कह कर दूत चारों चीजें ले कर जैसे आया था वैसे ही वापस चला गया।

इस प्रकार चार वस्तुओंका यह प्रबंध है।

*

७०) एक बार राजा भोज वीरचर्यामें घूम रहा था। उस समय किसी अभागकी स्त्रीको—

११६. लोकमें तो ऐसा सुना जाता है कि मनुष्यको [अपनी आयुमें] दश दशायें आती हैं। पर मेरे पतिकी तो एक ही [दरिद्र] दशा [सदा बनी रहती] है, सो माझ्य देता है कि बाकीको चोरोंने चुरा लिया है।

यह पढ़ते सुन कर उसकी दुरवस्था पर राजाको दया आई और प्रातःकाल उसके पतिको सभामें बुला कर उसका कुछ भी अच्छा भविष्य सोच कर, दो बिजौरे नीबुओंको, जिनमेंसे प्रत्येकमें एक एक लाखकी कीमतके रत्न गुप्त भावसे रखवा कर, उसे इनाममें दे दिये। उसने भी इस वृत्तान्तको कुछ न समझ कर, कुछ दाम ले कर, साग-भाजीकी दूकान पर जा कर बेच दिये। उस (दूकानदार) ने भी उसका हाल न जान कर उन दोनों नीबुओंको किसीको भेंट दे दिया। उस आदमीने फिर से उन्हें उसी राजा भोजको भेंट किया।

११७. समुद्रवेलाकी चञ्चल तरंगोंसे घसीटा हुआ यदि कोई रत्न पहाड़ी नदीमें आ भी जाय तो वह फिरसे उसी मार्गसे उसी रत्नाकर (समुद्र) में ही चला जाता है।

इस अनुभवसे राजाने [इस उदाहरणमें] भाग्य ही को तथ्य माना। क्यों कि, कहा भी है कि—

११८. वर्षा कालमें अशेष जगत्के प्रीत होने पर भी चातक तो जलका एक बूंद भी नहीं पाता। सच है, अलम्ब्य वस्तु कैसे मिल सकती है।

इस प्रकार यह बिजौरे नीबूका प्रबंध है।

*

७१) अन्य किसी एक रातको, राजाने अपने क्रीड़ा-शुक (तोते) को गुप्त रूपसे 'एक अच्छा नहीं है' यह बात पढ़ा कर उसे सिखाया कि तुम प्रातःकाल सभामें यही वाक्य उच्चारण करना। बादमें जब उस तोतेने ऐसा ही कहा तो राजाने पंडितोंसे उसका मतलब पूछा। वे उसका मतलब न जानते हुए, उसके जाननेके लिये, उन्होंने ६ महीनेकी मुद्दलत मॉगी। इसके बाद उनका मुख्य वर रुचि इसका मतलब समझनेके लिये देशान्तरमें भ्रमण करने लगा। वहां किसी पशुपालने उससे कहा कि मैं इसका मतलब आपके स्वामीको बता सकता हूँ। पर मैं अपने इस कुत्तेके बच्चेको, बूटा होनेके कारण, न तो ढो सकता हूँ,—और बड़ा प्रिय होनेके कारण, ना ही छोड़ सकता हूँ। उसके ऐसा कहने पर उसे साथ लेनेकी इच्छासे वर रुचिने उस कुत्तेको कपड़ेमें लपेट कर अपने कंधे पर रख लिया और उस पशुपालको साथ ले कर राजाकी सभामें गया। वहाँ उसको उत्तर देनेवाला बताया। इसके बाद, राजाने उस पशुपालसे उसी बातको पूछा। [उसने जवाब दिया—] महाराज, इस जीवकोमें लोम ही 'एक अच्छा नहीं है'। राजाने फिर पूछा—'कैसे ?' वह बोला—इसलिये कि यह

प्राप्तण इस कुत्तेको, जो यद्यपि अस्पृश्य है, तथापि उसे कन्धे पर ढोता है, वह लोभ ही की लीला है । इसलिये लोभ ही एक अच्छा नहीं है ।

इस प्रकार यह 'एक अच्छा नहीं है' प्रबन्ध पूरा हुआ ।

*

७२) † अन्य किसी समय, केवल मित्रको साथ ले कर राजा रातमें घूम रहा था, तो उसे बड़े जोरकी प्यास लगी । तब उसने एक वेश्याके घर जा कर मित्रके मुखसे जल माँगा । तब बड़े प्रेमके साथ शंमली नामक दासी बड़ी देर करके, ईखके रससे भरा पात्र, कुछ खेदके साथ ले आई । मित्रने जो खेदका कारण पूछा, तो बोली कि पहले ईखकी एक ही लट्टीमेंसे, जब यह शूखसे छेदी जाती थी तो, इतना रस निकल आता था कि घड़ेके साथ पुरवा (शकोरा) भी भर जाता था; पर इस समय राजाका मन प्रजाके विरुद्ध हो रहा है, इसलिये बड़ी देरके बाद भी केवल पुरवा ही भर पाया है । यही इस खेदका कारण है । राजाने उसके खेदके कारण को सुन कर विचार किया कि जिस बणिक्ने शिव मन्दिरमें वह बड़ा नाटक करवाया है उसको मैंने अपने मन ही मन, छटनेका विचार किया था; इसलिये इसकी यह बात ठीक ही समझनी चाहिए । बादमें लीट कर अपने स्थान पर आ कर सो गया । दूसरे दिन प्रजा पर बत्सल भाव मनमें रखता हुआ राजा वेश्याके घर गया । उस दिन उसने यह कह कर राजाको सन्तुष्ट किया कि आज राजा प्रजाके प्रति कृपावान् है, क्योंकि आज ईखसे बहुत रस निकला है ।

इस प्रकार यह इशुरसका प्रबंध पूर्ण हुआ ।

*

७३) अन्य किसी एक अवसर पर, धारा नगरीके शाखापुरमें एक गोत्र देवीका मंदिर था जिसमें नमस्कार करनेके लिये [राजा] निल्य आया करता था, उसमें कुछ वेलाका व्यतिक्रम हो गया । इससे वह देवता प्रत्यक्ष हो कर द्वार पर आ कर उस राजाको देखने लगी, जो उस समय बहुत थोड़े नौकरोंके साथ द्वार-देस पर आ पहुँचा था । राजाको देख कर ससंभ्रम वह अपने आसन पर बैठनेकी गद्दबद्दमें, निजका आसन लांच गई । राजाने प्रणाम करके इस श्रुतान्तको पूछा । देवताने निकट ही शयुसेनाका आना बता कर कहा कि शीघ्र जाओ । कुछ ही समयमें राजाने अपनेको गूर्जर सैन्यसे घिरा पाया । वेगवान् घोड़ेपर चढ़कर तेजीसे जाता हुआ वह धारा नगरीके फाटक पर पहुँचा, तो उस समय आलया और कोलया नामके दो गुजराती सवारोंने उसके कंधेमें धनुष फेंके और यह कह कर उसे छोड़ दिया कि 'तुम इतने-ही-से मार डाले जाते ।'

११९. जिसके 'गुण' यान् धनुषने, मानों यह समझ कर ही कि यह भोज 'गुणी' है भागते हुए उस राजाको घोड़ेसे [नीचे] नहीं गिराया ।

इस प्रकार यह घुड़सवारोंका प्रबंध पूर्ण हुआ ।

*

[इसके आगे Pb प्रतिमें निम्नांकित प्रबंध पाया जाता है—]

अन्यथा एक बार रातमें जग कर राजा भोजने अपनी समृद्धिके विस्तारकी अपने हृदयमें सोच कर कान्यके ये तीन चरण पढ़े—

‡ यह इशुरसका प्रबंध किंगी प्रतिमें, विजय राजके समन्वये किया हुआ मिश्रता है और इसलिये इसके पहले, अर्थात् पृष्ठ ९ पर भी यह भाषा हुआ है, लेकिन वहाँ यह प्रथम मात्र देता है ।

[८०] मनोहर युवतियों, अनुकूल स्वजन, अच्छे बांधव और प्रेममय वचन बोलनेवाले नौकर हैं ।

[द्वार पर] हाथियोंके झुंड गरज रहे हैं, और तरछ (तेज) घोड़े [हिनहिना रहे हैं]—

इस प्रकार राजा जब यह वारंवार बोल रहा था और चौथे चरणके लिये अक्षर ब्रूँद रहा था, उसी समय कोई वेद्याव्यसनी विद्वान्, जो अपनी वेद्याके वचनसे रानीके दो कुण्डल चुवानेके लिये राजाके महलमें चौर बन कर घुसा था, उसने उन तीन चरणोंको सुना । तब उसने सोचा कि ' जो होना हो सो हो, पर जो चौथा चरण मनमें स्फुरित हो आया है उसे कैसे दबा रखूं ? ' और वह बोला—

‘ आंखोंके मीच जाने पर [इनमेंसे फिर] कुछ भी नहीं है । ’

राजाने सन्तुष्ट हो कर कुण्डलके साथ उसको मनोवाञ्छित दिया ।

७४) अन्य समय, एक बार, वही राजा, राजपाटीसे लौट कर नगरके गोपुरमें [जब आ रहा था तब] एक बिना लगामका घोड़ा दौड़ता हुआ वहाँ आ पहुँचा, जिसे देख कर लोक आकुल-व्याकुल हो कर इधर उधर मागने लगे । उनमें एक तक्र विक्रय करनेवाली ग्वाड़िन भी सपाटमें आ गई और उसके सिरपर जो छोटसे मरी हुई हंडिया थी वह नीचे गिर पड़ी । उसमेंसे नदीके प्रवाहकी तरह गोरस निकल कर वह चला, जिसे देख कर उसका मुख-कमल खिल उठा । भोजने यह देख कर पूछा कि विवादके समय भी तुम्हारे इस हर्षका कारण क्या है ? राजाके यह पूछने पर वह बोली—

१२०. राजाको मार कर, पतिको सांपसे काटा हुआ देख कर, मैं विविध परदेशमें वेद्या हुई । पुत्रको [अपने साथ] वेद्यागामी पा कर मैं चित्तमें प्रविष्ट हुई । इसके बाद, गोपनी गृहिणी बनी; तो फिर आज मैं इस तक्रके लिये क्या शोच करूँ ?

[वह इस प्रकार बोली । उस प्रदेशसे एक बड़ी नदी प्रादुर्भूत हुई, जिसका नाम मही पड़ा ।]

इस प्रकार गोपगृहिणीका यह मबंध समाप्त हुआ ।

*

७५) एक बार, प्रातःकाल, श्री भोज एक उपशिला (छोटे पत्थर) को लपक करके आनन्दपूर्वक धनुर्बंदका अभ्यास कर रहा था, उसी समय श्वेताम्बर वेदाधारी श्री चंद्रनाचार्यने अपनी तत्कालोत्पन्न प्रतिभाकी सुन्दरतासे इस उचित पथको कहा—

१२१. यह खण्डित शिला चाहे खण्डित हो जाओ, पर हे राजन् ! इसके बाद त्रींदा करना बस कर दीजिये; और देव । प्रसन्न हो कर पापाणवेधके व्यसनकी यह रसिकता छोड़िये । क्यों कि अगर यह त्रींदा बड़ी तो बड़े बड़े परतोंको वेध करोगे और यह धरती ध्वस्ताधारा (आचार जिसका व्यंस हो गया है) हो कर, हे नृपतिभक्त ! पातालके मूलमें चली जायगी ।

उनकी इस प्रकारकी करिंताके चमकारसे चमकृत हो कर भी राजाने कुछ सोच कर कहा— ' सर्व-शास्त्र-न्यासगत हो कर भी आपने जो ' ध्वस्ताधारा ' यह पदा उससे कोई उल्पात सूचित होता है । '

*

भोज और कर्णका संघर्ष ।

७६) इधर, दाहल देशके राजाकी देवति नामक रानी महा योगिनी थी । एक बार, जब कि वह आसन्न प्रसन्ना थी, सदैव ज्योतिषियोंसे यह पूछा करती थी कि ' किस शुभ लग्नमें उत्पन्न पुत्र सार्वभौम (सप्पाट) होगा है ! ' इसके बाद, उन्होंने अच्छी तरह विचार कर बताया कि ' जब शुभ मद्र उच्च राशि, और केन्द्र (प्रथम

चतुर्थ, सप्तम, और दशम) में हों, तथा प प ग्रह तृतीय, षष्ठ और एकादशमें हों, तो जो पुत्र होगा वह सार्वभौम राजा होगा। यह सुन कर, निश्चित प्रसव समयके बाद, १६ पहर तक, योगकी युक्तिसे गर्भस्तंभ करके ज्योतिषीके निर्णयित लग्नमें कर्ण नामक पुत्रको उसने जन्म दिया। उस गर्भधारणके दोपसे पुत्रप्रसवके अनन्तर आठवें पहरमें वह मर गई। सुलग्नमें जन्म होनेके कारण कर्णने अपने पराक्रमसे दिग्मण्डलको आक्रान्त किया। एक सौ छत्तीस राजाओंके, भौरिके समान काले-काले केश-कलापसे उसके दोनों विमल चरण-कमल पूजे जाते थे और चारों प्रकारकी राजविधाओंमें परम प्रवीणता प्राप्त करके, विधा पति प्रभृति महाकवियोंसे वह स्तुत होता था। जैसे [एक बार कर्पूर कविने कहा—]

१२२. + जिनके मुँहमें तो 'हारवाति' है, आँखोंमें 'कंकणभार' ^२ है, नितंबमें 'पत्रावली' ^३ है, और दोनों हाथ 'सतिलक' ^४ है—हे श्री कर्ण ! तुम्हारे शत्रुओंको स्त्रियोंको, विविधर, वनमें, इस समय भूपण पहननेकी यह कैसी [विलक्षण] रीति ग्रहण करनी पड़ी है !

ऐसा कहने पर चतुर चक्रवर्ती राजाने कहा—'यदि 'विधिवश' ऐसा हुआ तो फिर वर्णनाय राजाका क्या रहा ? देवने भी जिस बातकी चिन्ता नहीं की वह हो।' अतएव राजाको इसमें कुछ भी चमत्कार नहीं जान पड़ा और उसे बिना कुछ दिये ही विदा कर दिया। घर जाने पर भार्याने पूछा—'क्या दिया राजाने ?' उसने कहा—'वही वृत्स्वरूप !' (अर्थात् श्लोकमें जो वर्णन किया गया है वही स्वरूप) वह बोली—'यदि 'विधिवशात्' की जगह 'तव वशात्' कहा गया होता तो वह सब कुछ दिखता। तब फिर नाचि राज कविने कर्ण नृपकी स्तुति की। जैसे—

[८१] गोपियोंके पीन पयोवरसे विष्णुका हृदय [रूपी कमल] आहत हो गया है इसलिये मैं समझता हूँ कि लक्ष्मी कमलकी आशंकासे तुम्हारे नेत्रोंमें ही अब विश्राम कर रही है। इसलिये हे श्रीमन् कर्ण नरेश ! जहाँ तुम्हारी भ्रूलता चलती है वहाँ भयभ्रान्त हो कर दारिद्र्यकी मुद्रा टूट जाती है। इससे अत्यन्त तृप्त हो कर राजाने हाथके सांकले इत्यादिके उचित दानसे उसे पुरस्कृत किया। इस प्रकार जब वह मार्गमें आ रहा था, तो कर्पूर कविने स्त्रीसे कहा कि राजाने इसे जो कुछ दिया है उसे, अब मैं अपने घर ले आता हूँ। यह कह कर वह उसके सामने गया।

[२२] 'हे कन्ये ! तू कौन है ?'—'कर्पूर कवि ! क्या तू मुझे नहीं पहचानता ?'—'क्या भारती है ?'—'सच है'—'तू विधुरा क्यों है ?'—'मैं छूट ली गई !'—'हाँ किसके द्वारा ?'—'दुष्ट विधाताके द्वारा'—'उसने तुम्हारा क्या ले लिया ?'—'मुझ और भोज रूपी दोनों आँख'—'तो जी कैसे रही हो ?'—'क्यों कि दीर्घायु श्री नाचि राज कवि अन्धेकी लकड़ी रूप बने होनेसे।'

नाचि राज कविने इस काव्यसे सन्तुष्ट हो कर कर्ण राजसे जो कुछ स्वर्ण, दुकूल आदि प्राप्त किया था वह सब कर्पूर कविको दे दिया। कर्ण नरेन्द्रने यह सुना, तो कर्पूरको बुलाके पूछा कि—'हे कवे ! भोज के विद्यमान रहते 'मुञ्ज-भोज' यह पद कैसे उदाहृत किया ?' वह बोला—'महाराज, जल्दी में 'हर्ष-मुञ्ज' की जगह मुञ्ज-भोज मुँहसे निकल गया।' तब राजाने सोचा कि यह बात भोजका अमंगल सूचित करती है।

[८३] श्रीमत् कर्ण नरेन्द्रने मान और विभवसे सब याचकोंका मनोरथ पूर्ण कर दिया, इसलिये चिन्तामणिके आँगनमें शिखावाली दूर्वायें हमेशा द्यामल हो रही हैं। कल्पतरुके शृंग तलमें निर्माक हो कर पशुपक्षी खेल रहे हैं। और कामधेनु निकट ही स्कन्दको बैठा कर आलससे निद्रा ले रही है।

+ इस पद्यमें शब्दोंके श्लेष द्वारा दो भिन्न अर्थ निकले गये हैं। १ हारवाति=हारकी प्राप्ति और 'हा' ऐसे 'शव' शब्दकी प्राप्ति। २ कंकण=शुभता आभूषण और कं=काननी उलका कण=अभुविन्दु। यों तो पत्राली स्तन पर बांधी जाती है, लेकिन इन स्त्रियोंको तो पदनके लिये पूरे वस्त्र नहीं है इस लिये पत्रावलीसे निवृत्त प्रदेशको दांकना पड़ा है। ४ सतिलक तो कपाल होता है लेकिन इन स्त्रियोंके तो अब हाथ ही सतिलक=विलवाले हैं।

७७) इस प्रकार महाकवि गण उसके नाना यशकी स्तुति करते थे। एक बार उस कर्ण राजाने श्री भोज के प्रति प्रचानोक्तो भेज कर [यह कहलाया—] ' आपकी नगरीमें आपके बनाये हुए १०४ मन्दिर हैं, इतने ही आपके गीत-प्रबंध और इतने ही विरुद हैं; इसलिये, या चतुरंग [सेना] की लड़ाईमें, या इन्द्र युद्धमें, या चारों दिशाओंका शास्त्रार्थ करनेमें, या त्यागमें मुझे जीत कर एक सी पांच विरुदोंके पात्र बनो। नहीं तो मैं तुम्हें जीत कर १३७ राजाओंका स्वामी बनूंगा।' इस प्रकार उसके प्रभावके आविर्भावसे भोजका मुखरुमल किंचित् म्लान हो गया। वह काशी नगरीके स्वामीको सब प्रकारसे जीत जाने योग्य समझ कर और अपनेको पराजित मान कर, अनुरोधपूर्वक उसकी अभ्यर्थना करके इस प्रकार उससे स्वीकार कराया कि—' मैं अबन्ती में, और श्री कर्ण वाणारसीमें एक ही लग्नमें नौव दे कर स्वर्द्धके साथ ऐसे मंदिर बनवावें जो ५० हाथ ऊंचे हों। जहाँके प्रासादमें प्रथम कलश घजारोपणका उत्सव हो उसमें दूसरा राजा छत्रन्चामर छोड़ कर, हाथी पर बैठ कर वहाँ आये। इस प्रकार भोज के यथा-रुचि अंगीकार करनेकी बात जब कर्ण के कानों पहुँची तो वह यद्यपि क्रुद्ध हुआ तथापि भोजको उस तरह भी नीचा दिखानेके लिये [उचत हुआ]। एक ही लग्नमें अलग अलग दोनों जगह जब प्रासाद आरंभ किये गये तो, सारी तैयारी करके, सूर्यारोसे कर्ण ने अपने प्रासादको बनाते समय पूछा कि—' बतओ एक दिनमें, सूर्योदय और सूर्यास्तके बीच कितना काम किया जा सकता है ?' इसके जवाबमें उन्होंने, चतुर्दशके अनध्यायके दिन, सात हाथ ऊंचे ग्यारह मन्दिर, सूर्योदयमें आरम्भ करके शामको कलश तक बना कर राजाको दिखा दिये। उस सारी सामग्रीसे राजाने प्रसन्न हो, आठस्य छोड़ कर, भोज के मन्दिरका जब मुँहेरा बाँधा जा रहा था तभी अपने मंदिर पर कलश स्थापित करा दिया; और घजारोपणका लग्न निर्णय कर, दूत भेज कर अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करनेके लिये श्री भोजको निमंत्रित किया। तब मा लया मण्डलका अधिपति भोज अपनी प्रतिज्ञा मंग होनेके भयसे, उस दरद जानेमें असमर्थ हो कर चुप हो रहा। इसके बाद प्रासाद पर घजारोपण हो जानेके बाद, पुरातन कर्णके नवीन अवतारके समान उस कर्ण राजाने उतने ही राजाओंके साथ प्रयाण करके श्री भोज के ऊपर आक्रमण किया। उस अनसर पर श्री भोजके राज्यका आधा हिस्सा देनेकी प्रतिज्ञा करके श्री कर्ण ने मा लय मण्डल पर पूंठ पाँछसे आक्रमण करनेके लिये श्री भीमको आमंत्रित किया। इस तरह उन दो राजाओंसे आक्रान्त होने पर राजा भोजका दर्प, मंत्रसे आक्रान्त सर्पके विपरी मूर्ति दूर हो गया। अरुस्मात् उसी समय भोजका स्वास्थ्य बिगड़ गया जिसको वहाँ वालोंने छुपा रखा, और नियुक्त मनुष्यों द्वारा सभी घाटोंके रास्ते रोक दिये गये तथा अन्यदेशीय पुरुषोंका प्रदेश एकदम अटका दिया गया। तब भीम ने अपने सन्धिविप्रहिक दामरको, जो उस समय कर्ण के पास था, भोजका वृत्तान्त जाननेके लिये अपने आदमी भेज कर पूछा। उसने भी उस पुरुषको एक गाथा पढ़ा कर भेजा, जिसने श्री भीमकी समामें आ कर कह सुनाया। यथा—

१२३. आमका फल [अब] पक गया है, वृत्त शिथिल हो गया है, आँधी ज़ोरसे चल रही है और शाखा काँपने लगी है। और आगे हम नहीं जानते कि इस कार्यका परिणाम क्या होगा।

इस गाथाके रहस्यको जान कर राजा भीम चुप हो रहा। श्री भोज के परलोक-मार्ग की यात्रा जब निकट आई तो उसने उपयुक्त धर्मदृष्ट्य किया और समस्त राजपुरुषोंको सम्पानुशासन दे कर और यह आदेश दे कर कि मेरे हाथ भिमानके बाहर रगना, स्वर्ग गया।

[२४] अरे ! पुत्र, कट्टर और पुत्रियोंको क्या कर रहे हो और ऐतौ वाहीको भी क्या कर रहे हो ! मनुष्यको तो अपने हाथ पग दोनों झाड़कर अकेले ही आना है और अकेले ही जाना है।

भोज के इस वाक्यको बेदवाने लोगोसे कहा।

कर्णसे भीमका आधा भाग लेना ।

७८) [इसके बाद, जब वह राजा भोज स्वर्गगामी हुआ] तो उस वृत्तान्तको जान कर कर्णने उसके दुर्गम दुर्गको तोड़ कर भोज की सारी लक्ष्मी हस्तगत की । तब श्री भीमने दामरको आदेश किया कि— 'तुम या तो श्री कर्णसे मेरा प्राप्य आधा राज्य ले आओ या अपना सिर ले आओ ।' इस प्रकार राजादेश पाठन करनेकी इच्छासे, ३२ पदातियोंके साथ, उसने राजाके तंबूमें घुसकर मध्याह्न काळमें सोये हुए श्री कर्णको बन्दीरूपमें गिरफ्तार किया । इसके बाद उस राजाने राज्य-ऋद्धिके दो विभागोंमेंसे एकमें शिव, शालिग्राम, गणेश इत्यादि देवताओंको रखा और दूसरेमें राज्यकी अन्य सारी वस्तुओंको रखा । 'अपनी इच्छाके अनुसार इन दोमेंसे एक हिस्सा ले लो ।' उसके ऐसा कहने पर, वह सोलह प्रहर तक तो जैसे ही पड़ा रहा, फिर भी मकी आज्ञा [आने पर] देवताओंके भंडारको ले कर ही उन्हें श्री भीमको भेंट किया । इस प्रबन्धका सारा इतिहास इन दो काव्योंमें संग्रहीत है । जैसे—

१२४. पचास हाथ प्रमाणके दो शिवमंदिर एक ही लग्नमें प्रारम्भ किये गये । यह स्थिर हुआ कि जिस राजाके मंदिर पर पहले कलशारोपण होगा, उसके पास दूसरा राजा छत्र और चामर रहित हो कर आयगा । इस संवादमें राजा भोजकी बुद्धि व्ययसे विमुख हो गई और इस प्रकार वह कर्ण देवके द्वारा जीता गया ।

१२५. भोज राजाके स्वर्ग जानेके बाद अतिबली कर्णने जो धारापुरीके भंग करनेका उपाय किया तो राजा भीमको सहायक बनाया । उसके भृत्य दामरने बंदी किये हुए कर्णसे गणपतिके सहित नीलकण्ठेश्वरको सोनेकी पालखीके साथ ग्रहण किया ।

१२६. कवियों और कामियोंमें, योगियों और भोगियोंमें, धन देनेवालों और सज्जनोंका उन्कार करनेवालोंमें, तथा धनी, धनुर्धर और धार्मिकोंमें भोज जैसा राजा पृथ्वी तलपर नहीं हुआ ।

१२७. राजा भोजने अपने त्यागोंके कारण कल्पवृक्षके समान अशेष दुःखोंको प्राप्त किया, साक्षात् बृहस्पतिकी नाई शीघ्रतापूर्वक नाना प्रबंधोंकी रचना की । राधा-वेध (मत्स्य-वेध) करने में वह अर्जुनके समान [सिद्ध] था । इसीलिये बहुत दिनोंसे, उसकी कीर्तिसे उत्सुक-चित्त देवताओंके द्वारा निर्मन्त्रित हो कर वह स्वर्ग गया ।

इस प्रकार भोजके अनेक प्रबन्ध हैं जो परंपराके अनुसार जानने चाहिये ।

*

इस प्रकार श्रीमेरुतुङ्गाचार्यरचित प्रबन्धचिन्तामणि ग्रन्थका 'श्रीभोजराज और श्रीभीमराजके नाना यशोंका वर्णन' नामक यह दूसरा प्रकाश समाप्त हुआ ।

८. सिद्धराजादि प्रबन्ध ।

मूलराज कुमारकी प्रजावत्सलताका प्रबन्ध ।

७९) इसके बाद, किसी समय, गूर्जर देशमें अनावृष्टिके कारण जब वर्षा नहीं हुई तो विशोपक (!) दण्डाहि देशके प्रामोंके कुटुम्बी (कुनबी=किसान) जनोंके राजाका कर (भाग) देनेमें असमर्थ हो जाने पर राजनियुक्त व्यापारियों (कर्मचारियों) ने उस देशके सभी लोगोंको, उनके धन और जनके साथ, पत्तनमें ले आकर राजा भीमके सामने निवेदित किया। एक दिन सधरे श्री मूलराज कुमारने टहलते टहलते देखा कि राज्यके आदमी फसलका दाण (कर) वसूल करनेके लिये सभी लोगोंको व्याकुल कर रहे हैं। अपने निकटके आदमियोंसे उस सारे वृत्तान्तके जानने पर उसकी आँखोंमें करुणाके कुछ आँसू आ गये। बादमें घुड़दौड़के मैदानमें उसने अपनी अनुपम कला दिखा कर राजाको सन्तुष्ट किया। उसपर राजाने आदेश दिया कि 'वर माँगो'। उसने [राजाको] सूचित किया कि—'यह वरदान अभी माण्डगार ही में रखा रहे। राजाने जब कहा कि—'अभी क्यों नहीं कुछ माग लेते?' तो उसने कहा कि—'प्राप्ति होनेका कोई प्रमाण दिखाई नहीं देता—इसलिये।' राजाके उसका अनुरोध पूर्णरु सुलासा पूछने पर, उन कुटुंबियोंका लगान माफ कर देनेका उसने वर माँगा। तब हर्षके कारण जिसकी आँखें आँसुओंसे गदगद हो गई हैं ऐसे उस राजाने 'ऐसा ही हो' कह कर 'और भी कुछ माँगो' यह कहा।

१२८. केवल अपना ही भरण-पोषण करनेवाले क्षुद्र पुरुष तो हजारों हैं पर जिसका परार्थ ही स्वार्थ है ऐसा सज्जनोंका अगुआ पुरुष तो [हजारोंमें] कोई एक होता है। वाढ्य अग्नि समुद्रको अपने दुष्पूरणीय पेटको भरनेके लिये पीता है पर बादल तो पीता है प्रीम्भके तापसे तपे हुए जगतका सन्ताप दूर करनेके लिये।

इस प्रकार इस काव्यार्थके भावको समझ कर, अधिक लोमना निग्रह करके फिर और कुछ नहीं माँगा। इस तरह मानोज्ञत हो कर वह अपने स्थान पर गया। उसके द्वारा, इस तरह बन्धन-विमुक्त बने हुए वे लोग देवताकी भाँति उसकी पूजा और स्तुति करने लगे। दैव्यशाब्द तीसरे ही दिन, उनके सन्तोषकी दृष्टिसे स्तुत होता हुआ [वह राजकुमार] मृत्यु प्राप्त कर स्वर्ग लोको चला गया। राजा, राजपुरुष और बन्धन-विमुक्त वे सब प्रजाजन उस शोकसागरमें डूब गये जिन्हें [अन्याय] समझदार लोगोंने, अनेक प्रकारके बोधचक्र सुना सुना कर, कितने ही दिनोंके बाद उनको शोक-विमुक्त किया।

इसके बाद, दूसरे साल, यथेष्ट वृष्टि होनेके कारण खूब फसल पैदा हुई। इससे वे किसान लोग अत्यन्त हर्षित हो कर, उस वर्षका और बीते हुए वर्षका भी, लगान देनेको तत्पर हुए पर राजाने उसे ग्रहण नहीं किया। तब उन्होंने एक उत्तर-सभाका सम्मेलन किया। सभा और सभ्योंका लक्षण यह है—

१२९. वह सभा ही नहीं जिसमें वृद्ध न हों, और वे वृद्ध नहीं जो धर्मका कथन नहीं करते। वह धर्म नहीं है जिसमें सत्य नहीं और वह सत्य नहीं है जो कल्पितसे अनुविद्ध हो।

ऐसा [शास्त्र] निर्णय कर सभ्योंने राजासे गत साल और उस सालका लगान ग्रहण करवाया। राजाने उस द्रव्यसे तथा खजानेमेंसे और कुछ द्रव्य मिला कर मूलराज कुमारके कल्याणार्थ नया त्रिपुराश्रम [नामक शिवमन्दिर] बनवाया।

८०) इसने पत्तनमें श्री भीमेश्वरदेव और भटारिका (पटरानी) भीरु आणीके [नामसे शिवके] प्रासाद बनवाये । संवत् १०७७ से लेकर ४२ वर्ष १० मास ९ दिन राज्य किया । (B. P. प्रतियोंमें—संवत् १०६५ से आरंभ कर ४२ वर्ष राज्य किया ।)

कर्णराजा और मयणह्लादेवीका वृत्तान्त ।

८१) उसकी रानीने जिसका नाम उदयमति था [और जो नरवाहनखं गारकी लड़की थी], पत्तनमें एक बहुत बड़ी नयी बापी (बावडी) बनवाई, जो सहस्रलिंग सरोवरसे भी कहीं अधिक आकर्षक थी ।

८२) इसके बाद, सं० ११२० चैत्र वदि ७ सोमवार, हस्त नक्षत्र, मीन लग्नमें श्री कर्णदेवका राज्याभिषेक हुआ ।

८३) इधर, शुभकेशी नामक कर्नाट देशका राजा घोड़ेसे [जिसको अपने कान्ठमें न रख सकनेके कारण] उड़ाया जा कर किसी घने जंगलमें जा पडा । वहाँ पत्र फलसे भरे किसी वृक्षकी छायाका उसने आश्रय लिया । उसके पास ही दावाग्नि लगी । जिस वृक्षने [अपनी छायामें] विश्राम दे कर उपकार किया था उसे, कृतज्ञताके कारण छोड़ कर चले जानेकी उसकी इच्छा न हुई । और इसलिये, उसीके साथ दावानलमें उसने अपने प्राणोंकी आहुति दे दी । फिर इसके बाद, मंत्रियोंने उसके पुत्र जयकेशीको राज-पद पर अभिषिक्त किया । क्रमशः उसके एक मयणह्ला देवी नामकी पुत्री पैदा हुई । शिवभक्तोंने उसके सामने [किसी समय] ज्यों ही सोमेश्वरका नाम लिया त्यों ही उसको अपने पूर्व जन्मका स्मरण हो आया कि—‘ मैं पूर्व जन्ममें ब्राह्मणी थी । बारहों मासके उपवास करके प्रत्येकके उद्यापनके समय बारह वस्तुओंका दान किया करती थी । [इसके बाद] श्री सोमेश्वरको प्रणाम करनेके लिये प्रस्थान करके बाहु लोड नगरमें आई । वहाँपर कर देनेमें असमर्थ हो [आगे] न जा सकी । उसीके शोकमें, यह प्रतिज्ञा करके कि ‘ भविष्य जन्ममें मैं इस करको मिटा देने वाली बन्ू ’—मर कर इस बुलमें पैदा हुई । ऐसी यह उसे पूर्व जन्मकी स्मृति हुई । इसके अनुसार बाहु लोड के करको हटा देनेकी इच्छासे उसने गूर्जर नरेश जैसे श्रेष्ठ वरकी कामना करके अपने पितासे यह सब वृत्तांत कहा । जयकेशी राजाने यह व्यक्तिकर जान कर अपने प्रधान पुरुषोंके द्वारा, श्री कर्णसे अपनी पुत्री श्री मयणह्ला देवीको [पत्नीरूपमें ग्रहण करनेकी] स्वीकृति माँगी । श्री कर्णने जब उसकी बुरूपताकी बात सुनी तो वह उदासिन हो गया । पर उस कन्याका मन उसीमें लगा देख कर पिताने मयणह्ला देवीको उसके वहाँ, स्वयंवर रूपमें—जिसने स्वयं अपना वर चुन लिया है—उसीके पास भेज दिया । इधर कर्ण गुप्तरूपसे स्वयं ही उसे बुरूप देख कर उसके प्रति सर्वथा निरादर हो गया । राजाके इस प्रकार त्यागके कारण अपनी आठ सखियोंके साथ मयणह्ला देवीको प्राणत्याग करनेकी इच्छुक जान कर श्री कर्णकी माता उदयमति रानीने, उनकी यह विपद देखनेमें असमर्थ हो कर, उन्हींके साथ प्राणत्यागका सङ्कल्प किया । क्यों कि—

१३०. महान् लोग अपनी विपत्तिसे उतने दुःखी नहीं होते जितने दूसरोंकी विपत्तिसे । अपने ऊपर आघात होने पर जो पृथ्वी अचल रहती है वही दूसरोंकी निपद देख कर काँपने लगती है ।

इसके बाद महा उपद्रव उपस्थित हुआ जान कर मातृभक्तिवश श्री कर्णने उससे विवाह कर लिया । पर बादमें [बहुत समय तक] उसकी ओर नज़र उठा कर ताका भी नहीं ।

८४) एक बार मुञ्जाल मंत्रीकी कञ्चुकीसे यह माद्रम हुआ कि राजाका मन किसी अधम स्त्रीके प्रति सामिलाप है । [यह जान कर] उसने ऋतुस्नाता मयणह्ला देवीको, उसीका रूप धारण कराके एकान्तमें

उसके पास भेजा। गजाने यह समझ कर कि यह बड़ी स्त्री है, उसके साथ सप्रेम उपभोग किया और उससे उसकी गर्भावण हो गयी। फिर उसने सद्गुरु बनानेके लिये राजाके हाथसे उसकी नामाङ्कित अँगूठी छे ली और अपनी अँगूठिमें पहन ली। बादमें प्रायःकाल, उस दुर्भिक्षके कारण राजाकी मृत्यु हुई और उस रहस्यमय वाल्मिकि वृद्धके न जानने हुए उसने प्राणपाण करनेका संकल्प किया। स्थितिशापिणिके, तीव्रिणी बनाई हुई प्रत्येक मूर्तिके साथ अतिथन करनेमें श्रुतका प्रायश्चित्त हो जायगा, ऐसा विधान बनानेसे राजाने उसी प्रकार करनेकी इच्छा की। तब उस मंत्रिने यह मारी बात जैसी बनी थी वैसी कह सुनाई।

(इस जगह 1' प्रतिमें निम्नलिखित श्लोक मिलते हैं -)

[८५] [अने] भारी पराक्रमके कारण तो यह विना [भीम] के समान हुआ। और रमणीय आकारके कारण यह राजा अने पुत्र [जयसिंह-सिद्धराज] के समान हुआ।

[८६] विना कर्ण (राजाके) के स्त्री-नेत्रोंको कहीं भी रति (प्रीति) नहीं प्राप्त होती थी इसी लिये उन (स्त्री-नेत्रों) की प्रवृत्ति कर्ण (कान) तक हुई। (अर्थात् इसी लिये मानों विषोके नेत्र कानतक लंबे होने लगे।)

[८७] मानों कर्ण और अर्जुनके उस पुराने शेरको स्मरण करने हुए ही, उस कर्णने [अने] अर्जुन (शेर) पक्षको देशान्तरमें पहुँचा दिया।

सिद्धराज जयसिंहका जन्म।

[८८] त्रिभुव प्रकाश दशरथके पुत्र मनोहर गुणोंसे युक्त थी राम हुए उसी प्रकार इस [कर्ण] का जगद्विजयी ऐसा जयसिंह नामक पुत्र हुआ।

८५) अनेक लक्ष (सुवर्ण) में पैसा हुए उस पुत्रका नाम राजाने 'जयसिंह' रखा गया। यह यादक जब हीन वर्णका था उसी समय समवयस्क कुमारोंके साथ खेलता हुआ मिश्रामनवर आम्बु हो गया। इस बातकी स्मरणहार सिद्ध गन्त कर राजाने ज्योतिषियोंसे पूछा। उन्होंने निवेदन किया कि यह [बच्चा] आम्बुदविकल्प है। राजाने उसी समय उस पुत्रका गणनाभिके कर्ण दिया।

८६) मं० ११५० पीर बड़ी ३ शनिवार, श्रवण नक्षत्र, ह्य लक्ष्मणे, श्रीसिद्धराजका पञ्चाभिके हुआ।

८७) राजा कर्ण, आदापल्ली नामक ग्रामके रहनेवाले आशा नामक भीतके ऊपर युद्धके लिये चढ़ाई करके गया। शेर देवीका गुन दातुन होने पर, वहाँ को छतरका नामक देवीका मंदिर बनवाया [और वही सिद्धिनिवेस दिया] फिर, एक लाल गधुके अधिनि उस भीतके जीत कर और उस प्रागाटमें जयन्ती देवीकी प्रीति करके, कर्णें छतर देवताका मंदिर और कर्णेंगागर गाँवमें गुणोभित कर्णोंवती पुराणी स्थापना कर सुद बड़ी शान्त करने लगा। उस राजाने पल्लव में श्री कर्णेंमेघ नामक प्रागाट बनवाया।

मं० ११२० शेर सुदि ७ गे गे कर, मं० ११५० पीर बड़ी २ तक, २९ वर्ष ८ मास २१ दिन इस राजाने शाप किया।

सिद्धराजका शरणवर्षण - लीला धीरका प्रबन्ध।

८८) इसके बाद, जब भी कर्णेंका शरणवा हो गया तो लीला पदवमनि देवीका भाई कर्णेंका नाम अम्बुदव धारणो करने लगा। उसने लीला कर्णेंके देवको, - लिये देवतामें बसगाए तात का जो लक्ष्मणेंक शरणिक लोग हुएरुप हो कर शिवकी बचन-दान अदि पूजा द्वारा अ-कर्णेंका किया

करते थे—अपने महलमें बुलाया। शरीरमें बनावटी रोग बतला कर नाडी दिखाई। वैचने उपयुक्त पथ्यका सेवन करना बतलाया तो [उस मदन पा लने कहा] ‘वही तो नहीं है।’ और इसीलिये मैंने तुम्हें बुलाया है। [किसी और प्रकारका] पथ्य दे कर भूख शान्त करनेके लिये तुम्हें नहीं [बुलाया है]। इसलिये वत्सी हजार [रुपये] हाजर करो, यह कढ़ कर उसे बंदी कर लिया। उसने वह सब वैसा करके (अर्थात् उसका मांगा हुआ द्रव्य दे-दिया कर) फिर इस तरहका अभिग्रह (नियम) ग्रहण किया कि—‘मैं इसके बाद प्रतीकारके लिये राजाका घर छोड़ कर अन्यत्र कहीं नहीं जाऊँगा ’। इसके बाद परम आतुर रोगियोंका प्रश्रयण (पैशाव) मात्र देख कर ही वह उनका निदान और चिकित्सा करता रहा। [एक समय] किसी मायावीने, कल्पित रोगकी चिकित्सा कौशलको जाननेकी इच्छासे एक बैलका मूत्र दिखाया। उसने अच्छी तरह उसे देख कर सिर हिलते हुए कहा—‘ यह बैल बहुत खानेके कारण फूल गया है। इसलिये शीघ्र ही इसे तेलकी नाडी दो। नहीं तो मर जायगा। ’ ऐसा कह कर उसने उसके चित्तमें चमत्कार उत्पन्न किया।

एक बार राजाने अपनी गर्दनकी पीडाका प्रतीकार पूछा। उसके यह कहने पर कि, दो पल भर कस्तूरीको भिगो कर लेप करनेसे रोग शान्त होगा, वैसा ही किया गया। गर्दन ठीक हो गई। फिर राजाकी पालकी ढोनेवाले किसी गरीब मनुष्यने प्रीवा (गर्दन) की पीडाकी दवा पूछी। उससे कहा कि ‘ करीकी जड़ घिस कर उसके रसमें उसी जगहकी मिट्टी मिला कर उसका लेप करो। ’ तब राजाने पूछा कि यह क्या बात है ? इस पर उसने बताया कि ‘ आयुर्वेदज्ञ लोग देश, काल, बल, शरीर और प्रकृति देख कर चिकित्सा किया करते हैं। ’

एक बार, कुछ धूर्त एक मत हो कर दो दोकी संख्यामें पृथक् पृथक् हो गये। पहले दोने बाजारके रास्तेमें पूछा कि ‘ क्या बात है कि आप शरीरसे खिन्न दिखाई देते हैं। ’ दूसरे दोने श्री मु आ ल स्वा मी प्रासादके सोपान पर [वही बात] पूछी। तीसरे दोने राजद्वार पर और चौथे दोने द्वारतोरण पर वही बात पूछी। इस प्रकार बार बार पूछनेसे उसे [अपने स्वास्थ्यके विषयमें बड़ी] शंका उत्पन्न हो गई और तत्काल ही उसे माहेन्द्र ज्वर हो गया। [और उससे] तेरहवें दिन वह वैध मर गया।

इस प्रकार यह ४० लीला वैद्यका प्रबंध समाप्त हुआ।

*

(८९) इसके बाद, सान्त् नामक मंत्रों, कालकी नौई अन्यायी उस मदन पा लको मारनेकी इच्छासे किसी समय, कर्ण के पुत्र—कुमार जयसिंह—को हाथी पर चढ़ा कर राजपाटिकाके बहाने उसके घर ले गया और वहाँ [कुछ वस्त्रान मचवा कर] वीरोंके हाथसे उसको मरवा डाला।

*

उदयन मंत्रीका प्रवचन ।

९०) श्वर, मरु देश का रहनेवाला कोई श्री मा ल वंशी य वणिक् जिसका नाम ‘ उदा ’ था, अच्छा घो खरीदनेके लिये, वर्षाकालकी अँधेरी रातमें कहीं जा रहा था। वहाँ जंगलमें उसने देखा कि कुछ कर्मचारी किसी खेतमें एक क्यारीसे दूसरी क्यारीमें जल भर रहे हैं। उनसे पूछा कि तुम लोग कान हो। उन्होंने जब कहा कि ‘ हम कलों आदमीके कामुक (हितचिन्तक) हैं ’ तो उसने पूछा कि मेरे भी कटी हैं ? इस पर उनके यह बताने पर कि ‘ कर्णा व तीमें हैं ’ वह सजुहुं व [उस स्थानको छोड़ कर] वहाँ (कर्णा व ती) पहुँचा। वहाँ पर बा व टी य जिन मन्दिरमें [देवदर्शन करते हुए उसको] किन्नी ‘ लटि ’ नामक एक टिप्पिका थाविक्राने, उसे सार्धभिक जान कर प्रणाम किया। उसके यह पूछने पर कि आप किमके अतिथि हैं ? [उदाने कहा कि] ‘ मैं विदेशी हूँ, आप ही का अतिथि समझिए ! ’ यह सुन कर उसने उसको अपने साथ ले जा कर, किसी बनि-

कूके घर भोजन बनवा कर उसे खिलाया और अपने घरके नीचेके तल्लेमें खाट बिछवा कर रहनेकी जगह दी। काळक्रमसे उसके पास खूब सम्पत्ति हो गई। फिर उसने अपना निजका ईंटोका घर बनवानेकी इच्छा की। उसकी नींव खोदते समय [जमीनमेंसे] अपरिमित धन निकल आया। वह उस खीको बुला कर उस निधिको जन्म देने लगा तो उसने अस्वीकार किया। उसी निधिके प्रभावसे, वहाँ पर, वह उदयन मंत्राके नामसे प्रसिद्ध हुआ।

९१) [फिर उस धनसे] उसने कर्णावती में अतीत, भविष्य और वर्तमानके चौबीस चौबीस जिनोसे सुशोभित श्री उदयन विहार [नामक मन्दिर] बनवाया।

९२) उसको भिन्न भिन्न मातासे उत्पन्न ऐसे चार पुत्र हुए, जिनके नाम चाहड, आम्बड, बाहड और सोलाक इस प्रकार थे।

*

सान्तू मंत्रीका प्रयन्ध

९३) एक दूसरे अवसर पर, सान्तू नामक महामंत्री हाथी पर चढ़ कर राजपाटिकामें जा कर लौटा और अपनी ही बनवाई हुई सान्तू वस हि का में देवन्दन करनेकी इच्छासे उसमें प्रवेश करते हुए, उसने, किसी चेत्यवासी श्वेतावर यतिको, वार-वेश्याके कंधे पर हाथ रखे हुए देखा। मंत्रीने हाथोसे उतर कर उत्तरासङ्ग करके, पञ्चाङ्ग प्रणामके द्वारा, गौतम मुनिकी मौति, उसको प्रणाम किया। वहाँ पर क्षणभर ठहर कर, फिर उसे प्रणाम करके, वह चला गया। वह यति तो लाजके मोरे मुँह नीचा किये पातालमें गड़ा-सा जाने लगा; और फिर तत्काल सब छोड़-छाड़ कर 'मलधारी श्री हेमसूरिके पास उपसम्पदा ग्रहण करके, संवेग रससे पूर्ण हो शत्रुञ्जय पर्वत पर चला गया और बारह वर्षतक वहाँ तप किया। किसी समय वही मंत्री श्री शत्रुञ्जय पर देवचरणोंकी यात्राके लिये गया तब वहाँ उस मुनिको अपरिचितकी नॉई देल कर, उसके चरित्रसे मनमें चकित हो कर, उसका गुरुकुल आदि पूछा। 'असलमें तो आप ही गुरु हैं'—उसके ऐसा कहने पर कान बंद करके मंत्रीने कहा—'नहीं, नहीं, ऐसा मत कहिये।' असल बात न जाननेके कारण ऐसा कहते हुए उस मंत्रीसे उसने कहा—
१३१. चाहे गृही हो चाहे त्यागी, जो जिसको शुद्ध धर्ममें स्थापित करता है वही उसका धर्मगुरु होता है।

इस प्रकार उसे मूल वृत्तान्त बता कर उसकी धर्ममें दृढ़ता निर्माण की।

इस प्रकार यह मन्त्री सान्तूकी दृढ़धर्मताका मबंध समाप्त हुआ।

*

मयणल्लादेवीका सोमेश्वरकी यात्रा करना।

९४) उसके बाद, श्री मयणल्लादेवीने, अपने पूर्व जन्मकी स्मृतिके ज्ञानसे जाना हुआ, पूर्वभवका चढ़ वृत्तान्त, जब सिद्धराजसे कह बताया, तो वह श्री सोमनाथ के योग्य सजा करोड़ मूल्यकी सुवर्णमयी पूजा-सामग्री साथ ले कर यात्राके लिये माताके साथ चला। वह इस प्रकार, बाहुलोङ्गनगर पहुँची, तो वहाँ पर, पञ्चकुल—कर बसूल करने वाले राजपुरुष—के द्वारा, कापडी आदि प्रयासती भिक्षुक गण, कर देनेके लिये पीडित किये जा कर, उनकी अवहेलना की गई। वे आँखोंमें, आसू भर कर पीछे लौटने लगे। मयणल्लादेवीने जो यह वनाप देखा तो उसके दर्पणसे [स्मृष्ट] हृदयमें उनकी पीड़ा संज्ञान्त हो गई। वह भी [उनके साथ यात्रा किये भिना] पीछे लौटने लगी। तब सिद्धराजने बीचमें पड कर कहा—'स्वामिनि! आपका यह कैसा संश्रम है? आप क्यों पीछे लौट रही हैं?' राजाके ऐसा कहने पर [उसने कहा—] जमी यह कर सर्था बन्द कर दिया जायगा तभी मैं सोमेश्वरको प्रणाम करूँगी, अन्यथा नहीं। और तो क्या, इसके बाद भोजन और पानका भी मुझे नियम है।' यह सुन कर राजाने पञ्चकुलकी बुलावा और उसका हिसाब पूछा, तो उसमें ७२

खाखकी आमदनी माद्रम दी । राजाने उस करके पेटको फाड कर, माताके कल्याणार्थ उस करको उठा दिया और अंजलीमें जठ ले कर उसकी प्रतिज्ञा की । इसके बाद उस (मयणल्ला देवी) ने सोमेश्वरके पास जा कर उस सुवर्णसे पूजा की; तथा तुलापुरुषदान, गजदान आदि अनेक महादान दिये । रातको वह ऐसे गर्वके साथ कि 'मेरे समान संसारमें न कोई हुई और न कोई होने वाली है' गाढ़ी नौदमें सो गई । तपस्वी वेप धारण करके उसी देव (सोमेश्वर) ने [स्वप्नमें प्रत्यक्ष हो कर के] कहा—' यहीं मेरे देवालयमें एक कार्पटिक स्त्री यात्राके लिये आई है । तुम्हें उसका पुण्य मोंगना चाहिये । ऐसा आदेश करके जब वह देवता अन्तर्धान हो गये तो [फिर प्रातःकाल] राजपुरुषोंसे खोज करा कर उस स्त्रीको उसने बुलवाया । उसके पुण्यको मोंगने पर भी वह किसी तरह जब देनेको तत्पर न हुई तो उससे पूछा कि ' यात्रामें तुमने क्या [द्रव्य] व्यय किया है ? ' तो वह बोली कि मैं भीख मोंग मोंग कर १०० योजन दूरसे, कई देश पार करके, कलके दिन यहाँ देवालयमें आई हूँ । तीर्थोपवास करके, पारणामें किसी सुकृतिके यहाँसे, मैं निर्भागिनी थोडासा पिण्याक (खली) प्राप्त करके, उसके एक टुकड़ेसे मैंने श्री सोमेश्वर की पूजा की, एक टुकड़ा अतिथिको दिया और एक टुकड़ा स्वयं खा कर उपवासका पारणा किया । आप तो बड़ी पुण्यवती हैं—जिसके पिता, भाई, पति और पुत्र ' राजा हैं । आपने यह बाहु लोड कर, जो ७२ लाखका था, उठवा दिया है । सवा करोड़ मूल्यकी सामग्रीसे देवकी पूजा कर अगणित पुण्य अर्जन किया है । आप मेरे इस क्षुद्र पुण्य पर क्यों लोम करती हैं ? और यदि क्रोध न करें तो कुछ कहूँ । असलमें तुम्हारे पुण्यसे मेरा पुण्य अधिक है । क्यों कि—

१३२. संपत्ति होने पर नियम करना, शक्ति रहते सहन करना, यौवनावस्थामें व्रत लेना और दरिद्रा-वस्थामें दान देना,—यह सब बहुत थोडा होने पर भी अधिक पुण्यका कारण होता है ।

इस प्रकारके युक्ति-युक्त वाक्यसे उसने उसके गर्वका निराकरण किया ।

*

१५) इसके बाद, सिद्धराज जब समुद्रके किनारे खडा हो कर उसको देख रहा था तत्र एक चारणने आ कर इस प्रकार स्तुति की—

१३३. हे चक्रवर्ती नाथ ! तुम्हारे चित्तको तो कौन जानता है, लेकिन मैं समझता हूँ कि हे कर्णपुत्र आप शीघ्र ही लंका लेना चाहते हैं और उसीके लिये यहाँ खडे खडे मार्ग देख रहे हैं ।

[तब एक] दूसरे चारणने कहा—

१३४. हे जेसल (जयसिंह) ! यह समुद्र दीड कर तुम्हारे पैर धो रहा है; इसलिये कि तुमने और तो सब राजाओंको जीत लिया है और सिर्फ एक मेरा विभीषण राजा बाकी रह गया है; सो उसको छोड़ दीजिए ।

*

सिद्धराजका मालवाके साथ संघर्ष ।

१६) राजा जब इस प्रकार यात्रामें व्यस्त था, उसी समय मालवाका छलानेपी राजा यशोवर्मा गूर्जर देश में [आ कर] उपद्रव करने लगा । सान्ध मंत्रीने पूछा कि ' भलौं, आप कैसे इस चढाईसे निवृत्त हो सकते हैं ? ' उसने कहा कि ' यदि तुम अपने स्वामीकी सोमेश्वर देवकी यात्राका पुण्य मुझे दे दो तो । ' ऐसा कहने पर उस मंत्रीने उसके चरण धो कर, उस पुण्यदानके निदानरूप जलको चुन्ट्टमें ले कर उसके हाथ पर छोड़ दिया और ऐसा करके उसको [गूर्जर देश से] वापस लौटाया । [यात्रासे लौट कर] श्री सिद्धराज जब नगरमें आया और मंत्री और मालव नरेशके उक्त वृत्तान्तको सुना तो वह बड़ा क्रुद्ध हुआ । मंत्रीने उससे

[शांति करते हुए] यों कहा—‘ स्वामिन् ! यदि मेरे देनेसे तुम्हारा पुण्य चला जाता है तो मैं उसका तथा अन्य पुण्यमानोंका पुण्य इसी तरह आपकी भी दे देता हूँ । और असलमें तो बात यह थी कि जिस-किसी भी उपायसे शत्रुमेनाको स्वदेशमें प्रवेश करनेसे रोकना जरूर थी ।’ ऐसा कह कर उसने नृपतिका अनुमय किया । इसके बाद इसी अमर्षवश उसने मालव मण्डल पर चढ़ाई करनेकी इच्छा की । सहस्रलिंग [सरोवरदि] धर्म-स्थानके कार्यका जो आरंभ किया गया था उसका देखरेखका काम मंत्रियों और शिल्पियों (कारीगरों) को सौंपा । बड़ी शीघ्रताके साथ उसका काम चलने पर राजाने युद्धके लिये प्रयाण किया । वहाँ जय-जयकारके साथ बारह वर्ष तक युद्ध होता रहा । फिर भी जब किसी प्रकार धारा [नगरी] का किला नहीं टूटता दिखाई दिया तो [एक दिन राजाने यह] प्रतिज्ञा की कि धाराके किलेको तोड़े बिना आज अन्न ही न खाऊँगा । सायंकाल हो जाने पर भी ऐसा करनेमें असमर्थ होनेके कारण, सचियोंने आटेकी वनावटी धारा वनवा कर और वहाँ पर परमार राजपुत्रको अपने सैनिकों द्वारा मरवा कर, उस प्रतिज्ञाका निर्वाह कराया । इस प्रकार प्रथमसे राजाने प्रतिज्ञा तो पूरी की, लेकिन कार्यमें सफलता प्राप्त न होनेसे वापस लौटनेकी अपनी इच्छा मुञ्जाल नामक मंत्रीको बताई । उसने अपने गुप्तचरोंको तीन रास्ते, चौराहे और चबूतरे इत्यादिक स्थानों पर भेज कर, धाराके किलेके भंग होनेकी बातें जाननी चाहीं । लोगोंके परस्पर वार्तालाप करते हुए, धाराके रहने वाले किसी [जानकार] पुरुषने कहा कि ‘ दक्षिण दिशाके दरवाजेकी ओरसे शत्रुसेना हमला करे तब ही कहीं धाराके किलेका तोड़ना सफल हो सकता है, अन्यथा नहीं ।’ यह बात सुन कर [उन गुप्त चर लोगोंने] मंत्रीको सूचित किया । उसने इस वृत्तान्तको गुप्तरूपसे राजाको विज्ञापित किया । राजाने भी यह वृत्तान्त जान कर उधर ही से सेनाके साथ आक्रमण किया । तो भी दुर्गको बड़ा दुर्गम समझ कर राजा स्वयं ‘ यशःपटह ’ नामक अपने प्रधान बलवान् पट हाथी पर चढ़ा । उसके पीछे सामल नामक महाव्रत खड़ा रहा । त्रिपोलिया दरवाजेके दोनों किवाड़ोंको, जिनके अंदर लोहेकी जवर्दस्त अर्गला लगी हुई थी, तोड़नेके लिये उस हाथीने अपना सर्व सामर्थ्य खर्च कर दिया । किवाड़ तो टूट गये लेकिन हाथीकी हड्डियाँ भी साथमें टूट गईं । महाव्रतने सिद्धराजको उस परसे उतारा और ज्यों ही वह स्वयं उस पर चढ़नेको उद्यत हुआ त्यों ही वह हाथी पृथ्वी पर गिर पड़ा । वह हाथी बड़ा वीर होनेके कारण मर कर अपने यशसे धवल हो कर बडसर ग्राममें यशोधवल नाम ग्रहण करके विनायक रूपसे अवतीर्ण हुआ ।

१३५. सिद्धिके स्तनरूप शैलके तटदेशके आघातके कारण मानों जिसका दूसरा दांत टूट गया है, वह एक दाँत धारण करनेवाला गजमदन (विनायक) तुम्हारा श्रेय करे ।

इस तरह उसकी स्तुति [की जाती] है । इस प्रकार दुर्गका भंग करने पर युद्धमें आरूढ़ यशोधर्माको [सन्धि-विग्रहादि] ६ गुणोंसे बंध कर, उस जगह पर अपनी जगन्मान्य आज्ञानी उद्घोषणा करवाई और यशोधर्म [राजाकी वन्दि बना कर अपने साथमें ले] पत्तन में आया ।

[तब कथियोंने ऐसी स्तुतियाँ पढ़ी—]

[८९] अरे क्षत्रियो, ऐसा न समझो कि इस सिद्धराज के कृपाणने अनेक राजाओंकी सेनाका नाश किया है इसलिये अब इसकी धार कुंठित हो गई है । नहीं नहीं; प्रबल प्रतापरूप अग्निके ऊपर आरूढ़ हो कर यह सम्प्राप्तधार (=१ जिसने धारा नगरीको प्राप्त किया है, २ जिसने तेजदार धार पाई है) कृपाण चिरकाल तक मालव रमणियोंका अधुजल पी कर और अधिक तेज होगा ।

[९०] हे महाराज ! आपने शत्रुओंके मित्र्य करनेमें दूधकी धाराके समान जो उज्ज्वल यश प्राप्त किया है उसके कारण आपकी तलवार तो उज्ज्वल ही थी पर इन मालव-नारियोंके काजल [मिश्रित अधुजल] पी पी कर, इसने, उसकी महिमा सूचक, यह कालिमा धारण कर ली है । ↓

सिद्धराज और हेमचन्द्राचार्यका मिलन ।

९७) प्रति दिन सब दर्शन [के आचार्यों] को आशीर्वाद और दानके लिये बुलाये जाने पर, यथावसर बुलाये गये श्री हेमचन्द्र प्रभृति जैनाचार्य श्री सिद्धराज के पास गये । राजाके दुकूल आदि दे कर उनका स्तकार करने पर, उन सभी अप्रतिम प्रतिभा पूर्ण पंडितों द्वारा दोनों तरह पुरस्कृत हो कर हेमचन्द्राचार्य ने राजाको इस प्रकार आशीर्वाद दिया—

१३६. हे कामधेनु ! तू अपने गोमयके रससे भूमिका आसेचन कर, हे समुद्रो ! तुम अपने मोतियोंसे स्वस्तिक बनाओ, हे चन्द्र ! तू पूर्णकुंभ बन जा और हे दिग्गजो ! तुम अपने सरल सूंडोंसे कल्पवृक्षके पत्ते तोड़ कर उनके तोरण सजाओ — क्यों कि संसारका विजय करके सिद्धराज आ रहा है ।

इस प्रकार निष्प्रपंच (सरल) काव्यके विवेचन करने पर उनकी वचन-चातुरीसे चित्तमें चमत्कृत हो कर राजाने [यथेष्ट] प्रशंसा की । इस पर कुछ असहिष्णुओंके—अर्थात् ब्राह्मणोंके—यह कहने पर कि ' हमारे शाखोंके—अर्थात् पाणिन्यादि व्याकरण ग्रंथोंके—अध्ययनके वल पर ही इन (जैनो) की विद्वत्ता है । ' राजाने श्री हेमचन्द्र आचार्यसे पूछा । [उन्होंने कहा—] प्राचीन कालमें श्री जिनेन्द्र महावीरने अपने शैशव कालमें इन्द्रके सामने जिसकी व्याख्या की थी उसी जेनेन्द्र व्याकरणको हम लोग पढ़ते हैं । उनके ऐसा कहने पर उस पिशुनने कहा कि इन पुरानी बातोंको तो छोड़ दो और हमारे समयके ही किसी तुम्हारे व्याकरण कर्त्ताका पता बता सकते हो तो बताओ । इस पर वे राजासे बोले कि यदि महाराज श्री सिद्धराज सहायक हों तो, मैं ही स्वयं कुछ दिनोंमें ही पञ्चाङ्ग पूर्ण नूतन व्याकरण तैयार कर सकता हूँ । राजाने कहा—मैंने [साहाय्य करना] स्वीकार किया । आप अपने वचनका निर्वाह करें । ऐसा कह कर उसने सब सूरियोंको विदा किया । वे भी अपने अपने स्थानको गये ।

राजाने [पहले ही यह एक] प्रतिज्ञा कर ली थी कि यशोवर्माके हाथमें विना म्यानकी छुरी देकर और उसको अपने पीछे बिठा कर हाथी पर सवार होकर हम नगरमें प्रवेश करेंगे । राजाकी इस प्रतिज्ञाको सुन कर मुञ्जाल नामक मंत्री [असेतुष्ट बना और उस] ने प्रधान पद छोड़ दिया । राजाके बार बार कारण पूछने पर

१३७. राजा लोक चाहे सन्धि [करना] न जाने और विग्रह भी [करना] न जाने; पर यदि वे [मंत्रियोंका] आख्यात (कहा हुआ) ही सुनते रहें तो इसीसे वे पण्डित हो सकते हैं ।

इस प्रकारका नीतिशास्त्रका उपदेश है । महाराजने स्वयं अपनी बुद्धिसे जो यह प्रतिज्ञा की है, भविष्यमें वह बिल्कुल ही हितकर न होगी । राजाने प्रतिज्ञामंग होनेके भयसे भीत हो कर कहा कि ' प्राणोंका त्याग करना अग्राह्य है । किन्तु विश्वमिदित इस प्रतिज्ञाका नहीं । ' इस पर मंत्रीने काठकी छुरी बना कर शाल्वृक्षके पाण्डुरंगके गोंदसे उसे परिमार्जित कर, पीछेके आसन पर बैठे हुए यशोवर्माके हाथमें दी । उसके आगेके आसन पर राजा सिद्धराज बैठा और खूब समारोहके साथ उसने अणहिलुपरमें प्रवेश किया ।

प्रावेशिक मंगलकी धूमधाम समाप्त हो जाने पर राजाने व्याकरण वृत्तान्तकी याद दिलाई । इस पर बहुतसे देशोंके तज्ज पंडितोंके साथ सभी व्याकरणोंको नगरमें मंगवा कर श्री हेमचन्द्राचार्यने श्री सिद्धहेम नामक नूतन पञ्चाङ्ग व्याकरण एक वर्षमें तैयार किया । इसका ग्रंथप्रमाण सवालाल श्लोक था । राजाके निजके बैठनेके हाथी पर उस पुस्तकको रख कर उसका जुद्धस निकाला गया । उसके ऊपर श्वेतच्छत्र लगवाया गया और दो चामरप्रादिगणियां चामर झटने लगीं । इस प्रकार उस ग्रंथकी महिमा करके उसे कोशागारमें रखा । फिर राजाकी

आज्ञासे अन्य व्याकरणोंको छोड़ कर लोम सब उसीका अध्ययन करने लगे। इस पर किसी मत्सराने राजासे कहा कि 'इस व्याकरणमें आपके वंशका तो कोई उल्लेख ही नहीं है।' इससे राजाके मनमें क्रोध हुआ। यह बात किसी राजपुरुषसे जान कर श्री हे मा चार्थने [तत्क्षण] बत्तीस श्लोक नूतन निर्माण करके बत्तीस ही सूत्रपादोंके अन्तमें उन्हें संलग्न कर दिया। प्रातःकाल जब राजसभामें व्याकरण बांचा गया तो—

१३८. हरिकी भौंति बलि बंधकर (=१ बलिको बाँधनेवाला, २ बलियोंको बंदी करनेवाला), शिवकी नौई त्रिशक्तियुक्त, और प्रलाकी तरह कमलाश्रय (=१ कमलका आश्रय लेनेवाला, और २ कमल—लक्ष्मीका आश्रय) श्री मूलराज नृपकी जय हो।

इत्यादि, चौलुक्य वंशकी स्तुतिवाले बत्तीस श्लोक बत्तीस सूत्रपादोंके अन्तमें आये सुन कर राजा मनमें प्रमुदित हुआ और उस व्याकरणका उसने खूब प्रचार कराया। इसी प्रकार श्रीसिद्धराजके दिग्विजय वर्णनमें [हे मा चार्थने] आश्रय नामक [काव्य] ग्रंथ बनाया।

[हे मा चार्थके बनाए इस सिद्ध है म व्याकरणके विषयमें विद्वानोंने ऐसी उक्तियाँ कही हैं—]

१३९. हे भाई! पाणिनि के प्रलापको बंद करो, कातंत्र का च्ययड़ा मत फाडो शाकटायन के कटु वचनको मत पढ़ो, और भुद्र चांद्रव्याकरणसे क्या मतलब है, भलों, और कण्ठभरण आदि व्याकरणोंसे अपने आपको कोई क्यों सुलायेगा, जब कि अर्थमधुर ऐसी श्रीसिद्ध है मकी उक्तियाँ सुननेको मिलती हैं।

९८) इसके बाद, श्रीसिद्धराजने पञ्चनमें यशोवर्मराजाको, त्रिपुररूपप्रभृति सभी राजप्रासादों और सहस्रलिंगप्रभृति धर्मस्थानोंको दिखा कर बताया कि—[हमारे राज्यमें] प्रतिवर्ष देवदायमें एक करोड़ द्रव्य व्यय किया जाता है! और फिर उससे पूछा कि 'यह सुंदर है या असुंदर?' वह बोला—मैं तो अठारह लाख सेन्यावाले (!) मालवदेशका राजा हूँ, तो भी मैं तुमसे पराजित कैसे हुआ? पर यह देश तो पहले ही महाकालदेवको अर्पण कर दिया गया है और उसी देवद्रव्यका हम मालवी लोग उपभोग कर रहे हैं; और इसीलिये हमारा उदय और अस्त होता रहता है। आपके वंशवाले राजा भी इतना देवद्रव्य व्यय करनेमें असमर्थ हो कर उसका लोप करेंगे और फिर सारा देवदाय बंद हो जानेपर इसी प्रकार वे विपत्तिग्रस्त हो कर समूल नष्ट हो जायेंगे।

*

सिद्धराजका सिद्धपुरमें रुद्रमहालय बनवाना।

९९) इसके पश्चात्, एक बार श्रीसिद्धराजने सिद्धपुरमें रुद्रमहालयका प्रासाद बनवाना चाहा। किसी [प्रसिद्ध] स्थपति (कारीगर) को अपने पास रख कर, प्रासादके प्रारंभ होनेके समय उसकी कंत्रासिकाको—जो उसने किसी साहूकारके यहाँ एक छावमें बंधक रखी थी—छुड़ा कर उसको दिलवाई। वह बांसकी कमाचियोंकी बनी हुई थी; उसे देत कर राजाने पूछा कि क्या बात है? इस पर उस स्थपतिने कहा कि मैंने महाराजकी उदारताकी परीक्षाके लिये ऐसा किया है। फिर उस द्रव्यको राजाकी अनिच्छा रहते हुए भी लौटा दिया। फिर क्रमानुसार २३ हाथ ऊँचा सजागपूर्ण प्रासाद बनवाया। उस प्रासादमें अद्वयपति, गजपति, नरपति प्रभृति बड़े बड़े राजाओंकी मूर्तियाँ बनवा कर रखी और उनके सामने हाथ जोड़े हुए अपनी मूर्ति भी बनवाई। [जिसका आशय यह है कि राजा] उनसे घर मोंगता है कि देशका भङ्ग करते हुए भी इस प्रासादका कोई भंग न करें। उस मंदिर पर पञ्चाशोपका उत्सव करते समय सभी जैन प्रासादोंकी पताकायें उतारवा दी गईं। जैसे मालवदेशके महाकालके मंदिरमें जब बेजयंती चढ़ाई जाती है तब जैन प्रासादोंमें पञ्चाशोपग नहीं होने पाना।

सिद्धराजका पाटनमें सहस्रलिंग सरोवर बनवाना ।

१००) एक बार, सिद्धराजने मालवक मण्डलके प्रति जाना चाहा तब किसी व्यवहारिने [जो उस काममें नियुक्त अधिकारी था] सहस्रलिंग सरोवरके कारखानेके लिये कुछ द्रव्य और भाग माँगा । राजा उसे कुछ भी दिये बिना चला गया । कुछ दिनोंके बाद द्रव्याभावसे उस कामके चलनेमें देरी होते देख, उस व्यवहारी (अधिकारी) ने अपने लड़केसे किसी धनाढ्य पुरुषकी स्त्रीका ताड़क (करन छल) चुरवा लिया, और फिर स्वयं उसके दण्डस्वरूप तीन लाख द्रव्य दे दिया । उससे वह काम पूरा हो गया । यह बात मालव मण्डलमें, वर्षाकालमें ठहरे हुए राजाने सुनी । सुन कर उसे जो आनन्द हुआ उसका वर्णन नहीं किया जा सकता । इसके बाद वर्षाकालकी घनी वृष्टिसे जब सारी पृथ्वी एक समुद्रकी भाँति जलमय हो गई तो प्रधान पुरुषोंने राजाको बधाई देनेके लिये किसी मरुदेश वासीको भेजा । उसने [जा कर] राजाके सामने विस्तार पूर्वक वर्षाका स्वरूप कहना आरम्भ किया । इसी बीच, उसी समय आया हुआ कोई धूर्त गुजराती जल्दीसे बोल उठा—‘ महाराज बधाई ! सहस्रलिंग सरोवर [जलसे परिपूर्ण] भर गया है । उसके ऐसा कहनेके साथ ही राजाने उस गुजरातीको अपने शरीरके सारे आभरण दे दिये । वह मरुवासी छीकेसे गिरे हुए मार्जार की भाँति देखता ही रह गया ।

१०१) इसके बाद, वर्षा बीतते ही, राजा वहाँसे लौटा । [रास्तेमें] नगर महास्यान (वडनगर) में डेरा डाला और वहाँ बनवाये गए मंच-मंडपमें राजसभाकी बैठक की गई । नगरके प्रासादोंमें घञ लगे हुए देख कर ब्राह्मणोंसे पूछा कि ‘ ये कौनसे प्रासाद हैं ? ’ उन्होंने जब वहाँके जिन और ब्रह्माके मंदिरोंका हाल बताया तो क्रुद्ध हो कर राजाने कहा कि ‘ जब मैंने गूर्जर मंडलमें, जैन मंदिरोंमें पताका लगानेका निषेध किया है, तो फिर आप लोगोंके इस नगरमें इन जैन मंदिरों पर ये पताकायें क्यों उड रहीं हैं ? ’ उन्होंने कहा कि—‘ सुनिये, कृतयुगके प्रारंभमें श्रीमन्महादेवने इस महास्यान की स्थापना करते हुए श्री ऋषभनाथ और श्री ब्रह्मदेवके प्रासाद स्वयं बनवाये और उन पर घञजायें चढाईं । सो इन दोनों प्रासादोंका सुकृतियों द्वारा उद्धार होते रहने पर ये चार युग बीत गये । दूसरी बात यह है कि—पहले यह नगर शत्रुञ्जय महागिरिकी उपत्यका भूमि था । क्यों कि नगर पुराणमें भी कहा है कि—

१४०. कहा जाता है कि आदिकालमें इस जिनेश्वरके पर्वतकी मूलभूमिका विस्तार पचास योजन था ऊपरकी भूमिका विस्तार दश योजन था और ऊँचाई आठ योजन थी ।

कृतयुगमें आदिदेव श्री ऋषभदेवके पुत्र भरत नामक हुए । उन्हींके नामसे यह ‘ भरतखण्ड ’ प्रसिद्ध हुआ ।

१४१. नाभि और [उनकी पत्नी] मरुदेवीके पुत्र श्री वृषभ (ऋषभदेव) हुए जिन्होंने समदक् हो कर मुनियोग्य चर्याका आचरण किया । वे स्वच्छ, प्रशान्त अन्तःकरण, समदक् और सुधी थे । ऋषिगण उनके अर्हत पदको मानते हैं ।

१४२. मरुदेवीके गर्भसे नाभिके (श्री ऋषभदेव) पुत्र हुए जो अष्टम [विष्णुके अवतार स्वरूप] थे और सब आश्रमसे नमस्कृत थे । जिन्होंने धीरोंको अथवा वीरोंको [मोक्षार्थ] मार्ग दिखाया । (यहां P प्रतिमें निम्नलिखित—अनुवादवाले—श्लोक अधिक पाये जाते हैं—)

[९१] स्वयंभुव मनुके पुत्र प्रियव्रत नामक हुए; उनके पुत्र हुए अग्नीन्द्र, उनके नाभि और उनके पुत्र ऋषभ ।

[९२] मोक्षधर्मका विधान करनेकी इच्छासे वासुदेव ही अंशरूपसे अवतीर्ण हुए हैं, यह बात उनके विषयमें [मुनिर्योनि] कही है। उनके ती पुत्र हुए जो सभी ब्रह्मपारंगत थे।

[९३] उनमें सबसे ज्येष्ठ भरत थे जो नारायणके भक्त थे। जिनके नामसे यह अद्भुत ऐसा भारत वर्ष विख्यात हुआ।

[९४] अर्हन्, शिव, भव, विष्णु, सिद्ध, बुध, परमात्मा, और पर—ये सभी शब्द एक ही अर्थके वाचक हैं।

[९५] मनीषियोंने जैन, बौद्ध, ब्राह्म, शैव, कापिल और नास्तिक इन छहोंको दर्शन कहा है।

[९६] उसमें, इन सबके कुलके आदि बीज विमलवाहन हैं। मरुदेव और नाभि ये भरत खंडमें कुल-सप्तम (कुलश्रेष्ठ) हुए।

इत्यादि पुराण वाक्योंको सुना कर, विशेष विद्यासके लिए श्रीवृषभदेवके मन्दिरके भण्डारमेंसे, राजा भरतके नामसे अंकित, पाँच आदमियों द्वारा उठाये जाने लायक कौसेका बड़ा ताड ले आ कर राजाको ब्राह्मणोंने दिखाया। और इस प्रकार जैनधर्मका आदिधर्म होना उन्होंने सिद्ध किया। इसके बाद खेदसे मनमें खिन्न हो कर राजाने, एक वर्षके बाद, जैन मंदिरों पर पुनः ध्वजारोपण करवाये।

१०२) तदुपरान्त, पत्तनमें पहुँचने पर राजाको जब सरोवरके खर्चका हिसाब बताया गया तो व्यवहारीके उस अपराधी पुत्रसे दण्डस्वरूप तीन लाख लिये जानेकी भी बात सुनी। वह तीन लाख उसके घर भिजवा दिया। इसके बाद वह व्यवहारी राजाके लिये हाथमें भेंट ले कर उसके समीप आया और बोठा कि 'यह आपने क्या किया?' तब फिर उस कर्मस्थायके अधिकारी व्यवहारीसे राजाने कहा—'जो व्यवहारी कोटीध्वज है वह ताडङ्कका चोरनेवाला कैसे हो सकता है? तुमने इस धर्मस्थानके बनवानेमें कुछ धर्मभाग मागा था, लेकिन उसके न मिलने पर प्रपञ्चमें चतुर—तथा मुँहसे मृग और भीतरसे व्याघ्रकी वृत्तिवाले, ऊपरसे खूब सरल और अंतरसे शठभाववाले मनुष्यकी तरह—तुम्होंने यह कर्म (ताडङ्ककी चोरी) करवाया है।' [इस प्रकारकी और भी कितनी ही बातें कह कर उसे खूब लजित किया।]

१४३. जिस सरोवरके भीतर, शिवके मन्दिरके दीपक प्रतिबिम्बित हो कर पातालमें सर्पोंके सिरपरके मणियोंकी मूर्ति शोभा पाते हैं।

१४४. सिद्ध राजके इस सरोवरके शोभित रहते, मेरा मन मानसरोवरमें नहीं रमता, पण्या सर उसक आनंद सम्पादन नहीं करता और अच्छोद सरोवर, जिसका जल बहुत ही अच्छा है, वह भी असार (जान पड़ता) है।

*

एक बार श्री सिद्धराजने रामचन्द्र [कवि] से पूजा 'प्रोम ऋतुमें दिन क्यों बढ़े होते हैं?' रामचन्द्रने कहा—

[९७] हे श्री गिरिदुर्गके मल्ल महाराज! आपके द्विग्वजयके उत्सवमें दीड़ते हुए बरोंके घोड़ोंकी टापूसे पृथ्वीमण्डल खोद डाला गया है और हवासे उड़ी हुई उसकी धूलने जा कर आकाशगंगामें मिल कर उसे पंकस्थलीके रूपमें परिणत कर दिया है। इससे उसमें दूर्वा उग गई है और उसे सूर्यके घोड़े चरने लग गये हैं। इसी लिए यह दिन बड़ा हो गया है।

[९८] मार्गणोंने तुम्हारे शत्रुओंके पास लक्ष (निशाना) पा लिया है और तुम्हारे पास वे विलक्ष (निशानेसे रहित) हो कर रहे हैं। फिर भी हे सिद्धराज ! तुम्हारा ' दाता ' पनका जो यश है वह ऊपर सिर उठाये रह रहा है—वदता चला जाता है !

*

इसके बाद, एक बार राजाने प्रथिलाचार्य जयमङ्गल सूरिसे नगरवर्णन करनेको कहा। उन्होंने कहा—

[९९] मादम होता है कि इस नगरीकी नागरिकाओंके चातुर्यसे निर्जित हो कर सरस्वती देवी है सो हकी-नकी-सी हो कर अपनी कच्छपी नामक धीणाको अपने बाहुसे उतार कर यहाँ पर छोड़ दी है और स्वयं पानी वहन करने लगी है। उसकी इस धीणाका यह सहस्रलिंग सरोवर तो मानों तुंबा है और कीर्तिस्तंभ मानों उसका उच्च दण्ड है।

१०३) इसके बाद, जब श्रीपाल कविकी रची हुई सहस्रलिंगसरोवरकी प्रशस्ति, पट्टिका पर लिखी गई तो उसके संशोधनके लिये सर्व दर्शनके (आचार्योंके) बुलाये जाने पर श्रीहेमचंद्राचार्यने [अपने प्रधान शिष्य] रामचंद्र पाण्डितको यह कह कर भेजा कि ' प्रशस्ति काव्य जो सभी विद्वानोंको अनुमत हो तो उसमें अपना कुछ भी पाण्डित्य मत दिखाना। ' फिर उन सब विद्वानोंने प्रशस्ति काव्यको शोधनेकी दृष्टिसे पढ़ा और राजाके अनुरोधसे तथा श्रीपालकविके चतुरतापूर्ण पाण्डित्यसे प्रसन्न हो कर सारे काव्यको मान्य किया। उसमें भी उन सभीने निम्नलिखित काव्यकी विशेष प्रशंसा की—

१४५. " कोशसे युक्त होते हुए भी तथा दल (१ पत्ता, २ सेना) से समृद्ध हो कर भी यह कमल अपने ही कण्ठकोंके समूहको उच्छिन्न करनेमें असमर्थ है और इसके अतिरिक्त पुंस्त्व भी नहीं धारण करता। (कमल शब्द पुंलिंग नहीं है) [दूसरी ओर सिद्धराजका जो कृपाण है] यह अकेला ही विना कोश- (म्यान) के भी भूतलको निष्कण्ठक कर रहा है, ऐसा समझ कर लक्ष्मीने [अपने उस निवासस्थान रूप] कमलको छोड़ कर इसके कृपाणका आश्रय लिया है।

इस विषयमें श्रीसिद्धराजने रामचन्द्रसे खास पूछा तो उसने कहा कि ' यह कुछ सदोप है। ' उन सभी पंडितोंसे पूछे जाने पर [उसने कहा कि] ' इस काव्यमें सेनाका वाचक ' दल ' शब्द और कमल शब्दका ' नित्यस्त्रीत्व ' ये दो दोष चिन्तनीय हैं। तब उन सभी पंडितोंसे अनुरोध करके राजाने ' दल ' शब्दको तो सेनाके अर्थमें प्रमाणित कराया। किन्तु कमल शब्दका ' नित्यस्त्रीत्व ' जो लिङ्गानुशासनसे असिद्ध है उसे कौन प्रमाणित कर सकता। इसलिये ' पुंस्त्वं च धत्ते न वा ' (कर्मी पुंस्त्व धारण करता है, कर्मी नहीं) इस प्रकार इस पदमें अक्षरभेद करवाया [जिससे वह अशुद्धि दूर हो गई]। उस समय रामचन्द्रको सिद्धराजका दृष्टिदोष लगा और वह ज्यों ही वसतिमें प्रवेश करने लगा त्यों ही उसकी एक आँख नष्ट हो गई।

*

१ इस श्लोकमें ' मार्गण ' और ' लक्ष ' शब्द पर श्लेष है। ' मार्गण ' का एक अर्थ है बाण और दूसरा अर्थ है मंगल=वाचक। ' लक्ष ' का एक अर्थ है लाल रंगका परिमित द्रव्य और दूसरा अर्थ है लक्ष्य=निशाना। मार्गणवा अर्थ जब बाण ऐसा विवक्षित है तब उसके साम लक्षका अर्थ निशाना लेना होगा; और जब मंगल=वाचक ऐसा अर्थ अपेक्षित होगा तब लक्षका अर्थ लाल द्रव्य लेना होगा। सिद्धराजके मार्गण याने बाण विषय याने शत्रुके पक्षमें लक्ष्यलक्ष्य-निशाना प्राप्त करनेवाले—होते हैं, कर्मी व्यर्थ नहीं जाते; और वे ही बाण (शत्रुके पक्षे हुए) सिद्धराजके पक्षमें विलक्ष-लक्ष्यभ्रष्ट हो कर रह जाते हैं। इससे विपरीत, मार्गण याने वाचक लोक हैं वे सिद्धराजके पास लक्ष्यलक्ष याने लालोंका द्रव्य प्राप्त करते हैं और शत्रु राजाओंके पास विलक्ष याने विगतलक्ष्य-विनाही प्राप्तिके रह जाते हैं।

१०१) किसी समय, सान्धिविप्रदिकों द्वारा डाहल दे श के राजाका निम्न लिखित श्लोक, जो यमल पत्र (मित्रताका संबंध सूचक पत्र) पर लिखा हुआ था, सुनाया गया—

११६. आ-युक्त हो कर लोकरुमें प्राणदान करता है, वि-युक्त हो कर मुनियोंको प्रिय होता है, सं-युक्त हो कर सर्वथा अनिष्ट कारक बनता है और केवल—अकेला होने पर स्त्रियोंका प्रिय बनता है ।

राजाने पूछा कि ' इसमें क्या बात है ? ' उन्होंने कहा— ' आपके देशमें एक-से-एक प्रधान ऐसे बहुतासे विद्वान् रहते हैं । सो उनसे इस दुर्बोध्य श्लोककी व्याख्या कराइये । ' उनकी यह बात सुन कर सभी विद्वान् उसका अर्थ सोचने लगे पर किसीकी समझमें नहीं आया । राजाने आचार्य हेमचन्द्रसे पूछा । उन्होंने इस प्रकार व्याख्या की— ' इसमें ' हार ' शब्दका अर्थात्कार है । उसके साथ ' आ ' उपसर्गका योग होनेसे ' आहार ' बनता है जो सब जीवोंको प्राण देता है । ' मि ' उपसर्गके योगसे ' मिहार ' बन कर दोनों तरहसे यतियोंका प्रिय होता है । ' सं ' के योगसे ' संहार ' बनता है जो सर्वथा अनिष्ट लगता है और बिना किसी उपसर्गके स्त्रियोंका प्रिय अभूषण गठेका ' हार ' होता है । '

*

१०५) एक दूररी वार, सपादलक्ष देशके राजाने

' उगी हुई चन्द्रकला तो गौरीके मुखकमंडला अनुहार नहीं कर सकती । '

इस प्रकारकी समस्यामाला आया दोहा यहाँ पर (पाठनमें) भेजा । अन्यान्य उन कवियोंके उसकी पूर्ति न करने पर

' (और) जो न देवी गई वैसी प्रतिपदाकी चन्द्रकलाकी उपमा दी कैसे जाय । '

इस प्रकारका उत्तरार्द्ध कह कर मुनीन्द्र हेमचन्द्र ने उसको पूर्ण किया ।

*

सिद्धराजका सौराष्ट्रके राजा खंगारको विजय करना ।

१०६) श्रीमिद्धराजने, नवघण नामक आभीर राणाका निग्रह करनेमें, पहले ग्यारह वार अपनी सेनाका पराजित होना जान कर, बर्द्धमान (बटवाण) आदि नगरोंमें बड़े बड़े प्रकार बनवा कर, स्वयम् ही उसके लिये प्रयाण किया । उस (नवघण) के भगिनी पुत्रने [किलेका रहस्य आदि बतलानेवाले] संकेत देते समय यह वचन दिया था कि ' किलेका कब्जा करते समय इस नवघणको सिर्फ द्रव्यमारसे मारना (अर्थात् भारी दण्ड दे कर द्रव्य वसूल करना), लेकिन किसी शत्रुके मारसे नहीं मारना । ' [राजाके फिट सर कर लेने पर] उस नवघणको उसकी खीने कहीं अन्दर छुपा दिया जिसको राजाने उस विद्रोह मद्दलमेंसे बहार लीच निकाला और धनके भरे हुए बर्तनोंमें उसे पीट पीट कर मार डाला । उसकी खीको यह कह कर कि ' इमको हमने द्रव्यके मारसे ही मारा है ' अपने वचनका पाठन बनताया और उसे शांत किया ।

शोकमें निमग्न उसकी रानी [मूनलदेवी] के ये वाक्य कहे जाने हैं—

१४८. यह राणा स्वयंमें नहीं है । न कोई उसे लाया है, न कोई लायेगा । खंगारके साथ मैं स्वयं अपने प्राण अग्निमें क्यों न होम दूँ ।

१४९. और सब राणा तो बनिधे हैं और उनमें यह जेमल (जयमिह) बड़ा सेठ है । हमारे गडके नीचे हमने यह कैमा ब्योवार मांड रखा है ।

१५०. हे गीएश्टाडी गिरवार तेने क्यों मनमें ममर धारण कर लिया है ? खंगारके मरने पर तेने अपना एक दिग्गर भी नहीं गिराया ।

[१०१] हे गरवा गिरनार ! तुम पर वारि जाती हूँ । [खं गार के लिये] लंबा चुलावा आया है । इसके जैसा भारक्षम (समर्थ) सज्जन फिर दूसरी बार तुझे नहीं मिलेगा ।

[१०२] मुझको इतने-ही-से संतोष होगा, जो प्रसु (स्वामी) के पगोंमें [मेरा भी शरीर अग्निद्वारा] प्रदीप्त हो । न मुझे रानीपनकी चाहना है, न रोप है । ये दोनों खं गार के साथ चले गये ।

[१०३] हे मन ! अब तंबोल मत माँगो, खुले मुँह मत झाँको । दे उल बाडे के संग्राममें खं गार के साथ वह सब चला गया है ।

[१०४] हे जे सल ! भेरी बाँह मत मोडो और वारंवार विरूप भाव न बताओ । न वचन के बिना नदीमें नया प्रवाह नहीं आता ।

[१०५] हे वढ बाण ! मैं तुझसे क्या लड़ूँ—भूल जाना चाहती हूँ लेकिन भूल नहीं सकती । हे भोगावा (वढ बाण के पासकी नदी) तैने सोनाके समान प्राणोंका भोग लिया ।

इस प्रकारके बहुतेसे वाक्य [कहे जाते] हैं । वे यथाप्रसंग जानलेने योग्य हैं ।

१०७) इसके बाद, महं० जाम्ब के वंशज दण्डाधिपति सज्जन की योग्यता देख कर उसे सुराष्ट्र देश का प्रबन्धक (गवर्नर) नियुक्त किया । उसने स्वामीको बिना सूचन किये ही, तीन वर्षके वसूल किये हुए [राजकीय] द्रव्यसे श्री उज्जयन्त (गिरनार) पर्वत पर स्थित नेमिनाथके काठके बने हुए जीर्ण मन्दिरको उखाड़ कर उसके स्थानमें नया पत्थरका मन्दिर बनवाया । चौथे वर्ष चार सामंतोंको भेज कर राजाने सज्जन दण्डाधिपतिको पत्त न में बुलवाया । उससे [पिछले] तीन वर्षका वसूल किया हुआ द्रव्य माँगने पर, साथमें लिये हुए उसी देशके व्यवहारियोंसे उतना ही धन ले कर देता हुआ वह बोला—‘महाराज ! श्री उज्जयन्त के मन्दिरके जीर्णोद्धारका पुण्य अथवा यह धन इन दोनोंमेंसे चाहे सो एक ले लें ।’ उसके ऐसा बताने पर उसकी अतुलनीय बुद्धिसे चित्तमें चमत्कृत हो कर सिद्धराज ने तीर्थोद्धारका पुण्य लेना ही स्वीकार किया । वह सज्जन फिर उसी देशका अधिकार पा कर, उसने शत्रुंजय और उज्जयन्त इन दोनों तीर्थोंमें उनके बीचके बारह योजन विस्तृत अन्तरके जितना ही लंबा दुकूलका वना हुआ महाध्वज चढ़ाया ।

इस प्रकार यह रैवतकोद्धार प्रबन्ध समाप्त हुआ ।

*

सिद्धराजका शत्रुंजयकी यात्रा करना ।

१०८) इसके बाद, एक बार फिर सोमेश्वरकी यात्रा कर वापस लौटते समय श्री सिद्धराजने, रैवतकगिरिकी उपत्यकामें डेरा डाल कर, अपना कीर्तन (मन्दिरादि धर्मस्थान) देखना चाहा । उसी समय मत्सरपरायण ब्राह्मणोंने यह कह कर पिशुनवाक्योंसे उसे रोका कि ‘यह पर्वत सजलाधार लिंगके आकारका है, इसलिये इसे पैरोंसे स्पर्श करना उचित नहीं है ।’ राजाने वहाँ पर पूजा भिजवा कर प्रस्थान किया और शत्रुंजय महातीर्थके पास आ कर पड़ाव डाला । वहाँ पर भी उन्हीं निर्दय चुगलखोर ब्राह्मणोंने हाथमें कृपाण ले कर तीर्थ पर जानेका मार्ग रोका । उनके ऐसा करने पर श्री सिद्धराजने संभेरा होनेके पहले ही, कापड़ीका वेप बना कर, और जिसके दोनों ओर गंगाजलके पात्र रखे हुए हैं ऐसी वहंगी कंधे पर रख कर, खुद इन ब्राह्मणोंके बीचमें हो कर पर्वत पर चढ़ गया । किसीने उसके स्वरूपको नहीं जाना । [ऊपर जा कर] गंगाजलसे श्री युगादि देव (ऋषमनाथ) को स्नान कराया और पर्वतके पासके बारह गौनोंका शासन उस

१ ये जो वाक्य ऊपर अनूदित किये गये हैं, उनमेंका कितनाक कथन असत्य और अरुच्यार्थक है । जो अर्थ यहा पर दिया गया है वह निम्नोन्त है ऐसा नहीं कह सकते ।

देवको दान कर दिया। तीर्थका दर्शन कर वह उन्मुद्दित-ञ्छोचन हुआ और अमृताभिषिक्त होनेकी नॉई खडा रह गया। [पर्वतकी रमणीयता देख कर] सोचने लगा कि ' इस सल्लकी-वन और नदियोंसे परिपूर्ण पर्वत पर, यहीं, [नये] शिष्यवनकी रचना करूँगा ' — इस प्रकारकी जो सफल प्रतिज्ञा [पइले की थी और तदनुसार] हाथियोंका झुंड पानेके लिये जो मेरा मन बेहाप हो गया था, उस मनोरथसे मैंने इस तीर्थकी पवित्रताका ध्वंस करनेवाला मानस पाप किया है और इसलिये मुझ पापीको धिक्कार है। ' इस प्रकार श्री देव-पादके सामने राजलोक द्वारा निर्दित अपने आपकी निंदा करता हुआ वह आनंदके साथ पर्वत पर से नीचे उतरा।

*

वादी श्रीदेवसूरिका चरित्रवर्णन ।

१०९) अब यहाँ पर देवसूरिका चरित्र वर्णन करेंगे। — उस अवसर पर कुमुदचंद्र नामक दिग्गम्बर [विद्वान्] भिन्न भिन्न देशोंके चौरासी वादियोंको वादमें जीत कर, कर्नाटक देशसे गूर्जर देशको जीतनेकी इच्छासे कर्णावती नगरमें आया। वहाँ मद्गारक श्री देवसूरिचतुर्मास करके रहे हुए थे। एक बार श्री अरिष्टनेमिके मंदिरमें जब वे धर्मशास्त्रका व्याख्यान कर रहे थे तो उस दिग्गम्बरके साथी पंडितोंने उनकी वह अनुच्छिद्य (मौलिक, विशुद्ध) वाणी सुनी। उन्होंने जा कर वह वृत्तान्त कुमुदचन्द्र से कहा तो उसने उनके उपाश्रयमें तृणके साथ जल प्रक्षेप कराया। पर, खण्डन, तर्क आदि प्रमाण शास्त्रोंमें प्रवीण ऐसे उस महर्षि पंडितने जब इस पर कुछ ध्यान न दे कर उसकी अवज्ञा की, तो उस दिग्गम्बरने श्री देवाचार्य की वृद्धन तपोधना शील सुन्दरी को चेटकाधिष्ठित करके, नाच, जलानयन आदि अनेक विडंबनाओंसे उसे विडंबित किया। चेटक (टोना आदि) के दूर होने पर वह जब स्वस्थ हुई तो उस उत्कट परामर्शसे दुःखित हो कर वह अपने आचार्यकी खूब भर्त्सना करने लगी। उसे रोक कर आचार्य चिन्तामत्र हो रहे।

(यहाँ पर P प्रतिमें इस विषयके निम्नलिखित पद्य पाये जाते हैं—)

[१०३] हा ! मैं किसके आगे पुकार करूँ ? मेरे प्रभु तो कर्णरहित हैं। इनसे तो वह सुगत (बुद्ध) देव ही अच्छा है जो अपने शासनका तिरस्कार होने पर [उसका प्रतिकार करनेकी इच्छासे] अनतार धारण करता है।

[साध्वीके इस वाक्यको सुन कर आचार्य मनमें सोचने लगे—]

[१०४] आः ! गुरुजनके प्रमाणोंकी व्याख्याका श्रम मेरे पास केवल उनके कंठके सुला देने भरका पुष्ट फल देनेवाला मात्र हुआ—गुरुओंका मुझे पढ़ानेके लिये किया गया परिश्रम व्यर्थ ही हुआ।—जो मैं उनके शासन (धर्म संप्रदाय) के प्रति की गई इस प्रकारकी विडंबनाओंके डंवरको शान्त मनसे सुन रहता हूँ।

[देवसूरिके द्वारा कही गई यह उक्ति सुन कर उस श्रेष्ठ आर्यानि कहा—]

[१०५] द्रुष्ट वादियोंके निर्दलनमें अंकुश जैसी श्री देवी, जो चेतावरोके अम्युदयके लिये मंगलमयी कोमल दुर्वा जैसी है, गुरुवर श्री देवसूरिके ललाट पट्ट पर प्रथमावतारकी रिवलि लावे।

श्री देवसूरिने [दिग्गम्बर विद्वान्से] कहा—' वादनिघानिनोद (शाब्दार्थ-विनोद) के लिये आप पत्तन चले। वहाँ राज-सभामें आपके साथ वाद करेंगे। ' उनके ऐसा आदेश करने पर वह दिग्गम्बर अपने आपकी कृतकृत्य मानता हुआ पत्तनको पहुँचा। [उसका आना सुन कर] श्री सिद्धराजने, जिसके मातामहका वह विद्वान् गुरु था, सामने जा कर उसका योग्य सत्कार किया। वह बही डेरा डाल कर ठहरा। सिद्धराजने

श्री हे मा चार्थसे वादमें निष्णात ऐसे आचार्यकी बात पृछी। उन्होंने चारों विद्याओंमें परम प्रवीणता प्राप्त, जैन मुनिरूप हाथियोंके यूपपति, श्वेतांबर शासनके लिये वज्रके प्राकार जैसे मानेजानेवाले, राजसभाके शृंगारहार, कर्णावतीमें [चातुर्मास] रहे हुए, वादविद्याके पारगामी, वादिहस्तियोंके लिये सिंहस्वरूप श्री देवाचार्य को बताया। इसके बाद उनको बुलानेके लिये, श्री संघके लेखके साथ राजाकी विज्ञापिका वहां पहुंची। उसे पा कर देवसूरि पत्तनमें आये और राजाके अनुरोधसे वाग्देवीकी आराधना की। उस देवाने आदेश दिया कि— 'बाद करते समय, वादि वेतालीय श्री शान्ति सूरि विरचित उत्तराध्ययन बृहद्बृत्तिमें उल्लिखित दिग्बर वादस्थल विषयक चौरासी विकल्प जालका उपन्यास करके, उसे प्रपंचित करोगे तो दिग्बरके मुखमें मुद्रा लग जायगी।' देवीके इस आदेशके बाद, गुप्त भावसे कुमुद चंद्र के पास पंडितोंको यह जाननेके लिये भेजा कि किस शास्त्रमें इसकी विशेष कुशलता है। उनके द्वारा उसकी यह निम्न लिखित उक्ति सुनी—

१५३. हे देव! आदेश कौजिये मैं सहसा क्या करूं? लंकाको यहाँ ले आऊं, या जंबूद्वीपको यहाँसे ले जाऊं?, क्या समुद्रको सुखा दूं, या उस उच्च पर्वतको, जिसकी चोटीका एक परधर कैलास है, उसे खेल-ही-में उखाड़ कर समुद्रको बाँध दूँ, कि जिसके प्रक्षेपसे क्षुब्ध हो कर समुद्रका पानी बढ़ जाय।

इस उक्तिको सुन कर, श्रीदेवाचार्य और श्रीहेमाचार्य दोनों उसकी सिद्धान्तविषयक बहुत अल्प कुशलता समझ कर उसे अपने मनमें 'जीत लिया, जीत लिया' ऐसा मान बड़े प्रसन्न हुए। इसके बाद देवसूरि आचार्यका प्रधान शिष्य रत्नप्रभ, प्रथम रात्रिमें गुप्त वेप करके कुमुदचंद्रके डेरमें गया। उसने (कुमुदचंद्रने) पूछा कि— 'तुम कौन हो?'; 'मैं देव हूँ'; 'देव कौन?'; 'मैं'; 'मैं कौन?'; 'तुम कुत्ते'; 'कुत्ता कौन?'; 'तुम'; 'तुम कौन?'; 'मैं देव'; ['तुम कहाँसे आये?'; 'स्वर्गसे' 'स्वर्गमें क्या बात चल रही है?'; 'कुमुदचंद्रका सिर ९५ पल है'; 'इसमें प्रमाण क्या है?' 'काट कर तौल लो'] इस प्रकारकी उसकी उक्ति-प्रत्युक्तिके बंधनमें जब वह चाककी तरह चक्कर खाने लगा, तो अपनेको देव और दिग्बरको श्वान बना कर, जैसे गया था वैसे ही लौट आया। [पीछेसे] उस चक्रादोपको ठीक ठीक समझा तो मनमें अतिशय विषण्ण हो कर, इस प्रकारकी उचित कविता बना कर उस मायावादी कुमुदचंद्रने देवसूरिके पास भेजी—

१५४. अरे श्वेताम्बरो! इस प्रकारके विकटादोप वचनोंके द्वारा, संसार वृक्षके अतिविकट कोटरमें, इस सुग्ध जन-समूहको क्यों गिराते हो? यदि तत्वातत्त्वके विचारमें आप लोगोंको थोड़ीसी भी कामना हो तो सचमुच ही कुमुदचंद्रके दोनों चरणोंका रात-दिन ध्यान किया करो।

इसके बाद श्री देवसूरिके चरणका परम परमाणु (विनीत शिष्य), बुद्धिदैमवसे चाणाक्यका भी उपहास करनेवाले पंडित माणिक्य ने निम्नलिखित श्लोक उसके पास भेजा—

१५५. अरे! वह कौन है जो सिंहके केशजालको पैरोंसे छूना चाहता है? वह कौन है जो तेज भालेकी नोकसे अपनी आँख खुजाटना चाहता है? वह कौन है जो नागराजके सिर परकी मणिको अपनी शोभाके लिये उतारना चाहता है? जो यह करना चाहता है वही वंदनीय ऐसे श्वेतांबर शासनकी निन्दा करना चाहता है।

फिर रत्नाकर पंडितने भी इस श्लोकको कुमुदचंद्रके पास उपहासके सहित भेजा—

१५६. नंगों (दिग्बरों) ने जो युवतियोंकी मुक्तिका निरोध किया है इसमें क्या तत्त्व है वह तो प्रकट ही है। फिर घृया ही कर्कश तर्कके लिये यह अनर्थमूलक अभिलाषा क्यों करते हो?

श्री हेमचंद्राचार्यने सुना कि श्रीमद्यगल्ला देवी कुमुदचंद्रकी पक्षपातिनी है और सभाके अपने संपर्कवाले सभ्योंसे उसकी जयके लिये नित्य अनुरोध कर रही है, तो उन्होंने, उन्हीं सभासदोंसे यह वृत्तान्त कहलवाया कि 'वादस्थल पर दिगंबर लोक तो खीकृत सुकृत्यको अप्रमाणित करेंगे और श्वेताम्बर प्रमाणित करेंगे।' यह सुन कर रानीने व्यवहारवहिर्मुख उस दिगंबर परसे अपना पक्षपात हटा लिया।

इसके बाद, भापोत्तर (वादका विषय) लिखानेके लिये कुमुदचंद्र तो पालकीमें बैठ कर, और पण्डित रत्नप्रभपैदल ही चल कर, राजाके अक्षपटल (न्यायविभाग) कार्यालयमें आये। वहाके अधिकारियोंको कुमुदचंद्रने अपनी यह भाषा (वादके विषयमें निजकी प्रतिज्ञा) लिखवाई—

१५७. केवली होने पर [मनुष्य] भोजन नहीं करता, चीवर सहित [मनुष्य] निर्वाण नहीं पाता और खीजन्ममें मुक्ति नहीं मिलती।

श्वेतांबरोंका इसके विरुद्ध यह उत्तर था—

१५८. केवली होने पर भी [मनुष्य] भोजन करता है, सचीवर [मनुष्य] को भी निर्वाण मिलता है, और खीजन्ममें भी मुक्ति होती है—यह देवसूरिका मत है।

इस प्रकार भाषा और उत्तर लिख लेनेके अनंतर वादका स्थान और समय निर्णयित हुआ। उसमें सिद्धराजके सभापतित्वमें, पड़दर्शन-प्रमाणकी जाननेवाले सभ्यलोग जब उपस्थित हुए तो, तो सुखासन (पालकी) में बैठ कर, सिरपर श्वेत छत्र धारण किये हुए और जयडिंडिम बजाते हुए, वादी कुमुदचन्द्रने सभामें प्रवेश किया। उसके आगे बांशके सिरपर, उसके प्राप्त किये हुए जयपत्र लटक रहे थे। सिद्धराजने उसके बैठनेके लिये सिंहासन दिखवाया। प्रभु श्री देवसूरिने मुनीन्द्र श्री हेमचंद्रके साथ सभामें एक ही आसनको अलंकृत किया।

फिर, वादी कुमुदचंद्रने, जो अवस्थासे बृद्ध था, श्री हेमचंद्रसे—जिनकी शैशवावस्था कुछ ही समय पहले व्यतीत हुई थी; अर्थात् जो अब भी पूर्ण युवा नहीं हुए थे—कहा कि 'आपके द्वारा तत्र क्या पीत है? अर्थात्—आपने तत्र (छांस) पी है?' इस पर श्री हेमचंद्रने उससे कहा—'क्या वृद्धावस्थाके कारण तुम्हारी बुद्धि अस्थिर हो गई है? जो ऐसा अनाप-सनाप बोल रहे हो! तत्र श्वेत होता है, पीत तो हल्दी होती है।' इस वाक्यसे नाँचा मुँह हो कर उसने पूछा कि—'आप दोनोंमें वादी कौन है?' श्री सूरिने उसका कुछ तिरस्कार करनेके इरादेसे [अपनेको लक्ष्य कर लेकिन शब्दभेदके साथ] कहा 'यह आपका प्रतिवादी है।' ऐसा कहने पर कुमुदचंद्र [उसके मर्मको ठीक न समझ कर] बोला—'मुझ बृद्धका इस शिशुके साथ क्या वाद हो सकता है?' उसकी यह बात सुन कर [आचार्य हेमचन्द्रने कहा—] 'बृद्ध तो मैं हूँ; और आप तो शिशु ही हैं—जो अब तक भी कंदोरा बान्धना नहीं जानते और बख नहीं पहनते।' राजाके इन दोनोंकी इस प्रकारकी वितंडाका निषेध करने पर, परस्पर इस प्रकारकी प्रतिज्ञा निश्चित हुई—'पराजित होने पर श्वेतांबर तो दिगंबर हो जायेंगे, और [उसके विरुद्ध] दिगंबर देशत्याग करेंगे।' प्रतिज्ञा निश्चित हो जाने पर स्वदेशके कलंकसे डरनेवाले देवाचार्यने, सर्वानुवादका परिहार करके और देशानुवादका अनुसरण करके, कुमुदचंद्रसे कहा कि—'पहले आप ही अपना पक्ष स्थापित करें।' उनके ऐसा कहने पर कुमुदचंद्रने राजाको पहले यह आशीर्वाद दिया—

१५९. हे राजन्! आपके यशसे स्मरण होने पर सूर्य खद्योतकी चमक जैसा प्रतीत होता है, चन्द्रमा पुराने मनुष्योंके जालकी भाँति फीका जान पड़ता है और (हिमाच्छादित) पर्वत मशकसे जान पड़ते हैं। आकाश उसमें भँरे जैसा हो जाती है और इसके बाद तो वाणा बन्द हो जाती है।

उसके इस अपशब्दको सुन कर कि ' वाणी बंद हो जाती है '—सम्य लो ग उसे अपने ही हाथों बंधा समझ कर बड़े प्रसन्न हुए । इसके बाद दे वा चार् य ने राजाको, यह आशीर्वाद दिया—

१६०. हे चालुक्य महाराज ! तुम्हारा यह राज्य और यह जिनशासन चिरकाल तक प्रवर्तित रहें ।

(राज्यपक्षमें पहला अर्थ—) जो राज्य शत्रुओंको शान्ति नहीं प्राप्त करने देता है, उम्बल आकाशकी-सी उल्लसित कीर्तिकी प्रभासे जो मनोहर हो रहा है, न्यायमार्गके प्रसारकी पद्धतियोंको जो गृह बना हुआ है और जिसमें परपक्षके हाथियोंका सदैव मद उतारनेवाले ऐसे कौन हाथी बलवान् नहीं है ।

(जिनशासनपक्षमें दूसरा अर्थ—) जो जिनशासन नारियों (स्त्रियों) को मुक्तिपद प्रदान करता है, श्वेतवस्त्रोंको धारण करनेवाले यतियोंको उल्लसित कीर्तिसे मनोहर लग रहा है, नय मार्ग (जैन तत्त्व पद्धति) के विविध प्रस्तार और भाङ्गियोंका गृहरूप है और जिसमें अन्य मतवादियोंके गर्वका जय करनेवाले केवलज्ञानी कभी भी भोजन नहीं करते ऐसा विधान नहीं है—वह जिनशासन चिरंजीव रहो ।

इसके बाद, वादी कुमुद चंद्र ने केवल-मुक्ति, स्त्री-मुक्ति और चौर-सिद्धिके निराकरण रूप अपने पक्षके उपन्यासमें, कन्नूतर पक्षीकी भाँति मन्द मन्द और बार बार स्खलित वाणीसे बोलना शुरू किया । इसे देख कर सम्यलोग, ऊपरसे तो उसे उत्साहपरक वचन कह रहे थे और अन्दर दिलमें हंस रहे थे । इस प्रकार कितनाक उपन्यास (स्वपक्ष स्थापन) करनेके बाद, अन्तमें [दे वा चार् य को लक्ष्य करके कहा कि] 'अब आप बोलिये ' । दे वा चार् य ने प्रलय कालमें उन्मीलित प्रचण्ड वनसे विशुब्ध समुद्रके तरंगाघातके समान गंभीर वाणीसे, उत्तराध्ययन सूत्रकी वृहदृष्टिमें कथन किये हुए चौरासी विकल्पोंका उपन्यास करना प्रारंभ किया । इसे देख कर, भास्वत् प्रकाशके प्रसारसे म्यान हो जाने वाले कुमुद—रात्रिबिकासी कमल—की भाँति निष्प्रम हृदय कुमुद चंद्र ने भयसे चित्तमें भ्रान्त हो कर, उस बातको समझनेमें असमर्थ बन कर, फिरसे उसी उपन्यासके दुहरानेकी प्रार्थना की । श्री सिद्ध राज के तथा और सम्योके निषेध करने पर भी, उन्होंने उसे अग्रमेय प्रमेय लहरियोंके द्वारा प्रमाण-समुद्रमें डुबोना शुरू किया । इस तरह निरंतर वाक्प्रवाह चलने पर, सोलहवें दिन अकस्मात् दे वा चार् य का कण्ठ रुद्ध हो गया । तब मंत्रशास्त्रविद् श्री यशो भद्र सूरि ने, जिन्होंने कुरु कुल्लादेवीके मंदिरमें अतुलनीय वर प्राप्त किया हुआ था, उनकी कण्ठनालीसे क्षणभरमें क्षणिक (दिगंबर)के किये गये अभिचारके प्रभावसे पड़ा हुआ केशोंका गुच्छा बाहर निकाल दिया । इस विचित्र व्यापारके निरीक्षणसे चतुर लोगोंने श्री यशो भद्र सूरि की भूरी प्रशंसा की और कुमुद चंद्र की खूब निंदा की । इस प्रकार (पहलेने) प्रमोद और (दूसरेने) विषाद धारण किया । इसके बाद, दे व सूरि ने पक्षके उपन्यासके उपक्रममें 'कोटाकोटि' शब्द कहा । कुमुद चंद्र ने उस शब्दकी व्युत्पत्ति पूछी । तब का कल पंडित ने, जिसके कण्ठमें आठों व्याकरण लोट रहे थे, शाकटायन व्याकरण में कहे हुए 'टाप् टीप्' सूत्रसे निष्पन्न 'कोटाकोटिः' 'कोटीकोटिः' 'कोटिकोटिः' इन तीनों सिद्ध शब्दोंका निर्णय सुनाया । पहले-ही-से 'वाचस्ततो मुद्रिता' इस कहे हुए अपशब्दके प्रभावसे उसका मुख मुद्रित (बन्द) हो गया; और फिर स्वयं ही बोला कि—' मैं श्री दे वा चार् य से जीता गया ' । श्री सिद्ध राज ने उसे पराजित कह कर अपद्वारसे बाहर कर दिया । इस पराभवके कारण उसका सिर फट गया और वह मर गया ।

इसके अनन्तर श्री सिद्ध राज ने आनन्द उल्लसित मनसे दे वा चार् यके प्रभावकी क्षयाति करनेकी इच्छा की । उनके सिर पर चार श्वेतच्छत्र धारण करवाये गये, खूब सुंदर चामर ढलवाये गये, शंखोंके युगल

बनवाये गये, ढंकोली चोटसे मानों आकारका पेट गुडगुडा रहा था और उत्तम प्रकारकी दुंदुभिषोंके नादसे दिगंतराउ मरा जा रहा था। राजाने स्वयं अपने हाथका अखंडन दे कर, ' हे वादि चक्रवर्ती, पधारिये ! ' ऐसी स्तुतिपूर्वक उन्हें राजसभासे प्रस्थान करवाया। चा हट नामक उपासकने उस समय तीन लाल [द्रुम] बाघकोको दान किये। इस तरह जगतके आनंद स्वरूप कन्द (मूल) के कन्दल (अंजुर) समान मंगलके बारंबार उषारित होने पर, उसी चा हट द्वारा बनवाये गये श्रीमहावीर देवके प्रासाद (मन्दिर) में, देवको नमस्कार करने बाद, उसीही वसति (उपाश्रय) में जा कर उन्होंने आश्रय लिया। सूरीकी अनिच्छा होने पर भी राजाने उनको पारितोषिकके रूपमें छात्रा आदि बारह गांव भेंट दिये। [भिन्न भिन्न समर्थ आचार्यों द्वारा की गई] उनकी स्तुतिके कुछ श्लोक इस प्रकार हैं—

१६१. त्रिनके प्रसाद-दी-का मानों सुवप्रभके समय दर्शन (चेतार संप्रदाय) उच्चारण करता है, उन वयप्रतिष्ठाचार्य श्री देवसूरि को नमस्कार है।—इस प्रकार श्री प्रद्युम्ना चार्यने कहा।
१६२. यदि मूर्धके ममान देवाचार्य, कुमुदचंद्रको न जीत पाते तो कौन चेतार, संसारमें कटिमें वय्र पहनने पाता।—इस प्रकार हेमाचार्यने कहा।
१६३. त्रिस नमने कीर्तिस्वपी कया उपासन करके अपना व्रतभंग किया था, देवसूरिने उस कंधाको छीन कर उसे निर्मय (नंगा) कर दिया।—इस प्रकार श्री उदयप्रभ देवने कहा।
१६४. अभी तक भी किन्होंने लेप-शाअका त्याग नहीं किया उन देवसूरि (वृहस्पति) के साथ, वादविचारको जानने बाडे प्रद्यु देवसूरि, तुडना कैसे की जाय।—इस प्रकार श्री मुनि देवाचार्यने कहा।
१६५. त्रिनकी प्रनिमाके घाम-नेत्रमे [प्रसन्न हो कर] कीर्तिस्वपी योगवय्रका त्याग कर देने बाडे [उस] नम्र [दिगंबर] को भारतीयने मानों लाजके कारण छोड़ दिया, वह देवसूरि तुम्हारा कन्या करे।
१६६. शरीर केवियोंकी मुक्ति स्थापन कर जो सपाकार बने तथा विद्योती मुक्तिके युक्त उत्तर द्वारा मोक्ष तीर्थ बने, और नम्रको जीत लेने पर चेतारशासनके प्रतिष्ठागुरु बने, उन प्रद्यु श्री देवसूरि को महिमा, देवता और गुरुकी अपेक्षा भी अतिरिक्त है।—इस प्रकार दो श्लोक श्री देवसूरिने कहे।

इस प्रकार यह देवसूरिका प्रबन्ध समाप्त हुआ।

पत्तनके घसाह आभट्टका घृत्तान्त ।

११०) इसके बाद, पत्तनका रहने बाडा, त्रिसका वंश विदुष हो गया है ऐसा, आभट्ट नामक एक कनिष्ठपुत्र बंगालकी दुबात पर, गागर विगनेका काम, किये करता था। उसको बड़ा चीन पौष विदेशीरकका उत्तारन होना था। वह अपना सात दिन उम्र बानमें व्यतीत कर, दोनों नाम प्रद्यु श्री देवसूरि के चणोंके पास बैठ कर प्रतिब्रजन किये करता था। स्वभा-दी-ने चतुर होनेके काल उमने अगम्य और बोद्ध मन आदिके ' एतन् पतिता कि वंशोको पह हाग और एतन्पतिताको निकट रह कर उस पतिप्राप्ते दक्ष हो गया। किमी समय, की देमचंद्र मुनी-के निकट उमने, पनाभा-के काल, एतन् प्रजागमें परिपह-परिधान व्रतका नियम लेना चाहा। एतुदिक रिवाके ब्रतकार प्रद्युने परिपहमें उमके भयप केमवका मूष प्रणार होना जान कर, तीन काल इधमे अतिद इभ्य म एभनेका उमे नियम कटाया। इसके बाद, संतोष पूर्वक वह अपना व्यवहार

करने लगा। किसी अवसर पर, वह किसी गौँवको जा रहा था, तो उसने रास्तेमें बकरियोंका एक झुंड जाते देखा। उसमें एक बकराके गलेमें पापाणका एक खण्ड बन्धा देखा, जिसको रत्नपरीक्षक होनेके कारण, परीक्षा करके देखा तो वह सच्चा रत्न माळूम दिया। फिर उस रत्नके लोभसे, मूल्य दे कर उस बकराको उसने खरीद लिया। मणिकार (मणियारे) के पाससे उस रत्नको सान पर चढवा कर उसे देदीप्यमान बनवाया और फिर श्री सिद्ध राज के मुकुट बनानेके अवसर पर, एक लाख मूल्य पर राजा-हैं-को दे दिया। उसी मूल धनसे उसने एक बार बिकनेको आये हुए मंजिष्ठाके कई बोरे खरीदे और जब बेचनेके समय उन्हें खोलकर देखा तो समुद्रके चौरासे छिपानेके लिए, व्यापारियोंने उनमें सोनेकी पट्टियाँ छिपा रखी हुई माळूम दी। फिर उसने सब बोरे खोल कर उनमेंसे वे पट्टियाँ निकल लीं। इस तरह फिर वह सारे नगरमें मुख्य ऐसा सिद्ध राजका मान्य (नगर सेठ) और जिन-धर्मकी प्रभावना करने वाला [प्रसिद्ध] श्रावक हुआ। प्रति दिन, प्रति वर्ष, स्वेच्छा-नुसार जैन मुनियोंको अन्न वस्त्र आदि दिया करता और गुप्तरूपसे स्वदेश और विदेशमें नये नये धर्मस्थान बन-वाता तथा पुराने धर्मस्थानोंका जीर्णोद्धार करवाता रहा। पर किसी पर उसने अपनी प्रशस्ति नहीं लिखवाई। [कहा भी है कि]—

१६७. लतासे आच्छन्न वृक्षकी नाई और मृत्तिकासे आच्छादित बीजकी नाई प्रच्छन्न (गुप्तरूपसे) किया हुआ सुकृत कर्म प्रायः सैकड़ों शाखाओंवाला विस्तृत हो जाता है।

इस प्रकार यह वसाह आभङ्गका प्रबन्ध समाप्त हुआ।

*

सिद्धराजकी तत्त्वज्ञानसा और सर्वदर्शन प्रति समानदृष्टि।

१११) एक दूसरी बार, श्री सिद्ध राज संसार सागरको पार करनेकी इच्छासे, सर्व देशके सर्व दर्शनोंमेंसे, प्रत्येकसे देवतत्त्व, धर्मतत्त्व, और पात्रतत्त्वकी जिज्ञासासे पूछने लगा, तो माळूम हुआ कि, वे प्रत्येक अपनी स्तुति और दूसरेकी निंदा कर रहे हैं। इससे उसका मन [खूब] संदेह-दोषारूढ़ हो गया। श्री हेमाचार्यको बुला कर उनसे विचारणीय कार्यको पूँछा। आचार्यने चतुर्दश विद्याओंके रहस्यका विचार करके, इस प्रकार एक पौराणिक निर्णय कह सुनाया कि—‘ पटले ज़मानेमें किसी व्यवहारी [गृहस्थ] ने अपनी पहली परिणीत पत्नीको छोड़ कर किसी रखेलिनको अपना सर्वस्व दे दिया। इससे उसकी पूर्व पत्नी, सर्वदा ही, उसको अपने वशमें करनेके लिये अभिचार (मंत्र-तंत्र आदि) के उपाय पूछा करती। किसी गौड़ (बंगाल) देशीय [जादुगर] ने बताया कि—‘ तुम्हारे पतिको मैं ऐसा कर दूँ कि तुम उसे फिर रस्सीमें बाँधे रखो ’ ऐसा कह कर, उसने कोई एक ऐसी अचिन्त्यवीर्य औषधि ला दी और कहा कि—‘ इसे भोजनमें खिला देना ’। ऐसा कह कर वह चला गया। कुछ दिनोंके बाद जब क्षयाह (श्राद्धका दिन) आया तो उस खीने वैसा ही किया—पतिको वह औषधि खिला दी। फलस्वरूप वह (पति) साक्षात् बैल हो गया। उसका फिर कोई प्रतीकार न जान कर वह, सारी दुनियाकी शिष्टकियों सहती हुई, अपने दुश्चरितके ऊपर शोक करने लगी। एक बार [प्रीम्प फालके] दोपहरके समय, सूर्यके फटोर किरणोंसे खूब संतप्त हो कर भी, किसी शाब्द भूमिमें बड़ अपने उस पशुरूप पतिको चरा रही थी और किसी वृक्षके नीचे बैठ कर खूब निर्भर भावसे विद्यप कर रही थी। अकस्मात् उसने आकाशमें कुछ आलाप सुना। पशुपति (शिव) भवानीके साथ विमानमें बैठे हुए उस समय वहाँसे निकले। भवानोंने उसके दुःखका कारण पूछा। इस पर शिवने यह वृत्तान्त उषों का उषों कह सुनाया। फिर भवानीके आग्रह करने पर शिवने यह भी बताया कि, उसी वृक्षकी छाया में, पुरुष बननेकी औषधि है;

और वे अन्तर्धान हो गये। फिर वह स्त्री उस वृक्षकी छायाको रेखांकित करके, उसके भीतर पड़ने वाली [सभी] औपनियोंके अंकुरोंको उखाड़ उखाड़ कर वृषभके मुँहमें डालने लगी। उस अज्ञात स्वरूप औपधिके मुँहमें पड़ते ही वह बैल फिर मनुष्य हो गया। अज्ञात स्वरूप हो कर भी, औपधिने जैसे अमीष्ट कार्य किया, वैसे ही कलियुगमें मोहके कारण, वह पात्र-परिज्ञान तिरोहित होने पर भी, भक्तियुक्त हो कर सब दर्शनोंका आराधन करनेसे, अविदित स्वरूप-ही-से मुक्तिदायक हो जाता है, यह निश्चय है। इस प्रकार श्री हेमचंद्राचार्यने जब सर्व दर्शनोंके सम्मत होनेका उपदेश दिया तो श्री सिद्धराजने फिर सब धर्मोंका समान आराधन किया।

इस प्रकार यह सर्व दर्शन मान्यता प्रबंध समाप्त हुआ।

*

सिद्धराजका प्रजाजनोंके साथ उदार व्यवहार।

११२) एक दूसरी बार रातमें, राजा कर्णभेरु प्रासादमें नाटक देख रहा था। वहाँ पर कोई चना बेचने वाला एक गरीब बनिया भी चला आया और वह राजाके कन्धे पर हाथ रख कर देखने लगा। राजा उसके इस अभिनय (व्यवहार) से मनमें प्रसन्न हो रहा, और बार बार उसका दिया हुआ कर्पूर मिश्रित पानका बीड़ा आनंदके साथ लेता रहा। नाटकके निसर्जन होने पर, राजाने अनुचरोंके द्वारा उसका घर आदि अच्छी तरह जान लिया और फिर अपने महलमें आ कर सो गया। सबेरे उठ कर प्रातःहृत्य कर लेने बाद, सर्वधिसर (राजसभा) के मिलने पर, राजाने सभामंडपको अलंकृत किया और उस चना बेचने वाले बनियेको बुलाया। राजाने उससे [व्यंगमें] कहा कि—‘रातमें तुमने जो मेरे कन्धे पर हाथ रखा था उससे मेरी गर्दनमें दर्द हो रहा है’—तो उस तत्कालापन्न मति वाले (हाज़िर जवाब) बनियेने कहा कि—‘महाराज! आसमुद्र विस्तृत ऐसी पृथ्वीके भारको कन्धे पर उठा रखनेसे यदि स्वामीके कन्धेमें कोई पीड़ा नहीं होती तो मुझ समान नृण-मात्रसे निर्जीव बनियेके भारसे स्वामीके कन्धोंमें क्या पीड़ा होगी!’ उसके इस उचित उत्तरको सुन कर राजा बड़ा प्रसन्न हुआ और बदलेमें उसको इनाम दे कर विदा किया।

इस तरह यह चना बेचनेवाले बनियेका प्रबंध समाप्त हुआ।

*

लक्ष्माधिपतिको क्रोडपति बना देना।

११३) एक दूसरी रातको, राजा कर्णभेरु प्रासादसे नाटक देख कर लौट रहा था, तब [राजमार्गमें] किसी व्यवहारीके घर पर बहूत-से दीपक जलते हुए देख कर पूछा कि—‘यह क्या है?’ उसने कहा कि ये लक्ष्मप्रदीप हैं। राजाने उसको धन्य कहा और वह अपने महलमें चला गया। रात्रिको व्यतीत कर [अपने नगरमें ऐसे प्रजाजन है इस विचारसे] अपनेको धन्य मानता हुआ, सबेरे उसे राजसभामें बुला कर आदेश किया कि—‘इन प्रदीपोंको सदा जलते रहनेसे तुमको सदा ही अश्रिका भय रहता है, तो कहो कि तुमारे पास कितने लाखका धन है?’ उत्तरमें उसने निवेदन किया कि—‘वर्तमानमें चौरासी लाख है’। इस पर मनमें अनुकंपित हो कर राजाने कृपापूर्वक अपने खजानेसे १६ लाख निकाल कर दे दिया और उसके मकान पर [दीपकोंके बदले] क्रोडपति होनेका सूचक कोटिष्वज पहराया गया।

इस तरह यह पौडश्लसप्रसाद प्रबंध समाप्त हुआ।

*

सिंहपुरके ब्राह्मणोंका कर माफ करना ।

११४) एक दूसरी बार, राजाने वालाक देशकी दुर्गभूमि (पहाड़ी जमीन) में सिंहपुर नामका प्रदेश ब्राह्मणोंको रहनेके लिये दे दिया और उसके अधीन १०६ ग्राम दान कर दिये । पर वहाँ पर सिंहका डर देख कर ब्राह्मणोंने सिद्ध राजसे प्रार्थना की कि, उन्हें कहीं देशके भीतर निवास दिया जाय । इस परसे राजाने उनको साभ्रमतीके तीर परका आसंबिड़ी ग्राम दे दिया, और सिंहपुरसे धान्य लानेमें जो आते जाते कर लगता था उसे माफ कर दिया गया ।

वाराहीके पटेलोंको ब्रूचाका विरुद्ध देना ।

११५) बादमें, राजा सिद्ध राजने किसी समय, मालव देशकी यात्राके लिये प्रयाण किया । रास्तेमें वाराही ग्रामके पास जब वह आया तो उस गाँवके पटेलों (मुखियों) को बुला कर, उनकी चतुरताकी परीक्षाके लिये, अपनी एक प्रधान पालकी, उनको अपने पास धातीके रूपमें रखनेके लिये दी । राजाके आगे प्रयाण कर जाने पर उन सभीने मिल कर, उसके एक एक हिस्सेको अलग अलग कर, यथोचित रूपसे सबने अपने अपने घर पर संभालके रखा । यात्रासे लौटते समय राजाने अपनी रखी हुई उस धातीको जब उनसे माँगी, तो उन्होंने अलग अलग किये हुए उसके वे सब टुकड़े लाके दिये । यह देख कर राजाने आश्चर्यसे पूछा कि— ' यह क्या बात है ? ' तो उन्होंने विज्ञापना की कि— ' महाराज ! [हममेंसे] कोई एक आदमी तो इसकी रक्षा करनेमें समर्थ नहीं हो सकता । कभी चौर और अग्नि आदिका उपद्रव हो जाय तो फिर स्वामीके सामने कौन जवाबदेह हो— यही सोच कर हम लोगोंने यह ऐसा किया है । ' तब राजा मनमें खूब आश्चर्यचकित हुआ और उनको ' ब्रूच * ' ऐसा विरुद्ध उसने दिया ।

इस प्रकार यह वाराहीय ब्रूच प्रबंध समाप्त हुआ ।

*

उज्ज्वारके ग्रामीणोंसे वार्तालाप ।

११६) इसके बाद, एक बार राजा श्री जय सिंह देव, मालव विजय करके लौट रहे थे तब रास्तेमें पडने वाले उज्ज्वार ग्राममें खीमे डाले गये । वहाँके ग्रामीणोंने, जिनको राजा मामा कहा करता था, दूधसे भरे हुए हंडों आदिके उचित सत्कारसे राजाको सन्तुष्ट किया । उसी रातको, राजा गुप्त वेप करके उनके दुख-सुख जाननेकी इच्छासे, किसी ग्रामीणके घर पर चला गया । वह (ग्रामीण) गाय दुहने आदिके कामोंमें व्यस्त होता हुआ भी, उसने पूछा कि— ' तुम कौन हो ? ' [इत्यादि । इसके उत्तरमें उसने] कहा कि— ' मैं श्री सोमेश्वरका कार्पाटिक (यात्री) हूँ; महा राष्ट्र देशका रहने वाला हूँ । ' उसने फिर उससे महा राष्ट्र देश और उसके राजाके गुण-दोष आदि पूछे । उसने वहाँके राजाके ९६ गुणोंकी प्रशंसा करते हुए, उस ग्रामीणसे गूर्जर देशके राजाके गुण-दोष पूछे । इस पर वह श्री सिद्ध राजके प्रजा-पालन-दक्षत्व और सेवकों पर अनुपम प्रेम इत्यादि गुणोंका वर्णन करने लगा । तब बीचमें उसने राजाका कोई कृत्रिम दोष बताना चाहा, तो वह आँसू गिराता हुआ बोला कि— ' हम लोगोंके मंद भाग्यसे राजाको कोई पुत्र नहीं है और यही उसमें एक दोष है ' । इस प्रकार निष्फट भावसे उसने उससे सब कह कर उसे संतुष्ट किया । फिर प्रभात कालमें सब लोक मिल कर राजाके

* यह 'ब्रूच' कोई देशय शब्द है । हिंदीमें इसके जैसा ब्रूचा शब्द है जिसका अर्थ ' कानकटा हुआ ' ऐसा होता है । इन पटेलोंने राजाकी पालकीके अंग-प्रत्यंग काट डाले थे इस लिए इनको 'ब्रूचा' कहा गया प्रतीत होता है । गुजरातीमें ब्रूचाका अर्थ मोला—मुग्य ऐसा भी होता है । इसके राजाने उनके इस मोलेनको देख कर उन्हें 'ब्रूचा' ऐसा सम्बोधन किया हो ।

दर्शनके लिये उर्कठित हो कर उसके निवासस्थानमें गये और राजाको प्रणामादि करके उसके अनुपम ऐसे पलंग पर ही बैठ गये । आसन देनेके लिये निपुक्त नोकरोंने उनको अलग आसन पर बैठनेको कहा तो वे लोग अपने हाथोंसे उस पलंगकी कोमल शय्याका स्पर्श करते हुए [भोले भावसे] ' हम लोग यहीं बड़े आरामसे बैठे हैं '—ऐसा कहते हुए वहीं बैठ रहे । [यह देख कर] राजाका मुख मुसुराहटसे कमलकी भाँति खिल उठा ।

इस प्रकार उञ्जावासी ग्रामीणोंका यह प्रबंध समाप्त हुआ ।

*

झाला सामंत भौंगुकी शूरताका वर्णन ।

११७) किसी समय, झाला जाति का माङ्गु नामक क्षत्रिय श्री सिद्धराजकी सेनाके लिये समामें आया करता था । वह रोज़ ही दो पराचीं (लोहेकी भारी कुसी) जमीनमें गाड़ कर बैठता और फिर उन दोनोंको उखाड़ कर ऊठता । उसके भोजनमें घीसे भरा एक कुतुप (कुडवा—वी तेल भरनेका घड़ेके जैसा चमड़ेका भाजन) खर्च होता था । घी लगी हुई उसकी दाढ़ीके धोने पर भी उसमें सोलहवाँ हिस्सा घी बच जाता था । किसी समय उसके शरीरमें रोग होने पर, पथ्यके लिये यवागू (जौकी पतली मॉड) खानेको वैद्यने कहा तो, वह ५ माणक (करीब ४ शेर कच्चे नाप जितनी) खा गया । इस पर वैद्यने डॉट कर कहा कि आधा भोजन कर लेने पर बीचमें अमृतोदक क्यों नहीं पिया ? ' क्यों कि कहा है कि—

१६८. जब तक सूर्योदय न हो जाय तब तक एक हजार घड़ा मी पानी पिया जा सकता है, पर जब सूर्योदय हो जाता है तो फिर एक बूँद भी एक घड़ेके बराबर हो जाता है ।

रातकी पिछली चार घड़ीमें, सूर्योदय न होने तक, जो जल पिया जाता है—जो जल प्रयोग किया जाता है—उसे यज्ञोदक कहते हैं (वह अमृतोदक भी कहलाता है) । सूर्योदय हो जाने पर बिना अन्न खाये, जो पानी पिया जाता है, वह निप है । इस लिये एक बूँद भी वह पानी सी घड़ोंके बराबर हो जाता है । आधा भोजन करने पर, बीचमें जो जल पिया जाता है वह अमृत कहलाता है, और भोजनान्तमें तत्काल पिया जाता हुआ जल छत्र या छत्रोदक कहलाता है । उस भौंगुने, यह सुन कर कहा कि—' यदि ऐसा है, तो पहले जो अन्न खाया है उसे आधा आहार कल्पना कर लिया जाय, और इस समय अब पानी पी कर फिर उतना ही आहार और कर लें ! ' ऐसा कह कर वह फिर खानेकी तैयारी करने लगा, लेकिन वैद्यने उसे वैसा करनेसे रोक दिया ।

किसी समय राजाने उसके निःशस्त्र रहनेका कारण पूछा । उसने कहा कि—' मेरा हथियार तो समयोचित होता है ' । फिर एक बार उसके स्नान करते समय, किसी महावत द्वारा चलाये हुए हाथीको अपने ऊपर आता देख, नजदीकमें रहे हुए कुत्तेको पकड़ कर उसकी सूंड पर फेंक मारा । मर्मस्थान पर चोट लगनेके कारण निपीडित ऐसे उस हाथीको खींचा, तो उसके अतुल बलसे वह हाथी भीतर-ही-भीतर नसोंमेंसे टूट गया और उस महावतके नीचे उतरने पर, वह जमीन पर गिरते ही प्राणोंसे मुक्त हो गया । गूर्जर देश पर आयी हुई म्लेच्छोंकी सेनाको देख कर राजाके पलायन कर जाने पर, वह अपनी इच्छासे उस सेनाका उच्छेद करता हुआ, युद्धमें जिस स्थान पर मारा गया, उस जगहकी, पत्तन में अब भी ' माङ्गुस्थण्डिल ' के नामसे प्रसिद्धि चल आ रही है ।

इस प्रकार यह भौंगु प्रबंध समाप्त हुआ ।

*

सिद्धराजकी सभामें म्लेच्छराजके दूतोंका आगमन ।

११८) एक दूसरी बार, म्लेच्छराजके प्रधानोंके आने पर, मध्यदेशसे आये हुए वेपकारोंको बुला कर कुछ रहस्य दिखलानेका आदेश दे कर विसर्जित किया । इसके बाद दूसरे दिन, सायंकाल, प्रलय कालके समान प्रचण्ड पवनके आने पर, राजा सुधर्मा सभाके समान राजसभामें सिंहासन पर बैठ कर जो देखता है, तो अन्तरीक्षसे दो राक्षस उतर रहे हैं—जिनके मस्तक पर सोनेकी दो ईंटें रखी हुई हैं और जो सुवर्ण जैसी कान्ति धारण कर रहे हैं । उन्हें देख कर सारी सभा भयसे भ्रांत हो उठी । इसके बाद, उन्होंने राजाके चरणपिठ पर वह उपहार रख दिया और फिर पृथ्वीतल पर छुटित होते हुए, प्रणाम करके कहा कि—‘ आज लंका नगरीमें महाराजाधिराज विभीषणने देवपूजा करते समय राज्यस्थापनाचार्य रघुकुल-तिलक श्री रामचन्द्रके उत्तम गुणप्रामाण्यको स्मरण करते हुए, ज्ञानमय दृष्टिसे जाना कि— आजकल उनके स्वामी (रामचन्द्र) चौलुक्यकुल तिलक श्री सिद्धराजके रूपमें अवतीर्ण हुए हैं । इस लिये उन्होंने यह (सन्देश) कह कर हम दोनोंको भेजा है कि— ‘ मैं प्रभुको प्रणाम करनेके लिये अत्यन्त उत्कण्ठित मनवाला हो रहा हूँ, सो क्या मैं ही वहाँ प्रणाम करनेको उपस्थित होऊँ या प्रभु ही यहाँ आ कर मुझे अनुगृहीत करेंगे ?— इसका निर्णय महाराज स्वयं अपने श्रीमुखसे करें । ’ उनकी यह बात सुन कर, राजाने मन-ही-मन कुछ सोच कर उनसे इस प्रकार कहा— ‘ प्रपुत्र आनन्द लक्ष्मीसे प्रेरित हो कर मैं ही खुद अपने अनुकूल समय पर, विभीषणसे मिलने आ जाऊँगा । ’ ऐसा कह कर, अपने कण्ठका शृंगारभूत ऐसा एकावली हार उनको प्रत्युपहारके रूपमें दे दिया । जाते समय ‘ प्रभुके अन्य दूत पठानेके अवसर पर, हमें भुला न दें ’ इस प्रकारकी विशेष विज्ञप्ति करके अन्तरीक्ष मार्गसे वे दोनों राक्षस तिरोहित हो गये । उसी समय वे म्लेच्छोंके प्रधान पुरुष बुलाये गये तो, भयभीत हो कर अपना पौरुष छोड़, राजाके सामने आ कर उपस्थित हुए और मत्किमुक्त वचन कह कर राजाको खुश करने लगे । राजाने फिर उनके राजाके लिये उचित भेट दे कर उनको विदा किया ।

इस प्रकार यह म्लेच्छागमनिपेथ प्रबंध समाप्त हुआ ।

*

सिद्धराजका कोल्हापुरके राजाको चमत्कारके भ्रममें डालना ।

११९) बादमें, किसी समय, कोल्हापुर नगरके राजाकी सभामें बन्दिनों श्री सिद्धराजकी कीर्तिका गान किया । उस राजाने कहा कि— ‘ सिद्धराज को हम ऐसा तब मानेंगे जब हमें भी कोई वह प्रत्यक्ष चमत्कार दिखायेगा । ’ राजाने इस कथनसे पराभूत हो कर, उन्होंने सिद्धराजको यह वृत्तांत कह सुनाया । इस पर राजाने जब सभामें नजर फिरोई तो उसके मनकी बात समझने वाले किसी सेवकने हाथ जोड़ कर अपना अभिप्राय प्रकट किया । राजाने उसे एकान्तमें बुला कर उसका कारण पूछा । उसने राजाके आशयको कह बतलाया और विशेषमें कहा कि— ‘ तीन लाखके व्ययसे यह काम सिद्ध होने योग्य है । ’ फिर उसी समय, ज्योतिषीके बताये हुए मुहूर्तमें राजासे तीन लाख ले कर, वह व्यापारी बनिया बन कर सब प्रकारके मालका संग्रह करके, सिद्धके संकेत चिह्न घाली तल जड़ी हुई दो सोनेकी खड़ाऊँ, एक अनुलनीय योगदण्ड, दो मणिके बने हुए कुण्डल, उसी प्रकारके योगका सूचक योगपट, तथा सूर्यकी किरणोंके जैसा चमकदार एक चन्द्रातक उसने सायमें लिया, और रास्ता ते करके कुछ दिनोंमें वहाँ (कोल्हापुर) जा कर डेरा टाठा । समीपस्थ दीपावलीकी रातको, उस नगरके राजाकी रानियों महादम्नी देवीकी पूजाके टिए आकुल-व्याकुल हो कर देवोंके मन्दिरमें जब आई, तो वह बना हुआ सिद्ध पुरुष, उसी सिद्धनेपसे अटंकृत हो कर और सब अच्छी तरह कूरना सीखे हुए किसी बर्बर जातिके

मनुष्यको साथ ले कर, अकस्मात् उस देवीके मंदिरमें प्रादुर्भूत हुआ। उसने देवीकी रत्न, सुवर्ण और कर्पूरसे पूजा अर्चा की और उस राजाकी रानियोंको उसी प्रकारके उत्तम पानके बाँड़े दिये। फिर श्री सिद्धराज का नामांकित वह सिद्धवेप पूजाके बहाने वहीं रख कर, उसी बर्बरके कंधेपर चढ़कर, उड़ता हुआसा जैसे आया था वैसे ही चला गया। रातके अन्तमें रानियोंने उस विरोधी राजाको वह वृत्तान्त कह सुनाया तो, भयभ्रान्त हो कर उसने, उस उपहारको, अपने प्रधान पुरुषोंके द्वारा सिद्धराजके पास पहुँचा दिया। इधर उस सेवकने अपने मालके क्रय-विक्रयका संकोच करके शीघ्रगामी पुरुषके साथ यह खबर भिजवा दी कि—‘जब तक मैं न आऊँ तब तक इन प्रधान पुरुषोंको दर्शन न दीजियेगा।’ फिर ह्ययं जल्दी जल्दी चल कर कुछ ही दिनोंमें वहाँ पहुँच गया। उसके अपने कियेका पूरा वर्णन करने पर, राजाने उन प्रधानोंका यथोचित स्वागतादि किया।

इस प्रकार यह कोल्हापुर प्रबंध समाप्त हुआ।

*

कौतुकी सीलणकी वाक्चातुरी।

१२०) श्री सिद्धराज, मालवमें डलसे यशोवर्मा राजाको जब बाँध छाया, तब उसके निमित्त किये जाने वाले उत्सव पर सीलण नामक कौतुकीने कहा कि—‘अदो बेडा (नाव) में समुद्र डूब गया।’ तब उसके पीछे स्थित किसी गायन (गान करनेवाले) ने ‘तुम अपशब्द कह रहे हो’—ऐसा कह कर उसकी तर्जना की। तब उसने अर्थापत्तिसे इस प्रकार विरोधाळङ्कारका परिहार करके बताया कि—‘बेडाके समान इस गूर्जर भूमिमें समुद्र जैसा यह मालव-नरेश डूब गया।’ [इस पर उसने] राजासे सोनेकी जीभ प्राप्त की।

इस प्रकार यह कौतुकी सीलणका प्रबंध समाप्त हुआ।

*

काशीपति जयचन्द्रकी सभामें सिद्धराजके दूतकी वाक्पटुता

१२१) किसी समय, सिद्धराजके एक वाचाळ साधिविप्रहिक (दूत) से काशीके राजा जयचंद्रने अणहिल्लपुरके प्रासाद, प्रपा (बावड़ी) और निपान (कूप) आदिका स्वरूप पूछते समय [उसकी विशेष शोभा सुन कर, ईर्ष्यावश राजाने] यह दोष बताया कि—‘सहस्रलिंग सरोवरका जल शिव-निर्माल्य होनेके कारण अस्पृश्य है। उसका सेवन करने वाले दोनों लोकसे विरुद्ध व्यवहार करते हैं। अतः वहाँके लोग, उदित प्रभाव वाले कैसे हों? सिद्धराजने सहस्रलिंग सरोवर बना कर यह अनुचित कार्य किया है।’ राजाकी इस बातसे मन-ही-मन कुपित हो कर उसने राजासे पूछा कि—[आपकी] ‘इस वाराणसीमें कहाँका जल पिया जाता है?’ राजाके ‘गंगाजल’ ऐसा कहने पर उसने कहा—‘क्या गंगाजल शिव-निर्माल्य नहीं है तो और क्या है? शिवका सिर ही तो गंगाकी निवास-भूमि है।’

इस प्रकार जयचंद्र राजाके साथ गूर्जरके प्रधानकी उक्तिप्रत्युक्तिका प्रबंध समाप्त हुआ।

*

मयणल्लादेवीके पिताकी मृत्युवार्ता।

१२२) किसी समय, कर्णाट देशसे आये हुए साधिविप्रहिकसे मयणल्लादेवीने अपने पिता जयकेशीका कुशल समाचार पूछा तो उसने अश्रुपूर्ण आँखोंसे कहा कि—‘स्वामिनि, प्रहयातनामा महाराज श्री जयकेशी भोजनके समय पित्रसे तोतेकी बुला रहे थे। उसके ‘मार्जार’ (बिल्ली) बैठी है, ऐसा कहने पर, राजाने चारों ओर देख कर—किंतु अपने भोजनके पात्रके [चौकाँके] नीचे छिपे हुए मार्जारको न देख कर—

प्रतिज्ञा पूर्वक बोल उठे कि—‘ यदि बिल्लीके हाथ तुम्हारी मृत्यु होगी तो मैं भी तुम्हारे ही साथ मरूंगा ’। वह तोता त्यों ही पिंजड़ेसे उड़ कर उस सोनेके थाल पर आ कर बैठा त्यों ही उस बिल्लीने [लपक कर] भेड़िये जैसे दौंतेसे उसे मार डाला । राजाने उसे मरा देख कर भोजनका प्रास छोड़ दिया, और उक्ति-प्रत्युक्ति जानने वाले राजपुरुषोंके [बहुत कुछ] निषेध करने पर भी कहा—

१६९. राज्य चला जाय, श्री चली जाय, और क्षणभरमें प्राण भी भले ही चले जाँय, किन्तु जो बात मैंने स्वयं कही है वह शाश्वती वाणी न जाय ।

इस प्रकार इष्ट देवताकी भाँति इसी वाणीका जाप करता हुआ, काष्ठकी चिता बनवा कर, उस तोतेको साथ ले, उसमें प्रवेश कर गया । इस वाक्यको सुन कर मयणल्ला देवी शोकसागरमें डूब गई । विद्वज्जनोंने विशेष प्रकारके धर्मोपदेशरूपी हस्तावलंबन दे कर उसका उद्धार किया ।

*

पिताके पुण्यार्थं मयणल्लादेवीका सोमेश्वरीकी यात्रा करना ।

१२३) बादमें, पिताके कल्याणार्थं श्री सोमेश्वरपत्तन की यात्राको वह गई, और वहाँ उस सतीने किसी त्रिवेदी ब्राह्मणको बुला कर उसे जलाञ्जलि देना चाहा । उसने अञ्जलिमें जल ले कर कहा कि—‘ यदि तीन जन्मका पाप देना मंजूर करो तो मैं यह लूँगा, नहीं तो नहीं । ’ उसकी इस बातसे अत्यन्त सन्तुष्ट हो कर, हाथी, घोड़ा, सोना आदिके दानके साथ, उसे पापघटका दान किया । उसने वह सब अन्य ब्राह्मणोंको दे दिया । देवीके यह पूँछने पर कि ‘ ऐसा क्यों किया ? ’; बोला कि—‘ पूर्व जन्मकी पुण्य-वृद्धिके कारण तो आप इस जन्ममें राजरानी और राजमाता हुई हैं । और फिर इन लोकोत्तर दानोंके पुण्यसे भविष्य जन्म भी श्रेयस्कर ही होगा । यहाँ सोच कर मैंने तीन जन्मका पाप ग्रहण किया है । आपने जो इस पापघटके दानका उपक्रम किया है, इसे तो कोई अधम ब्राह्मण ले कर खुदको और आपको भी भव-सागरमें डूवो दे । मैंने तो पहले ही सब धनका त्याग कर दिया है और फिर इस धनको ले कर भी दान कर दिया है, इस लिये जो मैंने त्याग किया उससे आठ गुना अधिक श्रेयः संग्रह किया है ।

इस प्रकार यह पापघटका प्रबंध समाप्त हुआ ।

*

सान्त् मंत्रीकी बुद्धिमत्ताका एक प्रसंग ।

१२४) किसी समय, माछ व मण्डलसे विग्रह करके स्वदेशको लौटते समय सिद्धराज को माझम हुआ कि [गुजरात और माछवेके मध्यमें बसनेवाले] अनुपम बलशाही भिड़ोंने उसका रास्ता घेर लिया है । सान्त् मंत्रीको [पत्तनमें] इसके समाचार मिले, तो उसने प्रति प्राम और प्रति नगरसे घोड़े इकट्ठे किये, और प्रत्येक बैलको मी पलानसे सज्ज करके बड़ा भारी दलबल इकट्ठा किया । फिर उस दलके बलसे भिड़ोंको प्राप्त कर सिद्धराज को सुखपूर्वक स्वदेशमें ले आया ।

इस प्रकार सान्त् मंत्रीकी बुद्धिका यह प्रबंध समाप्त हुआ ।

*

सिद्धराजके एक सेवकके भाग्यका वृत्तांत ।

१२५) किसी एक रातको दो बुद्धिमान मृत्यु श्री सिद्धराजके पैर दबा रहे थे । उनमेंसे एकने, राजाको नींदके कारण आँखें बंद किया हुआ समझ कर, उसकी प्रशंसा करते कहा कि—‘ महाराज सिद्धराज वृथा और कोपमें [एकसे] समर्थ, सेवकोंके लिये कल्पवृक्ष और राजोचित सनी गुणोंके आलय हैं । दूसरेने, राजाके इस

महान् राज्यका कारण भी प्राक्तन कर्म को बता कर [कर्म ही की] प्रशंसा की । राजाने इस वृत्तान्तको सुन कर कर्मकी प्रशंसाको विफल करनेके विचारसे, प्रशंसा कानेवाले चाकरको एक दिन, उसे कुछ भी रहस्य न जता कर, यह प्रसाद-लेख दे कर महामंत्री सान्त्तिके पास भेजा कि—‘ इस चाकरको एक सौ घोड़ेका सामंत बना दिया जाय ’ । वह चाकर इस लेखको ले कर जब चंद्रशालाकी सीढ़ियोंसे नीचे उतर रहा था, तब पैर फिसल जानेसे गिर गया और उसका अंग भंग हो गया । उसीके पीछे चले आने वाले दूसरे चाकरने पूछा कि—‘ यह क्या बात है ? ’ तो उसने अपनी बात बताई । वह तो फिर खाटमें बैठ कर अपने घर गया और उस दूसरे [अपने साथी] को वह राजाका लेख दे कर मंत्रीके पास जानेको कहा । मंत्रीने उस लेखमें की गई आज्ञानुसार उस चाकरको सौ घुड़सवारों वाला सामंतपद प्रदान किया । यह सब बात सुन कर राजाने भी कर्मको ही बलवान माना ।

१७०. न तो आकृति, न कुल, न शील, न विद्या और न मनुष्योंकी की हुई सेवा कुछ फल देती है ।

पूर्व जन्ममें तपस्यासे संचित किये हुए पुण्य कर्म ही मनुष्यको समय पा कर वृक्षोंकी तरह फल देते हैं ।

इस तरह यह वृष्टकर्म प्राधान्य-प्रबंध समाप्त हुआ ।

*

सिद्धराजकी स्तुतिके कुछ फुटकर पद्य ।

१७१. तीन भुवनके बीचमें यह जेसल (जयसिंह-सिद्धराज) राजा [एक बड़ा] कूट बरुड * है जिसने अनेक राजवंशोंका छेदन कर [अपना] एक छत्र [राज्य] बनाया है । इसकी जय हो ।

१७२. महालय, महा-यात्रा महास्थान और महासरोवर, § जैसे सिद्धराजने किये वैसे किसीने नहीं किये ।

१७३. जिगीयु जन (एक अर्थ—गानेकी इच्छा रखने वाले; दूसरा अर्थ—विजयकी इच्छा रखने वाले) एक मात्राका भी अधिक होना सह नहीं सकते, मारों इसी लिये हे धरानाय (पृथ्वीनाथ) ! तुमने धारानाय (धारानगरके नाथ) को नष्ट किया है । [क्यों कि ‘ धरानाय ’ की अपेक्षा ‘ धारा-नाथ ’ में एक मात्रा अधिक है]

१७४. हे सरस्वती, मान छोड़ दो; हे गंगा, तुम भी अपने सोहागकी मंगीको छोड़ो; अरी यमुने, अब तेरी कुटिलता बृथा है; रे रेवा, तू बेगको छोड़ दे; क्यों कि अब समुद्र, श्री सिद्धराजके कृपाणसे कटे हुए शत्रुसंघोंसे उलटने वाली रक्तकी धारासे बनी हुई नदीरूपी नवीन बहते रक्त (१ लाख वर्ष, २ अनुरक्त—प्रेमी) हो गया है ।

१७५. हे विजयी राजाओंमें सिंह (जयसिंह) महाराज, सचमुच ही तुम्हारे जय-यात्राके समय, हाथियोंके कारण जलाशयोंके सूख जानेकी चिंतासे; वीरोंके धावकी आकाशासे; तथा, अपने पतियोंके विनाशकी आर्दाकासे; क्रमशः मछली रोती है, मक्खी हँसती है, और स्त्रियाँ अशुभका ध्यान करती हैं ।

* बरुड या बरड उस जातिका नाम है जो बौंसको चीर-छोल कर उसके टोकरी, बरडक और छाता आदि बनाये करते हैं । कहीं कहीं ‘ गंल ’ भी इनको कहा है । इस पद्यमें, राजवय और छन ये शब्द श्लेषात्मक हैं ।

§ इस पद्यमें सिद्धराजके ४ महाकार्य बतलाये गये हैं—जिनमें महालयसे तो सिद्धपुरके स्तम्भहालयका सूचन होता है । महायात्रासे बहुत करके सोमेश्वर तीर्थकी की हुई बड़ी यात्राका सूचन होता है । किसीके खयालसे सिद्धराजने जो मालवे पर विजय प्राप्त किया था उस विजययात्राका इसमें सूचन किया गया है । महासरोवरसे पाटनके खड्गकिंग खरोवरका निर्देश किया गया है । ४ ये महास्थानसे किस वस्तुका सूचन होता है यह ठीक ठाव नहीं होता । कहते हैं कि सिद्धराजने कई बड़े बड़े किले भी बनाये थे और कई बड़े स्थान भी बसाये थे । संभव है उन्हींमेंसे किसीका कोई सूचन इसमें किया गया हो ।

१७६. हे सिद्धराज, नत हो जाने पर तो तुमने आनाक भूपकी अनेक लाखोंके साथ सपादलक्ष [जैसा देश] भी दे दिया और दस ऐसे यशोवर्माके पास मालव (मालवा देश; श्लेषार्थ मा=लक्ष्मीका लव=लेशमात्र) का होना भी तुमने सहन नहीं किया ।

इत्यादि बहुतसी स्तुतिपां और प्रबंध उसके बारेमें हैं जो [प्रत्यान्तरोंसे] जानने योग्य हैं ।

सं० ११५० से ले कर [११९९ तक] ४९ वर्ष तक श्रीसिद्धराज जयसिंह देवने राज्य किया ।

*

इस प्रकार श्रीमेरुतुह्लाचार्यके बनाये हुए प्रबंध चिन्तामणिमें श्री कर्ण और श्रीसिद्धराजका चरित्र वर्णन नामक यह तीसरा प्रकाश समाप्त हुआ ।

यहाँ पर P प्रतिमें निम्नलिखित श्लोक अधिक पाये जाते हैं । ये श्लोक सोमेश्वरदेव रचित कीर्तिकौमुदीके हैं और इनमें संक्षेपमें सिद्धराजके जीवनके महत्त्वके सभी वीर कार्योंका सूचन किया गया है—

[१०६] जिसने, बालक होते हुए भी, इंद्रकी वीरवृत्तिकी भी लांच जाने वाले अपने कोपके प्रभावसे दुष्ट राजाओंको आज्ञाधीन बनाया ।

[१०७] अपार पौरुषके उद्गारवाले सीराष्ट्रीय खंगारको भी, जिस गुरुमत्सरने युद्धमें इस प्रकार पीस डाला, जैसे सिंह हाथीको पीसता है ।

[१०८] जिसने रामचंद्रकी तरह असंख्य घोड़ोंकी सेना ले कर और अनेक राजाओंको नष्ट करके (रामके पक्षमें—पर्वतोंको उखाड़ कर) सिन्धुपतिकी (सिद्धराजके पक्षमें—सिन्धुराज नामका राजा, रामके पक्षमें सिन्धु=समुद्र) बाँध लिया ।

[१०९] मनमें अमर्षकरके विपक्षीय उर्वाभृत् (एक अर्थ—पर्वत, दूसरा—राजा) के उन्नत होने पर, जिसने अगस्त्य मुनिकी भोति, शीर्ष ही अर्णोराज (एक अर्थ—समुद्र; दूसरा—शाकंभरीका चाहमान राजा) को शुष्क कर डाला ।

[११०] विष्णुने तो अर्णोराज (समुद्र) की पुत्री ले ली थी, किन्तु इसने तो अर्णोराजको अपनी पुत्री दे दी* । विष्णु और इस सिद्धराजमें एक यही अंतर है ।

[१११] शत्रुओंके कटे हुए सिर देख कर शाकंभरीके ईशने भी शंकित हो कर इसके चरणोंमें अपना सिर झुका दिया ।

[११२] स्वयं अर्षत लक्ष्मीवान् और अपरमार (दूसरोंको न मारनेवाला) हो कर भी युद्धमें जिसने मालवत्वामी (एक अर्थ—मालव देशका राजा, दूसरा श्लेषार्थ—लक्ष्मीका किंचित् मौका) परमारको मार डाला ।

[११३] जिसने धारा-नरेशको राज-शुक्रकी तरह काष्ठ-पञ्जर (काठके पिंजरे) में रख कर अपनी कीर्तिरूपी राजहंसीको काष्ठ-पञ्जर (दिक्कक्रवाड) में छोड़ दिया ।

[११४] जिसने नरवर्मा राजाकी तो केवल एक ही नगरी जो धारा थी वह ले ली, पर उसकी वधुओंको [बढ़लेमें] हजारों अश्रु-धारापे दे दी ।

● शाकंभरी (अश्वमेध) के चारमान राजा अर्णोराजके, त्रिभुजा देव्य नाम आनाक या आना पा, सिद्धराजके युद्ध करके परले वो अपना आज्ञाधीन राजा बनाया और फिर पीछे उसको अपनी पुत्री म्भार ली थी । इन्हींका एवम एव पद्यमें हैं ।

- [११५] धारा-भंगके प्रसंगको देख कर, जिसके समीप आनेकी ही आशंकासे, प्राचूर्यकके बहाने जिसको महोदय राजने दण्ड दिया ।
- [११६] जिस शत्रुने, अमृतकी भौति, इसकी पृथ्वीके लेनेकी इच्छा की, उसीको तरवारसे उल्लसित इसके बाहुने राहु बना दिया (अर्थात् राहुके समान उसे सिरकटा बना दिया) ।
- [११७] लोगोंने तो इसको कुमार (कार्तिकेय) की ही तरह शक्तिमान् अपना स्वामी माना था, लेकिन यह तो ताम्रचूडध्वज * था और वह केकिष्वज * था (यही इनमें अंतर था) ।
- [११८] ऐसा कोई राजा नहीं था, जिसको विश्वके इस एकमात्र वीरने जीता न हो; और ऐसी कोई दिशा न थी जो इसके पशसे शोभित न हुई हो ।
- [११९] गणेशकी तरह जिस अप्रपुत्र और वृषस्थितिको, मोदककी तरह, गौड राजा † आर्य्यसार और करार्थ हो गया ।
- [१२०] स्मशानमें बर्बर नामक राक्षसेन्द्रको बँध करके राजाओंकी श्रेणीमें जो राजचंद्र सिद्धराज हो गया ।
- [१२१] जिसने, लड़ाईसे ऊठी हुई घूँसे पहले जिस आकाशको मलिन कर दिया था, उसने पीछेसे उसी आकाशको अपनी कीर्तिलहरासे धो कर उज्ज्वल कर दिया ।
- [१२२] उस पृथ्वी मंडलके सूर्यके लोकान्तर होने पर चन्द्रसमान श्रीमान् राजा, कुमार पाठने प्रजाका रक्षण किया ।

● विद्वराजके चक्रमें ताम्रचूड याने कुकुटका चिह्न था इस लिये वह ताम्रचूडध्वज कहलाया था । कुमार (कार्तिकेय) के चक्रमें केही अर्थात् मयूरका चिह्न था । मयूरकी अनेक कुकुट अधिक बन्द्यान् होता है, इस लिये कुमारसे भी अधिक विद्वराजका शक्तिमान् होना इस पद्यमें ध्वनित किया गया है ।

१. गौडके पद्यमें—आगे है हाथीकी तरह शिवके; राजके पद्यमें आगे है बाण शिवके । २. गणेशके पद्यमें—मयूरकर है सिंधि शिवकी; राजके पद्यमें धर्मर है सिंधि शिवकी । ३. मोदकके अर्थमें आर्य्य=पुत्रारवाण, राजके अर्थमें=मुदकाराज । ४. मोदकके अर्थमें कर=हाथमें रखा हुआ; राजके अर्थमें कर=दण्ड देनेवाण ।

† गौड=वंग देशका राजा विद्वराजके कर देने बाज बना यह अर्थ इस पद्यमें ध्वनित किया गया है ।

१. कुमारपालादि प्रबन्ध ।

कुमारपालके पूर्वजादि ।

१२६) अब परम आर्हत श्री कुमारपालका प्रबंध प्रारंभ किया जाता है—अणहिल्लपुर नगरमें जब कि महाराज बड़े भीमदेव राज्य-शासन कर रहे थे, उस समय श्री भीमेश्वरके नगरमें (अर्थात् पत्तनमें) वकुलादेवी^१ नामकी एक वेद्या रहती थी जो नगर प्रसिद्ध रूप और गुणकी पात्र थी। कुलवधूओंसे भी उसकी अधिक शीलमर्यादा कही जाती थी। राजाने यह सुना तो उसकी परीक्षा लेनेके विचारसे उसे अपने अनुचरोंके द्वारा सवाटाख कीमतकी एक कठारी, अपनी रक्षिता बनानेके इरादेसे, इनामके तीर पर भिजवाई। [कार्यान्तरकी] उत्सुकता बश राजाने उसी रातको बाहर जा कर प्रस्थान (यात्राके) लक्ष्यको सिद्ध किया। विप्रह (युद्ध) के निमित्त दो वर्ष तक उसको मावळ देशमें रहना पड़ा। पर वह वकुलादेवी, उसके भेजे हुए उक्त इनामके अनुसार, अन्य सब पुरुषोंको छोड़ कर शील आचारका पालन करती रही। निस्सीम पराक्रमशाली भीमने तृतीय वर्षमें अपने स्थान पर आ कर जनपं परासे उसकी इस प्रवृत्तिको सुन कर उसे अपने अन्तःपुरमें दाखिल कर लिया। उसको एक पुत्र हुआ जिसका नाम हरिपाल देव था। उसका पुत्र त्रिभुवनपाल देव हुआ और उसका पुत्र श्री कुमारपाल देव। वह जब धर्मका जानने वाला न था तब भी कृपालु और परस्त्रियोंका भाई बना हुआ था। सिद्धराज से सामुद्रिक जानने वालोंने कहा था कि—‘आपके बाद यही राजा होगा’। इससे वह उसे हीन जातीय मान कर, उसके प्रति असहिष्णु बन, सदा उसके विनाशका अवसर खोज करता। वह कुमारपाल इस बातको कुछ कुछ समझ कर, राजासे मनमें शंकित बना हुआ, तापसवेष धारण कर, नाना प्रकारसे, देशान्तरोंमें भ्रमण करता रहा। कुछ साल इस तरह बिता कर फिर नगरमें आया और किसी मठमें ठहरा।

*

सिद्धराजके भयसे कुमारपालका मारे मारे फिरना ।

१२७) इसके अनन्तर, श्री कर्णदेवके श्राद्धके अवसर पर श्रद्धालु सिद्धराजने सब तपस्वियोंको [भोजनके लिये] निमंत्रित किया। उनमेंसे प्रत्येकके पैर धोते समय, कुमारपाल नामक तपस्वीके भी कोमल चरणतलको हार्थसे स्पर्श करता हुआ, उसमेंकी ऊर्ध्व रेखा आदि चिन्होंसे उसने जाना कि—‘यही वह राजा होने योग्य है’—और इस लिये निश्चल दृष्टिसे उसे देखता रहा। उसकी इस चेष्टासे [अपने प्रति] उसे विरुद्ध समझ कर, उसी समय वेष बदल करके, कौथेकी भौंति, वह अदृश्य हो गया; और आलिग नामक कुम्हारके घरमें जा छिपा। वहाँ मिट्टीके बर्तन पकानेके लिये आवाँ बनाया जा रहा था, उसीमें कुम्हारने छिपा कर, पीछा करने वाले राजपुरुषोंसे उसे बचाया। फिर वहाँसे धीरे धीरे आगे चला तो, उसने खोजनेके लिये आये हुए राजपुरुषोंको सामने देखा। उससे शशित हो कर, नजदीकमें कोई दुर्गम ऐसी छिपने लायक भूमिको न पा कर किसीएक खेतमें जा खड़ा हुआ। वहाँ पर, खेतके रखवालोंने, खेतकी रक्षाके लिये कांटेदार वृक्षोंकी डालियों काट कर जो इकट्ठी कर रखी थी, उन्हींके बीचमें उसे छिपा दिया और वे अपनी जगह पर आ कर बैठ गये।

१ इसके नाममें कुछ पाठभेद मिलता है—किसी प्रतिमें ‘चउल देवी’ ऐसा भी पढ़ा जाता है—परन्तु वर ‘ब’ और ‘च’ के बीचमें जिनके बालोंके भ्रमके कारण हुआ मान्य देता है। ‘बहुलदेवी’ का अरभ्य उच्चार ‘बउलदेवी’ होता है और ‘ब’ की जगह ‘च’ पढ़नेसे ‘चउलदेवी’ नाम बन गया मान्य देता है। अधिकतर प्रतियोंमें ‘बहुलदेवी’ नाम ही मिलता है और यही शुद्ध प्रतीत होता है।

राजाके आदमी पैरोके चिह्नके अनुसार वहाँ पहुँचे, परन्तु उसका वहाँ पाना असंभव जान कर और भालेकी नोकको उसमें खोंच कर देखने पर भी कुछ न मालूम कर, वे वहाँसे वापस लौट गये। दूसरे दिन खेतवालोंने उस स्थानसे उसे बहार निकाला। वह सधैरे ही वहाँसे आगे चलता हुआ एक वृक्षकी छायामें बैठ कर विश्राम लेने लगा, तो क्या देखता है कि, एक चूहा निमृत्तभायसे त्रिउमसे चाँदीका सिक्का बाहर ला कर रख रहा है। जब वह इस प्रकार इक्कीस सिक्के निकाल चुका, तो उनमेंसे फिर एक वापस उठा कर वह बिलमें ले गया। उसके बिलमें घुसने पर बाकीके सब सिक्के उठा कर कुमारपाल ने ले लिये और वह ज्यों ही एकान्तमें जा कर देखता है तो वह चूहा बाहर आ कर उन सिक्कोंको न पा कर वहाँ छटपटा कर मर गया। कुमारपाल उसके शोकसे मनमें बड़ा व्याकुल हो कर चिरकाल तक परिताप करता रहा। फिर आगे चलते हुए रास्तेमें किसी [धनी पुरुष] की बहूने, जो समुरालसे पीहर जा रही थी, देखा कि राहखर्चके अभावमें तीन दिनसे भूखे मरते उसका पेट फट पड़ गया है। उसने भाईकी तरह स्नेहसे कर्पूरकीसी सुगंधिवाले चावलने काँवेसे उसको मृत्यु किया।

१२८) बादमें, विविध देशान्तरोंका भ्रमण करता हुआ, वह स्तंभ तीर्थमें महं० श्री उदयन के पास कुछ मार्गखर्च माँगनेके लिये आया। यह सुन कर कि वह पीपयशालामें है, तो वह वहाँ आया। उसे देख कर उदयन ने हे मचंद्राचार्यसे [उसके बारेमें] पूछा। उन्होंने कहा कि—इसके अंगके लक्षण लोकोत्तर हैं। यह भविष्यमें चक्रवर्ती राजा होगा। आजन्म दरिद्रतासे सताये हुए उस क्षत्रियने जब इस बातको असंभव कहा, तो उन्होंने यह लिख कर एक पत्रक मंत्रीको और एक उसको दिया कि—‘ यदि सं० ११९९ कार्तिक वदि (B. P सुदि) २ रविवार हस्त नक्षत्रमें, आपका पट्टाभिषेक न हों तो, इसके बाद, मैं शकुन देखना ही त्याग दूँगा।’ फिर वह क्षत्रिय उनकी इस कला-कौशल वाली चातुरीसे मनमें चकित हो कर बोला कि—‘ यदि यह बात सच हुई तो, आप ही राजा रहेंगे और मैं आपका चरणरेणु हो कर रहूँगा।’—और इसकी प्रतिज्ञा की। श्री हे माचार्यने कहा कि—‘ नरकरूप अन्तिम फल देनेवाली राज्यलिप्सासे हमें कोई मतलब नहीं है। आप कृतज्ञ हो कर यह बात न भूलियेगा और जैन शासनका भक्त हो कर सदा रहियेगा।’ इस अनुशासनकी सिर माथे रख कर और आज्ञा ले कर फिर मंत्रीके साथ उसके घर गया। वहाँ स्नान, पान, भोजन आदिसे संकृत हो कर और राह-खर्च पा कर, विदा ले मालव देशमें आया। वहाँ कुछ ज्ञेश्वर प्रासादमें पड़िका पर

१७७. संवत् ११९९ का वर्ष पूर्ण होने पर, हे विक्रमादित्य, तुम्हारे ही समान एक कुमारपाल नामक राजा [जैन धर्मका पालन करने वाला] होगा।

इस प्रकारकी गाथा लिखी हुई देख कर मनमें बड़ा विस्मित हुआ। [इस समय] गूर्जरपति सिद्ध-राजका स्वर्गवास सुन कर वहाँसे लौटा। उसका सब खर्च समाप्त हो चुका था। उसी नगरमें, किसी बनियेकी दूकान पर [बिना कुछ दिये] भोजन करनेके बाद उसको बंदी किया गया। वह व्याकुल हो कर रोने लगा तो, फिर नगरके लोगोंके इकट्ठा होने पर दोनोंका मरण होगा यह जान कर उस बनियेने कहा कि—‘ मेरी बनावटी मूर्च्छा है इसे तुम दूर करनेका प्रयत्न करने लगे।’ उसके इस प्रकारके बुद्धिभ्रमसे अपनेको प्रत्युज्जीवित मान-कर, कुमारपालने वैसा किया और उस उपायसे अपना कष्ट छुटा कर वह अणहिलपुरमें रातके समय पहुँचा। पासमें कुछ न होनेके कारण कंदोईकी दूकान पर जा कर, उसका दिया हुआ कुछ खाय। बादमें अपने बहनेई राजकुल श्री कान्हदेव के घर गया। जब कान्हदेव राजमंदिरसे आया तो उसे आगे आगे करके घरके भीतर ले गया। फिर अच्छा खाना आदि खा कर स्वस्थ हो कर सो गया।

*

कुमारपालका राजगादीपर बैठना ।

१२९) प्रातःकाल वह बहनोंई अपना सैन्य तैयार करके, उसके साथ, उसको राजाके महलमें ले आया । अभियेककी परीक्षाके लिये पहले एक कुमारको पट्टे पर बैठाया । उसको चादरके आँचलोंको भी ठाँक सम्हालते न देख फिर एक दूसरेको बैठाया । उसको हाथ जोड़ कर बैठा हुआ देख कर उसे भी अप्रमाणित किया । फिर कान्हडदेव की अनुज्ञासे कुमारपाल, बख संवरण करके ऊँचसे आस लेता हुआ और हाथमें तलवार कँपाता हुआ, सिंहासन पर जा बैठा । पुरोहितने मंगलाचार किया, नगाड़े बजे । श्रीमान् कान्हडदेवने पंचांगोंसे पृथ्वी चूम कर प्रणाम किया । उस समय उसकी अवस्था पचास वर्षकी हुई थी ।

*

कुमारपालने राजद्रोहियोंका उच्छेद किया ।

१३०) कुमारपाल स्वयं प्रौढ़ होनेके कारण, तथा देशान्तर भ्रमणसे विशेष निपुणता प्राप्त करनेके कारण, सब राज्यशासन स्वयं करने लगा । राज-वृद्धोंको यह अच्छा नहीं लगा । उन्होंने मित्र कर उसे मारना चाहा और अन्धकार वाले दरवाजेमें घातकोंको रख दिया । पूर्वजन्मके शुभ कर्मोंसे प्रेरित किसी आसने उस वृत्तान्तको बता कर उसे अन्य द्वारसे मकानमें प्रवेश कराया । बादमें उन प्रधानोंको उसने शीघ्र यमपुरीको भेज दिया ।

वह भावुक मण्डलेश्वर (कान्हडदेव), राजा अपना साज होनेके कारण, तथा अपने आपको राज-प्रतिष्ठाचार्य समझ कर, राजाकी दुरवस्थाके [उन पिछले] मर्मोंको कहा करता । इस पर किसी समय राजाने कहा — ' हे भावुक, तुम्हें इस प्रकार राज-दरवारमें सर्वदा पुरानी दुरवस्थाके मर्मोंका मजाक नहीं करना चाहिये । अवसे ऐसी बातें साममें न कहना, विजयमें चाहे यथेच्छ कहते रहना । ' राजाके इस प्रकार उपरोध करने पर भी, उत्कट अग्रज्ञावश ही कर वह बोला कि — ' रे अनात्मज्ञ ! अभी इतनेहीमें अपने पैर उखाड़ रहा है ? ' इस प्रकार बकता हुआ, मार्नों मोतहीकी इच्छासे, औपधकी भौंति उसके पथ वचनको भी उसने प्रहण नहीं किया । [उस क्षण तो] राजाने अपने भावका संवरण करके अपनी मनोवृत्ति छिपा ली । दूसरे दिन राजाके संकेत प्राप्त मल्लोंने उसका अंग तोड़ मरोड़ कर, दोनों आँखें निकाल लीं और उसे उसके मकान पर भिजवा दिया ।

१७८. इस विचारसे कि पहले मैंने ही इसे जलाया है अतः तिरस्कार करने पर भी यह मुझे नहीं जलायेगा, इस भ्रमके वश हो कर दीपककी तरह, राजाको कोई अंगुलिके पोरसे भी न छुए । यह विचार कर, सामन्त लोग, उस दिनसे अत्यधिक भयचकित चिन्त हो कर, प्रतिपद पर उसकी सेवा करने लगे ।

*

१३१) राजाने पूर्वमें उपकार करने वाले उदयनके पुत्र वाग्मटदेव को अपना महामात्य बनाया और आलिग को तथा महें० उदयन देव को बड़े (वृद्ध) प्रधान बनाये ।

*

कुमारपालका चाहमान राजा आनाकके साथ युद्ध ।

१३२) चाहड नामक एक कुमार सिद्धराजका प्रतिपन्न (माना हुआ) पुत्र था । वह कुमारपालदेव की आज्ञा न मान कर सपादलक्षके राजाके पास सैनिक हो कर चला गया । वह श्री कुमारपालके साथ विप्रद करनेकी इच्छासे, यहाँके सभी सामन्त लोगोंको लॉच (रिश्वत) आदिके द्वारा अपने वशमें करके, प्रबल सेनाके साथ सपादलक्षके राजाको ले कर [गूर्जर] देशकी सीमा पर चढ़ आया । अब, चौदृक्य चक्रवर्ती (कुमारपाल) ने भी, प्रतिशत्रु बन कर, उस सैन्यके सामने अपना सैन्यसमूह जमा किया । जब लड़ाईका दिन तै हुआ और सीमायें निष्कण्टक की गईं तथा चतुरङ्ग सेना सञ्चित की गई, तो उसी समय पट

हस्ताँके च उ लिंग नामक महावतने, किसी अपराधमें राजासे फटकार पा कर, क्रोधसे अंकुश-त्याग कर दिया । इसके बाद, अनेक गुणके पात्र ऐसे साम ल नामक महावतको खूब वस्त्र और धन आदि दे कर उस पद पर नियुक्त किया । उसने ' कलहपञ्चानन ' (युद्धका सिंह) नामक हाथीको सजा करके उसके ऊपर राजाका आसन रखा । ३६ प्रकारके अस्त्रोंको वहां जमा कर, फिर राजाको बैठाया और सब कला-कलापसे पूर्ण ऐसा वह स्वयं भी कलापक पर पैर रख कर हाथी पर चढ़ा ।

उस आसन पर बैठ कर चौलुक्य-चक्रवर्ती (कुमारपाल) ने देखा, तो मादूम हुआ कि, संग्रामके नायक पुरुषोंसे उठाये जाने पर भी, चाह ड कुमार के किये हुए मेदके कारण (फुट जानेसे), सामन्त लोग उसकी आज्ञाको नहीं मान रहे हैं । इस प्रकार सेनामें कुछ विद्रव्य देख कर उसने महावतको [आगे बढनेका] आदेश किया । सामनेकी सेनामें हाथी परका छत्र देख कर अनुमान किया कि वह सपादलक्षका राजा [आ रहा] है । और यह निश्चय करके कि, सेनाके विघटित (विमुख) हो जाने पर मुझे अकेलेहाँको लडना आवश्यक है, उस महावतको, सामनेके हाथीके पास, अपने हाथीको ले चलनेकी आज्ञा दी । पर उसे भी वैसा न करते देख बोला कि— ' क्या तू भी फूट गया है ? ' इस पर उसने कहा— ' महाराज ! कलहपञ्चानन हाथी और साम ल नामक महावत ये दोनों युगान्तमें भी फूटने वाले नहीं हैं; किन्तु सामनेके हाथी पर जो चाह ड नामक कुमार चढा हुआ है वह ऐसी गंभीर आवाज कर रहा है कि जिसकी हाँकके डरसे हाथी भी भाग छूटते हैं । यह सुन कर राजाने [अपनी बुद्धिमत्तासे सोच कर] हाथीके दोनों कानोंको चादरसे बंद कर दिया और फिर शत्रुके हाथीसे जा भिड़ाया । इधर चाह ड ने, यह जान कर कि वह च उ लिंग नामक महावत ही—जिसे उसने पहलेहीसे अपने वशमें कर लिया है—राजाके हाथी पर बैठा है, कुमारपालको मारनेकी इच्छासे हाथमें कृपाण ले कर अपने हाथी परसे कूद कर ' कलहपंचानन ' हाथीके कुंभस्थल पर पैर रखा । इतनेमें महावतने [बड़ी चालाकीसे] हाथीको पीछे हटा दिया । इससे वह चाह ड कुमार पृथ्वी पर गिर पड़ा और नीचे खड़े हुए पैदल सैनिकोंने उसे पकड़ लिया । इसके बाद चौ लुक्य राजने श्री आनाक नामक सपादलक्ष देशके राजासे कहा कि— ' हथियार संभालो ! ' ऐसा कह कर उसके मुख-कमल पर उचित समझ शिलीमुख (बाण) फेंकने लगा । (उचित इसलिये कि शिलीमुख भौरेका भी नाम है और भौरोंका कमलकी ओर जाना उचित ही है ।) ' तुम बड़े प्रधान क्षत्रिय हो न '—इस प्रकार उपहासके साथ प्रशंसा करते हुए, उसे मुलावेमें डाल कर, जो बाण मारा तो उससे घायल हो कर वह हाथीके कुंभस्थलसे गिर गया । ' जीत लिया, जीत लिया ' कहते हुए जाराने स्वयं सारी सेनामें अपने हाथीको इधरसे उधर घूमाया और जो सब सामंत थे उनके घोड़ों पर आक्रमण करके उनको कैद किया ।

इस प्रकार यह चाह ड कुमारका प्रबंध समाप्त हुआ ।

*

कुमारपालका उपकारियोंको सत्कृत करना ।

१३३) तत्पश्चात्, कृतज्ञ-सम्पाद चौलुक्यराजने आलिंग कुम्हारको सातसौं गाँववाली विचित्र चित्रकूट पटिका (चित्तौड़, मेगाडनी भूमि) दी । वे अपने वंशके कारण लजित हो कर आज भी अपनेको ' सगर ' (!) कहते हैं । जिन्होंने कटे हुए बम्बूलकी डालोंमें छिपा कर राजाकी रक्षा की थी वे अंगरक्षकके पदपर रखे गये ।

१८०. हम लोग भिक्षा माँग कर तो भोजन करते हैं, जूने-पुराने वस्त्र पहनते हैं और अकेली जमीन पर सो रहते हैं, तब फिर हम लोगोंको राजाओंसे क्या करना है ।

उनके ऐसा कहने पर राजाने कहा —

१८१. मित्र एक ही [होना चाहिये], राजा या यति; भार्या एक ही [होनी चाहिये] सुन्दरी रमणी या दरी (कंदरा); शास्त्र एक ही [होना चाहिये], वेद या अघ्यात्म; और देवता भी एक ही [होना चाहिये] केशव या जिन ।

महाकविके इस कथनके अनुसार मैं परलोककी साधनाके लिये आपकी मित्रता चाहता हूँ । ‘ किसी बातका निषेध न करना उसे स्वीकार कर लेना है ’— इस उक्तिके कथनानुसार, सूरिके कुछ न कहने पर उस महर्षिकी चित्तवृत्तिको पहचान लेने वाले उस राजाने, लोगोंके आने जानेमें बाधा देने वाले द्वारपालोंको, श्रीमुखसे आज्ञा दी कि इन महर्षिको किसी भी समय आनेमें बाधा न दी जाय ।

*

हेमाचार्यके समागमसे कुमारपालके पुरोहितका चित्रण ।

१३९. बादमें सूरिको वहाँ आते जाते देख और राजाको उनके गुणका गान करते देख, विरोध भावसे पुरोहित आ लिंगने कहा—

१८२. विश्वामित्र, पराशर आदि तथा अन्य ऋषिगण, जो केवल जल और पत्ता खा कर रहते थे, वे भी खाँके सुंदर मुखकमलको देख कर मोहित हो गये, तो फिर जो मनुष्य घी, दूध और दहीका आहार करते रहते हैं उनका इन्द्रियनिग्रह कैसा हो सकता है ! अहो, यह इनका दम्भ तो देखिये ।

उसके ऐसा कहने पर हेमचंद्रने कहा—

१८३. हाथी और सूअरका मांस खाने वाला ऐसा जो बलवान् सिंह है वह, सुना जाता है कि वर्षमें केवल एक ही वक्त रति करता है; पर कर्कश शिलाकणको खाने वाला कबूतर रोज रोज कामी बना रहता है ! इसमें क्या कारण है, सो तो बताओ ?

उसका मुँह बंद कर देने वाले इस प्रत्युत्तरके बाद ही किसी [और] मत्सरिने कहा, कि ये चेतारंजरी तो सूर्यको भी नहीं मानते । उसके ऐसा कहने पर—

१८४. लोकको धारण करने वाले सूर्यको [वास्तवमें] हमी लोग हृदयमें धारण करते हैं । क्यों कि उसको अस्तगमन रूप संकट उपस्थित होने पर [हम तो] अन्न-जल भी छोड़ देते हैं ।

इस प्रमाणकी निपुणताके आधार पर, हमी लोग वस्तुतः सूर्यभक्त हैं, ये नहीं [यह सिद्ध कर दिया] । इससे उसका मुँह बन्द हो गया । फिर एक बार देवतावसर (देवपूजाकी समाप्ति) हो जाने पर, मोहान्धकारको नष्ट करनेमें चंद्रमाके समान श्री हेमचंद्रके आने पर यशश्चंद्रगणिने रजोहरणके द्वारा आसन पट्टको साफ कर वहाँ कम्बल बिछाया, तो राजाने [उसका] तत्त्व न समझते हुए पूछा कि ‘ क्या बात है ? ’ उन्होंने कहा— ‘ कदाचित् यहाँ कोई जन्तु हो, इस लिये उसको हटा देनेके लिये यह प्रयत्न होता है । ’ राजाने इस पर यह युक्ति-युक्त बात कही कि— ‘ यदि प्रत्यक्ष कोई जन्तु देखा जाय तो ऐसा करना उचित है; न कि यों ही वृथा प्रयास करना ठीक होता है । ’ इस पर उन सूरिने कहा— ‘ आप क्या [अपनी] हाथी घोड़ेकी सेनाको शत्रु राजाके चढ़ आने पर ही तैय्यार करते हैं, या पहले भी ? ’ जैसे वह राजव्यवहार है वैसे ही यह धर्म व्यवहार है । उनके इस प्रकारके गुणोंसे हृदयमें रंजित हो कर राजा, अपनी पहलेकी हुई प्रतिज्ञाके

अनुसार, उन्हें अपना राज्य देने लगा, तो उन्होंने सर्व शास्त्रका विरोधहेतु बतलाते हुए उसका अस्वीकार किया। क्यों कि कहा है कि—

१८५. हे युधिष्ठिर, जैसे जले हुए बीजका पुनः उद्गम नहीं होता वैसे राज-प्रतिप्रहसे (राजाके दिये हुए दानसे) दम्ब हुए ब्राह्मणोंका [फिर ब्राह्मण कुलमें] पुनर्जन्म नहीं होता।

यह पुराणमें कहा गया है। उसी प्रकार जैन शास्त्र भी [कहते हैं]—‘गृहस्थके वहाँ भिक्षा मिलती हो तो फिर ‘राजपिण्ड’ (राजाके दान) की इच्छा क्यों करनी चाहिए’।

इस प्रकार [प्रभु हेमचन्द्राचार्यका कहा हुआ सुन कर] उक्त विषयके ज्ञानसे चित्तमें चमत्कृत हुआ और वह पत्तन पहुँचा।

*

कुमारपालका सोमेश्वर तीर्थके जीर्णोद्धारका प्रारंभ करवाना।

१४०) एक बार, राजाने मुनिसे पूछा—‘क्या किसी तरह मेरा भी यशका प्रसार कल्पान्त-स्थायी हो सकता है?’ उसकी इस बातको सुन कर उन्होंने कहा—‘[यह दो तरहसे हो सकता है—] या तो विक्रमादित्यके समान संसारको अग्रण करनेसे, या सोमेश्वरका काष्ठमय मंदिर, जो समुद्रके पानीकी छोटोंसे शीर्णप्राय हो गया है, उसका उद्धार करनेसे कांति युगान्त तक स्थायी हो सकता है।’ इस प्रकार चन्द्रमाकी चौदनीकी भौंते श्री हेमचंद्रकी वाणी सुन कर उल्लसित आनंदके समुद्रसे उस राजाने उसी महर्षिको पिता, गुरु और देवता मानते हुए और विजातीय अन्य ब्राह्मणोंकी निंदा करते हुए, प्रासादके उद्धारके लिये, उसी समय ज्योतिषीसे शुभ लग्न ले कर, पञ्चकुलको वहाँ भेजा और प्रासादके उद्धारका आरंभ कराया।

*

कुमारपालका उदयनसे मंत्री हेमचन्द्राचार्यका जीवनवृत्तान्त पूछना।

१४१) एक दूसरी बार, श्री हेमचंद्रके लोकोत्तर गुणोंसे हृत्-हृदय हो कर राजाने मंत्री उदयनसे पूछा कि—‘इस प्रकारका यह पुरुष-रत्न, सकल वंशोंके भूषणरूप ऐसे किस वंशमें, समस्त पुण्यके प्रवेशवाले किस देशमें और सब गुणोंके आका समान किस नगरमें पैदा हुआ है?’ राजाके इस आदेश पर उस मंत्रीने जन्मसे आरंभ करके उनका पवित्र चरित्र इस प्रकार कह सुनाया—‘अर्धाष्टम नामक देशके पुन्धुका नामक नगरमें मोठ वंशके चाचिग नामक व्यवहारीकी, सतियोंमें श्रेष्ठ और जैनधर्मकी शासन देवता समान साक्षात् लक्ष्मी जैसी पादिगि नामक सद्बर्धमचारिणीके ये पुत्र हैं। चामुण्डा नामक गोत्र देवीके आधाश्वरके नाम पर चांगदेव इनका नाम रखा गया था। इनकी अवस्था जब आठ वर्षकी थी, उस समय [इनके गुरु] श्री देवचन्द्राचार्य पत्तनसे तीर्थयात्राके लिये प्रस्थान कर पुन्धुकाक गावमें गये। वहाँ मोठ वसदिका में देवको नमस्कार करने जब गये तो यह लड़का समवयस्क बालकोंके साथ खेलता हुआ, अचानक सिंहासनके पास खड़ी हुई उन आचार्यकी गद्दी पर जा बैठा। इस बालरुके अंग-प्रत्यंगमें संसारसे विलक्षण लक्षणोंको देख कर उन्होंने (देवचन्द्राचार्यने) कहा—‘यह यदि क्षत्रिय कुलमें पैदा हुआ है तो सार्वभौम चक्रवर्ती होगा, यदि वणिक् या ब्राह्मण कुलमें पैदा हुआ होगा तो महामंत्री होगा और यदि दर्शन (संप्रदाय = धर्ममत) का स्वीकार करेगा तो युग-अध्यायकी नाई कलि-कालमें भी सत्ययुग ले आयेगा’। आचार्यने यह सोच कर, उसको प्राप्त करनेकी इच्छासे उस नगरके रहने वाले व्यवहारियोंको साथ ले, वे चाचिगके घर गये। वह उस समय अन्य भ्रान्तमें गया हुआ था। उसकी भिषेकवती पत्नीने स्वागत-सत्कारसे उन्हें सन्तुष्ट किया। उनके यह कहने पर कि—श्रीशंख (गौवका मुख्य श्रावक समूह) तुम्हारे पुत्रको माँगने यहाँ आया है।’ उसने हर्षके आँसू

बहा कर अपनेको रत्नगर्भा माना । तीर्थकरोंको भी माननीय ऐसा संघ मेरे पुत्रको माँग रहा है, यह बड़े दर्पकी बात है, फिर भी मुझे विपाद होता है । क्यों कि इसका पिता नितांत मिथ्या-दृष्टि (जैन धर्ममें अश्रद्धालु) है और वैसा हो कर भी वह इस समय गाँवमें नहीं है । उन व्यवहारियोंने कहा कि [उसका कुछ विचार न कर इस पुत्रको] तुम दे दो । उनके ऐसा कहने पर, माताने अपना दोष उतार देनेकी इच्छासे, दाक्षिण्यके वश हो कर अमात्र-गुणपात्र ऐसे अपने उस पुत्रको उन गुरुको दे दिया । तदनन्तर उस (माँ) ने जाना कि उन (आचार्य) का नाम देव चंद्र सूरि हैं । गुरुने उस बालकसे पूछा कि— 'तुम शिष्य बनोगे?' तो उसने 'हाँ' ऐसा कहा और वह लौटते हुए गुरुके साथ चल पड़ा । वहाँसे वे कर्णावती शहरमें आये । वहाँ पर उदयन मंत्रीके पुत्रोंके साथ वह बालक पालकों द्वारा पाला जाने लगा । इतनेमें बाहर गाँवसे आये हुए चाचिगने वह सारा वृत्तान्त सुना तो, जब तक पुत्रका मुँह न देखने मिले तब तक, अन्नका त्याग कर उस गुरुका नाम पूछता हुआ कर्णावती पहुँचा । आचार्यके वसतिस्थानमें जा कर उस कुपित पिताने कुछ थोड़ासा प्रणाम किया । गुरुने पुत्रके अनुहारसे उसे पहचान लिया, और फिर विचक्षणताके साथ विविध प्रकारके सत्कारोंसे उसे आवर्जित कर, उदयन मंत्रीको वहाँ बुलाया । धर्मबन्धु कह कर वह उसे अपने भवनमें ले गया और बड़े भाईकी तरह भक्तिपूर्वक उसे भोजन कराया । फिर चांगदेव नामक उस लडकेको उसकी गोदमें रख कर पञ्चाङ्ग पुस्तकारके साथ तीन दूकड़ (बहुमूल्य वस्त्र) और तीन लाख रोकड़ द्रव्य भक्तिके साथ भेंट किया । उस (उदयन) से चाचिगने कहा— 'एक क्षत्रियके मूल्यमें १ हजार अस्सी, घोड़ेके मूल्यमें १७५०, और अत्यन्त मामूली भी बनियेके मूल्यमें ९९ हाथी, अर्थात् ९९ लाख होते हैं । तुम तो तीन लाख दे कर उदारताके बहाने कृपणता बता रहे हो । पर मेरा पुत्र तो अमूल्य है और उस पर तुम्हारी भक्ति अमूल्यतम है । सो इसके मूल्यमें वह भक्ति ही मुझे बस है । द्रव्यसंचय मेरे लिये शिवनिर्माण्यकी भाँति असृश्य है ।' चाचिगके इस प्रकार कहने पर अत्यन्त आनन्दित चित्तसे उत्कंठित हो कर उस मंत्रीने आलिगन करके उसे धन्यवाद दिया, और फिर बोला कि— 'अपने पुत्रको मुझे समर्पित करनेसे तो, यह बालक मदाङ्गीके वानरकी नाई सब लोगोंको नमस्कार करता रहेगा और केवल अपमानका पात्र बनेगा । परंतु, गुरु महाराजको दे देने पर बालचंद्रमाकी भाँति त्रिलोकके नमस्कार योग्य होगा । अतः यथा-उचित विचार करके कहो ।' ऐसा आदेश पा कर उसने कहा कि— 'आपका जो विचार हो वही मुझे मान्य है ।' ऐसा कहने पर उसको वह मंत्री गुरुके पास ले गया और उसने पुत्रको गुरुको समर्पित कर दिया । फिर तो चाचिगने स्वयं उसके प्रव्रजित होनेका उत्सव किया । बादमें [वह बालक] अप्रतिम प्रतिभायुक्त होनेके कारण, अगस्त्यकी नाई समस्त वाक्य्य रूप समुद्रको सुलुब्धमें रख कर पी गया । समस्त विद्यास्थानोंका अभ्यास कर गुरुके दिये हुए 'हेमचंद्र' नामसे प्रसिद्ध हुआ । सकल सिद्धान्त और उपनिषत्का पारगामी और छत्तीस ही सूरिगुणोंसे अलंकृत समझ कर गुरुने उसे सूरि पद पर अभिषिक्त किया ।' इस प्रकार उदयन मंत्रीकी कही हुई है माचार्यके जन्मादिकी यह प्रवृत्ति सुन कर राजा बड़ा प्रसन्न हुआ ।

कुमारपालका सौमेश्वरके उद्धारकी समाप्तिके निमित्त नियम लेना ।

१४२) फिर श्री सोमनाथ देवके प्रासादके आरंभके लिये जब दृढ शिलाका आरोपण हो गया तो राजाने श्री हेमचंद्र गुरुको पंचकुलकी भेजी हुई वर्दापना (बधाई) की विज्ञप्ति दिखाते हुए कहा कि— 'यह प्रासादादरंभ किस प्रकार निर्विघ्नरूपसे समाप्त हो [सो उपाय बताइए]' । राजाके कहने पर श्री गुरुने कुछ विचार कर कहा कि— 'इस धर्मकार्यमें कोई विघ्न न उत्पन्न हो उसके लिये दो-मैसे एक काम करना होगा—

या तो पञ्चारोप हो तब तक शुद्ध भावसे ब्रह्मचर्य पाठन करना या मद्य-मांसका नियम लेना (त्याग करना)^१ ऐसा कहने पर, उनकी बात सुन कर मद्य-मांसके नियमकी अभिलाषा करते हुए, उसने शिवके ऊपर जल छोड़ कर उक्त शपथको प्रहण किया। दो वर्षके बाद, जब कि, उस मंदिरमें कलश और ध्वजका आरोपण कार्य पूरा हुआ, उसने नियमसे मुक्त होनेकी अनुज्ञा पानेके लिये गुरुसे कहा। उन्होंने कहा कि—‘अपने इस समुद्धृत कीर्तन (मन्दिर) के साथ यदि चंद्रचूड़ (शिव) के दर्शन करनेकी इच्छा हो तो यात्रा करनेके बाद ही नियम छोड़ना उचित होगा।’ ऐसा कह कर मुनिवर हे म चंद्र वहांसे चले गये। उनके गुणोंसे नीलीके रंगकी भौंति दृष्टरूपसे हृदयमें अनुरक्त हो कर वह राजा सभामें केवल उन्हींकी प्रशंसा करने लगा।

*

हेमचन्द्राचार्यका सोमेश्वरकी यात्रा निमित्त कुमारपालके साथ जाना।

तब, निष्कारण वैरी ऐसा कोई परिजन उनके तेजःपुञ्जको न-सह कर, इस मसलके अनुसार कि—

१८६. उज्ज्वल गुणवालेको अभ्युदित होता देख कर क्षुद्र मनुष्य किसी तरह उसे नहीं सहन कर सकता। जैसे पतिगा अपने शरीरको जला कर भी दीप्त दीपशिखाको बुझा देना चाहता है।

पीठका मांस भक्षण करनेके दोषको अंगीकार करके (पीठ पीछे जुगली खा करके) भी उनका अपवाद करने लगा कि—‘यह बड़ा चालाक, हां जी हां करने वाला और सेवाधर्म कुशल है, जो केवल महाराजकी मरजीकी ही बात कहता रहता है। यदि ऐसा नहीं है, तो प्रातःकाल आप सो मे श्वरकी यात्रामें साथ चलनेको उससे कहें। आपके ऐसा कहने पर वह परधर्मके तीर्थका परिहार करके किसी कारण वहाँ नहीं आवेगा। और हम लोगोंका मत ही प्रमाणभूत मान्य देगा।’ राजाने उसकी बातका स्वीकार करके प्रातःकाल जब, श्री हे म चंद्राचार्य आये तो, सो मे श्वरकी यात्रामें साथ चलनेके लिये उनसे अभ्यर्थना की। इस पर श्री सूरि बोले कि ‘बुधुक्षित (भूले) के लिये निमंत्रणकी क्या [जूरत है] और उलंकटिके लिये केकारवके श्रवणके कहनेकी क्या आवश्यकता है—इस कहावतके अनुसार उन तपस्वियोंके लिये, जिनका तीर्थयात्रा करना तो एक अधिकारसाधर्म है, उन्हें राजाके आग्रहका क्या प्रयोजन?’ इस तरह जब गुरुने अंगीकार किया, तो राजाने कहा कि—‘आपके लिये पाठकी आदि क्या सवारी दी जाय?’ गुरुने कहा कि—‘हम लोग पावोंसे चल कर ही पुण्य प्राप्त करते हैं। किन्तु हम थोड़े थोड़े चल कर श्री शत्रुंजय, उज्जयंत (गिरनार) आदि तीर्थोंको नमस्कार करते हुए आपसे [सोमनाथ] पत्तन में प्रवेश करनेके समय आ मिलेंगे।’ ऐसा कह कर उन्होंने वैसा ही किया। राजा अपनी सारी राष्ट्रकूटिके साथ प्रस्थान कर कुछ पडावोंके बाद पत्तन को पहुँचा। वहाँ श्री हेमचन्द्र मुनीन्द्र भी आ मिले जिससे वह अत्यन्त प्रसन्न हुआ। गण्ड० श्री वृहस्पतिने सम्मुख आ कर अंगवानी की और महोत्सवके साथ उनको नगरमें प्रवेश कराया। श्री सोमनाथ के प्रासादकी सीढ़ियों पर चढ़ कर, जमीन पर डेट कर उसे प्रणाम करनेके बाद, चिरकालसे दर्शनकी उत्कृष्ट आकांक्षाके कारण सोमेश्वरके ङिगका गाढ़ आलिंगन किया।

*

हेमाचार्यका शिवकी पूजा-स्तुति करना।

जेनधर्मसे द्वेष रखने वालोंके मुँहसे यह कथन सुन कर कि ‘ये जिन देवके अतिरिक्त अन्य देवताओंको नमस्कार नहीं करते’ धन्त चित्त वाले राजाने हेमचन्द्रसे यह बात कही कि—‘यदि योग्य मात्रम दे तो इन मनोहर उपहारोंसे आप श्री सोमेश्वर देवकी पूजा करें।’ ‘अच्छी बात है’ ऐसा कह करके उन्होंने शीघ्र ही राजाके कोशसे आये कमनीय अलंकारोंसे अलंकृत हो कर, राजाकी आज्ञासे श्री वृहस्पति द्वारा हाथका सहारा

पा कर [मूल] प्रासादकी चौकट पर चढ़ गये। मनमें कुछ सोच कर प्रकाशमें बोले कि—‘ इस प्रासादमें साक्षात् कैलासवासी महादेव रहते हैं, इस लिये रोमांचकंटकित शरीरको धारण करते हुए, उपहारको दूना कर दिया जाय। ’ ऐसा आदेश करके शिव पु राण में कहे हुए दीक्षा-विधिके अनुसार आह्वान-अवगुंठन-मुद्रा-मंत्रन्यास-विसर्जन आदि स्वरूप, पंचोपचार विधिते शिवकी पूजा की। अन्तमें इस प्रकार स्तुति की—

१८७. जिस किसी धर्ममतमें, जिस किसी नामसे, तुम जो कोई भी हो, लेकिन दोष और कल्पतासे रहित ऐसे तुम एक ही भगवान् हो और इस लिये हे भगवन् ! तुम्हें नमस्कार है।

१८८. पुनर्जन्मके अंकुरको पैदा करनेवाले राग आदि जिसके नष्ट हो गये हैं वह ब्रह्मा हो, विष्णु हो या शिव हो—उसे हमारा नमस्कार है।

इत्यादि स्तुतियाँ करते हुए, सब राजपुरुषोंके साथ विस्मययुक्त हो कर राजाके देखते रहने पर, हे मा चार्य्य दण्डवत् प्रणाम करके स्थित हुए। फिर वृहस्पति की वतलाई हुई पूजाविधिके अनुसार सामिलाप भावसे राजाने शिवका पूजन किया। इसके अनन्तर धर्मशिलामें बैठ कर तुलापुरुषदान, गजदान आदि महादान दे करके कर्पूरकी आरती उतारी।

कुमारपालकी तत्त्वजिज्ञासा और हेमाचार्यका शिवको प्रत्यक्ष करना।

फिर सभी राजपुरुषोंको हटा कर, शिवके गर्भगृहके अन्दर प्रवेश करके राजा बोला कि—‘ न महादेवके समान देव है, न मेरे समान राजा है और न आपके समान महर्षि। भाग्यवश इन तीनोंका सहज संयोग हुआ है। इस लिये, नाना दर्शनोंके भिन्न भिन्न प्रमाणोंके कारण जिस देवतारवके बारेमें चिन्त संदिग्ध हो रहा है, उस मुक्तिदायक सच्चे देवका वास्तविक स्वरूप, इस तीर्थभूमिमें आप सत्य सत्य रूपसे मुझे बताइये। ’ यह सुन कर श्री हेमचंद्रने बुद्धिसे कुछ सोच कर राजासे कहा—‘ इन दर्शनोंके पुराने कथनोंको छोड़ दीजिए। मैं श्री सोमेश्वर देवको ही आपके प्रत्यक्ष कर देता हूँ। उन्हींके मुखसे मुक्तिमार्ग क्या है सो जान लीजिये। ’ यह वाक्य सुन कर बोला—‘ क्या यह भी संभव है ? ’ इस तरह राजाके विस्मित होने पर [सूरिने कहा]—‘ निश्चय ही यहाँ पर तिरोहित भावसे देवत वर्तमान है। और हम दोनों गुरुके कथनके अनुसार इनके निश्चल आराधक हैं। तो फिर इस प्रकार, इस द्वन्द्वके सिद्ध होनेके कारण देवताका प्रादुर्भाव होना सरल है। मैं प्रणिधान (ध्यान) करता हूँ और आप कृष्ण अगुरुका उल्क्षेप (घूप) करें। और वह उल्क्षेप तब बन्द करियेगा, जब प्रत्यक्ष शिव आ कर निपेध करें। ’ इसके बाद दोनोंके इस प्रकार करने पर जब गर्भगृह धुंसे भर कर अन्धकारमय हो गया और नक्षत्रमालाके समान उज्ज्वल प्रदीप्त दीपक जब बुझ गये, तो फिर अकस्मात्, जैसे मानों बारहों सूर्यका तेज फैल रहा हो ऐसा प्रकाश दिखाई देने लगा। उसे देख कर संभ्रमवश राजा अपनी आँखें मलता हुआ देखने लगा तो, जलाधारेके ऊपर श्रेष्ठ ज्वनद (सुवर्ण) के समान घुतिवाले, चक्षुसे दुरालोक्य, अपरूप असंभव स्वरूपवाले एक तपस्वी दिखाई दिये। उसको पैरके अँगुठेसे ले कर जटा-जूट तक स्पर्श करके देवताका अवतार निश्चित किया और पंचाङ्गसे पृथ्वीतल पर लुठित हो कर प्रणाम करके भक्तिसे राजाने विज्ञप्ति की कि—‘ जगदीश ! आपका दर्शन करके आँखें कृतार्थ हुईं, अब आदेशका प्रसाद कर कर्णयुगलको कृतार्थ करो। ’ ऐसा कह कर राजाके चुप हो जाने पर, मोहरात्रिके लिये सूर्य स्वरूप उनके मुखसे, यह दिव्य वाणी प्रकट हुई—‘ राजन् ! यह महर्षि सब देवताके अवतार हैं। पूर्ण परब्रह्मके अवलोकनसे, करतलमें रहे हुए मुक्ताफलकी तरह इन्हें त्रिकालका स्वरूप विज्ञात है। इस लिये इनका बताया हुआ मुक्तिमार्ग ही असंदिग्ध मुक्तिमार्ग है। ’ ऐसा कह कर शिव जब अन्तर्धान हो गये तो, प्राणायाम पवनका रचन कर और आसन बंधको शिथिल करके उषा ही श्री हेमचंद्रने ‘ राजन् ! ’ यह शब्द कहा, तो तत्काल इट

देवताके संकेतसे राग्याभिमानको छोड़ कर उसने कहा—‘जीव ! पधारिये !’ इस प्रकार विनयसे सिर नवाता हुआ हाथ जोड़ कर बोला कि ‘जो आज्ञा हो सो कहिये ।’ इसके बाद वहीं पर उसे यावज्जीवन मय-मासके त्यागका नियम दिया और वहाँसे छोट कर वे दोनों क्षमापति (मुनि तो क्षमा=क्षान्तिके पति, राजा क्षमा=पृथ्वीके पति) अणहिल्लपुर आये ।

*

कुमारपालका परमाहृत श्रावक बनना ।

[१४३] श्री जिनमुखसे निःसृत पवित्र वचनोंके श्रवण द्वारा प्रतिबुद्ध हो कर राजाने ‘ परमाहृत ’ विद्वदको धारण किया । उससे अन्वयित हो कर प्रसु (हेमचन्द्र) ने ‘ त्रिपट्टिशलाका पुरुष चरित ’ तथा बीस ‘ वीतराग-स्तुतियों ’ से युक्त पवित्र ‘ योगशास्त्र ’ की रचना की । उनका आदेश पा कर अपने आज्ञानुवर्ती अठारह देशोंमें, चौदह वर्ष तक, सर्व प्रकारकी जीव-हत्याका निवारण किया ।

[१२३] सतत आकाशमें विचरण करने वाले सप्तर्षिगण एक मृगीको भी व्याधोंके पाशसे मुक्त नहीं कर सके । परन्तु प्रसु श्री हेमसूरि अकेलेने ही चिरकाळ तक पृथ्वी पर जीववध होनेका निषेध कर दिया ।

[१२४] [आकाश स्थित] कलाकलाप पूर्ण ऐसे चन्द्रमासे [पृथ्वी स्थित] हेमचन्द्र सूरि अधिक उज्ज्वलकीर्ति हैं । क्यों कि, चन्द्रमाने तो केवल एक ही मृगका [अपनी गोदमें ले कर] रक्षण किया है जब हेमचन्द्रने तो सब ही मृगीका (सारे पशुगणका) रक्षण किया है ।

राजाने उन उन देशोंमें १४४० नये विहार (जैन मन्दिर) बनवाये । सम्पन्न मूक १२ व्रतोंको अंगीकार किया । अदत्तदान-निर्मण-स्वरूप तीसरे व्रतको व्याख्या सुन कर रुदती (रोती हुई त्रिधवा नारिषोके) धनका प्रहण पापोंका कारण है ऐसा समझ कर, उस कामके अधिकारी पंचकुलों (कर्मचारी गण) को युवा कर उसके आपपटको, जिसका [वार्षिक] प्रमाण ७२ लाख था, फाड़ कर, उस करको बन्द कर दिया । उस करके छोड़ देने पर विद्वानोंने इस प्रकार स्तुति की—

१८९. जिस रुदतीपित्तको, कृतयुगमें पैदा होने वाले रघु-नहुष-नाभाग-भरत आदि जैसे राजा लोग भी छोड़ नहीं सके, उसे कर्णाराध हो कर मुक्त करने वाले कुमारपाल ! तुम महापुरुषोंके मुमुक्षु-मणि हो ।

प्रसु हेमसूरिने भी इस तरह राजाका अनुमोदन किया कि—

१९०. अपुन पुरुषोंका धन प्रहण करके [अन्य] राजा तो पुत्र होता है । किन्तु सन्तोषपूर्वक उसका त्याग करने वाले तुम तो सचमुच राज-पितामह हो ।

*

मंत्री उदयनका सीराष्ट्रके युद्धमें मारा जाना ।

[१४५] फिर, सुराष्ट्र देशके सउंसर [टाजुर] से युद्ध करनेके अिये उदयन मंत्रीको दलका नायक बना कर सारी सेनाके साथ भेजा गया । यह यर्दमानपुर (आधुनिक वडवाण) में पहुँच कर [नन्दरीकहीने रहे हुए शशुंजय पहाड़ पर] श्री युगादिदेवको नमस्कार करनेकी इच्छासे, समस्त मंडले-सभोंको आगे घटनेकी अन्वयना कर, सुद रिमलगिरि (शशुंजय) आया । विबुद्ध श्रद्धाके साथ देव-चलोकी पूजा करके ओही विधिपूर्वक फेबंदना करने लगा, त्यों ही एक मूक (चूहा) नद्यप्रवाहादी प्रदीप्त दीननायमेसे एक दीनवर्तिका (दिव्यी ब्रह्मी हुई बाट) को ले कर काठके बने उस प्रासादके किरी विडने प्रवेश करने लगा, तो देवके अंगरथकोंने उसे छुड़ाया । इसे देव कर उस मंत्रीका समाधिभंग हो गया

और इस प्रकार उस काष्ठमय देवप्रासादका कभी विध्वंस होना सोच कर उसने उस मंदिरका जीर्णोद्धार करवाना चाहा। इस इच्छासे देवके सामने ही एकभक्त (एकाशन करने) आदिके नियम ग्रहण किये। फिर वहाँसे प्रयाण करके अपने पड़ाव पर आया। उस प्रत्यर्था (शत्रु) के साथ युद्ध शुरू होने पर शत्रुद्वारा राजाकी सेनाका पराजित होना देख कर उदयन स्वयं युद्धके लिये उठा। वह प्रहारोंसे जर्जरशरीर हो गया तो फिर निवासमें ले आया गया। [जीवनान्त समीप जान कर वह] सकरुण स्वरसे रोने लगा। स्वजनोंने इसका कारण पूछा, तो उसने कहा कि, मृत्यु निकट आ गया है और शत्रुञ्जय और शकुनिका विहारके जीर्णोद्धारकी इच्छाका देवकण पीठ पर लगा रह गया। इस पर उन्होंने कहा—‘आपके वाग्भट और आम्रभट नामक दोनों पुत्र अभिप्रह ले कर तीर्थोद्धार करेंगे। हम लोग इसके लिये प्रतिभू (जामीन) बनते हैं।’ उनके इस प्रकार अंगीकार करनेसे अपनेको धन्य समझता हुआ वह मंत्री अन्याराधनाके लिये किसी चारित्र्य-धारीको खोजने लगा। वहाँ पर कोई चारित्र्यो न मिलनेसे किसी एक नौकरको साधुवेषमें ले आ कर उसको निवेदित करने पर, मंत्री उसके चरणोंको ललाटसे स्पर्श करता हुआ, उसीके सामने दस प्रकारकी आराधना करके वह श्रीमान् उदयन परलोक प्राप्त हुआ। पीछेसे, चंदन वृक्षके परिमलसे वासित क्षुद्र वृक्षकी नाई उस बंठ (नौकर)ने अनशन व्रत ले कर रैवतक पर्वत पर अपने जीवनका अन्त कर दिया।

मंत्री बाहडका शत्रुञ्जयतीर्थोद्धार कराना।

१४५) तत्पश्चात्, अणहिलि पुर पहुँच कर उन राजजनोंने यह बात वाग्भट और आम्रभट को सुनाई। उन्होंने वैसा ही नियम ग्रहण करके जीर्णोद्धारका कार्य आरंभ किया। दो वर्षमें श्री शत्रुञ्जय का वह प्रासाद बन कर तैयार हुआ और उसकी खबर देनेके लिये आये हुए मनुष्यके वधाई देने वाद ही दूसरा मनुष्य आया जिसने कहा कि ‘प्रासाद तो फट गया है!’ तपे हुए सोसके जैसी उसकी वाणीको कानोंमें सुन कर श्री कुमार पाल भूपालसे आज्ञा ले कर मंत्री स्वयं वहाँ जानेको उद्यत हुआ। श्रीकरणकी जो अपनी मुद्रा (मंत्रीके पदकी मुहर) थी वह महं कपर्दीको समर्पित की और स्वयं ४ सहस्र घोड़े ले कर शत्रुञ्जयकी उपत्यकामें पहुँचा। वहाँ अपने नामसे बाहडपुर नामका नया नगर बसाया। शिल्पियोंने प्रासादके फट जानेका कारण बताते हुए कहा कि सभ्रम प्रासादमें पवन घुस कर निकलता नहीं, इस लिये मन्दिर फट जाता है; और जो प्रासाद भ्रमहीन बनाया जाय तो बनाने वाला निर्वश हो जाता है [ऐसा शास्त्रका विधान है]। मंत्रीने यह सुन कर ऐसा विचार किया कि निर्वश होना अच्छा है। इससे धर्म कार्य ही हमारा वंश होगा और पूर्व कालमें जीर्णोद्धार कराने वाले भरत आदिकी पंक्तिमें हमारा भी नाम उल्लिखित होगा। इस प्रकार अपनी दीर्घदर्शनी बुद्धिसे सोच कर उस मंत्रीने भ्रम और दीयालके बीचमें पत्थर भरवा दिये और प्रासादको निर्भ्रम बनवाया। तीन वर्षमें प्रासाद पूरा हुआ। उसके कलश दण्ड आदिकी प्रतिष्ठाके समय पत्तन के संघको निमंत्रित किया और महामहोत्सवके साथ सं० १२११ में मंत्रीने ध्वजारोपण कराया। पाषाणमय बिंब (मूर्ति) का परिकर मम्भाणी की खानमेंके किमती पत्थरका बनवा कर स्थापित किया। श्री बाहडपुर में राजाके पिताके नामसे श्री त्रिशुबनपाल विहार बनवा कर उसमें पार्श्वनाथकी स्थापना कराई। तीर्थपूजाके लिये नगरके चारों ओर २४ बागीचे बनवाये, नगरका पक्का कोट बनवाया और देवके पूजारियोंके प्रास और वास आदिकी व्यवस्था कर, वह सब कार्य पूरा किया। इस तीर्थोद्धारके व्ययमें [यह बात प्रसिद्ध है कि]—

१९१. जिसके, मंदिर बनानेमें १ करोड़ ६० लाख व्यय हुआ है, विद्वान् लोग उस श्री वाग्भटदेव की [पूरी] वर्णना कैसे करें!

इस प्रकार शत्रुञ्जयके उद्धारका यह प्रबंध समाप्त हुआ।

*

मंत्री आम्रभटका शकुनिका विहारका उद्धार करवाना ।

१४६) इसके बाद, समस्त विश्वके एक अद्वितीय ऐसे सुभट आघ्रमटने पिताके कल्याणार्थ नृगुपु (भरूच) में शकुनिका विहार प्रासादके उद्धारका कार्य प्रारंभ किया। उसके लिये गंदरी नीव खोदते समय, नर्मदा नदीके निकट होनेके कारण अकस्मात् वह नीव घंस पड़ी और काम करने वाले मजदूर उसमें दब गये। उसने यह देख, कृपा-परवश हो कर, अपनी अत्यन्त निन्दा करते हुए, उसीमें अपने आपको भी गिरा दिया। इस अनुपम साहसके प्रभावसे वह विघ्न शान्त हो गया (सब लोक बच गये)। इसके बाद, शिखर-प्रासादके सारा प्रासाद तीन वर्षमें पूरा हुआ। कलश-दण्डकी प्रतिष्ठाका अवसर आने पर समस्त नगरोंके संघोंको निमंत्रण दे कर बुलाया गया और उन सबको यथोचित वस्त्र और आभरण आदि दे कर सलूत किया गया और फिर सबको यथास्थान वापस पहुँचाया गया। उग्र समयके निकट आने पर भटारक श्री हेमचंद्रसूरिके नेतृत्वमें राजाके साथ अणहिल्लपुरके संघको निमंत्रित कर उसे अतुलित वात्सल्यादि तथा भूषण आदि दानों द्वारा सन्तुष्ट करके, ध्वजारोपणके लिये घरसे चला। इस समय अपने सारे घरको मानों पाचक-जनोसे लुटवा दिया। श्री सुव्रतदेवके प्रासादमें महाध्वजके साथ ध्वजारोपण करके, अत्यधिक हर्षके कारण, वह अनालस्य भावसे नाच करता रहा। अन्तमें राजाकी अन्वयर्चना पर, उसने आरती उतारी। अपना घोड़ा दारपाळको दान कर दिया। राजाने स्वयं उसको तिलक किया। बहुराज सामन्त चामर और पुष्प वर्षा आदिसे उसका वड़ा रहे थे। उस समय आये हुए वंदीको अपना करुण दे दिया। अन्तमें राजाने हाथ पकड़ कर जबर्दस्ती उसे बैठाया और आरती और मंगल प्रदीप उतरवाये। श्री सुव्रतदेवके तथा गुरुके चरणमें प्रणाम करके, वन्धुओंको वन्दना आदि करके, राजासे शीघ्र आरती उतरवानेका कारण पूछा। राजाने कहा— 'किं जैसे जुआड़े अत्यधिक घूत-रसके आवेशमें अपने सिरको भी दौंव पर रख देता है, वैसे ही तुम भी इसके बाद कहीं अधियोंके माँगनेसे त्यागके आवेशमें आ कर अपना सिर भी उन्हें न दे डालो?' राजाके इस प्रकार कह चुकने पर, उसके लोकोत्तर चरित्रसे हत-हृदय हो कर श्री हेमचंद्रने भी, जिन्होंने जन्म-मालसे ही किसी मनुष्यकी स्तुति नहीं की थी, कहा—

१९२. उस कृतयुगसे [हमें] क्या [मतलब] है जिसमें तुम नहीं थे। और जिसमें तुम [विद्यमान] हो वह कलि फैसा। और यदि कलिहीमें तुमारा जन्म होता है तो वह कलि ही सदा रहे—कृतसे क्या मतलब है।

इस प्रकार आघ्रमटकी अनुमोदना करके दोनों क्षमापति, जैसे आये थे वैसे ही वापस गये।

*

आम्रभटका शाकिनीग्रस्त होना ।

१४७) इसके बाद, जब हेमचंद्र अपने स्थान पर पहुँचे तो उन्हें यह विश्वासि मिठी कि आकस्मिक रीतिसे देवी (शाकिनी) के दोषसे ग्रस्त हो कर आम्रभटकी अन्तिम दशा उपस्थित हो गई है और आपको शीघ्र बुलाया गया है। उन्होंने तत्काल ही समझ लिया कि 'यह महामना जब प्रासादके शिखर पर नृत्य कर रहा था उसी समय मिथ्यादृष्टि देवियोंका कुछ दोष उसे हुआ है।' यह सोच कर, सार्वकाल ही को तपोधन यशध्वन्द्रको साथ ले, आरुणशामिनी शक्तिसे उड़ कर निमेषमात्रमें, नृगुपु की प्रान्तभूमिको अलंकृत किया और सैन्धवादेवीका अनुनय करनेके लिये कायोत्सर्ग किया। उस देवने जीम निकाळ कर उनका अपमान किया। तब उखलमें शांति-चावळ ढाळ कर यशध्वन्द्र गणिते मूखसे प्रहार करना शुरू किया। पहली बारके प्रहारमें प्रासाद काँपने लगा, दूसरी बार प्रहार देने पर वह देवी ही अपने स्थानसे उखड़ कर— 'इस वज्र-

पाणिके वज्रप्रहारसे बचाओ—बचाओ ' कहती हुई प्रभुके चरणों पर आ कर गिर गई। इस तरह अपनी अनिन्य विद्याके बल पर उस दोपके मूलभूत मिथ्यादृष्टिवाले व्यन्तरो, (भूत पिशाचों) का निग्रह करके श्री सुव्रतदेवके प्रासादमें आये। वहाँ पर—

१९३. संसाररूप समुद्रके लिये सेतु, कल्याण-पथकी यात्राके लिये दीप-शिखा, विचक्रे आधारके लिये आलंवन यष्टि, परमतके व्यामोहके लिये केतुका उदय, अथवा हमारे मनरूपी हाथियोंके बन्धनके लिये दृढ़ आलान रूप लौलाको धारण करने वाले ऐसे श्री सुव्रतस्वामीके चरणोंकी नख-रश्मियों [सबकी] रक्षा करें।

इस प्रकारकी स्तुतियोंसे श्री मुनिसुव्रतकी उपासना करके, श्री आश्रमभटको उल्लास स्नानसे सुस्थ करके, जैसे गये थे वैसे ही [अपने स्थान पर] लौट आये। श्री उदयन चैत्य शकुनिका विहारके घटी गृहमें राजाने कौङ्कण नृपतिके [छीने हुए] तीन कलश तीन जगह स्थापित किये।

इस प्रकार यह राज-पितामह श्री आश्रमभटका प्रबंध समाप्त हुआ।

*

कुमारपालका विद्याध्ययन करना।

१४८) इसके बाद, एक दूसरी बार, कपर्दी मंत्री का अनुमत कोई विद्वान्, राजा कुमारपालके भोजन कर लेनेके बाद कामन्दकीय नीतिशास्त्रके इस श्लोकको पढ़ रहा था—

१९४. राजा मेघकी नाई समस्त भूत-मात्रका आधार है। मेघके विकल होने पर भी जीवन धारण किया जा सकता है पर राजाके विकल होने पर नहीं।

तब, इस वाक्यको सुन कर राजाने कहा कि—‘अहो राजाको मेघकी ‘ऊपम्या !’ इस पर सभी सामाजिक लोक राजाका न्युञ्चन करने लगे। पर उस समय कपर्दी मंत्रीने अपना सिर नीचा कर लिया। यह देख कर राजाने एकान्तमें उससे [कारण] पूछा। उसने कहा—‘महाराजने जो ‘ऊपम्या’ शब्दका उच्चारण किया वह सब व्याकरणोंकी दृष्टिसे अपशब्द (अशुद्ध) है; और इस पर भी इन खुशामती अनुवर्तियोंने न्युञ्चन किया। उनके ऐसा करने पर मेरा तो दोनों प्रकार सिर नीचा करना ही समुचित है। शत्रु राजाओंमें इस प्रकारकी अपकीर्ति फैलती है कि ‘अराजक जगत्का होना अच्छा है किन्तु मूर्ख राजाका होना अच्छा नहीं।’ जिस अर्थमें आपने यह शब्द कहा है उस अर्थमें उपमान, उपमेय, औपम्य, उपमा इत्यादि शब्द कहे जाते हैं। उसकी इस बातकी [आदरके साथ] हृदयमें प्रहण करके, अनन्तर, ५० वर्षकी उम्रमें, उस राजाने शब्द व्युत्पत्तिका ज्ञान करनेके लिये किसी उपाध्यायके निकट मात्रिकान्पाठसे आरंभ कर (अ आ से ले कर) शास्त्र पढ़ना आरंभ किया और एक वर्षके भीतर [व्याकरणकी] तीनों वृत्ति और तीनों काव्य पद डाले। और फिर पण्डितोंसे ‘विचार-चतुर्मुख’ यह विद्वत् प्राप्त किया।

इस प्रकार विचारचतुर्मुख कुमारपालके अध्ययनका प्रबंध समाप्त हुआ।

*

धनारसके विश्वेश्वर कविका पत्तनमें आना।

१४९) किसी अवसरपर, विश्वेश्वर नामक कवि वाराणसीसे पत्तनमें आ कर प्रभु श्री हेमसूरिकी सामांमें पहुँचा। वहाँ कुमारपाल राजाको विद्यमान देख कर उसने—

१९५. कंबल और दंड वाला यह हेम तुम्हारी रक्षा करें ।

इस प्रकार कह कर वह उठर गया । राजाने उसे क्रोधकी दृष्टिसे देखा । तब फिर—

जो पद्दर्शन रूप पशुओंको जैन-गोचर (चरागाह) में चरा रहे हैं ।

यह उत्तरार्द्ध पदा जिसे सुन कर सारी सभा प्रसन्न हुई । फिर कविने रामचन्द्रादि [कवियों] को समस्यार्थे पूर्ण करनेको दी । 'न्यापिद्धा नयने०' इस चरणवाली एक समस्याकी पूर्ति महामात्य कपर्दीने इस प्रकार की

१९६. 'इसकी ये सरल (बड़ी बड़ी) आँखें दोनों हथेलियोंसे ढाकी नहीं जा सकतीं, और अपने मुखरूपी चन्द्रमाकी चांदनीके प्रकाशसे यह सब कहीं दिखाई दिया करती है— इस लिये आँख मिचौनीके खेलमें अपनी चारों ओर रही हुई सखियोंके बीचमें बैठी हुई वह बाधा [खेठनेसे] रोक दी गई है और इस लिये वह अपने मुख और आँखोंको रो रही है ।'

[इस समस्यापूर्तिकी प्रतिभासे प्रसन्न हो कर] उस कविने पचास हजाररुपि कीमतका अपने गलेका हार निकाल कर कपर्दीके कण्ठमें यह कहते हुए डाल दिया कि ' यह तो श्रीभारतीका पद (स्थान) है ।' उसकी सहृदयतासे चमकृत हो कर राजा उसे अपने पास रखने लगा, तो वह यह कह कर, राजा द्वारा संकृत हो कर, यथास्थान चला गया कि—

१९७. कर्णकी कथा तो अब शेष मात्र रह गई है । काशी नगरी मनुष्योंकी कमीके कारण क्षीणप्राय हो गई है । पूर्ण (या उत्तर) दिशामें हम्मीर (म्ळेच्छ) के घोड़े सहर्ष हिनहिना रहें हैं । इससे यह मेरा हृदय तो अब, सरस्वतीके आलिंगनमें प्रवृत्त क्षारसमुद्रके साथ स्नेहवाले प्रभासक्षेत्रके लिये उरकण्ठित हो रहा है ।

*

हेमचन्द्रसूरिका समस्या पूरण करना ।

१५०) किसी समय कुमारविहार देवमन्दिरमें राजा द्वारा आमंत्रित हो कर प्रभु श्रीहेमचंद्र, कपर्दी मंत्री द्वारा हाथपा सहारा पा कर, जब सोपान पर चढ़ रहे थे [यहा पर नृत्योपेत] नर्तकीके कञ्चुककी कसनीको तनती हुई देख कर कपर्दीने यह कहा—

१९८. हे सखि तेरा यह कञ्चुक सौभाग्यशाही है इस लिये इसका यह तनना युक्त ही है ।

यह कह कर उसे जब आगे बोटनेमें विव्ध करतें देखा तो प्रभुने उत्तरार्थ इस प्रकार कह दिया—

जिसके गुणका प्रद्वण पीठपीछे तरुणीजन करता है ।

*

आचार्य और मंत्रीके बीचमें 'हरडड'का वाग्विलास ।

१५१) एक बार, सधरे कपर्दी मंत्रीने श्री सूरिको प्रणाम करनेके बाद [उसके हाथमें कोई चीज देर कर] उन्होंने पूछा—' यह क्या चीज है ?' उसने प्राकृत (देशी) भाषामें कहा—' हरडड'—अर्थात् 'हर' । प्रभुने कहा—' क्या अब भी ?' तब वह अपनी अनाहत प्रतिभा (प्रखर बुद्धि) के कारण उनके वचनच्छट (व्यंग्य) को समझ कर बोला—' अब तो नहीं ।' क्योंकि अन्तिम होने पर भी वह आदिम हो गया और एक मात्र अधिक भां हो गया । हर्षार्थु पूर्ण आँखोंसे प्रभुने रामचंद्र आदिके सामने उसकी चतुर्दशकी प्रशंसा की । उन्होंने (रामचन्द्रादिने) तब न समझ कर पूछा कि ' बात क्या है !' प्रभुने कहा कि ' हरडड' इममें शब्दच्छटसे यह अर्थ उद्भव करके निकाला गया कि ' हरडड' अर्थात् हकार रोता (गुजराती रडता)

है। हमने इस पर कहा कि 'क्या अब भी ?' यह कहते ही शब्दतत्त्वको जानने वाले इसने कहा कि 'अब तो नहीं।' क्यों कि पहले मातृका-शास्त्र (वर्णमाला) में हकार सबके अंतमें पढ़ा जाता था, अतएव वह रडता=रोता था; किन्तु अब तो भेरे नाम (हे म चंद्र) में वह पहले आ गया है और एक मात्र अधिक भी हो गया है।

इस प्रकार यह हरडइ प्रबंध समाप्त हुआ।

*

उर्वशी शब्दकी व्युत्पत्ति।

१५२) एक बार, किसी पंडितने पूछा कि 'उर्वशी' शब्दका शकार तालव्य है या दन्त्य। इस पर प्रभु (हे म चंद्र) कुछ सोच कर कहने जा रहे थे कि कप दीने पत्र पर यह लिख कर उनके अंक्रमें फेंक दिया कि 'उरौ श्रेते उर्वशी' अर्थात् जो ऊरुमें शयन करे वह उर्वशी। इसीको प्रामाण्य समझ कर प्रभुने उस पंडितके आगे तालव्य शकार होनेका निर्णय कह सुनाया।

इस प्रकार यह उर्वशी-शब्द-प्रबंध समाप्त हुआ।

*

सपादलक्षके राजाके नामका अर्थखण्डन।

१५३) अन्य किसी समय, सपादलक्षके राजाका कोई सान्धिविग्रहिक कुमारपाल राजाकी सभामें आया। राजाने पूछा कि 'आपके स्वामी कुशल तो हैं ?' अपनेको महापंडित समझने वाला वह मिथ्याभिमानी बोला—'विश्वको जो ले ले वह 'विश्वल' कहलाता है (—यह सपादलक्षके राजाका नाम था)। इस लिए उसकी विजयमें क्या संदेह है ?' राजाका इशारा पा कर श्रीमान् कप दीं मंत्रीने कहा कि—'खल-खल धातु तो शीघ्र गत्यर्थक है। इसी खल धातुसे यह शब्द बना है, अतः इसका अर्थ तो यह हुआ कि—वि अर्थात् पक्षीकी भाँति जो खलन करता है—भाग जाता है वह 'विश्वल' है।' इसके बाद, उस प्रधानके द्वारा इस नाममें दोष समझ कर उस राजाने पंडितोंके पास निर्णय कराके 'विग्रह राज' ऐसा दूसरा नाम धारण किया। दूसरे वर्ष उसी प्रधानने कुमारपाल नृपतिके सामने 'विग्रह राज' यह नाम बताया। मंत्री कप दींने [यह अर्थ किया]—विग्रह=विगतनासिक—नासिकाहीन; ह-राज अर्थात् रुद्र और नारायण। रुद्र और नारायणको जिसने नासिका हीन किया है यह इस 'विग्रहराज' का अर्थ है। तदनन्तर कप दीं के नामखण्डनके भयसे उस राजाने 'कवि-बान्धव' ऐसा नाम धारण किया।

*

१५४) एक दूसरी बार, कुमारपाल राजाके आगे योग शास्त्र का व्याख्यान हो रहा था उसमें जब पञ्चदश कर्मादानका पाठ पढ़ा जाने लगा तब "दन्तकेशनखास्थित्वग्रोम्णां ग्रहणमाकरे" प्रभुके रचे हुए इस मूल पाठमें पंडित उदयचन्द्र बार बार 'रोम्णां ग्रहणम् रोम्णां ग्रहणम्' यह पाठ बोलने लगा। तो प्रभुने पूछा कि—'क्या लिपिभेद (अशुद्ध पाठ) हो गया है ?' उसने कहा—'प्राणितुर्प्राणांम्' इस व्याकरण सूत्रसे तो एकत्व सिद्ध होता है, [सो यहाँ पर वैसा होना चाहिए] ऐसे लक्षणविशेषको बता कर, प्रभु द्वारा प्रशंसित हुआ और राजाने न्युछन करके उसकी संभवाना की।

इस प्रकार पं० उदयचंद्रका यह प्रबंध समाप्त हुआ।

*

कुमारपालका अभक्ष्यभक्षणके निमित्त प्रायश्चित्त करना ।

१५५) इसके बाद, वह राजर्षि एक समय घेवरका भक्षण कर रहा था। उस समय कुछ विचार मनमें आ गया जिससे उसने वह सारा आहार छोड़-छाड़ कर, पवित्र हो कर, प्रभुसे जा कर पूछा कि—‘हमें घेवरका भक्षण करना चाहिये या नहीं?’ इस पर प्रभुने कहा—‘वणिक् और ब्राह्मणको तो इसका भक्षण उचित है किन्तु जिस क्षत्रियने अभक्ष्यभक्षणका नियम किया है उसे नहीं करना चाहिए; क्यों कि उससे मांसाहारका स्मरण हो आता है।’ राजाने कहा ‘यह बिल्कुल ठीक है’ और फिर पूर्व भक्षित अभक्ष्यका प्रायश्चित्त पूछा। [आचार्यने कहा—] ३२ दाँतोंके निमित्त ३२ जैन मंदिर एक पीठस्थान पर बनवा देने चाहिए। राजाने वैसा ही किया।

प्रभुके दिये हुए प्रतिष्ठाछत्रमें प्रासादके मूल नायककी प्रतिष्ठा करानेके लिये, घट पद्रकसे कान्हू नामक व्यवहारी पत्तनमें आया। उसने उस नगरके मुख्य प्रासादमें अपने बिंबको रख दिया और उपहारादि ले कर बाहरसे जत्र वापस आया तो राजाके अंगरक्षकोंने द्वार पर उसे रोक दिया। कुछ समय बाद जत्र द्वारपाल उठ गये और प्रतिष्ठोत्सव भी समाप्त हो गया, तो वह भीतर प्रवेश करके प्रभु (हेमचन्द्र) के चरण-मूलमें लग कर, उपालम्ब पूर्वक, खूब रोने लगा। और किसी तरह उसके दुःखका दूर होना न जान कर वे रंगमंडपसे बाहर आये और नक्षत्र-चार देखने लगे, तो देखा कि उनका दिया हुआ छत्र तो आकाशमें अब उड़ित हुआ है। छोटी घड़ोके हिसाबसे ज्योतिषीने जो पहले छत्रमुहूर्त दिया है [वह अशुद्ध है] और उस छत्रमें प्रतिष्ठित मूर्तियोंकी आयु तीन ही वर्षकी है। अब जो इस समय छत्र वर्तमान है उसमें बिंबकी प्रतिष्ठा होगी वह विरायु होगा। उसने उसी समय अपने बिंबकी प्रतिष्ठा कराई। प्रभुने जैसा कहा था वैसा ही बादमें हुआ।

इस प्रकार अभक्ष्य-भक्षणके प्रायश्चित्तका यह प्रबंध समाप्त हुआ।

*

कुमारपालका अन्यान्य विहारोंका बनवाना।

१५६) [राजाने यह स्मरण करके कि] मेरे अपहृत धनसे एक चूहा [उस समय] मर गया था। इस लिये उसका प्रायश्चित्त पूछा तो प्रभुने उसके कल्पार्थ उसीके नामका एक विहार बनवानेको कहा सो उसने वह [मूक विहार] बनवाया।

१५७) इसी प्रकार, किसी व्यवहारीकी उस वधुने, जिसके जाति, नाम, प्राम, संबंध कुछ भी उसे नहीं मादूम हुए, रास्तेमें तीन दिन तक बुभुक्षित नृपतिकी चावलके करवेसे सन्तुष्ट कर रक्षा की थी, उसकी कृतज्ञताके निमित्त, उसके पुण्यकी अभिवृद्धिके लिये पत्तन में राजाने ‘करम्बकविहार’ बनवाया।

१५८) इसी तरह, यूकाविहार भी इस प्रकार [बना]—सपादलक्ष देशमें कोई अविबेकी धनी था। उसकी प्रियाने कैस-संमार्जनके अवसर पर उसकी हथेली पर एक यूका (जू) पकड़ कर रखी। उसने उस पीड़ाकारिणीको तर्जन करके, मसल कर मार डाला। निकटवर्ती अमारिकारी पंचकुल (जीवहिंसा प्रतिबन्धकी) देखमात्र करनेवाले अधिकारी ने उसे पकड़ कर अणुहिलपुरमें राजाके सामने ले आ कर निवेदित किया। इसके बाद प्रभुके आदेशसे उसके दण्डस्वरूप उसका सर्वस्व ले कर वही पर (उसी गावमें!) यूका विहार बनवाया।

इस प्रकार यूका विहारका मबंध समाप्त हुआ।

*

१५९) इसके बाद, स्तंभतीर्थके सामान्य सालिगवसहिका नामक प्रासादका, जिसमें प्रभुकी दीक्षा हुई थी, रत्नमय विंबसे अलंकृत कर, अनुपम जीर्णोद्धार कराया।

इस प्रकार सालिगवसहिकाके उद्धारका प्रबंध समाप्त हुआ।

*

मठपति बृहस्पतिकी अविनय।

१६०) बादमें, सोमेश्वरपत्तनके कुमार-विहार-प्रासादमें बृहस्पति नामक गण्ड (मठाधिपति), कोई अप्रिय कार्य करनेके कारण, प्रभु (हेमसूर) की अप्रसन्नताका पात्र हुआ और वह पदभ्रष्ट किया गया। बादमें, अणहिल्लपुरमें आकर, पशुविध आवश्यक क्रिया करता हुआ सन्मानका पात्र होकर प्रभुकी सेवा करने लगा। एक बार चातुर्मासिक पारणके समय प्रभुके चरणोंमें द्वादशशर्वत वंदना करके बोला—

१९९. हे नाथ, चार मास तक आपके इस चरणयुगके पास बैठकर कथाय (राग द्वेष रूप क्लेश) का नाश करनेके लिए विकृतिपरिहार (रसवाले अन्नका त्याग) रूप व्रत मैंने किया है। अब, हे मुनितिलक! आपके चरण कमलने निर्लौठित कर दिया है उद्देदक कलि जिसका, ऐसे मुझको, पानासे भांगे हुए अन्न ही की वृत्ति मिला करे।

वह ऐसी विकृति कर रहा था कि उसी समय राजा वहाँ आ गया और उसने प्रभुको प्रसन्न देखकर, उसे पुनः अपने पद पर प्रतिष्ठित कर दिया।

इस प्रकार यह बृहस्पति-प्रबंध समाप्त हुआ।

*

मंत्री आलिंगकी स्पष्टवादिता।

१६१) एक बार, सर्वावसर (राजसभा) में बैठे हुए राजाने आलिंग नामक [वृद्ध] प्रधान पुरुषसे पूछा कि—‘मैं [गुणादिमें] सिद्धराजसे हीन हूँ, अधिक हूँ या समान हूँ।’ उसने, किसी प्रकारके छलभावका विचार न करनेकी प्रार्थना करके कहा कि—‘श्रीसिद्धराजमें ९८ तो गुण थे और दो दोष थे; और महाराजमें दो गुण हैं और ९८ दोष हैं।’ उसके ऐसा निवेदन करने पर राजा अपने आपको दोषपूर्ण जानकर, अपने जीवन पर विरक्त हो उठा और आँखोंमें छुरी भोंकना (जीवनका अन्त कर देना) चाहा तो उसके आशयको समझकर उस बृद्धने कहा कि—‘श्रीसिद्धराजके जो ९८ गुण थे, वे संग्राममें कायरता और स्त्रीलम्पटताके इन दो दोषोंमें छिप जाते थे। आपके जो कृपणता आदि दोष हैं, वे युद्धमें दिखाई देनेवाली शूरता और परस्त्रीके विषयमें रही हुई सहोदरताके इन दो [महान्] गुणोंमें ढंक जाते हैं।’—उसके इस वचनसे राजा फिर स्वस्थ हुआ।

इस प्रकार यह आलिंगप्रबंध समाप्त हुआ।

*

पं० वामराशिकी क्षमा प्रदान करना।

१६२) पहले, सिद्धराजके राज्य समयमें, पौडित्यकी स्पर्द्धामें सामना करने वाला वामराशि नामक ब्राह्मण, प्रभु (हेमचंद्र) की इस विशिष्ट प्रतिष्ठाको सबन कर [निंदा करते हुए] बोला कि—

२००. जिसके (शरीर पर) लटकते हुए कन्धलमें करोड़ों यूकाओंकी पंक्ति किलबिजा रही है, दौलोंकी मलमंडलीकी दुर्गंधसे जिसका मुँह भरा हुआ है, जिसके नासा-वंशके निरोधसे पाठकी प्रतिष्ठा गिनगिनाट कर रही है और जिसके सिरकी टाळ पिलबिजा रही है वह ‘हेमड’ नामक

सेवड (श्रेताम्बर साधु) आ रहा है ।

इस प्रकारका अत्यधिक निंदास्पद कथन सुन कर, अन्तःकुटिल पर बाहरसे सरल दिखाई देनेवाले तिरस्कार पूर्ण वचनसे प्रमुने कहा कि—‘अरे पंडित ! तुमने क्या यह भी नहीं पढ़ा कि विशेषणका प्रयोग पहले किया जाना चाहिए। अब से ‘सेवड-हेमड’ ऐसा कहना (हेमड-सेवड) नहीं। सेवकोंने [यह सुन कर] उसे भालेकी नोकसे घोड़ा कर छोड़ दिया । राजा कुमार पालके राज्यमें शत्रुवध नहीं किया जाता था, इस लिये उसकी वृत्तिका छेद कर दिया गया । इसके बाद, कण-कणकी भीख माँग कर अपना प्राण धारण करता हुआ वह प्रमुनी पोषधशाळाके सामने आ कर बैठा । उस समय वहाँ पर अनादि भूपति नामक मठके तपस्त्रियों द्वारा अधीयमान योगशास्त्रका श्रवण करके, उसने फिर सच्चे हृदयसे यह काव्य कहा कि—

२०१. जिन अकारण दारुण मनुष्योंके मुँहसे आतंकका कारण ऐसा गाली-रूपी गरल (विष) निकला है उन जटा धारण करने वाले फटाधरों (सर्पों) के मंडलका, यह योगशास्त्र का वचनमृत अब उद्धार कर रहा है ।

ऐसे अमृतके समान नींठे उसके वचनसे, प्रमुना वह उपताप शान्त हुआ और उसकी वृत्ति फिर दुगुनी कर उसे प्रसादित किया ।

इस प्रकार यह वामराशि-प्रबंध समाप्त हुआ ।

*

सोरठके दो चारणोंकी कविताविषयक स्पष्टी ।

१६३. फिर कभी, एक बार, सुराष्ट्र मंडलके रहने वाले दो चारण, परस्पर दूहा-वियामें (दोहा छन्दकी रचना करनेमें) स्पष्टी करते हुए यह प्रतिज्ञा करके अणदिल्लपुरमें पहुँचे कि—‘हेमचंद्राचार्य जिसके दोहाकी सराहना करेंगे, उसे दूसरा हर्जाना देगा ।’ फिर उनमेंसे एकने, प्रमुकी समामें आ कर यह दोहा कहा—

२०२. हे हेमसूरि ! मैं तुम्हारे मुँह पर बारी जाऊँ । लक्ष्मी और वाणी (सरस्वती) का जो सापत्य (घर) भाव था वह, इसने नष्ट कर दिया । क्यों कि हेमचंद्रसूरि की समामें तो जो पण्डित है वे ही लक्ष्मीमान् है ।

ऐसा कह कर, उसके चुप हो जाने पर, फिर श्रीकुमार विहारमें आरतीके अवसर पर राजा जब प्रणाम कर रहा था और प्रमुने उसकी पीठ पर हाथ रखा हुआ था, उसी समय वहाँ प्रवेश करके दूसरे चारणने यह कहा—

२०३. हे हेमसूरि ! मैं तुम्हारे इस हाथ पर बारी जाऊँ—जिसमें अद्भुत शक्ति रही हुई है । नीचे नमे हुए जिस मुठ ऊपर यह पड़ता है उसके ऊपर सिद्धि आ बैठती है ।

इस प्रकारके अनुच्छिष्ट (मोच्छिद्र) भागगळे उसके वचनसे मनमें चमत्कृत हो कर राजा इसी दोहेको बार बार बुझने लगा । तीन बार बोझने बाद उसने कहा कि—‘क्या एक एक बार बोझने पर एक एक टाख दोगे !’—इस पर राजाने उसे ३ टाख दिखाया ।

इस प्रकार यह दो चारणोंका प्रबंध समाप्त हुआ ।

*

कुमारपालका तीर्थयात्रा करना ।

१६४) एक बार, राजा श्री कुमारपालने संघाधिपति हो कर तीर्थयात्राके लिये महोत्सवपूर्वक संव निकालना निश्चित किया और उसके देवालयका प्रस्थान-मुहूर्त साधित किया । इतनेमें देशान्तरसे आये हुए चर युगलने कहा कि—‘डाहल देशका राजा कर्ण आप पर चढ़ाई करके आ रहा है ।’ [इसको सुन कर] राजाके ललाट देश पर [पसीनेके] स्वेद बिंदु झलकने लगे । संघाधिपत्यके पदकी प्राप्तिका मनोरथ नष्ट हो जानेके भयसे वाग्मट मंत्रीके साथ आ कर प्रभुके चरणों पर गिर पड़ा और अपनी निंदा करने लगा । राजाके आगे इस प्रकार महामयका उपस्थित होना जान कर, प्रभुने कुछ सोच कर कहा कि—‘बारह पहरमें ही इस भयकी निवृत्ति हो जायगी [इस लिये कुछ चिन्ता न करो] । राजा विदा हो कर, कि—कर्तव्यविमूढ़सा बना हुआ क्यों ही बैठा था क्यों ही निर्णति समय पर आये हुए दूसरे चरयुगलने समाचार दिया कि—‘श्री कर्ण राजका [अकस्मात्] स्वर्गवास हो गया ।’ राजाने मुँहसे पानका त्याग करते हुए पूछा—‘सो कैसे ?’ उन्होंने कहा—‘हाथीके होदे पर बैठ कर राजा कर्ण रातको प्रवास कर रहा था तब उसकी नींदसे आँखें बन्द हो गईं । गलेमें लटकता हुआ सोनेका हार एक बरगदके दरख्तका डालीमें उलझ गया और उससे लींचा जा कर राजा मर गया । हम दोनों उसके अग्निसंस्कारके अनन्तर वहाँसे चले हैं । उनके ऐसा कहने पर, राजा तत्काल पौषशालमें आया और सूरिकी अत्यन्त ही प्रशंसा करने लगा जिसको किसी तरह उन्होंने रोका । फिर, ७२ सामंत और संपूर्ण संघके साथ, प्रभुके बताये हुए [धर्म और प्रवासके] दोनों प्रकारके मार्गसे धुन्धुक्कनगरमें आया । वहाँ पर प्रभुके जन्मस्थानमें स्वयं बनाये हुए १७ हाथ ऊँचे शो लि का विहारमें उत्सवादिका विधान करने पर जातिपिशुन ब्राह्मणोंने विग्र किया तो, उन्हें देश निकाला दिया गया और फिर शत्रुंजयकी उपासना की । वहाँ ‘दुःखखलो कम्मखलो’ (दुःखक्षयः, कर्मक्षयः) इस प्रकारके प्रणिधान दण्डक (सूत्रपाठ) का उच्चारण करता हुआ देवके पास विविध प्रार्थना करनेके अवसर पर किसी चरणके मुँहसे यह कथन सुना—

२०४. अहो यह जिनदेवका कितना मोलापन है ! जो एक फूलके बदलेमें मुक्तिका सुख दे देता है । इसके साथ किस बातका सोदा किया जाय ।

उसके नौ बार इस दोहेंके पढ़ने पर, राजाने उसे नौ हजारका दान किया । इसके बाद जब वह उज्जयन्त (गिरनार) के पास आया तो अकस्मात् पर्वतमें कंप हुआ देखा । तब श्री हेमाचार्यने राजासे कहा—‘बृद्धोंकी यह परंपरागत बात है कि, एक ही साथ दो पुण्यवन्त पुरुष इस पर चढ़ते हैं तो यह छत्रशिला गिर पड़ती है । यदि यह बात कहीं सत्य हो तो लोकापवाद होगा, क्यों कि हम दोनों ही [एकसे] पुण्यवान् हैं । इस लिये आप ही [पर्वत पर] नमस्कार करने जाँय, हम नहीं ।’ पर राजाने आप्रह्न करके प्रभुको ही संघके सहित ऊपर भेजा । स्वयं नहीं गया । श्री वाग्मटदेवको छत्रशिलाके उस रास्तेको छोड़ कर जीर्ण प्राकार (जूना गढ़) के रास्तेसे नई पया (पत्थरकी सीढ़ी) बनवानेके लिये आदेश दिया । पयाके बनानेमें ६३ लाख दाम लगे ।

इस प्रकार तीर्थयात्रापबंध समाप्त हुआ ।

*

कुमारपालका स्वर्णसिद्धिकी प्राप्तिकी इच्छा करना ।

१६५) एक बार, पृथ्वीको अतृण करनेकी इच्छासे, राजाने स्वर्णसिद्धिकी प्राप्तिके लिये श्री हेमचंद्राचार्य के उपदेशसे उनके गुरु श्री देवचन्द्राचार्यको, श्री संघ और राजाकी विज्ञप्ति भिजवा कर वहाँ बुलवाये । वे

उस समय तीव्र त्रतमें लगे हुए थे तो भी यह समझ कर कि संवका कोई बड़ा कार्य होगा, विधिपूर्वक विहार करते हुए और रास्तेमें किसीसे ज्ञात न हो कर अपनी ही [पुरानी] पीपलशाडामें आ कर ठहर गये । राजा तो उनकी अगवाणी करनेके लिये सजावट करा रहा था इतनेमें सूत्रिने उसे सूचित किया तो वह वहाँ पर आया । तब राजा प्रभृति समस्त श्रावकोंके साथ प्रभुने द्वादशानर्त पूर्वक उन गुरुको प्रणाम किया । उन्होंने जो उपदेश-वचन कहे वे उन दोनोंने (राजा और सूत्रिने) सुने । फिर गुरुने संवका कार्य पूछा । इस पर सभा विसर्जन करके पर्देकी ओटमें श्रीहेमाचार्य और राजाने उनके चरणों पर गिर कर सुवर्ण-सिद्धिके वतानेकी याचना की । श्रीहेमाचार्यने कहा कि—जब मैं बालरू था तब आपने किसी काठ ढोने वालेके पाससे एक बल्ली (लता) ली थी और आगेके आदेशसे, अग्निमें जलाए हुए तांबेके टुकड़ेको उसके रसमें भिगोने पर, वह सोना हो गया था । उस लताका नाम और संकेत आदि वतानेकी कृपा कीजिये । उनके ऐसा कहने पर गुरुने श्रीहेमचंद्रको मोक्षसे दूर टेल दिया और बोले कि 'वृद्ध योग्य नहीं । पड़े मूँगेके जूस (मूँगेकी दाढ़के पानीके) समान जो [हलकी] विद्या तुझे दी थी उसीसे तुझे [इतना] अजीर्ण हो गया है, तो फिर तुझे मंदाग्नि रोगीको यह मोदक जैसी [भारी] विद्या कैसे दूँ ? ' इस प्रकार उन्हें निषेध करके, राजासे कहा— 'तुम्हारा ऐसा भाव्य नहीं है कि संसारको अमृत करने वाली विद्या सिद्ध हो जाय । और फिर, जीव-हिंसाका निवारना और पृथ्वीको जिनमन्द्रिरोसे मंडित करना आदि पुण्यकार्यसे तुम्हारे दोनों लोक सरल बन गये हैं, अब इससे अधिक और क्या चाहते हो ? ' यह कह करके, उसी समय वे वहाँसे विहार कर गये ।

इस प्रकार सुवर्णसिद्धिके निषेधका यह प्रबंध समाप्त हुआ ।

*

एक बार राजाके पूछनेपर प्रभुने उसके पूर्व जन्मका सारा वृत्तान्त कहा ।

*

मंत्री चाहड़का दानी पना ।

१६६) इसके बाद, किसी समय, राजाने संपादलक्षके राजा पर चढाई के जानेके छिपे सेना सजित की । श्रीवाग्मट मंत्रोंके छोटे भाई चाहड़मंत्रोंको, अत्यधिक दान करते रहनेके कारण दोष-युक्त होने पर भी उसे खूब सिखामन दे कर, सेनापति बनाया । वह प्रयाग करके दो-तीन पड़ाव दूर गया ही था कि बहुतसे याचक इकट्ठे हो कर उसके पास आये तो उसने कोपाप्यक्ष (खजांची) से १ लाख मुद्रायें माँगीं । पर राजाकी आज्ञा न होनेसे जब वह नहीं देने लगा, तो सेनापतिने उसे चावुकके प्रहारसे मार कर सेनासे निर्वासित कर दिया और फिर स्वयं यथेच्छ दान दे करके याचकोंको प्रसन्न किया । चौदह सौ सादणियों पर चढ़े हुए २८०० सुभट्टोंके साथ ले कर रास्तेमें कुछ ही पड़ाव करके बम्बेरा नगरके किलेको जा बेरा । वहाँ पर नागरिकोंसे यह सुन कर, कि उसी रातको सात सौ कन्याओंके विवाह होने वाले हैं, उस रातको बैसा ही पढ़ा रहा । दूसरे दिन किले पर दखल कर लिया । वहाँ पर सात करोड़का सोना तथा ग्यारह हजार घोड़ियोंकी प्रति हुई जिसकी सूचना शीरगामी आदमियों द्वारा राजाके पास भिजवा दी । स्वयं उस देशमें कुमारपाल राजाकी आज्ञा किया कर और अपने अधिकारी नियुक्त करके लौट आया । पत्तनमें प्रवेश करके राजमहलमें आ कर राजाको प्रणाम किया । राजाने समुचित आलापके साथ, उसके गुणसे रजित हो कर भी, इस तरह कहा कि—

* पूर्व जन्मके वृत्तान्तवाला यह प्रबंध इस ग्रन्थमें नहीं दिया गया । यह पत्रिक एक ही पुष्पनी प्रतिमें लिखी हुई मिली है जिसका सूचन शास्त्री दीनानाथने अपनी उस पुष्पनी आशुचिमें किया है । पुष्पवन प्रकथनप्र, प्रकथनकोर, कुमारशास्त्रियर संग्रह आदि ग्रन्थोंमें यह प्रकथन मिलता है ।

‘तुममें जो यह स्थूल-लक्ष्यता बाला बडा भारी दोष है वही एक प्रकारसे तुम्हारा रक्षामंत्र है। नहीं तो लोमोंकी नजर लग कर तुम खड़े ही खड़े फट पड़ो। तुम जो व्यय करते हो वह तो मैं भी कर सकनेमें समर्थ नहीं हूँ।’ राजाकी यह बात सुन कर उसने कहा कि—‘महाराजने जो कहा वह यथार्थ ही है। ऐसा व्यय महाराज सचमुच नहीं कर सकते। क्यों कि महाराज पितृपरंपरासे तो राजाके पुत्र हैं नहीं। और मैं तो खुद महाराजका पुत्र हूँ। अतः मैं इतना अधिक अर्थव्यय कर सकता हूँ।’ उसकी इस बातसे चाहे राजा खुश हुआ हो या नाराज,—वह तो कसौटी पर कसे हुए सुवर्णकी कान्तिको धारण करता हुआ, अनमोल हो कर, राजासे विदा ले कर अपने स्थान पर पहुँच गया।

इस प्रकार यह राजघरट्ट चाहदका प्रबंध समाप्त हुआ।

*

१६७) उसी प्रकार उसका छोटा भाई, जिसका नाम सोलाक था, उसने ‘मण्डलीक सत्रागार’ ऐसा विरुद धारण किया था।

कुमारपाल द्वारा राणा लवणप्रसादका भविष्य कथन।

१६८) इसके बाद, एक बार, आनाक नामक अपने मौसरे भाईके सेवागुणसे सन्तुष्ट हो कर राजाने उसे सामान्त-पद प्रदान किया। तो भी वह तो उसी तरह सेवा करता रहा। एक बार, दो पहरके समय, राजा जब चन्द्रशालामें पलंग पर बैठा हुआ था तब वह भी उसके सामने बैठा था। उस समय सहसा किसी नौकरको वहाँ आते देख राजाने पूछा कि—‘वह कौन है?’ आनाक ने देखा तो वह उसीका नौकर मालूम दिया। उस नौकरका इशारा पा कर वह वहाँसे बाहर निकल कर कुशल समाचार पूछने लगा, तो नौकरने उससे पुत्रजन्मकी बधाई माँगी। इस समाचारसे उसका चेहरा सूर्य जैसा चमक उठा और फिर उसे विदा करके अपने स्थान पर आ बैठा। राजाके यह पूछने पर कि क्या बात है? तो उसने कहा कि—‘महाराजके [सेवकके] घर पुत्र हुआ है।’ यह सुन, राजा अपने मनमें कुछ सोच कर, प्रकाश भावसे बोला—‘पुत्रजन्म निषेदन करनेके लिये यह चाकर जो वेत्रधारियोंकी बिना बाधाके ही यहाँ तक आ पहुँचा सो इससे जाना जाता है कि अपने पुष्पके प्रभावसे यह गूर्जर देशका राजा होगा, पर इस नगरमें और इस धवलगृहमें (राजमहलमें) नहीं। क्यों कि तुम्हें इस स्थानसे उठा कर इसने पुत्रोत्पत्तिकी बधाई दी है इस लिये इस नगरका राजा नहीं होगा।’

इस प्रकार विचार चतुर्मुख श्री कुमारपाल देवद्वारा निर्णीत
लवणप्रसाद राणाका प्रबंध समाप्त हुआ।

*

२०५. अपने आज्ञावर्ती ऐसे अठारह बड़े देशोंमें, संपूर्ण चौहद वर्ष तक जीवहत्याका निवारण करके, और अपनी कीर्तिके स्तम्भके समान १४ सौ जैन विहारोंका निर्माण करके जैन राजा कुमारपालने अपने सब पापोंको क्षय कर दिया।

[१२५-७] कर्नाटक, गूर्जर, लट, सीराष्ट्र, कच्छ, सिन्धु, उच्च, भंभेरी, मरुदेश, माल्य, कोंकण, कीर, जांगलक, सपादलक्ष, मेवाड़, डौली (दिङ्गी) और ब्राह्मण इतने देशोंमें कुमारपाल राजाने प्राणियोंको अभयदान दिया और सातों व्यसनोंका निषेध किया। इदतीवन (अपुत्र कुटुम्बके धन) का ग्रहण मना किया और न्यायपट्टा बना कर प्रजाको संतुष्ट किया।

*

हेमचन्द्र सूरिको लूना रोग लगना ।

१६९) अब एक बार, कच्छप राज छक्षराज की महासती माताने जो मूलराज को शाप दिया था कि उसके वंशजोंको लूना रोग हो जाया करेगा; तदनुसार, कुमार पाछने जब गृहस्थ धर्म (ध्रावकपन) के व्रत ग्रहण किये तब उसने अपना राज्य गुरु श्री हेमचन्द्रको समर्पण कर दिया था, इसलिये उसी छिद्रसे (इस राज्यसम्बन्धके छलसे) सूरिको भी वह लूना रोग संक्रामित हुआ । इसे देख सभी राजलोकके साथ राजा दुःखित हुआ, तब प्रभुने प्रणिधानसे अपनी आयु प्रवृत्त समझ कर अष्टाङ्ग योगाम्ब्यासके द्वारा, लीडा (क्रीडा) के साथ उस रोगको नष्ट कर दिया ।

१७०) किसी समय, कदली पत्र पर आरूढ़ किंसा योगीको देख कर विस्मित बने हुए राजाको प्रभुने भूमिसे चार अंगुल ऊपर अधर रह कर ब्रह्मरूपसे निकलता हुआ तेजःपुञ्ज दिखाया ।

*

हेमचन्द्रसूरि और कुमारपालका स्वर्गवास ।

१७१) चौरासी वर्षकी अवस्थाके अन्तमें प्रभुने अपना अन्तिम दिन सर्पाप आया समझ कर, अनशन पूर्वक अन्त्याराधन क्रिया प्रारंभ की । उसे देख कर दुःखित हुए राजाको प्रभुने कहा कि — ' तुम्हारी आयु भी अब ६ महीना ही बाकी है । सन्तानामात्रके कारण अपने वर्तमान रहते ही अपनी सब उत्तर क्रिया कर-करा लेना । ' यह आदेश दे कर दशम द्वारसे उन्होंने अपना प्राणत्याग कर दिया । फिर इसके बाद प्रभुके संस्कार स्थान पर, यह समझ कर कि, उनके देहकी भस्म भी पवित्र है, राजाने तिलक करके नमस्कार किया । इसके बाद सभी सामंत और नागरिक लोगोंने वहाँ की मिट्टी छे छे कर तिलक करना शुरू किया जिससे वहाँ पर गङ्गा हो गया । वह गङ्गा आज भी ' हेम खड्ड ' नामसे प्रसिद्ध है ।

१७२) अब फिर, राजा प्रभुके शोकमें विरुल हो कर आँखोंमें आँसू भर भर रोने लगा जिस पर मंत्रियोंने उसे तैसा न करनेकी विज्ञप्ति की, तो वह बोला — ' मैं उन प्रभुके लिये शोक नहीं कर रहा हूँ जिन्होंने अपने पुण्यसे उत्तमसे उत्तम लोक अर्जित किया है; मैं तो अपने इस सर्वथा त्याग्य ऐसे सप्ताङ्ग राज्यके लिये शोक कर रहा हूँ, कि राज्यपिण्ड दोपसे दूषित होनेके कारण मेरा पानी भी इन जगद्गुरुके अंगमें नहीं लगा — ' इस प्रकार प्रभुके गुणोंको स्मरण करता हुआ चिरकाल तक विषाप करते रहा और अन्तमें प्रभुके कहे हुए दिन पर उन्हींकी उपदिष्ट विधिसे समाधि पूर्वक मर कर उस राजाने स्वर्गलोक अलङ्कृत किया ।

*

यहाँ पर P प्रतिमें निम्नोद्धृत श्लोक अधिक प्राप्त होते हैं—जो सोमेश्वरकी कीर्तिकौमुदीके हैं—

[१२८] पृथु आदि पूर्व राजाओंने स्वर्ग जाते समय जिस राजाके पास अपने गुणरूपी रत्नोंको मानों न्यासके रूपमें रख दिया था ।

[१२९] इस राजाने न केवल युद्धक्षेत्रमें अपने बाणोंसे मात्र शत्रुओंको ही जीत लिया था, किंतु अपने लोकप्रीतिकर गुणोंसे इसने पूर्वजोंको भी जीत लिया ।

[१३०] राग और रतिते रहित, ऐसे (अथवा भीतरागमें प्रीतियाले) इस तृदेवकी, मृतोंके धनको छोड़ देनेके कारण, देवताकी नाई अपृत्तार्थता सिद्ध हुई । (क्यों कि देवता अमृतके अर्धी होते हैं, और यह मृतका अर्थ नहीं लेता था ।)

[१३१] इस राजाने तलवारकी धारमें नवाई हुई वीरोंकी श्री (लक्ष्मी) ही ग्रहण की, किंतु आँसूकी धारासे धुली हुई कायरोंकी (और निरपत्य जनोंकी) श्री नहीं ली ।

- [१३२] इसने कर्णार्थी तो वीरोंके भी सामने अपने गौर उठाये, पर उजयी शिरोके सामने तो यह अपना मुख ही नीचा कर देता था ।
 - [१३३] छदम (हाथी) में उभरे हुए निम्नके माणसे क्राव्य हो कर, नीमसके सजाने तो अपना गिर भूमण्डा ही पर उसकी प्रबलता करने वाले दूरसेके भी अपना गिर भूमण्डा ।
 - [१३४] भी क्षण देस का भेदा, जो गारे मरके सतमय मृदुपती प्रभासे अकालित देसे अपने गिरको न भयाना जाता तो इस सजाने अपने माणोंके उभके गिरको नुकसे नुकसे कर दिया ।
 - [१३५] सामनस हो कर गिर सजाने युद्धोंके बाजाज और मति का लुंम सजानोंके गिरोंको, नगरोंके दोनो कुर्चीकी तब मध्य किया ।
 - [१३६] गिर सजाने दक्षिण देसके सजाने जीत कर उभरे देस द्विप (हाथी) मध्य गिरे । माणों के इस उभरे कि उभके गराते वम हम गिरको मम-निपदु-भयार्थी ।
 - [१३७] सजानोंकी पहिलोंके कुमामकको विचार (विगत-वार) भयाने हुए निम सजाने मदी-मककको उद्वेगविदार (जीम-दिद) वाज भयाना ।
 - [१३८] गिरने पारुआ मदीपात्रों और मृणको सुंभके दवाने वाले पदुओंके वाम माणों प्रायिम हो कर ही उभम अविद्या तलको मध्य किया ।
- १७३) गं० ११९०, गे [१२३० तक] ३१ वर्ष तक ही कुमार पात्र ने राज्य किया ।

*

अजयपाण्डवा राज्याभियंका ।

१७४) गं० १२३० वर्षों अजय देव का सम्यागिपेक हुआ । (इस सजाने वर्षोंके कुछ निरुद्ध श्रोता भी १ आरसेके इस प्रकार पाये जाते हैं --)

- [१३९] इस [कुमारपात्र] के मार कडमदुपके समान अजयपात्र नामक सजा हुआ गिरने मृणसका संभवे कर दिया ।
- [१४०] गिरने नीमस देस (गे सजा) के सके पर गेद लप कर उभरे दूरसेके सोनेके मककिका (मडकी-पाठकी गेमी) और कई मम हाथी मध्य किया ।
- [१४१] उदास देसके युद्धोंकी भी मारना करने वाले गिरे सजाने, परदुसामकी तब, सत्रियोंके मकके मोई घुई घुई युद्धोंके श्रोत्रियोंकी मकका पात्र भयाना ।
- [१४२] गिर सजाने तीनों मण (-सर्ग, अर्ग, काम) निमदान देनेके, गिर सजानोंके दूध देनेके और गिर शिरोके विमव करनेके, समान हो कर रहे ।
- [१४३] सजानोंके गेपयको पाण्य करने वाले [उम राज्य भादकके] दालदु (ईद) [का अभिनय करने वाले इस सजा] के अंके जंम (मर जाने) पर इसके पुत्र मृणस नने नमत्तका अभिनय किया ।

*

अजयपाण्डवा तीन सन्दिर्लिका भाषा करमा ।

१७५) यह अजय देव जब युद्धोंके बनाने मंदिरोंके मुद्रणके उभा वा शीक्य नामक कोदुकी, सजाने सामने नादकता प्राप्त उपलब्ध कर, उभके, अपने ही दक्षिण सोनी करिण कर, युद्धके बने हुए गीच

देवमंदिर पुत्रोंके हवाले किये और यह कहा कि—‘भेरे मरे बाद भक्तिपूर्वक इनकी खूब देख भाल रखना’—ऐसा कह कर ज्यों ही वह अन्तिम दशाकी प्रतीक्षा करता है त्यों ही उसके छोटे लडकैने उन मन्दिरोंको तोड़-फोड़ डाला। तब उसका शब्द सुन कर वह बोला—‘अरे पुत्राधम, श्रीमान् अजयदेव ने भी पिताके परलोक जानेके बाद, उनके बनाये धर्मस्थानोंको तुड़वाया, और तू तो अभी भेरे जांते ही इन्हें तोड़ रहा है; इस लिये तू तो अधमसे भी अधम हुआ’। उसका यह प्रसङ्गाचित आलाप सुन कर राजा लज्जित हुआ और उस कुकार्यसे निवृत्त हुआ। उस दिनके बाद बचे हुए श्री कुमार पाल के [कुछ] विहार आज भी दिखाई देते हैं। श्री तारङ्ग दुर्गमें (तारंगा पहाड) के अजितनाथको अजयपालके नामसे अंकित कर धूर्तने (!) इस उपायसे बचाया।

*

अजयपालका कपर्दी मंत्रीको मरवा डालना।

१७६) बादमें अजयदेवने कपर्दी मंत्रीको महामात्यका पद लेनेके लिये अत्यन्त प्रार्थना की। उसने यह कह कर कि—‘प्रातःकाल शकुन देख कर उसकी अनुमतिसे प्रभुके आदेशका पाठन करूंगा’ वह शकुन गृहमें गया। फिर दुर्गादेवासे माँगे सप्तविध शकुनको पा कर पुत्र अक्षत आदिसे देवाँकी पूजा की। अपने आपको कृतकृत्य समझ कर जब नगरके दरवाजेके पास आया तो ईशान-कोणमें वृषभको नाद करते देखा। यह देख कर मनमें अत्यन्त प्रसन्न हुआ और अपने निवास स्थान पर आया। भोजन करने बाद, उसके मरुदेशीय वृद्ध अंगरक्षरुने शकुनका स्वरूप पूछा। इस पर कपर्दीने उन शकुनोंका स्वरूप कहा और उनकी प्रशंसा की। तब मरुवृद्धने कहा—

२०६. नदीको उतरते समय, विषम मार्गमें चलते समय, दुर्गमें, आसन भयके अवसर पर; वी निपपक कार्यमें, लड़ाईमें और व्याधिमें शकुनोंकी विपरीतता श्रेष्ठ कही जाती है।

इस प्रमाणसे, आसन संकटके कारण मतिभ्रंश हो कर आप प्रतिकूलको भी अनुकूल समझ रहे हैं। वृषभको आपने शुभ मान लिया है, पर वह भी, आपकी मृत्युसे शिव [धर्म] का अम्युदय होना समझ कर उनका वाहन होनेके कारण गर्जा है। उसकी इस [सब] बातकी उसने उपेक्षा की तो वह [खिल हो कर] उससे विदा ले कर तीर्थयात्राके लिये चला गया। फिर कपर्दी राजाकी दी हुई [महामात्य पदकी] मुद्रा ग्रहण करके महान् उत्सवके साथ अपने घर आया। राजाने रातकी विश्राम करते हुए उसे गिरफ्तार किया और समानप्रतिष्ठा बाटने उसका अपमान करना शुरू किया।

२०७. जो सिंह कभी हाथीके कुंभस्थल पर पाँव दे कर गजमुक्ताओंका दलन करता था, वही विधिवश आज शृंगालोंकी लातोंका अपमान सहता है।

यह सोचता हुआ, [तब लोहके] कड़ाहमें डाले जाने पर वह पंडित इस प्रकार काव्य पढ़ते पढ़ते मार डाला गया—

२०८. याचकोंको करोड़ोंकी कीमतके, दीपकके समान कपिश वर्णवाले सुवर्णका दान दिया; प्रतिवादियोंकी शापके अर्थसे गर्भित ऐसी वाणीको शापार्थमें जीत लिया; उखाड़ कर फिरसे राज्य पर बिठाये हुए राजाओसे शतरंजकी तरह क्रीडा की—[इस तरह] मैंने अपना कर्तव्य कर लिया है। अब अगर मिथिकी [ऐसी] याचना है तो उसके लिये भी हम तैयार हैं।

इस प्रकार यह मंत्री श्री कपर्दीका मन्वन्ध समाप्त हुआ।

*

महाकवि रामचन्द्रकी हत्या ।

१७७) इसके बाद, सौ प्रबन्धोंका कर्ता [महाकवि] रामचंद्र उस नीच राजाके द्वारा [मार डालनेके लिये] जलती हुई ताम्रपट्टिका पर बिठाया जाने लगा तो उसी अवस्थामें वह यह कहता हुआ कि—

२०९. जिसने सचराचर पृथ्वीपीठके सिर पर पैर रखा उस सूर्यका अब अस्तगमन होता है तो वह चिरकालके लिये हो ।

अपने दाँतोंसे जीभ काट कर मृत्यु प्राप्त हुआ और फिर उस मरे हुएको ही उसने मार डाला ।

इस प्रकार रामचंद्रका प्रबन्ध समाप्त हुआ ।

*

मंत्री आम्रभटका लडने हुए मरना ।

१७८) इसके बाद, राजपिता मह श्रीमान् आम्रभटके तेजको न सह सकने वाले सामन्तोंने अवसर पा कर उसकी निन्दा करते हुए राजाको उससे प्रणाम करवानेके लिये बाधित किया तो उसने यों कहा कि— 'देव-बुद्धिसे श्री वीतराग जिनेंद्रको, गुरु-बुद्धिसे श्री हे मा चार्थ महर्षिको, और स्वामि-बुद्धिसे श्री कुमारपालको ही इस जन्ममें मेरा नमस्कार हो सकता है ।' उस [वीरके], जिसके शरीरके सातों धातु जैन धर्मसे चासित थे, ऐसा कहने पर, राजा रुष्ट हुआ और उसने कहा कि—'लडनेके लिये तैय्यार हो जाओ' । उसकी यह बात सुन कर, मंत्रीने जिनदेवकी पूजा करके [मनमें] अनशन व्रत ग्रहण किया और संग्रामदीक्षाका स्वीकार करके अपने योधाओंके साथ मकानसे बाहर निकला । फिर राजाके आदमियोंको भूसेकी तरह उड़ाता हुआ घटिकागृह (राजद्वार) तक आया और उन पापियोंके संसर्गसे जनित कल्मषको धारातीर्थमें धो कर स्वर्गलोक सिंघार गया । उस समय वहाँ उसको देखनेके लिये आई हुई अप्सरायें 'मैं पहले वरूंगी, मैं पहले'—इस तरह कह रही थीं ।

२१०. धन पानेके लिये—भाट होना अच्छा है, रंडीवाज होना अच्छा है, वेद्याचार्य होना अच्छा है और पूरा दगावाज होना भी अच्छा है, पर दानके समुद्र उदयन के पुत्र (आम्रभट) की मृत्युके बाद चतुर आदमियोंको भूमण्डल पर किसी तरह भी विद्वान् होना अच्छा नहीं ।

२११. मनुष्य अपने अत्युग्र पुण्य और पापका फल, यहाँ पर, तीन वर्षमें, तीन मासमें, तीन पक्षमें या तीन दिनमें ही प्राप्त कर लेता है ।

इस पुराणके प्रमाणानुसार उस दुष्ट राजाको [एक दिन] वयजलदेव नामक प्रतीहारने छुरा भोंक कर मार डाला । वह धर्मस्थानोंको गिराने वाला पापी कीड़े मकोड़ों द्वारा भक्षित हो कर प्रत्यक्ष नरकका अनुभव करके मर गया ।

सं० १२३० से ले कर [१२३३ तक] तीन वर्ष इस अजपदेव ने राज्य किया ।

*

१७९) सं० १२३३ से ले कर [१२३५ तक] २ वर्ष बाळमूलराज ने राज्य किया । इसकी नाता नाइकि देवी ने, जो परमर्षी राजाकी लडकी थी, गोदमें अपने पुत्र-शिष्य राजा-को, ले कर 'गादराचट' नामक घाट पर स्टेच्छ राजासे युद्ध किया और सौभाग्य वश अकालमें ही आकाशमें बादल हो आनेके कारण उसको देवी सहायता मिल गई जिससे शत्रु पराजित हो गया ।

[१४४] समर-भूमिमें रेंकते हुए जिस राजाने मारों बाल्य कालकी चपलतासे ही गुरुभक्तकी सेनाको छिन्न-भिन्न कर दिया ।

[१४५] जिसके कांटे हुए म्लेच्छ कंठाटके स्पटकी ऊंचाईको देखता हुआ अद्भुत गिरि अपने पिता प्राण्यगिरि (दिमालय) की याद भूल जाता है ।

[१४६] विधाताके, उस कल्पद्रुमके अंकुरको शीघ्र ही नष्ट करनेके बाद, उसका छोटा भाई श्री भीम नामक [नया] पौधा उगा ।

*

१८०) सं० १२३३ से छे कर [१२९६ तक] ६३ वर्ष श्री भीम देव ने राज्य किया ।

[१४७] यह भीम राजा, जो राजहंसोंका दमन करने वाला है कदापि उस भीमसेनके समान नहीं कहा जाता जो बक्रापकारी (बक्रामुखा नाश करने वाला) था ।

यह राजा जब राज्य कर रहा था तो सोहड नामक माछव देश का राजा गूर्जर देश को विव्सत करनेके लिये सीमान्त पर आया । तब इसके प्रधानने सानने जा कर इन प्रकार कहा—

२१२. हे राज-मूर्ख (तुम्हारा) प्रताप पूर्व [दिशा] में ही शोभित होता है । पश्चिम दिशामें आने पर तुम्हारा बड़ प्रताप अस्त हो जाता है * ।

इस विरुद्ध वाणीको सुन कर बड़ वापस लौट गया । इसके बाद उसने अपने लड़केसे, जिसका नाम श्रीमान् अर्जुन देव था, गूर्जर देश का भंग कराया ।

*

वीरधवलका प्रादुर्भाव ।

१८१) श्री भीम देव के राज्यकी चिन्ता करने वाला (राज्य व्यवस्था संभालने वाला) व्याघ्रपट्टीय नामसे प्रसिद्ध श्रीमान् आनाक का पुत्र लवण प्रसाद चिरकाठ तक राज्य करता रहा । साम्राज्यके भारको धारण करने वाला उसका पुत्र हुआ श्री वीर धवल । उसकी माता मदन राजीने, अपनी बहनकी मृत्युके बाद यह सुनकर कि—अपने देवराज नामक पट्टिक (पटेल) बहनेई जिसकी बड़ी भारी आमदनी है लेकिन अब जिसका निभार नहीं हो रहा है, राजा लवण प्रसाद से पूछ कर अपने शिशुपुत्र वीर धवलको साथ ले कर वहाँ गई । उस बहनेईने उसके गुण और आहतिको शृङ्गीय देख कर, उसे अपनी ही गृहिणी बना लिया । लवण प्रसाद ने जो यह वृत्तान्त सुना, तो उसे मार डालनेके लिये रातको उसके घरमें घुसा और एकान्तमें छिप कर जब वह अस्तर खोज रहा था, तब वह पटेल भोजन करनेके लिये बैठा और [पासमें शीतपत्रको न देख कर अपनी गृहिणीसे] यह कहने लगा कि वीर धवल के बिना मैं नहीं छाऊंगा । इस तरह शूर आम्रिके बाद उसे ले आ कर एक ही धाडीमें उसके साथ राने लगा । तब अरुन्धत्, साध्यावृत्तकी तरह सामने उपस्थित उस आरमोंको देख भयसे उसका मुँह काटा हो गया । पर उस (लवणप्रसाद) ने कहा कि—‘मन डरो, मैं तुम्हें को मारने आया था पर इन मेरे वीरधवल लड़के पर, तुम्हारी ऐसी कसूरता अपनी साध्यावृत्तोंको देख कर, उस आम्रिको मैंने त्याग दिया है ।’ ऐसा कह कर उसके द्राघ छहल हो कर बैसे आया था जैसे ही खटा गया ।

१८२) वीर धवल के उस अजर निवासे उदयन, सौमन, श्रीमुण्डराज आदि शृङ्खलश्रीय भाई हुए जो अपने वीर बलसे मुरनतत्रये सिद्धात हुए ।

● कथनसे मुझसे पश्चिम दिशासे है यह भिन्ने यह भेदने वह पश्चिम दिशा गया है कि साध्यावृत्त राज वीर मुझसे आरम्भ हो उलझा ठेक नष्ट हो गयता ।

१८३) इसके बाद, वह वीर धवल क्षत्रिय, जब कुछ कुछ समझने लायक हुआ तो अपनी माताका यह वृत्तान्त जान कर लज्जित हुआ और अपने ही पिताकी सेवामें आ कर रहा। वह जन्मसे ही उदारता, गंभीरता, स्थिरता, नीति, विनय, शील्य, दया, दान और चतुरता आदि गुणोंसे युक्त था। उसने अपनी शाहीनतासे किसी कंटक प्रस्त भूमिको अपने अधिकारमें किया और फिर पिताने भी कृपा करके कुछ देश दे दिया। चाहड़ नामक ब्राह्मणको मंत्री बना कर वह राजकारभार चढाने लगा। वहाँ पर, उस समय, आये हुए प्राग्वाटवंशी पत्तन निवासी मंत्री तेजपाल के साथ उसकी मित्रता हुई।

*

मंत्रीश्वर वस्तुपाल तेजपालका प्रबन्ध।

१८४) अब इस प्रकरणमें मंत्री तेजपाल के जन्म वृत्तान्तका प्रबंध प्रस्तुत किया जाता है। एक बार, पत्तन में भट्टारक श्री हरिभद्रसूरि का व्याख्यान हो रहा था। वहाँ पर मंत्री आशराज बैठा हुआ था। उस समय एक कुमारदेवी नामकी अतीव रूपवती बालविधवा स्त्री वहा पर आई जिसको वे आचार्य बारंबार देखने लगे। इससे आशराजका चित्त उस पर आकर्षित हुआ। व्याख्यानके विसर्जन होनेके अनन्तर मंत्रीकी प्रार्थना पर गुरुने इष्ट देवताके आदेशसे कहा कि— 'इसके गर्भसे सूर्य और चंद्रमाके भावी अवतारको देखता हूँ, इस लिये इसके सामुद्रिकको बारंबार देख रहा था।' गुरुसे इस तत्त्वको जान कर मंत्रीने उसका अपहरण करके उसे अपनी प्रेयसी (पत्नी) बनाया। क्रमशः उसके पेटसे ज्योतिषेन्द्र (सूर्य और चंद्र) जैसे वस्तुपाल और तेजपाल नामक वे दोनों मंत्री अवतीर्ण हुए।

वीरधवलका तेजपालको अपना मंत्री बनाना।

१८५) किसी समय श्री वीरधवलने अपने राजकीय व्यापारके भारको प्रहण करनेके लिये उस तेजपालकी अम्यर्थना की, तो उसने पढ़े राजाको उसकी पत्नीके साथ अपने मकान पर भोजनके लिये निमंत्रित किया; और उस समय अनुपमाने राजपत्नी जयतलदेवीको कर्पूरके बने हुए अपने दोनों ताडङ्क (कर्णिकुल) तथा सोनेके बने हुए और बीच बीचमें मोती और मणियोंसे जड़े हुए कर्पूरमय, एकावली हारको उपहार रूपमें दिया। मंत्री जब उपहार देने लगा तो उसका निषेध करके, वीरधवल अपना राज्यकार्यभार उसके हाथोंमें समर्पण करता हुआ बोला कि— 'इस समय तुम्हारे पास जो धन है उसे, कुपित होने पर भी, मैं विश्वास पूर्वक कहता हूँ कि कभी प्रहण न करूँगा।' इस प्रकार पत्र पर प्रतिज्ञालेख लिख कर तेजपालको राज्यव्यापार संबंधी पञ्चाङ्ग-प्रसाद प्रदान किया।

२१३. जो विना करके खजाना बढ़ावे, विना मनुष्य-वध किये देश-रक्षा करे और विना युद्ध किये देशव्याप्ति करे वही मंत्री बुद्धिमान् कहलाता है।

मंत्री तेजपालका धर्मभावसम्मुख होना।

१८६) संपूर्ण नीतिशास्त्र और उपनिषदमें बुद्धिको निषिद्ध रखने वाला वह मन्त्री अपने स्वामीकी यशोवृद्धि करता हुआ, सूर्योदय कालमें विधिपूर्वक श्री जिनकी पूजा करता, और फिर चंदन और कर्पूरसे गुरुकी पूजा करता। अनन्तर द्वादश आवर्तन करके यथाऽनंतर प्रत्याख्यान ले कर रोज गुरुसे एक एक अपूर्ण श्लोक पढ़ा करता। राजकार्य करनेके बाद ताजी बनी हुई रसोईका आहार करता। एक बार, मुझाल नामक महोपासक, जो उसका निजी लेखक (गुमास्ता) था, एकान्तमें पूछने लगा कि— 'स्वामी सबेरे क्या टंडी रसोई खाते हैं या ताजी?' उसके ऐसा पूछने पर वह मंत्री समझा कि यह गैवार है। दो तीन बार उसके ऐसा पूछने पर

एक बार बड़े क्रोधसे 'पशुपाळ' कह कर उसे अपमानित किया। वह धैर्य धारण करके बोला—'दोनोंमेंसे कोई एक तो होगा ही। (अर्थात् या तो मैं गँवार हूँ या मेरी बातको नहीं समझने वाले आप गँवार होंगे) उसकी बचनचातुरीसे चित्तमें चमकृत हो कर मंत्रीने कहा—'विज्ञ! तुम्हारे उपदेशकी ध्वनिको मैं समझ नहीं सका। अब यथार्थ बात बताओ।' ऐसा आदेश पा कर वह वाग्मी बोला कि—'जिस रसमयी ताजी रसोईको आप खाते हैं वह पूर्वजन्मके पुण्यका फल है अतएव मैं उसे अत्यन्त शीतल समझता हूँ। जो हो, ये तो मैंने गुरुके संदेश वाक्य ही कहे हैं। तत्त्व तो वे ही जानते हैं, अतः वहाँ पधारिये।' उसकी यह बात सुन कर तेजपाळ मंत्री अपने कुछगुरु भट्टारक श्री विजयसेन सूरिके पास गया। गुरुसे गृहस्थ धर्मका विधि-विधान पूछा। उन्होंने उपासकदश नामक सप्तमाङ्गसे जिनकथित देवपूजा, आवरणक क्रिया, यतिदान आदि गृहस्थ धर्मका उपदेश दिया। तब उसने विशेषतापूर्वक देवपूजा, जैन मुनियोंको दान आदि देनेवाला धर्मकृत्य आरंभ किया। पूजाके समय चढाये हुए तीन वर्षतकके द्रव्यको निकाळा तो ३६ हजार हुआ उससे श्री नेमीनाथका प्रासाद बनवाया।

(यहाँ ८ प्रतिमें, निम्न लिखित, विशेष श्लोक लिखे हुए पाये जाते हैं—)

[१४८] मनुष्योंका अपहरण करने वाले समुद्रप्रवासी जनोंका निषेध करके जिसने पृथ्वी पर अपने धर्मका उदाहरण उपस्थित किया।

[१४९] छुआ-छूतके निवारणके लिये अलग अलग हृदवाली वेदी बना कर जिस (मंत्री) ने इस (स्तंभतीर्थ) नगरमें छंछके वैचनेका विधुव दूर किया।

[१५०] जिसने, जहाँ पर जो कुछ भी न्यून और जो कुछ भी नष्ट था उसे वहाँ पर पूरा किया। क्योंकि उच्चत पुरुषोंका जन्म रिक्त स्थानोंको पूरा करनेके लिये ही तो होता है।

[१५१] देवताओंके लिये जिसने ऐसे अनेक उपवन दान कर दिये थे जहाँ पर कामदेवको शिवके नेत्रोंकी अग्निका ताप स्मरण नहीं होता था।

[१५२] रंभा (१ केला, २ अप्सरा विशेष) से संभावित, वृषसे निषेधित तथा मनोज्ञ (१ सुंदर, २ मनको जाननेवाले) सुमनों (१ झुल्लों, २ देवताओं) के वर्गसे सुशोभित जिसके वनोंने स्वर्गके सौन्दर्यको ग्रहण किया था।

[१५३] हारीत (१ पक्षी विशेष, २ सृष्टिकार ऋषि विशेष) शुक्र (१ तोता, २ भागवतका ऋषि) चित्र-शिखण्डी (१ मोर, २ महाभारतका एक वीर) द्वारा संगृहीत जिसके उपाय धर्मशास्त्रके सधर्मा हो कर सुशोभित हुए।

[१५४] इतने सुमनोभाव (१ सुंदर मनोभाव, २ फूलका भाव) तथा अतुलनीय श्रीमद्भाको दिखाते हुए, स्वबंधुके बनोंको (बन्धुजगतिके पुष्पोंके बनोंको) अपने बन्धुओंकी नाई कर दिया।

[१५५] जिसके बनाये हुए तालाबोंमेंसे पानी ग्रहण करते हुए कासारण (भैंसे बैठ आदि पशु) समुद्रमेंसे पानी छेते हुए बादलकी नाई शोभा देते थे।

[१५६] जिस क्रियानिष्ठ पुण्यात्माने ऐसी कितनी ही बावडियों बनवाईं जिनके भीठे जलोंने अमृतको भी शिरस्कृत कर दिया।

[१५७] उसने पानी पीनेके लिये ऐसे प्याऊ बनवाये कि जिनका जल पी कर पथिकोंके मुख तो तृप्त हो जाते थे किंतु उनकी शोभा देख कर आँखें कभी तृप्त नहीं होती थीं।

[१५८] जिसने यहाँ पर (स्थंमतीर्थमें) भवसागरको पार करनेके लिये नौकारूप ब्रह्मपुरी बनवाई जिसमें पुरुष तो सामगान करते थे और नारियों उसका यशोगान करती थी ।

[१५९] अपने शुभ्र-ऐसे कीर्तिकूट रूप पटसे, दसों दिशाओंका वेष्टन करते हुए सप्त रूपसे, इसने मानों दसों दिशाओंको श्वेतांबर त्रती बनाया ।

[१६०] जिस तारितहानने ऐसी पौषधशाखायें बनाई जो भीतरसे तो श्वेतांबरोंसे (श्वेताम्बर यतियोंके निवाससे) और बाहर सुधा (चूनापोती) से विशुद्ध थी ।

[१६१] जिसकी पौषधशाखाओंमें बाँधिरहित ऐसे यति वास करते हैं जिनको आत्मभू (पुत्रजन्म तथा पुनर्जन्म) की कोई संभावना ही नहीं है ।

[१६२] वाग्देवीने प्रसन्नतापूर्वक जिस मंत्रोंको ज्ञानकी ऐसी आंख दी थी कि जिससे यह धर्मकी सूक्ष्म गतिको भी नित्य ही देखा करता था ।

वस्तुपालकी तीर्थयात्राका वर्णन ।

१८७) इसके बाद, सं० १२७७ सालमें सरस्वतीकण्ठामरण, लघुभोजराज, महाकवि, महाऽमाल्य श्री वस्तुपालने महायात्रा प्रारंभ की । गुरुके बताये हुए लग्नमें, उन्हींके द्वारा संघाविपति रूपसे अभिषिक्त हो कर वह जब देवालयके प्रस्थानका उपक्रम कर रहा था, तब दाहिनी ओरसे दुर्गादेवीका स्वर सुनाई दिया, जिसे स्वयं कुछ समझ कर, शकुन शाब्दके जानकारसे उसका विचार पूछा । मरुदेवके एक वृद्ध (शाकुनिक) ने कहा कि ' शकुन तो बड़ा भारी हुआ है ' । ' शकुनसे भी शब्द बलवान् होता है ' यह विचार करके नगरके बाहर आवास (तंडू) में देवालयको स्थापित किया । फिर उससे शकुनका विचार पूछने पर उस वृद्धने बताया कि, मार्गकी विषमतामें विपरीत शकुन श्रेष्ठ कहा जाता है । [वर्तमानमें] राजकीय अन्धाधुन्दीके कारण तीर्थ यात्राका मार्ग विषम हो रहा है । तथा जहाँ पर वह दुर्गा देख पड़ी थी, वहाँ किसी चतुर पुरुषको भेज कर उस प्रदेशको दिखवाइये । वैसा ही करने पर उस पुरुषने बताया कि—' यह जो बंदी (वाढेकी भीत) नई बनाई जा रही है उसके १३। हवें थर पर यह दुर्गा बैठी थी । ' यह सुन कर उस मरुवृद्धने कहा कि—' देवी आपको साढ़ी तरह यात्रा करनेकी सूचना करती है । ' अन्तिम आधी-यात्राका कारण पूछने पर उसने कहा कि—' इस अतुलनीय मंगलके अवसर पर वह कहना ठीक नहीं है । यथा समय सब निवेदन करूँगा । ' इस वाक्यके अनन्तर संघके साथ मंत्रोंने आगे प्रयाण किया । उस संघकी सब संख्या यों थी— १॥ हजार वाहन, २१ सौ श्वेतांबर, तान-सौ दिगम्बर, संघकी रक्षाके लिये १ हजार घोड़े, सात सौ ढाल साँढनियों और संवरक्षाके अधिकारी चार महासामन्त थे । इस प्रकार सारी सामग्रीके साथ मार्ग तै करके, श्रीपादलिङ्गपुरके अपने ही बनाये हुए श्रीमन् महावीर देवके चैत्यसे अलङ्कृत लडिता सरोवरके मैदानमें ठेप दिया । उस तीर्थ पर यथाविधि तीर्थपूजना करके मूल प्रासादमें सोनेका कण्ड्य, दो प्रौढ़ जिन मूर्तियों, श्री मोक्षपुरावतार श्रीमन्-महावीर चैत्य तथा उसके आरावक (यक्ष) की मूर्ति और देवकुटिका, मूल मण्डपके दोनों ओर दो दो चौकीकी कतार, शाकुनिका विहार तथा सत्यपुरावतार चैत्यके सामने चौड़ीके तोरण, श्रीसंघके योग्य कई मठ, सात बहनोंकी ७ देव कुटिकायें, नन्दीचरावतार-प्रासाद, इन्द्र मण्डप और उसमें हाथी पर चढ़े हुए लवण प्रसाद और वीरधवलकी मूर्तियों, वहाँ पर घोड़े पर चढ़ी सात पूर्ववोंकी मूर्तियों, सात गुरुमूर्तियों, उसीके निकटकी चौकीमें अपने दो बड़े नाई महं० मा ल देव और लिंगिग की आरावक मूर्तियों, प्रतोडी, अनुपना सरोवर, कपर्दि यक्ष-मण्डप और तोरण आदि बहुतसे धर्मस्थान बनवाये । इसी तरह नन्दीशरके कलाने (कारखाने) के लिये कंटडिया

पापाणके बने हुए सोलह खंबे पावक पर्वत परसे जलमार्ग द्वारा मँगाये । जब ये खंबे समुद्रके किनारे उतारे जाने लगे तो उनमेंसे एक स्तंभ इस प्रकार कीचडमें डूब गया कि खोजने पर भी न मिला । उसके बदले अन्य पापाणका स्तंभ लगा कर वह प्रासाद पूरा किया गया । दूसरे साठ समुद्रके पानीकी भरतीके सबबसे वही खंबा कीचडसे बाहर निकल आया । मंत्रीकी आज्ञासे वह खंबा उसकी जगह पर लागाया जाने लगा तो किसी पुरुषने आ कर कहा कि— ' प्रासाद फट गया है ' । यह निवेदन करनेको आये हुए पुरुषको भी उस मंत्रोंने सोनेकी जीम इनाममें दी । चतुर आदमियोंने पूछा कि ' यह क्या बात है ? ' इस पर मंत्रीने कहा कि ' इसके बाद अब धर्मस्थान ऐसे दृढ़ बनवाऊँगा कि युगान्तमें भी उनका पतन नहीं होगा । इसी लिये इसे पारितोषिक दिया गया है । ' फिर तीसरी बार मूळ समेत उखाड कर यह प्रासाद बनाया गया जो [अब भी] वर्तमान है । श्री पाछीताणा में भी उसने एक विशाल पीपधशाळा बनवाई । फिर श्रीसंघके साथ वह मंत्री उज्जयन्त (गिरनार) पहुँचा । वहाँ उसकी उपलव्यकामें तेजलपुरमें स्वयं एक नया वप्र (परकोटा) बनवाया और उसमें श्रीमद् आशराज विहार नामका मन्दिर तथा कुमार देवी नामका सरोवर भी बनवाया । उस निरुपम सरोवरको देखने बाद, जब नियुक्त पुरुषोंने कहा कि ' धवलगृह (महल) में पधारिये ' तो मंत्रोंने कहा कि श्री गुरुमहाराजके योग्य पीपधशाळा भी है या नहीं ? ' यह सुन कर कि वह बनाई जा रही है, तो वह निनयके अतिरुमणमें भीड़ गुरुके साथ, बाहर हो दिये गये आवास (डेरे) में ठहरा । प्रातःकाल उज्जयन्त पर आरोहण करके श्री शैवेय (जेमिनाथ) के चरणसुगलकी भली भौंति पूजा कर, स्वयं बनाये हुए श्री शत्रुंजयावतार तीर्थमें स्नान प्रभावनायें कर, तथा कल्याणत्रय चैत्यमें श्रेष्ठ पूजेपचारसे अर्चना करके वह मंत्री जब नीचे उतरा तो इन दो दिनोंमें वह पीपधशाळा तैयार हो चुकी थी । मंत्री गुरुको अपने साथ वहाँ ले आया । उन्होंने उन बनाने वालोंकी प्रशंसा की और पारितोषिक दान दे कर उनको अनुगृहीत किया । श्री पचन में प्रभासशे प्रभे चन्द्रप्रभ देवको प्रणाम करके प्रभावनाके साथ यथोचित पूजा की । फिर अपने बनाये हुए अष्टाद प्रासाद पर सोनेके कलशका समापेण करके, देवके पूजारियोंको दान दिया । क्योंकि ११५ वर्षकी अवस्था पाउे वृद्ध प्रवृत्तके मुँहसे यह सुन कर कि— ' यहाँ पर प्रभुश्री हेमाचार्य ने कुमारपाल नृपतिके सामने श्री सोमेश्वर देवको जगद्विदित रूपसे प्रत्यक्ष किया था ' उन (प्रभु) के चरित्रसे मनमें चकित हो कर बहोसे छेटा । रास्तेमें शिगधारियोंके असदाचारको देख कर उन्हें अन्न देनेका निषेध किया । यह सुन कर वायडीय गच्छ के श्री त्रिनदससूरि ने इस बातसे उसका अपपश समझ कर, अपने उपासकके पाससे उन्हें अन्नदान दिखाया । यह सुन कर यह मंत्री उनके दर्शन और अनुनयके लिये आया तो उन्होंने उसे उपदेश दिया कि—

२१४. धार जलके समान इन शिगधारियोंकी परिपूर्णतासे ही तो यह शासन (धर्म) रूप समुद्र गंभीरताको धारण कर रहा है ।
२१५. संविभ्र साधु भी इन शिगधारियोंकी अनुकन्दना करते हैं तो फिर धार्मिक और भवभीह पुरुषको उनकी पूजाकी चर्चा क्यों करनी चाहिए ।
२१६. प्रतिभाषापी (भावक) भी इनके सामने विपयका त्याग करते हैं इस लिये विपयगळे इन शिगधारियोंकी पूजाका मना करना तो विषेधवादी बात है ।
२१७. दो गोंग, शिगोदारीवियोंकी अकपीणा (विस्कार) करने हैं वे दुपयय दर्शन (संमदाय) के उच्छेदके पावसे अित होते हैं ।

। आवश्यक — वंदना निर्युक्तिमें कहा है कि —

२१८. तीर्थंकरोंके गुण उनकी प्रतिमा (मूर्ति) में नहीं हैं, यह निःशंसय जानता हुआ भी यह तीर्थंकर है ऐसा मान कर उसको नमस्कार करने वाला विपुल कर्मनिर्जरा (कर्मका नाश) प्राप्त करता है ।

२१९. इसी प्रकार, जिन देवके प्रज्ञापन किये हुए लिंग (वेद) को नमस्कार करना भी विपुल निर्जराका हेतु है । यद्यपि यह गुणहीन होता है तथापि अघ्यात्म शुद्धिके लिये उसे वन्दन करना उचित है ।

इस प्रकार उनके उपदेशसे अपने सम्यक्त्व रूप दर्पणको मांज कर विशेष रूपसे दर्शन (संप्रदाय) की पूजामें परायण हो, स्वस्थान पर आ कर ठहरा ।

मंत्री तेजपालका आवू पर मन्दिर बनवाना ।

१८८) ज्येष्ठ आता मं० लूणिग ने परलोक प्रयाणके अवसर पर यह धर्मव्यय मोंगा था कि — ' अर्जुन गिरि पर विमल वसहि का में मेरे योग्य एक देवकुलिका बनवाना । ' उसके मरने पर, वहाँके गोठियों (पुजारियों) से उस मंदिरमें भूमि न पा कर, विमल वसहि का के समीप ही चन्द्रावतीके स्वामीसे नई भूमि ले कर वहाँ पर तीनों भुवनके चैत्योंमें (मन्दिरोंमें) शलाका (अग्रगण्य) जैसा लूणिग वसहि का प्रासाद बनवाया । उसमें श्री नेमिनाथके त्रिबंकी स्थापना करके उसकी प्रतिष्ठा कराई । उस मन्दिरके गुण-दोषकी विचारणा करनेके लिये जावा लिपुरसे श्री यशोवीर मंत्रीको बुला कर मंत्री तेजपालने प्रासादके विषयमें अभिप्राय पूछा । उसने प्रासादके बनानेवाले स्थपति (कारीगर) शोभनदेवसे कहा — ' रंगमण्डपमें शालभञ्जिका (पुतली) की जोड़ीकी बिलास-घटना, तीर्थंकरके प्रासादमें सर्वथा अनुचित और वास्तुशास्त्रसे निषिद्ध है । इसी तरह भीतरी गृहके प्रवेश द्वारमें सिंहोंका यह तोरण देवताकी विशेष पूजाका विनाश करने वाला है । तथा पूर्वज पुरुषोंकी मूर्तियोंसे युक्त हाथियोंके सम्मुख प्रासादका होना, बनाने वालेके भविष्यके विनाशका सूचक होता है । इस विज्ञ कारीगरके हाथसे भी जो इस प्रकारके अप्रतीकार्य ये तीन दोष हो गये, यह भावी कर्मका दोष है । ' ऐसा निर्णय करके वह जैसे आया था वैसे ही चला गया । उसकी स्तुतिके ये श्लोक हैं —

२२०. हे यशोवीर, यह जो चंद्रमा है वह तुम्हारे यशरूपी मोतियोंका मानों शिखर है; और इसमें जो लंछन है वह इस यशकी रक्षाके लिये (किसीकी नजर न लग जाय इस लिये) किया गया रक्षा (राख) का ' श्री ' कार है ।

२२१. हे यशोवीर, शून्य जिनके मध्यमें हैं ऐसे ये विन्दु यों तो निरर्थक ही हैं; पर तुम रूप एक (अंक) के साथ हो जानेसे ये संख्यावान बन जाते हैं ।

२२२. हे यशोवीर, जब विधाताने चंद्रमामें तुम्हारा नाम लिखना आरंभ किया तो उसके पहलेके दो अक्षर (यशः) ही भुवनमें नहीं समा सके ।

[१६३] यशोवीरके निकट न कोई [कवि] माघ की प्रशंसा करता है न कोई अभिनंदका अभिनंदन करता है; और कालिदास भी उसके पास कलाहीन (निस्तेज) माध्यम देता है ।

[१६४] यशोवीर मंत्रीने सज्जनोंके साक्षात् (सम्मुख), मुखमें रही दांतोंकी ज्योतिके बहाने श्लाघी (सरस्वती) को और हाथमें रही हुई सोनेकी मुद्राके बहाने श्री (लक्ष्मी) को प्रकाशित किया ।

[१६५] इस चौहान नरेन्द्रके मंत्रीने वैसे गुण अर्जन किये जितसे ब्रह्मा और समुद्रकी पुत्रियों (लक्ष्मी और सरस्वती) को भी नियंत्रित कर दिया ।

[१६६] जहाँ लक्ष्मी है वहाँ सरस्वती नहीं है, जहाँ ये दोनों हैं वहाँ विनय नहीं है। पर है यशोवीर, यह बड़ा आश्चर्य है कि तुममें ये तीनों विद्यमान हैं।

[१६७] वस्तुपाल और यशोवीर ये दोनों सचमुच ही वाग्देवता (सरस्वती) के पुत्र हैं, नहीं तो फिर इन दोनोंका दान करनेमें एक ही जैसा स्वभाव कैसे होता।

इस प्रकार श्री शत्रुंजपादि तीर्थोंकी यात्राका प्रबंध समाप्त हुआ।

*

वस्तुपालका शंखराजके साथ युद्ध करना।

१८९) स्तंभतीर्थमें, सइद (सय्यद) नामक नौवित्तिक (जहाजी व्यापारी) से श्री वस्तुपाल की लड़ाई होने पर उसने मृगपुरसे शंख नामक महा-सावनिकको वस्तुपाल के विरुद्ध बाळरूप काळको बुलाया। यह समुद्रके किनारे डेरा डाल कर रहा। उसने देखा कि नगरका प्रवेशमार्ग शंकुसे (जन समुहसे) संकीर्ण है और व्यापारियोंके जहाज धनसे भरे हुए हैं। अपने बंदी (दूत) को भेज कर वस्तुपालके साथ लड़ाईके दिनका निश्चय किया। जब उसने चतुरंग सेना सजाई तो वस्तुपालने गुड जातिके भूणपाल नामक सुमटको आगे किया। भूणपालने प्रतिज्ञा की कि—‘ शंखके सिवा यदि दूसरे पर प्रहार करूँ तो मैं उसे कपिला गौपर ही प्रहार करना मानूँगा ’। फिर बोला कि ‘ अरे शंख कौन है ? ’ इस वचनके उत्तरमें प्रतिमट (शत्रुके सैनिक) ने कहा कि ‘ मैं शंख हूँ ’ तो उसे तलवारकी धारसे मार गिराया; फिर इसी रीतिसे दूसरे और तीसरेको भी गिरा देनेके बाद बोला कि—‘ समुद्रके नजदीक होनेसे क्या शंखोंकी संख्या बढ़ गई है ? ’ तो महासावनिक शंखने ही उसकी सुमटताकी प्रशंसा करते हुए बुलाया। उसने फिर भाँलेके अग्रभागसे उस पर प्रहार करते हुए एक ही प्रहारमें घोड़ेके साथ उसे मार डाला। इसके बाद, समरभूमिके प्रेमी श्री वस्तुपालने, सिंहकिशोर जैसे गजयूथको प्राप्त करता है वैसे, शंखके सैन्यको त्रस्त बना कर दसों दिशाओंमें भगा दिया। [पीछे सइद नौवित्तिक भी मार डाला गया।] फिर भूणपाल की मृत्युके स्थान पर मंत्रिने भूणपालेश्वर प्रासाद बनवाया।

(यहाँ १८ प्रतिमें निम्नलिखित श्लोक अधिक पाये जाते हैं—)

[१६८] धनुषकी प्रत्यक्षासे काण्डों (बाणों) की तो सन्धि (सुलह और योग) हुई पर उन वीरप्रकाण्डोंमें परस्पर विग्रह हुआ।

[१६९] बाणोंने स्पष्ट ही दुर्जनकोंकी सी चेष्टा की। क्यों कि, वे कानमें तो दूसरेके लगते थे और जीवननाश दूसरेका करते थे।

[१७०] तरकसको छोड़ कर बाण वेगसे धनुष पर आ जाते थे। यही तो सुपक्षोंका (१ अपने पक्षवालोंका, २ पक्षसहितों—बाणोंका) चिह्न है कि विपत्कालमें आगे रहते हैं।

[१७१] विपक्षीय वैरियोंके वक्षःस्थलमें लग कर बाण पार निकल गये। [सो ठीक ही है] क्यों कि धारोंके हृदयमें निर्गुणोंको चिर अवस्थान नहीं प्राप्त होता।

[१७२] मंत्रीशके हाथके संसर्गसे तलवार भी नानों दानके लिये उचल हो कर, बद्धमुष्टि होते हुए भी, धन भरमें कोश (१ म्यान, २ खजाना) का उत्सर्ग (१ त्याग, २ दान) किया।

[१७३] धीरेके चरण और हाथ रूपा कमण्डसे पूजित हो कर रणभूमि भी, मृगों, दुर्वांरूपी केशोंके साथ सिररूपी फलोंका दान करने लगी।

*

१९०) इसके बाद, एक दूसरे अवसर पर, श्री सोमेश्वर कवि ने यह काव्य कहा —

२२३. हे सचिव ! आपका [वनाया हुआ] तड़ाग जिसमें चक्रवाक पक्षी चल रहे हैं, और आति (एक प्रकारके पक्षी जिसको देशभाषामें आठ कहते हैं) क्रीडा कर रहे हैं; वह, अत्यन्त प्रशंसित, ऐसे हंसोंसे, कमल को छू कर हिछोछे लेती हुई तर्गोंसे, अन्तर्गभीर जलोंसे, और चंचल बकोंके प्राप्त होने के भयसे छिपे हुए मत्स्योंसे, तथा किनारे पर उगे हुए वृक्षोंके नीचे सुखपूर्वक शयन किये हुई बियोंके गाये हुए गीतोंसे शोभित हो रहा है ।

इसमें प्रयुक्त ' आति ' शब्दके पारितोषिकमें मंत्रीने कविको सोलह हजार द्रम्मका दान दिया ।

कभी फिर (किसी समय) मंत्री चिन्तातुर हो कर नीचे जमीनकी ओर देख रहे थे तब सोमेश्वर ने यह यह समयोचित पद्य पढ़ा —

२२४. वाग्देवीके मुखकमलके तिलकसमान हे वस्तु पाठ ! ' तुम्ही एक मात्र भुवनके उपकारक हो '—ऐसी सज्जनोंकी बात सुन कर जो लज्जासे सिर झुका कर तुम पृथ्वीतलकी ओर देख रहे हो, सो मैं मानता हूँ कि, अब स्वयं पातालसे बलिका उद्धार करनेके लिये कोई मार्ग बूढ़ रहे हो । मंत्रीने इस काव्यके पारितोषिकमें आठ हजार दिया । इसी तरह पंडितोंके बार बार इस श्लोकके ये तीन चरण पढ़ने पर कि—

२२५. ' कर्णने दानमें चर्म दिया, शिविने मांस दिया, जीमूतवाहनने जीव और दर्षाचि ने अस्थि दिये '— इस पर पण्डित जयदेव ने समस्या पदकी नाई [चौथा पद] कहा—' और वस्तु पालने वसु (धन) दिया ।' ऐसा कहने पर उसने ४ सहस्र पाया ।

इसी प्रकार सूरि (अपने धर्मगुरु) के शिष्योंकी प्रतिज्ञामनाके अवसर पर, किसी दरिद्र ब्राह्मणने याचना की, तो उसके नियुक्त आदमियोंसे उसे एक बख मिला; जिसे पा कर उसने मंत्रीके आगे यह समयोचित पद्य पढ़ा—

२२६. हे देव । कहीं रुई, कहीं सूत, और कहीं कपासके बीज लगी हुई यह हमारी पटी (पिछोड़ी) तुम्हारे शत्रुओंकी बियोंकी कुटीकी तरह दिखाई दे रही है ।

इसके पारितोषिकमें मंत्रीने १५ सौ दिया । इसी तरह बालचंद्र नामक पंडितने मंत्रीके प्रति यों कहा—

२२७. हे मंत्रीश्वर ! गौरी तुम्हारे ऊपर अनुरागवती है, वृष तुम्हारा आदर करता है, भूतिसे तुम युक्त हो और गुणवान् शुभगण तुम्हारे पास हैं । सो निश्चय ही ईश्वर (शिव) की सभी कलाओंसे युक्त ऐसे तुम्हें अब बालचंद्रको ऊंचा स्थान देना उचित है । तुमसे बढ़ कर समर्थ और कौन है । [गौरी, वृष, भूति, गण, और बालचंद्र—इन शब्दोंके प्रसिद्ध अर्थके अतिरिक्त, गौरी स्त्री, धर्म, वैभव, सेना और बोलने वाला कवि ये क्रमशः श्लेषके अर्थ हैं ।]

कविके ऐसा कहने पर मंत्रीने उसके आचार्य पदकी स्थापनाके लिये चार हजार द्रम्म खर्च किया ।

मंत्रीका मुसलमान सुलतानके साथ मैत्री संयन्ध यांधना ।

१९१) किसी समय म्हेच्छराज (मुसलमान) सुलतानके गुरु माळिन (मौलवी) को मख (मक्का) तीर्थकी यात्राके लिये वहाँ आया हुआ जान कर उसे पकड़नेके इच्छुक श्रीलक्ष्मणप्रसाद और वीरधवलने मंत्री तेजपाठसे सलाह पूछी । उसने इस प्रकार बताया—

१ यह आदि घन्ट प्रायः संस्कृत साहित्यमें कहीं नहीं प्रयुक्त हुआ है इसलिये इसका अभिनव प्रयोग किया गया देख कर मंत्रीने यह दान दिया मादम देता है ।

२२८. धर्मछलका प्रयोग करके जो राजाडोक ऋद्धि प्राप्त करते हैं, वह मांके शरीरको बँच कर

पैसा कमानेके समान होती है ।

इस नीतिशास्त्रके उपदेशद्वारा, उन वृक (भेडियों) जैसेके मुँहसे उस छाम (बकरे) को छुड़ा कर और पाथियादिसे सत्कृत कर, तीर्थयात्रा करनेके लिये रवाना किया । कुछ सालके बाद, वह जब वापस लौट कर आया तो मंत्रीने फिर उचित सत्कारसे उसका आदर किया । इससे वह अपने स्थान पर पहुँच कर [अपने सुलतानके सामने] तीर्थ यात्राका बखान करनेके बदले श्री वस्तुपालके गुणोंका ही बखान करने लगा । इसके बाद वह सुलतान प्रति-वर्ष मंत्रीके पास यमलकपत्र (सन्धिपत्र) भेज कर अनुरोध करता रहा कि— 'हमारे देशके आप ही अत्यक्ष हैं, और हम तो आपके सेलभृत् (सामंत) हैं। सो हमें किसी करणीय कार्यका आदेश दे करके सदा अनुगृहीत किया करें' । मंत्रीने शत्रुंजय तीर्थके मूमिगृहमें रखनेके लिये सुलतानकी अनुज्ञासे, उसके देशमेंकी मम्माणी नामक खानमेंसे, सैंकड़ों प्रयत्न करके युगादि जिनकी एक मूर्ति बनवा कर मंगवाई। सुलतानने अपनेको धन्य मानते हुए वह कार्य करने दिया । वह मूर्ति जब पर्वत पर चढ़ाई जा रही थी तो मूलनायकके अमर्षसे पर्वत पर बिजली गिरी । इसके बाद मंत्रीश्वरको फिर जीवनान्त तक शत्रुंजय देवके दर्शन नहीं हुए ।

अनुपमाकी दानशीलता ।

१९२) किसी पर्वके अवसर पर, अनुपमा देवी मुनियोंको यथेच्छ निरुपम दान दे रही थी । तब किसी राजकार्यकी उत्सुकताके कारण स्वयं वीरधवलदेव उस समय बड़ा आ पहुँचा तो उसने देखा कि चैतांबर साधु-यतियोंकी भीड़से मकानका दरवाजा मानों दटा हुआ है । तब विस्मयसे मनमें चकित हो कर वह मंत्रीसे बोला— 'हे मंत्री, अभिमत देवताकी भाँति, सदा ही इन साधुओंका इस तरह सत्कार क्यों नहीं किया करते ? अगर तुमसे न हो सकता हो तो आधा हिस्सा भेरा रहे । मेरा ही सदा दिया जाय— ऐसा तो इस कारणसे नहीं कहता कि पैसा करने पर तो फिर तुमको यह वृथा ही परिश्रम करने जैसा लगे ।' उसके मुखचंद्रसे इस प्रकार वाणीरूप किरणके निकलने पर मंत्रीके मनका संताप दूर हुआ और वह बोला— 'स्वामीका आधा हिस्सा क्या ? सब कुछ तो आप ही का है ।' यह कह कर उसने वज्र निछावर किया ।

१९३) एक दूसरी बार, यतिदानके अवसर पर, अनेक मुनियोंकी भीड़के कारण नमन करती हुई श्रीमती अनुपमाकी पीठ पर धीसे भरा हुआ एक पात्र गिर पड़ा । यह देख कर मंत्री तेजपाल बड़ा कुपित हुआ । उसे कुपित देख कर अनुपमाने यह कह कर सान्त्वना की कि— 'आप जैसे स्वामीके प्रभावसे ही तो मुनिजन द्वारा गिराये गये पात्रके धीसे मेरा यह अम्यङ्ग (घृतस्तन) हुआ ।' इस प्रकार उसकी पूर्णदानकी विधिसे चमत्कृत हो कर, मंत्रीने पश्चात्तत्प्राप्त पूर्वक उसको इस उचित उक्तिसे प्रशंसा की—

२२९. प्रिय वाणीपूर्वक दान, गर्वरहित ज्ञान, क्षमायुक्त शरता और त्यागसहित धन, ये चार भद्र (भले) कार्य दुर्लभ हैं ।

इस प्रकारकी अनेक दानवार्ताओंसे प्रसिद्धी पाने वाली उस देवीकी जैनाचार्याने इस तरह स्तुति की—

२३०. लक्ष्मी चन्द्रा है, शिवा चण्डी (कोपना) है, शची सौतदोषसे दूषित है, गंगा निरगामिनी है और सरस्वती वाचा है । इस लिये अनुपमा तो सब तरहसे अनुपमा ही है ।

वीरधवलकी रणशरता ।

१९४) एक दूसरी बार, छवणप्रसाद और वीरधवल पंचमामने [स्वामीके] साथ संग्राम करने पर लुटे-तब थी वीरधवलकी पत्नी जयतलदेवी सन्धिनिधानकी इच्छासे अपने पिता प्रतीहारवंशीय-श्री

शोभनदेवके पास गई तो उसने कहा कि क्या—'वैधव्यसे डर कर सन्धि कराने आई हो ?' तब अपने वीरचूडामणि पति वीरधवलको उन्नत बनाती हुई वह बोली—'केवल पितृकुलके विनाशकी आशंकासे मैं बारंबार ऐसा कह रही हूँ। जब वह वीर घोड़े पर चढ़ेगा तो ऐसा कौन सुभट है जो उसके सामने खड़ा रहेगा ?' यह कह कर बट्ट सकोध चली गई। लड़ाई छिड़ने पर वीरधवलको [एक सप्त] प्रहार लग गया और उसकी व्यथासे व्याकुल हो कर वह जमीन पर गिर पड़ा। तब सुभटोंका दिख कुछ हिम्मत हारता हुआ देख, लवण-प्रसादने अपनी सेनाको यह कह कर उत्साहित किया कि—'अरे ! यह तो केवल एक ही सैनिक गिरा है' ऐसा कह कर समस्त शत्रुसेनाका खेळमें ही समूल ध्वंस कर दिया। सत्त्वगुणसे दीप्त वह वीरधवल [इस प्रकार] रणरसिकताके वश हो कर इकोस बार अपने पिताके आगे गिरा था।

वीरधवलकी मृत्यु ।

२३१. वह भीम जैसा पराक्रमशाली (वीरधवल) पञ्चमामकी समरभूमिमें घावोंके लगने पर घोड़ेकी पीठ परसे गिरा, पर गर्बसे नहीं।

१९५) वीरधवल की आयुके अन्तमें, प्रतितीर्थ (परलोक) को प्रस्थान करने वालेको दान करनेसे एकका हजार गुणा मिलता है, इस रूढ़िके अनुसार तेजपालने अपने सारे जन्मका पुण्य दान कर दिया। फिर जब वह स्वामी चल बसा तो उसके सौभाग्यके अतिशयसे १२० सेवकोंने सहगमन किया। तब तेजपालने प्रेतवचनमें पहरेदारोंको बिठा कर लोगोंको उस आग्रहसे निपिद्ध किया।

२३२. अन्यान्य ऋतु तो आती-जाती रहती हैं पर ये दो ऋतु आ कर फिर नहीं गईं। वीरधवल वीरके विना प्रजाओंकी आंखोंमें वर्षा और हृदयमें प्रीति [सदाके लिये रह गईं]।

१९६) इसके बाद, मंत्रीने वीरधवलके पुत्र वीसल देवको राजपद पर अभिषिक्त किया।

*

अनुपमाकी मृत्यु ।

श्री अनुपमादेवीकी मृत्युके बाद श्रीतेजपालके हृदयमें जो शोककी गांठ बंध गई वह किसी तरह छूटती नहीं जान कर, वहाँ पर आये हुए श्रीविजयसेन सुरिसम समर्थ पुरुषके द्वारा वह विपत्ति शान्त कराई गई। कुछ चेतना होने पर लज्जित तेजपालसे सूरिने कहा—'हम इस अवसर पर तुम्हारी लीला देखने आये थे। तो वस्तुपालने पूछा कि—'वह क्या ?' इस पर गुरुने कहा—'हमने शिशु तेजपालको व्याहृतेके लिये जब धरणिगके पाससे उसकी कन्या इस अनुपमाकी मंगनीकी धी, तब स्थिरपत्र-दानके पश्चात् एकान्तमें उस कन्याकी विरूपताकी बात सुन कर, इसने उसका संबंध मंग होनेके लिये चन्द्रप्रभक मन्दिरके आहातेमें प्रतिष्ठित क्षेत्राधिपतिकी आठ द्रम्म का भोग चढाना माना था। और इस समय उसके त्रियोगमें पागल हो गये हैं। इन दोनों वृत्तान्तोंमेंसे कौनसी बात सच्ची है ?' इस प्रकार उस पुराने संकेतसे तेजपालने अपने हृदयको दृढ़ किया।

वस्तुपालकी मृत्यु ।

१९७) फिर दूसरी बार, जब मंत्री वस्तुपाल पूर्णायु हुए तो शत्रुंजयकी यात्राकी इच्छाकी। यह जान कर पुरोहित सोमेश्वर देव वहाँ आया। अमृत्यु आसन देने पर भी जब वह नहीं बैठना चाहा तो कारण पूछने पर बोला—

२३३. श्री वस्तुपालके अन्न-दान, जल-पान, और धर्मस्थानोंसे तो पृथ्वीतल, और यशसे सारा आकाश-मंडल ढंक गया है। इसलिये स्थानाभावके कारण नहीं बैठ रहा हूँ।

उसकी इस वाणीके निमित्त उचित पारितोषिक दे कर, उससे विदा मांग कर, मंत्रीने रास्तेमें प्रस्थान किया। आंकेवालीया ग्रामकी एक गंवारु शोपडीमें दामकी चटाई पर बैठा हुआ, गुरुद्वारा आराधना करता हुआ आहारका त्याग करके, अन्तिम आराधनासे कलिमलका घ्वंस किया और श्रन्तमें युगादिदेवका ही जाप करता हुआ—

२३४. सज्जनोंके स्मरण करने लायक ऐसा कुछ भी सुकृत नहीं किया। केवल मनोरथ ही करते हुए हमारी यह आयु चली गई।

इस वाक्यके अन्तमें ' नमोऽर्हद्भ्यः नमोऽर्हद्भ्यः ' (अर्हंतोंको नमस्कार) इन अक्षरोंके उच्चारणके साथ ही सप्तधातुबद्ध इस शरीरका त्याग करके, स्वकृत उत्तम पुण्यफलको भोगनेके लिये, उसने स्वर्ग लोकको अलंकृत किया। उसके संस्कार स्थान पर छोटे भाई तेजपाल और पुत्र जैत्रसिंहने श्री युगादि देवकी दीक्षावस्थाकी मूर्तिसे अलंकृत स्वर्गारोहण प्रासाद बनवाया।

२३५. आज, मेरे पिताकी आशा फलनती हुई, माताके आशीर्वादका अंकुर उगा, जो मैं इस प्रकार अखिलभावसे युगादि देवकी यात्रा करनेवाले लोगोंको [अपनी शक्ति-भाक्तिसे] संतुष्ट कर रहा हूँ।

२३६. जिन लोगोंने राजाकी सेवाके पापसे कुछ भी पुण्यार्जन नहीं किया उन्हें हम धूलिधावक (धूलके ढोहनेवाले) लोगोंसे भी अधमतर समझते हैं।

ये तथा अन्य काव्य स्वयं वस्तुपाल महाकविके रचित हैं।

२३७. स्वामिके गुणोंसे पूर्ण वह वीरधवल एक निस्सीम प्रभु हुआ, विद्वानों द्वारा भोजराजका विरुद्ध प्राप्त करने वाला वस्तुपाल एक अद्वितीय कवि हुआ, प्रधानवर्गमें वह तेजपाल अद्वितीय मंत्रीरर हुआ और गुणोंसे अनुपम ऐसी अनुपमा उसकी ली एक साक्षात् लक्ष्मी हुई।

*

इस प्रकार श्री मेरुतुंगाचार्यविरचित प्रबन्धचिन्तामणिमें श्री कुमारपाल भूपाल प्रमुख-मंत्रीद्वर वस्तुपाल और तेजपालतकके महापुरुषोंके यशका वर्णन करनेवाला यह चौथा प्रकाश समाप्त हुआ।

११. प्रकीर्णक प्रबन्ध ।

अब, यहाँपर पूर्वोक्त महापुरुषोंके चरित्रके वर्णनमें जो रह गये हैं उन तथा [वैसे ही] अन्य चरित्रोंका वर्णन इस प्रकीर्णक-प्रकाशमें प्रारंभ किया जाता है । वे इस प्रकार हैं—

विक्रमादित्यकी पात्रपरीक्षा ।

१९८) उस अवन्तीपुरीमें, जिसके निकट ही सि प्रा नदी बह रही है, प्राचीन कालमें श्री विक्रमादित्य राजा राज्य करता था। उसने सुना कि उसके सत्रागारमें विदेशी लोग भोजनके अनन्तर जो सो जाते हैं वे फिर नहीं उठ पाते (अर्थात् मर जाते हैं); इससे विस्मयसे मनमें चकित हो कर राजाने कारण जानना चाहा । उन सभी पथिकोंको दूसरे दिन बख्से ढँकवा दिया और उस चिरनिद्राकी बातको गुप्त रखनेकी आज्ञा दी। फिर दूसरे दिन आये हुए अन्य पथिकोंको उसी तरह भोजन कराया और सायंकाल उनको उष्ण जल तथा चरणोंमें लगानेके लिये तेज दिया गया । जब वे सब सो गये तो, महानिशामें राजा अपने हाथमें कृपाण ले कर स्वयं एकान्त जगहमें छिप कर खड़ा रहा । वहाँ कोनेमें पहले धुआँ निकला, फिर आगकी लपट और फिर प्रकाशित फणाकी रत्नप्रभासे अलंकृत सहस्रफण ऐसे नागको निकलते देखा । आश्चर्यसे चमत्कृत हो कर राजा जब सविस्मय उसे देखता है, तो वह फणाँद उस दिनके सोये हुए प्रत्येक पथिकसे पूछने लगा कि— वह किस चीजका पात्र है ? उनमेंसे प्रत्येकने, किसीने अपनेको धर्म-पात्र, गुण-पात्र, तपःपात्र, रूप-पात्र, काम-पात्र या कीर्ति-पात्र इत्यादि इत्यादि बताया । अज्ञान और यद्दृष्टावश उसके शापसे उन्हें मरते देख श्री विक्रमने आगे बढ़ कर हाथ जोड़ कर कहा—

२३८. हे भोगीन्द्र (नागराज), पृथ्वीपर बहुधा गुणके योगसे पात्र हुआ करते हैं । किन्तु शुद्ध अद्रासे जो पवित्र बना हुआ मन है वही परम पात्र है ।

इस प्रकार नागराजने अपने ही आशयको कहनेवाले विक्रमादित्यके प्रति कहा कि ' वर माँगो ' । श्री विक्रमादित्यने कहा कि ' इन पथिकोंकी जीवित बनाओ ' । इस प्रकारका वरदान माँगने पर उसने फिर विशेष भावसे उसे संतुष्ट किया ।

इस प्रकार श्री विक्रमकी पात्रपरीक्षाका यह प्रबंध समाप्त हुआ ।

*

मरे हुए नंदका पुनर्जीवन ।

१९९) एक बार, पाटलीपुत्र नगरमें, अत्यन्त आनन्दपरायण ऐसे नंद राजाकी मृत्यु होनेपर, उसी समय एक कोई ब्राह्मण वहाँ आया और दूसरेके शरीरमें प्रवेश करनेवाली विद्याके द्वारा राजाके शरीरमें प्रवेश कर गया । उसीके संकेतसे एक दूसरा ब्राह्मण राजाके द्वारपर आ कर वेदोच्चार करने लगा, जिससे राजा जी उठा और फिर उसने अपने कोषाध्यक्षोंसे उसको एक लाख स्वर्ण दिलाया । इस वृत्तान्तको जान कर महामंत्रोंने सोचा कि यह नंद पहले तो बड़ा कृपण था और इस समय बड़ा उदार हो रहा है सो यह बात चिंतनीय है । ऐसा जान कर उस ब्राह्मणको पकड़वा लिया और पर-काय-प्रवेशकारी विदेशीको सर्वत्र ढूँढ़वाया तो यह मादम पड़ा कि, कहीं पर एक मुर्देकी, कोई एक आदमी रखवाली कर रहा है । तो उसे चितापर चढ़वा कर भस्म करवा दिया । अपने अतुलनीय मतिवैभवसे उस पूर्व नंदको ही अपने महान् साम्राज्यमें फिर निभा लिया ।

इस तरह यह नंद प्रबंध समाप्त हुआ ।

*

राजा शिलादित्य और मल्लवादी सूरिका प्रबन्ध ।

२००) खेड़ा नामक महास्थानमें, देवादित्य नामक ब्राह्मणकी अति रूपवती बालविधवा सुभगा नामक पुत्री, प्रातःकाल सूर्यको अर्घ्यकी अञ्जलि दान किया करती थी। तब, अज्ञातरूपसे सूर्यसे उसका संयोग हो गया और वह भोगरूप हो कर उससे उसको गर्भ रह गया। माँ बापने किसी तरह इस असमंजस कार्यको जब जाना तो उसे कुछ कह-सुन कर अपने स्वजनोंद्वारा बलभी नगरमें पास छुड़ा दिया। वहाँ उसको पुत्र पैदा हुआ, जो क्रमशः बढ़ा हो कर, समवयस्क शिशुओंके साथ खेलते समय, इस प्रकार अपमानित किया जाने लगा कि, वह बिना बापका है। तब, माँके पास आ कर उसने अपने पिताके बारेमें पूछा तो उसने कहा कि 'मैं कुछ नहीं जानती'। इससे अपने जानसे विरक्त हो कर उसने मर जाना चाहा, तो फिर सूर्यने प्रत्यक्ष हो कर हाथमें कंकड़ दे कर उसकी सान्त्वना की। उन्होंने कहा कि—'तुम्हारी मातासे सम्पर्क करनेवाला मैं सूर्य तुम्हारा पिता हूँ। यह कंकड़ अगर अपने किसी परामर्श-कारणके फेंकोगे तो शिलारूप हो कर उसको लगेगा; पर किसी निरपराधको मारोगे तो फिर तुम्हारा ही अनर्थ करेगा। यह कह कर सूर्य तिरौबान हो गये। फिर अपने कितने एक परामर्शकारियोंको मारता हुआ वह 'शिलादित्य' इस सार्धक नामसे प्रसिद्ध हुआ। उस नगरके राजाने उसकी परीक्षा करनी चाही। तो उसी शिलासे उसे मार कर वह स्वयं राजा बन गया। सूर्य नारायणके प्रसादसे प्राप्त ऐसे अश्वपर चढ़ कर वह सदैव आकाश-चापीकी नाई खेच्यया विहार करता हुआ अपने पराक्रमसे दिग्गन्तको आक्रान्त कर रहा। फिर चिर कालतक राज्य करके, जैन मुनियोंके संसर्गसे उसने सम्यक्स्व रत्नको प्राप्त किया और श्री शत्रुंजय तीर्थकी अपरिमित महिमाको जान कर उसका जीर्णोद्धार किया।

बौद्धों और जैनोंमें वाद-विवाद ।

२०१) एक बार, उस शिलादित्यके समापतित्वमें, बौद्धों और [जैन] श्वेताश्रमोंने परस्पर इस शर्वपर शास्त्रार्थ किया कि—जो [पक्ष] पराजित होगा उसको देश-त्याग करना पड़ेगा। श्वेताश्रमोंके पराजित होनेपर शिलादित्यने उन सबको अपने देशसे निकाल दिया; पर अपरिमित गुणवान् ऐसे उसके भानजे मल्लनामक लुल्लकको उपेक्षा दृष्टिसे देखते हुए बौद्धोंने उसमें वही रहने दिया। और इस प्रकार अपनेको विजयी मानते हुए वे शत्रुंजय तीर्थपरके श्रीयुगादि देवको बौद्ध रूपसे पूजने लगे। क्षत्रिय कुलमें उत्पन्न होनेके कारण उस मल्लके दिलमें वह वैरभाव बस रहा, और वह उसका प्रतीकार सोचता रहा। जैन दर्शन (आचार्यों) के अभावमें उन्हींके पास वह अध्ययन करने लगा और दिन रात उसीमें चित्त खनखन रखने लगा। एक बार, बड़ी गर्मीकी अर्द्ध रात्रिको, जब समस्त नागरिक लोग नींदसे आँखें बंद किये हुए थे, वह दिनमें अम्यस्त शास्त्रको जोर-जोरसे याद करने लगा। उसी समय आकाशमार्गसे जाती हुई श्री भारती देवीने पूछा कि—'मीठे क्या हैं ?' उसने चारों ओर देख कर, बोलनेवालेको न पा कर उत्तर दिया 'बहु'। फिर ६ महीनेके बाद उसी समय छोटती हुई वाग्देवीने फिर पूछा 'किसके साथ ?'; तब पुरानी बातको स्मरण करके उसने प्रत्युत्तर दिया कि 'धी और गुड़के साथ'। उसकी स्मरण रखनेकी इस अद्भुत शक्तिसे चमत्कृत हो कर [भारतीयोंने] आदेश दिया कि 'वर माँगो'। उसने इस आशयकी याचना की कि 'सौगतों (बौद्धों) को पराजित करनेके लिये किसी प्रमाण शास्त्रके देनेकी कृपा करो'। इसपर भारतीयोंने 'नय-चक्र' ग्रन्थ अर्पण करके उसे अनुगृहीत किया। इसके बाद भारतीयोंके प्रसादसे तत्त्व समझ कर शिलादित्यकी अनुज्ञासे, बौद्धोंके मठमें 'तृणोदक' फेंक कर, राजसभामें पूर्वोक्त शर्वके साथ उनसे शास्त्रार्थ किया। जिसके कण्ठपीठमें वाग्देवता अवतीर्ण हुई थी ऐसे उस श्री मल्लने शीघ्र ही उन्हें निहृत्तर कर दिया। बादमें राजाज्ञासे उन सब बौद्धोंको देशभेदे निकाला गया और जैनाचार्योंको बुलाया गया। इस प्रकार बौद्धोंकी जीतनेके बाद वह मल्ल 'वादी' कहलाने लगा और फिर राजाकी प्रार्थनापर

गुरुने उसे सूरिपद दिया । तबसे उनका नाम हुआ श्री मल्लवादी सूरि । गणश्रुतके समान वे प्रभावक हुए । अतएव श्री संघने, नवाङ्गवृत्तिकार श्री अभयदेव सूरिने जिसको प्रकट किया उस स्तम्भनक तीर्थकी विशेष उन्नतिके लिये, उनको चिन्तायक (व्यवस्थापक) रूपमें नियुक्त किया ।

इस प्रकार यह मल्लवादि प्रबंध समाप्त हुआ ।

*

वलभी नगरीके विनाशकी कथा ।

२०२) मरुमण्डलके पल्लीग्राममें काकू और पाताक नामक दो भाई रहते थे । उनमें जो छोटा था वह धनवान् था और जेठा उसीके घर नौकर था । किसी समय, वर्षा ऋतुके निशीथ कालमें, दिनभरमें किये हुए कामसे थक कर काकू सोया हुआ था । छोटने कहा— 'भैया, अपनी [खेतकी] क्यारियोंमें पानी भर गया है, उनकी मेंड टूट गई है और तुम निश्चित बैठे हो ' यह कह कर उसे फटकारा । वह उसी समय, विछौना छोड़ कर और कंधेपर कुदाल रख कर, अपने नसीबकी निंदा करता हुआ जब वहाँ पहुँचा, तो देखा कि कई मजदूर टूटी हुई मेंडोंकी मरम्मत कर रहे हैं । उन्हें ऐसा करते देख उसने पूछा कि ' तुम लोग कौन हो ? ' उन्होंने कहा कि ' आपके भाईके चाकर हैं । ' इसपर उसने पूछा कि ' भला भेरे भी कोई चाकर कहाँ है ? ' तो उन्होंने कहा कि ' वलभी नगरीमें है । ' वह फिर अवसर पा कर अपने सर्वस्वको गड़ड़में बाँध कर, उसे सिरपर उठा कर, वलभीमें आया । वहाँ सर दरवाजेके समीपवर्ती आभीरोंके पास निवास करने लगा । उन्होंने अत्यन्त गरीब समझ कर उसे 'रंक' कहना शुरू किया । रंक घासकी झोंपड़ी बना कर, और घासहीसे उसे छा कर रहने लगा । उसी समय कोई कार्पटिक (जोगी) कल्प-पुस्तकके आधारेसे, रैवत शैलसे एक तुंवेमें सिद्धरस ले कर, मार्ग अतिक्रम करता हुआ [चला आ रहा था । अचानक] उस तुंवेमेंसे ' काकूय तुम्बडी ' (काकूकी तुम्बड़ी) इस प्रकारकी अशरीरिणी वाणी हुई; जिसे सुन कर वह बड़ा विस्मित हुआ; और फिर डरता हुआ उस छिपे हुए बनिधेके घरमें, यह सुन कर कि वह एक रंक है, निश्चङ्क-भावसे उस रसवाले तुंवेको थातीके रूपमें रख दिया । वहाँसे वह सोमेश्वरकी यात्राके लिये चला गया । एक दिन [रंकने] किसी पर्वके अवसरपर देखा कि, पाक करनेके लिये चूल्हेपर चढ़ाई हुई कड़ाहीमें, तुंवेसे निकले हुए रसके गिरनेसे वह सोनेकी हो गई है । इससे उस बनिधेने मनमें निर्णय किया कि यह सिद्धरस है । तब उसने उस तुंवेके साथ अपने घरका सब कुल सामान अन्यत्र पहुँचा कर घरको आग लगा कर भस्म कर दिया । नगरके दूसरे दरवाजेपर बड़ा मकान बनवा कर वहाँ रहने लगा । एक बार, किसी घी बँचनेवालीसे घी खरीद रहा था । खुद ही तौल करते हुए उसने देखा कि उसमेंसे घी खूटता ही नहीं है । नीचे देखा तो धोके पात्रके नीचे कृष्णचित्रक [लता] की कुण्डलिका नजर आई । फिर किसी प्रकार छूट करके उसे उठा लिया और इस प्रकार उसे चित्रकसिद्धि प्राप्त हो गई । इसी तरह अगणित पुण्यके प्रभारसे उसे सुवर्णपुरुषकी सिद्धि भी प्राप्त हुई । इस प्रकार तीनों प्रकारकी सिद्धिसे कोटि-कोटि संख्या धन एकत्र करके भी, उसने अत्यन्त कृपणतावश, किसी सत्याग्र या तीर्थमें उदारता पूर्वक उसका खर्च करना तो दूर रहा, बल्कि सब लोगके सर्वस्वके हरण करनेकी इच्छासे, उस लक्ष्मीको सकल विश्वके लिये कालरात्रिके समान प्रकट किया ।

२०३) ऐसेमें, राजाने अपनी लक्ष्मीके लिये, उसकी लक्ष्मीकी रत्नखचित सुवर्णकी कंधीको जवर्दस्ती उससे छिनवा ली । इससे विरोधी हो कर वह स्वयं म्लेच्छ मण्डलमें गया और वलभीके राज्यका नाश करानेके लिये, करोड़ोंका सोना दे कर, वहाँके बलवान राजाको देशपर चढ़ा लाया । उस (रंक) के द्वारा अनुपहृत, उस राजाके एक छत्रधरने, रात्रिके शेष भागमें, जब कि राजा सुप्त-जाग्रत अवस्थामें था, पहलेसे ही ठीक किये हुए,

किसी पुरुषके साथ इस प्रकार बात-चीत करने लगा कि—‘ हमारे स्वामीको अच्छी सलाह देनेमें कोई चूहा भी नहीं दिखाई देता; जिससे यह अश्वपति महीमहेन्द्र (राजा) एक मामूली बनियेके कहनेसे—जिसका न तो कोई कुल-शील ही मादम है और न यही मादम है कि वह कोई अच्छा आदमी है या धुरा; और फिर जो नामसे भी और कर्मसे भी रंक बना हुआ है—सूर्यपुत्र शि लादित्यके प्रति चल पड़े हैं ।’ उसकी इस यथार्थ पथ्य बातको सुन कर, चित्तमें कुछ विचार करके, राजाने उस दिन आगे प्रयाण करनेमें विलंब किया । तब, उस सशक रंकने, इस बातको निपुणभावसे जान कर, उस छत्रधरको काबज-दान दे कर सन्तुष्ट किया । तब फिर दूसरे दिन [वही छत्रधर बोला] चाहे विचार करके या बिना विचारे ही यह राजा प्रयाण करके चल पड़ा हो; पर अब ‘ सिंहके उठाये हुए पैरकी नाई ’ इस कहावतके अनुसार आगे चलनेपर ही इसकी शोभा है । क्यों कि—

२३९. खेळ ही में जिसने हाथियोंका दलन किया है उस सिंहको, लोग चाहे मृगेन्द्र कहें चाहे मृगारि, ये दोनों बातें सिंहके लिये तो लजाजनक ही हैं ।

और फिर इस पराक्रमशालीके सामने ठहर भी कौन सकेगा ? ’ उसकी ऐसी बातोंसे उत्साहित हो कर, मेरीके निनादसे पृथ्वी और आकाशके अंतरालको बविर करते हुए उस म्हेच्छराजने आगे प्रयाण किया । इधर उस अवसरपर व ल भी स्थित चन्द्रप्रभका विंव, अम्बा और क्षेत्रपालके साथ, अधिष्टायक देवताके बलसे आकाश मार्ग द्वारा शिवपत्तन (सोमनाथ)ती भूमिको प्राप्त हुआ । रथपर अधिरूढ श्री वर्धमानको अनुपम प्रतिमाने, अद्भ्य भावसे, अधिष्ठातृ देवताके बलसे रास्तेमें चलते हुए आश्विनी (आश्विन मासकी) पूर्णिमाके दिन श्रीमालपुर को अलंकृत किया । अन्य अतिशयशाली देवमूर्तियोंने भी यथोचित भूभागको अलंकृत किया । उस नगरकी अधिष्ठातृ देवताने श्री वर्धमान सूरिके साथ, उत्पातज्ञापनके समय [इस तरहकी बातें की]—

२४०. ‘ हे देवीके सदृश सुंदरि, तुम किस कारणसे रो रही हो सो बताओ ’; ‘ हे भगवन्, मैं व ल भी पुरका भंग देख रही हूँ । इनका प्रमाण यह है कि आपके साधु लोग भिक्षामें जो दूध पायेंगे वह तब रक्त ही जायगा । [फिर यहाँसे जा कर] मुनिथोंको उसी स्थानपर रहना चाहिये जहाँ पानी भी दूध हो जाय ’ ।

इसके बाद, जब वह उत्पात हुआ और नगरीके पास म्हेच्छ सेमा आ गई, तो देशभंगके पापपंक्तमें फसे हुए रंकने धन दे कर, पंच शब्दवाले वायोंके वजानेवालोंको अच्छी तरह फोड़ लिया । जब शि लादित्य घोड़े-पर चढ़ने लगा तो उन्होंने ऐसा प्रतिशब्द किया, जिससे वह घोड़ा, गरुडकी भाँति आकाशमें उड़ गया । यह देख कर राजा शि लादित्य किर्कतव्यमूढ़ हो रहा और उन म्हेच्छोंने उसे मार डाला । फिर तो म्हेच्छोंने खेळ ही में व ल भी शहरको तहस-नहस कर दिया ।

२४१. विक्रमादित्यके समयसे ३७५ वर्ष बाद, व ल भी नगरीका यह भंग हुआ ।

इस प्रकार शि लादित्य राजाकी उत्पत्ति, रंककी उत्पत्ति और उसके द्वारा किये गये व लभी-भंगका यह प्रबन्ध समाप्त हुआ ।

*

श्रीपुंजराजकी उत्पत्ति ।

२०४) श्रीरत्नमाल नगरमें रत्नशेखर नामक राजा हुआ । वह किसी समय, दिग्विजयसंबंधी यात्रासे वापस लौट कर अपने नगरमें आया । प्रवेशके महोत्सवके समयमें, वाजारकी शोभाकी सजावट देखता हुआ जब जा रहा था, तब एक हाटमें काठके पात्र (कटौत) सहित कुदाडको रखे हुए देखा । महलमें प्रवेश करनेके बाद जब महानन्द लोग उपहार ले कर आये तो उनसे पूछा कि ‘ आप सब लोग सुखी तो हैं ! ’ तो उन्होंने कहा—

‘ नहीं महाराज, हम लोग सुखी नहीं हैं । ’ उनके ऐसा कहनेपर विभ्रमसे भ्रान्तचित्त हो कर उनको बिदा किया; और फिर कभी किसी बातकी विचारणाके समय नगरके प्रधान जनार्थको बुला कर पूछा कि ‘ आप लोग क्यों सुखी नहीं हैं ? ’ और साथ ही काठके पात्रके साथ उस कुदाळको ऊंचा करके वैसे रखनेका कारण भी पूछा । उन्होंने कहा कि—‘ जहाँपर स्वामीने काष्ठपात्र आदि देखा है वह धनी, अपने धनकी गिनती न जान कर, कठौतसे ही उसकी नापको जतानेका संकेत करता है । और हम लोग सुखी नहीं हैं सो तो आपके सन्तानभावसे । यह नगर कोटिध्वजोंसे भरा है । आपने चिर कालतक इसका लाडल किया है, पर अब कौन इसे उन्नत बनावेगा ? ’ यह सुन कर राजाने अपने अंतःपुरकी पुरानी रानियोंको बंध्या समझ कर नई रानीकी करनेकी इच्छा की । तब उसकी अनुमति पा कर वे लोग, पुष्य नक्षत्रवाले रविवारके दिन, पुष्यार्क योगमें, किसी बड़े शकुन शास्त्रज्ञके साथ शकुनागारमें गये । वहाँ पर, एक मात्र लकड़ीका बोझ उठा कर अपना पेट भरनेवाली ऐसी कंगालिन स्त्रीको देखी जिसके सिरपर दुर्गा वैठी थी और जो आसन्नप्रसववाली स्थितिमें थी । शकुनज्ञने उसकी अक्षतादिसे पूजा की । उन लोगोंने कारण पूछा तो उसने कहा कि—‘ अगर वृहस्पतिका मंतव्य सच है, तो इसके गर्भमें जो कोई लड़का है वही यहाँका भावी राजा होगा । ’ इस बातको असंभव समझ कर उन्होंने लौट कर मानोज्ञत उस राजाको, उर्थों की त्यों, वह सब बात कह सुनाई । राजाने इससे मनमें खिन्न हो कर, अपने निजी मनुष्योंको भेज कर, उस स्त्रीको जमीनमें गाड़ देनेकी आज्ञा की । उन्होंने जा कर उससे कहा कि ‘ इष्ट देवताका स्मरण कर लो ’ । उनके ऐसा कहनेपर वह मरणभयसे व्याकुल हो उठी । इतनेमें संध्याके हो जानेसे उनकी अनुज्ञा ले कर वह शौच जानेके लिये गई, तो चर्ही उसको पुत्रका प्रसव हो गया । वह उसे वहीं छोड़ कर लौट आई । फिर उसको जमीनमें गाड़ कर उन मनुष्योंने राजाको उसकी सूचना दी । इधर एक हिरनी उस बालकको, नित्य दोनों शाम दूध पिला कर, बड़ा करने लगी । उस समय, महालक्ष्मी देवीके सामनेकी टंकशालामें जो नया शिक्षा पढ़ने लगा उसमें हिरनीके चार पैरके नीचे एक बालककी प्रतिकृति पडती हुई देखी गई, जिसके कारण लोगोंमें यह बात फैलने लगी कि कोई नया राजा उत्पन्न हुआ है । इससे उस रत्न शेखरने पता लगवा कर उस बच्चेको मरवा डालनेके लिये चारों ओर अपने सैनिक भेजे । उन्होंने प्रयास करके उस बालकको प्राप्त किया । लेकिन बाल-हत्याके भयसे स्वयं उसे न मार कर, नगरके सदर दरवाजेके रास्तेमें इस तरह रख दिया, कि जिससे सायंकालके समयमें, उस मार्गसे निकलनेवाली गायोंकी खुरीकी चोटोंसे आप ही आप वह मर जाय और लोकमें कोई अपवाद न हो । उसे वहाँ छोड़ कर, कुछ दूर खबे हुए, वे जब देखने लगे तो उतनेमें वहाँ गायोंका एक झुंड आता उन्हें दिखाई दिया । पर, मानों मूर्तिमंत पुण्यके पुँजकी नाई उस बालकको देख कर वे सब गायें, पैरोंसे स्तंभितकी नाई, खड़ी रह गई । इसके बाद, पीछेसे आगे आ कर एक सौँडने, बुधम जैसे ही तेजस्वी उस बालकको, अपने पैरोंके बीचमें रख कर, सब गायोंको आगे चलनेके लिये प्रेरित किया । बादमें, इस वृत्तान्तको सुन कर, राजा उन सामन्त और नगर लोकोंके द्वारा, उस बालकको मँगा कर, अपने पुत्रकी नाई उसका पाठन करने लगा । ‘ श्रीपुञ्ज ’ ऐसा उसका नाम रखा गया ।

*

श्रीमाताकी उत्पत्तिका वर्णन ।

२०५) इसके बाद, जब वह रत्न शेखर राजा स्वर्गगामी हुआ तो श्रीपुञ्जका अभिषेक हुआ । कुछ दिन राज्य करनेपर उसके एक पुत्री पैदा हुई । यद्यपि वह सर्वांग सुन्दर थी पर मुँह उसका वानरका-सा था । इससे वह विषयविमुख हो कर वैराग्यके साथ रहने लगी और श्रीमाताके नामसे प्रसिद्ध हुई । एक बार उसे अपने पूर्व जन्मका स्मरण हो आया । पिताके सामने उसने उसे निवेदन किया कि—‘ मैं पूर्व जन्ममें अर्जुन

गिरि पर बानरकी ली थी। वहां पर किसी एक वृक्षकी, एक शाखासे दूसरी शाखापर कूदते हुए, कोई अगम्य शल्यसे तालुमें विद्ध हो कर मैं मर गई। उसीके नीचे कामिक नामक तीर्थका कुण्ड था जिसमें मेरा धड़ गिर पड़ा। उस तीर्थके पुण्य-प्रभावसे मेरा यह शरीर तो मनुष्यका हो गया; किन्तु वह मेरा मस्तक अभी तक वैसे ही पड़ा है इसलिये मैं बानरके मुखवाली हुई हूँ। श्री पुंज ने यह सुन कर अपने विश्वसनीय आदिभियोंको [वहाँ भेज कर] उसके शिरको कुण्डमें डाल देनेके लिये आदेश दिया। उन्होंने जा कर चिर कालसे उसी प्रकार पड़े हुए मुखको वैसा ही देखा और फिर उसे कुण्डमें डाला। तब वह श्री माता मनुष्यके मुखवाली हो गई। फिर माता-पिताकी अनुज्ञा ले कर अर्जुदजितनी संख्यावाले मुर्गोंकी धारक वह, उस अर्जुद पर्वत पर जा कर तपस्या करने लगी। एक बार, एक आकाशचारी योगीने उसे देखा तो वह उसके सौन्दर्यसे हत-हृदय हो कर आकाशसे नीचे उतरा और प्रेमालाप-पूर्वक उससे कहने लगा कि 'तुम मुझसे ब्याह क्यों नहीं कर लेती?'। उसके ऐसा पूछनेपर वह बोली कि— 'इस समय रात्रिका पड़ल पहर व्यतीत हुआ है; चौथे पहरमें—जब तक मुर्गा न बोल उठे तब तरुमें—अगर किसी विद्याके बलसे तुम बड़ी सुंदर ऐसी बारह पया (पत्थरकी सीढियों) बनवा दो तो मैं तुमको वर दूँगी'। उसके ऐसा कहनेपर, तुरन्त ही उस कार्यके लिये उसने अपने चेटकोंके झुंडको नियुक्त किया और दो ही पहरमें वे सब पचायें बनवा दीं। पर इधर श्री माता ने उतनेहीमें मुर्गोंकी बनावटी आवाज कर दी। उसने आ कर कहा कि [पचा तैयार है इससे अब] 'विवाहके लिये तैयार हो जाओ' तो इसपर श्री माता ने कहा कि 'जब वे बन रही थीं तभी मुर्गोंकी आवाज हो गई थी'। तो उसने कहा 'वह तो तुम्हारी मायाजालके बनाये हुए बनावटी मुर्गोंकी ध्वनि थी; सो इसको कौन नहीं जानता'। ऐसा उत्तर देते हुए, नदीके किनारे अपनी बहनके द्वारा विवाहका उपहार उपस्थित कराया। श्री माता ने 'सब विचारोंका मूल जो यह त्रिशूल है इसे यहाँ छोड़ कर विवाहके लिये तैयार रहो' ऐसा कह कर उसे वहाँ धुलाया। प्रेमके वशमें हतचित्त हो कर वह वैसा ही करके उसके समीप आया। श्री माता ने बनावटी कुत्ते बना कर उसके पैरों पर छोड़ दिये और हृदयमें त्रिशूलका आघात करके उसे मार डाला। इस प्रकार निःसीम शीलके साथ उसने अपनी सारी जिन्दगी बिताई। उस अखण्ड शोकाकी मृत्युके बाद, श्री पुञ्ज राजाने वहाँपर शिखरके दिनाका एक प्रासाद बनवाया। क्यों कि ६-६ महीनेके बाद, उस पर्वतके अधोभागमें रहनेवाला अर्जुद नाग जब हिलता है तो वह पहाड़ काँपने लगता है। इसलिये वहाँके सभी प्रासाद शिखर रहित [बनाये जाते] हैं।

इस प्रकार श्री पुञ्जराज और उसकी पुत्री श्रीमाताका यह प्रबन्ध समाप्त हुआ।

•

चौडदेशके गोवर्धन राजाकी न्यायप्रियताका उदाहरण।

२०६) चौड देशमें एक गोवर्धन नामक राजा हुआ। उसके वहाँ, सभामंडपके सामनेके खंभेमें न्याय घंटा बंधी हुई थी जो न्याय करानेके प्रार्थीजनोंके द्वाघ बाजाई जा कर निनाद किया करती। एकबार उसके इकलौते कुमारके रथारूढ हो कर कहीं जाते समय, रास्तेमें अज्ञातभावसे एक गीका बछड़ा मर गया। उसकी माता गायने, आँखोंसे अन्न ऑसू बरसिते हुए, अपने परामर्शके प्रतीकारार्थे सींगोंसे वह न्याय-घंटा बजाई। स्वर्जुनके समान कीर्तिनाउ उस राजाने, घंटाका शंकार सुन कर, गायका समूह वृत्तान्त जाना और अपने न्यायकी प्रतिष्ठाके लिये, प्रातःकाल रथारूढ हो कर, उस अपने एकमात्र प्रिय पुत्रको, उसी रास्तेमें रख कर, उस पेत्रुके समक्ष उसपर अपना रथ घुमाया। उस राजाके ऐसे सत्त्व और परम भावसे रथका चक्र (पहिया) ऊपर हो उठा और वह कुमार नहीं मरा।

इस प्रकार यह गोवर्धननृपप्रबंध समाप्त हुआ।

•

पुण्यसार राजाका वृत्तान्त ।

२०७) कान्तीपुरी में, प्राचीन कालमें, कोई पुराण नृपति, निरभिमान भावसे राज्य कर रहा था । एक बार वह राजपाटिकामें जानेके लिये निकला; तो उसके पीछे पीछे उसका परम-मित्र मति सागर नामक महामात्य भी चला । रास्तेमें घोड़ा बिगड़ उठा और वह राजाको दूर ले भगा । साथकी चतुरंग सेना क्रमशः दूर दूर रह जाने लगी । पर अत्यंत वेगवाले घोड़ेपर चढ़ कर वह मंत्री उसके पीछे पीछे बहुत दूर तक चला गया । कितनी ही दूर चले जानेपर, राजा मार्ग लौटनेके श्रमसे बिल्कुल थक गया और सुकुमारताके कारण रुधिरके दबावसे वहीं मर गया । मंत्रोंने उसका अन्तकृत्य करके, उसके घोड़ेको और उसके वेशको साथ ले वा कर सायंकाल नगरमें प्रवेश किया । सीमान्तमें रहे हुए शत्रु राजाओंके भयसे राज्यको निर्दिष्ट रखनेकी इच्छासे, उस राजा-ही-की उम्रके और रूपके जैसे एक कुम्हारको राजाका वह पोशाक पहना कर उसी घोड़ेपर चढ़ा कर महलमें प्रवेश कराया । फिर रानीको सारा हाल बता कर, सचिवने पुण्यसार नाम दे कर उसीको राजा बनाया । इस प्रकार कितनाक काल बीत जानेपर, वह मंत्री सेनाका बड़ा समूह ले कर किसी शत्रु राजाके ऊपर चढ़ाई ले गया और अपने एक खूब विश्वस्त सहायकको राजाकी सेवामें रख गया । बादमें वह राजा निरंकुश हो कर, वेश्यापतिकी तरह, स्वैर विहार करता हुआ समस्त कुम्हारोंको अपने पास बुला और मिट्टीके हाथी, घोड़े, बैल आदि बना कर उनके साथ चिर काल तक खेला करने लगा । ऐसा करनेपर समस्त राज्यों-में उसकी अवहेलना करने लगे जिसको सुन कर स्कंधावारसे (लड़ाईके मैदानसे) कुछ नौकरोंको साथ ले कर मंत्री वहाँ आया और राजासे इस प्रकार बोला कि—‘ यदि अपने स्वभावकी चल्-विचलताके कारण, तुम उस कुम्हारके बालकको राजा बना दूंगा ’ । उसकी इस उक्तिसे क्रुद्ध हो कर राजा बोला—‘ अरे, कौन है यहाँ ? ’ उसके ऐसा कहते ही वे मिट्टीके पुतले सजाव हो उठे और मंत्रीको चिपट पड़े । इस असंभव जैसे महान् आश्चर्यको देख कर और राजाके प्रकट प्रभावसे विस्मित हो कर मंत्री उसके चरणोंपर गिर पड़ा और अपनेको छुड़ानेकी अभ्यर्थना करने लगा । फिर राजाके वैसा ही करने (छुड़ा देने) पर भक्ति-पूर्वक मंत्रोंने कहा— ‘ आपको साम्राज्य देनेमें मैं निमित्त मात्र हूँ । आपके पुण्यप्रभावसे पुतले सचेतन हो कर इस प्रकार आज्ञाकारी हो रहे हैं, सो इसमें पूर्वजन्मके कर्म ही कारण हैं; और इसलिये आपका यह जो पुण्यसार नाम है वह सार्थक है ।

इस प्रकार यह पुण्यसारका प्रबंध समाप्त हुआ ।

*

कर्मसार राजाका प्रबन्ध ।

२०८) प्राचीन कालमें, कुसुमपुर नगरका नंदिवर्धन नामक राजकुमार, देशान्तर भ्रमणके कौतुकसे माता-पितासे बिना पूछे ही अपने छत्रधरके साथ चल् पड़ा । यह-छासे घूमता हुआ, एक प्रातः कालमें, किसी गाँवमें जा पहुँचा । वहाँ, पुत्रहीन राजा मर गया था, इससे सचिवोंने अभिषिक्त करके पट्टहस्तीको किसी नये राजाकी तलाशमें सारे नगरमें घुमाया । संयोगवश वह वहाँपर आया और उस निकटस्थ नृप कुमारको, दुःस्वप्नकी नाई भूल कर, ससंभ्रम उस हाथीने छत्रधरका अभिषेक किया । प्रधानोंने बड़े मशौसवके साथ उसको नगरमें प्रवेश कराया । उसने राजकुमारको भी बैस ही ठाठके साथ अपने साथ ले कर महलमें प्रवेश किया । बादमें—‘ मैं राजलोकका स्वामी हूँ; लेकिन तुम मेरे स्वामी हो ’ इस प्रकारके अन्तरंग वचनोंसे वह उस राजकुमारकी आराधना करता रहा । पर वह राजा राजगुणोंके अयोग्य था और वेद वेद वेवकूफ था । वर्णाश्रम धर्मके पालनके परिश्रममें अनभिज्ञ और प्रजाका पीड़क हो कर ज्यों ज्यों वह राज्य करता था त्यों त्यों, शंकरके

शिरमें रहे हुए चंद्रमाकी तरह, वह प्रतिदिन क्षीण होता जाता था। उस कुमारको बैसा देख कर, किसी समय राजाने दुर्बलताका कारण पूछा तो उसने कहा कि—‘दुर्बुद्धिके कारण तुम जो प्रजाको पीड़ा दे रहे हो यह अत्यन्त अनुचित कर्म है और इस कारण मैं क्रुश होता जा रहा हूँ’।

२४२. जिसे मूर्खोंके बीच वास करना पड़े तथा जिसके स्वामिके कानोंके पास दुर्जनोकी जीभ लगती हो, उसका यदि जीवन बना रहे तो उसे ही लाभदायक समझना चाहिए; क्षीण होनेमें तो विस्मय ही काहेका।

सो मैंने इस गाथाके अर्थको सत्य कर बताया है। उसके इस कथनके अनन्तर राजाने कहा कि—‘इस पापनिरत प्रजाके अपुण्योदयने ही तो, निश्चय करके भविष्यमें इसको पीड़ित करनेके लिये, मुझे राजा बनाया है। यदि विधाता इस प्रजाके भाग्यमें परिपालना लिखता तो उस समय पट इस्ती तुम्हारा ही अभिषेक करता।’ उसकी इस उक्ति और युक्ति रूप औषधसे उस कुमारका वह रोग दूर हो गया और वह शरीरसे पुष्ट होने लगा।

इस प्रकार यह कर्मसार प्रबंध समाप्त हुआ।

*

राजा लक्ष्मणसेन और उमापतिधरका प्रबंध।

२०९) गौडदेशकी लखनावती नगरीमें लक्ष्मणसेन नामक राजा अपने उमापतिधर नामक सर्वबुद्धिनिधान ऐसे सचिवके साथ, सारी राज्य व्यवस्थाका विचार करते हुए, राज्य करता था। बादमें वह, मानों अनेक मातंग (हाथी) के सैन्यके संगसे मदान्धता धारण करके, किसी वेश्याके संगरूप कलङ्कपंकमें डूब गया। उमापतिधरने यह व्यतिकार जाना तो, प्रकृतिसे क्रूर होनेके कारण स्वामीको बेकाबू समझ कर, प्रकारान्तरसे उसे समझानेके लिये, उसने सभामंडपके भारपट्टपर, गुप्त-भावसे इन कविताओंको लिख दिया—

२४३. हे जल! शीतलता तो तुम्हारा ही गुण है, और फिर तुम्हारी स्वाभाविकी स्वच्छताकी तो बात ही क्या कही जाय—तुम्हारे ही स्पर्शसे अन्य अपवित्र वस्तुयें पवित्र होती हैं। इससे बढ़कर और तुम्हारी स्तुति क्या हो सकती है कि तुम्हीं तो शरीरधारियोंके जीव हो। फिर अगर तुम्हीं नीच पथसे जाते हो तो तुम्हें रोकनेमें कौन समर्थ है?

२४४. हे शिव! तुम अगर छोटे बैल पर चढ़ते हो तो उससे दिग्गजोंको क्या हानि है? तुम अगर सौंपोंका आभूषण पहनते हो तो इससे सोनेका क्या नुकसान है? अगर अपने शिरपर इस जड़ किरण चन्द्रमाको धारण करते हो तो उससे त्रैलोक्यके दीपक सूर्यका क्या विगड़ता है? तुम जगत्के ईश हो तो फिर हम तुम्हें क्या कहें?

२४५. यद्यपि कटे हुए ब्रह्मशिरको वह धारण करता है, यद्यपि प्रेतोंसे उसकी मित्रता है, यद्यपि रक्षाक्ष हो कर मातृकाओंके साथ वह क्रीडा करता है, यद्यपि स्मशानमें वह प्रीति रखता है और यद्यपि सृष्टि करके वह उसका संहार कर देता है, तो भी, मैं उसमें मन लगा कर भक्ति-पूर्वक सेवा करता हूँ। क्यों कि त्रिलोक शून्य है और वह जगत्का एक-मात्र ईश्वर है।

२४६. इस मदान् प्रदोषकालमें तुम्हीं एक मात्र राजा (चंद्र) हो, और इसी लिये तो क्या कमलोंकी लक्ष्मीको बंद करके कुमुदोंकी श्रीको बढ़ा नहीं रहे हो? पर इसमें जो बलाका निवास है और पुष्पोंकी पंक्तिमें इसकी जो प्रतिष्ठा है उसको दूर करनेवाले तुम कौन हो? क्यों कि वह तो स्वयं विधाता भी करनेमें समर्थ नहीं है।

२४७. हे हार ! तुम सद्वृत्त, सद्गुण, महाई, और अमूल्य हो कर प्रियाके घन ऐसे स्तनतटके उपयुक्त तुम्हारी सुंदर मूर्ति है । किन्तु हाय, पामरीके कठोर कंठमें लग कर टूट जानेसे तुमने अपनी वह गुणिता खो दी है ।

किसी राजासभके अवसरपर आये हुए राजाने इन कविताओंको देखा और उनका अर्थ समझ कर भीतर ही भीतर मंत्रीसे द्वेष धारण करने लगा । क्यों कि—

२४८. आजकल प्रायः सन्मार्गका उपदेश करना, उसी तरह कोपका कारण होता है, जैसे नकटको दर्पण दिखाता ।

इस न्यायसे कुपित हो कर राजाने उसे पदभ्रष्ट कर दिया । इसके बाद उस राजाने, एक बार, राज-पाटिकासे लौटते हुए रास्तेमें दुर्गतिप्रस्त, निरुपाय और एकाकी ऐसे उस उ मा प ति ध र को देखा, तो क्रोधपूर्वक उसे मार डालनेके लिये, हस्तिपालके द्वारा उस पर हाथी चलवा दिया । तब उसने महावतसे कहा कि—‘जब तक, मैं राजाके सामने कुछ कह पाऊँ तब तक, तुम वेगसे हाथीको जरा धाम रखो ’ । उसकी बात सुन कर उसने बैसा ही किया; तो फिर वह उ मा प ति ध र बोला—

२४९. जिसको, सज्जन ऐसे गुरु लोग उपदेश नहीं देते उस शिवका कैसा हाल हो रहा है ?—नंगा फिरता है, शरीरमें धूल लगाता है, बैलकी पीठपर चढ़ता है, साँपोंसे खेला करता है, और जिसमेंसे लोह टपकता है ऐसे हाथीके चमडेको पहन कर नाचता है । इस प्रकारके आचारबाह्य तथा अन्य कई प्रकारके [भिद्य] आचरणोंसे वह प्रेम रखे करता है ।

इस प्रकार उसके विज्ञानरूपी वचनानुशसे उस राजाका मनरूपी हाथी वश हुआ, और वह अपने चरित्रके विषयमें पश्चात्ताप करता हुआ अपनी खूब निंदा करने लगा । धीरे धीरे उस वासनासे मुक्त हो कर उसने फिरसे उसे अपना प्रधान बनाया ।

इस प्रकार लक्ष्मणसेन और उमापतिधरका यह प्रबंध समाप्त हुआ ।

*

काशीके जयचन्द्र राजाका प्रबन्ध ।

२१०) काशीनगरी में जयचन्द्र नामक राजा, महती साम्राज्य लक्ष्मीका पाळन करता हुआ, पंगु (लंगड़ा) इस विरुद्धको धारण करता था । कारण यह था कि बड़े भारी सैन्य समूहसे व्याकुलित होनेके कारण, वह गंगा-यमुना नदीरूप लाठीके सहारे बिना कहीं आ-जा नहीं सकता था । वहाँ रहनेवाले किसी शाहापतिकी सूहव नामक पत्नी, जिसने अपने सौन्दर्यसे तीनों लोकके खोजनोंको जीत लिया था, किसी समय भयानक ग्रीष्म ऋतुमें जलकेलि करके गंगाके किनारे खड़ी थी । तब उस खड्गनयनाने देखा कि एक साँपके शिरपर खंजन पक्षी बैठा है । वहाँ पर नहानेके लिए आये हुए किसी ब्राह्मणके पैरों पड़ कर उसने उस असंभव शकुनका विचार पूछा । उस नैमित्तिकने कहा कि—‘अगर मेरा सदा आदेश मानना मंजूर करो तो मैं इसका विचार निवेदन करूँ, नहीं तो नहीं ’ । उसने बैसा करनेकी प्रतिज्ञा की, तो ब्राह्मणने कहा कि—‘आजसे सातवें दिन तुम इस राजाकी पटरानी होगी’—ऐसा कह-सुन कर वे दोनों यथास्थान चले गये । जिस दिनके लिये निमित्तज्ञने निर्णय दिया था उसी दिन राजपाटिकासे लौटते हुए राजाने, किसी एक गड्डीमें अगण्य लावण्यसे सुभग अंगवाली उस शाहापतिकी स्त्रीको खड़े देखा । उसे अपने चित्तका सर्वस्व चोरनेवाली

१ इस पद्यमें प्रयुक्त सद्वृत्त, सद्गुण और गुणित्व ये शब्द प्रविद्ध अर्थके अतिरिक्त श्लेषे हारके पद्यमें इन अर्थके वाचक हैं—सद्वृत्त=अच्छी गोलार्वाला; सद्गुण=अच्छे भागेवाला; गुणित्व=भागेकी बनावटवाला ।

समझ कर उसने अपने पास रख लिया और पटरानी बनाया। इसके बाद उस कृतज्ञाने ब्राह्मणके प्रति की हुई अपनी प्रतिज्ञाका स्मरण करके राजासे उस विधाधर नामक ब्राह्मणको बुलानेके लिये प्रार्थना की। राजाने दुग्गी पिटवा कर विधाधर नामक ब्राह्मणको बुलवाया तो उस नामके सात सौ ब्राह्मण आ कर उपस्थित हुए। उनमेंसे उस एकको पहिचान कर अलग बैठाया और बाकी सबको यथोचित सत्कारके साथ विश्रांति किया गया। बादमें उस विपत्तिप्रस्त विधाधरसे राजाने कहा कि—‘जो इच्छा हो माँगो’। राजाके आदेशसे प्रमुदित हो कर उस ब्राह्मणने ‘सदैव उसकी अंगसेवा’ की प्रार्थना की। राजाने स्वीकार करके, उसके असीम चातुर्यकी पर्यालोचना करते हुए उसे सर्वाधिकारके भारका धारण करनेवाला धुन्धर पद दिया। वह क्रमशः सम्प्रतिशाही बन गया। अपने अन्तःपुरकी बत्तीस सुंदरियोंके लिये ऊँची जातिके कर्पूरके बने हुए नित्यनये आभरण बनवाता और यह कह कर कि पुराने आभरण निर्मलिय हैं उन्हें एक छोटी कुईमें डुबा देता। इस प्रकार साक्षात् देवता-वतारकी नाई दिव्य भोगोंको भोगता हुआ [नित्य] अद्भुत हजार ब्राह्मणोंको यथेच्छ भोजन दान करनेके पश्चात् स्वयं भोजन करता।

२११) इसके बाद, विदेशी राजाके ऊपर चढ़ाई करनेके लिये राजाकी आज्ञासे, चतुर्दश विधाओंके ज्ञाता विधाधर ने नाना देशोंमें घूमते हुए, एकवार एक ऐसे देशमें जा कर डेरा दिया जहाँ ब्रह्मनेके लिये इन्धन (कड़वी आदि) नहीं था। तब उन ब्राह्मणोंकी रसोईके समय, रसोईयोंके बख तेजमें भिगो कर उन्हींको इन्धन बना कर नित्यकी भाँति ही उनको भोजन कराया। इस तरह शत्रुओंको जीत कर जब वह लौट कर वापस नगरके समीप आया तो मातृव्य हुआ कि, पिण्याक (भोजन) के बनानेकी इच्छासे जो दुग्ध जलाये गये, उससे राजा कुपित हो गया है। इससे उसने अपने घरको तो याचकोंके द्वारा लुटवा दिया और स्वयं तीर्थयात्राके लिये निकल पड़ा। राजा भी फिर पीछे जा कर उसका अनुनय करने लगा, पर उसने स्वाभिमानवश, अपनी उस (भोजन बनानेकी) इच्छाके कारण राजाका वैसा आशय (क्रोधयुक्त भाव) हो गया था यह बता कर, जैसे जैसे उसकी अनुमति ले कर अपना अन्त साधन किया।

२१२) अनन्तर, सूहृदवैचीने राजासे अपने पुत्रके लिये युवराज पदवी माँगी। राजाने कहा कि—‘रखेछिनके लड़केको हमारे वंशमें राज्य नहीं दिया जाता’। इससे उसने राजाको मारनेके लिये म्हेच्छोंको बुलवाया। उस स्थान पर रहनेवाले पुरुषों (राजदूतों) से इस बातका हाल जान कर, राजाने एक दिगंबर भिक्षुरुसे, जिसने पद्मावतीसे धर प्राप्त किया हुआ था, सादर निमित्त (कोई मात्रिक उपाय) पूछा। उसने राजाको विश्वास पूर्वक कहा कि—‘पद्मावतीका आदेश म्हेच्छागमनके विरुद्ध है’। इसके अनन्तर कुछ दिनोंके बाद, यह सुन कर कि म्हेच्छ नजदीक आ गये हैं, राजाने उस दिगम्बरसे फिर पूछा कि यह क्या बात है? तो उसने उसी रातको राजाके सामने ही पद्मावतीको होमादि देना आरम्भ किया। तब उसकी उस उत्तम आकर्षण-विधाके बलसे, होमकुण्डकी ज्वालाओंमें प्रत्यक्ष हो कर, पद्मावतीने तुरुहों (तुर्हों) के आगमनका निषेध ही बताया। तब फिर उस क्रुद्ध दिगम्बरने उसके कान पकड़ कर अत्यन्त क्रोधसे कहा कि—‘म्हेच्छ सेनाके निकट आ जानेपर भी तू ऐसी मिथ्या बात बोल रही है’। इस तरह फटकारी जानेपर उसने कहा कि—‘तू जिस पद्मावतीकी अति भक्तिसे साथ यह पूछ रहा है वह तो हमारे प्रतापके बलसे कहीं भाग गई है। मैं तो उस म्हेच्छराजकी कुलदेवी हूँ। मिथ्या बोल कर लोगोंमें भ्रमसा पैदा करके, उन्हें म्हेच्छोंके द्वारा विश्वास (प्राण-हति) कराती रहती हूँ’। ऐसा कह कर वह तिरोहित हो गई। बादमें प्रातःकालमें ही म्हेच्छ सेना द्वारा बाणारसी नगरीका विनाश जाना राजाने जान-पाया। उनके धनुष्योंके टंकारोंमें, राजाके चौदह सौ नगाडोंकी आवाज कहीं डूब गई और म्हेच्छ सेनाके भयसे

मनमें व्याकुल हो कर उस सूहव देवी के पुत्रको अपने हाथीपर बैठा कर (उसके साथ) राजा गंगाके जलमें डूब मरा ।

इस प्रकार यह जयचन्द्रका प्रबंध समाप्त हुआ ।

*

जगद्देव क्षत्रियका प्रबंध ।

२१३) त्रिविध वीरश्रेष्ठत्वको धारण करनेवाला जगद्देव नामक एक क्षत्रिय वीर हुआ । वह श्री सिद्धराजके द्वारा खूब सम्मानित होता था । फिर भी उसके गुणरूप मंत्रके वशीभूत हो कर शत्रुमर्दन ऐसे राजा परमर्दानि जब उसे आम्रहपूर्वक अपने यहां बुलाया, तो पृथ्वीरूप रमणीके केशरुत्पापके समान उस कुन्तल देशमें वह गया । दरवाजेपर पहुँच कर जब उसने राजाको अपने आनेकी खबर भिन्नवाई उस समय [राजाके आगे] एक वेश्या, नंगी हो कर 'पुष्पचलन' नृत्य कर रही थी । वह तत्काळ ही लज्जित हो कर अपनी चादर ओढ़ कर वहीं बैठ गई । जब राजाके द्वारपालने जगद्देवको प्रवेश कराया तो राजाने उठकर आलिंगन दिया और प्रिय आलाप आदि किया । इस सम्मानके बाद, फिर उसे प्रधान परिधानदुकूल और लाखोंकी कौमत्तके अतुलनीय ऐसे दो अन्य वस्त्र भेंट स्वरूप दिये । बादमें जगद्देवके महामह्यवान आसन पर बैठ जानेपर सभाका संत्रम जब दूर हुआ, तो राजाने उस वेश्याको नाचनेका आदेश किया । तब उस उचितज्ञा चतुर नारीने कहा कि— 'संसारके एकमात्र पुरुष श्री जगद्देव नामक अब यहाँपर विद्यमान है इसलिये इनके सामने बिना वस्त्रके नाचते मैं लजाती हूँ । बियाँ बियाँके सामने ही यथेष्ट चेष्टा कर सकती हूँ' । उसकी इस लोकोत्तर प्रशंसासे मनमें प्रमुदित हो कर जगद्देव ने राजाके दिये हुए उन दोनों वस्त्रोंको उसे दे डाला ।

इसके बाद, जब परमर्दाके प्रासादसे जगद्देवको किसी एक देशका आधिपत्य मिला तो उसे सुनकर उसका ऋणग्रस्त उपाध्याय उससे मिलने आया । उसने यह काव्य भेंट किया—

२५०. हम दो आदमीके पुण्यको मानते हैं—एक तो अश्रुत्रिय विधिते वालिको मारनेवाले किसी भगवान् (रामचंद्र) के, और दूसरे संगीतमें आसक्त कुन्तल पति के । इनमेंसे एक (रामचंद्र) ने तो महत्तनय (हनुमान्) की दोनों सुंदर सुभाओं रूप कामधेनुका दोहन किया और दूसरे (कुन्तलपति) ने, हे प्रतिपक्ष (शत्रु) के लिये प्रत्यक्ष परशुराम, आप जैसे चिन्तामणिको प्राप्त किया ।

इस काव्यके पारितोषिकमें उस ल्यूललक्ष (लक्षण-सम्पन्न) ने आधा लाख दिया ।

२५१. चक्रवेने पाय (मुसाफिर) से पूछा कि ' हे मित्र ! बताओ पृथ्वीमें बसने लायक वह कौनसा देश है जहाँपर चिर कालतरु रात्रि नहीं होती ? ' (इसपर पांयने कहा कि) ' श्री जगद्देव नामक पुरुष जो सुवर्णदान कर रहा है उससे थोड़े ही दिनोंमें मेरु पर्वत समाप्त हो जायगा । और फिर सूर्यका छिपना बंद हो कर एक मात्र अद्वैत ऐसा (बिना रात्रिका) दिन ही बना रहेगा ।

२५२. पृथ्वीकी रक्षा करनेमें दक्ष ऐसे दाहिना हाथवाले, दाक्षिण्यकी शिक्षा देनेमें गुरुके समान, कल्याणके स्थान और धन्यजन्म ऐसे जगद्दाना जगद्देवके नियमान होनेपर, विद्वानोंके घर भी ऐसे बन गये हैं कि जिनमें प्रतिदिन, मतवाले हाथी और घोड़ोंके बांधने योग्य वृद्धोंकी रस्तियाँ टूट जानेके कारण, नौकर लोग न्याकुल बने रहते हैं ।

२५३. तुम्हारे जीवित रहते बडि, कर्ण और दधीचि जीते हैं और हमारे जीवित रहते दादित्य जीता है ।

२५४. हे जग देव ! हम नहीं जानते कि किसका हाथ थक जायगा—दरिद्रोंको रचते रचते ब्रह्माका या उन्हें कृतार्थ करते करते तुम्हारा ।

२५५. हे जग देव ! इस जगद्रूप देवमंदिरमें प्रतिष्ठित तुम्हारे यशरूपी शिवलिङ्गके ऊपर [आकाशके] नक्षत्रोंने अक्षतका रूप धारण किया है ।

[१७४] हे जग देव ! चारों समुद्रोंमें डुबकी मारनेके कारण तुम्हारी कीर्ति मानों ठंडीसे जकड गई है, इसलिये अब ताप लेनेके निमित्त वह सूर्य-मण्डलको चली है ।

[१७५] क्षत्रियदेव श्री जग देव भूपालका कल्याण हो ! जिसके यशरूपी कमलमें आकाशने अमरका रूप धारण किया ।

[१७६] पृथ्वीमण्डलपर सुवर्ण वितरण करनेवाला तो एकमात्र जग देव ही है और उसके माग्नेवालोंकी संख्या हजारोंकी है—ऐसा सोच कर, ऐ मेरे मन विषाद मत करो । सूर्य कितने हैं और प्रबल अंधकाराशिमें डूबते हुए जन-समूहकी प्राणरक्षके लिये यात्रामें प्रवृत्त उनके घोड़ोंके खुरसे खुदा हुआ यह दिव्यमण्डल कितना विस्तृत है !

जग देव की दी हुई ' न नवम् ' (नया नहीं है) इस समस्याकी पूर्ति एक पंडितने इस प्रकार की—

२५६. समुद्र अगाध है, पृथ्वीमण्डल विशाल है, आकाश विस्तृत है, मेरु पर्वत ऊँचा है, विष्णु प्रथित-महिमा है, कल्पवृक्ष उदार है, गंगा पवित्र है, चंद्रमा अमृतवर्षा है और जगदेव वीर है—ये सब (विशेषण-युक्त विशेष्य) नये नहीं हैं ।

[१७७] तुझ समान जगदाता जग देव के विद्यमान होनेपर, अब लोक साहसिक राजाके चरितके आश्रयोंमें भी मन्दादर हो गये हैं तो फिर पार्थकी उस सच्ची कथाका कहना तो बूढ़ा ही है ! यह पृथ्वीमें बलि है, यह भूचर शक है । कृष्णको किसीने देखा नहीं, पृथ्वीमंडल कल्पवृक्षसे शून्य है । कामदेवका शोच न करना चाहिए । (—इस पद्यका भाव कुछ स्पष्ट नहीं ज्ञात होता.)

[१७८] हे जग देव ! तुम्हारा यशरूप दुर्वार चंद्रमा जब निरंतर ही अपनी किरणश्रेणीको दसों दिशाओंमें विकीर्ण करने लगा, तब सारे भुवनको राकाके लिये भयका स्थान समझ कर, 'कुड्ड' शब्द है सो एक मात्र कोकिलके कंठका शरणभूत होकर रहा । ('कुड्ड' का एक अर्थ अमावस्याकी रात्रि है, और दूसरा कोकिलका शब्द है । जगदेवके यशरूपी चंद्रमाका निरंतर प्रकाश बना रहनेसे अमावस्याका अभाव हो गया, इसलिये कुड्ड शब्दका व्यवहार केवल, कोकिलके शब्दमें रह गया ।)

[१७९] हे प्रभु जग देव ! तुम्हारे रूपमें मुग्ध हो कर, वातायन पर स्थित सुभू (सुंदर भुवों वाली) रमणियोंकी कमलदलसे द्रोह करनेवाली नाचती हुई आँखें सभय, साहस, सगर्व, सार्द्ध, तिरछी, चकित, भ्रान्त और आर्त की नाई, कहा नहीं पड़ती हैं ।

इस प्रकारके बहुतसे काव्य हैं जो यथाश्रुत जानने चाहिये ।

राजा श्री परमर्षीराज की पट्टेदेवीको जग देव ने अपनी भगिनी माना था । एक बार, राजाने सीमान्त भूपालको हारनेके लिए श्री जग देव को भेजा । वह, वहाँ जब देवार्चन कर रहा था उसी समय छल करके आघात करनेवाले शत्रुने उसकी सेनामें उपद्रव मचाया । इसका हाल सुन कर भी वह जग देव उस देवपूजासे बाहर नहीं निकल । प्रपिथि पुरुषोंके मुँहसे राजाने जग देव का पराजय हुआ सुना तो यह अश्रुतपूर्व बात सुन कर

अपनी रानीसे परमर्दाने [व्यंग्य करते हुए] कहा कि—‘ तुम्हारा भाई समरवीरताका तो बड़ा अहंकार धारण करता है लेकिन शत्रुओं द्वारा आक्रान्त हो कर वह वहाँसे भाग भी नहीं सका । राजाकी इस मर्मभेदिनी परिहास वाणीको सुन कर रानीने प्रातःकालमें पश्चिमकी ओर देखा । राजाने पूछा ‘ क्या देखती हो ? ’ इस पर रानीने कहा कि ‘ सूर्योदय ’ । तब राजाने कहा ‘ पगली, क्या कभी पश्चिम दिशामें भी सूर्योदय होता है ? ’ इसपर वह बोली— ‘ पश्चिममें सूर्योदयका होना असंभव हो कर भी, कभी विधिके विधानके विरुद्धका होना संभव है; पर क्षत्रियोंमें देव जैसे जग देवका पराजय होना तो संभव ही नहीं’ । इस प्रकार उस दम्पतीका प्रिय आलप हो रहा था । इधर, देवपूजाके बाद जग देव ने ५०० सुभटोंके साथ उठ कर, उस शत्रु राजाकी सेनाका क्रीडामात्र-हीनें इस तरह दखन कर डाला, जिस तरह सूर्य अन्धकारके समूहका, सिंह-शाव गजयूथका और प्रचण्ड अन्धङ्घनघोर मेघमालाका दखन करता है ।

२१४) वह परमर्दा राजा, जगतमें एक उदाहरणभूत ऐसे परम ऐश्वर्यका अनुभव करता हुआ, एक निद्राके अवसरको छोड़ कर, दिनरात अपने ओजके प्रकाशका करनेवाला छुरिका-अभ्यास (छुरी चलानेकी कलाका परिश्रम) किये करता था । भोजनके अवसर पर रसोई परोसनेमें व्यस्त ऐसे एक एक रसोईयोंको नित्य ही निर्दय भावसे उस छुरिकासे काट डालता था । इस प्रकार सालमें ३६० रसोईयोंका वह संहार करता हुआ ‘ कोप-कालानल ’के विरुद्धसे प्रसिद्ध हो गया ।

२५७. हे आकाश, तुम फैल जाओ; दिशाओ, तुम आगे बढ़ो; हे पृथ्वी, तुम और भी चौड़ी हो जाओ; आदिकालके राजाओंके यशका उज्ज्वल तो तुम लोगोंने प्रत्यक्ष किया ही है; अब परमर्दा राजाके यशोराशिका विकाश होनेसे देखो कि यह ब्रह्माण्ड, प्रस्तुतित बीजोंके कारण, फटे हुए दाक्षिणकी दशाको प्राप्त हो रहा है ।

इत्यादि स्तुतियोंसे स्तुत हो कर वह राजा चिर कालतक साम्राज्यके सुखका अनुभव करता रहा ।

२१५) उसका, स पादलक्षके राजा पृथ्वी राजके साथ युद्ध हुआ और संग्रामाङ्गणमें वह अपने सैन्यके पराजित होने पर, दिग्बिम्ब हो कर, किसी एक दिशासे भागता हुआ अपनी राजधानीमें आया । उस परमर्दा राजाके द्वारा पूर्वमें अपमानित कोई सेवक, देश निकालेकी सजा पा कर पृथ्वी राजकी सभामें आया । उसके प्रणाम करनेके बाद राजाने उससे पूछा कि—‘ परमर्दाके नगरमें सुकृती लोग विशेष करके किस देवताकी पूजा करते रहते हैं ? ’ इस प्रकार स्वामिके पूछनेपर उसने शीघ्र ही यह तत्कालोचित पद्य पढ़ा—

२५८. शिवकी पूजा करनेमें वह मंद है, कृष्णार्चन करनेकी उसे कोई तृष्णा नहीं है, दुर्गाको प्रणाम करनेमें वह स्तब्ध रहता है, त्रिधाता रूपी प्रह [उसके यहाँ पूजा न पानेसे] व्यग्र रहता है । ‘ हमारा स्वामी परमर्दा इसीको मुँहमें रख कर पृथ्वी राज नरपतिसे रक्षा पा सका है ’ इस बातको सोच कर वहाँकी प्रजा तृण ही की पूजा किये करती है ।

इस स्तुतिसे प्रसन्न हो कर राजाने उसे यथेष्ट पारितोषिक दे कर अनुगृहीत किया । उसने (पृथ्वीराज) इन्क्रीस वार म्बेच्छराजाको हराया था । तब बाईसवीं वार वही म्बेच्छराज अपनी दुर्धर सेनाके साथ चढ़ कर पृथ्वी राजकी राजधानीके पास आ कर ठहरा । मन्कलीकी तरह बारबार उड़ा देनेपर भी, इस प्रकार, शत्रुको फिर फिर आते देख उसकी तरफ राजाकी उपेक्षाका होना जाना, तो स्वामीकी असीम कृपाका पात्र और उसके दूसरे शरीरके जैसा वह तुंग नामक क्षात्रतेजधारी वीरश्रेष्ठ, अपनी छायाके जैसे पुत्रके साथ म्बेच्छराजकी सेनामें जा घुसा । रातके समय उसने देखा कि उस शत्रुके तंबूके चारों ओर एक खाई खुदी हुई है जिसमें खैरकी लकड़ीकी आग धक रही है । यह देख वह अपने पुत्रसे बोला—‘ मैं इस खाईमें कूद पड़ता हूँ;

तुम मेरी पीठपर पैर रख कर जा कर म्हेच्छराजको मार डालो' । पिताके ऐसा आदेश करनेपर उसने कहा कि— 'यह काम मेरे डिये साम्य नहीं है । कि अपने जीवनकी आकांक्षामें पिताकी मृत्यु देखूँ !; सो मैं ही इसमें पड़ता हूँ और आप ही मेरी पीठपर पैर रख कर उसका अन्त कर डालें' । उसके वैसा करनेपर, स्वामीके कार्यको सिद्ध-प्राय हुआ मान कर आसानीसे उसने शत्रुको मार डाला और फिर जैसे आया था वैसे ही घर लौट गया । जब प्रमात् होनेकी आवा तो अपने स्वामीकी मरा देख कर वह म्हेच्छ सेना दीन हो कर भाग गई । गंभीरप्रकृति होनेके कारण उस तृंग सुभटने राजाको वह कुछ भी हाल नहीं बताया । किसी समय, राजमान्य होनेके कारण अत्यंत परिचित ऐसी उस तृंग सुभटकी पुत्रवधुकी मंगलदर्शक इस्तंक्रंणसे रहित देख कर, राजाने संभ्रमभावसे उसका कारण पूछा । समुद्रकी नाई गंभीर होनेके कारण, मौनमयीदाके साथ प्रथम तो उसने कुछ भी नहीं बताया । तब राजाने अपनी शपथ दे कर पूछा । इस पर उसने यह कह कर कि— 'यद्यपि अपना गुण कथन करना मेरे डिये दुष्कर कार्य है तथापि आज्ञा होने निवेदन करना पड़ता है' ऐसा कह कर प्रत्युपकारभीरु हो कर उसने वह वृत्तान्त जैसा घटा था वैसा ही निवेदन किया ।

२५९. उब बुद्धिवाले मनुष्योंके चित्तकी यह कोई बड़ी ही अलौकिक कठोरता है कि किसीका उपकार करके फिर वे दूसरेसे प्रत्युपकार पानेके भयसे उनसे निःसृष्ट हो रहते हैं ।

इस प्रकार यह तृंगसुभट प्रबंध समाप्त हुआ ।

*

पृथ्वीराजका म्हेच्छोंके हाथ मारा जाना ।

२१६) इनके अनन्तर, फिर कभी, उस म्हेच्छराजका पुत्र पिताका धर स्मरण करके सपादलक्षके राजा पृथ्वीराजके साथ युद्ध करनेकी इच्छासे बड़ी तैयारीके सहित चढ़ कर आया । पृथ्वीराज की सेनाके वीर धनुर्धरके, वर्षाकालकी मूमलवार शृष्टिकी नाई बरसते हुए, बाणोंकी मारसे वह सन्तन्य भगा दिया गया और फिर पृथ्वीराजने उसका पीछा किया । इस समय भोजन-विभागके अधिकारी पद्मकुन्दने कहा कि— 'सात सौ सौदनियां जो भोजनकी सामग्री ढोती हैं वे पर्याप्त नहीं हैं, इसलिये महाराज कुछ और सौदनियां देनेकी कृपा करें' । राजा यह सुन कर बोला कि— 'म्हेच्छराजको मार कर उसके ऊँटोंका मुंड कन्ने किया जायगा, और फिर तुम्हें माँगी हुई सौदनियां देनेका प्रबन्ध किया जायगा' । ऐसा कह कर उसे समझा दिया और फिर जब आगे प्रयाण करने लगा तो सोमेन्द्र नामक प्रधानने बारंबार निषेध किया । राजाने इस भयसे कि वह उस (म्हेच्छ) के पक्षमें है, उसके फल फाट डिये । इस अव्यक्त परभावके कारण, वह अपने स्वामीसे दुरित हो कर उस म्हेच्छपतिके पास चला गया । उसको अपना पक्षमन्त्र-वृत्तान्त कह कर, उसके मनमें विश्वास बिटाया और उसको पृथ्वीराजके पक्षमें पास ले आया । पृथ्वीराज एकादशके पारणाके पंचवात् जब सोपा हुआ था तो उसकी सेनाके वीरोंके साथ म्हेच्छोंकी लड़ाई उभरा दी । राजा गादी नींदमें सो रहा था । उली अरथाने तुर्कोने उसे कीद कर डिया और वे अपने स्थानमें ले गये । फिर दूसरी एकादशीके पारणाके अवसरपर, जब वह राजा [केरीकी हाथमें] देव-पूजा कर रहा था, उस समय म्हेच्छराजने रौंदा हुआ मूँध, दमके पानमें (दोनेमें) रसरा कर उसके ठंठमें भिन्नगाया । उसके देवपूजाने व्यस्त होनेके कारण, एक कुत्ता आ कर उस मूँधको उठा ले गया । तब पदोदारोंने कहा कि 'इसकी रक्षा क्यों नहीं करते !' इसपर राजाने कहा कि— 'मेरी ब्रिज भोजनसामग्रीको कभी सात सौ सौदनियां भी टांक तरह नहीं दो सकती थीं, उली भोजनकी आज यह दुर्दशा है—दूध बागकी में जनाहुँड हो कर कोरुकसे देल रहा हूँ' । उन्होंने कहा कि— 'क्या पुत्रने अब भी कुछ उछाह टाँकि बाकी है ?' तो उसने कहा 'यदि मैं अपने स्थानपर जा पहुँचूँ

तो अपनी शारीरिक ताकात कैसी है सो दिखा दूँ । पहरेदारोंने यह बात उस म्हेच्छराजको जा कर कही तो वह उसके साहसको देखनेकी इच्छासे, उसे उसकी राजधानीमें ले आया और राज-भवनमें ले जा कर उसको गादीपर बिठाया । बादमें ज्यों ही उन्होंने देखा तो उसके महलकी चित्रशालामें ऐसे चित्र बने हुए नजर आये जिनमें सूअर म्हेच्छोंको मार रहे हैं । यह दृश्य देख वह तुर्कोंका राजा अपने मनमें अत्यन्त पीड़ित हुआ और वहीं पर उसने कुठार द्वारा पृथ्वी राज का सिर काट कर उसका संहार कर डाला ।

इस प्रकार नृपति परमर्द्धी, जगद्देव और पृथ्वीराज इन तीनोंका यह प्रबंध समाप्त हुआ ।

*

कौंकण देशकी उत्पत्ति कैसे हुई ।

२१७) जहाँ समुद्र ही जिसकी परिखा (खाई) है ऐसे शतानन्दपुरमें महा नन्द नामक राजा हुआ । उसकी रानीका नाम था मदन रेखा । अन्तःपुर [में स्त्रियों] की प्रचुरता होनेसे राजा उसके प्रति विरक्त रहता था । इसलिये पतिको वशीभूत करनेकी इच्छासे वह नानाविध भिदेशी जनों और कलाविदोंसे इस वारेमें पूछा करती । तब एक यथार्थवादी विश्वसनीय तात्रिकने उसे कुछ सिद्धयोग बताया । उसके प्रयोग करनेके अवसरपर उसे इस वाक्यका अनुस्मरण हो आया कि ' मंत्रमूलेके बलपर की हुई प्रीतिको पतिद्रोह कहते हैं ' । तो उस योगचूर्णको समुद्रमें फेंक दिया । कहा है कि ' मंत्र और औपधिका प्रभाय अचिन्त्य होता है '—इस लिये औपधके माहात्म्यसे वशीभूत हुआ समुद्र ही उसका वशवर्ती हो कर, मूर्तरूप (मनुष्यस्वरूप) बना कर उसके साथ रातमें आ कर रतिरमण करने लगा । इससे वह गर्भवती हो गई । तब उसके ऐसे चिन्होंको देख कर राजा कुपित हो कर उसे किसी प्रवास आदिका दण्ड देनेकी तदवीर सोचने लगा । इससे उसकी मृत्यु निकट समझ कर समुद्रदेव प्रत्यक्ष हुआ और अपना परिचय देते हुए बोला कि—' मैं समुद्रका अधिष्ठाता देव हूँ, इसलिये डरना मत ' । फिर वह राजासे बोला—

२६०. शीलवती कुलीन कन्याको, विवाह करके, जो सम-दृष्टिसे नहीं देखता, वह बड़ा भारी पापिष्ठ कहा गया है ।

इसलिये इस स्त्रीकी अज्ञात करनेवाले ऐसे तुल्यको मैं अन्तःपुर और परिवारके साथ अगाध जलमें डुबो दूँगा ' । यह सुन कर वह भयभ्रान्ता रानी उसका अनुनय करने लगी । इस पर समुद्रने यह कह कर कि—' यह मेरा ही लड़का होगा और इसलिये मैं ही कहीं कहींका जल हटा कर इसे साम्राज्यके योग्य नई भूमि दूँगा '—ऐसा कह कर फिर उसने कहीं कहींसे जल हटा कर अन्तरीप (बेट) बना दिये जो लोगोंमें सब ' कौंकण ' नामसे प्रसिद्ध हुए ।

इस प्रकार यह कौंकण-प्रबंध समाप्त हुआ ।

*

ज्योतिषी वराहमिहिरका प्रबन्ध ।

२१८) पाटलीपुत्र नगरमें वराह नामक एक ब्राह्मणका लड़का था जो जन्मसे ही शत्रुन ज्ञानमें श्रद्धालु था । गरीब होनेके कारण पशु चरा कर अपना निर्वाह करे करता था । एक दिन [जंगलमें] किसी एक फयर पर लग्न छिप कर उसे बिना मिटाये ही घर लौट आया । यथासमय उचित दृश्य कर लेनेके बाद रातमें भोजन करनेको बैठा तो उस लग्नके रिश्वरंजन न करनेका स्मरण हो आया । तब उठी समय निर्भय भावसे वहाँ गया तो देखा कि उसपर एक सिंह बैठा है । उसने इसकी भी परवा न की और उसके पेटके नाँबे

हाथ ढाळ कर लग्न मिटाने लगा। तब इसके अनन्तर वह सिंहाका रूप त्याग करके सूर्यरूपमें प्रत्यक्ष हुआ और कहने लगा 'वर माँगो'। तब उसने माँगा कि—'मुझे समस्त नक्षत्र ग्रह-मंडलको [प्रत्यक्ष] दिखा दो'। यह सुन सूर्य उसे अपने विमानपर चढ़ा कर ले गया और [सारा ग्रह-चार बता कर] एक वर्ष बाद वहीं ले आ कर छोड़ गया। इस तरह वह प्रहोके वक्र, अतिचार, उदय, अस्त आदिकी प्रत्यक्ष परीक्षा करके पुनः अपने स्थानमें आया। मिहिर (सूर्य) का प्रसाद प्राप्त होनेसे धरा ह मिहिर इस नामसे प्रसिद्ध हो कर वह श्री नन्द नामक वृषतिका परम मान्य हुआ और उसने 'धाराहीसंहिता' नामक एक नया ज्योतिषशास्त्र बनाया।

२१९) एक बार, अपने पुत्र जन्मके अघसरपर, उसने अपने घरमें घटिका रख कर उससे जन्मकालका शुद्ध लग्न ले कर जातक ग्रंथके प्रमाणसे ज्योतिष (जन्मपत्र) बनाया। स्वयं प्रत्यक्ष किये हुए ग्रहचक्रके ज्ञानके बलपर उस पुत्रकी आयु एक सौ वर्षकी निर्णयित की। उस महात्सवमें, श्री भद्रवाहु नामक एक जैनाचार्य— जो उसके छोटे भाई थे—को छोड़ कर, राजासे ले कर रंक तक कोई ऐसा नहीं रहा था जो कुछ उपहार हाथमें ले कर उसके वहाँ नहीं गया हो। तब उस नैमिचित्करणे जिनमत्त शकटाळ मंत्री के आगे, उन सूरिके न आनेके बारेमें उदाहनेके तौरपर कहा। तब उस मंत्रीने, उन महात्माको, जो संपूर्ण शास्त्रके ज्ञाता थे और त्रिकाळके भावोंको हृथेडीपर रखे हुए आँवलेके फलकी तरह जानते थे, यह बात कह सुनाई। तो उन्होंने कहा कि—'आजसे बीसवें दिन उस लड़केकी, विल्लीके निमित्तसे, मृत्यु होगी इसलिये यह समझ कर हम नहीं आये'। उनकी यह उपदेश-वाणी बराह मिहिर से कही गई। तब उसने अपने कुटुंबको, उस बालककी भावी विपदसे आवश्यक रक्षा करनेके लिये कहा और विल्लीसे बचा रखनेके लिये सौ सौ उपाय करने लगा। फिर भी निर्णयित दिनकी रातको उस बालकके सिरपर अर्गळा (दरवाजेको बंद करनेके लिये लकड़ी या लोहेकी बनी हुई एक पट्टी) गिर जानेसे अचानक वह मर गया। फिर उस शोकशोकसे उसका उद्धार करनेकी इच्छासे श्री भद्रवाहु उसके घर आये। वहाँ उन्होंने देखा कि उसके घरके आँगनमें ज्योतिषकी सभी पुस्तकें इकट्ठी करके जलानेके लिये रखी पड़ी हैं। तब उन्होंने पूछा कि 'यह क्या बात है?' तो उस सौवत्सर (ज्योतिषी) ने बड़े दुःखके साथ, उन जैनमुनिको उपास्य देते हुए कहा—'ये पुस्तकें बड़े मारी मोहान्धकारकी उत्पन्न करनेवाली हैं इसलिये अब निश्चय ही इन्हें जला दूँगा; क्योंकि इन्होंने मुझे धोकेमें डाला है'। उसके ऐसा कहनेपर अपने शास्त्रज्ञानके बलसे शालकका जन्मलग्न ठीक तरह निकाल कर उन्होंने सूक्ष्म दृष्टिसे उसका ग्रह-बल बताया तो वह बीस ही दिनका आया। इस प्रकार उसकी शास्त्रविरिके जब दूर की गई तो वह ज्योतिषी बोला कि—'आपने जो विडालसे मृत्यु बताया वह तो ठीक नहीं साबित हुई'। तब उन्होंने उस अर्गळाको वहाँ मँगवाई, जिसके गिरनेसे मृत्यु हुई थी, तो उसमें विडालकी आकृति खुदी हुई पाई गई। 'क्या भवितव्यतामें भी कभी कुछ परिवर्तन हो सकता है?' ऐसे उस महर्षिने कहते हुए कहा कि—

२६१. किस बातके लिये रोया जाय ? यह शरीर क्या चीज है ? ये परमाणु तो अविनाशी हैं । यदि संस्थान-विशेषके लिये ही शोक करना है, तब तो कभी भी प्रसन्न ही नहीं होना चाहिये ।

२६२. यह सब भाव (अस्तित्व) अभावोत्पन्न है और मायाके विभवसे संभावित है । इसका अंत भी अभाव ही में संस्थित है । इस बातके ज्ञानसे सज्जनोंको भ्रम नहीं पैदा होता ।

—इस प्रकारकी युक्तिपूर्वक उक्तिसे उसे समझा कर वे महर्षि अपने स्थानपर आये। इस तरह समझाये जाने-पर भी वह, मिथ्यात्म रूप धनूके प्रभावसे सचे सुवर्णमें भ्रान्तिवाला हो कर, उनके प्रति द्वेषभाव धारण कर रहा। अतः [ईर्ष्यावश] अभिचार कर्मसे, उनके भक्तों और उपासकोंसे किसीको कष्ट पहुँचाने लगा और

किसीको मारने लगा । अपने प्रौढ़ ज्ञानके द्वारा इन लोगोंका यह वृत्तान्त जान कर उन्होंने विघ्नकी शान्तिकेलिये ' उवसग्गहरं पास ' इस नूतन स्तोत्रकी रचना की ।

इस तरह यह वराहमिहिर-प्रबंध समाप्त हुआ ।

*

सिद्धयोगी नागार्जुनका वृत्तान्त ।

२२०) ढं क नामक पर्वत पर रहनेवाले रण सिंह नामक राजपूतको एक भूपत्न नामकी पुत्री थी जिसने अपने सौन्दर्यसे नागलोककी बालाओंको भी जीत लिया था । उसे देख कर वासुकि नागका उस पर अनुराग हो गया । उसने उसके साथ संभोग किया और उससे नागार्जुन नामक पुत्र पैदा हुआ । उस पाताळ पाळ (नाग) ने पुत्रजन्मसे मोहित हो कर उसे सभी औपधियोंके फल, मूल और पत्रोंका भक्षण कराया । इन औपधियोंके प्रभावसे वह महासिद्धियोंसे अलङ्कृत हुआ । सिद्धपुरुष होनेके कारण पृथ्वी-पर्यटन करता हुआ वह शात वाहन नृपतिके पास गया, जहाँ उसे राजाके कलागुरु होनेकी भारी प्रतिष्ठा प्राप्त हुई । तो भी वह गगन-नामिनी विद्याका अध्ययन करनेकेलिये श्री पादलिप्ताचार्यके पास पादलिप्तपुत्र गया । निरभिमान हो कर उनकी सेवा करने लगा । भोजनके समय, पादलेपके द्वारा आकाशमें उड़ कर अष्टापद आदि तीर्थोंको नमस्कार करके वे आचार्य वापस आये, तो उनके चरण धो कर रस, वर्ण और गन्धकी परीक्षासे उसमें १०७ महौपधियोंका होना उसने जाना । बादमें गुरुकी आज्ञाकी परवा न करके उसने स्वयं वैसा ही पादलेप किया । इससे मुर्गे और मोरकी नाई कुलकुल उड़ता हुआ वह एक खड्गमें गिर पड़ा और चोट लगनेसे उसका सारा शरीर जर्जरित हो गया । तब गुरुने पूछा कि ' यह क्या बात है ? ' तो फिर उसने वह सब वृत्तान्त यथावत् निवेदन किया । उसकी इस चतुरतासे चकित हो कर उसने सिरपर अपना करकमल रखते हुए उन्होंने कहा कि— ' साठी चावलके पानीमें उन औपधियोंको मिलाकर पादलेप करो और इस तरह आकाश गामी बनो ' । इस तरह उनके अनुग्रहसे उसे वह सिद्धि प्राप्त हुई । उन्हींके मुँहसे यह भी सुना कि श्री पार्श्वनाथकी मूर्तिके सामने समस्त-खीलक्षणयुक्त पतिव्रताके हाथसे विमर्दित हो कर जो रस सिद्ध किया जाता है वह कोटिवेधी होता है । [उसने उस मूर्तिकी गवेषणा करते हुए जाना कि—] पूर्व कालमें समुद्र विजय दशार्ह (यादव) ने त्रिकाखेदी श्री नोभिनाथके मुखसे सुन कर, महातिशायी श्री पार्श्वनाथका एक रत्नमय त्रिवि निर्माण करके द्वा रावती के प्रासादमें स्थापित किया था । द्वा रावती के जलनेके बाद, जबसे वह पुरी समुद्रमें डूब गई तबसे, वह त्रिवि समुद्रमें वैसे ही विद्यमान रहा । बादमें देवताके प्रभावसे धनपति नामक जहाजी व्यापारीका जहाज टकराया । ' यहाँ पर एक जिनत्रिवि है ' ऐसी देवताकी वाणी सुन कर धनपति ने वहाँ नाविकोंको उसे निकालनेको कहा । उन्होंने सात कच्चे धागोंसे बांध कर उसे बाहर निकाला और उसके प्रभावसे चिन्तितसे भी अधिक लाभ प्राप्त हुआ जान, उसे अपनी नगरमें ले आ कर अपने बनाये हुए प्रासादमें स्थापित किया । नागार्जुनने उस सर्वोतिशायी त्रिविको, अपने सिद्धरसकी सिद्धिके लिये चुरा कर, सेढीनदीके किनारे ला कर रखा । उस त्रिविके सामने, श्री शातवाहन राजाकी एक मात्र पत्नी चंद्रलेखाको, सिद्धव्यन्तरके द्वारा उडवा कर रोज उससे रसपर्दन करवाता । इस प्रकार वहाँ बारंबार आने-जानेके कारण उसके साथ घनिष्ठ बंधुभाव पैदा हो गया । इससे उसने नागार्जुनसे इस रस-पर्दनका हेतु पूछा । उसने भी अपनी कल्पनासे कोटिवेध रसका वह यथावत् वृत्तान्त कहा और वर्णनातीत रूपसे उसका सम्मान करके उसके प्रति अनन्यसामान्य सौजन्य बताया । इसके बाद एक दिन उसने अपने पुत्रोंसे यह वृत्तान्त कहा । वे दोनों इसके लोभी हो कर राज्यत्याग करके नागार्जुन द्वारा अलंछित उस भूमिमें आ कर गुप्त वेश बना कर रहे । उस रसके ग्रहण करनेकी इच्छासे, जिसके वहाँ नागार्जुन भोजन किये करता था, उसे अर्पदान करके अपने

वशमें कर, उसकी बात पूछने लगे। वह भी इस बातके जाननेकी इच्छासे, नागार्जुनके लिभे नमक ज्यादा दे कर रसोई बनाती। इस तरह ६ महीना बीत जानेपर रसोईमें खारापनका अनुभव करते हुए नागार्जुनने उसका दोष निकाला। तब उसने इशारेसे उन्हें सूचित किया कि अब रस सिद्ध हो गया है। भानजे बने हुए इन लड़कोंने उस रसको उड़ा लेनेकी लालसासे,—परम्परा द्वारा यह जान कर कि वासुकिने इसका मृत्यु कुशके शस्त्रसे होना बताया है, उसी शस्त्रसे उसे मार डाला। पर वह रस तो सुप्रतिष्ठ देवताधिष्ठित होनेके कारण तिरोहित हो गया। जहाँ वह रस स्तंभित किया गया था वही पर स्तंभनक नामक श्री पार्श्वनाथका तीर्थ प्रसिद्ध हुआ, जो रसको भी मात करनेवाला, सकल लोकका अभिलषित फलदाता है। बादमें कुछ कालके व्यतीत होनेपर वह भूर्ति, मुखमात्र जितने भागको छोड़ कर बाकी भूमिके अंदर दब गई।

स्तंभनक पार्श्वनाथका प्रादुर्भाव ।

२२१) इसके अनन्तर, श्री अभयदेव सूरिने शासन देवताके आदेशसे, ६ महीनेतक माया रहित हो कर आचान्कका व्रत करके, खड़िया (पट्टीपर लिखनेकी धोळी मिट्टीकी डलिया) के प्रयोगसे जब नयाङ्क वृत्तिकी रचना समाप्त की तो उनके शरीरमें भारी कुछ रोग प्रादुर्भूत हो गया। तब पातालका पाठक धरणेन्द्र नामक नागराज सफेद सर्पका रूप बना कर आया और उनके शरीरको जीभसे चाट कर उन्हें नीरोग किया। फिर श्रीमान् अभयदेव सूरि को उस तीर्थकी यात्राका उपदेश दिया। उन्होंने श्रीसंघके साथ वहाँ आ कर गोपाल बालकोंके द्वारा उस भूमिका पता लगाया, जहाँ एक गाय रोज दूधकी घारा छोड़े करती थी। वहाँ जा कर एक उत्तम ऐसे नये द्वात्रिंशत्तिका स्तंभनकी रचना की। उसके ३३ वै पंचकी रचना होनेपर श्री पार्श्वनाथका वह बिंब प्रकट हुआ। फिर देवताके कथनसे उन्होंने उस पंचको गुप्त रखा।

२६३. जो स्वामी, अपने जन्मके चार सहस्र वर्ष पूर्व ही इंद्र, वासुदेव और बरुणके द्वारा अपने वास्तव स्थानपर पूजे गये, इसके बाद कान्तीके धनिक धनेश्वर द्वारा तथा फिर महान् नागार्जुन द्वारा जिनकी पूजा की गई, वे स्तंभनकपुरमें स्थित श्री पार्श्वनाथ जिन तुम्हारी रक्षा करें। इस प्रकार नागार्जुनकी उत्पत्ति तथा स्तंभनक तीर्थके अवतारका यह प्रबंध समाप्त हुआ।

*

कवि भर्तृहरिकी उत्पत्तिका वर्णन ।

२२२) प्राचीन कालमें, अवन्तिपुरीमें कोई ब्राह्मण पाणिनि व्याकरणके अध्यापनका कार्य करता था। वह नियमसे नित्य सिप्रानदीके तटपर स्थित चिन्तामणि गणेशको प्रणाम किये करता था। किसी समय विद्यार्थियोंने फक्किका-व्याख्याना आदिके प्रश्नोंसे उसे उद्विग्न कर दिया था, इसलिये वर्षाकालमें जब वह नदी भर कर बह रही थी तो वह उसमें कूद पड़ा। दैवयोगसे एक उखड़े हुए वृक्षका मूल उसके हाथमें आ गया जिसका सहारा पा कर वह तीरपर पहुँच गया। वहाँपर साक्षात् परशुरामको देख कर प्रणाम किया। वे उसके उरसाहके ऐसे अनुष्ठानसे प्रसन्न हो कर बोले कि ' इच्छा हो सो मांगो '। उसने पाणिनि के व्याकरणका संपूर्ण रहस्यज्ञान मांगा। उन्होंने उसका देना स्वीकार किया और उसे ' खड़िया ' प्रदान की। उससे उसने प्रतिदिन व्याकरणकी व्याख्या बनानी शुरू की जो छह महीनेके अंतमें समाप्त हुई। फिर शीघ्र ही गणेशकी अनुज्ञा ले कर, उस प्रथम आदर्शके साथ, वह पुरीमें प्रविष्ट हुआ। [रातको] नगरके किसी एक महोत्सके चौकमें बैठा ही बैठा सो गया। तब सधरे उसे वहाँ उस तरह पड़ा देख किसी एक वैश्याकी दासियोंने, वैश्यासे उसका हाथ फहा। उसने उन्द्वित्त उसे भंगवा कर अपने दिंडोलेकी छाटपर रखवाया। तीन दिन और रातके बाद जब उसकी नाँद कुछ कुछ खुली तो उस चित्रशालाकी आर्ध्वजनक चित्रकारीको देख कर वह अपनेको स्वर्गलोकमें उत्पन्न हुआ समझा। तब उस

वेश्याने सब वृन्तान्त कहा और स्थान-पान-भोजन आदिसे उसे सन्तुष्ट किया । फिर वह राजसभामें गया । वहाँ पर पाणिनि व्याकरण की यथावस्थित व्याख्या कर बतानेपर राजा तथा अन्य पंडितोंने उसका बड़ा सत्कार किया । वहाँ जो कुछ पुरस्कार रूपमें उसे मिला वह सब उसने उस वेश्याको समर्पण कर दिया ।

२२३) फिर उसके क्रमशः चारों बर्णोंकी चार खियाँ हुईं । इनमेंसे क्षत्रियाणीके गर्भसे विक्रमादित्य तथा शूद्राके गर्भसे भर्तृहरि पुत्र हुआ । हीनजातिका होनेके कारण भर्तृहरिको रज्जुके संकेतसे भूमिगृहमें बैठा कर गुप्त वृत्तिसे पढ़ाया जाता था । अन्य तीनों लड़कोंको प्रत्यक्ष (पासमें बैठा कर) पढ़ाया जाता था । उन्हें इस तरह पढाते हुए—

२६४. दान भोग और नाश—द्रव्यकी ये तीन गति हैं । [और जो न देता है न भोग करता है उसके द्रव्यकी तीसरी ही गति (नाश) होती है ।]

यह जब पढ़ाया गया तो भर्तृहरिने रज्जुका संकेत नहीं किया और उन तीनों प्रत्यक्ष छात्रोंने आगेके उत्तरार्धका पाठ पूछा । तब कुपित होकर उस उपाध्यायने कहा—‘ और वेश्यापुत्र, अभी तक रस्तीको क्यों नहीं हिलाता ? ’ तब वह प्रत्यक्ष आकर कुढ़कर शास्त्रकी निंदा करता हुआ कहने लगा—

२६५. सौ सौ प्रयास करके प्राप्त किये हुए और प्राणोंसे भी अधिक मूल्यवान् ऐसे धनकी एक दान ही गति हो सकती है । अन्य तो [गति नहीं] विपत्ति है ।

इस पाठसे [उन सबने] वित्तकी फिर एक ही गति मानी । उस भर्तृहरिने वैराग्यशतक आदि अनेक प्रबंध बनाये ।

इस प्रकार भर्तृहरिकी उत्पत्तिका यह प्रबंध समाप्त हुआ ।

*

वाग्भट वैद्यका प्रबंध ।

२२४) धारानगरीमें, मालव मण्डलके भूषणरूप श्री भोजराजका एक आयुर्वेदज्ञ वैद्य वाग्भट नामक था । उसने आयुर्वेदोक्त कुपथ्य करके, उसके प्रभावसे पहले रोग उत्पन्न किया और फिर सुश्रुत कथित पथ्य औषधोंसे उसका निग्रह किया । पानीके बिना कितने समय तक जिया जा सकता है इस बातकी परीक्षाके लिये जल छोड़ दिया । तीन दिनके बाद प्याससे तालू और ओठ सूख गये । तब उसने इस प्रकार कहा—

२६६. कहीं गर्म, कहीं ठंडा, कहीं गर्म करके ठंडा किया हुआ और कहीं औषधके साथ [इस प्रकार पानी सब हालतमें दिया जाता है] पानी कहीं भी मना नहीं किया गया है ।

इस प्रकार पानीके सत्कारका उसने यह वाक्य पढ़ा । उसने अपना अनुभूत ‘वाग्भट’ नामक ग्रंथ बनाया । उसका जामाता जो लघु बाहड कहलाता था वह भी एक समय, अपने अक्षुर ऐसे उस वृद्ध बाहडके साथ राजमंदिरमें गया । संधेरे ही श्री भोजराजके शरीरको देख भावकर वृद्ध बाहड (वाग्भट) ने कहा कि—‘ आज आपका शरीर नीरोग है ’ । तो यह सुनकर लघु बाहडने मुंह मरोड़ा । तब श्री भोजके उसका कारण पूछनेपर उसने कहा कि—‘ आज स्वामीके शरीरमें, रात्रिके शेषमें राजयक्ष्माका प्रवेश हुआ है, जो कृष्णच्छायासे सूचित होता है ’ । इस प्रकार देवताके आदेशसे अतीन्द्रिय भाव बतला देनेके कारण राजा उसके कला-कलापसे चमत्कृत हुआ और व्याधिका उससे प्रतीकार पूछा । तब उसने तीन ढालके मूत्रसे बननेवाले रसायनका प्रयोग बताया । ६ महीनेके बाद उतना द्रव्य व्यय करके यह रसायन सिद्ध किया गया और सार्यकाल काचकी कुर्मीमें भरकर उस रसायनको राजाके विस्तरके पास रख दिया । संधेरे देवतार्चनके बाद राजाने जब यह रसायन खाना चाहा तो उस रसायनकी पूजा-पुरस्कार आदि सब सामग्री तैयार की गई ।

पर उस लघु वैद्यने, किसी कारणवश, उस काचकी कुष्पीको भूमिपर पटक कर तोड़ दिया। राजाको यह कहनेपर कि 'अः यह क्या किया ?' उसने कहा— 'रसायनकी सुगंधिसे ही व्याधि भाग गई है। अब व्याधिके अभावमें इस धातुक्षयकारी औषधका रखना व्यर्थ है। आज रात्रिके अंतमें वह कृष्णच्छाया महाराजके शरीरको छोड़ कर कहीं दूर चली गई दिखाई दी है और इसमें खुद आप ही प्रमाण हैं'। उसके इस प्रत्यय (विश्वास) से सन्तुष्ट हो कर राजाने दरिद्रताको दूर करने बाछा [भारी] पारितोषिक उसे दिया।

२२५) इसके बाद, उन सभी व्याधियोंको उस वैद्यने भूतलसे नष्ट कर दिया। तब उन्होंने जा कर स्वर्ग लोकके वैद्य अश्विनी-कुमारोंसे अपना यह पराभव वृत्तान्त कहा। वे दोनों इस वृत्तान्तसे मनमें आश्चर्य-चकित हो कर नीलवर्णके पक्षीका रूप बना कर, व्याधियोंके लिये प्रतिभट जैसे लघु वाग्मटके धवलगृह (मकान) की खिड़कीके नीचे बल्लों (टोडे) पर बैठ कर 'फोऽहू' (कौन नीरोग है ?) ऐसा शब्द बोले। उस आयुर्वेदज्ञने अपने समीपहीमें सुने जानेवाले इस शब्दको सामिप्राय समझ कर चिर काळतक उसका विचार करके कहा—

२६७. अल्प शाक खानेवाला, चावलके साथ घी लेनेवाला, दूधके रसोंका व्यवहार करनेवाला, पानी ज्यादा नहीं पीनेवाला, प्रकृतिके विरुद्ध—वातकारक और विदाही (ज्वलन पैदा करनेवाले) पदार्थोंको न खानेवाला, अस्थिर भावसे न खानेवाला, खाये हुएके जीर्ण होने (पच जाने) पर खानेवाला और अल्प भोजन करनेवाला 'अरुक्' अर्थात् नीरोग होता है।

ऐसा सुन कर मनमें कुछ चकित हो कर वे चले गये। फिर दूसरे दिन, दूसरी वेछामें, उसी प्रकारका पक्षीका रूप बना कर, वैसा ही पुपुना शब्द करते हुए, वे वैद्यके घर पर आये। फिर उनकी बातको उत्तरमें वैद्यने कहा—

२६८. वर्षामें जो स्थिर रहता है (अर्थात् यात्रा नहीं करता), शरत्कालमें पेय पदार्थोंका सेवन करता है, हेमन्त और शिशिरमें खूब भोजन करता है, वसन्तमें मदमस्त वनता है और ग्रीष्ममें [दिनको] शयन करता है, हे पक्षी, वही पुरुष नीरोग होता है।

ऐसा कहनेपर वे फिर चले गये। तीसरे दिन, योगीका रूप बना कर उसके घर गये और वे बोले—
२६९. हे वैद्य, वह कौनसी ऐसी औषधि है जो न पृथ्वीमें उत्पन्न होती है, न आकाशमें; न बाजारमें मिलती है, न पानीमें पैदा होती है; और फिर सर्व शाखोंको सम्मत है।

इसपर वैद्यने कहा—

२७०. पृथ्वी या आकाशमें न होनेवाली, पथ्य तथा रसवर्जित ऐसी महौषधि पूर्वाचार्यों द्वारा बताई हुई लंघन (उपवास) रूप है।

इस प्रकार अपने अभिप्रायके ठीक अनुकूल प्रत्युत्तर पा कर वे दोनों वैद्य चमत्कृत हुए और फिर प्रत्यक्ष हो कर यथामितम वर प्रदान कर अपने स्थानपर चले गये।

इस प्रकार वैद्य वाग्भटका यह प्रबंध समाप्त हुआ।

*

गिरनार तीर्थके निमित्त श्वेताम्बर—दिग्भ्रमरमें लड़ाई।

२२६) धामण उलि ग्राममें बसनेवाला धारा नामक कोई नैगम (व्यवहारी), जो अपनी लक्ष्मीसे वैश्रवण देवकी भी सखी करनेवाला था, संघारिपति हो कर, प्रभु ब्रह्मका व्यव करके जीवलोकाके जिज्ञाता हुआ, अपने पाँच पुत्रोंके साथ, श्रीरैवतक गिरिकी उपत्यका (तलहटी) में जा कर निवास किया। दिग्ंबर संप्रदायके मूल ऐसे गिरिनगरके राजाने, उसे श्रेतांबर भक्त समझ कर यात्रासे अटनान

चाहा । इस पर दोनोंके सैनिकोंमें लड़ाई छिड़ गई । असीम युद्धसे जूझते हुए, अतिप्रिय ऐसी देवभक्तिसे उत्साहित हो कर उसके पाँचों पुत्र, वहाँ मारे गये और वे मर कर पाँच क्षेत्रपाल हुए । उनके क्रमशः ये नाम हुए— १ कालमेघ, २ मेवनाद, ३ भैरव, ४ एकपद, और ५ त्रैलोक्यपाद । तीर्थके विरोधियोंको मृत्युके मुँह पहुँचाते हुए वे पाँचों विजयी हो कर पर्वतके चारों ओर वर्तमान हैं ।

२२७) फिर उनका धारा नामक पिता जो अकेला ही बच रहा था, उसने कान्यकुब्ज देशमें जा कर श्री वष्य भट्टसूरिके व्याख्यानके अवसरपर श्री संघकी आन दे कर यह कहा कि—‘रैवतक तीर्थमें दिगंबरोंने अपनी वसति बना ली है और श्वेताम्बरोंको पाखंडों कह कर पर्वतपर चढ़ने नहीं देते हैं । इस लिये उनको जीतकर उस तीर्थका उद्धार कांजिये और अपने दर्शनकी प्रतिष्ठा करके तब फिर ये व्याख्यान दोजिए ।’ उसके ऐसे वचन रूप इंधनसे जिनकी क्रोधरूप अग्नि प्रग्न्यलित हो उठी वेसे वे आचार्य उस आम राजाको साथ ले कर, उसी श्रेष्ठके साथ, पर्वतकी उपत्यकामें पहुँचे । सात दिनोंमें, वादस्थानमें दिगंबरोंको पराजित करके संघके सामने श्री अम्बिकाको प्रत्यक्ष किया । ‘इकौवि नमुकारो’ और ‘उज्जिन्तसेलसिहरे’ ये दो गाथायें अम्बिकाके मुखसे सुन कर सितार दर्शनकी प्रतिष्ठा सिद्ध हुई और फिर वे पराजित दिगंबर ‘बलानक मंडपसे’ झम्पापात करके नीचे गिर पड़े ।

इस प्रकार यह क्षेत्राधिपोत्पत्तिका प्रबंध समाप्त हुआ ।

*

सोमेश्वरका अपने भक्तोंकी परीक्षा करना ।

२२८) एक बार, भवानीने शिवसे पूछा कि—‘तुम कितने कार्पटिकोंको राज्य देते रहते हो ?’—उसके ऐसा पूछनेपर [शिवने कहा—] ‘इन लाखों यात्रियोंमें जो कोई एक पूरा भक्ति-परायण होता है उसीको मैं राज्य देता हूँ ।’ इस बातकी परीक्षाके लिये, गौरी (पार्वती) को पंकमग्न बूढ़ी गाय बना कर और स्वयं मनुष्यरूप धारण कर, शिवजी तटस्थ खड़े रहे और काँचड़मेंसे गायका उद्धार करनेके लिये पथिकोंको बुलाने लगे । वे सब लोक तो सोमेश्वर नजदीक होनेसे उसके दर्शनके लिये बड़े उत्कांठित थे, इसलिये उन्होंने उसका उपहास किया । पर पथिकोंका कोई एक दल कृपालु हो कर उसके उद्धारका प्रयत्न करने लगा तो शिवजी सिद्धरूप धारण करके उन्हें डराने लगे । तब उनमेंसे एक ही ऐसा पथिक निकला जो मृत्युकी भी परवा न करके उस गायके समीप पहुँचा । उसीको अलग बतला करके शिवने पार्वतीको बताया कि वही एक राज्यके योग्य है ।

इस प्रकार यह वासनाका प्रबंध समाप्त हुआ ।

*

पूर्वजन्मका किया भोगना ।

२२९) सोमेश्वरकी यात्राको जाता हुआ एक कार्पटिक रास्तेमें किसी लोहारके घर सोया । उस लोहारकी स्त्रीने अपने पतिको मार कर कृपाणिकाको उस कार्पटिकके सिरछाने रख दी और फिर चिछाने लगी । आरक्षक (राज्यके सिपाही) ने वहाँ आ कर उस अपराधीके हाथ काट डाले । इससे वह सदैव उस देवको उपाळमन दिया करता । एक रातको देव प्रत्यक्ष हो कर बोला—‘तुम अपने पूर्व-जन्मकी बात सुनो । एक बार दो भाइयोंमेंसे एकने एक वक्रर्षिके दोनों हाथोंसे कान पकड़े और दूसरेने उसे मार डाला । उसके बाद वह वकरी मर कर यह ली हुई । जिसने इसे मारा था वह इस समय इसका पति हुआ । तुमने जो इसके कान पकड़े थे, इससे तुम्हारा समागम होनेपर, तुम्हारे हाथ काटे गये । सो इसमें मुझे क्यों उपाळमन देते हो ?’

इस प्रकार यह कृपाणिका-प्रबंध समाप्त हुआ ।

*

जिनपूजाका माहात्म्य ।

२३०) प्राचीन कालमें, शंखपुर नामक नगरमें शंख नामका राजा था । वहाँ पर, नाम और कर्म दोनोंहीसे 'धनद' (धन देने वाला) नामका एक सेठ था । उसने एक बार सोचा कि लक्ष्मी हाथीके समान चंचल है, अतः वह हाथमें उपहार ले कर राजाके पास आया और उसे संतुष्ट किया । राजाकी दी हुई भूमिमें, अपने चार पुत्रोंके साथ सलाह करके, शुभलग्नमें उसने एक जिनमंदिर बनवाया । उसमें, प्रतिष्ठित त्रिविकी स्थापना करके उस प्रासादके व्यव-निर्वाहके लिये आमदनीके अनेक मद्र कायम किये । उसकी पूजाके लिये अनेक पुष्प, वृक्ष, लता आदिसे अलंकृत एक सुंदर बागीचा बनवा दिया और उसके कार्यचिन्तक गोष्ठिरु नियुक्त किये । इसके अनन्तर, पूर्वकृत दुष्कर्मके फलके उदयसे क्रमशः उसकी लक्ष्मी घट गई और वह कर्जदार हो गया । मान-प्रतिष्ठाके म्लान हो जानेके कारण वह किसी गौवमें जा कर रहने लगा । नगरमें जा-आ कर लड़के जो कुछ पैदा करते उसीपर गुजर करता हुआ वह काल व्यतीत करने लगा । एक बार, जब चातुर्मासिक पर्व निकट आया तो वहाँ जानेवाले पुत्रोंके साथ वह धनद भी शंखपुर पहुँचा । वहाँ अपने बनाये हुए प्रासादकी सीढ़ियों पर चढ़ते, उसके उद्यानकी पुष्प चुननेवाली (मालिन) ने उसे झूलोंकी डाली भेंट की । परमानंद निर्भर हो कर उसीसे उसने जिनेंद्रकी पूजा की । रातमें गुरुके सामने अपनी दुखस्थाकी वड़ी निंदा करने लगा । तब उन्होंने उसे कपर्दी यक्षका आराधन करनेके लिये मंत्र दिया । फिर एक कृष्ण चतुर्दशीकी रातको उस मंत्रकी आराधना करके कपर्दी यक्षको प्रत्यक्ष किया । गुरुके उपदेशानुसार उससे, चातुर्मासिक दिनके अवसर पर जो पुष्प-चतुःस्रिका (झूलकी चौसरी लड़ी) से जिनेंद्रकी पूजा की थी उसके पुष्पफलकी याचना की । उसने कहा कि—'एक झूलकी पूजाका पुष्पफल भी, बिना सर्वज्ञके, मैं देनेमें असमर्थ हूँ ।' फिर भी उस कपर्दी यक्षने, उस साधर्मिकके प्रति अतुल्य वात्सल्यभाव धारण करके, उसके घरके चारों कोनोंमें, सुवर्णपूर्ण चार कलश निधिरूपमें रख दिये, और वह तिरोहित हो गया । प्रातःकाल वह अपने घर आया और धर्मकी निंदा करनेवाले उन पुत्रोंको वह धन समर्पण किया । वे भी आप्रहृते साथ पितासे उस धनलाभका कारण पूछने लगे । इसपर, उनके हृदयमें धर्मके प्रभावका आविर्भाव करनेके लिये, जिनपूजाके प्रभावसे संतुष्ट हुए कपर्दी यक्ष द्वारा, इस संपत्तिके प्राप्त होनेकी बात कह सुनाई । वे भी सन्पत्ति पा कर फिर उसी जन्मस्थानमें जा कर रहे और अपने धर्मस्थानोंका व्ययनिर्वाह करने लगे । फिर विविध भौति जिन शासनकी प्रभावना करते हुए वे विधर्मियोंके मनोमें भी जैन धर्मके प्रभावको स्थापित करते रहे ।

इस प्रकार जिनपूजा संबंधी यह धनदका प्रबंध समाप्त हुआ ।

*

श्री मेहुतुंगाचार्य विरचित प्रवन्धचिन्तामणिमें,

विक्रमादित्यके कहे हुए पात्रविद्येचनसे ले कर जिनपूजासंबंधी धनदके प्रबंध तकका वर्णनवाला, यह प्रकीर्णनामक पाँचवाँ प्रकाश समर्थित हुआ ।

[इस प्रकाशकी ग्रंथसंख्या ७७४ है । समग्र ग्रंथकी श्लोक संख्या ३१५० है]

ग्रन्थकारकी प्रशस्ति ।

बहुश्रुत और गुणवान् ऐसे बृद्ध जनोंकी प्राप्ति प्रायः दुर्लभ हो रही है और शिष्योंमें भी प्रतिभाका वैसा योग न होनेसे शास्त्र प्रायः नष्ट हो रहे हैं । इस कारणसे, तथा भावी बुद्धिमानोंको उपकारक हो ऐसी परम इच्छासे, सुधासत्रके जैसा, सत्पुरुषोंके प्रबन्धोंका संघटनरूप यह ग्रन्थ मैंने बनाया है ॥ १ ॥

यह, प्रबन्धसंग्रहका चिन्तामणि, चिरकाल तक हाथपर रहनेसे स्पन्तक मणिका भ्रम पैदा करता है और हृदयमें स्थापन करनेपर प्रशंसनीय ऐसे विमल कौस्तुभ मणिकी कलाका सृजन करता है । सो इस ग्रन्थके अध्ययनसे विद्वान् लोग श्रीपति (विष्णु) की नाई शोभित होते हैं ॥ २ ॥

मन्दबुद्धि हो कर भी, मैंने जैसा सुना वैसा ही, प्रबन्धोंका संकलन करके यह ग्रन्थ बनाया है । पण्डित लोग मत्सरताका त्याग करके, अपनी प्रज्ञाके उन्मेषसे इसकी उन्नति ही करें ॥ ३ ॥

प्रहों रूपा कोड़ियोंसे जब तक चुलोकमें सूर्य और चन्द्रमा, जुआड़ीकी तरह क्रीड़ा करते रहें तब तक आचार्यों द्वारा उपदिष्ट होता हुआ यह ग्रन्थ विद्यमान रहे ॥ ४ ॥

विक्रमादित्य संवत्के १३६१ वर्ष बीतनेपर, वैशाख मासकी पूर्णिमाके दिन यह ग्रन्थ समाप्त हुआ ॥ ५ ॥

[गद्यमें फिर यही कथन] राजा श्री विक्रमके समयसे १३६१ वर्ष बीतनेपर वैशाख सुदि १५ रवि वारको, आज यहाँ श्री वर्द्धमान (काठियावाडके आधुनिक वडवान नगर) में यह प्रबन्धाचिन्तामणि ग्रन्थ समाप्त किया गया ।

—:o:—

प रि शि ष्ट

कुमारपाल राजाका अहिंसाके साथ विवाह-संवन्धका रूपकात्मक प्रबन्ध*

श्रीमान् हेमचन्द्रके समान तो गुरु और श्रीमान् कुमारपालके समान जिनभक्त राजा न तो हुआ और न [अब कभी] होगा ॥ १ ॥

प्रभु श्री हेमाचार्यके पास ज्ञान-दान प्राप्त करके उसके पश्चात् श्री चौलुक्यचक्रवर्ती कुमारपालने जो हिंसाका निवारण किया था उसका [रूपकात्मक] प्रबन्ध इस प्रकार है—एक अवसर पर, अणहिल्लपुरमें, श्री कुमारपाल नागक राजाने, बुद्धदौड़की क्रीड़ा करनेके लिये जाते समय, एक ऐसी वालिकाको देखा जिसने अपने सौन्दर्यसे सुरसुन्दरियोंकी भी मात कर दिया था और जिसका मुख बाल-चन्द्रमाके समान मनोहर था । यद्यपि वह

* टिप्पणी—यह परिशिष्टात्मक प्रबन्ध, इस ग्रन्थकी बहुसंख्यक पोथियोंमें लिखा हुआ मिलता है । इसके शत होता है कि ग्रन्थकार भक्तुङ्ग सरिने ही इसकी रचना की है—पर ऐतिहासिक न हो कर यह एक रूपकात्मक प्रबन्ध है । इसलिये इसको परिशिष्टके रूपमें ग्रन्थके अन्तमें जोड़ दिया मालूम देता है । कुमारपालने अपने धर्मगुरु आचार्य हेमचन्द्र सरिके पास जैनधर्मकी गृहस्थ दीक्षा (भावकधर्मव्रत) स्वीकार करते समय, सबसे पहले जब अहिंसा व्रतका स्वीकार किया, उस समयको लक्ष्य करके इस रूपकात्मक प्रबन्धका प्रणयन किया गया है । इसमें अहिंसाके एक राजकन्या बनाई है जो आचार्य हेमचन्द्रके आश्रममें पलकर बड़ी उन्नवाली—वृद्धकुमारी हो गई है । अन्यान्य राजाओंके अर्थार्थिक आचरण देख कर वह किसीके साथ विवाह करना नहीं चाहती; किन्तु, कुमारपाल जो आचार्य हेमचन्द्रका शिष्य बना है उसके धर्मभावसे मुग्ध हो कर, आचार्यके आदेशसे वह उसका पाणिग्रहण कर लेती है—बस यही इस प्रबन्धका धारण है ।

सदाचार-प्रसरण-शीला थी फिर भी धीमी चालसे चलनेवाली थी। वह मुनियोंके साथ क्रीड़ा किया करती थी। अपनी सुसोमल धार्णिके प्रपञ्चसे उसने त्रैलोक्यको चमत्कृत कर दिया था, और उसकी आकृति मन्द मुसकानसे खूब नयुर हो रही थी। इस कालिकाको देख कर उसके रूपसे हत-चित्त हो कर राजाने किसी निरुद्धस्थ प्रसन्नचित्त (साधुजन) से पूंछा कि—‘भला यह लड़की कोन है?’ उसने कहा कि—‘अपार ऐसे शास्त्र-सागरके पारको देख लेनेके कारण जिन्होंने ‘कलिकाळ सर्वज्ञ’की प्रसिद्धि प्राप्त की है; द्वादश भेदोंवाली तपस्याकी आराधनाके द्वारा, अष्ट महासिद्धियोंको जिन्होंने वशमें कर लिया है; समग्र भूपालोंके शिरःप्रदेशकी मणियोंने जिनके चरणोंका चुंबन किया है; उन्हीं महर्षि भगवान् आचार्य श्री हेमचंद्रके आश्रममें रहनेवाली यह अहिंसा नामक कन्या है। इसके यथार्थ रूपका निरूपण करनेमें सृति और पुराणके वचन तो पर्याप्त नहीं है; किन्तु समस्त जंतुओंके पितृ-स्वरूप श्री जिनेन्द्र देवके उपदिष्ट स्पष्ट मिद्वान्तों और उपनिषदों द्वारा आवासित हृदयवाले किसी मुनिश्रेष्ठने इसकी स्थितिकी रीतिका पूरा निरूपण किया है—अन्य किसीने वैसा नहीं किया। यह वचन सुन कर राजा अपने आवासमें लौट आया। पर उस कन्याका स्वरूप जान कर, उसका अंगीकार करनेके लिये परम उत्सुक वह राजा, उसके पाणिग्रहणके द्वारा अपनी भाग्य-सम्पद आदिको कृतार्थ करनेकी कामनासे, अपने ‘त्रिवेक’ नामक परम मित्रके बताये हुए मार्गसे उन मुनियोंके आश्रममें जा पहुँचा। उस कन्याके सामने उसीका ‘सदाचार’ नामक भाई खेळ रहा था। उसीने जा कर सम-चित्तवृत्तिवाले महर्षि श्री हेमचंद्र सूरि को राजाके आगमनका वृत्तान्त बतलाया। राजाने पृथ्वीतलपर मस्तक टेक कर, उन्हें भक्ति और हर्षके साथ, प्रणाम किया और फिर उस कन्याका स्वरूप पूंछा। इस पर वे बोले—‘हे नरपुंगव! सुनो, त्रैलोक्यके एकमात्र सम्राट् श्री अर्हद्दर्शकी पद्म महादेवी श्रीमती अनुकंपा देवीके कुलि-सरोवरकी राजइंसी जैसी, निःसीम सुन्दरी यह ‘अहिंसा’ नामक कन्या है। जिस लग्नमें यह कन्या पैदा हुई थी उस लग्नके ग्रहवृत्तको इसके सर्वज्ञ पिताने इस प्रकार निर्दिष्ट किया था—‘यह अतीव पुण्यवती, सुदतियोंकी शिरोमणि कन्या है। पुत्रज-मोक्षससे भी अधिक प्रशंसनीय इसका जन्म है। क्यों कि—

लक्ष्मी [रूप कन्यासे] समुद्रको और वाग्देवी [रूप कन्यासे] ब्रह्माको विश्रुत देख कर, कुपुत्रके दुःखसे सूर्य और चन्द्रमा ताप और कलंकका त्याग नहीं करते हैं ॥ २ ॥

इस लिये क्रमशः बढ़ती हुई यह कन्या अपने अनुरूप बर न पानेके कारण वृद्ध-जुमारी हो जाने पर किसी अनुरूप राजासे साम्रह निवाहित होगी। इस प्रकार सतियोंमें श्रेष्ठ यह कन्या अपने पति और पिता दोनोंको उन्नतिकी पराकाष्ठापर पहुँचा देगी। और इससे विवाह करनेवाला वह पुरुष भी खेल्हीमें महा-भोह नामक राजाको जीत कर परमानन्दका भाजन बनेगा।’ यह सुन कर राजा बोला—‘प्रभो! यह अर्हद्दर्शकी पुत्री इस समय आपके ही चरण कमलोंकी उपासना करती है, अतः इसका विवाह आपहीके कहनेसे होगा, अन्य किसीसे नहीं। सो पूज्य-वाद मुझपर प्रसन्न हों, विपादगण विपण्य हों, महामोहका विजय करना प्रारंभ हो, और [उससे] मैं परमानन्द प्राप्त करूँ।’ उसके इस कथनके बाद गुरु बोले—‘यह वृद्धा जुमारी है, इसका संरूप दुष्पूणीय है। वह संरूप इसीके मुँहसे सुन कर विवाह करना चाहिये, अन्यथा नहीं।’ इस प्रकार उनकी अवृत्तकी जैसी वह वाणी सुन कर, उसने कन्याके पास सुबुद्धि नामक दासी भेज कर उसे बुलवाया। वह दासी उस कन्याके पास जा कर भक्ति-पूर्वक प्रणाम करके बोली—‘स्वामिनि, राजकन्ये, [आज] तुम धन्यतमा हो, जो तुम्हें, अष्टाह देशोंके सम्राट्, और समस्त सामन्तोंके मस्तक-मणियोंकी निरण-मालासे जिनका चरण अलंकृत है वह चीतुम्ब-चक्रवर्ती तुम्हारे साथ भिगह करना चाहते हैं।’ उसकी इस बातसे कुछ मुँह बना कर, उपहासके उद्घासके साथ, उसने कहा—‘सगि, जिस महान् साम्राज्यका अन्त नरक है उसके लोभकी बातका विस्तार

करना रहने दे ! मैं तो अनुकूल प्रेमीको चाहती हूँ । पुरुष प्रायः परुष आशयवाले, और नाना प्रकारके अनुरागवाले होते हैं; उनसे मेरा क्या काम है । क्यों कि—

रूप यौवन सम्पन्ना कन्याका अविवाहित भी रहना बरन् अच्छा है, किन्तु कलाहीन, अनुकूल, कु-पतिसे विडंबित होना [अच्छा] नहीं ॥ ३ ॥

पर सुनो,—अगर दरिद्र हो कर भी पति जो प्रियकारी हो तो उससे विवाहित स्त्रीको जैसा सुख होता है वैसा सुख ईश्वर (बड़े धनसंपन्न) से भी नहीं प्राप्त होता । [देखो न] भागीरथी (गंगा) को शिव तो शिरपर धारण करते हैं, पर लक्ष्मीके पति (विष्णु) उसे पैरसे भी नहीं छूते !

सो मुझे बरण करनेकी अभिलाषा तो बृथा ही समझो । क्यों कि मेरी प्रतिज्ञाका किसी महाराजासे भी पूरा होना कठिन है ।' ऐसा कहनेवाली उस युवतीसे वह (दासी) बोली—' सखि ! मैं तुम्हारी प्रियकारिणी सखी हूँ, कुछ अपलाप तो करनेकी नहीं; सो तुम अपना अभिमत मुझे स्पष्ट कह बताओ । मेरा भी नाम सुबुद्धि है, मैं तुम्हारी प्रतिज्ञा उस कुमारपाल राजासे पूरी कराऊंगी ।' ऐसा कहनेपर वह बोली—

सत्यवक्ता, परलक्ष्मीका त्यागी, समस्त जीवोंको अमय-दाता, और सदा अपनी ही स्त्रीसे सन्तुष्ट, [ऐसा जो पुरुष होगा] वही मेरा पति होगा ॥ ५ ॥

दुर्गतिके बन्धु जैसे दूत स्वभाववाले सात पुरुषों (अर्थात्, सात व्यसनों) को जो अपने चित्तसे दूर निकाल फेंक देगा वही मेरा पति होगा ॥ ६ ॥

मेरे सहोदर भाई सदा चार को अपने हृदयासनपर बैठा कर एक चित्तसे जो उसकी सेवा करेगा वही मेरा पति होगा ॥ ७ ॥

उसकी इस बातको सुन कर वह बोली—' ऐ सुलोचने ! सुनो, मैं यथार्थनामा (सुबुद्धि) तब हूंगी जब तुम्हारी प्रतिज्ञाको पूरा करनेके लिये, श्री हेमसूरिको आगे कर, समस्त लोकके सामने, तुम्हारे इन प्रतिज्ञात अर्थोंका समर्थन करा कर, तुम्हें परिणीत कराऊँगी । और तभी, तुम मुझे अपनी चतुर सखी मानना, नहीं तो तिनकेसे भी गयी वीति समझना ।' यह कह कर, फिर राजाकी सभामें जा कर उसने उसकी वह कठिन प्रतिज्ञा कह सुनाई । उसकी इस अज्ञाभरी प्रतिज्ञाके कठोर भावसे हृदयमें सन्तत हो कर राजा बड़ी बेचेनी धारण करने लगा । तब सुबुद्धिने कहा—' हे श्रीनिधे ! धीरज धरो, पौरुष-शालियोंको दुष्कर क्या है ? और इस वाचके दूर करनेके उपाय भी तो हैं । महर्षि हेमचन्द्रका अनुसरण करो और उनका उपदेश सुनो ।' इस प्रकार उसकी बात सुन कर त्रिनयका सहारा पा कर वह राजा सूरिके पास गया । उनके पद-पद्मोंमें प्रणाम कर उनकी कन्याकी उस प्रतिज्ञाका वृत्तान्त कहा । [सूरि बोले—] ' बस ! यदि परिणयनकी चाह है तो फिर उसकी प्रतिज्ञा पूरी करो । यह कन्या अपने पतिकी निःसीम उन्नतिके लिये होगी । क्यों कि—

उत्तम वंशोत्पन्न, धन्य और गुणाधिका सती कन्यासे विवाह करके कोन प्रतिष्ठा नहीं प्राप्त करता ! लक्ष्मी और पार्वतीके साथ विवाह कर गोप (कृष्ण) और उग्र (शिव) ने जिस तरह [प्रतिष्ठा] पाई थी । ॥ ८ ॥

उनकी यह बात सुन कर, दुरित समूहको दूर कर देनेवाली ऐसी हस्ताञ्जली किये हुए उस राजाने, अनेक प्रकारके अभिग्रह धारण करके, उस कन्याका वाग्दान प्राप्त किया और वह बड़ा प्रमुदित हुआ । सं० १२१६ मार्गशीर्ष सुदि द्वितीयाको, बलवान् लक्ष्मण, संगे नामक हाथीपर आरूढ हो, रत्नत्रयसे अलंकृत, शुभमनरूप बख धारण करके, दक्षिण हस्तमें कंकण बाँध कर, वह [हेमसूरिकी] पीपवशाकाके द्वारा आया । उस समय श्वेतच्छत्र द्वारा उसका आतप निवारण किया जा रहा था; श्रद्धा नामक बहन उसकी लवण-आरती उतार रही थी;

गुरुभक्ति, देशविरति, समिति, गुप्ति आदि सखियों बरातिन वन कर मंगल गान कर रहीं थीं; अमारि-चोपणाके पट्ट बजे रहे थे; परिग्रह-परिमाणरूप व्रतके मियेसे याचक जनोंकी यथेष्ट दान दिया जा रहा था; पापरूप कचरेको दूर हटाया जा रहा था; सद्बोध पुण्योसे सन्यायकी राजबीथियों सुगंधित की जा रहीं थीं; तब कन्याकी माँ अनुकंपा महादेवी ने श्री अर्जुन के साक्षी रहते प्रोक्षण किया। इस प्रकार उस राजाने अहिंसाका पाणिप्रदण किया। उस समय, तारामेखक पर्वमें परमानन्द हुआ। इसके बाद, नवागवेदी महोत्सवके स्थानमें, ३६ हजार श्लोक ग्रन्थपरिमाण, हेमसूरि कृत त्रिपट्टिशलाकापुरूपचरित्र नामक शास्त्र स्थापित किया गया। वेदीके पात्र-स्थापन और पाँच कपर्दक (कोडियों) के स्थापनकी जगह; वीस-संख्यक वीतरागस्तव स्थापित किये गये। शमी काष्ठके स्थानपर द्वादश प्रकाशात्मक योगशास्त्र ग्रन्थ स्थापित किया गया। उसके परिकरके रूपमें, हेमसूरि के अन्यान्य लक्षण, साहित्य, तर्क और इतिहास प्रमुख शास्त्रोंकी रचना हुई। मूळगुण और उत्तर गुणोंसे इस वेदिकाको दृढ़ करके, उसमें ज्ञानरूप अग्नि जलाई गई, और 'चचारिमंगल' रूप इस मांगलिक सूत्रके उच्चारणसे मंगल किया गया। उस समय उस कन्याके मुखमण्डनके लिये, राजाने ७२ लाख रुपयोंकी आमदनीवाला 'रुद्री कर' (अर्थात् निःसन्तान विधवा स्त्रियोंके राज्यप्राप्त्यर्थ) का त्याग करने रूप दान किया। उसी समय उसका पट्टबन्ध किया गया (—उसे पट्ट महादेवी बनाया गया), और उसके पिताके निवास-योग्य १४४४ बिहार वनबाये गये। फिर हिंसा (जो राजाकी पूर्वपत्नी थी) अपनी सौत अहिंसाकी इस प्रकारकी उन्नतिको देख कर, अपना परामव निवेदन करनेके लिये, अपने पिता विधाताके पास गईं। बहुत दिन बाद देखनेके कारण तथा परामवके दुःखसे विरूपसी बनी हुई उसको न पहचान, पिताने उससे पूछा कि—

'सुंदरी! तुम कौन हो?'—'हे तात विधाता! मैं तुम्हारी प्रिय पुत्री हिंसा हूँ।'—'तुं ऐसी दीनकी तरह क्यों है?'—'परामवके कारण।'—'वह (परामव) किससे हुआ?'—'क्या बताऊँ!'

'कहो न'—'हेमाचार्यके कहनेसे, उस परम गुणवान् कुमारपाल नृपतिने मुझे अपने हृदय, मुँह, हाथ और उदरसे उतार कर, पृथ्वीतलसे निकाल दिया ॥ ९ ॥

उसन्ती यह बात सुन कर ब्रह्मा बोले कि—'सत्यप्रतिज्ञ ऐसा कुमारपाल देव जो पहले तुझमें अनुरक्त हो करं भी, उस भेषधारी साधुके कथनको सुन कर, अब विरक्त हो गया है; तो फिर मैं अब तेरे लिये कोई ऐसा अथवा पति ढूँढ निकालूँगा जो तेरा ही एकच्छत्र राज्य कर देगा। इसलिये तुम धीर धरो'—यह कह कर उसे अपने समीप रखा। अहिंसा देवीके साथ श्री कुमारपाल नृपति अपने इस जीवन-हीमें अतुलित महानन्दका अनुभव करता हुआ, चौदह वर्ष तक, सुख पूर्वक राज्य करता रहा। इसके बाद उसकी एक पहली प्रिया जो कर्ति थी उसको देशान्तरमें पठा कर, जब उसने स्वर्गको अलंकृत किया, तो उसी समय उसके प्रेमकी प्रसादपूर्ण कीड़ा-ओंका स्मरण करती हुई वह अहिंसा देवी भी, कलिमलिन जनोंके पापवर्षाका परिहार करनेकी इच्छासे, उसके साथ 'सहगमन' कर गईं।

इस प्रकार श्री कुमारपालका अहिंसाके साथ विवाह-संबन्ध बतानेवाला यह परिशिष्टात्मक प्रबन्ध समाप्त हुआ।

- ८ रायप्पसातं अघिगारं धीणामे ण पसस्सते । यीसंपयोगो धीलामो थियाणं तु पसस्सते ॥ २१० ॥
- ९ कामिगं कामिगा संसं सट्ठिकं कैसवाणियं । अच्चारिकारियं लद्धमवलद्धं वा वि णिहिसे ॥ २११ ॥
देविकोडुंविक्कं वा वि महाणसिकमेव य । णाडकायरियं वा वि तथा णट्टोसकं पि वा ॥ २१२ ॥
धीसेवकपेसणकं गणिकापविचारकं । यीअलंकारणं चेव धीणं य दव्यसाधकं ॥ २१३ ॥
- ५ पवासे पुच्छिते णत्थि पडत्थो य गिरत्थकं । धीसंपवत्तं आगमणं पडत्थस्स वियागरे ॥ २१४ ॥
५ वंधं च परिपुच्छेज्ज णत्थि वंधो त्ति णिहिसे । वद्धस्स मोक्खं पुच्छेज्ज मोक्खं तस्स वियागरे ॥ २१५ ॥
वद्धस्स वा वि पुच्छेज्ज पुरिसस्स पवासणं । पुच्छिते णिहिसे तस्स भविस्सति पवासणं ॥ २१६ ॥
भयं च परिपुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे । खेमं च परिपुच्छेज्ज णत्थि खेमं वियागरे ॥ २१७ ॥
- १० संधिं वा परिपुच्छेज्ज विगाहं तस्स णिहिसे । विगाहं परिपुच्छेज्ज वियादं तस्स णिहिसे ॥ २१८ ॥
विवादे वा जयं पुच्छे णत्थि तेवं पवेदये । अरोगं पडिपुच्छेज्जा णत्थि तेवं वियागरे ॥ २१९ ॥
कोवं च परिपुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे । मरणं च परिपुच्छेज्ज मरणं तत्थि णिहिसे ॥ २२० ॥
जीवितं परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । आयाधितं च पुच्छेज्ज ण समुद्वेहिति ति तं ॥ २२१ ॥
- १५ णिव्वाणं परिपुच्छेज्ज अणेव्वाणं पवेदये । संपत्तिं परिपुच्छेज्ज असंपत्तिं पवेदये ॥ २२२ ॥
उत्सवभूतं जं पुच्छे णत्थि तेवं वियागरे । दीणं सोकं च पुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे ॥ २२३ ॥
अणावुट्ठिं च पुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे । वरसारत्तं च पुच्छेज्ज मञ्जिमो त्ति वियागरे ॥ २२४ ॥
अपातपं च पुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे । कटा थासं ति वा बूया काले थासं ति णिहिसे ॥ २२५ ॥
दिवा रत्तिं ति वा बूया रत्तिं ति य वियागरे । सस्सस वापदं पुच्छे अत्थि त्वं वियागरे ॥ २२६ ॥
सस्सस संपयं पुच्छे मञ्जिमं ति वियागरे । सतिं च जति पुच्छेज्ज सइं तत्थि पवेदये ॥ २२७ ॥
धीणामधेयं जं चऽणं पभूतमिति णिहिसे । णट्ठं ति परिपुच्छेज्ज णत्थि णट्ठं ति णिहिसे ॥ २२८ ॥
२० णट्ठमापारइत्ताणं धीणाममिति णिहिसे । णट्ठस्स लाभं पुच्छेज्ज णत्थि लाभो त्ति णिहिसे ॥ २२९ ॥
[..... ।] पलावसंगमं पुच्छे णत्थि तेवं वियागरे ॥ २३० ॥
- २५ < णिर्थाणं णिधितं पुच्छे णत्थि तेवं वियागरे । > णिर्थाणलंभं पुच्छेज्ज णत्थि लंभो त्ति णिहिसे ॥ २३१ ॥
सेवाणिमित्तं पुच्छेज्ज णत्थि सेव त्ति णिहिसे । रायप्पसादं पुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे ॥ २३२ ॥
रायतो णिव्बुत्तिं पुच्छे वद्धमत्तं च पुच्छति । भोगलंभं तथा[ऽ]णं वा सव्वं णत्थि त्ति णिहिसे ॥ २३३ ॥
तथाऽपिकरणे सिद्धिं लाभं पुच्छति कम्मिको । तथा पतिट्ठं छायं वा सव्वं णत्थि त्ति णिहिसे ॥ २३४ ॥ २५
मणिं च परिपुच्छेज्ज अण्णो पावकम्मिको । कुळं मणिं णिमित्तं च अवसिद्धेण संसितो ॥ २३५ ॥
अच्छादणं च पुच्छेज्ज अधणं पावकं ति य । अच्छादणनिमित्तं च कुळस्साऽऽयासमादिसे ॥ २३६ ॥
भूतगं परिपुच्छेज्ज अधणं पावकं ति य । अप्पसत्वं च तं बूया कुळस्साऽऽयासकारणं ॥ २३७ ॥
परत्पवेसं पुच्छेज्ज अधणं पावकं ति य । अणिव्बुत्तिहरं पावं चलं णेव पसस्सते ॥ २३८ ॥
णिचयं भंडलाभं च देवस्स य स णिव्बुत्तिं । याधिं लंभं च एतेसु णत्थि तेवं वियागरे ॥ २३९ ॥ ३०
दासकम्महरं पुच्छे अधणं पावकं यदे । आप्पकारकं णिचं उगतं ण य काहिति ॥ २४० ॥
पुण्णामधेयं जं िचि सव्वं णत्थि त्ति णिहिसे । धीणामधेयं जं िचि सव्वमत्थि त्ति णिहिसे ॥ २४१ ॥

१ *कारिकलद्धं य उल्लंथा नि इ० त० विना ॥ २ णट्टोसकं इ० त० विना ॥ ३ < > एतथिइमप्यतं पुराई इ० त० पण्णि ॥ ४ निहाणलामं इ० त० णि० ॥ ५ लाभो इ० त० ॥ ६ अधणो इ० त० ॥ ७ दव्यस्स य सन्निधिं । याधिं तं १ पु० । दव्यसेव य सन्निधिं । याधिं णि० ॥

धीणामा माणुसा सद्दा इबेते परिकित्ता । एतो अमाणुसे सदे कित्तयिस्सं अतो परं ॥ २७० ॥

असुरी असुरभज्जा वा असुरकण्ण ति वा पुणो । णामी [वा] णागक्कण्णा वा जा वऽण्णा भवणालया ॥२७१॥
गंधन्वी रक्खसी व ति जक्खी किन्नरक ति वा । वणफ्फति दिसा व ति तारक ति व जो वदे ॥ २७२ ॥

हिरी सिरि ति लच्छि ति कित्ति मेया सति ति थ ।

थिती < थि' ति तु > बुद्धि ति इला सीत ति वा पुणो ॥ २७३ ॥

विज्जा वा विज्जाता व ति चंदलेह ति वा पुणो । < उँकोससत्ति वा वूया अन्नभराय ति वा पुणो ॥ २७४ ॥

अहोदेवि ति वा चूया देवी वा देवत ति वा । देवकण्ण ति वा वूया असुरकण्ण ति वा पुणो ॥ २७५ ॥ >

इंदम्ममहिंसी व ति असुरम्ममहिंसी ति वा । तथा अँइरिका व ति तथा भगवति ति वा ॥ २७६ ॥

अल्लुसा मिससकेसी मीणका मियेदंसणा । अँबला अणाविता व ति अइराणि ति वा वदे ॥ २७७ ॥

रंभ ति मिससकेरि ति तिथिंणी सालिमालिणी । तिळोत्तिमा चित्तरथा चित्तलेह ति उव्वसी ॥ २७८ ॥ 10

जा वऽण्णा एवमादीया अच्छरयि वि सूयते । णामसंकित्तणे तासिं धीणामं सब्बमादिसे ॥ २७९ ॥

अमाणुसाणि एताणि धीणामाणि विचाणिया । चतुप्पदेसु कित्तिस्सं धीणामाणि अतो परं ॥ २८० ॥

क्कणेरु हल्लिणी व ति गावि ति महिसि ति वा । वडव ति कियोरी ति घोडिक ति अजाऽविला ॥२८१॥

क्कण्हेरी रोहिती व ति एणिका पसति ति वा । कुरंगि ति मिगी व ति भल्लुंकी सुणहि ति वा ॥ २८२ ॥

सीही वग्घी 'विकी व ति अच्छमल्लि ति वा पुणो । मज्जारी 'मुंगसी व ति उण्हाली अब्बि ति वा ॥२८३॥ 16

मूसिका 'डुँडिका व ति ओतुलीक ति उंदुरी । वाराही सुवरी कोली खारका घरकोइला ॥ २८४ ॥

जं चऽण्णं एवमादीयं धीणामं तु चतुप्पदं । णामसंकित्तणे सदे धीणामं सब्बमादिसे ॥ २८५ ॥

चतुप्पदाणि एताणि धीणामाणि भवंतिह । धीणामयेये पँक्खीओ कित्तयिस्समतो परं ॥ २८६ ॥

विँदरी रायहंसि ति कलहंसि ति वा पुणो । 'कोकि ति सीलिया व ति पूतणा सक्खणि ति वा ॥२८७॥

गिद्धी सेणि ति काकि ति धूकी वा णंतुक ति वा । उल्लुकी मालुका व ति सेण्णी सीपिंजुल ति वा ॥ २८८ ॥ 20

कीरी मदणसलाग ति सालाका कोकिल ति वा । पिरिली कुडपूरि ति भारदाइ ति वा पुणो ॥ २८९ ॥

लौबिका वट्टिका व ति सेण्णी वा कुकुडि ति वा । पँलाडीक ति पोटाकी सवणीग ति वा पुणो ॥ २९० ॥

आढा टिट्ठिभिका व ति णडिकुकुडिक ति वा । सडिक ति वलाक ति चक्कयायि ति वा पुणो ॥ २९१ ॥

एवं धीनामका पक्खी समासेण तु कित्थिया । परिसप्पगते वोच्छं धीणामेण अतो परं ॥ २९२ ॥

मँडुंडी अहिणूक ति जल्लुका अहिणि ति वा । योमीक ति सिकुवाली कुँलीरा कच्छमि ति वा ॥२९३॥ 25

वत्तणासी सिगिला व सिँडुँधी वरद ति वा । ओवातिक ति मँडुकी सुंसुमारि अँसालिका ॥ २९४ ॥

एवमादी समासेण धीणामा जे जलचरा । णामतो ससुदीरंति धीणामसमका हि ते ॥ २९५ ॥

गोधा गोमि ति वा वूया तथा मंडलिकौरिका । भिगारी अँरका व ति' वचाई इंदुगोविनी ॥ २९६ ॥

१ < १ > एतथिदमगतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ २ < १ > एतथिदमपगतः सार्द्धश्लोकः हं० त० नास्ति ॥ ३ इंदुचमहिंसी व ति असुर ति मह ति वा हं० त० ॥ ४ अइरका हं० त० ॥ ५ वियदंसणा हं० त० विना ॥ ६ अप(य)ला हं० त० विना ॥ ७ तिघणि हं० त० विना ॥ ८ 'राति वि हं० त० ॥ ९ कण्हेणा रो' हं० त० विना ॥ १० घकी हं० त० ॥ ११ अंगुली व ति हं० त० ॥ १२ डुँडुका व ति उंतुलीक हं० त० ॥ १३ पन्थीतु हं० त० विना ॥ १४ क्खिण्णी हं० त० वि० ॥ १५ जाजि ति हं० त० ॥ १६ सालिमा व सम ॥ १७ पूवणा सक्खिज्ज ति हं० त० ॥ १८ मेणा सीपिंजलि ति हं० त० ॥ १९ लीहिका वट्टिका व ति सण्णी वा कुकुडि हं० त० ॥ २० पोलाडिक ति पोताकी हं० त० ॥ २१ मँडुंडी हं० त० ॥ २२ कुल्लरी हं० त० ॥ २३ सिकुण्डी वि० । सिकुही हं० त० ॥ २४ असासिका हं० त० विना ॥ २५ 'कारिमा वं ३ पु० ॥ २६ अरवा कति वचाई हं० त० विना ॥ २७ ति वंचवाई इंदुगोधिगा हं० त० ॥

तूका लिक्खा फुसी व चि तथा मुग्मुलक चि वा । जाला लुत चि वा बूया भिवडी किणिहि तया ॥ २९७ ॥
 तला कभेइका व चि उण्हाणि चि वा पुणो । कौणटिट्टि चि वा बूया मयंसल-विपिल्लिका ॥ २९८ ॥
 जा वऽण्णा किमिजातीणं सुहुमा वादरा इ वा । धीणामा य उदीरंति धीणामसमका हि ते ॥ २९९ ॥
 इचेते पाणजोगीयं धीणामा जे पवेदिता । मूलजोगिगता सदा धीणामसमका इमे ॥ ३०० ॥ तत्थ-

रुक्खजोगि[ग]ए रुक्खे धीणामे परिकिचित्ते । धीणामचेज्जेहि समा ते वि सदा विधीयते ॥ ३०१ ॥
 पिप्पी वेडसी जंबू तथा ते परिकिचित्ता । तथा अंबिलिका व चि वैदे चिचिणिक चि वा ॥ ३०२ ॥
 तथा मंडि चि सीवणिण कजूरी केतभि चि वा । कंडूकीका तिवुरुकी धकंदिवेहरितेरणिं ॥ ३०३ ॥
 अरल्लसाऽऽमली सेवपूति लंवा(चा)पलि चि वा । सीकवहोकि लिंणिच्छी हिंछाघोड चि वा पुणो ॥ ३०४ ॥
 टकारी वेजयंति चि कंगूका सीसवत्तिया । अंफोत्तिका धवासि चि "सिंदीवासि चि वा पुणो ॥ ३०५ ॥
 तथा समुद्वलि चि कपासी रुचिक चि वा । उंगुणी मातुलिंणि चि पीहू व अंफकि चि वा ॥ ३०६ ॥
 तथाऽंजरवलि चि उदगवलि चि वा पुणो । कूमंडी तवुसी व चि भवे पड्डालुक चि वा ॥ ३०७ ॥
 तुंबी कालिगी वाळुंकी [तथा] कक्खारुणि चि वा । नलिणी पडमिणी व चि तथा कमलिणि चि वा ॥ ३०८ ॥
 चण्णलिणी [.....] पिंढालुकि चि वा ॥ ३०९ ॥
 घोसाडकि चि वा बूया ससविंदुकिणि चि वा । तथा भंजुलिका ध चि कसकी फारिअडिका ॥ ३१० ॥
 पीलि चि फालिका व चि अंजणेकसक चि वा । लता लट्टि चि वा बूया छमिणी काणवि चि वा ॥ ३११ ॥
 दुम-गुम्म-रुत्ता व चि लोए धीणामैका व ये । भवंति एवमादीणि धीणामसमकणिं ते ॥ ३१२ ॥

छवा-यडि-दुमाणं च लोए गुम्माणमेव य । पुप्फाणि य पक्खामि धीणामाणि अतो परं ॥ ३१३ ॥
 जंति चंपयजाति चि महाजाति चि वा पुणो । सुवण्णजूधिगा व चि जूधिक चि व जो वदे ॥ ३१४ ॥
 त्तुळी तलुसी व चि वासंती वासुल चि वा । बहंदुंबुद्धि काल चि जयसमण चि वा पुणो ॥ ३१५ ॥
 धंयमडिका मडिक चि णितणिक चि वा पुणो । तिगिच्छि पीतिका व चि तथेव म[ग]यंतिका ॥ ३१६ ॥
 पियंगुक चि वा बूया कंगुक चि व जो वदे । कुरुडक चि व वदे वेणति चि व जो वदे ॥ ३१७ ॥
 वधंयमंजरी व चि जा यऽण्णा पुप्फमंजरी । पुप्फपिंडिया बूया पुप्फोच्छि चि वा पुणो ॥ ३१८ ॥
 इचेते पुप्फजोगीयं धीणामा परिकिचित्ता । धीणामं पुप्फसंजोगं कित्तयिस्स अतो परं ॥ ३१९ ॥
 थंदा तीसालिका व चि पारिद्विचि चि वा पुणो । मुंभिधि धम्मि जाणि चि तथेव य विलिजरं ॥ ३२० ॥
 पौट्टालिका वेजयंति तथा मज्जमालिका । जंगमाल चि वा बूया तथा सोलकमालिका ॥ ३२१ ॥
 पुप्फजोगी समासेण इयेसा परिकिचित्ता । धीणामाणि फलार्णि तु कित्तयिस्समतो परं ॥ ३२२ ॥
 "मुंदिका चलि-का येन तथेव य फसेरुत्ता । मुणालिक चि वा बूया तथा विधिसिक चि वा ॥ ३२३ ॥

१ लूका हं त० ॥ २ मुग्मुलिक हं त० ॥ ३ किणिदिच्छहा हं त० ॥ ४ कमेरका व चि उंटेणामि हं त० ॥ ५ काणो
 दिदि चि हं त० ॥ ६ यदे विधिसिक चि वा थं ३ पु० णि० । यदे विधिसिक चि वा हं त० ॥ ७ कडकीका तिथरकी
 पकंदिच्छाटिपपरणि हं त० ॥ ८ सेल्लपूति लंवापति चि हं त० ॥ ९ अहोति हं त० ॥ १० सिंदी धा तिण्णि या
 पुणो हं त० ॥ ११ आट(ट) कि हं त० ॥ १२ कसिका हं त० ॥ १३ मकं च ये थं ३ पु० णि० । मकं च ये हं
 त० ॥ १४ का हि ते एव ॥ १५ जाति चय जाति चि थं ३ पु० णि० । जोइययजाति चि हं त० ॥ १६ त्तुळी हं
 त० ॥ १७ "मुदि कालाणि जय" णि० विना ॥ १८ जयमालिका मडिक चि तिणितिसिक चि वा हं त० विना ॥
 १९ यणवि चि हं त० ॥ २० जोगीया हं त० ॥ २१ कुमिवियमिजाग हं त० ॥ २२ तथेय विलिजरं हं त० ॥
 २३ पादाचिच हं त० ॥ २४ मुदिका चिचलिका हं त० विना ॥

तथा लोर्मसिका व चि अक्खोल चि व जो वदे । तथा कुकुडिगा व चि तथा संगलिक चि वा ॥ ३२४ ॥
 फलपिंडि चि वा बूया फलगोच्छो चि वा पुणो । फला फलिक चि वा बूया फलमाल चि वा पुणो ॥ ३२५ ॥
 तथेव फलर्मिजोसु फलणं पेसिकासु वा । एवमादीसु सञ्चेसु थीणाममणिगिहसे ॥ ३२६ ॥
 फलजोणी समासेण इधेसा परिकित्तिता । थीणामधेये आहारे कित्तियिस्सं अतो परं ॥ ३२७ ॥

दुद्धुण्हक चि वा बूया तथेव उदक(कु)ण्हका । संमगुण्हक चि वा बूया जागु चि कसरि चि वा ॥ ३२८ ॥ ५
 अवेलि चि व जो बूया पत्तवेलि [चि] वा पुणो । बोलकलि चि वा बूया त्थकुलि चि व जो वदे ॥ ३२९ ॥
 तथा धुंम्मासपिंडि चि सत्तुपिंडि चि वा पुणो । तथा तप्पणपिंडि चि इतिपिंडि चि वा पुणो ॥ ३३० ॥
 तथा ओदणपिंडि चि तिलपिंडि चि वा पुणो । पीढपिंडि चि वा बूया रच्छाभि(भ)त्ति व जो वदे ॥ ३३१ ॥
 रसाल चि व जो बूया पढमट्टं ति वा पुणो । चोरालि चि व जो बूया अंधपिंडि चि वा पुणो ॥ ३३२ ॥
 तथा अंधकधूवि चि तथा उद्धुरधूविता । अंधाढगधूवि चि जा घण्णा धूपिता भवे ॥ ३३३ ॥ 10
 चतुव्विहम्मि आहारे जं जं थीणामकं भवे । णामसंकित्तणे तस्स थीणामसममादिसे ॥ ३३४ ॥
 थीणामधेज्जा आहारा इधेते परिकित्तिता । अच्छादणं तु थीणामं कित्तियिस्समतो परं ॥ ३३५ ॥
 पंडेण चि पणुण चि वण्णा सोमित्तिक्कि चि वा । अद्धकोसिञ्जिका व चि तथा कोसेज्जिका पि वा ॥ ३३६ ॥
 पसरादि चि वा बूया पिगाणादियवंतरा । लेख चि वाडकीणि चि तथा वेळविक चि वा ॥ ३३७ ॥

◁ तंभा ▷ परत्तिका व चि भवे माहिसिक चि वा ।

इही कटुवरी व चि तथा जामिलिक चि वा ॥ ३३८ ॥

सण्हा धूल चि वा बूया सुवुता दुवुवुत चि वा । अप्पग्घा वा महग्घा वा अहता धोतिक चि वा ॥ ३३९ ॥
 जं चण्णे एवमादीयं लोए थीणामकं भवे । वत्थसंकित्तणे तासं थीणामसममादिसे ॥ ३४० ॥

अच्छादणं तु थीणामं इधेत्तं परिकित्तिता । भूसणाणि तु कित्तेस्सं थीणामाणि अतो परं ॥ ३४१ ॥

सिरीसमालिका व चि तथा णलियमालिका । तथा मकरिका व चि ओराणि चि वा पुणो ॥ ३४२ ॥ 20

पुण्णित्तिक चि वा बूया मँकणी लकड चि वा । वालिका कण्णवल्लीका कण्णिका कुंडमालिका ॥ ३४३ ॥

सिद्धत्थिक चि वा बूया तथा अंगुलिमँहिका । तथञ्जलमालिका व चि तथा वा संचमालिका ॥ ३४४ ॥

पेंयुका गित्तिरिणि चि तथा कंटकमालिका । घणपिच्छलिका व चि तथा वा वि विकालिका ॥ ३४५ ॥

एकावलिका व चि तथा पिप्पलमालिका । हारावलि चि वा बूया अँधा मुत्तावलि चि वा ॥ ३४६ ॥

कंची व रसणा व चि जंबूका मेखल चि वा । कंटिक चि व जो बूया तथा संपटिक चि वा ॥ ३४७ ॥ 25

पौमुदिक चि वा बूया यम्मिका पाअसँचिका । तथा पौचट्टिका व चि तथा रिंखिणिक चि वा ॥ ३४८ ॥

जं चण्णे एवमादीयं थीणामं भूसणं भवे । णामसंकित्तणे तेसिं थीणामं सञ्चमादिसे ॥ ३४९ ॥

भूसणाणि तु सञ्चाणि थीणामाणि समासँत । सयणा-SSसणाणि जाणाणि कित्तियिस्समतो परं ॥ ३५० ॥

१ नामसिका हं० त० ॥ २ मियेसु हं० त० ॥ ३ दुद्धुण्हं हं० त० ॥ ४ संमगुण्हिक हं० त० ॥ ५ तालं हं० त० ॥
 ६ तकुलि हं० त० ॥ ७ कम्मासं सप्र० ॥ ८ पिढपिंडि हं० त० विना ॥ ९ चारालि हं० त० विना ॥ १० अंधपिंडि
 हं० त० ॥ ११ अंधकधूवि हं० त० ॥ १२ तिगा जा हं० त० ॥ १३ पणुण्ण चि पणुण चि हं० त० विना ॥ १४ फाण चि
 हं० त० विना ॥ १५ ◁ ▷ एतच्चिद्वत्तः पाठः हं० त० नास्ति ॥ १६ इत्थविदान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ १७ आययया
 धोत्तिक हं० त० ॥ १८ मकणी लकुड हं० त० विना ॥ १९ मुदिका हं० त० ॥ २० पेयुका गित्तिरिणि हं० त० ॥
 २१ अघ हं० त० ॥ २२ कंटक हं० त० विना ॥ २३ जामुहिं हं० त० ॥ २४ चुरिका हं० त० विना ॥ २५ पार्यट्टिका पु० ॥
 २६ असो हं० त० ॥

- जेज्ञा सट्टा भिस्सी व त्ति आसंदी पेदिक ति वा । महिसाहा सिला व त्ति फलकी ईट्टक ति वा ॥३५१॥
 सफटि ति व जो वूया सफडीक ति वा पुणे । बिंही गिण्हि ति वा वूया सिविका संदमाणिक्का ॥ ३५२ ॥
 सयणा-SSमज्जाणाणि थीणामाणि समासत । कित्तियाणि पक्कामि भायणाणि समासत ॥ ३५३ ॥
 क्रोडी कंसपत्ति ति पालिका सरिक ति वा । भिंगारिक कंचणिक्का तथा कवचिक ति वा ॥ ३५४ ॥
 5 जं चSSणं एवमादीयं थीणामं भायणं भवे । णामसंकित्तणे तेसिं थीणामसममादिसे ॥ ३५५ ॥
 भायणाणि तु बुत्ताणि थीणामाणि समासत । थीणामाणि पक्कामि भंडोवगरणाणि तु ॥ ३५६ ॥
 अल्लदिक ति पत्ति ति उक्कली थालिक ति वा । कालंची कॅकी व त्ति कुठापीक ति वा पुणे ॥३५७॥
 थाली मंडी घडी दव्वी केलों उट्टिक-माणिक्का । णिसका आयमणी चुद्धी फूमणाली समंछणी ॥ ३५८ ॥
 मंजूसिका मुदिका य सत्ताकंजणि पेडिका । धूतुट्टिक ति [...] व त्ति पिंछोला फणिक्का पि वा ॥ ३५९ ॥
 10 दोगी उक्कलिणी पाणि अमिल ति युध ति था । तथा पहालिका य त्ति तवि वत्यरिक ति य ॥ ३६० ॥
 जं चSSणमवि थीणामं भंडोवगरणं भवे । णामसंकित्तणे तेसिं थीणामं सब्वमादिसे ॥ ३६१ ॥
 भंडोवगरणं एतं थीणामं परिकित्तिर्यं । आयुधाणि पक्कामि थीणामाणि अतो परं ॥ ३६२ ॥
 कुंहालि ति कुठारि ति वासि ति छुरिक ति य । दव्वी तथ कव्वही य दीविक ति कडच्छकी ॥३६३॥
 जं चSSणमपि थीणामं दव्वं लोहमयं भवे । णामसंकित्तणे वासं थीणामसममादिसे ॥ ३६४ ॥
 15 मणीसु यावि सब्वेसु सब्वेसु रयणेसु व । जं जं थीणामकं भवति वं तं धीलकलणं भवे ॥ ३६५ ॥
 सुवण्णककणी य त्ति तथा मासकककणी । तथा सुवण्णगुंज ति दीणारि ति य जो वदे ॥ ३६६ ॥
 हिरण्णमि तु सव्वमि जं जं थीणामकं भवे । णामसंकित्तणे वासं थीणामसमलक्खणं ॥ ३६७ ॥
 तथा सब्वेसु पत्तेसु जं जं थीणामकं भवे । णामसंकित्तणे तेसं सव्वं थीणामकं भवे ॥ ३६८ ॥
 परमेत्तेसु सब्वेसु पवित्तिसु यपकमं । जं जं थीणामकं भवति सव्वं तं समलक्खणं ॥ ३६९ ॥
 20 थीणामधेजे णक्खत्ते देवते पणिधिमि वा । पुप्फे फले व देसे वा णगरे गामे गिहे पि वा ॥ ३७० ॥
 पुरिसे चतुप्पदे चेर पक्खिस्सि उदरोचरे । कीटे किविल्लके वा वि परिसप्पे तथेव य ॥ ३७१ ॥
 पाणे था भोयणे वा वि तथेवाSSभरणेसु य । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणे तथा ॥ ३७२ ॥
 लोहेसु यावि सब्वेसु सब्वेसु रयणेसु य । मणि[सु] वा वि सब्वेसु सव्वधण-धणेसु य ॥ ३७३ ॥
 [एतमि पेक्खित्तामासे सरे रूवे तथेव य ।] सब्वमेवाणुगतूणं वतो वूया अंगचित्तको ॥ ३७४ ॥
 25 ॥ थीणामाणि सम्मत्ताणि ॥ २ ॥ छ ॥

[३ अट्टावर्णनं णपुंसका]

- अट्टावर्णनं तु णातवरा पुरिसंगे णपुंसका । उद्वेसंतरमागा य जंपोहमं थं जे भवे ॥ ३७५ ॥
 अक्खिराट्टेडमकूहाणि कुक्खंतर- मुनंतरं । अंगुली अनराणि च अंगे णिण्णाणि जाणि य ॥ ३७६ ॥
 केस-मंशु-गई लोमं अंगाणि मज्झिमाणि य । एते अंगमि णातव्या अट्टावर्णनं णपुंसका ॥ ३७७ ॥
 30 णपुंसकाणि जाणंगे अण्णाणि वि मयंतिद् । णपुंसकेहिं वाणि पि णिरिसे अंगचित्तको ॥ ३७८ ॥
 एताणि आमसं पुच्छे अत्यलामं जयं तथा । जं किंचि पत्तयं सा सव्वं णत्थि ति णिरिसे ॥ ३७९ ॥

१ इट्टक ६० त० ॥ २ घाली गिहा सि ६० त० । घाली गिण्हि ति च ३ पु० सि० ॥ ३ अल्लदिक सि० ॥ ४ करवी ६० त० ॥ ५ केणा उट्टिक माणिया ६० त० ॥ ६ मंजूसिका मुदिका य सत्ता कंजणि पेडिका ६० त० विना ॥ ७ पयं ६० त० ॥ ८ कुंहालि ६० त० विना ॥ ९ ति य दुच्छटी ६० त० ॥ १० चतुस्रपदेसव्वं पुरोदमिदं मणिसु मासि ॥ ११ थ वं भवे ६० त० विना ॥

पुरिसं च परिपुच्छेज्ज अधण्णो दूमगो त्ति य । असिद्धत्थो त्ति तं बूया एतेसामुपवेशणे ॥ ३८० ॥
 असेसो आह्लो चैव वयोगतमणो णरो । परिक्खिलेसाभिगते भोगे अप्पे तु भुंजति ॥ ३८१ ॥
 इत्थि वा परिपुच्छेज्ज अधण्णा दूमग त्ति य । असिद्धत्था असेसा य इत्थीयमिति णिहिसे ॥ ३८२ ॥
 अणीसीरी कुडुंबस्स ण य कस्सति सामिणी । आइला सपरिक्खेसा भोगे भुंजे जंवेच्छया ॥ ३८३ ॥
 अविधेयो य से भत्ता सा य भत्तु वसे भवे । बहुरोगा अप्परोगा बहुपच्चत्थिका भवे ॥ ३८४ ॥
 कण्णं च परिपुच्छेज्ज अधण्णा दूमग त्ति य । असिद्धत्था असेसा य विज्जते अचिरेण य ॥ ३८५ ॥
 तं पंडगं समासेण पंडगस्स वियाणिया । विज्जस्सति त्ति तं बूया सेवितम्मि णणुंसके ॥ ३८६ ॥
 गब्भं पुच्छे ण भविस्सति त्ति जाणे णणुंसकं च तं । इत्थी वा पुरिसो वा वि एगमेगसमागमं ॥ ३८७ ॥
 णत्थि त्ति तं वियाणीया पुच्छिओ अंगचिंतओ । रद्दे संजोगपुच्छायं धीपुमंसेण पसरस्सते ॥ ३८८ ॥
 दब्बाभिगमणं णत्थि धवहारो णिरत्थको । पंडकस्स थ कम्माणि जाणि तस्स परस्स वा ॥ ३८९ ॥
 कम्मपुच्छाय णिहेसे एवमादि फलं वदे । पवासो पुच्छते णत्थि पडत्थो य णिरत्थकं ॥ ३९० ॥
 विवादे वा जयं पुच्छे जयो णत्थि त्ति णिहिसे । आरोगं परिपुच्छेज्जा णत्थि चेवं वियागरे ॥ ३९१ ॥
 रोगं च परिपुच्छेज्जा अत्थि चेवं वियागरे । मरणं च परिपुच्छेज्जा अत्थि चेवं वियागरे ॥ ३९२ ॥
 जीवितं परिपुच्छेज्जा णत्थि चेवं वियागरे । आघाधितं च पुच्छेज्जा ण समुट्ठिहिति त्ति सो ॥ ३९३ ॥
 अणाणुट्ठिं च पुच्छेज्ज अत्थि चेवं वियागरे । वासारत्तं च पुच्छेज्ज जहण्णो त्ति वियागरे ॥ ३९४ ॥
 अपातपं च पुच्छेज्ज अत्थि चेवं वियागरे । वासं च परिपुच्छेज्ज मोहं मेहं वियागरे ॥ ३९५ ॥
 ससस्स संपयं पुच्छे जहण्णा सस्ससंपया । सस्सस्स वापदं पुच्छे अत्थि चेवं वियागरे ॥ ३९६ ॥
 णट्ठं च परिपुच्छेज्जा णत्थि णट्ठं ति णिहिसे । णट्ठमाधारं तं च णिरत्थं णट्ठमादिसे ॥ ३९७ ॥
 पुरुसो णणुंसको इत्थी णणुंसो त्ति वियागरे । धण्णं धणं ति पुच्छेज्जा अधण्णं ति वियागरे ॥ ३९८ ॥
 जं [च] किंचि पसत्थं [सा] सव्वं णत्थि त्ति णिहिसे ।
 जं किंचि अप्पसत्थं च सव्वमत्थि ति णिहिसे ॥ ३९९ ॥
 तथा खेत्तं तथा वत्थुं सव्वं णत्थि त्ति णिहिसे । सव्वे सदे य जाणेज्जा जे भवंति णणुंसका ॥ ४०० ॥
 णणुंसको अपुरुसो चिद्धिको सीतलो त्ति वा । पंडको वातिको वा वि किलिमो वा संकरो त्ति वा ॥ ४०१ ॥
 कुमीकपंडकं जाणे इस्सापंडकमेव च । पक्खापक्खिस्स घ विकलो य संढो वा वि णरेतरो ॥ ४०२ ॥
 एते णणुंसका सहा णत्थिचाणंतरे तथा । णत्थिचत्तेवंतरए कीलेयेवंतरे तथा ॥ ४०३ ॥
 मायणंतरे या वि वत्थिमाभरणंतरे । उवकरणंतरे चैव धण-धण्णंतरे तथा ॥ ४०४ ॥
 एतम्मि पेक्खियामासे सदे रूवे तथेव य । सव्वमेवाणुंगंतव्वं ततो बूयाणंचित्तओ ॥ ४०५ ॥
 ॥ णणुंसकाणि सम्मत्ताणि ॥ ३ ॥ छ ॥

[४ सत्तरस दक्खिणणाणि]

सत्तरस दक्खिणणाणंगे पवक्खामऽणुपुञ्जसो । सीसस्स दक्खिणो भागो १ कण्णो यो वा वि दक्खिणो २ ॥ ४०६ ॥ ३०
 अक्खी ३ भमू ४ हणू वा वि ५ गंडो जो यावि दक्खिणो ६ ।
 गीवा ७ अंतो य ८ धाहू य ९ थणो १० हत्थो य दक्खिणो ११ ॥ ४०७ ॥
 पसं १२ वसणो १३ ऊँरू य १४ जाणू १५ जंपा य दक्खिणो १६ ।
 पादो य दक्खिणो णेयो १७ एवं सत्तरसाऽऽहिया ॥ ४०८ ॥

१ जयिच्छया हं तं ॥ २ हलधिहान्तर्गतं पूर्वार्द्धं हं तं एव वर्तते ॥ ३ हलधिहान्तर्गतमुत्तरार्द्धं हं तं एव वर्तते ॥
 ४ चिण्णको हं तं ५ संवरो हं तं ६ मंतणे चैव हं तं ७ जतू य हं तं ॥
 अंग १०

- एताणि आमसं पुच्छे अत्यलामं जयं तथा । पसत्यं जत्तियं किंचि सव्यमरियं चि गिहिसे ॥ ४०९ ॥
 पुरसं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्थो सुमगो चि य । दंदिणाचारभागी य पुरसोऽयमिति गिहिसे ॥ ४१० ॥
 इत्थिं वा परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुमग चि य । दक्खिणाचारभागी य इत्थीयमिति गिहिसे ॥ ४११ ॥
 पुरुसस्सऽट्ठविधं पुच्छे वूया तं तु पदक्खिणं । धियो अट्ठविधं पुच्छे आदितो तं पयक्खिणं ॥ ४१२ ॥
 ५ कम्मं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुमग चि य । घण्णा य सुदुभागी य ण खिपं तु गमिस्सति ॥ ४१३ ॥
 गम्मं च परिपुच्छेज्ज अत्थि गम्मो चि गिहिसे । गध्मिणी परिपुच्छेज्ज इमं पक्खं पजाहिति ॥ ४१४ ॥
 पुत्तलामं च पुच्छेज्ज दक्खिणो य भविससति । कम्मं च परिपुच्छेज्ज रीयमन्मंतरं भवे ॥ ४१५ ॥
 पवासं परिपुच्छेज्ज पवासो सँफ़ळो भवे । पउत्थं परिपुच्छेज्ज इमं पक्खं स एहिति ॥ ४१६ ॥
 धंयं च परिपुच्छेज्ज णत्थि धंयो चि गिहिसे । धंपस्स मोक्खं पुच्छेज्ज अत्थि मोक्खो चि गिहिसे ॥ ४१७ ॥
 १० पवासं परिपुच्छेज्ज णत्थि चेवं वियागरे । पतिट्ठं परिपुच्छेज्ज अत्थि चेवं वियागरे ॥ ४१८ ॥
 भयं च परिपुच्छेज्ज भयं णत्थि चि गिहिसे । खेमं च परिपुच्छेज्ज अत्थि खेमं चि गिहिसे ॥ ४१९ ॥
 रँसत्थं परिपुच्छेज्ज अत्थि अत्थि चि गिहिसे । विगहं परिपुच्छेज्ज णत्थि चेवं वियागरे ॥ ४२० ॥
 जयं च परिपुच्छेज्ज जयो अत्थि चि गिहिसे । आरोगं परिपुच्छेज्ज णीरोगो चि वियागरे ॥ ४२१ ॥
 रोगं च परिपुच्छेज्ज णत्थि रोगो चि गिहिसे । मरणं च परिपुच्छेज्ज णत्थि चेवं वियागरे ॥ ४२२ ॥
 १५ < जीवितं परिपुच्छेज्ज अत्थि चेवं वियागरे > । असर्माहं परिपुच्छेज्ज समुट्ठाणं समुहिसे ॥ ४२३ ॥
 अणावुट्ठं च पुच्छेज्ज णत्थि चेवं वियागरे । यासारत्तं च पुच्छेज्ज उत्तमो चि वियागरे ॥ ४२४ ॥
 अपातपं च पुच्छेज्ज णत्थि चेवं वियागरे । वासं च परिपुच्छेज्ज अणुपुब्धि वियागरे ॥ ४२५ ॥
 कदा वासं ति वा वूया इमं पक्खं ति गिहिसे । दिवा एत्तिं ति वा वूया दिवा वासं विणिहिसे ॥ ४२६ ॥
 इत्थं सँसत्स सं(वा)पयं पुच्छे णत्थि ति चि वियागरे । इत्थं सत्सत्स संपयं पुच्छे उत्तमा सत्सत्संपया ॥ ४२७ ॥
 २० णट्ठं च परिपुच्छेज्ज लामं तस्स विणिहिसे । णट्ठमाचारए तं च दक्खिणं सव्वमाहिसे ॥ ४२८ ॥
 कदा णट्ठं ति वा वूया इमं पक्खं ति गिहिसे । कदा "दिसिहिति तं च इमं पक्खं ति गिहिसे ॥ ४२९ ॥
 धामं च दक्खिणं य चि दक्खिणं ति वियागरे । घणं घणं च पुच्छेज्ज धँणं ति [य] वियागरे ॥ ४३० ॥
 जं च किंचि पसत्यं तं सव्वमत्थि चि गिहिसे । अणपसत्यं च जं किंचि ण तं अत्थि चि गिहिसे ॥ ४३१ ॥
 सत्तमाभिज्जं कम्मं आयारं च विसेसतो । सदे पदक्खिणे सव्वं जं चऽण्णमवि एरिसं ॥ ४३२ ॥
 २५ सव्वकालं पसत्यं तु सव्वत्थेसु य वृत्तियं । मुण्णाभवथे हि फ़ळं दक्खिण्णाणं पि गिहिसे ॥ ४३३ ॥
 तथा वेत्तं तथा वत्थुं सव्वमत्थि चि गिहिसे । सव्वे सदे य जाणेज्जा दक्खिणा जे भवंतिह ॥ ४३४ ॥
 अतिदक्खिणं दक्खिणत्तो भवे यात्थि पुच्चदक्खिणं । अतिदक्खिणं सपत्ति तथेच उयादलियं (उचदक्खिणं) ॥ ४३५ ॥
 [.....] दक्खिणं ति य जो वदे । पदक्खिणं ति वा वूया जं चऽण्णं दक्खिणं भवे ॥ ४३६ ॥
 णक्खत्ते धँन्निस्सण्णारे देवते पणिधिम्मि या । पुप्फे फ़ले य देसे य णारे गाम गिहे वि वा ॥ ४३७ ॥
 ३० पुरसे चतुप्पदे चेय पक्खिणं चदगेचरे । "कीडे किमिहिके या वि परिस्सपणते तथा ॥ ४३८ ॥

- १ दक्खिणां हं तं ॥ २ डिया अत्थं हं तं विना ॥ ३ रायगम्मं हं ॥ ४ सहल्लो हं तं ॥
 ५ इत्थिगतः पाठः हं तं एव वर्तते ॥ ६ संधिं च परिपुच्छेज्ज अत्थि संधिं चि गिहिसे । इति पाठः स्यात् ॥
 ७ < एतस्मिन्पर्यायि पूर्वाहं हं तं नास्ति ॥ ८ "माहिते परि" हं तं विना ॥ ९ "ट्ठाणं गिहिसे हं तं विना ॥
 १० इत्थिगतं पूर्वाहं हं तं एव वर्तते ॥ ११ दिस्सहि पत्तं च हं तं ॥ १२ ति पु" हं तं विना ॥ १३ घणं ति हं
 तं ॥ १४ दक्खिणे वारे हं तं विना ॥ १५ कीडे केमि" हं तं विना ॥

पार्णे वा भोगे वा वि बल्ये आभरणे तथा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगणेषु य ॥ ४३९ ॥
 लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेषु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेषु य ॥ ४४० ॥
 एतस्मि पेक्खितामासे सदे रूवे तथेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो वृयांगचित्तओ ॥ ४४१ ॥

॥ दक्खिणाणि सम्भत्ताणि ॥ ४ ॥ छ ॥

[५ सत्तरस वामाणि]

सत्तरस वामाणो कित्तयिस्समणुपुव्वसो । सीसरस वामगो भागो १ कण्णो जो यावि वामको २ ॥ ४४२ ॥

अक्खि ३ मुमा ४ हणू वा वि ५ गंडो यो यावि वामको ६ ।

गीवा ७ अंसो य ८ वाहू य ९ थणो १० हत्यो य वामको ११ ॥ ४४३ ॥

पसं १२ वसण १३ ऊरू य १४ जाणू १५ जंघा य धामिका १६ ।

वामगो य तथा पाओ १७ एवं सत्तरसाऽऽहिता ॥ ४४४ ॥

एताणि आमसं पुच्छे अत्यलमं जयं तथा । जं किंचि वि पुच्छेज्ज सव्वं णत्थि त्ति णिहिसे ॥ ४४५ ॥

पुरिसं च परिपुच्छेज्ज अधण्णो दूमगो त्ति य । वामाचारभागी य पुरिसोऽयमिति णिहिसे ॥ ४४६ ॥

इत्थिं वा परिपुच्छेज्ज अधण्णा दूमग त्ति य । वामाचारभागी य इयमित्थि त्ति णिहिसे ॥ ४४७ ॥

पुरिसऽट्ठविधं पुच्छे वामं चेव वियागरे । इत्यऽट्ठविधं पुच्छे वामं चेव वियागरे ॥ ४४८ ॥

कण्णं च परिपुच्छेज्ज अधण्णा दूमग त्ति य । अस्सिद्धत्थ त्ति तं वूया खिप्पं विज्जेहि त्ति य ॥ ४४९ ॥

गन्धं च परिपुच्छेज्ज णत्थि गन्धो त्ति णिहिसे । गन्धिणी परिपुच्छेज्ज मतं सत्तं पयाहिति ॥ ४५० ॥

कम्मं च परिपुच्छेज्ज किच्छवित्ति भविस्सति । मित्ताणं च पडिक्कू लो सव्वत्थेहि य वाहिरो ॥ ४५१ ॥

पवासं परिपुच्छेज्ज णित्त्यो त्ति वियागरे । महतो य आवद्धंसो खिप्पमेव भविस्सति ॥ ४५२ ॥

पवत्थं च परिपुच्छेज्ज चिरेणाऽऽगमणं भवे । णित्त्यकं पवासं च पवत्थस्स वियागरे ॥ ४५३ ॥

बंधं वा परिपुच्छेज्ज अत्थि बंधो त्ति णिहिसे । बंधस्स मोक्खं पुच्छेज्ज चिप मोक्खो भविस्सति ॥ ४५४ ॥

पवासं परिपुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे । पतिट्ठं परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे ॥ ४५५ ॥

सम्माणं संपयोगं वा णिव्याणं मोक्खमेव य । भोगलभं सुहिस्सरियं सव्वं णत्थि त्ति णिहिसे ॥ ४५६ ॥

भयं च परिपुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे । खेमं च परिपुच्छेज्ज णत्थि खेमं त्ति णिहिसे ॥ ४५७ ॥

संधिं च परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । विमाहं परिपुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे ॥ ४५८ ॥

जयं च परिपुच्छेज्ज जयो णत्थि त्ति णिहिसे । आरोगं परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे ॥ ४५९ ॥

रोगं च परिपुच्छेज्ज अत्थि रोगो त्ति णिहिसे । मरणं च परिपुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे ॥ ४६० ॥

जीवितं परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । आघाथितं च पुच्छेज्ज ण समुट्ठेहि त्ति सो ॥ ४६१ ॥

अणावुट्ठिं ति पुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे । वेस्सारत्तं च पुच्छेज्ज पावको त्ति वियागरे ॥ ४६२ ॥

अपातयं च पुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे । वासं च परिपुच्छेज्ज कटुकं त्ति वियागरे ॥ ४६३ ॥

संसस्स वामपदं पुच्छे अत्थि तेवं वियागरे । सत्तस्स संपयं पुच्छे गिकिट्ठा सत्तसंपया ॥ ४६४ ॥

णट्ठं च परिपुच्छेज्ज णत्थि णट्ठं त्ति णिहिसे । णट्ठमाधारइत्ता य वामपक्करस्स णिहिसे ॥ ४६५ ॥

वामं च दक्खिरणं य त्ति वामं चेव वियागरे । घणं धणं त्ति पुच्छेज्ज अधण्णमिति णिहिसे ॥ ४६६ ॥

जं [च] किंचि पसत्यं वं सव्वं णत्थि त्ति गिहिसे । अप्पसत्यं च जं किंचि सव्वमत्थि त्ति गिहिसे ॥ ४६७ ॥
 सत्तामाभिजणं जातिं आयारं विणयकमं । असुभं अप्पसत्यं च वामभागेषु गिहिसे ॥ ४६८ ॥
 जथा वीणामधेयाणं फलं वुत्तं सुभा-ऽसुभं । तैधेव सव्वं वामाणं फलं बूया सुभा-ऽसुभं ॥ ४६९ ॥
 तथा खेत्तं तथा वत्थुं सव्वं णत्थि त्ति गिहिसे । समे सदे य जाणेजा वामे जे मणिके मया ॥ ४७० ॥
 उत्तरं ति च वामं ति वामावट्ठे त्ति वा पुणे । वामसीलो त्ति वा बूया वामायारो त्ति वा पुणे ॥ ४७१ ॥
 वामपक्खं ति वा बूया [वामदेसं ति वा] पुणे । वामभागं ति वा बूया वामतो त्ति वा जो वदे ॥ ४७२ ॥
 अँववामं ति वा बूया अँपसव्वं ति वा वदे । अवसव्वं ति वा बूया अप्पग्यं ति वा पुणे ॥ ४७३ ॥
 जं चऽण्णं एवमादीयं समासेण य वासतो । ये वऽण्णे वामतो सदा वामतो मणिके मया ॥ ४७४ ॥
 णक्खत्ते उत्तरदारे देवते पणिविम्मि य । पुप्फे फले व देसे वा णारे गाम-गिहे वि वा ॥ ४७५ ॥
 पुरस्से चतुप्पदे वा वि पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे विविहके वा वि परिसप्पे तथेय य ॥ ४७६ ॥
 पाणे वा भोगे वा वि वत्थे आभरणे तथा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगणेषु य ॥ ४७७ ॥
 लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रतणेषु च । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण-धणेषु य ॥ ४७८ ॥
 एतम्मि पेक्खियामासे सदे हूवे तथेय य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो दूयांगचित्तो ॥ ४७९ ॥
 ॥ वामाणि सम्मत्ताणि ॥ ५ ॥ छ ॥

[६ सत्तरस मज्झिमाणि]

सत्तरस मज्झिमाणि पक्खत्तामऽणुपुव्वसो । मत्थको पदमं वुत्तो १ ततो सीमंतको भवे २ ॥ ४८० ॥
 ललाटं ३ भूमकंतरयंतो ४ तथा णासाय पुत्तको ५ । णासा ६ ओट्टा य ८ भवे उरो ९ जधुत्तरं तथा १० ॥ ४८१ ॥
 हिदयं ११ धणंतरं १२ णाणी १३ लोमवासी १४ तथोदरं १५ ।
 मेहणं १६ वत्थिसीसं च १७ मज्झिमाणाऽऽभवन्तिह ॥ ४८२ ॥
 एताणि आमसं पुच्छे अत्यलाभं जयं तथा । जं [च] किंचि पसत्यं [सा] सव्वमत्थि त्ति गिहिसे ॥ ४८३ ॥
 पुरिसं परियुच्छेज्ज सिद्धत्थो सुभगो त्ति य । धण्णो य सुहभागी य भातीणं मज्झिमो भवे ॥ ४८४ ॥
 रायमंती भवे सो य णातीणं मज्झिमो भवे । मज्झत्यसीलमायारो सव्वत्थेषु भवे णरो ॥ ४८५ ॥
 इत्थि च परियुच्छेज्ज सिद्धत्था अपरायिता । धण्णा य सुहभागी य भगिणीसु य मज्झिमा ॥ ४८६ ॥
 णावीसु मज्झिमं लभते भत्तारम्मि य वल्लभा । मज्झत्यसीलमायाप सव्वत्थेषु य सा भवे ॥ ४८७ ॥
 पुरिसस्सऽयविधिं पुच्छे मज्झिमं ति वियागरे । [धिया अत्यविधिं पुच्छे मज्झिमं ति वियागरे ॥ ४८८ ॥]
 कणं च परियुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग त्ति य । धण्णा य सुहभागी य ण य खिणं निग्गमिस्सति ॥ ४८९ ॥
 गन्धं च परियुच्छेज्ज अत्थि गन्धो त्ति गिहिसे । गन्धिभिं परियुच्छेज्ज खिणं सा पयाहिति ॥ ४९० ॥
 कता पयाहिती य त्ति पक्खसंधिम्मि गिहिसे । कम्मं च परियुच्छेज्ज रायमन्मंतरं वदे ॥ ४९१ ॥
 पयासं परियुच्छेज्ज सफलं ति वियागरे । पठयं परियुच्छेज्ज सयणो आगमिस्सति ॥ ४९२ ॥
 सवि पावासिकं पुच्छे कता सो आगमिस्सति । अंगवी आगमं तस्स पक्खसंधिम्मि गिहिसे ॥ ४९३ ॥
 < १ यंधं च परियुच्छेज्ज णत्थि यंधो त्ति गिहिसे । > यंधस्स मोक्खं पुच्छेज्ज अत्यि मोक्खो त्ति गिहिसे ॥ ४९४ ॥
 कता सुबिहिती य त्ति जो णरो परियुच्छति । अंगवी तस्स मोक्खं तु पक्खसंधिम्मि गिहिसे ॥ ४९५ ॥
 पयासं परियुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । पतिट्ठं परियुच्छेज्ज अत्यि तेवं वियागरे ॥ ४९६ ॥
 पतिट्ठं णिवुत्तिं पीति संजोगं च सँमागमं । जं इट्ठं परियुच्छेज्ज सव्वमत्थि त्ति गिहिसे ॥ ४९७ ॥

१ 'पक्खमं हं' तं विना ॥ २ तं चोय सव्ववामां' हं' तं ॥ ३ अप्पवामं हं' तं विना ॥ ४ अयसव्वं हं' तं विना ॥ ५ < एतदिहगतं पारिं हं' तं नास्ति ॥ ६ सनामकं हं' तं ॥

संधि च परिपुच्छेज्ज अत्थि संधि ति णिहिसे । विगाहं परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे ॥ ४९८ ॥
जयं च परिपुच्छेज्ज जयो अत्थि ति णिहिसे । आरोगं परिपुच्छेज्ज समुद्धानुत्स णिहिसे ॥ ४९९ ॥
अणावुट्ठिं च पुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । वस्सारत्तं च पुच्छेज्ज मञ्जिमो ति वियागरे ॥ ५०० ॥
अपातयं च पुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । वासं च परिपुच्छेज्ज मञ्जिमो ति वियागरे ॥ ५०१ ॥
कता वासं ति वा बूया पक्खसंधिमि णिहिसे । विवा रत्तं ति वा बूया संझाकाले विणिहिसे ॥ ५०२ ॥ 5
सत्सत्स वा[प]दं पुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । सत्सत्स संपयं पुच्छेज्ज मञ्जिमा सत्ससंपदा ॥ ५०३ ॥
लामं च परिपुच्छेज्ज मञ्जिमं लाममादिसे । णट्ठं च परिपुच्छेज्ज मञ्जिमं तं च लब्भति ॥ ५०४ ॥
वाम-दक्खिणमञ्जिमि मञ्जिमं ति वियागरे । धणं धणं च पुच्छेज्ज मञ्जिमो ति वियागरे ॥ ५०५ ॥
जं [च] किंचि पसत्थं [सा] सव्वमत्थि ति णिहिसे । अप्पसत्थं च जं किंचि सव्वं नत्थि ति णिहिसे ॥ ५०६ ॥

तथा खेतं तथा वैल्युं सव्वमत्थि ति णिहिसे । समे सदे य जाणेज्जा मञ्जिमा जे भवंतिह ॥ ५०७ ॥ 10
मञ्जि मँज्जंतिको मञ्जो मञ्जिमो ति व यो वदे । पुर-देस-भागमञ्जो गोट्टी-सेणागमस्स वा ॥ ५०८ ॥
वयस्स मञ्जो सुहमञ्जो सयणमज्जं ति वा वदे । घरमज्ज गाममज्जो अरण्णरसाऽहवीय वा ॥ ५०९ ॥
णीयसंवेरिमज्जमि मित्तमज्जो ति वा वदे । अमित्तमज्जो गोमज्जो णातिमज्जो ति वा वदे ॥ ५१० ॥
सुमज्जो तणुमज्जो ति चोरमज्जो ति वा वदे । जवमज्जो कीडमज्जो लद्धमज्जो ति वा वदे ॥ ५११ ॥
समुदस्स य मँज्जं ति अब्भमज्जं ति वा वदे । उदगस्स व मज्जो ति अगिमज्जो ति वा पुणो ॥ ५१२ ॥ 15
चरप्पदाणं सव्वेसिं विपदाणं तथेव य । अंगोवंगेसु सव्वेसु मज्जस्स उ उदीरणा ॥ ५१३ ॥
भोतीणं मञ्जिमं व ति < मँज्जिमं भयणीण > वा । मज्जागतं ति वा बूया मज्जसारं ति वा वदे ॥ ५१४ ॥
मव्वं सारं ति वा बूया तथा उद्धममज्जिमं । उक्कट्टमज्जिमं व ति तथा सग्मज्जिमं ति वा ॥ ५१५ ॥
कित्तिर्यंति य जे सहा जं चऽण्णं मञ्जिमं भवे । एते उत्ता समा सहा मञ्जिमा जे भवंति य ॥ ५१६ ॥
सह-रूव-रसे गंधे फासे मञ्जिमकम्मि य । पुप्फे फले व देसे वा णारे गामे गिहे वि वा ॥ ५१७ ॥ 20
पुरसे चतुप्पदे वा वि पक्खिमि उदगेचरे । कीडे क्खिविहो यावि परिसप्पे तथेव य ॥ ५१८ ॥
पाणे वा भोयणे वा वि धत्थे आभरणे तथा । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेसु य ॥ ५१९ ॥
आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणेसु य । लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेसु य ॥ ५२० ॥
एतम्मि पेक्खितामासे सह-रूव-रसे तथा । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगधित्तओ ॥ ५२१ ॥

॥ मञ्जिमाणि सम्मत्ताणि ॥ ६ ॥ छ ॥

25

[७ अट्टावीसं ददाणि]

अट्टावीसं ददाणंगे पक्खामऽणुपुव्वसो । सिरं १ णिडालं २ जतूणि ४ उरो ५ पत्ताणि वे भवे ७ ॥ ५२२ ॥
बे^{११} बाहुणालिमज्जाणि ९ बाहुमज्जा य वे भवे ११ । जंधोरुणं च मज्जाणि १५ तथेव पादपट्टिओ १७ ॥ ५२३ ॥
दंता १९ संखा य २१ गंडा य २३ करमज्जो तथेव य २५ ।
रंधो [य] २६ जंतुमज्जो य २८ ददाणेताणि णिहिसे ॥ ५२४ ॥ 30
एताणि आमसं पुच्छे अत्थलामं जयं तथा । जं [च] किंचि पसत्थं तं सव्वमत्थि ति णिहिसे ॥ ५२५ ॥

१ °ण मज्जं ति म° हं० त० विना ॥ २ सव्वमत्थि हं० त० ॥ ३ चत्थं हं० त० विना ॥ ४ मज्जंतिको हं० त० ॥
५ "संधे मज्जं ति मिच्छ" हं० त० विना ॥ ६ अचित्तं हं० त० ॥ ७ मज्जमि अ° हं० त० वि० ॥ ८ भावाणं हं० ।
भावीणं त० ॥ ९ < १ > एतत्तिनात्तगतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ १० भं तद्वा हं० त० ॥ ११ जे या° हं० त० ॥ १२ जसुमज्जो
हं० त० ॥

- पुरिसं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्वा सुभगो त्ति य । घण्णो य सुहभागी य ददो य वल्लं ति य ॥ ५२६ ॥
 इत्थिं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्वा सुभग त्ति य । घण्णा य सुहभागी य ददा य वल्लिका ति य ॥ ५२७ ॥
 पुरिसस्सऽट्ठविधं पुच्छे ददमिंशेष गिदिसे । विधां अट्ठविधिं पुच्छे ददमिंशेष गिदिसे ॥ ५२८ ॥
 क्वणं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्वा सुभग त्ति य । घण्णा य सुहभागी यं ण तु खिप्यं गमिस्सति ॥ ५२९ ॥
 गच्चं च परिपुच्छेज्ज अत्थि गच्चो त्ति गिदिसे । गच्चिणिं परिपुच्छेज्जा चिरा पुत्तं पयाहिति ॥ ५३० ॥
 कम्मं च परिपुच्छेज्ज ददं कम्मं तु गिदिसे । पवासं परिपुच्छेज्ज सफलमिति गिदिसे ॥ ५३१ ॥
 पत्तयं परिपुच्छेज्ज संधणो आगमिस्सति । ददो त्ति य वियाणेज्जा पुच्छितो अंगरचित्तको ॥ ५३२ ॥
 वंघं च परिपुच्छेज्जं नत्थि वंघो त्ति गिदिसे । वंघस्स मोक्खं पुच्छेज्ज चिरा मोक्खो भविस्सति ॥ ५३३ ॥
 पवासं परिपुच्छेज्जं णत्थि एवं वियागरे । पंडुं परिपुच्छेज्ज अत्थि सेवं वियागरे ॥ ५३४ ॥
 समागमं संपयोगं थाणमिस्सरियं जसं । जं जं पत्तयं पुच्छेज्ज सव्वमत्थि त्ति गिदिसे ॥ ५३५ ॥
 भयं च परिपुच्छेज्जं णत्थि सेवं वियागरे । खेमं च परिपुच्छेज्ज अत्थि खेमं ति गिदिसे ॥ ५३६ ॥
 संधिं च परिपुच्छेज्ज अत्थि संधि त्ति गिदिसे । विगाहं परिपुच्छेज्जं णत्थि सेवं वियागरे ॥ ५३७ ॥
 जयं च परिपुच्छेज्ज जयो अत्थि त्ति गिदिसे । आरोगं परिपुच्छेज्ज आरोगमिति गिदिसे ॥ ५३८ ॥
 रोगं च परिपुच्छेज्जं णत्थि रोगं ति गिदिसे । मरणं च परिपुच्छेज्जं णत्थि सेवं वियागरे ॥ ५३९ ॥
 जीवितं परिपुच्छेज्ज अत्थि सेवं वियागरे । आवाधितं च पुच्छेज्ज समुद्दागऽस्स गिदिसे ॥ ५४० ॥
 अणावुट्ठिं च पुच्छेज्जं णत्थि सेवं वियागरे । वत्सारत्तं च पुच्छेज्ज सोमणो त्ति वियागरे ॥ ५४१ ॥
 अपातयं च पुच्छेज्जं णत्थि सेवं वियागरे । वासं च परिपुच्छेज्जं पभूतमिति गिदिसे ॥ ५४२ ॥
 सत्सस्म संपर्यं पुच्छे सोमणा सरससंपदा । सरसरत्त वापदं पुच्छे णत्थि सेवं वियागरे ॥ ५४३ ॥
 णट्ठं च परिपुच्छेज्ज अत्थि णट्ठं ति गिदिसे । णट्ठमाचारये तं च ददमिंशेष गिदिसे ॥ ५४४ ॥
 सज्जीरं वा वि गिज्जीरं णट्ठमाचारये जति । सज्जीवमिति तं वूया एवं तु दद-दुक्खले ॥ ५४५ ॥
 ददं वा दुक्खलं वा वि ददमिंशेषं गिदिसे । घणं घणं ति पुच्छेज्ज घणं चेत्तं वियागरे ॥ ५४६ ॥
 जं [च] किंचि पत्तयं तं सव्वमत्थि त्ति गिदिसे । अप्पत्तयं च जं किंचि सेवं णत्थि त्ति गिदिसे ॥ ५४७ ॥
 जघा पुण्णामधेयेसु अत्थो सच्चो सुमा-ऽसुमो । एवं ददेसु सच्चोसु पुण्णामसमकाऽऽहिते ॥ ५४८ ॥
 तथा रोचं तथा धैत्यं सव्वमत्थि त्ति गिदिसे । समे सदे य जाणेज्जा ददा जे मणिक्के मत्ता ॥ ५४९ ॥
 अचलं घुनं तथा ठाणं सैस्सत्तं मरिळं ति वा । अजरामरं ति वा वूया गियतं ति अरंथितं ॥ ५५० ॥
 हिमंतेतो त्ति वा वूया महाहिमंतेतो त्ति वा । गिसेंदो अघवा रप्पी मेरू वा मंदरो त्ति वा ॥ ५५१ ॥
 गेल्लंतो त्ति केलासो तथा यरमघरो त्ति वा । वेयट्ठो अच्छदंतो त्ति सज्जो विंझो त्ति वा ॥ ५५२ ॥
 "मंते त्ति मलयो य त्ति पारियंतो त्ति वा पुणो । मंहिंदो चित्तदूतो त्ति वदे अंवासणो त्ति वा ॥ ५५३ ॥
 णणो त्ति पन्ननो य त्ति गिरिमेरुरो त्ति वा । सेटो सिलोषयो य त्ति पन्नतो सिहरि त्ति वा ॥ ५५४ ॥
 पामाणो पत्तयो य त्ति उपटो त्ति मणि त्ति वा । सिट्ठापट्टो त्ति वा वूया गंडसेलो त्ति वा पुणो ॥ ५५५ ॥
 णामनो गिरिको य त्ति तदा पन्नतनो त्ति वा । सेटो यदरो त्ति वा वूया मेक्खो मरुभूतिको ॥ ५५६ ॥

१ °मिथेयं हं० तं० वि० ॥ २ इत्थिया वि अट्ठविधं पुच्छे ददामिं हं० तं० ॥ ३ वट्ठं च हं० तं० ॥ ४ य जेतु हं० तं० ॥
 ५ गच्चिणी परिपुच्छेज्ज हं० तं० ॥ ६ सघण्णो हं० तं० ॥ ७ °ज्ज अत्थि हं० तं० विना ॥ ८ °ज्ज अत्थि सेवं हं० तं० ॥
 ९ ददमिंशेषगुणारदं हं० तं० वि० एव वतंते ॥ १० °मिथेयं हं० तं० ॥ ११ सव्वमत्थि हं० तं० ॥ १२ वत्तयं हं० तं० विना ॥
 १३ °मरुतं मं० हं० तं० विना ॥ १४ अचच्छिद्यं हं० तं० ॥ १५ °समो अदया हं० तं० वि० ॥ १६ °पुणविहमण्णारतं पदं
 हं० तं० विना ॥ १७ मंचो त्ति हं० तं० वि० ॥ १८ °त्थिपटो हं० तं० ॥

धुवको अचलितो व त्ति तथा थावरको त्ति वा । सिवणामो गुत्तणामो भवो त्ति अमवो त्ति वा ॥ ५५७ ॥
थितो त्ति मुत्थितो व त्ति तथा ठाणद्धितो त्ति वा । अकंपो णिप्पकंपो त्ति णिवरो सुहते त्ति वा ॥ ५५८ ॥
अण्णे वेवंविधा सहा जे अण्णे अचला भवे । एते उत्ता समा सहा दढा जे मणिके मता ॥ ५५९ ॥

थावरम्मि य णक्खत्ते देवते पणिधिम्मि त । पुप्फे फले य देसे य णगरे गाम गिहे वि वा ॥ ५६० ॥
पुरुस्से चउप्पदे चेव पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किपिद्दगे वा वि परिसप्पे तथेव य ॥ ५६१ ॥
पाणे य भोयणे यावि वत्थे आभरणे तथा । आसणे सयणे जाणे मंडोवगरणे तथा ॥ ५६२ ॥
सब्बेसु यावि लोहेसु सब्बेसु रतणेसु य । मणी[सु] यावि सब्बेसु सब्बघण-घणेसु य ॥ ५६३ ॥
एतम्मि पेक्खितामासे सदे रूवे तथेव य । सब्बमेवाणुगंतूणं ततो वूयांगचिंतजो ॥ ५६४ ॥
॥ दढाणि सम्मत्ताणि ॥ ७ ॥ छ ॥

[८ अट्टावीसं चलाणि]

अट्टावीसं चलाणो पवक्खामऽणुपुव्वसो । कण्णासंधी सुमासंधी [..... ॥ ५६५ ॥

..... । ॥ ५६६ ॥

..... ।] कमतलाणं च अट्टावीसं चलाणि तु ॥ ५६७ ॥

एताणि आमसं पुच्छे अत्यलाभं जयं तथा । जं [च] किंचि पसत्वं तं सब्बं णत्थि त्ति णिदिसे ॥ ५६८ ॥

पुरिसं परिपुच्छेज्ज अधण्णो दूभगो त्ति य । असिद्धत्थो त्ति तं वूया ऐत्तेसिं उपसेवणे ॥ ५६९ ॥

इत्थि च परिपुच्छेज्ज अंधण्णा दूभग त्ति य । असिद्धत्थ त्ति तं वूया एतेसमुपसेवणे ॥ ५७० ॥

पुरिसंत्सऽत्यविधं पुच्छे चलमिधेव णिदिसे । अत्यविधं इत्थीसु य चलमिधेव णिदिसे ॥ ५७१ ॥

कण्णं च परिपुच्छेज्ज अधण्णा दूभग त्ति य । असिद्धत्थ त्ति तं वूया खिपं विज्जेहिति त्ति य ॥ ५७२ ॥

गन्धं च परिपुच्छेज्ज णत्थि गन्धो त्ति णिदिसे । गन्धिणि परिपुच्छेज्ज मतं सत्तं पजाहिति ॥ ५७३ ॥

गन्धिणी चलमामासं पुच्छे गन्धो सो चलो भवे । चले वितियमालद्वे गन्धो हणति मातरं ॥ ५७४ ॥

छित्ते चलम्मि तिक्खुत्तो गन्धो तु पितरं हणे । चउखुत्तो चले छित्ते भातरं तु वधिस्सति ॥ ५७५ ॥

पंचखुत्तो चैले छित्ते कुल सो तु वधिस्सति । गन्धिणी य परामासे इधेवमुवधारये ॥ ५७६ ॥

पडिहारकं च दूतं च जंपावाणियकं पि वा । दिसावाणियगं वा वि छत्तंसासणहारणं ॥ ५७७ ॥

तथा पेसणियं जाणे तथा आदिट्ठभूमियं । तथा णिज्जामकं जाणे तथा वा कुक्खिधारकं ॥ ५७८ ॥

तथेव णाविकं जाणे तथा डुपकहारकं । तथा पग्गाहकं जाणे तथा कंतिकवाहकं ॥ ५७९ ॥

तंवाधावकं जाणे अंधाकारिकमेव य । कम्मपुच्छाय णिदिसे एवमादि फलं वदे ॥ ५८० ॥

पवासं परिपुच्छेज्ज णित्थं ति वियागरे । पत्तवं परिपुच्छेज्ज पैरजो सो गमिस्सति ॥ ५८१ ॥

बंधं च परिपुच्छेज्ज णत्थि बंधो त्ति णिदिसे । धंद्धस्स मोक्खं पुच्छेज्ज खिपं मोक्खो त्ति णिदिसे ॥ ५८२ ॥

पयासं परिपुच्छेज्ज अत्थि तेयं वियागरे । पतिट्ठं परिपुच्छेज्ज अत्थि तेयं वियागरे ॥ ५८३ ॥

पतिट्ठं परिपुच्छेज्ज णत्थि तेयं वियागरे । संधिं च परिपुच्छेज्ज णत्थि संधि त्ति णिदिसे ॥ ५८४ ॥

विग्गहं परिपुच्छेज्ज अत्थि तेयं वियागरे । भयं च परिपुच्छेज्ज भयमत्थि त्ति णिदिसे ॥ ५८५ ॥

खेमं च परिपुच्छेज्ज णत्थि खेमं ति णिदिसे । जयं च परिपुच्छेज्ज जयो णत्थि त्ति णिदिसे ॥ ५८६ ॥

आरोगं परिपुच्छेज्ज णत्थि तेयं वियागरे । रोगं च परिपुच्छेज्ज अत्थि रोगो त्ति णिदिसे ॥ ५८७ ॥

१ मव्वो त्ति अमव्वो त्ति हं तं ॥ २ ठिओ त्ति सुट्ठिओ व त्ति हं तं ॥ ३ सहिति त्ति हं तं ॥ ४ घणो
दू हं तं ॥ ५ एतेसं तु पसेवणे हं तं ॥ ६ अघणा हं तं ॥ ७ चले खित्ते कुल सो उ व' हं तं ॥
८ अज्झाका' हं तं ॥ ९ परितो हं तं विना ॥ १० बंधस्स हं तं ॥ ११ < > एतन्निहत्तपतः पाठः हं तं नात्थि ॥
१२ धाराणं हं तं ॥

- मरणं परियुच्छेज्ज अत्थि सेयं वियागरे । जीवितं परियुच्छेज्ज गत्थि सेयं वियागरे ॥ ५८८ ॥
 आवापितं च पुच्छेज्ज ण समुद्वेहिति त्ति सो । अणावुट्ठिं च पुच्छेज्ज अत्थि सेयं वियागरे ॥ ५८९ ॥
 वासं च परियुच्छेज्ज हीणमेव वियागरे । अपातयं च पुच्छेज्ज अत्थि सेयं वियागरे ॥ ५९० ॥
 ६० वासं च परियुच्छेज्ज अत्थि सेयं वियागरे । ६० वासं तु परियुच्छेज्ज अप्पवासं तु गिरिसे ॥ ५९१ ॥
 ६० संससस वापदं पुच्छे अत्थि सेयं वियागरे । ६० सससस संपयं पुच्छे जहण्णा ससससंपदा ॥ ५९२ ॥
 ६० णट्ठं च परियुच्छेज्जा गत्थि णट्ठं ति गिरिसे । णट्ठमाधारये तं च चिरणट्ठं वियागरे ॥ ५९३ ॥
 सज्जीवं वा वि गिज्जीवं णट्ठमाधारए जति । अज्जीवमिति तं वूया एयं अदददुब्बले ॥ ५९४ ॥
 दवं चळं ति वा वूया चळमिषेव गिरिसे । घणं घणं ति वा वूया अघणं ति वियागरे ॥ ५९५ ॥
 जं [च] किंचि पसत्थं तं सब्बं गत्थि त्ति गिरिसे । अप्पसत्थं च वं किंचि सब्बमत्थि त्ति गिरिसे ॥ ५९६ ॥
 ६० समागमं संपयोगं याणमिस्सरियं जसं । जं जं इट्ठं च पुच्छेज्ज सब्बं गत्थि त्ति गिरिसे ॥ ५९७ ॥
 रोगं वा मरणं वा वि अप्पतिट्ठमणिव्युत्ति । विनादं विप्पयोगं वा सब्बमत्थि त्ति गिरिसे ॥ ५९८ ॥
 चलाणेताणि बुत्ताणि जन्मि अत्थे णपुंसको । णपुंसकविभागेणं चलाणि वि वियागरे ॥ ५९९ ॥
 तथा खेत्तं तथा वत्थुं सब्बं गत्थि त्ति गिरिसे । चले सदे व जाणेज्जो चला ये मणिके मया ॥ ६०० ॥
 चलितं विचलितं वा वि चळं ति चलियं ति वा । तथा च चळजाति ति धावति त्ति व जो वदे ॥ ६०१ ॥
 ६० पैधावति ६० ति वा वूया संधावति ६० विधावति । परिधावति त्ति वा वूया तथा गिद्धावति त्ति वा ६०२
 ओधावति त्ति वा वूया अहिधावति णोलति । विचोळंते त्ति वा वूया अघवा विप्पपोळति ॥ ६०३ ॥
 परिच्छेदति त्ति वा वूया तथा विप्परिच्छेदते । परिपत्तते त्ति वा वूया तथा विप्परिवत्तते ॥ ६०४ ॥
 विचले अघुवे व त्ति ओघुते संघुते त्ति वा । < १ अघुवे त्ति गए व त्ति > आघुते त्ति घुते त्ति वा ॥ ६०५ ॥
 ६० गलियं ति व जो वूया तथा पगलियं ति वा । गलियं विगलितं व त्ति तथा पगलियं ति वा ॥ ६०६ ॥
 ६० तथा गिक्खिरन्न विक्खिरन्नं गिक्खिरन्नं विसलाहत्तं । पक्किणं विप्पक्किणं ति छट्ठितं परिसाहियं ॥ ६०७ ॥
 फुलितं दालितं दलियं छट्ठितं परिसाहियं । मगं ति वाक्कलं व त्ति छल्लिगं ति वा पुणे ॥ ६०८ ॥
 अंदोलंति त्ति वा वूया तथा हंदोलको त्ति वा । पुमति त्ति परिर्मुमति भमते व परिब्भमे ॥ ६०९ ॥
 गिद्धुंघति त्ति वा वूया गिक्कट्ठति विक्कट्ठति । उक्कट्ठति त्ति वा वूया कट्ठिति त्ति व जो वदे ॥ ६१० ॥
 अण्णे चेयंविधा सदा जं चण्णं पि चळं भवे । एते वत्ता समा सदा चला जे मणिके मया ॥ ६११ ॥
 ६० चले स्त्रिप्ये व णक्कत्तत्ते देवते पणिधिग्मि य । पुप्फे फले व देसे व णगरे गाम गिहे वि वा ॥ ६१२ ॥
 पुरिसे चट्ठपदे चेय पक्खिरम्मि उदकेचरे । कीडे किविद्धिगे यावि परिसण्णे तवेव य ॥ ६१३ ॥
 पाणे य भोगेणे वा वि वत्थे आमरणे तथा । आसणे सयणे जाणे मंडोवगरणेसु य ॥ ६१४ ॥
 लोहेसु यावि सब्बेसु सब्बेसु रयणेसु य । मणीसु यावि सब्बेसु सब्बघण्ण-घणेसु य ॥ ६१५ ॥
 एनग्मि पेक्खितामासे सदे रूवे तवेव य । सब्बमेनाणुगंनूयं ततो वूयांगवित्तको ॥ ६१६ ॥

॥ चलाणि सुम्मत्ताणि ८ ॥ छ ॥

१-२ इत्थिस्समयगतं पूर्वार्थयुगतं ६० त० एव वर्तते ॥ ३ एतद् श्लेषार्थार्थमेव सि० नास्ति ॥ ४ इत्थिस्समयगतः पाठः ६० त० एव वर्तते ॥ ५ त्रिपोलप अडजप अघघा ६० त० सि० । घपोलते अडजप अघघा घ १ पु० ॥ ६ परिधावति त्ति घण० ॥
 ७ < १ एतच्चिह्नान्तर्गतं चरणं ६० त० नास्ति ॥ ८ घुम्मति ६० त० विना ॥

[९ सोलस अतिवत्ताणि]

सोलसेवडतिवत्ताणि पक्खामणुपुव्वसो । सीसस्स पच्छिमो भागो गीवा पट्ठी य पच्छिमा ॥ ६१७ ॥
बाहुणाली-उवत्थाणं फिजोहणं च पच्छिमं । जंधाणं पण्हिकाणं च अतिवत्ताणि सोलस ॥ ६१८ ॥

एताणि आमसं पुच्छे अत्यलामं जयं तथा । जं किंचि पसत्यं तं सब्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ६१९ ॥
पुरिसं च परिपुच्छेज्ज अधण्णो दूमगो त्ति य । असिद्धद्यो त्ति तं बूया अतिवत्तम्मि सेविते ॥ ६२० ॥ ४
इत्थि च परिपुच्छेज्ज अधन्ना दूमग त्ति य । असिद्धत्य त्ति तं बूया अतिवत्तम्मि सेविते ॥ ६२१ ॥

पुरिसत्यविधिं पुच्छे अतिवत्तं वियागरे । इत्थिअत्यविधिं पुच्छे अतिवत्तं वियागरे ॥ ६२२ ॥
कण्णं च परिपुच्छेज्ज अधण्णा दूमग त्ति य । असिद्धत्य त्ति तं बूया खिप्पं विज्जिहिते त्ति य ॥ ६२३ ॥
गन्मं च परिपुच्छेज्ज णत्थि गन्मो त्ति णिद्दिसे । गन्मिणं परिपुच्छेज्ज मतं सत्तं पयाहिति ॥ ६२४ ॥
उत्थिअत्तुंविक्किं वा वि तथा बाहिरंतुंविद्यं । पक्खच्छयकं व जाणीया कैवुडं आसणहारकं ॥ ६२५ ॥ 10
भागहारकमेवावि मधवा साधिगक्खरं । कम्मपुच्छाय णिद्दिसे एवमादि फलं ईदे ॥ ६२६ ॥

पवासं परिपुच्छेज्ज अफलो त्ति वियागरे । पा(पवा)सितं परिपुच्छेज्ज पॅरतो सो गमिस्सति ॥ ६२७ ॥
बंधं च परिपुच्छेज्ज णत्थि बंधो त्ति णिद्दिसे । बंधस्स मोक्खं पुच्छेज्ज मोक्खं तस्स वियागरे ॥ ६२८ ॥
पवासं परिपुच्छेज्ज अत्थि चेवं वियागरे । पतिट्ठं परिपुच्छेज्ज णत्थि चेवं वियागरे ॥ ६२९ ॥
भयं च परिपुच्छेज्ज अत्थि चेवं वियागरे । खेमं च परिपुच्छेज्ज णत्थि खेमं त्ति णिद्दिसे ॥ ६३० ॥ 15

संधिं च परिपुच्छेज्ज णत्थि संधि त्ति णिद्दिसे । विग्गहं परिपुच्छेज्ज अत्थि चेवं वियागरे ॥ ६३१ ॥
जयं च परिपुच्छेज्ज जयो णत्थि त्ति णिद्दिसे । आरोगं परिपुच्छेज्ज णत्थि चेवं वियागरे ॥ ६३२ ॥
रोगं च परिपुच्छेज्ज अत्थि रोगो त्ति णिद्दिसे । मरणं च परिपुच्छेज्ज अत्थि चेवं वियागरे ॥ ६३३ ॥
जीवितं परिपुच्छेज्ज णत्थि चेवं वियागरे । आवाधितं च पुच्छेज्ज ण समुट्ठेहिति त्ति सो ॥ ६३४ ॥
अणावुट्ठिं च पुच्छेज्ज अत्थि चेवं वियागरे । वस्सारत्तं च पुच्छेज्ज णिकिट्ठो त्ति वियागरे ॥ ६३५ ॥ 20
अपातयं च पुच्छेज्ज अत्थि चेवं वियागरे । वासं च परिपुच्छेज्ज अप्पं वासं वियागरे ॥ ६३६ ॥
सस्सस्स वापदं पुच्छे अत्थि चेवं वियागरे । सस्सस्स संपदं पुच्छे णत्थि चेवं वियागरे ॥ ६३७ ॥
णट्ठं च परिपुच्छेज्ज णत्थि णट्ठं त्ति णिद्दिसे । णट्ठमाधारतित्ता णं चिरणट्ठं वियागरे ॥ ६३८ ॥

संपवा-ण्णागवा-उतीतं अतीतं त्ति वियागरे । धण्णं धणं त्ति पुच्छेज्ज अधणं त्ति वियागरे ॥ ६३९ ॥
समागमं संपयोगं ठाणमिस्सरियं जसं । जं जं इट्ठं च पुच्छेज्ज सब्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ६४० ॥ 25
रोमं च मरणं याधिं अप्पतिट्ठमणिव्बुत्ति । विप्पओगं विदादं वा सब्वमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ६४१ ॥
जं किंचि पसत्यं तं सब्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे । अप्पसत्यं च जं किंचि सब्वमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ६४२ ॥
तथा खेत्तं तथा बल्लुं सब्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे । समे सदे य जाणेज्जा अतिवत्ता भवंति ॥ ६४३ ॥

अतिवत्तमतिक्कांतं गतं त्ति य विणिग्गतं । विणिग्गतं पुराणं त्ति जुण्णं ओपुप्फ णिप्फळं ॥ ६४४ ॥
सुकखं मलितं विसिण्णं त्ति उवडत्तं इणीणमेव य । रूढत्तं पित्तं त्ति वा भुत्तं णिट्ठित्तं त्ति कत्तं त्ति वा ॥ ६४५ ॥ 30
सम्माहितं अतीतं त्ति समत्तिच्छियमत्तिच्छियं । ओहिज्जत्तं ओहसितं पहीणं त्ति प्पहिज्जते ॥ ६४६ ॥
ण्हात्तं व मज्जियं वा वि ओलोहितं पलोत्थियं । पलोत्थित्तं त्ति वा बूया तथा सम्माजित्तं त्ति वा ॥ ६४७ ॥
णचित्तं वाश्यं गीयं लासितं पढित्तं त्ति वा । वेळंवित्तं त्ति वा बूया तथा वत्तुस्सयं त्ति वा ॥ ६४८ ॥

णियतं भूतपुत्र्यं ति कृतपुत्र्यं ति वा पुणो । तथा रयितपुत्र्यं ति अणुभूतं ति वा पुणो ॥ ६४९ ॥
 गतपुत्र्यं ति वा ब्रूया रयपुत्र्यं ति वा पुणो । तथा माणितपुत्र्यं ति वृत्तपुत्र्यं ति वा पुणो ॥ ६५० ॥
 गतगंथा गतरसा तथा गतवयो चि वा । एते उक्ता समा सदा अतिवृत्ता भवन्ति जे ॥ ६५१ ॥

अतिवृत्तमि णक्खत्ते देवते पणिधिम्मि य । पुप्फे फले य देसे थ णगरे गाम गिहे वि वा ॥ ६५२ ॥
 पाणे व भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तथा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणेषु य ॥ ६५३ ॥
 पुरसे चतुप्पदे वा वि पक्खिम्मि उदगेचरे । फीडे किविहगे यावि परिसप्पे तथेय य ॥ ६५४ ॥
 लोहेसु यावि सन्वेसु सन्वेसु रयणेषु य । मणीसु यावि सन्वेसु सत्त्व-धण्ण-धणेषु य ॥ ६५५ ॥
 एतमि पेक्खियामासे सदे रूवे तथेय य । सव्वमेवाणुणांतूणं ततो घूयांगर्चित्तो ॥ ६५६ ॥

॥ अतिवृत्ताणि सम्मत्ताणि ॥ ९ ॥ छ ॥

[१० सोलस वृत्तमाणाणि]

वृत्तमाणाणि वक्खामि सोलसंगे जथा तथा । वे चेत्त सीसपस्ताणि २ कण्णा ४ गंथा तथेय य ६ ॥ ६५७ ॥
 वे घाट्टणालिपस्ताणि ८ घाट्टपस्ताणि वे तथा १० ।

जंणो १२ ऋ १४ पादपस्ताणि १६ वृत्तमाणाणि सोलस ॥ ६५८ ॥

एताणि आमसं पुच्छे अत्थलामं जयं तथा । जं किंचि पसत्थं सं सव्वमत्थि च्चि गिदिसे ॥ ६५९ ॥
 पुरिसं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्थो सुभगो चि य । धण्णो य सुहमागी य पुरुसोऽयमिति गिदिसे ॥ ६६० ॥
 इत्थिं वा परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग चि य । धण्णा य सुहमागी य इत्थीयमिति गिदिसे ॥ ६६१ ॥
 पुरिसत्थविषं पुच्छे वृत्तमाणं वियागरे । इत्थिस्सत्थविषं पुच्छे वृत्तमाणं वियागरे ॥ ६६२ ॥
 कण्णं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग चि य । धण्णा य सुहमागा य रिप्पं विज्जिहित्ति च्चि य ॥ ६६३ ॥
 गम्भं च परिपुच्छेज्ज अत्थि गम्भो च्चि गिदिसे । गम्भिणी परिपुच्छेज्ज खिप्पं सा पयाहित्ति ॥ ६६४ ॥
 कम्मं च परिपुच्छेज्ज सदे रूवेहिं गिदिसे । वृत्तमाणं पसत्थं च सुभं लामं च गिदिसे ॥ ६६५ ॥
 पयासं परिपुच्छेज्ज सफलो च्चि वियागरे । पउत्थं परिपुच्छेज्ज सफलो पैधि वत्तते ॥ ६६६ ॥
 वंधं च परिपुच्छेज्ज णत्थि च्चैवं वियागरे । वद्धस्स मोक्खं पुच्छेज्ज खिप्पं मोक्खं वियागरे ॥ ६६७ ॥
 पयासं परिपुच्छेज्ज णत्थि च्चैवं वियागरे । पतिट्ठं परिपुच्छेज्ज अत्थि च्चैवं वियागरे ॥ ६६८ ॥
 समागमं संपयोगं थाणमिस्सरियं जसं । इट्ठं च परिपुच्छेज्ज सव्वमत्थि च्चि गिदिसे ॥ ६६९ ॥
 अपमाणमसक्कारं गिरातारमणिव्वुत्तिं । विप्पयोगं वियादं च सव्वं णत्थि च्चि गिदिसे ॥ ६७० ॥
 मयं च परिपुच्छेज्ज मयं णत्थि च्चि गिदिसे । देमं च परिपुच्छेज्ज देममत्थि च्चि गिदिसे ॥ ६७१ ॥
 संधिं वा परिपुच्छेज्ज अत्थि संधि च्चि गिदिसे । विगहं परिपुच्छेज्ज णत्थि च्चैवं वियागरे ॥ ६७२ ॥
 जयं वा परिपुच्छेज्ज जयो अत्थि च्चि गिदिसे । आरोमं परिपुच्छेज्ज आरोममिति गिदिसे ॥ ६७३ ॥
 रोगं च परिपुच्छेज्ज णत्थि च्चैवं वियागरे । मरणं च परिपुच्छेज्ज णत्थि च्चैवं वियागरे ॥ ६७४ ॥
 जीवितं परिपुच्छेज्ज अत्थि च्चैवं वियागरे । असमाधिं च पुच्छेज्ज समुट्ठानंऽस गिदिसे ॥ ६७५ ॥
 अणावुट्ठिं च पुच्छेज्ज णत्थि च्चैवं वियागरे । वासारत्तं च पुच्छेज्ज ण सो पढमकणितो ॥ ६७६ ॥
 अपातयं च पुच्छेज्ज णत्थि च्चैवं वियागरे । वासं च परिपुच्छेज्ज वासमासवैवमादिसे ॥ ६७७ ॥
 सत्सत्स वापदं पुच्छे नत्थि च्चैवं वियागरे । सत्सत्स संपपं पुच्छे ण सो पढमकणितो ॥ ६७८ ॥

१. < १ > एतत्थिद्धमपगतपुत्रारथं हं तं नात्थि ॥ २. पविचुत्तयो हं तं । 'पधि' पधि माणं इत्थयः ॥ ३. 'सतथादिसे'
 हं हं विना ॥

संपता-उणागता-उतीतं वत्तमाणं वियागरे । धण्णं धणं चं पुच्छेज्जा तं तु मज्झगतं वदे ॥ ६७९ ॥
 वत्तमाणं पसत्थं च संब्वमत्थि त्ति णिहिसे । अप्पसत्थं च जं किंचि संब्वं णत्थि त्ति णिहिसे ॥ ६८० ॥
 तथा खेत्तं तथा वत्थुं संब्वमत्थि त्ति णिहिसे । समे सदे य जाणेज्जो वत्तमाणा भवंति जे ॥ ६८१ ॥
 वत्तते त्ति व जो बूया वत्तमाणं ति या पुणो । णिव्वत्तते त्ति वा बूया तथा संपतिवत्तते ॥ ६८२ ॥
 संजायते संभवति तथा संचिद्धते त्ति वा । आसत्तं सयते व त्ति बुद्धते पडिबुद्धते ॥ ६८३ ॥
 उप्पज्जते त्ति वा बूया दिस्सते सूयते त्ति वा । अग्घायते त्ति वा बूया अस्सापति त्ति वा पुणो ॥ ६८४ ॥
 फरिसायते त्ति वा बूया सुहं वेदयते त्ति वा । द्दलायते त्ति वा बूया सुहं वा दायते त्ति वा ॥ ६८५ ॥
 तथा चिंतेति मंतेति गायते हसते त्ति वा । तथा पढति पाढेति वेळंवेति त्ति णत्थति ॥ ६८६ ॥
 मज्जति त्ति व जो बूया आहिंचति विलिंपति । भरेति कुसुमाणीति आवंधति वासितं ॥ ६८७ ॥
 अलंकारेति अण्णाणं पसायति त्ति वा पुणो । पैाज्जेति निवेसेति तथा ओक्कंखति त्ति वा ॥ ६८८ ॥
 मुंजति त्ति व जो बूया तथा पिबति भेदति । आहारेति त्ति वा बूया क्कहाणं पावति त्ति वा ॥ ६८९ ॥
 आचिक्खति कथेति त्ति जंपति भणति त्ति वा । विजाणेति त्ति वा बूया तथा संजाणति त्ति वा ॥ ६९० ॥
 आणेति व देति व उवणामेति त्ति वा पुणो । एवमादी य जे कैयि वत्तमाणा भवंति ते ॥ ६९१ ॥
 वत्तमाणम्मि णक्खत्ते देवते पणिधिम्मि य । पुप्फे फले व देसे वा णगरे गाम गिहे वि वा ॥ ६९२ ॥
 पुरुसे चतुप्पदे चैव पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किविहगे यावि परिसप्पे तथेव य ॥ ६९३ ॥
 पाणे व भोग्ये वा वि वत्थे आभरणे तथा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणेसु य ॥ ६९४ ॥
 लोहैसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेसु त । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेसु य ॥ ६९५ ॥
 पतम्मि पेक्खियामासे सदे रूवे तथेव य । सव्वमेवाणुगांतूणं ततो बूयांगंचित्तओ ॥ ६९६ ॥

॥ वत्तमाणाणि सम्मत्ताणि ॥ १० ॥ छ ॥

[११ सोलस अणागताणि]

अणागताणि वक्खामि सोलसंगे जघा तथा । सुहं १ णिहाळं २ कंडो य ३ हिद्वयं ४ जंतुवरं ६ तथा ॥ ६९७ ॥

वरस्स ७ दाहुणालीणं ९ बलीं १० सीसो ११ दरस्स य १२ ।

जंधो १४ रुणं च १६ पुरिमाणि सोलसंगे अणागता ॥ ६९८ ॥

एताणि आमसं पुच्छे अत्यलमं जयं तथा । जं किंचि पसत्थं सा सव्वं बूया अणागतं ॥ ६९९ ॥
 पुरिसं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्थो सुभगो त्ति य । धण्णो य एस्सक्कहाणो पुरिसोऽयमिति णिहिसे ॥ ७०० ॥
 इत्थिं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग त्ति य । धण्णा य एस्सक्कहाणा इत्थीयमिति णिहिसे ॥ ७०१ ॥
 पुरिस्सत्सत्थविधं पुच्छे भविससति अणागतं । थिया अत्यविधं पुच्छे वदे तं पि अणागतं ॥ ७०२ ॥
 कण्णं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग त्ति य । धण्णा य एस्सक्कहाणा विजिस्सति चिरेण तु ॥ ७०३ ॥
 गब्भं च परिपुच्छेज्ज अत्थि गब्भो त्ति णिहिसे । गब्भिणी परिपुच्छेज्ज दारकं सा पयाहिति ॥ ७०४ ॥
 कम्मं च परिपुच्छेज्ज जं कम्मं स समाचरे । तं तं कालंतरेणैव अणागतफलं भवे ॥ ७०५ ॥
 पवासं परिपुच्छेज्ज सफलं ति वियागरे । पडत्थं परिपुच्छेज्ज सधणो आगमिस्सति ॥ ७०६ ॥
 वधं च परिपुच्छेज्ज णत्थि वंधो त्ति णिहिसे । चद्धस्स मोक्खं पुच्छेज्ज अत्थि मोक्खो त्ति णिहिसे ॥ ७०७ ॥

१ सव्वमत्थि हं० त० विना ॥ २ वत्तमण्णं ति सं ३ पु० वि० । वत्तं मण्णं ति हं० त० ॥ ३ पाउणाति हं० त० ॥ ४ उच्चत्ति हं० त० ॥ ५ हिद्वयं जंतुवरं सं ३ पु० वि० । हिद्वयं जं उत्तरं हं० त० ॥

द्वितयरसावि समूहस्सं कण्णाणं णासिकायं य । चाहुणालीयं हत्याणं सोणीआ व गुदायं य ॥ ७३७ ॥
 मत्थकस्स णिडालस्स गीवा-मांडाणमेव य । भुमगाणं चैव जंतूणं उरस्स उदरस्स य ॥ ७३८ ॥
 [..... ।]

एताणि धामसं पुच्छे अत्युत्तमं जयं तथा । जं किंचि वि पसत्यं तं सब्बमत्थि त्ति णिदिसे ॥ ७३९ ॥

पुरिसं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्थो सुभगो त्ति य < १ धण्णो य सुहभागीय अचमंतरको त्ति य ॥ ७४० ॥

इत्थि च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग त्ति य । > घण्णा य सुहभागी य अचमंतरयमारिया ॥ ७४१ ॥

पुरिसस्स विधं पुच्छे बूया अचमंतरं त्ति य । पमदाय विधं पुच्छे तं पि अचमंतरं वदे ॥ ७४२ ॥

कण्णं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग त्ति य । रायचमंतरकस्सायं कण्णा विज्जिहिते लहुं ॥ ७४३ ॥

गच्चं च परिपुच्छेज्ज अत्थि गच्चो त्ति णिदिसे । गच्चिमाणं परिपुच्छेज्ज चिरा पुत्तं पयाहिति ॥ ७४४ ॥

कम्मं च परिपुच्छेज्ज राजपौकेसमादिसे । रण्णो य अचमंतरको भवे सब्बरहस्सिको ॥ ७४५ ॥

पवासं परिपुच्छेज्ज चिरा मोक्खो भविस्सति । [पवत्थं परिपुच्छेज्ज] ॥ ७४६ ॥

भयं च परिपुच्छेज्ज भयं णत्थि त्ति णिदिसे । खेमं च परिपुच्छेज्ज खेममत्थि त्ति णिदिसे ॥ ७४७ ॥

संधिं वा परिपुच्छेज्ज अत्थि संधि त्ति णिदिसे । विगाहं परिपुच्छेज्ज णत्थि चैवं वियागरे ॥ ७४८ ॥

जयं च परिपुच्छेज्ज जयो अत्थि त्ति णिदिसे । आरोगं परिपुच्छेज्ज आरोगमिति णिदिसे ॥ ७४९ ॥

रोगं च परिपुच्छेज्ज णत्थि चैवं वियागरे । मरणं च परिपुच्छेज्ज णत्थि मरणं त्ति णिदिसे ॥ ७५० ॥

जीवितं परिपुच्छेज्ज अत्थि चैवं वियागरे । आबाधितं च पुच्छेज्ज समुट्ठाणं ऽस णिदिसे ॥ ७५१ ॥

अणावुट्ठिं च पुच्छेज्ज णत्थि चैवं वियागरे । वासारत्तं च पुच्छेज्ज उत्तमो त्ति वियागरे ॥ ७५२ ॥

अपातयं च पुच्छेज्ज णत्थि चैवं वियागरे । वासं च परिपुच्छेज्ज महामेहं उवट्ठितो ॥ ७५३ ॥

सस्सस्स थापयं पुच्छे णत्थि चैवं वियागरे । सस्सस्स संपयं पुच्छे उत्तमा सस्ससंपदा ॥ ७५४ ॥

ण्हं च परिपुच्छेज्ज लामं तस्स वियागरे । ण्हमाधारइत्ताणं तकं अचमंतरं भवे ॥ ७५५ ॥

वाहिरऽचमंतरं पुच्छे अचमंतरगमादिसे । < १ धैण्णं धणं त्ति पुच्छेज्ज घण्णं त्ति य वियागरे > ॥ ७५६ ॥

जं किंचि पसत्यं तं सब्बमत्थि त्ति णिदिसे । अप्पसत्यं च जं किंचि सब्बं णत्थि त्ति णिदिसे ॥ ७५७ ॥

तथा खेचं तथा वत्थुं तथा दंडं तथा माणं । विपदं चतुप्पदं सब्बं घण्णमत्थि त्ति यं वदे ॥ ७५८ ॥

वत्थमाभरणं भंडं अंतपुरवरं जणं । सुवण्ण-रुप्प-मणि-त्तं थिरमचमंतरं वदे ॥ ७५९ ॥

जथा पुण्णामधेयेसु सब्बो अत्थो सुमा-ऽसुमो । तथा सुमा-ऽसुमं सब्बं वदे अचमंतरेसु वि ॥ ७६० ॥

अचमंतरे य जाणेज्जो समा सदा भवन्ति जे । अचमंतरं त्ति वा बूया तथा अंतपुरं त्ति वा ॥ ७६१ ॥

अचमंतरं वा गामे त्ति पुरे अचमंतरं त्ति वा । अचमंतरं वा खेडे त्ति घरं अचमंतरं त्ति वा ॥ ७६२ ॥

अंतोगामे त्ति वा बूया तथंतोषगरे त्ति वा । अंतोखेडे त्ति वा बूया तथंतोपरे त्ति वा ॥ ७६३ ॥

अचमंतरं देवकुले अंतोदेवकुले त्ति वा । अचमंतरं मुहे व त्ति तथंतोमुहे त्ति वा ॥ ७६४ ॥

अचमंतरं तु वारीय अंतोवारीय वा पुणो । अचमंतरं कोत्यलगे अंतोकोत्यलके त्ति वा ॥ ७६५ ॥

जन्मि कम्मवि भंडम्मि अंतो अचमंतरं त्ति वा । एते उत्ता समा सदा जे तु अचमंतरा भवे ॥ ७६६ ॥

अचमंतरम्मि णक्करस्से देवते पणिधिम्मि य । पुण्फे फले व देसे य णगरे गामे गिहे वि वा ॥ ७६७ ॥

पुरिसे चतुप्पदे चैव पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे क्विविद्धिगे थावि परिसप्पे तथेव य ॥ ७६८ ॥

पाणे य मोण्णे वा वि वत्थे आमण्णे तया । ॥ आसणे सयणे जाणे भंडोवरणे तथा ॥ ७६९ ॥
 लोहेसु यावि सब्वेसु सब्वेसु रयणेसु य । मणीसु यावि सब्वेसु सब्वयण्ण-घणेसु य ॥ ७७० ॥
 एतम्मि पेक्किरयामासे सदे रूवे तथेय य । सब्वमेयापुत्तणं ततो वूयागचिंतओ ॥ ७७१ ॥ ...

॥ अचमंतरं सम्मत्तं ॥ १२ ॥ छ ॥

[१३ पण्णासं अचमंतरचमंतराणि]

अचमंतरं तु जे बुत्ता ते सम्मट्ठे वियाणिया । अचमंतरअचमंतरके फळं वैत्य वदे सुमं ॥ ७७२ ॥
 अत्यविद्धि जयं छामं जं चऽणं पि सुमं भवे । एताणि आमसं पुच्छे अचमंतरतरं वदे ॥ ७७३ ॥
 पुरिसं परिपुच्छेज सिद्धत्थो सुमगो त्ति य । अचमंतरचमंतरको रण्णो णिषं सुद्धी भवे ॥ ७७४ ॥
 इत्थि च परिपुच्छेज सिद्धत्था सुमग त्ति य । रायचमंतरकरसायं भज्जा तु भविस्सति ॥ ७७५ ॥
 पुरुसट्ठविषं पुच्छे अचमंतरतरं वदे । थिए अत्यविषं पुच्छे अचमंतरतरं वदे ॥ ७७६ ॥
 कण्णं च परिपुच्छेज सिद्धत्था सुमग त्ति य । अचमंतरचमंतरको रण्णो होहिति सेवगो ॥ ७७७ ॥
 कम्मं च परिपुच्छेज रायवह्मभको भवे । अचमंतरचमंतरको रण्णो सब्वरहस्सितो ॥ ७७८ ॥
 मवासं परिपुच्छेज णत्थि चेयं वियागरे । पत्तयं परिपुच्छेज सघणो खिप्पमेहिति ॥ ७७९ ॥
 वंघं च परिपुच्छेज णत्थि चेयं वियागरे । बद्धत्स मोक्खं पुच्छेज चिरा मोक्खो भविस्सति ॥ ७८० ॥
 भयं च परिपुच्छेज भयं णत्थि त्ति णिदिसे । खेमं च परिपुच्छेज खेममत्थि त्ति णिदिसे ॥ ७८१ ॥
 संधिं च परिपुच्छेज अत्थि संधि त्ति णिदिसे । विग्गद्धं परिपुच्छेज णत्थि चेयं वियागरे ॥ ७८२ ॥
 जयं च परिपुच्छेज जयो अत्थि त्ति णिदिसे । आरोगं परिपुच्छेज आरोगमिति णिदिसे ॥ ७८३ ॥
 रोगं च परिपुच्छेज णत्थि चेयं वियागरे । मरणं परिपुच्छेज णत्थि चेयं वियागरे ॥ ७८४ ॥
 जीवितं परिपुच्छेज सुद्धं उत्तमं भवे । आवाधितं च पुच्छेज समुद्धान्णससं णिदिसे ॥ ७८५ ॥
 अणावुट्ठिं च पुच्छेज णत्थि चेयं वियागरे । वत्सारात्तं च पुच्छेज णिदिसे उत्तमुत्तमं ॥ ७८६ ॥
 अपातयं च पुच्छेज णत्थि चेयं वियागरे । वासं च परिपुच्छेज उत्तमं वासमादिसे ॥ ७८७ ॥
 सत्सत्स वापद्दं पुच्छे णत्थि चेयं वियागरे । सत्सत्स संपयं पुच्छे णिदिसे उत्तमुत्तमं ॥ ७८८ ॥
 णट्ठं च परिपुच्छेज छामं तस्स वियागरे । णट्ठमाचारये तं च अचमंतरतरं वदे ॥ ७८९ ॥
 बाहिरचमंतरं व त्ति अचमंतरचमंतरं वदे । घण्णं च पुरिपुच्छेज घण्णं तेण वियागरे ॥ ७९० ॥
 जं किंचि पत्तयं तं सब्वमत्थि त्ति णिदिसे । [अण्णसत्तयं च जं किंचि सब्वं णत्थि त्ति णिदिसे ॥ ७९१ ॥]
 यत्थमामरणं भंडं अतिपुरवरं जणो । मुत्तण्णरूप्पमणिमुत्तं अचमंतरतरं थिरं ॥ ७९२ ॥
 तथा रेत्तं तथा वल्लुं रागं दंढं तथेय य । सब्वं सज्जीर-णिज्जीरं घण्णमत्थि त्ति णिदिसे ॥ ७९३ ॥
 अचमंतरतरं एणं विमावेत्तण अंगरी । पुण्णामधेये हि फळं विसिट्ठतरकं वदे ॥ ७९४ ॥
 पयमेतं जया बुत्तं विमत्तीसु वियागरे । समे सदे य जाणेज्जो अचमंतरतरा हि जे ॥ ७९५ ॥
 अचमंतरचमंतरतो अंतो अंतो त्ति वा पुणो । तथा आहारमाहादे अचमंतरतरं वि वा ॥ ७९६ ॥
 पविट्ठो त्ति य यो वूया तथा अविगतो त्ति वा । तथाऽविसरितो व त्ति तथा लीणो त्ति वा पुणो ॥ ७९७ ॥
 तेषा एक्कट्ठमोक्खो अच्चोक्खे त्ति वा पुणो । तथा ओग्गट्ठमुग्गट्ठो तथा वह्ममरहमो ॥ ७९८ ॥

अतिदूरे पविट्ठो त्ति अतिगतो त्ति व दूरत । दूरातिसरितो व त्ति दूरोगाढो त्ति वा पुणो ॥ ७९९ ॥
 तथा अणुपविट्ठो त्ति तथा अतिगतो त्ति वा । तथा गाढोपगट्ठे त्ति गाढलीगं ति वा वदे ॥ ८०० ॥
 तथा अल्लीणमल्लीणो अल्लीणो त्ति वा वदे । अब्भंतरब्भंतरगो एते सदा समा भवे ॥ ८०१ ॥
 अक्कपविट्ठे णक्खत्ते देवते पणिधिम्मि य । पुप्फे फले व देसे वा णारे गामे गिहे वि वा ॥ ८०२ ॥
 पुरिसे चतुप्पदे चेव पक्खिखम्मि उदकेचरे । कीडे किविहणे चेव परिसपे तथेव य ॥ ८०३ ॥
 पाणे वा भोगणे वा वि वत्थे आभरणे तथा । आसणे सयणे ज्ञाणे भंडोवगरणेषु य ॥ ८०४ ॥
 लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेषु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्णधणेषु य ॥ ८०५ ॥
 एतम्मि पेक्खियामासे सदे रूवे तथेव य । सव्वमेवाणुगतूणं ततो वूयांगचित्तओ ॥ ८०६ ॥

॥ अब्भंतरब्भंतराणि सम्मत्ताणि ॥ १३ ॥ छ ॥

[१४ पण्णासं वाहिरब्भंतराणि]

अब्भंतरा तु निम्मट्ठा वाहिरब्भंतरा तु ते । अब्भंतराणंतरिया अथ वुत्ता सुभा-ऽसुभा ॥ ८०७ ॥
 अत्यलामं जयं वद्धि जं चऽण्णं सुमं भवे । एताणि आमसं पुच्छे वाहिरब्भंतरं वदे ॥ ८०८ ॥
 पुरिसं च परिपुच्छेज्ज वाहिरब्भंतरं भवे । इत्थिं च परिपुच्छेज्ज वाहिरब्भंतरा भवे ॥ ८०९ ॥
 पुरिसस्सऽत्यविधं पुच्छे वाहिरब्भंतरं भवे । थिया अत्यविधं पुच्छे वाहिरब्भंतरं वदे ॥ ८१० ॥
 कण्णं च परिपुच्छेज्ज वाहिरब्भंतरस्स तु । खिपं विज्झिहिति कण्णा एवं वूयांगचित्तको ॥ ८११ ॥
 गब्भं च परिपुच्छेज्ज अत्थि गब्भो त्ति गिहिसे । गब्भिणी परिपुच्छेज्ज खिपं पुत्तं पयाहिति ॥ ८१२ ॥
 कम्मं च परिपुच्छेज्ज वाहिरब्भंतरं वदे । पढिहारं संधिवालं वा तथा अत्योपणायकं ॥ ८१३ ॥
 पवासं परिपुच्छेज्ज सफलोऽयमिति गिहिसे । पउत्तं परिपुच्छेज्ज सधणो आगमिस्सति ॥ ८१४ ॥
 धंघं च परिपुच्छेज्ज णत्थि धंधो त्ति गिहिसे । वद्धस्स मोक्खं पुच्छेज्ज मोक्खं तस्स वियागरे ॥ ८१५ ॥
 मयं च परिपुच्छेज्ज भयो णत्थि त्ति गिहिसे । खेमं च परिपुच्छेज्ज खेममत्थि त्ति गिहिसे ॥ ८१६ ॥
 संधिं वा परिपुच्छेज्ज अत्थि संधि त्ति गिहिसे । विगहं परिपुच्छेज्ज णत्थि सेवं वियागरे ॥ ८१७ ॥
 जयं च परिपुच्छेज्ज जयो अत्थि त्ति गिहिसे । आरोगं परिपुच्छेज्ज आरोगमिति गिहिसे ॥ ८१८ ॥
 रोगं च परिपुच्छेज्ज णत्थि रोगो त्ति गिहिसे । मरणं च जति पुच्छेज्ज णत्थि सेवं वियागरे ॥ ८१९ ॥
 जीविदं परिपुच्छेज्ज अत्थि सेवं वियागरे । आवाधितं च पुच्छेज्ज समुट्ठणंऽस गिहिसे ॥ ८२० ॥
 अणावुट्ठिं च पुच्छेज्ज णत्थि सेवं वियागरे । यस्सारत्तं च पुच्छेज्ज मज्झिमो त्ति वियागरे ॥ ८२१ ॥
 अपातयं च पुच्छेज्ज णत्थि सेवं वियागरे । वासं च परिपुच्छेज्ज मज्झिमं वासमादिसे ॥ ८२२ ॥
 कथा वासं ति वा वूया संधीदिवसेसु गिहिसे । दिवा रत्तिं ति वा वूया संझाकाले त्ति गिहिसे ॥ ८२३ ॥
 सस्सस्स वापदं पुच्छे णत्थि सेवं वियागरे । सस्सस्स संपयं पुच्छे मज्झिमा सस्ससंपदा ॥ ८२४ ॥
 णट्ठं च परिपुच्छेज्ज लामं तस्स वियागरे । णट्ठमाधारयिचा य वाहिरब्भंतरं वदे ॥ ८२५ ॥
 अब्भंतरं ति यज्जं ति वाहिरब्भंतरं वदे । धणं धणं ति पुच्छेज्ज मज्झिमं ति वियागरे ॥ ८२६ ॥
 जं किंचि पसत्तं तं सव्वमत्थि त्ति गिहिसे । अप्पसत्तं च जं किंचि सव्वं पत्थि त्ति गिहिसे ॥ ८२७ ॥
 सपा खेत्तं तथा पत्थुं रगगं दंढं मणिं तथा । सव्वं सज्जीव-निज्जीवं मग्गान्तमत्थि य ॥ ८२८ ॥

वत्यमाभरणं मंडं अंतपुरवरं जणं । रुमं मणिं रयणं मज्जागममत्थि य ॥ ८२९ ॥

एवमेवं विभावित्ता णिहिसे अंगार्चित्तो । समे सदे य जाणेज्जा वाहिरम्भंतरा हि जे ॥ ८३० ॥

वाहिरम्भंतरा सदा समुदीरंति मित्तका । अम्भंतरा बहुला वाहिरम्भंतरा तु ते ॥ ८३१ ॥

णक्खत्तसे देयते यावि तथा णक्खत्तदेवते । पुप्फे फले व देसे वा णगरे गाम गिहे वि वा ॥ ८३२ ॥

पुरिसे चतुण्णदे चेव पक्खिस्सिम्मि उदुकेचरे । कीडे किविहणे यावि परिसप्पे त्थेव य ॥ ८३३ ॥

पाणे वा भोग्गणे वा वि वत्ये आमरणे तथा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणे तथा ॥ ८३४ ॥

लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेषु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेषु य ॥ ८३५ ॥

एतम्मि पेक्खितामासे सदे रूवे त्थेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो वूयांगर्चित्तो ॥ ८३६ ॥

॥ वाहिरम्भंतराणि ॥ १४ ॥ छ ॥

10

[१५ पण्णासं अम्भंतरवाहिराणि]

अम्भंतराणि सेवित्ता वाहिराणि णिसेवति । अम्भंतरवज्झा ते सव्वत्ये ण पसस्सते ॥ ८३७ ॥

एताणि आमसं पुच्छे अत्यलामं जयं तथा । जं किंचि पसत्थं तं सव्वं णत्थि त्ति णिहिसे ॥ ८३८ ॥

पुरिसं च परिपुच्छेज्ज अधण्णो दूमगो त्ति य । असिद्धत्यो त्ति तं वूया अम्भंतरवाहियो ॥ ८३९ ॥

इत्थि वा परिपुच्छेज्ज अधण्णा दूमग त्ति य । असिद्धत्य त्ति तं वूया अम्भितरवाहिया ॥ ८४० ॥

पुरिसत्वविधं पुच्छे षडे अम्भितरवाहिरं । थिया अत्यविधं पुच्छे अम्भितरवाहिरं षडे ॥ ८४१ ॥

कण्णामवि असिद्धत्या अधण्णा दूमग त्ति य । ~~अम्भितरवज्झस्स~~ खिणं विज्जहिण त्ति य ॥ ८४२ ॥ ~~अम्भितरवज्झस्स~~

कम्मं च परिपुच्छेज्ज अम्भितरवाहिरं षडे । पट्टिहारि संबिवालं वा अम्भितरवाहिरमेव य ॥ ८४३ ॥

पयासे पुच्छते अत्थि पोसिते य णित्त्यगो । धंधो य पुच्छते णत्थि वद्धो खिणं मुञ्चति ॥ ८४४ ॥

मयं अत्थि त्ति वा वूया णत्थि खेमं ति पुच्छते । संधिं पुच्छे णं भवति विग्गहो य णित्त्यगो ॥ ८४५ ॥

औरोगो यत्थ्य ण भवे रोगं मरणं च णिहिसे । णत्थि त्ति जीवियं वूया ण समुद्धेति आतुपो ॥ ८४६ ॥

अपाववमणावुद्धिं सस्सवापत्तिमेव य । णत्थि त्ति णिहिसे सव्वं णट्ठं वत्ये ण दीसति ॥ ८४७ ॥

वत्सात्तं च वासं च णट्ठस्स य ण दंसणं । तथा खेत्तं तथा वत्थुं सव्वं णत्थि त्ति णिहिसे ॥ ८४८ ॥

अम्भंतरं ति षड्धं ति अम्भितरवाहिरं षडे । धणं धणं च पुच्छेज्ज अधण्णमिति णिहिसे ॥ ८४९ ॥

जं किंचि पसत्थं तं सव्वं णत्थि त्ति णिहिसे । अप्पसत्थं च जं किंचि सव्वमत्थि त्ति णिहिसे ॥ ८५० ॥

अम्भितरवाहिरका सदा सुंतति मित्तसा । अम्भितरवट्टिका ते तु अम्भितरवाहिया भवे ॥ ८५१ ॥

आदिषे चेव णक्खत्तसे यामित्से देयतेसु य । तित्थे पुप्फे फले देसे णगरे गाम गिहेसु य ॥ ८५२ ॥

पुरसे चतुण्णदे यावि पक्खिस्सिम्मि उदुगेचरे । कीडे किविहण यावि परिसप्पे त्थेव य ॥ ८५३ ॥

पाणे वा भोग्गणे वा वि वत्ये आमरणे तथा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणेषु य ॥ ८५४ ॥

लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेषु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेषु य ॥ ८५५ ॥

एतम्मि पेक्खितामासे सदे रूवे त्थेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो वूयांगर्चित्तो ॥ ८५६ ॥

॥ अम्भितरवाहिराणि सम्मत्तारं ॥ १५ ॥ छ ॥

१ एत्थिधम्मसुत्तारं १० त० एतास्सि ॥ २ ण या वूया दिग्गहो णि० । ण [.....] विग्गहो ३ १५० ॥ ३ अरोगो ४० त० ॥ ४ भूतंति ४० त० ॥ ५ त्थि पुप्फे ४० त० विना ॥

- कम्मं च परिपुच्छेज्ज वत्तणीपालमगियं । तुंवरस मगिन्तं वा वि तथा वाहिरुंविं ॥ ८८३ ॥
 पवासं परिपुच्छेज्ज अफ्लो त्ति वियागरे । पउत्थं परिपुच्छेज्ज परओ सो गमिस्सति ॥ ८८४ ॥
 बंधं च परिपुच्छेज्ज गित्थं वंधमादिसे । बद्धसस मोकरं पुच्छेज्ज मोकरो तस्स पवासणे ॥ ८८५ ॥
 भयं पुच्छे भयं भवति खेमं पुच्छे ण होहिति । संधिं पुच्छे ण भवति विग्गद्धे य गिरस्सणे ॥ ८८६ ॥
 ८ जयं पुच्छे ण भवति आरोगो वि ण होहिति । रोगं च मरणं चैव अत्थि चैवं वियागरे ॥ ८८७ ॥
 जीवितं परिपुच्छेज्ज गत्थि चैवं वियागरे । आवाधितं च पुच्छेज्ज मतप्पाओ मतो त्ति वा ॥ ८८८ ॥
 अपातयमणावुट्ठिं सस्सवापत्तिमेय य । अप्पसरथं च जं किंचि सव्वमत्थि त्ति गिदिसे ॥ ८८९ ॥
 वस्सारतं च पासं च सब्बं णट्ठस दंसणं । तथा खेतं तथा वरुं सब्बं गत्थि त्ति गिदिसे ॥ ८९० ॥
 धणं घणं ति पुच्छेज्ज अधणं ति वियागरे । समे सदे तु जाणेज्जो जे तु वाहिरवाहिरा ॥ ८९१ ॥
 १० तथा णिच्छुद्धणिच्छुद्धं तथा णिग्गतणिग्गतं । तथा णीहारणीहारे तथा गतगते त्ति वा ॥ ८९२ ॥
 [तथा] क्खंणवणं च त्ति अहवीअद्वि त्ति वा । परतो-परतो व त्ति परंपरगतो त्ति वा ॥ ८९३ ॥
 वज्झं वज्झं ति वा वृया तथा वाहिरवाहिरं । एते उच्चा समा सदा जे तु वाहिरवाहिरा ॥ ८९४ ॥
 वज्झमंडलचारिम्मि णक्खत्ते देवते तथा । पुप्फे फले व देसे वा णगरे गाम गिद्धे वि वा ॥ ८९५ ॥
 १५ पुरिसे चतुप्पदे वा वि पक्खिम्मि उद्दगेचरे । कीढे क्खिविद्धो वा वि परिसप्पे तथेय य ॥ ८९६ ॥
 पाणे वा भोगे वा वि वत्थमारणे तथा । आसणे सण्णे जाणे भंठोवरणे तथा ॥ ८९७ ॥
 छोद्देसु वावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेसु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वघण्ण-घणेसु य ॥ ८९८ ॥
 एत्थिम्मि पेक्खित्तामासे सदे रूपे तथेय य । सव्वमेवाणुगंतुं ततो धूपांघित्तो ॥ ८९९ ॥

॥ वाहिरवाहिराणि सम्मत्ताणि ॥ १७ छ ॥

[१८ पण्णासं ओवाताणि]

- २० ओवाताणि पण्णासं पक्कमान्णुपुब्बसो । अचमंतराणि सव्वाणि उमट्ठाणि जता भवे ॥ ९०० ॥
 एवाणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तथा । जं किंचि पसत्थं तं सव्वमत्थि त्ति गिदिसे ॥ ९०१ ॥
 पुरिसं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्थो सुभगो त्ति य । धणो य सुद्धभागी य पुरिसोऽयमिति गिदिसे ॥ ९०२ ॥
 इत्थि च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग त्ति य । धण्णा य सुद्धभागी य इत्थिपमिति गिदिसे ॥ ९०३ ॥
 कण्णं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग त्ति य । ओवातकत्त पुरिसस कण्णा विज्जिहित्ति त्ति य ॥ ९०४ ॥
 २५ जं किंचि पसत्थं सा सव्वमत्थि त्ति गिदिसे । अप्पसत्थं च जं किंचि सब्बं गत्थि त्ति गिदिसे ॥ ९०५ ॥
 कम्मं च परिपुच्छेज्ज सुद्धकम्मं वियागरे । उँहायको कंसिको वा सुद्धकारी य होक्खति ॥ ९०६ ॥
 ऊपामयं ति वा वृया ओवातो त्ति संसि त्ति वा । सेतं ति पंडरं य त्ति विमलं णिम्मलं ति वा ॥ ९०७ ॥
 सुद्धं ति वाऽतिविमुद्धं ति तथा त्तिमिरं ति वा । सप्पमं सुचिमं ति त्ति पित्तकं ति पीतकं ॥ ९०८ ॥
 पउमकेसरवणं ति तिग्गिच्छत्तरिसं ति वा । कोरेंटं चंपको य त्ति कणिकार अत्तिवं ति वा ॥ ९०९ ॥
 ३० जं चऽण्णं पीतकं गिद्धं जं वा वि रजतप्पमं । तेसं संक्खित्तण्णसद्धा ओवातोहि समा भवे ॥ ९१० ॥
 जथा अचमंतरे सुत्तं सब्बं दिद्धं सुभा-ऽसुभं । तथोवातेसु सव्वेसु फलं वृया सुभा-ऽसुभं ॥ ९११ ॥
 तथोवातम्मि णक्खत्ते देवते पणिधिम्मि य । पुप्फे फले व देसे वा णगरे गाम गिद्धे ति वा ९१२ ॥

पुरिसे चतुप्पदे वा वि पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किविल्लके यावि परिसप्पे तथेव य ॥ ९१३ ॥
पाणे वा भोयणे वा [वि] वत्थे आभरणे तथा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणे तथा ॥ ९१४ ॥
लोहेसु यावि सब्वेसु सब्वेसु रयणेसु त । मणीसु यावि सब्वेसु सब्वघण्ण-धणेसु य ॥ ९१५ ॥
एतम्मि पेक्खियामासे सदे रूवे तथेव य । सब्वमेवाणुंगंतुं ततो ब्रूयांगंचित्तओ ॥ ९१६ ॥

॥ ओवाताणि सम्मत्ताणि ॥ १८ ॥ छ ॥

5

[१९ पण्णासं सामोवाताणि]

सामोवाताणि पण्णासं जाणि अब्भंतराणि तु । अवत्थिताणि सब्वाणि सब्वात्थेसु पसरसते ॥ ९१७ ॥
एताणि आमसं पुच्छे अत्थलामं जयं तथा । जं किंचि पसत्थं सा सब्वमत्थि च्चि णिदिसे ॥ ९१८ ॥
पुरिसं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्थो सुभगो च्चि य । धण्णो य सुहभागी य पुरित्तोऽयमिति णिदिसे ॥ ९१९ ॥
इत्थि च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग च्चि य । धण्णा य सुहभागी य इत्थीयमिति णिदिसे ॥ ९२० ॥
कण्णं च परिपुच्छेज्ज धण्णा विज्जिहिते लहुं । वण्णं च परिपुच्छेज्ज सामोवातं वियागरे ॥ ९२१ ॥
जं किंचि पसत्थं तं सब्वमत्थि च्चि णिदिसे । अप्पसत्थं च जं किंचि सब्बं गत्थि च्चि णिदिसे ॥ ९२२ ॥
अब्भंतरेसु सब्वेसु जथा दिदं सुभा-ऽसुभं । सामोवातेसु वि तहा फलं ब्रूया सुभा-ऽसुभं ॥ ९२३ ॥
कम्मं च परिपुच्छेज्ज तत्थ अब्भंतरं वदे । दीविकाधारकं वा वि ॥ ९२४ ॥

10

उज्जालकं वा जाणेज्जा जं चऽण्णं एरिसं भवे । कम्मपुच्छाय णिदेसे एवमादि फलं वैदे ॥ ९२५ ॥
सुंदंसुतसामं आमं अरुणाभमरुणं ति वा । अरुणस्स देसकालो च्चि अरुणे उन्नते च्चि वा ॥ ९२६ ॥
अरुणोदये च्चि वा ब्रूया अरुणो उदितो च्चि वा । एते उत्ता समा सदा सामोवाता भवंति जे ॥ ९२७ ॥
सामोवातम्मि णक्खत्ते देवते पणिविम्मि य । पुत्थे फले व देसे वा णगरे गाम-गिहेसु वा ॥ ९२८ ॥

15

पुरिसे चतुप्पदे यावि पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किविल्लगे यावि परिसप्पे तथेव य ॥ ९२९ ॥
पाणे वा भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तथा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणे तथा ॥ ९३० ॥
लोहेसु यावि सब्वेसु सब्वेसु रतणेसु य । मणीसु यावि सब्वेसु सब्वघण्ण-धणेसु य ॥ ९३१ ॥
एतम्मि पेक्खियामासे सदे रूवे तथेव य । सब्वमेवाणुंगंतुं ततो ब्रूयांगंचित्ततो ॥ ९३२ ॥

20

॥ स(सा)मोवाताणि सम्मत्ताणि ॥ १९ ॥ छ ॥

[२० पण्णासं सामाणि]

बाहिरब्भंतरा सब्वे साम चेयं वियागरे । तेसु अत्थं च वद्धिं च सुहं लामं च णिदिसे ॥ ९३३ ॥
पुरिसं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्थो सुभगो च्चि य । इत्थि च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग च्चि य ॥ ९३४ ॥
कण्णं च परिपुच्छेज्ज धण्णा विज्जिहिते लहुं । वण्णं च परिपुच्छेज्ज सामा तत्थ वियागरे ॥ ९३५ ॥
दीविकाहारिका णावा तथा पादीविकं पि वा । उज्जालकं कावकं गितकारिं च णिदिसे ॥ ९३६ ॥
ताणि धम्मवण्णानि सब्वाणिव करिस्सति । सब्वभंडेसु कुसलो णट्ठको वा वि होक्खति ॥ ९३७ ॥
अगिक्को जाणको वा वि आजीवणिको तथा । कम्मपुच्छाय णिदेसे एवमादि फलं वैदे ॥ ९३८ ॥
सामं गीतं ति वा ब्रूया अधया गीत-वाइतं । गाअको गाणकं व च्चि गीतकं मयुरं ति वा ९३९ ॥
हुंतासिणा सिहा व च्चि तथा अग्गिसिह च्चि वा । तथा दीवसिहा व च्चि ओदीवसिह च्चि वा ॥ ९४० ॥

25

30

दीविगाय सिहा व त्ति चुडिलीय सिहि त्ति वा । एते उत्ता समा सदा मज्झं एतेसु णिहिसे ॥ ९४१ ॥

तथा सामम्मि णक्खत्ते देवते पणिधिमि य । पुप्फे फले व देसे वा णरे गाम-गिहेसु वा ॥ ९४२ ॥

पुरिसे चतुपदे यावि पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किविह्णके यावि परिसप्पे तथेव य ॥ ९४३ ॥

पाणे वा भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तथा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणे तथा ॥ ९४४ ॥

लोहेसु यावि सब्बेसु सब्बेसु रयणेसु य । मणीसु यावि सब्बेसु सब्बधण्ण-धणेसु य ॥ ९४५ ॥

एतम्मि पेक्खित्तामासे सदे रूवे तथेव य । सब्बमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगर्धितओ ॥ ९४६ ॥

॥ सामाणि समत्ताणि ॥ २० ॥ छ ॥

[२१-२२ पण्णासं सामकण्हाणि कण्हाणि य]

पण्णासं सामकण्हाणि बाहिराणि वियागरे । समप्फलाणि बंज्जेहिं पसत्थेण प्पसत्सति ॥ ९४७ ॥

जाणेव ब्रज्जवज्जाणि ताणि कण्हाणि णिहिसे । अप्पसत्थाणि सब्बाणि सब्बत्थेसु वियागरे ॥ ९४८ ॥

पुरिसं च परिपुच्छेज्ज अधण्णो दूमो त्ति य । इत्थि च परिपुच्छेज्ज अधण्णा दूमग त्ति य ॥ ९४९ ॥

कण्णामवि य सिद्धत्था अधण्णा दूमग त्ति य । वण्णं च परिपुच्छेज्ज कालको त्ति वियागरे ॥ ९५० ॥

कम्मं च परिपुच्छेज्ज इमं कम्मं वियागरे । णीलीकारकं वा वि तथा इंगालकारकं ॥ ९५१ ॥

णीलहारककम्मं वा तथा इंगालहारकं । णीलवाणियकं वा वि तथा इंगालवाणियं ॥ ९५२ ॥

अप्पसत्थं च जं किंचि सब्बमत्थि त्ति णिहिसे । जं किंचि पसत्थं तं सेव्वं णत्थि त्ति णिहिसे ॥ ९५३ ॥

जघा तु धज्जवज्जेसु सब्बं दिट्ठं सुभासुभं । तथेव कण्हेसु वदे फलं सब्बं सुभासुभं ॥ ९५४ ॥

कण्हं णीलं ति वा धूया कालकं असितं ति वा । असितं किसिणं व त्ति हरितं ति व जो वदे ॥ ९५५ ॥

अज्जणं कज्जलं व त्ति रूग्गं भंगसुत्तमं । खंजणं भिग्गपत्तं ति गवलं ति व जो वदे ॥ ९५६ ॥

सूरर त्ति कोकिला व त्ति गोपेच्छेळको त्ति वा । भमरो मोरकंडो त्ति वायसो त्ति व जो वदे ॥ ९५७ ॥

मातंगो त्ति र्भत्तिगो त्ति गयो त्ति महिसो त्ति वा । बलाहको त्ति मेघो त्ति तथा जलहरो त्ति वा ॥ ९५८ ॥

तथा कण्हकरालो त्ति कण्हतुलसि त्ति वा पुण । बाणं णीलुप्पलं व त्ति पामेच्छा णेलकंठेको ॥ ९५९ ॥

मसी आरिट्ठको व त्ति कण्हालो कण्हमोयको । जे यण्णे पयमादीया सदा कण्हसमा भवे ॥ ९६० ॥

णक्खत्ते देवते यावि तथा णक्खत्तदेवते । पुप्फे फले व देसे वा णरे गाम गिहे वि वा ॥ ९६१ ॥

पुरिसे चतुपदे यावि पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किविह्णके यावि परिसप्पे तथेव य ॥ ९६२ ॥

पाणे वा भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तथा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणे तथा ॥ ९६३ ॥

लोहेसु यावि सब्बेसु सब्बेसु रयणेसु य । मणीसु यावि सब्बेसु सब्बधण्ण-धणेसु य ॥ ९६४ ॥

एतम्मि पेक्खित्तामासे सदे रूवे तथेव य । सब्बमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगर्धितओ ॥ ९६५ ॥

॥ सामकण्हाणि < कण्हाणि > [य] ॥ २१ ॥ २२ ॥ छ ॥

[“पण्णासं अज्जोआताणि २३ पण्णासं अतिकण्हाणि २४” इति द्वारद्वयव्याख्यानं सर्वोत्सधि प्रतिपु नास्ति ।]

१ रूज्जेहिं हं त० ॥ २ सच्चमत्थि हं त० विना ॥ ३ भगर्णं हं त० विना ॥ ४ भिगणवत्तिं ति हं त० ॥
५ गोपेच्छेळको त्ति हं त० ॥ ६ सुत्तिगो हं त० ॥ ७ कंटको च १ पु० ॥ ८ सामकण्हाणि सम्मत्ताणि वि० ॥
९ < > पत्तायान्तगतः पाठः हं त० नास्ति ॥

[२५ वीसर्ति उत्तमाणि]

वीसर्ति उत्तमाणिगे पवक्खामऽणुपुव्वसो । मत्थको १ सीस २ संखा य ४ णिडाळं ५ कण्णपुत्तका ७ ॥ ९६६ ॥

कण्णा ९ गंडो ११ द्द १३ दंता य १४ णासा १५ णासपुडा तथा १६ ।

कणवीरका १८ अंपंगा य २० वीसर्ति हौति उत्तमा ॥ ९६७ ॥

एताणि आमसं पुच्छे अत्थलामं जयं तथा । जं च किंचि पत्तयं सा उत्तमं ति वियागरे ॥ ९६८ ॥

पुरसं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्थो सुभगो त्ति य । धण्णो य सुहंभागी य उत्तमो त्ति वियागरे ॥ ९६९ ॥

इत्थि च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग त्ति य । धण्णा य सुहंभागी य उत्तम त्ति वियागरे ॥ ९७० ॥

[पुरिसस्सऽत्थविधं पुच्छे उत्तमं ति वियागरे] । धिया अत्थविधं पुच्छे उत्तमं ति वियागरे ॥ ९७१ ॥

कण्णं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग त्ति य । पुरिसस्स जुत्तामासायं कण्णा विज्जिहिते त्ति य ॥ ९७२ ॥

गव्भं च परिपुच्छेज्ज अत्थि गव्भो त्ति णिदिसे । गव्भिणी परिपुच्छेज्ज उत्तमं पुत्तमादिसे ॥ ९७३ ॥

कम्मं च परिपुच्छेज्ज उत्तमं कम्ममादिसे । राया वा रायमच्चो वा वित्तीतोसं करिस्सति ॥ ९७४ ॥

पवासं परिपुच्छेज्ज सफ़लो त्ति वियागरे । पडत्थं परिपुच्छेज्ज सधणो आगमिस्सति ॥ ९७५ ॥

दंयं च परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । वद्धस्स मोक्खं पुच्छेज्ज मोक्खं थाणं च णिदिसे ॥ ९७६ ॥

भयं च परिपुच्छेज्ज भयं णत्थि त्ति णिदिसे । खेमं च परिपुच्छेज्ज उत्तमं खेममादिसे ॥ ९७७ ॥

संधिं च परिपुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे । विगाहं परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे ॥ ९७८ ॥

जयं च परिपुच्छेज्ज उत्तमं जयमादिसे । आरोगं परिपुच्छेज्ज उत्तमं ति वियागरे ॥ ९७९ ॥

रोगं च परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । पुच्छिस्से उत्तमं जीयं अकालस्स य उगमं ॥ ९८० ॥

अपातयमणावुद्धिं सस्सवापत्तिमेय य । अप्पसत्थं च जं किंचि सव्वं णत्थि त्ति णिदिसे ॥ ९८१ ॥

वत्सारत्तं च वासं च सत्सं णट्ठस्स दंसणं । खेत्तं वत्थुं धणं धणं पसत्थं सव्वमैत्थि य ॥ ९८२ ॥

धणं धणं ति पुच्छेज्ज धणं ति य वियागरे । समे सदे य जाणेज्जो उत्तमा जे भवंतिह ॥ ९८३ ॥

उत्तमं ति य जो बूया तधुत्तमत्तरं ति वा । तधुत्तिमुत्तमं वा वि उत्तमा उत्तमं ति वा ॥ ९८४ ॥

पवरं ति य जो बूया तथा पवरत्तरं ति वा । पवराणं पवरं ध त्ति पवरात्तिपवरं ति वा ॥ ९८५ ॥

विसिद्धं ति य जो बूया विसिद्धत्तरकं ति वा । तं विसिद्धं विसिद्धं ति विसिद्धत्तरकं ति वा ॥ ९८६ ॥

वरिद्धं ति य जो बूया वरिद्धत्तरकं ति वा । तं वरिद्धं वरिद्धं ति वरिद्धत्तरकं ति वा ॥ ९८७ ॥

उदारं ति य जो बूया उदारत्तरकं ति वा । तंधुदारसुदारं ति उदारपवरं ति वा ॥ ९८८ ॥

पधाणं ति य जो बूया पधाणत्तरकं ति वा । तं पधाणपधाणं ति पधाणपवरं ति वा ॥ ९८९ ॥

जेट्ठं ति य जो बूया तथा जेट्ठत्तरं ति वा । तथा जेट्ठात्तिजेट्ठं वा जेट्ठाणं जेट्ठकं ति वा ॥ ९९० ॥

उक्कुट्टं ति य जो बूया उक्कुट्टत्तरकं ति वा । तथा उक्कुट्टसुक्कुट्टं समा सदा उ उत्तमा ॥ ९९१ ॥

उत्तमम्मि य णक्खत्ते देवते पणिधिम्मि य । पुप्फे फले वा देसे वा णारे गांमे गिहे वि वा ॥ ९९२ ॥

पुरिसे चतुप्पदे वा वि पक्खिम्मि उदगोचरे । कीडे किबिहगे यावि परिस्सप्पे तथेय य ॥ ९९३ ॥

पाणे वा भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तथा । आसणे सयणे जाणे भंडोद्यगरे तथा ॥ ९९४ ॥

लोद्वेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रतणेषु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेषु य ॥ ९९५ ॥

एतम्मि पेक्खितामासे सदे रूवे तथेय य । सव्वमेवाणुगंणूं ततो भूयांगचित्तजो ॥ ९९६ ॥

॥ उत्तमाणि ॥ २५ ॥ छ ॥

१-२ सुभमागी हं० त० ॥ ३ एतत्तर्षादं प्रतिपु नात्ति ॥ ४ गीयं हं० त० ॥ ५ ०मादि य हं० त० ॥ ६-७ विसिद्धत्तरकं हं० त० विना ॥ ८-९ वरिद्धत्तरकं हं० त० विना ॥ १० पधाणत्तरकं हं० त० विना ॥ ११ जेट्ठत्तरं हं० त० विना ॥ १२ उक्कुट्टत्तरकं हं० त० विना ॥

[२६ चोद्दस मज्झिमाणि]

मज्झिमाणि पक्खित्तं चोदसंगे जथा तथा । जत्तु १ धणंतर २ हिययं ३ उदरं वा वि जाणिया ४ ॥ १९७ ॥
अंसा ६ वाहू ८ पधाहू य १० हत्या १२ हत्यतला तथा १४ । चोदसेताणि जाणीया मज्झिमत्ये पसस्तते ॥ १९८ ॥

एताणि आमसं पुच्छे अत्यलाभं जयं तथा । जं च किंचि पसत्यं सा मज्झिमत्यं वियागरे ॥ १९९ ॥

पुरिसं इत्थिं च अत्यं च कण्णं गन्धं च गन्धिभिणि । कम्मं पवासं पावासिं वंधं मोक्खं भया-उभयं ॥ १०० ॥
संधिं जयमारोगं जीवितं आतुरं खमं । वासारत्तं च वासं च सस्सं णट्टस्स दंसणं ॥ १००१ ॥

खेतं वत्थुं मार्णि दंडं छत्तं रागं तथेव य । जं किंचि पसत्यं सा मज्झिमं ति वियागरे ॥ १००२ ॥

अपातपमणावुद्धिं सस्सवापत्तिमेव य । अप्पसत्यं च जं किंचि सत्थं णत्थि ति णिदिसे ॥ १००३ ॥

धणं घणं ति पुच्छेज्जा मज्झिमं ति वियागरे । समे सदे य जाणेज्जो मज्झिमा जे भवतिह ॥ १००४ ॥

बंधित्ता मज्झिमा अंगे जे सदा तेसु कित्तिया । एतेसु वि तथा चेव मज्झिमेसु वियागरे ॥ १००५ ॥

णक्खत्ते मज्झजोगम्मि देवते पणिधिम्मि य । पुप्फे फले व देसे वा णगरे गामे गिहे वि वा ॥ १००६ ॥

पुरिसे चतुप्पदे चेव पक्खिम्मि उदकेचरे । कीडे किचिद्धये वा वि परिसप्पे तथेव य ॥ १००७ ॥

पाणे वा भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तथा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणे तथा ॥ १००८ ॥

लोहेसु यावि सन्धेसु सन्धेसु रयणेषु य । मणीसु यावि सन्धेसु सन्धघण्ण-धणेषु य ॥ १००९ ॥

एतम्मि पेक्खियामासे सदे रूवे तथेव य । सन्धमेवाणुगंतूणं ततो धूयांगचित्तओ ॥ १०१० ॥

॥ मज्झिमाणि ॥ २६ ॥ छ ॥

[२७ चोद्दस मज्झिमाणंतराणि]

मज्झिमाणं तु पडिबक्खा मज्झिमाणंतराणिह । उत्तमे अप्पसत्थाणि मज्झिमत्ये पसस्तते ॥ १०११ ॥

कडी कडियपस्ताणि वत्थी सीसं समेदणं ।

वसणा ऊरु य जंघा य मज्झिमाणंतराणिह ॥ १०१२ ॥

मज्झिमेसु जथा दिट्ठो अत्यो तत्तो अर्णतरं । मज्झिमाणंतराणं पि फलं बूया सुभासुमं ॥ १०१३ ॥

जे सदा मज्झिमा उत्ता तेसिं साराणुमायिकं । मज्झिमाणंतराणं पि समे सदे तु कप्पये ॥ १०१४ ॥

॥ मज्झिमाणंतराणि ॥ २७ ॥ छ ॥

[२८ दस जहण्णाणि]

अंगुट्ठा २ पादपण्हीओ ४ जंघा ६ गुप्फा तथेव य ८ । दसेताणि जहण्णाणि पौदाणि ९ हितयाणि या १० १०१५ ।

एताणि आमसं पुच्छे अत्यलाभं जयं तथा । जं च किंचि पसत्यं सा जहण्णं सब्बमादिसे ॥ १०१६ ॥

पुरिसं इत्थिं च अत्यं च कण्णं गन्धं च गन्धिभिणि । कम्मं पवासं पावासिं वंध-मोक्खं भया-उभयं ॥ १०१७ ॥

संधिं च निग्गहं चेव पेस्सं जय-पराजयं । रोगा-उरोगं च मरणं च जीवितं थापितं तथा ॥ १०१८ ॥

यस्सारत्तमणावुद्धिं वासं वा वि अपातपं । सस्मस्स वापरिं संपदिं च णट्टस्स दंसणं ॥ १०१९ ॥

खेतं वत्थुं मार्णि दंडं खेमं चम्मं सयममंगं । घणं धणं च छायं व जं च उण्णं सब्बमादिसे ॥ १०२० ॥

जं किंचि पसत्यं सा मत्थं णत्थि ति णिदिसे । अप्पसत्यं च जं किंचि सत्थं अत्थि ति णिदिसे ॥ १०२१ ॥

१ परिष्ठा मज्झिमा अण्णे जे ६० त० ॥ २ पादाणा (णी) हि० ति० विना ॥ ३ रागघम्मस्सयस्सर्गं सं ३ पु० ।
४ रागघम्मस्सयस्सर्गं ६० त० । ५ रागघम्मस्सयस्सर्गं ति० ॥ ६ च जातं च सं ३ पु० ॥

धणं धणं ति पुच्छेज्ज 'अधणं ति वियागरे' । समे सदे य जाणेज्जो जहण्णा जे भवंतिह ॥ १०२२ ॥
 जहणं ति चेव जे वूया जहण्णतरकं ति वा । जहणं ति जहणं ति जहणं कुच्छित्तं ति वा ॥ १०२३ ॥
 अधमं ति व जो वूया तथा अधमतरं ति वा । अधमाधमं ति वा वूया अधमाणं अधमं ति वा ॥ १०२४ ॥
 अपमतं ति व जो वूया तथा अपमतरं ति वा । अपमयापमयं ति वा वूया अपमाणतरं ति वा ॥ १०२५ ॥
 हीण ति व जो वूया तथा हीणतरं ति वा । हीणहीणं ति वा वूया हीणहीणतरं ति वा ॥ १०२६ ॥
 थोयं ति व जो वूया तथा थोयतरं ति वा । थोयथोयं ति वा वूया थोयथोयतरं ति वा ॥ १०२७ ॥
 णिकट्टं ति व जो वूया णिकट्टतरकं ति वा । णिकट्टातिणिकट्टं ति तथा णिकट्टणिकट्टमं ॥ १०२८ ॥
 मंगुलं ति व जो वूया तं मंगुलतरं ति वा । अतिमंगुलं ति वा वूया तथा मंगुलमंगुलं ॥ १०२९ ॥
 पावकं ति व जो वूया तथा पावतरं ति वा । अतिपावकं ति वा वूया तथा पावकपावकं ॥ १०३० ॥
 दुगुंछितं ति वा वूया दुगुंछिततरं ति वा । तथा पच्चवरं व त्ति अतिपच्चवरं ति वा ॥ १०३१ ॥
 जं चऽण्ण एवमादीयं जहणं परिकित्तं । तेसं संकित्तणा सदा चघण्णसमफाऽऽहिया ॥ १०३२ ॥
 अप्पावसेसे णक्खत्ते देवते पणिधिम्मि य । पुप्फे फले व देसे वा णगरे गामे गिहे वि वा ॥ १०३३ ॥
 पुरिसे चतुप्पदे चेव पक्खिम्मि उदगेचरे । कीढे किविहगे वा वि परिसप्पे तथेव थ ॥ १०३४ ॥
 पाणे वा भोग्ये वा वि बत्थे आभरणे तथा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणे तथा ॥ १०३५ ॥
 लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेषु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेषु य ॥ १०३६ ॥
 एतम्मि पेक्खियामासे सदे रूवे तथेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो धूयांगचित्तो ॥ १०३७ ॥

॥ जहण्णाणि ॥ २८ ॥ छ ॥

[२९ दुवे उत्तिममज्झिमसाधारणाणि]

मज्झिमाणुत्तमाणं च मज्जे साधारणाणि तु । जंतूणि वे वियाणीया उत्तरथे पसस्सते ॥ १०३८ ॥
 एताणि आमसं पुच्छे अत्यलमं जयं तथा । जं किंचि पसत्यं सा सव्वं साधारणं वदे ॥ १०३९ ॥
 पुरिसं च इत्थि अत्यं च धणं धणं तथेव थ । कण्णं च परिपुच्छेज्ज सव्वं साधारणं वदे ॥ १०४० ॥
 गळ्मं च परिपुच्छेज्जा अत्थि गळ्मो त्ति णिहिसे । गळ्मिणिं परिपुच्छेज्ज जमलाणि प्पयाहिति ॥ १०४१ ॥
 कम्मं साधारणं वूया बंधं णत्थि त्ति णिहिसे । चिराय मुच्चते वद्धो भयं खेमं च मिस्सकं ॥ १०४२ ॥
 संधिं अत्थि त्ति जाणीया विग्गहो णत्थि दासुणो । जया-ऽऽरोगं च रोगं च सव्वं साधारणं वदे ॥ १०४३ ॥
 भरणं च अणाहुत्ति आययं सत्सवापदं । अप्पसत्यं च जं किंचि सव्वमत्थि त्ति णिहिसे ॥ १०४४ ॥
 जीवितं बंध-मोक्खं च वत्सारत्तं सवासकं । सत्सं च नट्टलमं च सव्वं साधारणं वदे ॥ १०४५ ॥
 खेतं वत्थुं धणं धणं दंमं चम्मं सयम्मकं । छत्तं दंढं मणिं वत्थं सव्वं साधारणं वदे ॥ १०४६ ॥
 जं किंचि पसत्यं सा सव्वमत्थि त्ति णिहिसे । अप्पसत्यं च जं किंचि सव्वं णत्थि त्ति णिहिसे ॥ १०४७ ॥
 धणं धणं ति पुच्छेज्जा सव्वं साधारणं वदे । समे सदे य जाणीया अंगे साधारणा तु जे ॥ १०४८ ॥
 जे सदा उत्तमा वुत्ता मज्झिमा जे उदाहिता । ते धामिस्सा उदीरता साधारणसमा भवे ॥ १०४९ ॥

१ अधणं हं० त० विना ॥ २ अप्पमाणंतरं हं० त० ॥ ३-४ हीणतरं हं० त० ॥ ५ थोयतरं ति त्थं० ॥ ६ थोयतरं हं० त० विना ॥ ७ थोयथोयं ति हं० त० विना ॥ ८ थोयथोयतरं हं० त० विना ॥ ९ थोयथोयं ति जो सं ३ पु० । थोयथोयतरं जो हं० त० । थोयतरं ति जो ति० ॥ १० णिकट्टतरकं सप्र० ॥ ११ म्मका द्वि ते हं० त० विना ॥ १२ अप्पयसेसे सप्र० ॥ १३ जंतूणि प्पक्खियणीसो उच्चं हं० त० ॥ १४ इत्थिहगंतूणं क्लेक्खितयं हं० त० एव वतते ॥ १५ सव्वं धम्मं च धम्मकं हं० त० ॥

साधारणमि णक्खत्ते देवते पणिधिम्मि य । पुप्फे फले व देसे वा णगरे गामे गिहे वि वा ॥ १०५० ॥
 पुरिसे चतुप्पदे वेध पक्खिम्मि उद्दगेचरे । कीडे किविहये वा वि परिसप्पे तथेय य ॥ १०५१ ॥
 पाणे वा भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तथा । आसणे सयणे जाणे भंडोचगणे तथा ॥ १०५२ ॥
 लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रत्तणेसु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वघण्ण-धणेसु य ॥ १०५३ ॥
 एतमि पेक्खिदामासे सदे रूवे तथेव य । सव्वमेवाणुंगूणं ततो वूयांगचित्तओ ॥ १०५४ ॥

॥ उत्तममञ्जिमसाधारणाणि ॥ २९ ॥ छ ॥

[३० दुवे मञ्जिममञ्जिमसाधारणाणि]

साधारणा तु अंगमि मज्झे मज्झाणमेव तु । ठाणा दुवे पसस्सते सोभनं तेसु णिहिसे ॥ १०५५ ॥
 मञ्जिमाणुत्तमाणं च फळं साधारणं मुभं । मज्जे साधारणाणं पि तमेव फलमादिसे ॥ १०५६ ॥
 जे सदा मञ्जिमा बुत्ता उत्तमाणंतरा य जे । ते यामिस्सा उदीरंता मञ्जिसाधारणे समा ॥ १०५७ ॥
 साधारणमि णक्खत्ते जं चेतसं समुत्तरं । सव्वमेवाणुंगूणं ततो वूयांगचित्तओ ॥ १०५८ ॥

॥ मञ्जिममञ्जिमसाधारणाणि ॥ ३० ॥ छ ॥

[३१ दुवे मञ्जिमाणंतरमञ्जिमसाधारणाणि]

मञ्जिमाणंतराणं च मञ्जिमाणं चं यक्खत्ताणा । मज्जे साधारणा बुत्ता मञ्जिमत्थे पसस्सते ॥ १०५९ ॥
 एतानि आमसं पुच्छे अत्थल्लभं जयं तथा । जं किंचि पसत्थं सा मञ्जिमत्थे पसस्सते ॥ १०६० ॥
 पुरिसं इत्थि च अत्थं वा कणं गच्छं च गच्छिभिं । कम्मं पवासं पावासिं वधं मोक्खं भया-उमयं ॥ १०६१ ॥
 रोगा-उरोगं च मरणं च जीविता धाधिकं तथा । वासारत्तमणावुट्ठिं वासं वा वि अपातपं ॥ १०६२ ॥
 सत्सवापत्ति-संपत्तिं णट्ठं णट्ठम दंसणं । खेत्तं वत्थुं धणं धणं रम्यं चम्मं सयम्मकं ॥ १०६३ ॥
 जंघुदिट्ठमि एतमि पसत्थं जत्थियं भवे । मञ्जिमाणंतरं सव्वं अप्पसत्थं इि णत्थि य ॥ १०६४ ॥
 जे सदा मञ्जिमा बुत्ता मञ्जिमाणंतरा य जे । ते यामिस्सा उदीरंता मञ्जिमाणंतरे समा ॥ १०६५ ॥
 साधारणमि णक्खत्ते जं चेतसं समुत्तरं । तं सव्वमणुंगूणं ततो वूयांगचित्तओ ॥ १०६६ ॥

॥ मञ्जिमाणंतरमञ्जिमसाधारणाणि सम्मत्ताणि ॥ ३१ ॥ छ ॥

[३२ दुवे मञ्जिमाणंतरजहणसाधारणाणि]

मञ्जिमाणंतराणं च जहणणाणं च अंतरा । मज्जे साधारणा बुत्ता गोष्ठा तेसु ण सोमणं ॥ १०६७ ॥
 एतानि आमसं पुच्छे अत्थल्लभं जयं तथा । जं च किंचि पसत्थं सा जहणं सव्वमादिसे ॥ १०६८ ॥
 पुरिमादीकानि बत्थूणि पविताणि तु जाणिह । वाणि खेत्तप्पघाणाणि जहण्णाणि वियागरे ॥ १०६९ ॥
 मञ्जिमाणंतरा सदा जहन्ना जे य कित्थिया । ते यामिस्सा उदीरंता जयन्ना समका भवे ॥ १०७० ॥
 साधारणमि णक्खत्ते देवते पणिधिम्मि य । [पुप्फे फले व देसे वा णगरे गाम गिहे वि वा ॥ १०७१ ॥]
 साधारणमि णक्खत्ते जं चेतसं समुत्तरं । तं सव्वमणुंगूणं ततो वूयांगचित्तओ ॥ १०७२ ॥

॥ मञ्जिमाणंतरजहणसाधारणाणि सम्मत्ताणि ॥ ३२ ॥ छ ॥

[३३ दस बालेयाणि]

पादगुहं २ गुली ४ गोप्फा ६ जंघा ८ पादतलाणि य १० । एते बाला पसस्सते बाला धीणामगेषु य ॥ १०७३ ॥
 एताणि आमसं पुच्छे अत्थलामं जयं तथा । जं च किंचि पसत्थं सा सब्वमत्थि त्ति णिदिसे ॥ १०७४ ॥
 गंढं पुच्छे वदे अत्थि पुण्णामेषु य दारकं । दारिगं इत्थिणामेषु बालेयेसु वियागरे ॥ १०७५ ॥
 जं बालसंसितं चउण्णं सब्वमत्थि त्ति णिदिसे । समे सदे य जाणेज्जो बाला ये समा भवे ॥ १०७६ ॥ 5
 बालको दारको व त्ति [सिंगको पिहको त्ति वा ।] वच्छको तंणको व त्ति < पोतकौ कलमो त्ति वा > १०७७
 बालको त्ति व जो बूया ॥ तहा बालतरो त्ति वा । अतिबालको त्ति वा बूया ॥ तथा बालगबालगो ॥ १०७८ ॥
 दारको त्ति व जो बूया तथा दारगदारगो । अतिदारको त्ति वा बूया दारगस्स य दारगो ॥ १०७९ ॥
 सिंगको त्ति व जो बूया तथा सिंगकसिगको । अतिसिगको त्ति वा बूया सिंगकस्स य सिंगको ॥ १०८० ॥
 पिहको त्ति व जो बूया तथा पिहतरो त्ति वा । अतिपिहको त्ति वा बूया पिहकस्स व पिहको ॥ १०८१ ॥ 10
 वच्छको त्ति व जो बूया तथा वच्छकवच्छको । अतिवच्छको त्ति वा बूया वच्छकस्स व वच्छको ॥ १०८२ ॥
 तण्णको त्ति व जो बूया तथा तण्णकतण्णको । अतितण्णको त्ति वा बूया तण्णकस्स व तण्णको ॥ १०८३ ॥
 पोतको त्ति व जो बूया तथा पोतकपोतको । अतिपोतको त्ति वा बूया पोतकस्स व पोतको ॥ १०८४ ॥
 [कलमो त्ति व जो बूया तथा कलमकलमको । अतिकलमो त्ति वा बूया कलमस्स व कलमको ॥ १०८५ ॥]
 बालकं जाणकं व त्ति तथा ठियपडिय त्ति वा । तथा पंचमिका व त्ति तथा सत्तमिक त्ति वा ॥ १०८६ ॥ 15
 उट्टाणकं त्ति वा बूया मासपूरणकं त्ति वा । पिंडे वट्टणकं व त्ति उवणिग्गमणं त्ति वा ॥ १०८७ ॥
 पादपेसणकं व त्ति परेणकमेव वा । पदकमणकं व त्ति पचाहरणकं त्ति वा ॥ १०८८ ॥
 चोलकं त्ति व जो बूया उणयणं त्ति वा पुणो । लेहणिक्रियणं व त्ति णिणितापडणकं त्ति वा ॥ १०८९ ॥
 बालेयोपक्खराणं च बालोवकरणस्स य । तेषं संकित्तेण सदा बालेयसममादिसे ॥ १०९० ॥
 बालजम्मणणक्खत्ते देवते पणिधिम्मि य । बाले पुक्कफले देसे णगरे गामे गिहे वि वा ॥ १०९१ ॥ 20
 बाले चतुपदे यावि पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किविहोणे यावि परिसप्पे तथेव य ॥ १०९२ ॥
 पाणे वा भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तथा । ॥ आसणे सयणे जाणे भंडोवकरणे तथा ॥ १०९३ ॥ ॥
 लोहेसु यावि सब्वेसु सब्वेसु रतणेषु य । मणीसु यावि सब्वेसु सब्वधण-धणेषु य ॥ १०९४ ॥
 एतम्मि पेक्खियामासे सदे रूवे तथेव य । सब्वमेयाणुगतुं ततो बूयांगच्चित्तओ ॥ १०९५ ॥
 ॥ बालेयाणि ॥ ३३ ॥ छ ॥

25

[३४ चोदस जोव्वणत्थाणि]

उदरं १ कडी य २ णामी य ३ कडीपस्साणि वे तथा ५ ।
 पट्टिपस्साणि^१ ७ मज्झो य ८ लोमवासी तथेव य ९ ॥ १०९६ ॥
 मेहणं १० वत्थि ११ सीसं च १२ फळं वे वि य जाणिया १४ ।
 जोव्वणत्थेसु एतेसु जोव्वणत्थं विजाणिया ॥ १०९७ ॥

30

१ चतुरस्रोत्तरगतं चरणं सर्वासु प्रतिपु नात्ति । २ मल्लको हं० त० ॥ ३ < १ > एतथिहान्तगतं पाठः हं० त० नात्ति ।
 ४ हस्तविहमत्थणः पाठः हं० त० एव वर्तते । ५ बूया पोतकस्स य पोतको हं० त० विना । ६ पोत्तिकपोतको हं० त०
 विना । ७ चतुरस्रोत्तरगतं चरणं सर्वासु प्रतिपु नात्ति, किन्तु सम्बन्धावुपाणेषु संभवितमस्ति । ८ पंडवद्धं हं० त० ॥
 ९ पादापे हं० त० विना । १० गतितापं सं ३ पु० ॥ ११ हस्तविहान्तगतं वृत्तार्थं हं० त० एव वर्तते । १२ ० णि ७
 सहोय हं० त० ॥ १३ वियागरे हं० त० ॥

- एताणि आमसं पुच्छे अत्यलाभं जयं तथा । जं च किंचि पसत्यं सा सव्वमत्थि त्ति णिहिसे ॥ १०९८ ॥
 पुरिसं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्थो सुमगो त्ति य । सद्धत्यकारी दच्छो य सव्वत्थेसु पुमं भवे ॥ १०९९ ॥
 इथीं या परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुमग त्ति य । ॥ ॥ सद्धत्यकारी दच्छा य सव्वत्थेसु पदक्खिण्णा ॥ ११०० ॥
 पुरिसत्थविद्दं पुच्छे सिग्गमत्थो भविस्सति । विद्या अत्यविद्दं पुच्छे खिप्पमत्थो भविस्सति ॥ ११०१ ॥
- ५ कण्णं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुमग त्ति य । ॥ ॥ धण्णा च सुद्धभागी य खिप्पं विज्जिहित्ते त्ति य ॥ ११०२ ॥
 गद्धमं च परिपुच्छेज्ज अत्थि गद्धमो त्ति णिहिसे । गद्धमिं परिपुच्छेज्ज खिप्पं पुत्तं पयाहित्ति ॥ ११०३ ॥
 कम्मं च परिपुच्छेज्ज खिप्पं कम्मं वियागरे । परिस्समेण चऽप्पेण खिप्पं अत्थं छभिस्सति ॥ ११०४ ॥
 पत्तासं परिपुच्छेज्ज सफळो त्ति वियागरे । पट्ठत्थं परिपुच्छेज्ज सफळो खिप्पमेहित्ति ॥ ११०५ ॥
 विनादं विग्गद्धं बंधं रोगं मरणमेव यं । अपातयमणावुट्ठिं सस्सवापत्तिमेव य ॥ ११०६ ॥
- १० णट्ठस्स विप्पणासं च पलाणस्स अणागमं । धणक्खयं वियोगं च सव्वं णत्थि त्ति णिहिसे ॥ ११०७ ॥
 धट्ठस्स मोयणं रिप्पं संधिं संपीत्तिमेव य । जयाऽऽरोगं च आयुं च उत्थाणं वाधितस्स य ॥ ११०८ ॥
 वत्सारत्तं च वासं च सत्तं णट्ठस्स दंसणं । हितस्स पैडिळाभं च पळातस्स य आगमं ॥ ११०९ ॥
 समागमं संपयोगं थाणमिस्सरियं जसं । धणळाभं कम्मसिद्धिं वा सव्वमत्थि त्ति णिहिसे ॥ १११० ॥
 वयं च परिपुच्छेज्जा जोव्वणत्थो त्ति णिहिसे । धण्णं धणं त्ति पुच्छेज्ज धणं ॥ ॥ तेव' वियागरे ॥ ११११ ॥
- १५ जहा पुण्णामधेएसु सव्वं दिट्ठं सुभा-ऽऽसुमं । [.....] ॥ १११२ ॥
 त्था खित्तं त्था वत्थुं सव्वमत्थि त्ति णिहिसे । समे सदे य जाणेज्जो जोव्वणत्था भवन्ति जे ॥ १११३ ॥
 जोव्वणं ति व जो वूया त्था जोव्वणकं ति वा । जोव्वणत्थे त्ति जो वूया जुवाणो त्ति य जो वदे ॥ १११४ ॥
 त्थुणं ति य जो वूया त्था त्थुणत्तं ति वा । त्थुणो त्ति य जो वूया त्थुणा त्थुणको त्ति वा ॥ १११५ ॥
 दहरो त्ति य जो वूया वयत्थो त्ति य जो वदे । पवत्तो त्ति उदग्गो त्ति पोअंठो त्ति य जो वदे ॥ १११६ ॥
- २० गुलभक्करणं ति वा वूया वाढकारो त्ति वा पुणे । समासेयणकं व त्ति णियो वा सुण्णिक त्ति वा ॥ १११७ ॥
 उपाणकं ति वा वूया वत्थ गोसग्गग्गणकं । पडिवज्झकं ति वा वूया त्था णिव्वहणं ति वा ॥ १११८ ॥
 अधिक्कमणकं व त्ति तोप्पारुमणाति वा । पैत्तिज्जं ति य जो वूया गैयणं पंचमेज्जणं ॥ १११९ ॥
 वारेज्जं ति य जो वूया अण्णोणं ति य जो वदे । तंथा जामातुकियं ति दसमीण्णहणकं ति वा ॥ ११२० ॥
 उत्तसउ त्ति समास त्ति तथा जण्णजणे त्ति वा । तथा अच्सुदयो व त्ति भोज्जं मज्जणकं ति वा ॥ ११२१ ॥
- २५ जं चऽऽणं एयमादीयं जोव्वणस्स य संसितं । पैसुदाहरणं सव्वं जोव्वणत्थिसमं भवे ॥ ११२२ ॥
 णक्खत्ते जोगे संपुण्णे देवते णिधिम्मि य । पुण्णे फळे व देसे वा णगरे गाम गिहे वि वा ॥ ११२३ ॥
 पुरिसे चतुण्णेदे यावि पक्खिण्णि उदगेचरे । कीडे किविद्धने वा वि पुरिस्सपे त्थेव य ॥ ११२४ ॥
 पाणे वा भोयणे वा वि वत्थे धामरणे तथा । आसणे सयणे जाणे भंडोव्वरणेसु य ॥ ११२५ ॥
 लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रथणेसु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेसु य ॥ ११२६ ॥
- ३० पत्तमि पेक्खिसयामासे सदे रूबे त्थेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो वूयांमर्चित्तो ॥ ११२७ ॥

॥ जोव्वणत्थाणि ॥ ३४ ॥ छ ॥

१ इत्थिद्वयं न. श्रीरुद्रमित्थं सन्दर्भं हं. त. एव वर्तते ॥ २ खिप्पं सिज्जिहित्ति ति वा हं. त. ३ पडिळं हं. त. मि. ४ इत्थिद्वयं न. श्रीरुद्रमित्थं सन्दर्भं हं. त. एव वर्तते ॥ ५ पोअंठो हं. त. ६ पत्तिज्ज ति हं. त. मि. ७ पत्तमि हं. त. ८ सण्णोणं हं. त. मि. ९ तदा तेमाउक्कियं हं. त. १० उज्जाउ त्ति समाउ त्ति तथा उज्जाउ हं. त. मि. ११ तस्सवापहरणं हं. त. ॥

[३५ चोद्दस मज्झिमवयाणि]

वाहाओ २ वाहुणालीओ ४ हत्थमंगुलिकौदरो ५ । हत्थमंगुट्टका ७ हत्था ९ अंसवीकाणिए तथा १० ॥ ११२८ ॥

जैत्तुणि १२ थणावुभये १४ एते मज्झिमये वये । सब्वमज्झिमकं अत्थं लाभं चऽत्थं वियागरे ॥ ११२९ ॥

पुरिसं च परिपुच्छेज्ज मज्झिमो सारतो भवे । मज्झिमो आउतो चेव भातूणं वा वि मज्झिमो ॥ ११३० ॥

इत्थिं च परिपुच्छेज्ज मज्झिमा सारतो भवे । मज्झिमा आउतो वा वि भगिणीणं च मज्झिमा ॥ ११३१ ॥ 5

पुरिसस्सऽत्थविधं पुच्छे मज्झिमं ति वियागरे । थिय्या अत्थविहं पुच्छे मज्झिमं ति वियागरे ॥ ११३२ ॥

कण्णं च परिपुच्छेज्ज मज्झकह्णणसोभणा । भातूणं मज्झिमा सा वि खिप्पं विज्जिहित्ति ति य ॥ ११३३ ॥

गब्भं च परिपुच्छेज्ज णत्थि गब्भो त्ति णिदिसे । गब्भिणं परिपुच्छेज्ज संसयेण पजाहित्ति ॥ ११३४ ॥

कम्मं च परिपुच्छेज्ज कम्मं मज्झगतं वदे । लाभं च परिपुच्छेज्ज मज्झिमं लाभमादिसे ॥ ११३५ ॥

पवासं परिपुच्छेज्ज मज्झिमं फलमादिसे । पोसितो मज्झकालेण मज्झलाभेण एहित्ति ॥ ११३६ ॥ 10

बंधं पुच्छे ण भवति वद्धो मुच्चिहित्ति ति य । भयं खेमं च संधिं वा विगहो वा वि मज्झिमो ॥ ११३७ ॥

रोगं च भरणं चेव अणावुट्ठं अपातयं । सस्सस्स य वापत्तिं सब्बं णत्थि त्ति णिदिसे ॥ ११३८ ॥

जयं जीवितमारोगं उत्थाणं वाधितस्स य । वस्सारत्तं च वासं च वदे सस्सं च मज्झिमं ॥ ११३९ ॥

वयं च परिपुच्छेज्ज मज्झिमो त्ति वियागरे । धण्णं धणं च पुच्छेज्ज मज्झिमं ति वियागरे ॥ ११४० ॥

पवत्ता मज्झिमा जे तु फलं जं तेसु कित्तिंतं । तथेव य फलं सब्बं वूया मज्झवयेसु वि ॥ ११४१ ॥ 15

तथा खेत्तं तथा वत्थं सब्बमत्थि त्ति णिदिसे । समे सदे य जाणेज्जो मज्झिमा जे भवंतिह ॥ ११४२ ॥

मज्झिमेसु य जे सदा मज्झसारेषु आहिता । ते चेव मज्झिमवये णिदिसे अंगचिंतओ ॥ ११४३ ॥

मज्झणक्खत्तजोगमिन्नि देवते पणिधिम्मि य । पुप्फे फले व देसे वा णगरे गामे गिह्वे वि वा ॥ ११४४ ॥

पुरिसे चउप्पये यावि पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किविहगे यावि परिसप्पे तथेव य ॥ ११४५ ॥

पाणे वा भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तथा । आसणे संयणे जाणे भंडोवगरणे तथा ॥ ११४६ ॥ 20

लोहेसु यावि सब्बेसु सब्बेसु रयणेषु य । मणीसु यावि सब्बेसु सब्बधण्ण-धणेषु य ॥ ११४७ ॥

एतम्मि पेक्खितामासे सदे रूचे तथेव य । सब्बवेवाणुगंतूणं ततो वूयांगचिंतओ ॥ ११४८ ॥

॥ मज्झिमाणि (मज्झिमवयाणि) ॥ ३५ ॥ छ ॥

[३६ वीसं महव्वयाणि]

गीवा हणू य दंतोहं णासा णासपुडावुभो । गंडा कवोला य तथा भुमकाणं अंतरं च जं ॥ ११४९ ॥ 25

णिडालं च सिरं चेव एक्खेताणि वीसतिं । महव्वयाणि जाणीया अंगविज्जाविसारतो ॥ ११५० ॥

एताणि आमसं पुच्छे महंतं अत्थमादिसे । जयं लाभं पसत्थं च एतं णातिचिरं भवे ॥ ११५१ ॥

पुरिसं च परिपुच्छेज्ज णरं वूया महव्वयंतं । इत्थिं वा परिपुच्छेज्ज वूया तं पि महव्वयं ॥ ११५२ ॥

पुरिसत्थविधं पुच्छे महंतं अत्थमादिसे । थिया अत्थविधं पुच्छे उत्तमत्थं वियागरे ॥ ११५३ ॥

कण्णं च परिपुच्छेज्ज कण्णं वूया महव्वयं । महव्वयस्स पुरिसस्स चिरं विज्जिहित्ति ति या ॥ ११५४ ॥ 30

गब्भं च परिपुच्छेज्ज णत्थि गब्भो त्ति णिदिसे । गब्भिणं परिपुच्छेज्ज मतं सा जणयिस्सति ॥ ११५५ ॥

कम्मं च परिपुच्छेज्ज वुंढुकम्म वियागरे । अप्पफळं वहुक्केसं तं च कम्मं दुगुच्छितं ॥ ११५६ ॥

पवासो पुच्छते णत्थि णाऽऽगच्छति पैवासितो । वंधं पुच्छे ण भवति वद्धो खिप्पं च मुच्चिहि ॥ ११५७ ॥

१ °लिकाउरो हं० त० विना ॥ २ °काणि वे तथा हं० त० विना ॥ ३ जैत्तुणि हं० त० ॥ ४ हसविहान्तर्गतः फळ
हं० त० एव वारंते ॥ ५ अंतरं धलं हं० त० ॥ ६ महयं हं० त० ॥ ७ सुहकस्मिं हं० त० ॥ ८ थहुक्केसं तं हं० त० ॥
९ पक्खिम्मो हं० त० ॥

खेमं पुच्छे ण भवति भयमत्थि त्ति णिहिसे । संधिं पुच्छे ण भवति विग्गहो य णिरत्थयो ॥ ११५८ ॥
 रोगं मरणमणाबुद्धिं आतवं सस्सवापदं । अत्थद्दार्णि वियोगं च सच्चमत्थि त्ति णिहिसे ॥ ११५९ ॥
 जयारोगं च आयुं वा उत्त्याणं आतुरस्स य । णट्ठस्स दंसणं चेय सवणं णत्थि त्ति णिहिसे ॥ ११६० ॥
 वयं च परिपुच्छेज्ज ततो वूया महव्वतं । धण्णं धणं ति पुच्छेज्ज अधण्णं ति वियागरे ॥ ११६१ ॥
 जं किंचि पसत्वं सा सव्वं णत्थि त्ति णिहिसे । अंपसत्वं च जं किंचि सच्चमत्थि त्ति णिहिसे ॥ ११६२ ॥
 तथा खेतं तथा वत्थुं सव्वं णत्थि त्ति णिहिसे । महव्वयसमे वा वि इमे सदे विभावये ॥ ११६३ ॥
 महव्वयो त्ति वा वूया तथा जुण्णवयो त्ति वा । तथा तीतवयो च त्ति तथा गतवयो त्ति वा ॥ ११६४ ॥
 धेरो जुण्णो त्ति वा वूया वुद्धो परिणतो त्ति वा । जरातुरो त्ति वा वूया खीणवंसो त्ति जो वदे ॥ ११६५ ॥
 वैत्तुस्सयो त्ति वा वूया णिव्वत्त त्ति य यो वदे । उँववुत्तं ति वा वूया झीणं या णिट्ठितं ति वा ॥ ११६६ ॥
 वातं ति मलितं य त्ति तथा परिमलितं ति वा । मिलाणं परिसुक्खं ति तथा परिसड्ढितं ति वा ॥ ११६७ ॥
 तुच्छं ति रिचरुं य त्ति असारं झूसिरं ति वा । वैधुद्धिततरं य त्ति गतगंव-रसं ति वा ॥ ११६८ ॥
 जं चउण्णं एवमादीयं जिण्णातीतवयस्सियं । तस्स संकित्तणासदा महावयसमा भवे ॥ ११६९ ॥
 अप्पायसेसे णक्खत्ते देवते पणिधिम्मि य । पुप्फे फले व देसे वा णगरे गीम णिहे वि वा ॥ ११७० ॥
 मुरिसे चतुप्पदे चेय पक्खिस्सिम्मि उदगेचरे । कीडे किविह्वये वा वि परिसप्पे तवेव य ॥ ११७१ ॥
 पाणे या भोगणे वा वि यत्थे आभरणे तथा । आसणे सचणे जाणे भंडोवगरणे तथा ॥ ११७२ ॥
 ठोहेसु थावि सव्वेसु सव्वेसु रण्येसु य । मणीसु थावि सव्वेसु सव्वघण्ण-धण्येसु य ॥ ११७३ ॥
 एतम्मि पेक्खियामासे सदे रूवे तवेव य । सच्चमेवाणुगतं ततो वूयांगं चित्तजो ॥ ११७४ ॥

॥ महव्वयाणि ॥ ३६ ॥ छ ॥

[३७-३९ वयसाधारणा]

[३७ दुवे चालजोव्वणत्थसाधारणाणि]

उम्मट्ठेसु वियाणीया दुवे णेये वे वक्खणे । चालजोव्वणत्थसाधारणाणि तं चेव य फलं धुवं ॥ ११७५ ॥
 चालेयजोव्वणत्थाणं जे सहा पुव्वकित्तिता । चालेयजोव्वणत्थाणं उम्मिस्से समके वदे ॥ ११७६ ॥

[३८ दुवे जोव्वणत्थमज्झिमवयसाधारणाणि]

तारुण्यमज्झिमाणंगे वयसाधारणा ण्णा । उम्मट्ठा य पसस्संते तं चेव य फलं वदे ॥ ११७७ ॥
 तारुण्यमज्झिमाणम्मि जे सहा पुव्वकित्तिता । तारुण्यमज्झिमाणंगे मिस्से साधारणे वदे ॥ ११७८ ॥

[३९ दुवे मज्झिमवयमहव्वयसाधारणाणि]

मज्झिममहव्वयाणं मग्गे साधारणा भवे । उम्मट्ठा जंतुणो तेसु पुव्वुत्तं फलमादिसे ॥ ११७९ ॥
 मज्झिममहव्वयाणं पि जे सहा पुव्वकित्तिता । ते थामिस्सा उदीरंता साधारणत्थमा भवे ॥ ११८० ॥

॥ वयसाधारणा ॥ ३७-३८-३९ ॥ छ ॥

१ इत्थिद्विद्वान्गणः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ २ महावयो हं० त० ॥ ३ त्रिपिमेदानुकारेण चैद्व चचुस्सयो इति पाठः कियेन
 दृश्यते उच्चमत्तं पाठः ॥ ४ उच्युत्तं सि० ॥ उच्युत्तं सं १ पु० ॥ ५ णित्थियं हं० त० ॥ ६ सुसिरं हं० त० ॥ ७ नव्युद्धिततरं
 हं० त० ॥ ८ गाम-णिहेसु वा हं० त० ॥ ९ च धम्मरुणा हं० त० ॥ १० इत्थिद्विद्वान्गणः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥
 ११ ते मिस्से हं० त० सि० ॥ १२ मग्गं पि जे हं० त० विमा ॥ १३ जंतुणो हं० त० ॥ जंतुणो सि० ॥

[४० वीसं वंभेयाणि]

दंतो १ द्वं ३ कर्णं ५ गंडा य ७ क्वोल ९ऽक्खि ११ भुमाणि य १३ ।

णासा १४ णिडौलं १५ संखा य १७ सिरं १८ वे वाहु २० वीसति ॥ ११८१ ॥

वंभेयोवक्खरे चेव वंभणोपकरणेसु य । वंभणो त्ति वियाणीया तस्सहोदीरणेण य ॥ ११८२ ॥

पितामहो त्ति वा बूया तथा वंभं ति वा पुणो । सर्वंभु त्ति व जो बूया तवेव य पयावति ॥ ११८३ ॥ 5

वंभणो त्ति वियाणीया तथा वंभरिसि त्ति वा । वंभवत्तो त्ति वा बूया वंभण्णु पिअवंभणो ॥ ११८४ ॥

दिजाति त्ति व जो बूया दिजातीवसभो त्ति वा । दिजातीपुंगयो व त्ति दिजाईपवरो त्ति वा ॥ ११८५ ॥

विप्पो व त्ति व जो बूया तथा विप्परिसि त्ति वा । तथा विप्पणुणोवेओ विप्पाणं पवरो त्ति वा ॥ ११८६ ॥

जण्णो क्तो त्ति वा बूया जण्णकारि त्ति वा पुणो । जैट्ठो पढमजण्णो त्ति जण्णमुंडो त्ति वा पुणो ॥ ११८७ ॥

सोमो त्ति व जो बूया सोमपाइ त्ति वा पुणो । सोमपा इत्ति वा बूया सोमणामं च वाहरे ॥ ११८८ ॥ 10

अग्गिहोत्तं ति वा बूया आहितग्गि त्ति वा पुणो । अग्गिहोत्तरती व त्ति अग्गिहोत्तं हुत्तं ति वा ॥ ११८९ ॥ 11

वेदो त्ति व जो बूया वेदज्झाइ त्ति वा पुणो । वेदाणं पारको व त्ति चतुवेदो त्ति वा पुणो ॥ ११९० ॥

चारिसं पुच्चमासं ति चतुस्मासं ति वा पुणो । जूवो चित्ति त्ति वा बूया अग्गीणं चयणि त्ति वा ॥ ११९१ ॥

करणे कर्मण्डलू य त्ति दब्भा सज्जा भिसि त्ति वा । दंढं कट्ठं ति वा बूया जण्णोपइत्तकं ति वा ॥ ११९२ ॥

यऽण्णे एवमादीया सदा दिजवरसिस्ता । णामसंकित्तणे तेसिं वंभेयसममादिसे ॥ ११९३ ॥ 15

॥ वंभेयाणि ॥ ४० ॥ छ ॥

[४१ चोद्दस खत्तेयाणि]

खंधं २ उंसपीढ ३ बाहू य ५ जत्तुं ७ उर ८ थणा तथा १० ।

हियंयं ११ पत्साणि १३ पट्ठी य १४ खत्तेयाणि वियागरे ॥ ११९४ ॥

खत्तेयोवक्खरे चेव खत्तिओयकरणेसु य । खत्तिओ त्ति वियाणीया तस्सहोदीरणेण य ॥ ११९५ ॥ 20

इंदो त्ति व जो बूया तथा इंदमहो त्ति य । इंदकेउ त्ति वा बूया इंदणामं च वाहरे ॥ ११९६ ॥

दवट्ठइसइणं इंदोवकरणं ति वा । इंदसयणं ति वा बूया जं चऽण्णं इंदसंतियं ॥ ११९७ ॥

खत्तिओ त्ति व जो बूया तथा खत्तियसंतिओ । तथा खत्तियराय त्ति खत्तियाधिपति त्ति वा ॥ ११९८ ॥

जे यऽण्णे एवमादीया सदा खत्तियसंतिता । णामसंकित्तणे तेसिं खत्तेयसममादिसे ॥ ११९९ ॥

॥ खत्तेयाईं समत्ताईं ॥ ४१ ॥ छ ॥ 25

[४२ चोद्दस वेस्सेयाणि]

कुक्खीपत्सा २ कडीपत्सा ४ उदरो ५ रु ७ मेट्ठ ८ वक्खणा १० ।

वत्थि ११ सीसं १२ फ्ले चेव १४ वेस्सेयाणि वियागरे ॥ १२०० ॥

वेस्सेयोवक्खरे चेव वेस्सोवकरणेसु य । वेस्सो त्ति वियाणीया तस्सहोदीरणेण य ॥ १२०१ ॥

वेस्सो त्ति व जो बूया तथा वेस्सकुळं ति वा । वेस्सेप्पकतिओ व त्ति वेस्सो सो जीवति त्ति वा ॥ १२०२ ॥ 30

जातो वेस्सकुळे व त्ति ज्ञाती व वित्ति सो त्ति वा । वेस्समित्तं ति वा बूया वेस्सोपकरणं ति वा ॥ १२०३ ॥

वेस्तक्रमं ति वा वृया वेस्तारंभो ति वा पुणो । वेस्ताणं धंणकं व ति वेस्ताणं उंस्तओ ति वा ॥ १२०४ ॥
जे यऽण्णे एवमादीया सद्दा ये वेस्तसंसिया । णामसंकित्तणे तेसिं वेसेज्जसममादिसे ॥ १२०५ ॥

॥ वेस्तेयाणि ॥ ४२ ॥ छ ॥

[४३ दस सुद्देयाणि]

पादंगुहं २ गुली ४ गोप्फा ६ जंबा ८ पादतलाणि य १० ।
दसेताणि विजाणीया सुद्देयाणि वियागरे ॥ १२०६ ॥

सुद्देयोवकरणे चैव सुद्देवकरणेषु य । सुद्दे ति विजाणीया तस्सदोदीरणेण य ॥ १२०७ ॥

सुद्दे ति व जो वृया सुद्देयोगो ति वा पुणो । तथा सुद्दकुळं व ति सुद्दजाति ति वा पुणो ॥ १२०८ ॥

जातो सुद्दकुळे व ति सुद्दजोणि ति वा पुणो । सुद्दमितं ति वा वृया सुद्दवित्तिकरो ति वा ॥ १२०९ ॥

सुद्दकम्मं ति वा वृया सुद्दारंभो ति वा पुणो । सुद्देहिं वयदासे ति सुद्देहि ति व जीवति ॥ १२१० ॥

जे यऽण्णे एवमादीया सद्दा सुद्देयसंसिता । णामसंकित्तणे तेसिं सुद्देयसममादिसे ॥ १२११ ॥

॥ सुद्देयाणि ॥ ४३ ॥ छ ॥

[४४-४५-४६ चातुर्व्यवणविधानं]

[४४ दुवे वंभेज्जखत्तेजाणि]

वंभेयाणि गिसेविच्चा वंभेयाणि गिसेवति । वंभणो ति व जाणीया तस्सदोदीरणेण य ॥ १२१२ ॥

वंभेयाणि गिसेविच्चा रत्तेयाणि गिसेवति । वंभखत्ते ति जाणीया पुच्छिओ अंगर्चितओ ॥ १२१३ ॥

रत्तेयाणि गिसेविच्चा वंभेयाणि गिसेवति । खत्तवंभं वियाणीया पुच्छितो अंगर्चितओ ॥ १२१४ ॥

वंभेयाणि गिसेविच्चा वेस्सेयाणि गिसेवति । वंभवेस्सं वियाणीया पुच्छिओ अंगर्चितओ ॥ १२१५ ॥

वेस्सेयाणि गिसेविच्चा वंभेयाणि गिसेवति । वेस्सवंभं वियाणीया पुच्छिओ अंगर्चितओ ॥ १२१६ ॥

वंभेयाणि गिसेविच्चा सुद्देयाणि गिसेवति । वंभसुद्दं वियाणीया पुच्छिओ अंगर्चितओ ॥ १२१७ ॥

सुद्देयाणि गिसेविच्चा वंभेयाणि गिसेवति । सुद्दवंभं वियाणीया पुच्छिओ अंगर्चितओ ॥ १२१८ ॥

रत्तेयाणि गिसेविच्चा रत्तेयाणि गिसेवति । खत्तिको ति विजाणीया तस्सदोदीरणेण य ॥ १२१९ ॥

रत्तेयाणि गिसेविच्चा वंभेयाणि गिसेवति । खत्तवंभं वियाणीया पुच्छिओ अंगर्चितओ ॥ १२२० ॥

वंभेयाणि गिसेविच्चा रत्तेयाणि गिसेवति । वंभरत्तं वियाणीया पुच्छिओ अंगर्चितओ ॥ १२२१ ॥

[४५ दुवे खत्तेज्जवेस्सेजाणि]

रत्तेयाणि गिसेविच्चा विस्सेयाणि गिसेवति । रत्तवेस्सं वियाणीया पुच्छिओ अंगर्चितओ ॥ १२२२ ॥

वेस्सेजाणि गिसेविच्चा रत्तेयाणि गिसेवति । वेस्सखत्तं वियाणीया पुच्छिओ अंगर्चितओ ॥ १२२३ ॥

रत्तेयाणि गिसेविच्चा सुद्देयाणि गिसेवति । रत्तसुद्दं वियाणीया पुच्छितो अंगर्चितओ ॥ १२२४ ॥

सुद्देयाणि गिसेविच्चा रत्तेयाणि गिसेवति । सुद्दरत्तं वियाणीया पुच्छिओ अंगर्चितओ ॥ १२२५ ॥

वेस्सेज्जानि गिसेविच्चा विस्सेयाणि गिसेवति । वेस्सं तं तु वियाणीया तस्सदोदीरणेण य ॥ १२२६ ॥

वेस्सेजाणि गिसेविच्चा वंभेयाणि गिसेवति । वेस्सवंभं वियाणीया पुच्छिओ अंगर्चितओ ॥ १२२७ ॥

१ धणकं ६-१० ॥ २ उस्सुतो ति ६-१० इति ॥ ३ सुपक्खेवकं ६-१० ॥ ४ सुद्दे योगो ६-१० ॥

५-११ एदधिद्वान्तर्गः श्लोकः ६-१० नाति ॥

वंभेयाणि णिसेवित्ता वेस्सेज्जाणि णिसेवति । वंभविस्सं वियाणीया पुच्छिओ अंगंचित्तो ॥ १२२८ ॥
विस्सेज्जाणि णिसेवित्ता खत्तेयाणि णिसेवति । वेस्सखत्तं वियाणीया पुच्छिओ अंगंचित्तो ॥ १२२९ ॥
खत्तेयाणि णिसेवित्ता वेस्सेयाणि णिसेवति । खत्तवेस्सं वियाणीया पुच्छिओ अंगंचित्तो ॥ १२३० ॥

[४६ दुवे वेस्सेज्जसुद्देज्जाणि]

विस्सेयाणि णिसेवित्ता सुद्देज्जाणि णिसेवति । विस्ससुद्धं वियाणीया पुच्छिओ अंगंचित्तो ॥ १२३१ ॥ 5
सुद्देयाणि णिसेवित्ता विस्सेयाणि णिसेवति । सुद्धवेसं वियाणीया पुच्छिओ अंगंचित्तो ॥ १२३२ ॥
सुद्देयाणि णिसेवित्ता सुद्देयाणि णिसेवति । सुद्धं तं तु वियाणीया तस्सद्वेदीरणेण य ॥ १२३३ ॥
सुद्देयाणि णिसेवित्ता वंभेयाणि णिसेवति । सुद्धवंभं वियाणीया पुच्छिओ अंगंचित्तो ॥ १२३४ ॥
वंभेयाणि णिसेवित्ता सुद्देयाणि णिसेवति । वंभसुद्धं वियाणीया पुच्छिओ अंगंचित्तो ॥ १२३५ ॥
सुद्देयाणि णिसेवित्ता खत्तेयाणि णिसेवति । सुद्धखत्तं वियाणीया पुच्छिओ अंगंचित्तो ॥ १२३६ ॥ 10
खत्तेयाणि णिसेवित्ता सुद्देयाणि णिसेवति । खत्तसुद्धं वियाणीया पुच्छिओ अंगंचित्तो ॥ १२३७ ॥
सुद्देयाणि णिसेवित्ता वेस्सेज्जाणि णिसेवति । सुद्धवेस्सं वियाणीया पुच्छिओ अंगंचित्तो ॥ १२३८ ॥
[वेस्सेज्जाणि णिसेवित्ता सुद्देयाणि णिसेवति । वेस्ससुद्धं वियाणीया पुच्छिओ अंगंचित्तो ॥ १२३९ ॥ छ]]
यं चाऽऽज्जमामसित्ताणं आमसे वित्तिं पुणो । तेण तम्मिरसकं वणं णिद्विसे अंगंचित्तो ॥ १२४० ॥
चातुव्वणं च इच्चेतं सम्ममामसजोणिया । जघा तमणुगंतूणं ततो वूयांगंचित्तो ॥ १२४१ ॥ 15
॥ चांतुव्वणविधाणं ॥ ४४-४५-४६ ॥ छ ॥

[४७-५३ आयुप्पमाणणिद्वेसो-चत्तालीसतिमं पडलं]

आयुप्पमाणणिद्वेसो उत्तमेसु सयं भवे । पणत्तरिं च वस्साणि मज्झिमेसु वियागरे ॥ १२४२ ॥
पण्णासं तु णातव्या मज्झिमाणंतरेसु य । जहण्णे पण्णवीसा तु औयुवस्साणि णिद्विसे ॥ १२४३ ॥
साधारणेषु सव्वेषु गोप्फ-जाणु-धणेषु य । जंतूसु यावि वग्गाणं तं तु साधारणं वदे ॥ १२४४ ॥ 20
आयुप्पमाणमिच्चेतं सुसाधारणमंगवी । असम्मूढो विभावेत्ता जघुत्तमभिणिद्विसे ॥ १२४५ ॥
॥ आयुप्पमाणणिद्वेसो सम्मत्तो ॥ ४७-५३ ॥ छ ॥
॥ पडलं चत्तालीसतिमं ॥ ४७ ॥ छ ॥

[५४ वावत्तरिं सुक्कावणपडीभाग]

उम्मट्ठा तु दढा सव्वे २८ पुरिमंगाणि ४४ णखाणि य ६४ । 25
द्वितयं ६५ थण ६७ वंता य ६८ गीवा ६९ खंधो ७० उम्भिवमेव य ७२ ॥ १२४६ ॥
एते सुक्कपडीभागा अंगे वावत्तरिं मता । अपीलित्ता तु उम्मट्ठा सव्वथ्येसु पससत्ते ॥ १२४७ ॥
एताणि आमसं पुच्छे अत्यहामं जयं तथा । जं किंचि पससत्तं सा सव्वमत्तिं ति णिद्विसे ॥ १२४८ ॥
पुरिसं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्या सुभगो ति य । धण्णो य सुद्दभागी य २ सुद्धभावी य ३ सो भवे ॥ १२४९ ॥
इत्थिं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्या सुभग ति य । धण्णा य सुद्दभागी य सुद्दभागी ति यं वदे ॥ १२५० ॥ 30
कणं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्या सुभग ति य । धण्णा य सुद्दभागी य तिपं विज्जिहिते ति य ॥ १२५१ ॥

* चतुरस्रोष्ठकान्तर्गतः श्लोकः सर्वेषु प्रतिषु नास्ति ॥ १ चउव्वणं ६० त० ॥ २ तु मुणेत्तवा सि० ॥ ३ आयय* ६० त० ॥ ४ जवूसु ६० त० ॥ ५ २३ एतथिहान्तर्गतः पाठः ६० त० नास्ति ॥

वणं च परिपुच्छेज्ज सुकिलो त्ति वियागरे । तथा आभिजणं पुच्छे सुकमाभिजणं वदे ॥ १२५२ ॥
 जं किंचि पसथं तं सन्नवमत्थि त्ति णिदिसे । अप्पसत्यं च जं किंचि सन्नं गत्थि त्ति णिदिसे ॥ १२५३ ॥
 जधा पुण्णामवेयेसु आदेसो तु विधीयते । तथा सुकेसु णातव्वं विसिद्धतरकं फलं ॥ १२५४ ॥
 कम्मं च परिपुच्छेज्ज सुक्कं कम्मस्स णिदिसे । संखिकं संसवाणियकं तथा वलयवाणियं ॥ १२५५ ॥
 मणि-सुत्तवाणियं वा वि जं चऽणं सुकिलं भवे । कम्मपुच्छाय णिदेसे एवमादि फलं वदे ॥ १२५६ ॥
 तथा खेत्तं तथा वत्थुं सन्नवमत्थि त्ति णिदिसे । समे सदे य जाणेज्जो सुकिला जे भवतिह ॥ १२५७ ॥

सुको वहस्सती व त्ति चंदो व त्ति सर्णिचरो । बलाका वलदेवो त्ति सुकपंदवणं ति वा ॥ १२५८ ॥
 संखो संखवल्यं ति संखणामि ति वा पुणो । तथा संखमलो व त्ति संखचुण्णं ति वा पुणो ॥ १२५९ ॥
 छुहा सेडि त्ति वा बूया चुण्णको ति पलेयगो । कडसकार ति वा बूया तथा णेळकितं ति वा ॥ १२६० ॥
 दंतो सेडकणवीरो वा वासंति वासुल त्ति वा । वैद्धल्लपुप्फिका जांती लाणी जुधिक त्ति वा ॥ १२६१ ॥
 णवमालिका मड्डिका व त्ति चंपकालि त्ति वा पुणो । तेंणसोल्लिक ति वा बूया सेडुकफलिक त्ति वा ॥ १२६२ ॥
 पुंडरीक ति वा बूया सेडगद्दभकं ति वा । तथा सेडककंदो त्ति सिंधुवारो त्ति वा पुणो ॥ १२६३ ॥
 दुद्धं दधि वा बूया तथा दधिसरो त्ति वा । णवणीतं ति वा बूया सतधोतं धतं ति वा ॥ १२६४ ॥
 धोतकं मधुसित्यं ति जोण्हा धवलपडो त्ति वा । दंतो त्ति दंतचुण्णो त्ति त्यतं मुत्तिकं ति वा ॥ १२६५ ॥
 जं चऽणं एवमादीयं सजीव-ऽज्जीवकं भवे । सुकिलं ति सुँए सदे सुकिलस्स तु तं समं ॥ १२६६ ॥
 तथा सुक्कपडीभागे णक्करत्त देवते तथा । पुप्फे फले वा देसे वा णगरे गाम गिहे वि वा ॥ १२६७ ॥
 पुरिसे चतुप्पदे यावि पक्खिस्सिमि उदगेचरे । कीडे किविहये यावि परिस्सपे तथेव य ॥ १२६८ ॥
 पाणे वा भोयणे वा वि आसणे सयणे तथा । वत्थे आभरणे यावि भंडोवगरणे तथा ॥ १२६९ ॥
 लोहेसु यावि सब्बेसु सब्बेसु रयणेसु य । मणीसु यावि सब्बेसु सब्बघण्ण-धणेसु य ॥ १२७० ॥
 पत्तम्मि पेक्किरवामासे सदे रूवे तथेव य । सब्बमेवाणुगंतुं ततो वूयांगचित्तो ॥ १२७१ ॥

॥ सुक्कघण्णपडीभागा ॥ ५४ ॥ छ ॥

[५५-६२ वण्णपडीभागपडलं]

अध्मंतरं अवंगे उ अक्खीणं" वे विणिदिसे । एते पंडुपडीभागे अध्मंतरफले वदे ॥ १२७२ ॥
 तथा णीलपडीभागा अप्पसत्थे वियागरे । द्ढाणं पडिपक्खा जे णणुसकफला उ ते ॥ १२७३ ॥
 दस कण्हपडीभागे णिम्मट्टेसु वियागरे । बालेयेसु सब्बेसु पुच्छित्ते ण प्पसस्सते ॥ १२७४ ॥

॥ वण्णपडीभागा ॥ ५५-६२ ॥ छ ॥

[६३-७३ टियामासवणजोणीपडलं]

सब्बे ज्जाव टियामासा बाहिरप्पडिरूवणा । जो जस्स वण्णपडिरूवो वणं तं तेण णिदिसे ॥ १२७५ ॥
 कण्हेण कण्हं जाणीया णीलकं णीलकेण य । रत्तेण रत्तं जाणीया पीतकेण य पीतकं ॥ १२७६ ॥
 सेतेण सेतं जाणीया पंडुमेव य पंडुणा । मेचकं मेचकेणैव टियामासं वियागरे ॥ १२७७ ॥

१ भवे हं० त० विना ॥ २ मकणं हं० त० ॥ ३ पडलं स० ॥ ४ जाती णाली जू० सि० ॥ ५ घणं हं० त० ॥ ६ घातकं हं० त० विना ॥ ७ सते हं० त० विना ॥ ८ सुक्कलपं हं० त० ॥ ९ अनेदमवधेयम्-एतद् वण्णपडीभागपडलं
 अप्पेतनं च टियामासवणजोणीपडलं कथञ्चिद समानविषयकमिति सिधीभावेन तव्याकर्णमन एदयते । अत एवान् पदद्वये द्वारसाङ्गमनि
 वर्तनं । अत्रिद्वारपतामघेस्वयं अगमत्वात् समान्यत्वे । द्वारक्रमश्चः पुनर्मेन्वद्दिच्छामनुवर्तत इति ॥ १० ० जं केव जिं हं० त० ॥
 ११ भागं अध्मंतरफलं हं० त० विना ॥ १२ भागो हं० त० विना ॥ १३ भागो हं० त० विना ॥

गयतालुकवणं च तन्वण्णेण वियागरे । काकंडकवणं च तथा गोमुत्तकं विदु ॥ १२७८ ॥
 स्रोणे सूरुगमिकं पदुमाभेण पदुमकं । मणोसिलाय य तथा मणोसिलाणिभं वदे ॥ १२७९ ॥
 हरितालेण जाणेज्जो हरितालसमप्पभं । तथा हिंदुलके यावि बूया हिंदुलकप्पभं ॥ १२८० ॥
 गिद्धं गिद्धेण जाणेज्जो लुक्खं लुक्खेण गिहसे । मिससकं मिससकेण चित्तवणं च चित्तले ॥ १२८१ ॥
 एवमादी ठियामासे सवण्णेहिं वियागिया । बाहिरपडिरूवेहिं गिहसे अंगचित्तओ ॥ १२८२ ॥
 बाहिरंगता एते ठियामासा विआहिता । एते चेय पुणो सब्बे अंगामासेहि गिहसे ॥ १२८३ ॥

वक्खणा गोप्फणा जाणू य कण्णा य हरिता भवे । गीवा पीता तथा पंडू अपंगे वे तथोदरं ॥ १२८४ ॥
 जिम्मोद्व-तालुका रत्ता वंभवणगा तथऽन्निखणो । सुक्का दंत-गहा असिता यज्जातं केस-लोमय ॥ १२८५ ॥
 अरुमेंतरा य अच्छीण भागा गीवा य पीतिका । सम्महिया य हरिता णिम्महा होंति पंडुणो ॥ १२८६ ॥
 कणवीरका अवंगा य पाद-पाणितला तथा । जिम्मोद्व-तालु-कंडोहा दंतमंसं तथेव य ॥ १२८७ ॥

रत्तवण्णपडीभागा विण्णैया दस पंच य । जघुत्तमणुगांतुं ततो बूयांगचित्तओ ॥ १२८८ ॥
 रत्त-सेतसमामासे गिहसे गयतालुकं । सेत-रत्तसमामासे वंभरागं वियागरे ॥ १२८९ ॥
 रत्त-पीतसमामासे वणं सुज्जुगगं वदे । पीत-रत्तसमामासे मणोसिलाणिभं वदे ॥ १२९० ॥
 कण्ह-सेयसमामासे मेचकं वण्णमादिसे । सेत-कण्हसमामासे कांरेंटकणिभं वदे ॥ १२९१ ॥

गिद्ध-लुक्खसमामासे गिद्धलुक्खं तु गिहसे । लुक्ख-गिद्धेसमामासे लुक्खणिग्गाणि गिहसे ॥ १२९२ ॥
 पुप्फाणि च फलाणि च तथा पत्ताणिमेव य । णिजासा चेव सारा य मूलजोणिगतसस य ॥ १२९३ ॥
 बालाणं अंगलोमाणं चन्माणं च पिधपिधं । मासाणं रुधिराणं च पित्तसस य कफसस य ॥ १२९४ ॥
 मुत्ताणं च पुरीसाणं सुक्क-मेद-वसाय य । अट्ठीणं अट्ठिमिजाय णेहाणं पाणजोणिया ॥ १२९५ ॥
 जे यण्णे धातुजोणीया वण्णरागा पिधपिधं । तेसिं संकित्तणासदा विभावेडण अंग्खी ॥ १२९६ ॥
 सुक्कादयो सब्बवण्णा ये एते परिकित्तिया । तज्जोणीवण्णसदेहिं ते पत्तेगं वियागरे ॥ १२९७ ॥

॥ ठियामासकता वण्णजोणी ॥ ६३-७३ छ ॥

[७४-७९ गिद्धलूहपडलं]

[७४ दस गिद्धाणि]

सुहं १ णासापुडा ३ कण्णा ५ मेडू ६ मऽक्खी ८ थणावुमो १० ।

एताणि दस गिद्धाणि उम्महाणि पसस्सते ॥ १२९८ ॥

जधा पुण्णामधेज्जेसु आदेसा परिकित्तिता । तथा गिद्धेसु मग्ग्वेसु विसिट्ठतरकं फलं ॥ १२९९ ॥
 एताणि आमसंती य गच्चिमी जति पुच्छति । इमो तरसा भवे अण्णो विसेसो उत्तरुत्तरो ॥ १३०० ॥
 उदग्गामाणा हट्ठा सब्बकामसमण्णिता । सुहेण सुलता पुत्तं धण्णं णारी पयाहिंति ॥ १३०१ ॥
 वंभणो जति पुच्छेज्जा उदिधे वेदपारतो । अभिरूयो सुहिंनो णिव भवे य घण-धण्णया ॥ १३०२ ॥
 वेस्सो जति पुच्छेज्जा सिद्धऽच्छादण-भोग्यो । अट्ठो य सुहभागी य वसुमंतो य सो भवे ॥ १३०३ ॥ छ ॥ ३०

१ °तरो ये अच्छीणं भागा सं ३ पु० । °तरो य अच्छीणं भागी हं० त० ॥ २ पीयिका हं० त० ॥ ३ °लुकंमेहा हं० त०
 विगा ॥ ४ हस्तविहान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ५ °दमणिग्गाणि लुक्खं सप्र० ॥ ६ सुवृ हं० त० ॥ ७ तिजोणी
 हं० त० ॥ ८ °जा मिच्छच्छा° सं ३ पु० वि० ॥

[७५ दस गिद्धगिद्धाणि]

- एताणि चैव गिद्धाणि गिद्धगिद्धाणि गिद्धिसे । दूरम्मद्वाणि सव्याणि विसिद्धफलदाणि य ॥ १३०४ ॥
 मक्खितं ति व जो बूया तं मक्खिततरं ति वा । [अतिमक्खितं ति वा बूया मक्खितमक्खितं ति वा ॥ १३०५ ॥
 गिद्धं ति व जो बूया तं गिद्धतरकं ति वा ।] अतिगिद्धं ति वा बूया गिद्धगिद्धं ति वा पुणो ॥ १३०६ ॥
 5 किलिण्णं ति व जो बूया किलिण्णतरकं ति वा । तथा अतिकिलिण्णं ति किन्निण्णकिलिण्णं ति वा ॥ १३०७ ॥
 गेहितं ति व जो बूया तं गेहिततरं ति वा । अतिगेहितं ति वा बूया गेहितगेहितं ति वा ॥ १३०८ ॥
 गेहुक्कडं ति वा बूया गेहुक्कडतरं ति वा । अतिगेहुक्कडं व च्चि बहुगेहुक्कडं ति वा ॥ १३०९ ॥
 गेहुत्तरं ति वा बूया गेहुत्तरतरं ति वा । अतिगेहुत्तरं ~~ति~~ व च्चि बूया बहुगेहुत्तरं ~~ति~~ वा ॥ १३१० ॥
 गेह्मागडं ति वा बूया गेह्मागडतरं ति वा । अतिगेह्मागडं ति तथा बहुगेह्मागडतरं ति वा ॥ १३११ ॥
 10 दुद्धं दधिं सरो णवणीतं धयं ति वा । वेहं मधुं ति वा बूया वसा मज्जं ति वा पुणो ॥ १३१२ ॥
 जं चऽणं एवमादीयं दब्बं गेहोवकं भवे । तस्स संकित्तणासहा सव्वे गेहसमा भवे ॥ १३१३ ॥ छ ॥

[७६ दस लुक्खाणि]

गिम्मद्वाणि य गिद्धाणि दस लुक्खाणि गिद्धिसे । जथा णपुंसका अणे विण्णेया फलतो तथा ॥ १३१४ ॥ छ ॥

[७७ दस लुक्खलुक्खाणि]

- 15 एताणि चैव लुक्खाणि दूरं गिम्मज्जिताणि तु । लुक्खलुक्खाणि जाणीया फलं पावतरं च से ॥ १३१५ ॥
 छहं ति व जो बूया तथा छहतरं ति वा । अतिछहं ति वा बूया ल्हाल्लहतरं ति वा ॥ १३१६ ॥
 पुट्टं ति व जो बूया तथा पुट्टतरं ति वा । ~~अति~~ पुट्टं ति वा बूया पुट्टपुट्टतरं ति वा ॥ १३१७ ॥ ~~अति~~
 फरुसं ति व जो बूया तथा फरुसतरं ति वा । तथाऽतिफरुसं व च्चि फरुसातिफरुसं ति वा ॥ १३१८ ॥
 कयातो च्चि व जो बूया पंसुको च्चि व जो वदे । धूली रयो च्चि रेणु च्चि सरो सुको च्चि वा पुणो ॥ १३१९ ॥
 20 इंगालछारिया व च्चि भूती भस्सो च्चि वा पुणो । तुस च्चि गुलिकं व च्चि चुण्णं रोट्ठो च्चि वा पुणो ॥ १३२० ॥
 गोव्यरो च्चि फरीसो च्चि सुक्खं वा छगणं पुणो । तण-क्कट्ट-पलालं ति सुक्खपुप्फ-फलं ति वा ॥ १३२१ ॥
 सुक्खपत्तं ति वा बूया तथा सुक्खफलं ति वा । तुस च्चि कौटको व च्चि कफुसो तप्पो च्चि वा ॥ १३२२ ॥
 छहं ति छहितं ती वा विल्लहितविल्लहितं । छहोहितं उव्वलितं तथा वेच्छाडितं ति वा ॥ १३२३ ॥
 गिन्मामितं गिग्गलितं अन्मुकडितं ति वा । गिण्णेहकं अणेहं या फुट्टं ति फरुसं ति वा ॥ १३२४ ॥
 25 सफुट्टं ति व जो बूया सपहापाहणं ति वा । गिरेहोडणं गिब्बलकं तथा गिल्लिकखणं ति वा ॥ १३२५ ॥
 तथा पल्लितं व च्चि गिद्धोत्तं ति व जो वदे । पोह च्चि झुसिरं व च्चि सधूलीक सरेणुकं ॥ १३२६ ॥
 जं चऽणं एवमादीयं डोए लुक्खोपकं भवे । तस्स संकित्तणासहा सव्वे ल्हसमा भवे ॥ १३२७ ॥ छ ॥

[७८ दस लुक्खगिद्धा ७९ दस गिद्धलूहा य]

लुक्खगिद्धा य एतेयं गिद्धा सम्मज्जिता भवे । सैंधारणं तेसु वदे अत्थलानं सुभा-ऽसुमं ॥ १३२८ ॥

१ दूरमं हं० त० ॥ २ विसुद्धफं हं० त० ॥ ३ चतुरस्रोद्वयान्तर्गतोऽयं सण्डितपाठः सम्बन्धापुरारेण पुरितोऽस्ति ॥
 ४ बूया बहुगेहुक्कडं ति वा सप० ॥ ५ अतिगेहितं ति वा बूया बहुगेहुक्कडं ति वा सप० ॥ ६ हल्लिङ्गगतः पाठः
 हं० त० एव वर्तते ॥ ७ हल्लिङ्गान्तर्गतमुत्तारं हं० त० एव वर्तते ॥ ८ कुक्कसो हं० त० ॥ ९ उच्चारणं हं० त० ॥
 १० अन्मुकडितं हं० त० विना ॥ ११ गिण्णोडणं हं० त० ॥ १२ गिद्धायमि य जो हं० त० ॥ १३ लुक्खो वरं भवे
 हं० त० ॥ १४ साधारणं यसु वदे सव्यं अत्थं सुभा-ऽसुमं हं० त० ॥

निद्धा लूहा उ एतेवं संविमहा जता भवे । साधारणं तेषु वदे अत्थं सर्व्वं सुभासुभं ॥ १३२९ ॥
 लूहणिद्धं व जं अंगे णिद्धलूहं व जं भवे । तेषिं वामिस्ससदेहिं साधारणगुणं वदे ॥ १३३० ॥

॥ णिद्धलूहाणि ॥ ७४-७९ ॥ छ ॥

[८० दस आहारा]

चक्खु १ सोत्तेण २ घाणेण ३ देहफरिसेण ४ जिन्मया ५ ।

हत्थ ६ पादेण ७ सीसेण ८ वाहूहिं ९ भमुदाहि य १० ॥ १३३१ ॥

। आहारं कुरुते चेव उवयोगेहि जेहि तु । तथा य होति आहारे दसेताणुवधारये ॥ १३३२ ॥

सुणेती १ पेक्खती यावि २ गंधं वा केवि घायति ३ ।

ओट्टसंदंसणे चेव ४ णिमिण्णाऽऽसाइत्तमि य ५ ॥ १३३३ ॥

अतिहारे य जिन्मयं ओट्टाणं परिलेहणे ६ । तथेव मुट्टिकरणे अंगुलीपेडणेसु य ७ ॥ १३३४ ॥

हत्थपादोवसंहारे ८ सिरेण ९ भुमकाहि य १० । आहारे णीहिते यावि सर्व्वं आहारमादिसे ॥ १३३५ ॥

जघा पुण्णामधेयेसु आदेसो तु विधीयति । आहारेसु वि एमेव फलं बूया सुभाऽसुभं ॥ १३३६ ॥

आहारे त्ति व जो बूया खज्जापज्जं (खज्ज-पेज्जं) ति वा पुणो ।

आहारेति आहारंति तथा अतिहरंति वा ॥ १३३७ ॥

समाहरंति त्ति वा बूया ८ वप्पा वाहरति त्ति वा ।

एति वा [आ]गतो व त्ति तथा अतिगतो त्ति वा ॥ १३३८ ॥

पवेसितो पविट्ठो त्ति आणीयं ति [व] आणितो ।

सु[ण]त्ति त्ति णिसामेति आगण्णेति त्ति वा पुणो ॥ १३३९ ॥

पेक्खते पेच्छते व त्ति णिज्जायति [व] पेक्खति । णियक्खेति त्ति वा बूया णिरिक्खति णिलिक्खति ॥ १३४० ॥

अग्घायते त्ति वा बूया उवग्घाय त्ति वा पुणो । आचिक्खति त्ति वा बूया ८ तथा उच्चंपति त्ति वा ॥ १३४१ ॥ २०

रसायते त्ति वा बूया अस्सायेति त्ति वा पुणो । तथा विगिल्लते व त्ति तथा आतिअ[ति] त्ति वा ॥ १३४२ ॥

जेमेति भुंजते व त्ति आहारं कुरुते त्ति य । अण्हेते व त्ति ब्रा बूया भक्खते ख्वाति वप्फत्ति ॥ १३४३ ॥

फरिसायते त्ति वा बूया उवप्फरिस्सते त्ति वा । सुहफरिसं त्ति वा बूया फस्सं वेदयति त्ति वा ॥ १३४४ ॥

आगारेति त्ति वा बूया तथा वाहरति त्ति वा । राते त्ति व जो बूया तथा एमि वा पुणो ॥ १३४५ ॥

जे यऽण्णे एवमादीया सदा आहारसंसिता । तेषिं संकित्त्णासदा आहारसममादिसे ॥ १३४६ ॥ २५

अब्भंतरेसु जे सदा अब्भंतरतरेसु य । ते वि आहारसदेहिं तुल्लत्थे उवधारए ॥ १३४७ ॥

॥ आहारसम्मत्ति ॥ ८० ॥ छ ॥

[८१-८५ णीहारपडलं]

[८१ दस णीहारा]

चँक्खु-१ सोत्तेण २ घाणेण ३ देहफरिसेण ४ जिन्मया ५ ।

हत्थ ६ पादेण ७ सीसेण ८ वाहूहिं ९ भमुदाहि य १० ॥ १३४८ ॥

णीहारं कुरुते चेव उवयोगेहि जेहि तु । जघा य होति णीहारे दसेताणुवधारए ॥ १३४९ ॥

दिरसते सदरूपेण गिस्संघति पुणो पुणो । विणिट्ठेते गिस्ससति ओट्ठं गिवोहए तथा ॥ १३५० ॥
 'णिट्ठेलेउ जिम्मं तु सुट्ठिं वा वि पमुच्चति । विक्खिवे अंगुलीओ य दंताणं च विसोघह ॥ १३५१ ॥
 हत्व-पादं पसारति स्तिरेण मुमकाहि य । आकारेण विसज्जेति णीहारमिति गिहिसे ॥ १३५२ ॥
 चलाणं वाहिराणं च बग्गवज्जाणमेव य । सुभा-ऽसुभफलं जं जं णीहारेसु वि तं वदे ॥ १३५३ ॥
 5 णीहारेति णीहारति चि अवकट्टति गिक्कट्टति । गिसारेति [गिसरति] गिक्खुस्सति विकट्टति ॥ १३५४ ॥
 गिक्खुट्ठे गिगते छुट्ठे उकाट्टिय विकट्टिते । अवकट्टिते पराहूते पराजित परमुट्ठे ॥ १३५५ ॥
 गिसारिते गिस्सरिते अवचत पसारिते । विप्पसारित वाविट्ठे उव्वेह्वित पसारिते ॥ १३५६ ॥
 तथा विक्खिण्ण गिक्खिण्णे विप्पकिण्णे विणासिते । अवकिण्णे परिमते अवमाणित विमाणिते ॥ १३५७ ॥
 चल-बग्ग-धाहिरा [चि]य वे सदा पुच्चकित्तता । ते विमे य उदीरता णीहारसमका भवे ॥ १३५८ ॥ छ ॥

[८२-८५ दस आहाराहारा आहारणीहारा णीहाराहाराइ]

आहारियम्मि आहारे आहारो जति जायति । एतं आहारमाहारं वियोगे अंगचिंतओ ॥ १३५९ ॥
 आहारियम्मि आहारे णीहारे जति जायति । एतं आहारणीहारं वियाणे अंगचिंतओ ॥ १३६० ॥
 आहारितम्मि णीहारे आहारो जति जायति । एतं णीहारआहारं वियोगे अंगचिंतओ ॥ १३६१ ॥
 आहारियम्मि णीहारे णीहारो जति जायति । एतं णीहारणीहारं वियाणे अंगचिंतओ ॥ १३६२ ॥

15 बह्वो आहार-णीहार मिससका जति जायति । तनाहारं जहिता णं अण्णमाधारए पुणो ॥ १३६३ ॥
 पुरिमेण पुरिमं जाणे पच्छिमेण य पच्छिमं । वत्तमाणम्मि आहारे वत्तमाणं वियागरे ॥ १३६४ ॥
 पुण्णामम्मि य आहारे पुरिसत्थं वियागरे । धीणामे य धिया अत्थं णणुसं च णणुसके ॥ १३६५ ॥
 उत्तमम्मि य आहारे उत्तमत्थं वियागरे । मज्झिमे मज्झिमं अत्थं हीणे हीणत्थमादिसे ॥ १३६६ ॥
 आहारम्मि य आहारे पसत्थं अत्थमादिसे । णीहारम्मि य आहारे अत्थं पुच्चं वियागरे ॥ १३६७ ॥

॥ णीहारपङ्कलं सम्मत्तं ॥ ८१-८५ ॥ छ ॥

[८६-९५ दिसापङ्कलं]

[८६ सोलस पुरत्थिमाणि]

पुरत्थिमाणि यक्कामि सोलसंगे जग्गा तथा । अणागतताणि जंगेव पसत्थं तत्थऽणागतं ॥ १३६८ ॥
 अत्थलाभं जयं बद्धिं पुच्छे एताणि आमसं । पुरत्थिनं आगमिस्सं सव्वरमत्थि चि गिहिसे ॥ १३६९ ॥

25 आगामिभदं पुरिसं एससकहाणमादिसे । इहाऽऽगमेसमदं च पयमाणं वि गिहिसे ॥ १३७० ॥
 पुरिसस्सऽयविदं पुच्छे बूया तं पुरत्थिमं । पिआ अत्थविदं पुच्छे तं पि बूया पुरत्थिमं ॥ १३७१ ॥
 तद्वाऽऽगमेऽमहा य गम्मिणीणं पुरत्थिमा । पुरत्थिमं व भावुं कण्णा तु लभते वरं ॥ १३७२ ॥
 गम्मं च परिपुच्छेज्ज गम्ममागामिमादिसे । गम्मिणिं परिपुच्छेज्ज चिरा पुसं पयाहिति ॥ १३७३ ॥
 कम्मं च परिपुच्छेज्ज उत्तमं कम्ममादिसे । फलं तस्स य कम्मस्स आगामी लभते णो ॥ १३७४ ॥

30 पयासं परिपुच्छेज्ज चिरा तु गमणं वदे । पोत्तितस्स सण्णमस्स चिरेणाऽऽगमणं वदे ॥ १३७५ ॥

यं यं वापि णुं अणापुट्ठिं अपातयं । सस्सत्स या वि थापितं सव्वं णत्थि चि गिहिसे ॥ १३७६ ॥

१ °गिट्ठेते गि' इ० त० ॥ २ गिहेतेतु गि' इ० त० विना ॥ ३ विक्खिण्ण इ० त० विना ॥ ४ गिरस्सति इ० त० ॥
 ५ गिरस्सति गिगते पुच्छे इ० त० विना ॥ ६ गिस्सरति इ० त० विना ॥ ७ विक्खिण्ण गिक्खिण्णे इ० त० विना ॥
 ८-९ वियागरे इ० त० विना ॥ १० जाणि य इ० त० विना ॥ ११ इत्थिमाणागतं, पयण्णं, इ० त० एव वान्ते ॥

वद्धत्स भोक्खं खेमं च संधिं च जयमेव य । आरोगं जीवितं व त्ति वस्सारत्तो य उत्तमो ॥ १३७७ ॥
 वस्सारत्तं च पुच्छेज्ज यूया वासमणागतं । पुरत्थिमे महामेहा महायासं करिस्सति ॥ १३७८ ॥
 णट्ठं च परिपुच्छेज्जा अत्थि णट्ठं ति णिदिसे । णट्ठमाधारइत्ता य यूया णट्ठं पुरत्थतो ॥ १३७९ ॥
 कंतिमिं दिसं ति वा यूया पुरिमं ति वियागरे । घण्णं घणं ति पुच्छेज्ज घण्णं तेवं वियागरे ॥ १३८० ॥
 जं किंचि पसत्थं सा सब्वमत्थि त्ति णिदिसे । ['जं किंचि अप्पसत्थं च सब्वं णत्थि त्ति णिदिसे ॥ १३८१ ॥] ८
 उवातं णिदिसे घण्णं दिसं यूया पुरत्थिमं । साधारणं वदे अत्थं धी-पुमंसस्सज्जागतं ॥ १३८२ ॥
 जथा पुण्णामवेयेसु सब्बो अत्थो सुभा-ऽसुभो । एवमेतेसु पुरिमेसु सब्वं यूया अणागतं ॥ १३८३ ॥
 अणागतेसु सदा जे पुव्वं संपरिकित्तिता । ते चेव सदा पुरिमाणं जाणे तुहे फलेण तु ॥ १३८४ ॥

॥ पुरत्थिमाणि समत्ताणि ॥ ८६ ॥ छ ॥

[८७ सोलस पच्छिमाणि]

10

सोलस पच्छिमाणंगे अतिवत्ताणि जाणे तु । ताणि साधारणे अत्ये अतीते णर-णारिणं ॥ १३८५ ॥
 अत्यलामं जयं वा वि वद्धिं वा जति पुच्छति । पच्छतो य त्तमत्थि त्ति सेसं णत्थि त्ति णिदिसे ॥ १३८६ ॥
 पुरिसं च परिपुच्छेज्ज मातूणं पच्छिमो भवे । इत्थिं च परिपुच्छेज्जा भगिणीणं पच्छिमा भवे ॥ १३८७ ॥
 पुरिसत्थविधं पुच्छे पच्छतो त्ति वियागरे । पुच्छे यियां अत्थविदं पुच्छे पच्छतो त्ति वियागरे ॥ १३८८ ॥
 कण्णं च परिपुच्छेज्जा भगिणीणं पच्छिमा भवे । पच्छिमं चेव मातूणं खिप्पं च उभमे वरं ॥ १३८९ ॥ 15
 गब्बं च परिपुच्छेज्ज णत्थि गब्बो त्ति णिदिसे । गच्छिमिं परिपुच्छेज्ज वियाणं पच्छिमं वदे ॥ १३९० ॥
 कम्मं च परिपुच्छेज्ज पच्छा कम्मं वियागरे । अप्पफळं वहुवेसं णराणं कम्ममादिसे ॥ १३९१ ॥
 पवासो' पुच्छते णत्थि पोसितो पच्छओ गओ । णिरत्थकं च तं यूया खियायाऽऽगमणं वदे ॥ १३९२ ॥
 धंपं पुच्छे ण भवति वद्धो खिप्पं च सुधाति । भयं खेमं च संधिं वा विगद्दो य णिरत्थको ॥ १३९३ ॥
 रोगं मरणमणावुट्ठिं आतयं सस्सवापदं । विप्पयोगं विवादं च सब्वमत्थि त्ति णिदिसे ॥ १३९४ ॥ 20
 जीवित जयमारोगं वस्सारत्तं सवासकं । णट्ठिकं सस्ससंपत्तिं सब्वं णत्थि त्ति णिदिसे ॥ १३९५ ॥
 क्तमिं दिसं ति वा यूया पच्छिमं ति वियागरे । घण्णं घणं ति पुच्छेज्ज अघण्णं ति वियागरे ॥ १३९६ ॥
 अप्पसत्थं च जं किंचि सब्वमत्थि त्ति णिदिसे । जं किंचि पसत्थं सा सब्वं णत्थि त्ति णिदिसे ॥ १३९७ ॥
 यण्णतो फालगं यूया पच्छिमं दिसमादिसे । अप्पसत्थं वदे अत्थं अतीतं णर-णारिणं ॥ १३९८ ॥
 अतिवत्तेसु आदेसो जथा दिट्ठो सुभा-ऽसुभो । पच्छिमेसु वि एमेव फळं यूया सुभा-ऽसुभं ॥ १३९९ ॥ 25
 अतिवत्तेसु जे सदा पुव्वं तु परिकित्तिता । पच्छिमेसु वि एमेव तुह्ये फळतो वदे ॥ १४०० ॥

॥ पच्छिमाणि ॥ ८७ ॥ छ ॥

[८८ सत्तरस दक्खिणाणि]

जाण्ये दक्खिणाणंगे ताणेण दक्खिणाणि तु । पुरिसत्थे पसत्थ्याणि णिदिसे दस सत्त य ॥ १४०१ ॥
 सामोगतं पदे घण्णं दक्खिणाणं दिसमादिसे । यत्तमागं सुभं अत्थं पुरिसागं पदेवये ॥ १४०२ ॥ 30
 दक्खिणेसु जथा दिट्ठो सब्बो अत्थो सुभा-ऽसुभो । दक्खिणेसु वि एमेव फळं यूया सुभा-ऽसुभं ॥ १४०३ ॥ छ ॥

१ जीवितं अत्थि वस्सा' ६० त० ॥ २ क्तमिं ६० त० ॥ ३ च पुरिसागं च न्यायः पाठः सम्भन्धानुकारेणात्रापि पठेत्ति ॥
 ४ इत्थि वान्तर्गतमुत्तरां ६० त० एव वान्तं ॥ ५ एते पच्छिमे णत्थि ६० त० ॥ ६ पच्छित्तो गतो ६० त० मिना ॥
 ७ पच्छिमेव तु एमेव सत्त० ॥ ८ दक्खिणेण तु सं ३ ३० ॥ ९ घण्णं ६० त० ॥

[८९ सत्तरस उत्तरा]

जाणेव हांति ग्रामाणि ताणेव उत्तराणि तु । धीर्णं कक्षाणमागीर्णं णराणं ण प्ससस्ते ॥ १४०४ ॥
 सामं काळं वदे वणं उत्तरं णिदिसे दिसं । वत्तमागं सुमं अत्थं पमदाणं पवेदये ॥ १४०५ ॥
 जघा वामेसु सर्व्वेसु अत्यो ५ विट्ठो सुभा-ऽसुभो ७ । उत्तरेसु वि एमेव फलं धूया सुभा-ऽसुभं ॥ १४०६ ॥
 वाममागेसु जे सदा पुव्वमेव तु कित्थिय । उत्तरेसु वि ते चेव सदे तुल्लफले वदे ॥ १४०७ ॥ छ ॥

[९० सत्तरस दक्खिणपुरच्छिमा]

पुरिमाणं दक्खिणणाणं च मज्जे अंगणि जाणि तु । पुव्वदक्खिणभागाणि पसत्याणि वियागरे ॥ १४०८ ॥
 अत्यलामं जयं वा वि वद्धिं च परिपुच्छति । साधारणं वदे अत्थं फलतो पुरिमदक्खिणं ॥ १४०९ ॥
 पुरिसं इत्थि च अत्थं च पुच्छे एताणि आमसं । पुरिमाणं दक्खिणणाणं च फलं वामिस्तमादिसे ॥ १४१० ॥
 कणं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभगत्ति य । धण्णा य सुहमागी य खिणं विज्जेहिते त्ति य ॥ १४११ ॥
 गन्धमरिथ त्ति जाणीया गन्धिणी दारकम्मि य । खिणं पजायते णारी कम्मं साधारणं वदे ॥ १४१२ ॥
 पयासो पुच्छिते सफलो पत्थं पुव्वदक्खिणं । दिसं गतो त्ति जाणीया सधणो खिणमेहिते ॥ १४१३ ॥
 वधं भयं विग्गाहं रोगं मरणं आतयं तथा । अबुद्धिं सरसवापत्ती सस्सं(सव्वं) णत्थि त्ति णिदिसे ॥ १४१४ ॥
 वट्ठस्स मोक्खं खेमं च संधिं चै जयमेव य । आरोगं जीवितं चेव उग्गाहं वाधितरस य ॥ १४१५ ॥
 वरसारत्तं च वासं च सुव्वं सव्वं नट्ठस्स दंसणं । तंहां त्तिचं तंहा वत्थं सुव्वमत्थि त्ति णिदिसे ॥ १४१६ ॥
 कतमं दिसं ति वा धूया वदे पुरिमदक्खिणं । धणं धणं ति पुच्छेज्जा वदे उक्कट्टमद्धिमं ॥ १४१७ ॥
 जं किंचि पसत्थं सा सव्वमत्थि त्ति णिदिसे । अप्सत्थं च जं किंचि सव्वं णत्थि त्ति णिदिसे ॥ १४१८ ॥
 उपात्तं णिदिसे वैणं दिसं पुरिमदक्खिणं । अत्थं अणागतं सव्वं पसत्थं णिदिसे सता ॥ १४१९ ॥
 अणागतेसु जे सदा जे सदा दक्खिणेषु थं । पुव्वदक्खिणसद्धानं ते सदे णिदिसे समे ॥ १४२० ॥ छ ॥

[९१ सत्तरस दक्खिणपच्चत्थिमा]

दक्खिणणाणं च सर्व्वेसं पच्छिमाण य अंतरां । अंगां ण प्ससस्ते जघा अत्यो णुंसको ॥ १४२१ ॥
 अत्यलामं जयं वद्धिं एताणि जति पुच्छति । जं किंचि पसत्थं सा सव्वं णत्थि त्ति णिदिसे ॥ १४२२ ॥
 अघणं दंसणं वा वि अणवज्जं णरं वदे । एवमेव य णारीणं गिरत्थं अत्यमादिसे ॥ १४२३ ॥
 गन्धं पुच्छे ण भवति गन्धिणी जण्ये मतं । कम्मपुच्छाय णिदिसे गिरत्थं कम्ममादिसे ॥ १४२४ ॥
 गिरत्थकं पयासं च पोसियं च गिरत्थकं । गतं अवरदक्खिणतो चिरफाले य णिदिसे ॥ १४२५ ॥
 वधं पुच्छे ण भवति वट्ठो खिणं च मुघर्त्ति । वट्ठस्स यावि मुत्तस्स पयासो सिग्गमेव उ ॥ १४२६ ॥
 रोमं पुच्छे ण भवति भयं पुच्छे भविस्सति । संधिं पुच्छे ण भवति विग्गाहो बहुसो भये ॥ १४२७ ॥
 जीवितं जयमारोगं उग्गाहं आतुररस य । वरसारत्तं च वासं च सस्सं नट्ठस्स दंसणं ॥ १४२८ ॥
 रोसं वत्थं धणं धणं भाणमिरमरियं जसं । जं च किंचि पसत्थं सा सव्वं णत्थि त्ति णिदिसे ॥ १४२९ ॥
 पराजयमणावुद्धिं रोगं मरणमातयं । सरसरम वा वि आवर्त्ति णत्थि नेत्रं वियागरे ॥ १४३० ॥
 कतमं दिसं ति वा धूया वदे अवरदक्खिणं । धणं धणं ति पुच्छेज्जा अधणं ति वियागरे ॥ १४३१ ॥
 मामोदानं वदे धणं दिसं अवरदक्खिणं । अप्सत्थं वदे अत्थं अतीतं णर-ऽणारिणं ॥ १४३२ ॥
 दक्खिणेषु य जे सदा अतीतेसु य जे भये । दक्खिणणापरसद्धानं ते सदे णिदिसे समे ॥ १४३३ ॥ छ ॥

१-५-७ एतच्चदानगतं पाठ. ६-१० नामि ॥ २ परमदक्खिणं ६-१० ॥ ३ य धयं सव्वं ॥ ४ हन्वित्तान्तगतं.
 पाठ ६-१० १९ वरंते ॥ ५ धणं ६-१० ॥ ६ य त्ति अं ६-१० ॥

[९२ सत्तरस उत्तरपच्चत्थिमा]

पच्छिमाणं च सव्वेसिं उत्तराणं च अंतरा । अप्पसत्था भवंतेते जथा अत्ये णपुंसके ॥ १४३४ ॥
आदेसो तु जथा दिट्ठो [पुव्वं] दक्खिणपच्छिमे । तथेव सव्वमादेसं वूया उत्तरपच्छिमे ॥ १४३५ ॥
वण्णतो फालतं वूया दिसं च अवरोत्तरं । अप्पसत्थं च णारीणं अत्थं वूया अतिच्छियं ॥ १४३६ ॥ छ ॥

[९३ सत्तरस उत्तरपुरत्थिमा]

उत्तराणं च जे अंगा पुरिमाणं च अंतरा । धीणामत्ये पसत्था तु विण्णेया दस, सत्त य ॥ १४३७ ॥
पुव्वदक्खिणतो दिट्ठो जथा अत्यो सुभा-ऽसुभो । तथेव पुव्वुत्तरतो सव्वं वूया सुभा-ऽसुभं ॥ १४३८ ॥
सामकालं वदे वण्णं दिसं च पुरिसुत्तरं । अणागतं सुभं अत्थं णारीणं तं पवेदये ॥ १४३९ ॥
अणागता य जे सदा जे य वामेसु क्कित्ता । पुरिसुत्तरसदाणं एते सदे समे वदे ॥ १४४० ॥ छ ॥

[९४ दुवालस उद्धभागा]

पुरिमेण उच्चं जाणेज्जो पच्छिमे हस्समादिसे । वामदक्खिणतो वा वि चतुरस्सं वियागरे ॥ १४४१ ॥
पुरिमेण थूलं जाणेज्जो पच्छिमेण कित्तं वदे । समोवयितगतं च वामदक्खिणतो वदे ॥ १४४२ ॥
उल्लोकिताम्मि सव्वम्मि आमहम्मि सिरम्मि य । उम्मज्जिताभिमध्ये य दूरम्मट्ठे तथेव य ॥ १४४३ ॥
उट्ठिते वस्सिते यावि उक्खिणुत्तरितम्मि य । उण्णते उण्णमंते य सदे आकासकम्मि य ॥ १४४४ ॥
जं चऽण्णं एवमादीयं आकासपडिह्वितं । एतम्मि सहरूवम्मि दिसं उट्ठं वियागरे ॥ १४४५ ॥ छ ॥

[९५ तेरस अधोभागा]

ओलोकिते य सव्वम्मि अवमट्ठा-ऽपमज्जिते । णिम्मज्जिते य णिम्मट्ठे सव्वमोसारितम्मि य ॥ १४४६ ॥
णिकिखत्ते णिहिते यावि ओतिण्णोत्तरितम्मि य । उम्मट्ठे ये णिउट्ठे य सव्वभूमिगतम्मि य ॥ १४४७ ॥
जं चऽण्णं एवमादीयं अधोभागं विधीयते । एतम्मि सहरूवम्मि दिसं वूया तु हेट्ठिमं ॥ १४४८ ॥
॥ दिसापडलं ॥ ८८-९५ ॥ छ ॥

[९६-९९ पसण्णा-ऽपसण्णपडलं]

[९६ पण्णासं पसण्णा]

अव्वमंतरे य उम्मट्ठे पसण्णते वियागरे । अव्वमंतरत्थेण वदे विसिट्ठतरकं फलं ॥ १४४९ ॥
एताणि आमसं पुच्छे अत्यलामं जयं तथा । जं च किंचि पसत्थं तं सव्वमत्थि ति णिदिसे ॥ १४५० ॥
पुरिसं च परिपुच्छेज्जा सिद्धत्थो सुभगो ति य । धण्णो य सुहभागी य सौमोईवहुलो भवे ॥ १४५१ ॥
इत्थिं च परिपुच्छेज्जा सिद्धत्था सुभग ति य । धण्णा य सुहभागी य सम्मोईवहुला भवे ॥ १४५२ ॥
पुरिसस्सऽत्यविधं पुच्छे सम्मोईसु मविस्सइ । धिय्या अत्यविहं पुच्छे सम्मोई य भविस्सइ ॥ १४५३ ॥
कण्णं च परिपुच्छेज्जा धण्णा विज्जिहिते लहुं । रण्णो य अव्वमंतरां भत्तारं सा लमिस्सति ॥ १४५४ ॥
गव्वं च परिपुच्छेज्जा अत्थि गव्वो ति णिदिसे । गव्विणि परिपुच्छेज्जा जण्ये पुत्तमुत्तमं ॥ १४५५ ॥
कम्मं च परिपुच्छेज्जा रण्णो अव्वमंतरं वदे । महाजणस्स णिदिसं करिस्सति य कम्मणा ॥ १४५६ ॥
पवासं परिपुच्छेज्जा सफलो ति वियागरे । पउत्थं परिपुच्छेज्जा संवणो खिप्पमेहिति ॥ १४५७ ॥

१ °णं च प° हं० त० ॥ २ °मेरहस्स° हं० त० ॥ ३ ओणते हं० त० ॥ ४ °सजम्मि हं० त० ॥ ५ या णिउट्ठे य हं० त० ॥ ६ सहलूपम्मि हं० त० ॥ ७ सौमाई° सं ३ पु० ॥ ८ हत्थिहात्तगततज्जुत्तराई हं० त० एव वर्तते ॥ ९ संघण्णो हं० त० विना ॥

वधं भयं विगृहं [च] रोगं मधु य वासकं । अपातयं सरस्वापत्तिं सव्यं गत्थि चि णिहसे ॥ १४५८ ॥
 धद्वस्त मोक्ख णासं विजयाऽऽरोगं च जीवितं । आतुरस्स समुद्धानं वस्सारत्तं सवासकं ॥ १४५९ ॥
 णट्टस्स दंसणं वा वि सस्ससंपत्तिमुत्तमं । मिति सम्मोइ संपीति सव्यमत्थि चि णिहसे ॥ १४६० ॥
 जं च किंचि पसत्थं सा सव्यमत्थि चि णिहसे । अप्पसत्थं च जं किंचि सव्यं गत्थि चि णिहसे ॥ १४६१ ॥
 सव्यमन्वन्तरत्थं च पुण्णामत्थो य जो भवे । जधुत्तमगुणंतूणं पसण्णोसु वि तं वदे ॥ १४६२ ॥ छ ॥

[९७ पण्णासं अप्पसण्णा]

अब्भंतरे य णिम्मट्ठे अप्पसण्णे वियागरे । अत्थहारिं विणासं च सव्यं च असुमं वदे ॥ १४६३ ॥

णमो अरहंताणं, णमो आयरियाणं, णमो ऋरिक्खमुत्ताणं, जे एकपदं द्विपदं बहुपदं वा विज्जामंतपर्यं धारयंति
 तैसिं णमोकारद्धत्ता इमं विज्जा पजोजयिस्सं, सा मे विज्जा समिज्जतु, णमो अरहतो वट्टमाणस्स, जधा भगवती अंगदेवी
 सहस्सपरिजारा समणं भगवंतं महावीरं पुंथि सच्चपतिट्ठिए लोए तेणं सच्चवयणेणं सा मं अंगदेवी उत्थायु, जधा द्विस्स-
 णस्स अट्टलोगस्स मघवं देवाणं इंदे आधिपचं पोरेपचं कारयति एतेण सच्चवयणेण सा मं अंगदेवी उवत्थाययु, उत्तरस्स
 अट्टलोगस्स ईसाणे महाराया आधिपचं पोरेपचं कारयति एतेण सच्चवयणेण सा मं अंगदेवी उवत्थाययु, तथेव देविदस्स
 चत्तारि लोमपाला देवा य वयणेणमुपगता एतेण सच्चवयणेण अमुको अत्थो सिज्जतु त्ति । मणम्मि सिक्खिते पढितव्वा ।
 छट्ठमगह्णी एस विज्जा ॥

णपुंसकाणं जो अत्थो बाहिरत्थो य जो भवे । तं सव्यं अप्पसण्णोसु तथेव फलमादिसे ॥ १४६४ ॥ छ ॥

[९८-९९ पण्णासं अप्पसण्णपसण्णा पसण्णअप्पसण्णाणि य]

अप्पसत्थे पसत्थे य पण्णासं वेव णिहसे । अब्भंतरा संविमट्ठा ण ते पढमकप्पिता ॥ १४६५ ॥

पसत्थे अप्पसत्थे य पण्णासं वेव णिहसे । अब्भंतरा तु अपमट्ठा अप्पसत्था भवति ते ॥ १४६६ ॥

अब्भंतरा तु पण्णासं आमट्ठा जे अवत्थिता । पसत्थे ते वियाणेज्जा पसत्थतरका हि ते ॥ १४६७ ॥

अब्भंतरा य पण्णासं विमट्ठा जे पुणो पुणो । अप्पसत्थे वियाणीया अप्पसण्णतरा हि ते ॥ १४६८ ॥

॥ पसण्ण-अप्पसण्णाणि ९६-९९ ॥ छ ॥

[१००-३ वामपङ्कलं]

[१००-१०३ सोलस वामा पाणहरा इच्चाइ]

अच्छीणि कत्ता संत्ता य हितयं णामी कडी तथा । पस्सं संधितला सव्वे वामा पाणहरा भवे ॥ १४६९ ॥

हिययं १ वाहुसंधी य ३ ककरा ५ हत्था ७ कम्मादिवा ८ ।

गोप्पा १० अर्कराणिकण्णा य १२ संत्ता १४ पादा य १६ सोलस ॥ १४७० ॥

एते तु पीलिता सव्वे वामा धणहरा भवे । अपीलिता य उम्मट्ठा सोलसेव धणाहरा ॥ १४७१ ॥

णपुंसका तु णिम्मट्ठा वामा सोवद्दया मता । णपुंसके हि पावतरं फलं तेहि वियागरे ॥ १४७२ ॥ छ ॥

अंगुट्ठा ४ अंगुठीओ य २० बाल ३० णिम्मज्जिता तथा । तीसं तु साहा वामे अंगे एते वियागरे ॥ १४७३ ॥

संत्तावामेसु एतेसु धीणा धूया उरद्वं । धहुसाधारणं अत्थं एतप्पचयमादिसे ॥ १४७४ ॥

पुरिसं च परिपुच्छेज्ज धहुसाधारणं यदे । महाजणं च पोसेति पेसेति य महाजणं ॥ १४७५ ॥

इत्थि च परिपुच्छेज्ज धहुसाधारणं यदे । महाजणं वा पोसेति पेसेति य महाजणं ॥ १४७६ ॥

पुरिमरमत्थविधं पुच्छे तं साधारणमादिसे । धिया अत्थविधं पुच्छे तं पि साधारणं यदे ॥ १४७७ ॥

१ एत्थो जयो भये हं० तं० २ यि यं यदे हं० तं० ३ हरिकभुत्तारं सं १ पु० । हरिकभुत्तारं ति० ४ पसण्णो
 य विया ५० तं० ५ एत्तण्णनरा हं० तं० दिना ६ अय अश्चिणी फणी च इति भिन्नपदविधाने अष्टादशसंख्या भवति, अजिटा
 ऋणे, अगः 'अश्चिणे अगः' इत्यं एतन्मय अश्चिणीकण्णा इति एवमन्वन्तरत्थो विधानमिति, अत्रायं तत्रा एव अमायम् ॥

कणं च परिपुच्छेज्ज सिग्घं अभिवरा भवे । महाणपेसकं वा पि समिद्धं लभते वरं ॥ १४७८ ॥
 गन्मं च परिपुच्छेज्जा बहुसो तु पजायति । गन्मिणीं परिपुच्छेज्जा वामणं जणयिस्सति ॥ १४७९ ॥
 कम्मं च परिपुच्छेज्जा बहुसाधारणं वदे । महेप्फलेण कम्मणे तोसेहिंति महाजणं ॥ १४८० ॥
 पवासं परिपुच्छेज्जा भविस्सति बहुप्फलो । पोसितं परिपुच्छेज्जा लभिस्सति बहुं धणं ॥ १४८१ ॥
 वयं च परिपुच्छेज्जा बहुसो दज्झति त्ति य । वद्धस्स मोक्खं पुच्छेज्जा खिणं मुच्चिस्सते त्ति य ॥ १४८२ ॥ ५
 भयं च परिपुच्छेज्जा बहुसो त्ति वियागरे । खेमं च परिपुच्छेज्जा चिरं खेमं भविस्सति ॥ १४८३ ॥
 संधिं च परिपुच्छेज्जा साधारणमादिसे । विग्गहं परिपुच्छेज्ज महाणेण तु विग्गहो ॥ १४८४ ॥
 जयं च परिपुच्छेज्ज जयिस्सति महाजणं । आरोगं परिपुच्छेज्ज आरोगं सउवद्वं ॥ १४८५ ॥
 रोगं च परिपुच्छेज्ज बहुरोगो भविस्सति । मरणं च परिपुच्छेज्ज परिक्किट्ठो मरिस्सति ॥ १४८६ ॥
 जीवितं परिपुच्छेज्ज सरोगं जीवितं चिरं । आवापितं च पुच्छेज्जा समुद्धानं चिरा भवे ॥ १४८७ ॥ 10
 अणावुट्ठिं च पुच्छेज्जा णत्थि तेवं वियागरे । वस्सारत्तं च पुच्छेज्जा बहुमेधं वियागरे ॥ १४८८ ॥
 अपातयं च पुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । वासं च परिपुच्छेज्ज चिरं वासं तु णिदिसे ॥ १४८९ ॥
 सस्सस्स वापयं पुच्छे णत्थि तेवं वियागरे । सस्सस्स संपयं पुच्छे विचित्ता सस्ससंपया ॥ १४९० ॥
 अप्पसत्थं च जं किंचि सव्वं णत्थि त्ति णिदिसे । जं च किंचि पसत्थं सा सव्वं साधारणं वदे ॥ १४९१ ॥
 तथा खेत्तं तथा वत्थुं सव्वं साधारणं वदे । धणं धणं ति पुच्छेज्जा तं पि साधारणं वदे ॥ १४९२ ॥ 15
 साधारणमि णत्थस्सते देवते णिधिम्मि य । पुप्फे फले व देसे वा णगरे गाम गिहे वि वा ॥ १४९३ ॥
 पुरिसे चतुप्पदे वा वि पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किविहगे वा वि परिसप्पे तथेव य ॥ १४९४ ॥
 पाणे वा भोगेया वा वि वत्थे आभरणे तथा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगणे तथा ॥ १४९५ ॥
 लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेसु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेसु य ॥ १४९६ ॥
 एतम्मि पेक्खियामासे सदे रूचे तथेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचित्तओ ॥ १४९७ ॥ 20

॥ चामा सम्मत्ता ॥ १००-१०३ ॥ छ ॥

[१०४ एकारस सिवा]

णिडालं १ दस णिद्धाणि ११ उम्महाणि जया भवे । एकारस सिवा एते पुच्छिवम्मि पसस्सते ॥ १४९८ ॥
 जघा पुण्णामधेयेसु आदेसो तु विधीयते । विसिद्धतरगं अत्थं तथा बूया सिवेसु वि ॥ १४९९ ॥ छ ॥

[१०५ एकारस धृला]

25

वैमो ऊरु २ वरो ३ पट्टी ४ सिरं ५ गंदा ७ यणा ९ फिओ ११ ।

एते धुद्धा पसस्सते शुद्धं वड्ढं वियागरे ॥ १५०० ॥

एवाम्णि आमसं पुच्छे पुरिसं धी णपुंसकं । उदगेचर परीसपं मच्छ पक्खि चतुप्पदं ॥ १५०१ ॥

कीटं किविहगं वा वि जं चड्ढणं जंगलं भवे । सव्वयुद्धं वियाणीया शुद्धं वड्ढं वियागरे ॥ १५०२ ॥

सजीवं जीयमाघारे सजीवमिति णिदिसे । शुद्धो किओ त्ति वा बूया शुद्धो तेवं वियागरे ॥ १५०३ ॥ 30

अपं वटुं ति आहारे वटु तेवं वियागरे । समे सदे य जाणेज्जा शुद्धा जे मणिके मता ॥ १५०४ ॥

मूलं वैदं वरदं ति परिवृदं ति वा पुणो । पीणं ववचितं व ति पीवरं मांसलं ति वा पुणो ॥ १५०५ ॥
 महासारं महाकायं अतिकायं ति वा पुणो । भंडं ति बहलं व ति पुत्यव्या मेदितं ति [वा] ॥ १५०६ ॥
 रूढं ति समतुवं ति उद्दुमातं ति वा पुणो । सैम्मचं अतिपुणं ति अब्वंगं ति व जो वदे ॥ १५०७ ॥
 जे यऽणे एवमादीया पञ्चया शुद्धसंसिता । तस्स संकित्तणासहा तं शुद्धसममादिसे ॥ १५०८ ॥ छ ॥

[१०६ णव उवथूला]

जंघा २ सितो ३ ऽघरा ५ चाहू ७ हत्यपादा तवेव य ९ । उवथूलाणि एताणि वम्मट्टाणि पसस्सते ॥ १५०९ ॥ छ ॥

[१०७ पणुवीसं जुत्तोपचया]

अंगुहा ४ अंगुलीओ य २० णिहालं २१ चिबुकोट्टयो २४ ।

णासा य २५ जुत्तोपचया जघुत्तेणं विचारो ॥ १५१० ॥ छ ॥

[१०८-१०९ वीसं अप्पोवचया वीसं णातिकिसा य]

तेवेव अप्पोवचया ते व णातिकिसा मता । अंगुहा ४ अंगुलीओ य २० जघुत्तेणं विचारो ॥ १५११ ॥ छ ॥

[११० सत्तरस किसा]

गोप्फा २ कैण्णुगसंधी य ४ मणिवंधा ६ एवत्यगा ७ ।

[.....] संधी ९ मुमासंधी ११ संत्ता १३ पट्टी य १४ कुकुवा १५ ॥ १५१२ ॥

अवहू १७ सत्तरसा रत्ता किसे एते वियाणिया । चळं यद्धं मुद्धं वत्तं कैस्सं जत्तं विचारो ॥ १५१३ ॥

शुद्धं किस्सं ति वा बूया कैस्सं वेवं विचारो । समे सदे य जाणेज्जो किसा ये मणिके मता ॥ १५१४ ॥

कैस्सं परिकसं व ति धैणुं ति अणुद्धं ति वा । दुब्वलो ति किसे व ति उल्लुत्तो ति^१ व जो वदे ॥ १५१५ ॥

णिम्मंसको ति वा बूया तथा अट्टिकेवरं । अट्टिकं चैम्मणद्धं ति तथा अट्टिकसंक्कला ॥ १५१६ ॥

मुक्कलो ति व जो बूया णिस्तुको ति व जो वदे ।^२ओहीणं परिहीणं ति मातं ति भैलितं ति वा ॥ १५१७ ॥

जे यऽणे एवमादीया पञ्चया किससंसिता । णामसंकित्ते तेस्सि किसेहि सममादिसे ॥ १५१८ ॥ छ ॥

[१११ एकारस परंपरकिसा]

परंपरकिसा रत्ता वैल्लका २ जाणुद्ध ४ डेहिका ६ ।

कोपर ८ कैस्सं ९ रोग(रोम) १० हणं ११ अण्णसत्या भयंति ते ॥ १५१९ ॥

धूलेसु मूळमत्तं उवथूले थैणुत्तरं । जुत्तोपचये जुत्तया ततो बूया थैणुत्तरं ॥ १५२० ॥ छ ॥

[११२ छवीसं दिग्घा]

चाहू २ पपाहू ४ जंघो ६ रु ८ सोलसंगुलिओ २४ तथा ।

केसे २५ पट्टी य २६ जाणीया दीहाणेताणि अंगवी ॥ १५२१ ॥

दीहाणेताणि छवीसं वम्मट्टाणि जता भवे । पुच्छितम्मि पसस्सते ईत्थेणमणिदिसे ॥ १५२२ ॥

१ धई वरदं ति परिकटं हं तं ॥ २ मंदं ति घट्टं व ति पुच्छया मे^३ हं तं ॥ ३ संसत्तं यत्तं ॥ ४ पुच्छं ति हं ॥ ५ तं घट्टं समं घं ३ ति ॥ ६ तं घट्टं समं हं तं ॥ ६ जत्तुगं हं तं ॥ ७ कस्सं जंते वि^४ हं तं ॥ ८ चिस्सं हं तं ॥ ९ वरसा हं तं ॥ १० कस परिकसं व्व यत्तं ॥ ११ अण्णं वि वण्णं ति हं तं ॥ १२ ति दिया मो पदे हं तं ॥ १३ चम्मणिट्टं घं १ पुं ॥ चम्मणिट्टं हं तं ॥ १४ सुक्खसो ति व जो बूया णिस्तुक्खरो ति हं तं ॥ १५ ओरीणं हं तं ॥ ओहीणं ति हं तं ॥ १६ मलिनं ति हं तं ॥ १७ मुक्कलं हं तं ॥ १८ कोसलोगहणं हं तं ॥ १९-२० कर्णतरं हं तं ॥ २१ इच्छेण हं तं ॥ २२ विना ॥

दीहो पयो दीहमायुं दीहकालं च गिहिसे । दीहं धीपुमंसव्वमेत्ती पेम्मं च स गिहिसे ॥ १५२३ ॥

दीहं च पीतिसंजोगं संधी जोगं च गिहिसे । समे सदे य जाणेज्जा दीहा जे मणिके मता ॥ १५२४ ॥

दीहैमुच्चं महंतं ति रँज्जुको रण्हको त्ति वा । केओ अंछणिका व त्ति वरत्त त्ति अहि त्ति वा ॥ १५२५ ॥

वसो खलु धयो व त्ति जुगमँत्यो त्ति वा पुणो । मुसलं दंडको लट्ठी णारायो तोमरो त्ति वा ॥ १५२६ ॥

चाप त्ति हडिका व त्ति कौतं कंडं ति वा पुणो । असिलट्ठी तरवच त्ति धँणुभाग त्ति वा पुणो ॥ १५२७ ॥

जे धँण्णे एवमादीया पायया (पञ्जवा) दिग्घसंसिता । तेसिं संकित्तासदा ते दिग्घसमका भवे ॥ १५२८ ॥

॥ दिग्घा[णि] सम्मत्ताणि ॥ ११२ ॥ छ ॥

[११३ छव्वीसं जुत्तप्पमाणदिग्घा]

मुम २ ऽक्खि ४ णासा ६ जत्तूणि ८ मेंढ ९ त्यविका ११ सिरो १२ ऽधरा १४ ।

जिन्मं १५ भुँह्वा १९ लोमाणि २० पाणिलेहा २६ तवेव व ॥ १५२९ ॥

जुत्तप्पमाणदीहा तु एते छव्वीसमाहिता । अपीलित्ता अणुम्मट्ठा पुच्छित्तम्मि पसस्सते ॥ १५३० ॥ छ ॥

[११४ सोलस ह्रस्ता किंचि दिग्घा]

ह्रस्तां य किंचि दिग्घा य सोलसंगे विवाहिया । पुरिमा किंचि उम्मट्ठा पुच्छित्तम्मि पसस्सते ॥ १५३१ ॥ छ ॥

[११५ सोलस ह्रस्ता]

ह्रस्ता य सोलसंगम्मि गिम्माट्ठा तु पुरत्थिमा । पुच्छित्ते ण पसस्सते ह्रस्तं चऽत्य विवागरे ॥ १५३२ ॥

दीहिसु जं फलं चुचं ह्रस्तं ह्रस्सेसु तं वदे । समे सदे य जाणेज्जो ह्रस्ता जे मणिके मता ॥ १५३३ ॥

रहसं मढहकं वत्ति संखित्तं सुडितं ति वा । रुद्धं ति सण्णिरुद्धं ति.संपीलितं ण पीलितं ॥ १५३४ ॥

संपिडितं पँडितं ति सन्नद्धं सन्निकासियं । अप्पं थोवं ति किंचि त्ति अतिथोवं ति वा पुणो ॥ १५३५ ॥

अँकुण्डितं संदितं ति तथा संवेडितं ति वा । उँत्सारितं ति गिम्मट्ठं अवमट्ठाऽपमन्नियं ॥ १५३६ ॥

जे यऽजे एवमादीया पायवा(पञ्जवा) हँससंसिता ।

तेसिं संकित्तासदा ते ह्रस्तसमका भवे ॥ १५३७ ॥ छ ॥

[११६ दस परिमंडला]

मत्यगो १ बाहुसीसाणि ३ जाणूसिरसाणि वे तथा ५ ।

यणा ७ णामी ८ फिओ चेव १० दसेते परिमंडला ॥ १५३८ ॥

सिरं १ ललाट २ गंडा य ४ संखे ६ कन्ने य ८ ककले १० । केयि एते वयसंति दसेव परिमंडले ॥ १५३९ ॥

एते सब्बे पसस्संति उम्मट्ठा परिमंडला । परिमंडलसदे य तुद्धत्ये उवघारए ॥ १५४० ॥

मंडलं ति व जो यूया परिमंडलमेव वा । अहागमंडलं व त्ति अघवा मंडलस्सति ॥ १५४१ ॥

णक्खत्तमंडलं व त्ति अँघवा जोहसमंडलं । आदित्तमंडलं व त्ति अघवा चक्कमंडलं ॥ १५४२ ॥

समयमंडलं व त्ति तवेव रिसिमंडलं । जं मंडलं ति वा यूया अघवा चक्कमंडलं ॥ १५४३ ॥

१ °मायं हं० त० विना ॥ २ संधं योगं हं० त० विना ॥ ३ दीहं मुच्चं महत्तं ति घ० ॥ ४ रज्जको हं० त० ॥ ५ वेसा अं० हं० त० ॥ ६ धयो घ० ॥ ७ °मच्छो त्ति हं० त० विना ॥ ८ त्ति कायकं ति हं० त० ॥ ९ धर्म-
माग हं० त० ॥ १० अण्ये हं० त० ॥ ११ पादोया हं० त० ॥ १२ °शुद्धंगरोमाणि हं० त० ॥ १३ रस्ता य कीयि हं० त० ॥
१४ अकुण्डितं हं० त० ॥ १५ ओत्सारितं सं ३ पु० ॥ १६ हुस्स हं० त० ॥ १७ हत्थिबान्दमत्तः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥

संस्त्रमंडलके व त्ति तथा मंडलैको त्ति वा । णापुण्णमंडलं व त्ति अधवा अट्टमंडलं ॥ १५४४ ॥
 मंडलासंति वा यूया अधवा ऐत्तमंडलं । उयलेयमंडलं व त्ति किमिमंडलिकारिका ॥ १५४५ ॥
 पंचमंडलिको व त्ति त्तैवेवापंचमंडलं । माकण्णीकण्णिकं व त्ति लक उद्धलक त्ति वा ॥ १५४६ ॥
 तलकण्णिक त्ति वा यूया यद्धको तलपत्तकं । परिहेरकं त्ति तलमं त्ति कण्णनलयकं त्ति वा ॥ १५४७ ॥
 खंडुकं सुंदिका व त्ति वेढको कण्णपालिको । णीपुरं त्ति व जो यूया कण्णुप्पलकं त्ति वा ॥ १५४८ ॥
 पण्णेलिक त्ति वा यूया तथा सककपट्टको । तथा पल्लयिकापट्टो तथा अकरपट्टको ॥ १५४९ ॥
 तघउत्तमंडलं व त्ति लोममंडलकं त्ति वा । बाहुमंडलकं व त्ति हत्यमंडलकं त्ति वा ॥ १५५० ॥
 तथा चक्रमंडलं व त्ति वातचक्रमंडलं । झल्लपीमंडलं व त्ति लेहपट्टिकमंडलं ॥ १५५१ ॥
 जे यउत्ते एयमादीया लोए मंडलपज्जया । णामसंकित्तणे तेसिं परिमंडलसमं भवे ॥ १५५२ ॥ छ ॥

[११७ चोद्दस करणमंडला]

करणोपसंहिता यउण्णे भयंति परिमंडला । 'त्ति जघा होंति णायग्ग कित्तयिस्सामि तं विधिं ॥ १५५३ ॥
 दक्खिणसस य बाहुसस मंडले १ चामकसस य २ । एताणि' वे ततियं च बाहुसंपातमंडलं ३ ॥ १५५४ ॥
 एत्तो चवत्थं विण्णयं सत्थिसंपातमंडलं ४ । करे करे य चत्तारि अंगुलीमंडलाणि य १२ ॥ १५५५ ॥
 इत्थाणं च दोण्डं वि अंगुष्ठेइंगुलीहि य । संपायमंडलाइं दो आलेक्खकरणेण य १४ ॥ १५५६ ॥
 परिमंडलेसु पुत्तुत्तं उम्मेत्तेसु तु जं फलं । फलं अणंतरं तत्तो यूया करणमंडले ॥ १५५७ ॥
 ॥ परिमंडलाणि करणमंडलाणि ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ छ ॥

[११८ वीसं वट्टा]

हत्य-पादंगुलीपेन्व्या २० वीसं वट्टे वियागरे । अभिमुद्दा पसस्सते अप्पसत्था परम्मुद्दा ॥ १५५८ ॥
 वटं ति य जो यूया तथा वट्टरं ति वा । अतिवटं ति वा यूया अदोवटं ति वा पुणो ॥ १५५९ ॥
 पेसाधगकवट्टो त्ति वट्टेलेणको त्ति वा । 'यट्टुखुरो त्ति वा यूया तथा वट्टमुद्दो त्ति वा ॥ १५६० ॥
 [.....] वट्टसीसो त्ति वा यूया वट्टमत्थो त्ति वा पुणो ॥ १५६१ ॥
 जं यउण्णे एयमादीयं वट्टोदाहरणं भवे । तसस संकित्तणासदा ते वट्टसमन्ना भवे ॥ १५६२ ॥

वट्टज्जायो ॥ ११८ ॥ छ ॥

[११९ चारस पुष्पूणि]

एरो १ ललाहं २ पट्टी य ३ पाद-पानितलाणि य ७ ।

कण्णसीदाणि ९ गंदा य ११ जिन्मा य १२ पिघुलाणि तु ॥ १५६३ ॥

पुष्पूणि चारसेताणि उम्मेत्ताणि पसरमते । समे सदे य जाणेज्जो जे पुष्पू मणिके मत्ता ॥ १५६४ ॥

उपुं ति पुपुंत्तं व त्ति रोत्तं थत्थुं ति वा पुणो । तंसं ति आयवं व त्ति चतुरससं ति वा पुणो ॥ १५६५ ॥

सत्तापयं ति वा यूया चतुरस्रायवं ति वा । अत्थुत्तं पत्थुत्तं व त्ति संथितं संथडियं ति वा ॥ १५६६ ॥

१ सक्करो' धि० । २ पट्टो' ए० त० ॥ ३ 'ललाहो त्ति' ए० त० ॥ ३-४ 'मंडला' ए० त० निना ॥ ५ तये या' ए० त० ॥
 ६ 'वनिर्क' व त्ति लक. अल्लकड त्ति' ए० त० ॥ ७ 'को सल' ए० त० निना ॥ ८ परिदेरिकं. विजलमं' ए० त० ॥
 ९ 'सोपु' ए० त० निना ॥ १० सुद्धिका' ए० त० ॥ ११ कण्णपण्डको' ए० त० ॥ १२ पण्णालिकण्णि' वा धि० ।
 पण्णालिक' त्ति वा' ए० त० ॥ १३ वट्टुया' ए० त० ॥ १४ 'णि चेतिये' ए० त० ॥ १५ पण्णवत्तान अण्णमाणाः संमन्थन्ते ॥
 १६ एतापयचट्टयो नि वट्टेले' ए० त० ॥ १७ वट्टररो' ए० त० ॥

वित्थिन्नं वित्थयं व च्चि वत्थितं ति वं जो वदे । वितते वियाणकं व च्चि तथा पत्थरियं ति वा ॥ १५६७ ॥

ये वऽण्णे एवमादीया पज्जा पुधुसंसिता । णामसंकित्तणे तेसिं पुधुहिं सममादिसे ॥ १५६८ ॥

॥ पुधुणि ॥ ११९ ॥ छ ॥

[१२० एकतालीसं चउरंसा]

णिडालं १ णिडालपस्साणि ३ पाद-पाणितलाणि ७ य ।

पण्डीतला ९ कडीय तला ११ तीसं मव्वंतरंगुत्ता ४१ ॥ १५६९ ॥

चउरंसा उकरालीसं उम्मट्टव्वंतरा जघा । पुच्छितम्मि पसस्सते चतुरस्सं च णिदिसे ॥ १५७० ॥

॥ चतुरस्साणि ॥ १२० ॥ छ ॥

[१२१ वे तंसा]

वत्थी १ सीसं २ भवे तंसं तंसाकारो य जोऽवरो । सुज्जंगे पक्खपेढं ति तं पि तंसं वियागरे ॥ १५७१ ॥ छ ॥ 10

[१२२ पंच काया]

थूला चेव तधूमद्दा कायवंतो भवंतिह १ । तथा मज्झिमकाया तु उवथूला भवंतिह २ ॥ १५७२ ॥

मज्झिमाणंतरा काया जुत्तोपचया भवंतिह ३ । तथा जघण्णकाया य कसेहि अभिणिदिसे ॥ १५७३ ॥

जघण्णतरका काया परंपरकिसा भवे ५ । एवं पंचविधे काए वियाणेज्जंगचित्तओ ॥ १५७४ ॥

थाणमिस्सरियं दव्वं लाभमायुं सुहाणि य । कालं चंडंगमि वि भवे कायेहेतेहिं पंचहिं ॥ १५७५ ॥ 15

थूलेसु थूया उक्कट्टं उवथूले अणंतरं । एवं सेसेसु कायेसु थूया कच्छंतरेण तु ॥ १५७६ ॥

॥ थूलाणि (काया) ॥ १२२ ॥ छ ॥

[१२३ सत्तावीसं तणू १२४ एगवीसं परमतणू य]

पाद-पाणितला ४ कैण्णा ६ जिन्मा चेव ७ णहाणि य २७ । सत्तावीसं तणू उत्ता थीगामत्थे पसस्सते ॥ १५७७ ॥

अग्गण्हाणि सव्याणि २० अग्गकेसा तवेय य २१ । एगवीसं परमतणू पुच्छित्ते ण पसस्सते ॥ १५७८ ॥ 20

तणुकं ति व जो थूया तथा तणुकतरं ति वा । तथाऽतितणुकं व च्चि तणुकातितणुकं ति वा ॥ १५७९ ॥

पयणू ति व जो थूया तथा पयणुतरं ति वा । तथाऽतिपिणुतणुकं व च्चि पतणुं पतणुं ति वा ॥ १५८० ॥

तणुत्तयो तणुण्हो तणुलोमो च्चि वा पुणो । तणुमज्जं ति वा थूया तथाऽतितणुको ति वा ॥ १५८१ ॥

जे यऽण्णे एवमादीया पज्जा तणुसंसिता । तेसिं संकित्तणे सदा ते तणुहिं समे वदे ॥ १५८२ ॥

॥ तणूणि ॥ १२३ ॥ १२४ ॥ छ ॥

25

[१२५ वे अणूणि १२६ एके परमाणू य]

पेस-लोम-ण्हा मंसा वे अणूणि विधीयते । पुच्छित्ते ण पसस्सते अणुं ति य वियागरे ॥ १५८३ ॥

अग्गकेसउग्गलोमाणि णिम्मट्टाणि यदा भवे । परमाणू वियाणीया पुच्छित्तेण पसस्सते ॥ १५८४ ॥

परमाणू एकमे उत्तो थूला णिम्मट्टसंजुता । अवसेसा जे भवंतं ते मग्गत्थे वियागरे ॥ १५८५ ॥ छ ॥

[१२७ पंच हितयाणि]

पाद-भागितलां च हितयाणि ४ हितयं च जं ५ । पंच एताणि हितयाणि पुच्छितम्नि पसस्सते ॥ १५८६ ॥
 हितिकं ति व जो बूया तथा हितिकतरं ति वा । तथाऽतिहितिकं व च्ति हितिकं हितिकं ति वा ॥ १५८७ ॥
 सुहितं ति व जो बूया तथा सुहितवरं ति वा । तथाऽतिसुहितं व च्ति सोदितं सोदितं ति वा ॥ १५८८ ॥
 हितयं ति व जो बूया हितयत्वं ति वा पुणो । हितयस्स पिवा व च्ति हितयाहूतं ति वा पुणो ॥ १५८९ ॥
 जे यऽण्णे एवमादीया पादवा हितयसंस्सिता । तेसिं संक्कित्तणासहा हितयस्स समा भवे ॥ १५९० ॥ छ ॥

[१२८ पंच गहणाणि]

फेस १ मंसु २ अधोमंसु ४ उभो कक्ख ५ तथेय य । गहणाणि पंच जाणीया जघुत्तं च वियागरे ॥ १५९१ ॥
 किलेसवहुलं अल्यं गहणेसु वियाणिया । बाधि-सोग-यैरिक्खं गहणं च तं णिहिसे ॥ १५९२ ॥
 गहणं ति व जो बूया तथा गहणवरं ति वा । तहाऽतिगहणं व च्ति गहणं गहणं ति वा ॥ १५९३ ॥
 विरुद्धं ति व जो बूया विरुद्धवरकं ति वा । तथा अतिविरुद्धं ति विरुद्धं विरुद्धं ति वा ॥ १५९४ ॥
 रूढं ति व जो बूया तथा रूढवरं ति वा । अतिरूढं ति वा बूया रूढं रूढं ति वा पुणो ॥ १५९५ ॥
 घणकैटवं ति वा बूया अतिघणकैटवं ति वा । तथा संझडितं व च्ति अतिसंझडितं ति वा ॥ १५९६ ॥
 गहणं वणं ति वा बूया रत्तं व गहणं ति वा । गहणा अटवी व च्ति णदी गहणं ति वा ॥ १५९७ ॥
 जे यऽण्णे एवमादीया पादवा गहणस्सिता । तेसिं संक्कित्ते अहा ते गहणसमा भवे ॥ १५९८ ॥ छ ॥

[१२९ पंच षपगहणाणि]

मुमा वे २ अक्खितपग्गहाणि ४ डोमवासि ५ तथेय य । पंचोपगहणे जाणे जघुत्तं च वियागरे ॥ १५९९ ॥
 गहणेसु जघा विट्ठो सन्नो अत्थो सुमाऽसुभो । तघोपगहणेसु फलं णिहिसे तु अणंतरं ॥ १६०० ॥ छ ॥

[१३० छप्पणं रमणिज्जाणि]

ओट्टा २ दंता ४ णिडाद्ध ५ पाद-भागितला ९ एरो १० । वीसमंगुलिपोट्टाणि ३० वीसतिं च णहाणि तु ५० ॥ १६०१ ॥
 णासा ५१ णासपुढो ५२ वेव सोभी ५३ कण्णा ५५ समेहणा ५६ ।
 छप्पणं रमणिज्जाणि यधुत्तेण वियागरे ॥ १६०२ ॥
 अचमंतरत्थो य जघा आगासत्थो य जो भवे । रमणीयविसिद्धत्थो एवमादि फलं वदे ॥ १६०३ ॥
 रमं ति व जो बूया तथा रमवरं ति वा । अतिरमं ति वा बूया रमरमं ति वा पुणो ॥ १६०४ ॥
 रमणीयं ति वा बूया रमणीयवरं ति वा । तथाऽतिरमणीयं ति रमणीयमहो च्ति वा ॥ १६०५ ॥
 अंभिरामं ति वा बूया अभिरामवरं ति वा । अतीर अभिरामं ति अभिरामं अहो च्ति वा ॥ १६०६ ॥
 जं चऽण्णं एवमादीयं रमणीयस्सितं भवे । तस्स संक्कित्तणासहा रमणीयवरं वदे ॥ १६०७ ॥ छ ॥

[१३१ दुवालस आकासाणि]

णिदालं १ अंसपीढाणि ३ जाणूहं ५ जाणुपच्छिमं ७ ।

पाद-भागितला ११ पट्टी १२ आकासाणि दुवालस ॥ १६०८ ॥

आगासं ति व जो बूया आगासवरकं ति वा । तथेय अतिआगासं आकासं अहो च्ति वा ॥ १६०९ ॥
 आगासद्धो च्ति वा बूया आकासं गमो च्ति वा । तथेय आकासचरो तथा आगाससंसितो ॥ १६१० ॥

आगासं पइरिकं ति आकासवियडं ति वा । आकासं विमलं व च्चि आकासं सोमति च्चि वा ॥ १६११ ॥
 यो यऽण्णा एवमादीया क्खं आकाससंसिता । तिस्से कहिज्जमाणीय आकाससममादिसे ॥ १६१२ ॥ छ ॥

[१३२ छप्पणं दहरचला १३३ छप्पणं दहरथावरेज्जा]

इत्य-पादंगुली पञ्चा दहरचला भवति ते । तेसिं पव्वतरा सव्वे दहरत्थावरा हि ते ॥ १६१३ ॥
 एते चेव तु गिम्मट्ठा दहरचला भवतिह । जधुचं पुव्वमत्वं तु तं सव्वं चलमादिसे ॥ १६१४ ॥ 5
 जंघोरु-वाहुमज्जे य पट्ठी पस्से कर-क्कमे । दहरे थावरे अंगे एते इच्छंति केपि तु ॥ १६१५ ॥
 थिरमत्वं वियाणीया सव्वमेव अणागतं । एवमेतेसु सव्वेसु दहरत्थावरेसु तु ॥ १६१६ ॥
 डहरो च्चि व जो यूया तथा डहरतो च्चि वा । तथाऽतिडहरो व च्चि डहरतिडहरो च्चि वा ॥ १६१७ ॥
 डहराको च्चि वा यूया डहराकरको च्चि वा । अतिडहराको व च्चि डहराको अहो च्चि वा ॥ १६१८ ॥
 औहोडहरो च्चि वा यूया अतीवडहरो च्चि वा । किहं ता डहराको च्चि जो एस डहरो च्चि वा ॥ १६१९ ॥ 10
 जे यऽण्णे एवमादीया पादपा (पञ्चा) डहरस्सिता । तेसिं संकिच्चणे सदे डहरत्थावरे समा ॥ १६२० ॥
 एते य एवमादीया जे सदा चलसंसिता । विभावेतूण ते सम्मं डहरचलसमे वदे ॥ १६२१ ॥
 एते य एवमादीया जे सदा थावरस्सिता । विभावेतूण विण्णेया डहरा थावरे समा ॥ १६२२ ॥

[१३४ दस इस्सरा १३५ दस अणिस्सरा य]

'सिरोऽधरा य ओहं (पओहं) तु भवति दस इस्सरा । गामतो ते पवक्खामि दस चेव अणिस्सरे ॥ १६२३ ॥ 15
 णिहालं १ मत्थको २ सीसं ३ कण्णा ४ गंडा ५ मुमंतरं ६ ।
 दंतो ७ ङ ८ पासा ९ जिन्मा य १० उम्मट्ठा दस ईस्सरा ॥ १६२४ ॥
 एते सव्वे पसस्संते उम्मट्ठा दस ईस्सरा । अणिस्सरे य गिम्मट्ठे एते चेव वियागरे ॥ १६२५ ॥
 सव्वमत्वं पसत्वं तु इस्सरेसु वियागरे । थाणमिस्सरियं वड्ढि भोग-लाम-सुहाणि य ॥ १६२६ ॥
 इस्सरोपक्खरे चेव इस्सरोवकरणेसु य । इस्सरो च्चि वियाणीया तस्सदोदीरणेसु य ॥ १६२७ ॥ 07
 इस्सराणं च आमासे ईस्सराणं च आगमे । इस्सराणं च सरेसु इस्सराणं च किच्चणे ॥ १६२८ ॥ -20
 तथिस्सरगतीणं च सद-रूवर्कतेसु य । तथिस्सरोवकरणं सद-रूवकतेसु य ॥ १६२९ ॥
 नं चऽण्णं एवमादीयं लोए इस्सरलक्खणं । तस्सद-रूवसंलावे ते इस्सरसमे वदे ॥ १६३० ॥ छ ॥

[१३६ चोदस इस्सरभूता]

एतो इस्सरभूते तु वड्ढं णामीय णिदिसे । ते उम्मट्ठे वियाणीया इस्सरत्थमि अंगवी ॥ १६३१ ॥ छ ॥ 25

[१३७ पण्णासं पेस्सेज्जा १३८ पण्णासं पेस्सभूया]

पादंगुली १० पादंगहा २० पादंगुलिपोट्टिया ३० ।
 तला ३२ पण्ठी ३४ सुला ३६ गोप्फा ३८ कंडरा ४२ जंप ४४ पंडिया ४६ ॥ १६३२ ॥
 जाणूणि य ४८ किओ ५० चेव पेस्सेज्जाणि वियागरे । पेस्समेतेहि जाणीया पेस्सोय-एरणेहि य ॥ १६३३ ॥
 उम्मंतरे तु गिम्मट्ठे पेस्सेए ति वियागरे । ङ्ख ते^१ चेव किंवि गिम्मट्ठे पेस्सभूए वियागरे ॥ १६३४ ॥ 30
 वड्ढं जाणूहि णामि च्चि पेस्सभूते वियागरे । अये जाणूहि पाद च्चि पेस्सभूते वियागरे ॥ १६३५ ॥ -

१ माकाससोमिते च्चि सं १ पु. वि. ॥ २ ये यऽण्णा एवमादीया जया आ' हं. तं. मिना ॥ ३ आह हं. तं. मिना ॥ ४ किप ही डह' हं. तं. मिना ॥ ५ सरोययउत्थं तु हं. तं. मिना ॥ ६-७ ईस्सरा हं. तं. ८ पसस्सं तु हं. तं. ९ 'जेण य हं. तं. १० 'कमेसु हं. तं. ११ इत्येवमादीयसुपादं हं. तं. एव वदे ॥

मञ्जत्वमुदाहरणा जे यञ्जे एवमादीया । तेसिं संकित्तणासहा मञ्जत्वसममादिसे ॥ १६६२ ॥ छ ॥

[१४२-१४६ वारस पुढविकाइकाईणि]

पुधूसु पुधर्वि जाणे दगं णिञ्जेसु णिदिसे । अग्गेये सप्पमे उण्हे अग्गिमो(मे)तेसु णिदिसे ॥ १६६३ ॥
धायुणेयेसु सब्बेसु वातं वातमणेसु य । वणप्फती तु णातव्वा महणोपगहणेसु य ॥ १६६४ ॥ छ ॥

[१४७ वीसं जंगमाणि]

चले १ अस्सास २ पस्सासे ३ आउंटण ४ पसारणे ५ ।
उवेदु ६ द्वित ७ संचिट्टे ८ गमणा ९ ऽऽगमणेसु य १० ॥ १६६५ ॥
फंदिते ११ चलिते १२ यावि णिविडु १३ म्मिहितम्मि १४ य ।
तसकायोवलद्धीयं २० जंगमं ति वियागरे ॥ १६६६ ॥

[१४८ तेत्तीसं आतिमूलिकाणि]

पादंशुद्धा य २ पादा य ४ गोप्फा ६ जंघो ८ रु १० जाणुका १२ ।
अंसा १४ वाहू १६ पवाहू य १८ वाहुसंघी २० तथेय य ॥ १६६७ ॥
उदरं २१ कडी २२ कडीपस्सा २४ लोमवासी २५ तथेय य ।
उरो २६ सिरा २७ ऽधरा २९ जंतुं ३० मुहं ३१ सीसं ३२ तला ३३ तथा ॥ १६६८ ॥

एते सब्बे जता होंति उम्मट्ठा तु अपीलिता । तेत्तीसं आतिमूलीया सब्बत्थेसु पसस्सते ॥ १६६९ ॥
अंधा पुण्णामधेयेसु आदेसो तु विधीयते । एवं एतेसु सब्बेसु आतिमूलेसु णिदिसे ॥ १६७० ॥ छ ॥

[१४९ तेत्तीसं मञ्जविगाढाणि]

एते चेव सँमामट्ठा जता होंति अपीलिता । मञ्जे विगाढा तेत्तीसं पुच्छितम्मि पसस्सते ॥ १६७१ ॥
तथा मञ्जे विगाढेसु तेत्तीसार्थं पि अंगवी । पुण्णामधेयेहि फळं विसिट्ठतरकं वदे ॥ १६७२ ॥ छ ॥

१५० तेत्तीसं अंता]

अंगुली २० केस २१ लोमगं २२ कन्न २४ णासग्गमेव २६ य ।

कोपरा २८ पण्हक ३० फिजा ३२ तथेय य ककाडिका ३३ ॥ १६७३ ॥

एते तेत्तीसतिं अंता णिम्मट्ठा य जया भवे । पसत्थे ण पसस्सते णित्त्येसु पसस्सते ॥ १६७४ ॥ छ ॥

[१५१ पण्णासं मुदिता १५२ पण्णासं दीणा य]

अर्ध्मतरंगा मुदिता याहिरंगा य पीलिता । पुणो अर्ध्मतरा चेव संविमट्ठा तु दीणागा ॥ १६७५ ॥ २५

मुदिते [धा] पमोदं वा हासं पीतिं य णिदिसे । जणं छणुस्सयं सब्बं जं वाऽमुदइकं भवे ॥ १६७६ ॥

दीणेसु वार्थि सोगं च परिष्वत्तं च णिदिसे । जघा णणुंसकाजल्ये एवमेसु फळं वदे ॥ १६७७ ॥

मुदितो त्ति य जो धूया तथा पमुदितो त्ति वा । इट्ठो तुट्ठो पट्ठो त्ति उदत्तो सुमणो त्ति वा ॥ १६७८ ॥

णिब्बुते मुहिते य त्ति आरोगो पीणितो त्ति वा । कत्तल्यो कत्तकजो त्ति संवत्तमणोरघो त्ति वा ॥ १६७९ ॥

उस्सयो त्ति समासो त्ति विहि जणो छणो त्ति वा । घालोपणयणं धायुजं अधिक्कमणकं त्ति वा ॥ १६८० ॥ ३०

जं चऽणं उस्सयवरं सब्बन्मुदइकं च जं । तस्स संकित्तणासहा मुदितेहि सममादिसे ॥ १६८१ ॥

दीणो त्ति दुम्मणो य त्ति परित्तो त्ति वा पुणो । उक्कट्ठितो त्ति सोरुत्तो चिंता-स्नाणरो त्ति वा ॥ १६८२ ॥

अणिब्बुतो आतुरो त्ति पंपयित्तिगिरागतो । अफत्तल्यो असिद्धत्थो अहमो थियमसकतो ॥ १६८३ ॥

गंढितो पढितो य त्ति भिण्णो मंतुलितो त्ति वा । पिण्णसितो परिसत्तो छातो तण्हाइतो त्ति वा ॥ १६८४ ॥

१ अर्धे विन्ध्यम्—धायुणेयाः णिळ द्वासर, यातमणाः पुनपत्तार इति संघायप्रमाणविशेष इति ॥ २ फेद्विय विलिय या वि
निप्पुतुं ६० तं ॥ ३ जंतुं ६० तं ॥ ४ जता सुण्णा? गणं ॥ ५ समा सदा जदा होंति ६० तं ॥ ६ संघिमट्ठा
६० तं भिना ॥ ७ पाणेतु वार्थि(धि)धोतं च ६० तं ॥ ८ भियसु वि फळं ६० तं ॥ ९ त्ति तिपे जणो ६० तं
भिना ॥ १० उक्कटितो ६० तं भिना ॥ ११ परायतं ६० तं ॥

अलद्वलामो उव्वातो असंपत्तमणोरयो । विहलो विपहंतो त्ति विहतो त्ति विचेयणो ॥ १६८५ ॥

जे यऽण्णे एवमादीया पज्जवा दीणसंसिता । तेसिं संकित्तणासरा दीणेहि समका भवे ॥ १६८६ ॥ छ ॥

[१५३ वीसं तिक्खा]

तिक्खरग्गदंतमोहणा अग्गदंता तु सुयिता । समे सदे य जाणेज्जो तिक्खवा जे गणिके मता ॥ १६८७ ॥

तिक्खरं ति य जो यूया तथा तिक्खरतरं ति या । अतितिक्खं ति वा यूया तिक्खततिक्खं ति या पुणो ॥ १६८८ ॥

तिक्खरलोहं ति वा यूया तिक्खरं आयुधं ति वा । सत्थकं अतितिक्खं ति जं चऽण्णं तिक्खणासकं ॥ १६८९ ॥

आउधानं च सन्वेसिं सत्थकाणं च सव्वसो । होहोपकरणाणं च सव्वेसिं तिक्खणासणे ॥ १६९० ॥

जे यऽण्णे एवमादीया पदे वा तिक्खसंसिता । णामसंकित्तणे तेसिं तं तिक्खरसममादिसे ॥ १६९१ ॥ छ ॥

[१५४ पण्णत्तारिं उवहुता १५५ पण्णत्तारिं वापण्णा य]

पुण्णामा पीलित्ता सव्वे एते होति उवहुता । उवत्ता य विच्छिन्ना य वापन्न त्ति वियागरे ॥ १६९२ ॥

वापण्णा य णिग्गहिता वापण्णा होति पायका । एतेसिं च वग्गाणं तिण्हं पि फलमादिसे ॥ १६९३ ॥

जया दीणे आदेसो अप्पसत्थो पवेदितो । उवहुतेसुं वि तथा सव्वं असुभमादिसे ॥ १६९४ ॥

वापण्णेसुं विणासं च सरीरं वापदं तथा । सव्वत्थाणं च वापत्तिं दुग्भिक्खं वा वियागरे ॥ १६९५ ॥ छ ॥

[१५६ दुवे दुग्गंधा १५७ दुवे सुग्गंधा य]

दुग्गंधेसु पीतावं आयासं च वियागरे । सयणा दुक्खं च अवमाणं च णिदिसे ॥ १६९६ ॥

णासापुहा य पिहिता दुग्गंधा वे ण पूयिता । अवंगुता सुग्गंधा य पुच्छित्तमि य पूयिता ॥ १६९७ ॥ छ ॥

[१५८ णव बुद्धीरमणा १५९ चत्तारि अबुद्धीरमणा य]

हत्थं २ पादं ४ भूमं ६ ऽक्खित्तं ८ सुहं ९ बुद्धीरमणा त्ति णिदिसे ।

पत्तो २ दरं ३ च पट्टी य ४ अबुद्धीरमणा भवे ॥ १६९८ ॥

णाणं बुद्धीरमणेसु मत्तिं मेधं च णिदिसे । अबुद्धीरमणेसु धदे मोहं सुक्खत्तमेव य ॥ १६९९ ॥

बुद्धीमंतो त्ति वा यूया बुद्धिमंतवरो त्ति वा । अतीय बुद्धिमंतो त्ति बुद्धिमंतो अहो त्ति वा ॥ १७०० ॥

मतिमंतो त्ति वा यूया मतिमंतवरो त्ति वा । अतीय मतिमंतो त्ति मतिमंतो अहो त्ति वा ॥ १७०१ ॥

सुबुद्धियो त्ति वा यूया सुबुद्धिमंतो त्ति वा पुणो । तथा पसण्णबुद्धिं त्ति त्तिवुद्धिं त्ति वा पुणो ॥ १७०२ ॥

जे यऽण्णे एवमादीया पदे वा बुद्धिसंसिता । तेसिं संकित्तणे सारा ते बुद्धिरमणे समा ॥ १७०३ ॥ छ ॥

[१६० एफारस महापरिग्गहा १६१ चत्तारि अप्पपरिग्गहा य]

एदरं १ हत्थं ३ पादं च ५ कण्णा ७ णासं ८ ऽखिणो १० सुहं ११ ।

महापरिग्गहा एते सामिद्धिं चऽत्य णिदिसे ॥ १७०४ ॥ छ ॥

पेस १ छोम २ णदं ३ मंमुं ४ एते अप्पपरिग्गहा । पुच्छित्ते ण प्पसस्सिते दारिरं चऽत्य णिदिसे ॥ १७०५ ॥ छ ॥

[१६२ एकूणयीसं पट्टा १६३ सत्तायीसं मोक्खता य]

हत्थं पादं तिहा कण्णा जं चऽण्णं किंचि वंधति । ददेसु यावि सव्वेसु एते धंघे वियागरे ॥ १७०६ ॥ छ ॥

हत्थं पादं तिहा कण्णा जं चऽण्णं किंचि वंधति । चलेसु यावि सव्वेसु एते धंघे वियागरे ॥ १७०७ ॥ छ ॥

१ 'मणोरमे' इ० त० ॥ २ 'ग्गणहा अग्ग' इ० विना ॥ ३ वा पुणो । सत्थं' इ० त० विना ॥ ४ 'क्खणे खणे' इ० त० ॥ ५ उवहुता इ० त० ॥ ६ उवउत्ता इ० ॥ ७ 'तु दि तथा' इ० त० ॥ ८ 'तु दि सत्थं च' इ० त० ॥ ९ 'त्तिवुद्धि' इ० त० ॥ १० पायया पुण्यसं' इ० त० ॥

[१६४ पण्णासं सका १६५ पण्णासं परक्का १६६ पण्णासं सकंपरक्का य]
दढा वंधा चला मोक्खा सका अब्भंतरा भवे । परक्का चाहिरा मिस्ता वाहिरव्भंतरा भवे ॥ १७०८ ॥

.. [१६७-१७२ दुवे सद्देया दुवे रूवेया इच्चाइ]

सद्देया कण्णसोता वे २ णयणा दंसणीया दुवे २ । णासापुढा २ य गंधेयं रसेयं जिन्ममादिसे १ ॥ १७०९ ॥
तयं च १ पोरिसं २ चैव फासेयाणि वियागरे । मणोयं हितयं १ जाणे अंगविज्जाविसारओ ॥ १७१० ॥ 5

सद्देयेसु पिओ लोप इट्ठे सद्दे सुणेति य । विस्सुतो य महाणम्मि महं च लभते जसं ॥ १७११ ॥
दंसणीयेसु कंतो य सव्वस्स पिअदंसणो । गुणप्पणासो लोगम्मि पियाणि पि य पावति ॥ १७१२ ॥-
गंधेयेसु यसभागी इट्ठे गंधे य पावति । सम्मतो यावि लोकरस णारीसु सुमगो वि य ॥ १७१३ ॥
रसेयेसु मणुण्णाणि भोयणाणि तु भुंजति । गहितवक्को य सद्देयो सव्वत्य य विसारदो ॥ १७१४ ॥
सयणा-ऽऽसण-जाणाणि वाहणाणि य पावति । थिओ य भूसणाइं च फासेयम्मि णिसेयति ॥ १७१५ ॥ 10
मणोयम्मि द्वियामट्ठे सव्वविज्जाविसारतो । पंडितं बुद्धिमंतं च णिदिसे सुवहुसुतं ॥ १७१६ ॥ छ ॥

[१७३ चत्तारि वातमणा १७४ दुवे सहमणा १७५ दस व्रणोया य]

सुदं १ णासग्ग २ कण्णा य ४ एते वातमणा भवे । गुदो य १ मेद्वणं चैव २ एते सहमणा भवे ॥ १७१७ ॥

केसमंसु १ उरो २ पट्टी ३ जंपा ५ कक्खा उमो ७ तथा ।

वत्थिसीसं च ८ संखा य १० वण्णोयाणि वियागरे ॥ १७१८ ॥ 15

ओ पुच्चयुत्तो आदेसो गहणेसु विधीयते । वण्णोयेसु वि एमेव आदेसं संपकप्पते ॥ १७१९ ॥ छ ॥

[१७६ दस अग्गेया]

सुद्धम १ ऽच्छी ३ उरो ४ हितयं ५ तले ७ जिन्मं ८ तिके १० वि तु ।

एते अग्गेययं णेया इच्चेस दुविधो गमो ॥ १७२० ॥

अक्खलीणि २ णासिका ३ कण्णा ५ णिढालं ६ सुद्ध ७ मत्तयो ८ ।

कण्णुप्परिका य ९ सिस्स १० अग्गेयां दस पूयिता ॥ १७२१ ॥ 20

गणेस्सरिकल्लोभेसु अग्गेये अगिकम्मसु । पुण्णामधेयेसु फलं विसिट्ठतरकं वदे ॥ १७२२ ॥ छ ॥

[१७७ दस जण्णोया]

सिरोमुहस्सयानासे अग्गेया य भवति जे । जण्णोया दस यक्खाता पसत्था तत्थ पुच्छते ॥ १७२३ ॥ छ ॥

[१७८ दुवे दंसणीयाणि १७९ दुवे अदंसणीयाणि य]

दंसणीयाणि वे चक्खुं १ सोणी य २ पसस्सते । अदंसणीया य दुवे उक्कणिय १ विक्कणिता २ ॥ १७२४ ॥ छ ॥ 25

[१८० दस धलाणि]

मत्तयो य १ णिढालं च २ गंहा य ४ हितयं ५ उरो ६ ।

कर-कम्मवला १० चैव धलाणि दस णिदिसे ॥ १७२५ ॥ छ ॥

[१८१ वारस गिण्णाणि]

गिण्णाणि १ वक्खरणा २ कक्खा ४ अक्खिक्कडाणि वे तथा ६ ।

अंतो य कण्णसोवाणि ८ जं च गीया य हेट्ठतो १० ॥ १७२६ ॥

सुहुंदलो ११ य णामी य १२ एवं गिण्णाणि धारम ।

पुच्छित्ठे ण प्पसस्संते णिणं चऽत्य वियागरे ॥ १७२७ ॥ छ ॥ 30

[१८२ णव गंभीरा १८३ णव परिणणगंभीरा]

गंभीरे तु मुहं १ णासं ३ कण्णे ५ वाहुं ९ च णिदिसे । ते चेव णिण्णगंभीरे अंतिमहे वियागरे ॥ १७२८ ॥

[१८४-१८९ पण्णरस विसमा चोद्दस उण्णता इच्चाइ]

णासं १ ऽसपीढा ३ सवसणा ५ फिओ ७ कोप्पर ९ जसुंगा ११ ।

खलुका १३ मणिवंधा य १५ विसमा पण्णरसाऽऽहिया ॥ १७२९ ॥

मत्थको सीसकूडाणि विसमा जे य कित्थिया । णासावंसो य ण्णं उण्णत त्ति वियागरे ॥ १७३० ॥

जे पुधू ते समा होंति अग्गेया उसिणा भवे । जे णिद्धा ते भवे सीता सीतला औत्तुजोणिया ॥ १७३१ ॥

जया णिद्धेसु सव्वेसु आवेसो तु विधीयते । त्थंथाऽऽपुणेपसु फलं विसिद्धतरकं वदे ॥ १७३२ ॥ छ ॥

[१९० चउरासीतिं पुण्णा १९१ पण्णत्तारिं तुच्छा य]

गंडा २ थणो ४ दरं ५ आसं ६ अंजली ८ मुहमेव ९ य ।

पुण्णामा ८४ तं तओम्महा एते पुण्ण त्ति णिदिसे ॥ १७३३ ॥

णपुंसकाणि सव्वाणि परंपरकिसा य जे । तुच्छाणेताणि जाणीया अप्पसत्त्वाणि णिदिसे ॥ १७३४ ॥ छ ॥

[१९२-२३८ एकूणवीसं विवरा इच्चाइ]

मुहं १ णालुं च २ मेहुं च ३ अंगुलीअंतराणि य १९ । एकूणवीसं विवरे वियाणे अंगर्चितओ ॥ १७३५ ॥ १९२ ॥

एते चेव जघुत्ता तु संपेहितसंपुढा । अंगे अपी (वि) वरा होंति ते वियाणेज्ज अंगवी ॥ १७३६ ॥ १९३ ॥

अक्खीणि २ हत्थ ४ पादं च ६ गुंदो ७ मेहुं ८ तथेव य ।

अट्ठेय एते जाणेज्जो अंगे विअडसंबुडे ॥ १७३७ ॥ १९४ ॥

जिन्ना १ अक्खीणि ३ ऊरू य ५ पाळ ६ मेहणमेव य ७ ।

सुकुमालाणि सत्तेव वियाणे अंगर्चितओ ॥ १७३८ ॥ १९५ ॥

अयुद्धीरमणा अंगे जे पुब्बं परिकित्तिता । ते चेव दारुणे जाणे सव्वेए अंगर्चितओ ॥ १७३९ ॥ १९६ ॥

जिन्ना १ ओहा ३ थणा ५ गंडा ७ सत्तेय मदुक्का भवे ।

जघुत्तमणुगंतुणं ततो भूयांगर्चितओ ॥ १७४० ॥ १९७ ॥

दारुणाणि य चत्तारि पुब्बुत्ताणि तु याणिह । पंरथीणाणि तु साणेव वियाणे अंगर्चितओ ॥ १७४१ ॥ १९८ ॥

रमणीया जे तु अंगम्मि पुब्बं तु परिकित्थिया । ते चेव सण्हा णातव्वा जघुत्तं च वियागरे ॥ १७४२ ॥ १९९ ॥

सव्वे णदसिद्धाओ य २० कोप्पर २२ जण्णुकाणि य २४ ।

चतुब्बीसं खरा एते वियाणे अंगर्चितओ ॥ १७४३ ॥ २०० ॥

पादानं अंगुलीओ य १० कुड्डिल त्ति वियागरे २०१ ।

दत्थाणं अंगुलीओ य १० सल्लुकं त्ति वियागरे ॥ १७४४ ॥ २०२ ॥

णिहारं १ अग्गकण्णा य ३ मुमो ५ द्वा ७ दंतसेट्ठिका ८ ।

संधा ये १० कण्णवालीओ १२ अंगुट्ठांगुलिभिरसह ३२ ॥ १७४५ ॥

कक्खा ३४ णासापुढा येव ३६ एते चंडाणता भवे ।

उंसीसं तु णातव्वा जघुत्तं च वियागरे ॥ १७४६ ॥ २०३ ॥

१ धामुं च ६० त० भिना ॥ २ अंतिं ६० त० भिना ॥ ३ जण्णगा ६० त० ॥ ४ एतुणं ६० त० भिना ॥ ५ आउजो

६० त० ॥ ६ तमा पुण्णेएरु ४२० ॥ ७ त यणुम्मं ६० त० भिना ॥ ८ धुवो मंडुत्तरेय च ६० त० ॥ ९ मरथीणाणि

६० त० ॥ १० धव्वीसं ६० त० ॥

जंघो २ रु ४ बाहु ५ एताणि आयताणि वियागरे । २०४ ।
जंघा २ [फि]यो यं ४ णातव्वा आयता मुद्धियाणि तु ॥ १७४७ ॥ २०५ ॥

उत्तमाणि तु जाणंगे ताणि दिव्वाणि णिहिसे ॥ २०६ ॥

जाणेष मज्झिमाणंगे ताणि माणुस्सकाणि तु ॥ १७४८ ॥ २०७ ॥

तिरिच्छजोणिया अंगे मज्झिमाणंतराणि तु । २०८ ।

जघण्णाणि तु जाणंगे ताणि षेरइकाणि तु ॥ १७४९ ॥ २०९ ॥

णहसेढी-दंतसेढीओ णहा दंतसिहा य जा ।

उवहुता य ७५ तिकखा य ९५ एते रुद्धे वियागरे ॥ १७५० ॥ २१० ॥

पीती १ णिज्जाइतं वा वि २ दुबे सोम्मे वियाणिया ।

पुच्छितम्भि पसस्सते सोतव्वं चज्ज्य णिहिसे ॥ १७५१ ॥ २११ ॥

ओट्टं २ गुट्टं ६ गुलीओ य २२ मिदुभागे वियाणिया ।

जघुत्तमणुंगतूणं ततो वूयांगचित्तओ ॥ १७५२ ॥ २१२ ॥

अंगुट्टा २ होंति पुत्तेया २१३ कण्णा होंति कण्हिका २ । २१४ ।

अंणामिका २ मज्झिमियो ४ थिया होंति ण संसयो ॥ १७५३ ॥ २१५ ॥

पदेसिणीहि २ विण्णेया जुवतीयो ण संसयो ।

थिया तु तिविया एवं अंगुलीहिं विभावये ॥ १७५४ ॥ २१६ ॥

णिम्मज्जिताणि दीहाणि णिग्गहीताणि ताणि तु । दुग्गट्टाणाणि एताणि जघुत्तेणं वियागरे ॥ १७५५ ॥ २१७ ॥

पाद-भाणितला ४ ओट्टा ६ अयंगा ८ जिम्भ ९ तालुका १० ।

कण्ठीरका १२ तपंगुट्टा १४ तंबाणेताणि चोदस ॥ १७५६ ॥ २१८ ॥

केस १ लोम २ णहं ३ मंसुं ४ एते रोगमणा भवे । पुच्छिते ण प्पसस्सति वहुरोगं च णिहिसे ॥ १७५७ ॥ २१९ ॥ २०

कक्खा २ घसणंतरं ४ चेव अधिद्वारं ५ समेहणं ६ । एताणि पूतीणि भवे जघुत्तेण वियागरे ॥ १७५८ ॥ २२० ॥

उभो हत्था २ उभो पादा ४ उभो य णयणाणि तु ६ । एताणि छ व्वियाणीया चवलाणंगचित्तओ ॥ १७५९ ॥ २२१ ॥

सिरं १ ललाहं २ पट्टी य ३ पत्ताणि ५ उदरं ६ उरो ७ ।

एते अचवले सत्त जघुत्तेण वियागरे ॥ १७६० ॥ २२२ ॥

गोज्झाणि मेहणं १ प्राळं २ वसणे य ४ वियागरे ।

रहोसंजोगपुच्छायं धी-पुमंसे पसस्सते ॥ १७६१ ॥ २२३ ॥

हत्था २ गुहं च ३ अक्खीणि ५ उत्ताणुम्मत्थकाणि तु । जघुत्तमणुंगतूणं णिहिसे अंगचित्तओ ॥ १७६२ ॥ २२४ ॥

कण्णसक्कुलिओ २ कण्णा ४ फिओ ६ जंघो ८ रु १० पेंडिका १२ ।

तत्ताणेताणि जाणीया जघुत्तं च वियागरे ॥ १७६३ ॥ २२५ ॥

जाणि लुक्खाणि १० ताणेष दूरं णिम्मज्जिताणि तु ।

मत्ताणेताणि जाणीया अप्पसत्वं च णिहिसे ॥ १७६४ ॥ २२६ ॥

थूले चेव तधुम्मट्टे महंताणि वियागरे । महंतकं इस्सरियं अत्वं भोगे य णिहिसे ॥ १७६५ ॥ २२७ ॥

दंदाणुम्मज्झियारिणं तु सुचिक्राणि वियागरे । पुच्छितम्मि पससंते सोयव्वं चऽत्य गिहिसे ॥ १७६६ ॥ २२८ ॥

पूतीणि जाणि अंगम्मि ६ केस ७ लोम ८ ण्हं च जं १० ।

संविमद्वाणि चंडंगम्मि विरुद्धाणि वियागरे ॥ १७६७ ॥ २२९ ॥

अंगे पुण्णामधेयाणि वराणि पवराणि य । तम्मि सब्वम्मि अत्यं तु पसत्वं संपवेदये ॥ १७६८ ॥ २३० ॥

ताणि चैय गिमित्तसस गायकाणि विधीयते । तौणऽधिद्वाणभूयाणि आदेससं सुभाणि तु ॥ १७६९ ॥ २३१ ॥

गिमित्ते सब्वत्थूणं सब्वणीया णपुंसका । तेण इट्ठेहिं अत्येहिं सब्वकालं विवज्जिया ॥ १७७० ॥ २३२ ॥

जाणैय वज्जवज्जाणि ताणि अणार्यकाणि तु ॥ २३३ ॥

अणुं च परमाणुं च गिरस्ये त्ति वियागरे ॥ १७७१ ॥ २३४ ॥

अण्णैयाणि तु अंगम्मि पुण्णामाणि तु गिहिसे ।

जेसु पुण्णे सुभो अत्यो ण कोति पतिसिञ्चति ॥ १७७२ ॥ २३५ ॥

मुजोरुमंगुलीणं च अंतराणंतराणि तु । जघा गुज्जेसु आदेसो अंतरेसु वि तं वदे ॥ १७७३ ॥ २३६ ॥

दंत १ हत्यण्हारिणं ११ च एते सूर त्ति गिहिसे ॥ २३७ ॥

अच्छीणि २ हितयं चैव ३ तयो भीरु वियागरे ॥ १७७४ ॥ २३८ ॥

[२३९ पण्णासं एककाणि]

एकसिं चैव आमट्ठे एणं भेडुंगुलीय य । एगाभरणेक्खारीसु एगोपकरणम्मि य ॥ १७७५ ॥ छ ॥

[२४० पणुवीसं विकाणि]

मिधुणे विअंगुलीगहणे एक्केकेसु य वीसु तु । जमलाभरणे चैव जमलोवकरणे विक्कं ॥ १७७६ ॥ छ ॥

[२४१ दस तिकाणि]

तिंगुलिगहणे चैव एक्केकेसु तिसु तथा । तिसिके य तिकोडीके वंसेसु य तिकेसु य ॥ १७७७ ॥

सुमसंगयचूलायं णासायं च तिकम्मि य । पोस्से य सणालम्मि तिकण्णम्मि य तिणिण तु ॥ १७७८ ॥ छ ॥

[२४२ अट्ट चतुक्काणि]

चतुरस्सेसु सब्वेसु चवप्पयगतिसु य । चउकेसु य सब्वेसु चउगुण चतु वदे ॥ १७७९ ॥

चउसंगुलीसु चत्तारि चउसु एक्केकेसु य । तथा करतले चैव तथा पादतलम्मि य ॥ १७८० ॥ छ ॥

[२४३ छ पंचकाणि]

फिजंसपीढे दो चैव समुट्टिकरणे थणे । पंचगुलीणं गहणे सणरे संथणासणे ॥ १७८१ ॥

पंच तस्से पंच काये एक्केकेसु य पंचसु । सब्वपंचकसंजोगे पमाणं पंचकं वदे ॥ १७८२ ॥ छ ॥

[२४४ छक्कए ठिआमासे]

चउके विगसंजुत्ते वेसुं चैव तिकेसु तु । तिसु विकेसु छके य पंचके चैकसंजुत्ते ॥ १७८३ ॥

मणिवंधण गोष्के य विणरे सयणाऽऽसणे । संब्वइक्कगते चैव अंगवी छक्कमादिसे ॥ १७८४ ॥ छ ॥

[२४५ सत्तए ठिआमासे]

पस्से य सोणि कण्णे य जंधायं धाट्टणालीयं । बुक्खितम्मि संत्तके चैव चतुक्कसहिते तिगे ॥ १७८५ ॥

सयणाऽऽसणे सपुरिसे तिगाडे वा चतुप्पदे । सब्वसत्तकसंजोगे पमाणं सत्तकं तिगं ॥ १७८६ ॥ छ ॥

१ दव्वाणुं सं ३ पु० ॥ २ णि रंगम्मि सं ३ पु० । णि घागम्मि हं० त० ॥ ३ ताणि त्रि टाणं हं० त० ॥
 ४ यतणाणि तु सप्र० ॥ ५ मूलदाखे पण्णासं अणजणाई २३५ इति नाम दश्यते । ६ सूरिच्छि हं० त० विना ॥
 ७ सजणं सय० ॥ ८ सब्वट्ठकगए चैव हं० त० विना ॥ ९ सत्थक्के हं० त० विना ॥

[२४६ अट्टए ठिआमासे]

हितये ऊरु य मज्जे य णामी पाणितलम्मि य । णिडाले चैव कण्णे य विचउक्के य पिंडिते ॥ १७८७ ॥
सयणासणे य जमले जमले य चतुप्पदे । सब्वमट्टकसंजोगे पुच्छं अट्टाहमादिसे ॥ १७८८ ॥
अट्टेगुलमहंसे तथऽट्टाकारणम्मि य । वूया अट्टाहिकं पुच्छं वीसु पादतलेसु य ॥ १७८९ ॥ छ ॥

[२४७ णवए ठिआमासे]

णवसंगुलीसु णवके य णवसेक्केसु य । णवसि णवभिंदीसु णवणक्खसिहासु य ॥ १७९० ॥
अट्टगे एगसहिते सचतुक्के य पंचगे । छक्के तिगसंजुत्ते णवाहं तिरियेपेक्खते ॥ १७९१ ॥ छ ॥

[२४८ दसए ठिआमासे]

पिंडितेसु य पादेसु उवाहणा-पादुकासु य । तपंजलिकच्छभके विह्वली उवणामिते ॥ १७९२ ॥
विपंचके वा सहिते अट्टके विकसंजुत्ते । सत्तगे तिगसंजुत्ते दसाहो उज्जुपेक्खते ॥ १७९३ ॥ छ ॥

[२४९-२७० वे पण्णरसवग्गा जाव एगो अपरिमिते]

तिपंचके य सहिते दसक्खे य सपंचके । तथेव पादजंघे य वूया पण्णरसेव तु ॥ १७९४ ॥ छ ॥
वीसं तु अंसफलके जण्णुके कोप्परेसु य । वेसु चैव दसक्खेसु चउक्केसु य पंचसु ॥ १७९५ ॥ छ ॥
जणूसु वीसं मज्जे य ऊरु वे पणुवीसका । तीसं कडीय पणतीसं णिदिसे अंतरोदरे ॥ १७९६ ॥
चत्तालीसं च णामीयं णामीय उवरिं पुणे । पणतालीसं ति वा वूया पंचासं हितयम्मि य ॥ १७९७ ॥ 15
यणंतरे पंचवण्णा उरे सट्ठिं वियागरे । जंतूसु पंचसंठिं [.....] ॥ १७९८ ॥
अंसे य सत्तारिं वूया गीवायं पंचसत्तारिं । हणुकायं सहोद्धाय, असीतिं पुणमादिसे ॥ १७९९ ॥
णासायं पंचासीतिं णवती भूमकासु य । णिडाले पंचणउत्तिं सिरम्मि सत्तमादिसे ॥ १८०० ॥
एवं एतेसु ठाणेसु पंच पंच समारभे । पिट्टोदरे सपिट्टते सहस्सं वाहु-वाहुके ॥ १८०१ ॥
पुणं सतसहस्सं तु संजुतम्मि सुहे भये । अवंगुत्ते सुहे कोडी विपेत्तविजिम्भिते ॥ १८०२ ॥ 20
तथा छिदेसु सब्वेसु तं अपरिमितं वदे । जघण्णेसु य सब्वेसु हणुकायं तथेव य ॥ १८०३ ॥
केसमंसुसु लोमेसु भिण्णं तु सत्तमादिसे । भिण्णं सहस्सं जाणीया मज्झिमाणंतरेसु य ॥ १८०४ ॥
सहस्साणं पमाणं तु मज्झिमेसु वियाणिया । तथा सतसहस्साणि कायवंतेसु णिदिसे ॥ १८०५ ॥
एतं चतुसु कायेसु पमाणं उवलक्खये । संहारे कायवंताणं कोडिं वूयांगचित्तओ ॥ १८०६ ॥
कायवंते य उम्मट्ठे ददे य अमितं धणं । अन्तरे ददे णिद्रे पुण्णे पुण्णामसुकिले ॥ १८०७ ॥ 25
[.....] समेसु यावि सब्वेसु समं वूयांगचित्तओ ॥ १८०८ ॥
भिन्ने दसकरमाधारे वे वा चचारि अट्ट वा । आचारिते सते यावि अट्ट चचारि वा वदे ॥ १८०९ ॥
अणुमाणेण सब्वेण सहस्साणि वियागरे । तथा सतसहस्साणि कोडिं वा अंगवी वदे ॥ १८१० ॥
एते[हिं] चैव सब्वेहिं अंगवीजपदेहि तु । णिउणं संपधारंतो वूया अपरिमितं विधिं ॥ १८११ ॥
एतो तिविधमाहारं जघमं मज्झिमुत्तमं । जुत्तं तदुभयामासे लक्खये तु इमं गमं ॥ १८१२ ॥ 30
उत्तमं अवहुं गीवं हितयं पट्ठीं च मज्झिमं । कट्टि-क्खणे जघण्णे तु एवेस तिविधो गमो ॥ १८१३ ॥
एवं भिण्णत्तादीयं गमेणेतेण अंगवी । समे य विसमे चैव विण्णादूण वियागरे ॥ १८१४ ॥ छ ॥

दक्षिण्यणि तु सव्याणि सव्याणेषु ददाणि तु । अणागताणि सव्याणि तथा अन्तर्मतराणि य ॥ १८१५ ॥
अन्तर्मतराणि वा अन्तर्मतराणि याणि य । अथाताणुत्तराणि च उत्तर्मंतराणि य ॥ १८१६ ॥

जाणि च औन्नत्य्याणि वंभेजाणि य सव्यसो । मुक्कण्डुपडीमागा गिद्धगिद्धतराणि य ॥ १८१७ ॥

औहाराणि य सव्याणि आहारतरकाणि य । तथा पुरत्वियमाणि वा पुञ्चदक्षिण्यकाणि य ॥ १८१८ ॥

5 सव्याणि [य] पसन्नाणि पसण्णतरकाणि य । जे य वामद्वयाहार [.....] ॥ १८१९ ॥]

सियाणि तथ धूलानि दीहाणुम्मज्जिताणि य । परिमंढला य चम्मट्टा वट्टा चैव धम्मिमुद्धा ॥ १८२० ॥

चतुरस्ता य चम्मट्टा चम्मट्टा पुधुला य जे । कायवंतो य औमट्टा हितयाणुम्मज्जिताणि य ॥ १८२१ ॥

रमणीया य चम्मट्टा वट्टा थावरणि य । इस्सरणि य सव्याणि पियाणि य विसैसतो ॥ १८२२ ॥

तवेव आविमूलीया मज्जगाढा तवेव य । सुदितानि मुग्धाणि सेवुद्धिरमणाणि य ॥ १८२३ ॥

10 महापरिगहाणि च सक्काणि च तवेव य । सदेया दंसणीया य गवेया उ तवेव य ॥ १८२४ ॥

फसैया य रसेया य चम्मट्टा तु जया भवे । तथा अग्गेयया पेया यलाणि य तवेव य ॥ १८२५ ॥

आवुणेयाणि पुण्णाणि उज्जुकाणि तवेव य । दिव्याणि तव सव्याणि सोमाणि य मित्थी य ॥ १८२६ ॥

पुत्तेयाणि य वंथानि वत्ताणाणि सूर्याणि य । वराणि णायकार्णाणि च आणेयाणि महाणि य ॥ १८२७ ॥

वधा पुण्णामपेयेसु सव्यं दिट्ठं सुभासुमं । तथा एतेसु सव्वेसु सव्यं वूया सुभासुमं ॥ १८२८ ॥ छ ॥

15 मज्झिमाणि य सव्याणि यत्तनाणाणि जाणि य । वहिरचमंतराणि च अन्तर्मतराणिहरिणि य ॥ १८२९ ॥

सामोनादाणि सोमाणि र्हेण्हा मज्झिमकाणि य । मज्झिमागंतराणि च रत्तवेस्साणि जाणि य ॥ १८३० ॥

विणा य कण्हणीहेहिं पट्टिमागा तु सेसगा । सव्वे जेव टियामासा कण्हलुक्खेहिं जे विणा ॥ १८३१ ॥

गिद्धलुक्कराणि सव्व्याणि लुक्करगिद्धाणि जाणि य । तथा आदाणीदारा णीदाराहारसंजुता ॥ १८३२ ॥

मुंरिमुत्तराणि सव्याणि पसण्णा मिरमका य जे । उवधुलाणि जागगे जुत्तोउवचयाणि य ॥ १८३३ ॥

20 जुत्तपमाणदीहाणि दीहजुत्ताणि जाणि य । परिमंढलाणि जागगे भवे करणोवसंहिता ॥ १८३४ ॥

तथा मज्झिमकाया य मज्झिमाणंत्रा य जे । आकासाणि य सव्याणि ईस्सरणंतराणि य ॥ १८३५ ॥

वैमिस्स-सक-परकाणि सीउण्हाणि समाणि य । मुकुमाले य अंगम्मि तथा वियहसंबुडे ॥ १८३६ ॥

सैण्हाणि मट्टुकाणि च [उज्जुकाणि च] जाणि तु । माणुस्सकाणि सव्याणि कण्णयाणि य जाणि [तु] ॥ १८३७ ॥

जुत्तयेयाणि सव्याणि धीमाणाणि जाणि तु । तथा अचवलाई च तथा गोज्जाणि जाणि य ॥ १८३८ ॥

25 जया धीणामपेयेसु सव्यं बुत्तं सुमा-उमुमं । तथा एतेसु सव्वेसु फलं वूया सुमा-उमुमं ॥ १८३९ ॥ छ ॥

वामाई च चलाई च अतिवचाणि जाणि य । वाहिराणि य सव्याणि वज्जवज्जंतराणि य ॥ १८४० ॥

कण्हाणि अतिउण्हाणि जवणाणि य जाणि तु । महव्ययाणि सव्याणि आदेयाणि तवेव य ॥ १८४१ ॥

कण्हणीउपडीमागा टियामासा तवेव य । लुक्काणि लुक्खलुक्कराणि णीदारा जे य कित्तिवा ॥ १८४२ ॥

तथा णीदाराणीदारा तथा पच्छिमदक्षिण्य । तवेव पच्छिमाई च तवेव पच्छिमुत्तरा ॥ १८४३ ॥

30 अन्तर्मतराणि जागगे अन्तर्मतरा य जे । जे य पाण्हट्ट वामा वामा घण्हट्टा य जे ॥ १८४४ ॥

संवावग्माणि जागगे अंगे (अग्गे) याणि किमाणि य । परंपरकिमाई च तथा हूस्साणि जाणि य ॥ १८४५ ॥

वंता जहण्णकाया य जवण्णतरका य जे । तणू परंपरतणू परमाणू अणू य जे ॥ १८४६ ॥

१ अन्तर्मतराणि ई० ट० ॥ २ माणुत्तरा० ई० ट० ॥ ३ आहारी णेयसव्याणि पियाणि य विसैसतो ।
तथा पुर० ई० ट० ॥ ४ उम्मट्टा णि० ॥ ५ सुवुद्धि० ई० ट० ॥ ६ कण्हा मच्छिमकाणि य वय० ॥ ७ परिमुत्ताणि
य ३ पु० णि० ॥ ८ ईस्सरानितरानि ई० ट० ॥ ९ वामिस्सं सको व्पर० वय० ॥ १० सण्णाणि मट्टुकाणि च जाणि तु
अंगचित्तो णि० ॥

गहणोपगहणा जे य तथा डहरचलाणि य । अणिससरा य पेस्सा य पेस्सभूया य अप्पिया ॥ १८४७ ॥
 अंता दीणा य तिण्हा य वापणोपहुता य जे । अबुद्धिरमणा दुग्ंधा तथा अप्परिग्गहा ॥ १८४८ ॥
 वंध-मोक्खा परक्खा य सह-वातमणा य जे । अदंसणीया णिण्णा य गंभीरा दुविधा य जे ॥ १८४९ ॥
 विसमणि य तुच्छाणि विवरा दारूणा य जे । पत्थीणाइं खराइं च कुड्डिला चंडाणता य जे ॥ १८५० ॥
 आयता मुद्दियणिं च तिज्जज्जोणित्ताणि य । ॥ १८५१ ॥ ५
 पयलाइत्ताणि चंडंगम्मि तथा ओमत्थकाणि य । मताणि जाणि चंडंगम्मि तथा पूतीणि जाणि य ॥ १८५२ ॥
 किलिद्धाणि य जाणिं तु तथा णीयाणि जाणि य । तथा अणज्जाणिं वा णित्थाणंताराणि य ॥ १८५३ ॥
 जधा णपुंसकाणं तु फलं दिट्ठं सुभासुभं । तथा एतेसु सव्वेसु फलं वूया सुभासुभं ॥ १८५४ ॥ छ ॥

एवं समुच्चिता एते मणिणो तिण्णि रासयो । पुण्णाम-स्थी-णपुसेहिं ॥ १८५५ ॥
 तत्थ जो दक्खिणा ॥ १८५६ ॥ १०
 वित्तियो मज्झिमादीयो रासी पुवं पक्कित्तो । सो वि सव्वो जघुद्धित्तो धीणामेहिं समप्फलो ॥ १८५७ ॥
 ततितो धामभौगो तु जो रासी पुव्वक्कित्तो । सो वि सव्वो जघुद्धित्तो णपुंसकसमप्फलो ॥ १८५८ ॥

एवमेते जघुद्धित्ता तिथा तिण्णि जथक्कमं । पुण्णाम-स्थी-णपुसेहिं विण्णातव्वा समप्फला ॥ १८५९ ॥
 मणीसमुच्चयो णाम अज्झायो तिविहप्फलो । सतसाहो सहस्सक्खो दारसतसहस्सिसो ॥ १८६० ॥

[.....] महापुरिसदिण्णाए समक्खातो महामणी ॥ १८६१ ॥ १५
 केवलं अंगविज्जाए मणिओ अत्थि दीवणो । अंत-स्सरविणिव्वत्तो अंगस्स रयणं मणि ॥ १८६२ ॥
 मणिओ अंगहिययं णिमिच्चहिययं तथा । ततियलोकहितयं तस्स णामं विधीयति ॥ १८६३ ॥
 तं णिससज्जायरओ णिग्गमाधारए णरो । अणण्णमत्तिमं दच्छो तरे वागणोदार्धिं ॥ १८६४ ॥
 णागतण्णमसिस्सं व णापुत्तं णासहरसतं । ण अणातभूतं धायेज्जो भगवतं महामणिं ॥ १८६५ ॥
 एतमासज्ज हि णरो अणंतमत्तिचक्खुमं । अज्जिणो जिणसंकासो पक्कखं देवतं भवे ॥ १८६६ ॥ २०
 हिता-उहितान अत्थाणं दिव्वमाणुसकाण य । संपया-उगागता-उतीतान विण्णाया भवतंगरी ॥ १८६७ ॥
 धियाधारो सूमी स्रो दच्छो सुप्पतिमाणयं । आमास-सह-रूवणू जिणो विय वियागरे ॥ १८६८ ॥

॥ णमो अरहंताणं । णमो सव्वसिज्जाणं । णमो भगवतीए महापुरिसदिण्णाय
 अंगविज्जाय समुद्देशो मणिसव्वकारणणिद्देशो मणी नाम
 नयमो अज्झाओ सम्मतो ॥ ९ ॥ छ ॥

धेजोदीरणे संव्यमणुस्सरूवागितिपादुच्भावे सव्यमणुस्सरूवागितिपरामासे २ संव्यमणुस्सरूवागितिसदृगते वा १
 सव्यमणुस्सरूवागितिणामधेजोदीरणे वा एवंविधसह-रूपपाउच्भावे मणुस्सं ब्रूया १ । तत्थ तिरियामासे तिरियगते तिरि-
 यविलोकिंते सव्यतिरिक्खजोणिपादुच्भावे सव्यतिरिक्खजोणीकपरामासे सव्यतिरिक्खजोणिकसदृगते सव्यतिरिक्खजोणि-
 कणामधेजोदीरणे सव्यतिरिक्खजोणिकरूवागितिपादुच्भावे सव्यतिरिक्खजोणिकरूवागितिपरामासे वा सव्यतिरिक्खजो-
 णिकरूवागितिसदृगते वा सव्यतिरिक्खजोणिकरूवागितिणामधेजोदीरणे वा सव्यतिरिक्खजोणिकउवकरणपादुच्भावे वा १
 सव्यतिरिक्खजोणिकउवकरणपरामासे वा सव्यतिरिक्खजोणिकउवकरणसदृगते वा सव्यतिरिक्खजोणियउवकरणणामधे-
 जोदीरणे सव्यतिरिक्खजोणिकधी-पुरिसणामधेजोदीरणे वा एवंविधसह-रूपपादुच्भावे तिरिक्खजोणिं ब्रूया २ ।

तत्थ मणुस्से पुब्बाधारिते अज्जो १ पेस्सो २ त्ति पुणरवि आधारयितव्वं भवति । तत्थ ॥ उच्चं णामीय
 गत्तेसु उच्चं णामीय गत्तोवकरणे सव्यअज्जसमाचारगते सव्यअज्जगते सव्यअज्जपादुच्भावे सव्यअज्जपरामासे
 सव्यअज्जसदृगते [संव्यअज्जणामधेजोदीरणे सव्यअज्जरूवागितिपादुच्भावे] सव्यअज्जरूवागितिपरामासे वा संव्यअज्ज- 10
 रूवागितिसदृगते सव्यअज्ज रूवागितिणामधेजोदीरणे वा ॥ संव्यअज्जउवकरणपाउच्भावे ॥ सव्यअज्जउवकरण-
 परामासे सव्यअज्जउवकरणसदृगते सव्यअज्जउवकरणणामधेजोदीरणे वा सव्यअज्जयीपुरिसणामधेजोदीरणे एवंविधसह-
 रूपपाउच्भावे अज्जं मणुस्सं ब्रूया १ । तत्थ अधोणामीगत्तामासे अधोणामीगतोपकरणे ॥ सव्यपेस्सगते सव्यपेस्सो-
 ययारगए ॥ सव्यपेस्सपादुच्भावे सव्यपेस्सपरामासे सव्यपेस्ससदृगते सव्यपेस्सणामधेजोदीरणे सव्यपेस्सरूवागिति-
 पादुच्भावे सव्यपेस्सरूवागितिपरामासे सव्यपेस्सरूवागितिसदृगते सव्यपेस्सरूवागितिणामधेजोदीरणे सव्यपेस्सउवकरण- 15
 पादुच्भावे सव्यपेस्सउवकरणपरामासे सव्यपेस्सउवकरणसदृगते सव्यपेस्सउवकरणणामधेजोदीरणे सव्यपेस्सधी-पुरिसणा-
 मधेजोदीरणे एवंविधसह-रूपपाउच्भावे पेस्सं मणुस्सं ब्रूया २ ।

तत्थ अज्जो पेस्से त्ति पुब्बमुपधारिते इत्थी १ पुरिसो २ त्ति पुणरविआधारयितव्वं भवति । तत्थ दाहिणामासे
 पुण्णामधेज्जगत्तामासे पुरिसपाउच्भावे पुरिसपरामासे पुरिससदृगते पुरिसणामधेजोदीरणे पुरिसरूवागितिपाउच्भावे
 पुरिसरूवागितिपरामासे पुरिसरूवागितिसदृगते पुरिसरूवागितिणामधेजोदीरणे पुरिसणामधेजोवकरणपाउच्भावे ॥ पुरि- 20
 सणामधेजोवकरणपरामासे ॥ पुरिसणामधेजोवकरणसदृगते पुरिसणामधेजोउवकरणणामधेजोदीरणे पुरिसणामधेज-
 दिव्वजोणितपादुच्भावे वा ॥ पुरिसणामधेजदिव्वजोणियपरामासे ॥ पुरिसणामधेजदिव्वजोणितसदृगते पुरि-
 सणामधेजदिव्वजोणितणामधेजोदीरणे पुरिसणामधेजपाणजोणितपादुच्भावे पुरिसणामधेजपाणजोणितपरामासे पुरि-
 सणामधेजपाणजोणितसदृगते पुरिसणामधेजपाणजोणितणामधेजोदीरणे ॥ पुरिसणामधेजधाउजोणियपाउच्भावे
 पुरिसणामधेजधाउजोणियपरामासे पुरिसणामधेजधाउजोणियसदृगए ॥ पुरिसणामधेजधाउजोणितणामधेजोदीरणे 25
 पुरिसणामधेजमूलजोणितपाउच्भावे ॥ पुरिसणामधेजमूलजोणितपरामासे ॥ पुरिसणामधेजमूलजोणितसदृगते
 पुरिसणामधेजमूलजोणितणामधेजोदीरणे सव्यपुरिसोवकरणे वा सव्यपुरिसोवचारगते वा पुण्णामधेजे पुप्फे वा फले वा
 भूसणे वा भायणे वा एवंविधसह-रूपपाउच्भावे पुरिसं ब्रूया १ । तत्थ वामामासे धीणामधेजगत्तामासे धीणउच्भावे
 धीणपरामासे धीणसदृगते धीणामधेजोदीरणे धीरूवागितिपादुच्भावे ॥ धीरूवागितिपरामासे ॥ १ धीरूवागिति-
 सदृगते ॥ धीरूवागितिणामधेजोदीरणे धीरूवागितिउवकरणपाउच्भावे धीरूवागितिउवकरणपरामासे धीरूवागितिउवकर- 30
 णसदृगते धीरूवागितिउवकरणणामधेजोदीरणे धीणामधेजदिव्वजोणितपादुच्भावे धीणामधेजदिव्वजोणितपरामासे
 धीणामधेजदिव्वजोणितसदृगते धीणामधेजधाउजोणितपादुच्भावे धीणामधेजधाउजोणितणामधेजोदीरणे धीणामधेजधाउजोणितपादुच्भावे धीणा-

१ ॥ १ ॥ एतच्छान्दोग्यः पाठः ॥ १ ॥ तं नास्ति ॥ २ अस्सो पेस्से त्ति पुण ॥ १ ॥ तं ॥ ३ इत्थं विहान्तर्गतः पाठः ॥ १ ॥
 तं एव वदन्ते ॥ ४ गते येय सव्यं ॥ १ ॥ तं ॥ ५ च्चुरस्येद्येद्यमः पाठः एतं प्रियु नास्ति ॥ ६ सव्यअज्जरूवागि-
 तिणामधेजोदीरणे वा सव्यअज्जरूवागिति सदृगते ॥ १ ॥ एतच्छान्दोग्येन एतं प्रियु पाठो वर्तते ॥ ७ ॥ १-१-१-१ ॥ इत्थं-
 विहान्तर्गतः पाठः ॥ १ ॥ तं एव वदन्ते ॥ १ ॥ १ ॥ एतच्छान्दोग्यः पाठः ॥ १ ॥ तं नास्ति ॥ १ ॥ इत्थं विहान्तर्गतः पाठः ॥ १ ॥
 एव वदन्ते ॥ १ ॥ १ ॥ एतच्छान्दोग्यः पाठः ॥ १ ॥ तं नास्ति ॥

मधेज्जाधतुजोणितपरामासे < १ धीणामधेज्जाधतुजोणितसदृगते > धीणामधेज्जाधतुजोणितणामधेज्जोदीरणे ॥ ३३ ॥ धीणा-
मधेज्जाणजोणितयपाउन्मावे ॥ ३४ ॥ धीणामधेज्जाणजोणितपरामासे धीणामधेज्जाणजोणितसदृगते धीणामधेज्जा-
णजोणितणामधेज्जोदीरणे ॥ ३५ ॥ धीणामधेज्जमूलजोणितयपाउन्मावे ॥ ३६ ॥ धीणामधेज्जमूलजोणितपरामासे धीणाम-
धेज्जमूलजोणितसदृगते धीणामधेज्जमूलजोणितउपकरणणामधेज्जोदीरणे सच्चइत्थिसमायागते इत्थीवेसगते इत्थीगमे
६ पुफे फले वा भूसणे वा भायणे वा एवंविधसद-रूपपाउन्मावे इत्थी वूया २ । इति सज्जीस समणुगत ।

तत्थ दिव्वजोणिते दिव्वरत्थी-पुरिसपाउन्मावे वा परामासे [वा] सदृगते वा णामधेज्जोदीरणे वा उपकरणगते
वा दिव्वरत्थी-पुरिसे एवंगतं जं भयति इति सज्जीसे अत्थि दिव्व-माणुरसको धी-मुरिसगते विण्णायव्वो भवति ।

तत्थ सज्जीवे अत्थे पुव्वमाधारिते तिरिक्खजोणिते तिरिक्खजोणितं अत्थं तिविधमाधारये । तं जथा-चतुप्पदगतं

१ पक्खिगतं २ परिसप्पगतं ३ चेति । तत्थ चउप्पदेसु चतुरस्सेसु चउक्केसु सच्चचउप्पयगते सच्चचउप्पयपाउन्मावे सच्च-

१० चउप्पयपरामासे सच्चचउप्पयसदृगते सच्चचउप्पयणामधेज्जोदीरणे सच्चचउप्पयरूपागितिपाउन्मावे सच्चचउप्पदरूपागि-

तिपरामासे सच्चचउप्पदरूपागितिसदृगते सच्चचतुप्पदरूपागितिणामधेज्जोदीरणे सच्चचतुप्पदउपकरणपाउन्मावे सच्चचउ-

प्पयउपकरणपरामासे सच्चचउप्पयउपकरणसदृगते सच्चचउप्पयउपकरणणामधेज्जोदीरणे सच्चचउप्पय ॥ ३७ ॥ धी-पुंसं ॥ ३८ ॥

णामधेज्जोदीरणे एवंविधसद-रूपपाउन्मावे चउप्पयगतं अत्थं संचितियं ति वूया १ । तत्थ उदं गीवाय सिरोगुहामासे

उदं गीवा-सिरो-मुद्वोयकरणउल्लोगिते उरिस्सते उचारिते उदंभागे सच्चपक्खिरपाउन्मावे सच्चपक्खिरपरामासे सच्चपक्खि-

१५ सदृगते सच्चपक्खिरणामधेज्जोदीरणे सच्चपक्खिरूपागितिपाउन्मावे सच्चपक्खिरूपागितिपरामासे सच्चपक्खिरूपागिति-

सदृगए सच्चपक्खिरूपागितिणामधेज्जोदीरणे सच्चपक्खिरउवकरणपाउन्मावे सच्च [पक्खिर] उपकरणपरामासे सच्चपक्खि-

उपकरणसदृगए सच्चपक्खिरउवकरणणामधेज्जोदीरणे ॥ ३९ ॥ सच्चपक्खिरणामधेज्जोदीरणे धी-पुरिसगते एवंविधसद-रूपपाउ-

न्मावे पक्खिगतं सज्जीवं अत्थं वूया २ । तत्थ दीहेसु सच्चपरिसत्तपाउन्मावे सच्चपरिसत्त ॥ ४० ॥ परामासे सच्चपरि-

सत्तसदृगते सच्चपरिसत्तणामधेज्जोदीरणे सच्चपरिसत्तपूरूपागितिपाउन्मावे सच्चपरिसत्तपूरूपागितिपरामासे सच्चपरिसत्त-

२० रूपागितिसदृगते सच्चपरिसत्तपूरूपागितिणामधेज्जोदीरणे सच्चपरिसत्तपयवकरणपाउन्मावे सच्चपरिसत्तपयवकरणपरामासे

सच्चपरिसत्तपयवकरणसदृगते सच्चपरिसत्तपयवकरणणामधेज्जोदीरणे सच्चपरिसत्तपत्थि-पुरिसणामधेज्जोदीरणे एवंविधसद-रूप-

पाउन्मावे परिसत्तकत्तं सज्जीवं अत्थं वूया ३ ।

तत्थ तिरिक्खजोणिकते [अत्थे] पुव्वमाधारिते तिरिक्खजोणिकत्तं ॥ ४१ ॥ तिरिकेत्तं ॥ ४२ ॥ इविधमाधारये-पुरिसो

तिरिक्खजोणी १ इत्थी तिरिक्खजोणी २ । तत्थ दक्खिणामासे पुण्णामधेज्जामासे पुरिसपाउन्मावे पुरिसपरामासे पुरिससदृकते

२५ पुरिसणामधेज्जोदीरणे पुरिसरूपागितिपाउन्मावे एवंविधसद-रूपपाउन्मावे पुरिसं तिरिक्खजोणितं वूया १ । तत्थ

वामामासे सरिरत्थीणामधेज्जामासे सरिरत्थीणामधेज्जोदीरणे < १ इत्थीपाउन्मावे > इत्थीपरामासे इत्थिसदृगते इत्थीणाम-

धेज्जोदीरणे इत्थिरूपागितिपाउन्मावे इत्थिसमायागते इत्थीवेसगते एवंविधसद-रूपपाउन्मावे इत्थीतिरिक्खजोणितं

वूया २ । जथा मणुस्सेसु धी-मुरिस-णुंसरूपविभागो तथा तिरिक्खजोणीयं पि आमास-सद-रूपविभागोहिं पुच्चुदिहेहिं

णत्तव्वं मयति । इति सज्जीसे अत्थो विण्णेयो ।

३० तत्थ अज्जीवे अत्थे पुव्वमाधारिते अज्जीयमत्थं तिविधमाधारये । तं जथा-पाणजोणितं १ मूलजोणितं २

धातुजोणितं ३ चेति । तत्थ चउत्तामासे < १ संव्वपाणजोणितपरामासे > सच्चपाणजोणितपाउन्मावे सच्चपाणजोणिततप-

रामासे सच्चपाणजोणितसदृगते सच्चपाणजोणितणामधेज्जोदीरणे सच्चपाणजोणितधी-पुरिसगते पाणजोणितयं अज्जीवं वूया

१ < १ > एतच्चिहान्तर्गतः पाठः इ० त० नास्ति ॥ २-३-४ इत्थिचिहान्तर्गतः पाठः इ० त० एव वर्तते ॥ ५ इत्थिचिहान्तर्गतः
पाठान्तर्गतः इ० त० एव वर्तते ॥ ६ मणिगए इ० त० ॥ ७ इत्थिचिहान्तर्गतः पाठः इ० त० एव वर्तते ॥ ८ < १ > एतच्चिहान्तर्गतः
पाठः इ० त० नास्ति ॥ ९ पुच्चुदिहेत्ते सं १ पु० ॥ १० < १ > एतच्चिहान्तर्गतः पाठः इ० त० सि० नास्ति ॥

१ । तस्य ददामासे सव्यधातुजोगिगते सव्यधातुजोगिपाड्भावे सव्यधातुजोगिगतपरामासे ॥ सव्यधातुजोगिगयस-
 हगए ॥ सव्यधातुजोगिगतणामधेज्जोदीरणे सव्यधातुमये वा उचकरणे सव्यधातुजोगीवी-पुरिसगते एवंविधसद्-रूपपा-
 दुग्भावे धातुजोगिगतं अजीवमत्थं व्यूया २ । तस्य गहणेषु केस-मंसु लोमगते सव्यमूलजोगिपाडुग्भावे सव्यमूलजो-
 गिपरामासे सव्यमूलजोगिसदगत ॥ सव्यमूलजोगिणामधेज्जोदीरणे ॥ सव्यमूलजोगिमए उचकरणे सव्यमूलजोगिगए
 णामधेजे उचकरणे एवंविधसद्-रूपपादुग्भावे धी-पुरिसगथं अत्थं अजीवं व्यूया ३ । ॥ तस्य पाणजोगिगतणामधेज्ज- 5
 उचकरणे * एवंविधसद्-रूपपाडुग्भावे णणुसकगतं * अत्थं अजीवं व्यूया । ॥

तस्य पाणजोगिगते अत्ये पुच्चमाधारिते पाणजोगिगतं अत्थं दुविधमाधारए-आहारगतं उचकरणगतं चेव १
 मूलजोगिगतं उवगरणगतं चेव २ । तस्य अन्भंतरामासे ददामासे णिद्धामासे सुद्धामासे आहार-सुह-गीयाय दंतोडे गंडे
 कवोल-जिन्ध-तालुके परसपदे सहितय-कुक्खि-उदरपरामासे उट्टित्ते परिलीडे गिगिगणे अस्साविते सस्साविते सव्यभो-
 यणगते सव्यपाणगते सव्यपाण-भोयणभायणगते सव्यआहारगते पुक्फ-फले पत्त-पवाले भक्खपक्खिचतुप्पदे परिसप्पगते 10
 एवंविधसद्-रूपपादुग्भावे पाणजोगिगतं अजीवआहारगतं अत्थं व्यूया । तस्य सव्यउवगरणगते सव्यकारुक्कगते सव्यसि-
 प्पिगगते सव्यअण्णाहारगते पाणजोगिगतं अजीवउचकरणगतं अत्थं व्यूया १ । तस्य पाणजोगिमये आहारगते अजी-
 वमत्थे पुच्चमाधारिते पाणजोगिगतो अजीवो आहारगतो अत्यो दुद्धं दधि णवणीतं तक्कं धितं मांसं घसा मज्जमिति,
 इति पाणजोगिगतो अत्यो आहारगतो च्चि व्यूया । तस्य पाणजोगिगते अजीवे उचकरणगते अत्ये पुच्चमाधारिते
 अजीवो पाणजोगिगतो उचकरणगतो अत्यो अट्टिगतो दंतगतो सिंगगतो चम्मगतो प्हायुगतो लोमगतो वालगतो 15
 तंतुगतो सोणियगतो चेति, इति पाणजोगिगतो उचकरणगतो अजीवो अत्यो २ ।

तस्य धातुजोगिगते अत्ये ॥ पुच्चमाधारिए धातुजोगिगयं अत्थं दुविहमाहारए-अग्गेयं १ अणग्गेयं २ चेति ।
 तस्य सव्यअग्गेयेसु उण्हेसु सव्यअग्गिपाडुग्भावे सव्यअग्गिपरामासे सव्यअग्गिसहगए सव्यअग्गिणामधिज्जोदीरणे
 सव्यरत्तेसु सव्यअग्गिजीवणेषु सव्यअग्गिजीवणोपकरणेषु य अग्गेयं व्यूया १ । तस्य सव्यअणग्गेयसु सव्यसीयलेसु सव्य-
 उचकवरेसु (सव्यउचकरणेषु) सव्यअणग्गिजीवणेषु अणग्गेयोवजीवणोपकरणेषु य अणग्गेयं धातुजोगिगयं अत्थं व्यूया 20
 २ । तस्य अग्गेये धातुजोगिगए अत्ये पुच्चमाधारिए सव्यलोहाणि खारलोहाणि अग्गेयं च मणिधातुकयं व्यूया । ॥
 तस्य अणग्गेये धातुजोगिगते अत्ये पुच्चमाधारिते अणग्गेयं धातुजोगिगतं वण्णधातुगतं कटिणधातुगतं अत्थं
 पुदविधातुगतं अणग्गेयं च मणिधातुगतं रसधातुगतं व्यूया । इति धातुजोगिगतो अणग्गेयो ॥ अग्गेयो ॥ धं दुविधो
 अत्यो भवति ।

तस्य मूलजोगिगते अत्ये पुच्चमाधारिते मूलजोगिगतं अत्थं तिविधमाधारये-मूलगतं १ खंधगतं २ अगगतं ३ 25
 चेति । तस्य अधोभागेषु अवेणामीय उचकरणे सव्यमूलजोगिपाडुग्भावे सव्यमूलजोगिपरामासे सव्यमूलजोगिसदगतते
 सव्यमूलजोगिणामधेज्जोदीरणे सव्यमूलजोगिउचकरणपाडुग्भावे सव्यमूलजोगिउचकरणपरामासे सव्यमूलजोगिउवगरण-
 सदगतते सव्यमूलजोगिउवकरणामधेज्जोदीरणे एवंविधसद्-रूपपादुग्भावे मूलगतं अत्थं व्यूया १ । तस्य सव्यसमाणे सव्य-

१ इत्थिहान्तगतं: पाठ: हं. तं. एव वर्तते ॥ २-३ ॥ १ ॥ एतथिहान्तगतं: पाठ: हं. तं. नास्ति ॥ ४ ॥ पुच्चन्तगतं:
 पाठ: सिं. एव वर्तते । सं ३ पुं. प्रतिपु रिक्कं स्थानं वर्तते ॥ ५ उट्टिकिए परिं हं. तं. ॥ ६ संसाविते हं. तं. विना ॥
 ७ अजीवं आहां हं. तं. । अजीवमाहां विं. ॥ ८ अण्णाहारं हं. तं. विना । ९ णिगते आहां हं. तं. ॥
 १० घतमासवयमांसमपुमिति हं. विना ॥ ११ उट्टियगतो हं. तं. ॥ १२ इत्थिहान्तगतं: पाठ: हं. तं. एव वर्तते । सं ३
 पुं. सिं. प्रतिपु पुनरेतत्स्थाने पुच्चमाधारिते धातुजोगिगणेषु य अणग्गेयं धातुजोगिगतं अत्थं व्यूया । तस्य अग्गेये
 धातुजोगिगते अत्ये पुच्चमाधारिते सव्यलोहाणि खारलोहाणि खारलोहाणि अग्गेयं च मणिधातुकं व्यूया । तस्य
 वण्णग्गेये इति रूपः पाठो वर्तते ॥ १३ ॥ १ ॥ एतथिहान्तगतं परं हं. तं. नास्ति ॥ १४ य सचदुविजो अत्यो हं. तं. ॥

समाणोपकरणेषु सव्यसमभागोपलद्धीयं सव्यसंधेगते सव्यसंधपाउन्मावे सव्यसंधपतरामासे सव्यसंधसद्वगते सव्यसंधगाम-
धेजोदीरणे सव्यसंधईकासोयलद्धीयं सव्यसमभागोयलद्धीयं सव्यसंधधमे उयकरणे सव्यसंधोयकरणे एवंविधसद-रूपपा-
उन्मावे संधगयं व्यूया २ । तथ उद्वंभागेसु उद्वंगत्तोपकरणे सव्यपुष्प-फल-पत्त]पादुन्मावे सव्यपुष्प-फल-पत्तपरामासे
सव्यपुष्प-फल-पत्तसद्वगते सव्यपुष्प-फल-पत्तगामधेजोदीरणे सव्यपुष्प-फल-पत्तउयकरणपाउन्मावे सव्यपुष्प-फल-पत्त-
उयकरणपरामासे सव्यपुष्प-फल-पत्तउयकरणसद्वगए सव्यपुष्प-फल-पत्तउयकरणगामधेजोदीरणे एवंविधस-
द-रूपपादुन्मावे अगगतं मूलजोणितं अत्यं व्यूया ३ । इति मूलजोणितो तिविधो अत्यो भवति ।

- तथ चलेसु णटं वा पावासिकं वा आतुरं वा व्यूया—तथ अचमंतरे चलेसु णटं व्यूया, बाहिरेसु चलेसु पावासिकं
व्यूया, विमंज्जेसु चलेसु आतुरं व्यूया । वद्वेसु वद्वं व्यूया । मोकरेसु मोकरं व्यूया । तथ हियय-कुकिप-गामि-उदर-
उच्छंग-योरुस-अंगुद्वक-कण्टिकापरामासे पयं पयं अंतरेण पुच्छिंठुं आगतो सि त्ति व्यूया । पुण्णामोपलद्धीयं पुत्तं व्यूया ।
10 धीणामोवलद्धीयं दारिकं व्यूया । पुण्णामधेज्जेसु पुगिसं अंतरेण पुच्छिंठं आगतो सि त्ति व्यूया । धीणामधेज्जेसु इत्थीमंतरेण
पुच्छिंठं आगतो सि त्ति व्यूया । णपुंसकेसु णपुंसकमंतरेण पुच्छिंठं आगतो सि त्ति व्यूया । इद्वेसु सारिकोपकरण-
मंतरेण [पुच्छिंठं] आगओ सि त्ति व्यूया । कण्हेसु सारिकोपकरणमंतरेण पुच्छिंठं आगतो सि त्ति व्यूया ।
तंवेसु रत्तोपलद्धीयं च सुवण्णकं व्यूया । सुव्हेसु सारवत्तेसु य मज्झकं व्यूया । सव्यधणोपलद्धीयं धणं व्यूया । गिरत्थकेसु
गिरत्थकं व्यूया । तथ गिद्वेसु कूयं वा णटं वा समुदं वा पुच्छिंठं आगतो सि त्ति व्यूया—तथ उव्विद्वेसु कूयं
15 व्यूया, वीद्वेसु णटं व्यूया, महापरिगद्वेसु परिक्खेवेसु य समुदं व्यूया । तथ कसेसु सुत्तं वा अच्छादणं वा कसं वा
धी-मुगिसं अंतरेण पुच्छिंठं आगतो सि त्ति व्यूया । तथ कसेसु अज्जवेसु केस-मंसु-डोमगते सुत्तं वा तंतुं वा विततं वा
व्यूया । तथ वल्ले वित्तये परिहिते पागुते वेद्वणे वा अच्छादणं व्यूया । तथ सज्जीवेसु पुण्णामेसु पुगिसं व्यूया । धीणामेसु
सज्जीवेसु इत्थिकं व्यूया । णपुंसके णपुंसकं व्यूया । तथ थलेसु उण्णतेसु पव्वयं वा पासायं वा उण्णतं व्यूया । तथ
गद्वेसु रणं व्यूया । उव्वगद्वेसु आरामं व्यूया वणरासिं वा व्यूया । परिमंइलेसु भायणं व्यूया । पुधुसु य पुवर्धि
20 वा किळंजं वा व्यूया । जण्णयेसु य जण्णं वा वापेज्जं वा व्यूया । अगोयेसु अग्गी व्यूया । गिद्वेसु उदगं
वा सुट्ठिं वा आहारं वा व्यूया—उवरिद्विमेसु गिद्वेसु वासं व्यूया, समभागेषु गिद्वेसु आहारं व्यूया, अधेभागेषु
गिद्वेसु उदगं व्यूया । चतुरस्सेसु चउपपयं वा खेतं वा व्यूया । वंज्जेसु पावासिकं व्यूया । वज्जेसु परस्म
अत्थाय पुच्छिंठं आगतो सि त्ति व्यूया । पुगिमेसु अप्पणो अत्थाय पुच्छिंठं आगतो सि त्ति व्यूया । वज्जंतरेसु अप्पणो
य परस्म य अंतरेण पुच्छिंठं आगतो सि त्ति व्यूया । पुगिमेसु अणागतं व्यूया । पच्छिमेसु अतिवत्तं व्यूया । वामद-
25 त्तिमेसु गतेसु वत्तमाण व्यूया । मतेसु मतं वा मतकण्णं वा व्यूया । लुक्खेसु चारिकमंतरेण पुच्छिंठं आगतो सि त्ति
व्यूया । सेतेसु गिद्वेसु य रणं व्यूया । चउरंसेसु गिद्वेसु चित्तेसु वद्वेसु य काहावणं व्यूया । किण्हेसु असक्रोयकरणमंतरेण
पुच्छिंठं आगतो सि त्ति व्यूया । सामेसु आमरणमंतरेण पुच्छिंठं आगतो सि त्ति व्यूया । वीद्वेसु दवियमंतरेण पुच्छिंठं
आगतो सि त्ति व्यूया । इस्सेसु पुष्प-फलमंतरेण पुच्छिंठं आगओ सि त्ति व्यूया । रमणीयेसु ईरिणं वा मटं वा
रमणिज्जं वा देसं व्यूया । सुद्वितेसु उरसयं वा समायं वा अंतरेण पुच्छिंठं आगतो सि त्ति व्यूया । दीणेषु उव्वसग्गसलद्धं
30 अंतरेण पुच्छिंठं आगतो सि त्ति व्यूया । पुण्णेषु पसण्णेषु उरसयं वा वारेज्जं वा धूया । उद्वंभागेसु दिव्यजोणितं
व्यूया । कण्णपट्टे सव्ययाद्वणगते चतुपदगतं वा अंतरेण पुच्छिंठं आगतो सि त्ति व्यूया । तिक्खेसु जोग-वत्तेमं व्यूया ।
तथ केस-मंसु-डोमगते मूलजोणितं अत्यमंतरेण पुच्छिंठं आगतो सि त्ति व्यूया । अणुसु सव्यधन्नगतं व्यूया । सामेसु
संधयोगेषु मेघुणमंतरेण पुच्छिंठं आगतो सि त्ति व्यूया । धंभेयेसु धंभणमंतरेण पुच्छिंठं आगतो सि त्ति व्यूया ।

खत्तेयेसु खत्तियमंतरेण पुच्छिउं, आगतो सि त्ति वूया । वेस्सेजेसु वेस्समंतरेण पुच्छिउं आगतो सि त्ति वूया । सुदेजेसु सुदमंतरेण पुच्छिउं आगतो सि त्ति वूया । बालेयेसु बालमंतरेण पुच्छिउं आगतो सि त्ति वूया । जोवणत्थेसु जोवणमंतरेण पुच्छिउं आगतो सि त्ति वूया । मज्झिमवयेसु मज्झिमवयमंतरेण पुच्छिउं आगतो सि त्ति वूया । महव्वयेसु महव्वयमंतरेण पुच्छिउं आगतो सि त्ति वूया । उत्तमेसु उत्तमं वूया । उत्तमसाधारणेसु उत्तमसाधारणं वूया । मज्झिमेसु मज्झिमं वूया । मज्झिमसाधारणेसु मज्झिमसाधारणं वूया । जघण्णेसु जघण्णं वूया । जघण्णसाधारणेसु जघण्णसाधारणं वूया । पुरत्थिमेसु अभिकंखितं वूया । पच्छिमेसु उवमुत्तं वूया । वामदक्खिणेसु उवमुत्तमाणां अत्थं अंतरेण अत्थं पुच्छिउं आगतो सि त्ति वूया । एवं सब्बेसु आमासेसु अंतरेण वाहिरंये य अथापट्टिरूवेण सह-रूव-गंध-फास-रसगतेण सब्बं समणुगतंभव्यं भवति ॥

॥ आंगमणो नामज्ज्ञाओ दसमो सम्मतो ॥ १० ॥ छ ॥

[एकादसमो पुच्छितज्ज्ञाओ]







10

णमो भगवतो अरहतो यसवतो महापुरिसस्स महावीरवद्धमाणस्स । अथापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविजाय पुच्छितं णामाज्ज्ञातं । तं खलु भो ! तमणुवक्खयिस्सामि । तं जहा—अप्पाणं ताव दसथा परिवत्थेज्ज । तं जथा—हिद्धंतं १ दीणत्तं २ आतुरत्तं ३ आरोगत्तं ४ कुद्धत्तं ५ पसण्णत्तं ६ छातत्तं ७ पीणियत्तं ८ एक्कम्मणत्तं ९ विस्सित्तमणत्तं १० वेत्ति ।

तत्थ हिद्धे अप्पणि पहिद्धमत्थं यागरे । दीणि अप्पणि दीणमत्थं अणेव्वाणि च वियागरे । कुद्धे अप्पणि आधि १५ कलहं च वियागरे । पसण्णे अप्पणि सम्भोई संपीतिं च वियागरे । आतुरे अप्पणि आतुरं उवहुत्तं च वियागरे । आरोग्गे अप्पणि आरोगं वियागरे । छाते अप्पणि दुद्धिमक्खं तत्थ निहिस्से । पीणित्ते अप्पणि धातकं अण्णलामं च वियागरे । एक्कम्मणसे अप्पणि म्मोणिच्चुत्तिं मणोत्तुत्तिं च वियागरे । विक्खित्तचित्ते अप्पणि विक्खित्तचित्तमायं अप्पसण्णत्तायं अत्थहाणिं च वियागरे ॥ छ ॥

अतो परं परस्स पुच्छितं वक्खाइस्सामो । तं जथा—गच्छंतो वा पुच्छेज्ज, णिओ वा पुच्छेज्ज, कुटुफो वा २० पुच्छेज्ज, परिसकंतो वा पुच्छेज्ज, उवेसंतो वा पुच्छेज्ज, णिवण्णो वा पुच्छेज्ज, अप्पत्थदो वा पुच्छेज्ज, अणवत्थदो वा पुच्छेज्ज, उक्कासणगतो वा पुच्छेज्ज, णीयासणगतो वा पुच्छेज्ज, पुरतो वा पुच्छेज्ज, पच्छतो वा पुच्छेज्ज, वामतो वा पुच्छेज्ज, दक्खिणतो वा पुच्छेज्ज, अभिसुद्धो वा पुच्छेज्ज, परसुद्धो वा पुच्छेज्ज, उवसकंतो वा पुच्छेज्ज, अणवसकंतो वा पुच्छेज्ज, संधरंतो वा गत्ताणि पुच्छेज्ज, विरिंवंतो वा गत्ताणि पुच्छेज्ज, उट्ठितो वा पुच्छेज्ज, ओणमंतो वा पुच्छेज्ज, उण्णमंतो वा पुच्छेज्ज, उत्तरंतो वा पुच्छेज्ज, आरुहंतो वा पुच्छेज्ज, विणमंतो वा पुच्छेज्ज, णीहरंतो २५ वा पुच्छेज्ज, पहत्थीकाकतो वा पुच्छेज्ज, पकरपेटकतो वा पुच्छेज्ज, कासमाणो वा पुच्छेज्ज, छीयमाणो वा पुच्छेज्ज, पयलायमाणो वा पुच्छेज्ज, निरिंसधेमाणो वा पुच्छेज्ज, निट्ठुमंतो वा पुच्छेज्ज, निस्ससंतो वा पुच्छेज्ज, जंमायमाणो वा पुच्छेज्ज, छेलंतो वा पुच्छेज्ज, पवहंतो वा पुच्छेज्ज, रोदंतो वा पुच्छेज्ज, हसंतो वा पुच्छेज्ज, आहारमाणो वा पुच्छेज्ज, उद्रेमाणो वा पुच्छेज्ज, सक्कारेमाणो वा पुच्छेज्ज, असक्कारेण वा पुच्छेज्ज, भिउदीय वा पुच्छेज्ज, मुट्ठि

१ इत्थविहात्तगतः पाठः इ० त० एव वर्तते ॥ २ आंगमणोऽज्ज्ञाओ ॥ छ ॥ इ० त० विना ॥ ३ हिद्धयं दीणयं आउरयं आरोगयं कुद्धयं पसण्णयं छातयं पीणिययं एक्कम्मणयं विक्खित्तमणयं वेत्ति इ० त० ॥ ४ म्मं निरुयद्धयं वियागरे । छाते अप्पणि विच्छायं दुद्धिमं णि ॥ ५-७ इत्थविहात्तगतः पाठः इ० त० एव वर्तते ॥ ८ पलायमाणो इ० त० विना ॥ ९ छलत्तंतो इ० त० विना ॥ १० छप्रेमाणो इ० त० विना ॥

- या करेमाणो पुच्छेज, मुत्तं वा करेमाणो पुच्छेज, पुगिसं वा करेमाणो पुच्छेज, धातं वा करेमाणो पुच्छेज, वंत्तो वा पुच्छेज, सध्वेसु वा जाण-याहेणसु संतो पुच्छेज, कोट्टके वा संतो पुच्छेज, अंगे वा संतो पुच्छेज, अरंजणुळे वा पुच्छेज, गन्धगिहे वा पुच्छेज, अरुमंतरगिहे वा पुच्छेज, भत्तगिहे वा पुच्छेज, वधगिहे वा पुच्छेज, णड्डे वा पुच्छेज, उद्दगिहे वा पुच्छेज, अग्निगिहे वा पुच्छेज, रक्त्तमूले वा पुच्छेज, भूमिगिहे वा पुच्छेज, विमाणे वा पुच्छेज, गगगगतो वा पुच्छेज, चचरे वा पुच्छेज, संवीसु वा पुच्छेज, समरे वा पुच्छेज, कडिक्कोरणे वा पुच्छेज, पागारे वा पुच्छेज, चरिक्कामु वा पुच्छेज, वेतीसु वा पुच्छेज, गवयारीसु वा पुच्छेज, संक्रमेसु वा पुच्छेज,  संयणेसु वा पुच्छेज,  वलमीसु वा पुच्छेज,  रीसीसु वा पुच्छेज,  पंसुसु वा पुच्छेज, गिद्धमणेसु वा पुच्छेज, गिहूडेसु वा पुच्छेज, फलिसायां वा पुच्छेज, पार्वारे वा पुच्छेज, पेदिक्कामु वा पुच्छेज, मोहणगिहे वा पुच्छेज, ओसरे वा पुच्छेज, संक्रमे वा पुच्छेज, सोमाणत्वतो वा पुच्छेज, अरुमंतरपरिचरेण वा पुच्छेज, बाहिरायं द्वुवारसालायं वा पुच्छेज, बाहिरायं वा गिहद्वुवारवाहायं पुच्छेज, उवट्टणजालगिहे वा पुच्छेज, अरुणके वा पुच्छेज, सिण्णगिहे वा पुच्छेज, कम्मगिहे वा पुच्छेज, रयतगिहे वा पुच्छेज, ओधिगिहे वा पुच्छेज, < इण्णल(उपल)गिहे वा पुच्छेज, > हिमगिहे वा पुच्छेज, आदंसगिहे वा पुच्छेज, तट्टगिहे वा पुच्छेज, आगमगिहे वा पुच्छेज, चतुक्कगिहे वा पुच्छेज, रच्छागिहे वा पुच्छेज, वंतगिहे वा पुच्छेज, कंसगिहे वा पुच्छेज, पडिक्कम्मगिहे वा पुच्छेज, कंससालायं वा पुच्छेज, आववगिहे वा पुच्छेज, पणियगिहे वा पुच्छेज, आसणगिहे वा पुच्छेज, भोग्यगिहे वा पुच्छेज, रसोर्वीगिहे वा पुच्छेज, ह्यगिहे वा पुच्छेज, रयगिहे वा पुच्छेज, गयगिहे वा पुच्छेज, पुक्कगिहे वा पुच्छेज, जूतगिहे वा पुच्छेज, पानवगिहे वा पुच्छेज, मल्लिणगिहे वा पुच्छेज, धंधेणगिहे वा पुच्छेज,  जाणगिहे वा पुच्छेज,  जाणगिहे वा संतो पुच्छेज ॥ ८ ॥

- अभिमुदो वा पुच्छेज अभिमुदअण्णीयकं अणागतं अत्यं विंतेसि त्ति वूया । परम्मुदो पुच्छेज अण्णीयकं २० अत्यं परम्मुदं अंतरेण पुच्छिअं आगतो सि त्ति वूया । उमभंतो पुच्छेज अत्यो त्तिअं भविस्सति त्ति वूया । अयसभंतो पुच्छेज अत्यो त्तिअं ण भविस्सति त्ति वूया । अयमभंतो पुच्छेज अत्यो त्तिअं विगस्मिहिति त्ति वूया । संदम्मो अंगानि पुच्छेज संजोगं वा समागमं वा अंतरेण पुच्छिअं आगतो सि त्ति वूया । विन्दिस्समाणो अंगानि पुच्छेज विण्णयोगमंतरेण पुच्छति त्ति वूया । उट्टंतो पुच्छेज चलमत्यमंतरेण पुच्छति त्ति वूया । निरेमंतो पुच्छेज पुयथायरमत्यमंतरेण पुच्छति त्ति वूया । उण्णमंतो पुच्छेज विवद्धीमंतरेण पुच्छति २१ त्ति वूया । ओगमंतो पुच्छेज हागीमंतरेण पुच्छिअं आगतो मि त्ति वूया । आरुमंतो पुच्छेज आगमेरसो अत्यो भग्गिअं त्ति वूया । उरुमंतो पुच्छेज आपायमंतरेण पुच्छिअं आगतो सि त्ति वूया । विगामंतो अंगानि पुच्छेज दुक्कमा अत्यो भग्गिअं त्ति वूया । णीहंतो अंगानि पुच्छेज निण्णारमंतरेण पुच्छति त्ति वूया । पड्ढत्तिक्कसंपउत्तो पुच्छेज धं वा पण्णाममंतरेण पुच्छमि त्ति वूया । परग्यंतो वाय पुच्छेज अत्यहागीमंतरेण पुच्छमि त्ति वूया । निदुममाणो पुच्छेज अजिणमंतरेण पुच्छमि त्ति वूया । णीमसंतो पुच्छेज आपाममंतरेण पुच्छति त्ति वूया । जंभा- २२ यमाणो पुच्छेज उरुमंतरेण पुच्छमि त्ति वूया । पयडापमाणो पुच्छेज अत्यं दुक्कं अंतरेण पुच्छति त्ति वूया । परदंतो पुच्छेज अत्परिणाममंतरेण पुच्छमि त्ति वूया । ऐदंतो पुच्छेज त्तिअं पानं अंतरेण पुच्छति त्ति वूया ।

१ इण्णल(उपल)गिहे १८ ६० ६१ १०३ ॥ २ इण्णल(उपल)गिहे १८ ६० ६१ १०३ ॥ ३ गिहेसु वा ६० ६० ॥ ४ रीसीसु वा ६० ६० ॥ ५ रीसीसु वा ६० ६० ॥ ६ उवट्टणजालगिहे ६० ६० ॥ ७ < इण्णल(उपल)गिहे ६० ६० ॥ ८ आगमगिहे ६० ६० ॥ ९ धंधेणगिहे ६० ६० ॥ १० इण्णल(उपल)गिहे ६० ६० ॥ ११ १०३ १०३ ॥

हसंतो पुच्छेज्ज रतीसंपयुत्तं अत्यमंतरेण पुच्छसि चि वूया । आहारेमाणो पुच्छेज्ज भागवियद्विमंतरेण पुच्छसि चि वूया । छेहेमाणो पुच्छेज्ज हाणीसंपयुत्तं अत्यं पुच्छसि चि वूया । सकारेण पुच्छेज्ज खिपं सुहेण अत्यं पाविहिसि चि वूया । असकारेण पुच्छेज्ज दुक्खेण अत्यं ण पाविहिसि चि वूया । भिवड्डी करेमाणो पुच्छेज्ज कोवमंतरेण पुच्छसि चि वूया । सुद्धिं करेमाणो पुच्छेज्ज संजोगमंतरेण पुच्छसि चि वूया । मुत्तं करेमाणो पुच्छेज्ज पयाअपायमंतरेण पुच्छसि चि वूया । पुरीसं करेमाणो पुच्छेज्ज अत्यावायमंतरेण पुच्छसि चि वूया । वातं करेमाणो पुच्छेज्ज मतं वा मतकपं वा अंतरेण पुच्छसि चि वूया । वंदंतो पुच्छेज्ज इस्सरियं वा उवचयं वा अंतरेण पुच्छसि चि वूया । कोट्टए पुच्छेज्ज गिगमं अंतरेण पुच्छसि चि वूया । अंगणे पुच्छेज्ज महाजणमंतरेण पुच्छसि चि वूया । गिक्खुडे पुच्छेज्ज अरहस्समंतरेण पुच्छसि चि वूया । उदगगिहे पुच्छेज्ज आरोग्गहास-सिणेहमंतरेण पुच्छसि चि वूया । गन्धमिहे पुच्छेज्ज गिन्वुती-रतीसंपवत्तमत्यमंतरेण चि वूया । भग्गमिहे पुच्छेज्ज अगिन्वुतिमंतरेणं ति वूया । अंगिमिहे पुच्छेज्ज सरीर-परितावणमंतरेणं ति वूया । रुक्खमूले पुच्छेज्ज सरीरसोक्खमंतरेण पसत्यमत्यमंतरेण य चि वूया । भूमिमिहे पुच्छेज्ज 10 अरहस्समत्यमंतरेणं ति वूया । विमाणे पुच्छमाणो सुदमत्यमंतरेणं ति वूया । गणणे संतो पुच्छेज्ज अव्वत्तमत्यमंतरेणं ति वूया । उवलमिहे पुच्छेज्ज गिस्सुहमंतरेणं ति वूया । णरविबुद्धयाहेण पुच्छेज्ज इस्सरियमंतरेणं ति वूया । सयणासणगतो पुच्छेज्ज सोक्खमंतरेणं ति वूया । रासीसु विपुलइस्सरिय-आधिपच्चकारणलाभायं पुच्छसि चि पावेहिसि चि वूया । वियडप्पकासे पुच्छेज्ज दुरुक्खवणमत्यं ति वूया । रायपचे पुच्छेज्ज चलं महाजणासाधारणं रायत्यमंतरेणं ति वूया । सिंघाडग-चच्चेरेसु पुच्छेज्ज चतुप्पदहँवचारीमंतरेणं ति वूया । दुवारे पुच्छेज्ज पुरिसस्स गिगमणमंतरेणं पुच्छसि चि वूया । खेत्ते पुच्छेज्ज 15 पच्छणं पलायमंतरेणं ति वूया । अट्टालए पुच्छेज्ज भयमंतरेणं ति वूया । गँयवारीय पुच्छेज्ज सत्तुभयमंतरेणं ति वूया । संधिसमरेसु पुच्छेज्ज २ देसंतो ३ देसंतरामणमंतरेणं ति वूया । सयणे संतो पुच्छेज्ज भज्जामंतरेणं ति वूया । चळमीसु दंसणीयरतिविहारसंपयुत्तं अत्यमंतरेणं ति वूया । उदगपचेसु अमणुण्णिणरससंपयुत्तमंतरेण पुच्छसि चि वूया । वयेसु पुच्छेज्ज हुप्पावणीयं रायत्यं पुरिससंपयुत्तं ति वूया । रासीसु पुच्छेज्ज सरीरअभिवद्विमंतरेण पुच्छसि चि वूया । वप्पेसु सुभिक्खमंतरेणं ति वूया । गिद्धमणेसु पुच्छेज्ज अमणुण्णमत्यमंतरेणं ति वूया । फलिहासु पुच्छेज्ज रायमंतरेणं ति वूया । 20 पउलीसु पुच्छेज्ज सिद्धदुवारमंतरेणं ति वूया । कोट्टके पुच्छेज्ज णीहारपायासिकगिगमणमंतरेणं ति वूया । अरसमोहणके पुच्छेज्ज मोहणमंतरेणं ति वूया । ओसरकेसु पुच्छेज्ज वाहिरसाधारणं ति वूया । मंचिकासु पुच्छेज्ज वेस्समंतरेणं ति वूया । सोवाणेसु पुच्छेज्ज अट्टाणमंतरेणं ति वूया । खंभेसु पुच्छेज्ज थावरमंतरेणं ति वूया । अन्धमंतरदुवारे पुच्छेज्ज आगमणसंरोध[मंतरे]णं ति वूया । वाहिरदुवारे पुच्छेज्ज गिगमणमंतरेणं ति वूया । दुवारसालाय वाहिराय पुच्छेज्ज पुरुसअन्धमंतरपरप्पयासागमणपतिपुत्तलामं च चि वूया । अन्धमंतरे विरहे गिगमणं, वाहारे २ दुवारे ३ दुवारयाहायं 25 खिपं पयासागमणं, गन्धिणीय य पजायणं ति वूया । अन्धमंतरगिहे पुच्छेज्ज गोञ्जरतिसंपयोगमंतरेणं ति वूया । चतुरस्सके पुच्छेज्ज पाणरतिविहारसंपयुत्तं ति वूया । जलगिहे हाँससुहविहारमंतरेणं पुच्छसि चि वूया । महाणसगिहे पुच्छेज्ज विपैवंचनासंपयुत्तं ति वूया । अच्छणके पुच्छेज्ज कम्मणिच्छेदणं वूया । सिप्पगिहे पुच्छेज्ज विज्जालाममंतरेणं ति वूया । कम्मगिहे पुच्छेज्ज कम्मराममंतरेणं ति वूया । रयणगिहे पुच्छेज्ज रजाभित्तेकछायाभिगमणमंतरेणं ति वूया । भंद-गिहे पुच्छेज्ज संचयमंतरेणं ति वूया । ओसपगिहे पुच्छेज्ज सरीरसंतावमंतरेणं ति वूया । उपलगिहे पुच्छेज्ज गुरुक्खलसंसितं 30 अत्यमंतरेण ति वूया । हिमगिहे पुच्छेज्ज जेज्वाणिसंसितं अत्यमंतरेणं ति वूया । चित्तगिहे मणोवितक्कामंतरेणं ति पुच्छसि

१ हलविहान्तर्गतः पाठमन्दर्भः हं० त० एव वर्तते ॥ २ २ ७ एतद्विहान्तर्गतः पाठमन्दर्भः हं० त० नास्ति ॥ ३ अग्गमिहे हं ३ पु० । अग्गिमिहे सि० ॥ ४ स्समंतं हं० त० ॥ ५ गिमुहुमंतं हं० त० ॥ ६ जणसाधा हं० त० सि० ॥ ७ रुक्खवारी हं० त० ॥ ८ पयचारीप हं० त० ॥ ९ २ १ एतद्विहान्तर्गतं पदं हं० त० नास्ति ॥ १० हलविहान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ११ २ १ एतद्विहान्तर्गतं पदं हं० त० नास्ति ॥ १२ हासमुहं हं० त० विना ॥ १३ विप्पवंचना हं० त० ॥ १४ गित्थेदणं हं० त० विना ॥ १५ ज महप्पभायमंतं हं० त० विना ॥
अंग० १८

- चित् वृष्या । आदंसिगिहे पुच्छेज्ज महप्पभावमंतरेणं ति वृष्या । लतागिहे पुच्छेज्ज धीरतीसंपयोगमंतरेणं ति वृष्या । आंग-
 म्मगिहे पुच्छेज्ज धयस्संतिसंपयुत्तं ति वृष्या । चतुक्कगिहे पुच्छेज्ज असारसंतावमंतरेणं ति वृष्या । जाणगिहे पुच्छेज्ज
 रायत्थविचद्धिमंतरेणं ति वृष्या । दगकोट्टो पुच्छेज्ज उत्तममहाजणसुद्धसंपयोगमंतरेणं ति वृष्या । कोसगिहे पुच्छेज्ज अत्य-
 धासमंतरेणं ति वृष्या । पठिकम्मगिहे पुच्छेज्ज तरुणसंपयोगमंतरेणं ति वृष्या । कंकसालायं पुच्छेज्ज सरीरविसुद्धिमंतरेणं ति
 5 वृष्या । आतवगिहे पुच्छेज्ज विजयं वा हासदुक्कपरिमोक्खं व ति वृष्या । पणियगिहे पुच्छेज्ज पाणधारणं आयुप्पमायं
 व ति वृष्या । पाणगिहे पुच्छेज्ज पमादं वा विच्चमं व ति वृष्या । आसणगिहे पुच्छेज्ज ठाणमंतरेणं ति वृष्या । भोयण-
 गिहे पुच्छेज्ज बलविचद्धि आरोमं च अंतरेणं ति वृष्या । सयणगिहे पुच्छेज्ज सरीरोवचयमंतरेणं ति वृष्या । इयगिहे
 पुच्छेज्ज पंथगमणमिस्सारियसाधारणं ति वृष्या । गयसालायं पुच्छेज्ज संगमविजयसाधारणं रायमंतरेणं ति वृष्या । वत्थगिहे
 पुच्छेज्ज सोमग्गमंतरेणं ति वृष्या । रथसालायं पुच्छेज्ज संगमविजय-रतिविदारमंतरेणं ति वृष्या । पुप्फगिहे पुच्छेज्ज
 10 आभरणालंकारं रमंतरेणं ति वृष्या । जूतसालायं पुच्छेज्ज उवधि-णिकदिपीलामंतरेणं ति वृष्या । पाणवगिहे पुच्छेज्ज
 वधद्वारमंतरेणं ति वृष्या । लेवणगिहे पुच्छेज्ज कलमंतरेणं ति वृष्या । तलगिहे पुच्छेज्ज उवदेस-गुरूसंजोगमंतरेणं ति
 वृष्या । सेवणगिहे पुच्छेज्ज वैद्युज्जसंरोधमंतरेणं ति वृष्या । उजाणगिहे पुच्छेज्ज कामरतिसद्दाससंपयुत्तं ति वृष्या ।
 जाणसालाय पुच्छेज्ज भयसंरोधमंतरेणं ति वृष्या । आपसणे पुच्छेज्ज सरीरस्स कम्मलाभमंतरेणं ति वृष्या । मंडवे
 पुच्छेज्ज दारिद्रमंतरेणं ति वृष्या । लेवणगिहे पुच्छेज्ज मटाजणसाधारणपरिकल्पणायं ति वृष्या । वेसगिहे पुच्छेज्ज
 15 वयकम्मवचणयाय ति वृष्या । कोट्टाकारे पुच्छेज्ज धण-धणमंतरेणं ति वृष्या । पवासु पुच्छेज्ज दाणविसग्गमंतरेणं ति
 वृष्या । सेतुकम्मिसु पुच्छेज्ज पखोलगमणमंतरेणं ति वृष्या । जणके पुच्छेज्ज दाससंस्तरणमंतरेणं ति वृष्या । ष्हाणगिहे
 पुच्छेज्ज सरीरसोक्खमंतरेणं ति वृष्या । वषगिहे पुच्छेज्ज अमणुणसंजोगमंतरेणं ति वृष्या । अंगणगिहे पुच्छेज्ज अंगण-
 गतं सम्भोहप्पयुत्तं ति वृष्या । आतुरगिहे पुच्छेज्ज चाधिपरिमोक्खमंतरेणं ति वृष्या । संसरणगिहे पुच्छेज्ज रायत्थविवादं
 व ति वृष्या । सुंसालायं पुच्छेज्ज अत्यचित्तमंतरेणं ति वृष्या । करणसालायं पुच्छेज्ज आयुषेयमंतरेणं ति वृष्या ।
 20 पणित्तगिहे पुच्छेज्ज कुडुववद्धीमंतरेणं ति वृष्या । परोहडे पुच्छेज्ज संपेसणमंतरेणं ति वृष्या ॥ छ ॥

सेसाणि गिहाणि पटिरूपपडियोगलेहिं णातव्याणि भवन्ति, तं जघा-आसणाणि पट्टत्थिकाओ आमासद्वसतं
 अपस्सयाणि टिताणि पुच्छिताणि बंदिताणि आगताणि संलावितानि चुंवितानि आलिगितानि उवदासितानि णिवण्णाणि
 सेवितानि । जघा एताणि सब्वाणि आमास-सद-रूप-इंगितगारभावेहिं आधारयित्ता विण्णातव्याणि भवन्ति, एवं
 पुच्छित्तज्जायो(ये) एतेहिं जेव सामास-सद-रूपपाटुम्भावेहिं आधारयित्ता विण्णातव्याणि भवति ॥

25

॥ पुच्छित्तनामऽज्जायो एकादसमो सम्मत्तो ॥ ११ ॥ छ ॥

[वारसमो जोणीअज्जाओ]

- अथापुत्रं खलु भो! महापुरिसदिण्णाए अंगविज्ञापे जोणी णामऽज्जायो । तं खलु भो! तमणुवैक्ख-
 स्सामि । [सं जहा-] तत्थ सब्बअपरिग्गहेसु सव्वपासंढगते सब्बपासंढोवकणे सव्वधम्मपपुत्तगते सब्बधम्मोपारणे
 थ धम्मजोणी वृष्या । तत्थ सब्बमहापरिग्गहेसु सव्वअत्य-इंगिते सब्बत्थ > वैत्तमाणेसु धी-पुरिसेसु सब्बत्थैसब्बागते थ
 30 अत्यजोणी वृष्या । तत्थ सब्बसामेसु सब्बारीमगते सव्वसामोयिगते सब्बकामोचारगते थ गंध-मह-पहाणा-ऽणुलेवण-आ-

१ कारेति वृष्या सं १ पु० ॥ २ स्संघणं हं त- विना ॥ ३ वावज्जं हं त- ॥ ४ ह्वणं हं त- ॥ ५ म्मवियण्णयां
 हं त- ॥ ६ ज्ज धघणमंतं हं त- ॥ ७ म्मे पुं हं त- ॥ ८ ता णातव्ये भवति हं त- ॥ ९ पुच्छित्तऽज्जाओ
 ॥ छ ॥ हं- त- विना ॥ १० कखयिस्सामि हं त- ॥ ११ < १८ एतच्चिदान्तर्गतः पाठः हं त- नास्ति ॥ १२ वण्णमां
 हं त- विना ॥ १३ एत्थगसव्वगए हं त- ॥ १४ रामिगते हं त- विना ॥ १५ सब्बसम्मोईगते हं त- ॥

भरणगते यं कामजोणिं वूया । तत्थ पुण्णेषु उद्धभागे य विवद्धमाणेषु य धी-पुरिसेसु सव्वविक्खदीयं जुत्तेसु विवादिं वूया । तत्थ तुच्छेषु अधेभागेसु हायमाणेषु य धी-पुरिसेसु सव्वहाणिसंपयुत्तेसु य हाणिं वूया । तत्थ समागतेसु गत्तेसु य महामरणगतेसु य महौपकरणेषु य निधुणचरेसु य सत्तेसु सव्वसंगमगतेसु य संगमजोणिं वूया । तत्थ एकंगेषु गत्तेसु विवित्तेसु य एकामरणे एकचारिसु गत्तेसु विखिप्पमाणेषु सव्वविप्पयोगेषु विप्पयोगजोणिं वूया । तत्थ पसण्णेषु गत्तेसु सव्वपसण्णगतेसु य सव्वमित्तगए य सव्वसम्मोयीगतं य मित्तजोणिं वूया । तत्थ अप्पसण्णेषु गत्तेसु सव्वअप्पसण्णगते 5 य सव्वसव्वमित्तगए य सव्वअत्थगए य सव्वजोघगते य सव्वसंगामणामभेज्जोदीरिणे उह्हससुक्कागउळ्ळगते अहि-णउळ्ळगते विवाद्जोणिं वूया । तत्थ णीहारेसु चलेसु गाम-णगर-णिगम-जाणपय-पट्टण-णिविस-सैण्णाखघावार-अड-वि-यव्वयदेस-संजाण-जाणगते दूत-संधियाळ-पावासिकगते उदाहिते पावासिकजोणिं वूया । एतेसामेव ठितसाधारणेषु पबुत्थजोणिं वूया । एतेसामेव आहारोदीरणे आगमजोणिं वूया । तत्थ णीहारिसु मुदितेसु कण्हेसु णिग्गमजोणिं वूया । तत्थ आहारेसु मुदितेसु आगमजोणिं वूया । तत्थ उत्तमेसु रायोवकरणेषु रायजोणिं वूया । तत्थ उत्तमेसु रायाणुणाय- 10 जोणिं वूया । इस्सरेसु रायपुरिसागतसु य रायपुरिसजोणिं वूया । तत्थ द्दुत्तेसु सव्ववणियगतेसु य वणियपघजोणिं वूया तत्थ चलेसु सव्वकारुगगते य सव्वकारुकोपकरणे कारुकाजोणिं वूया । तत्थ सव्वअणूसु सव्वकसेसु सव्वकासिक्कोपकरणे सव्वत्थीगगते य अणुयोजोणिं वूया । तत्थ उद्धं णामिउवकरणगते य सव्वअज्जगते य सव्वअज्जोपचये अज्जजोणिं वूया । तत्थ अपेणाभिगते उद्धं आणुगते सिस्सजोणिं वूया । ईत्थ पाद-जंघा-रंस-पव्वपेस्सगते य पेस्सजोणिं वूया । तत्थ सोत्तपडिप्पिघाणे णेत्तपडिप्पिघाणे मुह्हपडिप्पिघाणे अप्पाणपडिप्पिघाणे से रंदिप्पिघाणे सव्ववंधेसु य वंधणजोणिं 15 वूया । तत्थ एतेसु सव्वेसु आहारसंपयुत्तेसु वंधणजोणिं वूया । तत्थ एतेसु चैव णीहारेसु य जुत्तेसु य चलेसु सव्वभोक्खेसु य भोक्खजोणिं वूया । तत्थ मुदितेसु सव्वसाधारणेषु य आरोग्गपवत्तिं वूया । तत्थ उत्तमेसु आहारसंपयुत्तेसु मुदितजोणिं वूया । तत्थ उद्धंभागेसु आहारेसु उव्वहूत्तेसु पीडिते साधारणे आतुत्तेजोणिं वूया । तत्थ पच्छिमेसु णिम्मट्टेसु अधोभागेसु य मरणजोणिं वूया । तत्थ उद्धंभागेसु आहारसंपयुत्तेसु य सयितव्वसाधारणेषु य सयितव्वजोणिं वूया । तत्थ सव्वत्थगते छेदणेषु य छिण्णजोणिं वूया । तत्थ सोत्तपडिप्पिघाणे णेत्तपडिप्पिघाणे मुह्हपडिप्पिघाणे अप्पाणपडिप्पिघाणे 20 णिघाणपडिप्पिघाणे णिक्खित्त-पण्हट्टगते य णट्टजोणिं वूया । तत्थ सव्वत्थ आहारगते विणयजोणिं वूया । तत्थ सव्व-वंधेज्जेसु वंधचारिणजोणिं वूया । तत्थ सव्ववंभणेषु सव्ववंभणोपकरणे य वंधणजोणिं वूया । तत्थ सव्वखत्तेसु आयुधमंडे य रत्तियजोणिं वूया । तत्थ सव्ववेस्सेज्जेसु वेस्सजोणिं वूया । तत्थ [सव्व]मुद्रेज्जेसु मुद्रेजोणिं वूया । तत्थ सव्ववाल्लेयेसु वाल्लजोणिं वूया । तत्थ सव्वजोव्वणत्थेषु जोव्वणत्थजोणिं वूया । तत्थ सव्ववुट्टेसु वुट्टजोणिं वूया । तत्थ सव्वमज्झिमेसु मज्झिमजोणिं वूया । तत्थ सव्वउत्तमेसु उत्तमजोणिं वूया । तत्थ सव्वपघवरेसु पघवरजोणिं 25 वूया । तत्थ सव्वअभंत्तरेसु अभंत्तजोणिं वूया । तत्थ सव्ववाहारेसु वाहिरजोणिं वूया । वाहिरभंत्तरेसु सकपफ-साधारणेषु साधारणजोणिं वूया । तत्थ णणुंसकेसु णणुंसकजोणिं वूया । तत्थ पुण्णामेषु पुण्णामजोणिं वूया । धीणामेषु धीणामजोणिं वूया । तत्थ पुरत्थिमेसु गत्तेसु अणागतेसु य सरेसु अणागतजोणिं वूया । तत्थ पच्छिमेसु गत्तेसु अतियत्तेसु य सहेसु अतिकंतजोणिं वूया । [तत्थ] वामदक्खिणेषु गत्तेसु वत्तमाणेषु य सहेसु वत्तमाणजोणिं वूया तत्थ पुरत्थिमेसु [गत्तेसु] पुरत्थिमजोणिं वूया । तत्थ उत्तरेसु गत्तेसु उत्तरजोणिं वूया । तत्थ पच्छिमेसु गत्तेसु पच्छि- 30 मजोणिं वूया । तत्थ दक्खिणेषु गत्तेसु दक्खिणजोणिं वूया । तत्थ दक्खिणपच्छिमेषु गत्तेसु दक्खिणपच्छिमजोणिं वूया । तत्थ पच्छिमुत्तरेसु गत्तेसु पच्छिमुत्तरजोणिं वूया । तत्थ पुव्वुत्तरेसु गत्तेसु पुव्वुत्तरजोणिं वूया । तत्थ पुव्व-

१ जुत्तेसु धरं० ॥ २ मलोपं हं० तं० विना ॥ ३ इत्थविहान्तर्गतं पाठः हं० तं० एव वत्ते ॥ ४ °रणे अण्हसमुक्का-
कड्डगगते हं० तं० ॥ ५ °णुण्णां हं० तं० ॥ ६ सव्ववेस्सेसु हं० तं० ॥ ७ °आणगते सि० विना ॥ ८ तं पादं धरं० ॥
९ पस्सगते या पयस्सजो हं० तं० विना ॥ १० °घाणे घाणपडिप्पिघाणे मुह्हं हं० तं० वि० ॥ ११ पण्हट्टिहाणे हं०
तं० ॥ १२ सव्वसोक्खेसु य सोक्खं हं० तं० विना ॥ १३ °सु अत्थेसु अणा हं० तं० विना ॥

दक्षिणेषु गतेषु पुष्यदक्षिणजोणिं घृया । [तस्य] उपरिद्विमेसु उपरिद्विमजोणिं घृया । तस्य हेद्विमेसु हेद्विमजोणिं घृया । तस्य आहारेसु आहारजोणिं घृया । [तस्य] णीहारेसु णीहारजोणिं घृया । तस्य आहारणीहारेसु आहारणीहारजोणिं घृया । तस्य णीहाराहारेसु णीहाराहारजोणिं घृया । तस्य पाणजोणियं पाणजोणिं घृया । तस्य धातुजोणीयं धातुजोणीं घृया । तस्य मूलजोणियं मूलजोणिं घृया । तस्य सव्यसामेषु आभरणजोणिं घृया । तस्य अणुसु ५ घणजोणिं घृया । तस्य तणुसु यत्तजोणिं घृया । तस्य गहणेषु रणजोणिं घृया । तस्य उपगहणेषु आरामजोणिं घृया । तस्य उत्तमेसु उत्तमजोणिं घृया । तस्य अधमेसु अधमजोणिं घृया । तस्य उण्णतेसु उण्णतजोणिं घृया । तस्य णिण्णेषु णिण्णजोणिं घृया । तस्य रसेसु रसजोणिं घृया । तस्य वण्णेषु वण्णजोणिं घृया । [तस्य] गंधेषु गंधजोणिं घृया । ६ वैत्यं छद्दिं उद्दिं उद्दुजोणिं घृया । तस्य अम्भंतपामसे <1 सँवम्मि > सव्यमस्य त्ति घृया । तस्य वाहिरामसे सव्यम्मि सव्यं णस्य त्ति घृया । तस्य सव्वेहिं इंदियेहिं इंदियत्था विण्णातव्या भवन्तीति ॥

10

॥ जोणी णामऽज्ञायो वारसमो सम्मत्तो ॥ १२ ॥ छ ॥

[तेरसमो जोणिलक्खणवागरणज्झायो]

णमो महापुरिसरस यद्धमाणस्स । अघापुब्बं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्ञाय जोणिलक्खणवागरणो णामऽज्ञायो । तं खलु भो ! तमणुक्खस्साम्मि । तं जघा-तस्य तिविधा जोणी सज्जीवा १ णिज्जीवा २ सज्जीगिज्जीवा ३ चेति । तिविधं लक्खणं-दीणोदत्तं १ दीणं २ उदत्तं ३ चेति । तस्य इमाणि उदत्ताणि-उत्तमाणि पुण्णामाणि द्वाहाणि 15 दक्षिणामाणि मुक्कामि आहारीणि दीहाणि धूलाणि पुण्णी भैधंताणि मंडलाणि लोहिताणि परिमंडलाणि थलाणि भोक्कामाणि पसण्णामि उक्कामि पुण्णामि आयुजोणीयाणि वट्टाणि अग्गेयाणि हिदयाणि पत्तेयाणि दंसणीयाणि, उदत्तलक्खणामि चक्कताणि १ । तस्य इमाणि दीणलक्खणामि-णपुंसकामि चलाणि लुक्कामि णीहारीणि हस्सामि किस्सामि तिक्कामि द्दहरत्थलाणि मताणि णिण्णामि वट्टाणि अप्पसण्णामि तुच्छाणि अणूणि वाउजोणीकामि मताणि अदंसणीयाणि इति दीणामि २ । तस्य इमाणि दीणोदत्ताणि-दीणामाणि समाणि दहरत्थावरेज्जाणि गह्णामि उपगह्णामि तणूणि अंताणि 20 अंतिमदीणोदत्ता सह-रस-गंध-फासा चेति दीणोदत्ताणि भवंति ३ ।

तस्य चउड्विधा पुच्छणट्ठा भवंति-अत्याणुगता १ [कामाणुगता २] धम्माणुगता ३ वीमंसाणुगता ४ चेति । दीणोदत्ता सेरते सततसहाणि दीणामि वा उदत्ताणि वा दीणोदत्ताणि वा, दीणोदत्तो वा सेवते घायते गंधाणि दीणामि वा उदत्ताणि वा दीणोदत्ताणि वा, उदत्तो वा दीणो वा दीणो उदत्तो वा सेवते चक्खुतो रूपाणि दीणामि वा उदत्ताणि वा दीणोदत्ताणि वा, दीणो वा उदत्तो वा सेवते तयतो फासाणि दीणामि वा उदत्ताणि वा दीणोदत्ताणि वा । दीणो 25 वा उदत्तो वा दीणोदत्तो वा सेवते यं तस्य पट्ठमं भवति जस्य भावोऽणुरज्जति सेण तं णिदिसे । पट्ठमं च से पट्ठिपोमन्थो तस्य वेत्तगइंदियत्थेषु य इंदियपण्णाय उपधारयित्ता ततो वृयांगरिचत्तो । उदत्तो उदत्तागारो विण्णातव्यो, दीणोदत्तागारो विण्णातव्यो, <1 उदत्तो दीणागारो विण्णातव्यो > । तस्य पण्णापरं घालो यालधिप्पायो विण्णातव्यो, घालो सरणाधिप्पायो विण्णातव्यो । तस्य सव्यस्यो दुवियो पुच्छणट्ठो दीणोदत्तो चेति । तस्य इमाणि उत्तस्स णिवत्त-त्तिमारणाणि भवंति-तुद्धं मं पुच्छति, पमण्णं मं पुच्छति, पीणितं मं पुच्छति, आरोगं मं पुच्छति, अविकिरत्तं मं पुच्छति, 30 उदत्तं मं पुच्छति, सहरिं मं <1 'पंदति, घट्टम > तं ति मं उदत्तवत्थामरणो उदत्तमहाणुलेवगो उदत्तवेसाळंकारो,

१ रत्तजोणिं ६० त० णिग ॥ २ अयमेसु अयमं ६० त० ॥ ३ इत्थविहान्तर्गतः पाठः ६० त० एव वर्तते ॥ ४ <1 > एत्थविहान्तर्गतः पाठः ६० त० भासि ॥ ५ दीणामि ६ एव ॥ ६ महत्ताणि ६० त० ॥ ७ वा सेवते वा सेवते च २ पु० ॥ ८ <1 > एत्थविहान्तर्गतः पाठः ६० त० भासि ॥ ९ चक्कति ६० त० ॥ १० <1 > एत्थविहान्तर्गतः पाठः ६० त० भासि ॥

उदत्तसयणासणो दक्खिणायतं णिविट्ठो उज्जुमुहो पेक्खति, उज्जुमुक्खो उल्लोक्रेति, चतुरर्षिक्खं बंदति, पूर्वतो वा पुच्छति, अवलित्तं अँम्पुप्पवति उम्मज्जति अक्खुत्तिट्ठति, उदत्ते वेसे उदत्ते गंधे जण्णे वा छणे वा उस्सये वा उदत्ते समाये वा उदत्ते पडिपोगले वा उदत्ते सद्-रूवम्मि रस-गंध-फासे णिमतंणम्मि य आगमे भक्ख-भोजआमंतंणम्मि य । तत्थ इमाणि आहारलक्खणाणि भवंति, तं जघा-पवासागमणं कण्णाय अमिवहणं अत्थस्स विविधरस लाभं घणत्स लाभं कामलाभो विविधविज्जालाभो जं च अण्णं पसत्थं पस्सेज्ज तस्स सव्वरस लाभो भविससति चि चूया । तत्थ उदत्तस्स १० पुच्छणट्ठो भवति-एक्खसिरियं लाभो चि पुरिसस्स लाभो, पुरिसरस इँथीलाभो हिरण्णस्स लाभो वत्थलाभो < अँण्णलाभो > पाणलाभो धातगलाभो इस्सरितलाभो उत्तमजोगीयं आमासो आहारम्मि य उत्तमे ।

पुण्णामघेजे सुक्के [य] द्दहे णिद्धे य लोहिते । उदत्तेसु असणलाभे य वत्थे आभरणेसु य ॥ १ ॥

गंध-महेसु फासे य सद्-रूवे य चाहिरे । एरिसे उत्तमे दित्ते इस्सरियलाभं वियागरे ॥ २ ॥

एतेसामेय णीहारे अमणुण्णे आगमम्मि य । अमणुण्णे सद्-रूवम्मि इस्सरिये चलयं धुवं ॥ ३ ॥

[..... । मणुण्णे सद्-रूवम्मि] रस-गंधे य उत्तमे ॥ ४ ॥

उत्तमेसु य फासेसु तज्जातपडिपोगले । धुवो भूमीय लाभो तथा चेव उ पेसणे ॥ ५ ॥

एतेसामेय णीहारे अमणुण्णे य आगमे । णिद्धेते य किलिट्ठे [य] भूमीय चलयं धुवं ॥ ६ ॥

कण्णा गंडा उरं ओट्टा दंता अंगुट्टके तथा । वाहूदरे य पादे य पुरिसणामं च जं भवे ॥ ७ ॥

एतेसु सद्-रूवेसु आहारेसु य कित्तिते । हसिते णट्टे य गीये य वादिते कामसंसिते ॥ ८ ॥

मधुरे आलाप-संलावे आसिते मदणे अय । सुगंधे ण्हाण-महम्मि गंधम्मि अँसुगंधिगे ॥ ९ ॥

< अँसुगंधि > अणुलेयणे सव्वामरणे (!) । अतिमासे य सव्वत्थ गोज्झस्स चेव दंसणे ॥ १० ॥

पाणिणा पाणलाभम्मि सिचकतस्स मुंचणे । एरिसे सद्-रूवम्मि पुरिसलाभो थिया भवे ॥ ११ ॥

एतेसामेय णीहारे अमणुण्णे आगमम्मि य । अमणुण्णे सद्-रूवम्मि धुवो से असमागमो ॥ १२ ॥

कण्णपाली मुमा णासा जिन्ना गीया तथंगुली । सोणी णामी य हुक्खी य अँरहस्साणि य आमसे ॥ १३ ॥ २०

अतिमासे य सव्वम्मि वियागरे वेसकम्मि य । अलंकारे य सव्वम्मि सव्वेसाऽऽमरणेसु य ॥ १४ ॥

ण्हाण-महेसु गंधेसु सुगंधे अणुलेयणे । कामुके कामसंलावे उम्मिते गीत-वादिते ॥ १५ ॥

पारावत-चक्कयाया य हंस-कागं च क्किणरा । विपदा चउप्पदा या वि जे वऽण्णे मिधुणचारिणो ॥ १६ ॥

मधुरे आलावसंलावे कामरस अणुलोमके । आलिंणिते चुंविते य सामग्गीय समागमे ॥ १७ ॥

वधुज्जमंडकपरिकित्ताणाय तलियं ति वियण्णके वा । मणुण्णे सद्-रूवम्मि रस-गंधे य उत्तमे ॥ १८ ॥ २५

फासे य मणुण्णम्मि आहारे य अणुमते । पडिपोगलेसु एतेसु थिया लाभो चि णिदिसे ॥ १९ ॥

एतेसामेय णीहारे अमणुण्णे आगमम्मि य । णिम्मट्टे णिद्धेते लित्ते ण थिया य समागमो ॥ २० ॥

पासाणं सफरं लोणं [तथा] रयतमंजणं । दंतसिप्पिपडळं.....अट्टिअक्कत्ते (!) ॥ २१ ॥

मणिरूवालिंका लोहं हिरण्णपडिपोगले । आमासे य मँणुण्णाणं [.....] ॥ २२ ॥]

उत्तमम्मि य आमासे [.....] । उदत्तम्मि य पुच्छते हिरण्णलाभं धुवं वदे ॥ २३ ॥ ३०

एतेसामेय णीहारे अँमणुण्णे आगमम्मि य । णिम्मट्टे णिद्धेते चलिंते णासो होति हिरण्णके ॥ २४ ॥

लक्खत्ता हरिहा मंजिट्ठा हरिताल मणस्सिला । कोरंटेक सिरियकं मणोज्ज णुत्तमालकं ॥ २५ ॥

१ मुह पेक्खति धर० ॥ २ अम्मप्यच उम्मं हं० त० विना ॥ ३ इथीहिरं हं० त० ॥ ४ < एतथिसान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ५ असुगंधिम्मि हं० त० विना ॥ ६ < एतथिसान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ७ गीया य अंगुली हं० त० ॥ ८ अहरस्साणि हं० त० ॥ ९ मणुस्साणं धर० ॥ १० अमणुण्णम्मि य आगमे हं० त० ॥ ११ टकेसरियकं वि० ॥

- अग्नोर्गोणि य अग्नी य जिन्मणिदं च संपंभं । गिद्ध-लोहितके दृवे सुवण्णपडिपोगले ॥ २६ ॥
 एतेसु सद-रूवेसु मणुण्णाणं च आगमे । उदत्तम्मि य पुच्छंते ध्रुवो लामो सुवण्णके ॥ २७ ॥
 एतेसामेव णीहारे अमणुण्णे आगमम्मि य । गिम्मट्टे गिद्धुते चलिते ध्रुवो णासो सुवण्णके ॥ २८ ॥
 धणं पुरितो गेहिच्चा गोमवं उदकमट्टिका । पुण्णे णिद्धे सुदामासे आहारे उत्तमम्मि य ॥ २९ ॥
 5 [.....] तिण-सुस-करीसाणि मुदं च परिमदति ॥ ३० ॥
 आहारम्मि य सब्बम्मि तज्जातपडिपोगले । रसाणं दंसणे उदिते पीणियस्स यं सुंछणे ॥ ३१ ॥
 एतेसु सद-रूवेसु मणुण्णाणं च आगमे । घातकं अण्णलामं च एतस्स दंसणे ध्रुवो ॥ ३२ ॥
 अण्ण-माणे विसंजुत्ते बहुत्तित्तिपासिते । जायमाणे अलामम्मि परिविद्धं भाइवं ति वा ॥ ३३ ॥
 अण्ण-माणस्स णीहारे अमणुण्णे आगमम्मि य । छातकं अण्ण-माणं च ध्रुवं गत्थि वियागरे ॥ ३४ ॥
 10 दारकम्मि गिंहीतम्मि अकिरम्मि अंजितम्मि य । दारकाणं च कीलणके दारकाभरणे तथा ॥ ३५ ॥
 वच्छके पुत्तके चैति पोतके पिहके तथा । सिंगके [तण्णके य चि] घत-बुद्धदरिसणे ॥ ३६ ॥
 पुफे पत्राले तरणे विरूढे तरुणं कुरे । जोणियैलिकं दिट्ठा पुत्रामेसु बालको ॥ ३७ ॥
 एतेसामेव णीहारे अमणुण्णाणं च दरिसणे । गिम्मट्टे गिद्धुते चलिते पुत्तणासं वियागरे ॥ ३८ ॥
 चतुप्पदं णामे द्रुप्पदे चतुप्पयं उवकरणे चतुप्पददरिसणे वा गहणे चैव याहिते जोइतम्मि य ॥
 15 एतेसु सद-रूवेसु मणुण्णाणं च आगमे । उदत्तम्मि य पुच्छंते ध्रुवो लामो चतुप्पदे ॥ ३९ ॥
 एतेसु चैव णीहारेसु अमणुण्णाणं च आगमे । गिम्मट्टे गिद्धुते चलिते ध्रुवो णासो चतुप्पदे ॥ ४० ॥
 चलाणि सुसलं सुपं पीदकं पैदाका ह्यो । पाद-उच्छि-पाणि-पटफो केसा सोपाणपादुका ॥ ४१ ॥
 पादपुच्छं उपाण्हा आमरणं सब्बपादोत्तं च यं । उरुणीं चलोडो वणिसया..... उक्कली (!) ॥ ४२ ॥
 [.....] उत्तमम्मि य पुच्छंते पेस्सलामं ध्रुवं वदे ॥ ४३ ॥
 20 एतेसामेव णीहारे अमणुण्णे य आगमे । गिम्मट्टे गिद्धुते चलिते पेस्सणासं ध्रुवं वदे ॥ ४४ ॥
 पंसाण मट्टिया लेहुं काक्यालं पिधुला सिला । सब्बलोद्वे य पुधुले तैत्त-यत्थुपरिग्गहि ॥ ४५ ॥
 [.....] अंत्युते पुधुले ददे ॥ ४६ ॥
 रुदगम्मि य आमासे सद-रूवे य उत्तमे । उदत्तम्मि य पुच्छंते वत्थुलामं वियागरे ॥ ४७ ॥
 एतेसामेव णीहारे अमणुण्णाणं च आगमे । गिम्मट्टे गिद्धुते चलिते वत्थुणासं वियागरे ॥ ४८ ॥
 25 णरथम्मपलामाणि वक्कला हुरुमाट्टिका । चीरं च वासणं चैव पत्तुण्णा बालकाणि वा ॥ ४९ ॥
 उग्गरुवं च कणासं तिदं अवपेसु य । वेहिच्चा वक्कमंठं च वित्तम्मि अणूसु य ॥ ५० ॥
 एणसु सद-रूवेसु मणुण्णाणं च आगमे । उदत्तम्मि य पुच्छंते वत्थुलामं वियागरे ॥ ५१ ॥
 एतेसामेव णीहारे अमणुण्णाणं च आगमे । गिम्मट्टे गिद्धुते चलिते वत्थुणाणि च गिदिसे ॥ ५२ ॥
 अब्भंगत्तमासे इदामासे जिदामासे पुण्णामासे पुण्णामपेज्जामासे दन्तिरगामासे सब्बपणित्तगते सब्बसिप्पिया-
 30 तणुणे रायभंदरणे सब्बसिप्पिगदंसणे कारकसंलापरम्मि कित्तिहे सुंगयपडिच्छते उदत्तसि-
 निरामासदरिसणे ।

१ य सुंछणे पं १ पु० ॥ २ वायकं ६० त० ॥ ३ गिचालिकं दिट्ठा ६० त० विना ॥ ४ वृद्धको ह्ययो ६० त० विना ॥
 ५ उरुणीं बालो शोयणि ६० ॥ ६ गिद्धुते गिद्धुते चलिते पं १ पु० वि० त० । गिद्धुए चत्थिए चत्थिए ६० एव ॥ ७ पासाणि
 ६० त० ॥ ८ गगदे ॥ ४५ ॥ अणुणे पुणुते चैव वदे य उदत्तम्मि य । आमासे सद-रूवे य उत्तमे य वितेसंभो ।
 उदत्तम्मि य पुच्छंते । ५० ॥ ९ अणुणे घापरे पुणुले ददे ६० त० ॥ १० इण्णिसान्णरं शोद्यन्तं ६० त० एव वपेते ॥
 ११ म्मि वदित्ते ५० । १२ सुपडिच्छंते ५० । सुपडित्तुं पं १ पु० ॥

एतेसु सदरूवेसु मणुण्णाणं च आगमे-

उदत्तम्मि य पुच्छंते आहारम्मि य पुच्छते । एतेसु सदरूवेसु कम्मलामं वियाणिया ॥ ५३ ॥

एतेसामेव णीहारे अमणुण्णम्मि य आगमे । गिम्मट्ठे णिट्ठुते चलिंते कम्मणासं वियागरे ॥ ५४ ॥

अचंभंतरामासे णिद्धामासे पुण्णामासे [पुण्णामधेज्जामासे] दक्खिणामासे अवत्यित्त-गंभीर-धिमिते आयगिते
अदीणसंसत्तवणणागकित्तणे लोकावेय-सामयिके आभिरामिके अभिधम्मयीसुतथाणाणुकित्तणे लिपि-गणित-रूप-रायविज्ञा- 5
परिकित्तणे अंग-सरै लक्खण-यंजण-सुविण भोमुप्पात-अंतलिकखअणुकित्तणे ।

एतेसु सदरूवेसु मणुण्णाणं च आगमे ।

उदत्तम्मि य आहारे पुच्छंते उदत्तम्मि य । विज्जालामं वियाणीया उत्तमं जीविकारणं ॥ ५५ ॥

एतेसामेव णीहारे अमणुण्णाणं च आगमे । गिम्मट्ठे णिट्ठुते चलिंते विज्जाणासं वियागरे ॥ ५६ ॥

अचंभंतरामासे सुद्धामासे पुण्णामासे पुण्णामधेज्जामासे दक्खिणामासे पुक्क-फलसद-उवभोगसद-ओसपीपटिपो- 10
गलेसु उदत्ते भक्ख-भोजे य पेज-लेज्जकित्तणे य ।

एतेसु सदरूवेसु आगमे उत्तम्मि य । धातकं [धण्णलामं च] अत्यलामं च णिदिसे ॥ ५७ ॥

एतेसामेव णीहारे अमणुण्णे आगमम्मि य । गिम्मट्ठे णिट्ठुते चलिंते छायकं तत्य णिदिसे ॥ ५८ ॥

अचंभंतरामासे णिद्धामासे सुद्धामासे द्दामासे पुण्णामासे पुण्णामधेज्जामासे उदत्तयी-पुरिसदंसणपाहुळमावे जण्णे
वा छणे वा उरस्ये वा समाये वा वापुजे वा चोळके वा उपण्ये वा पसत्थ-विस्सत्थ-विमुत्तसुखासणमाये रतिहासे 15
पडिरूवेण णिदिसे ।

एतेसामेव णीहारे अमणुण्णाणं वा आगमे । गिम्मट्ठे णिट्ठुते चलिंते भयं तत्य वियागरे ॥ ५९ ॥

तत्य इमाणि दीणैसत्यस्स णिव्यत्तीकारणाणि भवंति । तं जघा-दीणं मं पुच्छति, अगहं मं पुच्छति, छातकं
मं पुच्छति, विखित्तं मं पुच्छति, दीणं मं उवसंकीति, दीणं पेक्खति, दीणमधीतं पुंछति, दविणं बहुमन्नते, किलिहं
दत्या-ऽऽभरणं किलिहमद्दा-ऽणुलेवणो अणुज्जवेसा-ऽलंकारो अणुदत्तसयणा-ऽऽसणो वा उत्तराभिमुद्दासणाभिगग्घो वा 20
समुज्जतो णिवेदो तिरियम्मुद्दो ओलोकेतो तिरियम्मुद्दो पेक्खति, नीयम्मुखो णिज्जायति, हेट्टासुद्दो धंदति^१, खिसतो अणव-
त्थितं पुच्छति, परावत्तो णिम्मैज्जति ओणमति, अपसकंतो आभासिज्जते अणुदत्ते दीणपडिपोगले दीणे सदरूवे रसगंध-
फासे अणुलेपणे सरे य सब्बम्मि दीणे अणुदत्ते किलिह्ते दीणमाणसे । तत्य इमाणि दीणलक्खणाणि भवंति । तं जघा--
अपसकित्ते १ अपगते २ अपणामिते ३ गिम्मट्ठे ४ णिहिते ५ ।

णिद्धितम्मि य आहारे अमणुण्णाणं च आगमे ॥ ६० ॥

25

णीहारे सदरूवाणं फासे गंघे रसम्मि य । पवासागमणे चैव कण्णाणिव्वहणं च जं ॥ ६१ ॥

विधियो य अत्यपचयधम्मस्स कायुक्कस्स ररओ सव्वेसिं चैव अत्याणं अलामो चि, तत्य इमं दिवं पुच्छणद्दा
भवंति । जघा-अपसत्थस्स अत्यरस अलामो विणासो विह्यो विप्पयोगो आतंको धातुरो मरणं छविच्छेयो धंधो
पवासागमणं परैजयो घणापचयो अणावुद्धी अकम्मं सोभा छातकं पतिमयं चैति । जं किंचि अप्सत्थं सव्वं एतं दीणस्स
पुच्छमाणेसु पणुद्देसु पसुसु य णेकेरुं जुद्धाय परिते भवे पडिते आहत्तम्मि य मुट्ठिणा मिउडीयं च वग्गणे अतिवातिते 30
वियादे विग्गहे चि य कळ्हं तत्य वियागरे । उक्कपिते ज्ञापिते खित्ते ओयायितम्मि य संख्खे उपावावते य रोदते कैल्लं धुवं ।

१ लोकावेसामं धं १ सि० पु० । लोकावसामं हं त० ॥ २ आमिचं हं त० ॥ ३ सररररररं हं त० विना ॥
४ धातकं पुच्छलामं च अत्यं सि० ॥ ५ दीणमत्थं हं त० विना ॥ ६ कम्मति हं त० ॥ ७ पुच्छा धंदति णं
पणुं हं त० विना ॥ ८ दत्तसमणो या उत्तं धं १ पु० ॥ ९ यामपुजुत्तो हं त० ॥ १० तीरियम्मुत्तो हं त० ॥
११ तिं तित्तो अणं हं त० ॥ १२ णिमज्जति हं त० ॥ १३ आसासिज्जते हं त० ॥ १४ मयसत्थस्स लामो सि० ॥
१५ पराजर्णोपचयो धं १ पु० ॥ १६ सु यद्दाय धरिप हं त० ॥ १७ कळ्हो हं त० ॥

- वाचिवाकैचिको कलहो तालिते पँहरेहि य । सत्यम्मि रुधिरुपाया छइछेदं वियागरे ॥ ६२ ॥
 संगोमे जुद्धसदेसु अञ्जमातलपलाइते । सन्नाहे जुद्धसंरागे [रा]वविज्ञाभये भयं ॥ ६३ ॥
 जंघापादे य छत्तचोपादधिकानि य । जुत्तं च जाणवासं च पर्यं च पडिपोमैळं ॥ ६४ ॥
 पवासगमणे सजे कंता[ग]हणासु थ । संपत्थिते पदग्गाहे भंडग्गाहणसु य ॥ ६५ ॥
- 5 लोहेसु पव्वतग्गाहेण तं तिरिययसितियं वा पर्यिताणं य दंसणे कोसइपुण्णपाते य पवासा आगतो चेति
 पसत्यपवासागामी य परातं च गिहिते ।
 एतेसु सह-रूवेसु पवासा आगमम्मि य । आहारेसु य सञ्जेसु पवासा आगमं वदे ॥ ६६ ॥
 'थिते साधारणे चेव पर्यंतं तत्य गिहिसे । णीहारे य णिवट्टेति णडं तत्य विणिहिसे ॥ ६७ ॥
 णीहारे य मणुण्णे य कण्णाणिव्वहणं वदे । आहारे य मणुण्णे य कण्णायावहणं वदे ॥ ६८ ॥
- 10 णीहारे चेव णीहारे दीर्गसि मुदिते वि वा । पडिरूवेण पस्सित्ता ततो सम्मं वियागरे ॥ ६९ ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्ञाय जोणीलक्खणवागरणो
 णामञ्ज्जाया तेरसमो सम्मत्तो ॥ १३ ॥ छ ॥

[चोदसमो लाभहारञ्जाओ]

- अथापुत्रं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्ञाय लाभहारं णामञ्ज्जायं । तं खलु भो ! तमणुवक्खत्तामि ।
- 15 तं जथा—अत्यदारं १ समागमदारं २ पयादारं ३ आरोपदारं ४ जीवितदारं ५ कामदारं ६ बुद्धिदारं ७ विजयदारमिति ८ ।
 अतो अत्यदारं । तं जथा—अञ्चंतंरामासे द्दामासे गिद्धामासे सुद्धामासे मुदितामासे पुण्णामचेज्जामासे दक्खिणामासे
 आहारे उत्तमे पुफ्फगते फलगतो हरितगतो परग्घवत्या-SSभरण-मणि-मुत्त-कंचण-प्पवाल-भायण-सयण-भक्ख-भोयणगतो
 परग्घवकरणगतो ण्हाणा-सुण्णेत्रण-विभूसिय-पहट्ठणर-णारियादुब्भावे एताणि पेक्खमाणो वा भासमाणो वा आमसंतो
 वा एतेसिं वा बाहिरे पादुब्भावे सह-रूवे पुच्छेज्ज अत्यलामं वा खेमं वा पुत्तं वा णिचयं वा जाणं यो जुगं वा
- 20 सयणं वा आसणं वा भो(भा)यणं वा भूसणं वा जं किंचि पसत्यमत्थं पुच्छेज्ज लाभमंतरेण एदमेवं भविस्सति
 ति वत्तञ्चं । एताणि चेव पेक्खमाणो वा भासमाणो वा आमसंतो वा एतेसिं वा बाहिरे सह-रूवपादुब्भावे पुच्छेज्ज
 अत्यदाणि वा रयं वा विणासं वा क्रित्तेसं वा अणत्थसिद्धिं वा जं किंचि अप्ससत्थं पुच्छेज्ज अलाभमंतरेण भविस्सति
 ति वूया । एताणि चेव अक्कमंतो पुच्छेज्ज लाभमंतरेण ण भवस्सतीति वूया । एताणि चेव अक्कमंतो पुच्छेज्ज
 अलाभमंतरेण सच्चं भविस्सति ति वूया । एताणि चेव छिंदंतो वा भिंदंतो वा <1 फलितो वा >
- 25 विरादंतो वा णिक्कमंतो वा पुच्छेज्ज अत्यदाणि वा रयं वा विणासं वा क्रित्तेसं वा अणत्थसिद्धिं वा जं किंचि अप्प-
 सत्थं पुच्छेज्ज अलाभमंतरेण तिउणो अपायो भविस्सतीति वत्तञ्चं । एताणि चेव उपकट्ठंतो पुच्छेज्ज अत्यलामं वा खेमं
 वा पुत्तं वा णिचयं वा जाणं वा जुगं वा सयणं वा आसणं वा भायणं वा भूसणं वा जं किंचि पसत्यमत्थं पुच्छेज्ज
 लाभमंतरेण एवमेतं भविस्सतीति तिगुणो लामो वूया । एताणि चेव उपकट्ठंतो पुच्छेज्ज अत्यदाणि वा रयं वा विणासं
 वा क्रित्तेसं वा अणत्थसिद्धिं वा जं किंचि अप्ससत्थं पुच्छेज्ज ण भविस्सतीति वूया । एताणि अपकट्ठंतो पुच्छेज्ज ए-
- 3) मादीर्गं लामो ण भविस्सतीति वूया, जं च पुच्छेज्ज तस्स तिगुणो अपायो भविस्सतीति वूया । एताणि चेव अपकट्ठंतो

१ पहेट्टिया हं तं । परिहरेदिय वि ॥ २ संगमजुजे सहेसु हं तं ॥ ३ अम्मालतपं सं १ पु वि ॥
 ४ छत्तायापादं वि ॥ ५ षोमाला हं तं ॥ ६ हणेसु य हं तं विना ॥ ७ हणेसु तंतरिययं हं तं ॥
 ८ परियपणाण दंसणे हं तं ॥ ९ सित्ते हं तं ॥ १० पयुत्तं हं तं ॥ ११ अत्यं वा लामं हं तं वि ॥
 १२ या जोगं वि ॥ १३ एवमेवं भं हं तं ॥ १४ <1 > एतच्चान्तर्गतः पाठः हं तं नास्ति ॥ १५ णिकखंतो
 पा हं तं ॥ १६ अत्यलामं हं तं ॥ १७ दिणासणं वा हं तं ॥

पुच्छेज्ज एवमादीणं लाभो ण भविस्सतीति ब्रूयां । एताणि चैव उपकट्टित्ता अपकट्टेज्जा ततो पुच्छेज्ज एवमादीणं पुञ्चं लाभो < भवित्ता पच्छा अलाभो > भविस्सतीति ब्रूया । एवमादीणि ज्ञेव अपकट्टित्ता उपकट्टेज्जा ततो पुच्छेज्ज पुञ्चं अलाभो भविस्सति पच्छा लाभो भविस्सतीति ब्रूया ॥

॥ इति लाभहारं ॥ १४ ॥ छ ॥

[पन्नरसमो समागमहारज्ज्ञाओ]

5

समागमहारं वक्खस्सामो । तं जघा—हंस-खुर-चक्रवाक-कारंडव-कातंब-काकाक-मेज्जुकामिधुणचतुरेसु सत्तेसु मेधुणं समाचरंतेसु तेसु आलिंगितं चुंबितं हसितं गीत-वादित-मद्गगहणे वधू-यरसंदंसेणे सयणा-ऽऽसण-सव्वसगुण-तिरि-क्खजोणीउपचारे संकुणे णिहसे चच्चर-मथापघ-सव्वदारसमयतित्थोदुपाणआभोगणितगतते तेसं परिकित्तासु सागर-णदी-पट्टण-गोत्तमेसु समागते सव्वसंसागमगमगते य सव्वसंजोगगते सव्वहरिसपादुच्चावे एताणि पेक्खमाणो वा भासमाणो वा आमसंतो वा एतेसिं वा वाहिरे सह-रूपपादुच्चावे पुच्छेज्ज समागमं वा सम्मोईं वा संपीतिं वा मित्तसंगमं वा 10 वीवाहं वा जं च किंचि पसत्थमत्थं पुच्छेज्ज समागममंतरेणं एवमेतं भविस्सतीति ब्रूया ॥

॥ समागमहारं ॥ १५ ॥ छ ॥

[सोलसमो पयादारज्ज्ञाओ]

अथ पयादारं वक्खस्सामो । तं जघा—दारकपादुच्चावे कीलणके दारकाण धमिणव्वे पुप्फ-फल-पवाल-परोहगते सप्पक-सीहक-वच्छवच्छके तरुणपादपके अण्णं वा यं किंचि वालकं बालसमाचारं वा एताणि पेक्खमाणो 16 वा भासमाणो वा आमसंतो वा एतेसं वा वाहिरे सह-रूपपादुच्चावे पुच्छेज्ज पयामंतरेण पुच्छसीति वत्तव्वं, भज्जा ते भविस्सतीति ब्रूया । एताणि चैव पेक्खमाणो वा भासमाणो वा आमसंतो वा एतेसिं वा वाहिरे सह-रूपपादुच्चावे वा पुच्छेज्ज पयाविष्ययोगे ण भविस्सतीति ब्रूया । उदरपडणं वा पुत्तमरणं वा जं किंचि अप्सत्थं पुच्छेज्ज पयावि-ष्ययोगे ण भविस्सतीति ब्रूया ॥

॥ पयादारं सम्मत्तं ॥ १६ ॥ छ ॥

20

[सत्तरसमो आरोग्गदारज्ज्ञाओ]

आरोग्गदारं वक्खस्सामो—तत्थ अचमंतरामासे दढामासे णिद्धामासे सुद्धामासे मुदितामासे पुण्णामपेज्जामासे दक्खिणामासे उच्चामासे पद्दुपुप्फ-फलामासे परग्घवत्था-ऽऽभरणे भूसणगते अन्मुत्थिते उवविट्ठे हसिते भणिते गीते वादिते अप्फालिते पेक्खित्ते गञ्जिते मुदिते णारीगणसमुदिते पसु-पक्खिरसंदंसेणे उदग्गवत्था-ऽऽभरण-सयणा-ऽऽसणगते एवंविहसह-रूपपादुच्चावे पुच्छेज्ज आरोग्गं वा पमोईं वा सोमणसं वा जं किंचि पसत्थमत्थं पुच्छेज्ज आरोग्गमंतरेणं 25 एवमेतं भविस्सतीति ब्रूया । एताणि चैव पेक्खमाणो वा भासमाणो वा आमसंतो वा वाहिरे सह-रूप-पादुच्चावे पुच्छेज्ज रोगं वा विणासं वा मरणं वा जं च किंचि अप्सत्थं पुच्छेज्ज रोगमंतरेणं ण भविस्सतीति ब्रूया ॥

॥ आरोग्गदारं सम्मत्तं ॥ १७ ॥ छ ॥

[अष्टारसमो जीवितदारज्ज्ञाओ]

जीवितहारं वक्खस्सामो । तं जघा—तत्थ अचमंतरामासे दढामासे णिद्धामासे सुद्धामासे पुण्णामपेज्जामासे 30 अप्पुपहुवामासे आहारे उच्चमे सुपसण्णे सुरे उदग्गे उच्चमे उवविट्ठे उहोकित्ते हसिते उक्कट्ठे गञ्जिते अप्फालिते पच्छेत्थिए

१ < > एतथिहान्तगतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ २ 'मेज्जका' हं० त० ॥ ३ सकुणणिहे चच्चरमहापघ' हं० त० ॥ ४ 'समागमगते' हं० त० ॥ ५ पयामंतरेणं वा भवि' हं० त० पयाविष्ययोगेण भवि' ति० ॥ ६ पेतिते हं० त० ॥ ७ उक्कट्ठिए गञ्जिए हं० त० ॥ ८ अप्फालिते पच्छत्थिए थं १ पु० ॥
अंग० १९

गति वादिते तल-ताल-फाससमुदिते ण-णारिपादुच्चावे सञ्चत्यपरग्यते सञ्चणित्त-धुवपादुच्चावे एताणि पेक्कमाणो वा भासमाणो वा आमसंतो वा एतेसि वा वाहिरे सद-रूपपादुच्चावे पुच्छेज्ज मरणं वा णिळीणं [वा] वहं [वा] वाहं वा जं किंचि अप्ससत्यं मरणमंतरेणं पुच्छेज्ज ण भविस्सतीति वूया ।

॥ जीवितहारं सम्मत्तं ॥ १८ ॥ छ ॥

[एगूणवीसहमो कम्महारज्झाओ]

कम्महारं णाम वक्कत्तसामो । तं जथा—रायोपजीवीसु कारुकोपक्करोपकरणेसु य उदग्गपुष्फ-फलगतो पच्छेलित्ते मुदितणारिणरगते यं किंचि पसत्थमत्थं पुच्छेज्ज पणियमंतरेण एयमेतं भविस्सतीति वूया । एताणि ज्ञेय पेक्कमाणो वा भासमाणो वा आमसंतो वा एतेसं वा वाहिरे सद-रूपपादुच्चावे पुच्छेज्ज कम्महाणि वा कम्मणासं वा पणियविणासं वा जं किंचि अप्ससत्यमत्थं पुच्छेज्ज कम्ममंतरेणं ण भविस्सतीति वूया ॥

॥ कम्महारं सम्मत्तं ॥ १९ ॥ छ ॥

[वीसहमो बुद्धिदारज्झाओ]

बुद्धिदारं णाम वक्कत्तसामो । तत्थ णिद्वामासे जलामासे णिदुद्धे णिस्संपिते मुत्त-यच्चकरणे सेदपरामासे उदगदंसणे उदगचरसत्तपादुच्चावे णावा-कीटिच-डआलुए पदुमुप्पल-जलय-पुष्फ-फल-कंद-मूलसंदंसणे सञ्चजलोपकरणे सञ्चजलोपजीविसंदंसणे सञ्चजलपादुच्चावे तेह-घत-दुद्ध-मधुपाणगते बुद्धि-शणित-मेहगजित-विज्जुतपादुच्चावे णदी-समुद्-रूप-तलाक-विंकरण-पस्सवणोपलंभे एताणि पेक्कमाणो वा भासमाणो वा < १ ॥ आमसमाणो वा > एतेसि वा वाहिरे सद-रूपपादुच्चावे पुच्छेज्ज बुद्धिं वा वासारत्तं वा उदकं वा सस्सणिष्फत्तिं सस्स[संप]दं वा एयमादी यं किंचि पसत्थमत्थं पुच्छेज्ज बुद्धिमंतरेणं एयमेतं भविस्सतीति वूया । एताणि ज्ञेय पेक्कमाणो वा भासमाणो वा आमसंतो वा एतेसि वा वाहिरे सद-रूपपादुच्चावे पुच्छेज्ज दुबुद्धिं वा अपग्गहं वा सस्सविणासं वा सस्सवापत्तिं वा जं च किंचि अप्ससत्थं पुच्छेज्ज सस्समंतरेणं वासारत्तमंतरेण वा भविस्सतीति वूया ॥

॥ बुद्धिदारं ॥ २० ॥ छ ॥

[एगवीसहमो विजयहारज्झाओ]

तत्थ विजयहारं णाम वक्कत्तसामो । तं जथा—तालवेंड-भिणार-वेजयंति-जयविजय-पुस्समाणव-सिचिका-रथ-पादुच्चावे परग्यवत्य-महाभरणपादुच्चावे परग्यवत्य-महा-ऽऽभरणअप्पडिद्वयसंर-भेरि-हुंदुभि-परसद-रूप-रस-गंध-फासपादुच्चावे सेणालंभे अट्ठी-पररट्ठ-रंघावारणिज्जातलद्वअधिगते पसुदिते पादुच्चावे पुण्ण-सुद्ध-णिद्ध-दद-अच्चंत-पुण्णा-मवेज्जामासे अपराजितसद-रूप-रस-गंध-फासपादुच्चावे पुच्छेज्ज विजयं वा पररट्ठमहणं वा सत्तुपराजयं वा जं च किंचि पसत्थमत्थं वा पुच्छेज्ज विजयमंतरेणं एयमेतं भविस्सतीति वूया । एताणि ज्ञेय पेक्कमाणो वा भासमाणो वा आमसंतो वा एतेसि ज्ञेय वाहिरे सद-रूपपादुच्चावे पुच्छेज्ज रायमरणं वा रायहाणि वा रायविप्पल्लोथं वा रायभंगं वा संगामपराजयं वा जं किंचि अप्ससत्थमत्थं पुच्छेज्ज पराजयमंतरेण ण भविस्सतीति वूया । जथा पदमं पडलं परिवारितं तथा सव्याणि पडलाणि परिवारेतव्याणि ॥

॥ विजयहारं णामं ॥ २१ ॥ छ ॥

[चावीसहमो पसत्थज्झाओ]

अथापुत्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्ञाय पसत्थं णामाज्जायं । तं रत्तु भो ! वक्कत्तसामो । तं जथा—तत्थ कय-विक्कय-लाभसंपदाय कम्मगातलाभसंपदाय कित्ति-वंदण-माण्ण-पूयणासु उक्किट्टपहद्वसदपादुच्चावे केस-

१ णिच्चार्णं वा यांघयं वा जं हं० त० विना ॥ २ 'रेण भवि' हं० त० विना ॥ ३ णिदुद्धे णिस्सं हं० त० ॥ ४ 'कोट्टिमआलुए हं० त० विना ॥ ५ 'दुद्धसुद्धपाण' हं० त० विना ॥ ६ 'विकरपरस्स' हं० त० विना ॥ ७ < १ > एतथिद्वान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ८ खलु हो वक्कत्त' हं० त० ॥ ९ 'पदा-कित्ति' हं० त० विना ॥

ज्जमाणे मिषुणसमागमे सुदितणट्ट-गीत-वाइयसंदंसणे अमेज्जपक्खालियसुद्धदंसणे अमोघविचेदित्ते मंचातिमंचकरणेऽधिरोग्णे जलधरमधुरागमत्तजययोसणिग्घोसे यत्ताणुयत्तणिहेसपतिछंदे वइर-मणि-प्पवाल-मुत्तासंजोयणे जूव-चित्ति-सेतुबंधणमाय-तणकिरियामु जे अ पसत्था सक्कंसि देहंसि फंदरेदे योगियोगसिद्धिसु यण्णेज्जामासे यण्णदंसणे हस्सवद्धणे रासिवद्धणे रिपुहृदपचाणयणे रहविरुद्धदंसणे रोयितपुरभावणप्पवेसणे सुरोहृत्वणारिंदसत्यसंसिद्धसमुप्पयाणेषु रग्गुज्जाण-सलिलय-त्तागमणप्पवेसणेषु अलसदंसणे उल्लालिते आल्लिगिते लुलितप्पसादिते उल्लहिते उल्लोकिते उल्लंपिते वरवभूक्तिण्णे वारभो-क्खाधिकारसंदंसणे विलंधिते वृहिते उव्वेहासिते योसट्टमाणे भायणपूरणे धंदितसत्यवरइसंथवे एरससिते आसासणे उरसंसिते मुद्धमल्ल-यत्थोदण-वल्लिकम्मगहण-दंसणे सेवलिक्कायत्तकट्टकित्ताणा-गति-दंसणेषु सोवच्चसप्पणफासुकाहारसंपदासु संचायसम्भोदणासु हंसितोपहसिते आहारे गतेहित-समीहितसंपयासु हुतहुतासणाचिसंभवे हेम-मणि-मुत्त-प्पवालसज्जोयणेषु अहोणिसा-मास-पक्ख-[७]दु-यासादिसु हंस-सुरर-चक्कवाक-सरभेतुककालपचागमोपसमादिसु ।

१० वं लोके पूयितं किंचि भणो यत्थ य रज्जति । यमिदियाणमिदं च पसत्थं तम्मि णिदिसे ॥ १ ॥

॥ इति महापुरिसदिण्णाय० पसत्थो णोमऽज्जायो वाचीसइमो सम्भत्तो ॥ २२ ॥ छ ॥

[तेवीसइमो अप्पसत्थऽज्जाओ]

अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय० उप्पातिरुम्मप्पसत्थमज्जायं वक्खस्सामि । तं जघा-तत्थ मे हाणी पुरेक्खटा षं पुंछा अलाम्भेसु सुहे जीविते वद्धीयं जसे विज्जायं समागमे जये इति उप्पाया अप्पसत्था भवति ।

१५ तं जघा-कट्टिते कासिते किलेसिते उक्कणिते केत्तणिम्मज्जेणे अक्कोहिते उक्कंदिते खलिते अक्खारिते रिंसिते सुधिते सुसिते खोठिते रंधिते उगहिते गालिते निद्ध-सिगालदंसणे गृहिते गोवयोरसमुज-चरण-मुखाने गोपिते गंदिते ओषट्टिते उगघाडिते धिंघिणोपिते घुण्णिते घेयअमेज्जपादुच्चावे घोरमहव्वयदंसणे धंसिते चालिते चालिते चित्तविग्गमे वुच्छदट्टे चेतविणासणे चोरभयोदीरणे चंदप्पमोपचासिते पच्छादिते पच्छादाण्णत्थे छुत्ते छेलितछादिते छंदाभिलासअसंपत्तीयं जज्जरिते जालिकरे जीवितसंसये जुग्गच्छितअणिट्टोपसट्टदंसणे जेयहितसहपादुच्चावे जोतिसांपणासणे जंभिते झुपिते

२० झामिते झीणे झुत्तुरायिते अज्जेणगासिते झोसिते उव्वंसते तमूभावे तंसिते णिक्खिते सुच्छिते तेणिते तोमरविद्धे तंडिते उथते थाणपपायणे यितोपवेसणे णिण्टुते थेव्विद्धे धंभिते उद्वधिते दालिते दीणमुहामासे उहुते देसपपतणे दीभग्गे दंड-कसा-लेट्टुघाते धमिते धाविते धिक्कारकरणे धुते ओधुते घेणववच्छपघातणे अधोपाणे धंसिते णट्टे ओणामिते णिहिते णूणे गामपतणे अन्नोसकिते णंदीउवपाते अणंतसोके पच्चंहे पाविते पीलिते पूतिवापण्णदंसणे पंडितविच्छोभणे पोक्कत्तदुरंत-पादुच्चावे पंडकदंसणे फल-पुप्फणासणे फालिते फियावाहिरकपरामासे फुद्धिते फोडिते धधिरंध-मूय-जलमत्तापादुच्चावे

२५ धापायविमूविणासणे धुद्धिउपचाते वेसदंसणे ओरालिते बंधुजणविप्पयोगे भट्टे भामिते भिन्ने मुक्खिते भेदिते भोयण-पाण-भक्करवापडासुभंते मलिते उग्गमज्जिते ओणिपीलिते उग्गुक्के उग्गमहिते मोपविर्विद्धिते उग्गमरिधिते यतिविणासेयगविणासे-यिट्टविअसकारे जंगमंणे अये पडिसेधिते अयोगेयं तरस्स य हाणिंसु रतिविघाते रायपरजये ओरिक्के ओरूढे रेचिते "ओरेचिते रधिते ललितोपघाते अलातक्कोभणे मुंलरिते लुचिते पघातणे ओलकिते ओलंधिते उव्वधिते ओन्नारिते विणासिते वूद्धभेदणे वेसाणरविज्जापणे योक्कसिते संचिते ससिते ओसासिते ओसुद्धे सेदणिम्मज्जेणे सोणितपादुच्चावे

३० संसरिते ओहते हारिते हिसेते हूडिते हेडिते अहोणिसाधिकरे हंस-चक्कवाकसव्वमिहुणविप्पयोगे चेति एदंविधस-

१ "रणोधि" सत्र० ॥ २ "दंसणे हस्सवद्धणे रिपुहृदपचाणयणे रहविरुद्धदंसणे हस्सवद्धणे रासि" इतिरुवे दिर-
इत्तः पाठः सर्वोत्थपि इति उच्यते ॥ ३ समुप्पयाणेषु ६० त० । समुप्पयाणेषु षि० ॥ ४ हसतो" सत्र० ॥ ५ णामाज्जा"
६० त० ॥ ६ ण पुच्छा षि० ॥ ७ खोडते षि० विना ॥ ८ पच्छादणे छिण्णे घुण्णे छेलिते छंदाभिलासे अस्स" षि० ॥
९ "तिसाणुणासणे जंपिते ६० । "तिसाणुसणे जंपिते त० ॥ १० भासि" त० एव ॥ ११ णिच्छुद्धे येचित्ते धंभिय
उद्वधिते त० एव ॥ १२ "विहयि" त० एव ॥ १३ "विचेट्टिए उग्गमच्छिए तिसासेयागविणासे वेट्टअस्स" ६० त० ॥ १४ ओरो-
चित्ते" ६० त० विना ॥ १५ मुल्लिरिचे ६० त० विना ॥

रुवपादुम्भावे अप्पणा आधारिते परेण वा पुच्छित्ते पसत्थे अत्थे णत्थि वत्तव्वं, अप्पसत्थे पुच्छित्ते खिप्पं भविस्सतीति वत्तव्वं । भवन्ति चउत्थ सिलोगा—

असुयीणं च सञ्जेसि किलिद्वाणं च दंसणे । असुभेसु य सदेसु हीणमत्थं वियागरे ॥ १ ॥

तंरुवेण य तंरुवं तण्णिभेण य तण्णिमं । णिमं च णिभमत्तेण तण्णिभोपणिभेण य ॥ २ ॥

पसत्थमप्पसत्थं च उप्पातं समुपेक्खिया । वियागरेज्ज णेमित्ती तज्जातपडिपोग्गला ॥ ३ ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय अप्पसत्थञ्ज्झायो तेवीसइमो सम्मत्तो ॥२३॥छा॥

[चउवीसइमो जातीविजयज्झाओ]

अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय जातीविजयो णामाज्झायो । तं खलु भो ! वक्खस्सामि । तं जधा—तत्थ अज्जो मिलक्खु चि पुव्वमाधारितव्वं भवति । तत्थ अच्चमंतरमासे द्ढामासे णिद्दामासे सुद्दामासे अज्जो चि दूया । तत्थ चञ्जामासे चलामासे कण्हामासे लुक्खामासे तुच्छामासे मिलक्खु चि दूया । तत्थ अज्जे 10 पुव्वमाधारिते अज्जं ति विधमाधारये, तं जधा—वंबणं १ खत्थियं २ वेस्समिति ३ । तत्थ वंबेजेसु सुक्केसु य वंबण विन्नेया १ । तत्थ खत्तेजेसु रत्तेसु य खत्तिया विन्नेया २ । तत्थ वेस्सेजेसु पीतेसु य वेस्सा विन्नेया ३ । तत्थ सुदेयेसु कण्हेसु य मुद्दा सव्वमिलक्खु य विन्नेया ।

तत्थ अज्जेसु मिलक्खूसु वा अणंतरेसु वा पुव्वमाधारितेसु सुकामासे सुद्धवण्णा विन्नेया । सामेसु सामामासे सामा विण्णेया । तत्थ कालामासे कालका विण्णेया । महाकायेसु महाकाया विन्नेया । मज्झिमकायेसु मज्झिमकाया 15 विन्नेया भवन्ति । पच्चंवरकायेसु पच्चंवरकाया विन्नेया । तत्थ चलेसु सव्वयवहारगते य ववहारोपजीवी विन्नेया । तिवत्तेसु सव्वसत्थगते य सत्थोपजीवी विन्नेया । तत्थ पुधूसु खेत्तोपजीवी विन्नेया । णिक्खुडेसु णिक्खुडवासिणो विण्णेया । द्दहेसु उन्नतेसु य पव्व[त]वासिणो विण्णेया । तत्थ णिद्देसु आपुणेयेसु य दीववासिणो विन्नेया । तत्थ रैमणेसु जणपद्वासिणो विण्णेया । गहणेसु रण्णवासिणो विन्नेया । चलेसु चक्करा विण्णेया । परिमंढलेसु य चउरस्सेसु य णारवासिणो विन्नेया । तत्थ सव्वयवणपरिवद्धणेसु य सव्वपाणपतिवद्धणेसु य वेत्थित्ता विण्णेया । मूलजोणिगते 20 आपेलच्चिंघा विण्णेया । गहणेसु कण्हा विण्णेया । संवुते कंचुकच्चिंघा विण्णेया । उपगहणेसु सामा विण्णेया । सुकामासेसु रमणीयेसु ओषात्ता विण्णेया । पुरत्थिमेसु गत्तेसु पुरत्थिमदेसीया विण्णेया । इक्खिण्णेसु इक्खिण्णदेसीया विण्णेया । पच्छिमेसु पच्छिमदेसीया विण्णेया । < १ वामेसु उत्तरदेसीया विण्णेया । > गम्भेसु अज्जदेसिणित्तिंते दूया । गम्माणंतरेसु अज्जदेसंतरेसु दूया । णिक्खुडेसु णिक्खुडदेसिजे अम(ण)ज्जदेसिज्जा विण्णेया ॥

॥ इति महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय जातीविजयो नामञ्ज्झायो चउवीसइमो सम्मत्तो ॥ २४॥ छा॥ 25

[पणुवीसइमो गोत्तज्झायो]

अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय गोत्तनाम अज्झायं । तमणुवक्खरस्सामो । तं जधा—तत्थ गोत्तं दुविषं, गहपतिकगोत्तं चैव १ दिज्जातीगोत्तं चैव २ ।

तत्थ माद्द-गोल-हारित-चंडक-सफित-(फसित)-यासुल-वच्छ-कोच्छ-कोसिप-मुंडां चैति गहपतिकगोत्तानि १ । तत्थ थूलेसु माद्दा विन्नेया । सव्वसगुणगते य चतुरस्सेसु गोळा विण्णेया । सव्वचतुप्पयगते य णिद्देसु हाळा 30 विण्णेया । सव्वमद्दगते चैव परिमंढलेसु चांडिका विन्नेया । सव्वदंसणीयेसु चैव फसेसु फसिता विण्णेया । सव्वधीज्जगते चैव पुण्णेसु यासुळा विण्णेया । सव्वपुप्फ-फळगते चैव द्दहेसु वच्छा विण्णेया । सव्वपातुगते चैव चले कोच्छा विन्नेया । सव्वपाणजोणिगते चैव दीहेसु कोसिका विन्नेया । सव्वपरिसप्पगते य द्दस्सेसु कौंढा विन्नेया । सव्वमूलजोणिगते

१ घत्तव्ये अणं १ वर ॥ २ सव्वगते य पसत्थो १ ६ ० व ० । सव्वत्यगते य सत्थो १ ३ ० वि ० ॥ ३ रमणिजेसु ६ ० व ० ॥ ४ < १ > एत्थिद्वान्तर्गतः पाठः ६ ० व ० नास्ति ॥ ५ ० कंढा वर ॥

तत्थ एतेसि गोत्ताणं जं गोत्तं इत्थी पुरिसो वा भवति तं गोत्तं विण्णातंवं भवति । तत्थ वंभण्णोत्ताणि चतुर्विधाणि भवंति । तं जया-सगोत्ता १ सकविगतगोत्ता २ वंभचारिका ३ पवरा ४ चेति । तत्थ अन्नंतरेसु सन्नोत्ता विण्णेया । वंकेसु सगवि[ग]तगोत्ता विन्नेया । उद्धेसु वंभचारिका विण्णेया । उत्तमेसु पवरा विण्णेया ।

उद्धंभागेसु मंडवा विन्नेया । समभागेसु पुधूसु वा सेट्टिणे । इस्सेसु वासिद्धा । डहरचलेसु संडिहा । डहरथाव-
 ६ रेसु कुंभा । उण्णतेसु माहकी । तिरिंभागेसु कम्मवा । अयोभागेसु गोतैमा । अग्गेयेसु अगिरसा । ददेसु भगवा ।
 चलेसु भागवता । दीहेसु ददेसु सद्या । णिदेसु ओयसा । णीहारेसु हारिता । तणुसु लोक्किरणो । उपहुतेसु
 कचक्खी । सुकेसु चारायणा विन्नेया । परिमंडलेसु पारावणा विन्नेया । जण्णेजेसु अगिवेरसा विन्नेया । इस्सेसु
 मोगाहा विन्नेया । अन्नंतरेअन्नंतरेसु अट्टिसेणा । बाहिरवादिरेसु गहणेसु पूरिमंसा । फरसेसु गहभा । उपगहणेसु
 यराडा । कण्हेसु टोईळा । णिक्कुडेसु कंहुसी । तिरिच्छाणेसु भागवाती । उताणेसु काकुरुडी । णिकुजेसु कण्णा ।
 10 मन्दिमेसु मन्झंदीणा । वामेसु वरका । कायवंतेसु मूलगोत्ता । संरासु संरागोत्तं, केस-मंसु-गह-लोमगते पसन्नेसु य
 भेदाणुजोगोत्तं घ्या । दाहणेसु कडा । किन्नेसु कडवा । चतुरसेसु वालंथा । सेतेसु सेतस्सतरा । आतिमूलिकेसु
 तेत्तिरिका । मज्झविगादेसु मज्झरसा । अंतेसु वज्झसा णेया । सामेसु छंदोगा । उयुभागेसु पसन्नेसु मुज्जायणा । अप्प-
 संधेसु कथ्थायणा । सारवंतेसु गहिका । असारेसु णेरिता । इट्टिलेसु वंभथा । अच्छतेसु काप्पायणा । विच्छिन्नेसु
 कप्पा । आपुण्येसु अप्पसत्थभा । वंढाय्येसु सालंकायणा । सामेसु यणाणा । विसमेसु आमोसळा । सामुग्गेसु
 15 साकिन्ना । परिमंडलेसु उपयति । उण्णतेसु डोभा । उद्धंभागेसु यंभायणा । सुदितेसु जीवंतायणा । वेरेसु दडका ।
 णात्तिवत्तेसु धणजाथा । बुद्धिरमणेसु संखेणा । असुद्धीरमणेसु लोहिक्का । थितेसु अंतभागा पियोभागा । सदेयेसु संडिहा ।
 हुंदुभियोत्ते पव्वयथा । जीणाधिगतेसु आपुरायणा । विविहेसु चावदारी । संयुते वगघपदा । रतेसु पिळा ।
 उत्तमेसु जीयसाधारणेसु देवहथा । वंभेयेसु आपुण्येसु वारिणीळा । दट्टोदरेसु सुवरा ।

सच्चयणगते चेव सच्चरिटागते सच्चवट्टगते सघणसेसु य मूलगोत्तं चेव । ह्यय्यादसंजने चेव धीणवे । सव्व-

20 अपरिग्गहेसु चेव सव्वसत्तेसु वेयाकरणं घ्या । गणावडोरुणे मीमंसका । जत्थ (तत्थ) पमाणे छंदोको । विट्ठिण्ण-
 विमरिते सच्चविट्ठगते पण्णायिकं घ्या । ओजासणे ककितजाणे । यण्णेजेसु यण्णिकं घ्या । सण्हेसु तिक्करकं
 घ्या । अग्गेयेसु जोतिसिकं घ्या । पतिलोमेसु इविहासं घ्या । संवंधेसु रहस्सं घ्या । पुरत्थिमेसु सुयवेदं घ्या । सामेसु
 सामवेदं घ्या । संवंधेसु यलुवेदं घ्या । दारणे अहच्चेदं घ्या । समभागेसु एरुवेदं घ्या । उद्धंभागेसु दुवेदं घ्या ।
 उद्धंभागेसु आहारेसु य तिवेदं घ्या । उद्धंभागे आहारमंसेसु सच्चवेदं घ्या । परिहितेसु छलंग्गी घ्या । महावकासेसु
 25 सेणिका । लुक्खेसु गिरागति । अंतेसु वेदपुट्टं घ्या । धंमंतरेसु सोत्तिया । घोसंतरेसु अज्जायी । कन्नेसु आचरियो ।
 सुदितेसु जावको । अणुलोमपतिलोमे णगत्ति । उत्तमंगे वामपारा ॥

॥ इति गोत्तज्झायो नाम पंचवीसइमो समत्तो ॥ २५ ॥ छ ॥

[छर्चीसइमो णामज्झायो]

णमो भगवतो य अरहत्तो यसनो महापुरिसस्स महावीरवद्धमाणस्स । णमो भगवतीय महापुरिमदिण्णाय
 २० अंगविज्ञाय । अपापुत्वं गळु भो ! महापुरिमदिशाय अंगविज्ञाय णामज्झायं । तं गळु भो ! तमणुवक्खा-
 यिसमामो । नं जया—

यद्धरमिदं प्रोक्तं, सट्ठपिप्रविचिन्तितम् । अंगविज्ञायसुं रत्तनामाध्यायं प्रचक्ष्यहे ॥ १ ॥

ऋषयो येन सुष्यन्ते 'लोके नामगत्तं पथं । तदहं प्रोदाहरिष्यामि, सद्भुवं नामसद्दहम् ॥ २ ॥

१ 'विक्रयगो' तं ५४ ॥ २ 'सु पचारा' ६० तं ॥ ३ गोत्तमा ४२० ॥ ४ छिट्टेसु सि० विना ॥ ५ पूरियंत्ता
 ६० १० ॥ ६ कण्णहला ६० तं ॥ ७ णिणेसु ६० तं ॥ ८ लंभथा ६० ६० विना ॥ ९ टोत्ता ६० तं ॥
 १० णिनेसु ६० तं ॥ ११ जणा' ६० तं विना ॥ १२ विपट्टेसु ६० तं ॥ १३ सच्चयडुगण्ण वज्जाणरेपय ६० तं ॥
 १४ वामपारा ६० तं विना ॥ १५ लोक्कानां सुगतं सि० ॥

गते यो वाऽनुभाषेत, पढंते य विसेसतो । जीवमजीवसंसदंष्ट्रं दुविधं नामपमहं ॥ ३ ॥

सममक्षरसङ्घातं भवेद् वा विसमक्षरम् । ससंजोगमसंजोगं गुणाऽभिप्यायकं तथा ॥ ४ ॥

सरादि १ व्यञ्जनादि वा २ सव्वणामगतं ३ तिथा ।

उपमान्तं १ व्यञ्जनान्तं वा २ स्वरान्तमिति ३ तत् त्रिधा ॥ ५ ॥

धीणामधेयं १ पुष्णामं २ णुंसकमिति ३ तिथा । हैकभस्सं १ शुभस्सं च बहुभस्समिति ३ तिथा ॥ ६ ॥

अतीता १ ऽणागता काले २ वचमाणं च ३ तं तिथा । [..... ॥ ७ ॥]

उपसग १ पिपाताणं २ णामा ३ ऽक्खायं च ४ भागतो । विणिच्छित्तं महेसीणं भस्समेतं चतुव्विधं ॥ ८ ॥

सच्चं १ चेवालितं चैव २ तथा सच्चालितं भवे ३ । ण सच्चा णालिता वा वि ४ गिरा लोके चतुव्विधा ॥ ९ ॥

अंतरिकखं १ सलिलजं २ पस्थियं ३ पाणजं ४ तथा । मग्गा य तस्स अक्खाता णामं जेहिं पवत्ते ॥ १० ॥

णक्खत्ताणं गह्णणं च ताराणं चंद-सूरयो । विधीणं मंडलणाय विसाणं गयणस्स य ॥ ११ ॥

उक्खणं परिवेसाणं तथा पुव्वगतस्स य । सतहुताणं मेत्ताणं पक्खिलं(णं) जे णमालया ॥ १२ ॥

कट्ठा-मग्गा-ऽऽलवाणं च गयणस्स णिसाय य । उट्ठूणं च समाणं च तथा मास-ऽद्धमासयो ॥ १३ ॥

णिस्सितं वा वि णक्खत्तं तथा णक्खत्तदेवतं । यं णामधेयं भवति सव्वमाकासणिस्सितं १ ॥ १४ ॥

कूपाणं उदपाणाणं णदीणं सागरस्स य । ह्वद-पुक्खरणीणं च णागाणं वरूणस्स य ॥ १५ ॥

समुद्द-पट्टणाणं च दण्णयाणं च सव्वसो । सव्ववारिचराणं च द्विजा वारिचरा य जे ॥ १६ ॥

णदीरुहा य जे रुक्खा जले जं चाभिरोहति । यदस्सियं णामधेज्जं सव्वं सलिलसंभवं २ ॥ १७ ॥

हुमाणं च लताणं च सव्वपुप्फ-फलस्स य । देवाणं णगराणं च णातुणं जं जतो भवे ॥ १८ ॥

जचु देवणिभं किंचि वसुधामभिणिसितं । धातुरत्तगतं वा वि सव्वं तं पुढविंसंभवं ३ ॥ १९ ॥

सुराणं असुराणं च मणुस्साणं च सव्वसो । चतुप्पदाणं पक्खीणं कीढाणं किमिणं तथा ॥ २० ॥

जदस्सितं णामधेज्जं जं किंचेविधं भवे । बहुप्पदाणं अपदाणं सव्वं तं पाणसंभवं ४ ॥ २१ ॥

सव्ववत्थ-भूसण-जाणा <-ऽऽसँण-> सयण-माण-भोयण-आवरण-पहरण-पुक्खरगतं चेति, जं चेदं तदपि किंचि एता-

रिसं सव्वं तदपि जीवं सव्वणेरविक-तिज्जजोणिगत-मणुस्स-देवा-ऽसुर-पिसाय-जक्ख-रक्ख-स-किन्नर-किंपुरिस-अंधव्य-णाग-

सुवण्णा चेति, जं चऽण्णदपि किंचिदपि एतारिसं दिव्वसंठाणणामधेज्जं तं जीवसंसदंष्ट्रं । तदेक-ति-पंच-सत्त-णविकादसक्खराणि,

जाणि वऽण्णाणि चैव समक्खरसंघाताणि णामधेज्जाणि, ततो परमेतारिसाणि तं विसमक्खरसंघातं ततो द्वि-चतुर्थ-

अष्ट-दश-द्वादशाक्षराणि, जाणि वि अण्णाणि विसमक्खरसंघाताणि णामधेज्जाणि, अत परमेतारिसाणि समक्खरसंघातं 25

सं तत इदं सोध-संकरिसण-मदण-सिव-वेसमण-वरण-जम-चंदा-ऽऽदिच-ऽग्गि-मारुत-दिवस-रयणि-रोर्धुम-विहंग-णाग-

सुवण्ण-देवा-ऽसुर-मणुय-यसुधंतरिकर-पव्वत-समुद-वसुधाधिप-रत्ताणिये, एतं जं चऽण्णदपि किंचि एतारिसं णाम-गोतं चेति

णिपुंटेके उभयोरवि णिपवण्णगोणं तं तं णक्खत्तदेवयणामधेज्जेसु जं किंचि दीहसरीरादितं सरादितं धंजणादितं तथा

एस्सातं तथा धंजणातं स्वरांताणि भवंति । जघा-धी-पुं-णुंसकणामधेज्जाणि एक द्वि-चतुष्टयचनानि अतीत-संभ्रवा-ऽऽणागतानि

सचभ्रेरेव विण्णेयाणि भवंति उच्चारितरससुम्पट्टे तथा उल्लोथित-ऽऽनुस्तिथयसमाचारे वैदिज्जं विन्मंससुसितमिति 30

सयणणक्खरसंघातानिस्सितेसु धी-पुंसयो णामधेज्जेसु णक्खरत्तं धूया । एतेसामेय संथिउदीरेणे णक्खरत्ताणिस्सितं णामधेज्जं

१ षापि समं तत्र ॥ २ ० ति त्रिधा ति० विना ॥ ३ 'एकमाप्यं द्विमाप्यं च बहुमाप्यमिति' एवचनं द्विचनं बहुचनं

चैकर्म ॥ ४ <-१-> एतधिहान्तगतं पदं हं० त० नास्ति ॥ ५ ति० विनाऽप्यद-णि विविहसमक्खरसंघा' हं० त० । णि

विविसमक्खरसंघा' सं १ पु० ॥ ६ 'णि यं विसंघातं सं १ पु० ॥ ७ संतत इदं संदसं' हं० त० ॥ ८ 'रोहम' ह०

स० ॥ ९ यदित्ठे वि' हं० त० विना ॥

- धूया । एतेसामेव जमकोदीरणे णक्खत्तदेवतणामधेजं धूया । एतेसामेव जमकोदीरणे संहारे णक्खत्तणिसित्तं णामधेजं धूया । एतेसामेव सव्वत्तोदीरणे अत्यमितणक्खत्त-चंदा-SSदिच्चणामधेजं धूया । तेसामेव चलोदीरणे अयहत्थिसु समगमारत्तणामधेजं धूया । तेसामेव चलोदीरणे संहारे अजहत्थिसु सैमगमारत्तणिसित्तं णामधेजं धूया । अवत्थितोदीरणेसु णक्खत्तणामधेजं धूया । तेसामेव च उदीरणे संहारे सुणक्खत्तचदेवतणिसित्तं णामधेजं धूया । एतेसामेव अवक्करिसणो-
- 5 दीरणे वा पव्वत्त-सागर-भेदिणी-गदी-वेतिया-SSयागणामधेजं धूया । तेसामेवावक्करिसणे वा अधरोदीरणे वा संहारे पव्वत्त-सागर-भेदिणी-गदी-वेतिया-SSयागणिसित्तं धी-पुमंसयो णामधेजं धूयादिति । तत्थ सव्वत्तिज्जोणिगते तत् सव्वत्तिज्जोणिगते धी-पुमंसयो णामधेजे तिव्वजोणीणामधेजं धूया । तेसामेव संहारोदीरणे तिव्वजोणीणिसित्तं णामधेजं धूया । तेसामेव य उदीरणे थावरत्तिज्जोणिणिसित्तं णामधेजं धूया । ~~ह~~ तेसामेव च उद्धंभागोदीरणे विहरणामधेजं धूया । ~~ह~~ तेसामेव उद्धंभागोदीरणे संहारे विहरणिसित्तं णामधेजं धूया । <1> तेसामेव उद्धंभागोदीरणे
- 10 संहारे परिसप्पणिसित्तं णामधेजं धूया । > तेसामेव विरोदीरणे संहारे परिसप्पणिसित्तं णामधेजं धूया । तेसामेव सव्वत्तोदीरणे मच्छणामधेजं धूया । तेसामेव सव्वत्तोदीरणे संहारे मच्छणिसित्तं [णामधेजं] धूया । तेसामेव अपक्करिसणोदीरणे वा कीडिक्किपिलकणामधेजं धूया । णिम्मज्जित्त-यौह्विय-योरुपविद्धा-उवलोकिते णिक्खरयसन्वभयण[ग]ति सव्वधरत्ते चेति । तत् सव्वण्येरयिकेसु दाणववगतेसु अधरणामधेजं धूया । तेसामेव जमकोदीरणे णिक्खरणामधेजं धूया । तेसामेव जमकोदीरणे संहारे गिरयाणिरया-णिसित्तं वा <1> हिंसोणिसित्तं वा > णामधेजं धूया । तेसामेव
- 15 तिव्वभागोदीरणे संहारे णागणिसित्तं णामधेजं धूया । तेसामेव च उद्धंभागोदीरणे दाणवणिसित्तं णामधेजं धूया । तेसामेव उद्धंभागोदीरणे संहारे दाणवणिसित्तं णामधेजं धूया धी-पुंसयोरिति ।

तत्थ णक्खत्तणामधेजं दुवियं-णक्खत्तणिसित्तं चेव १ णक्खत्तचदेवतणिसित्तं चेव २ ।

तत्थ मणुत्सणामधेजं पंचवियं, तं जघा-गोत्तणामधेजं १ अयणामकं २ कम्मणामधेजं ३ सरीरणामं ४ फरणणामं ५ चेति ।

- 20 तत्थ गोत्तणामधेजं गहपतिकगोत्तणामधेजं दिर्जातीगोत्तणामधेजं चेति । तत्थ गहपतिकगोत्तणामधेजं तं जघा-माट-गोल-हाल-चंडिक-सक्कित्तं (कसित्तं)-यामुल-यच्छ-कोसिका चेति । अतो परमुद्धं बंभणगोत्तणामधेजं भवति १ । तत्थ अधणामकं समीसु सीसणाम अपि तिव्वक्क-क्करक-उज्झितक-उत्थितक चेति । याणि यऽण्णाणि वि काणिचि-देवजुत्तानि २ ।

तत्थ कम्मणामधेजं पंचकमाधिअरणकाहूपयोगेवसित्तिमंभिनिसित्तं, जं चण्णदपि त्रिचिदेवारिसं कम्माधिकरण-25 जुत्तं तं कम्मणामधेजं ३ ।

सैत्थ सरीरणामधेजं पमत्थमणसत्थं च दुवियं-उत्थणदोसजुत्तं च उपद्वयोसजुत्तं च । "संढ-विकड-उरह-राहाड-विणिग आहारे उदके यावि देवभूतिवलायमैभाणुरद्धी समरनीरापि अपरिक्कमा ।

हृदये निचयग्गे य गोत्तणामे य सव्वेईम । संजोगेसु य सव्वेसु मित्तं धूया परिक्कमं ॥ १ ॥

पंटी पंदं च दिण्णं च णंदणे पंदिरे वधा । ण्णुंमके अगंदिकरं त्रिक्खरत्ते सैण्णिउट्टित्ते ॥ २ ॥

१ सभागमारुयनि ६० त० ॥ २ हत्थविहारणं. पउ. ६० त० एव वसित्ते ॥ ३ <1> एतविहारणं. पउ. ६० त०. काणि ॥ ४ "यादिय-योरुपविट्ठाऽय" ६० त० विना ॥ ५ <1> एतविहारणं. पउ. ६० त० ॥ ६ "मेव जमकोदीरणे संहारे णाम" १ ३ ५० ॥ ७ णामणिसित्तं णामधेजं धूया । तेसामेव सव्वत्तोदीरणे संहारे मच्छणिसित्तं णामधेजं धूया । तेसामेव च उद्धं" एव. ॥ ८ विजाती" ६० त० ॥ ९ "णाममयि ६० त० ॥ १० "माभिसित्तं ६० त० विग ॥ ११ तत्थ सरीरसरीर" एव. ॥ १२ संढ-विकड-उरह" ६० त० ॥ १३ "सभाणुयद्धी-यणाम" ६० त० ॥ १४ सव्वरत्त ६० ॥ १५ सव्वणुयद्धिमे ६० त० विना ॥

परिक्रमाणा विण्णया जे जे पधदुप्पते इति पप्पह्वं कोणो वेति, जाणि वऽण्णाणि वि काणि वि एतारिसाणि तल्लक्खणदोससंजुत्तं । तत सरीरोपद्वज्जुत्तं, तं जधा—खंडसीस—काण—पिल्लक—कुञ्ज—यामणक—कुँविक—सयल—खंज—यडमो वेति, जाणि वऽण्णाणि वि एरिसाणि तं सरीरोपद्वज्जुत्तं । पागयभासाय तत्थ पसत्थं ति विविधं, तं जधा—वण्णगुणजुत्तं चैव सरीरगुणजुत्तं चैव । तत्थ वण्ण[गुण]जुत्तं तिविधं, तं जधा—सुद्धे सामे कण्हे चेति । तत्थ सुद्धेसु अवदात्तंको सेडो सेडिलो चेति पागयभासाय । सामे सामा सौमली सामकसामला चेति पागयभासाय । तत्थ कण्हे कालककालिका 5 चेति पागयभासाय । तत्तो तम्मि पादगोरा चेति इति वण्णणामभेज्जाणि । ततो सरीरगुणजुत्तं सुमुह—सुदंसण—सुरूव—जात—सुगता चेति । तत्थ सरीरजमभिणिसियं चैयं चसित्तं बालकत्रालक—डहरक—मञ्जिम—थविर—थेरसैमाजुत्ताणि चयो जं सरीरजं चेति ४ ।

तत्थ करणणामभेज्जं जं किंचि संपरिक्रमं । ततो परिक्रमा तिविधा—एकक्खरा दुक्खरा तिअक्खरा चेति । तत्थ एकक्खरा चतुव्विधा, तं जधा—ककार—लकार—सुकार—णिकारा चेति । तत्थ द्वक्खरो परिक्रमो दुवियो—सव्यगुरु चैयं 10 पथमक्खरलघू पच्छिमक्खरगुरु । तत्थ द्वक्खरो परिक्रमो सव्वगुरु, तं जधा—तात—दत्त—दिण्ण—देव—मित्त—गुत्त—भूत—पौल—पालि—सम्म—भास—रात—घोस—भाणु—विद्धि—नंदि—नंद—माना चेति । तत्थ पठमक्खरलघवो पच्छिमक्खरगुरु द्वक्खरपरिक्रमा तं जधा—सँचसिरियवलधरसहवगिरिरिति । अँथातथा उक्खरा परिक्रमो विविधा—मञ्जिमक्खरलघवो चैव पच्छिमक्खरगुरवो चैव । तत्थ उक्खरा मञ्जिमक्खरलघवो तं जधा—उँत्तरा—मालित—रक्खिय—गंदण—गंदिक—गंदिका चेति । तत्थ उक्खरा पच्छिमक्खरगुरवो तं जधा—सहितमहका चेति इति छव्विधा । एकचत्तारीसं परिक्रमा भवंतीति ॥ छ ॥ 15

तत्थ एवमणुगंतूणं सक्रणामभेज्जं पढतेणं इदं तदिति नन्नतअक्खरेरिति । तत्थ छव्वियमक्खरं—सरा १ फरिसा २ अंतत्या ३ जोगवहा ४ अजोगवहा ५ यमा ६ चेति । तत्थ अकारादयो औकारणियणा सरा । ककारादयो मकारणियणा फरिसा । य-र-ल-वा इति १ अंतत्या । चत्तारो श-प-स-हेति उप्पमाणञ्चत्तारो योगवहा । तथा विसर्जनीयो उपपम्हानीयो जिहाम्मलीयो अनुस्वारोऽनुनासिका चेति तत्थ पंच [अ]योगवहाः—अः इति विसर्जनीयः, ङ् क इति जिहाम्मलीयः, एप्प इत्युपपम्हानीयः, अँ इत्यनुस्वारः, ला (लौं) इति नासिका । क र ग घ इति यैमा चत्तारि । अत्र अकारादीणि 20 लकारनिधनानि समाणक्खराणि अट्ठ, दस इषेके । तत्थ ए ऐ ओ औ इति चत्तारो संधिअक्खराणि । अकार-आकार-आ नामिस्सरा, सँनेव तु अक्खराणि । ककारादयो मकारणियणा फरिसा । तत्थ क-ध-ट-त-पा र-छ-ठ-थ-फा श-प-सा चेति त्रयोदश अघोसा । ग-ज-द-ड-या घ-झ-ठ-ध-भा ङ-ञ-ण-न-मा य-र-ल-या हकारो य वीसर्ति घोसवंतो, हकारेण सह एकविसर्ति । ङ-ञ-ण-न-मा अनुनासिका यमा चेति एकादशानुनासिका । र-छ-ठ-ध-फा द्वितीय घ-झ-ठ-ध-भा चत्तारो योगवहा । यमनिधना छव्विधा । पंचसट्ठि सव्वयायोगते भवंति भगानाह अरहा 25 महापुरिस इति ।

ततो विसर्जनीयो हकारो चेति उरे विण्णयो सरोप्पसवण्णे चेति । अकार-आकार कंठे विण्णया मवण्णे चेति । ङ्कार-ञ्कार-कवर्गो जिहाम्मलीयो चेति हतु(त्तु)मूलजिहाम्मलीयो विण्णयो सवण्णे चेति । इकार-ईकारो एकार-ऐकारो चवर्गो यकारो शकारो चेति साल्लुक्को विण्णयो सवण्णे चेति । पकारो मञ्जिमो टवग्गो चेति सिरसि विण्णयो

१ परिक्रमाणा विं हं तं विना ॥ २ रूघाक्राणो हं तं ॥ ३ कुंधिकं हं तं विना ॥ ४ तको सेणसेडिलो हं तं विना ॥ ५ सासणी हं तं ॥ ६ दयं घस्सियं वां हं तं ॥ ७ सम्मजुं हं तं ॥ ८ सपरकमं हं तं विना ॥ ९ पयिःकरा द्वक्खरा तिअक्खरा हं तं ॥ १० चैय पथमक्खरगुरु हं तं ॥ ११ पालयालिसम्मतासं हं तं विना ॥ १२ सव्यसुरियवलधरसहं हं तं ॥ १३ लहातहा हं तं ॥ १४ मा तिविधा तत्र ॥ १५ उत्तर-पालित-रिक्खियणं गंदिकगंदिका चेति हं तं विना ॥ १६ अंतस्या ३ योगवहा छ वयोगं हं तं विना ॥ १७ अंतस्या हं तं विना ॥ १८ स्वारः इति सं १ पु ॥ स्वारः म्हा इति वि ॥ १९ जमा हं तं ॥ २० णि यकरं तत्र ॥ २१ तातेय अक्खरं सं १ पु ॥ तातेय अक्खरं वि ॥ २२ अकार सकार ङकार कवर्गो हं तं ॥

- सवण्णे चेति । लंकारो त्वर्गो सकारो लंकारो चेति दंतसेतु विण्णयो सवण्णे चेति । उकार उकार ओकार औकार पवर्गो उपध्मानीय वकारो चेति ओट्टयो विण्णयो सवण्णे चेति । दंतमूले रेको विण्णयो सवण्णे चेति । अर्धचतितसंदिदे सत्तरूपे लकारो विण्णयो सवण्णे चेति । तत्थ उद्धंभागेसु इकार-ईकारा एकार-ऐकारा ओकार-औकारा विण्णया सवण्णा चेति । ऋजुभागेसु अवत्यितेसु अकार-आकारो विण्णयो सवण्णे चेति । संवुत्तेसु उद्धंभागेसु अवत्यितेसु ऋकारो विण्णयो सवण्णे चेति । ओकार-औकारौ अवेभागेसु विण्णया सवण्णा चेति । संधिमु संधिअक्खराणि हत्य-पाद-गुप्फ-जाणु-जंपोरु-यसण-फिज-कुक्खि-वस्त-इत्थतल-वाट्टु-सहणुगंड-ओट्टसवण्णेण नाम चेति समाणेसु । मिधुणचरेसु य सत्तेसु य मलाभरणके चैव समाणं विण्णयं सवण्णे चैव । उद्धंभागा-उधरभागेसु णामिणो विण्णया सवण्णा चैव । णिक्खित्ते पट्टिहुंठिते चैव संधिहुं विण्णयं सवण्णे चैव । तत्थ वज्जेसु अद्धंभंत्तरेसु य णीहारेसु पक्किण्णेषु एकवज्जणमसंजोगं विण्णयं सवण्णे चैव । तत्थ समाणेसु मिधुणचरेसु य सत्तेसु य मलाभरणेषु य भलोपकरणेषु य संजोगं विण्णयं सवण्णे चैव ।

- आहारेसु सरं वूया णीहारे बंजंणाणि तु । णीहारा-ऽऽहार-मिस्सेसु संपभिण्णं पवेदये ॥ १ ॥
 कवग्गमसितेसाऽऽट्टु यकारं वा वि णिव्वदा । पट्टिरूवेसु कण्ठेसु जकारं तत्थ णिरिसे ॥ २ ॥
 हवग्गो य-रकारो श-प-सा चैव पंढरे । चित्ते लकारो विण्णयो ससंजोगं च णिरिसे ॥ ३ ॥
 चवग्गो य लकारो य हकारं चैवि तंयसु । णीले पवग्गो विण्णयो ववग्गो वा वि पीतके ॥ ४ ॥
 थूले हवग्गो विण्णयो मकारो यावि मज्झिमे । उपध्मानीयो विण्णयो जिह्मामूलीव एव य ॥ ५ ॥
 कवग्गो य रकारो धं गकारो य कणीयसे । तवग्गो य लकारो धं कसेसेते पक्कित्थिया ॥ ६ ॥
 चवग्गो धं यकारो य यकारं वा वि जेह्दगं । णातिथूलेसु थोद्धव्वा तथा णातिकसेसु य ॥ ७ ॥
 चतुरत्तेसु सव्वेसु सव्वचतुप्पदेसु य । चतुकेसु य सव्वेसु पंतुपह्वण्येसु य ॥ ८ ॥
 औकारं वा एकारं वा वूया वण्णेसु वण्णवि । परम्मुदे वा तिज्जं वा चकारोऽवत्यितेसु य ॥ ९ ॥
 हकारोऽभिमुहो णयो औकारो सव्वणिको । अण्युयेसु य सव्वेसु सव्वजोगाणेतुसु य ॥ १० ॥
 ऐकारं वा यकारं वा वूया सव्वक्खरेस्सिधी । एकारमुद्धभागेसु जकारमधरेसु य ॥ ११ ॥
 वूया एकारमाहारे यत् णीहारलक्खणे । शिरो गंडे तथा णामी जाणु-गुप्फे तंधा ट्टिजा ॥ १२ ॥
 भावणेसु य सव्वेसु यं किंचि परिमंडलं । दव्वोपकरणं लोके यं यट्टं दिस्सते वचि ॥ १३ ॥
 पकारं वा यकारं वा वूया वण्णेसु वण्णवि । यट्टे दव्वोपकरणे यट्टासी भवे कचि ॥ १४ ॥
 हकारो तत्थ विण्णयो धंकारो चेतरेसु वि । रसदव्वो तंधा दव्वे सुयपौसकडेच्छुके ॥ १५ ॥
 आदरिसे या मुयायं या यं यट्टसु तु अंततो । पुप्फं फलं च यं किंचि दीहयट्टं भवे कचि ॥ १६ ॥
 यकारं वा चकारं वा वूया सव्वक्खरेसु वि । आहारे सति मूलेसु चकारमभिण्णिरिसे ॥ १७ ॥
 णीहारेसु चपारो सौ सवेसंसगतेसु य । णक्खरेसु य सव्वेसु तथा णस्सतदेवते ॥ १८ ॥

१ हकारो तन् ॥ २ अपवृत्तियसंदिदे सनरूपे हं तं ॥ ३ एतु प्रकारो हं तं विना ॥ ४ क्विखते पणिकुं हं तं विना ॥ ५ महात्तमं हं तं ॥ ६ महोप हं तं ॥ ७ संजणेण तु हं तं विना ॥ ८ एताह हं तं ॥ ९ चायिपं यतु हं तं ॥ १० य सकारो हं तं विना ॥ ११ य सेसेप पं हं तं ॥ १२ य जकारो य सकारं हं तं ॥ १३ चउत्थहणेसु हं तं ॥ १४ आपणेषु हं तं ॥ १५ यकारं चयकारं वा वूया सव्वक्खरे णिप हं तं ॥ १६ यकारमधुरे हं तं विना ॥ १७ सीया(धा)ट्टं हं तं ॥ १८ तदा ट्टिका हं तं ॥ १९ यकारो हं तं ॥ २० तपो हं तं ॥ २१ पाणुक्खरेसु हं तं ॥ २२ राति थूलेसु हं तं ॥ २३ सा सवेसंसगतेसु हं तं ॥ २४ यस्सतदेवते ॥ २५ ॥

जिठमग्गे दंतपजं च पंजजतुणिसेवणे । केसंते कण्णसकुल्लं कण्णपालीय य तथा ॥ १९ ॥
 अवचत्तं वा वि थं वट्ठं अट्ठदंताण तं चयं । णमोक्ते वंदिते वा पूयितुहोक्किते तथा ॥ २० ॥
 चंदणक्खत्तघोसे य ढकारमभिणिहिसे । भूसंघाते य णिण्णे थं गैत्तेयमविणामिते ॥ २१ ॥
 विनामितायं जिठभायं जं किंचि विणंतं भवे । विणतेसुं य सव्वेसु दव्वोपकरणेसु य ॥ २२ ॥
 चंपसंघाणरूपेसु ढकारमभिणिहिसे । वत्थिसीसे तिके चैव चिबुके संसुमन्तरे ॥ २३ ॥
 तिकुज्जं वा वि जं किंचि पँकारं तत्थ णिहिसे । कुंचितेसु य केसेसु मंसु-लोमे य कुंचिते ॥ २४ ॥
 कुडिलेसुं य दव्वेसु सव्ववलीगतेसु य । आकुंचितासंगुलीसु गत्तेसाऽऽकुंचितेसु य ॥ २५ ॥
 आकुंचितायं जिठभायं जं किंचि कुंडलं भवे । आविट्ठे चेद्वित्ठे चैव भामिते सव्वसप्पसु ॥ २६ ॥
 ठँकारं वा ढकारं वा घूया सव्वक्खरेसु वि । विधत्तेसु ठँकारो स (सा) ढकारे संबुत्तेसु य ॥ २७ ॥
 पंढरेसु ढँकारो सा चमुतेसु णिव्वदा । आकुंचिताणं गत्ताणं जं किंचि वाहिरं भवे ॥ २८ ॥
 कुडिलं नाम जं किंचि नयपँकुंचितं भवे । छिन्ने भिन्ने य भग्गे य कुट्ठिते वा वि णिव्वरँ ॥ २९ ॥
 ढँकारं वा लकारं वा घूया सव्वक्खरेसु वि । तँत्तेवजेसु सव्वेसु दकारमभिणिहिसे ॥ ३० ॥
 पंढरेसु दकारो ससा संधिमुत्तेसु णिव्वदा । पँपुते दहुपिलकाय वणे खते तिलकालके ॥ ३१ ॥
 चम्मक्खाले तद्दोसे य पलिते य तथा पुणो । पुँरीसमुत्ते सदे य अँसीवे कण्णगूधके ॥ ३२ ॥
 पूतिके रुधिचीके य णिट्ठिते खुविए तथा । यिक्कणिते कूविते य रुण्ण विकंदिते तथा ॥ ३३ ॥
 कासिते जंभिते चैव वेधिते परिदेविते । पयलाइते पसुत्ते य पतिते विप्पलोद्विते ॥ ३४ ॥
 णिव्वाहिते णिस्ससिते *१०गे संघाणिदंसणे । उवहुते फले पुप्फे पावन्ने पाण-भोयणे ॥ ३५ ॥
 उवहुतेसु सव्वेसु ढकारमभिणिहिसे । ञ्जुकेसु उज्जुलेहासु रकारमभिणिहिसे ॥ ३६ ॥
 वालेसु सव्ववीयेसु जकारमभिणिहिसे । णामप्पयोगे संव्वत्त मुदितेसु य सव्वसो ॥ ३७ ॥
 । सत्थिकाकाररूपेसु मकारमभिणिहिसे ॥ ३८ ॥
 उत्ताणेसु य वत्तेसु सयणेसाऽऽसणेसु य । उक्कजे सयणे वत्थे दव्वोपकरणे तथा ॥ ३९ ॥
 थँ-वकारो द्ढहुतं तकारो पँदेमा तथा । उद्धमुहे रकारं या मकारं वा वि मज्झिमं ॥ ४० ॥
 तिज्जाणतेसु गत्तेसु सयणेसाऽऽसणेसु य । तिज्जंभागासणे वत्थे दव्वोपकरणे तथा ॥ ४१ ॥
 द-थँकारो यकारो य हाऊणापणमेव थ । लघवो पंचवण्णा जे गुरवो जे य किञ्चित्ता ॥ ४२ ॥
 लघवो यावि जे वण्णा सेसा वक्खामि गोरवं । थँमा य योगाहा य संयोगा यावि कैवल्ल ॥ ४३ ॥
 पंच वार्येवेण्णं ति पुव्वरूयगुरू भवे । थँवजणपचवरो सत्तवंजणमुत्तमं ॥ ४४ ॥
 *संजोगकद्धणामस्स संजोगेसु य छन्निवधं । गत्ताणामादिमूलेसु पढमं तत्थ णिहिसे ॥ ४५ ॥
 पढमेसु य सव्वेसु दव्वोपकरणेसु य । थँत्ताणामद्धदेसेसु सतियं तत्थ णिहिसे ॥ ४६ ॥

१ पणुजंतुणिं हं० त० ॥ २ थं वट्ठं अट्ठदंताण संचयं हं० त० ॥ ३ गत्तेयमिति नामिप हं० त० विना ॥
 ४ यिणितं हं० त० विना ॥ ५ चयसंघाणरूपेसु दकारं णि० ॥ ६ वकारं हं० त० ॥ ७ ल्ले सव्ववद्वेसु हं० त० विना ॥
 ८ कुंडिलं हं० त० णि० ॥ ९ टकारं वा कुंकारं हं० त० ॥ १० टकारो हं० त० ॥ ११ टकारो सांचनुपसु णिच्छदा हं० त० ॥
 १२ कुंचिप भये हं० त० ॥ १३ णिच्छदा हं० त० ॥ १४ उंकारं हं० त० विना ॥ १५ तयवथेसु हं० त० ॥ १६ जपुत्ते दहु
 यिलकाय चरणे यत्ते हं० त० ॥ १७ सपुरीं हं० त० ॥ १८ असीवे पाकगुं हं० त० ॥ १९ गोगे हं० त० ॥ २० सव्वथं थ
 हं० त० ॥ २१ थयकारो हं० त० ॥ २२ पढमा तथा । उट्टमुत्तेरकारं हं० त० ॥ २३ थयकारो जकारो थ हं० त० ॥
 २४ जमा य जोगवण्णा थ संजोगा हं० त० ॥ २५ तणिट्ठं ति हं० त० ॥ २६ थुयंजणं हं० त० ॥ २७ संजोगं
 वट्टणामस्स हं० त० विना ॥ २८ गत्ताणामद्धदेसेसु हं० त० ॥

- तत्तियेसु य सव्वेसु दंब्वारणं मज्झिमेसु य । गत्ताणामंतदेसेसु जे तथा तत्थ णिद्विसे ॥ ४७ ॥
 पच्छिमेसु य सव्वेसु दब्बोयकण्णेसु य । आदि-मज्झिघिगादेसु कित्थियं तत्थ णिद्विसे ॥ ४८ ॥
 मज्झिमाणं विमरिसेसु चत्थं तत्थ णिद्विसे । यदक्खरं णामचेज्जं पुरत्था समुदीरितं ॥ ४९ ॥
 तण्णक्खरं नामचेज्जं भागाभागं पवेदये । धीणामचेज्जं धीणामे तुल्लातुल्लं पवेदये ॥ ५० ॥
 5 पुतं णामगते पत्थि गेयेण णंतगायणं । अधीयतां सामवेदं विप्पणं तप्पुयं भवे ॥ ५१ ॥
 सव्वेसेतेसु रूवेसु पंडरं अभिणिद्विसे । पुरत्थिमेसु गत्तेसु सद्-रूवे पुरत्थिमे ॥ ५२ ॥
 दक्खिण्णेसु य गत्तेसु दक्खिणं दारमादिसे । दक्खिण्णेसु य सव्वेसु पीते रूवे य दक्खिण्णे ॥ ५३ ॥
 सव्वकण्ठेसु रूवेसु पच्छिमं दारमादिसे । पच्छिमेसु य सदेसु सदे रूवे य पच्छिमे ॥ ५४ ॥
 सव्वमेतेसु गत्तेसु उत्तरं दारमादिसे । उत्तरेसु य गत्तेसु सदे रूवे य वामतो ॥ ५५ ॥
 10 णासावसे भुमंगुद्वे ओद्वे गड्ढे सपोरिसे । अंगुलीसु य सव्वासु णंतं भागे पवेदये ॥ ५६ ॥
 णंतं चरेसु पक्खीसु सव्वचत्तुप्पदेसु य । णंतं चरेसु सव्वेसु णंतभागं पवेदये ॥ ५७ ॥
 हत्थयो पादयो चैव जंपयोहरयो तथा । गीवायं वा वि वैद्वो च पुच्चंभागं पवेदये ॥ ५८ ॥
 मज्झिमेसु य पक्खीसु सव्वचत्तुप्पदेसु य । मज्झिमेसु य सव्वेसु पेंडिवापुदरे तथा ॥ ५९ ॥
 कट्ठं पत्तोदरं वा वि कुच्छीसु सिरसी तथा । मुद्वे य दुपपोभागे णक्खत्तं अभिणिद्विसे ॥ ६० ॥
 15 कायवंतेसु पक्खीसु सव्वचत्तुप्पदेसु य । कायवंतेसु सव्वेसु महाखेत्तं पवेदये ॥ ६१ ॥
 केस-भंसु-णद्दगेसु तणूरु-गद्दणेसु य । डदरे चले थावरे वा अप्पखेत्तं पवेदये ॥ ६२ ॥
 सव्ववीयगते वा वि तथा कीड-किविहगे । अणूसु सव्वसुद्धेसु अप्पखेत्तं पवेदये ॥ ६३ ॥
 दारुणेसु य सव्वेसु सव्वपक्खि-चत्तुप्पदे । सव्वेसु यावि दुग्गेसु दारुणंणाणि णिद्विसे ॥ ६४ ॥
 चलेसु चलसंपीसु णिद्विसे थाचरेसु य । सव्वेसु धीयरणे य थाचरेसु य णिद्विसे ॥ ६५ ॥
 20 आसिलेसा तथा मेत्तं धंभेयं विस्सदेवतं । सतमिसावज्जमेतेसु जंपणंवाणि णिद्विसे ॥ ६६ ॥
 जदा पूसो य साती य महा मूलं च पंचमं । ठैक्खुरं सव्वगुरुकं पडमेगलुत्तं तथा ॥ ६७ ॥
 संदाना तथाऽरिस्सिलेसा संसमत्ते [.....] । कित्थिका रोदिणी चैव फग्गुणी रेवती तथा ॥ ६८ ॥

॥ त्वक्षरं मज्झिमं ॥ छ ॥

- द्वितीये गुरुं णेयं पयापति संतकत्तो । [“.....” एव गुरुं णेयं महीवूधो ॥ ६९ ॥
 25 [...] मिद्वेयमितियुत्तपोसगिरियधि तथा । परिकमा से देवतेते विण्णेया कण्हसंभवा ॥ ७० ॥
 संभसेण करति यो रक्खित्ते * रीजविग्गदा * । रतिणेयो [च] सूरो य सद्दो य सहित्तसिरि ॥ ७१ ॥
 मित्तभोगाचलो भूति भाणु मित्त महा तथा । पालितो पालिपालो य महितो महिको तथा ॥ ७२ ॥
 नीलेसु पतिरूवेसु रीरसेते परिकमा । पंधक्खरगतं [चैव] लकारो ताघ्रसंभरो ॥ ७३ ॥
 तवो दत्तो य दिण्णेो य णंदणेो णंदिको र्धरो । देवदासो य पीतेसु णिकारो णंदको तथा ॥ ७४ ॥
 30 द्वंद्वे गाते तथा अंधे तथा जमलभूसणे । परिकमा ससंज्ञेगा संतमिआश्रयं तथा ॥ ७५ ॥

१ तत्तियेसु- इत्यं श्लेषः सं १ पु० प्रतिपु दित्तात्तो ददगते, मया तु ह० त० शि० प्रतीताभिलष सश्रुदेव आदतः ॥ २ दब्बोयकण-
 वेसु य शि० ॥ ३ जहायिगारेसु ह० त० ॥ ४ वद्धी च पुच्छं भागं ह० त० विना ॥ ५ पट्टिस्तापु ह० त० ॥ ६ थाचरेसे
 सं १ पु० ॥ ७ उत्तरं ह० त० ॥ ८ सखानावययस्सिलेसा संसामत्ते ह० त० ॥ ९ उत्तरं ह० त० ॥ १० सययय ह० त० ॥
 ११ [.....] च गुरुं ह० त० विना ॥ १२ साम्मासेण ह० त० विना ॥ १३ * * एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः शि० एव वर्तते ॥
 १४ रतिपेतेणेयो सरो ह० त० ॥ १५ भागो यलो कृत्तिमावमिच्छ' ह० त० ॥ १६ द्वादसेते ह० त० विना ॥
 १७ पक्खरत्त' ह० त० शि० ॥ १८ चरो ह० त० ॥ १९ अंधे तथा ह० त० ॥ २० प्रात्तमिआश्रय' ह० त० ॥

सत्ये सत्योपजीवीसु परकमकधासु य । तौओ गुत्तो य सेणो य रक्खितो य परिकमा ॥ ७६ ॥
 संरोषेसु य सव्वेसु तथा वाहुपरिग्गहे । पैरिक्खेवेसु सव्वेसु संवाचे वंधणेसु य ॥ ७७ ॥
 वल्लवत्ता तथा गुत्तो पालि पालोयणी तथा । पालितो रक्खितो चेव विन्नेया गुत्त-रक्खिते ॥ ७८ ॥
 णंदी णंदो बलो मित्तो णंदणो णंदको सिरि । सामेसु मुदिते चेव महव्वमहक्कारणि ॥ ७९ ॥
 हत्थयो भासणे चेव सव्वदाणपरिग्गहे । दत्तो दिण्णो य विण्णेया पासंडेसु य सव्वसो ॥ ८० ॥
 उत्तमे सक्कतो चेव वंदिए पृतिए तथा । वेवो भूति जसो घोसो भाणू णेया महासिरि ॥ ८१ ॥
 र्महितो यावि विण्णेयो सिरिसुहविभूसणे । द्दे धातुगते यावि गिरि णेयो धरोऽचलो ॥ ८२ ॥
 पाद-जंघागते णिच्चं पाटुकोपाहणे तथा । पेस्सोवकरणे यावि दासं वूया परिकमे ॥ ८३ ॥
 आहारे वोदके या[वि] देव भूति बलो यसो । भाणू वद्धी य सम्मं च सप्रपीतपरिकमा ॥ ८४ ॥
 हितये च मित्तवग्गे य गोत्तणामे य सव्वसो । सेसं जोगेसु सव्वेसु मित्तं वूया परिकमं ॥ ८५ ॥
 णंदी णंदो य दिण्णो य णंदणो णंदको तथा । णपुंसकेसु णंदिकरं णिक्खिते सण्णिकुट्टिते ॥ ८६ ॥
 णीहारेसु य सव्वेसु वाहारेसु चलेसु य । णिज्जीवेसु य सव्वेसु णामं णिज्जीवमादिसे ॥ ८७ ॥
 आहारेसु य सव्वेसु द्दहेसऽब्भंतरेसु य । गोगरूवेसु सव्वेसु गोगणामं पवेदये ॥ ८८ ॥
 णीहारेसु य सव्वेसु बच्चेसु य चलेसु य । आभिप्पायिकणामेसु आभिप्पायिकमादिसे ॥ ८९ ॥
 अभिहारेसु सव्वेसु द्दहेसऽब्भंतरेसु य । समणामेसु सव्वेसु णामं वूया समक्खरं ॥ ९० ॥
 समणामेसु सव्वेसु जमलाभरणेसु य । द्वंद्वे दव्वोपकरणे य समं जोगं पवेदये ॥ ९१ ॥
 एकेकेसु य गत्तेसु एक्काभरणकेवले । वंजणेसु य सव्वेसु वंजणंतं पवेदये ॥ ९२ ॥
 णीहारा-ऽऽहार-मीसेसु वच्च-ऽब्भंतरमिस्सिते । उम्मत्तेसु य सव्वेसु उम्मत्तं तत्थ णिदिसे ॥ ९३ ॥
 आहारेसु य सव्वेसु द्दहेसऽब्भंतरेसु य । पुण्णामेसु य सव्वेसु पुण्णामं तत्थ णिदिसे ॥ ९४ ॥
 णीहार-मिस्सेसु तथा वच्चसेऽब्भंतरेसु य । णपुंसकेसु सव्वेसु णामं वूया णपुंसकं ॥ ९५ ॥
 एकेकेसु य सव्वेसु एकोपकरणेसु य । एकभस्से य सव्वम्मि एकभस्सं पवेदये ॥ ९६ ॥
 समाणेसु य सव्वेसु जमलाभरणे तथा । तथा विवयणे यावि विभस्समभिणिदिसे ॥ ९७ ॥
 उक्खारप्पभितीण्णेसु बहूपकरणेसु य । बह्भस्सेसु सव्वेसु बहुमस्सं पवेदये ॥ ९८ ॥
 पच्छिमेसु य गत्तेसु सह-रूवे य पच्छिमे । अतीतवयणे यावि अतीतवयणं भवे ॥ ९९ ॥
 वाम-दक्खिणगत्तेसु सदे रूवे तथेव य । संपतेसु य सव्वेसु वत्तमाणं पवेदये ॥ १०० ॥
 पुरत्थिमेसु गत्तेसु सदे रूवे पुरत्थिमे । अणागते य वयणे वक्कं वूया अणागतं ॥ १०१ ॥
 उवहुत्तेसु गत्तेसु सदे रूवे उवहुत्ते । सोयसग्गे य सव्वम्मि सोवसगं पवेदये ॥ १०२ ॥
 णिम्मज्जिते णिद्धिहिते छिण्णे भिण्णे णिक्कजिते । णिपातेसु य सव्वेसु णिपातमभिणिदिसे ॥ १०३ ॥
 व्दामासेसु सव्वेसु थावरेसु य सव्वसो । इत्थं संब्वनामगए चेव वूया नामगयं विसुं ॥ १०४ ॥
 णिमज्जिया पमज्जिया य संधिमट्ठिमिज्जिए । आखाए वा वि सव्वत्त आखातमभिणिदिसे ॥ १०५ ॥
 उद्धमारेणु सव्वेसु सज्जभंगेसु सव्वसो । उद्धभूए य वयणे सव्वमेवाभिगिदिसे ॥ १०६ ॥
 अहोभागेषु गत्तेसु कुदिएसु य सव्वसो । विवरीते य वयणे वितथं तत्थ णिदिसे ॥ १०७ ॥

१ सत्यो सत्यो' हं. त० ॥ २ तत्तो गत्तो हं. त० विना ॥ ३ परिक्खेचेसु हं. ४ पचल्यत्ता हं. त० ॥ ५ सुच' हं. त० ॥ ६ महिणया वि वण्णेया सिरिसुहविभूसणा । द्दे धातुमए यावि गिरि णेयो धरोऽचलो हं. त० ॥ ७ नंदिणो नंदिको हं. त० ॥ ८ णीहारीसु हं. त० विना ॥ ९ अपक्ख' हं. त० इत्थं विद्वान्तर्गतः श्लेषद्वन्द्वः हं. त० एव धर्तते ॥

उद्वापर-विमोसेसु कुडिला-ऽकुडिलेसु य । भूता-ऽभूते य वयणे यूया सव्याणितं गिरं ॥ १०८ ॥

गन्तानं छिद्देसेहि दंब्यणामंतरेसु य । अयत्तेसु य सदेसु असव्यणतमादिसे ॥ १०९ ॥

उद्धंभागेसु रत्तेसु चंदणकरत्तसंगहे । अंतरिकखे य सव्यत्त अंतरिकखं पवेदये ॥ ११० ॥

धापुण्येसु गत्तेसु जलेयेसु य सट्टसो । सव्यमत्थगते यावि वारिजं तत्थ णिहिसे ॥ १११ ॥

दद्धामासेसु सव्वेसु धावरेसु य णिघसो । सव्वचातुप्पदे यावि पत्थिवं णाममादिसे ॥ ११२ ॥

पळामासेसु सव्वेसु लालायं णिगामेसु य । सज्जीवेसु य सव्वेसु पाणजं णाममादिसे ॥ ११३ ॥

संगहे एव.सण्णा । तत्थ एव.स्सरणामवेज्जाणि-श्रीः श्रिया स्त्रीः स्त्रियाः वागिति वाचा गौरिति णाया रमिति आकासं, जाणि वऽण्णाणि एवंविधाणि णामवेज्जाणि तदेककररं णाम । तत्थ प्लवा चउव्विधा-द्वैकररा व्यक्तरा चतुरश्ररा पंचकररा । तत्र द्वकररा प्लवा द्विविधा-सव्वगुरु चैव पटमकररलपयो चैव पच्छिमकररलपयो चैव ।

10 तत्थ द्वकररलपयो > प्लवा णकरत्तेसु तं जधा-अहा पूसो हृत्यो चित्ता सांती जेद्धा मूळो मघा इति, तत्थ णकरत्ते देवतेसु चंदो र्हो सपो अज्जो तट्ठो वायू मित्ता इंदो तोयं विस्से ऋजा बंभा विण्ह पुम्मा इति णकरत्तदेवतेसु, कण्हो रामो संधो पज्जुणो भाणु इति वसारणिस्सितेसु, लक्ष्मी भूती वेदी नदी इति षीणामवेज्जेसु । तत्थ परिक्खेसु प्रात-दत्त-द्वेष-मित्त-मुत्त-पाल-पालित-सम्म-सेण-दास-राव-पोस-भाग-गृद्धिमात्रा चेति परिक्खेस्सिति, अनेन परिक्खेण संवत्थाणुगंतव्यं भरतीति । तत्थ पटमकररलपयो

11 पच्छिमकररलपयो सव्वगुरवो चेति । तत्थ पच्छिमकररलपयो व्यक्षरलपयो णकरत्तेसु-अभिजि सरणो भरणी अदिती सविता णिरिती वरुण इति, णकरत्तदेवतेसु सहितमहितरतिका चेति परिक्खेसु इत्येतेन प्लवेनानुगन्तव्यं भवति । तत्थ मद्धकररलपयो प्लवा-कत्तिका रोहिणी भासिका मूसिका वाणिजो माघा मधुरा प्रातिका चेति णकरत्तेसु, वे फग्गुणीयो रेवती अरमयाविति णम्यत्तेसु, अज्जमा अश्विनाविति णकरत्तदेवतेसु इति अनेन प्लवेनानुगन्तव्यं भवति । तत्थ पटमकररलपयो प्लवा-विसाहा आसाहा दुवे पणिट्ठा इति णकरत्तेसु, ईदगिरिती णकरत्तदेवतेस्सिति अनेन प्लवेनानुग-

22 न्नव्यं भवति । तत्थ चैतुक्करप्लवा सव्वगुरवो वृतीयलपयो प्रथमलपयो प्रथमद्वितीयलपयो । तत्थ सव्वगुरवो तं जधा-पोदप्रातो पुम्प्रातो फग्गुप्रातो इत्यप्रातो अरसप्रातो इति देवते, अपच्छिमगुरवो-ऋषसिल श्रवणिल वृथिमिल इति । अमप्लव मसिप्रात पिवृप्रात भयप्रात वसुप्रात अजुप्रात यमप्रात इति प्रथमलपुति । शिवदत्त पिवृदत्त भयदत्त वसुदत्त अजुदत्त यमदत्त इति विपच्छिमे गुरणि पुण्वरसु णकरत्तेसु । प्रनापति श्रुहस्पति शैवक्रतुरिति देवतेसु इति, अनेन प्लवेनानुगन्तव्यं भवति । ११ संपानेन संपानं प्रमाणेन प्रमाणं परिक्खेण परिक्खं प्लवेन प्लवं

23 सव्यचाणुगंतव्यं भवति ।

इति अक्करणाममिदं सव्यं णामरिणिच्छयं । सभस्सं जनयं लक्ष्मी यमो य "विट्ठोविद्धारिति ॥ ११४ ॥

॥ इति राउ भो ! महापुरिमदिण्णाय अंगविज्ञाय णामग्गायो छव्वीसतिमो सम्मत्तो ॥ २६ ॥ छ ॥

१ दग्ग्याणामं १०. १० ॥ २ दशरा व्यक्षरा चतुरश्र पंचश्ररा । तत्र द्वशरा १०. १० ॥ ३ > एवविधानार्णवः
४ १०. १०. १० ॥ ४ "सु धात" १०. १० ॥ ५ सव्यगुरोऽणु" गन् ॥ ६ "कररलपयो चेति १०. १० ॥ ७ चउ-
पकर" १०. १० ॥ ८ अणुपिपगुरवो १०. १० ॥ ९ क्वचित्तिष्ठ पुरितिल क्षय" १०. १० ॥ १० अजप्रात १०. १० ॥
११ अजदत्त १०. १० ॥ १२ वृत्तपु" १०. १०. १० ॥ १३ संपानेन संपानं प्रमाणेन १०. १० ॥ १४ विष्णुवो १०. १०. १० ॥
१५ वामागता" १०. १० ॥

[सत्तावीसहस्रो ठाणज्झायो]

॥ १ ॥ णमो महापुरिसवद्धमाणस । अथापुञ्चं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविजाय ठाणं णामज्झायं, तं खलु भो ! तमणुवक्खस्तामो । तं जथा—तत्थ उद्धंभागेसु सिरोमुहामासे संव्यउद्धंभागे पडिरूवे चैव रायाणं वा रायकम्मिकं वा अमच्चं वा अमच्चकम्मिकं वा वूया । अक्खीसु णायकं वूया । कण्णेषु आसणत्थं वूया । दंतैसु भांडा-
गारिकं वूया । णासायं अच्चागारिकं वूया । जिच्चमायं आहारपडिरूवगते य महाणसिकं वूया । धणेषु ग्याधियक्खं वूया । पुणरवि य णासायं आहारेसु य मज्जघरियं वूया । णिद्धेसु पाणियघरियं वूया णावाधियक्खं वा वूया । अग्गे-
येसु सुवण्णाधियक्खं वूया । सव्वचतुप्पयपडिरूवगते य हत्थियअधिगतं वा वूया अस्सअधिगतं वा योग्गायरियं वा गोवं-
थक्खं वा वूया । संबुत्तेसु पडिहारं वूया । धीणामेसु अच्चागारिणं गणिकखं वा वूया । पुण्णामेसु वल्लगणकं द्वा
णायकं वा वूया । णणुंसकेसु वरिसधरं वूया । ददेसु वत्थुपरिसदं वा आरामपालं वा पच्चंतपालं वा वूया । चलेसु दूतं
वा संधिपालं वा वूया । अच्चिंतरेसु अच्चागारिकं वूया सीसारक्खं वा वूया । वाहिरच्चंतरेसु पतिआरक्खं वूया । 10
आहारेसु सुंसकालियं वूया । णीहारेसु < दिनायेरेसु > रज्जकं वा पैधवावतं वा वूया । उवगहणेसु आटविकं वूया ।
परिमंहेसु णगराधियक्खं वूया । मतेसु सुसाणवावतं वा सूणावावतं वा वूया । संरोधवंधणेषु चारकपालं वूया ।
पुण्णेषु महाणसिकं वा फलाधियक्खं वा वूया । मुदितेसु पुप्फाधियक्खं वूया । जण्णेषु पुरोहितं वूया ।
तिक्खेसु आयुधाकारिकं वूया । पुप्पसु सेणापतिं वूया । अणूसु कोट्टाकारिकं वूया ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय० ठाणज्झायो नाम सत्तावीसतिमो सम्मत्तो ॥ २७ ॥ छ ॥ 15

[अट्टावीसहस्रो कम्मजोगिअज्झाओ]

अथापुञ्चं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविजाय कम्मजोगीणामज्झायो । तं जथा—तत्थ अत्थि कम्मं
< १ ॥ अत्थि कम्मं > ति पुब्बमाधारयित्थं भवति । तत्थ अच्चंतंरामासे दढामासे णिद्धामासे अत्थि कम्मं ति वूया । तत्थ
वज्झामासे चलामासे लुक्खामासे तुच्छामासे णत्थि कम्मं ति वूया । तत्थ कम्मं पंचविधं पुब्बमाधारयित्थं भवति ।
तं जथा—रायपोरिसं ववहारे कसिगोरक्खं कारुककम्मं भंतिकम्मं पंचमं भवति । तत्थ उत्तमेसु इत्सरितेसु य रायपोरिसं 20
वूया । गहणोपगहणेसु सव्वगो-यलिवद्गते य कसिगोरक्खं वूया । तत्थ महापरिग्गहेसु सव्वदार्णपतिग्गहेसु य वाणियक्कम्मं
वूया । तत्थ चलामासेसु सव्वकारुक्कोपकरणपरिग्गहेसु य कारुककम्मं वूया । तत्थ सव्ववज्झेसु सव्वअंतेसु य सव्ववेदि-
ककम्मकरणयोगे य भंतिकम्मकारकं वूया । तत्थ रायपोरित्से पुब्बमाधारित्से उत्तमेसु य रायाणं वा रायमच्चं वा वूया । सव्व-
राजोपकरणे चैव तत्थ उपोत्तमेसु अमच्चं वा अस्सवारिकं वूया । वाहारेसु सव्वचतुप्पदगते य आसवारियं वूया । अक्खीसु
णायकं वूया । अच्चंतरेसु अच्चंतंरावचरं वूया । धीणामेसु अच्चाकारियं वूया । १ संबुत्तेसु भांडागारियं वूया । सीसकोपकरणे 25
सीसारक्खं वूया । चलेसु आहारीणहारेसु य पडिहारकं वूया । उदरे कुविरम्मि मुहे गीवायं सव्वआहारगते य सूतं
वा महाणसिकं वा वूया । आपुण्णेषु सव्वपाणगते य मज्जघरियं वूया पाणीयघरितं वा वूया । सव्वचतुक्केसु चतुरस्सेसु
हत्थाधियक्खं वा महामत्तं वा हत्थिमेटं वा अस्साधियक्खं वा अस्सारायं वा अस्सवंधकं वा छागलिकं वा गोपालं वा

१ हत्थिहान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ २ संजुत्तेसु हं० त० ॥ ३ सुक्कआलिया हं० त० ॥ ४ < १ > एतत्ति-
हान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ५ पचचारियं वा हं० त० ॥ ६ < १ > एतत्तिहान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ७ माहा-
रयियव्वं हं० त० ॥ माधारेतव्वं सि० ॥ ८ माहारयियव्वं हं० त० ॥ ९ भवति कारुककम्मं पंचमं सत्र० ॥
१० परिग्गं हं० त० ॥ ११ भवतिकम्मं हं० त० विना ॥ १२ संजुत्तसु हं० त० ॥

- महिषीपालं वा उट्टपालं वा ब्यूया, मगळुद्धगं वा ओरन्ध्रिकं वा अहिनियं वा ब्यूया । तत्र रायपोरिसगताणि अस्ताति-
यन्तो वा ४ हत्याधिक्यतो वा ५ हत्यारोहो वा हत्यिमहामत्तो वा गोसंखी वा गजाधिपति ति वा । तत्र मुक्केसु
सव्यहिरण्यकारेसु चैव भांडागारिकं वा कोसरकरं वा ब्यूया । महापरिमहेसु सव्याधिकृतं ब्यूया । अंगुलीसु सव्यलि-
पिगते चैव लेखकं ब्यूया । जिन्माय हितये सव्यबुद्धिरमणेसु य गणकं ब्यूया । सव्यसत्यगते सव्यदेवगते य पुरोहितं
५ ब्यूया । जिद्धेसु चक्रसु य संवच्छरं ब्यूया । अंतिअसिणिगमेसु दाराधिगतं वा दारपालं वा ब्यूया । पुण्णामेसु
यटगणकं ब्यूया ६ सण्णपातिं वा ब्यूया । धीणामेसु अच्मागारिकं वा गणिक्कायंसकं वा ब्यूया । णुसुक्केसु धरिसपरं
ब्यूया । ददेसु यत्यसु यत्याधिगतं ब्यूया णगरुत्तियं वा ब्यूया । चलेसुं दूतं वा जइणकं वा ब्यूया पेसणकारकं वा
पविहारकं वा ब्यूया । जिद्धेसु तरपअट्टं वा णैवाधिगतं वा तित्वपालं वा पाणियधरियं वा ण्हाणधरियं वा सुरापरितं वा
ब्यूया । छुक्केसु कट्ठाधिकृतं वा तणाधिगतं वा 'वीतपालं वा ब्यूया । अन्धितरेसु ओपेसेज्जिकं वा सीसारकलं वा ब्यूया ।
१० यादरेसु धापमाधिगतं ब्यूया । यादरिचमंतरेसु णगरकरं वा अच्मागारियं वा ब्यूया । कण्ठेसु असोक्कणिक्कापालं ब्यूया
वाग्गाधिगतं वा । सामेसु औभरणागतं ब्यूया । तत्र यवहारियं आपुणेयेसु उदकगोठ्ठिकं वा मच्छयंधं वा नौविकं वा
धाट्टविकं वा ब्यूया । त्वेसु सुण्णकारं अलित्तककारकं वा रत्तैरज्जकं वा देवहं उण्णजाणियं सुत्तवाणियं जतुकारं
चित्तारं चित्तोर्जी वेति । मुवेसु तट्टकारं सुद्धरजकं वा ब्यूया । रंडिते छिण्णे भिण्णे सुयण्णकारे लोहकारे सीतपेट्टके
जतुकारे कुंभकारे च विण्णेषा । ददेसु गणिकारं संलकारं च विन्नेयं । थूलेसु कंसकार-पट्टकार-डुस्सिर-रयक-कोसेज्ज-
१५ पाग-देयटसा(मा)ति विण्णेषा । थूलेसु ओरन्ध्रिक-महिषपातका विण्णेषा । दीहेसु उंसिणिक्कामत्तं छत्तकारक-वत्योवजीविक्का
विण्णेषा । इस्सेसु रसेसु कडवाणिय-मूलाणिय-धण्णवाणिया विण्णेषा । सव्यऔहागते ओदनिक-मंस-कम्मासवाणि-
य-तप्पण-खोग-गणिक्का-५५पूवि-न-रजकारका विण्णेषा । तत्र सव्यग्गाहेसु पण्णिक्क-फलवाणियक्का विण्णेषा । उय्यग्गाहेसु
सिगरेवाणिया विण्णेषा । सिरसि राया वा अमथो वा अस्सवारिको वा छत्तधारको वा छत्तकारको
वा सीमारक्को वा पसापको वा विण्णेषा । णिटाले हेरियसंसं वा अस्सलंसं यत्ति ब्यूया । अच्छीसु
२० धग्गिउपजीविं वा आदित्तिग्गिं वा ब्यूया । कण्ठेसु सुण्णकारो वा कुसीलको [या] रंगनचरो वा
विण्णेषा । णामायं गंधिको मालाकारो पुण्णिकारो वा, जिन्मायं सूतमागधं पुस्समागधं पुरोहितं धम्महं
महामंतं गणकं गंधिकगोयकं ह्यकारं धेहुरमयं वा, गीवायं गणिकारं सुयण्णकारं कोट्टकं यट्टिकं वा ब्यूया । याहूसु धैत्य-
पाट्टकं धत्तुयापतिकं मंकिं भेड्यापत्तं तित्थयापत्तं आरामवापत्तं वा ब्यूया । तत्र उरे अधिगतं वा रथकारं वा दारु-
आधिहारिया विण्णेषा । उदरे महागसिकं वा सूतं वा ओदनिकं वा ब्यूया । कडीयं सौमेलररं वा गणिकारंसं वा
२५ ब्यूया । उम्मु ह्यारोहं वा अस्मारोहं वा ब्यूया । जंधामुं दूतं पेरतं वा ब्यूया । सुल्लेसु धंयं वा धंपनागरियं वा
ब्यूया । पादेसु चोत्तोयदारा विण्णेषा । मज्जमूलजोणीगते मूलग्गाणक-मूलिक-मूलकम्मा विण्णेषा । तिर्वेसु सव्य-
सत्यक्का विण्णेषा । सापंनेसु हेरिण्णिक-मुपण्णिक्क-बंध-डुस्सिर-संजुकारका देवडा वेति विण्णेषा । यादरेसु कम्मा-
धपनेसु जिद्धेसु मज्जपत्तुय्यग्गाहेसु सव्यभूमीग्गे य गोययभतिहारवा य विन्नेया । चलेसु य टांसारसु य आविद्धेसु

१ 'मुद्धंगपाउरत्तिकं वा १० १० ॥ २ ५ ॥ ३ ५ ॥ ४ ५ ॥ ५ ५ ॥ ६ ५ ॥ ७ ५ ॥ ८ ५ ॥ ९ ५ ॥ १० ५ ॥ ११ ५ ॥ १२ ५ ॥ १३ ५ ॥ १४ ५ ॥ १५ ५ ॥ १६ ५ ॥ १७ ५ ॥ १८ ५ ॥ १९ ५ ॥ २० ५ ॥ २१ ५ ॥ २२ ५ ॥ २३ ५ ॥ २४ ५ ॥ २५ ५ ॥ २६ ५ ॥ २७ ५ ॥ २८ ५ ॥ २९ ५ ॥ ३० ५ ॥ ३१ ५ ॥ ३२ ५ ॥ ३३ ५ ॥ ३४ ५ ॥ ३५ ५ ॥ ३६ ५ ॥ ३७ ५ ॥ ३८ ५ ॥ ३९ ५ ॥ ४० ५ ॥ ४१ ५ ॥ ४२ ५ ॥ ४३ ५ ॥ ४४ ५ ॥ ४५ ५ ॥ ४६ ५ ॥ ४७ ५ ॥ ४८ ५ ॥ ४९ ५ ॥ ५० ५ ॥ ५१ ५ ॥ ५२ ५ ॥ ५३ ५ ॥ ५४ ५ ॥ ५५ ५ ॥ ५६ ५ ॥ ५७ ५ ॥ ५८ ५ ॥ ५९ ५ ॥ ६० ५ ॥ ६१ ५ ॥ ६२ ५ ॥ ६३ ५ ॥ ६४ ५ ॥ ६५ ५ ॥ ६६ ५ ॥ ६७ ५ ॥ ६८ ५ ॥ ६९ ५ ॥ ७० ५ ॥ ७१ ५ ॥ ७२ ५ ॥ ७३ ५ ॥ ७४ ५ ॥ ७५ ५ ॥ ७६ ५ ॥ ७७ ५ ॥ ७८ ५ ॥ ७९ ५ ॥ ८० ५ ॥ ८१ ५ ॥ ८२ ५ ॥ ८३ ५ ॥ ८४ ५ ॥ ८५ ५ ॥ ८६ ५ ॥ ८७ ५ ॥ ८८ ५ ॥ ८९ ५ ॥ ९० ५ ॥ ९१ ५ ॥ ९२ ५ ॥ ९३ ५ ॥ ९४ ५ ॥ ९५ ५ ॥ ९६ ५ ॥ ९७ ५ ॥ ९८ ५ ॥ ९९ ५ ॥ १०० ५ ॥

१ 'मुद्धंगपाउरत्तिकं वा १० १० ॥ २ ५ ॥ ३ ५ ॥ ४ ५ ॥ ५ ५ ॥ ६ ५ ॥ ७ ५ ॥ ८ ५ ॥ ९ ५ ॥ १० ५ ॥ ११ ५ ॥ १२ ५ ॥ १३ ५ ॥ १४ ५ ॥ १५ ५ ॥ १६ ५ ॥ १७ ५ ॥ १८ ५ ॥ १९ ५ ॥ २० ५ ॥ २१ ५ ॥ २२ ५ ॥ २३ ५ ॥ २४ ५ ॥ २५ ५ ॥ २६ ५ ॥ २७ ५ ॥ २८ ५ ॥ २९ ५ ॥ ३० ५ ॥ ३१ ५ ॥ ३२ ५ ॥ ३३ ५ ॥ ३४ ५ ॥ ३५ ५ ॥ ३६ ५ ॥ ३७ ५ ॥ ३८ ५ ॥ ३९ ५ ॥ ४० ५ ॥ ४१ ५ ॥ ४२ ५ ॥ ४३ ५ ॥ ४४ ५ ॥ ४५ ५ ॥ ४६ ५ ॥ ४७ ५ ॥ ४८ ५ ॥ ४९ ५ ॥ ५० ५ ॥ ५१ ५ ॥ ५२ ५ ॥ ५३ ५ ॥ ५४ ५ ॥ ५५ ५ ॥ ५६ ५ ॥ ५७ ५ ॥ ५८ ५ ॥ ५९ ५ ॥ ६० ५ ॥ ६१ ५ ॥ ६२ ५ ॥ ६३ ५ ॥ ६४ ५ ॥ ६५ ५ ॥ ६६ ५ ॥ ६७ ५ ॥ ६८ ५ ॥ ६९ ५ ॥ ७० ५ ॥ ७१ ५ ॥ ७२ ५ ॥ ७३ ५ ॥ ७४ ५ ॥ ७५ ५ ॥ ७६ ५ ॥ ७७ ५ ॥ ७८ ५ ॥ ७९ ५ ॥ ८० ५ ॥ ८१ ५ ॥ ८२ ५ ॥ ८३ ५ ॥ ८४ ५ ॥ ८५ ५ ॥ ८६ ५ ॥ ८७ ५ ॥ ८८ ५ ॥ ८९ ५ ॥ ९० ५ ॥ ९१ ५ ॥ ९२ ५ ॥ ९३ ५ ॥ ९४ ५ ॥ ९५ ५ ॥ ९६ ५ ॥ ९७ ५ ॥ ९८ ५ ॥ ९९ ५ ॥ १०० ५ ॥

य ओयकार-ओङ्गा य विण्णेया । णिण्णेषु मूलखाणक-कुंभकारिक-इड्डुकार-बालेपतुंद-सुत्तवत्त-कंसकारक-चित्तकारका विण्णेया । ओफिन्नेसु रूषपक्खर-फलकारका विन्नेया । सव्ववद्धमाणेषु सीकाहारकैमड्डहारका विण्णेया । तत्थ अप्पणा पहेत्तेसु कोसज्जावयाका दिअंडकंबलवयाका कोलिका चैव विण्णेया । उँपहुत्तेसु सव्वओसघगते य वेज्जा विण्णेया । कायस्स परिमासे काँयतेगिच्छका विण्णेया । थणेषु य सव्वसत्थगते सल्लकत्ता विण्णेया । अचिच्छगते सौलाकी, सव्व-देवगते भूतविज्जिका, बालेज्जेसु कोमारभिच्चा विण्णेया । सव्वपरिसप्पगते विर्सतिथिका विण्णेया । अब्भंतरेसु सिर्प-^५ पारगतं बूया । बाहिरब्भंतरेसु मज्झिमं बूया । सव्वपाणजोगिगते वैज्ज-चम्मकार-ण्हाविय-ओरब्भिक-नोहातक-चोरघाता विण्णेया । बाहिरेसु वि द्दं बूया । सिवेसु मायाकारकं वा गोरीपाढकं वा लंखक-मुट्टिक-लासक-वेलंबक-गंडक-घोसकं बूया । सव्वछिदेसु सव्वउपहुत्तेसु मोघं सिपपं बूया । अवत्थितेसु उड्डुमाणेषु सफलं सिपपं बूया । अधोमाणेषु निष्फलं सिपपं बूया ॥

॥ इति भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय कम्मजोणी णाम अट्टावीसतिभो अज्झाओ सम्मत्तो ॥ २८ ॥ छ ॥¹⁰

[एगूणतीसइमो णगरविजयज्झाओ]

अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय णगरविज्यो णामाज्झायो । तं खलु भो ! तमणुव-क्खस्सामो । तं जथा-तत्थ अत्थि णगरं णत्थि णगरं ति पुव्वमांधारयितव्वं भवति । तत्थ अब्भंतरामासे व्ढामासे णिद्धामासे सुद्धामासे पुण्णामासे मुदितामासे पुण्णामधेज्जे सव्वआहारगते य अत्थि णगरं ति बूया । तत्थ वज्झामासे सव्वणीहारगते यं णत्थि णगरं ति बूया । तत्थ णगरे पुव्वमाधारिते समिद्धं न समिद्धं ति आंधारयितव्वं भवति । तत्थ¹⁵ अब्भंतरामासादीसु समिद्धं णगरमिति बूया । तत्थ वज्झामासादिसु ण समिद्धं णगरं ति बूया । तत्थ णगरे पुव्वमाधारिते बंधेयेसु सव्वबंधणपट्टिरूवगते य बंधणज्जोसियं बूया, बंधणोसण्णं वा णगरं ति बूया । तत्थ खत्तेयेसु सव्वखत्तगते य सव्वखत्तपट्टिरूवगते खत्तियज्जोसियं वा खत्तिकोसण्णं वा णगरं ति बूया । वेस्सेज्जसु सव्ववेस्सपट्टिरूवगते य वैस्सेसज्जोसितं वा वेस्सेसोसण्णं वा णगरं ति बूया । सुद्धेसु सव्वसुद्धपट्टिरूवगते य सुद्धज्जोसियं वा सुद्धोसण्णं वा णगरं ति बूया । तत्थ णगरे पुव्वमाधारिते थीणामं पुण्णामं ति पुव्वमांधारयितव्वं भवति । तत्थ पुण्णामेषु²⁰ सव्वपुरिसपट्टिरूवगते य पुण्णामधेज्जे रायहारिणं बूया । थीणामेषु सव्वइत्थिपट्टिरूवगते य थीणामधेज्जे साखानगरं वा बूया । दहेसु चिरनिविट्ठं नगरं ति बूया । चलेसु अचिरनिविट्ठं णगरं ति बूया । णिद्धेसु बहुउदगं वा बहुवुट्ठीकं वा णगरं ति बूया । लुक्खेसु अप्पोदगं वा अप्पवुट्ठीगं वा णगरं ति बूया । बज्जेसु सव्वचोरपट्टिरूवगते य चोरवासो णगरं ति बूया । अब्भंतरेसु सव्वअज्जपट्टिरूवगते य अज्जो वासो णगरे त्ति बूया । आहारेषु अप्पणो णगरं ति बूया । णीहारेसु परणगरं ति बूया । दीहेसु दीहं णगरं ति बूया । परिमंडलेसु परिमंडलं ति बूया । चतुरस्सेसु चतुरस्सं ति बूया । कैसेसु सव्वमूलजोणीगते²⁵ य कट्टपागारपरिगतं णगरं ति बूया । ड्ढेसु इट्टपागारं ति बूया । दक्खिणेषु दक्खिणोद्दगं णगरं ति बूया । यामेषु जामोद्दगं णगरं ति बूया । मज्झिमेसु पविट्ठं णगरं ति बूया । पुधूसु वित्थिण्णं णगरं ति बूया । गद्धेषु गद्धणिविट्ठं णगरं ति बूया । उपगद्धेषु आरामबहुलं णगरं ति बूया । उड्डुमाणेषु उड्डुनिविट्ठं पव्वते वं त्ति बूया । णिण्णेषु णिण्णे वा निव्विगंदि पाणुप्पविट्ठं वा णगरं ति बूया । वैट्ठेसु चट्टुवाधीतं वा णगरं ति बूया । मोक्खेषु अच्चायितं वा

१ °कारछावेपवुंद° हं० त० ॥ २ °कलट्टहा° हं० त० ॥ ३ उपह्वयेसु हं० त० ॥ ४ कायपगिच्छका हं० त० ॥ ५ सालकी, सत्तदेवगते भूयवेधिका, बालेयेसु हं० त० ॥ ६ °समत्थिका हं० त० ॥ ७ °प्पकार° हं० त० ॥ ८ °यक्कणुतकघोसकं हं० त० ॥ ९ °माहारियव्वं हं० त० ॥ १० णत्थि घरं ति सत्र० ॥ ११ आहारियव्वं हं० त० ॥ १२ °गते पुण्णामधेज्जे तं वा खत्तिकोसण्णं हं० त० विना ॥ १३ यहस्सिज्जो° तत्र० ॥ १४ °माहारियव्वं हं० त० ॥ १५ कैसेसु हं० त० ॥ १६ मूलेसु हं० त० ॥ १७ उच्चनिवि° हं० त० विना ॥ १८ घट्टेसु घं ३ पु० वि० ॥ घट्टेसु हं० त० ॥ अग० २१

अप्पुजोगं च चि वूया । पसन्नेसु अतिक्रदंढं अप्परिकखेसं वा णगरं ति वूया । अप्पसन्नेसु बहुविगाहं बहुपरिकेखेसकारा-
मणं ति व वूया । पुरस्थिमेसु गत्तेसु पुरस्थिमेसु य सह-रूवेसु पुरस्थिमायं दिसायं णगरं ति वूया । पच्छिमेसु य गत्तेसु
५ पच्छिमेसु ५ य सह-रूवेसु पच्छिमायं दिसायं ति वूया । दक्खिणेसु सह-रूवेसु दक्खिणेसु य गत्तेसु दक्खिणायं दिसायं ति
वूया । वामेसु गत्तेसु वामेसु य सह-रूवेसु उत्तरायं दिसायं ति वूया । पुण्णेसु बहु अण्णपाणं [णगरं] ति वूया ।
६ तुच्छेसु अप्पअण्णपाणं णगरं ति वूया । वायव्वेसु बहुव्रातकं बहुवातोवदयं च णगरं ति वूया । अग्गेयेसु वहुवण्णं
आलीपणावहुलं व चि वूया । आपुजोणीयेसु बहुदकं बहुवुट्टिकं बहुदकपाहनं वा णगरं ति वूया । तण्हेसु वहुमकसकं
वा सत्थपपातवहुलं व चि वूया । आदिमूलिकेसु आसण्णे णगरं ति वूया । मञ्जविगादेसु जुत्तोपकट्टणगरं ति वूया ।
अंतेसु दूरे पंचंतिमणगरं ति वूया । अयोगेखेमपट्टिरूवगते सुभिव्खसयोगक्खेमगतं अण्णभिवुचं वा णगरं ति वूया ।
सद्देसेसु विस्सुयकित्तिं ति वूया । दंसणीयेसु विट्ठपुजं वा रमणीयं वा णगरं ति वूया ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्ञाय णगरविजयो णामाज्झायो
एगूणतीसतिमो सम्मत्तो ॥ २९ ॥ छ ॥

[तीसहमो आभरणजोणीअज्जाओ]

अधापुजं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्ञाय आभरणजोणी णामाज्झायो । तं खलु भो ! [त]मणु-
वक्खस्सामो । तं जधा-तत्थ अत्थि आमरणं त्थि आमरणं ति पुव्वर्माधारयित्ठवं भवति । तत्थ अन्नंतरामासे
१५ द्दामासे णिद्धामासे सुद्धामासे आधे महे वा भूस्सणे वा हसिते वा गीते वादितगतते सन्वामरणगते आधे आभरणं
वूया । तत्थ वज्जामासे चलामासे लुंखामासे तुच्छामासे कासिते सुहिते णिम्मज्जिते णिद्धिखिते णिम्मग्गे णिद्धुते ओट्टुके
महे वा भूस्सणे वा अच्छादणे वा रुण्णे वा कंदिते वा कुंजिते वा सन्ववपहुत्तेसु य अणावद्धं आभरणं वूया । तत्थ
आभरणं ति विघमाधारयित्ठवं भवति-पाणजोणीगतं धातुजोणीगतं मूलजोणीगतं । तत्थ पाणजोणीयं चलेसु य पाण-
जोणीयं विण्णेयं । सव्वमूलगते मूलजोणीगतं विण्णेयं । धातुजोणीगए धातुजोणीगतं विण्णेयं । तत्थ
२० पाणजोणीमयं संरमयं मुत्तामयं दंतमयं गवलमयं घालमयं अट्टमयं चेति । तत्थ मूलजोणीमयं कट्टमयं पुक्कमयं फलमयं
पत्तमयं चेति । तत्थ धातुमयं सोवण्णमयं रूपमयं तंभवमं सीसमयं लोहमयं तपुमयं काललोहमयं आरकूडमयं सव्व-
मणिमयं गोमेयकं लोहितक्खो पयालकं रत्तक्खारमणिं लोहितकं चेति । तत्थ सेतेसु रूपमयं संखमयं मुत्तामयं सुक्क
फलिकविमलरुसेत्तक्खारमणी विण्णेया । तत्थ कालेसु सीसक-काललोह-अंजणमूलक-कालक्खारमणी वेति । णीलेसु
सरसक णीलक्खारमणी चेति । अग्गेयेसु सुवण्ण-रूप-सव्वलोहमयं लोहितक्ख-भसारकक्खारमणी चेति । अण्णग्गेयेसु
२५ अवसेसाणि वूया । कोट्टिते सव्वलोहमयं विण्णेयं । णिरिस्सिते सव्वक्खारमयं विण्णेयं । घट्टेसु सव्वमणिमयं विण्णेयं
संखगतं पयालगतं वा वूया । विस्सुट्टेसु ओमधिप परिमहिते मुत्ता विण्णेया । तत्थ सिरसि ओचूलका-गंधिविण्णद्धक-अपलो-
कणिजा-सीतोपकाणि य आभरणानि वूया । कण्णेसु वलपत्तका-SSवद्धक-पलिकामदुधनक-कुंडल-जणक-ओकासक-क-
ण्णेपूरक-कण्णुणील-साणि य वूया । अक्खीसु अंजणं, भयुहासु मसी, गंडेसु हरिताल-दिग्गलय-मणरिसला विण्णेया ।
ओट्टेसु अलत्तको विण्णेयो । कण्णेसु धण्णसुत्तकं तिपिसाचकं विज्ञाधारकं असीमालिका-हार-उद्धार-मुच्छलक-आवलि-

१ अप्पजोगं हं त० ॥ २ रिकेसं हं त० विना ॥ ३ ५ पत्थिहान्तगतं पाठः हं त० नास्ति ॥ ४ वहुअण्णं उण्हं
हं त० ॥ ५ सत्थुप्पां हं त० ॥ ६ माहारपियव्वं हं त० ॥ ७ सुक्खां हं त० विना ॥ ८ वा कंजिए वा हं
त० ॥ ९ इत्थिहान्तगतं पाठः हं त० एव वर्तते ॥ १० णीगयं सं हं त० ॥ ११ आकुरहं हं त० ॥ १२ चलेसु
हं त० विना ॥

का-मणिमोमाणक-अट्टमंगलक-पेचुका-वायुमुत्ता-वुप्पसुत्त-पडिसराखारमणी कट्टेवट्टका वेति आभरणजोणी वूया । बाहूसु अंगयाणि तुडियाणि सव्ववाहोवकाणि वूया । हत्येसु हत्यकडगाणि कडग-रूचक-सूचीका यानि वा तानि हत्योपकाणि वा वूया । हत्येसु अंगुलीसु य अंगुलेयकं मुदेयकं वेटकं जाणि य अन्नाणि अंगुलेयकाणि ताणि वूया । कडीयं कंचिक-लापकं मेखलिका कडिउपकाणि य वूया । जंघासु गंङ्गपयकं णीपुराणि परिहेरकाणि आभरणाणि य वूया । पादेसु खिखिणिक-खत्तियधम्मका पादमुदिका पादोपकाणि य आभरणाणि वूया ॥

॥ इति खलु भो महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय आभरणजोणी नोमज्झायो तीसत्तिमो सम्मचो ॥ ३० ॥ छ ॥

[एगतीसहमो वत्यजोणी अज्झाओ]

अघापुवं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय वत्यजोणी णामज्झाओ । तं खलु भो ! तमणुववरस्सामो । तं जघा-तत्य अत्थि वत्यं नत्थि वत्यं ति पुव्वमाधारयित्ठवं भवति । तत्य अचमंतरामासे दढामासे णिद्वामासे सुद्वामासे पुण्णामासे सुदितामासे पुण्णामधिजे सव्वआहारगते य सव्ववत्यपडिरूवगते य अत्थि वत्यं ति वूया । 10 तत्य धम्मासासे चलामासे तुच्छामासादिके हि णत्थि वत्यं ति वूया । तत्य वत्ये पुव्वमाधारिते वत्यं तिविध-माधारयित्ठवं भवति-धातुजोणिगतं मूलजोणिगतं पाणजोणिगतं चेति । तत्य चलामासे सव्वपाणजोणिगते य पाणजोणिगतं वूया । तत्य दढामासे सव्वधातुजोणीगते य धातुजोणीगतं वूया । तत्य सव्ववैस-मंसुगते सव्वमूलगते य मूलजोणि वूया । तत्य पाणजोणीगते वत्ये पुव्वमाधारिते पाणजोणिगतं वत्यं तिविधमाधारये-कोसेज्जं पेंतुज्जं आविकं चेति । तत्य सव्वचतुप्पदगते सव्वचतुप्पयपडिरूवगए य सव्वाविकं वूया । 15 तत्य सव्वकीडगते सव्वकीडपडिरूवगते य कोसेज्जं वा पेत्तुण्णं वा वूया । तत्य मूलजोणीगते पुव्वमाधारिते मूलजोणिगतं वत्यं चतुविधमाधारये-स्रोमं दुडुल्लं चीणपट्टं सव्वकप्पासिकं चेति । तत्य सव्वतयागते सव्ववक्कगते सव्वयरांघगते य स्रोमं वा दुडुल्लं वा चीणं वा पट्टं वा वूया । तत्य सव्वफलगते सव्वअग्गगते य सव्वपम्हगते य कप्पासिकं वूया । तत्य धातुगते वत्ये पुव्वमाधारिते धातुगतं वरयं तिविधमाधारये-लोहजालिका सुवण्णपट्टा सुवण्णरत्तसितं चेति । तत्य कण्डपडिरूवगते य सव्वकाललोहजालिकं वूया । तत्य सव्वपीतके सव्वपीतपडिरूवगते य सुवण्णपट्टं सुवण्णरत्तसितं 20 वूया । तत्य दढामासे अहतं वत्यं वूया । चलामासे परिजुण्णं वूया । अचमंतरेसु परगधं वूया । बाहिरेशु जुत्तगधं वूया । बाहिरेषाहिरेशु समगधं ति वूया । धूलेसु धूलं, अणुसु अणुकं, दीहेसु दीहं वूया, हंसेशु हसं वूया । अंगु-लीसु सकलेशसं वूया । णहेसु गहितं दसं वूया । चलेसु छिन्नदसं वूया । अंगुलीयंतरेसु विचारितं वूया । धणेसु ११सिवितं वूया । छिरेसु छिदं वूया । गण्णेसु पावारकं वा कोतयकं वा उण्णिकं वा अत्थरकं वूया । उपगहणेसु एयाणं चैय तणुलोमाणि हससलोमाणि वा वूया । सुदिपसु वघय वत्याणि वूया । दीणेसु मनेसु य मतकवत्याणि विटार्तां वा 25 वूया । अचमंतरेसु सकं वत्यं वूया । बाहिरचमंतरेसु आतवितकं वूया । बाहिरेशु परकं वूया । ददेसु निक्खित्तं वत्यं वूया । चलेसु अपहितं वूया । आहारेशु याचितकं वूया । णीदारेशु णट्टं वूया । अतिगनेसु छट्टं वूया । तत्य अचमंतरामासे सव्वसेतवण्णपडिरूवगते य सेयं वूया । कण्हेसु फालकं वूया । निम्मा-वाटु-ओट्ट-करतल-चरणतल-म-व्यरत्तपडिरूवगते य रत्तं वूया । ओमारिते पीतवण्णपडिरूवगते य पीयकं वूया । तत्य सव्वआहारगते सेयाल्लं वूया ।

१ पेत्तुवायायुमसासुप्पसुत्तं १० तं ॥ २ १२यमंठं १० तं निना ॥ ३ अंगुलीकं मुदीकं १० तं निना ॥ ४ वूया मय एय दपोवकालि वूया । कडीयं १० तं ॥ ५ णामाप्यायो १० तं निना ॥ ६ कोसेट्टं १० १० तं निना ॥ ७ पउपट्टं आधिकं १० तं ॥ ८ रूये य १० तं निना ॥ ९ पउपणं १० तं ॥ १० १२वचियं १० तं ॥ ११ रस्सेसु रस्सं १० तं ॥ १२ १२दकं १० तं ॥ १३ तिवियं १० तं ॥ १४ विटयो वा १० तं ॥ १५ १५ तु निमित्तं १० तं ॥

- ६३ कैस-मंसुंगते सौवालकं ब्रूया । सव्वसंधीसु अक्खेके उदरे तंव-सेतसाधारणे मयूरंगीवं ब्रूया । सेतकण्ह-साधारणेसु करेण्यकं ब्रूया । अक्खीसु वित्तं ब्रूया । सीतपीतसमासासे साधारणे कप्पासिकं पुष्पकं विण्णयं । सेतरत्त-साधारणे पयुमरत्तकं विण्णयं । रत्तपीतसाधारणे मणोसिलकं विण्णयं । तंवकण्हसाधारणेसु मेचकं विण्णयं । उत्तमेसु उत्तमरागं विण्णयं । मज्झिमेसु मज्झिमर्गं विण्णयं । मज्झिमाणंतरकायेसु ण जधामाणसिकं ब्रूया । पेश्चरकायेसु
- १० विरत्तं वा अद्धरत्तं वा ब्रूया । तत्थ अन्नंतरेसु जातीपट्टणुगतं ब्रूया । बाहिरन्नंतरेसु जातीपडिहंपकं ब्रूया । बाहिरेसु अपट्टणुगतं ब्रूया । उद्धंणीवासिरोमुहामासे मुहोपकरणे उद्धंभागेसु य जालकं वा < षट्ठिकं वा > षट्ठयं वा सीसे-करणं वा ब्रूया । उद्धं णामीय गत्तेसु उद्धं णामीय उपकरणेसु सव्वउत्तरिज्जगतेसु य उत्तरिज्जं ब्रूया । अधोद्वेहा णामीय गत्तेसु अधोगतोपकरणे अंतरिज्जं ब्रूया । पट्टीय पञ्चत्थरणं ब्रूया । उल्लोकिते उद्धंभागेसु य विताणकं ब्रूया । तिरियंभागेसु परिसरणकं ब्रूया ॥

- १० ॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिज्ञाय अंगविज्ञाय वत्थजोणी णामज्झाओ एगतीसतिमो सम्मत्तो ॥ ३१ ॥ छ ॥

[यत्तीसइमो घण्णजोणी अज्झाओ]

- अधापुब्बं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्ञाय घण्णजोणी णामाज्झायो । [तं खलु भो ! तं अणुव-क्खयिस्सामि ।] तं जघा-तत्थ अत्थि घण्णं णत्थि घण्णं ति पुब्बमाधारयित्ठं भवति । तत्थ अन्नंतरामासे
- १५ द्दामासे णिद्धामासे सुद्धामासे पुण्णामासे सुदित्तामासे पुण्णामघेज्जामासे आहारगते य अत्थि घण्णं ति ब्रूया । तत्थ सट्ठघण्णगते सव्वयवहारगते अत्थि घण्णं ति ब्रूया । तत्थ वज्झामासे चलामासे लुक्खामासे तुच्छामासे दीणामासे णपुंसकामासे सव्वणीहारगते य णत्थि घण्णं ति ब्रूया ।

- तत्थ घण्णाणि सालि वीहि कोइवा कंगू रालका तिला मासा मुग्गा चणका कलाया गिप्फाया कुलत्था यया गोधूमा कुसुंभा अतसीयो मसूरा रायसस्सव चि । तत्थेकण्णेषु पुब्बमाधारिते पुब्बण्णं अवरण्णं ति पुब्बमाधारयित्ठं
- २० भवति । तत्थ पुरिमेसु गत्तेसु पुरिमेसु य सद्-रूवेसु पुब्बण्णं ब्रूया । तत्थ पच्छिमेसु गत्तेसु पच्छिमेसु य सद्-रूवेसु अवरण्णं ब्रूया । तत्थ पुब्बण्णेषु पुब्बमाधारिते सालि वीहि कोइवा रालका कंगू वरका तिला वेति । तत्थ अवरण्णे पुब्बमाधारिते मासा मुग्गा निप्फावा चणवा कलाया कुलत्था यय-गोधूमा कुसुंभा अतसीयो मसूरा रायसस्सव चि ब्रूया ।

- तत्थ पुब्बण्णे पुब्बमाधारिते णिद्धेसु साली वीही तिला वा विण्णेया । लुक्खेसु कोइवा रालका वरका वा विण्णेया । णिद्धलुक्खसाधारणेसु वीही वा कंगू वा विण्णेया । सेतेसु सालि सेतवीही वा सेततिला वा ब्रूया । रत्तेसु रत्तसालि
- २५ वा कोइवा वा कंगू वा रत्तवीही वा रत्ततिला वा विण्णेया । पीतरेसु रालके वा ब्रूया । कण्हेसु कण्हवीही वा कण्हरालके वा कण्हतिले वा ब्रूया । * सामेसु वरके ब्रूया । मधुरेसु साली कंगू तिले वा ब्रूया । अंबेसु रालके ब्रूया । कसायेसु वीही वा कोइवे वा ब्रूया । तत्थ संयुतेसु कोसिघण्णगते सव्वकोसीगते सव्वसंगलिकागते सव्वसंगलिकोपुप्फेसु रक्खेसु सव्वपत्तसमुग्गलिकागते सव्वसिगिगते तिला ब्रूया । तत्थ सव्वविग्गेषु सव्वपरिक्कण्णेषु बाहिरेसु सव्वअ-कोसिघण्णगते सव्वअसंगलिकाफलेसु रक्खेसु सव्वअसंगीगते य साली वा वीही वा कोइवे वा वरके वा रालके वा

१ इत्थिद्वान्तगतः पाठः इ० त० एव वर्तते ॥ २ अक्खीसु उदरे इ० त० विना ॥ ३ सेयपीयसं इ० त० ॥ ४ * ययं ब्रूया । मज्झि इ० त० ॥ ५ * षट्ठिकं विण्णयं इ० त० ॥ ६ सुद्धो इ० त० ॥ ७ < षट्ठिकं विण्णयं इ० त० ॥ ८ ययं इ० त० विना ॥ ९ नामाज्झा इ० त० ॥ १० * * एतच्चिद्वान्तवती पाठः सर्वोद्य प्रतिपु द्विरागते वर्तते । अस्मान्निट्ट चरुदेवा हीहोउत्ति ॥ ११ * वाफलेसु इ० इ० त० ॥ १२ * गहवि इ० त० । * गघयिं वि० ॥

कंगू वा चूया । तत्थ रत्तेसु धणेषु आचित्तेसु सब्बपसूत्तेसु सब्बपधंगगते वरालकं वा कंगू वा चूया । तत्थ रंधंगगते सब्ब-
विसाल्लगते य तिले चूया । तत्थ सब्बअसंधंगगते सब्बअविसाल्लगते य साली वा वीही वा चूया । परिमंडलेसु
वट्टेसु कोइवा वा रालके वा चूया । तत्थ पुंफ्फाए अपुफ्फाए ति । तत्थ पुफ्फवत्तेसु कोइवे 'कंगुओ रालके वरके वा
चूया । तत्थ अव्यत्तपुफ्फेसु साली वीही वा चूया । सुव्यत्तपुफ्फेसु तिला चूया । इति पुंज्वघणं (पुज्वणं) वक्खत्तं ।

तत्थ अवरण्हे पुज्वमाधारिते जवे वा मासे वा अतसीयो वा कुसुंभे वा सस्सवे चूया । तत्थ सुक्खेसु गिण्फाव-
मुग्गे चणवे कुल्लत्थे मसूरे वा चूया । गिद्धलुक्खेसु साधारणेसु गोधूमे वा कलाये वा चूया । सेतेसु खे वा सेतणिफ्फावे
वा कुसुंभे वा चूया । रत्तेसु गोधूमे वा कुल्लत्थे वा अतसीयो वा वरके वा कंगू वा [चूया] । पुधूसु तिला चूया । दीहेसु
साली वा वीही वा चूया । परिमंडलेसु रत्तसाखे वा रत्तणिफ्फावे वा चूया । पीतकेसु चणके कलाये वा चूया ।
कण्हेसु मासा वा मुग्गे वा कण्हेतिले वा चूया । णीलेसु हाटीहणिफ्फावे वा चूया । सामेसु मसूरे वा चूया । मधुरेसु
जवे वा मासे वा कलाये वा मसूरे वा चूया । अंवेसु चणवे वा गोधूमे वा कुल्लत्थे वा चूया । कसायेसु मुग्गे चूया ।
तित्तकेसु गिण्फावे वा कुसुंभे वा चूयां । कडुकेसु सस्सवे चूया । तत्थ सब्बसंबुत्तेसु फोसीधण्णगते चूया । सब्बसंगलि-
कागते सब्बसंगलिकाफलेसु रक्खेसु सब्बफलसमुगाविकागते य सब्बसिंगिसु य मासे मुग्गे चणवे वा कलाये वा
णिफ्फावे वा मसूरे वा कुल्लत्थे वा चूया । तत्थ सब्बघणेसु सब्बआचित्तेसु सब्बपधंगगते सब्बजंजरिगते य जवे वा
गोधूमे वा चूया । तत्थ सब्बगुम्म(रुफ्फ)गते सब्बगोफ्फघण्णगते य कुसुंभे वा सस्सवे वा अतसीको वा चूया । तत्थ
सब्बवह्णीगते सब्बवह्णिघण्णगते य गिण्फावे वा कुल्लत्थे वा चूया । तत्थ सब्बगुम्मगते सब्बगुम्मघण्णगते
य मुग्गे वा मासे वा कलाये वा मसूरे वा चणए वा चूया । तत्थ सब्बसंधंगगते सब्बसंधंगमये धण्णगते
सस्सए वा कुसुंभे वा अतसीओ वा चूया । तत्थ सब्बअकरसंधंगगते जवे वा गोधूमे वा चूया । तत्थ सब्बपुधूसु
णिफ्फावे वा कुल्लत्थे वा मसूरे वा चूया । वट्टेसु चणए वा मुग्गे मासे वा कुसुंभे वा सस्सपे वा चूया । दीहेसु जवे वा
गोधूमे वा चूया । तत्थ सुव्यत्तपुफ्फेसु मुग्गे वा मासे वा चणए वा गिण्फावे वा मसूरे वा अतसीको वा सस्सए
वा कुसुंभे वा चूया । अव्यत्तपुफ्फेसु जवे वा गोधूमे वा चूया । शूलेसु गिण्फावे वा चूया । मज्झिमकायेसु जवे वा
गोधूमे वा चूया कुसुंभे वा मासे वा मुग्गे वा चणगे वा कलाये वा चूया । पथवरकायेसु अतसीको वा सस्सवे वा
मसूरे वा चूया । तत्थ गिद्धेसु अतिगमेसु य भायणगतं घणं चूया । कायवत्तेसु मंजूमागतं पद्दगतं चूया । चलेसु
जाणगतं चूया । अज्जंतरेसु गिवेसणगतं चूया । अज्जंतरेसु ओरारिगतं चूया । थाहारेसु थाहिरो घणं चूया ।
थाहिरथाहारेसु अरण्णगतं चूया । आहारेसु कीतं चूया । णीहारेसु विकीतं चूया । अज्जंतरेसु सकं चूया । अज्जं-
तरेसु मित्तघणं चूया । थाहिरज्जंतरे जाचितकं चूया । थाहारेसु गिकरेय[व]रिगतं चूया । थाहिरथाहारेसु अपरि-
हियं चूया । महापकासेसु महापरिग्गहेसु य बहं चूया । अप्पपकासे अप्पपरिग्गहेसु य अप्पं चूया । परिजुत्तेसु
पोरणं चूया । पालेसु णवं चूया ॥

॥ इति महापुरिसदिश्राय अंगविज्जाय धण्णजोणी णामाज्झायो वत्तीसतिमो सम्मत्तो ॥ ३२ ॥ छ ॥

[तेत्तीसइमो जाणजोणीअज्झायो]

अपापुवं रउड भो ! महापुरिसदिश्राय अंगविज्जाय जाणजोणी णामाज्झायो । तं जया-तत्थ अत्यि जानं ३०
एत्यि जानं ति पुज्वमोधारविचर्यं भवति । तत्थ अज्जंतरेसु सिद्धामासे मुद्धामासे पुण्णामासे पुण्णामधेज्जामासे

१ पत्तपसु १० १० ॥ २-३ विलासगते १० १० विना ॥ ४ पुत्तगते पद्दगते सि १० १० विना ॥ ५ कंगू
रा १० १० ॥ ६ सुयण्णपु १० १० ॥ ७ पुज्वघणं १० १० ॥ ८ गते सब्बगुम्मघण्णगए य मुग्गे १० १० ॥ ९ घण्णमए
सस्सवे १० १० ॥ १० सुव्यत्तपुफ्फे वा ससुग्गे १० १० ॥ ११ अयत्तपुफ्फेसु १० १० ॥ १२ मपहरिय १० १० ॥ १३ सु
वण्णय १० १० ॥ १४ णामाज्झाए १० १० ॥ १५ माहाएवियर्यं १० १० ॥ १६ मासे मुद्धामासे सिद्धा १० १० ॥

सव्यआहारगते अत्यि जाणं ति बूया । तत्थ वज्जामासे चलामासे लुक्त्तामासे तुच्छामासे दीणामासे ण्पुंसकामासे
सव्यगीहारगते य णति य जाणं ति बूया ।

तत्थ जाणे पुव्वमाचारिते जाणं दुविचमाधारये-सज्जीवं णिज्जीवं चेति । तत्थ सज्जीवोचलद्वीयं सज्जीवं बूया ।
तत्थ अज्जीवोचलद्वीयं अज्जीवं । तं दुविचमाधारये-जलयरं थलयरं चेति ।

5 तत्थ संब्ययलोपलद्वीयं थलजं विण्णातव्यं भवति । तत्थ सव्यआपुण्येसु जलयरं विण्णातव्यं भवति । तत्थ थंलचरे
सिविका भदासणं पट्टकसिका रथो संदमागिका गिद्धि जुगं गोलिंगो सकडं सकडी चेति । तत्थ पुण्णामेहि पुण्णामं
ति बूया । धीणामेहि धीणामं ति बूया । तत्थ उत्तमेसु सिविका भदासणं वा विण्णयं-पुण्णामेसु भदासणं, धीणामेसु
सिविका । सव्यसत्यगते सव्यसंगामगते य रथो विण्णयो । तत्थ सव्यसयणगते पट्टकसिका विण्णया । तत्थ विपुलेसु
विपुलं बूया । संवुत्तेसु संवुतं बूया । मह्व्यवेसु सकडं वा संदमागिकं वा गिद्धि वा बूया । मज्झिमकायेसु सकडिं
10 बूया । पञ्चरकायेसु रथं गोलिं [गं] वा बूया । > तैल उद्धंभागेसु उद्धायितं बूया । अधोभागेसु अणुद्धायितं बूया ।
तत्थ र्दिसेसु सकडं वा गिद्धि वा जुगं वा सकडिं वा बूया । > परिमंठलेसु भदासणं वा रथं वा गोलिकं वा बूया ।
इति थलचराणि अज्जीवाणि जाणाणि बूया ।

तत्थ णिज्जीवाणि जलचराणि-णाया पोतो कोट्टियो सालिका तप्पको प्लवो पिंठिका कंठे वेळु तुंवो कुंमो दती
चेति । तत्थ पुण्णामेसु पुण्णामाणि । धीणामेसु धीणामाणि । तत्थ महावकासेसु णाया पोतो वा विन्नेया । मज्झिमका-
15 येसु कोट्टियो सालिका संघाद्धो प्लवो तप्पको वा विण्णयो । मज्झिमाणंतरेसु कट्ठं वा वेळु वा विण्णयो । पञ्चरकायेसु
तुंवो वा कुंमो वा दती वा विण्णया । इति णिज्जीवाणि जलचराणि भवन्ति ।

तत्थ सज्जीवा जाणजोणी-अस्सा हत्थी उट्टा गो महिसा ररा अयेलका मका चेति । तत्थ उद्धंभागेसु सव्यसि-
गिसु य सव्यसंगलिकागते य संगलिकार्थत्थेसु सव्यगोसिधण्णगते य सिंगी विण्णया । तत्थ अधोभागे सव्यअसंगलिकागते
य फल-वच्छेसु या सव्यअकोसीधण्णगते य असिगी विण्णया । तत्थ महावकासेसु हत्थी उट्टा महिसा वा विन्नेया ।
20 मज्झिमकायेसु अस्सा वलिवदा वा विन्नेया । मज्झिमाणंतरकायेसु मगे वा खरे वा बूया । पञ्चरकायेसु अप वा एलके वा
बूया । तत्थ सव्यहत्थिगते हत्थिउपजीविसु हत्थिउपकरणे हत्थिपट्टिरुवगते य सव्यहत्थिपादुब्भावे हत्थि बूया ।
तत्थ सव्यअस्सगते सव्यअस्सोपकरणे सव्यअस्सोपलद्वीयं अस्सपादुब्भावे य अस्सं बूया । तत्थ सव्यगोगते सव्यगो-
उपजीविसु सव्यगोउपकरणगते सव्यगोउपकरणामधेज्जोदीरणे सव्यगोपादुब्भावे य वलिवदं बूया । तत्थ सव्यमहि-
सोपलद्वीयं महिसादह्रुवपादुब्भावे य एवमेव महिसं बूया । एवमेव सव्यउट्टोपलद्वीयं उट्टो विन्नेयो । सव्यखरोपल-
25 द्वीयं खरो विन्नेयो । सव्यअयेलकोपलद्वीयं अयेलको विण्णयो । एवमेव सव्यमगोपलद्वीयं मका विन्नेया । तत्थ
गहणेसु अयेलकं विण्णयं । उपगहणेसु य अवसेसा विण्णया । तत्थ अवमंतरव्मंतरेसु सकं जाणं विण्णयं । धाहिरव्मं-
तरेसु याचितकं जाणं बूया । धाहिरैसु आधावितकं जाणं । धाहिरवाहिरैसु अपहरितकं जाणं । तत्थ वचत्थेसु अभिरामेसु य
णं बूया । अणभिरामेसु मह्व्यवसु य जुण्णं बूया । डिहेसु डुट्टितं जाणं । घणेसु सुट्टितं जाणं बूया । आहारेसु कीतकं
बूया, पीहारेसु विकीनं बूया । सामेसु पट्टिरुवं जाणं ति बूया ॥

30 ॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिज्ञाय अंगविज्ञाय जाणजोणी णामाज्जायो

तेत्तीसतिमो सम्मत्तो ॥ ३३ ॥ छ ॥

[चउतीसह्रमो संलावजोणी अञ्जाओ]

अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविजाय संलापजोणी णामाज्झायो । तं खलु भो ! तमणुव-
क्खरत्तामो । तं जधा-तत्थ वत्तो संलावो ण वत्तो त्ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति । तत्थ अच्चमंतरामासे दवामासे
णिद्धामासे सुद्धामासे पुण्णामासे पुण्णामधेज्जामासे वत्तो संलावो त्ति वूया । तत्थ वज्जामासे लुक्खामासे तुच्छामासे
पुव्वामासे ण वत्तो संलावो त्ति वूया । तत्थ सज्जीवेसु सज्जीवमंतरेणं वत्तो संलावो त्ति वूया । तत्थ णिद्धामासे
सुद्धामासे पुण्णामासे घोसवंतेसु य सज्जीवमंतरेणं वत्तो संलावो त्ति वूया । तत्थ वज्जामासे चलामासे सुक्खामासे
लुक्खामासे तुच्छामासे अधोसवंतेसु य अज्जीवमंतरेणं वत्तो संलावो त्ति वूया ।

तत्थ जीवैगतं तिविधं-दिव्वं माणुस्सं तिरिक्खजोणीगयं चेति । तत्थ उद्धंभागेसु दिव्वमंतरेण वत्तो संलावो
त्ति वूया । उज्जुभागेसु धीणामामासेसु माणुस्सोपकरणगते य माणुसमंतरेणं वत्तो संलावो त्ति वूया । तत्तो
चतुरस्सेसु चतुरप्पदोपकरणेसु य चतुरप्पदमंतरेणं वत्तो संलावो त्ति वूया । तत्थ उद्धंभागेसु सब्बपक्खिगते य पक्खि- 10
मंतरेणं वत्तो संलावो त्ति वूया । तत्थ दीहेसु सब्बेसु सब्बपरिसंपगते य परिसंपमंतरेणं वत्तो संलावो त्ति वूया ।
आयुजोणीयेसु जलचरेसु य जलचरमंतरेणं वत्तो संलावो त्ति वूया । अणूसु सब्बखुड्ढिसिपीसिवाप य खुड्ढिसिपी-
सिवापमंतरेणं वत्तो संलावो त्ति वूया । तत्थ पुण्णामासेसु पुरिसमंतरेण वत्तो संलावो त्ति वूया । धीणामधेजेसु
धीणाममंतरेण वत्तो संलावो त्ति वूया । णपुंसकेसु णपुंसकमंतरेण वत्तो संलावो त्ति वूया । वंभेयेसु वंभणमंतरेणं
वत्तो संलावो त्ति वूया । खत्तेयेसु खत्तियमंतरेणं वत्तो संलावो त्ति वूया । वेसेजेसु वेस्समंतरेणं वत्तो संलावो त्ति 15
वूया । सुदेयेसु सुद्धमंतरेण वत्तो संलावो त्ति वूया । उट्ठं णामीय उत्तममंतरेण वत्तो संलावो त्ति वूया । अधो
णामीयं उद्धं जाणुकेहि अधे दीणकमंतरेण वत्तो संलावो त्ति वूया । अहे जाणूणं पायजंघेसु पेस्समंतरेणं
वत्तो संलावो त्ति वूया । अणूसु वत्थमंतरेणं वत्तो संलावो त्ति वूया । सामेसु आभरणमंतरेणं वत्तो संलावो
त्ति वूया । वैडेसु वद्धं धाधारकमंतरेणं वा वत्तो संलावो त्ति वूया । चलेसु जौणमंतरेणं वत्तो संलावो त्ति
वूया । उद्धंभागेसु पासादं वा चंदं वा सूरं वा णक्खत्तस्स वा अंतरेणं वत्तो संलावो त्ति वूया । अधोभागेसु कूप-णदीमं- 20
तरेणं वा वत्तो संलावो त्ति वूया । तिण्हेसु सब्बसत्थगते य आयुधाकारस्स वा आयुधमंढस्स वा अंतरेणं वत्तो संलावो
त्ति वूया । एतेसु जेय जोधस्स वा खंधावारस्स वा संगामस्स वा अंतरेण वत्तो संलावो त्ति वूया । सब्बकामुक-
यत्तेसु चलेसु य अंतरेसु य वेसिकं वा गणिकायं वै गूढिकायं वा कामुकस्स वा कामिणीयं वा
अंतरेणं वत्तो संलावो त्ति वूया । तत्थ द्दहेसु णगरस्स वा जणपदस्स वा सण्णिवेस्स वा खेत्तस्स वा खेडस्स
वा आरामस्स वा अंतरेणं वत्तो संलावो त्ति वूया । णिद्धेसु तत्थाकस्स वा णदीयं वा सरस्स वा पोक्खरणीयं 25
वा उड्डपाणस्स वा अंतरेण वत्तो संलावो त्ति वूया । लुक्खेसु कंटकस्स वा सुसाणस्स वा सुण्णचरस्स वा उट्ठितपद्वचस्स
वा अण्णणगर-गाम-जणपदस्स वा गिहस्स वा अंतरेणं वत्तो संलावो त्ति वूया । णपुंसकेसु गिरत्थकं वत्तो संलावो त्ति
वूया । वज्जेसु दूरजणपद-णगरमंतरेण वत्तो संलावो त्ति वूया । बाहिच्चमंतरेसु इमस्स जणपदस्स अंतरेण वत्तो
संलावो त्ति वूया । अच्चमंतरेसु सँकस्स वा जणकस्स वा उपकरणस्स वा अंतरेणं वत्तो संलावो त्ति वूया । णीहारेसु
बद्धस्स वा जणस्स अण्णातकस्स वा उपकरणस्स वा अंतरेण वत्तो संलावो त्ति वूया । दीहेसु दीहकालं वत्तो 30
संलावो त्ति वूया । रस्सेसु रस्सकालं वत्तो संलावो त्ति वूया । थूलेसु हत्थिस्स वा मँहिसस्स वा मच्छस्स

१ नामज्झां १०० ॥ २ तं जधा खलु १०० ॥ ३ जीवमयं १०० ॥ ४ हत्थिहातमंतः पाठः १०० ॥ एव
वर्तते ॥ ५ पट्टेसुवदं यावां १०० ॥ ६ जालमं १०० ॥ ७ या मूढिं १०० ॥ ८ उड्डपाणं १०० ॥
९ लुक्खस्स कं १०० ॥ विवा ॥ १० सक्कस्स वा उपकरणवत्तो सं ३ पु० । सक्क वा जणसक्कस्स वा उपकरणे वा
उपकरणे वत्तो वि० ॥ ११ हत्थिहातमंतः पाठः १०० ॥ एव वर्तते ॥ १२ १०० ॥ एतथिहातमंतः पाठः १०० ॥ नाति ॥

या ७ शूलपक्वि-परिसप्पथी-पुरिसमंतरेण वा वत्तो संलावो चि वूया । कसेसु खुट्ठाकसत्तमंतरेण वत्तो संलावो चि वूया । पुधूसु रंथुमंतरेण वत्तो संलावो चि वूया खेत्तमंतरेण वा वूया । गहणेसु आराममंतरेण वत्तो संलावो चि वूया । उपगहणेसु खेत्तसीमामंतरेण वत्तो संलावो चि वूया । परिमंडलेसु आयणमंतरेण वत्तो संलावो चि वूया । मतेसु मतमंतरेण वत्तो संलावो चि वूया । उण्णतेसु उलुकमंतरेण पव्वतमंतरेण वा वत्तो संलावो चि वूया । पसण्णेसु दाणमंतरेण वा वंदणमंतरेण वा ८ पतित्तामंतरेण वा ९ सम्मोहमंतरेण वा वत्तो संलावो चि वूया । अपसण्णेसु निच्छोभमंतरेण वा णिराकारमंतरेण वा वत्तो संलावो चि वूया । पुण्णेसु आहारमंतरेण वत्तो संलावो चि वूया । तुच्छेसु छुधामंतरेण वत्तो संलावो चि वूया । अग्गेयेसु अग्गीमंतरेण वा औलीपणकमंतरेण वा वत्तो संलावो चि वूया । जण्णयेसु उस्सयमंतरेण वा समवायमंतरेण वा वत्तो संलावो चि वूया । दंसणीयेसु चंदा-ऽऽदिच्च-माह-भारारूवसमिद्धसामिद्धिं गाम-जणपद्-णगर-उस्सयसमायमंतरेण वा वत्तो संलावो चि वूया । अणागतेसु 10 अणागतमंतरेण वा वत्तो संलावो चि वूया । यामदकिरणेसु वत्तमाणमत्थमंतरेण वत्तो संलावो चि वूया । पच्छिमेसु गत्सेसु अतीतमत्थमंतरेण वत्तो संलावो चि वूया ॥

॥ इति महापुरिसदिण्णाय अंगविज्ञाय संलावजोणी नौमाज्जायो चउतीसतिमो सम्मत्तो ॥ ३४ ॥ ॥

[पणतीसहमो पयाविसुद्धीअज्झाओ]

अथापुन्यं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्ञाय पयाविसुद्धी णौमाज्जायो । तं जया-तत्थ अत्थि पया 15 णत्थि पय चि पुब्बमाँचारयित्थं भवति । तत्थ अचमंतरामासे दढामासे णिद्धामासे सुद्धामासे दक्खिणामासे मुदिता-मासे पुण्णामासे पुण्णामधेज्जामासे सव्वआहारगते य अत्थि पय चि वूया । तत्थ उँहोइते उस्सिते उच्चरिते उण्णामिते उत्थिते उपसारिते उपपण्णिते उपलोलिते उपकड्डिते उपवसे उपर्गिते उपगद्धे उपलद्धे उपसारिते एवंविधसद्-रूपपादुच्चावे अत्थि पय चि वूया । तत्थ माता-पितु-भगिणि-सोदरिय-मिच्च-वंधुजणसमामगे समाणिते अभिसंगते अभिणंदिते उपदासिते उपगृहिते चुंविते अच्छायिते पागुते परिहिते अणुलिते अलेकिते वा एवंविधसद्-रूपपादुच्चावे अत्थि पय चि 20 धूया । तत्थ उँकुट्टे अप्फोदिते पँच्छोलिते गज्जिते पयादिते सेसाऽऽयान-वलिहँरगते णव-पुण्ण-पसत्थ-पहट्ट-परग्घ-पँसैउद-ग्गीये पुप्फे वा फले वा महे वा भूसणे वा अच्छादणे वा ८ औत्सणे वा सयणे वा ९ जाणे वा बाहणे वा उपकरणे वा रथणगते वा धण्णगते वा धेणे वा पाणे वा भोगणे वा उपणामित-पडिच्छिते वा एवंविधसद्-रूपपादुच्चावे अत्थि पय चि वूया । तत्थ उवलद्ध-संत-भूत-अत्थिसद्पादुच्चावे अत्थि पय चि वूया । तत्थ धातीकुम्मारदारकसव्व-अपषापादुच्चावे य अत्थि पय चि वूया । तत्थ वज्जामासे चलामासे कण्हामासे लुक्खामासे तुच्छामासे दीणामासे 25 णपुंसकामासे सव्वणीहारगते य णत्थि पय चि वूया । तत्थ कासिते छीते जंभिते रुदिते परिदेविते भगे भिण्णे विण्ण्टे विपाहिते विक्खिन्ने विच्छुद्धे विच्छित्ते "णिळुंचिते विणासिते "विंसंधिते रूवाफडे कूमिते विज्जविते धेतं वा एवंविधसद्-रूपपादुच्चावे णत्थि पय चि वूया । तत्थ णिम्मज्जिते णिद्धिरिते णिस्सारिते णिण्णामिते णिद्धादिते 1 गिहोदिते णिक्कट्टिते णिष्ठीलिते णिच्छँडालिते णिक्खिते णिच्छुद्धे णिच्चादिते णिसिते णिळुचिते णिच्छँडालिते णिस्सारिते

१ घट्ठमं १० तं ॥ २ हसचिहान्तर्गतः पाठः १० तं एव वर्तते ॥ ३ आलापकं १० तं ॥ ४ नामोऽज्झा १० तं ॥ ५ णामऽज्झा १० तं ॥ ६ माहारयियत्थं १० तं ॥ ७ उल्लोकिए १० तं ॥ ८ ण्णते उपणाद[ए] उपसारिते १० तं विना ॥ ९ उमट्टे १० तं ॥ १० पच्छिलिते १० तं विना ॥ ११ लिदूरं १० तं ॥ १२ पथा-दग्गीये १० तं विना ॥ १३ हसचिहान्तर्गतः पाठः १० तं एव वर्तते ॥ १४ धण्णे वा १० तं ॥ १५ णित्तुचिते १३ उ० । णित्तुयिए १० तं ॥ १६ विंसंधिते वि० ॥ १७ गिहोदिए णिक्कट्टिए १० तं ॥ १८ णिच्छोलिए णियिडे णिच्छुद्धे १० तं ॥ १९ णिच्छोलिए १० तं ॥

गिस्सरित्ते गिप्पतित्ते गिप्फाहित्ते 'गिड्ढीले गिक्कुञ्जित्ते गिण्वामित्ते गिराकत्ते गिराणत्ते चेति एवंविधसद्वरूपादुद्धभावे पत्थिय पय च्चि वूया । तत्थ पग्गुद्धे पैमुक्के पट्ठे पक्किण्णे पैविसित्ते पमुच्चित्ते पलोळित्ते परावत्ते परिसडित्ते परिसोडित्ते पॅडिसिद्धे पप्फोडित्ते पट्ठिणायित्ते पॅडिहृत्ते पडिदिग्गे पडिद्धुद्धे पडित्ते पॅरिवद्धित्ते पडिलोळित्ते पडिसरित्ते पॅडिओधुत्ते एवंविधसद्वरूपादुद्धभावे पत्थिय पय च्चि वूया । तत्थ अपमट्ठे अपलोळित्ते अपसारित्ते अपणासित्ते अपकट्ठित्ते अपणत्ते अपकुद्धे अंपहित्ते अरिफहित्ते चेति एवंविधसद्वरूपादुद्धभावे पत्थिय पय च्चि वूया । तत्थ ओलोळित्ते ओसरित्ते ओमथित्ते ओणोमित्ते ओवट्ठित्ते ओलोळित्ते ओकॅडित्ते ओवत्ते ओणत्ते ओलुद्धे ओत्तारिए ओमुक्के महे वा भूसणे वा अच्छादणे वा एवंविधसद्वरूपादुद्धभावे पत्थिय पय च्चि वूया । तत्थ आयरणे असंतं-गत्थिसद्वरूपादुद्धभावे पत्थिय पय च्चि वूया । तत्थ वंझा-संडक-अणयच्च-पासंडगतं संदंसणे य पत्थिय पय च्चि वूया । तत्थ णवणीत्त-तेह-घत्त-दधि-गोरसदंसणे यच्छक-पुत्तक-पिद्धक-वप्पक-सिंणक-खुडुक-वालक-साडक-मोहणक-अंकुर-परोह-पुप्फ-फल-पादप-पवाल-हरिताल-हिंणुलक-मणसिल-सव्व-समालभणकगतं वालकपरिणंदित्ते जं किंचि वालसमाचारं वा एताणि पेक्खमाणो वा भासमाणो वा आमसंतो वा एतेसिं वा 10 वाहिरे सद्वरूपादुद्धभावे पयं वा पयालामं वा पयासामग्गी वा उदरं वा पुत्तलामं वा इमं से भविस्सतीति वूया । एतेसामेव "अंतोरुकरणे अप्पणो गम्भो च्चि वूया । एताणि च्चैव तिलेमाणो पुच्छेज्ज ससह्जा गम्भिणी मरिस्सति च्चि वूया । एताणि च्चैव अकमंतं पुच्छेज्ज पँथा से विणारिस्सति च्चि वूया । एताणि च्चैव पतिगिण्हंती पुच्छेज्ज पँथा से भविस्सति च्चि तं वूया । एताणि च्चैव पणामयंती [पुच्छेज्ज] पया ते परिहायिस्सति च्चि णं वूया । एताणि च्चैव उपकट्ठंती पुच्छेज्ज <1 पँथा से भविस्सति च्चि णं वूया । एताणि च्चैव अपकट्ठंती पुच्छेज्ज पया से ण भविस्सति च्चि णं वूया । > एताणि च्चैव उपकट्ठित्ता अपकट्ठंती 15 पुच्छेज्ज पया ते भवित्ता ण भविस्सति च्चि वूया । एताणि च्चैव अपकट्ठित्ता उपकट्ठंती पुच्छेज्ज पया ते ण भवित्ता ण भविस्सति च्चि वूया । एताणि च्चैव छिंदंती वा गिक्खणंती वा फालेंती वा विवाडेंती वा पुच्छेज्ज पया ते विणारिस्सति च्चि वूया । एतेसामेव आदिमूलगहणेसु उवजिन्वा ते पया भविस्सति च्चि वूया । एतेसामेव मज्झगहणेसु जुत्तोपचया ते [पया] भविस्सति च्चि वूया । एतेसामेव अंतगहणे गिरोपजिन्वा ते पया भविस्सति च्चि वूया ।

तत्थ पयायं पुञ्जाधारितायं वावण्णा अवावण्ण च्चि औधारयित्त्वं भवतीति । तत्थ वावण्णामासे अप्पसत्था- 20 मासे दीणामासे वापण्णे वा पुप्फे वा फले वा पाणे वा भोगणे वा सब्बवापण्णेसु वा वापण्णे च्चि वूया । अवावण्णामासे अणुपहुत्तामासे सुगंधामासे पसण्णामासे सुदितामासे अव्वापण्णे पुप्फे फले वा पाणे वा भोगणे वा भायणे वा सब्बअव्वापण्णेसु य अव्वापण्ण च्चि वूया । तत्थ पयायं पुञ्जाधारितायं विकतं अविकतं पज्जायिस्सति च्चि पुणो आधारयित्त्वं भवति । तत्थ उज्झकामासे उज्झभायगतं उज्झउद्धोयिते य सब्बमणुस्सजोणीपादुद्धभावे य सब्बमणु- 25 स्सजोणीणामभेज्जोदीरणे य सब्बमणुस्सरूपागितिपादुद्धभावे य सब्बमणुस्सरूपागितिणामभेज्जोदीरणे सब्बमणुस्ससरीरोपकर- 25 णामभेज्जोदीरणे सब्बमणुस्सगतं सब्बमणुस्सवेसैगतं सब्बमणुस्सकम्मोधारगतं सब्बमणुस्सोपलद्धीयं च अविगतं वूया । तत्थ तिरियामासे तिरियगतं तिरियबिलोळित्ते सब्बतिरियजोणिपादुद्धभावे सब्बतिरियजोणीणामभेज्जोदीरणे सब्बतिरियजोणी- 30 उपकरणे तिरिक्खरूपागितिपादुद्धभावे तिरिक्खरूपागितिणामभेज्जोदीरणे तिरिक्खजोणीमये उवकरणे णामभेज्जोदीरणे सब्ब- तिरिक्खजोणिगतं विगतं वूया । तत्थ पँथात्तं पुञ्जाधारियायं कण्णा कुमारो च्चि औधारयित्त्वं भवति । तत्थ अचमंतारामासे दक्खिणामासे पुण्णामभेज्जामासे पुण्णामे पुप्फे [वा] फले वा पाणे वा भोगणे वा सब्बकुमारोपलद्धीयं च कुमारो 30 वूया । तत्थ वंझामासे चामामासे थीणामभेज्जामासे <1 थीणीमये > पुप्फे वा फले वा भायणे वा भोगणे वा उव-

१ गिड्ढीणा गिक्कुं हं तं विना ॥ २ पग्गुद्धे सग्गं ॥ ३ पसवित्ते हं तं ॥ ४ परिसिट्ठे हं तं ॥ ५ परिहृत्ते हं तं ॥ ६ परिवट्ठित्ते हं तं ॥ ७ पडिमुप एयं हं तं ॥ ८ अपट्ठित्ते हं तं ॥ ९ उण्णामित्ते थिं ॥ १० उक्कट्ठित्ते हं तं ॥ ११ अहरोरुं हं तं ॥ १२ पया ते थिं हं तं ॥ १३ पया ते भं हं तं ॥ १४ <1 > एतविद्धान्तगतः पाठः हं तं नास्ति ॥ १५ आहारयियच्चं हं तं ॥ १६ आहारयियच्चं हं तं ॥ १७ वेस्सगतं हं तं विना ॥ १८ पयायं हं तं ॥ १९ आहारयियच्चं हं तं ॥ २० <1 > एतविद्धान्तगतं पदं हं तं नास्ति ॥
अंगं २२

करणे वा सव्यइत्यौपलद्वीयं च कर्णं व्यूया । तत्र पत्रायं पुंस्वमाधारितायं एकं दुवे पत्राइस्सति त्ति औधारयित्त्वं भवति । तत्र एककेसु गत्तेसु एकाभरणे एकोपकरणे एकचारिसु सत्तेसु सव्यएकमाधारणगते य एकं पत्रातिस्सति त्ति व्यूया । तत्र विएसु गत्तेसु य मँडोभरणके य मँडोपकरणे मिधुणचरेसु सत्तेसु सव्यत्रिसाहागते य दुवे पत्रातिस्सति त्ति व्यूया । तत्र बह्वेसु गत्तेसु बहूपकरणके बहूकोपकरणके संघचारिसु सत्तेसु सव्यबहुसाहागते य बहवो पत्राति-
 ५ स्सति त्ति व्यूया । त एवं कण्ठामासे कण्ठयणपट्टिरुवगते य सव्ययणपभावरगते य उद्धोक्त्रिते य कालो पत्रातिस्सति त्ति व्यूया । तत्र मुक्कामासे मुक्कयणपट्टिरुवगते य सव्यसपमा[व]गते य उद्धोक्त्रिते दक्खिणगामासे पुण्णामधेज्जामासे संवदियाचारिसु सत्तेसु सव्यदियसोपलद्वीयं च दिया पत्रातिस्सति त्ति व्यूया । तत्र कण्ठामासे कण्ठयणपट्टिरुवगते य सव्ययणपभावे ओलोक्त्रिते धामामासे धीणामधेज्जामासे सव्यरत्तीचारिसु सत्तेसु सव्यरत्तीउपलद्वीयं च रत्तिं पत्रातिस्सति त्ति व्यूया । मुक्कणि आमसित्ता मुक्कणि आमसती पुणो जोण्हे दिया पत्रातिस्सति त्ति व्यूया । कण्हाणि आमसित्ता
 १० कण्हाणि आमसती पुणो काले रत्तिं पत्रातिस्सति त्ति व्यूया ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्ञाय पयाविसुद्धी णामज्झायो
 पंचतीसत्तिमो सम्मत्तो ॥ ३५ ॥ छ ॥

[छत्तीसइमो दोहलज्जाओ]

अथापुत्रं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्ञाय दोहलो णामाज्झायो । तं जया-अत्थि दोहलो
 १५ णत्थि दोहलो त्ति पुत्र्यमाधारयित्त्वं भवति ।

तत्र अचमंतरामासे दडामासे णिद्धामासे मुद्धामासे पुण्णामासे पुण्णामधेज्जामासे सव्यआहारगते य अत्थि दोहलो त्ति व्यूया । तत्र उद्धोक्त्रिते वैस्सित्ते उच्चरित्ते उण्णामित्ते उत्थित्ते उपसारित्ते उपणामित्ते उपविट्ठे उपलोहित्ते उंयत्ते उपणत्ते उपणद्वे उपलद्वे उपसरित्ते उपविट्ठे एवंविधसद-रूपपादुम्भावे अत्थि दोहलो त्ति व्यूया । तत्र माता-पितृ-भगिणि-संबंधिजणसमागमे समागित्ते सातिजित्ते पट्टिच्छित्ते अभिणंदित्ते अभिसंयुत्ते उपदासित्ते चुंयित्ते अच्छाइत्ते पागुत्ते
 २० परिहित्ते अणुलित्ते अलंक्त्रिते एवंविधसद-रूपपादुम्भावे रस-गंध-फासपादुम्भावे अत्थि दोहलो त्ति व्यूया । तत्र उद्धे अण्णोहित्ते पच्छेलित्ते पयायित्ते सेसागहणे बलिहरणगते एवंविधसद-रूपपादुम्भावे अत्थि दोहलो त्ति व्यूया । तत्र णव-पुण्ण-पसत्थ-पट्ट-परप-पषदग्गे पुप्फे वा फले वा पत्ते वा पवाले वा महे वा भूसेणे वा आसणे वा सयणे वा विसयणे वा जाणे वा यादणे वा मायणे वा उपकरणे वा धण्णे वा धणे वा पाणे वा भोयणे वा उण्णामित्ते पट्टिच्छित्ते एवंविधसद-रूपपादुम्भावे अत्थि दोहलो त्ति वा व्यूया । तत्र उपलद्वे अत्थिसहपादुम्भावे अत्थि दोहलो त्ति व्यूया ।
 २५ तत्र धाती-कुमार-दारक-बहु-अपघसद-रूपपादुम्भावे अत्थि दोहलो त्ति व्यूया । तत्र णवणीत-दुद्ध-धत-परिसप्पक-अंठक-सप्पक-बच्छक-वालक-साढक-वालक-मोहणके बालाभरके अंबुर-परोह-वाल-पुप्फ-फलपादुम्भावे परामासे वा हरिताल-हिंगुलक-मणोसिद्धा-ण्णान-समालभणकगते वालकपरिवंदितके यं किंचि वालं वालचारं वा एताणि आमसंतो वा वा पैकरमाणो वा भासमाणो वा एतेसि वा बाहिरि आमाससद-रूपपादुम्भावे अत्थि दोहलो त्ति व्यूया ।

तत्र बन्धामासे चट्टामासे लुक्कामासे कण्ठामासे तुच्छामासे दीणामासे णुंसकामासे सव्यणीहारगते य
 ३० णत्थि दोहलो त्ति व्यूया । तत्र कासित्तेण सुधित्तेण जंमित्तेण रदित्तेण परिदेवित्तेण भग्गे छिण्णे मिण्णे विणासित्ते

१ पुत्र्यं धारित्वायं हं तं ॥ २ आहारयियव्यं हं तं ॥ ३ भरणके हं तं ॥ ४ मलामं हं तं विना ॥
 ५ मलोपं हं तं विना ॥ ६ पक्खकोपं हं तं ॥ ७ एवं एतबिहान्तगतं पाठः हं तं नात्थि ॥ ८ सव्यदीवचां हं
 तं ॥ ९ नामाज्जाओ हं तं ॥ १० नामज्झाओ हं तं ॥ ११ आहारयियव्यं हं तं ॥ १२ उस्ससित्ते हं तं ॥
 १३ उपपेयं हं तं ॥

विपाहिते विक्रिखत्रे विच्छुद्धे विच्छिन्ने विण्टे वंते सिंविर्तालिते रूयकडे पूंसिते विज्जाविते एवंविधसद्-रूपपादुच्भावे
 पत्थि दोहलो त्ति वूया । तत्थ णिम्मज्जिते निहक्खिते णिस्सारिते णिच्चट्टिते णिलुलिते णिक्कट्टिते णिद्धाहिते णिस्साविते
 णिष्फाविते णिच्छोलिते णिक्खण्णे णिव्विट्ठे णिच्छुद्धे विच्छुद्धे णिरिसिते णिहुविते णिवोहिते णित्थणिते णिस्ससिते
 णिरिसंघिते णिट्ठिते णित्थुद्धे णिस्सरिते णिष्फेडिते णिद्दीणे णिण्णीते णिकुञ्जिते णिव्वासिते णीरक्कए णिरागंदे
 एवंविधसद्-रूपपादुच्भावे पत्थि दोहलो त्ति वूया । तत्थ पैमुट्ठे पम्हुते पकिण्णे पचमट्ठे पसंखित्ते पमुच्छित्ते पलोहिते 5
 परावत्ते परिसाहिते पडिसिद्धे पॅफाहिते पडिणामिते पॅडिहारिते पडिदिण्णे पडियुद्धे पडिते पडिमुंडिते पडिलोलिते पडि-
 सरिते पॅडिच्छुद्धे एवंविधसद्-रूपपादुच्भावे पत्थि दोहलो त्ति वूया । तत्थ अपमट्ठे अपलखिते अपसारिते अपणा-
 मिते अपवट्टिते अपलोलिते अपवत्ते अपणत्ते अपहिते अपविट्ठे अप्पुट्ठे आपहिते एवंविधसद्-रूपपादुच्भावे पत्थि
 दोहलो त्ति वूया । तत्थ ओलोकिते ओसारिते ओमत्थिते ओणामिते ओवट्टिते ओलोकिते ओकट्टिते ओवत्ते ओणत्ते
 उमाहिते उच्छुद्धे ओतारिते ओतिण्णे उक्खिते ओमुक्के महे वा भूसणे वा अच्छादणे वा एवंविधसद्-रूपपादुच्भावे 10
 पत्थि दोहलो त्ति वूया । तत्थ आयरणअणंतणत्थिभूतपादुच्भावे पत्थि दोहलो त्ति वूया । तत्थ वंझा-पंडक-अण-
 पचसद्-रूपपादुच्भावे पत्थि दोहलो त्ति वूया । तत्थ परिजुण्णे परिसुक्के वा परिसुद्धे वा वापणे वा पुप्फे वा फले वा
 भूसणे वा अच्छादणे वा आसणे वा सयणे वा जाणे वा वाहणे वा उपकरणे वा रयणत्ते वा घण्णे वा धणे वा
 पाणे वा भोयणे वा सव्ववापण्णेषु वा वापण्णं दोहलं वूया ।

तत्थ दोहले पुच्चमाधारिते दोहलकं पंचविधमाधारये । तं जधा-सद्गतो गंधगतो रूयगतो रसगतो फासगतो 15
 चेत्ति । तत्थ सद्देयेसु सव्वसद्पडिरूयगतये य सद्देयो दोहलो विण्णेषो । तत्थ गंधेयेसु सव्वगंधपडिरूयगतये य गंधेयो
 दोहलो विण्णेषो । तत्थ सव्वरूयगतये सव्वदंसणीयगतये य रूयगतो दोहलो विण्णेषो । तत्थ <1> संव्वफासगतये <2> सव्व-
 फासपडिरूयगतये य फासगतो दोहलो विण्णेषो । तत्थ सव्वरसगतये सव्वरसपडिरूयगतये य रसगतो दोहलो विण्णेषो ।

तत्थ रूयगतये दोहले पुच्चमाधारिते रूयगतो दोहलो मणुस्सगतो चतुप्पदगतो पक्खिगतो परिसप्पगतो कीडकिविह-
 गतो पुप्फगतो विद्धिगतो पदीगतो समुद्गतो तलागतो वापिगतो पुक्खरणगतो अरणगतो भूमीगतो णगरगतो रंधावागतो 20
 जुद्गतो किद्दागतो । तत्थ मणुस्सजोणीपडिरूयगतये मणुस्सजोणी वूया । सव्वपक्खिरूयगतये पक्खिरूयगतये पक्खिरूय[जोणी] विण्णेषा ।
 चतुप्पदजोणीपडिरूयगतये य चतुप्पदजोणी विण्णेषा । सव्वपरिसप्पपडिरूयगतये सव्वपरिसप्पजोणी विण्णेषा । अंतोदहर-
 चलेसु कीड-किमिगतये य कीड-किविहगतो विण्णेषो । मुदितेसु सव्वपुप्फगतये य पुप्फगतो विण्णेषो । पुण्णेषु सव्व-
 फलगतये य फलगतो विण्णेषो । दीहेसु णिद्धेसु य पदीगतो विण्णेषो । णिद्धेसु परिमंडलेसु महापकासेसु समुद्गतो
 विण्णेषो । णिद्धेसु सण्णिरूद्धेसु तलागतो विण्णेषो । णिद्धेसु विरिण्णेषु महासरगतो विण्णेषो । ददेसु पुधुसु य 25
 पुद्दवीगतो विण्णेषो । ददेसु उद्धंभागेसु य महापगाहेसु य पव्वतगतो विण्णेषो । गहणेसु रणगतो विण्णेषो । उपगहणेसु
 आरामगतो विण्णेषो । चतुरस्सेसु संरूद्धेसु परिमंडलेसु संरत्तेसु णगरगतो विण्णेषो । विमुत्तेसु महापकासेसु पुधुसु य
 देवगतो विण्णेषो । सव्वसत्थअब्भुजोगत्ते संरूद्धेसु य रंधावागतो विण्णेषो । संजोगत्ते सव्वकिद्दागतये य किद्दागतो
 विण्णेषो । तिरिक्खेसु आकोहिते य संगामगतो विण्णेषो । इत्ति रूयगतो दोहलो ।

तत्थ सद्गतये दोहले पुच्चमाधारिते सद्गतो दोहलो, तं जधा-मणुस्ससद्गतो पक्खिरमद्गतो चतुप्पदसद्गतो 30
 परिसप्पसद्गतो दिव्वपोसगतो <1> वादिदंथोसगतो <2> आभरणयोसगतो । तत्थ मणुस्सजोणीगतये मणुस्सजोणीपडिरूयगतये
 य मणुस्सजोणी विण्णेषा । सव्वपक्खिरूयगतये पक्खिरमगतो विण्णेषो । सव्वचतुप्पदजोणीपडिरूयगतये चतुप्पदजोणीगतो

१ सिंमिताते हं तं विना ॥ २ पूमिह हं तं ॥ ३ पम्हुट्ठे हं तं विना ॥ ४ पुप्फाहिते हं तं ॥ ५ परि-
 हरिते परिदिण्णे हं तं ॥ ६ पडियुद्धे हं तं विना ॥ ७ अपयुद्धे हं तं विना ॥ ८ ओयुद्धे हं तं ॥ ९ अंतं
 हं तं विना ॥ १० <1> एतथिहान्तगतं पाठः हं तं नास्ति ॥ ११ ग्राहेसु हं तं ॥ १२ <1> एतथिहान्तगतं पाठः
 हं तं नास्ति ॥

विष्णोयो । [सव्यपरिसप्जोणीपडिरुवंगते परिसप्जोणीगतो विष्णोयो ।] सव्यसंखडगतो वादितगतो विष्णोयो । सव्यसामेसु आभरणघोसगतो विष्णोयो । दिव्येयेसु उत्तमेसु दिव्यघोसगतो दोहलो विष्णोयो । इति सद्गतो ।

तत्थ गंधगतो दोहले पुव्वमाधारिते गंधगतो दोहलो । तं जधा—ण्हाणगतो अणुलेवणगतो अधिवासगतो पंचसगतो धूपगतो मद्दगतो पुप्फगतो फलगतो पत्तगतो आहारगतो चेति । उत्तमेसु ण्हाणगतो विष्णोयो । समभागेसु अणुलेवणगतो १० विष्णोयो । अगेयेसु धूर्वगतो विष्णोयो पंचसगतो चुण्णगतो । तणूसु सव्यत्वगतं य अधिवासगतो विष्णोयो । पुण्णेसु सडैवपुप्फ-फलगतं य [पुप्फ-]फलगतो विष्णोयो । ११ इति गंधगतो ।

तत्थ रसगतो दोहले पुव्वमाधारिते रसगतो दोहलो । तं जधा—पाणगतो भोयणगतो रज्जगतो लेज्जगतो चेति । तत्थ णिद्वेसु सव्यपाणगतं य पाणगतो दोहलो विष्णोयो । सव्यभोयणगतं सव्यभोयण-भायणगतं य भोयणगतो दोहलो विष्णोयो । सव्यद्वहरचलेसु सव्यभक्खगतं य सव्यभक्ख-भोयणगतं य भक्खगतो दोहलो विष्णोयो । इति आहार- 10 गतो दोहलो विष्णोयो ।

तत्थ फासगतो दोहले पुव्वमाधारिते फासगतो । तं जधा—आसणगतो सयणगतो वाहणगतो गहगतो वत्थगतो आभरणगतो विष्णोयो । सव्यसयणपडिरुवंगते सयणगतो विष्णोयो । तत्थ सव्यआसणगतं सव्य-^८ आसण ^९पडिरुवंगते य आसणगतो विष्णोयो । चलामासेसु सव्यजाण-वाहणपडिरुवंगते य जाण-वाहणगतो विष्णोयो । तत्थ ददेसु सव्यगद्गतं य गहगतो दोहलो विष्णोयो । तत्थ तणूसु सव्यवत्थगतं य सव्यवत्थपडिरुवंगते य वत्थगतो दोहलो 15 विष्णोयो । सामेसु सव्यआभरणगतं सव्यआभरणपडिरुवंगते य आभरणगतो दोहलो विष्णोयो । इति फासगतो दोहलो ।

तत्थ दोहले पुव्वमाधारिते क्त्ता वत्तो दोहलो विष्णोयो भवति ? । तत्थ पसन्नेसु सव्यसरदपडिरुवंगते य सरदे वत्तो दोहलो चि विष्णोयो । तत्थ कण्हेसु रुक्खसाधारणेसु सव्यगिम्हपडिरुवंगते य गिम्हे वत्तं दोहलं चि वूया । तत्थ गिरुद्वेसु बालेसु य पाउसे वत्तो दोहलो चि वूया । तत्थ णिद्वेसु वासार्त्तपडिरुवंगते य वासार्त्ते वत्तो दोहलो चि वूया । संयुत्तेसु सव्यहेमंतपडिरुवंगते य हेमंते वत्तो दोहलो चि वूया । तत्थ सामेसु मुदितेसु सव्यवसंतपडिरुवंगते य 20 वसंते वत्तो दोहलो चि वूया । तत्थ सुकेसु सव्यसुकपडिरुवंगते य सुकपक्खे वत्तो दोहलो चि वूया । तत्थ कण्हेसु सव्यकण्ठपडिरुवंगते य कालपक्खे वत्तो दोहलो चि वूया । सामेसु पक्खसंधिसु वत्तो दोहलो चि वूया । अतिमुद्धी-येसु अचमंतरपंचमी वत्तो दोहलो चि वूया । मज्झिमविगाडेसु परं पंचमिं वत्तो दोहलो चि वूया । अचमंतरेसु अचमं-तरं दसमीय दोहलो वत्तो चि वूया । अचमंतरचमंतरेसु परं दसमीतो वत्तो दोहलो चि वूया । सुकेसु अतिमुद्देयेसु पायरासे वत्तो दोहलो चि वूया । कण्हेयेसु अतिमुद्देयेसु पदोसे वत्तो दोहलो चि वूया । सुकेसु मज्झिमविगाडेसु 25 मज्झंतिके वत्तो दोहलो चि वूया । कण्हेसु मज्झिमविगाडेसु अद्दुरत्ते वत्तो दोहलो चि वूया । सुकेसु अतेसु अपरण्दे वत्तो दोहलो चि वूया । कण्हेसु अंतेसु पदोसे वत्तो दोहलो चि वूया । पच्छिमसेसु गत्तेसु अतिवत्तेसु य सरेसु अतिवत्तं वूया । पुरत्थिमेसु गत्तेसु अणागतेसु य सरेसु अणागतं वूया । वामदक्खिण्णेसु गत्तेसु वत्तमाणेसु य सद्द-वेसु संपतं वत्तमाणं दोहलं वूया ॥

॥ इति महापुरिसदिण्णाय अंगविज्ञायो दोहलो णामाज्झायो छत्तीसतिमो सम्मत्तो ॥ ३६ ॥ छ ॥

१ सव्यपरि३० इ० त० ॥ २ दिव्येयसु इ० त० ॥ ३ धूमपगतो स० ॥ ४ गतो दोहलो विष्णोयो इ० त० विना ॥ ५ सव्यवपणफल० णि० ॥ ६ दसविहान्तर्गतं. पाठः इ० त० एव वर्तते ॥ ७ ८ ९ एतद्विहान्तर्गतं परं इ० त० नास्ति ॥ ८ "रत्तेसु पडिरुवंगते य वासरत्ते इ० त० विना ॥ ९ वित्तो इ० त० ॥ १० कण्हेसु इ० त० ॥

[सत्ततीसइमो लक्ष्मणज्ज्ञाओ]



अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय लक्ष्मणो णामाज्ज्ञायो । तं जथा—तथ्य अचमंतरामासे दढामासे णिद्धामासे सुद्धामासे पसत्थलक्ष्मणं ति वूया । तथ्य वज्झामासे चलागासे ॥३॥ लैकखामासे ॥४॥ णपुंसकामासे असुमं लक्ष्मणं ति वूया । < तैथ्य पुव्वं सुभाणि आमसित्ता पच्छा असुभाणि आमसति सुभाणि पुरिमखेत्ताणि असुभाणि पच्छिमाणि त्ति वूया । > तथ्य पुव्वं असुभाणि आमसित्ता पच्छा सुभाणि आमसति असुभाणि ॥५॥ पुरिमखेत्ताणि पच्छिमाणि सुभाणि त्ति वूया ।

तथ्य लक्ष्मणं वारसविधं । तं जथा—वण्णो १ सरो २ गति ३ संठाणं ४ संघत्तणं ५ माणं ६ उम्माणं ७ सत्तं ८ आणुकं ९ पगति १० छाया ११ सारो १२ वेति । तथ्य वण्णसंपण्णे अंजण-हरिताल-मणसिला-हिंगुलुक-रयत-कंचण-पयाल-संख-मणि-यइर-सुत्तिका-उगलु-चंदण-सयणा-ऽऽसण-जाणैसपमागते वण्णसंपण्णं वूया । तथ्य चंदा-ऽऽदिच्च-णक्खत्त-गह-ताराहूव-उक्क-विज्जुता-मेघ-जलण-सलिल-इंदीवर-इंदगोपक-अहारिट्ठक-पिअंगु-पियदंसणे वण्णसंपण्णं वूया । तथ्य पुप्फ-१० फल-पयाल-पत्त-घत-मंड-तेलवर-सुर-भसण-पदुमुप्पल-पुंदरीक-कोरिटदाम-चंपक-परग्घमल्लाभरणविविधसमाउत्ते वण्णसंपण्णं वूया । तथ्य वण्णसंपण्णे धी-पुरिसे वा चतुप्पदे वा परिसप्पे वा पक्खिम्मि वा पियदरिसणे वण्णसंपण्णं वूया । सव्ववण्णगते पाणजोगीयं वा धातुजोगीयं वा मूलजोगीयं वा वण्णसंपण्णं वूया । तथ्य सव्ववण्णगते अप्पियदंसणे अयुद्धवण्णरामे अवण्णसंपण्णं वूया १ ।

तथ्य सरसंपन्ने हिरन्न-मेघ-हुंदुभि-वसभ-गय-सीह-सदूल-भमर-रघणेमिघोस-सारस-कोकिल-उकोस-कोंच-चैक्काक-१५ इंस-कुरर-वरिहिण-तंतीसर-गीत-चाइत-ललतालघोस-उक्कुट-छेलित-फोदित-खिखिणिमडुरघोसपादुच्चावे सरसंपण्णं वूया ।

तथ्य धी-पुरिस-चतुप्पदे वा परिसप्पे वा पक्खिम्मि वा सरसंपन्ने सरसंपन्नं वूया । तथ्य अमडुरकडुकभणितेसु एवविधपादुच्चावे असरसंपण्णं वूया । २

तथ्य सीह-गय-उसभ-गय-मज्जार-वरिहिण-सुक-चक्रवाक-हंस-भौसय-थलाक-याल-ददुरसव्वगतिसंपन्ने धी-पुरिसे वा चतुप्पदे वा परिसप्पे वा पक्खिम्मि वा गतिसंपण्णं वूया । तथ्य सव्वम्मि अगतिसंपन्नं वूया ३ । २०

तथ्य दढामासे सव्वधातुगते सव्वसंपातसंपन्ने वा धी-पुरिसे वा चतुप्पदे वा परिसप्पे वा पक्खिम्मि वा संपातसंपन्नं वूया । तथ्य चलागासे अप्पसारोसु असंपातोपगते असंपातसंपन्नं वूया ४ ।

तथ्य सव्ववविभत्तगते संठाणोपगतेसु य पियरूवेसु संठाणसंपण्णं वूया । दुविभत्तसंठाणोपगतेसु संठाणहीणं वूया ५ ।

तथ्य जुत्तप्पमाणे सव्वमाणगते सव्वपासंडगते य माणसंपन्नं वूया । तथ्य अयुत्तप्पमाणेसु अपमाणसंपण्णं वूया ६ ।

तथ्य अचमंतरामासे सव्वगारवोपगते सव्वमहासारेसु य सव्वपरग्घेसु य उम्माणसंपण्णं वूया । तथ्य वज्झामासे २५ सव्वअसारेसु य सव्वअसारोपपेतेसु सव्वअप्पग्घेसु सव्व < उम्माणहीणे य > उम्माणहीणं वूया ७ ।

तथ्य उत्तमेसु सव्वउत्तमगत्तेसु सव्वमहाभोगगते धी-पुरिस-चतुप्पद-पक्खिरपरिसप्पगते य सूर-यवसायि-महापर-णगते य सत्तसंपन्नं वूया । तथ्य पच्चरक्खयेसु सव्वणिप्पमागते य धी-पुरिस-चतुप्पद-परिसप्प-पक्खिम्मि वा अच्य-वसिते परक्खहीणे य सत्तहीणं वूया ८ ।

१ नामऽज्ज्ञां हं० त० ॥ २ हृत्थिहान्तर्गतं परं हं० त० एव वर्तते ॥ ३ < > एतथिहान्तर्गतं; पाठः हं० त० नास्ति ॥ ४ संघयणं हं० त० ॥ ५ णतप्पं हं० त० ॥ ६ चक्रवाक-हंसं हं० त० ॥ ७ मासपयालां हं० त० विना ॥ ८ < > एतथिहान्तर्गतं; पाठः हं० त० नास्ति ॥

तत्त्व आणूकं—आणूकलद्धी तिविधा आधारेतत्त्वा भवति, तं जघा—दिवा १ माणुसा २ तिरिक्खगता ३ चेति । तत्त्व देवाणूकाणि दिव्योपलद्धीयं उवलद्धव्वाणि भवति । तत्त्व देवाणूके पुव्वाधारिते देवाणूकविधि दिव्वा असुरा गंधवा जवसा रक्खसा णामा किन्नरा गरुडा महोरगा एवमादयो सकाहि उवलद्धीहि उवलद्धव्वा भवति १ । तत्त्व माणुसाणूके णत्थि विधि २ । तिरिक्खजोणीकाणूके पुव्वाधारिते तिविधमाधारये, तं जघा—पक्खी परिसप्पा ३ चतुपदा चेति । ताणि सकाहि उवलद्धीहि उवलभितव्वाणि भवति उच्चमा-५धम-मञ्झिमाणि ३।१।

तत्त्व चंदा-५५दिक्क-नक्खत्त-गह-साराहूव-अग्गि-विज्जुव्वपाणगते य छायासंपन्नं धूया । सव्वणिप्पभागते सव्वअच्छायागते य छायाहीणं धूया १० ।

तत्त्व अचमंतरामासे द्दामासे मधुरेसु णिद्धेसु सुक्खेसु उद्धं जत्तगते सेम्हपडिहयगते य सेम्हपगतिं धूया । तत्त्व वज्झामासे कडुकेसु कसायेसु सव्वअधोभागगते य धातप्पगतिं धूया । तत्त्व उण्हेसु तिक्खेसु पीतकेसु अंवेसु वा १० वापण्णेषु वा सव्वसमाभागेषु पित्तप्पगतिं धूया । तत्त्व वाते पित्ते संभे वा मिस्सपगतिं धूया ११ ।

तत्त्व सारवंतपडिहवे सव्वसारवंतेसु य सारवंतं धूया । तत्त्व सव्वअसारवंतेसु असारवंतं धूया १२ ।

तत्त्व वण्णसंपन्नस फलं ण्हाणा-५णुलेवणभागी मद्दालंकारभागी सुभगो सुहभागी भवति, वण्णहीणे तेसिं विपत्ति । सरसंपण्णे इस्तरियं इस्तरियसमाणं कित्ति-जससंपण्णं च गहियवक्खं विज्जाभागी य सरसंपण्णे भवति, सरहीणे एतेसिं विपत्ति । गतिसंपण्णे महाजणपरिपारो गणपक्कडुको महापक्खजणसमित्तो य भवति, अगतिसंपण्णे तेसिं विपत्ति । १० संठाणसंपण्णे चक्खुरमणंतं महाजणपियत्तणं च छायामणोरधसंपत्ती संठाणे भवति, असंठाणजुत्ते तेसिं विपत्ति । संघातसंपण्णे आजसमत्थो धलविरियसमत्थो भवति, असंघातसंपण्णे एसिं विपत्ति । माणसंपण्णे माणरिहो माणणीओ य भवति, माणहीणे तेसिं विपत्ति । उम्माणसंपण्णे आयुसारवं साधीणं एत ज्ञेय य विपुलतरं फलं भवति, उम्माणहीणे तेसिं विपत्ति । सत्तसंपण्णे सूरुो यवसायी, सत्तहीणे मीरू अचरवसिते थ । आणूके जघाणूकं फलं । छायासंपण्णे-सुभभोगं धूया, छायाहीणे तेसिं विपत्ति । पगतीसु < जैधापगतं धूया । > सारवंते सारवंतं धूया, असारवंतेसु २० असारवंतं धूया ॥

॥ इति महापुरिसदिण्णया अंगविज्ञाय लक्खणो णामाज्झायो सत्ततीसत्तिमो सम्मत्तो ॥ ३७ ॥ छ ॥

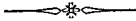
[अट्ठतीसइमो वंजणज्झाओ]

अपाणुव्वं सल्ल भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्ञाय वंजणो णामाज्झायो । तं जघा—तत्त्व दक्खिणगते पुरिसस पमत्थं, यामतो इत्थीय । तत्त्व दक्खिणगतेसु परसेसु दक्खिणगते वंजणं ति धूया, यामेसु गतेसु यामपस्से वंजणं ति धूया । २। पुरिमेसु गतेसु पुरिमे वंजणं ति धूया, पच्छिमेसु गतेसु पच्छिमे वस्से वंजणं ति धूया । उद्धंभागेसु उद्धं वंजणं ति धूया, अधोभागेसु अधो वंजणं ति धूया । पुण्णामेसु पुण्णामं वंजणं ति धूया, धीगामेसु धीगामं वंजणं ति धूया । द्दामासे द्दहेसु गतेसु वंजणं ति धूया । चलाभासे चलेसु गतेसु वंजणं धूया । णिद्धामासे णिद्धेसु गतेसु वंजणं ति धूया । लुक्खामासे लुक्खरेसु गतेसु वंजणं ति धूया । मच्चमत्थगतेसु सत्थाभिद्धं वंजणं ति धूया । मच्चमूलगते फट्ठाभिद्धं वंजणं ति धूया । मच्चधातुगते णामाण-हेट्ठ-गत्ताभिद्धं वंजणं ति धूया । अभिद्धं अभिपानं धूया, छिन्नेसु छिन्नं ३० धूया, वनेसु वनं धूया, वण्णत्तेसु पिळ्ळं धूया, सव्वधातुगते बुत्तिगदं धूया, मूलधातुगते बुत्तिगदं फट्ठां धूया, वण्णत्तेसु पिळ्ळणं चम्मणीं वा धूया, उद्धं गीषाय रत्तलामाय, घाट्टसु सत्थाधिकरणलामाय, धरे रायपरिमत्तंभाय, अभिस्सु

णायकलंभाय, धणंतरे धणलंभाय, सामेसु आमरणलंभाय, वज्जेसु जंघासु या पवासाय, चलेसु जाणलंभाय, धीणामेसु धीलंभाय, पुण्णामेसु मणुस्सलंभाय, अंगुट्ट-कणेट्टिकायं धण-हितय-कुक्खि-पोरिससैमामासे सव्ववज्जेसु य अपचलंभाय वूया । दंघेसु वंचं वूया, मोक्खेसु मोक्खं वूया, तणुसु वल्ललामं वूया, अणुसु धण्णलामं वूया, विट्ठिण्णेसु भूमीलामं वूया, ओट्टे सुहलंभाय, अण्णेसु रोगं वूया, महंतेसु रणं वूया, महापरिग्गहेसु महापरिग्गहं, अपरिग्गहेसु अपरिग्गहं, पसंतेसु पमोदं, अप्पसण्णेसु विवादं, मतेसु मरणं, आहारेसु आहारं, सिबेसु आरोगं, मुदितेसु हासं, दीणैसुं सोकं, ६ सामेसु मेधुणसंजोगं ॥

॥ इति महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय वंजणऽज्जायोऽट्टतीसतिमो सम्मत्तो ॥ ३८ ॥ छ ॥

[एगूणचत्तालीसइमो कण्णावासणज्जाओ]



अथापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय कण्णावासणो णामाज्जायो । तं जघा—तत्थ कण्णा विज्जिं-
स्सति ण विज्जिस्सति चि पुव्वमं धारयित्थं भवति । तत्थ वज्जामासे चलामासे णीहारेसु सुइतसाधाण्णेसु कण्णा 10
विज्जिस्सति चि वूया । तत्थ धणु-चाप-सैर-पावरणक-आभरण-मह-तल्लिए वाधुज्जमंड-धरवास-पकरणे आलिंगिते चुंविते
पहाणा-ऽणुलेवणे विसेसकिपेस्समाणयणे य मलाभरणे य मिधुणचरेसु सत्तेसु पक्खी-चतुप्पदेसु कीड-किविहगेसु
मिधुणसंपयुत्तेसु कण्णा विज्जिस्सति चि वूया । तत्थ पुण्णामघेज्जामासे पुण्णे व चले णिद्धे दक्खिणे य कन्ना
विज्जिस्सति चि वूया । तत्थ आहारेसु अच्चं तरामासे द्दामासे दीणैसु दीणसाधारण्णेसु वा कण्णा विज्जिस्सति चि
वूया । तत्थ लुक्खेसु सुक्खेसु तुच्छेसु कण्णा ण विज्जिस्सति चि वूया । तत्थ विज्जिस्सति चि पुव्वाधारिते पुण्णामेसु 15
रायपुरिसस्स वा सूरस्स वा उच्चमस्स वा विज्जिस्सति चि वूया । णपुंसकेसु किलिट्ठस्स विज्जिस्सते, से य किलिट्ठे
द्विभं मरिस्सतीति वूया । धीणामेसु ण ताव विज्जिस्सति, जता य विज्जिस्सति < ईसपचं विज्जिस्सति > चि वूया ।
दढेसु वामेसु चिरा विज्जिस्सति जिणाती वा णिपुण्णे भविस्सति । दक्खिण्णेसु दक्खिण्णाचारवेस्सस्स विज्जिस्सति चि
वूया । पुण्णेसु बहुअण्ण-पाण-भोगयणस्स विज्जिस्सति चि वूया । तुच्छेसु अप्पण-पाणं कुलं गमिस्सति चि वूया ।
सुदतेसु अषण्णसुइतं कुलं गमिस्सति चि वूया । दीणैसु अच्चंतदीणं कुलं गमिस्सति चि वूया । जण्णैयेसु 20
बहुउस्सयं कुलं गमिस्सति चि वूया । सदेयेसु विसुयकिच्चियं कुलं गमिस्सति चि वूया । दंसणीयेसु दरि-
सणीयस्स विज्जिस्सति चि वूया । गंधेयेसु णिचसुगंधस्स विज्जिस्सति चि वूया । रसेज्जेसु पभूतण्ण-पाणस्स
विज्जिस्सति चि वूया । फासेज्जेसु पभूतच्छादणा-ऽणुलेवणस्स विज्जिस्सति चि वूया । मेतेयेसु इट्ठा इट्ठस्स
विज्जिस्सति चि वूया । उपहुत्तेसु बहुरोगस्स दिज्जिस्सति चि वूया । सामेसु रतिपयाणस्स दिज्जिस्सति चि
वूया । पुत्तेयेसु बहुपुत्तस्स दिज्जिस्सति चि वूया । कन्नेयेसु बहुवन्नागस्स दिज्जिस्सति चि वूया । चले यमलोदीरणे 25
एरुपतिम्मि पतिट्ठा भविस्सति चि वूया । जतिसु अंगैसुं चला यमलोदीरणं भवति ततिसु पतिसु पतिट्ठा भविस्सति चि
वूया । ईलजमलोदीरणे परंपरगते या णीशरोदीरणे ण कर्हिचि सातिट्ठिस्सति चि वूया, बट्टजलचरा य भविस्सति
चि वूया । असारसु अप्पक्खे पंधंपक्खं "रोजयिस्सति चि वूया । पुण्णामघेजे यमलोदीरणे" पति-देवरेसु संचिट्ठिस्सति
चि वूया । पुण्णामघेजे चलोदीरणे कण्णा दुस्सिस्सति चि वूया । उच्चं णामीय इस्सरियं कारयिस्सति चि वूया ।
अधोणामीयं उच्चं जाणुं वेस्सगोचरा भविस्सति चि वूया । पादजंघे दासचं कारयिस्सति चि वूया । जमकर्णामो- 30

१ पजेसु १०० वीना ॥ २ धीनामलंभाय १०० वीना ॥ ३ रिससमासे १०० वीना ॥ ४ नामऽज्जा १०० वीना ॥
५-६ विज्जिस्सति १०० वीना ॥ ७ सरपाचणक-आमरणमह-तल्लिएयामुज्जमंड १०० वीना ॥ ८ < १ > एवविहान्तं पट्टः
१०० वीना ॥ ९ स्सति जणायाचिणीपुणे १०० वीना ॥ १० किच्चियं १०० वीना ॥ ११ सु जला य महोदी १०० वीना ॥
१२ जलज्ज १०० वीना ॥ १३ पंचपयसं रोज १०० वीना ॥ १४ राजयि वीना ॥ १५ दीरणे ण पतिदेवरेसु
संतिट्ठस्सति १०० वीना ॥

दीरणे समप्रतं विजिस्सति त्ति वूया । जतिथं यमकं थीणामवेजं भवति तविसु सप्तत्तिसु संविट्ठिस्सति त्ति वूया । अथोभागेसु पेस्सजातीयस्स विजिस्सति त्ति वूया । उरुभागेसु थीणामेसु तुहजातीयस्स विजिस्सति त्ति वूया । उदंभागेसु पुण्णामवेजेसु उच्चमतरागम विजिस्सति त्ति वूया । वंभेजेसु वंभगस्स विजिस्सति त्ति वूया । खत्तेयेसु खत्तिथस्स विजिस्सति त्ति वूया । वेस्सेजेसु वेम्मस्स विजिस्सति त्ति वूया । सुदेजेसु सुदस्स विजिस्सति त्ति वूया । महद्वययेसु महद्वयस्स, मज्झिमवयेसु मज्झिमवयस्स, जोच्चणत्थेसु जोच्चणत्थस्स, थालेजेसु थालस्स विजिस्सति त्ति वूया । अंतेसु विट्ठिकस्स, चलेसु फारकस्स, कारुजोपकरणेसु य ददेसु याणियकस्स, इम्मरिएसु इम्मरोपकरणेसु य इस्सस्स विजिस्सति त्ति वूया ॥

॥ इति महापुरिसदिज्ञाय अंगविज्ञाय कण्णायसणो णामाज्जायो एगूणचत्तालीसतिमो सम्मत्तो ॥३९॥छ॥

[चत्तालीसहमो भोयणज्जाओ]



10 णमो भगवतो अरहतो जसयतो महापुरिसस्स महावीरवदमागस्स । अधापुचं सलु भो ! महापुरिसदिज्ञाय अंगविज्ञाय भोयणो णामज्जायो । तं सलु भो ! तमणुवक्खजस्सामो । तं जया-तथ अत्थि भोयणं गत्थि भोयणं नि पुच्यमाचारिवत्थं भवति । तत्थ अच्चंतरामासे णिद्धामासे सुद्धामासे पुण्णामासे पुण्णामवेज्जामासे सुदितामासे ददामासे उल्लोगिते उद्धस्सिते माता-पितृभायणे उक्कट्टे अण्णोहिते सच्चपुण्णपादुच्चावणे दंतोद्ध-जिच्च-सालुक्क-गल-कयोळपरामासे आहारितं वूया । तत्थ उल्लोगिते णिगिण्णे अस्सामे संपाविते परिलीडे आहारितं वूया । तत्थ

15 णामोद्ध-यच्छंणे इत्थि-पस्सोदरपरामासे आहारितं वूया । तत्थ सच्चआहार-भायणगते मूलगते वा संघगते वा पत्तगते वा पुक्कगते वा फलगते वा आहारितं वूया । तत्थ वज्जामासे चळामासे लुक्कामासे कण्णामासे तुच्छामासे <1 दीणामासे > णपुंसकामासे सच्चणीहारगते अणाहारितं वूया । तत्थ उच्चसिते सुविते जंभिते णिम्मज्जिते णिद्धिते थपमट्टे थपमज्जिते अथलोणिते पण्णट्टे पंमुके ओलोणिते ओसारिते अणाहारितं वूया । तत्थ अच्चंतरामासे भाणितत्थं । तत्थ आहारि पुच्यमाचारिते आहारं तिथिमाचारये, तं जया-पाणजोणीगणं मूलजोणीगणं धातुजोणीगणं । तत्थ

20 चळामासे सच्चपाणगते सच्चपाणोत्तरणे सच्चपाणमए उत्तरणे सच्चपाणजोणीणामवेज्जउत्तरणे सच्चपाणजोणीणाम-विच्चयी-पुरिमगते सच्चपाणजोणीपट्टिरुवगते थ एंविथसद्ध-रुव-रस्स-गंधपादुच्चावे पाणजोणी वूया । तत्थ केस-लोम-णहगते मंगुगते सच्चमूलगते सच्चमूलजोणीगते सच्चमूलजोणीउत्तरणे सच्चमूलजोणीमए उत्तरणे सच्चमूलजोणीणामविच्च-उत्तरणे सच्चमूलजोणीणामवेज्जोदीरणे थ-पुरिसगते एंविथसद्ध-रुव-पादुच्चावे मूलजोणीगणं वूया । तत्थ सच्चददामासे सच्चधातुगते इत्थि सच्चधातुजोणीगते उत्तरणे इत्थि सच्चधातुजोणीणामवेज्जो उत्तरणे सच्चधातुजोणीणामवेज्जोदीरणे

25 थ-पुरिसगते एंविथसद्ध-रुव-रस्स-गंध-फासपादुच्चावे धातुजोणीगणं वूया ।

तत्थ पाणजोणीगते पुच्यमाचारिते पाणजोणीगतो आहारो दुद्धं दधि णयणीतं तर्कं घृतं मंसं वसा मधुं ति । तत्थ पाणजोणीगओ आहारो संसओ असंसओ त्ति पुच्यमाचारइयव्ययं भवइ । तत्थ <1 संसए > संसयं वूया, असंसये असंसयं वूया । तत्थ संसयं दुद्धं दधि मधुं ति । तत्थ संसयाणि दुद्धं वा दधि वा सोतगुलं सक्ख वा थण्णेहिं दच्चेहिं संगनानि थण्णे मधुं ति । तत्थ थग्गे इत्थि मंग्गेयं इत्थि ति पुच्यमाचारइयव्यं भवइ । तत्थ अग्गेयेसु

१ 'वीरस्स य' इ० त० ॥ २ मोतणो णामज्जा' इ० त० ॥ ३ 'उच्छंणे इ० त०' तिना ॥ ४ <1 > एत्थिहा-
न्यनं' पाठः इ० त० नास्ति ॥ ५ उक्कोहिते इ० त० तिना ॥ ६ अथलोणिते प' इ० त० । अथले अथजिते प' ति० ॥
७ पण्णट्टे इ० त० तिना ॥ ८ इत्थिहाणगते पाठः इ० त० एव वर्णते ॥ ९ 'णीमज्जो इ० त० ॥ १० 'माहारयियव्यं
भवति इ० त० ॥ ११ <1 > एत्थिहाणगते पदं इ० त० नास्ति ॥ १२ इत्थिहाणगते पदं इ० त० एव वर्णते ॥ १३ 'माहा-
रयियव्यं भवति इ० त० ॥

अग्गेयं वूया, अणग्गेयेसु अणग्गेयं वूया । तत्थ अग्गेयाणि धयं वा मंसं वा दुद्धं वा सिद्धं पसा वा । तत्थ अणग्गे-
याणि दुद्धं वा ससत्तं दधि णवणीतं मधुं ति । तत्थ सुक्केसु सुक्कवण्णपडिरूवणए य दुद्धं वा दधि वा ॥ तर्कं वा ॥
णवणीयं वा [वूया] । तत्थ पीतके पीतवण्णपडिरूवणए य ॥ धेयं वूया ॥ तत्थ अरसेसु तिकसद्धारणेसु
सव्वसत्यणए य मंसं वूया । ॥ तत्थ सामेसु वसं मधु वा वूया । ॥ तत्थ मधुरेसु धयं वा दुद्धं वा वूया ।
तत्थ बालेयेसु दुद्धं वूया । तत्थ सिद्धेसु धयं वूया । तत्थ अंवल्लेसु दधिं वा तर्कं वा णवणीयं वा ॥ वूया ॥ 5
तत्थ पणेसु सुद्धेयेसु दधिं वूया । सारवंतेसु णवणीयं वूया । असारवंतेसु तर्कं वूया । दुग्गंवेसु वसं वूया ।
॥ मुद्धेसु वसं वूया । ॥ इति पाणजोणीगतो आहारो ।

तत्थ मूलजोणिणए आहारे पुंवाधारिए मूलजोणीगतं औधारं तिविधमाधारये—मूलगतं खंधगतं अग्गगतं
चेति । तत्थ अधोभागोसु गत्तेसु अधोभागतोपकरणे < सव्वमूलगतते > सव्वमूलोपकरणे सव्वमूलमये उपकरणे
॥ सव्वमूलजोणीनामधेज्जोपकरणे ॥ सव्वमूलजोणीनामधेयोदीरणे धी-पुरिसगतते एवंविधसद्-रूव-रस-गंध-फास-10
पादुच्चावे मूलगतं वूया । तत्थ मूलगतते पुव्वाधारिते मूलगतं तिविधमाधारये—मूलगतं कंदगतं तजगतं चेति । तत्थ
मूलगतते मूलगतं, कंदगतते कंदगतं, तयागतते तयागतं वूया ।

तत्थ सव्वमाणेसु गत्तेसु सव्वमाणतोपकरणे सव्वखंधगतते सव्वखंधोपकरणे सव्वखंधगतते उवणणे सव्वखंध-
णामधेजे उवकरणे सव्वखंधगणयणामधेज्जोदीरणे धी-पुरिसगतते एवंविधसद्-रूव-रस-गंध-फासपादुच्चावे खंधगतं वूया ।
तत्थ खंधगतते पुव्वाधारिते खंधगतं दुविधमाधारये—खंधगतं णिज्जासगतं 'चेव सव्वखंधगीए < सव्वसारगतते > 15
रंधगतं वूया । तैत्थ सिरिविद्धकसद्-लया-सल्लईहिं कास-सोणिय-मूक-लसिया सव्वणिज्जासगतते य णिज्जासगतं वूया ।

तत्थ उद्धगतते अधोसिरमुहामासे उद्धरंत्तुसिरोमुहोपकरणे ॥ सव्वअग्गणए सव्वअग्गोपकरणे ॥ सव्व-
अग्गणए उपकरणे सव्वअग्गणामधेजे उपकरणे सव्वअग्गणामधेज्जोदीरणे धी-पुरिसगतते य एवंविधसद्-रूव-रस-गंधपादुच्चावे
अग्गगतं वूया । तत्थ अग्गगतते पुव्वाधारिते अग्गगतं तिविधमाधारये, तं जघा—पत्तगतं पुप्फगतं फलगतं चेति । तत्थ
अणूसु सव्वपुप्पुसु य सव्वपत्तगतते य पत्तगतं वूया । तत्थ पत्तगतते पुव्वाधारिते पत्तगतं तिविधमाधारये—तरुणं वयत्तं 20
पंडुं चेति । तत्थ बालेजेसु तरुणं पत्तं [वूया], तत्थ वयत्तेसु वयत्तं पत्तं वूया, तत्थ महव्वयेसु य महव्वयं वूया ।

तत्थ सव्वमुद्धितेसु सव्वपुप्फगतते य पुप्फगतं वूया । ॥ तैत्थ पुप्फणए पुव्वाधारिए पुप्फगतं तिविहमाहारए—
पत्तेगपुप्फं गुल्लुकपुप्फं मंजरीपुप्फं चेति । तत्थ एक्कामासे एक्ककेसु ॥ एक्कामरणे एक्कोपकरणे एक्कचारिसु सत्तेसु
एक्कसाहागतते एक्कगुल्लिगदणे य पत्तेकपुप्फं वूया । तत्थ वहुकेसु गत्तेसु बहामरणरू-बहोपकरणे संघचारिसु सत्तेसु
वहुसाहागतते य वहुअंगुल्लिगदणे य गुल्लुकपुप्फं वूया । तत्थ दीहेसु सव्वमंजरिगतते य मंजरीपुप्फं वूया । इति 25
पुप्फगतं ।

तत्थ पुण्णामेसु सव्वफलगतते य फलगतं वूया । तत्थ फलगतते पुव्वाधारिते फलगतं चतुन्नियधमाधारये, तं
जघा—रक्कगतं गुम्मगतं 'यिह्गिनं छुपणं चेति । तत्थ उद्धभागोसु काययंतेसु सव्वरक्कगतते य रक्कफलयनं वूया ।
तत्थ दीहेसु इडिल्लेसु य सव्वयडिल्लेसु य यडिल्लगतं वूया । तत्थ मस्सिमाणंतकायेसु सव्वगुम्मगतते य गुम्मफलयनं
वूया । तत्थ पधंवरकायेसु सव्वछुपणगतते य छुपणफलं वूया ।

१-२-३-४-५ इत्यधिहान्तगतः पाठः ६० त० एव वर्तते ॥ ६ पुत्र्यमाहारिए ६० त० ॥ ७ आहारं ६० त० ॥
८ < १-२-३-४-५ इत्यधिहान्तगतः पाठः ६० त० नास्ति ॥ ९ इत्यधिहान्तगतः पाठः ६० त० एव वर्तते ॥ १० चेति ६० त० ॥ ११ गण-
सव्यणए सव्वसारं १० ॥ १२ < १-२-३-४-५ इत्यधिहान्तगतः पाठः ६० त० नास्ति ॥ १३ तत्थ वत्तिरे चिट्ठकसत्तइया ६० त० ॥
१४ 'जययति' ६० ॥ १५ इत्यधिहान्तगतः पाठः ६० त० एव वर्तते ॥ १६ इत्यधिहान्तगतः सन्तमः ६० त० एव वर्तते ॥
१७ 'उत्तुपुप्फ' ६० त० ॥ १८ यडिल्लपुप्फं वयं ॥
भाग २३

तस्य अणुसु सञ्चयणगते य घण्णगतं ब्रूया । तस्य घण्णसु पुञ्जाधारितेषु सञ्चयणं द्विविधमाधारय, तं जघा-
पुञ्चयणं अवरणं चेति । तस्य पुरत्वमेसु गतेसु पुरत्वमेसु य सद-रूपेषु ६३ पुञ्चयणगते य पुञ्चयणं ब्रूया, तस्य
पच्छिमेसु गतेसु पच्छिमेसु य सद-रूपेषु ६४ सञ्चयणगते य अवरणं ब्रूया ।

तस्य पुञ्चयणे पुञ्जाधारिते पुञ्चयणं अद्विविधमाधारये, तं जघा-साली कोद्वे वा वीही कंगू रालका वरका
५ सामाग(ग) तिला वेति । तस्य दीहेसु साली वा वीही वा, पुञ्चसु तिले ब्रूया । तस्य कसेसु कोद्वे वा कंगू वा रालके वा
वरके वा सामाकं ब्रूया । तस्य रतेसु कंगू वा कोद्वे वा ब्रूया । तस्य पीतेसु रालके ब्रूया । फस्सेसु सामाकं ब्रूया ।
सामेसु वरके ब्रूया । णिद्वेसु सालिं वा वीहिं वा कंगुं वा तिले वा ब्रूया । तस्य लुक्खेसु कोद्वे वा रालके वा वरके
वा सामाकं वा ब्रूया । तस्य मुसलसमाहृतगते साली वा वीही वा कंगू वा रालके वा वरके वा सामागं वा ब्रूया ।
तस्य घटे वा मासिते वा कोद्वे ब्रूया । तस्य पिद्वे वा पीलिते वा तिले ब्रूया । इति पुञ्चयणं ।

१० तस्य अवरणे पुञ्जाधारिते अवरणं तेरसविधमाधारये । तं जघा-मासा मुग्गा चणका कलावा णिष्कावा
मसूरा कुलत्वा तुवरयो यवा गोधूमा कुम्भमा सासवा अतसीओ ति । तस्य पीतेसु चणके वा कलाए वा तुवरीओ वा
ब्रूया । तस्य कालेसु मासा वा मुग्गा वा ब्रूया । तस्य सेवेसु णिष्कावे [ब्रूया] । तस्य कडुकेसु सासवे ब्रूया । तस्य
कसायेसु गोधूमे ब्रूया । तस्य अंवेसु चणके कुलत्वे वा ब्रूया । इति अय[र]णं ।

तस्य सञ्चयणगतं चतुर्विधमाधारये, तं जघा-संपगतं वह्निगतं तणनं छुमगनं चेति । तस्य मधुरेसु मासा
१५ वा मुग्गा वा मसूरा वा कलावा [वा] ब्रूया । तस्य णिष्कावा कुम्भमा वा अतसीओ वा तुवरीओ वा ब्रूया ।
तस्य संपगते तिले वा कुम्भे वा तुवरीओ वा अतसीओ वा सासवे वा ब्रूया । तस्य वह्निगते णिष्कावे वा कुलत्वे
वा मसूरे वा ब्रूया । तस्य शुम्मगते (छुमगते) मासे वा मुग्गे वा चणके वा कलावे वा ब्रूया । तस्य भाणगते
(तणगते) साली वा वीही वा कोद्वे वा रालकं वा जवे वा गोधूमे वा वरके वा ब्रूया ।

तं पुग सञ्चयणगते द्विविधमाधारये-कोसीघणं ६५ चेत् अकोसीघणं चेत् । ६६ तस्य अंगुलीगते णहगतं
२० पेलगते धविक्कगते पसिच्चिक्कगते सञ्चयणगते सञ्चयणसंवल्लिकाफलेसु सञ्चयणसिगते य कोसीघणं ब्रूया, तं जघा-
तिला मासा मुग्गा चणका कलावा णिष्कावा कुलत्वा मसूरा तुवरीओ ति । अवसेसाणि अकोसीघणाणि । इति
अंगगणं ।

तस्य सञ्चयणगते द्विविधमाधारये, तं जघा-महुरं तित्तं कसायं अंविळं कडुकं लवणमिति । तस्य अचमंतरामासे
सञ्चयणगते मधुरं ब्रूया । तस्य तिक्खामासे सञ्चयणगते य कडुकं ब्रूया । तस्य विद्वेसु सञ्चयणगते य कसायं
२५ ब्रूया । तस्य पायण्णेषु सञ्चयणगते य लवणं ब्रूया । तस्य अक्खिण्णेषु कण्णगते य कसायं ब्रूया । तस्य
यूमागगते य रेतगते सेयमलगतं य सञ्चयणगते य लवणं ब्रूया । तस्य चलामासे सञ्चयणगते य तित्तं ब्रूया ।

तस्य आधारं पुञ्जाधारिय आधारं चतुर्विधमाधारये, तं जघा-भोगणगतं पाणगयं भस्सणगतं लेहणगतं चेति ।
तस्य पुण्णामधेज्जामासे सञ्चयणगते मध्यभोगणगते मध्यभोगणपटिरुणगते य भोगणं ब्रूया । तस्य णिद्वामासे सञ्चयणगते य
पाणगयं सञ्चयणगते य भस्सणगतं य पाणगयं ब्रूया । तस्य द्दरुत्थानरेसु द्दरुत्थानेषु य सञ्चयणगते य सञ्चयणगते
३० संभवेसु य संपीसु य भस्सणगतं ब्रूया । तस्य सञ्चयणगते य लेहणगतं य लेहणं ब्रूया ।

१ इत्थिक्कगतं पाठः ६० त० ६२ वत्ते ॥ २ इत्थ घटे वा मासिते वा ६० त० ॥ ३ तत्थपरु ६० त० विना ॥
४ चण्णे वा दुवियं ६० त० ॥ ५ इत्थिक्कगतं पाठः ६० त० ६२ वत्ते ॥ ६ अंगुलीगते चणगजो पल्लगय चयिक्कगय
पसिच्चिक्कगय सञ्चयणगते सञ्चयणसंवल्लिकाफलेसु सञ्चयणसिगते य कोसीघणं ६० त० ॥ ७ अंगगणं ६० त०
विना ॥ ८ विपदेषु ६० त० ॥ ९ पाणगते ६० त० ॥ १० य सञ्चयणगते ६० त० ॥

तत्थ भोयणे पुव्वाधारिते भोयणं विविधमांधाये-विसयगतं चैव ५१ षणगतं चैव । ५२ तत्थ सब्वविसयकडे ५३ सब्वरासिकडे ५४ सब्वपुंजकडे सब्वउरसयकडे सब्वविवद्धीकडे सब्वविसयकडे य विसयं वूया । तत्थ सब्वघणकडे सब्वपाणिकडे सब्वपुंजुकडे सब्ववित्थइकडे सब्वघणणकडे य घणणं वूया । तत्थ विसयकडे पुव्वमाधारिते विसोदणं वा अतिकूरकं वा ५५ गुंलकूरकं वा घतकूरकं वा ५६ वूया । तत्थ सब्वविसयोपलद्धीयं विसयोदणं वूया । उम्मट्टम्मडेसु य आहाराहारेसु सब्वअतिमासकडे य अतिकूरं वूया । तत्थ सब्वणेहोपलद्धीयं सब्वघतोपलद्धीयं च घतकूरकं वूया । ५७ तत्थ सब्वमधुरोपलद्धीयं सब्वगुलोपलद्धीयं च गुलकूरं वूया ।

तत्थ घणन्नकडे पुव्वाधारिते विलेपिं वा पायसं वा कसिरिं वा दधितावं वा तक्कुलिं वा अंबेलिं वा वूया । तत्थ महुरोपलद्धीयं विलेपिं वा पायसं वा कसरिं वा वूया । तत्थ अंबिलोपलद्धीयं दधितावं वा तक्कुलिं वा अंबेलिं वा वूया । तत्थ मधुरेसु पुव्वाधारितेसु आपुणेयेसु विलेपिं वा वूया । तत्थ धालेयेसु सब्वदुद्रकडे य पायसं वूया । तत्थ कण्ठेसु संखतेसु य कसरं वूया । तत्थ अंबेसु पुव्वाधारितेसु दधितावं वा तक्कुलिं वा अंबेलिं वा वूया । तत्थ ५८ सारेसु दधितावं वूया । असारेसु तंक्कुलिं वूया । तत्थ पागतेसु आसैतेसु असारेसु य अंबेलिं वूया ।

तत्थ भोयणस सब्वोपलद्धीयं सालि-वीही-कोद्व-कंगु-रालक-जय-नोधूम-यरक-सामागो त्ति जधुत्ताहिं उपलद्धीहिं उपलद्धवा भवंति । तत्थ अधण्णोपलद्धीयं मुग्गा मासा चणका कलया णिप्फावा मसूरा तुवरीओ वेति जधुत्ताहिं उपलद्धीयं उपलद्धवा भवंतीति । [तत्थ] भोयणस नेहोपलद्धीयं पाणजोणीगता ५९ मूल-जोणीगता ६० चेति ।

15

तत्थ भोयणस उपसेकोपलद्धीयं रसो जूसो कुल्लयो खलको दधि दुद्धं तक्कं अंबिलकं पालीको त्ति । सो उप-सेको दुविधो-पाणजोणीसंभवो चैव ६१ मूलजोणिसंभवो चैव । ६२ सो पुण दुविधो-अंबो चैव मधुरो चैव । सो पुण दुविधो-अग्गेयो चैव अणग्गेयो चैव । सो पुण दुविधो-लवणो चैव ६३ अंबलवणो चैव । ६४ तत्थ भोय-णस उपसेकोपलद्धीयं मूलगता चैव अगगता चैव ।

तत्थ मूलगता सब्वपक्खिमये उपकरणे सब्वपक्खिणामधेज्जे उपकरणे सब्वपक्खिणामधेज्जोदीरणे धी-पुरिसगते २० एवंविधसइ-रूय-रस-गंध-फासपादुब्भावे पक्खिमसं वूया । तत्थ सब्वपरिसपगतते सब्वपरिसप्पोपकरणे सब्वपरिसप्पमते उपकरणे ६५ सब्वपरिसप्पणामधिजे उपकरणे ६६ सब्वपरिसप्पणामधेज्जोदीरणे धी-पुरिसगते एवंविधसइ-रूय-रस-गंध-फासपादुब्भावे ६७ परिसप्पमसं वूया । तत्थ चउप्पए पुव्वाधारिए चउप्पयं तिविहमाहारये, तं जद्दा-गम्मा रण्णा [गामारण्णा चेति] । तत्थ अचंभंतरेसु गतेसु अचंभंतरगाम-ग्गराए [य अचंभंतरगाम-ग्गरचतुप्पदे य] एवंविहसइ-रूय-रस-गंध-फासपाउब्भावे ६८ चउप्पदमसं वूया । तत्थ वाहिरचंभंतरेसु गतेसु सब्ववाहिरचंभंतरराते य सब्वगाम- २५ रण्णचतुप्पदे य एवंविधसइ-रूय-रस-गंध-फासपाउब्भावे गामारण्णगतं वूया । सब्ववाहिरेसु गतेसु सब्वआरन्नगते य सब्वआरण्णपडिरूयगते य एवंविधसइ-रूय-रस-गंध-फासपाउब्भावे आरन्नं वूया ।

तत्थ चतुप्पदमंसे पुव्वाधारिते उद्धंभागेसु उद्धंगीवा-सिपो-सुद्धामासे सब्वसिंणिते सब्वसंगलिकागतेसु धन्नेसु सब्वसंगलिकाफलेसु वच्छेसु सिंणीणं चतुप्पदाणं मंसं वूया । तत्थ अधोभागेसु सब्वअंगगते सब्वअसंगलिताफलेसु वच्छेसु असिंणीणं चतुप्पदाणं मंसं वूया ।

30

१-२ ५१ एतधिहान्तर्गतः पाठः इ० त० नास्ति ॥ ३ सब्वविसयकडे सं ३ पु० ॥ ४ पुडकडे इ० त० ॥ ५ ५१ एतधिहान्तर्गतः पाठः इ० त० नास्ति ॥ ६ कसिरिं इ० त० ॥ ७ अनु वेलिपिं इ० त० विना ॥ ८ कण्ठेसु संखतेसु इ० त० ॥ ९ तत्थ सस्ता इ० त० ॥ १० यहुलिं वा वूया इ० त० ॥ ११ असेतेसु इ० त० विना ॥ १२-१३-१४-१५-१६ इत्यधिहान्तर्गतः पाठः इ० त० एव वर्तते ॥

तस्य चतुष्पदेसु परिमितावपलद्वीए-तस्य कायमंतेसु कायमंता विष्णेया । मञ्जिमक्रायेसु मञ्जिमक्राया विन्नेया । मञ्जिमाणंतरकायेसु मञ्जिमाणंतरकाया विन्नेया । पञ्चवरकायेसु पञ्चवरकाया विष्णेया । सेतेहि सीता, पीतेसु पीता, रत्तेसु रत्ता, कण्ठेसु कण्ठा, णीलेसु णीला, पंडुरेसु पंडुरा, फरुसेहिं फरुसा, चित्तेहिं चित्ता, घोसवेतेहिं घोसवंता, मधुरघोसेहिं मधुरघोसा, महुररुवेहिं मधुररुवा, पियदंसणेहिं पियदंसणा, यीणामेहिं यीणामा, पुष्णामेहिं पुष्णामा, णपुंसकेहिं णपुंसका विष्णेया । इति चतुष्पयजोणी ।

तस्य पक्किरगते पुञ्जाधारिते थलयरा जलयरा पुञ्चमाधारयितव्वं भवति । तस्य सवरत्यलेसु सव्यणिष्णेसु सवरजलगते सवरथलगते सव्यजलोपजीविसु सव्यजलयेसु सव्यजलोपकरणेसु य जलयरं वूया । तस्य पक्किरसु पुञ्जाधारितेसु पक्की ति विघमाधारये-पुष्फ-फलमोगी मंस-रहिरमोगी < १ > धणमोगी > चेति । तस्य मुदितेसु सव्यपुष्फ-फल-मंते य पुष्फ-फलमोगी वूया । तस्य सव्यसत्यगते सव्यरुधिरभोगिसु सवरमंसरधिरगते य मंसरधिरमोगी वूया । तस्य १० धणूसु मव्यधणगतये य धणमोगी वूया । तस्य पक्किरसु अपरिमियांतो उपलद्वीतो तस्य जधुत्तेण उपलद्वच्चं भवति । तस्य कायवंतेसु पुष्णेसु सव्यफलगते य उपलद्वीहिं सव्यपक्किर उपलद्वच्चा भवंति । इति पक्किरगयं मंसं वूया ।

तस्य परिसपे पुञ्जाधारिते थलयरा जलयरं चि पुणरवि औधारयितव्वं भवति । जधुत्ताहिं उपलद्वीहिं थलयरा जलयरा उपलद्वच्चा भवंति । ११ कायवंताहिं उपलद्वीहिं कायवंतो परिसप्पा उपलद्वच्चा । यष्णोपलद्वीहिं वष्णवंतो परिसप्पा उपलद्वच्चा इति परिसपयं मंसं वूया । तस्य सव्यं बुविधमाधारये, तं जघा-अइमंसं सुकमंसं चेति ।

१२ तस्य णिद्वेसु सव्यदगते य अइमंसं वूया । तस्य सव्यलुक्खेसु सव्यसुक्खमंसगतये य सुक्खमंसं वूया । इति मंसगतं । तस्य मुदितेसु वस्यये भोगयं ति वूया । तस्य दीणेषु उवहुतेसु य मतकभोगयं १३ यीं सट्ठकभोगयं वा १४ वूया । तस्य अवत्यितेसु ण वि दीणेषु ण वि मुदितेसु य दासीणं भोगयं वूया । तस्य बालेयेसु उत्थाणके वा सत्ताहि-कायं वा घालोपणये वा मुत्तं वूया । तस्य सव्यकामोरलद्वीयं सव्यकामुपजुत्ते सव्यबंधुजोपलद्वीयं च बंधुजे मुत्तं वूया । तस्य सव्यदेवगते सव्यदेवोरलद्वीयं देवयागे मुत्तं वूया । तस्य सव्यधम्मोपलद्वीयं जातीयं जण्ये वा मंतगहणे २० वा मंतसर्दावणे वा विज्जागहणे वा विज्जासमत्तीयं वा मुत्तं वूया । तस्य मुदितेसु अभिणवेसु य अभिणवभोगयं वूया । धापण्णेषु सीतभोगयं वूया । तस्य लुक्खामासे भिक्खोदणं वूया । तस्य विमुत्तेसु असामण्णेषु असामण्णपटिहूयगते य असामण्णं मुत्तं वूया । तस्य सामण्णेषु सव्यसामण्णपटिहूयगते य परेण सह मुत्तं वूया । तस्य उपाधातेण वा जघा-संटाणेण वा संटाणं रूपेण धण्णेण वा जाणितव्वं भवति । जातिकुलेणं कुळं, कम्मणं कम्मं, अणुभावेण [अणुभायं,] धीणामेण धीणामा, य पुष्णामेण पुष्णामा य, णपुंसकेण णपुंसका य, एयं समणुगंतव्वं भवति । तस्य सहचरेसु परेण २१ परिविद्धा भवति । एयमेव जातीहिं सव्यमणुगंतव्वं भवति ।

तस्य भोगयस भोगयणतं ति विघमाधारयितव्वं भवति, तं जघा-पाणजोणीमयं धातुजोणीमयं मूलजोणीमयं । जधुत्ताहिं उपलद्वीहिं उपलद्वच्चाणि भवंति । तस्य पाणजोणीमये पुञ्जाधारिते पाणजोणीमयं सिप्पिपुडं संतमयं च एयमादीहिं उपलद्वीहिं उपलद्वच्चं भवति । तस्य मूलजोणीमये पुञ्जाधारिते मूलजोणीमयं कट्टमयं फत्तमयं पत्तमयं चेति जधुत्ताहिं उपलद्वीहिं उपलद्वच्चं भवति । तस्य धातुजोणीमये भावेण पुञ्जाधारिते धातुजोणीमयं सुवयणमयं २० रूपमयं संवमयं संसमयं फालोइमयं सेलमयं मत्तिधामयं ति जधुत्ताहिं < १ > देवद्वीहिं > उपलद्वच्चं भवति । एयं सव्यमायणाणि उपलद्वच्चाणि भवंति ।

१. *माहाग्गिययर्थं इ० त० ॥ २. सव्यजलचरगतये इ० त० ॥ ३. *जलयोप० इ० त० ॥ ४. पुञ्चमाधारयिपसु इ० त० ॥

५. *गतेसु पुष्फ० इ० त० विना ॥ ६. *स्य सव्यअणूसु इ० त० ॥ ७. *वंतेहिं पु० इ० त० ॥ ८. *पिरसमंसं इ० त० विना ॥

९. *आहारार्थपथ्ये इ० त० ॥ १०. इत्थिहान्तगतः पाठः इ० त० एव वर्तते ॥ ११. *सुरसंगते इ० त० ॥ १२. इत्थिहान्तगतः पाठः इ० त० एव वर्तते ॥ १३. *सु उदासीणामायणं षं १ पु० । *सु दासीणं भोगयं षि० ॥ १४. सव्यबंधुजोपलद्वीयं च धातुयं मुत्तं इ० त० ॥ १५. सव्यसव्यधम्मोपजातीयं जण्ये इ० त० विना ॥ १६. *मारणे इ० त० विना ॥ १७. जघा-धातेण वा जघासंटाणेण वा जघासंटाणेण इ० त० विना ॥ १८. < १ > एत्थिहान्तगतः पाठः इ० त० ताति ॥

तत्थ अब्भंतरेसु संगिहे भुत्तं ति वूया । वाहिरब्भंतरेसु मित्तकुले भुत्तं ति वूया । वाहिरेसु उज्जाणघरे जिमित्तं ति वूया । सुदित्तिसु सक्कारपडिरूवेणं सक्कारेणं भुत्तं ति वूया । दारुणेषु मीतपडिरूवे य मीतेणं भुत्तं वूया । वट्टेसु अवस्थितेणं भुत्तं [वूया] । चलेसु उप्पुत्तेणं भुत्तं वूया । पसण्णेषु पसण्णपडिरूवगते य पसण्णेणं भुत्तं ति वूया । अप्पसण्णेषु अप्पसण्णपडिरूवगते य अप्पसण्णेणं भुत्तं ति वूया । तत्थ अक्कोडिय-परिविट्ठिय-सव्वकोथपडिरूवगते य कुट्ठेणं भुत्तं ति वूया । तत्थ पुरत्थिमेसु गत्तेसु पुरत्थिमेसु य सद रुवेसु पुरत्थिमसुद्देणं भुत्तं ति वूया । एवं सव्वा दिसा १ समणुगंतव्वाओ । इति भोयणगते ति ।

तत्थ पाणगते पुब्बमाधारिते पाणगतं तिविधमाधारये—पाणजोणीगतं मूलजोणीगतं धातुजोणीगतं चेति । जहुत्ताहिं उवलद्धीहिं तिविधमपि उवलद्धव्वं भवति । तत्थ पाणजोणीगतं पाणगं दुद्धं दधिं तर्कं रसो घतं वा विततं यसा वा वितता यधुत्ताहिं उवलद्धीहिं उवलद्धव्व्याणि भवंति । तत्थ मूलजोणीगते पुब्बाधारिते मज्जगतं जैयातूरयं फलरसगतं वा वूया । तत्थ सुदित्तिसु सव्वखंपडिरूवगते य उच्चुरसं वा गोलेयं वा वूया । तत्थ पुधूसु सव्वपत्तगते य पत्तरसं 10 वूया । तत्थ सुदित्तिसु सव्वपुप्फपडिरूवगते य पुप्फरसं वूया । तत्थ पुण्णेषु सव्वफलपट्टिरूवगते य फलरसं वूया । तत्थ अणूसु सव्वधण्णगते य धण्णरसं वूया । तत्थ धातुगते पाणीयं वूया । तत्थ मज्जगतेसु पुब्बाधारितेसु यवा पसण्णं वा अयसं वा अरिद्धं वा मह्ठं वा वूया । तत्थ जोधुत्तेसु सव्वोसधीपडिरूवगते य अरिद्धं वूया । तत्थ पीत्तेसु सव्वफलपडिरूवगते य मधुं वूया । तत्थ पसण्णेषु सव्वपसण्णपडिरूवगते य पसण्णं वूया । सेत्तेसु सेत्तरुं वूया । इति मज्जगतं । 15

तत्थ जैवाणुपुब्बाधारितेसु दुद्धजवाणुं वा प्पैयजवाणुं वा तेज्जवाणुं वा अंघिलजवाणुं वा उण्ठिहं वा ओसधजवाणुं वा वूया । तत्थ वालेयेसु पाणजोणिगते सुक्केसु मणुरेसु दुद्धजवाणुं वा वूया । तत्थ णिट्ठेसु पीत्तेसु य घतजवाणुं वा वूया । तत्थ णिट्ठेसु समेसु तेज्जवाणुं वा वूया । तत्थ वाण्णेषु अंघिलोपट्टीयं वा अंघिलजवाणुं वा वूया । तत्थ आपुण्णेषु उण्ठेसु य उण्ठिहं वूया । तत्थ उट्टेसु सव्वोसधोपट्टीयं च ओसधजवाणुं वा वूया । तत्थ पुप्फ-फलसमाणेसु पाणगतं वा सालयगयं वा वूया । तत्थ सव्वधण्णजोणीयं जहुत्ताय सव्वधण्णरसगते यं 20 उवलद्धव्व्या । इति पाणजोणिगतो ।

तत्थ भैक्करगते पुब्बाधारिते भैक्करगतं त्विविधमाधारये—पाणजोणीमयं [मूलजोणीमयं] चेति । तत्थ जधुत्ताहिं उवलद्धीहिं दुविधा उवलद्धव्व्या भवंति । तत्थ पाणजोणीगते जधुत्ताहिं मंसोयलद्धीहिं उवलद्धव्व्याणि भवंति । इति पाणजोणीगतं ।

तत्थ मूलजोणिगते पुब्बाधारिते मूलगतं रंधगतं णिज्जासगतं पत्तगतं फलगतमिति जधुत्ताहिं उवलद्धीहिं उवलद्धव्व्याणि । तत्थ मूलगते पुब्बाधारिते आलुक्कं वा क्सेरुक्कं वा सिंवाडक्काणि वा भिरं वा भिसणुगालं वा चायं वा एवमादी पंदमूलगतो समणुगंतव्वाओ भवति । तत्थ रंधगते उच्छुं वा अण्णं वा रंधगतं वूया । तत्थ णिज्जासगते सक्करं वा मच्छंढिकं वा गुलं वा वूया । तत्थ जधण्णेषु वट्टेसु गुलं वूया । तत्थ पसण्णेषु सारयत्तेसु मीतत्तेसु य सक्करं वूया । तत्थ पक्कण्णेषु मच्छंढिकं वूया । सुदित्तिसु रज्जगगुलं वूया । जधण्णेषु वट्टेसु गुलं वूया । असंरत्तेसु अण्णेषु य इक्कासं वूया । जधुत्ताहिं उवलद्धीहिं पत्तगतं पुप्फगतं फलगतं धण्णगतं भक्करं वूया । 30

तत्थ सव्वमूलगते रुक्करगते पट्टिगतं गुम्भगतं छुमगतं तग्गवमिति । तत्थ उट्टंभागेसु पुण्णामेसु दक्कण्णेषु चायत्तेसु रुक्क्यपुररगते य पुक्करगतं वूया । तत्थ दीट्ठेसु उट्टिलेसु यामेसु धीगामेसु सव्वयद्विगते य पट्टिगतं

१ यपागुगतं ६० त० मिना ॥ २ उज्जुत्तु ६० त० ॥ ३ जवाणुपु ६० त० ॥ ४ उण्ठिहं-उण्ठिहं-उण्ठिहं ५० त० ॥ ५ उण्ठुत्ते ६० त० मिना ॥ ६-७ रुक्करं ६० त० ॥

धूया । तस्य मञ्जिमाण्तंरकायेसु गहणेसु सञ्चगुम्भगए य गुम्भफलं धूया । तस्य पञ्चवरकायेसु उपगहणेसु सञ्चधुम्भ-
तगोपलद्वीयं च धुम्भगतं धूया ।

तस्य जघुत्ताहिं षण्णोपलद्वीहिं फलोपलद्वीहिं य भक्खोपलद्वीओ उपलद्वव्याओ भवंति । तस्य पिट्ठगते चुण्णगते
य तप्पणा वदरचुण्णं वा विकसं वा चुण्णं वा उपलद्वव्या भवंति । तस्य भक्खगते पकिण्णगते य कलायमञ्जियं वा सुग्ग-
६ मञ्जियं वा जयमञ्जियं वा गोधूममञ्जियं वा सालिमञ्जियं वा तिलमञ्जियं वा एवमादीणि मञ्जितकाणि धूया ।

तस्य भक्खगतं चउत्विधमाधारये—गुलगतं लवणगतं अगोलीयं लवणमिति । तस्य लवणगतं दुविधं—अग्गेयं च
अणग्गेयं च । [तस्य] अणग्गेयं सामुद्धं वा सेंधं वा सोवच्चलं वा पंसुत्तारे वा । तस्य अणग्गेयाणि जवखारो वा
सोवच्चिका वा पिप्पली वा रारलवणं वा धूया ।

तस्य सञ्चगुलगते सक्खरं वा मच्छंडिकं वा गुलेण वा गुलगतं जघुत्ताहिं [उपलद्वीहिं] उपलद्वव्याणि भवंति ।
१० तस्य वट्टेण सञ्चवट्टपट्टिरुवगते य मोदका वा पेंटिका वा पप्पडे वा भोरेंडकाणि वा सालाफालिकं वा अंबट्टिकं
वा एवमादीकाणि वट्टाणि उपलद्वव्याणि भवंति । तस्य पुधूसु वित्थडेसु सञ्चवित्थतपट्टिरुवगते य पोवलिकं वा
वोवित्तकं वा पोत्रेलके वा पप्पडे वा सङ्कुलिकाओ वा पूपे वा फेणके वा अक्खपूपे वा अपट्टिहते वा पवित्तके वा
वेत्तातिको वा पत्तमञ्जिताणि वा उट्टोपिको वा सिद्धत्थिका वा वीयकाणि वा उक्कारिका वा मंडिल्लका वा एवमादीकाणि
धूया । तस्य दीहेसु दीहसक्कुलिकं वा रारवट्टिका वा खोडके वा दीवालिकाणि वा दसीरिका वा मिसकंटकं वा मैत्थ-
१५ त्तकं वा, जाणि चऽण्णाणि एवमादीणि धूया । तस्य गुलोपलद्वीयं गोलिकं धूया । लोणोपलद्वीयं लोणित्तकं धूया ।
[भक्खोपलद्वीयं]भक्खगतं धूया । आघायणेणं अलवणमगोलिकं धूया । इति भक्खगयं ।

तस्य लेज्जागते पुव्याधारिते लेज्जागतं दुविधमाधारये—पाणजोणीगतं मूलजोणीगतं चेति । तस्य जघुत्ताहिं पाण-
जोणीयं उपलद्वव्याण पाणजोणीगतं लेज्जागतं उपलद्वव्यं भवति । तस्य लेज्जं वा पाणजोणीगतं धयं नवणीयं धसा मधुं
ति जघुत्ताहिं उपलद्वीहिं उपलद्वव्यं । इति पाणजोणीगतं लेज्जं । तस्य जघुत्तायं मूलजोणीयं उपलद्वीयं मूलजोणीगतं
२० लेज्जं उपलद्वव्यं भवति । तस्य मूलजोणीगते लेज्जे पुव्याधारिते फाणितं वा कक्खं वा तिलक्खली वा पललं वा
तंबारगो वा लेज्जचुण्णं वा धूया । तस्य गुलोपलद्वीयं कक्खं वा फाणितं वा उपलद्वव्यं भवति । तिळोपलद्वीयं पललं
वा तिलक्खली वा उपलद्वव्या । एनं कटुकेसु रागलेज्जा उपलद्वव्या भवति । इति भोयणं भक्खं लेज्जं पाणं चउत्विध-
मवि समणुगतं भवति ॥

॥ इति भोयणो नामाज्जायो चत्तालीसइमो सम्मतो ॥ ४० ॥ छ ॥

[एगचत्तालीसइमो वरियगंडियज्जाओ]

२५

णमो भगवतो महावीरवद्धमाणस । णमो भगवतो जैससतो महापुरिसस महावीरवद्धमाणस । अहापुचं
एतु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्ञाय वरियगंडिया नाम अरहरसमज्जायं । तं एतु भो ! तमणुवक्खत्सोमो ।
तं जथा—तस्य रं ण रं ति पुञ्जमोधारयित्तं भवति । तस्य अचमंतवामासे जिद्धामासे टिद्धामासे अतिमासे
सञ्चैवारगते मीते ण रं ति धूया । तस्य यज्जामासे चलामासे लुक्कामासे च ण रं ति धूया । तस्य सञ्चअचमंतव-

१ मोरेंडं १० त० ॥ २ पोवलित्ते वा १० त० विना ॥ ३ पूणफेणके १० त० विना ॥ ४ वेत्तातिको वा पड-
मञ्जियाणि वा उट्टोपिकाओ वा १० त० ॥ ५ मंडिल्लिका १० त० विना ॥ ६ य दीवल्लि १० त० विना ॥ ७ मच्छत्तकं
१० त० ॥ ८ अहायणेणं १० त० ॥ ९ णामाच्यायो १० त० विना ॥ १० यसयओ १० त० ॥ ११ *स्वामि १० त० ॥
१२ *माहारयिय्यं १० त० ॥ १३ *व्यसंपारं १० त० विना ॥

गते सव्यमह्यगते सरगते पुष्करगते गीत-वादिगतते संलाय-हसित-तालगतते चुंविता-SSलिंगित-पाण-भोयण-भक्ख-लेञ्ज-
गते संयाण-SSसणगतते य रतं ति बूया । विक्रणिते णिक्रणिते छिविते जंभिते णिद्धुभिते अवियुत्ते महे वा भूसेणे वा
पक्रिण्णे वा अपपात्तिते अपलोलिते ण रतं ति बूया । तत्थ पुण्णामेसु पुरिसेण रतं ति बूया, धीणामेसु थिया रतं ति
बूया, णपुंसकेसु चुंविता-आलिंगितरतं ति, ण पुण सेवणारतं ति बूया । तत्थ रते पुब्बाधारिते पुण्णामेसु अभारिकेण
पुरिसेण रतं ति, थिया वा अपतिक्राय । धीणामेसु सभारिकेण पुरिसेण रतं, थिया वा सैपतिक्राय । णपुंसकेसु 5
अणवत्येण (वच्चेण) पुरिसेण रतं, थिया वा वंहाय ।

तत्थ तिविहं रतं-दिव्वं माणुस्सं तिरिक्खजोणियं चेति । तत्थ उदंभागेसु सिरोमुहे य ऐकरिसकायं अंजलीक-
रणे पायुकोपाहणाअधमुंचणे अभिर्वदिते आसण-सयणसंपदाणे ण्हाणा-SSणुलेवणे गंध-मह्यगते छत्त-भिंणार-लाउहोपिके
वासकडक-लोमहत्थे जक्खोपयाणे समिधजोगपचपयणेसु य दिव्वं रतं ति बूया । तत्थ उदंभागेसु सुक्खेसु अचछराय रतं ति
बूया, थिया य चा देवेण रतं ति बूया । णिद्धेसु णालकन्नाय रतं ति बूया, थिया वा णारणेण रतं ति बूया । तिरियं भागेसु 10
किण्णरीय रतं ति बूया, थिया वा किण्णरेण रतं बूया । तत्थ तिरियजोणीगतते विगताभिरामेसु यँ हस्सेसु
पिसायीअरतं बूया, थिया वा पिसाएण रतं ति । दारुणेसु रक्खसीअ रतं ति बूया, ण्हायिथा वा रक्खसेण रतं ति बूया । ण्हायि
सव्यगंधवेसु गंधव्वीय रतं ति बूया, थिया वा गंधव्वेण रतं । अधोभागेसु असुरकन्नाय रतं ति, थिया वा असुरेण
रतं ति बूया । तत्थे दुपदजोणीगतते सव्यअजीवगतते विर्यंकरणे मतकपडिमाय रतं ति बूया । असारेसु पत्थिवपडिमाय
रतं ति बूया । सारवंतेसु मुत्तिकपडिमाय रतं ति बूया । पुधुसु चित्तपडिमाय रतं ति बूया । इति दुपदजोणी अजीवा । 15

तत्थ तिरियजोणीगतते तिरियजोणीरतं ति बूया । तं दुविचं-सागुणं वा चतुप्पदं चेति । [तत्थ] उदंभागेसु
सव्यसरुणपाउब्बावगतते य सरुणीय रतं बूया । चित्तसिद्धे कक्कडीयं रतं बूया । अमधुरधोसेसु टिट्ठिमीयं रतं ति बूया ।
चित्ते असिद्धे पारेवतीय रतं ति बूया । विगतदारुणेसु छिन्नगालीय रतं । इति पक्खिगततं ति । तत्थ सव्यचतुप्पदेसु
चतुप्पदेण रतं बूया । तत्थ ण्हायि सव्यसिंणिए य ण्हायि सव्यसिंणीक्रीसीधण्णगतते य गो-महिस-अचेल्केण रतं ति
बूया । मच्चिन्नायसेसु गो-महिसेण रतं ति बूया । मच्चिन्नायंतरकायेसु अचेल्केण अस्सतरीहिं वा रतं ति बूया । दारुणेसु 20
मुणिक्राय रतं ति बूया । साधारणेसु वराहीय रतं ति बूया । वायव्वेसु चल्वाय रतं ति बूया । विणतेसु उट्टीय रतं ति
बूया । फरुसेसु गद्दीय रतं ति बूया । ण्हायि चित्तेसु गावीय रतं ति बूया । ण्हायि कण्हेसु महिसीय रतं ति बूया । इति
चतुप्पयगतं रतं ति ।

तत्थ माणुसं तिविचं-थिया पुरिसा णपुंसका चेति । धीणामे थिया रतं, पुण्णामेसु पुरिसरतं ति बूया, णपुंसकेसु
णपुंसकरतं ति बूया । तत्थ रतं दुविचं-विगतं अविगतं चेति । तत्थ माणुसेसु माणुसं उदंभागेसु उवरि गीवाय पासितं विजा । 25
तत्थ सव्यसरुण-SSसणगतते परिधाण-पादकलापक-पादकिंकाणिका-खत्तिर्यं-धम्मक-पायुकोपाणह-सव्यजाणगतते सव्यजाणोव-
करणे य माणुसं रतं बूया । तत्थ सव्यमह-मुकुडउदगतते बूचकणलीखावण-ण्हाण-पयोयण-विसेसंकिंयाओकुंतणक-हरिताल-
हिंगुलक-मणसिला-अंजण-चुण्णक-अलत्तक-गंध-वण्णक-कण्णसोधणक-अंजणीसंजाका-कुब्बठावण-कुंच-सूची-धूपण-गंधवि-
धि-सव्यआहारगतते सव्यभोयणगतते भोयण-भायणगतते अक्ख-हरित-पुष्क-फलगते सासा-सम्मिका-यतंसक-ओयास-कण्णपी-
लक-कण्णपूरक-गंदीविगेंद्रक-कुशीयंधक-तिलक-कुंडल-वडिक्का-तलपत्तक-मधुरक-मुहंदायसक-चंदे-मुज-णक्खत्त-गह-तारागण 30
पडिहूवसदपाडुब्बावे भुत्तपीते चेति एवंधिधसदरूवपाडुब्बावे पंसियं बूया । तत्थमाणुस्सरतं पुब्बाधारितं उद्वितं अवेदंते वेति ।

१ सु आमिसारिकेण हं तं विना ॥ २ सुमसारिकेण हं तं ॥ ३ सपालिकाय हं तं विना ॥ ४ कखजोणि-
गयं हं तं ॥ ५ पकम्मिकायं हं तं ॥ ६ पाउको हं तं ॥ ७ य सहस्से हं तं विना ॥ ८ हत्थविशन्तगततः
पाठः हं तं एव वतंते ॥ ९ एय चउप्पदजो हं तं ॥ १० थियागरे मतं हं तं ॥ ११ सु मच्चिका हं तं ॥ १२-१३
हत्थविहान्तगततः पाठः हं तं एव वतंते ॥ १४ यक्खम्मकं हं तं ॥ १५ सकिपाउकंत्तणकं हं तं ॥ १६ सत्ताकी-
कुचं हं तं विना ॥ १७ णट्टककुरीपयतिलकं हं तं ॥ १८ महदायसक-चंदमुहणखगगहल्लरोगहणपडि हं तं ॥
१९ चंद-सुज-णक्खत्त-गह-हं तं विना ॥ २० पोसितं हं तं ॥ २१ उद्वितं अवेदं हं तं ॥

- तस्य उद्वंभागेसु उस्सित्तसु य उट्ठिताय रतं ति वूया । तस्य सञ्चसयणासणगते जाणि यऽण्णाणि माणुसस्स रतस्स पुञ्जलिंणाणि एतेसु उवविट्ठाय रतं ति वूया । सञ्चसयणासणगते संविट्ठाय रतं ति वूया । सञ्चावस्सयणते अवत्थद्वाय रतं ति वूया । संविट्ठरते पुञ्जाधारिते दक्खिण्णसु य गत्तेसु दक्खिण्णाय विलोकिते दक्खिण्णे यावि सहम्मि पडिरूवम्मि दक्खिण्णे दक्खिण्णेण पस्सेण रतं ति वूया । यामेसु य गत्तेसु यामम्मि य विलोकिते वामे पसारिते यावि वामम्मि पडिपोगळे वामेण रतं ति वूया ।
- ५ तस्य पट्ठीयं सयणासणगते उकुञ्जभायणम्मि यत्थे वा सह-रूव-गंधपादुच्चावे वा एवंविधे तुत्ताणाय रतं ति वूया । तस्य गिक्कुञ्जे सयणासणे गिक्कुञ्जभायण-भूसणे वा यत्थे वा सञ्चम्मि य पडिगते गिक्कुञ्जे य सह-रूवपादुच्चावे वा गिक्कुञ्जाय रतं ति वूया । तस्य सञ्चचतुप्पदगते अधोभागेसु संधीसु वाहिरसु ओणते ओलोइते ओसत्ते चेय एवंविधसह-रूपपादुच्चावे ओणताइ रतं ति वूया । तस्य उच्चारितेसु गत्तेसु विसारितेसु गत्तेसु उच्चाय रतं ति वूया । तस्य एकेवेसु गत्तेसु एकावरणे एककोपरकरणे एककपरामासे एकसाहागते चेय एकैन्मगायं रतं ति वूया । पँसडिण्णसु
- १० उप्पापरु पडिरूवेसु पँसडिण्णसु पसडियवेळुफालिय रतं ति वूया । तस्य उत्ताणरतं तिविहं-उभयोसंविट्ठं अद्धसंविट्ठं एकापविट्ठं ति । तस्य सञ्चापस्सित्ते उभयोसंविट्ठरतं, उरोपविट्ठेसु अद्धसंविट्ठरतं, उद्वंभागेसु उपविट्ठरतं । तस्य पणतं तिविधं-कडीगदितं चतुप्पदरतं रथजावं ति । तस्य जाणगते आसणगते पादगते जहण्णे गगते अधोणामीय गत्तामासे य फडीगदिताय रतं ति वूया । तस्य सञ्चत्थरणगते सञ्चचतुप्पयगते य चतुप्पयरतं ति वूया । तस्य सिरोमुदोपकरणे सञ्चआहारगते य रथपर्यातकं वा रतकं [ति] वूया । तस्य उपविट्ठरतं चतुब्बिधं-सयणावत्थद्वं आसणावत्थद्वं साहा-
- १५ यत्थदं यत्थवत्थद्वं चेति । तस्य स[य]णोपकरणेपोलदीयं च सयणावत्थद्वरतं ति वूया । सञ्चासणगते कडीयं वा आसणावत्थद्वरतं ति वूया । सञ्चसाहागतेसु साहाअवस्सिताय रतं ति वूया । सञ्चमूलगते सञ्चमूलजोणीगते अँस्सेसु यत्थेसु यत्थवत्थद्वाय रतं ति वूया ।

- तस्य एकामासे एकोपकरणे एकचरेसु सत्तेसु एकपादुच्चावे य सह-रूवाणं एकस्सि रतं ति वूया । तस्य सामागेसु गत्तेसु यमलावरणेके मिधुणचरेसु सत्तेसु विसह-रूवपादुच्चावे विक्खुत्तो रतं ति वूया । तस्य भुयंतरेसु नासातिके
- २० यत्थीसीसे ताळुके हणुमंघिसु विरूणिण गिक्कुञ्जे कैसित्ते ट्ठिविते जंभिते-ओणामिते णिम्मज्जिते ओलोकिते तिके सिंघा-ट्ठके सञ्चविकसह-रूपपादुच्चावे य तिसुत्तो रतं ति वूया । तस्य पादवल-करतलेसु चतुस्सेसु चउकेसु चतुरंगुलिगदणे हमिते आविद्धमल-भूमणे उवसकिते उवेट्ठे सञ्चभोयण-सयणा-ऽऽमणचउरस्से पँच्छेदिते आळिगिते चुंभिते भुत्ते पीते, चतुप्पदोपकरणे चतुप्पदणामधेजे पी-पुरिसगते चतुप्पदरूपपादुच्चावे चतुक्खुत्तो रतं ति वूया । तस्य हत्थ-पाद-जाणु-रँमासासे मुट्ठीवरणे हत्थावरणे पंचकसहपाउच्चावे य पंचसुत्तो रतं ति । तस्य गँड-मणिबंध-गुल्फामासे
- २५ नित्रमलोदीरणे एकके पँचकमदिए छक्कमदपडिरूवगते य छसुत्तो रतं ति । तस्य छसु वा एकमदिएसु पंचसु वा दुगसदिएसु पचसु वा तिगसदिएसु दोसु वा तिगेसु एकमसदिएसु छ विंठुं दुगेसु एकमसदिएसु सत्तय वा सह-रूपपाउच्चावे गत्तसुत्तो रतं ति वूया । तस्य ललाइमसे उरमञ्जा एकेकअट्टकोदीरणे अट्टके वा आमामसह-रूपपादुच्चावे अट्टसुत्तो रतं ति वूया । तस्य पचक-पंचकोदीरणे विक्क-छक्ककोदीरणे विक्क-सत्तकोदीरणे एक-अट्टकोदीरणे णयसह-रूपपादुच्चावे वा णयसुत्तो रतं ति वूया । तस्य सिरो-पाद-अंतडिकरणे कच्छमकरणे पादसामागे जमलपंचकोदीरणे पचक-छक्कको-
- ३० दीरणे एक-कणरकोदीरणे निअ-मत्तकोदीरणे विपअट्टकोदीरणे दसय वा आमामसह-रूपपँडिपोगळपाउच्चावे दससुत्तो

- १ दक्खिण्णे य ६० ८० ॥ २ यामसि य ६० ८० ॥ ३ ओपारितेसु ६० ८० ॥ ४ एकमगायं ६० ८० ॥ ५ पससिण्णसु तुत्तापरु ६० ८० ॥ ६ पससि १ ३ पु ॥ ७ यावत्थवत्थं वूया ६० ८० ॥ ८ साचाय ६० ८० ॥ ९ तण्णाणो ६० ८० ॥ १० यत्थिपाय ६० ८० ॥ ११ अरुतेसु ६० ८० ॥ १२ सु अवरत्थं ८० ॥ १३ वणिय विणिय जं ६० ८० ॥ १४ सु अवरत्थं १ ३ पु ॥ १५ पवेत्थिने १ ३ पु ॥ १६ यामामामागे गुट्ठी १ ३ पु ॥ १७ गंधमलि ६० ८० ॥ १८ पंचकसहपाउच्चावे छक्क ६० ८० ॥ १९ एक्कअट्टकं वा ६० ८० ॥ २० पडिपुणजपाउ ६० ८० ॥

रतं ति व्यूया । अतो उद्धं अण्णेण समाजोगेण विकप्पणाय आमास-सह-रूच-पडिपोगलपाउम्भावेहि गण्णापरिसंखाणि रतेसु वा जोजयितव्वं भवति ।

तत्थ विगतेशेण वीमत्थेण परिमंडले गुदे रतं ति व्यूया । परिमंडले णामीय रतं ति व्यूया । उण्णते थगंतरे रतं ति व्यूया । हृदयगते थिगलगतेशे य पाणिणा रतं ति । इति विगतरताणि । तत्थ उवाएसु उवाताय रतं, सामेसु सामाय रतं, कण्हेसु कालिकाय रतं, दीहेसु दीहाय रतं, रस्सेसु रस्साय रतं, थूलेसु थूलाय रतं, किसेसु किसाय रतं । ५ धालेसु वालाय रतं, वयत्थेसु वयत्थाय रतं, मच्चिमेसु मच्चिमाय रतं, महव्वयेसु महव्वयाय रतं । वंभेजेसु वंभणीय रतं, खत्तेजेसु खत्तिकाय रतं ति व्यूया, वेसेजेसु वेस्सीय रतं, सुदेजेसु सुदीय रतं, मूल-जोणीगते कसिगोरक्खभज्जाय रतं, द्दहेसु कारुक्खभज्जाय सह रतं, थलेसु ववहारीभज्जाय सह रतं । पुण्णामेसु सपत्तिकाय सह रतं, थीणामेसु ससपत्तिकाय सह रतं, णुणंसकेसु पउत्थपत्तिकाय सह रतं । द्दहेसु अविधवाय सह रतं, अमुक्काय अवट्ठिताय सह रतं, चलेसु अणवत्थिताय सह रतं चलचित्ताय ति । णिद्रे उदुणीय सह रतं, ६ चु(छु)क्खेसु १० अणुदुणीय सह रतं, ति व्यूया, लुक्खाय विसदाय [व] रतं व्यूया । ७ कण्हेसु दुस्सीलाय सह रतं तणूसु सुकेसु अद्धसंबुताय रतं । अचंभंतरेसु अचंभंतराय सकाय धिया रतं, वाहिरेसु परभज्जाय रतं ति, वाहिरचंभंतरेसु मित्त-भज्जाय सह रतं ति व्यूया । रायचिंथेसु पडिरूवेसु रायपुरिसपडिरूवेसु य रायपुरिसपडिपोगले य रायपुरिसभारिकाय सह रतं । जस्स जं चिंधं पडिपोगलपडिरूवं वा तेण तस्सोवजीवकभारिकाय सह रतं । ८ णीहारे परिचारिकाय सह रतं । ९ गहणेसु परुद्धणख-क्कखरोमाय रतं, उपगहणेसु अचिरपरुद्धण-रोमाय रतं, आकासेसु रमणीयेसु १५ सुपरिमज्जितणह-क्कख-वत्थिसीसाय रतं ति व्यूया । पुधूसु पुधुउपधाय रतं, संखित्तेसु संखित्तभगाय सह रतं, परिमंडलेसु परिमंडलभगाय सह रतं, चउरस्सेसु चउरस्सभगाय, १० तिअंसेसु ११ तिअंसभगाय सह रतं । असंख-तेसु अमेहलाय रतं, संखतेसु समेहलाय रतं । कण्णयेसु कुमारीय सह संकेतो ति, जुवत्तेयेसु जुवतीय १२ सह १३ रतं ति, अतिवत्तेसु विविधाय रतं । १४ उत्ताणेसु १५ उत्ताणभगाय सह रतं, णिण्णेसु णिण्णभगाय सह रतं । पसण्णेसु पसण्णा-य सह रतं, अपसण्णेसु कुद्धाय रतं । सद्देयेसु चित्ताय वा मुदित्ताय वा विस्सुयकित्तीय वा पक्खाताय वा सह १६ रतं ति व्यूया । दंसणीयेसु सुरूवेसु दंसणीयरूवसंपण्णाय सह रतं, गंधेयेसु सुगंधाय ण्हाणा-उणुलेवण-मह-गंधसंपुण्णाय सह रतं ति व्यूया । रस्सेयेसु मधुराय मधुरलयणाय रतिरसगुणसमण्णागयाय बहुभक्ख-पेय-रसगुणसमण्णागतं रतं ति व्यूया । फासेजेसु फासाय फासरुणसमण्णागयं यं । मण्णयेसु इद्धाय धियाय सह रतं, अमुक्काय भिउडीरतं, अक्खिसु णिकाणितं व्यूया, सुहे चुंवितं व्यूया, ओठेसु खयं व्यूया, वाहूसु आळिगियं व्यूया, उच्छंठेसु उपविट्ठं व्यूया, णहेसु णक्खपदं व्यूया, दंतेशु दंतपरिमंडलं दंतखयं वा व्यूया । तणेसु रयं व्यूया, सामेसु घोसयंतेशु यगीतरतं व्यूया, सद्देयेसु २५ हसियं व्यूया, आहारोपणएसु आहारियं व्यूया, णिमिसिंएसु कण्हेसु पुसुयं व्यूया, तिक्खेसु सोणियओघाययं व्यूया, तुच्छेसु सुहाय रतं व्यूया, कर्ण्णेशु पट्टियाय रतं व्यूया, अप्पसण्णेसु विगार्दं व्यूया, अभिकामेसु रतं व्यूया ।

तत्थ काले पुब्बाधारिए कंसि काले रतं ? ति-कण्हेसु रत्तिरतं ति, सुकेसु दिवा रतं ति व्यूया, सामेसु संझाकाले रतं व्यूया, कण्हेसु आदिमूलीयेसु पदोसे रतं, सुकेसु आदिमूलीयेसु अवरण्हेसु रतं, सुकमच्चविगादेसु मच्चंतियए रतं व्यूया, कण्हेसु मच्चविगादेसु अदरते रतं, सुकेसु अंतेसु अवरण्हे रतं व्यूया, कण्हेसु रंतेशु पघसे रतं । ३०

तत्थ आधरंयित्त्वा आधारयित्त्वा रत्तण(णि)रतं ति केण वा सह रतं ? देवेण वा देवीय वा ? मणुस्सेण वा मणु-स्सीय वा ? तिरिक्खजोणिएण वा तिरिक्खजोणीयाय वा ? किंजीतीयेण किंरूवेण किंवयेणं किंअलंकारेणं किंसील-भावा-

१ वालायेसु १० त० विना ॥ २ हत्थविधान्तर्गतः पाठः १० त० एव वर्तते ॥ ३ १० ११ एतद्विधान्तर्गतः पाठः १० त० नास्ति ॥ ४ पट्टिहाय रतं १० त० ॥ ५ सु कट्टाय १० त० ॥ ६ व्यूया, अजेसु १० त० विना ॥ ७ सिय कण्णेसु भुसुत्तं व्यूया १० त० ॥ ८ कण्हेसु ति ॥ ९ निक्कामे ति ॥ १० मूलेसु १० त० विना ॥ ११ सु अंतेसु प १० त० विना ॥ १२ रयित्तु आघारयित्तु रय १० त० विना ॥ १३ जाईतेण १० त० विना ॥
अं० २४

सुविणं दिट्ठं बूया । धीणा[मा]मासे धीणामामासेसु सन्वेसु सव्वत्थीपडिरूवगते यं ॥३॥ 'धीदिट्ठं बूया, ॥३॥ पुण्णामेसु पुरिसदिट्ठं सुविणे बूया, णपुंसकेसु णपुंसकदिट्ठं बूया ।

तत्थ दिव्वेसु पुब्बाधारितेसु देवो देवि त्ति पुब्बमाधारयित्ठव्वं भवति । तत्थ पुण्णामेसु देवो दिट्ठो सुविणे त्ति बूया । धीणामेसु दिव्वपादुब्भावेसु देवी दिट्ठा सुविणे त्ति बूया । देवोपलद्धीहि यं सद्-रूवपादुब्भावेहि यं णातव्वानि भवंति । इति दिव्वोपलद्धिसुविणे दिट्ठा उपलद्धव्या भवंति । 5

तत्थ माणुसे पुब्बाधारिते माणुसा तिविधा, तं जघा—मता संपदा अणागतं त्ति । तत्थ पच्छिमेसु गत्तेसु < १ मतेसु > यं मतं मणुस्सं सुविणे दिट्ठं बूया । वामदक्खिणेसु गत्तेसु वत्तमाणेसु यं सद्-रूवेसु जीवंतं मणुस्सं सुविणे दिट्ठं बूया । पुरिमेसु गत्तेसु अणागतेसु यं सद्-रूवपादुब्भावेसु अणागतं मणुस्सं सुविणे दिट्ठं बूया । तत्थ तिविधा—थीओ पुरिसा णपुंसका इति । तत्थ धीणामे थियं बूया, पुण्णामेसु पुरिसं बूया, णपुंसकेसु णपुंसका विण्णेया । तत्थ धी-पुरिससिरोमुहामासे वंभणं सुविणे दिट्ठं बूया, वाहूअंतरेसु खत्तियं, पट्टेदरे वेस्सं सुविणे दिट्ठं बूया, पाद-जंघेसु 10 सुदं दिट्ठं बूया । तत्थ वये पुब्बाधारिते पाद-जंघासु बालं दिट्ठं बूया, बौहूसु अंतरेसे यं मज्झिमवयं दिट्ठं बूया, सिरोमुहे महव्वयं दिट्ठं बूया । अवदातेसु अवदातवण्णं दिट्ठं बूया, सामेसु सामवण्णं दिट्ठं बूया, कण्हेसु कालकं दिट्ठं बूया, ठियामासेसु मिस्सवेहि तथावण्णसाधारणं दिट्ठं बूया । तत्थ ठाणे पुब्बाधारिते उद्वं णामीय अज्जवाणं इस्सरं दिट्ठं बूया, अथत्था णामीयं उवरिं जाणूसु अवत्तपेस्सं दिट्ठं बूया, पाद-जंघासु पेस्समेव दिट्ठं बूया, ॥३॥ पौदेसु दासं दिट्ठं बूया, ॥३॥ उवरिं थणेहिं अथत्था गीवाय अज्जवाणं विसिट्ठं बूया । जो तु गुरूत्थाणे उवरिं गीवाय 15 अधत्था भमुहाय अज्जवाणं गुरूत्थाणीतं दिट्ठं बूया, एताणं उद्वं गुरूणे गुरुदिट्ठं बूया । वामेसु पुण्णामेसु धीसणामं दिट्ठं बूया, वामेसु धीणामेसु धीसामण्णयं धीणमेव दिट्ठं बूया, दक्खिणेसु पुण्णामेसु पुरिससामण्णयं पुरिसं बूया, दक्खिणेसु धीणामेसु पुरिससामण्णयं महिल्लं बूया । पुरिसणामे पुरिसणामेसु अधोभागेसु पुत्तं दिट्ठं बूया, पुरिसणामेसु पुरिसभागेषु पवत्तेसु उद्वंभागे पितरं बूया, पुरिसणामा पुरिसणामेसु पवत्तेसु समभागेसु भातरं बूया, पुरिसणामा धीणामेसु पवत्तेसु अधोभागेसु दुहितरं बूया, पुरिसणामा धीणामेसु पवत्तेसु समभागेसु भगिणिं बूया, पुण्णामा धीणा-20 मेसु पवत्तेसु उद्वंभागेसु मातरं बूया । धीणामेसु पवत्तेसु धीणामा उद्वंभागेसु थिया मातरं बूया, धीणामा धीणामेसु पवत्तेसु धीसमभागेसु थिया भगिणिं दिट्ठं बूया, धीणामा धीणामेसु पवत्तेसु अधोभागेसु थिया दुहितरं बूया । तत्थ धीणामा पुण्णामेसु पवत्तेसु अधोभागेसु जामातरं बूया, तत्थ धीणामा पुण्णामेसु पवत्तेसु समभागेसु भगिणिपतिं दिट्ठं बूया, धीणामा पुण्णामेसु पवत्तेसु उद्वंभागेसु र्ससरं बूया । धींसंसहेसु आमामेसु पुणो पुणो आवलिं बूया—धींसंसहेसु पुण्णामेसु बाले बूया, अचमंतरेसु अचमंतरं दिट्ठं बूया, बाहिरचमंतरेसु मित्तं दिट्ठं बूया, बाहिरवाहिरेषु जणं दिट्ठं 25 बूया । इति मणुस्सं सुविणे दिट्ठं आमास-सद्-रूवेहि बूया ।

तत्थ तिरिक्खजोणियं पुब्बाधारिते तिरिक्खजोणियं पंचविधमाधारये, तं जघा—पक्खिरगतं चतुष्पदगतं परिसप्पगतं जलचरगतं कीट-किव्विहग-दंस-मसगगतं ति । तत्थ उद्वं गीवाय सिरोमुहामासे उल्लोमिते उद्वंभागेसु सव्वसगुणगते सव्व-सगुणोपकरणे सव्वसगुणमये उवकरणे सव्वसगुणोपकरणामधेजे सव्वसगुणगामधेजे यं धी-पुरिसगते एवंविधसद्-रूव-पादुब्भावे सगुणं दिट्ठं सुविणं बूया । ते दुविधा—जलचरा थलचरा वेति । तत्थ आपुणेषु सव्वउदगचर-उदकोपकरणपा-30 दुब्भावे जलचरा दिट्ठा विण्णेया । लुक्खेसु थलेसु थलजेसु थलचरेसु थलोपकरणे थलोपकरण-थलज-थलजरणामधेजे सद्-रूवपादुब्भावे यं थलजा पक्खी सुविणे दिट्ठा भवंति, सुभेसु सुभो असुभेसु असुभो पक्खी दिट्ठो भवति ।

१ हस्खिहान्तगतं: पाठ: ई० त० एव वर्तते ॥ २ सद्पडिरूवपा० ई० त० । सद्रूवपडिरूवपा० ति० ॥ ३ वाहूअंतं ई० त० ॥ ४ *या, विसामा* ई० त० ॥ ५ हस्खिहान्तगतं: पाठ: ई० त० एव वर्तते ॥ ६ *सु सम* ई० त० विना ॥ ७ *सु मातरं* ई० त० ॥ ८ ससरं ई० त० ॥ ९ उद्वंगप मासेसु ई० त० ॥

तत्र चतुष्पदेषु चतुरस्सेसु चतुष्केसु चतुष्पदव्यकरणे चतुष्पयणामधेज्जवकरणधी-पुरिस-सद्पादुच्चावे चतुष्पदं दिष्टं सुविणे घृया । ते दुविधा—थलजा जलजा चेति जधुत्ताहिं उवलद्वीहिं उवलद्वव्या भवंति । ते त्रिविधा पुणरवि उवलद्वव्या—गम्मा गम्मारण्णा आरण्णा चेति । ते यधुत्ताहिं उवलद्वीहिं उवलद्वव्या भवंति । संठाण-वण्ण-घोस-आहार-परिभोगविधीहि य उवलभित्तं सुविणे दिष्टं घृया ।

४ तत्र द्वीधेसु चलेसु तिरियभागेसु य सव्वपरिसपगतते सव्वपरिसपव्यकरणगते परिसपमये उवकरणे परिसप-णामधेजे उवकरणे धी-पुरिससद्पादुच्चावे या परिसपं घृया । ते दुविधा—थलजा जलजा य । जधुत्ताहिं उवलद्वीहिं संठाण-वण्ण-संघात-घोस-विरिय-आहार-परिभोगविधीहि य उवलभित्तं सुविणे दिष्टं घृया ।

तत्र अणूसु चलेसु सव्वखुदपाणेसु खुदपाणामधेजे उवकरणे धी-पुरिसगते सह-रूपपादुच्चावे य कीड-क्किवि-ह्म-दंसमसगे सुविणे दिष्टं घृया । ते दुविधा—थलजा जलजा येव । जधुत्ताहिं उवलद्वीहिं संठाण-वण्ण-घोस-पठिभोग-विधीहि य उवलभित्तं सुविणे दिष्टं घृया । दिव्व-माणुस-तिरिक्खजोणियसाधारणेपलद्वीहिं साधारणे दिष्टं घृया । मिस-गामासेहिं दिव्व-तिरिक्खजोणिगेहिं मित्से दिष्टो घृया ।

तत्र ह्या-ऽरुवगते अज्जीवे सुविणे पुव्वमाधारिते रूवगतं अज्जीवं त्रिविधमाधारये—पाणजोणीगतं मूलजोणीगतं धातुजोणीगतं । तत्र चलामासे पाणजोणिगते पाणजोणीउवकरणे पाणजोणीमये उवकरणे < १ पाणजोणी > णामधेजे उवकरणे धी-पुरिससद्पादुच्चावे पाणजोणीगतं अज्जीवं रूवगतं सिविणे दिष्टं घृया । तत्र केस-मंसु-ल्लोमगते सव्वमूल-जोणीगते मूलजोणीउवकरणे मूलजोणीणामधेजे उवकरणे धी-पुरिसगते य सह-रूपपादुच्चावे वा मूलजोणीगतं अज्जीव-रूवगतं सिविणं दिष्टं घृया । तत्र दढामासे सव्वधातुगते सव्वधातुजोणीगते य सव्वधातुजोणीउवकरणे धातुजोणीमये उवकरणे धातुजोणीउवकरणे धातुजोणीणामधेजे उवकरणे धी-पुरिसगते वा धातुजोणीगतं अज्जीवरूवगतं सुविणे दिष्टं घृया ।

तत्र सहगते सुविणे पुव्व्याधारिते सहगतं सिविणं त्रिविधमाधारये, तं जघा-भासासहगतं आतोच्चसहगतं परा-पातसहगतं चेति । तत्र त्रिविधमाधारये—जीवसमाजुत्तं < १ > अज्जीवसमाजुत्तं < २ > जीवाजीवसमाजुत्तं चेति । तत्र २० सरेयेहिं भासासरे आतोच्चसरे परापाते य भेद-संपायसमुत्थितेहिं सरेहिं पठिरूवेहिं आतोच्चउवकरणपादुच्चावेहिं य उवलभित्तं सहगतं द्ढा-ऽण्णिसहगतं सुविणं दिष्टं घृया ।

तत्र गंधगते सुविणे पुव्व्याधारिते गंधगतं सुविणं द्विविधमाधारये—सुमगंधं असुमगंधं चेति । तत्र सुगंधपरामासे सुगंधसह-रूपपादुच्चावे य सुमं गंधं सुविणे धातं ति घृया । दुग्ंधपरामासे < १ किलिद्धपरामासे > दुग्ंधसह-रूपपादुच्चावे य असुमं गंधं सुविणे धायं । तत्र गंधं पुणरवि सुभा ऽसुमं त्रिविधमाधारये—पाणजोणीगतं मूलजोणीगतं २५ धातुजोणीगतं नि । तत्र जधुत्ताहिं पाणजोणी-मूलजोणी-धातुजोणीउवलद्वीहिं उवलभित्तं सह-रूपपादुच्चावेहिं य त्रिविधजोणीयं गंधं सुभा-ऽसुमं सुविणे दिष्टं घृया ।

तत्र रमगते सुविणे पुव्व्याधारिते < १ रमगते > सुविणे त्रिविधमाधारये, तं जघा-पाणजोणिगतं मूलजोणिगतं धातुजोणिगतं । तत्र जधुत्ताहिं उवलद्वीहिं त्रिविधजोणिजो रसो उवलद्वयो भवति । अव्यापणजोणीआमास-सह-रूप-पादुच्चावेण अट्टारण्णो रमो उवलद्वयो भवति सुभो । यवण्णजोणीआमास-सह-रूपपादुच्चावेण वावण्णरसो उवलद्वयो ३० भवति असुभो । तत्र रमं त्रिविधजोणीयं पुणरवि उवविधमाधारये, तं जघा-तिचत्तं अविळं लयं षट्ठं षसायं मधुर-मिं । तत्र अच्चंतपरामासे दढामासे मधुरेसु य सह-रूपपादुच्चावेसु मधुरं घृया । तत्र त्रिसामासे दारुणामासे पराणामासे षट्ठेसु य सह-रूपपादुच्चावेसु षट्ठं घृया । वावण्णेसु आमामासेसु अविळेसु सह-रूपपादुच्चावेसु अविळरमं सुविणे संविं घृया । तत्र णामापरामासे आसगरामासे पोदमपरामासे सव्वआपुण्येसु अंसु-वेत्त-सिंघाण-परमवण-मव्य-

१ आरण्णा हिं हि० एर वन्ते ॥ २ < १ > एणविद्वान्तर्गतः पाठः इ० त० नाहिं ॥ ३ इणविद्वान्तर्गतः पाठः इ० त० एर वन्ते ॥ ४ इणवण्णो हिं हि० ॥ ५-६ < १ > एणविद्वान्तर्गतः पाठः इ० त० नाहिं ॥ ७ आमासजोणीआमास इ० त० ॥

सोयदूसिकापरामासे लवणरससहपादुच्चाभावे य लवणरसं सुविणे सेवितं व्यूया । तत्थ विमुत्तेसु विसयेसु परिश्रद्धेसु य सब्वक-
सायसह-रूपपादुच्चाभावेसु कसायं रसं सुविणे पडिसेवितं व्यूया । तत्थ चलाभासे अंतिसु य सब्वतित्तकसह-रूपपादुच्चाभावेसु
य तित्तकरसं सुविणे सेवितं व्यूया । एवंविधजोणीयं रसं छव्वियधं जघुत्ताहिं उवलद्धीहिं उवलद्धव्वं सुविणे दिट्ठं व्यूया ।

तत्थ फासगते सुविणे पुव्वाधारिते फासगतं सुविणं तिविधमाधारये, तं जघा—सज्जीवफासगतं १ अज्जीवफासगतं २
मिस्सकं जीवाजीवसंजुत्तं ३ चेति । तत्थ सज्जीवेसु चलाभासेसु य सज्जीवसह-रूपपादुच्चाभावेसु य सज्जीवं फासं ४
[सुविणे सेवितं] व्यूया । अज्जीवेसु मयेसु य अज्जीवसह-रूपपादुच्चाभावे य अज्जीवं फासं सुविणे सेवितं व्यूया ।
वामिसत्ताभासे सज्जीवअज्जीवेसु य सह-रूपपादुच्चाभावे मिस्सकं फासं सुविणे सेवितं व्यूया । तत्थ सज्जीवो
फासो दिव्व-माणुस्स-तिरिक्खजोणिकादीहिं जीवजोणीहिं उवलद्धव्वो भवति । अज्जीवो फासो अज्जीवोपलद्धीहिं पाण-
जोणी-मूलजोणी-घातुजोणीआदीहिं उवलद्धव्वो । मिस्सको फासो मिस्सकोपलद्धीहिं मिस्सको उवलद्धव्वो भवति ।
तत्थ फासो पुणरपि अट्टविधो^१ उवलद्धव्वो, तं जघा—कक्खडो मडको गुरुको लहुको सीतो वसिणो णिद्धो १०
लुक्खो चेति । तत्थ दढामासे तिकखामासे दारुणामासे सब्वकक्खडपडिरूव-सहपादुच्चाभावे कक्खडं फासं व्यूया ।
तत्थ मडकामासे सब्वमडकसह-पडिरूवपादुच्चाभावे मडकं फासं सुविणे सेवितं व्यूया । तत्थ अचंचतरामासे दढामासे
उत्तमामासे सब्वसारगते य सब्वसारमंतपडिरूव-सहपादुच्चाभावे गुरु-गारवसह-रूपपादुच्चाभावेसु य गुरुफासं सुविणे
सेवितं व्यूया । तत्थ वज्झामासे चलाभासे तुच्छामासे जैहण्णामासे सब्वणीहारगते संब्वक-लहुस्स-तुच्छसारजम्मपडिरूव-
सहपादुच्चाभावे य लहुकं फासं सुविणे सेवितं व्यूया । तत्थ णिद्धामासे सब्वणिद्धफासपडिरूवसहपादुच्चाभावे णिद्धं फासं १५
सुविणे सेवितं ति व्यूया । तत्थ लुक्खामासे सब्वलुक्खपडिरूव-सहपादुच्चाभावे य लुक्खं फासं सुविणे सेवियं व्यूया । तत्थ
सब्वआपुणेयेसु सब्वसीयफासदव्वोपकरणे पडिरूव-सहपादुच्चाभावे सुपिहिएं पागुए उवगट्ठे पाविविए लुक्खसिए हेमंत-
उज्जसहभयमाणेसु य आहारोपकरण-सवणा-उसणपरिच्छदपरिभोगपादुच्चाभावेसु सह-रूवेसु य एवंविधेसु सीतं फासं सुविणे
सेवियं व्यूया । तत्थ अग्गेयेसु सब्वअग्गिए ए^२ संब्वउसुमागए ए^३ संब्वउसुणागए संब्वउसुणसह-पडिरूवपादुच्चाभावे
य उंसुणं फासं सुविणे सेवितं व्यूया । एवं जघुत्ताहिं उवलद्धीहिं सह-रूव-रस-गंध-फासगताहिं ए^४ सुंभा-उसुमाहिं २०
आहारयिउं सह-रूव-रस-गंध-फासगयाओ ए^५ सुविणे सेवणाओ विण्णेया भवंति । इति विसयगतो विण्णेयो सुविणो ति ।

तत्थ चलेसु णट्ठं वा पावासिकं आउरं वा सुविणे दिट्ठं व्यूया । तत्थ अचंचतरेसु चलेसु य णट्ठं व्यूया । वाहिरेसु
चलेसु य पावासिकं दिट्ठं व्यूया । पुण्णामेसु पुरिसं दिट्ठं व्यूया । सम्मे सम्मदितेसु चलेसु आउरं दिट्ठं व्यूया । घट्ठेसु वट्ठं दिट्ठं,
भोक्खेसु भोक्खं दिट्ठं व्यूया । तणफय-कुक्कित्त-णाभि-उच्छंग-पोरुस-अंगुट्ठ-क्कोट्टिकापरामासे पयासंतरेण दिट्ठं व्यूया ।
४ पुंणामेसु पुरिसं दिट्ठं व्यूया । धीणामेसु धियं दिट्ठं व्यूया । णुंसकेसु णुंसकं दिट्ठं व्यूया । ददेसु सारिउपररणं २५
दिट्ठं व्यूया । ५ कण्हेसु असारिउवकरणं दिट्ठं व्यूया । तंवेसु सुवण्णकं दिट्ठं व्यूया । सुक्के रुपं वा कौंहावणे वा व्यूया ।
सुक्केसु ददेसु रुपं व्यूया । चित्तेसु सुक्केसु ददेसु य कौंहावणे व्यूया । णुंसकेसु गिरत्थकं सुविणं दिट्ठं व्यूया । णीहारेसु
हाणिं सुविणे दिट्ठं व्यूया । आहारेसु वड्ढिं सुविणे दिट्ठं व्यूया । ए^६ धैण्णउवलद्धीयं सब्ववण्णगए य रण्णं दिट्ठं व्यूया । ए^७
णिण्णेसु णदिं वा कूयं वा तलागं वा पुक्खरणिं वा वारिं वा समुदं वा दिट्ठं व्यूया । ए^८ उंवेट्टिसु कूयं दिट्ठं
व्यूया । ए^९ णिण्णेसु वित्थिण्णेसु सण्णिरुद्धेसु य तलागं दिट्ठं व्यूया । चउरस्तेसु सुदितेसु य पुक्खरणिं व्यूया । चउरस्तेसु ३०

१ 'सोयगट्ठं' सं ३ पु० ॥ २ 'धो णातव्वो ति' ॥ ३ जणहामा' हं० त० विना ॥ ४ सब्वलकलकुसनुत्त-
सारजम्म' हं० त० ॥ ५ 'हिए सुवगट्ठे पधिगते उल्लुसिते हेमंतउत्तसह' हं० त० विना ॥ ६ दह्विदिहान्तर्गतः पाठः
हं० त० एव वर्तते ॥ ७-८-९ उंसुण स्थाने हं० त० विना उसण इति पाठो वर्तते ॥ १० दह्विदिहान्तर्गतः पाठः हं० त० एव
वर्तते ॥ ११-१२ एतदिहान्तर्गतः सन्तर्भः हं० त० नास्ति ॥ १२-१३ कट्ठा' हं० त० विना ॥ १४-१५ दह्विदिहान्तर्गतः पाठः
हं० त० एव वर्तते ॥ १६ 'सु विच्छेसु रुद्धेसु य हं० त० ॥

एवं पक्खोपलद्धीहिं सुक्कपक्ख-कण्हपक्खा उवलद्धव्या भवंति जघा पुंय्यमुदिट्ठं । व्तुउपलद्धीहिं उद्दु उप-
लद्धव्या छपि भवंति जघा पुंय्यमुवदिट्ठं । एवं सब्वाहिं आमास-सद्-रूव-रस-गंध-फासपडिहूवोवलद्धीहिं आघारयितुं
सुविणे सैव्वत्ताणुगंतव्यं भवति ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय सुविणो णामाज्ज्ञायो
चायालीसतित्तो सम्मत्तो ॥ ४२ ॥ छ ॥

[तेयालीसइमो पवासज्ज्ञाओ]

णमो भगवंतो जसवओ महापुरिसस्स । अधापुचं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय पवासो णामा-
ज्ज्ञायो । तं खलु भो ! वक्खस्सामि । तं जघा-तत्थ अत्थि पवासो णत्थि पवासो त्ति पुच्यमाहारियव्वं भवति ।
तत्थ वज्जामासे चलामासे सब्बणीहारगते सब्बैमोक्खगते उवाहण-छत्तर्गते सब्बवाहणगते सब्बजाणगते पत्थित-पधित-
पधावितसव्वचतुप्पद-पक्खि-सिटीसिय-वारिचर-कीड-किविद्धगगते उवाहणआवंधणे छत्तकग्गहणे तप्पण-कत्तरिका-कुंडि-
डुक्खलिकापादुब्भावे पंध-पवा-ण्डी-पच्यत-तलाग-गाम-गगर-जणपद-र्यट्टण-सन्निवेशे असमरंगवचर-पासंड-दूतपरिधावके
एवंविधसद्-रूवपादुब्भावे अत्थि पवासो त्ति वूया । तत्थ अचमंतरामासे दढामासे सब्बआहारगते सब्बसंघाधगते
सब्वत्थावरगते सब्बणिवेशितगते सब्बअपरिधावकगते एवंविधसद्-रूवपादुब्भावे णत्थि पवासो त्ति वूया । तत्थ पाद-जंघ-
पादुकोपाणह-च्छत्तकएवंविधसद्-रूवपादुब्भावे पादेहिं पवासं गमिस्सति त्ति वूया । तत्थ उद्धंभाणेषु चलेसु
सब्वजाणगते सब्बवाहणगते सब्बजाण-वाहणेपरणगते जाणेषु वा वाहणेषु वा पवासं गमिस्सति त्ति वूया । तत्थ 15
मुदिएसु मुदित्तमाणसो पवासं गमिस्सति त्ति वूया ।

तत्थ पवासे पुब्बाघारिए दीहेसु दीहं पवासं गमिस्सति त्ति वूया । १०० रँसेसु रस्तपवासं गमिस्सति त्ति
वूया । १०० पुण्णामेसु राजपोरुसेण पवासं गमिस्सति त्ति वूया । धीणामेसु धीपवासे लभिस्सति त्ति वूया । १०० पुंसकेसु
णिरत्थकं पवासं गमिस्सति त्ति वूया । १०० दढेसु तत्थेयं गुंतुं वाहिस्सि त्ति वूया । चलेसु खिप्पं पवासा आगमिस्सति त्ति
वूया । १०० विविधे चलामासे परेण परं गमिस्सति त्ति वूया । १०० सुक्खेसु पवासे मद्धं धणवंधं लभिस्सति त्ति 20
वूया । रसेसु पीतकेसु वा दढेसु सुयण्णलामं पवासे लभिस्सति त्ति वूया । कण्हेसु परिकिल्लेसं पवासे णिप्फळं पावि-
स्सति त्ति वूया । आहारेसु कतकज्जो खिप्पं आगमिस्सति त्ति वूया । णीहारेसु अकतकज्जो चिप आगमिस्सति त्ति वूया ।
धूलेसु णिव्वाधिको पँच्छो पवासा आगमिस्सति त्ति वूया । कसेसु चापिपरिकिट्ठो किलच्छादणो पवासा आगमि-
स्सति त्ति वूया । गहणेषु अरण्णदेसं गमिस्सति त्ति वूया । उपगगहणेषु आरामवहुळं रमणीयं देसं गमिस्सति त्ति
वूया । आगासेसु रमणीयदेसं गिरहँक्खरंगं गमिस्सति त्ति वूया । परिमंढलेसु णगरं गमिस्सति त्ति वूया । तणूसु जणपदं 25
गमिस्सति त्ति वूया । मतेसु पवासे मरिससति त्ति वूया । उर्यँहुते पवासे उरधवं पाविससति त्ति वूया । वंघेसु वंधं
पाविससति त्ति वूया । मोक्खेसु पँथासो असंगो भविससति त्ति वूया, पंधं रेमं गमिस्सति त्ति वूया । पसण्णेषु पवासे

१ पुच्यदिट्ठं हं० त० ॥ २ पुच्यदिट्ठं हं० त० विना ॥ ३ सब्बमाणुं हं० त० ॥ ४ ०वतो महावीरमहा सं ३ पु० ॥
५ ०व्यसोस्खं हं० त० विना ॥ ६ ०गते वाहणछत्तगते सब्बं हं० त० विना ॥ ७ ०हणे घयाणकोत्तं हं० त० ॥ ८ ०पट्टण-
रज्ज-रट्टपमुहट्टाणेषु परिधां सि० ॥ ९ ०व्यणिविसगते हं० त० ॥ १० जाण-वाहणपवासं हं० त० विना ॥ ११ हत्थवि-
हान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ १२ ० १० एतथिहान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ १३ हत्थविहान्तर्गतः पाठः हं० त०
एव वर्तते ॥ १४ पच्छण्णो पं हं० त० ॥ १५ णिरक्खमं गं हं० त० विना ॥ १६ हं० त० विनाअन्य-हुते हा.....
...वंघेसु सं ३ पु० ॥ हुते हाणिं गमिस्सति त्ति सब्बया वूया वंघेसु सि० ॥ १७ पवासासंगो हं० त० विना ॥

- मित्तं पाविस्सति त्ति वूया । अप्पसण्णेषु पवासे विग्गहं वा विवादं वा पाविस्सति त्ति वूया । उद्धंभागेसुं मूलेसु य पव्व[य]वहुलं देसं बेहायसं गमिस्सति त्ति वूया । अथेष्टिमे णिण्णेषु य णिण्णं देसं अट्ठीवहुलं गमिस्सति त्ति वूया । तुच्छेसु पवासो उइच्छिहिसि त्ति वूया । पुण्णेषु पवासे परस्स हरितं घणं पाविस्सति त्ति वूया । आपुण्णेषु पवासे अंतरा अधिवासिस्सति त्ति वूया । अग्गेषु पवासे आलीवणकं पाविस्सति त्ति वूया । वायव्वेसु पवासे वाडव्यातिकं
- 5 पाविस्सति त्ति वूया । जण्णेषु उस्सयं पाविस्सति त्ति वूया, जिण्णेषुवहुलं चेष देसं गमिस्सति त्ति वूया । सदेयेसु विस्सुयजणपदं गीत-वाइतवहुलं गमिस्सति त्ति वूया । दंसणीयेसु धहुजणाभिप्पेतं दंसणीयजणपदं गमिस्सति त्ति वूया । गंघेयेसु गंधुपयोग-गंधोपभोगवहुलं जणपदं गमिस्सति त्ति वूया । रसेयेसु विविधपापेज्ज-बहुअण्ण-पाण-रसिगपरिभोगं देसं गमिस्सति त्ति वूया । फासेजेसु जाणगतो वाइणगतो वा उदुसुसं उदुसुहफासं देसं गमिस्सति त्ति वूया । मण्णेषु णिव्वुतम-णसो अभिज्जियणिव्वुतव[हु]लं देसं गमिस्सति त्ति वूया । तिण्णेषु अंतरा संगमं पाविस्सति त्ति वूया । दक्खिण्णेषु दक्खिण्णायं
- 10 दिसायं पवासं गमिस्सति त्ति [वूया] । दक्खिण्णपुरत्थिमेसु गत्तेसु दक्खिण्णपुरत्थिमायं दिसायं पवासं गमिस्सति त्ति वूया । < दक्खिण्णपच्छिमेसु गत्तेसु दक्खिण्णपच्छिमायं दिसायं पवासं गमिस्सति त्ति वूया । > पच्छिमउत्तरेसु गत्तेसु पच्छिमउत्तरायं दिसायं पवासं गमिस्सति त्ति वूया । वामपुरत्थिमेसु गत्तेसु पुव्वुत्तरायं दिसायं पवासं गमिस्सति त्ति वूया । एवं सब्बदिसाओ आधारयित्तुं उवलद्धव्याओ भवंति । जघाकालकालोपलद्धीहिं आधारयित्तुं कालो पवासे विण्णो भवति । जघा लामा-उलामे जीवित-मरणे सुद्ध-दुक्खे सुकाल-दुक्काल-भया-उभयादी य मात्ता आमास-सद-
- 15 पडिहव-रस-गंध-फासउवलद्धीहिं आहारयित्तुं जहुत्ताहि उवलद्धीहिं पवासे सब्बे उवलद्धव्या भवंति ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्ञाय पवासो णामाज्झायो
तेयालीसइमो सम्मत्तो ॥ ४३ ॥ छ ॥

[चउयालीसइमो पवासद्वफालज्जाओ]

- णमो मगगतो यसवतो महावीरवद्धमाणस्स । अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्ञाय पवासस्स
- 20 अद्धाकालं णामाज्जायं । तं खलु भो ! चक्खायिस्सामि । तं जघा—
तत्थ पुरत्थिमायं दिसायं अव्वत्तसद-रूबे वा अद्धमासे वा पवासं गमिस्सति त्ति वूया । दक्खिण्णायं दिसायं अव्वत्ते वा सदे वा रूबे वा पक्कगण्णायं पवासं गमिस्सति त्ति वूया । अव्वत्तेसु सद-रूबेसु दिवसगण्णाय पवासं गमिस्सति त्ति वूया । पच्छिमायं दिसायं अव्वत्तेसु सद-रूपपाउम्भावेषु वरसगण्णाय पवासं गमिस्सति त्ति [वूया] - अव्वत्तेसु सद-रूपपाउम्भावेषु मासगण्णाय पवासं गमिस्सति त्ति वूया । वायं (उत्तरायं) दिसायं अव्वत्तसद-रूबा
- 25 पाउम्भावे वरसगण्णाय पवासं गमिस्सति त्ति वूया । अव्वत्तेसु सद-रूपपाउम्भावेषु मासगण्णाय पवासं गमिस्सति त्ति वूया । एण्णु चेष एक्कीसाय मासाणं पवासं गमिस्सति त्ति वूया ।
तत्थ आहारनीहारेसु आगम्म पडिगमिस्सति त्ति वूया । अण्णु गाउयं पवासं गमिस्सति त्ति वूया । साधारणे य अद्धजोयणं पवासं गमिस्सति त्ति वूया । अम्भंतरेसु इस्सरे रावम्भंतरो पवासो त्ति वूया । अम्भंतरम्भंतरेसु देस-म्भंतरो पवासो त्ति वूया । बाहिरम्भंतरेसु अण्णंतरं रज्जंतरं गमिस्सति त्ति वूया । बाहिरैसु रज्जंतरं गमिस्सति त्ति वूया ।
- 30 बाहिरवाहिरैसु अस्सुयं गमिस्सति त्ति वूया । पुपूसु जणपदं गमिस्सति त्ति । परिमंढले णरं गमिस्सति त्ति । थाव-

१ °सु धूलेसु य वहुलदेसं ६० त० विना ॥ २ अधिण्णो ६० त० विना ॥ ३ °यहुयं ६० त० विना ॥ ४ पवासैसु उहुत्ति ६० त० विना ॥ ५ जित्तुव' घं ३ पु० ॥ ६ °सु टाणगतो ६० त० ॥ ७ < १० एतविहान्तर्गतः पाठः ६० त० एव वर्तते ॥ ८ आगास' ६० त० ॥ ९ हलाचिहान्तर्गतः पाठः ६० त० एव वर्तते ॥ १० पुरिमायं वि० ॥ ११-१२ °सु समाग' ६० त० विना ॥ १३ अट्टजो' ६० त० ॥ १४ °स्सरे रा' ६० त० विना ॥ १५ 'तरे प' ६० त० विना ॥ १६ अस्सुति ग' ६० त० विना ॥

रेसु पट्टणाणि गमिस्ससि ति बूया । डहरत्यावरेसु खेडाणि गमिस्ससि ति । चँलेसु खंघावारं गमिस्ससि ति । डहर-
चलेसु गामं गमिस्ससि ति बूया । इस्सरेसु रण्णे मूलं गमिस्ससि ति बूया । उवउत्तमेसु अमचसस मूळं गमिस्ससि
ति । पुण्णामवेजेसु रायपुरिससकासं गमिस्ससि ति । दढेसु संसट्टेसु बवहारं गमिस्ससि ति बूया । अब्भंतरेसु
अप्पणे अत्थेण पवासं गमिस्ससि ति बूया । बाहिरेसु परस अत्थेण पवासं गमिस्ससि ति । बाहिरब्भंतरेसु मिच्चस
अत्थेण पवासं गमिस्ससि ति बूया । बाहिरवाहिरेसु णेव अप्पणे णेव परस अत्थेण पवासं गमिस्ससि ति ६
ति बूया ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय पवासज्जायस्स वि अज्जाकाळं
णामज्जायो चउयालीसतिमो सम्मत्तो ॥ ४४ ॥ छ ॥

[पणयालीसइमो पवेसज्जाओ]

णमो भगवतो यसवतो महापुरिसस्स महावीरवद्धमाणस्स । अथापुवं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगवि- 10
ज्जाय पवेसं णामज्जातं तं खलु भो ! चकखस्सामि । तं जघा-अब्भंतरामासे णिद्धामासे सुद्धामासे पुण्णामासे पुण्णामवे-
ज्जामासे उम्मट्ठे उद्दोगिते अभिगाहिते भुत्ते पीते खइते लीढे कण्णतेहअब्भंगे हारिवाल-हिंदुलुक-मणरिसल-अंजण-
समालमणकमते अलत्तक-कलंजक-वण्णक-पुण्णक-अंगरागते उरिसघण-भक्खण-उब्भंरं [ण]-उच्छंढण-उच्चट्टण-पधंस-
[ण]-ण्हाण-पधोवण-पव्वासेण-अणुलेवण-विसेसकायधूमाधिवाससंजोयणाडुभावेसु परिघाण-उत्तरासंग-सोणिमुत्त-वर-
मल्ल-सुरभिजोगसंविधानक-आभरणविविधभूसणसंजोयणासु अलंकारमंडणासु य सद-रूवेसु य एवंविवेसु पुच्छेज्ज 15
आगमो भविस्सतीति बूया । तत्थ सिविका-रघ-जाण-जुगा-कट्टमुह-गिह्ति-संदण-सकड-सकडि-याहिज्जविविधअधिरोह-
णासु ह्य-नाज-बलियद-करभ-असत्तर-खर-अयेलक-गर-मरुत-हरित-महिरूह-पासाद-विमाण-सयणाधिरोधणासु धय-तोरण-
गोपुर-उट्टालग-पतागासु समारोधण-समुसवणे वा पुच्छेज्ज आगमो भविस्सतीति बूया । तत्थ हत्थसमाणयणे सब्बं-
गसमाणयणे य आगमो भविस्सतीति बूया । तत्थ दुद्ध-इधि-सप्पि-ण्ववणीत-तेल्ल-गुल-लवण-मधु-मच्छ-मंस-सैव्वमेद-
समामासे आगमो भविस्सतीति । तत्थ पुडवि-दग-अग्गि-वायु-पुप्फ-धण्ण-वी ह्त्थ य-सर्व्वरणदव्वसमाधिअणे आगमो 20
भविस्सतीति बूया । तत्थ अंकुर-परोह-पत्त-किसलय-पवाल-तण-कट्ट-लेट्टुक-सक्कर-उपल-विविहसत्थ-सत्थाभरणोपकरण-
रुविअलोह-मणिमुत्त-रयत्त-धैरसमावण्णेसु चैव आगमो भविस्सतीति बूया । तत्थ उक्खुलि-पिट्टराग-द्विउलंक-रसदब्बीसु य
छत्तोणागह-पावग-उब्भुमंड-उभिल्लणफणखपसाणगकुब्बट्टं वणपेलिका-विवट्टवण-अज्जणी-पसाणग-आदंसग-सरणी-
पतिभोयण-वायुजोपकरण-मालागते वा उवसक्किते वा उववसिते वा आवद्धे वा माला-उलंकारभूसणे वा पवसिते वा
परिहिते वा पाड्ढे वा अंच्छादणे वा पुच्छिज्जमाणे वा अभिसुद्धे वा अल्लिगिते वा उवणीए वा एतेसि वा एवमादीणं 25
पडिगोमालाणं संपदग्गहणे पुच्छिज्जमाणे आधारिज्जमाणे वा एवंविधसदरूवपाटुब्भावे आगमो भविस्सतीति बूया ।
तत्थ अब्भंतरेसु य सज्जीवेसु य सज्जीवं पवेक्खति ति बूया । तत्थ वग्गेषु सब्बअज्जीवेसु य अज्जीवं पवेक्खति
ति बूया । तत्थ सज्जीवेसु पुव्वाधारिते सज्जीवं तिविधमाधारये-दिवं माणुसं तिरिक्खज्जोणियं चेति । तत्थ उदंभागेसु
भिंमार-उत्त-पत्ताग-खोवहत्थैपाणियपाटुब्भावे चैव दिवं पवेक्खति ति बूया । तत्थ उच्चुक्कामासे समभागेसु
सव्वमणुस्सगते य माणुसं पवेक्खति ति । तत्थ तिरियामासे सब्बतिरिक्खगते य तिरिक्खज्जोणियं पवेक्खति ति 30

१ रत्तेसु गंधां हं० त० ॥ २ सम्मट्टेसु सि० ॥ ३ गउच्छवणं हं० त० ॥ ४ हिण्णवणां हं० त० ॥
५ सज्जमेदं हं० त० विना ॥ ६ द्दुक्खिहान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वणीते ॥ ७ गरेति हं० त० विना ॥ ८ वा पवेसिते
हं० त० ॥ ९ वा पावासिप चा हं० त० ॥ १० अच्छोदणे हं० त० विना ॥ ११ आगच्छन्ते वा हं० त० ॥ १२ प्थप-
हाणियं हं० त० ॥
अंग० २५

[छायालीसइमो पवेशणज्झाओ]

णमो भगवतो यसवतो महापुरिस्स । अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिस्सदिण्णाय अंगविज्जाय पवेशो णामा-
ज्झायो । तं जया—

गिहं पविसतो वा वि जं जं पस्से सुभा-उसुभं । सव्वं हितयेण गेण्हत्ता गिह्दिसे अंगधितओ ॥ १ ॥

वल्लिवहा यावि अरसा था उट्टा वा गद्भा वि वा । सुओ मदणसलाका वा कवी मोरा व दिस्सते ॥ २ ॥

एताणि कोट्टये दिस्स अंगणं पविसे ततो । अणाइलो असंदिद्धो दिट्ठीसु य समाहितो ॥ ३ ॥

यंभत्थलम्मि यं पस्से जं वा पस्से अरंजरे । उव्वरे वा उवट्टाणे आसैणगहणे तथा ॥ ४ ॥

उदुवखलस्स सालायं कथाडे दारकण्णये । आसणस्स य दिण्णस्स अंजलीकरणम्मि य ॥ ५ ॥

महाणसम्मि जं पस्से भत्ताकारीय वा पुणो । तत्थ भत्तधरे वा वि जे य वत्थुस्स णिक्कुंडा ॥ ६ ॥

ओकट्टितम्मि णेवम्मि ओभग्गे ओपणिव्वए । वाहिरत्थस्स वावार्त्ति अंगवी इति लक्खए ॥ ७ ॥

कंवासु विप्पमुक्कासु ओसरिता मल्लकां जति । विचडे उत्तमाकारे कुलभंगं वियागरे ॥ ८ ॥

वेदणं वा सिएणिएहिं दास-कम्मकरेहिं वा । अणेव्वाणी य अत्येहिं गिह्दिसे अंगधितओ ॥ ९ ॥

दधि-मंगल-पुप्फ-फलं अक्खते सारतंडुले । विदू सम्मज्जिते दिट्ठा वद्धिं तत्थ वियागरे ॥ १० ॥

तुसेहिं वा समोखिण्णं पंसुएण व दिस्सति । अंगारच्छारिओखिण्णं हाणिं तत्थ वियागरे ॥ ११ ॥

अध रुक्खम्मि भग्गम्मि अधवा जज्जरीकते । विमुक्केसु य संधीसु कुलभंगं वियागरे ॥ १२ ॥

दारुवण्णकसंपाते संधी जरस्स चलाचला । अणेव्वाणि कुडुंवरैस्स अत्थं वा वि चलाचलं ॥ १३ ॥

पुरिस्सस्स दक्खिणे पासे थिया वामे पवेदये । खंडिते पडिते भिण्णे पडिरुव्वेण गिह्दिसे ॥ १४ ॥

संधिमि विप्पमुक्कम्मि भग्गे वा उत्तहंभरे । जमत्थमभिकंखेज्ज तमत्थं हीणमादिसे ॥ १५ ॥

उग्घाटो वा क्वाढं वा दारं समणुव्वत्ति । दुक्खेण अंजितो अत्थो सव्वो होति गिरत्थयो ॥ १६ ॥

अधरुत्तर्म्मिरे यावि ओभग्गे विप्पकंडिते । यासवण्णकसंपाते गिहे वूया अणिव्वुत्ति ॥ १७ ॥

सव्वतो विप्पमुक्कम्मि ओभग्गे एकपरिस्सते । कुडुंविणो अणेव्वाणि अत्थहाणिं च निदिसे ॥ १८ ॥

तिलवेह्ववयाका वा कोट्टते हांति अंच्छुया । पिवीलिया वा दिस्संति वार्धिं तत्थ वियागरे ॥ १९ ॥

एलओ कोट्टए वद्धो वाहरे विगतं जया । अकारणे विरत्तम्मि कुडुंवे भयमादिसे ॥ २० ॥

अरसो कोट्टए वद्धो कडुं सुवति पच्छतो । गिधंसते गिहाळं वा कुडुवं स विणस्सति ॥ २१ ॥

पक्खी य कोट्टए जत्थ ल्खणपक्खोऽत्थ दिस्सति । दासा गिगलवद्धा वा हाणिं तत्थ वियागरे ॥ २२ ॥

उदग्गा दिस्सते पक्खि मोदंताणि दंडं ति य । उदग्गत्यपुमंसा य वद्धिं तत्थ वियागरे ॥ २३ ॥

एताणि कोट्टए दिस्स पविट्ठो अंगणम्मि वि । अणाइलो असंदिद्धो ततो पेक्खेज्ज लक्खणं ॥ २४ ॥

विर्हे (विदू) सम्मज्जितं दिस्स चक्खुस्सं च वियागिया । कतं पुप्फोवयारं च वद्धिं तत्थ वियागरे ॥ २५ ॥

दारका जति दिस्संति पलोट्टा धरणीतले । मुत्तं पुरीसमोगाढा हाणिं तत्थ वियागरे ॥ २६ ॥

दारका जति दिस्संति अलंकित-विमूसिया । हिट्ठा मुट्ठा पमोदंता वद्धिं तत्थ वियागरे ॥ २७ ॥

१ असंधिट्ठो हं० त० ॥ २ सणे गं ति० ॥ ३ दारकामए हं० त० ॥ ४ णिक्कुंडा हं० त० ॥ ५ उक्कट्टितम्मि हं० त० ॥ ६ का जिया (जया) हं० त० ॥ ७ स्स हत्थं हं० त० ॥ ८ उत्तयस्सरे हं० त० ॥ ९ दीणं हं० त० विना ॥ १० आधितो हं० त० विना ॥ ११ कट्टिते हं० त० ॥ १२ दारयण्णं हं० त० विना ॥ १३ अट्टया हं० त० विना ॥ १४ कुट्टओलओ हं० त० ॥ १५ वदंति हं० त० विना ॥ १६ विट्ठस्सम्मं हं० त० विना ॥

- अंगे जत्य पस्सेज वंणं पुष्क-फलाणि वा । गिण्णिज्जमाणं पीहारं हाणिं तत्य वियागरे ॥ २८ ॥
 अंगे जत्य पस्सेज वैणं पुष्क-फलाणि वा । अंतगिज्जमाणं आहारं वद्धिं तत्य वियागरे ॥ २९ ॥
 अंगे जत्य पासेज 'रोदंठो वज्जतोमुहं । परिदेयमाणं कलुणं हाणिं तत्य वियागरे ॥ ३० ॥
 अंगे जत्य पासेज रममाणं अभिमुहं । उदग्गवेसं मुदितं वद्धिं तत्य वियागरे ॥ ३१ ॥
 5 अंगे जत्य पासेज छिज्जमाणे य पंतए । मइले विरण्ण-वियले हाणिं सोयं च गिहिसे ॥ ३२ ॥
 अंगे जत्य पासेज सुक्खिले कंबले सुयि । वासिते य मणुण्णे य वद्धिं लाभं च गिहिसे ॥ ३३ ॥
 भायणाणि य भिण्णाणि अंगे जत्य दिस्सते । पलोद्विताणि तुच्छाणि हाणिं रोगं च गिहिसे ॥ ३४ ॥
 भायणाणि य दिस्संति पट्टिपुण्णाणि अंगे । चक्खुसाणि अरंहाणि आयं लाभं च गिहिसे ॥ ३५ ॥
 अंगे जत्य दीसंति 'पोत्ती णंतकविक्खला । आसंदका य संभग्गा हाणिं रोगं च गिहिसे ॥ ३६ ॥
 10 पविट्ठो अंगं साधु पस्सेज णर-णारिओ । अलंभिते सुयी हिट्ठे संपीति-लाममादिसे ॥ ३७ ॥
 अंगे जति दीसेज खिजंतं रोसणं नरं । पुवं जो अज्जिओ अल्लो सन्न्यो तम्मि विणस्सति ॥ ३८ ॥
 ३९ फला तु उप्परसा अंगे जति दिस्सति । पुण्णामा य मणुण्णा य कुडुंवी घरिणिं जिया ॥ ३९ ॥
 फला उ उक्कडरसा अंगे जति दीसति । धीणामा य मणुण्णा य कुडुंवी (विं) घरिणी जये ॥ ४० ॥
 पुण्णामधेज्जा छिज्जते मिजंतं य फला जति । बाळा तत्य विवज्जते तम्मि उप्पायदरिसणे ॥ ४१ ॥
 15 धीणामा जति छिज्जते पवालाणि फलाणि वा । दारियाओ विवज्जते तम्मि उप्पायदरिसणे ॥ ४२ ॥
 समगो बंभणे वा वि रोहे जस्म पलायति । उप्पायं तारिसं दिस्स हाणिं तत्य वियागरे ॥ ४३ ॥
 पुण्णो अरंजरो जस्म विपजेज्ज अणाहतो । कुडुंवरस्स विणासाय गिहिसे अंगचित्तो ॥ ४४ ॥
 ४५ हुच्छो अरंजरो जत्य विरजेज्ज अणाहतो । कुडुंविगो विणासाय गिहिसे अंगचित्तो ॥ ४५ ॥
 कागा अरंजरे पररे मुगद्धा वा चारभत्तिया । घरिणी तत्य कुडुंवरस्स जणेण परिमुज्जति ॥ ४६ ॥
 20 पल्लिओ अरंजरो जत्य दुच्चला जस्म पेदिया । पुरिसस्स पुण्णं जाणेज्ज अप्पपुण्णा कुडुंविणी ॥ ४७ ॥
 पल्लिया पेदिया जत्य दुच्चलो य अरंजरो । घरिणीय पुण्णं जाणेज्जा अप्पपुण्णो कुडुंविओ ॥ ४८ ॥
 बंभत्यलम्मि भिण्णम्मि णामं जाणं हुडुंविणो । पियविप्पयोग-मरणं अत्यहाणि च गिहिसे ॥ ४९ ॥
 समग्गम आसणे दिण्णे पीलिट्ठे अत्युते पडे । हुडुंवियस्स संपत्ती सह भारियाए गिहिसे ॥ ५० ॥
 समग्गस आसणे दिण्णे सुक्खिले अत्युते पडे । हुडुंवियस्स संपत्ती सह भन्नाए गिहिसे ॥ ५१ ॥
 25 अथवा भग्गोहम्मि समगो आसणं लभे । पिट्ठिउज्जमाणे पूजेण कलहं हाणिं च गिहिसे ॥ ५२ ॥
 सिद्धमण्णं विपाण्णो जं जथा जारिसं भवे । [वि]मत्तं उरपारेत्ता दीनोदत्तेण गिहिसे ॥ ५३ ॥
 'संवेगमुत्तरणं मुदं विमलं च पत्तिया । बंभणं सुद्धरं च मुयिमोदणमादिसे ॥ ५४ ॥
 कापुरेणु य पण्णेणु यामिसं ओदणं पदे । जो जस्स वण्णपरिहयो सं तथा अण्ण(अत्थ)मादिसे ॥ ५५ ॥
 उत्तदुल्लमि कलहं भूधियो रोगमादिसे । अणेज्याणि वज्जयम्मि दट्ठे ज.विनसंसयं ॥ ५६ ॥
 30 बुधियो पूर्वको तिणो पत्तं गिट्ठो दिवा भरे । बहूए परिहाए य तं विणासाय लक्ष्मणं ॥ ५७ ॥
 विवण्णो अप्पगारो वा निरिच्छलो वा वि ओदणो । कुडुंविगो विणासाय ओदणेण पयेदये ॥ ५८ ॥
 विविहत्ताउ दीमंति उप्पुते वा मते वि वा । मताणु मरणं वृया जीवंतीणु उयएवं ॥ ५९ ॥

१-२ घण्ट ६० त० मिता ॥ ३ अतिनिज्जमाणं अं हारं ६० त० ॥ ४ रोदंठो ६० त० मिता ॥ ५ पोत्तीयं
 ६० त० ॥ ६ अविधियो आयो ६० त० मिता ॥ ७ उक्कडरसा ६० त० एव वर्णं ॥ ८ उक्कडरसा ६० त०
 मिता ॥ ९ विवज्जते ६० त० ॥ १० उ- पु- दग्गवेसणं अथ ६० त० मिता ॥ ११ पट्टिउज्जं ६० त० मिता ॥
 १२ संवेगमुत्तरणं ६० त० ॥ १३ 'वत्तं हु' ६० त० ॥ १४ बुद्धिभो ६० त० ॥

केसे दिट्ठे परिकेसं सक्कारय उवह्वं । पराजयमसक्कारं कंढगम्मि वियागरे ॥ ६० ॥
 सुत्ते पसारिते दिट्ठे अट्टाणतेण गिहिसे । तमेव सुत्तं पलिमूढे बंधणतेण गिहिसे ॥ ६१ ॥
 तणं च जति दिस्सेज्ज कुडुंवे जं समीहती । सव्वं गिरत्थकं भवति जति सुक्खं ओदणं भवे ॥ ६२ ॥
 जवणीयं च पुच्छेज्ज पवसंती परम्मुही । वेधव्यं सा लभित्ताणं पच्छा रुवेग जीवति ॥ ६३ ॥
 जवणीयं च पुच्छंती समणं जा उ अंभिम्मुही । वत्थे वा वि पलिमूढा पुण्णेज्ज पवडेज्ज वा ॥ ६४ ॥
 कुडुंविणो असंपत्ती तिससे थीया पवेदये । अन्भंतरेण पक्खस्से बंधणे सा विरुन्मति ॥ ६५ ॥
 जवणीयं च पुच्छंती समणं जा उ अंभिम्मुही । संधितं अंजलिं कुज्जा गिन्वुतिं तत्थ गिहिसे ॥ ६६ ॥
 दक्खिणे पुत्तलाभाय धिती लामं च वामतो । सक्कारे सुहमागी य असक्कारे अणेन्वुतिं ॥ ६७ ॥
 संखिप्पे वा खिप्पे हत्ये पुब्बं भागी वियागरे । विखिप्प संखिप्पे हत्ये पच्छा भदं वियागरे ॥ ६८ ॥
 उज्जुयं अंजलिं कुज्जा विपुला अत्थ संपदा । विणतं अंजलिं कुज्जा अत्थहाणि वियागरे ॥ ६९ ॥
 अंतो महाणसे सेसं साकं सूयोदणं दाधिं । तन्भावपट्टिरुवेणं अंगवी उवलक्खये ॥ ७० ॥
 ददं च अंगमामसति तिथा उट्टाय आमसे । अभिमुही य भगति अण्णमत्थि त्ति गिहिसे ॥ ७१ ॥
 उल्लोयित्ते उम्मट्टे भाणिते उवणामिते । हितयोदराणं आमासे अण्णमत्थि त्ति गिहिसे ॥ ७२ ॥
 चले चले अंगमामसति बाहिराणि गिसेवति । गिम्मट्टेसु य गत्तेसु अण्णं गत्थि त्ति गिहिसे ॥ ७३ ॥
 रिक्ताकाणि पदिसंति भायणाणि समंततो । पलोद्विताणि मिण्णाणि अण्णं गत्थि त्ति गिहिसे ॥ ७४ ॥
 तंदुले य पदिसंति पणालीय गेलेज्ज य । परिमज्जकं च दट्ठुणं अत्थि मज्जं ति गिहिसे ॥ ७५ ॥
 पसुत्ता जति दीसंति मोरा वट्ठक-लावका । तेसिं रुता-उरुतं सोबा सागुणामऽभिणिहिसे ॥ ७६ ॥
 ओसुद्धे गिद्धुते छुद्धे गिसुद्धे धंसिते धुते । कलहं व दिट्ठो बालाणं मंसमत्थि त्ति गिहिसे ॥ ७७ ॥
 रिक्ताकाणि पदीसंति धेड-कुह-अरंजरा । पलोद्विता य मिण्णा धे धं गत्थि मज्जं ति गिहिसे ॥ ७८ ॥
 जलयरेसु य सत्तेसु जलपसंदणेसु य । उवकेसु य भंडेसु मच्छमत्थि त्ति गिहिसे ॥ ७९ ॥
 दन्भे कुसे य दट्ठुणं अहपुप्फ-फलाणि य । हरितं कुर-पवालाणि सागं हरितकं वदे ॥ ८० ॥
 फलाणि जति दीसंति गिद्धाणि मधुराणि य । दन्तोड्ड-जिब्भयामासे फल-सागाणि गिहिसे ॥ ८१ ॥
 यामिस्सोदीरणे वण्णा यामिस्सोदीरणे रसा । यामिस्साणि तु सागाणि गिहिसे अंगचित्तओ ॥ ८२ ॥
 अत्थि अन्भंतरामासे घञ्जामासेसु गत्थि य । आमाससंजोगविधिं अंगवी इति लक्खये ॥ ८३ ॥
 मच्छमाणं दट्ठुणं तक्कमच्छं विलं तथा । परिकिण्णसदेसु तथा दव्वम्मि रसकं वदे ॥ ८४ ॥
 समणं पत्थितं संतं गिग्गतं वज्जतोमुहं । जो ठवेतूण पुच्छेज्ज अप्पसत्थं पवेदये ॥ ८५ ॥
 पवेदुक्कामं पुच्छेज्ज अत्थि आगमणं धुवं । निगंतुकामं पुच्छेज्ज पवासा गिग्गतं वदे ॥ ८६ ॥
 कोट्टकम्मि व पुच्छेज्ज वज्जत्थं सं पवेदये । सक्कारेण य पुच्छंते अत्थि अत्थो त्ति गिहिसे ॥ ८७ ॥
 तं चेव अत्थं पुच्छेज्ज असक्कारेण अंगविं । जाणे असुभं अत्थं वाहिरं अंगचित्तको ॥ ८८ ॥
 समणं पज्जवासंतो अंतो या जति या वहिं । महिला होति असम्मूढा पुरिसा तत्थ वट्ठति ॥ ८९ ॥
 समणं पज्जवासंतो अंतो या जति या वहिं । पुरिसा होति असम्मूढा इत्थिओ तत्थ वट्ठति ॥ ९० ॥
 पेम्मं रागं च दोसं च अवणेत्ता वियक्खणो । आधारयित्ता अंगेगं अंगविं अभिणिहिसे ॥ ९१ ॥ छ ॥

॥ इति खलु भो । महापुरिसदिण्णाय अंगविजाय पवेसणो णामाज्जायो

धेदुत्तचालीसतिमो सग्गमत्तो ॥ ४६ ॥ छ ॥

१ अभिमुही हं तं ॥ २ उस्त संभणे सा विरंभप हं तं ॥ ३ अभिमुही हं तं ॥ ४ धिती धामं च पासप हं तं ॥ ५ वे सुहृत्थि हं तं विना ॥ ६ अज्जयं हं तं विना ॥ ७ तथा उट्टाय हं तं ॥ ८ गियेसति हं तं ॥ ९ गपसु य हं तं ॥ १० वंसिप बुधो हं तं ॥ ११ दिट्ठं हं तं विना ॥ १२ घट्टुं हं तं विना ॥ १३ च छिन्नं मज्जं हं तं ॥ १४ पट्ठत्तां हं तं विना ॥

[सीयालीसंडमो जत्तज्झाओ]

णमो भगवतो जसवतो महापुरिसस महावीरवद्दमाणस । अघापुवं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्ञाय जत्ता णामज्झायो । तं खलु भो ! तमपुंकरुआइस्सामो । तं जघा-अत्थि जत्ता णत्थि जत्त त्ति पुव्वमाधारंयित्ठं मरति । तं जघा-अच्चंतरामासे घुवे धितामासे दढामासे दक्खिणगत्तामासे णुंसकामासे पच्छिमगत्तामासे ५ उम्मज्जिते उव्वसिते उव्वट्टिए आउंठिते संविट्ठे अवसिते पल्लित्तियागते छिदापिघाणे पिहिते उग्गहिते प्फालंविठे पट्टिपुट्टे पट्टिसिद्धे पवेसिते विक्खित्ते ठविते ठावरघितीए ल्हइते णिकायिते एतेसु आमास-सवण-दंसणपादुच्चावेसु णत्थि जत्त त्ति घूया । तत्थ छत्ते वा भिंगारे वा वियणियं वा तालवेटे वा सत्थे वा पहरणे वा आयुघे वा औवरणे वा यम्मे वा कवये वा अंभिणीयमाणे वा पवेसियमाणे वा णित्थिप्पमाणे वा पडिसामिज्जमाणे वा वियजिज्जमाणे वा विगासिज्जमाणे वा प्फालंविज्जमाणे वा अयजेयमाणे वा णत्थि जत्त त्ति घूया । अच्चंतेरम्मूहे एवंपकारये वा जाणे वा १० वाहणे वा उव्वगाहणे (उव्वगाहणे) वीं ओमुंचणे वा अतिणयणे वा णत्थि जत्त त्ति घूया । सव्वेसु य णत्थिकारसह-पादुच्चावेसु णत्थि जत्त त्ति घूया । तत्थ यज्झामासे चळामासे चळणामासे वामगत्तामासे पैसांरितामासे गत्तपंचगओ-मज्जिते निम्मज्जिते अंपमज्जिते उपविट्ठे उट्टिते पत्थिते वा णिमते वा णिल्लोक्खिते वा < णिल्लोक्खिते वा > णिल्लिप्पिते वा अवसारिते अवसकिते अंपयजते वा विप्पमुंचणे अंगुते णिकेद्वित्ते णिण्णते "णिक्खित्ठे वा कोसीगते वा गमणल्लिं-दंसण-सरणपादुच्चावे सज्जीर-णिज्जीवाणं च दव्वाणं एवंधिधाकारपादुच्चावे अत्थि जत्त त्ति घूया । तत्थ छत्ते १५ वा भिंगारे वा वीयणीयं वा तालवेटं वा अच्चुत्थिते वा णीणिते वा पहरणे वा आयुघे वा आवरणे वा यम्मे वा कवये वा सण्णाहप्टे वा उंढीरमाणे वा णीणीयमाणे वा णेय वाहिरंते वा जत्तासुहे वा कज्जमाणे य सज्जे वा मंजिज्जमाणे वा अत्थि जत्त त्ति घूया । तत्थ जाणे वा पयाहणे वा वाहणे वा जुत्ते वा जोयिज्जमाणे वा "संसिज्जमाणे वा निग्गते वा मिज्जायंते वा निग्गट्टिज्जमाणे वा निग्गट्टिते वा पादुपाहणाणं वा गहणे आचंचणे वा निग्गण्णे वा आगमंणल्लिं-सरणपादुच्चावेसु वा अत्थि जत्त त्ति घूया । विपद-चउप्पद-छप्पद-बहुपद-अपदाणं वा २० सत्थाणं गमणसंयाणसर-रूपपादुच्चावे अत्थि जत्त त्ति घूया ।

तत्थ पुण्णामधेज्जेसु विजयिका जत्ता भविस्सतीति [घूया] । धीणामधेज्जेसु सम्मोदी जत्ता भविस्सतीति घूया । णुंसमधेसु निरत्थिक्ख जत्ता भविस्सतीति । दहेसु चिरं जत्ता भविस्सतीति । चलेसु ण चिरं जत्ता भविस्सतीति । मुद्धेसु महाक्खा जत्ता भविस्सतीति घूया । कण्ठेसु वट्टपरिक्खेसा जत्ता भविस्सतीति घूया । सामेसु सुदित्तेसु य वट्टउत्सवसमोया जत्ता भविस्सतीति घूया, अवि य पमादवती जत्ता भविस्सतीति घूया, मुद्धेसु य वट्टउत्सव-याणा । वट्टउत्सव-येज्जजत्ता २५ भविस्सतीति घूया, धगउंभवट्टला यावि जत्ता भविस्सति त्ति । आहारोसु आयवट्टला जत्ता भविस्सतीति घूया । णीहारोसु अपायवट्टला जत्ता भविस्सतीति घूया । घूद्धेसु महम्मया जत्ता भविस्सतीति घूया । निस्सेसु अत्थजोगा जत्ता भविस्सतीति घूया । पुण्णसु जगपदंभाय जत्ता भविस्सतीति घूया । परिमंद्धेसु णगरउंभाय जत्ता भविस्सतीति घूया । दहएप्पहेसु यामउंभाय जत्ता भविस्सति । दहएपावरोसु रोहउंभाय जत्ता भविस्सति । गहणेसु अरण्णदेमगमणयूयिद्धा जत्ता भवि-

१ 'वत्सव' ६० त० ॥ २ 'वत्सव' ६० त० ॥ ३ 'विययण्य' ६० त० ॥ ४ ओविट्ठे ६० त० ॥ ५ संधिठे ६० त० ॥ ६ 'वत्सव' ६० त० ॥ ७ आहारोसु ६० त० ॥ ८ अतिणीयमाणे वा पयात्थि ६० त० ॥ ९ वा यिनि' ६० ॥ १० वत्सव वा ६० त० ॥ ११ 'तरे मुद्धे ६० त० ॥ १२ वा ओमुंचणे ६० त० ॥ १३ परिवारितामासे गयवर्धण' ६० त० ॥ १४ अघापिठे उणियने पणिय' ६० त० ॥ १५ < > पत्थिक्खित्तं वा ६० त० ॥ १६ 'वत्सव' ६० त० ॥ १७ निग्गट्टिणे ६० त० ॥ १८ निग्गट्टे ६० त० ॥ १९ 'वत्सव' वा 'वत्सव' ६० त० ॥ २० उव्वट्टिणमाणे ६० त० ॥ २१ वा वय वाहिरंते जत्ता' ६० त० ॥ २२ सविज्ज' ६० त० ॥ २३ 'वत्सव' ६० त० ॥ २४ निग्गट्टिण' ६० त० ॥ २५ 'मने वा लिंग' ६० त० ॥ २६ 'मायया ६० त० ॥

स्सति । उवग्गहणेसु आरामदेसगमणभूयिद्धा जत्ता भविस्सति । णिण्णेषु णिण्णदेसभागमणवहुला जत्ता भविस्सति ।
 धद्ध-रुद्ध-वइतेसु गाम-णगर-सण्णिवेसरोधाय जत्ता भविस्सति । मोम्बेसु सुकेसु अपंगुतेसु य णगरोधविप्पमोक्कजाय
 जत्ता भविस्सति, णगरं रुद्धं विप्पमुच्चिस्सति ति । पसादेसु पसण्णेषु य विजयाय जत्ता भविस्सति चिं वूया, पसाद-
 लंभाय जत्ता भविस्सति ति । अप्पसण्णेषु अप्पसादेसु य पराजयाय विवादवहुला यावि जत्ता भविस्सति ति । णवेसु
 पंचुद्दग्गेषु य णवो अपुव्वो जयो जत्तायं भविस्सति ति । अधोभागेषु पराजयो जत्तायं भविस्सति ति । १७ उद्धं-
 भागेषु वेसिकाविजयाय जत्ता भविस्सति । १८ मच्चिमेसु सँमागमं उभयतो समेण जत्ता भविस्सति ति । विव-
 द्दीसु चतुप्पद-विपदेसु वाहणागार-सद-रूवपादुच्चावेसु य वाहणलाभजुत्ता य जत्ता भविस्सति । जण्णेषु वालेयेसु
 य जाणलाभाय जत्ता भविस्सति । तिक्वेसु सत्थसण्णिवायवहुला जत्ता भविस्सति, संगामवहुला यावि जत्ता भविस्सति
 ति । उवहुतेसु उवइवयवहुला जत्ता भविस्सति । संसयित्तेषु सत्थयिता जत्ता भविस्सति ति । साहाधम्मेषु साहाधम्मप्प-
 हारवहुला जत्ता भविस्सति । मुदित्तेषु गिरुवहुता जत्ता भविस्सति । अच्चमंतरेसु उच्चमेसु य सयं अत्थवत्ति जत्तं गमि-
 स्सति ति वूया । वाहारेसु वाहिरपरिचारे भूयिट्ठं अत्थवत्तिस्स जत्तं गमिस्ससि ति । वाहिरच्चमंतरेसु वाहिरच्चमंतरो
 भूयिट्ठं अत्थवत्तिस्स जत्तं गमिस्सति ति ।

वाहिरच्चमंतरा वाहिरा वाहिरवाहिरा य आमासपादुच्चावा उत्तम-मच्चिम-पच्चयर-साधारणेषु णायका परिवारो
 य जत्तायं आधारयित्ता सकाहिं उवलद्धीहिं उवलद्धव्वं भवति । तत्थ णीहारेसु णीहारवहुला जत्ता भविस्सति ति ।
 णीहारणीहारेसु अपयात्ता अच्चुत्थिता णिवत्तिस्सति ति । पुरत्थिमेसु पुरत्थिमं जत्ता भविस्सति । दक्खिणेषु दक्खिणं 15
 जत्ता भविस्सति । पच्चिमेसु पच्चिमेण जत्ता भविस्सति । वामेषु उत्तरेण जत्ता भविस्सति । धापुण्येषु वरिसारत्ते
 जत्ता भविस्सति ति । विसिमेत्तेसु पसण्णेषु य सरदे जत्ता भविस्सति । संबुत्तेसु सीतलेसु य हेमंते जत्ता भविस्सति ।
 अलक्खित्तेषु चित्तेसु य सुरमीसु य वसंते जत्ता भविस्सति । अण्णेषु उण्णेषु य धिंसुमे जत्ता भविस्सति ति । उवणि-
 द्देषु वालेसु य पाउसे जत्ता भविस्सति ति वूया ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय जत्ताऽज्जायो नाम 20
 सीतालीसत्तिमो सम्मत्तो ॥ ४७ ॥ छ ॥

[अडयालीसहमो जयज्जाओ]

णमो भगवतो जसवतो महापुरिसस्स । अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय जयो णामाज्जायो ।
 तमणुवक्खाइस्सामि । तं जघा-तत्थ अत्थि जयो णत्थि जयो ति पुट्टमाधारयित्ठं भवति । तत्थ अच्चमंतरामासे
 द्ढामासे णिद्धामासे लद्धामासे < पुण्णामासे > मुदित्तामासे दक्खिणामासे पुण्णामचेज्जामासे इस्सरामासे उच्चमामासे 25
 उद्धंभागामासे पसण्णामासे अणुपहुत्तामासे उच्चमज्जिते उल्लोगिते उच्चत्तेसु सद-रूव-रस-गंध-फासपादुच्चावे य अत्थि जयो
 ति वूया । तत्थ रणं वा रायडुल्लं वा गण्णं वा णगराणं वा णिगमाणं वा पट्टणाणं वा खेडाणं वा आगराणं वा गामाणं वा सत्ति-
 वेसाणं वा विवद्वीसंपुत्तासु कहासु उदाहरणेदीरणेषु वा एवमादीणं सदाणं अत्थि जयो ति वूया । तत्थ उदुकाले उस्सवे वा
 रुक्खाणं वा गुम्माणं वा लताणं वा वहीणं वा पुप्फ-फल-तय-पत्त-पवाल-परोद्धव्वगपद्धसद-रूवपादुच्चावेसु पच्चिर- 30
 चतुप्पद-परिसप्प-जलयराणं मंदोद्दग्गसंपयोगे य क्कामासु वा एवमादीसु पडिहवेसु वा अत्थि जयो ति वूया । तत्थ 30
 णय-पुण्ण-अहिणवपुप्फ-फल-पत्त-पवाल-मूल-कंदगतेषु वत्था-ऽऽभएण-भायण-सयणा-ऽऽसण-जाण-वाहणपरिच्छद-यत्था-

१ पच्चद्वयेसु य इं० तं विना ॥ २ हत्थविहान्तर्गतः पाठः इं० तं एव वार्ते ॥ ३ समासमं इं० तं ति० ॥
 ४ संसंतित्तेसु इं० तं ति० ॥ ५ विसिमित्तं ॥ ६ उण्णेषु इं० तं ॥ ७ सत्तालीं इं० तं ॥ ८ ३ ॥ ९ ॥
 विहान्तर्गतः पाठः इं० तं नास्ति ॥ १० उत्तरामासे इं० तं ॥ १० महोद्दग्गं इं० तं ॥

- ५५ भरणोपकरणसंभोग-उदत्त-परगघपादुन्भावेषु चैव अत्यि जयो ति धूया । तर्थे धण-धण्णगह-गाम-गगरलद्ध-अधि-द्वित्वपमुत्त-जातसद्पादुन्भावेषु खंधाधारअक्खुजंतउदग्गविजितिणचयपादुन्भावेषु सन्नकब्बारंमपुरिसकारिणिव्बेस-फलपादुन्भावेषु अत्यि विजयो ति धूया । तत्थ छत्त-भिंरगार-ज्झयविअणि-सिबिका-रध-पासादसह-रूपपादुन्भावेषु असण-पाण-राइम-साइमणव-पबुवग-मणुत्तपादुन्भावे गाम-गगर-खेड-पट्टणा-५५गर-अंतपुर-गिह-खेत्त-सण्णिवेससंया-
- ५ पणमापणासु आराम-तलाग-सब्बसेतुसंधावणमापण-सन्निवेसेसु एवंविहेसु सह-रूपपादुन्भावेषु अत्यि विजयो ति धूया । एवमादीसु मणुण्णेदत्तेसु अचंमंतरवाहिरेसु आमास-सह-रूपपादुन्भावेषु विजयं धूया । तत्थ धञ्जामासे चलामासे कण्हामासे तुच्छामासे दीहामासे यामामासे णुंसकामासे पेत्तामासे जधण्णामासे अधोभागामासे अप्पसण्णामासे उदुयामासे ओमज्जिते ओलोगिते अणुदत्तेसु य सह-रूप-गंध-रस-फासपादुन्भावेषु णत्थि जयो ति धूया । तर्थे धण्णं वा रायकुलाणं वा गणाणं वा देसाणं वा णिगमाणं वा णगराणं वा पट्टणाणं वा खेडाणं वा आगराणं वा गामाणं वा सण्णिवेसाणं वा
- १० एवमादीणं अण्णेसिं पि हाणीसंयुत्ता[सु] कधामु णत्थि विजयो ति धूया । तत्थ उट्टणं वा मासाणं वा समयाणं वा रूपराणं वा गुम्माणं वा लताणं वा वल्लीणं वा पक्खीणं वा चतुत्पदणं वा परिसव्वाणं वा कीह-किविट्टण्णं वा धीणं वा पुरिसाणं वा उदुकाल-मद-जोव्वण-पहास-पमुदित-थल वीरिय-अतिउत्त-हीणदीणसह-रूपपादुन्भावेषु णत्थि विजयो ति । तत्थ परिदीणोवहुत्त-वावण्णपुक्क-फल-पवाल-अंहुत्त-परोह-पाण-भोयण-वत्था-५५भरणोपकरण-सयणा ५५सण-ज्ञाण-व्याहणपरि-च्छद-आसार-परिचिहल-मिण्ण-जजरपादुन्भावेषु एतेसिं वा एवमादीणं दब्बोचकरणाणं विणास-विंसंजोयणादिसु सह-
- १५ रूपपादुन्भावेषु णत्थि विजयो ति । तत्थ धण-धण्ण-रत्तणसंचयपरिहाणि-विगास-विप्पलोवणसह-रूपपादुन्भावेषु णत्थि विजयो ति धूया । तत्थ धय-च्छत्त-सत्ति-पास-यीयणी-भहासण-सिबिक-संदंण-रध-वलमी-पदोलि-पवहणभग्ग-मंथित-पडित-विप्पजोयित-ओणामित-लम-लयित-अपविद्ध-छुद्ध-सदिवारित-पहत्त-परावत्ति य एवंविधसह-रूपपादुन्भावेषु णत्थि विजयो ति धूया । तत्थ खंधाधारपराजय-विणिपातितजोध-विविधगहण-पडह-सुरिय-वेजयंति-पंटा अणुदत्त-हीण-खामसर-मीत-वाचक-पलातविविधएवंविधसह-रूपपादुन्भावे णत्थि जयो ति धूया ।
- २० तत्थ अचंमंतरेसु सयं परक्कमेण विजयं धूया । बाहिरचंमंतरेसु सयं परक्कमेण संमुच्चविजयं धूया । बाहिरेसु परसं-सयपरक्कमेण विजयो भविस्सति ति धूया । पुण्णामेसु परक्कमेण विजयो भविस्सतीति धूया । धीणामेसु संतेण विजयो भवि-स्सतीति । णुंसण्णसु अपुरिसकारेणं विजयो भविस्सतीति । णिद्धेसु समुदितस्स सामिद्धीयं विजयो भविस्सतीति धूया । लुक्क्रेणु णिपगयस्स अदसंसाय विजयो भविस्सतीति । अचंमंतरेसु रज्जत्यस्स विजयो भविस्सतीति धूया । अचंमंतरचंमंतरेसु उययाणितं णगराणस्स विजयो भविस्सतीति धूया । बाहिरचंमंतरेसु रज्जंतरगतस्स विजयो भविस्सति ति । बाहिरेसु
- २५ परविसयं गंता विजयो भविस्सतीति । बाहिरवाहिरेसु परविसयगतस्स परो विजयो भविस्सतीति धूया । आहारेसु आयवहुलो विजयो भविस्सतीति । णीहारेसु जोणिवहुलो विजयो भविस्सतीति । शूलेसु मद्राविजयो भविस्सती ति धूया । किसेसु आप्पो विजयो भविस्सतीति । तिसरेसु महत्ता सत्थण्णिघातेण विजयो भविस्सतीति । मतेसु पाणायाववहुलो विजयो भविस्सतीति धूया । मुदितेसु अर्दिसाय मुदितस्स विजयो भविस्सतीति धूया । पुरत्थियेसु गतेसु पुरत्थिमायं दिसायं विजयो भविस्सतीति धूया । दक्खिणेसु दक्खिणायं दिसायं विजयो भविस्सतीति । पच्छिमेसु गतेसु पच्छिमायं दिसायं
- ३० विजयो भविस्सतीति । पामेसु गतेसु उत्तरायं दिसायं विजयो भविस्सति ति ।

॥ ७ ॥ धंसि काले विजयो भविस्सतीति । ॥ ८ ॥ पुब्बमाधारिते जपुत्तादिं षालोपलद्धीदिं वदु-पक्क-मुक्क-काल-

१ 'मयउ' सं १ पु० । 'मयउ' णि० ॥ २ 'रथ यणवण्ण' इ० त० ॥ ३ 'अचंमंतउद' सं १ पु० । अचंमंतउद' णि० ॥ ४ 'रथ वण्णं वा रायकुलं वा गहणं वा इ० त० ॥ ५ 'मदित' इ० त० ॥ ६ 'सु अयस्स सं १ पु० ॥ ७ 'सु जाणीव' इ० त० णि० ॥ ८ इत्थिक्कन्तर्गः काल इ० त० एव वत्ते ॥

पुव्वण्ह-मंज्जाण्हो-ऽवरण्ह-पदो-सऽङ्करत्त-पञ्चसोपलद्धीहिं उवलद्धव्या भवंति । पुव्वं जये आघारिते कस्स कथं कंसि खेत्तंसि केण गुणोपजयेण कंसि कालंसि त्ति एवमादीआओ उवलद्धीओ आघारयित्ता आघारयित्ता जयमंतरेण जघुत्ताहिं उवलद्धीहिं उवलभिडं वियाकरे तव्वाओ भवंति ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय जयो णामाज्जायो
अडय्यालीसतिमो सम्मत्तो ॥ ४ ॥ छ ॥

[एगूणपण्णासइमो पराजयज्जाओ]

णमो भगवतो जसवतो महापुरिस्तस्स । अघापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय पराजयो णामा-
ज्जायो । तमणुवक्खस्सामि । तं जघा-तत्थ अत्थि पराजयो णत्थि पराजयो त्ति पुव्वमआधारयित्तव्वं भवति । तत्थ
अचमंतरामासे द्दामासे णिद्धामासे सुद्धामासे पुण्णामासे पुण्णामधेज्जामासे दक्खिणगततामासे इस्सरियामासे उत्तमा-
मासे उद्धमंगामासे अभिमज्जितामासे मुदितामासे पसण्णामासे णत्थि पराजयो त्ति वूया । तत्थ उदूणं वा कच्छाणं 10
वा लताणं वा गुम्माणं वा बहीणं वा पक्खीणं वा चतुप्पदाणं वा परिसप्पाणं वा जलचराणं वा कीडकिविह्मगाणं वा
इत्थीणं वा उदुकालहासं समुदयउदग्गसमायुत्तासु कथामु पढिरूव-सद्दपादुच्चावेसु य णत्थि पराजयो त्ति वूया । तत्थ
णव-परिपुण्ण-अविणट्ठरूक्ख-पुप्फ-फल-पत्त-मूल-पवाल-पाण-भोयण-वत्था-ऽऽभरण-भायण-जाण-वाहण-वत्था-ऽऽभरणोव-
करणपादुच्चावे सहोदीरणे वा णत्थि पराजयो त्ति वूया । तत्थ वज्जामासे चलामासे लुक्खामासे किलिद्धामासे
तुच्छामासे णुंसकामासे वामगत्तामासे जघण्णामासे अधोगत्तामासे णिम्मज्जिते अपमज्जिते दीणामासे अप्पसण्णामासे 15
मतामासे उवहुवामासे दुग्गंवामासे पराजयो भविस्सतीति वूया । ॥ तत्थ अरण्णं वा रायकुलं वा देसाणं वा
णिगमाणं वा नगराणं वा पट्टणाणं वा खेदाणं वा आगराणं वा गामाणं वा सन्निवेशाणं वा हाणी-उट्ठण-विणासपाउ-
च्चावे एवंजुत्तासु कहासु य पराजयो भविस्सतीति वूया । ॥ तत्थ णीहारेसु उदूणं वा उस्सयाणं वा रूक्खाणं वा
गुम्माणं वा लताणं वा पक्खीणं वा चतुप्पदाणं वा परिसप्पाणं वा जलचराणं वा कीडकिविह्मगाणं वा पुरिसाणं वा इत्थीणं
वा उदुकाल-हास-जोव्यण-मदीदग्ग-अतिवत्त-खीणपादुच्चावेसु पराजयो भविस्सतीति वूया । तत्थ रयणविणासे रज्जविणासे 20
रायविणासे रायकुलविणासे हेसविणासे रायधाणिविणासे णगरविणासे णिगमविणासे पट्टण-खेड-आगर-गाम-सण्णिवेस-
पासाद-गिह-खित्त-आराम-सलाग-सव्वसेतु-विणासपादुच्चावे चैव एवंजुत्तासु य कथामु पराजयो भविस्सतीति वूया ।
तत्थ परिजिण्ण-खंड-हीणोपहुत्त-हित्त-विणट्ठ-वायणोपकपुप्फ-फल-पत्त-पवाल-कंद-मूल-अंडुर-परोहत्ते पाण-भोयण-वत्था-
ऽऽभरण-जाण-वाहण-भायण-सयणा-ऽऽसण-वत्था-ऽऽभरणउवकरणविणासपाउच्चावे पराजयो भविस्सतीति वूया । तत्थ
धण-धण्ण-रतणसंचय-सयणा-ऽऽसण-जाण-वाहण-वत्था-ऽऽभरणपरिच्छद-सत्थावरण-सव्वोपकरणांमासेसु उट्ठ्याकरण- 25
असं-पत्ति-असक्कार-परिभव-अवमाणा-ऽवसिद्धि-असंपत्त-अणिव्वुतिपादुच्चावेसु एवंजुत्तेसु वा उदाहरण-सद्दपादुच्चावेसु
पराजयो भविस्सतीति वूया ।

तत्थ अचमंतरे सयं पराजयो भविस्सतीति वूया । वाहिरचमंतरेसु अणोहिं सह पराजयो भविस्सतीति वूया ।
वाहिरसु परसंसितो पराजयो भविस्सतीति वूया । पुण्णामेसु परक्कमेण पराजयो भविस्सतीति ॥ वूया । धीगा-
मेसु संतेण पराजयो भविस्सतीति । ॥ णुंसपण्णु अपुरिसक्कारेण पराजयो भविस्सतीति वूया । द्देषु एकट्ठणट्ठिवाणं 30
पराजयो भविस्सतीति । चलेसु परिघाचंवाणं पराजयो भविस्सतीति वूया । णिद्धेसु मुदिताणं पराजयो भविस्सतीति वूया ।

१ जयंतं १० तं वि० विना ॥ २ णामज्जा १० वि० ॥ ३ यालातीसति १० तं ॥ ४ माहारियच्चं १० तं ॥
५ हत्थिहान्तर्गतः पाठसन्दर्भः १० तं एव वन्ते ॥ ६ अमोदग्गं १० तं ॥ ७ हत्थिहान्तर्गतः पाठः १० तं एव वन्ते ॥
अंग० २६

- लुक्खेसु निरागताणं पराजयो भविस्सतीति वूया । अचमंतरेसु रायत्यस्स पराजयो भविस्सतीति । १३ अचमंतरेसु राय-
 हाणीगंयस्स पराजयो भविस्सति चि १४ वूया । बाहिरचमंतरेसु रज्जसंघीगतस्स पराजयो भविस्सतीति । बाहिरेसु
 अरण्णगदस्स पराजयो भविस्सति चि । १५ बाहिरेसु अरण्णगयस्स पराजयो भविस्सति चि । १६ बाहिरबाहिरेसु
 परविसयगयस्स पराजयो भविस्सति चि । आहारेसु सलामो पराजयो भविस्सति चि । णीहारेसु अफलो पराजयो
 ६ भविस्सति चि । धूलेसु महापराजयो भविस्सति चि । कसेसु अप्पो पराजयो भविस्सतीति वूया । कण्हेसु बैहुक्खतो
 पराजयो भविस्सतीति वूया । सुकेसु अत्थलाभसमाउत्तो पराजयो भविस्सतीति । तिक्खेसु सत्थपातवहुलो पराजयो
 भविस्सतीति । मतेसु पाणपातवहुलो पराजयो भविस्सतीति । अप्पसण्णेसु अप्पियपराजयो भविस्सति चि । पुरत्थिमेसु
 पुरत्थिमायं दिसायं पराजयो भविस्सतीति । दक्खिणेसु गत्तेसु दक्खिणायं दिसायं पराजयो भविस्सति चि । पच्छिमेसु
 गत्तेसु पच्छिमायं दिसायं पराजयो भविस्सति चि । वामेसु गत्तेसु उत्तरायं दिसायं पराजयो भविस्सति चि ।
- 10 एवं पराजये पुब्बाधारिते उप्पेने पादुब्भावे अत्थि पराजयस्स पुणरवि कथं पराजयो भविस्सति चि १७ कथं
 कस्स कस्स पराजयो भविस्सति चि १८ कंसि देसंसि पराजयो भविस्सति चि १९ कंसि कालंसि पराजयो भवि-
 स्सति चि कंसि दिसायं पराजयो भविस्सति चि २० आधारइत्ता अपुण्वसो आमास-सह-रूव-रस-गंध-फासपादु-
 ञ्भावेसु अचमंतर-बाहिररथावणाहि य एवमादीहि यथोत्ताहि उवलद्धीहि पराजयो समणुगंतव्वो भवति ॥
- ॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्ञाय पराजयो णामाञ्जायो दैगोणपण्णासत्तिमो
 15 समणुगंतव्वो भवति ॥ ४९ ॥ छ ॥

[पण्णासइमो उवहुतज्जाओ]

- णमो भगवतो जसवतो महापुरिसस्स अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्ञाय उवहुतं नामऽञ्जातो ।
 तं खलु भो ! तमणुवकरस्सामि । [तं जघा-] तत्थ सोवह्वो निरुवह्वो चि पुब्बमीधारयितव्वं भवति । तत्थ
 उवहुतामासे दुर्गाथामासे किलिद्धामासे कण्ठामासे लुक्खामासे अप्पसण्णामासे दीणामासे तिक्खामासे सब्बसत्थगते
 20 सब्बच्छिदगते सब्बअंढगते सब्बवज्जगते सब्बउपह्वगते सब्बउपहुतणर-णारि-पक्खि-चउत्पद-परिसप्प-जलचर-कीडकिवि-
 ह्दक-मुप्फ-फल-रूक्ख-गुम्म-उत्ता-यणे(वह्ति)पत्त-पवाल-अंजुर-परोहगते यत्था-ऽऽमरण-सयणा-ऽऽसण-जाण-वाहण-भायणपरि-
 छद-द्व्योपकरण-घण-घण्ण-रयणगते भिण्ण-विज्ज-सविकार-सवाहत्त-उवहित-कूड-कम्मपाससमाउत्तपादुब्भावे एतारित्से
 25 कीडकिविह्दगगते ण-मुण्णंपुप्फ-फल-रूक्ख-गुच्छ-गुम्म-उत्ता-यणे(वह्ति)पत्त-पवाल-अंजुर-परोहगते उदत्तयत्था-ऽऽमरण-
 सयणा-ऽऽसण-जाण-वाहण-भायणपरिच्छद-द्व्योपकरण-घण-घण्ण-रयणगते अभिण्ण-अविकार-अव्याहत्त-अपुडित-
 अहू-हकम्मदोसविप्पसुअपादुब्भावे मणुण्ण-पशुदग्गऽण्ण-पाण-भोयणपादुब्भावेसु चैव एवंविहेसु आमास-सह-रूव-रस-
 गंध-फासपादुब्भावेसु उदत्तेसु गिरुहुत्तेसु गिरुहुत्तो चि वूया ।
- उपह्वे पुब्बाधारिते उप्पणयापादुब्भावेसु सोवह्वो कीरितो चि पुब्बमापापयितव्वं भवति । तत्थ सब्बत्थगते
 30 ऐजं वूया । सब्बणिण्णेसु विलकं वूया । कण्हेसु तिलछालकं वूया । महेणुसु णत्थकं वूया । उवमाहेणुसु तणं वूया ।

१-२ इत्थिहान्तर्गतः पाठः इ० त० एव वर्णने ॥ ३ यदुक्खलो परा० इ० त० ॥ ४-५ इत्थिहान्तर्गतः पाठः इ० त०
 एव वर्णने ॥ ६ भविस्सति इ० त० मिना ॥ ७ पण्ण० इ० त० ॥ ८ माहापरियप्ये इ० त० ॥ ९ पण्णामासे इ० त०
 मिना ॥ १० ण्णाहण्य इ० त० ॥

अप्यसण्णेषु चलं ब्रूया । वायण्णेषु किडिभकं सरं कुण्णिण्णाणि ण्यणविकारो वा विण्णोया । गंठीसु गंठी ब्रूया । वणेसु वणं ब्रूया । अदंसणीयेसु काणं वा अयं वा ब्रूया । सदेयेसु बहिरं वा कण्णछेज्जं वा ब्रूया । गंधेयेसु णासारोणं वा णासा-
छेज्जं वा [ब्रूया] । रसेयेसु जिन्मारोणं वा जिन्माछेज्जं वा ब्रूया । फासेयेसु तयादोसं वा फासोवघातं वा ब्रूया ।

तस्य उच्यते अणुवहुतो पुण्यमाधारिते इमे संखेवा—उच्यते पडिपोगला उचलद्वय्या भवंति । तस्य काणं वा अयं वा कुट्टं वा गंडीपादं वा खजं वा कुणीकं वा आतुरं वा उच्यते वा विकलं वा दिट्ठा पडिरूवे उच्यते चि 5
ब्रूया । तस्य पलितं वा खरडं वा विपण्णा वा तिलकालकं वा चम्मक्खलीलं वा दडुं वा किडिगं^१ वा किलासं वा कट्टं वा सिब्बं वा कुण्णिणहं वा खतं वा अरुअं वा अण्णतरं वा सोवह्वं दव्वमामसति उच्यते चि जाणितव्वो भवति । तस्य तेह-दधि-दुद्ध-मधु-पुप्फरस-फलरस-मंस-सोणित-पूव-यसा-मुत्त-पुरीस-खेल-सिंघाणक-अक्खि-
गूधक-कण्णगूधकादीणि एवंविधाणि आमसेज्जो उच्यते चि जाणितव्वो भवति ।

तस्य किलिड्डेसु किलिड्डमहाणुलेवण-किलिड्डपुप्फ-फल-पवाल-मूल-परोह-अंजुरकिलिड्ड-पमिलातपादुब्भावे वापण्णदुद्ध- 10
दधि-घत-वापण्णपाणभोयण-परिजिण्णवत्थभोयणजजर-परिभिण्ण-संडदव्वोपकरणे चैव एवंविधे पेक्खितामासे सह-रूव-
गंध-फासरसपादुब्भावेसु उच्यते चि ब्रूया । तस्य उच्यते पुण्यमाधारिते उच्यते पादुब्भावे कीरिसो उच्यते चि पुण्य-
धारिते तस्य सुक्केसु सवलं ब्रूया, १३३^१ तं चैव सुणवारकं ब्रूया । १३३^२ पीतेसु कामलं ब्रूया । वापण्णेषु वापण्णं ब्रूया । णीलेसु
णीलं ब्रूया । कण्णेषु कण्णतिलं ब्रूया । गहणेसु गच्छकं ब्रूया । उवगहणेसु तूणं ब्रूया । सव्वणिड्डेसु पिलकं चम्मक्खलीलं
वा गलुकं वा ब्रूया । पिलकाय पिलकं चम्मक्खलीलं, गलुणा गलुकं, १३३^३ गंडेण गंडं पडिरूवेण जाणितव्वं भवति । तस्य 15
अग्गेयेसु दडुं ब्रूया । कोदे कोडिकं, कोट्टितं कोट्टितं, आपडितेण आपडितं, वणेण वणं, तज्जातपडिरूवेण एवमादि अणु-
गंतव्वं भवति । तस्य णहेसु कुण्णिणहं, पोरीसेण वातंडं वा अन्हारिं वा, वसणेसु वातंडंअरिसं वा भगंदं वा, उदरे
कुच्छिरोगं वा वातगुम्मं वा सूलं वा, हितये छड्डिं वा, उरे हिकं वा, कंठे अवयिं वा गलगंडं वा कंठंसाळुकं
(कंठमालकं) वा, १३३^४ कंकेसु अवयिं, पट्टीये पट्टीरोगं, सव्वाहारगते खंडोहं वा गुरुलं वा करलं वा ब्रूया । मूकं वा
खंददंतं वा १३३^५ सोमदंतं वा १३३^६ आमासपडिरूवेहिं आधारयित्त्तणं पत्तेणं पत्तेणं सव्वं गीवाय गीवरोगं अवयिं वा गलगंडं 20
वा ब्रूया । हत्येसु हंत्येछेज्जं वा अंगुलिछेज्जं वा अत्योवह्वं वा । पडिरूवोपलद्धीहिं आमासेहि य उचलद्विं ब्रूया ।
पादेसु पादछेज्जं वा अंगुलिछेज्जं वा पादोवह्वं वा ब्रूया । सीसे सीसवाधयो ब्रूया । अक्खिसु अक्खिवाधयो ब्रूया ।

तस्य यातिको पेतिको संभिको सण्णिवातिको चि रोगा पुण्यमाधारयितव्व्या भवंति । तस्य सव्ववायव्वेसु
सुक्केसु फसापरसपादुब्भावेसु वा सव्वप्पयोगेसु सव्वचेद्दागते य यातिकं रोगं ब्रूया । तस्य अग्गेयेसु पीयरस-
पादुब्भावेसु पण्णे अंबिलरसपादुब्भावेसु लवणरसपादुब्भावेसु सव्वउसुणपरिदाहगते य पेतिकं रोगं ब्रूया । आणुणेयेसु 25
दद्वेसु सीतलेसु मधुर-मेसलरसपादुब्भावेसु चैव संभिकं रोगं ब्रूया । तस्य अथोगामीयं मीत्तामासे अथोगामीगतोपकरणेसु
य यातिकं रोगं ब्रूया । अथोहितयस्स जाव णामीतो चि पत्तेसिं गत्ताणं संपरामासे पत्तेसिं चैवं उच्यते सव्वपादु-
ब्भावे पेतिकं रोगं ब्रूया । उद्वहितयगतेसु संपरामद्वेसु पत्तेसिं चैव गत्तोवकरणेसु धूमणेत्ताविसु पादुब्भावेसु य पुण्णा-
मेसु य सद-रूवेसु संभिगं रोगं ब्रूया । आमेसु अण्णगेयेसु य आमा[स]यगतं रोगं ब्रूया । पक्केसु अग्गेयेसु य पक्कासय-
समुप्पणं रोगं ब्रूया ।

१ 'डिलं वा हं' तं विना ॥ २ अरुवं वा हं' तं ॥ ३ हत्थविहान्तगतं: पाठ: हं' तं एव वर्तते ॥ ४ गंधयेण
हं' तं ॥ ५ 'उपरि' हं' तं ॥ ६ कडुसा' हं' तं ॥ ७ ककेसु हं' तं विना ॥ ८ या मुकुलं वा करणं वा
हं' तं विना ॥ ९ '१३३' एतथिहान्तगतं: पाठ: हं' तं नास्ति ॥ १० हत्येज्जं हं' तं ॥ ११ गंधामासे हं' तं ॥
१२ चैव करणं हं' तं विना ॥ १३ 'व्भावेहि सुतण्णामे' हं' तं विना ॥

लुक्क्षेमु निरागतानं पराजयो भविस्सतीति वृथा । अन्तरेसु रायत्यस्त पराजयो भविस्सतीति । ॥ अन्तरेसु राय-
 हाणीगवस्त पराजयो भविस्सति चि ॥ वृथा । बाहिरन्तरेसु रजसंधीगवस्त पराजयो भविस्सतीति । बाहिरैसु
 अरण्यगवस्त पराजयो भविस्सति चि । ॥ बाहिरैसु अरण्यगवस्त पराजयो भविस्सति चि । ॥ बाहिरैसु
 परविसयगवस्त पराजयो भविस्सति चि । आहारेसु सलामो पराजयो भविस्सति चि । गीहारेसु अफलो पराजयो
 ५ भविस्सति चि । थलेसु महापराजयो भविस्सति चि । कसेसु अप्यो पराजयो भविस्सतीति वृथा । कण्ठेसु वैदुक्करो
 पराजयो भविस्सतीति वृथा । मुकेसु अत्यलामसमाउचो पराजयो भविस्सतीति । तिक्खेसु सत्यपातवहुलो पराजयो
 भविस्सतीति । मतेसु पाणपातवहुलो पराजयो भविस्सतीति । अप्पसण्णेषु अप्पियपराजयो भविस्सति चि । पुरस्थिमेसु
 पुरस्थिमायं दिसायं पराजयो भविस्सतीति । दक्खिण्णेषु गत्तेसु दक्खिणायं दिसायं पराजयो भविस्सति चि । पच्छिमेसु
 गत्तेसु पच्छिमायं दिसायं पराजयो भविस्सति चि । वामेसु गत्तेसु उत्तरायं दिसायं पराजयो भविस्सति चि ।

१० एवं पराजये पुण्याधारिते उपपन्ने पादुब्भावे अत्य पराजयस्त पुणरवि कथं पराजयो भविस्सति चि ॥ कथं
 कस्त कस्त पराजयो भविस्सति चि ॥ कंसि देसंसि पराजयो भविस्सति चि ॥ कंसि कालंसि पराजयो भवि-
 स्सति चि कंसि दिसायं पराजयो भविस्सति चि ॥ आधारदत्ता अणुपुब्बसो आमास-सह-रूप-रस-गंध-फासपादु-
 ब्भावेसु अन्तरे-बाहिरैत्यायणादि य एवमादीदि यथोच्चादि उवलद्धीदि पराजयो समणुगंतव्यो भवति ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्ञाय पराजयो णामासद्भायो ष्णोणपण्णासतिमो
 १५ समणुगंतव्यो भवति ॥ ५९ ॥ छ ॥

[पण्णासद्भो उवहुतज्जाओ]

णमो भगवतो जसवतो महापुरिसस्स अथापुब्बं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्ञाय उवहुतं नामऽऽज्ञातो ।
 तं खलु भो ! तमणुवकरस्सामि । [तं जथा—] तव सोवह्वो निरुवह्वो चि पुब्बमाधारयितव्वं भवति । तव
 उवहुतामासे दुग्गंयामासे किलिहामासे कण्ठामासे लुक्कामासे अप्पसण्णामासे दीणामासे तिरुत्तामासे सव्वसत्यगते
 २० सव्वट्ठिरगते सव्वसंतगते सव्ववज्जगते सव्वउपह्वगते सव्वउपहुतगर-गारि-पक्खि-उपपद-परिसप्प-जलचर-कीडकिवि-
 द्द-पुष्प-फल-रुक्ख-गुम्म-लता-यड्ढि-पत्त-पयाल-अंकुर-परोहगते वत्या-ऽऽमरण-सयणा-ऽऽसण-जाण-याहण-भायणपरि-
 च्छद-दव्योपकरण-घण-घण-रयणगते भिण्ण-विज्ज-सविहार-सवाहव-उरहित-भूह-कम्मपाससमाउत्तपादुब्भावे एवारिसे
 सोरहवे सोवह्वं वृथा । तव अणुउहुतामासे अव्यापण्णामासे सुग्गंयामासे अक्किहामासे मुक्कामासे गिद्धामासे पैसण्णा-
 २५ मासे मुदितामासे सव्वअच्छिण्ण-असंतह-अणउज्ज-अणुउहुतगते सव्वअणुउहुतमुदितण-गारि-पक्खि-उपपद-जलचर-
 कीडकिविद्वगते णर-मुण्णैपुष्प-फल-रुक्ख-गुच्छ-गुम्म-लता-यणे(यड्ढि)पत्त-पयाल-अंकुर-परोहगते उदत्तयत्या-ऽऽमरण-
 सयणा-ऽऽमण-जाण-याहण-भायणपरिच्छद-दुग्गोपकरण-घण-घण-रयणगते अभिण्ण-अविज्ज-अविहार-अव्याहव-अपुडित-
 अहृहकम्मदोमविज्जमुक्कपादुब्भावे मणुण्ण-पहुदग्गण्ण-वाण-सोयणपादुब्भावेसु चेर एयंविहेसु आमास-सह-रूप-रस-
 गंध-फासपादुब्भावेसु उदत्तेसु निरुवहुतेसु निरुउहुतो चि वृथा ।

उवह्वे पुण्याधारिते उरण्णयापादुब्भावेसु सोरह्वो कीरितो चि पुब्बमाधारयितव्वं भवति । तव सव्वत्यगते
 ३० छेत्तं वृथा । सव्वभिण्णेषु भिल्लं वृथा । कण्ठेसु तिड्ढाल्लं वृथा । गह्णेसु ण्णयकं वृथा । उयग्गह्णेसु तणं वृथा ।

१-२ इतिअन्तरेण पाठः १० त- एव कथं ॥ ३ वहुतुलो परा १० त- ॥ ४-५ इतिअन्तरेण पाठः १० त-
 एव कथं ॥ ६ भविस्सति १० त- मित्ता ॥ ७ परग्ल १० त- ॥ ८ माहापरियय्यं १० त- ॥ ९ पण्णामासे १० त-
 मित्ता ॥ १० षण्णहत्तपु १० त- ॥

अप्पसण्णेसु चलं धूया । वावण्णेसु किट्ठिभकं सरं कुण्णिणखाणि णयणविकारो वा विण्णेया । गंठीसु गंठी धूया । वणेसु वणं धूया । अदंसणीयेसु काणं वा अवं वा धूया । सद्देयेसु वहिरं वा कण्णछेज्जं वा धूया । गव्हेयेसु णासारोणं वा णासा-
छेज्जं वा [धूया] । रसेयेसु जिन्मारोणं वा जिन्माछेज्जं वा धूया । फासेयेसु तयादोसं वा फासोवघातं वा धूया ।

तस्य उवहुतो अणुवहुतो पुव्वमाधारिते इमे संखेवा—उवहुते पडिपोगला उवलद्धव्वा भवंति । तस्य काणं वा अवं वा कुट्टं वा गंडीपादं वा खंजं वा कुणीकं वा आतुरं वा उवहुतं वा विकलं वा दिट्ठा पडिरूवे उवहुतो चि ८ धूया । तस्य पलितं वा खरडं वा विपण्णा वा तिलकालकं वा चम्मक्खलीलं वा दड्डुं वा किट्ठिगं वा किलासं वा कट्टं वा सिन्धं वा कुण्णिणहं वा खतं वा अरुं वा अण्णतरं वा सोवह्वं दव्वमामसति उवहुतो चि जाणितव्वो भवति । तस्य तेह्म-दधि-दुद्ध-मधु-पुप्फरस-फलरस-मंस-सोणित-पूव-वसा-मुत्त-पुरीस-खेल-सिंघाणक-अक्खि-गूधक-कण्णगूधकादीणि एवंविधाणि आमसेज्जो उवहुतो चि जाणितव्वो भवति ।

तस्य किलिट्ठेसु किलिट्ठमहाणुलेवण-किलिट्ठपुप्फ-फल-पवाल-मूल-परोह-अंकुरकिलिट्ठ-पमिलतपादुन्भावे वापण्णदुद्ध- 10 दधि-घत-वापण्णपाणभोयण-परिजिण्णवत्थभोयणजज्जर-परिभिण्ण-खंडदव्वोपकरणे चैव एवंविधे पेक्खितामासे सद-रूव-गंध-फासर-सपादुन्भावेसु उवहुतो चि धूया । तस्य उवहुते पुव्वमाधारिते उप्पण्णे पादुन्भावे कीरिसो उवह्वो चि पुव्वा-धारिते तस्य सुक्केसु सवलं धूया, १३ तं चैव सुणवारकं धूया । १४ पीतेसु कामलं धूया । वापण्णेसु वापण्णं धूया । णीलेसु णीलं धूया । कण्ठेसु कण्ठतिलं धूया । गहणेसु गच्छकं धूया । उयगहणेसु तूणं धूया । सव्वणिट्ठेसु पिलकं चम्मक्खीलं वा गलुकं वा धूया । पिलकाय पिलकं चम्मक्खीलं, गलुणा गलुकं, गंडेण गंडं पडिरूवेण जाणितव्वं भवति । तस्य 15 अग्गेयेसु दड्डुं धूया । कोढे कोटिकं, कोट्टितं कोट्टितं, आपडितेण आपडितं, वणेण वणं, तज्जातपडिरूवेण एवमादि अणु-गंतव्वं भवति । तस्य णहेसु कुण्णिणहं, पोरिसेण चातंठं वा अम्हारं वा, वसणेसु वातंठंअरिसं वा भगंठं वा, उदरे कुच्छिरोगं वा वातशुम्भं वा सुलं वा, हितये छाई वा, उरे हिकं वा, कंठे अवयिं वा गलगंडं वा कंठंसाळुकं (कंठमालकं) वा, कंठेसु अवयिं, पट्टीये पट्टीये, सव्वाहारगते खंडोहं वा गुरुलं वा करलं वा धूया । मूकं वा खंददंतं वा १६ सोमदंतं वा १७ आमासपडिरूवेहिं आधारयित्त्वा पत्तेणं पत्तेणं सव्वं गीवाय गीवरोगं अवयिं वा गलगंडं 20 वा धूया । हत्थेसु हत्थछेज्जं वा अंगुलिछेज्जं वा अत्थोवह्वं वा । पडिरूणेपलद्धीहिं आमासेहि य उवलद्धिं धूया । पादेसु पादछेज्जं वा अंगुलिछेज्जं वा पादोवह्वं वा धूया । सीसे सीसवाधयो धूया । अक्खिसु अक्खिवाधयो धूया ।

तस्य वातिको पेट्तिको संभिको सण्णिवतिको चि रोगा पुव्वमाधारयित्त्वा भवंति । तस्य सव्ववायव्वेसु सुक्केसु फसायरसपादुन्भावेसु वा सव्वप्पयोगेसु सव्वचेद्दागते य वातिकं रोगं धूया । तस्य अग्गेयेसु पीयरस-पादुन्भावेसु पण्णे अंविहरसपादुन्भावेसु लवणरसपादुन्भावेसु सव्वइसुणपरिदाहगतं य पेट्तिकं रोगं धूया । धाण्णेयेसु 25 ददेसु सीतलेसु मधुर-पेसलरसपादुन्भावेसु चैव सैनिकं रोगं धूया । तस्य अधोणाभीयं मत्तामासे अधोणाभीगतोपकरणेसु य वातिकं रोगं धूया । अधोहितयस्स जाव णामीतो चि एतेसिं गत्ताणं संपरामासे एतेसिं चैवं उवकरणसद-रूवपादु-न्भावे पेट्तिकं रोगं धूया । उद्वहितयगत्तेसु संपरामहेसु एतेसिं चैव गत्तोवरकरणेसु धूमणेत्तादिसु पादुन्भावेसु य पुण्णा-मेसु य सद-रूवेसु सैनिकं रोगं धूया । आमेसु अण्णेयेसु य आमा[स]यगतं रोगं धूया । पक्केसु अग्गेयेसु य पक्कासय-समुप्पण्णं रोगं धूया ।

१ डिंलं वा हं० त० विना ॥ २ अरुहं वा हं० त० ॥ ३ हन्धिहान्तर्गतं: पाठ: हं० त० एव वर्तते ॥ ४ गंडयेण हं० त० ॥ ५ उदपरिं हं० त० ॥ ६ कट्टुसां हं० त० ॥ ७ फक्केसु हं० त० विना ॥ ८ चा गुरुलं वा करणं वा हं० त० विना ॥ ९ १० ११ एतथिहान्तर्गतं: पाठ: हं० त० नास्ति ॥ १० हत्थेज्जं हं० त० ॥ ११ मत्तामासे हं० त० ॥ १२ चैव करणं हं० त० विना ॥ १३ म्मावेहिं सुतण्णामिं हं० त० विना ॥

पयं यातपित्त-सिंभोपलद्धीर्हि अभिघातरूपोपलद्धीर्हि आमांसय-पक्वासतोपलद्धीर्हि घात-पित्त-सिंभोपलद्धीर्हि
 उपलब्ध आमांस-सद-रूपपादुन्मावेहिं य संगृह्यतो घातिक-पित्तिक-संभिक-सन्निघातिका यं चउच्चिहा भेदसो अणोगा-
 गाव आघारवित्त्वं जघुत्ताहिं उच्यलद्धीर्हि उच्यलद्धव्या भवति । तस्य तिलकालकं वा चम्मकीलं वा ददुं वा पिलकं वा
 तूर्णं वा ण्यकं वा घणं वा एवमादि मुद्धंभागेसु आमद्वेषु उद्धंरीवाय विण्णैयाणि भवति । अधोभागेसु अधोकोडीयं
 5 विण्णैयाणि भवति । समभागेसु गत्तेसु आमद्वेषु अंतरकाये विण्णैया भवति । कंसि देसे पुब्बाघारितेसु दक्खिण्णेषु दक्खिण्णेषु
 चैर गत्तेसु विण्णैयाणि भवति । वामेसु वामेसु चैर गत्तेसु विण्णैयाणि । वामदक्खिण्णेषु वामदक्खिण्णेषु गत्तेसु विण्णैयाणि ।
 मच्चिमे णेय वामेसु णेय दक्खिण्णेषु मच्चिमेसु चैर गत्तेसु विण्णैयाणि । पुण्णामेसु गत्तेसु पुण्णामेसु चैर विण्णैयाणि ।
 र्थाणामेसु गत्तेसु र्थाणामेसु चैर विण्णैयाणि भवति । नपुंसकेसु अंतसंधिच्छेदेसु विण्णैयाणि । ददेषु ददेषु कक्खण्णेषु
 विण्णैयाणि । चलेसु चलेसु चैर गत्तेसु विण्णैयाणि । गिद्वेषु अच्छीसु कण्णेषु वा णासायं वा सुद्वे वा पोसिसे वा
 10 विण्णैयाणि । लुक्त्तेसु णद्वेषु विण्णैयाणि । कण्णेषु केसते वा उत्तरोद्वे था मुमकासु वा । सुक्केसु णामीयं वा वत्थिसीसे
 वा विण्णैयाणि । सामेसु थणपालीसु विण्णैयाणि भवति । कित्तेसु सुयीसु वा दंतेषु विण्णैयाणि । वाहिरेसु वाहिरेसु
 चैर गत्तेसु विण्णैयाणि । अन्नंतरेसु अन्नंतरेसु चैर गत्तेसु विण्णैयाणि । दीहेसु दीहेसु चैर गत्तेसु विण्णैयाणि । रस्सेसु
 रस्सेसु चैर गत्तेसु विण्णैयाणि । शूलेसु शूलेसु चैर गत्तेसु विण्णैयाणि । कित्तेसु कित्तेसु चैर जाणेज्जो । गिलंडेसु गंडेसु
 कण्णेषु पादत्तेसु करत्तेसु चैर विण्णैयाणि भवति । बह्वचलेसु चैर अंगुलीसंधीसु जाणेज्जो । बह्वथावरेसु अंगुली-
 15 पत्थेसु जाणेज्जो । गहणेसु सिंसिसे कक्खेसु वा वत्थिसीसे वा विण्णैया । उवग्गद्वेषु भमुहासु अच्छीसु वा जाणेज्जो ।
 परिमंहेसु सिंसिसे गंडे वा विण्णैया । थलेसु उण्णत्तेसु जाणेज्जो । वायन्नेसु णासायं वा सुद्वे वा अवाणे वा विण्णैया ।
 अग्गेयेसु अग्गेयेसु चैर जाणेज्जो । तिक्खेसु दंतेषु वा णद्वेषु वा जाणेज्जो । आदिमल्लिएसु आदिमल्लिएसु चैर जाणिज्जो ।
 मच्चिमविगाद्वेषु मच्चिमविगाद्वेषु चैर जाणेज्जो । अंतेषु अंतेषु चैर जाणेज्जो । ~~ए~~ त्वेषु त्वेषु चैर जाणेज्जो । ~~ए~~
 दंसणिज्जेसु दंसणिज्जेसु चैर जाणेज्जो ॥

20 ॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्ञाय उच्युतो णामाज्जायो पण्णासंतित्तो
 सम्मत्तो ॥ छ ॥ ५० ॥

[एगपण्णासद्भो देवताविजयज्ज्ञाओ]

एगो भगवतो यसरओ महापुरिसस महावीरवद्धमागसामित्तम । अघापुञ्जं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंग-
 विज्ञाय देवताविजयो णामाज्जायो । तं खलु भो ! तण्णवन्त्ताइस्सामि । तं जघा-उद्धंभागेसु सुय, अधोभागेसु सुय,
 25 सुयीसु जवरसा, मंद्वेषु गंधव्या, चलेसु पित्तो, मतेसु पेता, मद्धचलेसु दारणेषु य दारणा वित्रेया । सारमंतेसु वसया,
 अग्गेयेसु आदिष्ठा, चतुत्तेसु अस्मिण्णे, णिच्चद्वेषु अवरयाथा, सामेसु देवदूता, कण्णेषु अरिष्ठा, सुद्धिण्णेषु
 मारम्मत्ता, पोममंतेसु गत्तोवा, वण्णरंतेसु पण्णिणे, र्थाणामेसु अच्छउत्तो, सेतेसु धरुणसाइया, पच्छिमेसु दक्खिण्णेषु
 मतेसु य पेत्ता, अन्नाखंतेसु य उक्खरेसु वेसमण्णसाइया जक्खत्ता, अग्गेयेसु पुत्तिण्णेषु य अग्गिण्णसाइया सोमकाइया
 य वित्रेया । चलेसु कंदर्पद्वेषु य छिंदेसु णक्खत्त-गह-धंद-नातरूपाणि वित्रेयाणि भवति । अस्सिसु पंदा-55-
 33 दिष्ठा-तस्य अग्गेयेसु आदिष्ठा णितेसु रंभेषु य वित्रेया, सीत्तेसु सुक्केसु य चंदो वित्रेयो, संरत्तेसु णक्ख-
 णानि, संरत्तेसु उण्णत्तेसु य णक्खत्तदेवताणि, दद्वेषु गहा वित्रेया । सरेयेसु सामण्णेषु य धलदेय-थासुदेया
 गिय-वोसमत्ता गंद-विमाहा अग्गि-मारया य वित्रेया भवति । सक्काहिं सक्काहिं आमांस-सद-रूप-पद्वि-रूपोपलद्धीर्हि

१ वा चमकासु गं १ पु० । सुमचरसु ६० त० ॥ २ निहालेसु ६० त० रिता ॥ ३ एत्थिण्णत्तं कत्थ ६० त०
 ए १ तं ॥ ४ एतानिमे वक्खामो मयति ॥ ५० ॥ ६० त० ॥ ५ निण्णद्वेषु ६० त० ॥ ६ एत्तेसु सुस्तेसु ६० त० ॥

गिद्धेहिं सागरो वा ण्दी वा विण्णेया—तत्त्व परिक्वेवेसु सागरा विण्णेया, दीहेसु ण्दी विण्णेया । छुक्खेसु अग्गि इंदग्गि वा विण्णेया । संपभेसु आदिक्को । उण्हेसु अग्गी । उत्तमसाधारणेसु उण्हेसु य इंदग्गि विण्णेयो । मत्थए वंमा उत्तमेसु या विण्णेया । निदालेसु इंदो इस्सरेसु य विण्णेयो । उत्तरेसु उव्वेदो सब्बपरक्कमगतं य विण्णेयो । चाहूसु वलदेवो वा चासुदेवो वा सब्बवलदेवगतं य विण्णेया । सामेसु कामो विण्णेयो । सब्ब-कामपउत्ते सब्बरतिपयुत्ते चैव संधिसु उदलादला विण्णेया । द्दहेसु गिरी विण्णेया । सिवेसु सिवो विण्णेयो । 5 वहुहूवेसु य लिंगपादुच्चावेसु जमेसु य जमो विण्णेयो । सारवंतेसु वेस्सवणो विण्णेयो । सुक्खेसु य उत्तमेसु य वरुणे विण्णेयो । सोमेसु सोमपादुच्चावेसु य सोमो विण्णेयो । कण्हेसु रत्ती विण्णेया । सुक्खेसु दिवसो विण्णेयो । सिंरंसि सिरी विण्णेया । मुदितेसु कामपजुत्तेसु य अइराणी विण्णेया । महावकासेसु पुधवी विण्णेया । सामेसु एकणासा विण्णेया । दंसणीयेसु णवमिगा विण्णेया । गिद्धेसु सुरादेवी विण्णेया । कण्हेसु गिण्णेसु सब्बपरि-संपपादुच्चावे य णागी विण्णेया । उद्वंभागेसु चलेसु य वण्णवंतेसु सुवदणेसु सब्बपक्खि-पवकपादुच्चावे य सुवण्णा 10 विण्णेया । गरुलवाहणपादुच्चावे य तत्त्व अधोभागेसु गिण्णे य अधोलोकोपवण्णा विण्णेया, असुरा वा णागा वा सुवण्णा वा विण्णेया भवंति, सकाहिं सकाहिं उवलद्धीहिं विण्णेया । तत्त्व तिरियंभागेसु उद्वंणामीय अधोमीवाय तिरियामासे तिरियविलोकिते तिरियसद्दपादुच्चावे य तिरिवपपातिका दीवकुमारा समुद्रकुमारा विसाकुमारा अग्गिकुमारा वाउकुमारा थणितकुमारा विज्जुकुमारा पिसाय-भूत-जक्ख-रक्खत्त-गंधव्या चंदिम-सूरिय-गह्गण-णक्खत्त-ताराहूवा य सकाहिं सकाहिं उवलद्धीहिं आधारवित्ठं आधारवित्ठं आमास-सद्द-रूवपादुच्चावेहिं विण्णेया भवंति । उद्वंभागेसु छत्त-वीयणि-भिंमार- 15 पादुच्चावेहिं उद्वं पक्खत्तंसि उद्वंभागेवकरणेसु य एवमादीसु य पडिरूव-सद्दपादुच्चावेसु उद्वंलोकोपवण्णा वेमाणिका देवा विण्णेया कप्पसण्णाहिं विधिआधारणाहिं लेस्सादिआधारणाहिं चैव भवंति । तत्त्व उत्तमेसु इस्सरेसु चैव अधिपती विण्णेया । सामाणेसु दंढेसु सामाणपादुच्चावे य सामाणिया विण्णेया । पेस्सेसु आभियोगिका परितोववण्णा विण्णेया । तत्त्व सब्बवाहणगते सब्बवाहणजोगीगते य आभियोगिका विण्णेया । सब्बपरिसागते सब्बपरिवारगते य परिसोववण्णा विण्णेया । तत्त्व सब्बसगुणगते सुवण्णा पुण्णामेसु, थीणामेसु सुवण्णकण्णका जाणितव्या भवंति । दीहेसु गिद्धेसु णागा 20 पुण्णामेसु, थीणामेसु णागीदेवी विण्णेया । धणगते ववहारगते सारवंतेसु य वेस्सवणो विण्णेयो । सुक्खेसु गिद्धेसु इस्स-रेसु समुद्दवाकपादुच्चावेसु य वरुणे विण्णेयो । < इस्सरेसु उत्तमेसु सब्बरायपडिरूवेसु य इंदो विण्णेयो । मतेसु सब्बपेतपडिरूवेसु इस्सरेसु य जमो विण्णेयो । > गो-महित-गवेलकपादुच्चावे रुदेसु य सिवं वूया । कुक्कुड-मयूर-पादुच्चावे सेणावति [विण्णेयो] । कुमारापादुच्चावेसु य खंदो विण्णेयो । छगल-मंढक-कुमार-असिपादुच्चावे य विसाहो विण्णेयो । दंढेसु सब्बजोधपादुच्चावेसु य वण्णी विण्णेयो । उण्हेसु अग्गी विण्णेयो । सब्बदव्योयकरणपादु- 25 च्चावे य चलेसु तालखंड-वीजणकादिसु य पादुच्चावेसु यौतं वूया । दारणेसु रक्खसा विण्णेया । विमित-रुद्द-भय-हासेसु पिसाय-भूता चैव विण्णेया, थीणामेसु एतेसु चैव पादुच्चावेसु रक्खसीओ पिसाईओ भूतकण्णा देवीओ विण्णेयाओ भवंति । सब्बगंधव्यगते तंति-तल-तालगिण्णेसे गंधव्या विण्णेया, थीणामेसु गंधव्यकण्णाओ विण्णेया । मधुर-चोसेसु पक्खिसु पडिरूवपादुच्चावेसु किन्नरा किंपुरिसा य विण्णेया, थीणामेसु किन्नरीओ किंपुरिसकण्णका विण्णेया । सुयीसु पुण्णेसु यक्खा विण्णेया, थीणामेसु जक्खिणिओ विण्णेयाओ । मूलजोगीगते वण्णस्सतीकण्णाओ 30 विण्णेयाओ । धातुजोगीगते पव्वतदेवता विण्णेया । गिद्धेसु पाणजोगीगए य समुद्द-नदी-कूय-नलाग-पल्लदेवयौतो विण्णेया- [तत्त्व] गिण्णेसु परिक्वेवेसु समुद्देवताओ, < तत्त्व दीहे ण्दीदेवताओ, > गिण्णेसु उव्वेदुसु परिमंढलेसु य < कूव-देवता विण्णेया, गिण्णेसु परिमंढलेसु य > समुद्देवताओ विण्णेयाओ, विवेकिरते दिसादेवताओ विण्णेया । तथाऽणुपुव्वं दिसोपलद्धीहिं उवलद्धव्वं भवति । इद्धेहिं सिरी विण्णेया । बुद्धिरमणेसु बुद्धि-मेहाओ विण्णेयाओ ।

अर्चन्तरेषु लतादेवताओ विष्णेषाओ । दद्रेषु वंत्थुदेवताणि विष्णेषाणि । परिमंहलेषु णंगरदेवताणि विष्णेषाणि । मत्तेषु सुसाणदेवताणि विष्णेषाणि । दुर्गावेषु बह्वदेवताणि उक्कुरदिकैदेवताणि य । उत्तमेसु उत्तमाणि, मञ्जिमेहिं मञ्जिमाणि, पञ्चरेहिं पञ्चराणि । आरियोपलद्धीहिं आरियदेवताणि, मिलक्खूपलद्धीहिं मिलक्खुहिं मिलक्खरदेवताणि ।

विमुत्तेसु अपरिग्गहेसु उज्जुएसु य < १ सण्णमेसु > पसण्णेषु य सम्ममाविताणि । अविमुत्तेसु वंकेसु णिप्पमेसु ६ परिग्गह्वयेसु आरुमेसु य मिच्छमावियाणि । पुण्णामेसु पुरिसा विष्णेषा, धीणामेसु थिओ विष्णेषाओ भवंति । कण्ह-नीउ-कापोत-रत्त-पीय-मुक्किलेहिं यण्णपटिह्रुवेहिं ठियामासेहिं य कण्हणील-काउ-तेउ-यंम-मुक्काओ लेस्साओ सपहिं यण्णपटिह्रुवेहिं आचारयित्ता आचारयित्ता देवताणं विष्णेषाओ भवंति ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्ञाय देवताविजयो णामाञ्जाओ एगपण्णासतिमो यक्खातो भवति ॥ ५१ ॥ छ ॥

10

[थापंचासहमो णक्खत्तविजयज्जाओ]

णमो भगवतो जसवतो महापुरिसत्तस महावीत्तस । अवापुब्बं रल्लु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्ञाय णक्खत्तविजयो णामाञ्जाओ । तं रल्लु भो ! यक्खरत्तामि । तं जथा-उड्ढोगिते उम्मज्जिते 'सीमुम्मज्जणे पक्खिरदंसणे इंदघणु-विताण-विज्जु-यणित-चंदा-५५दिष-णक्खत्त-गहाराण-ताराणजोगा-५जोगा उदय-उयमण-अयामत्ता-पुण्णमासी-मंहल-वीथी वि जारिसं थाणं जुग-संयच्छर-वट्टु-मास-यक्ख-सव्वतिथि-अधोरत्त-रण-लव-
15 शुद्ध-उष्णापात-दिसाद्वाद-संज्ञादंसण-णक्खरत्ताम-भी-पुरिस-यक्खि-चउपद-दव्वोउकरणगते एणंविहसह-रूपपादुम्भावे जेतिसं पुच्छसि त्ति भूया । तत्थ मुक्कामासे चंदं भूया । णिहाले चेव चंदं भूया । अनित्तसु मुहे चेव आदिचं भूया । संथिसु णक्खरत्तं भूया । ददामासेसु गदं भूया । पक्खिण्णामासे तारकाओ भूया । ओमज्जिए ओळोकिए अत्यमणाणि भूया । उळोकिए उम्मज्जिए उम्मट्टिए य उदयं भूया । चलेसु विचारं भूया । ददामासेसु आहारेसु य गहणं भूया । णीहारेसु चलेसु मोस्सयं भूया । परिमंहलेसु परिमंहलाचारं भूया । दीहेसु विधीचारं भूया । आहारेसु पवेसं भूया ।
20 णीहारेसु णिग्गामणं भूया । यग्गेषु याहिरमंहलाचारं भूया, < १ सामेसु मञ्जिममंहलाचारं भूया > अर्चन्तरेसु अर्चन्तर-मंहलाचारं भूया । तत्थ दीहेसु यदस्सतिं भूया । सुपेसु सुक्खं भूया । रत्तेसु 'ओलेकं भूया । मंहलेसु सणिच्छरं भूया । पयलाइणसु 'निमिहियंसि य राहं भूया । उपदुएसु घूमकेउं भूया । पंहसु विमुत्तेसु यं सुपं भूया ।

तत्थ पुरिमेसु गत्तेसु कत्तिक्कादीणि अंसलेसपञ्जरसाणाणि पुब्बदारिकाणि सत्त नक्खरत्ताणि भूया । दक्खिरणेषु गत्तेसु महादीकाणि विसादापञ्चवमाणानि सत्त नक्खरत्ताणि दक्खिरणदारिकाणि भूया । पच्छिमेषु गत्तेसु अणुराधादीनि
25 भयगरत्तयमाणानि सत्त नक्खरत्ताणि पच्छिमदारिकानि भूया । यामेसु गत्तेसु पणिट्ठादीनि भरणीपञ्चवमाणानि सत्त नक्खरत्ताणि उत्तरदारिकानि भूया ।

तत्थ पुण्णामेसु पुण्णामं पुण्णय्यसु वा पुत्तसं वा पुब्बदारेसु भूया । हत्थं वा मात्तिं वा दक्खिरणदारेसु भूया । मूत्तं वा अर्माहिं वा सव्वणं वा पच्छिमदारेसु भूया । उत्तरदारेसु णत्थि पुण्णामानि णक्खरत्ताणि । सव्वयाणि उत्तराणि धीणामानि जाणियव्व्यानि भयंसि । अयत्तेमानि णक्खरत्ताणि धीणामानि यक्खरीसं जाणियव्व्यानि भयंसि ।

१ थापंचे' ६० ८० ॥ २ दुर्गावेषु ६० ८० ॥ ३ षड्विंशति देव' ६० ८० ॥ ४ मीसज्जाणा ६० ८० ॥ ५ ०५ य उद्विर्पदि उदय ६० ८० ॥ ६ < १ > पंचव्यानां: वा: ६० ८० ॥ ७ लोचक: ६० ८० ॥ ८ लोहितक: ६० ८० ॥ ९ त्रिमिश्रपति ६० ८० ॥ १० ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥









तत्थ हत्थ-पाद-अंधोरु-वाहु-णामीसु तीसं मुहुत्ताणि बूया । तत्थ पट्टोदर-खंध-बच्छेसु सिरंसि च पणयालीसत्ति-
मुहुत्ताणि बूया । तत्थ केस-मंसु-लोम-गह-सव्वंगुलीगए अंगुट्टेसु चैव पण्णरसमुहुत्ताणि बूया । एतेसामेवादेसंगहणे
तूपपण्णरसमुहुत्तं अमीयिं बूया ।

तत्थ तीसत्तिमुहुत्तेसु पुब्बदारेसु कत्तिगा मिगसंठाणं पुत्तं ति तिण्णि णक्खत्ताणि बूया । दक्खिणदारेसु महा
पुब्बाफग्गुणी हत्थो चित्तं च चत्तारि णक्खत्ताणि बूया । अवरदारेसु अणुराधा मूले पुब्बासादाओ सवणो चत्तारि 5
णक्खत्ताणि बूया । उत्तरदारेसु धणिट्ठा पुब्बापोट्टपदाओ रेवसी अस्सिणी य चत्तारि णक्खत्ताणि बूया । एयाणि
तीसमुहुत्ताणि पण्णरस नक्खत्ताणि बूया । तत्थ पणतालीसमुहुत्ताणि पुब्बदारेसु रोहिणी पुणव्वसुं च दुवे णक्खत्ताणि
जाणीया । दक्खिणदारेसु उत्तराफग्गुणीओ विसाहा चैव दुवे णक्खत्ताणि जाणीया । पच्छिमदारेसु उत्तरासादा
एगं णक्खत्तं जाणिया । उत्तरदारेसु उत्तरापोट्टपदा एकं णक्खत्तं जाणीया । एवमेयाणि पणयालीसमुहुत्ताणि छ
णक्खत्ताणि बूया । तत्थ पण्णरसमुहुत्ते पुब्बदारिए अहं अस्सिलेसं च दुवे णक्खत्ताणि जाणिया । दक्खिणदारेसु एकं 10
साहं णक्खत्तं बूया । पच्छिमदारेसु जेहं एकं णक्खत्तं बूया । उत्तरदारेसु सवभिसया भरणी य दुवे णक्खत्ताणि
जाणिया । एयाणि पण्णरसमुहुत्ताणि छ णक्खत्ताणि बूया । अवरदारेसु जण्णं पण्णरसमुहुत्तं अभित्तिं णक्खत्तं एकं
णव्वमुहुत्तं सत्तावीसं चै [सत्त]सट्ठिभागा मुहुत्तस्स जाणिया ।

तत्थ तीसमुहुत्ताणि समखेत्ताणि पनरस णक्खत्ताणि उवलद्धीहिं समखेत्तोवलद्धीहिं उवलद्धव्वाणि भवंति ।
पणयालीसमुहुत्ताणि छ णक्खत्ताणि दिवडुखेत्ताणि दिवडुखेत्तोवलद्धीहिं उवलद्धव्वाणि भवंति । पण्णरसमुहुत्ताणि अद्ध- 15
खेत्ताणि छ णक्खत्ताणि अद्धखेत्तोवलद्धीहिं उवलद्धव्वाणि भवंति । तूपपण्णरसमुहुत्तं तूपपण्णरसमुहुत्तोवलद्धीहिं उवल-
द्धव्वं भवति । एयाणि अट्ठावीस णक्खत्ताणि दारतो खेत्तपविभत्तीहि य आधारयित्तुं आधारयित्तुं उवलद्धव्वाणि भवंति ।

तत्थ चलेसु चलाणि खिप्पाणि वा बूया—तत्थ चलाणि पुणव्वसु सवणो धणिट्ठा सतभिसय चि, तत्थ खिप्पेसु
पुरतो हत्थो अभियी अस्सिणीउ चि चत्तारि णक्खत्ताणि बूया । तत्थ दट्ठामासे रोहिणीओ तिण्णि उत्तराणि चत्तारि
णक्खत्ताणि बूया । दारुणेसु दारुणाणि बूया, तिण्णि पुब्बाओ महा चैति । तत्थ चत्तारि नक्खत्ताणि सव्वसत्थगताणि उग्गाणि 20
बूया, उग्गाणि पुण अस्सेस जेह्मा मूले अहा भरणी चैति पंच णक्खत्ताणि भवंति । तत्थ मिदूसु सव्वभित्तगते पसण्णेसु
य मुदूणि बूया, तत्थ मुदूणि मिगसितो चित्ता अणुराधा रेयति चत्तारि णक्खत्ताणि बूया । तत्थ साधारणेसु साधार-
णाणि बूया, साधारणाणि पुण कित्तिया विसाहा चैति दुवे णक्खत्ताणि बूया । तत्थ वंभेयेसु सव्ववंभणपडिरूवगते य
अभियिं बूया । तत्थ सव्ववणिहगते सव्ववणिहपडिरूवगते य सवणं बूया । तत्थ सव्ववसुगते धण-रयणगते य घसु-धण-
रतणपडिरूवगते य धणिहं बूया । तत्थ सव्वमदगते सव्वमदमज्जपडिरूवगते य सतभिसं बूया । तत्थ सव्वअयगते सव्व- 25
अयपडिरूवगते य पोट्टवदं बूया । तत्थ विवद्विसंपुत्ते सव्वविद्विगते सव्वअभिवद्विपडिरूवगते य उत्तरपोट्टपदं बूया ।
तत्थ सव्वदाणगते विग्गहगते सव्वदाण-विसगगंधिरूव-सहपादुब्भायगते चैव रेवतिं बूया । तत्थ सव्वातिगच्छोवलद्धीहिं
सव्वअरसगते सव्वअरसपडिरूवोवकरणगते य सव्वअरसोपजीवीहि य एतेसामेव पडिरूव-सहपादुब्भावे अस्सिणिं
बूया । तत्थ दीणं मदोवलद्धीहिं सव्वजमगते य जमपडिरूव-सहपादुब्भावे चैव भरणीओ बूया । तत्थ सव्वअग्गेयेसु
अग्गिगते अग्गीउवलद्धीयं सव्वअग्गेयोपकरणे सव्वअग्गिदेवताए य अग्गिउवकरणे सव्वकण्डरूकरगते एवंविधेसु सर- 30
रूवपादुब्भावे कत्तियाओ बूया । तत्थ पयापुत्तोवलद्धीयं पयावत्तिसह-रूवपादुब्भावेसु चैव सव्वधण्णगते सव्वकासकगते

१ 'द्वेषु' हं ० तं विना ॥ २ 'साणिग्गह' हं ० तं विना ॥ ३ 'त्ताणि पण्णरसमुहुत्ताणि पण्णरस हं ० तं विना ॥
४ 'चन्द्रसामिजिता येगे सुहृतां नव कीर्तिताः । सप्तपट्टिमूर्त्तेश्चाथ मौहूर्त्ताः सप्तविंशतिः ॥' लोकप्रकाशे सर्गः २८ श्लोकः ३२३ पदं
३८० ॥ ५ च अट्ठभागा हं ० तं ॥ ६ पण्णरस णक्खत्ताणि अट्ठणपक्खत्ताणि छ णक्खत्तं हं ० तं विना ॥ ७ 'त्थ
चत्ताणि णक्खत्तं हं ० तं ॥ ८ 'सत्थाणि गताणि बूया सि ॥ ९ 'गते दाणविग्ग' हं ० तं ॥ १० 'पडिसहरूवपा'
हं ० तं विना ॥

- संभवकांसकोपकरणगते 'कासंकोपलद्धीयं संव्वरूढगते चैव रोहिणी भूया ।' तस्य संव्वसोमगते संव्वसोमोपलद्धीयं संव्वसोमकम्मोपचारगते चैव संव्वसोमकम्मोपलद्धीयं संव्वसाधारणगते संव्वकोसीधण्णगते संव्वसंगलिकागते संव्वखीरवच्छगते एतेसिं चैव पडिरूव-सद्दपादुच्चावेसु भिगसिरं भूया । तस्य संव्वरूढगते संव्वणिघाण्णगते संव्वरूढोवकरणे संव्वरूढोपचारकम्मगते एतेसिं चैव पडिरूव-सद्दपादुच्चावेहिं अहं भूया । तस्य पुणरावत्तिएसु
- 5 सहेसु पुणगते 'य संव्वअदितिगते संव्वअदितिकम्मोपचारगते संव्वअदितिउपलद्धीयं एयंविधेसु पडिरूव-सद्दपादुच्चावेसु पुणव्वसुं भूया । तस्य संव्वबुद्धिगते संव्वबुद्धिकम्मगते  संव्ववहस्सतिगए  संव्ववहस्सति-पुस्सकम्मोवधारगते संव्ववहस्सतिपुस्सोवलद्धीसु एतेसिं चैव पडिरूव-सद्दपादुच्चावेसु पुस्सं भूया । तस्य संव्वसप्पगते संव्वसप्पोवलद्धीयं संव्वसप्पोवजीविगते संव्वविसगते संव्वअस्सिलेसोपलद्धीयं एतेसिं चैव पडिरूव-सद्दपादुच्चावे असिलेसं भूया । तस्य पितुकज्जिक्खपेतक्खिगते संव्वसद्दगते संव्वमाघगते संव्वपितुंक्खिषोपलद्धीसु संव्वपितुउपलद्धीसु
- 10 एतेसिं चैव पडिरूव-सद्दपादुच्चावेसु मघाओ भूया । तस्य संव्वसोमग्ग-सोभग्गिय-सुभग्गते संव्वरूढोवजीविगते संव्वचे-सियागते संव्ववेसियाउवकरणगते संव्वसोभग्गियकम्मोवधारगते संव्ववेसोवलद्धीयं एतेसिं चैव पडिरूवसद्दपादुच्चावेसु पुच्चाओ फग्गुणीओ भूया । तस्य संव्वउज्जगते संव्वसच्चगते संव्वधम्मगते संव्वधम्मिगगते एतेसिं जैव पडिरूव-सद्दपादुच्चावेसु उत्तराओ फग्गुणीओ भूया । तस्य संव्वहत्थिगते संव्वहत्थिपडिरूवगते य संव्वहत्थिउवकरणगते संव्वहत्थिकम्मोपचारगते संव्वहत्थिउपजीविगते आदिच्चकम्मोवयारे आदिच्चोवलद्धीयं संव्वकारुकोपलद्धीयं एतेसिं चैव पडि-
- 15 रूव-सद्दपादुच्चावेसु हत्थं भूया । तस्य संव्वदंसणीयेसु रूवकार-चित्तकार-कट्टकार-संव्वरूयकारोवकरणे संव्वअलंकारि-यगते संव्वअलंकारेसु < १ अलंकारकम्मोवधारणेसु > अलंकारकम्मोवयारेसु एतेसिं चैव पडिरूव-सद्दपादुच्चावेसु चित्तं भूया । तस्य बायव्वेसु संव्ववायगते वीयणक-नालव्वेटगते उखेवगते फूमिते वीज्जणकम्मोवयारेसु वातयत्तकी-योपचारेसु एतेसिं चैव पडिरूव-सद्दपादुच्चावे सातिं भूया । तस्य वणस्सतीसु संव्वदव्वगते संव्वसामण्णगते विसाहं भूया । तस्य संव्वणानिमित्तसंवीधगते संव्वमेत्तिउययारगते पसण्णेसु य एतेसिं चैव पडिरूव-सद्दपादुच्चावेसु
- 20 अनुणायं भूया । तस्य इस्सरेसु संव्वजेद्दगते संव्वइंदकम्मोवधारगते इंदोपलद्धीयं एतेसिं चैव पडिरूवगते सद्दपादुच्चावेसु जिहं भूया । तस्य संव्वमूलजोणीगते संव्ववीज्जभूतगते संव्वमूलकम्मगते संव्वमूलोवयारगते एतेसिं चैव पडिरूव-सद्दपादुच्चावे मूलं भूया । तस्य आपुणेयेसु संव्वआपुणजोणीसु संव्वजलगते संव्वजलचरगते संव्वजलोवजीविगते संव्वजलावगाहीगते णयपोतोवकरणे एतेसिं चैव पडिरूव-सद्दपादुच्चावेसु पुच्चासाढा भूया । तस्य उव  रसंत्ताउवद्द-लरूहा  संलावजोणीसु  गिट्ठुरकम्मोवयारेसु  गिट्ठुलपडिरूव-सद्दपादुच्चावेसु य उत्तरासाढा भूया ।
- 25 < १ तस्य अग्गेयेसु कत्थियं वा विसाहं वा भूया । > असाधारणेसु अग्गेयेसु कत्थियं भूया । साधारणेसु अग्गेयेसु विसाहं भूया । धापुणेयेसु अहं वा पुच्चासाढं वा सतविसयं वा भूया । तस्य संव्वचतुप्पदगते चतुक्केसु रोहिणिं वा भिगसिरं वा हत्थं वा अस्सिणीओ वा भूया । मतेसु मधं वा भरणीयो वा भूया । मूलजोणीपडिरूवगते  'रोहिणिं वा मूलं वा भूया । तस्य संव्वजाणपडिरूवगते  कत्थियं वा रोहिणिं वा भूया । तस्य संव्वराओपलद्धीयं पुस्सं वा जेहं वा भूया । कंटकीरुक्खगते कत्थियं भूया । सगइजाणगते रोहिणिं भूया । खीररूस्सेसु
- 30 पंदोपलद्धीयं भिगसिरपडिरूवे य भिगसिरं भूया । सुदितेसु पुस्सं वा सतविसयं वा भूया । तस्य असंगोपलद्धीयं अहं वा पुच्चासाढा सतविसयं वा भूया । तस्य संव्वपरिसप्पगते असिलेसं भूया । तस्य कोसीधण्णगते विसाहं वा भिगसिरं वा भूया । तस्य संव्वजोगगते कम्मोवलद्धीयं च मघा वा पुध्वफग्गुणीओ वा भूया । मतेसु पेतोवलद्धीयं मघा विण्णेया । सोभग्गीसोभिन्नोपचारेसु रूवोपजीविउपलद्धीसु य पुच्चाओ फग्गुणीओ भूया । संव्वसिप्पिगते हत्थं भूया । चित्तेसु

१ इत्थिहान्तर्गतः पाठः इं० त० एव वर्तते ॥ २ 'पिउक्खोप' इं० त० ॥ ३ चैव इं० त० ॥ ४ < १ > एत्थिहान्तर्गतः पाठः इं० त० नास्ति ॥ ५ 'वघीज्जोयगते' इं० त० विना ॥ ६-७ इत्थिहान्तर्गतः पाठः इं० त० एव वर्तते ॥ ८ < १ > एत्थिहा-न्तर्गतः पाठः इं० त० नास्ति ॥ ९ इत्थिहान्तर्गतः पाठः इं० त० एव वर्तते ॥

व्या । <1 त(ति)ज्जंभागेसु तिरिक्खजोणीगतं उप्पायं वूया । > सव्वचउप्पदेसु य चउस्सेसु य चउकेसु चतुप्पोपकरणे चतुप्पदणामधेजे धी-पुरिसउवकरणगते चतुप्पयगतं उप्पायं वूया । तत्थ उद्वंभागेसु चलेसु य सव्वपक्खिगतं उवकरणे पक्खिउवकरणेसु पक्खिणामधेजे धी-पुरिसउवकरणगते पक्खिगतं उप्पायं वूया । तत्थ दीहेसु कण्हेसु सव्वपरिसपोवकरणे परिसप्पणामधेज्जयी-पुरिसउवकरणगते चैव परिसप्पगतं उप्पायं वूया । णिद्वेसु सव्वजलचरेसु सव्वमच्छेसु सव्वजलेसु धी-पुरिसउवकरणगते चैव मच्छगतं वूया । सव्ववीर्यागते कीढकिविड्ढागए कीढकिविड्ढागतं उप्पायं वूया । 5 तत्थ वालेयेसु पजातं उप्पायं वूया । तत्थ छिण्ण-भिण्ण-कोट्टेतसदे पासाद-गोपुर-ऽट्टालग-इंदधय-तोरणगतं वा उप्पायं वूया । अग्गेयेसु पागार-गोपुर-ऽट्टालग-कोट्टागारै-ऽऽयुधाकार-आयतण-चेतिसु अग्गि-जलण-धूमपादुब्भावेण विज्जु-पतणगतं उप्पातं वूया । णिद्वेसु उदकवाढैकअणादके उदकपादुब्भावेण अपवातक-अकालवुट्ठं अणंतवुट्ठं अणंततिमिर-पादुब्भावेण वा वूया । पुघूसु अज्जीवेसु सव्वभायणपडिरूवगयं चैव भायणगतं उप्पातं वूया । जाणेसु सव्वजाणोपलद्धीयं जाणगतं उप्पायं वूया । किसेसु वत्थ-परिच्छदगतं उप्पायं वूया । थूलेसु थलगतं वा पडंक्रमतं वा उप्पायं उट्टिकगतं 10 अरंजरगतं वा वूया । सामेसु सव्वआभरणगते य आभरणगतं उप्पायं वूया । तिक्खेसु सव्वसत्यगते चैव सत्यगतं उप्पातं वूया । अचंभंतरेसु णगरगतं उप्पायं वूया । अचंभंतरचंभंतरेसु अंतपुरगतं उप्पायं वूया । वाहिर-चंभंतरेसु वाहिरिकागतं उप्पायं वूया । वाहिरेसु जणपदगतं उप्पायं वूया । गहणेसु आरण्णगतं उप्पायं वूया । उवगहणेसु आरामगतं उप्पायं वूया । एवं आमास-सद-रूव-रस-गंध-फासपाउब्भावेसु अंतलिक्ख-भोम्मा चउव्विधो उप्पातो आघार-विच्चा आघारयिच्चा यधुच्चाहिं उवलद्धीहिं उवलद्धव्वो भवति ॥ 15

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय उप्पातो णामाज्ज्ञायो
तिपण्णासतिमो सम्मत्तो ॥ ५३ ॥ छ ॥

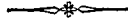
[चउपपणासहस्रो सारासारज्ज्ञाओ]



णमो भगवतो जसवतो महापुरिसस । अघापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जायं सारासारो णामाज्ज्ञायो । तं खलु भो ! तमणुवक्खायिस्सामि । तं जघा-तत्थ अत्थि सारो णत्थि सारो त्ति पुव्वमाघारयि- 20 तव्वं भवति । तत्थ अचंभंतरामासे दढामासे णिद्धामासे सुद्धामासे पुण्णामासे पुण्णामधेज्जामासे सारवंतो त्ति वूया । तत्थ वाहिरामासे चलामासे लुक्खलामासे कण्हामासे तुच्छामासे णणुंसकामासे असारवंतो त्ति वूया । तत्थ सारगते पुव्व्याधारिते सारं चतुव्विधमाधारये-घणसारं १ मित्तसारं २ इस्सरियसारं ३ विज्जासारमित्ति ४ । तत्थ अचंभंतरेसु घणमंतेसु य घणसारं वूया १ । तत्थ महापरिगह्हेसु सव्वमित्तगते य मित्तसारं वूया २ । ॥ १ ॥ तत्थ सव्व-इस्सरियगए सव्वरायगए सव्वविजयगए य इस्सरियसारं वूया ३ । ॥ २ ॥ तत्थ उदिरिण्णेसु सव्वसत्थवुद्धिगते य 25 विज्जासारं वूया ४ । तत्थ उच्चमेसु उच्चमो घणसारो वा मित्तसारो वा इस्सरियसारो वा <1 विज्जासारो वा > विण्णेयो । ॥ ३ ॥ मंज्झिमेसु ॥ मज्झिमो घणसारो वा मित्तसारो वा इस्सरियसारो वा <1 विज्जासारो वा > विण्णेयो । मज्झिमाणंतरेसु मज्झिमाणंतरो घणसारो वा मित्तसारो वा इस्सरियसारो वा विज्जासारो वा विण्णेयो । तत्थ पचदरे पचपरो घणसारो वा ॥ ४ ॥ निचंसारो वा ॥ इस्सरियसारो वा विज्जासारो वा विण्णेयो ।

१ <1 > १ एतथिहान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ २ <1 > सगते उवकरणे गते हं० त० विना ॥ ३ <1 > रायमकारआयय-णचेति हं० त० विना ॥ ४ <1 > एसु घणजलणं वि० ॥ एसु वीर्यजलणं सं ३ पु० ॥ ५ <1 > हृक् अणोद् हं० त० ॥ ६ वाहिरगतं हं० त० ॥ ७ <1 > य सारो णामा हं० त० ॥ ८ इत्थविहान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ९ <1 > १ एतथिहा-न्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ १० इत्थविहान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ११ <1 > १ एतथिहान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ १२ इत्थविहान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥

[तिपंचासहस्रो उप्पातणज्ज्ञाओ]



पमो भगवतो जसयतो महापुरिसस्स महावीर्यद्वमाणस्स । अथापुब्बं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्ञाय उप्पातणामज्ज्ञायो । तं खलु भो ! तमणुवंस्खस्सामि । तं जघा—उद्धं णामीय उद्धंभागेसु अन्तलिक्खगतं उप्पायं विज्जा । अधो णामीयं अधोभागेसु भोम्मं उप्पायं वूया । तत्थ अंतलिक्खेसु पुब्बाधारितेसु उप्पातेसु परिमंडल-
 8 गतेसु चंदा-ऽऽदिचगतं उप्पायं वूया । कण्हेसु धूमकेतु-राहुगतं उप्पायं वूया । दीहेसु बहस्सतिगतं उप्पायं वूया । अंतरेसु धूमकेतु-सुक-युधगतं उप्पायं वूया । सुद्धसुक्केसु सुक्कगतं उप्पायं वूया । दंसणीयेसु बुधगतं उप्पायं वूया । किलिट्ठेसु धूमकेतुगतं उप्पायं वूया । < ँ भेदेसु सण्णिच्छरगतं उप्पायं वूया । > आवरेसु बुध-सण्णि-चर-बहस्सतिगतं उप्पायं वूया । चलेसु सुक्कमालोहित-धूमकेतु-राहुगतं उप्पायं वूया । अग्गेयेसु आविच्चगतं, [उप्पायं वूया] । लोहितंके उक्कागतं उप्पायं वूया । कण्हेसु रत्तिगतं उप्पायं वूया । संधिसु संज्ञायगतं उप्पायं वूया । सुक्केसु आदिमूलीयेसु
 10 पुच्चण्हगतं उप्पायं वूया । सुक्केसु मज्झिमविगाढेसु अद्धरत्तगतं उप्पायं वूया । सुक्केसु अंतेसु अवरण्हगतं उप्पायं वूया । कण्हेसु आदिमूलीयेसु पदोसगतं उप्पायं वूया । कण्हेसु मज्झिमविगाढेसु अद्धरत्तगतं उप्पायं वूया । कण्हेसु अंतेसु पद्मगतं उप्पायं वूया । अचमंतरेसु अचमंतरमगतं उप्पायं वूया । वाहिरचमंतरेसु स्यामेसु य मज्झिमवीचीगतं उप्पायं वूया । वाहिरेसु वेस्साणरपधगतं उप्पायं [वूया] । पुरत्थिमेसु पुरत्थिमायं दिसायं उप्पायं वूया । दक्खिणेसु गत्तेसु दक्खिणायं दिसायं उप्पायं वूया । पच्छिमेसु गत्तेसु पच्छिमायं दिसायं उप्पायं वूया । धामेसु गत्तेसु उत्तरायं दिसायं
 15 उप्पायं वूया । णिडेसु उवरिट्ठिमेसु मेघगतं उप्पायं वूया । चलेसु पमागतेसु य विज्जगतं उप्पायं वूया । फस्सेसु पंसुबुद्धिगतं उप्पायं वूया । कण्हेसु धूमकोपेत्तं रत्तिगतं उप्पायं वूया । अग्गेयेसु दिसादाहागतं उप्पायं वूया । णिडेसु चलेसु बुद्धिगतं उप्पायं वूया । णिडेसु चलेसु रत्तेसु य मंस-सोणितबुद्धिगतं उप्पायं वूया । एयं पटिहूवोवळदीहिं पत्तेकसो पत्तेकसो बुद्धि-उप्पाता तेह-पत्त-दुद्ध-वसा-विच्छिक्क-सप्प-परिसप्प-कीड-किविह्वगते वा उचलद्धव्वा भवति । इति अंत-लिक्खगता उप्पाता वक्खता भवति ।

20 तत्थ भोम्मा उप्पाया भवति माणुसा चतुःपदा परिसप्पगता मच्छगता खुडुसिरीसिवगता वणफ्फतिगता गिरिण-दिग्गगता आयतण-उवकरण-सयणा-ऽऽसण-जाण-वाहण-भायणगता चेव भवति । तत्थ केस-मंसु-लोमगते वणफ्फतिगतं उप्पायं वूया । तत्थ अपत्ते काले पाणे वा भोयणे वा आभरणे वा हसिते वा भणिते वा गीते वा णट्टे वा वादिते वा अप्पत्तकाले पेक्खित्तमि वा चउप्पदे वा परिसप्पे वा सप्पे वा खुडुसिरीसिवे वा आहारे वा दंसणे वा पयाणे वा अपत्तकाले पुप्फ-फले उप्पायं वूया । तत्थ वणफ्फत्तासु एतेसु चेज अतिउत्तकालेसु एतेसु चेव पुच्चविट्ठेसु पटिहूवेसु
 25 अतिउत्तकाले वणफ्फतीगतं वूया । तत्थ पाण-भोयण-वत्त्या-ऽऽभरण-सयणा-ऽऽसण-पुप्फ-फळ-धण्ण-ण्यकरण-विविधविजरी-यदंसणे विगताभिपमे वा अमूतपुच्चपुप्फ-फळपाडुच्चावे विगतहववणफ्फती उप्पायं वूया । तत्थ उद्धं गीयाय सितो-सुद्धामासे अंतलिक्खेणे एदंसापारणे उप्पायणोसुंघणे णमोकार-वंदित-पूतिय-उत्त-भिगार-ळाउद्धोयिक-वायसण-कडण-लोमहत्थ-उस्सय-समाय-महाभागगते चेव देयतागतं गहगतं उप्पायं वूया । ददेसु पण्यत-णाम-दुग्ग-णगरगतं वूया । संर-तेसु गामगतं उप्पायं वूया । अचमंतरेसु वित्थेसु णगरगतं उप्पायं वूया । ॥३॥ वाहिरेसु वित्थेसु जणपदगतं
 30 उप्पायं वूया । उत्तमेसु उण्णप्पसु य पच्चतगतं उप्पायं वूया । ॥४॥ दीहेसु णिडेसु य णदीगतं उप्पायं वूया । णिडेसु परिक्खेयेसु य समुरगतं उप्पायं वूया । ॥५॥ निडेसु सण्णिह्वेसु वूयगतं उप्पायं वूया । ॥६॥ चलेसु पाणजोणीगते ॥७॥ सव्यपाणजोणीय ॥८॥ सव्यपाणजोणीउयकले चेव पाणजोणीगतं वूया । उज्जुमागेसु मणुस्सजोणीगतं उप्पायं

१ उप्पायणा णामा ॥ १० ॥ २ वक्खताइस्सा ॥ ११ ॥ ३ वक्खायस्सा ॥ १२ ॥ ४ एतथिअन्तरतः पाठः ॥ १० ॥ नाति ॥ ५ कत्ते एवेत्ताकत्ते उपाहणोपुपणे णमो ॥ १३ ॥ ६ चरणे उपायणोउंघणे णमो ॥ १० ॥ ७-१-७ एतथिअन्तरतः पाठः ॥ १० ॥ एव वरते ॥

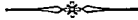
रित्तुं य सव्वप्पसूत्तेसु पुप्फ-फलेसु पुरिसेसु य पुत्तसारं वूया । एतेसु चैव थीणामेसु कण्णयेसु कण्णासारं वूया । इति मित्तसारो विण्णयो भवति ।

तत्थ इस्सरियसारो पुब्बाधारितो इस्सरियसारं दुविधं आधारए—अव्वत्तं सुव्वत्तं चैति । तत्थ सुव्वत्तो अधिकरणं णायकत्तं अमच्चत्तं रायत्तं चैति । तत्थ अव्वत्ते इस्सरियसारो पेत्साणं रायपुरिसस्स य पेत्सत्तं वूया । तत्थ अव्वत्तेसु पच्चवरकायेसु चैव संसयं मज्झिमाणंतरेसु पेत्साणं रायपुरिसस्स णित्तियं इस्सरियसारं वूया । मज्झिमकायेसु धाणप्पत्तं 5 अधिकरणत्थं वूया । कायमतेसु सेणापतिं वा अमच्चं वा णायकं वा वूया । एतेसु चैव आहारेसु रायिणं वूया । जधु-त्ताहि य धाणज्जाये थाणोवल्लद्धीहिं इस्सरियसारं वूया । इति इस्सरियसारो विण्णयो ।

तत्थ विज्जासारे पुब्बाधारितो सव्वबुद्धिरमणेसु सव्वविज्जासत्यगते य पडिरूव-सइपादुब्भावेसु चैव विण्णयाणं सत्याणं वा विज्जासारं वूया । तत्थ कायमतेसु विज्जासारं गतं वूया । मज्झिमकायेसु उत्तमाणंतरेसु य विज्जावित्तुयं वूया । मज्झिमेसु मज्झिमं वूया । मज्झिमाणंतरकायेसु मज्झिमजहण्णसारेसु य असमत्तविज्जं वूया । पच्चवरकायेसु 10 सहण्णेसु य विज्जाविलंबितं वूया, विज्जाछित्तं वा वूया । इति विज्जासारो विण्णयो ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाए अंगविज्जाए [सारा]सारो णामाज्झातो वक्खातो
उपपन्नासतिमो सम्मत्तो ॥ ५४ ॥ छ ॥

[पणपण्णासइमो णिघाणज्झाओ]



णमो भगवतो जसवतो महापुरिसस्स । अघापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाए अंगविज्जाए णिघाणं णाम- 15 ज्झायां । तं खलु वक्खायिस्सामि । तं जघा— तैत्थ अत्थि णिघाणं णत्थि णिघाणं ति पुब्बमाहारयियव्वं भवति । तत्थ अव्वंतरामासे द्ढामासे णिद्रामासे सुद्दामासे अत्थि णिघाणं ति वूया । तत्थ बज्झामासे चळामासे लुक्खामासे कण्हामासे तुच्छामासे अत्थि (णत्थि) णिघाणं ति वूया । २०

तत्थ अत्थि णिघित्तं ति पुब्बमाधारिते णिघित्तमट्टविधमादिसे । तं जघा—भिण्णसत्तपमाणं भिण्णसहस्सपमाणं 20 सैयसहस्सपमाणं कोट्टिपमाणं अपरिमियपमाणमिति । कायमतेसु उम्मट्टेसु अपरिमियणिघाणं वूया । तैत्थ अपुण्णामेसु अव्वंतरामासे द्ढामासे णिद्रामासे सुद्दामासे पुण्णामासे य समं वूया । भिण्णे दसक्खे पुब्बाधारिते दो वा चत्तारि वा अट्ट वा वूया । समे पुब्बाधारिते दसक्खे वीसं वा [चत्तालीसं वा] सट्ठिं वा असीतिं वा वूया । वीसासु समासु पुब्बाधारितासु दो वा चत्तारि वा छ वा अट्ट वा सताणि वूया । तथा सहस्साणि तथा सयसहस्साणि तथा कोटीओ तथा अपरिमिते एतेण धीयगमेण दसक्खभिण्णादी जाव अपरिमितो च्चि सव्वं समे आधारिते समणु- 25 गंतव्वं भवति । तत्थ थीणामेसु चलेसु लुक्खेसु वज्जेसु सुक्खेसु णीहारेसु समग्गेसु चैव सद-रूवपादुब्भावेसु विसमो- पलद्धीसु चैव विसमं वूया । तत्थ भिण्णे दसक्खे विसमे पुब्बाधारिते एक्कं वा तिण्णि वा पंच वा सत्त 30 वा णव वा वूया । दसक्खे पुब्बाधारिते दस वा तीसं वा पण्णासं वा सत्तारि वा णत्तं वा वूया । एवं भिण्ण-सत्तपमाणे विगळे दसक्खेसु पुब्बाधारितेसु सव्वमणुगंतव्वं भवति । तत्थ सत्तपमाणे विगळे पुब्बमाधारिते सयं वा तिण्णि वा सताणि 35 पंचं वा सताणि सत्त वा सयाणि णव वा सयाणि वूया । एवं भिण्णसहस्स-पमाणविगळेसु एतेसु पुब्बाधारितेसु समणुगंतव्वं भवति । एवं विगलसहस्सपमाणं भिण्णसहस्सपमाणं भिण्ण- 40

१ रायिणं इं त० ॥ २-३ हस्सविहान्तर्गतः पाठः इं त० एव वर्तते ॥ ४ तत्थ पुं ति० ॥ ५ वीयरानेण इं त० ॥ ६ १ > एतविहान्तर्गतः पाठः इं त० नास्ति ॥

तत्र घणसारो भूमीगतो खेतगतो आरामगतो ८ गामगतो ९ णारगतो चि भूमीगतो एषं सारो पुत्रवैभार-
वित्तव्यो भवति । तत्र महावकासेषु अयत्सेषु भूमीसारो विष्णोयो । तत्र सयणा-ऽऽसण-माण-भोयण-वत्या-ऽऽमरणगते
गिद्दसारं धूया । तत्र चतुरस्सेषु खेतसारं धूया । उग्रगद्देषु आरामसारं धूया । रायगते विजयगते अत्र्यत्ते गामसारं
धूया । रायगते विजयगते अत्र्यत्ते णारसारं धूया । एतेसामेव जन्कोदीरणे रज्जसारं धूया । इति भूमीगतो घणसारो
5 विष्णोयो ।

तत्र पाणसारो धणसारो दुविधो आधारयित्तव्यो भवति-मणुस्ससारो १ तिरिक्कज्जोणियसारो चैव २ । तत्र
सव्यसज्जीवगते पाणसारं धूया । तत्र उच्चुमारोषु सव्यमणुस्सगते य मणुस्ससद्-रूवपादुच्चावेसु य मणुस्ससारं धूया ।
तत्र तिरियामासे सव्यतिरियजोणियगते सव्यतिरिक्कज्जोणियसद्-रूवपादुच्चावे तिरिक्कज्जोणियं सारं धूया ।

तत्र तिरिक्कज्जोणियगतो सारो णारव्यो भवति-अस्सा हत्थी गो-माहिंसं अयेलकं ररोट्टमिति विष्णोयं । तत्र
10 सव्यसिगिगते सिगिपट्टिरुव-सद्दपादुच्चावे हत्थि-गो-माहिंसं अयेलकमिति विष्णोयं भवति । तत्र तिणमोयिसु तिणमोयी
विष्णोया । मंस-रुधिरमोयीसु हत्थी विष्णोया । कण्ठेषु हत्थी वा मासा वा विष्णोया । खत्तिसु हत्थी वा अस्सा वा
पस् वा विष्णोया । सेतेसु खरा विष्णोया । सामेषु उट्टा विष्णोया । गद्देषु अयेलकं विष्णोयं । उग्रगद्देषु अस्सा
गो-माहिंसं उट्ट-रुरे धूया । आकासेषु अग्रहणेषु य कायवत्तेसु हत्थी विष्णोया । मज्झिमकायेसु अस्सा गो-माहिंसा
उट्टा य विष्णोया । मज्झिमाणंतरकायेसु खरा विष्णोया । पञ्चरकायेसु अयेलका विष्णोया । इति तिरिक्कज्जोणियतो
15 मणुस्सगतो दुपद-चतुष्पदगतो पाणसारो विष्णोयो भवति ।

तत्र घणसारो अज्जीनो सज्जीयो य दुविधो विष्णोयो । वित्तव्यो एका(या)रसविधो भवति-वित्तसारो १ सुवण-
सारो २ रूपसारो ३ मणिसारो ४ मुत्तासारो ५ वत्थसारो ६ आभरणसारो ७ सयणासणसारो ८ भायणसारो ९ दव्वोप-
करणसारो १० अम्बुपहद्दसारो ११ घण(ण)सारो १२ । इति घणसारो विष्णोयो । तत्र सव्यसंघातेसु वित्तेसु चतुरस्सेसु य
काहावणसारो विष्णोयो भवति १ । पीतकेसु त्वेसु य सुवणसारो विष्णोयो २ । सेतेसु अग्गेयेसु य रूपसारो विष्णोयो ३ ।
20 अणग्गेयेसु ४ मणिसारो विष्णोयो ५ । आपुण्येसु ६ मुत्तासारो विष्णोयो ७ । किस्सेसु वित्तव्येसु पुधूसु य सव्यवत्थगते
सव्यतंतुगते चैव वत्थसाये विष्णोयो ८ । सामेषु सव्यआमरणगते य आभरणसारो विष्णोयो ९ । चतुरस्सेसु कडीयं च
आसणसारो विष्णोयो, पट्टेसु (पट्टेसु) सव्यसत्तेसु य सयणसारो विष्णोयो ८ । पुधूसु सव्यभायणपट्टिरुवगते य भायण-
सारो विष्णोयो ९ । हत्थ-पाद्परामासे सव्यसिपिकगते य उवकरणगते य उवकरणसारो विष्णोयो १० । आहारोसु सव्येसु
अम्बुपहद्देषु सद्-रूवेसु य अम्बुपहद्दणं अम्बुपहद्दसारो विष्णोयो ११ । अणूसु सव्यघणगते य घणसारो
25 विष्णोयो १२ । चलेसु पाद्-जंघे य जाणसारो विष्णोयो । इति घण(ण)सारो सज्जीनो अज्जीनो य दुविधो विष्णोयो
एकारसविधो (वारसविधो) वित्तरेण चक्रयातो भवति ।

तत्र मित्तसारो पंचविधो आधारयित्तव्यो भवति । तं जथा-संबंधिसु १ मित्ताणि २ वयस्सा ३ विधा ४ कम्म-
कर-मिषवग्गे ५ चेति । तत्र अचमंतरचमंतरेषु सव्यसंबंधिगते य संबंधिणो विष्णोयो १ । वाहिरचमंवरेषु सामेषु य
मित्ता विष्णोया २ । सामेषु वयस्सा विष्णोया ३ । धीणामेषु विधा विष्णोया ४ । पेस्सेसु अंतैवास्ती विष्णोया, वाहिरेषु वाहिरो
30 कम्मकर-मिषवग्गे चि विष्णोयो ५ । तत्र धीसु पुच्चाधारितासु समाग्गेषु भज्जावग्गो विष्णोयो । सीमेषु गमेषु अंतिसु
सहियग्गो विष्णोयो । पञ्चरकायेसु दासिग्गो कम्मकरवग्गो चि वा विष्णोयो । तत्र भज्जासु पुच्चाधारितासु चालेयेसु
धणेषु य कोमारीणं भज्जाणं सारं धूया । चलेसु पुण्यवग्गं भज्जाणं सारं धूया । तत्र पुरिसेषु संबंधिसु य पुच्चाधा-

१ ८ ९ एतद्विधान्तर्गतः पाठः ६० त० नास्ति ॥ २ माहारियव्यो ६० त० ॥ ३ हत्थ घण ॥ ४ वा मत्ता ६० त० ॥
५ 'पट्टे' ६० त० विना ॥ ६ ८ ९ एतद्विधान्तर्गतः पाठः ६० त० नास्ति ॥ ७ मणेषु ६० त० ॥ ८ समागमेषु
६० त० विना ॥

रितेसु य सव्वप्पसूतेसु पुप्फ-फलेसु पुरिसेसु य पुत्तसारं वूया । एतेसु चेव धीणामेसु कण्णेयेसु कण्णासारं वूया । इति भिच्चसारो विण्णेयो भवति ।

तत्थ इस्सरियसारो पुब्बाधारिते इस्सरियसारं दुविधं आधारए-अव्वत्तं सुव्वत्तं वेति । तत्थ सुव्वत्तो अधिकरणं णायकत्तं अमच्चत्तं रायत्तं वेति । तत्थ अव्वत्ते इस्सरियसारो पेस्साणं रायपुरिसस्स य पेस्सत्तं वूया । तत्थ अव्वत्तेसु पच्चवरकायेसु चेव संसयं मज्झिमाणंतरेसु पेस्साणं रायपुरिसस्स णिसियं इस्सरियसारं वूया । मज्झिमकायेसु धाणप्पत्तं अधिकरणत्थं वूया । कायमंतेसु सेणापतिं वा अमच्चं वा णायकं वा वूया । एतेसु चेव आहारेसु रायिणं वूया । जधु-त्ताहि य धाणज्जाये धाणोवलद्धीहिं इस्सरियसारं वूया । इति इस्सरियसारो विण्णेयो ।

तत्थ विज्जासारो पुब्बाधारिते सव्वबुद्धिरमणेसु सव्वविज्जासत्थगतो य पडिरूव्व-सद्दपादुब्भावेसु चेव विण्णेयाणं सत्थाणं वा विज्जासारं वूया । तत्थ कायमंतेसु विज्जासारं गतं वूया । मज्झिमकायेसु उत्तमाणंतरेसु य विज्जाविस्सुयं वूया । मज्झिमेसु मज्झिमं वूया । मज्झिमाणंतरकायेसु मज्झिमजहण्णसारोसु य असमत्तविज्जं वूया । पच्चवरकायेसु जहण्णेसु य विज्जाविलंबितं वूया, विज्जाछित्तं वा वूया । इति विज्जासारो विण्णेयो ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाए अंगविज्जाए [सारा]सारो णामाज्झातो धक्खातो चउपत्तासतिमो सम्मत्तो ॥ ५४ ॥ छ ॥

[पणपण्णासहमो णिघाणज्झाओ]



णमो भगवतो जसवतो महापुरिसस्स । अथापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाए अंगविज्जाए णिघाणं णाम- 15 उज्जायं । तं खलु वक्खायिससामि । तं जथा- इत्थं तत्थ अत्थि णिघाणं णत्थि णिघाणं ति पुव्वमाहारयियव्वं भवति । तत्थ अच्चंतंरामासे द्ढामासे णिघामासे सुद्धामासे अत्थि णिघाणं ति वूया । तत्थ बज्जामासे चलामासे लुक्खामासे कण्हामासे तुच्छामासे अत्थि (णत्थि) णिघाणं ति वूया ।

तत्थ अत्थि णिघित्तं ति पुव्वमाधारिते णिघित्तमट्ठविधमादिसे । तं जथा-भिण्णसत्तपमाणं भिण्णसद्दसपमाणं २० सैयसद्दसपमाणं कोडिपमाणं अपरिमियपमाणमिति । कायमंतेसु उम्मट्ठेसु अपरिमियिण्णं वूया । तत्थ अपुण्णामेसु अच्चंतंरामासे द्ढामासे णिघामासे सुद्धामासे पुण्णामासे य समं वूया । भिण्णे दसक्खे पुब्बाधारिते दो वा चत्तारि वा अट्ठ वा वूया । समे पुब्बाधारिते दसक्खे वीसं वा [चत्तारिीसं वा] सट्ठिं वा असीतिं वा वूया । वीसासु समासु पुब्बाधारितासु दो वा चत्तारि वा छ वा अट्ठ वा सताणि वूया । तथा सद्दससाणि तथा सयसद्दस्ताणि तथा कोडीओ तथा अपरिमिते एतेण धीयगमेण दसक्खभिण्णादी जाव अपरिमितो च्चि सव्वं समे आधारिते समपु- गंतव्वं भवति । तत्थ धीणामेसु चलेसु लुक्खेसु बज्जेसु सुक्खेसु णीहारेसु समग्गेसु चेव सद्द-रूव्वपादुब्भावेसु विसमो- 25 पलद्धीसु चेव विसमं वूया । तत्थ भिण्णे दसक्खे विसमो पुब्बाधारिते एकं वा तिण्णि वा पंच वा सत्त वा णव वा वूया । दसक्खे पुब्बाधारिते दस वा तीसं वा पण्णासं वा सत्तारिं वा णउत्तिं वा वूया । एवं भिण्ण- सत्तपमाणे विगले दसक्खेसु पुब्बाधारितेसु सव्वमपुगंतव्वं भवति । तत्थ सत्तपमाणे विगले पुव्वमाधारिते सयं वा तिण्णि वा सताणि < ५ पंचं वा सताणि > सत्त वा सयाणि णव वा सयाणि वूया । एवं भिण्णसद्दस- पमाणविगलेसु एतेसु पुब्बाधारितेसु समपुगंतव्वं भवति । एवं विगलसद्दसपमाणं भिण्णसद्दसपमाणं भिण्ण- 30

सवसहस्तप्यमाणं भिण्णकोडीप्यमाणं अपरिमितं च विगलप्यमाणं एतेण कमेण जघुत्ताहिं उवलद्धीहिं उवलम्भ सव्वमेव विगलप्यमाणं समणुगतं भवति ।

- तस्य कंसि देसं सि णिघाणं पुच्चमाचारितं ? ति इमाहिं उवलद्धीहिं समणुगतं भवति-तस्य उल्लोणिते पासायगतं बूया माळगतं वा पट्टीवसगतं वा आळग[गतं] वा पागारगतं वा गोपुरगतं वा ~~ह~~ अट्टालगतं वा रुक्खगतं वा ~~ह~~ पव्वतगतं वा बूया । तस्य असंखयेसु रुक्खगतं वा पव्वतगतं वा बूया । संखतेसु आमास-सह-पडिह्व-पादुम्भावेसु अवसेसाणि बूया । तस्य सव्वजोधगते सव्वरावगतसु य पागार-गोपुर-उट्टालक-धयगतं बूया । णिगमपयेसु धारायं बूया । सण्णिरुद्धेसु पागारगतं बूया । पविट्टेसु अट्टालगतं बूया । सयणासणे उवविट्टे-संविट्टेसु पासायगतं बूया । सव्वदिव्वजोणिते देवदायतणगतं बूया । केस-मंसु-सव्वमूलगतं य गिहणिसित्तं बूया । गिद्धेसु क्विजणिधितं बूया । गंभीरेसु क्वियणिधितं बूया । उपहुत्तेसु उट्टितपट्टे रण्णे वा णिधितं बूया । गहणेसु गहणंसि 10 अरणगतं णिधितं बूया । उवगहणेसु आरामगतं णिधितं बूया । आकासेसु आकासे णिधितं बूया । गहणाणं आकासाणं य सैमासासे जणपदगतं वा अरण्णाणं वा सीमंतिकासु वा ~~ह~~ आरामसीमंतिकासु वा ~~ह~~ णिधितं बूया । चतुरत्सेसु संकट्टेसु खेत्तगतं णिधितं बूया । इति थावरणि णिधिताणि बूया । अचमंतरेसु गतेसु दीहेसु रच्छागतं णिधितं [बूया] । परिमंढलेसु णिवेसणंसि णिधितं बूया । पुरिमेसु रायमग्गे णिधितं बूया । कायमंठेसु रायमग्गे णिधितं बूया । मज्झिमकायेसु रायमग्गसमासु रच्छासु णिधितं बूया । मज्झिमाणंतकायेसु सुंठिकासु रच्छासु णिधितं बूया । 15 पंचवरकायेसु णिक्कुडरच्छासु णिधितं बूया । अचमंतरचमंतरेसु अचमंतरचमंतरे णिवेसणे णिधितं बूया । मत्थकेसु माळगतं बूया । कण्ठेसु आळगतं बूया । उट्टेसु कुडगतं बूया । केसेसु णिद्धगतं [बूया] । णासायं णव्यणोरुत्ते वा पणालीगतं बूया । अतेसु गंभीरेसु कुणी[ग]यं ति बूया । पाळ्ळि कुट्टेसु य वखाडगतं ति बूया । उदरे मुखे वा गव्वगिहगतं [बूया] । पुरत्थिमेसु अंगणगतं बूया । < पच्छिमेसु पच्छायत्थुगतं बूया । >

- कंसि भायणंसि पुच्चमाचारियंसि ?-तस्य मूलजोणिते कट्टभायणगतं बूया । घातुजोणीयं सारमंतेसु य 20 लोहीगतं वा कडाहगतं वा धरंजरगतं वा कुंडगतं वा उक्खलितगतं वा रकिगतं वा लोहीवारगतं वा बूया । तस्य महावकासेसु उट्टिं वा लोहिं वा कडाहकं वा बूया । मज्झिमकायेसु कुंडगतं वा उक्खलितगतं वा वारगतं वा लोहवारगतं वा बूया । पचवरकायेसु आयमणी वा सत्थिआयमणी वीं चरुगतं वा कट्टकुंडितगतं वा णिघाणं बूया । एतेसामेय तिण्हं सण्णिघाणाणं द्दामासेसु तस्य तिविधं पि य भायणं बूया । तस्य पडिह्वेहिं आमासेहिं य मूलजोणी-घातु-जोणीउवलद्धीहिं संठाणेहिं य भायणगतं बूया । वित्थडेसु भूमियं णिधितं बूया । तस्य ओमजितेसु अणाहारेसु अण्णेहिं 25 हरितं णिधियं बूया । टितामासेसु पच्छा णीहारेसु णिधिहाणा विपण्हं बूया । केवलणीहारेसु णरिय णिधितं ति बूया । अचमंतपमासे द्दामासे णिद्धामासे मुद्धामासे पप्पे णिधितं ति बूया । तस्य यज्झामासे चळामासे लुक्कामासे कण्णामासे अप्पे णिधितं ति बूया । सुभा-सुभेसु पत्तं णिधिं अण्णेहिं हरितं ति बूया । असुभेसु पुच्च-पादुम्भावेसु पच्छा सुभेसु पुच्चमपरिकिट्ठो णारसो पाबिहिसि" णिधिं ति बूया । एवं गण्णापरिसंखाय देस-भागो-पलद्धीहिं भाजोपलद्धीयं दिसाउपलद्धीयं अप्पणीयक-परातकोपलद्धीहिं उंभ-विपण्णास-गह-पडिह्वोपलद्धीहिं य 30 आमास-सह-रूपपादुम्भावेहिं सचं समणुगतं भवति ॥

॥ इति सल्ल भो । महापुरिसदिण्णाय अंगविज्ञाय णिघाणो णामाग्गात्तो वस्सत्तो भवति पणपण्णासतिमो सम्मत्तो ॥ ५५ ॥ छ ॥

१ इतिहान्तगं: कट्ट ६० त० एव वरंते ॥ २ 'द्वानं हं' ६० त० ॥ ३ इतमासेण जणं ६० त० ॥ ४ इतिहान्तगं: कट्ट: ६० त० एव वरंते ॥ ५ संदिक्कयसु ६० त० णिना ॥ ६ निजगतं ६० त० ॥ ७ 'दीसगतं ६० त० णिना ॥ ८ कुट्टेसु ६० त० णिना ॥ ९ < पच्छिमान्तगं: कट्ट: ६० त० नात्थि ॥ १० मट्टिकं वा लोहिकं वा ६० त० ॥ ११ वा थारुक-गतं वा कुट्टं' ६० त० ॥ १२ कडामासे ६० त० ॥ १३ णिधितं ति णि० ॥

[छप्पण्णासइमो णिच्चिसुत्तज्जाओ]



णमो भगवतो जसवतो महापुरिसस्स । अघापुब्बं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय णिच्चिसुत्तं णामा-
ज्जायं । तं खलु भो ! तमणुवक्खस्सामि । तं जघा-तत्य अरिथ वद्धं णत्थि वद्धं ति पुच्चमाधारयित्त्वं भवति । तत्य
अच्चंतरामासे ददामासे उद्धोगिते ओहसिते माता-पितिसइ-रूवपादुच्चावे उक्कट्टे अप्पोडिते णवपुण्णामपहट्ट-तुट्ट-पशुदग्गे
पुप्फे फले वा उवलद्ध-संत-अत्थिसइ-रूवपादुच्चावे अत्थि वद्धं ति वूया । तत्य वज्जामासे चलामासे उक्कासिते खुधिते 5
णिम्मज्जिते णिद्धिखिते^१ पक्कट्टे पम्मुए अवमट्टे अवलोयिते ओलोगिते ओसारिते अणुदत्ते अपशुदग्गे अपहट्टे पुप्फे
फले वा पादुच्भूते एयंविचे वा ॥ पैडिरूव-सइ-रूवपादुच्चावे आवरण-असंत-णत्थिसइ पाउच्चावे णत्थि वद्धं ति
वूया । तत्य वद्धे पुच्चाधारिते वद्धं तिविधमाधारये-पाणजोणीगतं १ मूलजोणीगतं २ धातुजोणीगतं ३ । तत्य जघुत्ताहिं
पाणजोणी-मूलजोणी-धातुजोणी-उवलद्धीहिं पाणजोणी य [मूलजोणी य] धातुजोणी य उवलद्धव्वा भवति । तत्य पाण-
जोणीगते पुच्चाधारिते मुत्तिकं संखमंढं गवलमंढं बालमयं दंतमयं अट्टिकमयमिति उवलद्धव्वं भवति । एताणि 10
सव्वाणि आधारयित्ता पत्तेगं जघुत्ताहिं < उवलद्धीहिं > आमास-सइ-रूवोपलद्धीहिं उवलद्धव्वाणि भवति ।

मूलजोणीगते पुच्चाधारिते तं चतुर्विधमाधारये-मूलगतं खंधगतं अगगतं पत्तगतमिति फलगतमिति । एतं
एवमादि चतुर्विधं मूलजोणीगतं जघुत्ताहिं उवलद्धीहिं पत्तेकसो पत्तेकसो आधारयित्ता आधारयित्ता सव्वं समणु-
गतं भवति । तत्य धातुजोणीगते पुच्चाधारिते तं दुविधमाधारये-मणिधातुगतं चैव < लोहधातुगतं चैव । > तत्य
सव्वलोहधातुपडिरूवेण तस्सइपादुच्चावेण चैव लोहधातुगतं उवलद्धव्वं भवति । तत्य सव्वमणिधातुपडिरूवेण 15
सव्वमणिधातुगतं उवलद्धव्वं भवति । पुणरवि धातुगतं दुविधमाधारयित्त्वं भवति-अग्गेयमण्णगेयं चैति । दुविधमवि
जघुत्ताहिं उवलद्धीहिं उवलद्धव्वं भवति-तत्य अग्गेयाणि सव्वलोहयाणि लोहियक्खो पुलओ गोमेदओ मसारण्हो खार-
मणी चैव, अवसेसाणि धातु अण्णोयेसु उवलद्धव्वाणि भवति । तत्य जघुत्ताहिं उवलद्धीहिं सव्वलोहइं सव्वमणीसु
य उवलद्धव्वाणि भवति । तत्य घट्टेसु मणि वा संखमंढं वा पवाल्यं वा बूया । ओमत्थिते पर(रि)मत्थिते सव्वविद्ध-
पडिरूवे य विद्धंमंढं वूया । मुत्ताओ य आघायित्तेण अविद्धंमंढं वूया । तत्य सामेसु सव्वाभरणगते चैव आभरणगतं 20
वूया । तत्य कोहिते खोडिते दंतण्हं अंजण-पासाण-सक्करा-लेट्टुक-ट्टेहिया-मच्छक-फट्टादिसु सव्वकट्टिणगते सव्वकट्टण
सव्वचुण्णगते सव्वंधणपडिरूवउवकरणगते चैव धंणं वूया । उद्धं णामीय काहावणे वूया । अघो णामीय णाणकं वूया ।
तत्य अच्चंतरामासे सव्वसारगते सव्वकाहावणेपकरणगते य काहावणे वूया । तत्य काहावणेसु पुच्चाधारितेसु
उत्तमेसु उत्तमयत्तिए वूया, मज्झिमेसु मज्झिमयत्तिए वूया, जहण्णेषु जहण्णयत्तिए वूया, साधारणेषु उत्तममज्झिम-
जहण्णेषु साधारणयत्तिए वूया, आदिग्गेषु पुराणे वूया, बालेषु णत्ताए वूया । तत्य वज्जामासेसु असारगते य 25
सव्वणणकपडिरूवगते य णाणकं वूया । तत्य णाणए पुच्चाधारिते कायमंतेसु सव्वमासकपडिरूवगते य मासए वूया,
मज्झिमाकाएसु अद्धमासकपडिरूव-सइपादुच्चावे य अद्धमासए वूया, मज्झिमाणंतरकाएसु सव्वकाकणपडिरूवगते य
काकणिं वूया, पच्चवरकाएसु सव्वअट्टपडिरूवगते य अट्टातो वूया । तत्य अच्चंतरेसु छेए वूया, धाहिरच्चंतरेसु पत्तेये
वूया, धाहिरिसु धाहिराहियं वूया, कण्हेसु छोइं वूया, फालितेसु गाढं वूया, ददेसु सारमंते वूया, चलेसु
धंणसारे वूया, चतुरस्सेसु चतुरसं वूया, वट्टेसु वट्टं वूया, लेहागते लेहागतं चित्तं वूया, सण्हेसु अप्पलक्कराणं वूया, 30
यलेसु उत्ताणलक्कराणं वूया, उविट्टेसु उविट्टलक्कराणं वूया । एतेसु अक्करटाणाणि भवति ।

१ 'ते पम्मुत्ते अच' इ० त० ॥ २ पादुच्चावे एयं' इ० त० ॥ ३ हल्लविहान्तगतं: पाठ: इ० त० एव वर्तते ॥ ४-५ एत-
विहान्तगतं: पाठ: इ० त० नास्ति ॥ ६-७-८ विट्टमं इ० त० ॥ ९ 'व्यद्धकग' इ० त० सि० ॥ १० 'व्ययणपण' इ० त० ।
'व्यघणपण' सि० ॥ ११ वणणं इ० त० ॥ १२ 'हण्णसाघा' इ० त० ॥ १३ 'सु यत्तिये' वूया, धाहिरयाहिरि हतं वूया,
इ० त० निना ॥ १४ अप्पासा' इ० त० निना ॥

दैत्यं एककेसु गतेसु एकाभरणे एकौपरकरणे एकचरेसु सत्तेसु एकत्रीणियं एकंगुलिगहणे एकसाहागते य एकं ब्रूया । तस्य दंढेसु गतेसु जमलाभरणे जमलोवकरणे मिधुणचरेसु सत्तेसु विअंगुलिगहणे विसाहागते सब्वविगपडिरूवगते य दुवे ब्रूया । तस्य तिप भमुहासंगयए णोसाचूलायं पोरिसे, तियंगुलिगहणे सब्वतियपडिरूव-सद्पादुब्भावे य तिण्णि ब्रूया । तस्य चतुरस्सेसु चतुकेसु सब्वचतुप्पदेसु चतुरंगुलिगहणे, पादतल-पाणितलेसु सब्वचतुसाहागते सब्व-
 5 चतुक्कपडिरूवे य चत्तारि ब्रूया । तस्य दंतेसु थणेसु अंसे मुट्ठीकरणे फियगहणे पंचकपरामासे पंचकपडिरूवेसु य पंच ब्रूया । तस्य गंडे मणियंघणे गोप्फासु छक्कपडिरूवे य छ ब्रूया । तस्य सोणीयं कण्णेसु पस्सेसु कुक्खीसु य सत्तकपडिरूवे य सत्तकं ब्रूया । तस्य णिडाले कण्ढे उरमज्जे हिदए णामीयं अट्टकपडिरूवे य अट्टकं ब्रूया । तस्य चतुक्क-पंचकपरामासे एकके अट्टगसहिए विए सत्तगसहिए तिए छक्कगसहिते णयगपडिरूव-सद्पादुब्भावे य णव ब्रूया । तस्य पंचगदंडो-दीरणे पंचकजुवलकपरामासे एकए णवकसहिते विए अट्टगसहिते चउके छक्कगसहिते दस ब्रूया । एवं एकारसकसहिते
 10 धारसक-तेरसक-चोइसक-पण्णरसक-सोलसक-सत्तरसक-अट्टारसक-एकुणवीसाका वग्गा आमास-पडिरूवसंजोगेहिं पडिरूव-सद्-आकारपादुब्भावेहिं य एकुत्तरवट्ठीए णेतव्वा भवंति । तस्य अंसफ्फए कोप्परे जण्णूसु वीसं ब्रूया । तूरुमज्जे पणुवीसं ब्रूया । पट्ठीयं तीसं ब्रूया । अंतरोदरेण पणतीसं ब्रूया । णामीयं चत्तालीसं ब्रूया । उपरि णामीयं पणतालीसं ब्रूया । उपरि णामीयं अंगुलेसु पण्णासं ब्रूया । हेट्ठा हितयस्स पंचावणं ब्रूया । हियए सट्ठिं ब्रूया । उपरि हिययस्स पंचसट्ठिं ब्रूया । अक्खए सत्तरिं ब्रूया । गीवामज्जे पणत्तरिं ब्रूया । हणु-कवोले असीतिं ब्रूया । उत्तरोट्ठे
 15 पंचासीतिं ब्रूया । भमूसु णवतिं ब्रूया । णिडाले पंचाणवतिं ब्रूया । सीसे संतं ब्रूया । बाहुमज्जे उरमज्जे य तीससयं ब्रूया । तालुये जिब्भायं यासंते मुहे त्ति सहस्सं ब्रूया । गीते विपेक्खिते विजंभिते सहस्समेतं ब्रूया । पुंभवदिट्ठेण चैव कमेण अक्खट्ठाणाणि यधुदिट्ठाणि एकुत्तरियाय वट्ठीय समत्त-भिण्णोवलद्धीहिं चैव आधारयित्ता आधारयित्ता काहावणा णाणकोवलद्धीओ य आमास-पडिरूवसंजोगोपलद्धीहिं आकार-सण्णा-सद्-रूवपादुब्भावेहिं सब्वं समणुगतं भवति ।

20 तस्य 'कंसि वदं ?' पुव्वमाधारिते णासायं थणेसु पोरिसे त्ति र्थविकाय त्ति ब्रूया । मुखे पिट्ठे णामीयं अक्खीसु त्ति चम्मकोसगतं ब्रूया । अवहत्थेसु कुक्खीसु त्ति पोट्टलिकागतं ब्रूया । दढेसु वदं ब्रूया । चलेसु सुक्कं ब्रूया । ओवोदिय-परिवेदिते अट्टियगतं ब्रूया । केस-मंसुगतं सुत्तवदं ब्रूया । अंगुलीसु चक्कवदं ब्रूया । तणूसु हेत्तिवदं ब्रूया । अब्भंतरेसु सकं ब्रूया । थाहारेसु परकं ब्रूया । थाहिरब्भंतरेसु सक-परकसाधारणं ब्रूया । कायमंतेसु सुवण्णप्पमाणं ब्रूया । मज्झिमकायेसु अट्टसुवण्णप्पमाणं ब्रूया । मज्झिमागंतरकायेसु सुवण्णमासकप्पमाणं ब्रूया । पच्चवरकायेसु
 25 सुवण्णकाकर्णिं ब्रूया । अब्भंतरेसु पलप्पमाणं ब्रूया । थाहिरब्भंतरेसु मिण्णपलप्पमाणं ब्रूया । अण्णिण्वुतेसु अपरिण्णिण्वुतिं ब्रूया । ण्णिण्वुतेसु णिण्वुयं ब्रूया । णिण्वुएसु णिण्वियं ब्रूया । आहारेसु अचिरलदं ब्रूया । णीहारेसु वयगयं ब्रूया । धीणामेसु अंदद्धितमेव ब्रूया ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्ञाय णिण्वुसुत्तो णामाज्झायो वक्खातो भवति
 छप्पण्णासत्तिमो ॥ ५६ ॥ छ ॥

१ वदं ए० इ० त० ॥ २ णासाभूयालं पो० इ० त० ॥ ३ पुव्वुदिट्ठेण इ० त० ॥ ४ चविकाय इ० त० ॥ ५ ओवोदिय-परिवेदिते उअट्ठिं इ० त० णिना ॥ ६ अण्णिसुत्तेसु अपरिण्णिवुत्तिं ३ १ पु० । अण्णिवुत्तेसु अपरिण्णिवुत्तिं इ० त० ॥ ७ इत्यभिधान्तगतः पाठः इ० त० एव वीते ॥ ८ सु चयं इ० त० ॥ ९ अद्धहियं मेयं वू इ० त० ॥

[सत्तपण्णासइमो णट्टकोसयज्जाओ]

णमो भगवतो यसवतो महापुरिसस्स वट्टमाणस्स । अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाए णट्टाणट्टो णामाज्जाओ । वं खलु भो ! तमणुयंक्खाइत्तामि । तत्थ णट्टं ण णट्टमिति पुव्वमाधारयित्ठवं भवति । तत्थ णेत्तपडिप्पिधणे सोत्तपडिप्पिधणे पाणपडिप्पिधणे पुहपडिप्पिधणे अट्टाणपडिप्पिधणे छिहपडिप्पिधणे वज्जामासे चैलामासे अणामिकागहणे पट्टथे पसंखित्ते मुत्ते पक्किणे णिक्खित्ते उवादिणे वैट्टमुत्ते अवसकित्ते अयणमित्ते विणासित्ते ५ णट्ट-हरियसइपादुब्भावे णट्टं वूया । तत्थ अचंभंतरामासे ददामासे णिट्टामासे सुट्टामासे पुण्णामासे आहारेसु अणट्ट-हरितपादुब्भावे चैव ण णट्टं ति वूया ।

तत्थ णट्टे पुव्वधारिते णट्टं तिविधमाधारये-णट्टं वा पम्हुट्टं वा हरितं वा । तत्थ अणामिकागहणे वंधणमोक्खणे दाणापत्तिगते णिक्खेवउपावणे धग्गे णट्टो त्ति वूया । तत्थ सोत्तपडिप्पिधणे णेत्तपडिप्पिहाणे ६ धाणपडिप्पिहाणे ७ णपफहिते मुत्ते सयं भँट्टे पळोलिते पम्हुट्टं ति वूया । तत्थ चलामासे णीहारेसु य सव्वचोरपडिरूव-10 सइपादुब्भावेसु य हरितं वूया ।

तत्थ णट्टं दुविधं-सज्जीयं अज्जीयं चेति । तत्थ अचंभंतरामासे चलामासे णिट्टामासे पुण्णामासे सव्वसज्जीवगते चैव सज्जीयं णट्टं वूया । तत्थ वज्जामासे ददामासे लुक्खामासे तुच्छामासे सव्वअज्जीवगते चैव अज्जीयं णट्टं वूया । तत्थ सज्जीवे णट्टे पुव्वधारिते सज्जीयं णट्टं दुविधमाधारये-मणुस्सज्जीणीगतं तिरिक्खज्जीणीगतं चैव ।

तत्थ तिरियामासे तिरियगते तिरियबिलोगिते सव्वतिरिक्खज्जीणीगते पडिरूव-सइपादुब्भावे सव्वतिरिक्खज्जीणी-15 परामासे सव्वतिरिक्खज्जीणीसइगतते सव्वतिरिक्खज्जीणीणामोदीरणे तिरिक्खज्जीणीणामवेज्जे धी-पुरिसगते तिरिक्खज्जीणीणामवेज्जे उवकरणे तिरिक्खज्जीणीउवकरणे चैव तिरिक्खज्जीणीं णट्टं वूया । तत्थ तिरिक्खज्जीणीयं पुव्वधारितायं तिरिक्खज्जीणिं तिविधमाधारये-पक्खिगतं चतुप्पदगतं परिसप्पगतं चेति । तत्थ उट्टंगीवा-सिरो-सुट्टामासे णक्खत्त-चंद-सूर-गह-तारागणपडिरूव-सइपादुब्भावे उट्टंभागागते सव्वपक्खिपादुब्भावे सव्वपक्खिपरामासे सव्वपक्खिसइगतते सव्वपक्खिणामवेज्जीदीरणे ६ सव्वपक्खिणामवेज्जे धी-पुरिसगए ७ सव्वपक्खिणामवेज्जे उवकरणे उवगतते सव्व-20 पक्खीउवकरणे चैव पक्खि नट्टं वूया । तत्थ सव्वचतुरस्सेसु वा चतुप्पदसु वा चतुप्पदपादुब्भावे चतुप्पदपरामासे चतुप्पदसइगतते य चतुप्पदणामधेज्जीदीरणे चतुप्पमये उवकरणे चतुप्पदोपकरणे चतुप्पदणामवेज्जे धी-पुरिसे चतुप्पद-उवकरणे उवगतते चउप्पदसइ-रूवपादुब्भावेसु चउप्पयं णट्टं वूया । तत्थ कण्हेसु सव्वदीहेसु सव्वपरिसप्पपादुब्भावे परिसप्पपरामासे परिसप्पसइगतते सव्वपरिसप्पणामोदीरणे परिसप्पमये उवकरणे परिसप्पउवकरणगते परिसप्पणामवेज्जे धी-पुरिससदोपकरणे परिसप्पसइ-रूवपादुब्भावे चैव परिसप्पं नट्टं ति वूया । 25

तत्थ पक्खिसु णट्टेसु पुव्वधारितेसु जलचरं थलचरं ति पुव्वमाधारयित्ठवं । तत्थ आपुणेसेसु सव्वजलयेसु सव्वजलचरेसु जलचरजलयपरामासे जलचरजलयणामोदीरणे जलचरजलयणामवेज्जे उवकरणे धी-पुरिसदव्वोवकरणे सइ-रूवपादुब्भावेसु जलचरं पक्खि नट्टं ति वूया । तत्थ लुक्खेसु थलेसु य थलयेसु य थलचरेसु य सचेसु थलय-थलचरपरामासे थलयथलचरसइणामोदीरणे थलयथलचरउवकरणपादुब्भावे सव्वथलयथलचरणामवेज्जे १ उवकरणे धी-पुरिसे य थलचरउवकरणसइ-रूवपादुब्भावे थलचरं पक्खि णट्टं वूया । तत्थ अचंभंतरेसु आहारेसु सव्वणामेसु 30

१ 'वक्खस्सा' इ० त० ॥ २ णेत्तपडिप्पिधणे मुहपडिप्पिधणे अयाणपडिप्पिधणे वज्जा' इ० त० विना ॥
 ३ पळामासे इ० त० ॥ ४ वदमिचे इ० त० ॥ ५ 'पाणणे इ० त० विना ॥ ६ हत्थविहान्तर्गतं पाठः इ० त० एव वीते ॥
 ७ 'महे प' इ० त० विना ॥ ८ हत्थविहान्तर्गतं पाठः इ० त० एव वीते ॥ ९ 'धेजेसु य धी' इ० ॥
 अंग० २८

मीवाय उद्धं कडीय तुह्जजोणीयं वूया । अधत्था कडीय पञ्चवरजातीयं वूया । तत्थ गुरुजोणीयं पुब्बाधारितायं अज्जयं वा पितरं वा आयरियं वा णट्ठं ति वूया । पुण्णामेसु दंडेसु पेतियं वा मातुलं वा उवज्झायं वा णट्ठं वूया । धीणामेसु दंडेसु मातुस्सियं वा पितुस्सियं वा उवज्झायभगिणिं वा णट्ठं ति वूया । पुणो विसेसितेसु दंडेसु धीणामेसु चुह्ममातुयं वा उवज्झायं वा वूया । अचंभंतरेसु दंडे पितुस्सियं वा उवज्झायभगिणिं वा णट्ठं वूया । वाहिरेसु दंडेसु धीणामेसु पितुजातिं वा उवज्झायजातिं वा वूया । तत्थ उत्तमुत्तमेसु अचंभंतरेसु य पुण्णामधेज्जेसु अज्जकं वा उवज्झायं 5 वा णट्ठं वूया । उत्तमुत्तमेसु धीणामेसु अज्जियं वा उवज्झायमातरं वा उवज्झायउवज्झायिणिं वा णट्ठं वूया । इति गुरुजोणी णट्ठा वक्खाता भवति ।

तत्थ तुह्जजोणीसु भाता वा वयस्सो वा भगिणिं वा 'संलो वा भगिणिं वा पतिं वा मेधुणो वा देवरो वा पतिजेट्ठो वा मातुवयस्सो वा ६ उरस्स(वयस्स)वयस्सो वा ७ णट्ठो विण्णेयो भवति । तत्थ 'दंडेसु भाता विण्णेयो । वामेसु पुण्णामेसु भगिणिपति विण्णेयो । दक्खिणेषु पुण्णामधेज्जेसु मातुलपुत्तो विण्णेयो । वामेसु पुण्णामधेज्जेसु 10 मातुस्सियापुत्तो विण्णेयो । चलेसु वज्जेसेसु य पुण्णामेसु वयस्सो विण्णेयो । 'दंडेसु चलेसु पुण्णामधेज्जेसु य मातुवयस्सो विण्णेयो । वाहिरवाहिरेसु चलेसु पुण्णामेसु य वयस्सवयस्सो विण्णेयो । तत्थ धीणामेसु तुह्जजोणीयं भज्जं वा सौलिं वा भगिणिं वा मातुस्सियाधीतरं वा पितुस्सियाधीतरं वा पित्तियधीतरं वा जातरं वा णणंदं वा सहिं वा जारिं वा णट्ठं जाणिय । तत्थ अचंभंतरेसु चलेसु भुज्जा वा मातुज्जा वा विण्णेया भवति । वाहिरचंभंतरेसु चलेसु य सही वा सही वा विण्णेया । वाहिरेसु चलेसु य धीणामेसु जारिं विण्णेया । तत्थ 'दंडेसु भगिणिं वा भगिणिगतं वा वूया । 15 तत्थ पुण्णामधेज्जेसु सोदरिं वा महपितुकधीतरं वा पित्तियधीतरं वा मातुलधीतरं वा जोणिभगिणिं वा वूया । तत्थ अचंभंतरेसु सोदरियं भगिणिं वूया । उम्मज्जितेसु पुण्णामेसु महपितुयधीतरं भगिणिं वूया । उम्मज्जितेसु पुण्णामेसु णामेसु पित्तियधीतरं भगिणिं वूया । धीणामधेज्जेसु सोदरियं भगिणिं वूया । धीसाधारणेषु पुण्णामेसु मातुलधीतरं वूया । वाहिरेसु चलेसु य जोणिभगिणिं वूया । वाहिरेसु धीसाधारणेषु पितुस्सियाधीतरं वूया, मातुस्सियाधीतरं वा । दक्खिणेषु धीणामेसु पितुस्सियाधीतरं वूया । उदरेसु सोदरिउगमेव वूया, दक्खिणपस्से भायरो, वाम- 20 पस्से भगिणीओ वूया । दक्खिणपस्से उदरस्स उम्मज्जिते जेट्ठो भाया, ओमज्जिए कणेट्ठो भाता, थितामासे जमलभातरो विण्णेया । वामपस्से उदरस्स उम्मज्जिते जेट्ठं भगिणिं वूया, ओमज्जिते कणिट्ठभगिणीं वूया, थितामासे जमलभगिणीओ वूया । इति तुह्जजोणीणट्ठं वक्खातं भवति ।

तत्थ पञ्चवरजोणीपुण्णामधेज्जेसु पुत्तो र्धा जामाता वा जामातुयभाया वा ण्हुसा वा भाया वा भागिणेज्जो वा वयस्सपुत्तो वा जोणीपुत्तो वा भैत्तिओ वा । तत्थ उचंभंतरेसु पुत्ता विण्णेया । वाहिरचंभंतरेसु दंडेसु मातुपुत्ता विण्णेया । 25 धीणामेसु दंडेसु भगिणीपुत्तो विण्णेया । वज्जेसु धीणामेसु जोणिपुत्ता विण्णेया । वज्जेसु चलेसु वयस्सपुत्ता विण्णेया । तत्थ पञ्चवरजोणीयं धीणामधेज्जेसु थिया जोणी धीया वा विण्णेया । तत्थ अचंभंतरेसु धीणामधेज्जेसु धीतरं वूया । वाहिरचंभंतरेसु धीणामधेज्जेसु मातुधीतरं वूया । जमगधीणामोदीरणे भगिणिधीतरं वूया । वज्जसण्णितेसु धीणामधेज्जेसु जोणिभगिणीधीतरं वूया । धीणामेसु वज्जेसु चलेसु य वयस्सधीतरं वूया । धीणामधेज्जसाधारणे जामातरं ण्हुसं वा वूया । पुण्णामेसु अचंभंतरेसु ण्हुसं वूया । इति पञ्चवरजोणी णट्ठं वैक्खाया भवति । 30

एतेसिं पञ्चवरजोणीयं समुद्दिट्ठायं अण्णतरंसि आधारिए अण्णत्तरं णट्ठं वूया । तत्थ 'केण हरितं?' ति आधारितंसि तत्थ णट्ठं आहारेसु । अचंभंतरेसु य अचंभंतरेण हरितं ति वूया । अचंभंतरेसु यमगामासेसु य जो पुच्छेज्ज

१ संभो वा ६० त० ॥ २ इत्थिहान्तर्गतः पाठः ६० त० एव वर्तते ॥ ३-४ दंडेसु ६० त० विना ॥ ५ सहिं वा ६० त० ॥ ६ दंडेसु ६० त० विना ॥ ७ पञ्चत्तरं ६० त० ॥ ८ वा जायाभाया जामाउयजाया वा ण्हुसा ६० त० ॥ ९ भवत्तिओ ६० त० ॥ १० वक्खातो ६० त० विना ॥ ११ यमगामामगामासेसु ६० त० ॥

- तेणेव हरितं ति वृया । वाहिरम्बतरेसु णीहारेसु वाहिं वसतेण हरितं अम्बतरेण ति वृया । अम्बतरवाहारेसु आहार-
णीहारेसु अण्णाहिं वसतेण वाहारेण हरियं ति वृया । वाहारेसु अण्णाहिं वसतेण दिट्ठपुण्येण हरितं ति वृया ।
वाहिरवाहारेसु अण्णाहिं वसतेण अदिट्ठपुण्येण हरितं ति वृया । तत्थ णिवेसणे पुब्बाधारिते अम्बतरेसु णिवेसणगतं,
वृया, अम्बतरम्बतरेसु उच्चरकगतं वृया, वाहिरम्बतरेसु पडिवेसणगतं वृया, वाहारेसु वहिद्धा णिवेसणसत्ति वृया,
5 वाहिरवाहारेसु वहिद्धा णगरस वृया । तत्थ वहिं वा णिवेसणसत्ति पुब्बाधारिते अम्बतरे णगरे पुब्बाधारिते अम्ब-
तरेसु णगरगयं वृया, अम्बतरम्बतरेसु पडिवेसणगतं वृया, अम्बतरवाहारेसु वाहिरियागतं वृया, वाहारेसु आरामगतं
वृया, वाहिरवाहारेसु अरणगतं वृया । पुरस्थिमेसु गत्तेसु पुरस्थिमायं दिसायं वृया । दक्खिणपुरस्थिमेसु दक्खिणपुरस्थि-
मायं दिसायं ति वृया । दक्खिणेषु दक्खिणायं दिसायं ति वृया । दक्खिणपच्छिमेसु दक्खिणपच्छिमायं दिसायं
ति वृया । पच्छिमेसु गत्तेसु पच्छिमायं दिसायं ति वृया । उत्तरपच्छिमेसु गत्तेसु उत्तरपच्छिमायं दिसायं ति वृया ।
10 उत्तरेसु गत्तेसु उत्तरायं दिसायं ति वृया । उत्तरपुरस्थिमेसु गत्तेसु उत्तरपुरस्थिमायं दिसायं ति वृया । तत्थ उद्वेसु
मालगतं वा रक्खगतं वा पव्वतगतं वा आरुभितकं वा वृया । अधोभागेसु वृयगतं वा वावीगतं वा तलंगगतं वा
पवाणगतं वा णदीगतं वा भूमीगतं वा भूमीघरागतं वा णिण्ये वा णिधितं वृया ।

- तत्थ अजीवपगति अणेकाकारा भवति थाणेण वा णिधाणेण वा । सा तिविधा उवलद्धा—पाणजोणीगता
मूलजोणीगता घातुजोणीगता वेति । तत्थ चलामासेसु पाणजोणी विण्येया सव्वपाणपडिरूवगते य । केस-मंसु-नह-
15 लोमगते मूलजोणी विण्येया सव्वमूलपडिरूवगते चेव । ददामासेसु सव्वघातुपडिरूवगते चेव घातुजोणी विण्येया ।
सा दुविधा विण्येया—संखता असंखता चेय । तत्थ संखते संखता विण्येया । असंखते असंखता । सा पुणरवि दुविधा
विण्येया—अग्गेया अणग्गेय ति । तत्थ अग्गेयेसु अग्गेया विण्येया । [अणग्गेयेसु अणग्गेया विण्येया ।] सा
पुणरवि दुविधा विण्येया—आहारे उवकरणे चेव । तत्थ आहारेसु आहारो विण्येयो । सव्वभोगणपडिरूवगते चेव
णीहारेसु उवकरणं विण्येयं सव्वउवक्खणगतं चेव । तत्थ पाणजोणीए आहारे दुद्धं दधिं तक्कं णवणीतं कूचियं आमधितं
20 शुलद्धिं रसालाद्धिं मंथं परमणं दधितायो तक्कोदणो अतिकूरको मंसं रुधिरं वसा वेति । अवसेसाणि
पुंन्वदिट्ठाणि असंखताणि, दुद्धं दधिं वेति असंखताणि । तत्थ णिडेसु पाणीयं, णिद्धसाधारणेसु परमणं, अणिडेसु
दधितायो तक्कोदणो वा विण्येयो । अलुक्खेसु अतिकूरको मंसं ति विण्येयं । लुक्खेसु वडूरं विण्येयं एयमादी ।
इति पाणजोणीगते आहारो विण्येयो भवति ।

- तत्थ मूलजोणीगते आहारे साली वीही कोइया कंगू रालका वरका जच-गोधूमा मासा मुग्गा अलसंदका
25 चणका णिप्फाया कुल्ल्या चणविकाओ मसूरा तिला अत्तसीओ कुसुंभा सामाका वेति । तत्थ आहारेसु अंतेसु चण-
गतमेव णट्ठं वृया । जधुत्ताहिं पुब्बोपलदीहिं अणूसु संखतेसु मूलजोणीयं आहारं णट्ठं वृया । जधुत्ताहिं भोगणपडले
आहारोपलदीहिं तत्थ सेते साली वीही सेततिला कुसुंभा सेतसासया चेति विण्येया । सामेसु अदसी विण्येया । तंवेसु
कोइया गोधूमा तंवनिप्फावा तिला कुल्ल्या वा रायसासया विण्येया ।

- तत्थ सव्वरणगतं तिविधं—तणगतं गुम्मगतं वट्ठिगतं ति । तत्थ तणगतं साली वीही कोइया कंगू रालका सामाका
30 तणफळं चेति विण्येयाणि भवति । तत्थ गुम्मगतं अदसी तिला सासवा चेति विण्येयाणि । तत्थ वट्ठीगते मुग्गा मासा
चणका चणविकाओ अलसंदे वा निप्फावा कुल्ल्या वेति विण्येया भवति । इति आहारगतं णट्ठं ति वृया ।
तत्थ उवणिडेसु कुसनगतं विण्येयं मास-मुग्गा-अलसंदका-चणविकातं भवति । तत्थ 'कोलयो कंबलिको
सांकरतो भूणिकाउलो दुद्धं दधिं तक्कं अंधिलं ति विण्येया उंपसेका । तत्थ सेतेसु मधुरेसु असंखयेसु य दुद्धं विण्येया ।

१ हत्तविहान्तर्गतः पाठः हं तं एव वर्तते ॥ २ 'पमाति हं तं विना ॥ ३ हत्तविहान्तर्गतः पाठः हं तं एव वर्तते ॥
४ पुष्पदिट्ठा हं तं ॥ ५ फाल हं तं ॥ ६ सारकस्ते हं तं ॥ ७ 'का दुद्धं हं तं विना ॥ ८ उपसिको
हं तं विना ॥

अंवेसु धणेसु अंसंखतेसु दधि विण्णेयं भवति । तंवेसु संखतेसु य तक्कं विण्णेयं । पाणजोणीगते सोपरत्ते सोपहुते रसगतं विण्णेयं भवति । मूलजोणीगते संखयेसु जूसो विण्णेयो । अच्छेसु कंवलिक्को विण्णेयो । चापण्णेषु अंविळं ति विण्णेयं । तत्थं सव्वकोसगए सव्वकोसीधण्णगते सव्वसिंणगते सव्वसुद्धचूलागते सव्वचेट्ठिसिंहंडिगते सव्वसंपुडपेलापेलिकगते कंरंडगगते संकोसकगते पणसकथइआपसेव्वकगते सागलिकारसं धूया । तत्थ सव्ववालेयेसु थूणिकारसं धूया । सव्वअंतेसु सागरसं धूया । सुदितेसु पुप्फरसं धूया । पुण्णेषु फलरसं धूया । तत्थ सागगते एतेहिं जेव ५ पादुन्नावे गेतव्वं ॥ सव्वहेट्ठिमेहिं मूलगतं विण्णेयं । सव्वमूलजोणीपट्ठिरूग्गगते य पा(वा)लेयेसु थूणिकारसो विण्णेयो । तणूसु सागगते चेव सागरसो विण्णेयो ॥ सुदितेसु पुप्फगते य पुप्फरसो विण्णेयो । पुण्णेषु फलेसु फलगते चेव फलरसो विण्णेयो । इति फलजोणी यक्खाता भवति ।

तत्थ पसण्णा णिट्ठिता मधुरेको आसवो जगळं मधुरेसेरको अरिट्ठो अट्टकालिका आसवासो सुपा कुसुळुंडी जयकालिका चेति पाणगतं आधारयित्ता आधारयित्ता उवलद्वीहिं जघुत्ताहिं उवलद्वयं भवति । तत्थ पसण्णेषु पसण्णा विण्णेया । सेतेसु कुसुळुंडी णिट्ठिता जगळं वेति विण्णेया भवंति—तत्थ सारवंतेसु णिट्ठिता, मधुरेसु कुसुळुंडी, सहेसु जगळं विण्णेयं भवति । तत्थ मधुरेसु तंवेसु य आसवो विण्णेयो । तंवेसु कण्हसाधारणेषु कसायेसु य मधुरं विण्णेयं । इति एतेसिं एकतरं मज्जं णट्ठं ति धूया । एवं मूलजोणी यक्खातो भवति । पाणजोणी गता आहारजोणी गता चेति ।

तत्थ धातुगते णट्ठि आहारो ति धूया । तत्थ धातुजोणीगते उवकरणं आभरणं वा विण्णेयं । तत्थ उवकरणं तिविधं—पाणजोणीजं मूलजोणीजं धातुजोणियं चेति । तत्थ पाणजोणियं मुत्तिकं संखागवल्मयं दंतमयं सिंगमयं अट्टिक- 15 मयं घालमयं लोहमयं अट्टिकमयं सिंगमयं चम्ममयं वालमयं चेति भाजणगतं विण्णेयं । तत्थ अच्छादणाणि कोसेज्जकं आयिकं अविकपत्तुणा अजिणपट्टा अजिणप्पेवेणी चम्मसाडीओ वालवीरा चेति । इति पाणजोणीआणि उवकरण-भायण-भूसण-अच्छादणाणि आधारयित्ता आधारयित्ता सकाहिं उवलद्वीहिं उवलद्ववाणि भवंति । तत्थ मूलजोणीआभरणाणि कट्टमयं पुप्फमयं फलमयं पत्तमयं चेति । तत्थ मूलजोणीभायणाणि कट्टमयं पुप्फमयं फलमयं पत्तमयं चेति । तत्थ मूलजोणियो अँच्छादो कप्पासिकं ॥ वैक्कभंठं वेल्मयं ॥ चेति । एवमेव उवकरणं मूलजोणियं समणुगंतव्वं 20 भवति । इति मूलजोणियो अँच्छादो आभरणाणि भायणाणि उवकरणाणि य सव्वं समणुगंतव्वं भवति । तत्थ धातुजोणियं आभरणं सुवण्णमयं रूपमयं तंवमयं हारकूडमयं तपुमयं सीसकमयं काललोहमयं वट्टलोहमयं सेलमयं मत्तिकामयं । तत्थ धातुजोणिमयो अँच्छादो सुवण्णपट्टो सुवण्णखयितो अँच्छादो लोहजालिका वेति । एतेसिं एत्तो एगतरं आधारयित्ता आधारयित्ता जघुत्ताहिं उवलद्वीहिं उवलद्वयं भवति ।

तत्थ णिट्ठिहिं रसगतं णट्ठं धूया । सुक्खेसु सुक्खं णट्ठं धूया । चलेसु सज्जीयं णट्ठं धूया । दहेसु धातुगतं णट्ठं 25 धूया । पुण्णामधेजेसु पुरिसं णट्ठं धूया । धीणामधेजेसु इत्थिं णट्ठं धूया । णंपंसकेसु णंपंसकं नट्ठं धूया । तणूसु वत्थं नट्ठं धूया । सव्वतंतुगते चेव सामेसु आभरणं णट्ठं धूया । सुकेसु चउरस्सेसु चित्तेसु सारवंतेसु य काहावणे णट्ठं धूया । परिमंढेलेसु भायणं णट्ठं धूया । चलणीहारेसु जाणं णट्ठं धूया । पुण्णेषु आहारं णट्ठं धूया । तिस्सेसु सत्थं णट्ठं धूया । अंतेसु उवकरणं णट्ठं धूया । तंवेसु पीतकेसु य सुवण्णकं णट्ठं धूया । सुद्धीरमेणेसु विज्जासत्यगतं णट्ठं धूया । उत्तमेसु उत्तमं णट्ठं धूया । मच्चिंमेसु मच्चिंमं णट्ठं धूया । जहण्णेषु जहण्णं णट्ठं धूया । 30

तत्थ णट्ठेसु पुव्वाधारिते अचमंतरणिवेसणंसि कंसि देसंसि भायणंसि ? ति । तत्थ थूरंसि अरंजंसि उट्ठिआगतं या पइगतं वा धूया । उवथूलेसु कुरुगतं वा किज्जरगतं वा उरल्लिकगतं वा धूया । णातिथूलेसु णातिथूलेसु

१ परित्ते ६० त० विना ॥ २ उरेरको अरिट्ठो यि अरिट्ठकं ६० त० विना ॥ ३ मयं यज्जट्टिकं ६० त० ॥ ४ आच्छादो ६० त० विना ॥ ५ इत्थिं आहारं यि ५८ ६० त० एव वत्ते ॥ ६-७-८ आच्छादो ६० त० ॥ धण्णेषु वत्थं ६० त० ॥

- तेणैव हरितं ति वृषा । बाहिरम्भंतरेसु णीहारेसु बाहिं वसंतेण हरितं अम्भंतरेण ति वृषा । अम्भंतरबाहिरैसु आहार-
 णीहारेसु अण्णहिं वसंतेण ॥३॥ बाहिरैण हरियं ति वृषा । ॥४॥ बाहिरैसु अण्णहिं वसंतेण दिट्ठपुत्रेण हरितं ति वृषा ।
 बाहिरवाहिरैसु अण्णहिं वसंतेण अदिट्ठपुत्रेण हरितं ति वृषा । तत्थ णिवेसेण पुत्रांधारिते अम्भंतरेसु णिवेसणगतं,
 वृषा, अम्भंतरम्भंतरेसु उच्चरकगतं वृषा, बाहिरम्भंतरेसु पडिवेसपरगतं वृषा, बाहिरैसु वहिद्धा णिवेसणस्त ति वृषा,
 ७ बाहिरवाहिरैसु वहिद्धा णगरत्त वृषा । तत्थ वहिं वा णिवेसणस्त ति पुत्रांधारिते अम्भंतरे णगरे पुत्रांधारिते अम्भं-
 तरेसु णगरायां वृषा, अम्भंतरम्भंतरेसु पडिवेसपरगतं वृषा, अम्भंतरबाहिरैसु बाहिरियागतं वृषा, बाहिरैसु आरामगतं
 वृषा, बाहिरवाहिरैसु अरण्णगतं वृषा । पुरत्थिमेसु गत्तेसु पुरत्थिमायां दिसायां वृषा । दक्खिणपुरत्थिमेसु दक्खिणपुरत्थि-
 मायां दिसायां ति वृषा । दक्खिणेषु दक्खिणयां दिसायां ति वृषा । दक्खिणपच्छिमेसु दक्खिणपच्छिमायां दिसायां
 ति वृषा । पच्छिमेसु गत्तेसु पच्छिमायां दिसायां ति वृषा । उत्तरपच्छिमेसु गत्तेसु उत्तरपच्छिमायां दिसायां ति वृषा ।
 10 उत्तरेसु गत्तेसु उत्तरायां दिसायां ति वृषा । उत्तरपुरत्थिमेसु गत्तेसु उत्तरपुरत्थिमायां दिसायां ति वृषा । तत्थ उट्ठेसु
 मालगतं वा रक्कमतं वा पन्नतगतं वा आरुभितकं वा वृषा । अधोभागेसु कूवगतं वा वावीगतं वा तलगतं वा
 पयाणगतं वा ण्ढीगतं वा भूसीगतं वा भूसीपरगतं वा णिण्णे वा णिधितं वृषा ।

- तत्थ अञ्जीवपंगति अणेकाकारा भवति थाणेण वा णिधाणेण वा । सा तिविधा उवलद्धा-पाणजोणीगता
 मूलजोणीगता घातुजोणीगता वेति । तत्थ चलाभासेसु पाणजोणी विण्णैया सव्वपाणपडिरूवगते व । केस-मंसु-नह-
 15 लोमगते मूलजोणी विण्णैया सव्वमूलपडिरूवगते चैव । दढामासेसु सव्वघातुपडिरूवगते चैव घातुजोणी विण्णैया ।
 सा दुविधा विण्णैया-संपत्ता असंपत्ता चैव । तत्थ संपत्ते संपत्ता विण्णैया । असंपत्ते असंपत्ता । सा पुणरवि दुविधा
 विण्णैया-अग्गेया अणग्गेय ति । तत्थ अग्गेयेसु अग्गेया विण्णैया । [अणग्गेयेसु अणग्गेया विण्णैया ।] सा
 पुणरवि दुविधा विण्णैया-आहारे उवकरणे चैव । तत्थ आहारेसु आहारो विण्णैयो । सव्वभोगणपडिरूवगते चैव
 णीहारेसु उवकरणे विण्णैयं सव्वउवकरणगतं चैव । तत्थ पाणजोणीय आहारे दुद्धं दधिं तक्कं णवणीतं कूचियं आमधितं
 20 गुल्लदधिं ॥३॥ रंसालादधिं ॥४॥ मंसुं परमण्णं दधितायो तक्कोदणो अतिरूको मंसं रूधिरं वसा वेति । अवसेसाणि
 पुंयुद्विहाणि असंपत्ताणि, दुद्धं दधिं वेति असंपत्ताणि । तत्थ णिडेसु पाणीयं, णिद्धसाधारणेषु परमण्णं, अणिद्धेसु
 दधितायो तक्कोदणो वा विण्णैयो । अलुक्खेसु अतिरूको मंसं ति विण्णैयं । लुक्खेसु वहुं विण्णैयं एवमादी ।
 इति पाणजोणीगते आहारे विण्णैयो भवति ।

- तत्थ मूलजोणीगते आहारे साली वीही कोइया कंगू रालका वरका जब-गोधूमा मासा मुग्गा अलसंदका
 25 चण्का णिप्फाया कुल्ल्या चणविकाओ मसूर तिला अतसीओ हुसुंभा सामाका वेति । तत्थ आहारेसु अंतेसु चण्ण-
 गतमेण णट्टं वृषा । जघुत्ताहिं पुत्रोपलद्धीहिं अणूसु संरत्तेसु मूलजोणीयं आहारं णट्टं वृषा । जघुत्ताहिं भोगणपडहे
 आहारोपलद्धीहिं तत्थ सेते साली वीही सेततिला हुसुंभा सेतसासया चैति विण्णैया । सामेसु अदसी विण्णैया । तथेसु
 कोइया गोधूमा तंघनिप्फाया तिला कुल्ल्या या रायसासना विण्णैया ।

- तत्थ सव्वजणगतं तिविधं-तणगतं गुम्मगतं यद्दिगतं ति । तत्थ तणगतं साली वीही कोइया कंगू रालका सामाका
 30 वणफट्टं चैति विण्णैयाणि भवति । तत्थ गुम्मगते अदसी तिला सासया चैति विण्णैयाणि । तत्थ यद्दिगते मुग्गा मासा
 चण्का चणविकाओ अलसंद या निप्फाया कुल्ल्या वेति विण्णैया भवति । इति आहारगतं णट्टं ति वृषा ।
 तत्थ उवणिद्धेसु हुसुणगतं विण्णैयं मास-मुग्ग-अलसंदका-चणविकातं भवति । तत्थ कोइयो कंयलिओ
 मांफरमो भूणिंकारतो दुद्धं दधिं तक्कं अंयिद्धं ति विण्णैया उंपसेका । तत्थ सेतेसु मयुरेसु असंपत्तेसु य दुद्धं विण्णैया ।

१ इत्थिधान्तगतः पाठः ६० त० एव वर्तते ॥ २ 'वमाति ६० त० विना ॥ ३ इत्थिधान्तगतः पाठः ६० त० एव वर्तते ॥
 ४ पुण्णदिट्ठा ६० त० ॥ ५ काल ६० त० ॥ ६ रात्कतो ६० त० ॥ ७ का दुद्धं ६० त० विना ॥ ८ उपतितो
 ६० त० विना ॥

[अट्टचण्णासङ्गो चिंतितज्ज्ञाओ]

णमो भगवतो जसवतो महापुरिसस्स वद्धमाणस्स । अधापुब्बं रत्तु भो ! महापुरिसदिण्णाए अंगविजाए चिंति-
त्तं णामाज्झातो । तं खलु भो ! तमणुवक्खायिस्सामि । तं जघा-तत्थ चिंतितमचिंतितं ति पुब्बमाधारयित्ठवं भवति ।
तत्थ परित्ता-अणंतप्पमाणोपदेसा अणंतमपारगमसंजुत्तं चिंतितमुदाहरिस्सामि । तत्थ अत्थंतरामासे १ दंढामासे २-
णिद्धामासे सुद्धामासे पुण्णामवेज्जामासे सव्वआहारगते एक्कगणयण-माणसे सुप्पणिहित्तिदिय-अवत्थिततसरीरमणोवया-5
रगते चेव चिंतितं ति वूया । तत्थ वज्झामासे कण्हामासे क्खिलिद्धामासे णणुसक्कामासे सव्वणीहारगते अणेक्कगणयण-
माणसे उच्चावय-चल-इंगितागार-अणवत्थिततसरीरमणोपयारे ण चिंतितं ति वूया ।

तत्थ दुविधा चिंता पक्कति संगहतो ति विधा-जीवचिंता अजीवचिंता तदुभयर्थित चि । जीवचिंता दुविधा-
संसारसमावण्णजीवचिंता य असंसारसमावण्णजीवचिंता य । तत्थ सव्वजीवगते सव्वजीवआमासगते जीवणाम-
सद्-रूपपादुच्चावे चलामासेसु य जीवं चिंतितं वूया । तत्थ चिंतिते पुब्बधारिते सव्वअजीवगते अजीवआमासेसु 10
अजीवणामसद्-रूपपादुच्चावेसु अजीवं चिंतितं वूया । एतेसु चेव वामिस्सेसु आमास-सद्पादुच्चावेसु जीवा-अजीव-
समायुत्तं चिंतितं वूया ।

तत्थ जीवचिंतायं जीवचिंतं दुविधमाधारये-संसारसमावण्णजीवचिंता चेव असंसारसमावण्णजीवचिंता चेव ।
तत्थ इत्थमेसु उम्मज्जितेसु सव्वबंध-भोक्खेसु सव्वनिगमेसु सव्वमुय(त्त-)-सिद्ध-अंतगड-तिण्ण-मुद्धपादुच्चावेसु चेव असं-
सारसमावण्णं जीवं चिंतितं ति वूया । तत्थ सव्वआहारेसु सव्वबंधेसु सव्वसंजोगेसु सव्वकामभोगेसु सव्वकामभोग- 15
सद्पादुच्चावेसु जायणविबुद्धि-पडिभोगकम्म-चेट्ट-आवाह-विवाह-वोलेपणयण-तिथि-उत्सय-समार्य-जण्णएवमादियलोइ-
यसद्-रूपपादुच्चावेसु संसारसमावण्णं जीवं चिंतितं ति वूया । तत्थ संसारसमावण्णजीवचिंतं चउच्चियमाधारयित्ठवं
भवति-दिव्वं माणुसं तिरिक्खजोणिगतं णेरइयसंसारसमावण्णजीवं चिंतितं चेति ।

तत्थ सव्वेसु उट्ठुंभागेसु एवं याकरणे बंधिते संयुते अब्भुत्थिते उल्लोगिते पादुकोपाहणानुंचणे छत्त-पडागा-
वासण-कडग-लोमहत्थ-वीयणि-चामरपाहाणगते २० सव्वदेवगते सव्वदेवायतणगते सेसाय गहणे उत्सय-समाय-
अब्भुत्थ-उट्टु-पव-देवपादुच्चावे देवणामकम्मोपचारसद्-रूपपादुच्चावे चेव देवं चिंतितं वूया । तत्थ सव्वसउगगते
सुवण्णं चिंतितं वूया सुवण्णित्थि वा । धीणामेसु उट्ठुंभागेसु य घणगते धवहारगते य वेस्समणं चिंतितं वूया । इत्थेसु
वेणुं चिंतितं वूया । सव्वजोषपटिरुवगते य गो-महिस्स-अय-एलएसु रुहेसु सिवं चिंतितं वूया । सउणगते वालेयेसु
कुमारोयकरणे चेव तस्सद्-रूपपादुच्चावे चेव रंढं चिंतितं वूया । तरुणकच्छाएक्कए असिपटिरुवे य विसाहं
चिंतितं ति वूया । तत्थ पुण्णामेसु देवेसु बंधा चलदेवो वामुदेवो पत्तुण्णो वेस्समणो रंढो विसाहो पट्टतो णागो सुवण्णो 25
एवमादीया उवल्लद्धवा भवंति । धीणामेसु णदी अलगा अज्जा अइराणी माउया सउणी एक्कणंसा सिरी बुद्धी मेधो
किन्ती सरस्सती एवमादीयाओ उवल्लद्धवाओ भवंति । तत्थ उण्हेसु अग्गि चिंतितं वूया अग्गिघरं वा । सिद्धेसु
१ णागं णागघरं वा, धीणामेसु णिद्धेसु २ णागि चिंतितं वूया । दारणेसु रक्खसं, थीणामेसु दारणेसु रक्खमि चिंतितं
वूया । विगतभयं कंदप्प-अय-इस्सेसु [अमुरं, धीणामेसु] अमुरकण्णा चिंतितं वूया । मत्तगंधवगते तंतीमरगते
तलतालपोसेसु य गंधवं चिंतितं ति वूया, धीणामेसु गंधव्वी १ वूया २ । मधुरघोसेसु पक्खिसु किंपुरिमं वूया, धीणा- 30
मेसु किंपुरिमकण्णं वूया । सुयीसु पुण्णामेसु य जक्खो, धीणामेसु य [जक्खी वूया ।] मणोयगामि-

१ १-१ एताथिहान्तर्गतः पाठः ६० त० नास्ति ॥ २ ०व्ययुतसिद्धं ६० त० विना ॥ ३ ०कममग्गइमोगपादुं ६० त० ॥
४ ०यणजण्ण ६० त० विना ॥ ५ इम्विद्वान्तर्गतः पाठः ६० त० एव धत्ते ॥ ६ रत्ता इहं ६० त० । अज्जा रत्तं
७ १ पु० वि० ॥ ७ मिच्छा ६० त० ॥ ८-९ १ २ एताथिहान्तर्गतः पाठः ६० त० नास्ति ॥

घडभायणगतं वूया । कसेसु खडुभायणगतं [वूया] । पुधूसु पेलिक्तागतं वूया । आसनेसु पेलिक्तागतं वा कंङ्गगतं वा वूया । चतुरस्सेसु सयणा-ऽऽसणगतं वूया । उद्धंभागेसु मालगतं वूया । अक्खिसु वातपाणगतं वूया चम्मकोसगतं वा वूया । णिडाले कुङ्कगतं वूया । कण्णखिहेसु बिलगतं वूया । णासायं णालीगतं वूया । गीवाय थंभगतं वूया । भसुहासु अंतरियागतं वूया । गंडेसु पस्संतरियागतं वूया । थणंतरेसु कोट्टागारगतं वूया । उदरे भत्तचरगतं वूया । हियए ५ वासचरगतं वूया । तंवेसु अरस्सगतं वूया । पसण्णेसु पडिकम्मचरगतं वूया । गहणेयगहणेसु असोयवणियागतं वूया । 'पोरिसे आनुपधगतं पणालीगतं वा वूया । णामीयं उदकचारगतं वूया । अंवाणे वच्चाडकगतं वूया । उवहुतेसु अरि-
 ङ्गहणगतं वूया । सामेसु चित्तगिहगतं [वूया] । सुक्खेसु सिरिचरगतं वूया । कण्हेसु अग्गिहोत्तगतं वूया । णिद्धेसु ण्हाणचरगतं वूया । उत्तमेसु पुस्सचरगतं वूया । ६ उद्धंभेसु दासिचरगतं वूया । ७ इति वेसणगतं णट्ठं ति वूया ।

तथ णगरे पुव्वाधारिते मत्थए अंतेपुरगतं वूया । णिडाले अंतेपुरगतं वूया । णासायं मुंभंतरे वा तिए वूया ।

10 पोरिसे सिंघाडगगतं वूया । उरे पादतल-करतलेसु वा चउक्कगतं वूया । दीहेसु रायपधगतं वूया । जुत्तप्पमाणदीहेसु महारच्छागतं वूया । किंचिदीहेसु उस्साहियागतं वूया । उद्धंभागेसु पासादगतं वा गोपुरगतं वा अट्टालगगतं वा पकंठागतं वा वूया । तथ अच्चंतरेसु पासादगतं वूया । मुदितेसु तोरणगतं वूया । संखतेसु धणणगतं वूया । णिग्ग-
 मातिगमेसु चारगतं वूया । दढेसु पव्वतगतं वूया । उवहुतेसु वासुरुलगतं वूया । मतेसु थूभगतं वा एल्लयगतं वा वूया, मुदितसाधारथूभगतं वा वूया । दीहेसु पणालीगतं वूया । अधोपभागेसु पवातगतं वा वप्पगतं वा तलाकगतं
 15 वा द्दफलिहागतं वा णदीगतं वा वूया । तथ दीहेसु णिण्णेसु णदीगतं वा फलिहागतं वा वूया । णिद्धेसु णदीगतं वूया । संखतेसु फलिहागतं वूया । चतुरस्सेसु धाहिरगतं वूया । चंदाणतेसु तलागगतं वूया । उस्सितेसु अट्टालगतं वूया । दीहेसु परिकखेवेसु मंडलेसु य पाकारगतं वूया । थलेसु वयगतं वूया । णिण्णेसु परिखागतं वूया ।

तथ यस्सगतो णगरस्स चि पुव्वाधारिते उद्धंभागेसु धयगतं वा < तोरणगतं वा > देवागारगतं वा उरुखगतं वा पव्वतगतं वा मालगतं वा थंभगतं वा एल्लगतं वा पालीगतं वा वूया । तथ मुदितेसु तोरणगतं वूया । उत्तमेसु

20 देवागारगतं वूया । मूलजोणीगतेसु रुक्खगतं वूया । वट्टेसु तलागगतं वूया । तणूसु साधारणेसु चउक्केसु य वप्पगतं वूया । उपगहणेसु आरामगतं वूया । आगासेसु आगासणिधितं ति वूया । मतेसु उवहुतेसु य सुसाणे णिधितं वूया । तुच्छेसु सुक्करुक्खगतं वा सुक्कतलागगतं वा वूया । वायव्वेसु वच्चभूमियं णिधितं ति वूया, मंडलभूमियं वा वूया, जतो वींओ वायति तम्मि देसे निधितं ति वूया । आपुण्येसु पवा-उदुपाणं वा णदी-तलागं वा वूया । अग्गेयेसु द्दुव्वयं वा १ उट्टियपट्टगं वा वूया, जतो वा आदिचो तम्मि देसे णिधितं ति वूया । जण्णेयेसु जण्णवाडगतं वा देवाय-
 25 तणगतं वा वूया, जतो वीं तुसरिदो (गुरियसदो) तम्मि देसे णिधितं ति वूया । तिक्खेसु संगामभूमियं वा णिधितं ति वूया, जतो वा वाधितो तम्मि देसे णिधितं ति वूया । सदेयेसु ३ मुत्तप्पवत्तिकं णट्ठं ति वूया । दंसणीयेसु विट्ठचेहं ति वूया ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाए अंगविज्ञापे णट्टकोसयो णामऽज्ञातो

सत्तावण्णो वक्खातो भवति ॥ ५७ ॥ छ ॥

१ पारिसेज्जापुपयगतं हं तं ॥ २ आवणे वच्चाडकं हं तं । अवाणे धाघाडकं सं ३ पु० वि० ॥ ३ सु स्तनु-
 स्तचरं हं तं ॥ ४ हस्तचिह्नान्तर्गतं पाठः हं तं एव वतंते ॥ ५ भुमुत्तरे हं तं ॥ ६ सु सुवण्णं हं तं ॥
 ७ < १ > एतच्चिह्नान्तर्गतं वदं हं तं नास्ति ॥ ८ तुपुं हं तं । ९ सुक्कपल्लगतं हं तं विना ॥ १० वा जो धो हं तं
 विना ॥ ११ उट्टियपट्टगतं वा हं तं विना ॥ १२ वा पुरिसदो हं तं विना ॥ १३ सत्तं हं तं विना ॥

चितियं ति वूया । दक्खिण्णेषु पुण्णामेषु पुरिससमण्णग्रं पुरिसमेव चितितं ति वूया । पुरिसणामा पुरिसणामेषु पवत्तेसु उद्धंभागेसु पितरं चितितं वूया । पुरिसणामा पुरिसणामेषु पवत्तेसु समभागेसु भायरं वूया । पुरिसणामा पुरिसणामेषु पवत्तेसु अधोभागेसु पुत्तं वूया । पुरिसणामा धीणामेषु पवत्तेसु उद्धंभागेसु मातरं वूया । पुरिसणामा धीणामेषु पवत्तेसु समभागेसु भगिणिं वूया । पुरिसणामा धीणामेषु पवत्तेसु उद्धंभागेसु दुहितरं वूया । धीणामा धीणामेषु पवत्तेसु उद्धंभागेसु धीमातरं वूया । धीसमभागेसु थिया भगिणिं चितितं वूया । धीणामा धीणामेषु पवत्तेसु अधोभागेसु 5 थिया दुहितरं वूया । धीणामा पुण्णामेषु पवत्तेसु अधोभागेसु जायामातरं वूया । धीणामेषु पुण्णामेषु पवत्तेसु समभागेसु भगिणिपतिं वूया । धीणामा पुण्णामेषु पवत्तेसु < अधोभागेसु > उद्धंगीयाय ससुरं वूया । धीसंसिद्धेसु पुणो पुणो संलि वूया । धीसंसिद्धेसु पुण्णामेषु संलि वूया । अच्चंमंतरेसु अच्चंमंतरं वंधयं वूया । वाहिरच्चंमंतरेसु मितं वूया । वाहिर-वाहिरेशु जणं वूया । तत्थ मणुस्सजोणीयणविसेसेहिं धी-पुरिस-णुंसकादेसेहिं अच्च-पेक्षोवलद्धीहिं सठाण-वण्ण-वयप्पमाणेहिं सन्नमण्य-संबद्धरावेसणाहिं गुरुजोणि-तुल्लजोणी-पंचवरजोणीहिं उवलद्धीहिं वच्च-उच्चंमंतरपवियर्हिं 10 एव जघुत्ताहिं आमास-सद्-रूपपादुच्चापोलद्धीहिं य णट्ठकोसए उवदिट्ठंतेहिं उवलद्धिविचारविसेसेहिं माणुसजोणी समणुगंतव्या भवति । इति मणुस्सजोणी वक्खाता भवति ।

तत्थ तिरियामासे तिरियविट्ठोइते तिरियगते सच्चरतिरिक्खजोणीमंते उवकरणे तिरिक्खजोणीउवकरणे तिरिक्ख-जोणीसद्गते तिरिक्खजोणीणामोदीरणे तिरिक्खजोणीमए उवकरणे धी-पुरिससद्-रूपपादुच्चावे एवंविधे सद्-रूपपादु-च्चावे तिरिक्खजोणिं वूया । तत्थ तिरिक्खजोणि संगहेण दुविधा-तसगता थावरगता चेय । तत्थ तसोन्नद्धीय तस- 15 गता विण्णया । थावरोवलद्धीय थावरा विण्णया । सा वित्थरतो छव्विधा आधारयितव्या भवति । तं जथा-पस्सिग्गता १ चतुप्पदगता २ परिसप्पगता ३ उदकचरगता ४ कीड-पयंगक-किविद्धरगता चेय ५ एहिंदिययावरकायगता ६ चेति । तत्थ उद्धंगीयाय सिरोमुद्दामासे उद्धोइते उद्धंभागेसु सच्चसगुणगते सच्चसउणमते उवकरणे सच्चसउणोवकरणे सउणोप-करणे सउणसद्गते सउणणामवेज्जोदीरणेषु सउणणामवेज्जे धी-पुरिससद्-रूपोवकरणपादुच्चावे एवंविधे पेक्खितामासे सद्-रूपपादुच्चावेषु पक्खी विण्णया । ते दुविधा आधारयितव्या-थलयरा जलयरा चेति, अधवा जलजा थलजा 20 चेति । तत्थ आपुण्येषु मिण्णेषु य जलजा पक्खि विण्णया चितितं ति वूया । लुक्खेषु थलेसु थलजेसु य थलजा पक्खी चितिय ति वूया । तत्थ सेतेसु हंसा सेडिका य विण्णया । पंण्डूसु चक्का-चक्काकयीणसु य विण्णया । चितेसु आँडा देट्टिवाल्लो णडूसुका णडूसुत्तका फारंढवा य विण्णया । फालेसु फाकमज्जुका फातंवा णडूसुका विण्णया । आक्खेसु उक्कोसा कौंचा गीवा रोहिणिका समुदकाक ति विण्णया । ह्त्तु फंससेसु वरु-हंस-चक्काका विण्णया । २३ अवसेसा जलजा सगुणे पडिहूयआहारओ य विण्णया । मंसरुधिरभोयीसु मंसरुधिरभोयी चितित ति । मुद्धं चूनेसु 25 फातंवा रोहिणिका थलाक ति विण्णया । धीणामेषु सेडिका रोहिणिका णडूसुका आहाओ टिट्ठिमीओ ति विण्णया । तत्थ फायरंतेसु कुरए पारिप्पया उक्कोसा रोहिणिका वेति विण्णया । मच्चिमकायेसु हंसा चक्काका विण्णया । मच्चिमगांतरफायेसु आहा सेडिका णडूसुका आहा फारंढवा चेति विण्णया । पंचरकायेसु देट्टिवाल्लो णडूसुका णडूसुत्तका एवमादयो विण्णया । अणुलोम-पडिलोमेसु गत्तेसु उद्धंभागेसु अधोभागेसु य उद्धंरायिसु उद्धंरायी विण्णया । सेतेसु सेता, एवमादीहिं वण्णेहिं सुवण्णा विण्णया । तत्थ अक्खतेसु सच्चेषु अतिमासेसु वा आसीविसा विण्णया । 30 तिण्णेषु तिण्णविसा विण्णया । तिण्णेषु पचायचितेसु मिडुसायारणेषु मंदविसा विण्णया । थापण्णेषु अविवा चितेसि ति वूया । ते दुविधा-मंसरुधिरभोजी अमंसरुधिरभोजी चेय । इति जलजा पस्सिग्गो जलचर ति विण्णया ।

१ °सु अहोमां हं० ह० ॥ २ धीनामयरं वूं हं० ह० ॥ ३ °द्धीहिं ययणं हं० ह० ॥ ४ °णीगते णि० ॥ ५ पंण्डुसु पं० ५० ॥ पंण्डुसु णि० ॥ ६ °सु चक्काकयी पतिनेसु य हं० ह० णिना ॥ ७ अट्ठा हं० ह० णिना ॥ ८ °ट्टा देट्टियां हं० ह० ॥ ९ हल्लविक्खित्तं: पाट्ट हं० ह० एर वतंते ॥ १० °सु देट्टियां हं० ह० णिना ॥ ११ अतिसामेषु हं० ह० ॥ १२ तिण्णेषु पं० हं० ह० ॥ भंग० २९

- रामेसु देवं वेमाणितं चितितं ब्रूया । धीणामासु अचरुत्सोऽजो, मूलजोगीगतेसु अजो अजोपगते वेति अजाधिउत्वं चितितं ब्रूया, धीणामेसु देवीसु बुक्खाधिउत्वा चितितं ति ब्रूया । धातुजोगीणए पव्यतदेवतं चितितं ति ब्रूया, धीणामेसु गिरिकुमारं ब्रूया । पिडेसु परिक्लेबेसु य समुदं वा समुदकुमारं वा चितितं ब्रूया, धीणामेसु समुदकुमारं ब्रूया । महापकासेसु पुधुसु परिक्लेबेसु य दीवकुमारं चितितं ब्रूया, धीणामेसु दीवकुमारं चितितं ब्रूया । चतुष्पदगते धग्व-
 5 सीद्द-हृत्थि-यसभपडिमाधिउत्वं चितितं ब्रूया । दीहेसु उवण्णिडेसु य पाणं चितितं ब्रूया । मुद्वणि वंभं चितितं । उद्व-
 मागेसु धणगते य वेसमणो । सभभेसु चंदा-उज्जिदिधा गह-णक्खत्त-तारागणे चितिते ब्रूया । थैलेसु मास्तं चितियं ब्रूया । धीणामेसु यातकण्णाओ चितिताओ धूया । मतेसु जमं ब्रूया । आपुणेयेसु उद्वंभागेसु सुक्खण्णपडिरुवगते य वरुणं चितितं ब्रूया । सोम्भेसु सन्नसोम्भगते य सन्नसोम्भपादुब्भावेसु चैव सोमं चितितं ब्रूया ।
 इस्सेरेसु इदं ब्रूया । पुधुसु पुयधिं ब्रूया । विवेक्खित्तेसु दिसाकुमारीओ ब्रूया, दिसाओ वा धूया । इहेसु सिरं चितितं
 10 धूया । बुद्धिरमणेसु मेधं बुद्धिं सत्थंधिबुत्वाओ चितिताओ धूया । विमुत्तेसु णिप्परिगाहेसु य मोक्कपं विज्ञासत्थाहिबुच्छाओ चितिताओ धूया । अन्नंतरेसु इल्लदेवताओ धूया । ददेसु वत्थुदेवताणि चितियाणि धूया । दुग्गंधेसु वध्ददेवताणि धूया ।
 मतेसु सुसाणदेवताणि धूया । पच्छिमेसु पितुदेवताणि धूया । माणुसदिव्वसाधारणेसु विज्ञाधरे विज्ञासिद्धे वा चारणे चितिते धूया । धीणामेसु दिव्वसाधारणेसु माणुसेसु विज्ञाधरीओ चितिताओ धूया । बुद्धिरमणेसु दिव्वसाधारणेसु सव्यविज्ञादेवताओ धूया । धीणामेसु विज्ञादेवताओ धूया । पुण्णामेसु देवविज्ञाहिबुत्थे चितिते धूया । दिव्वेसु
 15 सुरेसु य महारिसयो धूया । एवमादीदेवताहिं जघुच्चाहिं देवताज्जाये उवलद्धीहिं देवताणामेहिं देवसंठाणेहिं देवआभरण-पहरण-कम्मोनयारपादुब्भावेहिं आमास-सह-रूपपादुब्भावेहिं जधा देवताज्जाये उवदिदं तथा णात्तव्यं भवति । इति देवतागता चिंता धक्खाता भवति ।

- तत्थ उल्लुक्कामासे उल्लुक्कविलोइते उल्लुक्कविरते उल्लुक्कभावगते सन्नसोम्भपादुब्भावेसु णाम-सह-रूप-उवकरणपादुब्भावे य मणुसजोगीगतं चितितं ब्रूया । तत्थ मणुस्सेसु पुब्बाधारितेसु मणुस्सेसु तिविधमाधारये-धिओ पुरिसे णपुंसके ति । तत्थ
 20 धीणामेसु धिओ चितियाओ चि ब्रूया । पुण्णामेसु पुरिसे चितिते धूया । णपुंसकेसु णपुंसके चितिते धूया । तत्थ णपुंसके पुब्बाधारिते धीणामेसु इस्सापंडका विण्णेया । पुण्णामेसु आसेका विण्णेया । णपुंसकेसु अचंत्तोपहता आदिपंडका विण्णेया । वामदक्खिणेसु पक्खापक्खिणे विण्णेया । तुच्छेसु अणुप्पवी विण्णेया चितिता भवति । इति णपुंसकजोगी यक्खाता भवति । तत्थ धी-पुरिस-णपुंसकोपलद्धीयं उवलद्धायं वंभणो रत्तिओ वेस्सो सुरो ति । तत्थ सिरो-मुद्दामासे वंभणो, धाहूसु रत्तिओ, पट्टोदरे वेस्सो, पाद-जंभेसु सुरो उवलद्धव्या भवति । तत्थ वये पुब्बाधारिते
 25 पाद-जंभे वालो, पट्टोदरे तरुणो, धाहूसु अंतरसे य मज्झिमवयो, सिरोमुद्दामासे महच्चरयो चितिते ति महच्चर-मज्झिमवय-वालेयसाधारणेपलद्धी वा वया उवलद्धव्या भवति । तत्थ वण्णे पुब्बाधारिते अवदातेसु अवदातं धी-पुरिस-णपुंसकं धूया, सामेसु स्सामं धूया, कण्हेसु कण्ठं धूया । अजो पेस्सो ति पुब्बमाधारिते तत्थ उद्वं णामीयं अज्जण्णायं चितितं ति धूया । अयो णामीयं उद्वं जाणुणं अंब्यचं पेस्सं धूया । पाद-जंभेसु पेस्समेन धूया । पादेसु अथत्थ पेस्स-पेस्सं दासं चितितं धूया । तत्थ अत्रे पाणे पुब्बाधारिते पुणरवि ८ गुरुजोगी ९ तुहजोगी पधंवरजोगि चि तिविध-
 30 माधारयितव्यं भवति । तत्थ उरट्ठा गीवाय अयो मुमकाणं गुरुजोगि, अतो उद्वं गुरुो गुरु चितितो ति धूया । अथत्था गीराय उद्वं कडीयं तुहजोगीयं धूया । अथत्था कडीयं पधंवरजोगीयं अज्जण्णायं चितितं ति धूया । तत्थ मण्णय-संपदे पुब्बाधारिते यामेसु पुण्णामेसु र्थसमण्णयं पुरिसं चितितं ति धूया । धीणामेसु पुरिससमण्णयं इत्थि

१ इत्यधिकान्तगतः पाठः ६० त० एव वर्तते ॥ २ मारिं चितितं धू ६० त० विना ॥ ३ इत्यधिकान्तगतः पाठः ६० त० एव वर्तते ॥ ४ सोमेसु ६० त० ॥ ५ दित्तेसु हरेसु ६० त० विना ॥ ६ मणुससगते ६० त० ॥ ७ उल्लद्धव्यायं ६० त० विना ॥ ८ ध्या इत्ये चि । तत्थ ६० त० ॥ ९ अचरुत् ६० त० ॥ १० ८ ९ एतदधिकान्तगतः पाठः ६० त० नास्ति ॥ ११ ध्या गीपाप कडी ६० त० ॥

चिंतियं ति वूया । दक्खिण्णेषु पुण्णामेषु पुरिससमण्णयं पुरिसमेव चिंतितं ति वूया । पुरिसणामा पुरिसणामेषु पवत्तेसु उद्वंभागेसु पितरं चिंतितं वूया । पुरिसणामा पुरिसणामेषु पवत्तेसु समभागेसु भायरं वूया । पुरिसणामा पुरिसणामेषु पवत्तेसु अधोभागेसु पुत्तं वूया । पुरिसणामा थीणामेषु पवत्तेसु उद्वंभागेसु मातरं वूया । पुरिसणामा थीणामेषु पवत्तेसु समभागेसु भगिणिं वूया । पुरिसणामा थीणामेषु पवत्तेसु उद्वंभागेसु दुहितरं वूया । थीणामा थीणामेषु पवत्तेसु उद्वंभागेसु थीमातरं वूया । थीसमभागेसु थिया भगिणिं चिंतितं वूया । थीणामा थीणामेषु पवत्तेसु अधोभागेसु ५ थिया दुहितरं वूया । थीणामा पुण्णामेषु पवत्तेसु अधोभागेसु जायामातरं वूया । थीणामेषु पुण्णामेषु पवत्तेसु समभागेसु भगिणिपतिं वूया । थीणामा पुण्णामेषु पवत्तेसु < अधोभागेसु > उद्वंगीयाय समुरं वूया । थीसंसिद्धेसु पुगो पुणो संलि वूया । थीसंसिद्धेसु पुण्णामेषु संलि वूया । अचंभंतरेसु अचंभंतरं वंधयं वूया । वाहिरुचंभंतरेसु मित्तं वूया । वाहिर-वाहिरेसु जणं वूया । तस्य मणुत्सजोणीवण्णविसेसेहिं थी-पुरिस-णपुंसकादेसेहिं अज-पेस्सोवळद्वीहिं संठाण-वण्ण-वयप्पमाणेहिं सम्मण्णय-संवद्धगवेसणाहिं गुरुजोणि-तुल्लजोणी-पधंवरजोणीहिं उवळद्वीहिं वज्झ-उचंभंतरपवियपहिं 10 एव जघुत्ताहिं आमास-सद्-रूवपादुच्चाओपळद्वीहिं य णट्टकोसए उवदिट्टंतेहिं उवळद्विविचारविसेसेहिं माणुत्सजोणी समणुगंतव्या भवति । इति मणुत्सजोणी वक्खावा भवति ।

तस्य तिरियामासे तिरियविलोद्वते तिरियगते सब्वतिरिक्खजोणीमंते उवकरणे तिरिक्खजोणिउवकरणे तिरिक्ख-जोणीसद्गतते तिरिक्खजोणीणामोदीरणे तिरिक्खजोणीमए उवकरणे थी-पुरिससद्-रूवपादुच्चाओ एवविधे सद्-रूवपादु-च्चाओ तिरिक्खजोणिं वूया । तस्य तिरिक्खजोणि संगहेण दुविधा-तसगता थावरगता चेव । तस्य तसोउळद्वीय तस- 15 गता विण्णेया । थायरोवळद्वीय थावरा विण्णेया । सा वित्थरतो छव्विधा आधारयितव्या भवति । तं जथा-पक्खिगता १ चतुप्पदगता २ परिसप्पगता ३ उदकचरगता ४ कीट-पयंगक-किविद्धरुगता चेव ५ एकिंदियथावरकायगता ६ वेति । तस्य उद्वंगीयाय सिरोमुद्दामासे उल्लोइते उद्वंभागेसु सत्थसगुणगते सत्थसउणमते उवकरणे सत्थसउणोवकरणे सउणोप-करणे सउणसद्गतते सउणणामचेज्जोदीरणेषु सउणणामचेज्जे थी-पुरिससद्-रूवोवकरणपादुच्चाओ एवविधे पेक्खितवामासे सद्-रूवपादुच्चाओपवत्तेसु पक्खी विण्णेया । ते दुविधा आधारयितव्या-थलयरा जलयरा चेति, अथरा जलजा थलजा 20 चेति । तस्य आपुण्येसु णिण्णेषु य जलजा पक्खि विण्णेया चिंतितं ति वूया । लुक्खेसु थलेसु थलजेसु य थलजा पक्खी चिंतियं ति वूया । तस्य सेतेसु हंसा सेडिका य विण्णेया । पंहुंमु चक्खया-चक्खयाकयीसु य विण्णेया । चित्तेसु आंहा टेट्टिवालओ णवूइका णदीमुत्तका फारंढया य विण्णेया । फालेसु फाकमज्जुका कावंथा णदीकुकुडीओ विण्णेया । आरणेषु उकोसा कौंचा गीवा रोहिणिका समुदकाक ति विण्णेया । हुंउ फोरुसेसु यर-रंस-चक्खयाका विण्णेया । 25 अवसेसा जलजा सगुणो पट्टिरुवआहारजो य विण्णेया । मंसरथिरमोयीसु मंसरथिरमोयी चिंतियं ति । मुदं चूलेसु 25 कावंथा रोहिणिका थलाक ति विण्णेया । थीगामेषु सेडिका रोहिणिका णदीकुकुडिका आडाओ टिट्टिमीओ ति विण्णेया । तस्य काययंतेसु कुररा पारिप्पया उकोसा रोहिणिका वेति विण्णेया । मज्झिमकायेसु हंसा चक्खयाका विण्णेया । मज्झिमागंतरकायेसु आटा सेडिका णदीकुकुडिकाओ फारंढया चेति विण्णेया । पंथरकायेसुं टेट्टिवालओ णवूइका णदीमुत्तका एवमादयो विण्णेया । अणुलोम-पट्टिओमेसु गतेसु उद्वंभागेसु अधोभागेसु य उद्वंरायिसु उद्वंरायी विण्णेया । सेतेसु सेता, एवमादीहिं थण्णेहिं सुण्णया विण्णेया । इत्य अक्खतेसु सत्थेसु थ्रित्तियामेसु या थासीविसा विण्णेया । 30 तिण्णेषु तिण्णविसा विण्णेया । तिण्णेषुपथावत्तितेसु मिदुसापारणेषु मंदविसा विण्णेया । थापण्णेषु अविसा थित्तेसे ति वूया । ते दुविधा-मंसरथिरमोजी अमंसरथिरमोजी चेव । इति जलजा पक्खिगते जलपर ति विण्णेया ।

१ °सु महोमां हं० त० ॥ २ थीनामयरं थूं हं० त० ॥ ३ °दीहिं वयणं हं० त० ॥ ४ °णीगते णि० ॥ ५ पंहुंमु
 ६ २ पु० । पंहुंरेसु णि० ॥ ६ °सु चक्खयाकी पंतेसु थ हं० त० णि० ॥ ७ अटा हं० त० णि० ॥ ८ °टा टैट्टियां हं० त० ॥
 ९ इत्थिविद्वंभंतरेः पाठः हं० त० एव वंते ॥ १० °सु देहियां हं० त० णि० ॥ ११ मत्तिसामेसु हं० त० ॥ १२ तिण्णेषु पं हं० त० ॥
 भा० २९

तत्थ थलजा पक्खी तिविधा आधारयित्वा—गम्मा रण्णा गम्मारण्णा चेति । तत्थ अचमंतरामासे गामेसु चैव पादुच्चावेसु गम्मा विण्णेया । वाहिरामासेसु आरण्णेषु य पादुच्चावेसु आरण्णा विण्णेया । वाहिरचमंतरेसु गम्मारण्ण-पादुच्चावेसु चैव गम्मारण्णा पक्खी चित्तिय चि विण्णेया । धीणामेसु धीणामा, पुण्णामेसु पुण्णामा, णणुंसकेसु णणुंसका विण्णेया । सेवेसु सेता, रत्तेसु रत्ता, पीतेसु पीता, णीलेसु णीला, कण्हेसु कण्हा, आरुणेसु आरुणा, पंडुसु पंडू, कविलेसु कविला, फरुसेसु फरुसा, चित्तेसु चित्ता, जघाप(व)ण्णपडिरुवतो वण्णे आधारिते पक्खिणो चितित चि वूया । कायवंतेसु कायवंता मयूरा कंका छिण्णालिगाजो सुवण्णाओ चेति, एवमादीका कायवंतेसु चितित चि वूया । तत्थ मञ्जिमका-येसु गद्धा वीरद्धा सेणा उल्लका चेति एवमादयो विण्णेया । मञ्जिमाणंतरकायेसु सालका कपोता वायसा सुका कोकिला तित्तिरा चैव विण्णेया । पच्चरकायेसु वातिका तेल्लपातिका सगुणीका परसडणिका चैम्मड्डिका एवमादी विण्णेया । एवं चतुव्विधकायो पडिरुवतो आमामेहिं य विण्णेया । उंसरगते पाण्णतेसु य < संवसडणा > विण्णेया । चित्तेसु तित्तिरा 10 चित्तकपोतका वण्डुकुडा वड्डकाओ य विण्णेया । चोसवंतेसु चोसवंता विण्णेया । दारुणेसु मंसरुधिरभोयी विण्णेया । अणूसु धण्णभोयी विण्णेया । अघोसवंतेसु अघोसवंता विण्णेया । मधुरस्तेसु महुरस्ता । कडुकस्तेसु कडुकस्ता विण्णेया । तँथा अच्चचघोसेसु अच्चचघोसा चितितं ति विण्णेया । एवमादीहिं संटाण-वण्ण-धी-पुरिस-णणुंसकोपलद्धीहिं आहार-घोस-पडिरुव-सद्पादुच्चावेहिं जलया थलया य पक्खिणो आधारयित्ता आधारयित्ता जघुत्ताहिं उवलद्धीहिं आमास-सद्-पडिरुवपादुच्चावेहिं उवलद्धव्वा भवंति । इति पक्खिणतो जलय-थलयपक्खिसमायुत्ता दुविधा चित्ता 15 वत्साता जीवचित्ता भवतीति ।

तत्थ चतुप्पदे चउरस्सेसु य चउप्पदमए लवकरणे चतुप्पदोत्तरणे चतुप्पदसद्गते चतुप्पदणामोदीरणे चतुप्पद-णामधेजे धी-पुरिसउत्तरणते एवंविधपक्खित्तामासे सद्-रस-रूपपादुच्चावे चतुप्पदं चितितं ति वूया । ते दुविधा आधारये—पजा जलचरा चैव, अधवा थलचरा जलचरा चेति । तत्थ सब्बआपुणेसु सब्बजलेसु जलचरेसु य जलचरा विण्णेया । तं जघा—सुंसुमारा उदककच्छम चि मच्छगये विण्णेया भवंति । तत्थ पुणरवि चतुप्पदा आधारयित्वा 20 भवंति—गम्मा अरण्णा गम्मारण्णा चेति । तत्थ अचमंतरेसु सब्बगम्मा < गते चैव गम्मा > विण्णेया । वाहिरामासेसु सब्ब-आरण्णतपादुच्चावेसु चैव आरण्णा चतुप्पदा चितित चि वूया । अचमंतरेवाहिरेषु गम्मारण्णेषु तस्सद्-रूपपादुच्चावे य गम्मारण्णा विण्णेया । तत्थ गो-महिस-अयेलकोट्ट-रर-मुणका चैव एवमादी गम्मा विण्णेया । सीह-वग्घ-वरच्छ-उच्छ-मह-दीविक्क-भोज-चमरीओ रग्गा चेति विण्णेया, एवमादयो आरण्णा विण्णेया । तत्थ जे केयि आरण्णा भुत्ता गम्मा भवंति एते गम्मारण्णा भवंति । तत्थ हत्थी अस्सा वराहा वगा सियाला मुंगुसा णडला उंडुरां फालका पयला फातो- 25 दूका संता धरपुला चेति एवमादयो गम्मारण्णा विण्णेया । तत्थ चउप्पदा पुणरवि दुविधा आधारयित्वा भवंति—चउ-प्पदा चैव परिसप्पा चैव । तत्थ चउप्पदाए सब्बउदंभागेसु सब्बपरिसप्पचउप्पदगते चैव परिसप्पचउप्पदा विण्णेया । अजगरं असालिका गोया तोडुका सैरंता मुंगुसा णडला पयलाका अहिणुका धडोपला उंडुरा चेति ।

तत्थ पुणरवि तिविधा चतुप्पदा आधारयित्वा—थलचरा भुक्कचरा थिलसाइ चि । तत्थ परिपणु 30 < थलेसु > थलचरेसु य थलचरा चितित चि वूया । उदंभागेसु मूलजोणीगते चैव भुक्कचरा चतुप्पदा चितित चि वूया । सन्नट्टिरेसु अधोभागेसु य थिलसायी विण्णेया । तत्थ वुक्कचरा विराला उंडुरा रालका धरपुला अहिणुना तोडुका य पयलाका चैव एवमादयो चितिता विण्णेया भवंति । तत्थ थिलासया दुविधा—सेलथिलासया भूमिथिलासया

१ छिण्णालि ६० १० मि ॥ २ सुका फाका को ६० १० ॥ ३ चम्मट्टि पय ६० १० मि ॥ ४ उररु १० १ ३ ॥ ५ उररु १० ॥ ६ < > पडिरुवततो ६० १० मि ॥ ७ यदाका ६० १० ॥ ८ अहातचंतपो ६० १० ॥ ९ अघंत्तपो ६० १० ॥ १० गयत्त (मयल) चम ६० १० मि ॥ ११ कापयला काओट्टका रारंता पर ६० १० ॥ १२ ररंदा मुं ६० १० ॥ १३ उरुवरा ६० १० ॥ १४ उररुवरा ६० १० ॥ १५ धालका ६० १० ॥

चेव । तत्र दृष्टे अयोभागोसु सेलविलासया विण्णेया । धूलेसु भूमिविलासया विण्णेया । तत्र सेलविलासया दीहवग्घा
अच्छमहा तरच्छा सालिर्मां सेधका दीपिका विलाळ अजिणविलाळा सलभा गोधा उंदुरा अयकरा वेति विण्णेया
भवंति । तत्र भूमिविलासयेसु लोपका णउला गोधा अहिणूका तोडुका ताँडका चेति एवमादयो विण्णेया । माणुसतिरि-
क्खजोणीसाधारणेसु वाणरा णरसीहा अस्सपूतणा वेति विण्णेया । तत्र वायुसु चलेसु साहागते अणवदिथयसभावगते
य वाणरा विण्णेया । सारवंतेसु सूरेसु य णरसीहा । दाक्केसु तिणादेसु य अस्सपूतणा विण्णेया । असमूलकायवंतेसु 6
असालिका < अयकरा > इत्थिणो एवमादयो चितिता विण्णेया । मज्झिमकायेसु सीह-यग्घ-अच्छमह-तर-
च्छ-णीलमिग-नयगोक्कणा गो-माहिस-खरोट्टा य एवमादयो विण्णेया । मज्झिमाणंतर्कायेसु दीपिका-तरच्छ-थोच-यग-भग-
अयेलकमिति एवमादयो विण्णेया भवंति । पचवरकायेसु सुणग-सिगाळ-मज्जार-सस-मंगुस-णउलएवमादी चितिया
विण्णेया । अणूसु उंदुरा खालका तोडुका अहिणूका वेति एवमादयो विण्णेया । गो-माहिस-खरोट्ट-अस्सा इत्थि वेति
वाहणेसु विण्णेया । तणादेहि तणादा, इत्थं मंसं-रुधिरभोयिसु इत्थं मंसरुधिरभोयी विण्णेया । सेतेसु सेता, पीतेसु 10
पीता, रत्तेसु रत्ता, णीलेसु णीला, कण्हेसु कण्हा, पुंडेसु पुंडा, पंहेहि पंहा, आरण्णेहि आरण्णा, चित्तेहि चित्ता, फरु-
सेहि फरुसा, वण्णते आधारिते चितिता विण्णेया भवंति । पुण्णामेहि पुण्णामा, धीगामेहि धीगामा, णपुंसकेहि
णपुंसका, मिधुणचेरेहि मिधुणचरा, गगचरेहि गगचरा विण्णेया, एकचरेहि एकचरा चतुप्पदा पक्खी वा । एवमादी
पज्जएहि आधारयित्ता आधारयित्ता सव्वमेव समणुगंतव्वं भवति ।

तत्र परिसप्पजोणी विविहा-द्वयीकरा मंडलिणो रायिंमंता चेति संगहेण आधारयितव्वं भवतीति । तत्र तिरिच्छा- 15
णराइणो रत्तराइणो सेत-पीत-चित्त-सेवालका कण्हा अणज्जपुक्कवण्णगा पंचाणुरत्ता वेति वित्थारतो वण्णविसेसेहिं आधा-
रयितव्वा भवंति । तत्र आयतेसु वायव्वेसु य दव्वीकरा चितिता विण्णेया । मंडलेसु मंडलिणो विण्णेया । तिरियामासे
तिरियविलोगिते चेव तिरिच्छाणराइणो चितिता विण्णेया । अणुत्थेम-मडिलोमितेसु गत्तेसु उद्धंभागेसु य उद्धराइणो
विण्णेया । सेतादीका वण्णसमायोगे य सयण्णपडिहूवेसु परिसप्पाण वण्णो आधारिते विण्णेया चितिता भवंतीति ।
तत्र अकरयेसु सव्वेसु अतिमासेसु वा आसीविसा वूया । तिण्हेसु तिण्हविसा विण्णेया । तिण्हेसु पंचोयतियेसु मिदु- 20
साधारणेसु वातंदविसा वूया । पण्णेसु णिव्विसे वूया । ते दुविया आधारयितव्वा भवंति-थलजा जलजा चेति । तत्र
आपुण्येसु जलजा विण्णेया । तत्र कदमग-हिरिय-कच्छभक-आणावचरणिग-पदुमा-भिंगेगाग-यमारक-राजमहो-
रक-जलचर-सवलहाहिका कुकुडा देवपुत्तका समाणाहिं ति जलजेसु चोदित्ता । तत्र अंतलिक्खरपरिसप्पा चलेसु उद्धंभा-
गेसु विण्णेया भवंति 'वैलिका पगती । अवसेसा थलचरा । ते चतुप्पदा अपदा बहुपदा चेति पुणरवि आधारयितव्वं
भवति । तत्र चतुप्पदेसु चतुरस्सेसु चतुप्पदभदे उवकरणे चउप्पदोउकरणे चतुप्पदसोदीरणे चउप्पदामोदीरणे चतु- 25
प्पदणामयेजे धी-पुरिसउवकरणते चेव एवंविधे पेक्खिततामासे सद-रूपपादुच्चावे चतुप्पदपरिमणं चितिनं वूया,
अयकरं-तोडुका गोधा-सरंट-अहिणूका चेति तत्र यट्टपदेहि केस-मंसु-गहंसंमामासेसु चेव यट्टपदमह-पडिहूवपादु-
च्चावेसु चेव यट्टपदा विण्णेया, गोम्मि सैनपदि इंदगोविका धमणिका वेति एवमादिणो भवंति । अवसेसा दीहममा-
मासेसु विण्णेया भवंति । धीगामेसु धीगामा, पुण्णामेसु पुण्णामा, णपुंसकेसु णपुंसका । संटाण-वण्णगुविंसं आहार-
विधार-जोणिकादीकानि य जघुत्ताहिं वरलद्धीहिं आधारयित्ता परिमप्पा उरलद्धव्वा भवंति । इति परिमप्पजोणीगते 30
विंता ववराता भवति ।

६ भा सेधका ६० त० ॥ २ वाडका ६० त० ॥ ३ अस्सा वेंति ह ६० त० ॥ ४ इत्थिणोः कट्ट ६० त० एव
वर्तते ॥ ५ पण्हदि पण्ह, आ ६० त० ॥ ६ अरि(धि)मा ६० त० ॥ ७ सु वण्णवि ६० त० ॥ ८ पचोमयति ६०
त० ॥ ९ वापण्णं ६० त० ॥ १० भवंतीति ६० त० विना ॥ ११ अणाय ६० त० विना ॥ १२ परिमप्पागयमीरकताजम-
पराहावक ६० त० ॥ १३ इति वेति ६० त० विना ॥ १४ उतित्त ६० त० विना ॥ १५ कट्टाओक ६० त० ॥
१६ सामासामेसु ६० त० ॥ १७ उतापट्टे इंदगोविधर धरणिक्का ६० त० ॥

- तस्य आपुण्येषु जलचरेषु एवंरूपेषु चैव पडिरूप-सदपादुच्चावेषु चैव जलचरे चितिते वृथा । तस्य उदकचरा चतुर्विधा आधारयितव्या-दुपदा १ चत्पदा २ बहुपदा ३ अपदा दीहपदा(डा) ४ वेति । तस्य दुपदेसु दुपदसदपडिरूपे चैव दुपदं चितितं वृथा, इत्थिमच्छा मगमच्छा गोमच्छा ६ अंसमच्छा ७ परमच्छा ण्दीपुत्तका सञ्चरा चेति । तस्य चतुष्पदेसु चतुकेसु चतुष्पदसद-रूपपादुच्चावेषु चैव चतुष्पदा विण्णया, कच्छमा सुंसुमारा मंदुका उदकायो चेति ६ एवमादयो भवंति । तस्य केस-मंसु-ण्ड-लोमपरामासे बहुपदपडिरूपगते चैव बहुपदा विण्णया कुंमारीला-सकुचिकादयो भवंति । तस्य दीहामासे सञ्चदीहपदपडिरूपगते य दीहपदा(डा) विण्णया, चैम्मिरा घोदणुमच्छा वहरमच्छादयो भवंति, एवमादयो अपदा । तस्य शरुण्येसु गाहा विण्णया । सञ्चआहारगते चैव सञ्चआहारगते आहारोपका विण्णया । अधोभागतेसु कूदगता विण्णया । गिण्णेषु सर-पुक्करणिगता विण्णया । सण्णिरुद्वेसु तच्चागगता विण्णया । धीणामेसु दीहेसु गिण्णेषु य ण्दीगता < विण्णया > । महावकासेसु परंरंगमीरेसु परिकल्पेसु य समुद्रगता विण्णया । महाकायेसु तिमितिर्मिगिला 10 विण्णया । मञ्जिमकायेसु वालीणा सुंसुमारा कच्छभमगरा गदमकप्पमाणा चितित ति वृथा । मञ्जिमगांतरकायेसु रोहित-विचक-णल-मीणं-चम्मिराजो विण्णया । पचवरकायेसु कद्दाईक-सीकुंडी-उप्पातिका-इंचका-कुडुकाळक-सित्यमच्छका वेति चितित ति वृथा । सेतेसु सेता, रत्तेसु रत्ता सवण्णपडिरूपपादुच्चावेषु चैव लघणाभासे दंसणीयपादुच्चावेषु य दिट्टुपुव्यो चितित ति वृथा । णवणपडिरूपिधाणे य दंसणीयाणं पतिवग्गामेव अदिट्टुपुव्या विण्णया । सोत्ताभासे सव्वधोसंतंतेसु य सुयपुव्या भवंति । सोत्तपडिपिधाणे धोसवंतविच्चाभमे य असुतपुव्या विण्णया । इति जलचरजोणी वक्खाता भवति ।
- 15 तस्य सव्वपचवरकायेसु अणूसु य कीटकिविह्वकजोणी चितिता विण्णया । वण्णे आ धारिते सेतेसु सेता, रत्तेसु रत्ता, मीतेसु पीता, णीलेसु णीला, कण्ठेसु कण्ठा, सेवालकेसु सेवालका, पण्हूसु पण्हू, फरसेसु फरसा, चित्तेसु चित्ता, सवण्णपडिरूपगते विण्णया । धीणामेसु धीणामा, पुण्णामेसु पुण्णामा, णुंसकेसु णुंसका, एकचरेसु एकचरा, मिधुण-चरेसु मिधुणचरा, गणचरेसु गणचरा चितित ति विण्णया । इति कीट-पतंग-किविह्विकागता तिरिक्खजोणी पडिरूप-पादुच्चावेषु उवलद्वया । इति कीट-पतंगगता तिरिक्खजोणी वक्खाता भवति चितिता ।
- 20 तस्य धावरतिरिक्खजोणी पंचविधा आधारयितव्या भवति । तं जथा-पुडविकाइगगता आबुकाइगगता तेउक्का-इगगता वाउक्काइगगता वणफ्फतिनाइगगता वेति । तस्य सव्वद्वेसु पुडवीपादुच्चावेषु धातुजोणिगते य पुडविकाइकं थावरं चितितं ति वृथा । आपुण्येषु उदकपादुच्चावेषु आबुजोणीगते चैव आबुकायिका थावरा चितित ति वृथा । अग्गेषु अग्गिपादुच्चावेषु अग्गेषु सद-रूपपादुच्चावेषु अग्गिउवकरणगते चैव तेवुक्काइका थावरा चितित ति वृथा । वायव्येषु वायुपादुच्चावेषु चैव उवकरणसदपादुच्चावेषु चैव वायुकायिकं थावरं चितितं ति वृथा । सव्वगण्णेषु 25 सञ्चतरणहरितक-पुक्फ-फल-मत्तपादुच्चावेषु चैव मूलजोणीगतेसु चैव सद-रूप-उवकरणपादुच्चावेषु चैव एवंविधवणफ्फती-कायिकथावरं चितितं ति वृथा । इति थावरगथा तिरिक्खजोणीगता चिता वक्खाता भवति ।
- तस्य अयोभागेषु जट्ठणेषु किण्ठेसु संकिण्ठेसु उवहुतेसु अदंसणीयेसु अलुद्धारमणेषु चैव एवमादीकेसु आमा-सेसु सद-रूपेषु चैव एवंरूपेषु णेरइकपडिरूपेषु णेरइकसदपादुच्चावेषु चैव णेरइयं चितितं ति वृथा । इति णेरइकगता चिता वक्खाता भवति ।
- 3) तस्य सव्वपाणा पुण्यरि सत्तविधा आधारयितव्या भवंति । तं जथा-एकपदा १ विपदा २ चतुष्पदा ३ [छप्पदा ४] अट्टपदा ५ चट्टपदा ६ अपदा ७ चेति । तस्य एकपादुच्चावेषु एकपदा विण्णया एकैकरा भवंति १ । दुगपादुच्चावेषु दुपदका भवंति । ते दुविधा-माणुसा पक्खी ६ भाणुसतिरिक्खजोणी वेति । ते तिविधा-किण्णरा किपुरिसा अरससुदीओ

१ इमविधान्तगतः पाठः ई० त० एव वर्तते ॥ २ कुरीला ई० त० विना ॥ ३ तम्मिरा योह ई० त० ॥ ४ सु पालीया ५ ३ पु० ॥ ५ मीलच ई० त० विना ॥ ६ डकुसीकुंडिओपातिकाईयककुडुकाळकमित्यमच्छका ई० त० विना ॥ ७ अण्णेषु ई० त० ॥ ८ ता तणवण ई० त० ॥ ९ भवति छप्पया । तस्य ई० त० विना ॥ १० एककारका ई० त० ॥ ११ इत्यपिहन्तगतः पाठः ई० त० एव वर्तते ॥

वेति माणुसा च्छा तिरिक्ख ४ माणुस ५ जोणीसाधारणे विपदा भवंति । तत्थ सर्वं उद्धंभागेसु पक्खी दुपदो विण्णेषो । सव्ववित्थहामासेसु माणुसोपकरणेसु चैव माणुस्सदुपदजोणी विण्णेषा । मणुस्सतिरिक्खजोणीसाधारणेसु किन्नरा किंपुरिसा अस्समुहीओ वेति । तत्थ दुपदे धीगामेसु चैव अस्समुहीओ विण्णेषाओ भवंति । सव्वरुत्तेसु सव्वसण्णगते चैव किन्नरा किंपुरिसा विण्णेषा । इति माणुसतिरिक्खजोणीसाधारणेसु तिरिक्खजोणी विण्णेषा भवति २ । तत्थ सव्वचतुप्पदे सव्वचतुप्पदपडिहूवगते य चतुक्कवग्गागतेणं चैव उवलद्धव्वा भवंति ३ । तत्थ छप्पदा छैकवग्गोत्रलद्धीहिं पडिहूवगते उव- 5 लद्धव्वा भवंति । तं जधा-भमरा मधुक्कीओ मसगा मक्खिकाओ चैति । तत्थ मुदितेसु भमर-मधुकरा विण्णेषा । सव्वमूलगते चैव दारुणेसु मसका मक्खिकाओ य विण्णेषा । धीगामेसु मधुक्कीओ मक्खिकाओ चैव विण्णेषा । पुण्णामेसु भमरा मसका चैव विण्णेषा ४ । तत्थ अट्टपदा अट्टकवग्गापादुच्चावेण अट्टकपडिहूवेण चैव उवलद्धव्वा भवंति ५ । केस-संयु-ण्ह-लोमपरामासे वहुपदपडिहूवे चैव वहुपदा विण्णेषा भवंति ६ । अपदेहिं पैरिमंटलेहिं दीहाणु-च्चावेहिं चैव अपदे वि ति जाणिय ति ७ ।

10

तत्थ अट्टपदा वहुपदा कीहक्खिविहगे इमेहिं विण्णेषा भवंति । तं जधा-क्खिविहकाओ ओपिका कुंयु इंदगोपका पंसलचित्ता कण्हकीहिका ४ रूका मंक्कुणा उप्पातका रोहणिका चैति एवमादयो । तत्थ उण्हेसु जुगलिका कण्हपिपी- 15 लिका ५ कण्हविच्छिका चैति विण्णेषा, जे यऽण्णे उण्हा । रत्तेसु रत्ता रोहणिका इंदगोपगो, जे यऽण्णे रत्ता पिपी- लिका जगलिका । पैथियेसु किविहका इंदगोपका चैति विण्णेषा । ६ देहेसु किविहका जंगलिका विण्णेषा । ७ दीहेसु पिपीलिका जंगलिका विण्णेषा । परिमंडलेसु इंदगोपका मंक्कुणा य । गामेसु यूका मंक्कुणा य विण्णेषा । गम्मा- 15 रणेसु घुणा विण्णेषा । अवसेसा भूमीणिसित्तेसु । अंतलिव्खेसु संताणका उट्टणाही घुक्कभरधा वि वा विण्णेषा । पक्खिगते अग्गिकीह-पतंगा मक्खिकाओ भमर-मधुकरा चैव विण्णेषा । इति छप्पदा जोणी वहुपदजोणी अपदजोणी चैव कीहक्खिविहगगता वक्खातां चित्ता भवतीति ।

तत्थ सत्तविधा पाणा पुणरवि आधारयित्ता भवंति दुविधा-जलचरा थलचरा चैति । तत्थ आपुणेयेसु जलचरेसु सव्वजलचरपडिहूवे चैव जलचरा विण्णेषा भवंति । तत्थ थलेसु लुक्खेसु उण्णतेसु य सव्वथलचरगते 20 चैव थलचारी चित्तितं ति धूया । तत्थ उदकचरा विण्णेषा उच्चिजा विलासया अभितचरा चैति । तत्थ उच्चिजा संतणा कौकुंचिका वट्टका सिरिवेट्टिका करिण्डका पैयुमका सदा तीलका इति । उच्चिजेसु एते उम्मट्टे आमास-सह- पडिहूवेण उवलद्धव्वा भवंति उच्चिय ति । तत्थ विलासयेसु केंद्रगुलिका सेतगुलिका सुद्धिका औहादका कसका वातकुलीला वातंसु इतिपि एवमादयो अपोभागेसु छिन्नेसु वण्ण-आयार-पडिहूवेणं चैव एतेसु विलासया भवंति । इति विलासया । तत्थ अमितचरेसु इलिका-सीकूणिक-णदि-उच्चिणामी संतुवायका णदीमच्छका जलायुमच्छका वेति वहुपदेहिं 25 एते सवेहिं पडिहूवपावच्चावेहिं जपोपदिहेहिं उवलद्धव्वा भवंति ।

तत्थ अपदा दुविधा-परिसप्पा चेर किमिका चैव । तत्थ महायकासेसु परिमप्पा विण्णेषा । तत्थ किमिग्गा आसातिका किमिका पुरु मुंण्डु (गंद्द)पया य सव्वट्टका सूहमिटा वेति ३ एवमादयो च्छा विण्णेषा भवंति । तत्थ णीलेसु णीला, चित्तेसु चित्ता, संविकट्टपाणसित्तेसु आसातिका किमि मुंरुउ ति विण्णेषा । भूमीणिसित्तेसु गंद्दपका

१ एवधिहान्तगतं: पाठ: ६० त. नाग्गि ॥ २ छवण्णोयं ६० त. ॥ ३ अपरिमंडलदीहं ६० त. ॥ ४ उपधिया ६० त. ॥ ५ पमलचित्ता ६० त. विना ॥ ६ ४ ५ एवधिहान्तगतं: पाठ: ६० त. नाग्गि ॥ ७ पच्छिपरु ६० त. ॥ ८ इवधिहान्तगतं: पाठ: ६० त. एव वतंते ॥ ९ जंगिका ६० त. विना ॥ १० ता वि ता मं ६० त. ॥ ११ काकुंचिका घंदा ६० त. ॥ १२ वेदका ६० त. विना ॥ १३ पयुसरका सदा तीलुका ६० त. ॥ १४ कण्णेपुद्धिका ६० त. ॥ १५ आमांडका कसकका ६० त. ॥ १६ सु तिच्चेसु ६० त. ॥ १७ रूवेसु नं चैव परं विलां ६० त. ॥ १८ गण्ड- ५या ६० त. ॥ १९ इवधिहान्तगतं: पाठ: ६० त. एव वतंते ॥ २० निपकओ चि ६० त. ॥ २१ सु रूपका णि ॥

विण्णया । मूलजोणीणिसित्तसु लिच्छा संवुट्टिका संकमिहा ति विण्णया । इति अपदजोणीयं वक्खाता भवति । इति सत्त्वविधा पाणजोणी वक्खाता । सज्जीवपडिरूव-आमास-सद्वापुडुम्भावेहिं चित्तायं भवतीति ।

- तत्थ अज्जीवा ति विधा-पाणजोणीसंभवा मूलजोणीसंभवा धातुजोणीसंभवा चेति । तत्थ चलासासेसु सव्वपाणजोणीगतं चैव पाणजोणी विण्णया । केस-मंसु-लोम-ण्हगतं य सव्वमूलगतं चैव मूलजोणी विण्णया । तत्थ दढामासेसु सव्व-
 ५ धातुगतं चैव धातुजोणी विण्णया । तत्थ पाणजोणी दुविधा-संखता असंखता चैव, अग्गेया ॥ अण्णगेया ॥ चैव दुविधा आधारयितव्वा भवति । तत्थ अग्गेयेसु अग्गेया विण्णया । अण्णगेयेसु अण्णगेया विण्णया भवति । सा दसविधा आधारयितव्वा भवति, तं जधा-केसगता < सिंगगता लोमगता > अत्थिगता [मंसगता रुधिरगता] मज्जागता चम्मगता ण्हउगता मेदगता वेति । उपजोणीणक पंचविधा, तं जधा-पित्तगता सिमगता दुद्धगता मुत्तगता रेतगता चेति । तत्थो-
 १० वल्लदीओ केसगता लोमगता सिंगगता चेति आहारमैए उवकरणे उवलद्धव्वा भवति । अंजणी-फणिका-वीर्जणी-दंडाओ धूमणत्तं समगपाउकामये आसंदक-पँडक-कोडिलक्खणकआसणगतं चैव विण्णया भवति, इति केसगता । तत्थ लोम-
 १५ गतं सजीवक-पत्तुण्ण-अजिण्णवेणि इति पक्खिण्णकं वीजणिया चामरं अजीणकंयलो वालसाट्ठि बालमुट्टिका बालव-
 (वि)यणी वा एवमादीणि विण्णयाणि । तत्थ चम्मगते उपाणहा अस्समंडं भच्छा वित्ठिका अजीणं अजीण्णवेणिका वीणा मसुरका पक्खगतं दहरका आलिंगा मुक्ख ति एवमादयो विण्णया भवति पडिरूवपादुम्भावेणं सएहिं आमास-
 २० पडिरूवेहिं चैव । तत्थ मंसगते आहारो विण्णयो भवति । तत्थ ण्हवुणीगतं दुविधं-हीरगतं गंडिगतं चैव । तत्थ हीरगतं तत-विदंता व ता विक्खाता वा गुणगतं विण्णयं भवति । तत्थ अट्ठिगतं संकुगतं खीलिगतं सिप्पिपुडगतं
 २५ संसँभायणगतं ॥ विण्णयं भवति । रुधिरगते अट्ठिगतं क्रियागतं विण्णयं भवति । तथा धातुगतं तथा यँसा-
 गते पुरिसगते क्रियागतं विण्णयं भवति ओसहाहारगतं वा । तत्थ आपुण्येसु वसागतं रुधिरगतं पित्तगतं दुद्धगतं विण्णयं भवति । तत्थ रत्तेसु रुधिरगतं विण्णयं । सेत्तेसु दुद्धगतं रेतगतं वा विण्णयं भवति । तत्थ बालेयेसु दुद्धगतं विण्णयं । मुदित्तसु विण्णयेसु य मुक्खं विण्णयं भवति । सेत्तेसु चैव कडुकेसु पित्तं विण्णयं < भवति । > पित्तसु चित्तसु थूलेसु
 ३० रुधिर-वसा विण्णया । अणूसु केस-मंसु-लोमगतं विण्णयं । उदंभागेसु सिंगगतं विण्णयं । केसगतेसु चैव अग्गेयसु पुरि-दुद्धगतं विण्णयं । ॥ तँणूसु वरसगतं विण्णयं । ॥ दारुणेसु रुधिर-ण्हारु-अट्ठि-मेदो विण्णया । सव्ववहलगते दुद्धं विण्णयं । परिजिण्णसु वघेसु य मुत्त-पुरिसं विण्णयं । तत्थ आहारसु पाणजोणी चम्मगता वत्थिगतं अट्ठि अट्ठि-
 ३५ मज्जा । जे अट्ठिगता दुद्धं वसा रुधिरमिति । दीहेसु ण्हारुगतं विण्णयं । बायव्वेसु वत्थिगतं विण्णयं भवति । तत्थ आहार-पाणजोणीओ चम्मगता मंसगता वत्थिगता < अँट्ठि > अट्ठिमिज्जागता य । अट्ठिगता दुद्धं वसा रुधिरमिति ।
 ४० तत्थ भायणगते सिप्पिगतं संखमयं दंतमयं गरलमयं विण्णयं भवति । तत्थ अट्ठिमये आभरणलोहितिका विण्णया भवति । तत्थ चम्मे वत्थी आहारगते विण्णया भवति, दंतभायणगते विण्णया । अजिणपट्टे अजिण्णवेणी अजिण्णा-
 ४५ कंचुका चेर वत्थगते विण्णया भवति, चम्मसाडीओ य विण्णया भवति । मूलगतं लोमगतं अच्छादणं विण्णयं भवति । इति पाणजोणिपडिरूव-सद्वापुडुम्भावेहिं समास-वासतो उवलद्धव्वं भवतीति । इति पाणजोणी वक्खाता भवति चित्ताया अज्जीवति ।

- ५० तत्थ मूलजोणी ति विधाभाधारयितव्वं भवति-मूलगता चंघगता अग्गगता चेति । तत्थ पाद-उंचे मूलजोणी सव्व-
 पातुगतं य उदं कडीयं अधो गीनायं रंघं जोणीचंघगतेसु य उँज्जयगेसु य उदं गीवाय अग्गजोणी उदंभागेसु चैव । तत्थ

१ सूरीमहा हं ॥ २ विहायं हं ॥ ३ हस्सविहान्तगतं पाठः हं ॥ ४ एव वतंते ॥ ५ < १ > एतविहान्तगतं पाठः हं ॥ ६ नासि ॥ ५ मते सं १ पु ॥ ७ गते सि ॥ ६ जणीओ दंडाओ भूमणत्तं हं ॥ ७ पडुंका हं ॥ ८ विना ॥ ८ कण्यतुण्ण हं ॥ ९ ण्हवणी हं ॥ १० विपया मा वि हं ॥ ११ हस्सविहान्तगतं पाठः हं ॥ १२ एव वतंते ॥ १३ पातुगतं हं ॥ १४ विना ॥ १५ हस्सविहान्तगतं पाठः हं ॥ १६ एव वतंते ॥ १७ एता धट्टिअट्टि हं ॥ १८ विना ॥ १९ < १ > एतविहान्त परं हं ॥ २० नासि ॥ २१ उज्जुमागेसु उदं उदं गीवाय उदं भागेसु हं ॥ २२ विना ॥

मूलजोणी एकविधा विण्णेया । < १ > 'खंजोणी दुविधा-तया > गता सारगता चेति । तत्थ तणूसु तयागता विण्णेया तयागता चेव । सारगता सारगते विण्णेया भवंति घातुगते चेव । तत्थ अग्गगता तिविधा-पत्तगता पुप्फगता फलगता वेति । तत्थ पत्तगया तिविधा-तरुणा मज्झिमा जरढा चेति । तत्थ पत्तगया ति(वि)विहा-पुष्पुसु तणूसु य । पुप्फगते पुप्फगता विण्णेया मुदितेसु चेव । फलगते फलगता विण्णेया पुण्णेषु सारवंतेसु य । तत्थ फलगतं पंचविधं-सेतं रत्तं पीतं नीलं कण्हमिति । एताणि सवण्णेहिं विण्णेयाणि भवंति । तत्थ फलं पंचरसं आधारयित्ता जघारसं विण्णेयं भवति । 5 तत्थ मूलजोणी दुविधा-सज्जीवा चेव अज्जीवा चेव । तत्थ सज्जीवगते सज्जीवा विण्णेया । अज्जीवगते अज्जीवा विण्णेया । तत्थ सज्जीवा तिविधा-गम्मा < १ > अरण्या > गम्मारण्या चेति । तत्थ अवमंतरेसु गम्मा वणप्फतयो विण्णेया । गम्मेसु चेव सब्बदग्गेषु वणप्फतयो आरण्या विण्णेया । वज्जवमंतरेसु गम्मारण्या विण्णेया वणप्फतयो । सब्बगम्मारणेषु चेव तिविधा-थीणामा पुण्णामा णपुंसकगामा चेति । तत्थ थीणामेसु थीणामा, पुण्णामेसु पुण्णामा, णपुंसकगामेसु णपुंसकगामा विण्णेया वणप्फतयो । आपुण्णेषु जदीरुहा । णिण्णेषु य थलेसु थलजा विण्णेया । 10 लुक्खेषु चेव दढेसु < १ > पव्वतविरुहा विण्णेया । >

पव्वतपडिह्वेषु य पव्वतरुहेसु चेव ते चतुव्विधा-पुप्फसाली १ पुप्फफलसाली २ < १ > फलसाली > चेव ३ [ण] पुप्फसाली ण फलसाली ४ चेति । तत्थ पुप्फसालिणो तिविधा आधारयित्त्वा भवंति-पत्तेकपुप्फा गुलुकपुप्फा मंजरिणो । तत्थ एक्कसु गत्तेसु एक्कपादुव्भावे चेव पत्तेकपुप्फा विण्णेया । पत्तेकपुप्फेसु चेव परिमंढलेसु गुलुकपुप्फा विण्णेया । गुलुकपुप्फेसु चेव दीहेसु मंजरिणो विण्णेया । मंजरिपुप्फेसु चेव मंजरिपुप्फेसु ते पंचविधा-सेतपुप्फा 15 रत्तपुप्फा पीतपुप्फा नीलपुप्फा कण्हपुप्फा चेति । एते सवण्णतो आधारयित्ता आधारयित्ता विण्णेया-सेतेसु सेता पुप्फा, रत्तेसु रत्तपुप्फा, पीतेसु पीतपुप्फा, नीलेसु नीलपुप्फा, कण्हेसु कण्हपुप्फा विण्णेया । एते तिविधं आधारयित्ता सुगंधपुप्फा दुग्गंधपुप्फा अचंचतंगंधपुप्फा चेति । तत्थ सुगंधेषु सुगंधपुप्फा, दुग्गंधेषु दुग्गंधपुप्फा, अचंचतंगंधेषु अचंचतंगंधपुप्फा विण्णेया १ ।

तत्थ फलसाली चतुव्विधा-कायवंतफला मज्झिमकायफला मज्झिमार्णंतरकायफला पच्चवरकायफला चेति । 20 तत्थ कायवंतफला पणसा तुंथा कूमंढपुप्फ-फलप्पमाणफला विण्णेया भवंति । मज्झिमकायवंतफला कवित्थेविहप्पमाणा विण्णेया भवंति । मज्झिमार्णंतरकायफला अंव-अंवाडक-णीय-तिंडुक-उडुंवरप्पमाणा विण्णेया । पच्चवरकायफला अरसो-त्थ-वड-मील-पियाल-फरुस-चैम्मणडोला-कोलक-करमंद-कलायसैरवीथप्पमाणानि । ते पंचविधा-सेतफला रत्तफला पीतफला नीलफला कण्हफला चेति । जघापडिह्वेहिं वण्णतो कायप्पमाणतो चेव आधारयित्ता आधारयित्ता उवलद्धव्या भवंति भक्खफलगता अभक्खफलगता चेव । तत्थ सब्बआहारगते भक्खफला विण्णेया । अणाहारगते अभक्ख- 25 फला विण्णेया । ते तिविधा आधारयित्त्वा-सुगंधा दुग्गंधा अचंचतंगंधा चेव । सुगंधेषु सुगंधफला, दुग्गंधेषु दुग्गंधफला, अचंचतंगंधेषु अचंचतंगंधफला विण्णेया । ते पंचविधा रसफला आधारयित्त्वा भवंति, तं जघा-तिचफला कडुकफला अंबिलफला कसायफला मधुरफला चेति । एते जघुत्ताहिं रसोपलद्धीहिं रसतो उवलद्धव्या भवंति २ ।

तत्थ जे पुप्फेण णज्जंति ण फलेण [ते पुप्फसालिणो,] तं जघा-असोग-गौंगरुक्खा सत्तिवण्णा तिलका सिंदुवार ति, जे यण्णे एवंविधा वेति । तत्थ जे फलेण उवमुज्जंते ते फलसालिणो । तत्थ इमे फलेण णज्जंते, तं 30 जघा-पणसा पारेयता लडचा मातुलुंगा उडुंवर, जे यण्णे एवमादयो ।

तत्थ इमे पुप्फेण फलेण चेव णज्जंते पुप्फ-फलोपणा, तं जघा-अंया अंवाडगा णीय-मडल-जंबु-दालिमा, जे य अण्णे एवंविधा भवंति । पुप्फ-फलेतो य जे उवमुज्जंति ते चिंतिता विण्णेया भवंति पुप्फ-[फल]सालिणो ति ३ ।

१-२-३ < १ > एतच्चिह्नान्तर्गत पाठः ६० त० नास्ति ॥ ४ *त्यफलप्प* ६० त० विना ॥ ५ *धम्मण* ६० त० विना ॥ ६ *संघीय* ६० त० ॥ ७ *णाणन* ६० त० ॥ ८ माउसगा ६० त० ॥ ९ *ण जज्जंते फ* ६० त० ॥ १० *लडो य जे चज्जंति चि* ६० त० ॥

तत्थ जे ण पुप्फेण फलेण णेव उवजुज्जेते ते णेव पुप्फसालिणो [णेव] फलसालिणो त्ति विण्णेया । तं जघा-
खदिरा धवा अयकण्णा पूतिकरंजो अहिमारो पूतिला कुंभकंडका चेति एवमाद्यो विण्णेया । जे य अण्णे एवंविधा,
ते णेव पुप्फसालिणो [णेव फलसालिणो] चतुत्था पगती रुक्खाणं विण्णेया इति ४ ।

- एते जघुत्ताहिं सकाहिं उवलद्धीहिं उवलभित्ता चतुर्विधा उवलद्धव्वा । ते सब्बे चतुर्विधा—कायवंतो मज्झि-
5 मकाया मज्झिमाणंतरकाया पंचवरकाया चेति तत्थ सब्बरुक्खा विण्णेया । उद्धंभागेसु लता विण्णेया । कुडिलेसु य
वामभागेसु मज्झिमकायेसु गुम्मा विण्णेया । गहणेसु य तिरियपचवरकायेसु तणा विण्णेया उवगाहणेसु य । तत्थ
सब्बवीयाणि तणेसु विण्णेयाणि । वीयाणि जघुत्ताहिं उवलद्धीहिं जहावण्णजोणीयं उवलद्धव्वाणि भवंति । तत्थ खंधेयेसु
उच्छू विण्णेया, सवरं चैव गुलगतं । तत्थ कंदजाणि सब्वाणि धूवणाणि विण्णेयाणि भवंति । अग्गेयेसु धूवणाणि विण्णे-
याणि भवंति । उद्धंसिरोमुहामासे ष्हाणोपलेयकणे पधोवणविसेसकित्ता विण्णेया । मज्झिमकायेसु अणुलेवणं विण्णेयं ।
10 मज्झिमकार्यं च ष्हाणागलु-अलत्तक-कालेयक-देयदारुगतं य गंधे विण्णेयं । मूलगता गंधा विण्णेया मूलगते ।
खंधगता गंधा विण्णेया खंधगते । तयगता गंधा विण्णेया तयगते । सारगता गंधा विण्णेया सारगते । णिज्जासगता
गंधा विण्णेया णिज्जासगते । तणूसु पुधूसु य पत्तगते य पत्तगया गंधा विण्णेया । पुण्णेसु सब्बफलगतं चैव फलगता
गंधा विण्णेया । मुदितेसु पुप्फगते य सब्बपुप्फगता गंधा विण्णेया । पुण्णेसु णिद्धेसु य सब्बरसगते य रसगता गंधा
विण्णेया ।

- 15 तत्थ गुग्गुलुविगतं सज्जलसं इकासो सिरिवेड्ढको चंदणरसो तेलवण्णकरसो कालेयकरसो सहकाररसो मातुलुंग-
रसो करमंदरसो सालफलरसो सब्बरसा चेति रसगते विण्णेया भवंति । जघुद्विद्वाहिं सकाहिं उवलद्धीहिं आधारयित्ता
उवलद्धव्वा भवंति एवमाद्यो रसा चेति ।

- तत्थ तेहेसु कुसुंभतेहं अतसीतेहं रुचिकतेहं फरंजतेहं उण्हिपुण्णामतेहं विहतेहं उसणीतेहं बहीतेहं सासवतेहं
पूतिकरंजतेहं सिग्गुकतेहं कपित्थतेहं तुरुकतेहं मूलकतेहं <1> अतिमुत्तकतेहं <2> एवमादीणि तिहाणि रुक्ख-गुम्भवलि-
20 गुच्छ-यलयफलणिव्यत्ताणि विण्णेयाणि भवंति । जघुत्ताहिं रुवोवलद्धीहिं <1> गुम्भोवलद्धीहिं <2> य चत्तारि तेहा
<1> विण्णेया—तिलतेहं अतसीतेहं सासवतेहं कुसुंभतेहं चेति पंचवरकायेसु चैव विण्णेयाणि भवंति । रुचिकतेहं इंगु-
णि(वि)तेहं सिग्गुकतेहं चेति एवमादीणि मज्झिमाणंतरकायेसु विण्णेया भवंति । अतिमुत्तकतेहं पधकलीतेहं चेति मज्झि-
मकायेसु विण्णेयाणि भवंति । अवसेसाणि कायवंतेसु <3> विण्णेयाणि तिहाणि भवंति । तत्थ चंपक-चंदणिकापुरसतेहं
अतिमुत्तकतेहं जातीतेहं पीलुतेहं यूथिकतेहं उंसधतेह्याणि चैव उवहुतेसु विण्णेयाणि भवंति । मुदितेसु गंधतेह्याणि
25 विण्णेयाणि भवंति । मधुरेसु चंदणिकतेहं विण्णेयं । तिण्हेसु वकिकतेहं विण्णेयं । अग्गेयेसु पुस्सतेहं विण्णेयं । पीलित-
परिमंढितादीसु उवलद्धीहिं पडिरूयते आमासतो य जघुत्तं तथा उवलद्धव्वं भवति । इति तेहाणि वक्खाताणि भवंति ।

- तत्थ मूलजोणी साली वीही कोइवा कंगू रालका वरका मुग्गा मासा णिप्फावा चण्का कुलत्था मसूरा अदसीओ
इसुंभा सासवा चेति आहारगता विण्णेया सब्ब अणूसु चैव । तत्थ सेतेसु साली जवा सेतवित्ता सेतणिप्फावा
इसुंभा वेति विण्णेया । रतेसु वीही कोइवा रत्तणिप्फावा कुलत्था मसूरा सरसवा वेति विण्णेया । पीतेसु कंगू रालगा
30 सिद्धत्थका चेति एवमाद्यो विण्णेया भवंति । आपुण्णेयेसु अतसी कुसुंभा तिला सासवा चेति इहा आहारगया इहा
विण्णेया । अवसेसाणि जघुत्ताहिं उवलद्धीहिं उवलद्धव्वाणि भवंति ।

तत्थ उवगाहणगते मूलजोणीगते वरयाणि खोमकं द्युल्लं जगिकं चीणपट्टा वानपट्टा कप्पासिकं चेति विण्णेयं
भवति । जघुत्ताहिं वल्योपलद्धीहिं उवलद्धव्वाणि भवंति । तत्थ जघा वल्यजोणीयं उवदिहं ति ।

१ °या इति गह° हं तं विना ॥ २-३ <1> एतविहान्तर्गतः पाठः हं तं वाति ॥ ४ <1> एतविहान्तर्गतः पाठसन्दर्भः
हं तं वाति ॥ ५ उदयते हं तं ॥ ६ इहविहान्तर्गतः पाठः हं तं एव वर्तते ॥

तत्थ मूलजोणीयाणि भायणाणि कट्टमयं फलमयं पत्तमयं चेलमयं इति एवमादीयाणि विण्णैयाणि भवन्ति । तत्थं खंधगते कट्टमयं विण्णेयं सब्वकट्टपडिरूवे चैव । पुण्णेषु फलमयं विण्णेयं सब्वफलपडिरूवे चैव । तणूसु पुघूसु य पत्तमयं विण्णेयं सब्वपत्तपडिरूवगते चैव । किसेसु वित्थडेसु ये चेलमयं विण्णेयं सब्ववत्थपडिरूवगते चैव । एवमादीहिं सकाहिं सकाहिं उवलद्धीहिं उवलद्धव्याणि < १ भायणाणि > भवन्ति । इति मूलजोणीयां भायणं ।

तत्थ मूलजोणीयं आभरणं पुप्फमयं फलमयं पत्तमयं कट्टमयं चैति । तत्थ मुदितेसु पुप्फमयं विण्णेयं । पुण्णेषु 5 फलमयं विण्णेयं । तणूसु पुघूसु य पत्तमयं विण्णेयं । खंधगते सारगते चैव कट्टमयं विण्णेयं भवति । इति मूलजोणीयं आभरणं चिंतियायं वक्खातं भवति ।

तत्थ धातुजोणी सारगता वण्णगता चैव । तत्थ सारगता धातुजोणी सारगता विण्णैया । < १ वण्णगता वण्ण- गते विण्णैया भवति । > तत्थ सारगता दुविधा—विल्लियगता चैव घणगता चैव । तत्थ विल्लियगता णवविधा, तं जघा— सुवण्णकं तवुकं तंयं सीसकं काललोहं वट्टलोहं कंसलोहं हारकूडकं रूविअगमिति एवमादीणि विण्णैयाणि भवन्ति । 10 तत्थ पीतकेसु सुवण्णकं हारकूडकं चैव विण्णेयं । उत्तमेसु दंसणीयेसु य सुवण्णं विण्णेयं । पच्चवरेसु सोवहवैसु य पीतएसु हारकूडकं विण्णेयं । तंवेसु सुवण्णकं वा तंयं वा हारकूडकं वा विण्णेयं । उत्तमेसु रत्तेसु सुवण्णं, मच्चिमेसु तंयं, उवहुत्तेसु हारकूडकं, सेतेसु रूपं वा तवुकं वा कंसलोहं वा विण्णेयं । सारमंतेसु सुकिल्लेसु रूपं, धसारेसु तवुकं, सप्पभेसु कंसलोहं विण्णेयं । कण्हेसु सीसकं काललोहं चैति । तत्थ कट्टिगेसु काललोहं विण्णेयं । 15 मुदितेसु सीसकलोहं विण्णेयं । वट्टलोहं विण्णेयं । भायणोपकरणेसु काललोहं-कंसलोहाणि विण्णैयाणि । सप्पभेसु 15 कंसलोहं, संब्वच्छायागते चैव तिक्खेसु काललोहं, सब्वसत्थगते चैव जण्णयेसु सुवण्णकं वा तंयं वा कंसलोहं वा वट्टलोहं वा विण्णेयं भवति । वत्थेसु तंयं वा सुवण्णकं वा काललोहं वा विण्णेयं भवति । इति धातुजोणी विल्लियगता विण्णैया । तत्थ घणजोणी धातुगता वैरुलिय-फालिय-मसारकद्धा लोहितक्खा अंजणमू(पु)लका गोमेदका अंकी मलका सासका सिल्लपवाला पवालका वधं मरगतं विविधा खारमणी वेति । एवमादी पाणजोणी धातुजोणीगता यधुत्ताहिं उवलद्धीहिं आमास-वण्ण-पडिरूव-सदोपकरणेहिं सिप्पिकपाटुम्भावैहिं जाति-विजातीहिं अग्गेव-अण्णगेयोपलद्धीहिं 20 उवलद्धव्या भवन्ति । इति सारगता चिंता विण्णैया भवन्ति ।

वण्णजोणीगता तं जघा—सुधा सेडिका पलेपको णेळकंता कडसकरा वेति । रत्तेसु गेरुग-मणोसिला पत्तंणे हिंगुलकं पज्जणी वर्णमंत्तिका इति विण्णैया भवन्ति । पीतएसु हरितालं मणोसिला वण्णकमत्तिका चैति विण्णैया । पीलेसु पीलकधातुको सस्सकचुण्णकमिति एवमादी विण्णेयं । कण्हेसु अंजणं कण्हमत्तिका चैति । पण्हूसु पण्हमत्तिका वण्णमत्तिका चैति वा वण्णेषु । खेत्तभूमिए पण्हभूमिओ विण्णैयाओ । णिद्धेसु ण्डीमत्तिका विण्णैया । पाणजोणीगते 25 संगमत्तिका विसाणमत्तिका विण्णैया । उवहुत्तेसु विसाणमत्तिका । मुदितेसु देवतायणमत्तिका विण्णैया । तत्थ पुणरवि मत्तिका बहुविधा भवति, तं जघा—कण्हमत्तिका पंडुमत्तिका तंयंभूमि मुंरुवो कडसकरा सुवण्णं जातरूवं मणसिसला गोकंठको खीरपको अच्चमवालुका लयणं सुद्धभूमि चैति आधारयित्ठवं भवति सकाहिं । उवलद्धीहिं तत्थ सेतेसु लयणं खीरपको गोकंठको अच्चमवालुका वेति । दडेसु मणसिला विण्णैया । मिदूसु कण्हमत्तिका मुंरुवो तंयो वेति विण्णैया । इति धातुजोणीगता चिंता वण्णधातुगता चैति वक्खाता भवति । 30

तत्थ विगता धातुजोणी भूमिसंजुत्ता, तं जघा—खेत्तं वत्थं गाम-णगर-सण्णिवेस-आवास-कुंड-ण्डी-तलाग-पुक्ख- रंणि-सूव-सर-कंलिह-सेउ-पागारो पेंडपाली एलुको चैति पथा पंथा पव्वता चैति एवमादीयं विण्णेयं भवति । तत्थ

१ त्थ संघा १० ॥ २ य वेउमयं १० ॥ ३ < १ > एतविहान्तर्गतः पाठः १० ॥ नास्ति ॥ ४ पीज भा १० ॥ ५ < १ > एतविहान्तर्गतः पाठः १० ॥ नास्ति ॥ ६-७ वियलगता १० ॥ ८ रुद्धियगमिति १० ॥ ९ कण्णेषु १० ॥ १० हस्सविहान्तर्गतः पाठः १० ॥ एव वत्ते ॥ ११ सच्छाया १० ॥ १२ का यमल १० ॥ १३ क-याडक-सक १० ॥ १४ मच्चिका १० ॥ १५ मुंरुवो करस १० ॥ १६ सुसंयो वेति १० ॥ १७ राकूय १० ॥ १८ फलिद्धासतपा १० ॥ १९ वेति चैल्ल इत्ये ॥ ३०

उद्धभागेषु उष्णतेषु पंच्यत-पंधा(वा)-पाली-चेति-एलुकमिति, जं च किंचि उष्णतं तं सव्यं विष्णोयं भवति । णिण्णेषु णदी-तलाग-पुक्खरणी-वावी-कूय-उदुपाण-सर-फलिहा एवमादयो विष्णोया भवन्ति । सण्णिरुद्धेषु तलाग-पुक्खरणी-वावी-गाम-णगर-णिगम-सन्निवेशादयो उवलद्धव्या भवन्ति । दीहेसु णदी विष्णोया । चतुरस्सेसु वावी पुक्खरणी खेत्तं वा विष्णोयं भवति । असंरतेसु णदी पव्वता विष्णोया भवन्ति । महावकासेसु भूमी वा पव्वता वा पव्वता विष्णोया । 5 पुधूसु महावकासेसु भूमी विष्णोया, उद्धभागेषु ददेसु य पव्वता विष्णोया । उद्धभागेषु मतेसु य एलुको विष्णोयो । उद्धभागेषु जिण्णेषेसु य चीती विष्णोया । पादजंघासु दीहेसु य पंधा विष्णोया । इति भूमिपयुत्ता धातुजोणी ।

तत्थ धातुजोणीओ आभरणजोणी जयुत्ता आभरणजोणीयं तथा विष्णोयं भवति इति धातुजोणीआभरणजोणि-चिंताय उवलद्धव्या भवति । तत्थ धातुजोणिजा वरथजोणी लोहजालिका सुवण्णपट्टो खचितं वेति जधुत्तं वरथजोणीयं तथा धातुजोणीगतं वर्यं विष्णोयं भवति इति धातुजोणिवर्यजोणिजं चिंताय उवलद्धव्यं भवति । तत्थ धातुजोणिया 10 भायजोणी पुधूसु धातुजोणिगतेसु सव्यभायणपट्टिरुवगते चेव मत्तिकामए चेव लोहमये मणिमये सेलमये जधुत्ताहिं जधुत्ताहिं भूमी-सेल-लोह-मणिजोणीहिं समणुगंतव्यं भवति इति धातुजोणिजा भायणा जोणीचिंतायं उवलद्धव्या भवन्ति । तत्थ धातुजोणिजो सयणासणजोणी लोहमयी सिलप्पवालमयी मणिमयी सेलमयी भूमी वेति जधुत्ताहिं धातुजोणीहिं उवलद्धीहिं सयणासणोवलद्धीहिं चेव समणुगम्म उवलद्धव्या भवन्ति । तत्थ महावकासेसु भूमी विष्णोया । अग्गेयेसु इट्टका, समेसु पेदिका, ददेसु सिलापट्टपासाणा, चतुरस्सेसु सिलापट्टा, ददेसु चेव परिमंडलेसु सिलापट्टा, चतुरस्सेसु 15 परिमंडलेसु वा अग्गेयेसु इट्टका । तत्थ तिविधमेव धातु तिविधमेव आसणं सयणं वा संठाणतो उत्तम-जधण-मज्झि-माहिं चेव उवलद्धीहिं उवलद्धव्या भवन्ति इति धातुजोणिजं सयणासणं चिंताय उवलद्धव्यं भवति । इति धातुजोणी-चिंता वक्खता भवति ।

तत्थ पाणजोणी मूलजोणीसाधारणा, पाणजोणी धातुजोणीसाधारणा, मूलजोणी पाणजोणीसाधारणा, मूलजोणी धातुजोणीसाधारणा, धातुजोणी पाणजोणीसाधारणा, धातुजोणी मूलजोणीसाधारणा, पाणजोणी-धातुजोणीसमभागा 20 समणुगंतव्या भवति । एवमादी चिंता जीव-अजीवसमायुत्ता दिव्व-माणुस्स-तिरिक्ख-णेरइयसंसारसमायुत्ता सिद्धसमा-युत्ता य एवमादी जीवचिंता अजीवचिंता चेव सइगता रूवगता रसगता गंधगता फासगता गाम-णगर-खेद-पट्टण-जण-पद-पव्वत-गिह-सण्णिवेस-खेत्त-खल-भूमि-वत्थुगता तलाग-पुक्खरणि-कूय-सर-णदी-समुह-धण-धण-रतण-उवकरण-जाण-याहण-सयणा-55सण-वत्थ-परिच्छद-भायणगता पाणजोणिगता मूलजोणिगता धातुजोणिगता अतिरंता-5णागतकाल-संपतसमायुत्ता गणणा-परिसंरा-असंखेजसमायुत्ता य विज्झासुत्तसमायुत्ता य सजीव-अजीवसमायुत्ता दुविधा 25 सभासेण उदत्ता अणुदत्ता चेति आभास-सद-पट्टिरुवपादुब्भावोहिं जधुत्ताहिं उवलद्धीहिं आधारयित्ता आधारयित्ता सव्यं समणुगंतव्यं भवतीति ॥

इति खलु भो महापुरिसदिण्णाय अंगविज्ञाय चिंतितो णामाज्झायो अणंतागमसंजुत्तो

जिणाणंतरंणाणिपवरगुणाणंतर्पवरागमसंयुत्ताय मणोगतभावप्यकासणकराय-

मंगविज्ञाय णमोक्कारयित्ता णमो भगतोयसवतो महतिमहावीर-

वज्रमाणाय अभिप्पसण्णाय अंगविज्ञाय चिंता णामज्झायो

अट्टायण्णो सम्मत्तो ॥ ५८ ॥ छ ॥

30

१ 'पदापा' हं. त. ॥ २ इत्यभिहितार्थतः षडः हं. त. ए वन्ते ॥ ३ जिण्ये' हं. त. विना ॥ ४ पया वि' हं. त. ॥

५ 'णीमयं सव्यमणु' हं. त. ॥ ६ < १० सयिज्जासुत्तस्यसमा' हं. त. ॥ ७ 'तराणि प' हं. त. विना ॥

८ पराग' हं. त. विना ॥

[एगूनसट्टिमो कालज्झाओ]

[पढमं पडलं]

उसभादी तित्थकरे सिरसा बंदिनु वीरणिच्छेवे । विज्जं महापुरिसदेसितं च णाणं च णाणी य ॥ १ ॥
 पंचविहो जो कालो महापुरिसदेसिताय विज्जाय । सो गाघाहिं णिवद्धो अणुजोगत्थं चियेवूणं ॥ २ ॥
 पंचविधो पुण कालो मुहुत्तमादी दिवसा य पक्खा य । मासे मासा वस्सं वरसाणि य दिग्बकालो य ॥ ३ ॥ ४
 जं पुच्छितं मुहुत्तविसए मुहुत्ता तर्हि गणेतव्वा । जं दिवसाणं विसेणय (विसयो) तर्हि तु दिवसा गणेतव्वा ॥ ४ ॥
 पक्खेसु य ते पक्खा एक्कारसमासिकं च मासेसु । वरसाणं जो विसयो तर्हि तु वरसा गणेतव्वा ॥ ५ ॥
 अट्ठागते य कच्छागते य वित्थारिमे य गणिमे य । माणुम्माण-पमाणे काले वेलागते चेव ॥ ६ ॥
 सब्बम्मि अंतिम्मते समाणजोगा य समगिरेसम्मि । ओलमित्तदुक्खलक्खे चिरणिप्फण्णे य चिरकालो ॥ ७ ॥
 अट्ठागते य कच्छागते य वित्थारिमे य गणिमे य । माणुम्माण-पमाणे काले वेलागते चेव ॥ ८ ॥ 10
 एतेसिं भावाणं मज्झिमजोगेण मज्झिमो कालो । अट्ठे संपुण्णा-अणाधिकम्मि लेहट्टकाले य ॥ ९ ॥
 अट्ठागते य कच्छागते य वित्थारिमे य गणिमे य । माणुम्माणपमाणे काले वेलागते चेव ॥ १० ॥
 एतेसिं भावाणं पतणुकभावे य थोवभावे य । सुइलक-हत्सभावे आसण-पसणभावे य ॥ ११ ॥
 लहुकड-लहुणिप्फण्णे लहुलोभे [.....] आगते सिग्घं । अपरिक्खेसेण य उवगतम्मि सिग्घो हवति कालो ॥ १२ ॥
 वासाणि दीहकालो मासा पक्खा य मज्झिमो कालो । दिवस-मुहुत्ता हस्सम्मि होति कालप्पमाणम्मि ॥ १३ ॥ 15
 वस्सेण व वस्सेहिं व अयमत्थो होहिंति त्ति उप्पण्णे । वरसाणि विजाणेज्जो तस्सुप्पादस्स लद्धीए ॥ १४ ॥
 मासेण व मासेहिं व अयमत्थो होहिंति त्ति उप्पण्णे । मासे त्ति विजाणेज्जो तस्सुप्पादस्स लद्धीए ॥ १५ ॥
 पक्खेण व पक्खेहिं व अयमत्थो होहिंति त्ति उप्पण्णे । पक्खे त्ति विजाणेज्जो तस्सुप्पादस्स लद्धीए ॥ १६ ॥
 दिवसेण व दिवसेहिं व अयमत्थो होहिंति त्ति उप्पण्णे । दिवसे त्ति विजाणेज्जो तस्सुप्पादस्स लद्धीए ॥ १७ ॥
 किंचि वरतं मुहुत्तं अयमत्थो होहिंति त्ति उप्पण्णे । जाणसु वत्थ मुहुत्ते तस्सुप्पादस्स लद्धीए ॥ १८ ॥ 20
 समतिक्खंते दिवसे मासे संवच्छरे व जाणाहिं । णिव्वत्ते अणुत्तुरिते कडे य मुत्ते अतीते य ॥ १९ ॥
 संपत्तकाले दिवसे वत्तंते वत्तमाणदिवसे य । वत्तंते वासं वच्छरं तु मुण वत्तमाणेसु ॥ २० ॥
 दिवसे मासे संवच्छरे व पुरतो अणागते जाणे । सब्बम्मि अणुप्पण्णे उप्पज्झिहिंति त्ति विण्णेतो ॥ २१ ॥
 समतिक्खंते दिवसे मासे संवच्छरे य जाणेज्जो । णिव्वत्ते अणुमूत्ते कडे य भूत्ते अतीते य ॥ २२ ॥
 अतिवत्तेसु ण चूया अणागतं ण वि य वत्तमाणाइ । संपत्तमत्तिवत्ताणि य ण वागरे वत्तमाणेसु ॥ २३ ॥ 25
 उप्पण्णमतीतेसु अतिवत्तं जाण सब्बभावेसु । उप्पण्णवत्तमाणे अ वत्तमाणो ह्यति कालो ॥ २४ ॥
 सब्बम्मि अणुप्पण्णे उप्पज्झिहिंति त्ति णागतो कालो । उप्पज्जतेसु अणागतं व मुण वत्तमागं या ॥ २५ ॥
 उप्पुप्फ-ज्झीणफले मलिणफंले [तद् य] मलिण-सुक्खरतणे ।
 सुक्खरपत्ते व जुत्ते मते य यत्तुस्सए य कालो अतिक्खंनो ॥ २६ ॥
 मुण वत्तमाणकालं गणिज्जमौणे तिरिच्छमाणे या । दिज्जंते मुज्जते आदत्ते कीरमाणे या ॥ २७ ॥ 30

१ अतिस्सए ६० त० ॥ २ तलक्खरदुक्खे ६० त० णिग ॥ ३ अज्जागं ६० त० ॥ ४ पुण अणयिकम्मि लेहट्ट ६० त० ॥ ५ अट्ठागते य क ६० त० ॥ ६-७-८ उप्पण्णो ६० त० ॥ ९ णिण्णेतो ६० त० ॥ १० फले मत्तिणफले मलिणसुक्खरतणे सुक्खरपत्ते य मुत्ते मत्ते य यत्तुस्सए ६० त० ॥ ११ भागे विविज्जमाणे ६० त० ॥

पुष्प-फल-सस्त-उदयसमुद्रय य वत्तमाणम्भि । णजोव्यणकैस्सेसु चेष मुण संवदं कालं ॥ २८ ॥
 पुष्प-फलागं सस्ते अचिरा ओतरति वा सुदो सरदो । ठायंति वंधवत्या होहिति दुक्खेणं भोवब्बं ॥ २९ ॥
 एहिति दाहिति काहिति होहिति दिज्जिहिति लभिहिति य च्चि । दरसामो करसामो च्चि होति तु अणागतो कालो ३०
 संपदमणागतमतिच्छिद्यते व एक्कतरगम्भि भावम्भि । उँवयुत्ते पुच्छते सो कालो होइ बोधव्वो ॥ ३१ ॥
 5 आधारे तस्य चाहिरेण तम्मि तु वज्जायअविमत्तो च्चि । तिण्हं पि य कालाणं [.....] ॥ ३२ ॥
 पंचिदिएहिं पंचहिं सद-फरिस-रस-रूप-गंधा तु । जे फुड विष्णाता तस्य ते उप्पाता गणेयव्वा ॥ ३३ ॥

॥ पठमं पङ्कलं ॥ १ ॥ छ ॥

[वितियं पङ्कलं]

केयि च्चातिविसेसा गज्जा केयिच रूवसो गज्जा । केयी वण्णविसेसा केयि च्चि रसा रसविसेसा ॥ १ ॥
 10 केयि त्याणविसेसा गज्जा केयि च्चि जीवितविसेसा । केयि ण्णामविसेसा केयि तु वलावलविसेसा ॥ २ ॥
 सारगुणा सीलगुणा केयि कम्मगुणतो सुगोच्चं च्चि । मिदु-कटिण-णिद्ध-रूक्खा सी-उण्हगुणा य केयिं तु ॥ ३ ॥
 तेतेण सच्चभावा गज्जं तु भावविधिविसेसेण । इट्ठचणं उवगता विष्णेया माणुसे लोए ॥ ४ ॥
 जे पाणजोणिया मूलजोणिया धातुजोणिया वा वि । उप्पाया उप्पण्णा एताय विधीय णातव्वा ॥ ५ ॥
 सव्वेसिं भावाणं अकित्तिमाणं च कित्तिमाणं च । इट्ठत्तमणिट्ठत्तं मज्झिमं च तिवियं पुणो णेयं ॥ ६ ॥
 15 इट्ठेसु दिग्घकालो मज्झिंइसु वि य मज्झिमो कालो । दोसमणिट्ठमसारेसु चेष अप्पो हवति कालो ॥ ७ ॥
 पुण्णामा सारलुता मज्झिमसारा य होति षीणामा । जे तु णुंसकणामा ते तु असारेसु बोधव्वा ॥ ८ ॥
 कालो तु महासारेसु मद्दंतो मज्झो य मज्झसारेसु । अप्पो य हवति कालो असारवत्तेसु सव्वेसु ॥ ९ ॥
 जय णामा तथ रूवा सदा गंधा रसा च्चै फासा य । पंचविधा उप्पाया एतेण गमेण णातव्वा ॥ १० ॥
 उप्पत्ति-विपत्तिमुभा दो वि [य] जे संभवति दव्वाणं । एगमहोरत्तेण तु तेसु सुहुत्ता सुगवत्वा ॥ ११ ॥
 20 उप्पत्ति(ची य) विपत्ती य उदया जे भवंति भावाणं । वस्सेहिं तेहिं वरसाणि होति उप्पज्जमाणेहिं ॥ १२ ॥
 निमिसंतमुत्सासा कट्ठा व लला कल्ल य वीसं तु । कालस्स एस आरी एगमुहुत्ता समक्खाता ॥ १३ ॥
 एते तीसं संसा तु सुहुत्ता जायते अहोरत्तं । एसो तु परो कालो भवति सुहुत्तप्पमाणस्स ॥ १४ ॥
 एतेसुप्पातविधीं सुहुत्तगत्स वन्नविस्सामि । जेसु समुदीरमाणेसु सुहुत्ता होति बोधव्वा ॥ १५ ॥
 जे य परंपरकिंसा परमाणू वा सयावरा उच्चा । जीवा-ज्जीवणिक्काया सव्वे उ सुहुत्तसंसाता ॥ १६ ॥
 25 ॥ उप्पातविधिपरिक्खायं उप्पत्तिता अघितयं जसुवदेसं पङ्कलं द्वितीयं ॥ २ ॥ छ ॥

[तृयं पङ्कलं]

उप्पातविधिं तु जहक्खेण बोच्छं दिवसवग्गात्स । उप्पातविधिं च पुणो सुहुत्तवगत्स बोच्छामि ॥ १ ॥
 पक्खुप्पातविधिं पि य ततिकं आगमं बोच्छं । मासुप्पातविधिं पि य बोच्छामि चतुत्थवग्गात्स ॥ २ ॥
 वत्साणं पि य उप्पातविधिं सव्वं जहक्खमं बोच्छं । संवच्छरं कुबोळिं "दीवो च्चि ण्णायसिस्स ॥ ३ ॥
 30 एतो अपरिमितविधिं अपरिमितवत्स तु पुणो वि कालस्स । कालमणंतं च पुणो गिरुद्धकालं च वण्णेस्सं ॥ ४ ॥
 उदु-यस्स-मास-पक्कं दिवसे य सुहुत्तगमं च । मंडलवित्तारेहिं य कीलणकउवक्खरविधीहिं ॥ ५ ॥

१ °कस्सेसु हं० तं० ॥ २ °ण होयव्वं हं० तं० ॥ ३ गहम्मि हं० तं० ॥ ४ देवजुते हं० तं० ॥ ५ कज्जिआविसेसा हं० तं० ॥ ६ केयि च्चि वण्णं हं० तं० ॥ ७ तेएण सच्चभागा हं० तं० ॥ ८ ज्जिमेसु हं० तं० विना ॥ ९ च्चै ए-
 विहान्तगतः श्लोक्यायिक्क पाठः हं० तं० नास्ति ॥ १० दीये च्चि हं० तं० विना ॥

वारसमासे संवच्छरे य जोतिसगतीय वण्णेस्सं । वारसमासे य पुणो उदुपेयालेण वण्णेस्सं ॥ ६ ॥
 एगाह-दुग-तिगा चरका पंचके च्छाहा सत्तरत्तं च । अट्ट णवके दसाहे पण्णरसाहे य वोच्छामि ॥ ७ ॥
 कालं जोण्हं च पुणो दिवसं रत्तिं च वण्णएस्सामि । एकमहोरत्तं वा बेलानं वण्णइस्सामि ॥ ८ ॥
 एत्तो वुट्ठीगंडय पुणो अग्रगंडय अगिगंडयं । पंचहि वि मूलयत्थूहि जधुत्तं कित्तियिस्सामि ॥ ९ ॥
 एकेकीअ य गाथा य मुहुत्ते य दिवसे य पक्खे य । मासे य पुणो वोच्छं मज्झिमकालप्पमाणम्मि ॥ १० ॥ १० ॥
 तण्णामे तंरूवेहिं चेव तन्मावविधिविसेसेहिं । एत्तो कालप्पमाणं अपच्छिन्नं वण्णयिस्सामि ॥ ११ ॥
 ॥ भगवतीय महापुरिसदिण्णाय अंगविज्ञाय कालणामावलिकायामध्यायस्वतीयः ॥ ३ ॥ छ ॥

[चउत्थं पडलं]

अंडसुहुमे य धीयसुहुमे य पणकसुहुमे सिणेहे य । वायू सदे गंधे सुहुमे सुहुमेसु सव्वेसु ॥ १ ॥
 सुहुलक-थोक-डहरक-अणुक-सुहुम-केस-मंसु-रोमेसु । एत्थ भवंति सुहुत्ता अन्नंतरतो अहोरत्ते ॥ २ ॥ 10
 सुहुलक-वराह-संखणग-सिप्पि-गंडूपदे जल्लका य । आसालिका वारवत्ते पाण्णयिका सुहेसु पेट्रेसु ॥ ३ ॥
 धिंकुण-लिकखा-पुण-चम्मकीड-फलकीड-धण्णकीडा [य] । सुत्तजगलिका कुंथू उरणी सुयम्मत्ता ॥ ४ ॥
 एवमादिका जीव (वा) विंदिका तिंदिका य तसकाया । सुकुमालका डहरका सव्वे तु सुहुत्तसंखाता ॥ ५ ॥
 पुप्फ-फलं धण-धण्णं सह-प्परिस-रस-रूव-गंधा य । सुकुमालका सुहुमका सव्वे तु सुहुत्तसंखाता ॥ ६ ॥
 कंग-रालकासामाक-वरक-सिद्धत्थका-सरिसवेसु । एत्थ सुहुत्ता णेया सुहुमेसु य सव्ववीयेसु ॥ ७ ॥ 15
 धण्णरते < वण्णरते > पंसुरये छारिका दगरये य । चुण्णेसु अंजणेसु य पदुमरयकतम्मि य सुहुत्ता ॥ ८ ॥
 सुकुमालका सुहुमका तिइंदिगा जे तु तेसु तु सुहुत्ता । थूलसरीरेसु तिइंदियेसु दिवसा विधीयंते ॥ ९ ॥
 सुहुलकेसु तु चतुरिंदिएसु दिवसा भवंति णातव्या । थूलसरीरे चतुरिंदिकेसु पक्खा विधीयंते ॥ १० ॥
 सुहुलकेसु तु पंचेदिकेसु दिवसा व हौति पक्खा वा । संवच्छर-मासा वा पंचेदिकथूलकायेसु ॥ ११ ॥
 सुहुलकेसु तु पंचेदिएसु एत्थ दिवसा व हौति पक्खा वा । संवच्छर-मासा वा थूलसरीरेसु पक्खीसु ॥ १२ ॥ 20
 सिग्घ-चवलेसु महु-सुहुमकेसु पुप्फेसु अप्पसारेसु । आसण्ण-पसण्णेसु य एत्थ सुहुत्ता उ वोधव्या ॥ १३ ॥
 किंकि क्लसं सुहुत्तं धिंदुं थोणं विपक्खे सिद्धं । वट्ठीयते पडिच्छह एत्तं तु सुहुत्तिओ कालो ॥ १४ ॥
 अणुसुहुमम्मि य काए जति काया पंडिता व गणिता वा । तति तु सुहुत्ता णेया हौति सुहुत्तप्पमाणम्मि ॥ १५ ॥
 ॥ महापुरिसदिण्णाय अंगविज्ञाय कालप्पमाणो चउत्थो ॥ ४ ॥ छ ॥

[पंचमं पडलं]

सुम-णयण-कण्ण-णासोढ-पोरुसंगोढ-अंगुलिमाहणे । एतेसि भागाणं उवकण-उवकसरविधीसु ॥ १ ॥
 अतिसुहुमे मोत्तुणं सुहुलकेसु वि य सव्वसत्तेसु । आमास-सद-यंसण-कक्खेसु दिवसा मुणेतव्या ॥ २ ॥
 जल्लका-सुत्ता-कोलिक-घपोपल्लिकामु चेव अहिल्लका । भिगारी-आलकामु चेव दिवसा विधीयंते ॥ ३ ॥
 भमरा मधुकर तोडा पतंग तथ मच्छिका मगसकेसु । चउरिंदियतसपाणेसु एत्थ दिवसा विधीयंते ॥ ४ ॥
 कडुकालमच्छसिकुवलिका तथ विकलका व पलकेसु । छिर-कुरिर्ल-सिगिलि-मंडूकलिआसु तथेव ॥ ५ ॥ 30

[सत्तमं पडलं]

कडि-उदर-पट्टि-उरसी-सीसामासे य मासिको कालो । आभरणपक्खारते एतेसिं चैव भागाणं ॥ १ ॥
 ह्य-गय-खरोट्ट-नो-माहिदेषु सत्तेसु कायवत्तेसु । मासा विण्णातव्वा सव्वेसु महासरिरेसु ॥ २ ॥
 वग्घ-उच्छ[मह-]दीपिक-तरच्छ-खग्ग-वगसावदेसु पि य । रोहित-पसत-वराहेसु चैव मासा विधीयंते ॥ ३ ॥
 विपुलणदीमच्छेसु व मज्झिमकेसु य समुद्मच्छेसु । मासा विण्णातव्वा गाह-मगर-सुंसुमारोसु ॥ ४ ॥ 5
 हंस-कोंचेसु किण्णरेसु कुक्कुड-मयूर-फलदंसे । मासा विण्णातव्वा पारेवत-चक्रवागेसु ॥ ५ ॥
 भासकुण-महासकुणा दिग्घग्गीवा य दिग्घपादा य । मासेसु समक्खाता पारिप्पव-डंकरालीओ ॥ ६ ॥
 गदो कुरलो दलुका भासा वीरह-ससपाती । मासेसु समक्खाता छिण्णंगाला ककीओ य ॥ ७ ॥
 सव्वे य दीहक्रीलौ दव्वीकर-मोलिणो य णातव्वा । मासेसु समक्खाता भिंगारी गोनसा चैव ॥ ८ ॥
 उगविसेसु मुहुत्ता सप्पेसु इयंति विसविसेसेण । सप्पेसु तु मंदविसेसु एत्थ मासा समक्खाता ॥ ९ ॥ 10
 सेतेसु होति जोण्हा कालो पुण होति कण्हसप्पेसु । चित्तेसु माससंधिं संहा पुण होति लोहितके ॥ १० ॥
 तलपैक-णालि-केसुक-पिट्ठ-लुकुलेसु < चैव पणसेसु । > कार्लिङ्ग-तुंय-कूमंडगेसु मासा विधीयंते ॥ ११ ॥
 पेंडीसु य गोच्छेसु य पुप्फ-फलेसु य सर्वेट-णालेसु । पोट्टलकभारवद्धे जमलकवद्धे ठियामासे ॥ १२ ॥
 भंडेसुवकरणेसु य पुप्फ-फलेसु वि य कार्यवत्तेसु । दीहेसु वित्थतेसु य महासरिरेसु पि य मासा ॥ १३ ॥
 वेतोपकरण-पुराण-सुत्तेरक-सुतीसोपकेसु सव्वेसु । रुणियमासेसु सुवण्णमासके माससो वृया ॥ १४ ॥ 15
 [.....] पायग्गदणे य दोण्हं पि वाहुणं जाण । उभयोपक्खाय समागतम्मि मासा विधीयंते ॥ १५ ॥
 सव्वमहाकथेसु वि जावतिवा पिंडिता व गणिता वा । तति मासा णातव्वा होति मासप्पमाणेणं ॥ १६ ॥

॥ पडलं सम्मत्तं (सत्तमं) ॥ ७ ॥ छ ॥

[अट्टमं पडलं]

एतेसु चैव अतिक्रयेसु तु भवंति वत्साणि । कुल-जाति-माण-रूपाधिके य बहुमुह्णसारे य ॥ १ ॥ 20
 उम्मज्जित्णमंगे उम्मट्टेसु वि य सव्वगत्तेसु । विच्छिण्णधितामासे उडुंगारणं व आमसे ॥ २ ॥
 देविंदो णागिंदो असुरिंद-महिंद-नवरिंदो त्ति । सीहो हयो गयो णरवो त्ति संवच्छरूपाया ॥ ३ ॥
 सुरवति धणवति जलवति पोतवती णरवती णडवति त्ति । तारावती गँहवती जोतिपती जोतिसपति त्ति ॥ ४ ॥
 आयरिय-उवञ्जाया अम्मा-पिउ-गुरुजणे य सव्वम्मि । देवा रिसयो त्ति य साघवो त्ति संवच्छरूपाया ॥ ५ ॥
 जगपति गणपति कुंलपति जूहपती निगपति त्ति वत्साणि । गोपति पयापति त्ति य वत्साणि भवंति एतेसु ॥ ६ ॥ 25
 जंडुदीवकघासु य अत्थगिरीसु उववण्णणायं च । वत्सधर-वत्सपरिकित्तणाय वत्साणि जाणेज्जो ॥ ७ ॥
 दीवो त्ति समुदो त्ति य अकम्मभूमि त्ति कम्मभूमि त्ति । तेलोकं पुडवी पव्वतो त्ति संवच्छरूपाता ॥ ८ ॥
 अतिदूरं अतिदिग्धं अतिमहत्तेसु अतिमहग्घेसु । उंगे कोट्टित्त-धणिते धणितवद्धे य वत्साणि ॥ ९ ॥
 चिर-दीह-सत्सव-विमदिदेहिं संवच्छरेहिं जाणाहि । थिर-वलिक्क-धुयकारे अतियहुमत्तवत्कारे य ॥ १० ॥
 सव्वेसिं भावाणं चिरिणेत्रत्तीय जाण वत्साणि । जोतिसमंडल-मुडवीमंडलं एक्कवक्के य ॥ ११ ॥ 30
 णगरणिवेसक्तेसु य पासाडुदधी-णदीकधार्यं वा । हत्थीणं व पदेसु भवंति संवच्छरूपाता ॥ १२ ॥

१ रदो कुं हं तं ॥ २ क्रीडा य द् हं तं विना ॥ ३ पच्छणां हं तं ॥ ४ यवत्तेसु हं तं विना ॥

५ वेओवयकपु हं तं ॥ ६ सु उभयं त्ति च हं तं ॥ ७ गयवई जोगवई जोतिसं हं तं ॥ ८ जलपति हं तं ॥

९ तवणिण यणि हं तं ॥

हृत्पी पञ्चतर्मतो अस्ते य भवन्ति मालयंतो त्ति । वसभो य हृत्पिनेतो त्ति वेति संवच्छरूपाता ॥ १३ ॥
 पक्खीसु माणुसेसु य कीडेसु चतुप्पदेसु य तथेय । पुप्फफले दब्बेसु य वस्साणि अतिप्पमाणेसु ॥ १४ ॥
 अतिकामेसु वि य तथा जति काया पिंडिता व गणिता वा । तति वस्सा णेतव्वा भवन्ति वस्सप्पमाणम्मि ॥ १५ ॥

वस्समणणाविमंगं पण्णरसविधं पुणो वि वोच्छामि । पंचहि वि मूलत्थु एकेण तथा विमंगेणं ॥ १६ ॥

- 5 मिण्णदसम्भनमाणं वस्साण पुणो सुहुत्तवग्गम्मि । दस चत्तारि य वस्साणि जाण दिवसप्पमाणेसु ॥ १७ ॥
 पण्णरम चेय वस्सा पक्खपमाणेण ह्येति णेतव्वा । मासपमाणे तीसा चत्ता पण्णा य सट्ठी य ॥ १८ ॥
 सट्ठी व सत्तरी वा असिती णत्ती सयं च जाणेज्जो । वस्सपमाणुप्पाते वस्साण सहस्सवग्गे वा ॥ १९ ॥
 सुहुत्तप्पमाणमसारे विण्णेय भवन्ति वस्साणि । छम्मासमसारेसु तु तथ य महासारवंतेसु ॥ २० ॥
 दिवसप्पमाणमसारे दस वस्साणि तु भवन्ति णेयाणि । चोदस मज्झिमसारे वीसा य भवे महासारे ॥ २१ ॥
- 10 पक्खपमाणमसारे पण्णरसेय तु ह्यन्ति वस्साणि । तीसं व मज्झसारे पण्णत्तालीसा महासारे ॥ २२ ॥
 मासं पमाणसारे तीसा चत्ता य मज्झसारम्मि । पण्णासा सट्ठी वा मासपमाणे महासारे ॥ २३ ॥
 वस्सपमाणमसारे सट्ठी वा सत्तरी व्वा यासाणि । मज्झिमकम्मि असीती णत्तुती व सतं महासारे ॥ २४ ॥
 कोडी अपरिमिनं वा अपरिमितेहिं सुण सच्चमावेहिं । ऊणाधिको दसाहो संजोगविहीहिं बोयव्वो ॥ २५ ॥
 जे पुव्वं उप्पण्णा पंचविधा विसमकं उदीरन्ति । जे आसण्णा बहुका धुया य ते वग्गमूलणि ॥ २६ ॥
- 15 ~~हु~~ जति मिसा उग्घाया पंचविहा विसमकं उदीरन्ति । जे आसण्णा बहुका धुया य ते वग्गमूलणि ॥ २७ ॥
 जे थोमा जे तुहा दूरे पच्छा य जे उदीरन्ति । ते वस्सदसक्कयाणं वग्गमं होति णातव्वं ॥ २८ ॥
 वस्सपमाणुप्पाता जति तति वस्साणि ह्येति अंगेसु । जति मूले विण्णते पुणरवि एते उदीरन्ति ॥ २९ ॥
 मासपमाणुप्पाता जति तति मासा ह्यन्ति अंगेसु । जति मूले विण्णते पुणरवि एते उदीरन्ति ॥ ३० ॥
~~हु~~ पक्खपमाणुप्पाया जति तति पक्खा ह्यन्ति अंगेसु । जति मूले विण्णाए पुणरवि एए उदीरन्ति ॥ ३१ ॥
- 20 दिवसपमाणुप्पाता जति तति दिवसा ह्यन्ति अंगेसु । जति दिवसदसक्कयाणं पुणरवि एते उदीरन्ति ॥ ३२ ॥
 जति तु सुहुत्तपमाणा तति तु सुहुत्ता ह्यन्ति अंगेसु । जति वरसदसक्कयाणं पुणरवि एते उदीरन्ति ॥ ३३ ॥
 मूलदसक्खे ऊणे दसउट्ठ वस्साणि अंगाकं होति । मासा वा पक्खा वा दिवस-सुहुत्ता व णातव्वा ॥ ३४ ॥
 वरमाणि य विण्णते केवटिया केत्तियाणि वि पुणो वि । तावटिया णातव्वा कत्तम्मि पण्णाविसेत्तम्मि ॥ ३५ ॥
 सुहुत्तानि भादराणि य जति दब्बानि गण्णगग्गे ह्येति । तति वस्सा णातव्वा पक्खा दिवसा सुहुत्ता वा ॥ ३६ ॥
- 25 जय कालो तथ लामो तथ य सुदं जीवियं तथ य दिग्घं । तथ दब्बानं सारो तथ टाण्णया य बोयव्वा ॥ ३७ ॥

॥ पदलं ॥ ८ ॥ छ ॥

[पत्रमं पदलं]

पासुण निमीपं ति य मोग निरुदो तथेय थिमियं ति । मंतो अ र्हस्सं ति य अपरिमिनो जायते कालो ॥ १ ॥
 दुप्पमं उप्पेहेनं र्थित्तिरियत्तकं ति सुपिनं ति । एयादीया सारा पट्टिरूपा दिग्घकालम्म ॥ २ ॥
 पन-पण्ण-एप्पनपससु येय जुद्धे व मध्यसत्ताणं । अपरिमिता उप्पाया अपरिमिति होति कालम्मि ॥ ३ ॥
 सोहो वेदो ममपो अत्थो पग्गो तथेय कामो ति । अपरिमिता बोयव्वा अविमत्तनमासवग्गेसु ॥ ४ ॥
 वदं मंपो ति म्मो महात्तजो आउलं निक्कयो ति । रत्तं देमो ति य जनरुदो ति कालो अपरिमिज्जो ॥ ५ ॥

१ "मग्गे अ" ६० ॥ २ वरप्या ६० ॥ ३ ह्यन्ति-वर्णने-अं-अं-६० ॥ एए वत्ते ॥ ४ ह्यन्ति-वर्णने-अं-अं-६० ॥ एए वत्ते ॥ ५ मिकं ६० ॥ मिका ॥ ६ वट्टिए परिपट्टी ति अवि" ६० ॥ ७ ॥

चिंता मर्णोरयो चि य हितयागूतं ति अंधंकारो चि । ठड्याऽऽवरितं अंतैपुरं ति सुद्वीं समगो चि ॥ ६ ॥
वीर्यं रासीं पेयैलितं ति भरितं, ति संतं चि । अणुमाणं संकं ति य अपरिमितो जायते कालो ॥ ७ ॥
सन्वे जीवणिकाया अचला य अविकंपिणो चैव । अपरिमिता पातव्या कायसमासोवलद्वीयं ॥ ८ ॥

पुदवि दगं अंणणि मारुय आर्कासं सह (तह) य मूलजोणीओ ।

अपरिमिता पातव्या कायसमासोवलद्वीयं ॥ ९ ॥

निव्वट्टणां विभत्ता एते ज्वेव तु भवंति संखेज्जा । अविभत्ता य अणिवैवट्टिता य ते चैव संखेज्जा ॥ १० ॥
देविट्टी देवजुती पलिवोयम सागरोवमं य चि । कोसो [य] णिधि चि महाणिधि चि कालो अपरिमेज्जो ॥ ११ ॥
अतिअग्गी अतिवातो अतिवासं भेदितं डमरितं ति । सञ्जीय-ऽज्जीवाणं अतिउदयं सव्वदव्वाणं ॥ १२ ॥
अतिपेम्ममतिपदोसो अतिधुति-अतिर्गजियकधासु । अतिसदे अतिअव्वाडले य कालो अपरिमेज्जो ॥ १३ ॥
अलसर्मभारो भीरुं अतिक्किणो मंथरो चि वा सदो । मच्चल्यो चि पमत्तो चि पंगुलो दिग्घपरिसं चि ॥ १४ ॥ 10
एवतिया सन्वे चिरकारी जे चिराहि य भवंति । एतेसिं उप्पत्तीय दीहकालो ह्वइ गेयो ॥ १५ ॥
साहसिको मेहावी लहुको सद्धो चि मुक्कट्ठो चि । चंडो सूरु दच्छो चि चैव सिग्घो ह्वति कालो ॥ १६ ॥
आदि णिषणं च जस्स तु ण णज्जते अणज्जते य वुत्ततो । एरिसका उप्पाता विष्णातव्वा अणंतत्ते ॥ १७ ॥
गम्भा सुद्धो मासे ज्ञावज्जीवे तवे य नियमे य । कोमारवंभचेरे य अणंतं णिहिसे कालं ॥ १८ ॥
पाली मेरा सीमंतिक चि मुंगति चि छिण्णय्यो चि । पागारो फलिहो चि य वति चि कालो णिरुद्धो चि ॥ १९ ॥ 15
कालम्मि णिरुद्धम्मि उ विट्ठं आगत समागतं यो वि ।

इत्थं वा उप्पणं तं वा वि आगते पुच्छियं सव्वं ॥ २० ॥

जं जावतितं लभती जं मगति तं च दिस्सती ताघे । जं इच्छति तं उप्पज्जते य पडिपुच्छणाकाले ॥ २१ ॥
जं विच्छते करेति य कम्मं सिप्यं णयं विमंमं वा । [.....] णिप्यं च णाणाभिर्गमंमं वा ॥ २२ ॥
आहारे णीहारे सरीरममंतरे य मज्जे वा । समयप्पणो परस्स व मित्तममित्तरस वा किंचि ॥ २३ ॥ 20
इच्छति विसयगुणं वा कंचि घम्म-ऽस्य-कामजोगं वा । अणं वा सुभमसुमं तं चैव णामं च तंवेलं ॥ २४ ॥
सव्वम्मि कडे दिण्णे दिट्ठे सम्माणिते वा वि । मणहुक्खं णिच्छिण्णं संपत्तिं इच्छितं जाण ॥ २५ ॥
इच्छितसंपत्तीसु वि तसकायाणं च थावरणं च । तंवेलमुवणतासु तु उववण्णत्थं वियाणेज्जा ॥ २६ ॥
सञ्जीय-ऽज्जीवेसु य उववणेसु वि य माणुसाणं पि । तंवेलमुवणतेसु य उववण्णत्थं वियाणेज्जो ॥ २७ ॥

॥ पङ्कलं [णवमे] ॥ ९ ॥ छ ॥

25

[दसमं पङ्कलं]

संयच्छरं महामंडलेसु मज्झिममंडले मासं । सुइलमंडलेसु य अद्दोत्तं वियाणेज्जो ॥ १ ॥
णक्कत्तमंडलं उद्दामंडले चंदमंडले मासा । [.....] सूरमंडले* वस्समो जाणे ॥ २ ॥
जाणेय मंडलेसु तिबिघेसु सुइलम-मज्झिम-मंडले^१ । दिवसं पक्खं छम्मासमेव वित्यारजोगेगं ॥ ३ ॥

१ *पुरम्मि सु^१ हं० त० ॥ २ वेया^२ हं० त० ॥ ३ *तं निसंभंति हं० त० विना ॥ ४ अग्गि मा^३ हं० त० विना ॥
५ *णिज्जं टियापए चैव हं० त० ॥ ६ *गदिययं हं० त० ॥ ७ *एतथिहान्तर्गतं पाठः हं० त० नास्ति ॥ ८ *अटारो
हं० त० विना ॥ ९ *चंदो हं० त० विना ॥ १० *एतथिहान्तर्गतं पदं हं० त० नास्ति ॥ ११ सुमगम्मि छि^४ हं० त० ॥
१२ या वि । आगते पुच्छियं सव्वं लामालामं वियागरे ॥ २० ॥ जं जाय सि ॥ १३ इत्थिहान्तर्गतं पाठः हं० त०
एव यंते ॥ १४ जं तिच्छते हं० त० विना ॥ १५ *मिमत्तणं सं ३ उ० ॥ १६ *उद्दत्तासमं हं० त० ॥ १७ *ले पुद्दमंडले
यस्सं सि ॥ १८ *मणंते हं० त० विना ॥
अंग० ३१

दारुकीलणगेषु वि चतुचकीया भवेज्ज उयवती । चत्तारि अहोरेत्ते य जाण चत्तारि वा मासे ॥ ४ ॥

दारुकीलणगेषु वि वे चक्कलगाणि होंति पुंताणि ।

वे होंति अहोरेत्ता वे वा मासा विधीयंते ॥ ५ ॥

पल्लंकेचक्कले दिवसे मासे य जाण चत्तारि । धाडीचके मासे वस्सं तु भवे सकडचके ॥ ६ ॥

एतेण कारणेण तु मूलं कालस्स सुहु कातव्वं । जम्मि भवंति सुहुत्ता दिवसा मासा य वस्सा वा ॥ ७ ॥

पुप्फ-फल-भूसण-ऽच्छादणे य उवकरण भत्त पाणे वा । सञ्जीवा-ऽजीवं वा उपपञ्जति जं णिमित्तम्मि ॥ ८ ॥

जघ तू रससंभूतं जघ य महग्घं जहो महासारं । जघ जाती अविसिट्ठं तथ दिग्घं णिहिसे कालं ॥ ९ ॥

जे कसका जे य विपुलसरीरा ते रसदीहकार्लभूया । विपुलसरीरेसु य जे कसका दिग्घसकालजुत्ता ॥ १० ॥

सिग्घमणिट्ठप्पाते ओयवति सिग्घमो अणिट्ठस्स । अभिलसितसिसिचैल्लभो सिग्घं इट्ठोपपत्तीसु ॥ ११ ॥

जघ मूलं तथ थोगं जघ य समग्घं अजातिमंतं वा । जघ सुलभमप्पसारं तथ थोगं णिहिसे कालं ॥ १२ ॥

पीतिररे अणुयद्धो भवति धणइट्ठधणसुइस्स । टुकखस्स वि अणुयंधो भवति अणिट्ठाणुयंधेसु ॥ १३ ॥

पघग-न्सारस-ण-न्तरुणेणो दिवसा इवंति पंकरा वा । परिणतजुण्णगते रसेसु मास-संवच्छरे जाण ॥ १४ ॥

मासपमाणे य महुम्मि उत्तविसंमं व यमलिते मासा । विसंमेधेसु तु पक्खा समागमागमसंमेसु वस्साणि ॥ १५ ॥

जं दिस्सते छलंसं उव्यंते छ उदू वि जाणेज्जा । जं वा सण्णा अंसितं तं वा तं ते उदू जाण ॥ १६ ॥

सुंभलवा पेलगसुवुट्ठेणो मालिकामु यट्टासु । सीसायकम्मि सव्वम्मि उत्तमत्वं विजाणीया ॥ १७ ॥

पुण्णामेसु तु पुप्फोवधेसु मासा य होंति धासा वा । पुप्फोवकत्विणामे रातीओ होंति पक्खा वा ॥ १८ ॥

संवच्छरेसु कुट्टेवट्ठेणो साराणुसारतं य धदे । पुप्फोवधेसु मासा पक्खा दिवसा य णातव्वा ॥ १९ ॥

अहे मत्ते सव्वम्मि सुहुत्ता अहेसरभावेणं । परिमलित-मिळाणेण य विलंबितं कालमो जाण ॥ २० ॥

एतेव सव्वदव्वेसु गमो पाणे य भोयणे वा वि । सदे वा रूवे वा एण गमेण गंतव्वं ॥ २१ ॥

॥ [पडलं दसमं] ॥ १० ॥ छ ॥

[प्रकारसमं पडलं]

पुरिमंगाणामासे पुव्वदिसाय य ओयलदीए । कत्तिय-मग्गसिर-पोसमासेसु जाणीया ॥ १ ॥

संवच्छरलदीयं अगेयं मग्गसीस पोसं या । [जाणे] संवच्छरमो पुव्वदिसि पुररिधमंगेसु ॥ २ ॥

दक्खिरगगत्तामासे पुणो य दक्खिरगदिसोयलदीयं । माहं फग्गुण चेत्तं वेसाहं वा धदे मासं ॥ ३ ॥

संवच्छरलदीयं संवच्छर-माह-फग्गुणं वा वि । चेत्तं वेसाहं वा दक्खिरगदिसि द्दिररगंगेसु ॥ ४ ॥

पच्छिमगत्तामासे अथरदिसायं च ओयलदीयं । जेट्टामूला-ऽऽसादा-सावणमासं पं मासेसु ॥ ५ ॥

संवच्छरलदीयं संवच्छरमिंद विसं विण्णुं वा । संवच्छरमो मूया पच्छिमदिसि पच्छिमंगेसु ॥ ६ ॥

याने गत्तामासे पुणो य उत्तरदिसोयलदीयं । पोट्टपद-ऽऽसोत्तं वा मासं मासेसु जाणीया ॥ ७ ॥

पोट्टपदं वा संवच्छरं तु संवच्छरं च अस्सोयं । संवच्छरलदीयं उत्तरदिसि यामगंगेसु ॥ ८ ॥

१ उपयत्ति ६० त० मिना ॥ २ इण्हित्तगतं वाः ६० त० एव वतंते ॥ ३ ककुचं ६० त० ॥ ४ य पक्खा वा ६० त० ॥ ५ हा इत्तामासे ६० त० ॥ ६ लज्जुत्ता ६० त० मिना ॥ ७ प्खलामा सिं ६० त० ॥ ८ जणुमूलतय-
व्योमं जघ ६० त० मिना ॥ ९ भवति राप्यअणिं मि ॥ १० पक्खो ६० त० ॥ ११ एतं चयमलिये मासा ६० त० मिना ॥
१२ गमयथु ६० त० ॥ १३ एतसु ६० त० ॥ १४ अतितं यथा स ६० त० ॥ १५ पुपल कापेलं ६० त० ॥
१६ ण्णामासे तु ६० त० मिना ॥ १७ तु दूट ६० त० ॥ १८ अण्णे मं ६० त० मिना ॥ १९ अण्णत्तं ६० त० मिना ॥
२० :- :- एववत्तं ६० त० मिना ॥ २१ य सेरेसु ६० त० ॥

उद्धंगाणामासे पादुच्चावे य थावरणं तु । फगुणमासाढं वा पोट्टपदं वा वदे मासं ॥ ९ ॥
 संवच्छरलद्धीयं फगुणमासाढ पोट्टपादो वा । संवच्छरमो वूया दद-थावर-सासते भावे ॥ १० ॥
 चलमंगाणामासे पादुच्चावे य चंचलाणं तु । सावणमासं वूया मासुप्पातोपलद्धीय ॥ ११ ॥
 चलमंगाणामासे पादुच्चावे य चंचलाणं च । संवच्छरलद्धीयं सावणसंवच्छरं वूया ॥ १२ ॥
 सोवण पोट्टपदं वा अरसोयं कत्तियं च मासेसु । पुण्णदग्गभायणेसु य निद्धंगणं च आमासे ॥ १३ ॥ ५
 सावण पोट्टपदं वा अरसोयं कत्तियं च जाणीया । संवच्छरमो वूया णिद्धे वासोवलिगे य ॥ १४ ॥
 चेत्तं वेसाहं वा जेट्टामूलं तवेव आसाढं । मासं मासेसु वदे रुक्खे गिम्होवलिगे य ॥ १५ ॥
 मग्गसिर पोसमासं माहं वा फगुणं व जाणीया । मासेसु सीतभावे तवेव हेमंतलिगे य ॥ १६ ॥
 तं चेव जपुदिहं संवच्छरलद्धियं च जाणेज्जो । संवच्छरे तु चउरो सीते हेमंतलिगे य ॥ १७ ॥
 पीहारेसु तु पक्खा उज्जुभावेसु पुण संथिते मांसा । अहोरोत्ते [पुण] पक्खं वदे तु पक्खप्पमाणमि ॥ १८ ॥ १०
 ॥ [पडलं पकारसमं] ॥ ११ ॥ छ ॥

[वारसमं पडलं]

तेरुणकुल-किसल-पत्तलकेहि अंडकित-जालकेहि वि य । आसित-मोसित-ओकुंभआगमे पाउसं जाणे ॥ १ ॥
 अज्जण-कुट्टय-कतवे सिलिध-कंदलि-कुडुवके चेव । दहुर-भयूरुगजितपडिरूवे पाउसं वूया ॥ २ ॥
 खेत्तप्पवत्तणे वीजणिगमे वीयवावणे यावि । गहकरण-पज्जणेसु य उदग्गपरणालिकरणे य ॥ ३ ॥ 15
 वासारत्तिकमंडगहसुयणकावसुत्तकहणेसु । वाहणपडिसामण्णेसु य जलं ति णवपाउसं वूया ॥ ४ ॥
 साटिकसीहलंबंधयतववेसिसाणिअणिकक्खदिसेसु । णिट्टुलसंलावेसु य आसाढं मासमो वूया ॥ ५ ॥
 हरिं व सहलं ति य पक्खरूढतणं ति जातससं ति । णिद्धिज्जति ससं ति य सावणमासं विजाणीया ॥ ६ ॥
 पुण्णपलोदियतदकभायणेसु अच्छायकुप्पवट्टे य । वहलकअच्छाणीक ति पोट्टपादो भवति मासो ॥ ७ ॥
 मज्झविगाढे षीट्ट उलुंविती वीलिणं ति य किलिण्णे । अभिवद्धमणगेण य पोट्टपदं मासमो जाणे ॥ ८ ॥ 20
 इंदसयणे य इंदमहभंडके इंदमोयकरणे य । इंदधणुइंदणामेण पोट्टपादो भवति मासो ॥ ९ ॥
 सैली गम्भणिका व ति तिति सुज्जे य वीहित्ठिकं । वूया पक्ख ति य तिला य ओपुप्फित ति वदे ॥ १० ॥
 अस्सेइस्सेइ णयमिक ति णीरौणिगा धरुंयं ति । अरसोयं पुण मासं अन्मुत्थाणे णरपतीणं ॥ ११ ॥
 दारुणाढं कत्तिय अमया माहातयो सजीवंती । बहुलं मासं वूया वधमोक्खे बंधमोक्खे य ॥ १२ ॥
 उववासो दाणं ति य देवतपूय ति साधुपूय ति । बहुलं मासं वूया उदुवरयुयो विवुद्धो ति ॥ १३ ॥ 25
 णिवद्धमच्छुदुगं विमलणमं सारसा सुप सैरदो । दीया हंसति तथ दंतिक ति दाणं यतोववासो ति ॥ १४ ॥
 देवसस वा वि र्धवणं उदुवरयुयो विवुद्धो ति । यसागाथा उवरं उवयुत्ते पुच्छंते सो कालो होति वोयउरो ॥ १५ ॥
 आधारेत्तउवं चाहारेण तम्मि तु भवंति जे भाया । तज्जाता तंरूवा भवंति ते ॥ तं पि काळण ॥ १६ ॥
 पंचिद्विण्हिं पंचहिं सद-फरिस-रस-रूव-गवेहिं । अग्गिकते अग्गिकम्मि य बहुलं मासं विजाणेज्जो ॥ १७ ॥
 पच्छा जक्खो धणकं मुरपितपहदीवक्खतो ति । मुण मग्गसीसमासं इद्धिमकडे धमकनदे ॥ १८ ॥ 30

१ भागे ६० त० ॥ २ हत्थविहान्तं गंतोऽयं श्लोः ६० त० एव वतते ॥ ३ 'मासे ६० त० विना ॥ ४ 'मासे ६० त० ॥
 ५ तरुणकिलरसकिलपत्तकेहि ६० त० ॥ ६ 'रमजि' ६० त० ॥ ७ सत्तप्पवट्टणे ६० त० ॥ ८ 'पट्टणा' ६० त० ॥
 ९ 'सुतणकाधमत्तग' ६० त० विना ॥ १० 'लवपत्तयविसेज्जणणिक' ६० त० विना ॥ ११ णिट्टे ६० त० विना ॥
 १२ 'लणेति य ६० त० विना ॥ १३ सारलीगमणकारत्तितं ति सु' ६० त० ॥ १४ 'स्ता अलेई' ६० त० ॥
 १५ णोरा' ६० त० ॥ १६ 'लाणं ति ६० त० ॥ १७ सट्टो ६० त० विना ॥ १८ ज्वणं ६० त० विना ॥ १९ तेयं पि ६० त० ॥

संगलिंगं खीरदुमे चतुष्पदे खीरिणीसु खीरेसु । मुण मगसीसमासं सोम्मे वा सोम्माणमे वा ॥ १९ ॥
जाणमवट्टण-यत्तप्पवहणे पुट्टंस्सस्समलणे य । मुण मगसीसमासं गिरिजणे भूमिज्जाणे य ॥ २० ॥
सीतं हिमं ति वा सीतलं ति वीहमहिळा गिसा वीहा । थीउत्तरे जुगलमे य एत्थ पोसो भवति मासो ॥ २१ ॥
इंगालसगडिका-अग्गिचुद्धके तावणे य अग्गिम्मि । गम्भघर-कंबलणिसेवणे य पोसो हवति मासो ॥ २२ ॥
धीणं महाजणे पुरिसवद्धणे भाहमासमो बूया । पोतकथमासिकत्थे सद्धे ओछाडित्ते चेव ॥ २३ ॥
सब्बम्मि सीतभावे सायं गीत-अग्गिसेवणाए य । एत्थ वि माहो मासो अणोज्जवांसं वित्सेसो वा ॥ २४ ॥
णर-णारीमिधुणगतस्स उरसवे मेधुणप्पसंगेसु । दित्सेसु य मुदितेसु य फग्गुणमासं वियाणेज्जा ॥ २५ ॥
सीतकखयपरिणामे उवगमेसु वि य उण्हभावस्स । णञ्चुण्हा सीतेसु य फग्गुणमासं वियाणीया ॥ २६ ॥
आपाणणप्पमोदे उद्धे गीत वादिते हसिते । परमुयसदे चूतकुसुमे य मुण फग्गुणं मासं ॥ २७ ॥
जवकिंदीवर-सामाककुसुम-अंदोलका वसंतो ति । फग्गुणमासं बूया मत्तो अंदोलित्ते जणो ति ॥ २८ ॥
मिधुणसमागम-मेधुणकधासु सब्बेसु कोमलंगीसु । फग्गुणमासं बूया छणरत्तमंडणासु वि य ॥ २९ ॥
एत्थयमत्तुम्मत्ते वसंतलिंगे य कामलिंगे य । एत्थ वि चेत्तो मासो समे य पुण्णाम-थीणामे ॥ ३० ॥
समुदयमणुवद्धेसु य वसंतलिंगे य कामलिंगे य । चेत्तं मासं बूया समे य थीणाम-पुण्णामे ॥ ३१ ॥
यत्थगते रुवगते चित्तगते चित्तवण्णजोगे य । चेत्तं मासं बूया चेत्तो विविधे यऽलंकारे ॥ ३२ ॥
पुरसुत्तरे जुगलगे जव-नोधुमसंगदे गहपतीणं । मुण वेसाहं मासं णिदाधमासे उवणत्तम्मि ॥ ३३ ॥
पौडल-मट्टिक-वट्टिक-सीतजलनिसेवणेसु य णराणं । मुण वेसाहं मासं वीयणके णालवेदे य ॥ ३४ ॥
णिद्धुवण्णतावे अतिउद्धो वा पवाति पातो ति । तण्हा मगतण्हं चिं थं जेद्धामूलो हवति मासो ॥ ३५ ॥
तुच्छेसु यं लुक्खेसु य दगभायण-णट्टभायणेसु वि य । णदि-कूव-वलागेसु वि जेद्धामूलो हवति काळो ॥ ३६ ॥
अण्हिककउत्थोऽमित्तपणे छेत्ते पायाक्खयं । आपक्खवे य णेहक्खए व जेद्धो ति ता मासो ॥ ३७ ॥
णिद्धे वासारात्तं हेमंतं य मुण सीतवातं सीतभावेणं । उण्हेहि य लुक्खेहि य गिहं सुहेहि य मुणेहि ॥ ३८ ॥
जे जम्मि तम्मि भावे त्सकाया थावरा व सब्बे वि । तेसिं पादुब्भावेण येव तं तं उट्ठं जाण ॥ ३९ ॥
पुप्फ-फल-भूसण-ऽच्छादणेहि उवकरण-भत्त-पाणेहि । तं तं उट्ठं वियाणे जं जम्मि उदुम्मि भयमाणं ॥ ४० ॥
देव-मणुसा पक्खरी चतुष्पदा जलचरा थलचरा य । जे जं सोभंति उट्ठं तेहि तु तं तं उट्ठं जाण ॥ ४१ ॥
सञ्जीवा-ऽञ्जीवाणं उवलद्धीय वि उ सब्बभावाणं । तं तं उट्ठं वियाणे जं जत्स उदुत्स भयमाणं ॥ ४२ ॥

॥ पडलं वारसमे ॥ १२ ॥ छ ॥

[तैरसं पडलं]

मन्वे हवविसेसा < षण्णविसेसा > य पतिविसेसेणं । सुट्टरत्तमविण्णावा भंतिं फालस्स पडिरुयं ॥ १ ॥
मन्वे षण्णविसेसा रुवविसेसा य पतिविभागेणं । अशंतं विण्णावा भंतिं जोण्हस्स पडिरुयं ॥ २ ॥
अच्छीणि चंद-सूर अग्गी वीथे पभंकरा सन्वे । णाणुज्जोरो तेयो पम ति जोण्हस्स पडिरुयं ॥ ३ ॥
पक्खुण्णसे जेती पणरसते चंद-सूरमत्थमणे । अण्णावमविण्णातेण य फालस्स पडिरुयं ॥ ४ ॥
मुद्धं ति पंदरं ति य विमलं उज्जोत्तिवं पमा य ति । रिपसो ति णीरयो ति य पडिरुयं जोण्हपक्खरस्स ॥ ५ ॥
माणोलत्तिवालाकं पभमंति-नीलं तिमिरिधकारं ति । रत्ती उत्तासो ति य पडिरुयं फालपक्खरस्स ॥ ६ ॥

१ वेतंरुपमत्तिरुच्छे ६० त० ॥ २ थारात्तं ति भरस्सो य ६० त० मिया ॥ ३ पीडयमं ६० त० ॥ ४ य सुण्णेतु य ६० त० ॥ ५ छत्ते य पाक्खे ६० त० मिया ॥ ६ < षण्णविण्णावत्तं पदं ६० त० कात्ति ॥

यैकित्तं रिच्चं ति य लंछितं ति पडिसामितं ति णिक्खित्तं । अब्वत्तमदेसं ति य पडिरूवं कालपक्खस्स ॥ ७ ॥
 चन्निपणं मुक्कमवंगुत्तं ति पागण्डियं दंसियं धंदिदं वा । सुव्वचं दिस्सति पागडं ति जोण्हस्स पडिरूवं ॥ ८ ॥
 खुव्वति भारमतीति मुज्झति चि < जोण्हस्स [जाण] पट्टवणं । विमलं सुद्धं परिमज्जितं ति > जोण्हस्स पडिरूवं ॥ ९ ॥
 मइलतिकेणं कित्तकालगे चि कालस्स जाण पट्टमणं । मइले कालकियं ति य भवंति संपुण्णकालस्स ॥ १० ॥

॥ पडलं [तेरस्समं] ॥ १३ ॥ छ ॥

[चोद्दसमं पडलं]

एगदिवसंपपमाणे एगगे एगमाभरणगते यं । एक्कणियउवकरणे सत्तेसु य एक्कचारिसु ॥ १ ॥
 वैंगुलिगहणे विसु एक्कएसु आभरणएसु जमलेसु । मिधुणचरसत्तजमले जुवकरणे वेट्ठिओ कालो ॥ २ ॥
 भुमंगतर-णासगे तिक-इणु-मंज्झक्खयंतरे चेव । पोरिसि संवत्थि-सीसे तिगुलिगहणे तियं वूया ॥ ३ ॥
 ओणतमुत्थितमज्जियते य उल्लोइते [य] हसिते य । णट्टे गीते धाइते चउके य चतुरंता ॥ ४ ॥
 चउरंगुलिगहणेसु य [.....] चउपडागते य । पादतल-करतले विजुगलेसु चतुरत्तिओ कालो ॥ ५ ॥
 पंचंगुलिगहणेण थै जणहितयाणं व गहणजोगेण । सयणा-SSसणे सपुरिसे य पंचरत्तो भवति कालो ॥ ६ ॥
 गुप्फ-मणिवंधगहणेसु विसु य तिगेसु य तथेव जाणीया । विअसहिते य चउके वियाण छरत्तियं कालं ॥ ७ ॥
 तियसहिते [य] चउके वितिकम्मि य एक्कएण सहितम्मि । एक्कसहितेसु तिसु वा विएसु सत्ताहिओ कालो ॥ ८ ॥
 अट्टसु य एक्कएसु विसु य चउकेसु चउसु व विएसु । [..... ॥ ९ ॥ १५
] तिगतियुणे णवगणणे कते य जाणे णवाहं ति ॥ १० ॥
 पंचविगेसु दसाहो दसाहिभागे दसक्खणणिते य । कच्छवकंजलिकरणे उवणीवतुहुहस्थलंभे य ॥ ११ ॥
 पंचसहिते दसपखे मासद्वे पक्खिते य पखे य । पण्णरसाहं जाणे पण्ण[रस]सु एक्कणणंतेसु ॥ १२ ॥

॥ पडलं [चोद्दसमं] ॥ १४ ॥ छ ॥

[पण्णरसमं पडलं]

पुण्णामेसु य दिवसं थीणामेहिं रयणिं वियाणेज्जो । दिवसं दियाचरेहि य रत्ती रत्तिविचारेहि ॥ १ ॥
 दिवसकरणे तु दिवसं रयणिकरणे रयणिं वियाणेज्जो । मुज्जोदएण दिवसं रत्तिं चंदोदए जाण ॥ २ ॥
 उण्णेण जाण दिवसं रत्तिं र्त्तियेण संविजाणेज्जो । उज्जोवेण य दिवसं रत्तिं पुण अंधकारेणं ॥ ३ ॥
 सुज्जपरिवेस-इंदवणु-रायियासेण दिवसकं जाणे । सोमपरिवेस-विज्जुत-उक्कापातेण रत्तिं तु ॥ ४ ॥
 पासंबजणोपवयातेपलद्धीय दिवसमो वियाणेज्जो । चोप-SSरक्खिअचरितोपलद्धीयं रत्तिमो जाण ॥ ५ ॥
 समणजंभ-सावकजणसाSSहारे दिवसमो वियाणेज्जो । आजीयकआहारोवलद्धीयं रत्तिमो जाण ॥ ६ ॥
 दिवसाहारविधी अग्गिजं ति दिवसो चि संविजाणीया । कज्जोवदीविकदीवतारकादंसणे रत्तिं ॥ ७ ॥
 पडिसामित-णिक्खित्ते ठइया-SSवरितं ति रत्तिमो जाण । मुक्कमंपगुत-पागण्डिय-दंसिते दिवसमो जाण ॥ ८ ॥
 पयलाइव पासुत्ते सयिते रत्तिं वियाणेज्जो । वेट्टुट्ठितेसु दिवसं दिवसकडे कम्मजोगे य ॥ ९ ॥
 दिवरत्ति भूतरत्तीं सवेव आणंदसव्वरत्ति चि । रयणि चि सव्वरि चि य णिस चि रणता णिवियरत्ति ॥ १० ॥ ३०
 पुरिसे पुरिसोवकपुरिसपुरिसभावाण दिवसमो जाणे । 'महिलाभरणे दन्वेसु महिलिका भवति रत्तिमुहं ॥ ११ ॥
 दिवसको दिवसकम्मकं ति णिव्यापदियसो चि । आय-व्ययदियसो चि य दिवसेसु सम चि ये सहा ॥ १२ ॥

॥ पडलं [पण्णरसमं] ॥ १५ ॥ छ ॥

१ छकियं हं तं ॥ २ < १ > एतथिहान्तगतः पाठः हं तं नास्ति ॥ ३ विपुलिं हं तं ॥ ४ पादगलकरं सप्त ॥
 ५ य घणट्टिययाणं हं तं ॥ ६ उवकरणीचउहत्थं हं तं ॥ ७ पण्णगेसु दिं हं तं ॥ ८ मुज्जदिपरियसईदवणुं
 हं तं ॥ ९ तुट्टुट्ठियेसु हं तं ॥ १० महियामं हं तं ॥

[सोलसमं पडलं]

धारस मासा संबच्छरो त्ति भागेषु तीसती मासो । पण्णरसेव तु पक्खो तीसं भागे अहोरत्तं ॥ १ ॥
 एतस्स अहोरत्तसस पुणो तीसतिविधस्स णातव्वं । राति-दिवसपरिवट्ठी हाणी य पुणो गणेषव्वा ॥ २ ॥
 राती दिवसं च पुणो वट्ठी हाणी य सुट्ठु णात्वं । सव्वे वि अहोरत्ता वेलाहि पुणो गणेतव्वा ॥ ३ ॥
 5 एत्तो तिण्हि मुहुत्ता वेसंझाउट्ठिओ य मज्झण्हो । छ पुण्वण्हो वुत्तो छ अवरण्हो मुहुत्तो उ ॥ ४ ॥
 विमुहुत्तो मागधओ विमुहुत्तो हवति पातरासो वि । अणुमज्झण्हो विमुहुत्तमो त्ति तिविधो य पुण्वण्हो ॥ ५ ॥
 किं वा वत्ते सूरम्मि दियाभातो वि हवति विमुहुत्तो । अवरण्हो विमुहुत्तोणिये सूरु विविमुहुत्तो ॥ ६ ॥
 संजोगेति तिमिरहा उट्ठेत्तो दिणकरो दिसं पुव्वं । तेण सुणे पुण्वण्हं पुण्वदिसायोवलद्धीय ॥ ७ ॥
 संजोगेति तिमिरहा मज्झण्हे दक्खिणेण वधंतो । तेण सुणे मज्झण्हं तु दक्खिणदिसोवलद्धीय ॥ ८ ॥
 10 संजोगेति तिमिरहा अवरदिसं दक्खिणेण वधंतो । तेण सुणे अवरण्हं अवरदिसायोवलद्धीय ॥ ९ ॥
 पुण्वदिसाय इंदो तस्सुवलंभेण जाण पुण्वण्हं । अवरदिसाय वरुणो तस्सुवलंभेण अवरण्हं ॥ १० ॥
 दक्खिणतो पेयवती उत्तारतो धणवती दिसाधिवती । एतेसिं उवलद्धीय जाण मज्झंतियं वेलं ॥ ११ ॥
 जं जिस्से उप्पज्जति दिसाय विपदं चतुप्पदं वा वि । पुप्फ फलं दव्वाणि य तेण तु तं तं दिसं जाण ॥ १२ ॥
 ॥ पडलं [सोलसमं] ॥ १६ ॥ छ ॥

[सत्तरसमं पडलं]

मइलभ्भे रत्तकदंसणम्मि संझं तु पच्छिमं जाण । अभिणवरत्तकसंदंसणम्मि पुण्वा भवति संझा ॥ १ ॥
 रत्तच्छादण्यवधत्तिंभे^१ वेरत्तकंबलाणं च । पुप्फ-फल-रत्तमणिकेण कुंभेण य जाण सूरुदयं ॥ २ ॥
 रत्तंवरुत्तरिजे य दारणे रत्तमज्जणिज्जोगो । रत्तणिवत्याउवणिगममे य मुज्जोदया वेला ॥ ३ ॥
 पुण्णामापुणमणे पुण्णामेण खचित्ते य धीणामे । ओगायकवाहुपावियाय मुज्जोदयणवेला ॥ ४ ॥
 20 संदीवियग्गजलणे य जाण आलोकणे वणदवस्स । रण्णो वि य आगमणेण जाण मुज्जोदयणवेलं ॥ ५ ॥
 धालतिलकं च कण्णतिलमे य तवणिज्ज-पट्टुमतिलके य । उदितं सूरं जाणे उवणीते रत्तमले य ॥ ६ ॥
 एसाऽऽगतो णरिंदो त्ति सामिको सुपुरिसो त्ति वा बूया । जातं दाणि सणाधं ति जाण अइरुमातं सूरं ॥ ७ ॥
 देवतपूया-यलिमंगलकरणे सत्थीवायणकदेवा । विज्जुदीवेण अब्झापणे य मुण मागधं वेलं ॥ ८ ॥
 विपणीए सारणेण य पट्टवणेषु वि य दिवसकम्मार्णं । भत्तेवत्थोभे दोसिकम्मि मुण मागधं वेलं ॥ ९ ॥
 25 धालधतपज्जणेषु य मुहधोवण-मुंढकाणुदासेसु । रामगजणपारणासु य जाणेज्जो मागधं वेलं ॥ १० ॥
 ओलिहणंजण-तिलकरण-केसमंढण-मसाधणविधीसु । धालजुवतीजणस्स तु मागधियं वेलमो जाण ॥ ११ ॥
 सन्नम्मि पातरासे सिद्धवणीते य मुज्जमाणे य । दुट्ठुण्हिफ-दधितावे अवेह्ति-विलेपिकादीसु ॥ १२ ॥
 ककरपिण्डगंगावत्तगचुकितकवप्पडीसु वि य । अंबट्टिकधतउंण्हे पोवलिकासिद्धिविद्धीसु ॥ १३ ॥
 भैत-रुज्जणसिप्पिक-जणस्साहारे तरुज्जणपातरासे य । सुण पातरासेवेलं मज्झिमिया धूरुवेल त्ति ॥ १४ ॥
 30 जूवाजुतकआडवकसेवकाणं च पातरासो त्ति । कज्जयसि पातरासे य अणुमज्झण्हं वियाणेज्जो ॥ १५ ॥
 सुद्धिकरवसभागमणे वधये इति अत्थंवेल त्ति । मग्गो उरहरण त्ति य अणुमज्झण्हं वियाणेज्जो ॥ १६ ॥
 आतवच्छतकगहणे जुत्तपसुणं विनोयणेणं च । तण्हाइत-मच्चतण्हामु वेव मज्झण्हंवेलं तु ॥ १७ ॥
 निररति थ आदिओ उण्हं तण्ह त्ति गिस्ससति भूमिं । उण्हो थ वाति पातो त्ति एय मज्झंतियं जाणे ॥ १८ ॥

१°मे वेप एवरत्तंयं १° त° ॥ २ ओपाणकवाहुप्पतियाय १° त° मिना ॥ ३° उण्णे पोवलिकासिद्धि विट्ठीसु १° त° मिना ॥ ४ रुयकं १° त° ॥

इज्झंतभूसति कढतु तिरियं ति षण्णद्वग्गिज्जालो त्ति । रूवाविधो संतप्पते त्ति मज्झंतिकं वेलं ॥ १९ ॥
 मज्झो त्ति मज्झिमो त्ति य मज्झत्थो मज्झदेसकं व त्ति । मज्झण्हो मज्झठिय तत त्ति मज्झण्हमेतेहिं ॥ २० ॥
 तत्तस्स य णिव्ववणे सरित्तोमद्धकपित्ते पसण्णे य । सिद्धावैतारणे मज्झित्ते य उव्वत्तमज्झण्है ॥ २१ ॥
 सैव्वणियमट्टिताणं कयण्हिकाणं तु भोयणाकाले । पज्जोवत्तं सूरं जाणे एकसत्तरत्तेसु ॥ २२ ॥
 घट्टिणगरकम्मजण्णे सत्सिद्धकवल्लिकम्मकरणे य । उज्जाणभोज्जभत्तिककत्ते य अवरण्हमो जाण ॥ २३ ॥
 निगंथकथाहारे पच्चक्खण्णे पडित्ते र्घेणां च । पासंढालयवसधीकते य मुण पच्छिमं वेलं ॥ २४ ॥
 सब्बदिवाचारीणं पसु-पवखीणं तु वसतिमधिगमणे । पुण्णामाणं च खयेण जाण सूरत्थमणवेलं ॥ २५ ॥
 रत्ते पुप्फ-फले भूसणे य अच्छादणे य रत्तम्मि । थीणामेसु य रत्तेसु जाण संज्ञागतं वेलं ॥ २६ ॥

पडलं [सत्तरस्समं] ॥ १७ ॥ छ ॥

[अट्टारस्समं पडलं]

10

घालाहारविधीहि य मागधिं भत्तवेलिकं जाण । आतुरओसधपाणेषु चेवं मुण मागधं वेलं ॥ १ ॥
 खमगजणपारणाअ य जाणेज्जो दुद्धवेलिका य त्ति । समणजणवायरासे आलोलीवेलिकायं वा ॥ २ ॥
 सेढकपट्टमाहारे जाणेज्जो आणुतासवेलं ति । भत्तकजणपातरासे जाणेज्जो कूरवेलं ति ॥ ३ ॥
 बुद्धुरसावक-भिक्षुकजणे य मुण पातरासवेलं ति । भिक्षुणाऽऽहारेण य गंडीवेलं वियाणाहि ॥ ४ ॥
 किंचोवत्तं सूरं णिगंथजणस्स भत्तवेल ति । जाणु त्ति अण्णपाणे पधिकानं कौसकाणं च ॥ ५ ॥
 अच्छादण-पणियगते अवरण्है वै(वा)सवेलिकं जाण । णामेहिं णामवेलं पसूहि पसुवेलिकं जाण ॥ ६ ॥
 रागेण सायवेलं दीवैहि य दीववेलिकं जाणे । आजीविकमहासारे सामासं वेलिकं जाणे ॥ ७ ॥
 सुंभलक-सुरा-पुप्फे फले हरितकाण चुण्णणवसेसु । कासुकलिगोपगतेसु चैव मुण आपदोसो त्ति ॥ ८ ॥
 णिव्वहणे य वधूणं जैति भूतवल्लिकम्मकरणे य । पातिट्टे य वधूणं जाणेज्जो आपदोसो त्ति ॥ ९ ॥
 जामेण जामवेलं भिण्णं अंविसारिकाहि जाणेज्जो । चोरेहिं चोरवेलं महापदोसं च रक्खेहिं ॥ १० ॥
 पासुत्त-णिसीधं ति य भोग-णिसइं तथैव धिमितं ति । मंते अरहस्सं ति य थितट्टुरत्तं वियाणेज्जो ॥ ११ ॥
 उच्छुम्पीलणके भोग्गरसडे जंत-मुसलसडे य । मंदिरसंथणगागरसडे [य] वियाण गोसग्गं ॥ १२ ॥
 गो-माहिसिण्णिमणे पच्छा(त्था)णे य पधिग-प्पवासीणं । सारइयसालिमदणपंतीसडे य गोसग्गं ॥ १३ ॥
 णरदेव-देवपडिबोधणासु संख-पडहायणादेसु । पच्छिमजामं कुकुडसडे वा जाण गोसग्गं ॥ १४ ॥
 मंगलिक-सत्थिवाचक-गोसग्गिकसंखभाणकेसु वि य । देवथुतिमंगलेसु य तयोधणे चेवं तु विभत्तं ॥ १५ ॥

25

॥ पडलं [अट्टारस्समं] ॥ १८ ॥ छ ॥

[एगूणवीसइमं पडलं]

सीसकलोट्टेण हुं पुइसीसिका अरुणमो य दब्बा वि । तंवे तु पुव्वसंज्ञं वियाण सुज्जोदथं वा वि ॥ १ ॥
 तपण्णिसुवण्णेण तु सूरसुदंतमुदितं व जाणेज्जो । नवकणक-सुवण्णेसु य पुव्वण्हं पातरासं वा ॥ २ ॥

१ °देसमज्झम्मि । मज्झं हं० त० ॥ २ °वचारणे मज्झिते य भोयत्तमज्झण्हो हं० त० विना ॥ ३ स्ववत्तियम-
 ट्टियाणं कयण्हिकालं तु हं० त० ॥ ४ घयाणं च हं० त० ॥ ५ चैव पुण्णमागयं वेलं हं० त० ॥ ६ कासयाणं हं० त० ॥
 ७ वुसं हं० त० विना ॥ ८ सुंभलं हं० त० विना ॥ ९ जट्टिभूतं हं० त० विना ॥ १० अवसां हं० त० विना ॥
 ११ चैव ति भव्यं हं० त० ॥ १२ तु फुसीसका हं० त० विना ॥

मञ्जुतिकट्टितं कंसलोहकेण व कंसभाणे वा । किंचोवत्तं सूरं आमइले कंसलोहम्मि ॥ ३ ॥
 उच्चावरणमेव तु णवरुपिकेण 'संविज्ञाणाहि । आमइले रुपिकके तपुकेण व जाण अवरणं ॥ ४ ॥
 सत्थमणवेळकं पि य जाणेज्जो वट्टलोहेण । वैकंतकलोहेण य जाणेज्जो णागवेळं त्ति ॥ ५ ॥
 औरकूडकेण संक्षं अत्यमितं जाण काललोहेण । मुदय आपदोसं थितऽड्डुरत्तं च विकलेणं ॥ ६ ॥
 परिवत्तं गो सगां जाणीया णाणकेण सन्वेण । घंटासहेण पुणे य जाण गोसग्गकालं ति ॥ ७ ॥

॥ पडलं [एयूणवीसद्वयं] ॥ १९ ॥ छ ॥

[वीसद्वयं पद्वयं]

जं जिस्से वेलायं दिस्सति विपदं चतुप्पदं वा वि । पुरिसो वा इत्थी वा सा वेला तेण णातव्या ॥ १ ॥
 जो जिस्से वेलाए सद्दो उप्पज्जति सुव्वती वा वि । < १ सा वेला णातव्या तस्सुप्पत्तीयं सद्दस्स ॥ २ ॥
 जो जिस्से वेलाए गंधो उप्पज्जति दिस्सती वा वि । > सा वेला णातव्या तस्सुप्पत्तीयं गंधस्स ॥ ३ ॥
 जं जिस्से वेलाए रुवं उप्पज्जति दिस्सती वा वि । सा वेला णातव्या तस्सुप्पत्तीयं रूवस्स ॥ ४ ॥
 जो जिस्से वेलाए भक्खो उप्पज्जति लभ्भती वा वि । सा वेला णातव्या तस्सुप्पत्तीयं भक्खस्स ॥ ५ ॥
 जं जिस्से वेलाए पाणं उप्पज्जति लभती वा वि । सा वेला णातव्या तस्सुप्पत्तीयं पाणस्स ॥ ६ ॥
 जं जीसे वेलाए दब्बं उप्पज्जति दिस्सती वा वि । सा वेला णातव्या तस्सुप्पत्तीयं दब्बस्स ॥ ७ ॥
 जं जीसे वेलाए भंढं उप्पज्जति दिस्सती वा वि । सा वेला णातव्या तस्सुप्पत्तीयं भंढस्स ॥ ८ ॥
 जं जीसे वेलाए रयणं उप्पज्जति दिस्सते वा वि । सा वेला णातव्या तस्सुप्पातरस्स लद्धीए ॥ ९ ॥
 जं जीसे वेलाए पणितं उप्पज्जति दिस्सती वा वि । सा वेला णातव्या तस्सुप्पत्तीयं पणितस्स ॥ १० ॥
 जं उवकरणं णर-णारीणं उप्पज्जते [य] जं वेळं । सा वेला णातव्या तस्सुवकरणस्स लद्धीए ॥ ११ ॥
 अन्नंतरवाहिरका यं देसं सेवते मणुया । सा वेला णातव्या तस्सुदेसस्स लद्धीए ॥ १२ ॥
 लेहं रूवं गणितं विज्ञाथाणाणि सत्थणीतीओ । इस्सत्थरूवगतं जुळं चऽतिकिच्छयाणि वि य ॥ १३ ॥
 जं जीसे वेलायं तु मणूसा यं कालं अधीयंते । सा वेला णातव्या तस्सुप्पातरस्स लद्धीए ॥ १४ ॥
 बंभणवेद्दजायणे पासंढाणं च ससमयद्दजायणे । णिग्गंथाणं च सुयस्मि कालके रासिबद्धेयं ॥ १५ ॥
 जं जिस्से वेलायं बंभण-समणा सुतं अधीयंते । सा वेला णातव्या तस्सुप्पातरस्स लद्धीए ॥ १६ ॥
 कामणुणे मणुयणुणे सद्द-प्परिस-र-र-रूव-गंधे य । मद्दु-कट्टिण-णिद्ध-स्खले फासे सुहें सीतमुण्हे य ॥ १७ ॥
 जे जिस्से वेलाए णर-णारिणा सुहं अणुमवंति । सा वेला णातव्या विस्सयसुहाणोपपत्तीयं ॥ १८ ॥
 उच्चद्दहसित-गीताइयाइ-ण्टाइविलसियाणं च । णाडिज्जित-वेळंवि-पडिताणि परूवणाओ य ॥ १९ ॥
 जं जिस्से वेलाए कीढं णर-णारिओ णिसेवंति । सा वेला णातव्या तस्सुप्पातरस्स लद्धीए ॥ २० ॥
 रामायण-भारधिका तु क्हाओ जा य अरहता वत्ता । रायपुरिसाण य जा परक्कमणुणा य सूरारणं ॥ २१ ॥
 एता पोरणाओ कथाओ जा जम्मि देस-कालम्मि । वत्ता तु कधीयंते सा वेला तेण बोधव्या ॥ २२ ॥
 जं सयमणुभूतं णर-णारिणोहिं जं च सेसेहिं । लाभा-उल्लभं जीवित-मरणं दुक्कलं सुहं वा वि ॥ २३ ॥
 जं जीसे वेलाए परेण सुयमणुणा य अणुभूतं । सा वेला णातव्या तस्सुपायरस्स लद्धीए ॥ २४ ॥
 यद्विणारकणिग्गमणे समिद्धजोक्क-बलिकम्मकरणे य । उज्जाण-भोज्ज-भत्तिक-जत्तागमणेसु य णारणं ॥ २५ ॥
 जं जीसे वेलाए उज्जाणणुणे णरा अणुमवंति । सा वेला णातव्या जत्तागमणेण तु णारणं ॥ २६ ॥

१ संधि जा° हं० त० ॥ २ घंफंतयलो° हं० त० ॥ ३ अकरुणडकेणः हं० त० ॥ ४ < १ > पदविहान्तर्गतं
 उत्तरार्थ-पदार्थं हं० त० न ह्यः ॥

मज्जविधी खज्जविधी फल-हरितक-सुसिग्पिककडे वा । सुममसुभे वाऽऽहारे उत्तममासे जहण्णे य ॥ २७ ॥
 जं जिस्से वेलायं आहारविधिं गिसेवए मणुया । सा वेला पातव्या तस्साऽऽहारस्स लद्धीयं ॥ २८ ॥
 देवसेत्तं वा णवकरणं वा वि उज्जवणिका वा । वय-णियमाणं गहणे दाण-विसग्गे य साधूणं ॥ २९ ॥
 जं जीसे वेलायं पारत्तहितं णा समीहंति । सा वेला पातव्या तस्सुपातस्स लद्धीयं ॥ ३० ॥
 वाणियववहारगते दिवसववहारे ठिते य ववहारे । भंडपणियस्स कय-विकए य णियए विसग्गे य ॥ ३१ ॥
 जं जीसे वेलायं ववहारं तु वणिया समीहंति । सा वेला पातव्या गहण-विसग्गेण भंडाणं ॥ ३२ ॥
 कस्सेण कासकाणं वापण्णे खेत्त-खलकम्मजोगे थ । धण्णाणं गहणे संगहे य वेला तु जा जत्य ॥ ३३ ॥
 जं जीसे वेलायं कम्मांभं तु कासका कुण्ते । सा वेला पातव्या तस्सुपायस्स लद्धीयं ॥ ३४ ॥
 जं वेलं जं कम्मं सुममसुभं माणुसा गिसेवंति । सा वेला पातव्या कम्मुप्पत्तीय पुरिसाणं ॥ ३५ ॥
 धीणं पि सब्वकम्मोसु जाण रंणक-भोयणादीसु । जं वेलं जं कम्मं करेति तं वेलमो जाण ॥ ३६ ॥

॥ पडलं [वीसद्वय] ॥ २० ॥ छ ॥

[एकवीसद्वय पडलं]

तद्विषय जातकं दिस्स दारकं जाण सूरसुग्गमणं । किंचुग्गयम्मि सूरे गोरे उत्ताणसेज्जन्मि ॥ १' ॥

ओसूतकं कडिगेज्जकं दारकं दिस्स अचिरुद्धितं सूरं वूया । ओवातं दारकं दिस्स परिच्चकम्मंतं पातपासवेलं वूया ।
 ओवातं दारकं लेहिच्चकं दिस्स उच्चपातरासं वूया । ओवातं दारकं तरुणजुवाणं दिस्स पुव्वण्हं वूया । ओवातं तरुणं 15
 दिस्स जुवाणं अणुमज्झण्हं वूया । ओवातं पुरिसं मज्झवयं दिस्स मज्झतियं वेलं वूया । ओवातं पुरिसं पवत्तपलितं
 दिस्स उव्वत्तमज्झण्हं वेलं वूया । ओवातं पुरिसं मिस्सपलितं दिस्स उच्चावरण्हं वेलं वूया । ओवातं पुरिसं दिस्स पव्वपलितं
 अवरण्हं वूया । ओवातं पुरिसं दद्वपकम्महलं दिस्स ओलंबमाणं सूरं वूया । ओवातं पुरिसं खट्ठासमारूढं दिस्स अत्य-
 मितं आदिच्चं वूया । उत्ताणपरिसकं दारिकं दिस्स संज्ञावेलियं वूया । कडिगेज्जिकं दारिकं दिस्स दीववेलियं वूया ।
 पंचकम्मंतिकं [दारिकं] दिस्स पार्कतरं ति वूया । वत्तवोलिकं दारिकं दिस्स पाकडितणक्खत्त-तारं वूया । उन्निज्ज- 20
 माणथणिकं दारिकं दिस्स जामवेलिकं वूया । जोव्वणवत्तं दारिकं दिस्स तिण्णयामं वूया । महाकुमारिं दारिकं दिस्स
 अट्टूरत्तं जाणीया । मज्झिममहिलं पविआतं दिस्स वत्तट्टूरत्तं वूया । चट्टुप्पयातं जुण्णं दिस्स महागोसग्गं वूया । बुद्धं
 णिव्वियातं दिस्स विधयं वा पासडवडं महिलगोसग्गं वेलं वूया । ओवाते[सु] पुरिसेसु जोण्हणक्खं वूया । कालकेसु
 पुरिसेसु कालदिवसे वूया । सामेसु पुरिसेसु मिस्ससंधि वूया । ओवातासु इत्थिकासु जोण्हणत्तं वूया । कालिकासु
 इत्थिकासु कालरत्ति वूया । सामासु इत्थिकासु मिस्सा पुण्णमासद्वरत्ति वूया । ओवातसामेसु पुरिसेसु जाव जोण्ह- 25
 पडिपदातो जोण्हट्टमिचो ति जोण्हदिवसे वूया । ओवातेसु पुरिसेसु जोण्हट्टमीतो पाय याव जोण्हपुण्णमासीतो दिवसे
 वूया । कालसामेसु पुरिसेसु जाव कालट्टमीतो पाय याव चतुदसातो ति कालदिवसे वूया । ओवातसामाय इत्थिकाय
 जाव जोण्हट्टमीतो ति जोण्हरत्ति वूया । ओवातासु इत्थिकासु जोण्हट्टमीतो पाय जाव पुण्णमासीतो ति जोण्हरत्ति
 वूया । कालसामासु इत्थिकासु कालट्टमीतो ति कालरत्ति वूया । कालिकासु इत्थिकासु कालट्टमीतो पाय जाव काल-
 वाउदसातो ति कालरत्ति वूया । ओवातं उत्ताणसेज्जं दिस्स जोण्हपडिपदं वूया । ओवातदारकस्स सरिज्जोवरण- 30
 परिवट्टीय जाव तरुणसम्मत्तजोव्वरातो ति य दारकपरिवट्टीय जाव पुण्णमासीतो ति वत्तवत्तं । एवमेव कालकदारक-
 परिवट्टीय कालपरिवट्टी वूया ।

१ णते दीसववहारे भिय ए हं० त० ॥ २ दिव्वपरक्खकतपा' हं० त० ॥ ३ मज्झगयं दिस्स मज्झमियं हं० त० ॥
 ४ 'स्सापो संधि रत्ति हं० त० णिना ॥
 अंग० ३२

जथा मणुस्सेसु तथा चउप्पदेसु तथा पक्खीसु तथा परिसप्पेसु तथा कीड-किविद्धकेसु तथा पुप्फ-फलेसु भोय-
णेसु तथा अच्छादणेसु तथा भूसणा-सण-महा-गुलेवणकरणेसु तथा लोहेसु (सव्वसाधुसु) सव्वधातुसु य तथा सव्व[घ]-
ण्णेसु य तथा सव्वभंदोपक्कर-उयकरणेसु तथा सज्जीय-णिज्जीवेसु सव्वदव्वेसु समणुगतंरं । जथा मणुस्साणं वय-
परिणामेणं दिवस-रत्तिपरिणामेणं एरं सव्वदव्वयाणं पुरिसजुण्णपरिणामेण दिवस-रत्तिपरिणामो विण्णातव्वो-पुण्णामेसु
१ दिवसाणं, यीणाणेणं रत्तीणं । वण्णविसेसेणं जोण्हा कालो वा विण्णातव्वो-सुक्खिलेसु सप्पमेसु ओवातेसु जोण्हा
णातव्वो, कालवण्णेसु णिप्पमेसु महलेसु अचक्खुविसययेसु कालपक्कं व्वा ॥

॥ पडलं [पगवीसङ्गं] ॥ २१ ॥ छ ॥

[वाचीसङ्गं पडलं]

- धग्गस्स तु परिवट्ठि ओसरणं व पुण सव्वभंढाणं । देसिय-मुहुत्त-पक्खिय-भौसिक-यस्सप्पमाणेहिं ॥ १ ॥
१० अतिवैत्ते अतिवत्तो अग्घो हवति णिचयेसु भंढाणं । अणुपालणा ण रमते भवति धुवो छेदको एत्थं ॥ २ ॥
एमेव वत्तमाणेसु जाणयो संपदं भवति अग्घो । वस्ससतस्स तु अंतो एतस्स तु एत्तिओ अग्घो ॥ ३ ॥
खमति णिचयो णिचेतुं खमति य अणुपालणा गहीतस्स । सव्वमूणागतभावे इट्ठे य मणाभिलसिते य ॥ ४ ॥
[.....] खमति णिचयो णिचेतुं षट्ठीसु य सव्वभंढाणं ॥ ५ ॥
वट्ठीसु समुदएसु य तसकायाणं च थावरारणं च । इच्छासंपत्तीसु य लामस्स वि होति संपत्ती ॥ ६ ॥
१५ सव्वन्मि वि तसकाये थावरकायेसु चैव सव्वेसु । पुप्फ-फल-भोयण-अच्छादणेसु दव्वोवकरणे य ॥ ७ ॥
एत्थं तु जे मंगलिया ते धन्ना ते तु लामिया होति । एतेसिं उप्पेत्ती भंढणिचए हवति लामो ॥ ८ ॥
घणसंपत्तिरूपाए महाघणाणं कुडुविणं चैर । कोसपरिवद्धणासु य रूप-हिरण्णे सुरण्णे य ॥ ९ ॥
जुज्जजये पणियजये विज्जासिद्धीसु कम्मसिद्धीसु । आरंभाणं सिद्धीसु चैर णिचये धुवो लामो ॥ १० ॥
उवणतमणोरपाणं उप्पचीए य मणभिलसियाणं । अदिट्ठिसीए चिय लामे लामस्स संपत्ती ॥ ११ ॥
२० जघ विपुलो उप्पातो जातिविसिट्ठो य सारमंतो य । जघ जुत्तमपरितोसो तथ णिचये लामओ वहुओ ॥ १२ ॥
अप्पो उप्पातो त्ति य अजातिमंतो य अप्पसारो य ।
जघ यऽप्पो परितोसो तथ णिचये लामओ अप्पो ॥ १३ ॥
जघ वागविणो पढिलामणा य उप्पज्जते परितोसो । अप्पो वा वहुओ वा तथ णिचये लामओ होति ॥ १४ ॥
वट्ठिकरं पीतिकरं णिव्याणिकरं च मंगलज्जं च । इट्ठा आणंदकरं च लामिया होति उप्पाता ॥ १५ ॥
२५ लुक्खे तुच्छेसु णुप्पसस्सेसु कसस्सेसु वाहिंरंगेसु । वावण्णेसु चलेसु व ण भंढणिचया पसस्सति ॥ १६ ॥
आरंभ-विवत्तीसु य छेअवितेहि वि य सव्वभंढेहिं । मोहपरिधावितेसु य अफळं च फट्ठे पुरिसर्कारे ॥ १७ ॥
उज्जीयति विज्जीयति हायति त्ति परिहायति त्ति वां सदे । णट्ट-हित-मल्लते दूसिते विणट्ठे विपण्णे वा ॥ १८ ॥
अंसणिद्धते विज्जुद्धते उट्ठे जित-पराजिते विद्धे । भग्गो त्ति दुग्गतो त्तिरसते अणत्तो अणाधो त्ति ॥ १९ ॥
किरण-यणीमक-पेस्सजण-सव्वपासंडअस्समगते य । अधणेसु दुग्गतेसु य परिहायंतेसु य अलामं ॥ २० ॥
३० अभिलसितस्स अलामे आसामंगे य पणयमंगे य । पढिसिद्धणिकारे य जायगायं अलामे य ॥ २१ ॥
उरहतमुवहुते वा अभिजुते गहिय-वद्ध-रुद्धे वा । अह्व य मयसेवासु य धुववावत्ती उ णिचयस्स ॥ २२ ॥

१ पुरिसजसपरिं हं० त० ॥ २ मासकं हं० त० विना ॥ ३ वत्तेसु अतिं हं० त० विना ॥ ४ उप्पत्तियम-
दण्डिधे हवंति लामो वप० ॥ ५ कदासु य महां हं० त० ॥ ६ अग्घो उप्पाओ चिय हं० त० ॥ ७ परिहाविप्पसु
हं० त० ॥ ८ कारो हं० त० ॥ ९ वा भदे हं० त० ॥ १० असिणिद्धते हं० त० ॥ ११ य पाणमंगे हं० त० ॥ १२ मय-
चय मयसेयां हं० त० विना ॥

- भोग्यद्व्याणं पि च चल-णीहारे खये अलाभे य । अग्नखयं नासं वा घूया आहारद्व्याणं ॥ ५६ ॥
 भोग्यद्व्याणं पि च उदये लाभे तथैव आहारे । निष्कृती लाभो आगमो य आहारद्व्याणं ॥ ५७ ॥
 मुकंगचलामासे खय-णीहारे य मुकिलाणं तु । अग्नखयं नासो वा द्व्याणं मुकिलाणं तु ॥ ५८ ॥
 मुकंगददामासे आहारगते य मुकिलाणं तु । निष्कृती लाभं आगमं य मुण मुकिलाणं तु ॥ ५९ ॥
 रत्तंगचलामासे खय-णीहारे य सव्वरत्ताणं । अग्नखयं नासं वा द्व्याणं रत्तवण्णाणं ॥ ६० ॥
 रत्तंगददामासे आहारगते य सव्वरत्ताणं । निष्कृती लाभं आगमं य मुण सव्वरत्ताणं ॥ ६१ ॥
 कण्हंगचलामासे खय-णीहारे य कालकाणं तु । अग्नखयं नासं वा द्व्याणं कालकाणं तु ॥ ६२ ॥
 कण्हंगददामासे आहारे चैव कालकाणं तु । निष्कृती लाभं आगमं य मुण कालकाणं तु ॥ ६३ ॥
 अग्नेयचलामासे खय-णीहारे य अग्निफळाणं । अग्निखयं नासं वा जाणे अग्नेयणामाणं ॥ ६४ ॥
 अग्नेयददामासे आहारगते य अग्निद्व्याणं । निष्कृती लाभं आगमं य अग्नेयद्व्याणं ॥ ६५ ॥
 पुघुलंगचलामासे खय-णीहारे य पुघुलद्व्याणं । अग्नखयं नासं वा जाणेज्जो पुघुविद्व्याणं ॥ ६६ ॥
 पुहुलिंगचलामासे आहारगते य पुहुविद्व्याणं । निष्कृतिं लाभं आगमं च मुण पुघुलद्व्याणं ॥ ६७ ॥
 निद्वंगचलामासे खय-णीहारे य आपजोणीयं । अग्नखयं नासं वा जाणेज्जो आपजोणीयं ॥ ६८ ॥
 निद्वंगचलामासे आहारगते य आपजोणीयं । निष्कृतिं लाभं [आगमं] य मुण आपजोणीयं ॥ ६९ ॥
 वायव्यचलामासे खय-णीहारे य वायजोणीयं । अग्नखयं नासं वा वायव्याणं मुणुत्त तल्य ॥ ७० ॥
 वायव्यददामासे आहारगते य वायुजोणीयं । निष्कृतिं लाभं आगमं च मुण वातजोणीयं ॥ ७१ ॥
 छिद्वंगचलामासे खय-णीहारे य झुसिरद्व्याणं । अग्नखयं नासं वा जाणेज्जो झुसिरद्व्याणं ॥ ७२ ॥
 छिद्वंगददामासे आहारगते य झुसिरद्व्याणं । निष्कृतिं लाभो आगमो य झुसिराणं द्व्याणं ॥ ७३ ॥
 तिरियंगचलामासे णीहारे चैव तिरियजोणीयं । अग्नखयं नासं वा जाणेज्जो तिरियजोणीयं ॥ ७४ ॥
 तिरियंगददामासे आहारगते य तिरियजोणीयं । निष्कृतिं लाभं आगमं च मुण तिरियजोणीयं ॥ ७५ ॥
 दद्वंगचलामासे खय-णीहारे य घातुजोणीयं । अग्नखयं नासं वा वियागरे घातुजोणीयं ॥ ७६ ॥
 दद्वंगददामासे आहारगते य घातुजोणीयं । निष्कृतिं लाभं आगमं च मुण घातुजोणीयं ॥ ७७ ॥
 मूलजोणिचलामासे खय-णीहारे य मूलजोणीयं । अग्नखयं नासं वा जाणेज्जो मूलजोणीयं ॥ ७८ ॥
 मूलजोणिददामासे आहारगते य मूलजोणीयं । निष्कृतिं लाभं आगमं च मुण मूलजोणीयं ॥ ७९ ॥
 पाणजोणिचलामासे खय-णीहारे य पाणजोणीयं । अग्नखयं नासं वा जाणेज्जो पाणजोणीयं ॥ ८० ॥
 पाणजोणिददामासे आहारगते य पाणजोणीयं । निष्कृतिं लाभं आगमं च मुण पाणजोणीयं ॥ ८१ ॥
 उत्तमंगचलामासे खय-णीहारे य उत्तमंगाणं । अग्नखयं नासं वा जाणेज्जो उत्तमंगाणं ॥ ८२ ॥
 उत्तमंगददामासे आहारगते य उत्तमंगाणं । निष्कृतिं लाभं आगमं च मुण उत्तमंगाणं ॥ ८३ ॥
 मग्गंगचलामासे खय-णीहारे य मग्गसाणाणं । अग्नखयं नासं वा मग्गसाणाणं ॥ ८४ ॥
 मग्गंगददामासे आहारगते य मग्गसाणाणं । निष्कृतिं लाभं आगमं च मुण मग्गसाणाणं ॥ ८५ ॥
 पेसंगचलामासे खय-णीहारे य पेसंगगाणं । अग्नखयं नासं वा द्व्याणं पेसंगगाणं ॥ ८६ ॥
 पेसंगददामासे आहारगते य पेसंगगाणं । निष्कृतिं लाभं आगमं च मुण पेसंगगाणं ॥ ८७ ॥
 एगेव पंचमु रगेमु गमो पाणेमु भोगेणु वि च । यथे आमरण चव्वररे य तथ गंध मत्ते च ॥ ८८ ॥

१ इत्येवमन्तं । अथेवमन्तं इ- त- एव मन्तं ॥ २ आयुजो इ- त- ॥ ३ इत्येवमन्तं गते उत्तमंग-पूर्वार्थे इ- त- एव मन्तं ॥
 ४ आयुजो इ- त- ॥ ५ वायजो इ- त- ॥ ६ य [मुण] झुसिरद्व्याणं इ- त- विना ॥ ७ ८-९ इत्येवमन्तं ग-
 द्वाणं इ- त- भावि ॥

तेह-घते गुल-वण्णे एसेव गमो तु सव्वधण्णेषु । मणिसुत्ते रयणेषु य रूप हिरण्णे सुवण्णे य ॥ ८९ ॥
 पंचविधो य अवायो णेयो गहण-णिचयेसु भंझणं । अग्गी उदकं चोरा राया य तिरिक्खजोणीयं ॥ ९० ॥
 दिव्वो भवति अवाओ उणुण हिम अग्गि मारुतो आपं । मणुयगवन्मि य राया चोरा सयणो परजणो य ॥ ९१ ॥
 सव्वेसु अप्पसत्थेसु अपायो पुव्ववण्णितेसु भवे । णट्टविण्णेट्ठे जोणिते य [.....] अयहिते खेव ॥ ९२ ॥
 पुव्वपरिकित्तिणसु तु धासुप्पातेसु अप्पसत्थेसु । उदकातो हु अपायो एत्थ णिस्संकितो वूया ॥ ९३ ॥ 5
 मुण य तिरिक्खजोणी तिरिक्खजोणीगभो अपाओ त्ति । दंसणपाट्टुव्वाभवे असुभा य तिरिक्खजोणीए ॥ ९४ ॥
 रायदंडे कोट्टे य आणकोवत्तणे य पणए य । रायग्गहेसु य कयक्कए य मुण रायदंडो त्ति ॥ ९५ ॥
 गाहण-कालक्खवणा खया पाणपराभियोगेसु । सुत्ति अंदु-णिगल्लेसु बद्ध-रुद्धेसु सव्वेसु ॥ ९६ ॥
 पंचमहाकारणकारणेषु सव्वेसु रायदिट्ठेसु । रायभये सव्वन्मि तु रायकुलगतो ज्ञपायो तु ॥ ९७ ॥
 उण्हे वा णिस्ससिते मणसंतावे य अंगदाहे य । हक्कार-रुदित-कंदित-भयदुत्ते रुद्धभावद्वे ॥ ९८ ॥ 10
 उण्हते य उदके य कुंथिते तथ तुच्छ दट्ठे वा । अग्गीतो हु अघायो धूमाणुगते य आहारे ॥ ९९ ॥
 तिरियंगाणामासे तिरिक्खजोणीगते य सव्वन्मि । उवकरणोयखरगते तिरिक्खजोणीय संदेहो ॥ १०० ॥
 उंदुर-मुत्तली या अत्थिल्ल क्रीडा किविद्धिकाओ य । दाढी णंगली संगिणो य ण्हि-सज्जवाला य ॥ १०१ ॥
 जलचर-थलचर-खगचारिणो य पक्खी चतुप्पदा चेव । अवरञ्छंति णराणं असुभा जे अप्पसत्था य ॥ १०२ ॥
 तेसिं पाट्टुव्वाभवे सदे रुवे दवक्खरक्कते य । तेरिक्खिसु य अवायो त्ति एव णिस्संसयं वेहि ॥ १०३ ॥ 15
 इत्थिअतिसंधणायं णियडी-कवडेसु बंधणादीसु । चोरुप्पत्ति वूया हित-महित्ताविज्ञेणायं च ॥ १०४ ॥
 कूडतुल-कूडमाणं कूडहिरण्णे य कूडलेहे य । चोरुप्पत्ति वूया आयरणायं च सव्वायं ॥ १०५ ॥
 सव्वेसु पावकम्मिसु हिंसके होदकेसु य णरेसु । वीसत्यपाणहरणे य अचार्यं चोरतो विज्जा ॥ १०६ ॥
 अंबि धावह कूथित-कंदितेसु हित-भारिते य छिण्णे य । चोरुप्पत्ति वूया सव्वेसु य चोरल्लेगेषु ॥ १०७ ॥
 जघ विपुला उप्पात्ता तथ विपुलं णिद्धिसे अपायं ति । मञ्झिमके मञ्झिमकं ज्ञप्पसारेसु अप्यं तु ॥ १०८ ॥ 20
 दिण्ण-परिविद्ध-वत्तुस्सयम्मि क्षीणे य भोज्ञ-पेयम्मि । णट्टे पम्भुट्ट पडिसामिते य पडिसाहणायं च ॥ १०९ ॥
 वेस्से दोमगे अथिते य णिघक्खिते य चक्खिते य । उक्कंठिय परितते य छेइया सव्वभंहेसु ॥ ११० ॥
 एवं अग्यपमाणं एतेण गमेण सव्वभंहाणं । सव्वपणितेसु य तधा तिविधो सारो मुण्येव्वो ॥ १११ ॥
 तं जधा-साली-वीही-जव-नोधूमादिसु सगसत्तरसेसु धण्णेषु अग्यपमाणं विण्णातव्वं भवति । एयमेव पुप्फ-
 फलेसु, तेह-घतादिसु णेहेसु, लवणादिसु छसु रसेसु, कप्पासादिसु य सव्वखादणेषु, रूप-सुवण्णादिसु य सव्वलोहेसु, 25
 चइर-वेरुलिकादिसु य सव्वरतणेषु, मणसिलादिसु सव्वघातुसु, अगुरु-चंदणादिसु सव्वयसंखितेषु, सव्वमूलजोणिसु
 सव्वतण-कट्टेसु य, मणुसादिसु य सव्वपाणजोणिसु, सव्वन्मि चेव परिणमंड-पणितगतते समणुगंतव्वं भवति । उत्तरं च
 सविसेसं सुवुट्ठीपडिपोमलं दुमिक्खपटिपुंगलं च घण्णणं वूया । सुवुट्ठीपडिपोमलं च दग्गाभावेणहि सुक्खेहि तिरोगेहि
 आपजोणिकिखयेण णिद्ध-लुक्खत्तणेण उह्माणं सुक्खत्तणेण तण्हाइत-पिपासिताणं च अपाणलंभेणं अवुट्ठिं वूया । अवुट्ठीयं 30
 पुण जावत्तिकाणि बुट्ठिसंभवाणि घण्णादीकाणि सव्वमूलजोणीकाणि एतेसिं अणिष्फत्ती पियंकरं च वूया ॥
 ॥ एवं भगवतीय अंगविज्जाय महापुरिसदिण्णाय [बावीसहंम] अग्यपमाणं [पडलं] सम्मत्तं ॥ २२ ॥ छ ॥

१ वातुप्पां हं० त० विना ॥ २ माविट्ठे हं० त० विना ॥ ३ सुक्खदं हं० त० विना ॥ ४ विज्जयाणं च हं० त० ॥
 ५ अमिधाहव कूं हं० त० विना ॥ ६ मालतं घण्णयं वूया हं० त० ॥ ७ हिं णितोरोहि हं० त० विना ॥ ८ पियस-
 न्नेण हं० त० ॥

[तेवीसइमं पडलं]

- अग्निस्त संभवं पि य अग्नेयेहि मुण सच्चदवेहिं । धूमो त्ति व अग्नि त्ति व आलीवणकं वणद्वो त्ति ॥ १ ॥
 संतत्ये वा कोलादलं च डमरे विलुप्पमाणे वा । अवि धावथ सदे वा आलीवणकं वियाणेज्जा ॥ २ ॥
 इंगालकोट्टकिंगालसकडिका कडुच्छ-धूपघडिका य । धूमकरदाकधूमणाण पिसावके धूमणेत्ये य ॥ ३ ॥
 ५ छगणि-छारि-क्खारापैको त्ति वीजणक-धूमणालीसु । होमाहुतिकथ्ये अग्गिकारिके अग्गिहुंडे य ॥ ४ ॥
 जगंतको त्ति संदीपणं ति दारु समिध त्ति वा सहा । आहुति हुणियति वि त्ति य उवक्खरे यऽग्गि < होतैस्स > ॥ ५ ॥
 दीयो त्ति दीवक त्ति य चुडली मघअग्गि चुडके य त्ति । विज्जु त्ति विज्जुता आययो त्ति कज्जोपको य त्ति ॥ ६ ॥
 अणालि त्ति य चुद्धि त्ति य चित्तक त्ति य पुंफुक्क त्ति वा सहा । एत्थ उ अग्गुप्पती अग्गिहे अग्गिहुंडे य ॥ ७ ॥
 अहिमकारिक-अग्गिपखंडकेसु अग्गिस्त जाण उप्पत्ति । रुद्रापिते य संतापिते य संतप्पमाणे य ॥ ८ ॥
 १० उदगे व वातउण्हाहते य कुथिते व बुत्थ दट्टे वा । धूमायतम्मि य भोगणम्मि अग्गिस्त उप्पत्ती ॥ ९ ॥
 दज्जति मुस्सति भज्जिज्जते त्ति उक्खलिते पखलिते त्ति । कँढउत्तरीयतेत्ति य अग्गुप्पत्ति वियाणाहिं ॥ १० ॥
 अग्गिउवजीवणे अग्गिमंडपव्वेसु अग्गिकम्भेसु । उवकरणेसु य अग्गिस्त जाण अग्गिस्त उप्पत्ति ॥ ११ ॥
 उण्हे वातुव्वामे फस्से वा अग्गिसंभवं जाणे । उंम्मुक्कपरिवृत्तेसु य अंगारे छारिकायं च ॥ १२ ॥
 रत्तमि य पुप्फ-फले रुधिरणिपाते य सब्वसत्ताणं । तिक्खरसे पारेसु य अग्गुप्पत्ति वियाणेज्जे ॥ १३ ॥
 १५ अगणि पुण जाततेओ अणलो वा हुतवहो त्ति जलणे त्ति ।
 पवणे त्ति य जेतो त्ति य अग्गिस्त भवंति णामाणि ॥ १४ ॥
 वस्सपमाणुप्पाते अग्गेयेसु पुण अप्पसत्थेसु । विरियण्णरस णिवेसस्स ज्ञावणं सण्णिवेसस्सा ॥ १५ ॥
 मासपमाणुप्पाते अग्गेयेसु वि य अप्पसत्थेसु । मज्झिमकँस्स णिवेसस्स ज्ञावणं मज्झसारस्स ॥ १६ ॥
 पक्खपमाणुप्पाते अग्गेयेसु वि य अप्पसत्थेसु । वाहासु सण्णिवेसस्स ज्ञामणं मज्झसारस्स ॥ १७ ॥
 २० दिवसपमाणुप्पाते अग्गेयेसु वि य अप्पसत्थेसु । गिहझामणिं वूया ततिमग्गिहा जति य दव्याणि ॥ १८ ॥
 मोहुत्तिकपमाणं अग्गेयेसु मुण अप्पसत्थेसु । जत्थुप्पज्जति अग्गी तत्थेय पसम्मते सिग्गं ॥ १९ ॥
 संवट्टका य वाता उण्हा लुक्खा गिहाणि भंजंति । सुमहं अग्गुप्पातो जति भवति उ पुच्छणाकाले ॥ २० ॥
 तस-यावरसोभाणिवृत्तेसु वाते सुखेम यायंते । सुत्थिभंगंया वाता य मणुण्णा खेमभावाय ॥ २१ ॥
 ॥ पडलं [तेवीसइमं] ॥ २३ ॥ छ ॥

२५

[चउवीसइमं पडलं]

- बंधिसु सन्न्यसिद्वे सज्जे बुद्धिं तथा अवुद्धिं च । वासारत्तविभागं वासपमाणं च वोच्छामि ॥ १ ॥
 वासं ति य सव्वे त्ति य णागा वरुणे जलाधिपो व त्ति । णाग्गिद गइंदो सागरो समुदो त्ति वा वूया ॥ २ ॥
 एतेसि देवाणं णामे वा भूसणोवकरणे वा । सामुदकेसु भंडेसु चैय वासस्स उप्पत्ती ॥ ३ ॥
 इंदपणु-इंदकेतुगामेसु गिद्दामु इंदराइसु । फीहिंदहायिका इंदगोपका इंदरक्खा य ॥ ४ ॥
 ३० गिद्धानं फलिद्धानं गिद्धानं युग्गमेण मेहाणं । दुमसंड-मच्छ-रुच्छम-नय-णगसंठाणरूपेहिं ॥ ५ ॥
 गिद्द-पणे अच्चिहरे परिवेसे यावि चंद-सूराणं । उदय-उर्यमणेसु समागमेसु तारा-गहाणं तु ॥ ६ ॥
 गिद्धानं संघ्रायं गिद्दामु य सूरियस्स रस्सीसु । सूर-पडिसूरण्यु य आरय्यदसुरस्सेते य ॥ ७ ॥

१ °पकोपिदीजण° इ० त० ॥ २ °> एतथिदान्तगतं पदं इ० त० नास्ति ॥ ३ युस्सति सं ३ पु० । मुस्सति
 णि० ॥ ४ कँढउत्तरीयतेद्विय इ० त० ॥ ५ पग्गुप्प° इ० त० ॥ ६ °कम्भामाणि पसस्सवारणं मज्झ° इ० त० ॥
 ७ भूत्तणे प करणे इ० त० ॥ ८ °त्ययणे° इ० त० ॥

लोह-गुलाणं झरणे लोहकलंके य णिहिसे वासं । कंडकण्णकग्गहणे पुढविठिते उण्हमुदके यं ॥ ८ ॥
 तसकायाणं गन्धे जावणे रोहणे य वीयाणं । अंडग[प]पूणम्मि य पिपीलिकाणं धलारुभणं ॥ ९ ॥
 गंडूपदणिकवमणे कुलीर-मंडूक-कच्छभाणं च । उदथलमारुभणे या मच्छाणं कच्छभाणं च ॥ १० ॥
 मच्छ-महंतमहोरग-समुदकाका तघेव वस्मीका । कासार-समुदच्छेणके य जलफेणके चेव ॥ ११ ॥
 मेहे विज्जुत-गजित-फुसिते वा पगलिते पवट्ठे वा । जलसत्तपमोदे वा दारूकवासेलिकाकरणके वा ॥ १२ ॥ ४
 आपाणकपमोदे सोदकउकोसणे पपतणे वा । मत्त-पैणट्ट-पलोट्टे कट्ठित-पासासकरणे वा ॥ १३ ॥
 उद्धपडसाहके केसपीलणे आसिते सर्वते य । उक्कापतणे पुढविज्जओलुविले णिविले चेव ॥ १४ ॥
 धोवंतो वा पुच्छति हत्थं पादं मुहं व दूसं वा । उवकरण भायणं वा सज्जो बुद्धिं विजाणेज्जो ॥ १५ ॥
 तेल्ल-पत-दुद्ध-दधि-मज्जपाणिते बहुविधे मधूसु तथा । रस-णिज्जासे गेहेसु चेव वासस्स उप्पत्ती ॥ १६ ॥
 सागर-गदी-तडागेसु चेव यावि-दह-कूव-वरणेसु । पुण्णेसु अत्थि वासं वासति पुण भिज्जमाणेसु ॥ १७ ॥ 10
 कुड-घटग-उंजरुद्धिक-आचमणिक-करक-कुंडिकासु वि य । पुण्णेसु अत्थि वासं वासति य पलोट्टमाणेसु ॥ १८ ॥
 णिस्सेंघियाणि दुट्ठेसु मुत्त-पुरीसकरणेसु य काणे । सेआइवपसण्णे सव्वम्मि सरीरनीहारे ॥ १९ ॥
 एएसु अत्थि वासं वुट्ठी पट्ठिपोगलेसु सव्वेसु । लुक्खेसु य तुच्छेसु य सुक्खेसु य आतवं चूया ॥ २० ॥
 णिस्सुचिते सवाते वाति जति सगज्जितं तहिं वासं । रुदितेसु विज्जुपतणं उक्कापातं सणिद्धट्ठे ॥ २१ ॥
 पासासम्मि पवट्ठे खेले सिंघाणके य मुक्कासं । रुदितं पि य अनुपद्वं उचारगते महावासं ॥ २२ ॥ 15
 बहलिका वि असेआइते उद्धपडसाहकेसु । वि य वालेसेउसु पवट्ठितेसु पवट्ठिमं वासं ॥ २३ ॥
 दगअसणि-दंगतुच्छलकेसु मज्जयर-पाणभूमीसु । यच्छच्छगणम्मि य सहले य णिद्धे महितले य ॥ २४ ॥
 जातम्मि जलचरे जलउवक्खरे जलयरेसु सत्तेसु । पुप्फे फले य जलजे जलोघजीवीसु य णरेसु ॥ २५ ॥
 उदइकदग-बहुगि-णाविग-जलकम्मि-याणिकाणं च । तेसिं कम्मूपत्तीसु चेव वासस्स उप्पत्तिं ॥ २६ ॥
 उदगपधउदकसंकाभणाय पणालीकोरणे य सव्वम्मि । दगजंतककुप्पलेसु चेव वासस्स उप्पत्तिं ॥ २७ ॥ 20
 देवाणं ण्हाणेसु य रायीणं पि य महाभिसेगेसु । दगसेविगमज्जणके मज्जण उवक्खरविधीसु ॥ २८ ॥
 वरमज्जणे धूमज्जणे थ गोसग्गण्हाणके चेव । यरपंचमज्जणे मज्जणे य तेरिक्खजोणीय ॥ २९ ॥
 एतेसु वुट्ठिपट्ठिपोगलेसु दित्तेसु सोभमाणेसु । मुदितेसु उदत्तेसु य वुट्ठिसुदचं वियाणेज्जो ॥ ३० ॥
 एतेसिं लाभे आगमे य उवगमण उवगमो वा वि । पादुब्भावे वा धारिते य वासस्स उप्पत्ती ॥ ३१ ॥
 एतेसिं सुंखणसेणे व्व हरणे व सणिरुद्धे वा । एतेसिं च अलाभेण चेव जाणे अणावुट्ठिं ॥ ३२ ॥ 25
 विपुलत्तमेसु विपुलं मज्झिमसारेसु मज्झिमं वासं । अप्पं च भवति वासं अजातिमंते असारे य ॥ ३३ ॥
 फरुसंकिदुकसराय तिरिक्खजोणीय माणुसेसु वि य । कंडूकासु य णासासु य फरुसासु भवे अणावुट्ठी ॥ ३४ ॥
 अभिजुत्तमभग्ग-इते लग्गे वा यद्ध रुद्धे वा । णिस्ससित-छीत-कासित-जंभायंते अणावुट्ठिं ॥ ३५ ॥
 णिप्पित्तिने णिगलिते शीणे इविते य लुक्ख-नुच्छे य । तुस-कैतल्लिछारिका-चुण्णछारिकायं चऽणावुट्ठी ॥ ३६ ॥
 जति दिवसा आभोगे रोधणकमभिग्गहे व आतम्मि । दुक्खस्स थ सहितव्या तति दिवसे आहवं चूया ॥ ३७ ॥ 30
 जतिहि दिवसेहिं मुघति इट्ठेहिं समेहिं इच्छितं लभति । जं वेलं च विमुचति तं वेलं णिहिसे वासं ॥ ३८ ॥

१ कंडकसगहणे हं० त० ॥ २ णदपलोइयहेछटियपासा' हं० त० ॥ ३ इस्सिधान्तर्गतः सार्वश्लोकः हं० त० एव
 वतते ॥ ४ सासासम्मि पवट्ठे हं० त० ॥ ५ 'दगवुत्थुल' हं० त० विना ॥ ६ पाणजोणीसु हं० त० ॥ ७ तु खणासणो
 य सणिण' हं० त० विना ॥ ८ 'सकतुगसरा' हं० त० विना ॥ ९ 'कवलि' हं० त० ॥ १० आतवं हं० त० विना ॥
 ११ भवति हं० त० ॥

- वासुष्वाते इष्टे मित्रागिकरे सुभे पसत्ये य । इच्छापूर्वपीडाकरेसु वासं सुभं व्रूया ॥ ३९ ॥
 वासुष्वातमगिष्टे अगिष्टुतिकरे य अप्ससत्ये य । पीडाकरे य असुभे वासं पीडाकरं व्रूया ॥ ४० ॥
 वासुष्वाते अप्ये अंभं विपुले भवे महावासं । अणुघट्टे अणुघट्टं दिष्टपण्टे य पुण णासो ॥ ४१ ॥
 देवतपूताणियमे समिद्धजाग-चलिकम्मकरणे या । जारिसया सा संपति तारिसकं गिहिसे वासं ॥ ४२ ॥
 5 जणो छणुसए था बाधुजे तथ धोल-उवणयणे । उज्जाणभोज-भत्तिय-जण्णागमणेषु य णराणं ॥ ४३ ॥
 आहारसुष्पत्ती गंधेषु वि य तथ गंधसंपत्ति । विविधाळंकारेसु वि जारिसिया रुयसंपत्ती ॥ ४४ ॥
 एतेसु तु मण्डुडी गुणसंपत्तीय जारिसी भवति । हासजणणी णराणं तारिसिया वाससंपत्ती ॥ ४५ ॥
 देव-मणुस्ता पस्ती चतुष्पदा जलचरा थलचरा य । दीसंति लड्डलाभा यथलाभो तारिसं वासं ॥ ४६ ॥
 इच्छासंपत्तीयं वसकायाणं च थायराणं च । जारिसिया संपत्ती तारिसिकं गिहिसे वासं ॥ ४७ ॥
 10 इच्छासंपत्तीसमागमेसु धम्म-उय-कामजोगाणं । जारिसिया तु णराणं संपत्ती तारिसं वासं ॥ ४८ ॥
 अत्यक्ते संपत्ती कम्मकत्तमि य रतीअ संपत्ती । धम्मत्ये य समाधी जारिसिया तारिसं वासं ॥ ४९ ॥
 रीसु इशरेसु य महाधणाणं कुहुविणं चेष । धहुरयणसंचयाणं णराणं जणपदाणं च ॥ ५० ॥
 इट्टिगुणा रायगुणा आरंभगुणा कुहुविणं चेष । णगरगुणौ णयराणं गिप्फत्तिगुणा जणपदाणं ॥ ५१ ॥
 जारिसिया सुयत्तं कथामु या जारिसा कथिज्जति । आहारमि य वसे तारिसकं गिहिसे देवं ॥ ५२ ॥
 15 कच्छाय जेट्टिपायं जति सिद्धी जेट्टकं भवति वासं । मज्झिमिकासु य मग्नं कणिट्टिकायं कणिट्टं च ॥ ५३ ॥
 कच्छागेषु जथ तथ जातिविसेसे वि समणुगतं । धाणविसेसेसु तथा सारा-उसारेसु य नराणं ॥ ५४ ॥
 कच्छागते ये काणं सेट्टित्तत्ये कामजोगेसु । जारिसिया सिद्धीओ तारिसकं गिहिसे देवं ॥ ५५ ॥
 कुम्भत्रये पणित्तये विजासिद्धीसु कम्मसिद्धीसु । जारिसिया सिद्धीओ तारिसकं गिहिसे देवं ॥ ५६ ॥
 जातीय उत्तमा हीजुत्तमं उत्तमं च कच्छायं । सारमि उत्तमे या वि उत्तमं गिहिसे वासं ॥ ५७ ॥
 20 एतेषु एक्कारमि वि जथ सिद्धी तारिसं भवति वासं । जति युत्तमसंजोगा ताव गुणं उत्तमं वासं ॥ ५८ ॥
 पुष्पामा पुष्पामा वसिषय्या य गिद्धा य मंगलिज्जा य । वद्धिकरा णदिकरा य एरिमा होति उप्पाता ॥ ५९ ॥
 मन्वे मपुरा य मणोहरा य इद्धा य गिष्टुविकरा य । चित्ता आणंदकरा य वरिसिया होति उप्पाता ॥ ६० ॥
 जार्ती रूपं यणो सत्तं मारो वलं व तेसो य । णाणं विष्णाणं विकमो य पगनी सभाथो य ॥ ६१ ॥
 एतानि मणुस्मानं जथ परराणुत्तमानि य भवंति । वासधरे समुदीरितमि तथ उत्तमं वासं ॥ ६२ ॥
 23 मे आपं या लंभं णार-णारिणं य एक्कमेक्कमि । पीती धट्टुमाओ-उगरो य पेम्माणुपाणो य ॥ ६३ ॥
 एतेमि पट्टिपक्करमि अथासं विग्गहे सुये तेसं । एतेसि च अलाभे पीडासमसंपदायं च ॥ ६४ ॥
 जारिसिया मंदरी सार-परिस-रम-रूप-गंधाणं । गुणजुष्ठा पीतिकरी तारिसकं गिहिसे वासं ॥ ६५ ॥
 पुग्गिमानि सुदुभेषु तु सुवासं च रिपमप्यमाणमि । परंसेसु तु अणुघट्टं मासयमाणे विरेदं पुरा ॥ ६६ ॥
 मंभएरप्यमाणेषु करिधूरं छोकपूरो य । पुणो चंदो तो मेघा यामनि संयत्तकृत्वाता ॥ ६७ ॥
 30 सुक्कसंज्ञा तमकाया धापरकाया य उक्कगुप्फ-कत्ता । सुवराया य दग्गधाणा धातो य भवे अणुदीयं ॥ ६८ ॥
 गिद्धं तमकाया धापरकाया य निद्धपुप्फ-कत्ता । गिद्धा य दग्गधाणा धातो य भवे सुवुदीयं ॥ ६९ ॥
 गिगिर-वर्ग-निदादा तु गुप्फ-कत्ता-नीकसुं-हाणं । अणुदये अतीगोभासु घेर अतीगोममो पूया ॥ ७० ॥

१ 'वसुष्वाणिय' ६० ॥ २ ॥ ३ ॥ ए'विहज्जमणुत्तमं ६० ॥ ४ ॥ ग'मि ॥ ५ ॥ 'ता य णराणं ६० ॥ ६ ॥ अ'आधारमि
 परित्ते ६० ॥ ७ ॥ ८ ॥ ५ ध'जणं सेट्टिमपथे ६० ॥ ९ ॥ सि'मि ॥ ६ ॥ ज'ति सुत्तमं ६० ॥ १० ॥ ७ ॥ 'राय' ६० ॥ ११ ॥ मि'मि ॥
 ८ ॥ 'सं' गो'द' ६० ॥ १२ ॥ ९ ॥ 'गु'प'दा'यं ६० ॥ १३ ॥

उदुसोमा य उपहता सीतं उण्हं फलं य पुंफं च । उद्वेसु ण सोभते तदा अबुद्धिं विद्याणीया ॥ ७१ ॥
 सब्वा दिसा वितिमिरा चंदा-ऽऽदिचा गहा सणक्खत्ता । विमला विपुलसरीरा दीसंति णभे सुबुद्धीयं ॥ ७२ ॥
 तिमिराकुला दिसाओ चंदा-ऽऽदिचा गहा सणक्खत्ता । फरुसा किंसा विपण्णा दीसंति णभे अबुद्धीयं ॥ ७३ ॥
 सम्मं चरंति णक्खत्ता उदू पुंफ-फलाणि या । सम्मं चंदो य सूरौ य सम्मं देवोऽत्य वासति ॥ ७४ ॥
 विसमं चरंति णक्खत्ता फलं पुंफं अणोदुगं । एवमादि जघाकालं काले वासति वासवो ॥ ७५ ॥ 5
 जुज्जति य जोतिसं सम्मं उदू पुंफ-फलाणि य । जघाकालं जघामुत्तं काले वासति वासवो ॥ ७६ ॥
 णक्खत्तजोगा उदुणो दुमा पुंफ-फलाणि य । ण भवंति जघाकाले पच्छा देवो ति वासति ॥ ७७ ॥
 पुण्णे पुण्णामे दक्खिणे य णिद्वे य आमसित्ताणं । एतेसिं पडिपक्खं पुणरवि पच्छा परामसति ॥ ७८ ॥
 पुरिमे भांसे वासति आसारो पच्छिमेसु मासेसु । जौव बहुं परिमसते जं बहुकं तं बहुं बूया ॥ ७९ ॥
 लुक्खे णपुंसके तुच्छके ये वामकडुके ये दीणे य । पुवं परामसित्ता पडिपक्खं से परामसति ॥ ८० ॥ 10
 पुरिमे मासे उंमंतो पच्छा वासति य पच्छिमे मासे । जं च बहुं परिमसती जं बहुकं तं बहुं बूया ॥ ८१ ॥
 एसेव सब्बदब्बेसु गमो सह-रस-रूय-गंधेसु । सज्जीवे णिज्जीवे य जं बहुं तं गहेतव्वं ॥ ८२ ॥
 जवमज्जा उप्पाता मुत्तिगमज्जा य जे उदीरंति । मज्जपसत्या अंतंसे गरिता पुरिमणिच्छेवा ॥ ८३ ॥
 एतेसु मज्जवासं मासे अस्तोय-पोट्टपादेसु । सावणवहुलामासेसु दोसु आसारमो बूया ॥ ८४ ॥
 जे होंति पणयमज्जा किबिलका र्वज-मुसलमज्जा वा । मज्जमिं पलित्ता अंतंकेसु विपुला पसत्या य ॥ ८५ ॥ 15
 एवं पुरिमं वासं मज्जे पच्छा य होति णातव्वं । तथ पुरिम-पच्छिमं वा मज्जं वा जेण पुण जुज्जे ॥ ८६ ॥
 सिंसवेसयसब्बे वि सोभमाणा सब्बकालिकपसत्या । सब्बे वि अप्पसत्या तदा अबुद्धिं विद्याणेज्जो ॥ ८७ ॥
 दिवस-मुहुत्तपमाणे वासारत्तो तु हवति दोमासो । फूसल्लि एत्थ वासति ण य होंतित्य सारघण्णाणि ॥ ८८ ॥
 पक्खपमाणुप्पाते वासारत्तो तु हवति तेमासो । फूसल्लि एत्थ वासति ण य होंति तेलालपुरत्था ॥ ८९ ॥
 चातुम्मासं वासति वासपमाणे तु मज्झिमं वासं । मज्झिमिका एत्थ भवे णिफ्फती सब्बघण्णाणं ॥ ९० ॥ 20
 वासति य पंचमासे वासपमाणे तु उत्तमं वासं । णिफ्फज्जते य सत्ता अंधिगं सई सारघण्णाणं ॥ ९१ ॥
 पुण्णामे पुण्णेसु य णीरोगेसुवचित्तो णिद्वेसु । मुदित्तो उदत्तेसु य णिफ्फती सब्बघण्णाणं ॥ ९२ ॥
 लुक्खे णपुंसकेसु य तुच्छेसु किसेसु अप्पसारेसु । थाणेसुवहुत्तेसु य इति बूया अबुद्धिं वा ॥ ९३ ॥
 पुण्णेसु सुबुद्धिं धातकं च अधिगं सई ये घण्णाणं । तुच्छेण अबुद्धिं छातकं य सइ सत्सगासाय ॥ ९४ ॥
 पुण्णामे णिफ्फती पुण्णामाणं तु सब्बघण्णाणं । धीगामे णिफ्फती धीगामाणं च घण्णाणं ॥ ९५ ॥ 25
 पुण्णामा धीगामा य णत्थि सत्ता णपुंसके केयि । वासच्छिदं च भवे रिक्तफला जायते सत्ता ॥ ९६ ॥
 उत्तममंगांमासे पादुब्भावे य उत्तमाणं तु । उत्तमया भौगाणं णिफ्फती सब्बघण्णाणं ॥ ९७ ॥
 मज्झिमगाणामासे पादुब्भावे य मज्झिमाणं तु । मज्झिमज्जहण्णाणं णिफ्फती सब्बघण्णाणं ॥ ९८ ॥
 पेत्संगाणामासे पादुब्भावे य पेत्सवग्गरसा । णिफ्फत्तिं घण्णाणं पेत्सज्जणस्सेव भोगाणं ॥ ९९ ॥
 पुण्णामा धीगामा उत्तम-मज्झिम-जहण्णवग्गा य । णिरुहुता उवचित्ता य जति य होंति पसण्णा वा ॥ १०० ॥ 30
 तण्णामा तव्वण्णा तं ताणि य जणामोपभोगा वा । निफ्फज्जते य सत्ता अधिकं च सईमया होंति ॥ १०१ ॥

॥ पडलं चोयीसत्तिमं ॥ छ ॥

१ पव्या देवोऽत्यथ वा ० हं तं विना ॥ २ वाते वासति आकारो हं तं ॥ ३ जो बहुं हं तं विना ॥ ४ तु अंनो
 हं तं विना ॥ ५ सु मरि ० हं तं ॥ ६ मज्जमुसल्लयज्जा हं तं ॥ ७ अंधकेसु हं तं ॥ ८ णित्ताएत सब्बे
 हं तं विना ॥ ९ अधिसगरहं हं तं ॥ १० मं सिई हं तं विना ॥ ११ भागेणं हं तं ॥

[पणुवीसहस्रं पडलं]

- देवाणं तु पणमेण मुहुत्ता वंदितेण दिवसा तु । अभिसंयुतीए पक्खा ओवयित-णमंसिते मासा ॥ १ ॥
 धूमो चुण्णेषु कतो ति मुहुत्ता मुक्कपुण्यो दिवसा । कंठेगुणेषु पक्खा मासा तु समिद्धजोगेषु ॥ २ ॥
 लामसस तु धुवकारे एवं कालो तु एस बोधव्वो । हुक्करसस उ आगमणे पडिल्लोमो एस बोधव्वो ॥ ३ ॥
 5 अम्मा-पितीसु मासा पक्खा तु भवंति मातुग्गम्मि । पुत्तेसु होति दिवसा अप्पसरीरम्मि य मुहुत्ता ॥ ४ ॥
 अप्पत्यम्मि मुहुत्ता पुत्तत्यम्मि दिवसे वियाणेज्जो । मित्तत्यम्मि य पक्खा मासा य महाजणत्यम्मि ॥ ५ ॥
 रायव्वो त्ति मुहुत्ता महत्तरकल्लो त्ति दिवससो जाणे । णिगमत्था वि य पक्खा मासा य भवे जणपदत्थे ॥ ६ ॥
 रायाणं ति मुहुत्ता महत्तरकाणं ति दिवससो जाणे । णिगमाणं ति य पक्खा मासा गामरस आणं ती ॥ ७ ॥
 सेट्ठिपसादे मुहुत्ता दिग्गमा जाण पत्तीपसादम्मि । < संतिपसादे पक्खा मासा रायप्पसादम्मि ॥ ८ ॥ >
 10 इंद्रिगि त्ति मुहुत्ता पवणग्गि त्ति दिवसा विधीयंते । उदरग्गि त्ति य पक्खा मासा आदिच्चमग्गि त्ति ॥ ९ ॥
 विज्जुपंतणे मुहुत्ता अग्गिणिपाते य दिवससो जाणे । सूरणिपाते पक्खा मासा बुद्धीणिपातम्मि ॥ १० ॥
 पोरपरोवे मुहुत्ता वामुवरोवेण दिवससो जाणे । मित्तुवरोवे पक्खा मासा रातोरोधम्मि ॥ ११ ॥
 समतिच्छिए मुहुत्ता धितम्मि दिवसा उवेकरते पक्खा । मासा य णिवण्णम्मि तु वासा य भवे पसुत्तम्मि ॥ १२ ॥
 संपत्थितो त्ति मासा अद्धपथं आगतो त्ति < पक्खा तु । एकउसधि त्ति > दिवसा अतीति एते त्ति य मुहुत्ता ॥ १३ ॥
 15 परमज्जा ति मुहुत्ता दिवसा पणितमहिद्धि त्ति णातव्व्या । मित्तमिधुगं य पक्खा मासा य सकसु पत्तीसु ॥ १४ ॥
 अंतो वारमुहुत्ता दिवसा अर्द्धमंतरे उवट्ठाणे । पक्खा य आतिकामु तु मासा पुण अंगणे होति ॥ १५ ॥
 अंतोनिवेशणे होति मुहुत्ता कोट्टके तथा दिवसा । उव्वरकम्मि य पक्खा मासा य भवे पडिहारे ॥ १६ ॥
 सारीमुहेसु तु दिवसा मुहुत्ता णिवेसणसस दारम्मि । सारीसु होति पक्खा मासा पुण रायमग्गम्मि ॥ १७ ॥
 अंतोपुरे मुहुत्ता अंतोणगरे य दिवससो भूया । चाहिरकायं पक्खा मासा गामंतररायम्मि ॥ १८ ॥
 20 सीमागते मुहुत्ता दिवसद्वाग्गम्मि दिवससो जाणे । पक्खा पररट्ठाणे मासा पुण दिवसमट्ठाणे ॥ १९ ॥
 मंडवको त्ति मुहुत्ता दिवसा उदयमंडपारकेसु । सण्णालामु य पक्खा मासा य घरे समालम्मि ॥ २० ॥
 रायणिहेसु तु मामा पक्खा तेमग्गिहेसु णातव्व्या । कारुग्गिहेसु दिवसा पधिकणिलयेसु तु मुहुत्ता ॥ २१ ॥
 रंपारो त्ति मुहुत्ता दिवसा गामेसु होति णातव्व्या । रेहेसु होति पक्खा मासा णगरेसु णातव्व्या ॥ २२ ॥
 सव्वेषु किच्छवित्तिसु मुहुत्ता कारगेसु दिवसा तु । पक्खा यव्वासेसु तु मासा सामादयज्जणम्मि ॥ २३ ॥
 25 जण-उणपरिरेहेसु प्थ यामाणि होति मासा या । णिधणिगामग्गेषु तु दिवसा पक्खा य णातव्व्या ॥ २४ ॥
 चक्कग्गिणं त्ति मुहुत्ता धित पोट्ठि दिवसा विधीयंते । मायणसुराय पक्खा मासा आपागके होति ॥ २५ ॥
 पाणीधम्मि मुहुत्ता गुट्ठपाणीयं परं च दिवसा तु । मट्ठपिट्ठीयं पक्खा जातिपरसण्णा अट्ठिे य ॥ २६ ॥
 मज्जमयो त्ति मुहुत्ता इम्मरियमयेसु यामसो भूया । निज्जामयो त्ति पक्खा मासे जाणे कुट्टमयो त्ति ॥ २७ ॥
 पीपारम्मि मुहुत्ता दिवसा कोरयउठलमत्तेसु । यीहीसु होति पक्खा मामा सालीसु णातव्व्या ॥ २८ ॥
 30 अरुंदिहे मुहुत्ता दिवसा यावूसु होति णातव्व्या । पक्खा अंबेद्धि-विनेवियम्मि मासा य वूरम्मि ॥ २९ ॥
 दुट्ठे हींति मुहुत्ता दिवसा दधिकम्मि होति णातव्व्या । लयणरम्मि य पक्खा मासा मपुरे रते होति ॥ ३० ॥
 निक्कयायं तु मुहुत्ता दिवसा पुन वट्ठितो होति । परिवेगं ति पक्खा मासा भोजं ति णातव्व्या ॥ ३१ ॥
 दानं पुण्यं हींति मुहुत्ता म्हायतद्वागके दिवसा । अरुंदाग्गम्मि पक्खा मामा य हिरण्यदाग्गम्मि ॥ ३२ ॥

उत्ताणसेज्जे होंति मुहुत्ता रिग्माणके दिवसा । तरुणवयस्मि य पक्खा मासा पुण मज्झिमवयस्मि ॥ ३३ ॥
 संज्ञायं तु मुहुत्ता दिवसा पढमिल्लके पदोत्तमि । पक्खा तु मासवेले मासा तु ठितद्वरत्तमि ॥ ३४ ॥
 मासा चेव पयत्तिगतमि लेहागमे तु पक्खा तु । दिवसा गतागमणे तस्स णिग्गामणमि य मुहुत्ता ॥ ३५ ॥
 अरुणेदये मुहुत्ता दिवसा सुजोदये विधीयते । पुव्वण्हमि य पक्खा मासा य भयंति अवरण्हे ॥ ३६ ॥
 लोहरजे तु < १ मुहुत्ता > दिवसा तवु-सीसगेसु लोहेसु । पक्खा य तंवहारं कूडके सुवण्णे तथा मासा ॥ ३७ ॥ १
 दुविधमि काललोहे मासे संवच्छरे य जाणेज्जे । मासा तु तिक्खलोहे वस्साणि तु मुंडलोहमि ॥ ३८ ॥
 अट्टागते हिरण्णमि मुहुत्ता णाणकमि दिवसा तु । पण्णरसेद पक्खा मासा तीसोवके होंति ॥ ३९ ॥
 अट्टाकयाकये होंति मुहुत्ता मासकैकये दिवसा । अट्टुकये य पक्खा मासा पडिकैकये होंति ॥ ४० ॥
 काहापणा यति कयकयमि मासा तु तत्तिथा होंति । जति होंति सताणि कयाकयसस तति होंति वस्साणि ॥ ४१ ॥
 तीसतिभागे सुहुममि मुहुत्ता होंति सुहुमछेदे ति । सुहुलकभागछेदो मितिभागे दिवसमो जाण ॥ ४२ ॥ १०
 पण्णरसममि भागे मज्झिमकायेसु पक्खमो जाण । वारसभागमि य कइकेसु मासो भवति कालो ॥ ४३ ॥
 अँच्चत्यमहासारे वारसभागमि वस्समो जाणे । तति वस्सा णातव्वा हवंति जति भागलद्धीओ ॥ ४४ ॥
 अत्थत्थिकागमणमि पुण्णहत्थमि लामभो बूया । रिक्क-मुच्छकहत्थमि आगते णत्थि संपत्ती ॥ ४५ ॥
 उच्छंगमायणे होंति मुहुत्ता दिवसमो तु पुडिकसु । पक्खा तु विअलभाणे मासा पुण लोहमाणमि ॥ ४६ ॥
 वस्सपुप्फिते मुहुत्ता दिवसा किंचि पवट्ठिते होंति । पक्खा वदलिकाया मासा ये भवे विरजसूरे ॥ ४७ ॥ १५
 उल्लोकिते मुहुत्ता णक्खत्तेसु दिवसा विधीयते । तारा-गहेसु पक्खा मासा पुण चंद-सूरेसु ॥ ४८ ॥
 एकगामे एकणारे व एकमि निवेशणे वा वि । मासा पक्खा व भवे चहुजगसाधारणे देसे ॥ ४९ ॥
 एकवर-एकसेज्जा-एक्कासण-एकभायणगते य । एकोऽथ अट्ठोत्तो अच्चासण्णे य मलितमि ॥ ५० ॥
 एतेसिं भावाणं पसत्थगुणसंथवे सुभो लामो । णिंदित-दोसगरहणासु चेव असुभो भवति लामो ॥ ५१ ॥
 पुप्फरतमि मुहुत्ता दिवसा पुण होंति सुक्कपुप्फमि । गुच्छेसु होंति पक्खा सुंभलक-उरच्छके मासा ॥ ५२ ॥ २०
 आपेलगेसु दिवसा पक्खा पुण मालिकासु णातव्वा । वट्टापेले मासा मुहुत्तेसु भवंति वस्साणि ॥ ५३ ॥
 अवरण्हे धैण्णेसु य दिवसा मासा व होंति सकलेसु । कणलीकतेसु पक्खा चुण्णाणि कतेसु य मुहुत्ता ॥ ५४ ॥
 देवेसु य रायीसु य मासा संवच्छरा य णातव्वा । पक्खा वा मासा वा सेसेसु मणुस्सभागेसु ॥ ५५ ॥
 आयरिय उवज्जाये अम्मा-पितु-गुरुजणे य सव्वमि । थाणत्थिते य सव्वमि मासे संवच्छरे जाणे ॥ ५६ ॥
 एतेणऽणुमाणेण तु कालं मुण सव्वदव्वेसु । थाणत्थाणविसेसेहिं चेव मुण माणुसाणं पि ॥ ५७ ॥ २५
 जघ कालो तघ लामो तथा सुहं तह य जीवितं 'देहं' । तघ दव्वाणं सारो तघ ठाणगुणे य बोधव्वो ॥ ५८ ॥
 लामो कालविंगंरो सारा-उसारे य पुच्छणट्ठरस । पगणिमित्तेण वि अणुगतमि तुजेण बोधव्वं ॥ ५९ ॥
 आधारणासु 'वहुसु वि जति सो चेव अणुबंधए भावे । ण य अण्णा उप्पज्जति तेण उ सव्वं वयसियव्वं ॥ ६० ॥
 वामिस्सेसु 'वहुसु वि णाणत्थेसु समुदीरमाणेसु । जे तव्वावणुबंधी तज्जोणीया य ते गज्जा ॥ ६१ ॥

॥ पडलं [पणुवीसहस्रं ॥ २५ ॥] छ ॥

३०

१ < १ > एतच्चिहान्तर्गतं पदं हं० त० नास्ति ॥ २-३ 'कङ्कसे' हं० त० ॥ ४ अम्मत्थ' हं० त० ॥ ५ य रूढे
 विरजसूरे हं० त० ॥ ६ णेयव्वा हं० त० ॥ ७ धण्णेसु हं० त० विना ॥ ८ फलणीक' हं० त० विना ॥ ९ पुण्णा' हं० त०
 विना ॥ १० कूलो हं० त० ॥ ११ दीहं हं० त० ॥ १२ हल्लविहान्तर्गतः श्रेयपरिमितः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ .

[छव्वीसद्वयं पदलं]

द्विद्वमि आगतमि य लद्धे थोवतरके मुहुत्तगे । दीवस्स य णिव्वामण एकदिवसो मुणेत्वो ॥ १ ॥
 एकजुगलमि पुरि[सि]त्थिसंगमे एकमो अहोरत्तं । रँचंवरुच्छेहि य परिवुत्थं होयहोरत्तं ॥ २ ॥
 जति मिधुणफाणि संघडिताणि तति णिदिसे अहोरत्ते । जति पुण्णामाणि समागताणि तति णिदिसे दिवसे ॥ ३ ॥
 जं जतिहि अहोरत्तेहि होंति जं जतिहि भवति दिवसेहि । पक्खेहिं व मासेहि व तस्सुप्पत्तीय सो कालो ॥ ४ ॥
 जो जत्तिण्ण कालेण जाति जातं च भवति णिप्फण्णं । सो कालो णातव्वो तस्सुप्पायस्स लद्धीय ॥ ५ ॥
 जं जत्तिण्ण कालेण कीरते जस्स देसकालस्स । जम्मि व कीरति काले सो कालो तेण णातव्वो ॥ ६ ॥
 कतणिद्वित्तमिं दव्वे वालाभमुपट्ठितमि कालेण । जेण य तं निप्फज्जति सो कालो तेण बोधव्वो ॥ ७ ॥
 आगतमेत्ते व समागते व दिण्णमि णिट्ठिते लद्धे । सिग्गं च पडुप्पण्णे संपत्ती तत्तियं वेळं ॥ ८ ॥
 एहिंति दाहिंति काहिंति कम्मं होहिंति य मा वतूरित्त्य । दुक्खेण व परिगणित्तमि दिग्गकालो भवति कालो ॥ ९ ॥
 थोयं सेसं सिद्धं विपथत्ते याहिं ता मुहुत्तागं । दूरागतो पथे वा गतेहिं दिवसा मुहुत्ता वा ॥ १० ॥
 पुण्णेसु समत्तेसु य मासं संवच्छरं ति जाणेज्जो । सव्वट्ठेसु य पक्खो दिवसो य चतुत्थभागेसु ॥ ११ ॥
 जुण्ण-विमदित्त-अलित्त-विलिहिते दीहेण भवति कालेण । णव-तरण-सरस-लहुसंपदासु थोवो भवति कालो ॥ १२ ॥
 सव्वेसिं दव्व्याणं अकत्तिमाणं च कत्तिमाणं च । इट्ठत्त-मज्झिममणिद्वत्ता य तिविधा गती गेया ॥ १३ ॥
 पुण्णामा सारजुता मज्झिमसार य होंति थीणामा । जे तु णपुंसकणामा ते तु असारसु बोधव्वा ॥ १४ ॥
 कालो तु महासारेसु महंतो मज्झो य मज्झसारेसु । अप्पो य हवति कालो असारवंतसु सव्वेसु ॥ १५ ॥
 जथ णामा तथ रूवा सदा गंधा रसा य फासा य । पंचविधा उप्पाता एतेण गमेण बोधव्वा ॥ १६ ॥
 ॥ भगवतीय महापुरिसदिण्णाय अंगविज्ञाय कालज्ज्ञांयो पदलं ॥ २६ ॥ छ ॥

[सत्तावीसद्वयं पदलं]

अथापुव्वं रल्लु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्ञाय कालप्पविभागं णामज्झायं पक्खस्सामि । तं जथा-तत्थ
 कालो पंचविधो भवति । तं जथा-मुहुत्तप्पमाणं दिवसप्पमाणं पक्खप्पमाणं मासप्पमाणं संवच्छरप्पमाणमिति ।
 मुहुत्तप्पमाणं <१> तिविधं-२> दिवसप्पमाणं रत्तिप्पमाणं मिण्णरत्ति-दिवसप्पमाणमिति । तत्थ दिवसप्पमाणं
 तिविधं-पंचरत्तप्पमाणं दसरत्तप्पमाणं पण्णरत्तप्पमाणमिति । तत्थ पक्खप्पमाणं तिविधं-एकपक्खप्पमाणं विपक्खप्प-
 माणमिति । तत्थ मासप्पमाणं एकारत्तविधं-एवमासप्पमाणं विमासप्पमाणं तिमासप्पमाणं चतुमासप्पमाणं पंचमास-
 २६ प्पमाणं छमासप्पमाणं सत्तमासप्पमाणं अट्ठमासप्पमाणं णवमासप्पमाणं दसमासप्पमाणं एकारत्तमासप्पमाणं <१> मिति ।
 तत्थ संवच्छरप्पमाणं अपरिमितविधं भवति ।
 तत्थ केस-अंसु-ण-लोमसमासासे सुदुसत्तेसु अणूसु टिएसु अच्छरफ्फोदणे अंगुलिफ्फोदणे य मुहुत्तप्पमाणं भूया ।
 तत्थ कण्ठा णासा सुमका णयण-त्रिम्मोह-दंत-पोरिसपरिमासे अंगुट्ठकंगुलिगदणे मज्झिमाणंतरकायेसु येव पुप्फ-फलेसु
 दिवसप्पमाणं <२> एधं भूया । तत्थ जंधोरु-दत्थ-पाद-थाट्ट-गीया-अंस-कोप्पर-फिज्जागदणे मज्झिमकायेसु सत्तेसु मज्झिम-
 ३० कायेसु पुप्फ-फलेसु येव पक्खप्पमाणं भूया । तत्थ पट्टी-उदर-कडी-उर-सीससमासासे पायवंतेसु सत्तेसु येव पुप्फ-फलेसु
 मासप्पमाणं भूया । एते येव उद्वंभागेसु उग्गट्ठेसु यासं संदच्छरप्पमाणं भूया । तत्थ अयदातेसु सुकःकलं दिवसं वा

१ जेयापेण ६० त० विना ॥ २ इमाधिहान्तर्गतस्यार्थं ६० त० एव वर्तते ॥ ३ 'मिंम दिवसे वालारसु पट्ठि' ६० त० ॥
 ४ 'ज्जायो रम्मसो ॥ छ ॥ ६० त० विना ॥ ५ <१> एतधिहान्तर्गतं पदं ६० त० नास्ति ॥ ६ <२> एतधिहान्तर्गतः
 पदगन्धर्मे ६० त० नास्ति ॥

धूया । कण्ठेसु कालपक्खं रत्तिं वा धूया । सामेसु संज्ञं वा पक्खसंधिं वा धूया । णिद्धेसु वासारत्तं धूया, कण्ठेसु वि वासारत्तं धूया । सुक्खेसु सरदं धूया, पसण्णेसु वि सरदं धूया । सीते हेमंतं धूया, < संतुंतेसु य हेमंतं धूया । > [.....तिसिरं धूया,.....वि तिसिरं धूया ।] सामेसु वसंतं धूया, मुदितेसु वि वसंतं धूया । लुक्खेसु गिम्हं धूया, उण्ठेसु वि गिम्हं धूया । वालेयेसु पाउसं धूया, उवणिद्धेसु णिद्धेसु वा पाउसं धूया । एवं रत्तीयं वा दिवसे वा सुक्कपक्खे वा कालपक्खे वा अण्णतरस्सि वा छण्हं उदुणं उदुंसि आधारितंति संज्ञा-पक्खसंधीसु वा उदुसंधीसु वा < आधारितेसु एतेहिं जघुत्तेहिं आमासेहिं उवलद्धव्वं भवति, सह-रूपपादुच्चावेसु चैव समणुगतव्वं भवति ।

तत्र मासेसु पुत्राधारितेसु कतमो मासो ? चि । तत्र पुरिमेसु गत्तेसु कत्तियं वा मग्गसिरं वा पोसं वा धूया, संवच्छरे पुत्राधारिते अग्गेयं वा सोमं वा पोसं वा संवच्छरं धूया । दक्खिणेसु गत्तेसु < माहं वा फग्गुणं वा चैत्तं वा वेसाहं वा मासं धूया, संवच्छरे पुत्राधारिते < माहं वा फग्गुणं वा चैत्तं वा वेसाहं वा संवच्छरं धूया । पच्छिमेसु गत्तेसु जेट्टामूलं वा आसाढं वा सावणं वा मासं धूया, संवच्छरे पुत्राधारिते जेट्टामूलं वा आसाढं वा < सावणं वा संवच्छरं धूया । वामेसु गत्तेसु पोट्टपदं वा अस्सयुजं वा मासं धूया, संवच्छरे पुत्राधारिते पोट्टपदं वा अस्सोजं वा संवच्छरं धूया । द्दडेसु गत्तेसु फग्गुणं वा आसाढं वा पोट्टपदं वा मासं धूया, संवच्छरे पुत्राधारिते फग्गुणं वा आसाढं वा पोट्टपदं वा संवच्छरं धूया । चलेसु सावणमासं धूया, संवच्छरे पुत्राधारिते सावणं संवच्छरं धूया । निद्धेसु सावणं वा पोट्टपदं वा अस्सोजं वा कत्तियं वा धूया, संवच्छरे पुत्राधारिते सावणं वा पोट्टपदं वा अस्सोजं वा कत्तियं वा संवच्छरं धूया । लुक्खेसु चैत्तं वा वेसाहं वा जेट्टामूलं वा आसाढं वा मासं धूया, < संवच्छरे पुत्राधारिते चैत्तं वा वेसाहं वा जेट्टामूलं वा आसाढं वा संवच्छरं धूया । सीतेसु संतुतेसु य मग्गसिरं वा पोसं वा माहं वा मासं धूया । संवच्छरे पुत्राधारिते मग्गसिरं वा पोसं वा माहं वा संवच्छरं धूया । एवं आमास-सह-रूपपादुच्चावेसु उदुउपचारेहिं कम्म-चेट्टापविचारेहिं णक्खत्तदेवयकम्मोवयारेहिं उवलद्धीहिं चैव जघोपदिट्ठेहिं आधारयित्ता आधारयित्ता मास-संवच्छरोपलद्धीहिं कतमो पवासमणुगतव्वं भवति । इति मासपरिसंखा ।

< संवच्छरपरिसंखा > पमाणाणिवेव णामतो देवतोपलद्धीहिं उदुप्पविभागेहिं चैव वक्खत्तं भवतीति । तत्र पक्खे 20 पुत्राधारिते णीहारेसु पक्खप्पमाणं धूया । उजुभागेसु अवत्थितेसु मासप्पमाणं धूया । आहारेसु तिपक्खप्पमाणं धूया ।

दिवसे पुत्राधारिते एक्कात्ते एक्काभरणके एक्कोपकरणे एक्कचरेसु सत्तेसु एकसाहागते चैव एक्काहिकप्पमाणं धूया । तत्र द्दडेसु गत्तेसु विअंगुलिग्गहणे यमलाभरणके यमलोपकरणे मिधुणचरेसु चैव सत्तेसु विद्वप्पमाणं धूया । तत्र तिअंगुलीग्गहणे सुमकंतरे णासग्गे तिके अंपदूयं अखत्तरे पोरिसे वत्थिसीसे तियमलोपकरणे तिकसदपडिरूव-आकार-पादुच्चावेसु चैव तिद्वप्पमाणं धूया । तत्र चउरंगुलिग्गहणे पादतलपाणितले उम्मज्जिते उट्ठोकिते उट्ठिते णेट्टे गीते वादिते 25 दंदजमलोदीरणे चतुक्कसदपडिरूवे आकारपादुच्चावेसु चैव चात्तहिकप्पमाणं धूया । तत्र पंचंगुलिग्गहणे सुट्टिग्गहणे यणग्गहणे फिजाग्गहणे सयणा-SSसणे सपुरिसे सव्वपंचकपरामासे पंचकसदपडिरूवा-SSगारपादुच्चावेहिं चैव पंचाहप्पमाणं धूया । तत्र शुक्कग्गहणे मणिवंधग्गहणे छसु वा एककेसु तिसु वा विकेसु बिसु वा तिकेसु एकके पंचकसहिते विके चतुक्कसहिते छक्कसदपडिरूव-आकारपादुच्चावेहिं चैव छाहिकप्पमाणं धूया । तत्र सत्तकपरामासे चतुक्के तिगसहिते पंचगे दुग्गसहिते छके एककसहिते बिसु वा विकेसु एकगसाधारणेसु तिसु वा विकेसु एकसाधारणेसु 30 सत्तकसदपडिरूव-आकारपादुच्चावेसु चैव सत्ताहिकप्पमाणं धूया । तत्र विचउकोदीरणे चउण्हं वा दुग्गणं दंसणे अट्टसु

१ < 1 > एतच्छिद्धान्तर्गतः पाठः हं त० नास्ति । २ इत्थच्छिद्धान्तर्गतः कठ हं त० एव वर्तते ॥ ३ °परिचारे° हं त० विना ॥ ४ < 1 > एतच्छिद्धान्तर्गतः पाठः हं त० नास्ति । ५ अपत्तयं अखंतरे हं त० विना ॥ ६ सुट्टिकरणे धणंतरे गहणे 'फिजा' हं त० विना ॥

- वा एकत्रैमु अद्वरुसदपडिरूय-आकारपादुच्चावेसु चैव अट्टाहिकं घूया । तस्य चउकपंचकोदीरणे अट्टके एकमसहिते तिकाणं या तिण्हं दंसणे सत्तके विकसहिते णवण्हं वा एककाणं उदीरणे परामासे वा णवकसदपडिरूया-ऽऽकार-पादुच्चावे चैव णवाहिकप्पमाणं घूया । तस्य पंचकदंडोदीरणे पंचकजुगलमगहणे पंचण्हं वा तिकाणं दंसणे दसकरपरामासे वा दसकरुयगोदीरणे वा दसकपडिरूय-आकारपादुच्चावे चैव दसाहिकप्पमाणं घूया । एवं नेतव्वं वा योगेणं दिवसप्पमाणं ६ जाय एकुण्ठीसतिरत्तातो । विपक्खे वाऽऽधारिते उप्पणे वा जोगेणं ण्णसरत्तातो उद्वं जाय भिण्णमासमासप्पमाणातो त्ति नेतव्वं दिवसप्पमाणं भवति । इति दिवसप्पमाणं वा योगेणं आमास-सद-पडिरूयपादुच्चावेहिं य उवलद्वयं भवति । तस्य मासप्पमाणे पुञ्जाधारिते एतेणेय एकग्गादिणा दुग्-तिग्-चउक-पंचक-उक्क-सत्तक-अट्टक-णवक-दसक-वग्गकमेणं यथा दिवसप्पमाणं उददिद्वं आमास-सद-पडिरूया-ऽऽकारपादुच्चावविधीहिं तद्वा पकरप्पमाण ५ मवि नेतव्वं भवति । जथा वा जोगप्पमाणं दिवसप्पमाणे ७ उदिद्वं तथा ६ मसप्पमाणं पि वा जोगए दिद्वयं भवति ।
- 10 इति ६ मासप्पमाणं यक्खतां भवतीति ।

- तस्य संवच्छरप्पमाणे पुञ्जाधारिते संवच्छरप्पमाणे उप्पणे जथा मासप्पमाणेण एकग्गादिणा विग्-तिग्-चउक-पंचक-उक्क-सत्तक-अट्टक-णवक-दसकवग्गकमेण जथा मासप्पमाणमुददिद्वं आमास-सद-पडिरूया-ऽऽकारपादु-च्चावेहिं तथा संवच्छरप्पमाणं व नेतव्वं भवति । जाय कोटिवग्गाओ अपरिमितवग्गातो वा यथा वा जोगा अकर-ट्ठाणं आमासा य उददिद्वं णिधीसुत्ते तथा नेतव्वं भवति संवच्छरप्पमाणं परिमितं अपरिमितं चेति । मुहुत्त-दिवस-पकरप्पमाण-मास-संवच्छरप्पमाणाणि चैव पुणरवि अण्णोणसमाजोगेणं भिण्णाणि एतेहिं चैव यग्गेहिं वा जोगट्ठाणेहिं य आपारयित्ता संजोयणाविसेसेहिं सम्मं समणुगंतंवाणि भवति ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्ञाय कालज्झायो णाम
एणेनपट्टि(णसट्टि)मो संम्मत्तो ॥ छ ॥

[सट्टिमो पुच्चभवविद्यागज्जाओ-पुच्चद्वं]

- 20 अपापुच्चं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्ञाय पुच्चभवविद्यागं णामज्झायं । तं खलु भो ! तमणुवरत्त-हसामि । तं जपा-तस्य अंगवता अवग्गेणं मज्जात्थेणं तणुएगदोसेणं भवित्त्वं अप्पणे अज्जस्यत्तमावेणं परेण वा पुच्छितेणं 'वो मे भते ! पुरिमो अणंतरपच्छाकदो भयो ?' ति एयसुत्तेणं सम्ममवग्गसतीकेणं अंतरंणे माहिरंणे वा हदुभये वा भयो पउञ्चिदो आपारयित्तवो भवति । तं जथा-देवभयो मणुसभयो तिरिकरत्तोणिअभयो णेरइकभयो चेति । तस्य उदंणीयाय सितोमुहामासे उग्मज्जिते उद्धोत्रिते पदरिते उरित्ते उदित्ते एकंमाकरणे छल-भंगार-पहागा-
-13 लोमदत्थ-यामककटव-यामरा-वीरणीदंसणे सेसाजोग-जण्ण-यत्तिपादुच्चावे पद्वेण्णते अचिगते वंदिते पुषिते सत्तते संपुते पानोवरअंजलिकरणे देवतपूयापादुच्चावे सव्यदेवगते सव्यदेवणामोदीरणे मव्यदेवणामधेमे षी-पुरिमगते देवकम्मपरि-किणगामु मव्यदेवोरपारत्ते एयंविधे पेरित्ततामासे सद-पडिरूयपादुच्चावे चैव देवभरातो आगते ति देया अण्णर-पय्पाकदो नि घूया । तस्य क्खरातो देवनिक्कायानो आगतो ? ति पुणरवि आपारयित्तव्वं भवति । तं जथा-देवज्झाते तं उददिद्वं विधी देवनिक्कायाणं आमास-सद-पडिरूयपादुच्चावोवलद्वीहिं तथा आपारयित्तव्वं भवति, आपारयित्ता
-10 उवलद्वयमा भवति । तस्य पुणरवि देवोरखद्वीयं देवणालो आगतो आपारयित्तव्वं भवतीति इति देवभरो पुरिमो रिण्णेवो भवति ।

१ वा जोगेणं ६- १० ॥ २ १ ६- एयंविद्यागं १०- १० ॥ ३ इयंविद्यागं १०- १० ॥ ४ एयंविद्यागं १०- १० ॥

५ १०- १० ॥ ६ १०- १० ॥ ७ उददिद्वं एयं ६- १० ॥ ८ १०- १० ॥ ९ १०- १० ॥ १० १०- १० ॥

११ १०- १० ॥ १२ १०- १० ॥

तथ समगताभासे उज्जुकपेक्खिते उज्जुकवक्कोपचारे उज्जुभावागते उज्जुववहारगते णिकूडे णिरुवहते सब्वउज्जुक-
कम्मोपचारगते अंबिसंवाद्गाय सब्वमाणुसगते सब्वमाणुसोपचारगते सँवमाणुसोपकरणए सब्वमाणुस-
कम्मचेद्दागते चेव एवंविधे पेक्खितामासे पडिरूव-सद्दापटुब्भावे चेव माणुसर्भवातो आगतो सि माणुसभवातो अणंतर-
पच्छाकडो सि बूया । तथ कतमेहि माणुसेहि आगतो सि जधुत्तं आधारयितव्वं । तस्स जातीविचये आरिय-मेलक्खु-
अज-पेस्सोपलद्धीयं दीव-समुद्-पव्वतवासीतो वा आमास-पडिरूव-सद्दापटुब्भावोपलद्धीहि आधारयित्ता आधारयित्ता ८
उवलद्धव्वं भवतीति । तथ पुणरवि थीभावातो वा पुरिसभावातो वा कत्तो आगतो सि आधारितंति जधुत्ताहि
थी-पुरिसणुसकोपलद्धीहि उवलद्धव्वं भवतीति । इति मँणुस्सभवो पुरिमो विण्णयो ।

तथ तिरियामासे सब्वउपधि-णिकडि-सँतिकजोगकरणे सब्वअणज्जवभावगते सब्वतिरिक्खजोणीगते सब्वतिरिक्ख-
जोणीकणामगते सब्वतिरिक्खजोणिकउयचारगते सब्वतिरिक्खजोणीमये उवकरणे सब्वतिरिक्खजोणिकउयकरणे सब्व-
तिरिक्खजोणीकणामधेजे थी-पुरिसउवकरणगते एवंविधे पेक्खितामासे पडिरूव-सद्दापटुब्भावे चेव तिरिक्खजोणिगभवातो 10-
सि आगतो सि बूया । पुण्यमाधारितंति जधुत्ताहि एक्कँदिय-वेइँदिय-तेइँदिय-चउरँदिय-पँचिंदियोपलद्धीको जीवणि-
कायाणं तसाणं थावरणं व तिरिक्खजोणीकाणं व विधिभेद्दोपलद्धीयं चिंतिते अज्जाये आमास-सद्-रूवपाटुब्भावोहि
तथा सब्वं समणुगतव्वं भवतीति । तथ पुणरवि आधारितंति कत्तो आगतो ? इति (इत्थि) र्भवातो पुरिसर्भवातो
णुसकर्भवातो ? चि । इमे कायणणुसका विण्णया भवंति, तं जथा-पुट्टविकाइया आयुकायिका तेउकायिका वाउका-
यिका वणँफ्तिकायिका, एते एक्कँदिया एक्कँदियोपलद्धीयं णुसकवेदा वेति विण्णयं । "वेइँदिया तेइँदिया चउरँदिया 15
एते वि सकाहि उवलद्धीहि उवलद्धम णुसकवेदो जेव विण्णयो भवति । पँचेंदियतिरिक्खजोणिकेसु सकायं उवलद्धीयं
उवलद्धेसु तिविधमाधारयितव्वं भवति-थियो पुरिसा णुसका चेति । एते जधुत्ताहि थी-पुरिस-णुसकोपलद्धीहि आधा-
रित्ता आधारयित्ता थियो पुरिसा णुसका चेति थीणामाणंतरा विण्णया भवंतीति । इति तिरिक्खजोणीगता पुरिमभावा
अणंतरपच्छाकडा उवलद्धव्वा भवंतीति ।

तथ अद्योगताभासे णिण्णामासे कण्हामासे उवहुताभासे संकिलिद्धामासे दुग्गंथामासे दाहूणामासे अमणुण्ण- 20
सद्-पडिरूव-गंध-फासगते सब्वदारुणकम्मोपचारगते सब्वणेरइयणामपाटुब्भावे सब्वणिरयपुरक्खडोपचारगते सब्वणेर-
यिकणामधेजे थी-पुरिसगते एवंविधसद्-रूवपाटुब्भावे चेव णेरइकभवातो सि आगतो णेरइकभवो ते अणंतरपच्छाकडो
सि बूया । तथ कतमेहि णेरयिकेहि आगतो ? चि पुणरवि आधारितंति जधुत्ताय चिंतायं णेरइकोपलद्धीओ लेस्साहि
वेदणाहि ठित्तिविसेसेहि आमास-सद्-पडिरूवपाटुब्भावोपलद्धीहि तथा सब्वं समणुगतव्वं भवतीति । तथ पुणरवि णेरइए
पुण्यधारिते णेरइया णुसका चेव सब्वे उवलद्धव्वा भवंतीति । एवं लेस्साहि वेदणाहि ठित्तिविसेसेहि पुट्टवीए विचयेण 25-
पडमाय वितियाय ततियाय चउल्लीयं पंचमायं छट्ठीयं सत्तमीयं ति आगमणाणि आधारयित्ता आधारयित्ता आमास-
सद्-पडिरूवसण्णामिणिवेसेहि य उवलद्धम णेरयिकभवो पुरिमो विण्णयो भवतीति ॥

॥ पुरिमभवविभागो णामा पट्टिमोऽध्यायः समाप्तः ॥ छ ॥

भणति-कृतो ते पविसामि ?, तं जहा ते पविसामि तं ते अणं काहामीति । पविसित्ता य भणति-सोलस वाकरणाणि वा णाहिसि एक्कं चुक्किहिसि । एवं भणित्तु पविसति सिद्धा भवति ।

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो सब्बसाधूणं, णमो भगवतीय महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय, आकरणी वाकरणी लोकेवैयाकरणी धरणिते सुप्पतिट्ठिते आदिच्च-चंद-णक्खत्त-गह्हाण-तारारुवाणं सिद्धकतेणं अंत्यकतेणं धम्म-कतेणं सब्बलोकसुवुहंजे जे अट्ठे सब्बे भूते भविस्से से अट्ठे इध दिस्सतु पसिणम्मि स्वाहा २ । एसा औभोयणीविज्जा 5 आधारणी छट्ठगहणी, आधारपविसंतेण अप्पा अभिमतत्तच्चो, आकरणे वाकरणे पविसित्तु मंते जँवति पुस्सयोगे, चउत्थभत्तेणमेव दिस्सति ।

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो भगवतो चसवतो महापुरिसस्स, णमो भगवतीय सहस्सपरिवाराय अंगविज्जाए, इमं विज्जं पयोयेस्सामि, सा मे विज्जा पसिउज्जत्तु, खीरिणि खीरिणि ! उदुवरि ! स्वाहा, सर्वकामदये ! स्वाहा, सर्वज्ञानसिद्धिरिति स्वाहा ३ । उपचारो-मासं दुदोदणेण उदुवरस्स हेट्ठा दिवसं विज्जामधीये, अपच्छिमे छट्ठे कातच्चे 10 ततो विज्जा ओवयति त्ति रुवेण दिस्सति, भणति य-कृतो ते पविसामि ?, जतो य ते पविसिस्सं तीय अणं काहामि । पविसित्ता य भणती-सोलस वाकरणाणि वाकरेहिसि, ततो पुण एक्कं चुक्किहिसि, वाकरणाणि पण्णरस अच्छिद्धाणि मासिहिसि, ततो अजिणो जिणसंकासो भविस्ससि, अंगविज्जासिद्धी स्वाहा । परिस्खा णेतव्या, तच्छीसोपरि पुढवीयं ठिती विण्णेया ।

एसा उक्कट्ठो पलितोवमाणं गणणा । परं दस < कोडंकोडीओ आधारयित्ता दसकोडा > कोडीओ सागरोवमं 15 पलितोवमाणं विण्णेयाणि भवंति । उक्कत्सं सागरोवमं विण्णयं भवति । उक्कत्सा गिर्येसु ठिती तेत्तीसं सागरोवमाणि विण्णेयाणि भवंति । तत्थ कतमायं पुढवीयं ति एवं ठितीयो निरयो निरयोपपाते आधारयित्ता उक्कत्स-जहण्णायं पुढवी-उवल्हदीयं चेव उवल्हम्भ अमुकठितीकं गिरयमुपपज्जिस्सतीति वूया । इति गिरयोपपाता विण्णेया । भवंति वा वि [एर्यं गाहाओ-]

अधोगत्ताणि आमसति किलिट्ठामि य सेवति । दीणे दीणपत्तामासे अधोदिट्ठीय माणवो ॥ १ ॥ 20

उपहुत्ताणि सेयंतो उच्चियगो जो तु पुच्छति । अमणुणे सद्-रुवम्मि गिरयाणं कथासु य ॥ २ ॥

गिरयोपपातकरणे वचंते वा वि दंसणे । एतारिसे समुप्पाते जाणेज्जा गिरयोपकं ॥ ३ ॥ इति ।

तत्थ तिरियामासे तिरियविलोकिते तिरियगमणे तिरिच्छागमणे तिरिच्छाकरणे सब्बकुट्टिलागते सब्बअणज्जवगते सब्बअणज्जवभावगते सब्बउवधि-णिक्किट्ठि-सतिजोगकरणे सब्बअतिसंधणागते सब्बअणज्जववहारणए च्छाट्ठणा-गूहणासु चेव सब्बतिरिक्खजोणीगते सब्बतिरिक्खजोणिक्कपडिह्वगते सब्बतिरिक्खजोणिक्कगामपादुच्चावे सब्बतिरिक्खजोणिक्कसद्गते 25 < संब्बतिरिक्खजोणिक्कउवकरणगते > सब्बतिरिक्खजोणिक्कसरीरमये उवकरणे सब्बतिरिक्खजोणिक्कगामवेच्चे धी-पुरिसे एवंविधे पेक्खितामासे सद्-पडिह्वपादुच्चावे तिरिक्खजोणी उपपज्जिस्सति त्ति तिरिक्खजोणीभावो ते अणंतर्पुरक्खट्ठो त्ति वूया । तत्थ तिरिक्खजोणिक्कभावे पुच्चाधारिते तिरिक्खजोणी पुणरवि पंचविद्यामाधारये । तं जधा-एकंदिए धेइंदिए तेइंदिए चउरिंदिए पंचेदिए चेति ।

तत्थ एक्केसु गत्तेसु एक्काभरणे एक्कोपकरणे एक्केवणीकरणे एक्केचरेसु सत्तेसु ऐकसाधारगते एक्कापादुच्चावे सब्बे- 20 केंदियपादुच्चावे ऐकेंदियणामपादुच्चावे ऐकेंदियमये उवकरणे ऐकेंदियणामधेच्चधी-पुरिसउवकरणे चेव एवंविधे सद्-पडि-ह्वपादुच्चावे चेव ऐकेंदियणामयमं वूया । तत्थ ऐकेंदिये पुच्चाधारिते ऐकेंदियं पंचविद्यामाधारये, तं जधा-पुढविका-इके आवुक्कायिके तेवुक्कायिके वायुक्कायिके वणप्फत्तायिके चेति ।

१ अत्यक्तयकरणं हं त० ॥ २ वहेणं हं त० ॥ ३ आलोयणी० हं त० ॥ ४ युयति हं त० मित्ता ॥ ५ < १ > एवधिहन्तगंत. पाठः हं त० नास्ति ॥ ६ माति० त० मित्ता ॥ ७ < १ > एवधिहन्तगंतः पाठः त० नास्ति ॥ ८ पुत्तकडो त० ति० ॥ ९ एक्कासाहार० त० ॥ अंग० २४

तस्य द्दामासे सव्यधातुजोणीगते पुढवीकायपादुच्चावे पुढविगामवेजोदीरणे पुढवीउयकरणगते पुढवीधातुमये उयकरणे पुढवीगामवेजे धी-पुरिसउयकरणपादुच्चावे एवंविधे पेक्खितामासे सह-पडिरूपपादुच्चावे पुढवीकायएकेंदिय-काये उपपञ्जिस्सति त्ति पुढविऋडओ ते अणंतरपुरक्खडो त्ति वूया । तस्य पुढविकाइये पुब्बाधारिते पुणरवि सुद्धपुढवी पत्थरपुढवी मणिपुढवी धातुपुढवी कायवंतपुढवीकायं च अधापडिरूपतो आधारयित्ता आधारयित्ता सजोणीहिं 5 आमास-सह-पडिरूपपादुच्चावेहिं चेव वूया इति पुढविकायोपपत्ती विण्णयो भवति ।

तस्य आपुणेवेषु पाणजोणीगते सव्यउदकपादुच्चावे उदकसदृगते य उदकगामवेजोदीरणे आपुजोणिऋद्वेगो-करणपादुच्चावे पाणजोणीमये उयकरणे आपुजोणीगामवेजे धी-पुरिसउयकरणगते चेन आपुकायिको ते एकेंदियकायिको अणंतरपुरक्खडो त्ति वूया । तस्य आपुकायिके पुब्बाधारिते आपुकायं सत्तविधमाधारये, तं जधा-सायोदकं लयणोदकं मधु-रोदकं वारुणोदकं खीरोदकं घतोदकं प्लोतोदकं ति । एताणि उदकाणि जघोवदिट्ठिहिं रम-पडिरूपोपलद्धीहिं आमासोपलद्धीहिं 10 चेन उलद्धव्याणि भवंति । तं समासेण पुणरवि दुविधमाधारयितवणं भवति-अंतलिखं भोम्मं चेति । एताणि उदकाणि अंतलिखोपलद्धीहिं भोम्पोपलद्धीहिं चेव उवलद्धव्याणि भवंति । तस्य उदंभागेसु गत्तेसु सह-पडिरूपेसु चेव अंतलि-खेसु य अंतलिखोदकं वूया । अधोभागेसु गत्तेसु भोम्मेसु चेव सह-पडिरूपेसु य भोम्ममुदकं वूया । तस्य भोम्मे उदके पुब्बमाधारिते तं अट्टविधमाधारये, तं जधा-सायुदं णादेयं तांलुं रोडं कोपं पल्लजलं परसवणं उद्धिज्जमिति । एताहिं जघुत्ताहिं उवलद्धीहिं समुद्-णदी-तलाक-कूपादिकाणि उलद्धीहिं 15 द्दव्याणि भवंति इति आपुकायो विण्णयो भवतीति ।

तस्य अग्गेयेसु सव्यअग्गिपादुच्चावे सव्यअग्गिगते सव्यअग्गिणामगते अग्गिउयकरणेसु अग्गेयेसु उयकरणेसु अग्गिजीवणेसु अग्गेयकम्मं उपचारपादुच्चावेसु 20 तं अग्गिनामवेजे धी-पुरिसउयकरणपादुच्चावेसु ३० चेव तेवुकायं उयज्जिस्सति त्ति वूया, तेवुक्कायो ते एकेंदियकायो अणंतरपुरक्खडो त्ति वूया । तस्य तेवुक्काये पुब्बाधारिते अणुसरीं वादरसरीं वा कत्तमं उपपञ्जिस्सति ? त्ति पुणरवि आधारयितवणं भवति । तस्य अणूसु आमास-सह-पडिरूपपादुच्चावेसु 20 अणुसरीं तेवुकायं उपपञ्जिस्सतीति वूया । तस्य कायवंतेसु वायरस- ३० पंडिरूप ३० पादुच्चावेसु चेन वादरस-रीरसुपपञ्जिस्सति त्ति वूया । तस्य तेवुक्कायस सुभत्तमसुभत्तं चेति आधारयित्ता आधारयित्ता आमास-सह-पडिरूप-पादुच्चावेसु चेन णेतवणं भवतीति इति तेवुक्कायोपपातो विण्णयो भवति ।

तस्य वायव्वेसु वाडकायपादुच्चावेसु वायुकायसदृगते वायुकायणामोदीरणे वायुकायोपकरणेसु विज्जेणय-ताल-रिंदादीसु संस-पच्चत-योगणालकादिसु आतोजेसु वायुकायणामवेजे धी-पुरिसउयकरणगते चेव एवंविधे पेक्खितामासे 25 सह-पडिरूपगते पादुच्चावे वायुकायसुपपञ्जिस्सति त्ति वूया, वायुकायो ते एकेंदियभवो अणंतरपुरक्खडो त्ति वूया । तस्य वायुकाये पुब्बाधारिते वायुकायस अणुसरींता वादरसरींता य सुभता असुभता य आमास-सह-पडिरूप-पादुच्चावेहिं जघुत्ताहिं उलद्धीहिं उवलद्धवणं भवतीति इति वायुकायोपपातो उलद्धव्यो भवतीति ।

तस्य मूलजोणीगते सव्यतण-वणरसति-हरितपादुच्चावेहिं मूलजोणीसदृगते मूलजोणीगामपादुच्चावे मूलजोणी-उयकरणगते मूलजोणीमये उयकरणे मूलजोणीगामवेजे धी-पुरिसउयकरणगते अहोगतामासे सव्यउयगते सव्यमूलगते 30 सव्यनीजगते चेन एवंविधे पेक्खितामासे सह-पडिरूपपादुच्चावे वणणफतिकायं उपपञ्जिस्सति त्ति वूया, वणणफतिकायो ते एकेंदियभरो अणंतरपुरक्खडो त्ति वूया । तस्य वणणफतिकाये पुब्बाधारिते तं णवविधमाधारये, तं जधा-स्करगतं लतागतं गुम्भगतं गुच्छगतं बलयगतं उदाणगतं तणगतं यल्लज-हरितगतं चेति । तस्य उदंभागेसु सव्यउयगते चेन रस्सं वूया । उजूसु उदंभागेसु य उम्मेसु य लतायो वूया । गहणेसु गुम्भे वूया । दीहेसु कुडिलेसु य सव्यगुच्छगते

चेव गुच्छे वूया । कायवंतेसु रुक्खे वूया । मञ्जिमाणंतरकायेसु वल्ले वूया । पच्चर-
कायेसु तगाणि हरिताणि वा वूया । आपुणेयेसु मूलजोणीसाधारणेसु थलजोणिहरिताणि वूया । सह-पडिरूवपादुच्चावेसु
चेव सब्वाणि सत्तिसेहिं वूया । तत्थ वणप्फत्ति सब्बं पुणरवि चउत्तिवधमाधारये-कंदगतं मूलगतं खंधगतं अग्गतं
चेति । तत्थ कंदगते कंदगता विण्णेया, मूलगते मूलगता विण्णेया, खंधगते खंधगता विण्णेया, अग्गतते अग्गतता
विण्णेया भवंतीति । तत्थ अग्गतता चतुत्तिवधमाधारयित्त्वा भवंति, तं जथा-पत्तगता पुप्फगता फलगता वीजगता ३
चेति । तत्थ अणूसु पुधूसु सब्बपत्तगते चेव पत्तगता विन्नेया । मुंदितेसु सब्बपुप्फगते चेव पुप्फगता विण्णेया । पुण्णेसु
सब्बफलगते चेव फलगता विण्णेया । तणूसु सब्बवीयगते चेव वीयगता विण्णेया । तत्थ एसा वणप्फत्ती दुविया
समासेण-जलजा थलजा चेव । णवविधा रुक्खादिकेण वित्थारेणं । पुणरवि चउत्तिवधा समासेणं-कंदगता मूलगता
खंधगता अग्गतता चेव । जधुत्ताहिं उवलद्धीहिं आमास-सह-पडिरूवसमुत्थिताहिं विण्णेया आधारयित्ता आधारयित्ता
उवलद्धव्वा भवंति । इति वणप्फत्तिउपपातो विण्णेयो भवतीति । 10

तत्थ वंदोदीरेणे वंदेसु गत्तेसु जमलाभरणके यमलोपरणे यमलपीतिकरणे मेधुणचरेसु सत्तेसु सब्बधियपादु-
च्चावे ६ वेइंदियैसत्तपादुच्चावे ७ सव्वविइंदियसदगते विइंदियणामोदीरेणे वेइंदियोपकरणे विइंदियसरीरमये
उवकरणे विइंदियणामधेजे धी-पुरिसउवकरणगते एवंविधे पेक्खितामासे सह-पडिरूवगते विइंदियकाये उपपज्जिस्सति त्ति
वूया, विइंदियकायो ते अणंतरपुरक्खडो त्ति वूया इति विइंदियोपपातो विण्णेयो भवति । तत्थ तिरूपादुच्चावेसु
मुमकंतरे णासग्गे सिंघाडगे सब्बतिकपादुच्चावेसु तिइंदियसत्तपादुच्चावे तिइंदियणामधेजोदीरेणे तिइंदियोपकरणे 15
तिइंदियसरीरमये उवकरणे तिइंदियणामधेजे धी-पुरिसउवकरणगते पादुच्चावे एवंविधे पेक्खितामासे सह-पडिरूव-
पादुच्चावेहिं तिइंदियोपपज्जिस्सतीति तिइंदियमयो ते अणंतरपुरक्खडो भविस्सतीति वूया इति तेइंदियोपपातो भवतीति
विण्णेयो । तत्थ चउत्तेसु सब्बचउत्तवग्गपादुच्चावे सब्बचउत्तरिदियसत्तपादुच्चावे सब्बचउत्तरिदियसदगते चउत्तरिदियणा-
मधेजोदीरेणे चउत्तरिदियउवकरणे चउत्तरिदियमते उवकरणे चउत्तरिदियणामधेजे धी-पुरिसउवकरणपादुच्चावे चउत्तरिदिय-
सहपडिरूवपादुच्चावे चेव चतुरिदियमयो ते अणंतरपुरक्खडो त्ति इति चतुरिदियोपपातो भवतीति । 20

तत्थ वेइंदिये संख-संखणग-सिप्पिका-जलाउ-दककिमी-णीपुर-सुमंगल-संतुक्कादयो एवंविधा फासिंदिय-जिद्धिभ-
दियोपपेता विण्णेया भवंतीति । तिइंदिया उ १ जुंगलिका-उप्पाडक-उप्पावक-त्तणहारक-पत्तहारक-कुंथु पिपीलिका-उपचिक-
रोहणिक-तेवरुक्क-त्तपुस-भिंजि-रूपातिक-साहिक-सत्तप्पाय-गोम्मि-इत्थसोडक-कडमच्छादयो एवंविधा [फासिंदिय-
जिद्धिभदिय-घाणिदियोपपेता विण्णेया भवंति । तत्थ चउत्तरिदिया.....दयो]
फासिंदिय-जिद्धिभदिय-घाणिदिय-चक्खिंइदियउपपेता विण्णेया भवंति । एते णं जीवा तसकायिका सम्मुच्छणसंभवा, ण 25
एतेसिं गम्भोपपत्ती विण्णेया, एते णं पच्चरकायेसु सुद्धजोणी विण्णेया । एतेसिं णणुसकजोणीयो सीत-उसुण-सीतोसुण-
साधारणातो सरीरसट्टाणाणि वण्णोपलद्धीतो अपद-वहुपदगं खेचोपातवित्सेसा उद्धमथो तिरियं च दिसापविभागा
उग्गविसत्ता मंदविसत्ता णिव्विसत्ता तोप्पमोगतो अणोपमोगगो सुमत्तं असुभत्तं च यधुत्ताहिं ६ आमास-सह-पडि-
रूवोपलद्धीहिं ७ आधारयित्ता आधारयित्ता उवलद्धव्वं भवतीति । एते व णं तसा वेइंदिय-वेइंदिय-चउत्तरिदिया
वायरा य काया एकंदिया सब्बे णणुसका विण्णेया भवंतीति ।

तत्थ पंचकामासे पंचकपादुच्चावे सव्वपंचेदियगते सव्वपंचेदियोपकरणे सव्वपंचेदियतिरिक्खजोणिस्सरीरमये 30
उवकरणे सव्वपंचेदियतिरिक्खजोणिणामधेजे धी पुरिसउवकरणगते एवंविधे पेक्खितामासे सह-पडिरूवपादुच्चावे चेव
पंचेदियतिरिक्खजोणीयं उपपज्जिस्सति त्ति वूया, पंचेदियतिरिक्खजोणीरुमयो ते अणंतरपुरक्खडो त्ति वूया । तत्थ

पंचेंद्रियतिरिक्त्तजोणीयं पुञ्जाधारितयं पंचेंद्रियतिरिक्त्तजोणी पंचविधा आधारयित्वा भवति, तं जघा—पक्खिगतता चतुष्पदगता सरीसिधगता परिसप्पगता जलचरणता चेति । एस पंचविधा वि पंचेंद्रियतिरिक्त्तजोणीयं जघा पुव्वच्चिन्तितयं उददिट्ठा समास-वित्थरेहिं आमास-सद्-रूवपादुच्चावोपलद्धीहिं तथा सव्वा समणुगंतव्वा भवतीति । एवं पंचेंद्रियतिरिक्त्तजोणीकउपपातो उवळद्वव्वो भवतीति । भयंति चापि एत्थं गाहाओ, तं जघा—

तिरियं गत्ताणि आमसति तिरियं वा वि विपेक्खति । तिरिच्छागमणे चैव तिरिच्छागमणेसु य ॥ १ ॥

उवधी-णियडिजोगेसु सातिजोगमणज्जेव । तिरिक्खजोणीसमुप्पाते तेरिच्छसद्दरूवति ॥ २ ॥

तिज्जोणिसणामके धी-पुमंसे उववररे । एरिसे सद्-रूवम्मि तिज्जोणिक्कमादिसे ॥ ३ ॥

तथ उज्जुक्कामासे उज्जुकुपेत्तिरते उज्जुकोपगमणे उज्जुकवापगते सव्वणिरुवहितगते सव्वणअणुकूलगते सव्वमाणुसगते सव्वमाणुसपडिरुवगते माणुससद्दगते माणुस्सणामपादुच्चावे मणुस्सोवकरणगते मणुस्सकम्मोवयारगते माणुसकम्मो-

१० यारपरिक्त्तणामु चैव एवंविधे पेक्खितामासे सद्-रूवपादुच्चावेसु चैव मणुस्सभयं उपपजिस्ससि च्चि मणुस्सभवो ते अणंतरपुरक्खण्डो चि वूया । तथ मणुस्सभवे पुव्वधारिते मणुस्सा आरिया मिलक्खू अज्जा पेस्सा धी-पुरिस-णुपुंसक-सिप्प-कम्म-विज्ञा-त्तेचोउपातविसेसेहिं चैव एवमादीकेहिं उक्कस्स-मज्झिम-जहण्णकेहिं उवळद्धीहिं जघा जातीविचये उवदिट्ठं आमास-सद्-पडिरुवपादुच्चावोपलद्धीहिं तथा सव्वमाधारयित्ता आधारयित्ता सम्मं समणुगंतव्वं भवतीति । भयंति वा वि एत्थं गाहाओ—

१५ उज्जुक्कसत्तामासे उज्जुकोवकरणम्मि य । उज्जुकं पेक्खिते चैव उज्जुभावगतेसु य ॥ १ ॥

सव्वज्जयोपयोगेसु धवहारम्मि य उज्जुके । उज्जुकम्मोपचारे य ५ माणुसागं च दंसणे ॥ २ ॥

समे सद्दोवकरणे उवचारे य ७ माणुसे । माणुसे पडिरुवे य माणुसं भवमादिसे ॥ ३ ॥

एवं मणुस्सभयोपपातो विण्णयो भवतीति ।

तथ उद्वंगीवाय सिरोगुद्दामासे उद्दोक्किते उम्मट्ठे उपहसिते उस्सिते उट्ठिते एकंसाकरणे छत्त-भिगार-आर्द-स-

२० पताका-स्योमहत्थ-वीजणि-यासण-कडकपादुच्चावे वंदिते पूजिते सकत्ते संयुते अचित्ते पणमिते अभिवाडिते सेसाजोग-जण-वलिहरणगते सव्वपहेण-गंध-मड-धूप-लापण्णकपयोगगते चैव सव्वदेवागारगते देवणामोदीरणे देवतोपचारे देवकम्म-परिक्त्तणामु सव्वदेवणामवेजे धी-पुरिसउवकरणगते एवंविधे पेक्खितामासे सद्-रूव-रस-गंध-फालदिट्ठिययपादुच्चावे देवभयं उपपजिस्सतीति देवभयो ते अणंतरपुरक्खण्डो चि वूया । तथ देवभवे पुव्वधारिते देवाणं णिक्कायविसेसा ५ आयिपच्चविसेसा ७ सामाणिक्कविसेसा परिसाविसेसा ५ लेसाविसेसा ७ खेत्तविसेसा अभिजोगिक्कविसेसा

२५ धी-पुरिसविसेसा भावणाविसेसा जटा देवज्जाए उवड्ढो तद्दा नेयवं भवइ । उवळद्धीयं पि आमास-सद्-पडिरुव-णामपादुच्चावेहिं णेतव्वं भवतीति । भयंति चापि एत्थं गाहाओ—

उद्वं गीवाय गत्ताणि आमसंतो तु पुच्छति । उद्दोक्कंतो जो जं तु गत्तमुम्मज्जए तु जो ॥ १ ॥

एगंमायवरणे छत्त-भिगारदंसणे । पताका-वेजयतीणं पहेणायं च दंसणे ॥ २ ॥

देवकम्मोपचारेसु देवकम्मरथासु य । देवोवपातं जाणीया पादुच्चावे य तारिसे ॥ ३ ॥

३० एवं देशोवपातो विण्णयो भवतीति ।

तथ दिव्वजोणीयं अत्तागं उम्मज्जगाय उत्तमट्ठेसु उत्तमेसु सव्वमोस्सरेसु सव्वअस्सरेतेसु सव्वविसंजोगेसु मन्त्रमोस्सोवायकथासु सव्वमोस्ससल्योदीरणसु मन्त्रसिद्धिगते सव्वणिण्णुवत्ते सव्वरत्तिण्णगते ५ सव्वअस्सजगते ७ मन्त्रअव्वमगते मन्त्रमुक्कगते ५ मन्त्रअयोगगते ७ मन्त्रपरिसुद्धगते चैव एवंविधे पेक्खितामासे सद्-रूवपादुच्चावेसु

१ आधारिया त० ॥ २-३-४ ५ ७ एतथिक्कत्तंन. पाठः त० नास्ति ॥ ५ उद्वंक्कंतो जो जं तु गत्तं सम्मं त० ॥

१-७ एतथिक्कत्तंन. पाठः इ० त० नास्ति ॥

चेव सिद्धिं उपपज्जिस्ससि त्ति वूया, सिद्धिभायो ते अणंतरपुरक्खडो त्ति वूया । भवंति चावि एत्थं गाहाओ-
 गत्ताणि देवजोणीयं उम्मज्जंतो तु पुच्छति । मोक्खेसु वा वि सन्वेसु उम्मट्ठे उत्तमम्मि य ॥ १ ॥
 सिद्धो मुत्तो त्ति तिण्णो त्ति णीरयो णिव्वुतो त्ति य । असंगो केवली बुद्धो अंसरीरकधासु य ॥ २ ॥
 अकम्मो णिप्पयोगो त्ति सद्देसेयंविबेसु य । [.....] सिद्धिभावं पवेदयेदिति ॥ ३ ॥
 इति सिद्धोपपत्ती अपुण्ड्रमवा विण्णेया इति ॥

5

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिन्नाय अंगविज्जाय उपपत्तीविजयो
 णामञ्ज्जायो सद्धितिमो सम्मत्तो ॥ ६० ॥

णमो भगवतो अरहतो यसवतो महापुरिसस्स महावीरवद्धमाणस्स । णमो भगवतीय महापुरिसदिन्नाय अंगवि-
 ज्जाय सहस्सपरिवाराय भगवतीय अरहंतेहिं अणंतणाणीहिं उवदिट्ठाय अणंतगमसंगहसंजुत्ताय पण्णसमणमुत्तणाणि-
 वीजमतिअणुगताय अणंतगमपज्जायाय ॥

10

णमो अरहंताणं । णमो सिद्धाणं । णमो आयरियाणं । णमो उवज्जायाणं । णमो लोए सव्वसाहूणं ॥
 णमो भगवतीए सुतदेवताए ॥ छ ॥ ग्रंथाम् ९००० ॥ छ ॥

॥ अंगविज्जा[पइण्णयं] संपुण्णं ॥

परिशिष्टानि

प्रथमं परिशिष्टम्

॥ जयन्तु वीतरागाः ॥

सटीकं अङ्गविद्याशास्त्रम्

...तानां कालोऽन्तरात्मा सर्वदा सर्वदर्शी शुभाशुभैः फलसूचकैः सविशेषेण प्राणिनामपराङ्गेषु स्वर्शे-न्याहारे-
द्वितचेष्टादिभिर्निमित्तैः फलमभिदर्शयति । तत्रयतो वैवहोऽप्रहतमतिरवधार्य स्वशास्त्रार्थमनुसृत्य यशोवर्त्मानुप्रहार्य-
मर्थिनां शुभा-शुभानां भावा-भावमभिनिर्दिशेत् ।

तत्र दिशं दिशः कालं व्या[हा]रद्वयदर्शनम् ।

अङ्गप्रत्यङ्गस्पर्शनं समीक्ष्य फलमादिशेत् ॥ १ ॥ इति ॥ १ ॥

स्थानं पुष्पसुहासिभूरिफलभृत्सुस्निग्धकृत्तिच्छदा-
ऽस्तपक्षिच्युतशस्तसंज्ञिततरुच्छायोपगूढं समम् ।

देवर्षि-द्विज-साधु-सिद्धनिलयं सत्पुष्प-सस्योक्षितं,
सत् स्वादूदकनिर्मलत्वजनिताह्लादं च सच्छादुलम् ॥ २ ॥

एवंविधं स्थानं 'सत्' पृच्छायां शुभदमित्यर्थः । कीदृशम् ? एवंविधानां तरुणां-युक्षाणां या छाया तयोपगूढं-
छन्नम् । कीदृशानाम् ? 'पुष्पसुहासि' पुष्पाणि-कुसुमानि शोभनो हासो येषां ते पुष्पसुहासिनः । तथा भूरीणि-प्रभूतानि
फलानि [विभ्रति-] धारयन्ति ये ते भूरिफलभृतः । सुस्निग्धा कृत्तिः-त्वक् छदानि-पर्णानि येषां ते सुस्निग्धकृत्ति-
च्छदाः । तथा असत्पक्षिभिः-अनिष्टविहगैः काकोलुकादिभिश्च्युताः-रहिताः । तथा शस्तसंज्ञिताः-प्रशस्तनामानो ये
पलाशपिप्पल-न्यग्रोध-वित्पत्रप्रभृतयः । तथा 'समं' निम्नोन्नतावनिरहितम् । 'देवर्षिं' देवाः-सुरा ऋषयः-मुनयो द्विजाः
विप्राः साधवः-सन्तः सिद्धाः-देवयोनय एतेषां यन्निलयं-स्थानम् । तथा सत्पुष्पैः-सुगन्धैः कुसुमैः सस्यैश्च-धान्यादि-
भिर्युतं उक्षितं-सेवितं शुभम् । तथा 'स्वादूदकनिर्मलत्वजनिताह्लादं च' स्वादु-मृष्टं यदुदकं-जलं निर्मलं-प्रसन्नं च
तद्भावेन जनितं-उत्पादितं आह्लादं-चित्तहर्षम्, यत् तथाभूतेनोदकेन युक्तम् । 'सच्छादुलं' शोभनदूर्वायुक्तं तत् सदिति ।
तथा च परासरः-“अथ पुष्पितफलितहरितस्निग्धत्वकपत्रनामाङ्कितसौम्यद्विजवरनिषेविततरुच्छायोपगूढे सस्यकुसुम-
रहितमृदुशाङ्गुलासिक्तमृष्टद्वयप्रसन्नसतिलाशयेऽवकाशे देवर्षिसिद्धसाधु.....पूर्वाभिमुखो वा यः
पृच्छेत् तस्य प्रार्थितार्थोपपत्तिर्भेभिर्निर्दिशेत्” ॥ २ ॥ अथ [अ]शुभस्थानप्रदर्शनार्थमाह-

छिन्न-भिन्न-कूमिखात-कण्टकि-सुष्ट-रूक्ष-कुटिलैर्न सत्कुजैः ।

शूरपक्षियुतनिन्धनामभिः शुष्कशीर्णयद्दुर्णचर्मभिः ॥ ३ ॥

एवंविधैः कुजैः-शूरैर्युतं अनत् । कीदृशैः ? छिन्नैः-कल्पितैः, भिन्नैः-कुटिलैः, कूमिरातैः-कीदृक्षितैः, कण्ट-
किभिः-सकण्टकैः, सुष्टैः-दुष्टैः रूक्षैः-अस्निग्धैः, कुटिलैः-असष्टैर्न शोभनैः । कौ-भूर्गौ जायन्त इति कुजाः । तथा
शूरैः-अनिष्टैः पक्षिभिः-विहगैः काक-गृध्र-शकटैर्युक्तैः निन्धनामभिः-कुत्सितसंज्ञैः विभीतका..... शुष्कैः-
नीरमैः । तथा शीर्णानि-च्युतानि बहूनि पर्णानि-प्रभूतानि पराणि चर्मणि-त्वचो येषां ते ॥ ३ ॥ [अन्यद्] प्याह-

इमंशान-शून्यायतनं चतुष्पथं तथाऽमनोङ्गं विपमं सदोपरम् ।

अवस्कारा-ऽङ्गार-कपाल-भस्मभिश्चितं तुषैः शुष्कतृणैर्न शोभनम् ॥ ४ ॥

एवंविधं स्थानं पृच्छायां न शोभनम् । कीदृशम् ? इमंशानं-शवशयनप्रदेशः । शून्यायतनं-वडासितदेवयुग्म् ।
'चतुष्पथं' चत्वारः पन्थानो यत्र । तथा 'अमनोङ्गं' न चित्ताह्लादकम् । विपमं-निम्नोन्नतम् । सदा-सर्वकालमूर्परं-

कृतासंयुक्तम् । अवरुदरैः—गृहसुकैश्चुचिभिरनुपयोग्यैर्भाण्डैश्चितं—व्याप्तम् । तथाऽङ्गारकैः—दग्धकाष्ठैः कपालैः—अस्थि-
कालैः भस्मना च वितं—युक्तम् । तथा तुपैः—धान्यचर्मभिः शुष्कैः—नीरसैस्तृणैश्चितं न शोभनमिति ॥ ४ ॥

अन्यदप्याह—

प्रव्रजित-नम्र-नापित-रिपु-वन्धन-सौनिकैस्तथा श्वपचैः ।

कितव-यति-पीडितैर्युतमायुध-माक्षीकविक्रयादशुभम् ॥ ५ ॥

एवंविधं स्थानं पृच्छायामशुभम् । प्रव्रजितः—तापसो लिङ्गी । नम्रः—विवस्त्रः । नापितः—दिवाकीर्तिः शिल्पी
प्रघारप्रभृति । रिपुः—शत्रुः । वन्धनं—वन्धशाला । सौनिकः—पशुघातकः । एतैर्युक्तं स्थानम् । तथा श्वपचैः—चाण्डालैः ।
कितवः—चूतकारकः । यतिः—त्रिदण्डी । पीडितो रोगादिना । एतैर्युक्तं स्थानम् । तथाऽऽयुधं आयुधशाला यत्र, माक्षीकं—मधु
द्विक्रयशाला कल्पपालगृहसमीपादेतोरशुभमिति ॥ ५ ॥ अथ दिक्काललक्षणमाह—

प्रागुत्तरेशाश्च दिशः प्रशस्ताः प्रष्टुर्न वायव्यम्बु-यन्मा-ऽग्नि-रक्षः ।

पूर्वाह्नकालेऽस्ति शुभं न रात्रौ सन्ध्याद्वये प्रभ्रकृतोऽपरराह्णे ॥ ६ ॥

दिशः—आशाः प्राक्—पूर्वा उत्तरा ऐशानी च पृच्छायां 'प्रशस्ताः' शुभाः 'प्रष्टुः' पृच्छकस्य, तदभिमुखः शुभं
पर्ययः । 'वायव्यम्बुयमाग्निरक्षः' वायवी वारुणी दक्षिणाऽऽग्नेयी नैर्ऋती च न शस्ताः, न शुभाः एता दिशः
प्रष्टुः । 'पूर्वाह्नकाले' दिनप्राग्भागसमये 'प्रभ्रकृतः' पृच्छकस्य 'शुभं' शोभनफलमस्ति विद्यते, 'रात्रौ' निशि
'सन्ध्याद्वये' सायं प्रातः अपराह्णे च न शुभमिति । तथा च परासरः—“छिन्नभिन्नशुष्करक्षवक्र.....दग्धकण्टकक
.....द्विज...पिथिनाः प्रशस्तनामाद्धितपादपच्छायदमशानयन्यायतनयन्धरोपितरिपुनापितायुधमद्यविक्रय.....
नैर्ऋताग्नेय्याम्बुवारुणायव्याशाभिमुखः प्रचोदयेत्, स्पष्टप्रयमनर्थाय विन्द्यात्” । अपि च—

वेलाः सर्वाः प्रशस्यन्ते पूर्वाह्णे परिपृच्छताम् । सन्ध्योरपराह्णे तु क्षिपायां च विगर्हिता ॥ १ ॥ इति ॥ ६ ॥

अन्यदप्याह—

यात्राविधाने च शुभाशुभं यत् प्रोक्तं निमित्तं तदिहापि वाच्यम् ।

दृष्ट्वा पुरो वा जनताहृतं वा प्रष्टुः स्थितं पाणितलेऽथ वक्ष्ते ॥ ७ ॥

यात्राविधाने यत् शुभाशुभं 'प्रोक्तं' कथितम्, "सिद्धार्थका-ऽऽदर्श-मयो-ऽञ्जनानि" इति शुभदम्, "कर्णासौपध-
कृष्णधान्यम्" इत्यशुभम् । तथा तत्र शाकुनं यन्निमित्तं 'प्रोक्तं' कथितं तद् 'इहापि' प्रभ्रसमये 'वाच्यं' वक्तव्यम् । 'पुरो'
अप्रतो वा दृष्ट्वा य...नो षरजनता-जनसमूहः तथा आहृतं—आनीतं 'प्रष्टुः' पृच्छकस्य 'पाणितले' हस्ते 'वक्ष्ते'
अन्वरे वा स्थितं दृष्ट्वा शुभमादिशेदिति । तथा च परासरः—

यात्राविधाने निर्दिष्टं निमित्तं यच्छुभाशुभम् । तदेव दृष्ट्वा देवतो वाञ्छासिद्धिं विनिर्दिशेत् ॥ १ ॥ ७ ॥

अधुना अङ्गानि पुंसंज्ञकान्याह—

अथाङ्गान्युर्वोष्ठ-स्तन-वृषण-पादं च दशाना,

शुजौ हस्तौ गण्डौ कच-गल-नखा-ऽङ्गुष्ठमपि यत् ।

सशङ्खं कक्षांसं श्रवण-गुद-सन्धीति पुरुषे,

स्त्रियां भ्रू-नासा-रिफग-चलि-कटि-सुलेखा-ऽङ्गुलिचयम् ॥ ८ ॥

अथैतानि पुंसंज्ञकान्याङ्गानि भवन्ति—ऊरु ओष्ठौ स्तनौ वृषणौ—गुफ्नी पादौ—चरणौ 'दशानाः' दन्ताः 'शुजौ'
याहू 'हस्तौ' फरौ 'गण्डौ' मुखकपोली कचाः—केशाः गलः—कण्ठः नखाः—करच्छाः अङ्गुष्ठौ—दक्षपादाङ्गुष्ठौ, एतत्
सर्वं यत्तदपि 'पुरुषे' पुंसि । कक्षौ प्रसिद्धौ, अंमौ—स्कन्धौ, श्रवणौ—कर्णौ, गुदं—पायुस्त्राणं सन्धिग्रहणे सर्वाङ्गसन्धय
उच्यन्ते, 'इति' एवं प्रकाराः सर्वे एव पुरुषे पुंसि श्रेयाः । तथा च परासरः—“तथाङ्गानि मुफ्फ-
भंग० ३५

स्नान-मादा-ऽङ्गुष्ठोत्-गुह्य-सुज-हस्त-मस्तक-कर्णा-ऽक्षि-कक्ष-शङ्ख-दन्ता-ऽङ्गुष्ठौघं नख-गाल-स्कन्ध-गण्डं केस-सन्धश्चः
 पुरुषाख्यानीति" । अथ स्त्रीसंज्ञानाह—'स्त्रियां' इति एतान्यङ्गानि स्त्रियां भवन्ति । ध्रुवौ प्रसिद्धे । नासा—घ्राणम् ।
 रिकुञ्जौ—प्रसिद्धौ । बली—लेखा, यथा त्रिवली । कटिः—प्रसिद्धा । मुलेसा—शोभनलेखा करमध्यस्था । अङ्गुलि-
 चयं—अङ्गुलिसमूहः ॥ ८ ॥ अन्यान्पि स्त्रीसंज्ञानाह—

जिह्वा ग्रीवा पिण्डिके पाष्णिपुग्मं जङ्घे नाभिः कर्णपाली कृकाटी ।

वक्रं पृष्ठं जन्तु जान्वस्थि पार्श्वं हृत्ताल्वक्षि स्यान्मेहनोरस्त्रिकं च ॥ ९ ॥

'जिह्वा' रसना । 'ग्रीवा' कृकाटिका । 'पिण्डिके' जङ्घयोः पश्चिमभागौ । 'पाष्णी' चरणयोः पश्चिमभागौ
 'जङ्घे' प्रसिद्धे । 'नाभिः' तुन्दः । 'कर्णपाली' प्रसिद्धा । 'कृकाटी' ग्रीवापश्चिमभागः । [.....] ॥ ९ ॥
 ननुसंकाख्यं च शिरो ललाटमाश्वत्थसंज्ञैरपरैश्चिरेण ।
 सिद्धिर्भवेज्जातु ननुसकैर्नो रूक्ष-क्षतैर्भ्रम-कृशैश्च पूर्वैः ॥ १० ॥

'शिरः' मस्तकम् । 'ललाटं' मुखपृष्ठम् । पतत् सर्वं ननुसंकाख्यम् । तथा च परासरः—'शिरो-ललाट-मु...
 दु...पृष्ठ-जठर-जन्तु-जान्वस्थि-पार्श्व-हृदय-कर्णपीठा-ऽक्ष-मेहनोरस्त्रिक-ताल्विति ननुसंकाख्यानि ।' । अथ 'आद्यसंज्ञैः'
 प्रथमत उक्तैः पुत्रामभिः सृष्टैः 'आद्यु' क्षिप्रमेव सिद्धिः 'स्याद्' भवेत् । 'अपरैः' तदनन्तरोक्तेः स्त्रीनामभिश्चिरगा
 सिद्धिर्भवेदिति । ननुसकैः सृष्टैः 'न जातु' न कदाचित् सिद्धिः स्यात् । 'रूक्ष-क्षतैर्भ्रम-कृशैश्च पूर्वैः' इति, नेत्यनुवर्तते,
 10 पूर्वैः पुंतामभिः स्त्रीनामभिर्वा रूक्षैः—अज्ञिगैः क्षतैः—सप्रहारैः भ्रमैः—स्फुटितैः कृशैश्च—अल्पमांसैर्न जातु सिद्धिः । तथा
 च परासरः—'तत्र पुत्रामभिरक्षिप्रमनुपहतमरोगमङ्गं सृष्टं दिग्देश-काल-व्याहारेष्टदर्शन-निरुपहतप्रष्टुः पृच्छार्थैः सकलम-
 वभिर्चयति, स्त्रीसकमपि पूर्वोक्तलक्षणमुक्तं तत् कालान्तरेणासकलम् । ननुसंकाख्यमकार्यसिद्धिमनयोनां च गमनं
 कुर्यात् । अपि च भवति याऽत्र—

पुंसंशेष्याद्यु सिद्धिः स्यात् स्त्रीसंज्ञेषु चिराद् भवेत् । अशुभं त्वेव निर्विष्टं ननुसकसनामसु ॥ १ ॥

20 पुरुषाख्येऽपि संयुक्तौ वाहे रूक्षे च लक्षिते । नार्थसिद्धिमथो ब्रूयादङ्गविद्याविशारदः ॥ २ ॥" इति ॥ १० ॥
 अथ पृथक् पृथक् फलनिर्देशार्थमाह—

सृष्टे वा चालिते वाऽपि पादाङ्गुष्ठेऽक्षिरग् भवेत् ।

अङ्गुल्यां दुहितुः शोकं शिरोघाते नृपाद् भयम् ॥ ११ ॥

तत्र पृच्छार्थां पादाङ्गुष्ठे चालिते सृष्टे वा प्रष्टुः 'अक्षिरग्' नेत्रपीठा 'स्याद्' भवेत् । अङ्गुल्यां सृष्टार्थां दुहितुः
 25 शोकं वदेत् । 'शिरोघाते' शिरोऽभिहृत्य पृच्छेत् तदा 'नृपाद्' राजतो भयं ब्रूयात् । अथ पृथक् पृथक् फलनिर्देशः—
 तत्र पादाङ्गुष्ठं प्रचालयन् सृष्ट्वा वा पृच्छेत् तत्प्रष्टुश्चक्षुरोगं विनिर्दिशेत्, अङ्गुलीं सृष्ट्वा दुहितुशोकम्, शिरसि हन्यमाने
 राजभयम् ॥ ११ ॥ अन्यदप्याह—

विप्रयोगमुरसि स्वगोत्रतः कर्पटाहतिरनर्थदा भवेत् ।

स्यात् प्रियाप्तिरभिगृह्य कर्पटं पृच्छतश्चरण-पादयोजितुः ॥ १२ ॥

30सह विप्रयोगं प्रयदेत् 'स्वगोत्रतः' आत्मीयवर्गात् । 'कर्पटाहति' यस्मिन्नागः 'अनर्थदा'.....।
 'कर्पटं' वस्त्रं 'अभिगृह्य' प्राप्य चरणं—पादं पादे—द्वितीये चरणे योजयति तस्य 'पृच्छतः' प्रष्टुः प्रेयलामः स्यात् । तथा
 च परासरः—'उः सृष्ट्वा विप्रयोगं गोत्रात्, वस्त्रमुत्पन्नतोऽनर्थगामम्, पादं पादेन संसृष्टेन् पदान्तमभिगृह्य वा
 पृच्छेन् प्रियममागं विद्यात्' ॥ १२ ॥ अन्यदप्याह—

पादाङ्गुष्ठेन विलिखेद् भूमिं क्षेप्रोन्यचिन्तया ।

हस्तेन पादौ कण्ठयेत् तस्य दासीमया च सा ॥ १३ ॥

35 पृष्ठा क्षेप्रोन्यचिन्तया पादाङ्गुष्ठेन 'भूमिं' सुयं विलिखेत्, 'हस्तेन' करेण पादं कण्ठयेत् तदाऽस्य 'सा' किन्ता

'दासीमया' दासीकृता । तथा च परासरः—“अङ्गुष्ठेन भूमिं बिलितेत् क्षेत्रचिन्तां विजानीयात्, हस्तेन पादौ कण्डूयेद् दासीकृता च सा” ॥ १३ ॥ अन्यदप्याह—

ताल-भूर्जपटदर्शनेऽङ्गुलं चिन्तयेत् कच-तुपा-ऽस्थि-भस्मगम् ।

व्याधिराश्रयति रज्जु-जालकं चल्कलं च समवेक्ष्य बन्धनम् ॥ १४ ॥

तालवृक्षपत्रदर्शने भूर्जपटदर्शने वा प्रथा 'अङ्गुलं' वक्षं चिन्तयेत् । 'कचतुपा-ऽस्थि-भस्मगं' व्याधिराश्रयति । कचाः-केशाः तुपं-धान्यवर्मं अस्थि-प्रसिद्धम्, भस्म, एषामन्यतमस्योपरिगतं प्रथारं 'व्याधिः' पीडा आश्रयति । रज्जुः-प्रसिद्धा, जालकं-यत्र मत्स्य-पक्षिणो बध्यन्ते तदेव तत्सदृशं वा, 'चल्कलं' त्वक्, एषामन्यतमस्यं वा 'समवेक्ष्य' अवलोक्य गृहीत्वा वा पृच्छेत् तदा बन्धनं वदेत् । तथा च परासरः—“ताल-भूर्जपत्रदर्शने बन्धार्थे, केशा-ऽस्थि-भस्मनाऽऽक्रम्य व्याधिभयं श्रूयात्, निग(म्या)जाल-रज्जु-सिक्थ-चल्कलान्यधिष्ठाय दर्शने वा बन्धनं मतम्” ॥ १४ ॥ अन्यदप्याह—

पिप्पली-मरिच-सुण्ठि-वारिदै रोध्र-कुष्ठ-वसना-ऽम्बु-जीरकैः ।

गन्धमांसि-शतपुष्पया वदेत् पृच्छतस्तगरकेन चिन्तनम् ॥ १५ ॥

स्त्री-पुरुषदोष-पीडित-सर्वा-ऽध्व-सुता-ऽर्य-धान्य-तनयानाम् ।

द्वि-चतुःशक-क्षितीनां विनाशतः कीर्त्तितैर्दृष्टैः ॥ १६ ॥

पिप्पलीति । पिप्पल्यादिदर्शने कथादिचिन्तां क्रमशो व्यपदिशेत् । तत्र पिप्पलीदर्शने या स्त्री दोषदुष्टा 15 सशोपा तत्कृतां चिन्तां वदेत् । मरिचदर्शने दोषयुतस्य सपापस्य पुरुषस्य चिन्तां प्रवदेत् । सुण्ठिदर्शने पीडितस्य-व्याधितस्य मृतस्य चिन्तां वदेत् । वारिदा-मुस्ता तेषां दर्शने सर्वनाशकताम् । रोध्रदर्शने अध्वनाशकताम् । कुष्ठदर्शने सुवनाशकतां-पुत्रनाशताम् । वसतं-वर्षं तद्दर्शने अर्थनाशकताम् । अम्बुदर्शने धान्य[नाश]कताम् । जीरकदर्शने तनयस्य-पुत्रस्य नाशकताम् । गन्धमांस्या द्विशफनां-द्विपदनाशकताम् । शतपुष्पया चतुःशफानां-चतुष्पदविनाश-कताम् । तगरेण क्षितेः-भूमेः नाशकताम् । एतैः 'कीर्त्तितैः' उचरितैर्वा 'दृष्टैः' अवलोकितैर्वा विनाशहेतोः पृच्छा 20 भवति । तथा च परासरः—“पिप्पलीनां दर्शने प्रदुष्टस्त्रीकृतां चिन्ताम्, मरीचकस्य पापपुरुषकताम्, शृङ्गवेरस्य मृतचिन्ताम्, अजाभ्याः सुतनाशकताम्, रोध्रस्याध्वनाशकताम्, मुस्तास्य सर्वनाशकताम्, कुष्ठस्य सर्वनाशकताम् वसनस्यार्थनाशकताम्, तगरस्य भूमिनाशकताम्, शतपुष्पयाश्चतुष्पात्राशकताम्, मांस्या द्विपदनाशार्थम्” ॥ १५ ॥ १६ ॥ अन्यदप्याह—

न्यग्रोध-मधुक-तिन्दुक-जम्बू-लक्षा-ऽऽम्र-चदरजातफलैः ।

घन-कनक-सुरूप-लोहां-ऽङ्गुल-रूप्योदुम्बरसारिरपि करगैः ॥ १७ ॥

'न्यग्रोधादिजातफलैः' वत्समगैः फलेः 'करगैः' हस्तैः धनायातिर्भवति । तत्र न्यग्रोधत्रातफलैः प्रदुर्लभैर्ल-धनासिः-वित्तलाभो भवति । मधुकफलैः कनकस्य-स्वर्णस्यासिः । तिन्दुकफलैः द्विपदस्य-पुरुषस्यासिः । जम्बूफलैर्लोहस्य । लक्षाफलैः अङ्गुलस्य-वक्षस्य । आम्रफलैः रूप्यस्य । चदरफलैरुदुम्बरस्य-ताम्रस्येति । तथा च परासरः—“अथ न्यग्रोधफलैर्लोहस्यः पृच्छेद् धनागममादिशेत्, मधुकोदुम्बरफलैः काञ्चनागमम्, द्विपदागमं तिन्दुकैः, ब्रह्मागमं लक्ष्मणैः, 30 रूप्यस्य आप्तैः, ताम्रस्य चर्दु, लोहस्य जान्वैः” इति ॥ १७ ॥ अन्यदप्याह—

धान्यपरिपूर्णापात्रं, कुम्भः पूर्णः कुटुम्बवृद्धिकरः ।

गज-गो-शुनां पुरीषं, घन-भुवति-सुहृद्दिनाशकरम् ॥ १८ ॥

धान्यपरिपूर्णं पात्रं कुम्भः पूर्णः कुटुम्बवृद्धिकरः । 'गज-गो-शुनां पुरीषं' घन-भुवति-सुहृद्दिनाशकरं' गजानां-इक्षिनां 'पुरीषं' निष्ठ गत्रं पुरीषं च शुनां-सारमेयानां पुरीषं धनस्य-पेश्यस्य शुचतीनां-स्त्रीणां स्वभित्पारं सुहृदां च विनाशं 35 करोति ॥ १८ ॥ अन्यदप्याह—

पशु-हस्ति-महिष-पङ्कज-रजत-व्याघ्रैर्लभेत सन्दष्टैः ।

आविक-घन-निबसन-मलयज-कौशेया-ऽऽभरणसङ्घातम् ॥ १९ ॥

पञ्चादिभिः पृच्छासमये 'सन्दष्टैः' अवलोकितैः अव्याघारभरणसङ्घातं—समूहं प्रष्टा लभेत । तत्र पशुदर्शने आविकस्य—और्गिकस्य कम्बलादेर्लभः । हस्तिनः—करिणो दर्शने घनागमः । महिषदर्शने निवसनस्य—क्षौमवस्त्रस्य, पङ्कजस्य—पद्मस्य दर्शने मलयजस्य, रजतस्य—रूप्यस्य दर्शने कौशेयस्य वस्त्रस्य, व्याघ्रदर्शने आभरणस्यागमः । तथा च परासरः—“महिषस्य क्षौमवस्त्रागमम्, मणिमाण्डस्य गवाजिनम्, और्गिकानां पशुदर्शने, व्याघ्रस्याभरणगमं वदेत्, पङ्कजस्य दर्शने रक्तवस्त्रचन्दनलाभम्, रूप्यस्य दर्शने कौशेयवस्त्रागामम्” ॥ १९ ॥ अन्यदप्याह—

पृच्छा वृद्धश्रावक-सुपरिव्राड्दर्शने नृभिर्विहिता ।

मित्र-चूतार्थं भवा गणिका-नृप-सूतिकार्था वा ॥ २० ॥

वृद्धश्रावकः—कापालिकः तद्दर्शने—तदालोकने 'नृभिः' पुरुषैः मित्र-चूतार्थं भवा 'पृच्छा विहिता' कृत्वा पृच्छा । गणिका—वेद्या नृपः—राजा सूतिका—प्रसूता स्त्री तत्कृता ॥ २० ॥ अन्यदप्याह—

शाक्योपाध्याया-ऽर्हृक्षिग्रन्थ-निमित्त-निगम-कैवर्तैः ।

चौर-चमूपति-वाणिज-दांसी-योधा-ऽऽपणस्य-वध्ययानाम् ॥ २१ ॥

शाक्यादीनां दर्शने चौरादीनां पृच्छा । शाक्यदर्शने चौरकृताम् । उपाध्यायदर्शने चमूपतिकृतां—सेनापतिकृताम् । अर्हृतो दर्शने वाणिजकृताम्, निर्ग्रन्थदर्शने दासीकृताम् । नैमित्तिकस्य—दैवविदो दर्शने योधकृताम् । निगमस्य दर्शने आपणस्य—श्रेष्ठिनः कृताम् । कैवर्तस्य धीवरस्य दर्शने वध्यकृतां चिन्तामिति ॥ २१ ॥ अन्यदप्याह—

तापसे शौण्डिके दृष्टे प्रोपितः पशुपालनम् ।

हृद्गतं पृच्छकस्य स्यादुच्छवृत्तौ विपन्नता ॥ २२ ॥

तापसे दृष्टे पृच्छकस्य 'हृद्गतं' चित्तस्य 'प्रोपितः' प्रवासे यः कञ्चित् स्थितः तस्य प्रयासिनश्चिन्तनम् । 'शौण्डिके' मयासके दृष्टे पशुपालनं चित्तस्यम् । 'उच्छवृत्तौ' शैलोच्छवृत्तौ दृष्टे विपन्नार्थचिन्ताम् । तथा च परासरः—“निर्ग्रन्थ-दर्शने दासीपृच्छाम्, वृद्धश्रावकदर्शने मित्रचूतकृताम्, शाक्यस्य चौरकृताम्, परिव्राजकस्य नृप-सूतिका-गणिकार्था वा, उपाध्यायस्य चमूपतिकृताम्, निगमस्य श्रेष्ठिकृताम्, नैमित्तिकस्य योधार्थम्, उच्छवृत्तीनां विपन्नार्थम्, अर्हृतो वाणिजकृताम्, तापसस्य प्रोपितार्थम्, शौण्डिकस्य पशुपालनार्थम्, कैवर्तस्य वध्यपातकृताम्” इति ॥ २२ ॥ अन्यदप्याह—

इच्छामि द्रष्टुं भण पश्यत्वार्थः समादिशेत्युक्ते ।

संयोग-कुटुम्बोत्था लाभैश्वर्योद्भवा चिन्ता ॥ २३ ॥

इच्छामीत्यायुक्ते यथासङ्गं संयोगादिकृताम् । तत्रेच्छामि द्रष्टुमिति 'उक्ते' भाषिते संयोगकृतां चिन्तां वदेत् । भणेत्युक्ते कुटुम्बकृताम् । पश्यतु आर्य इत्युक्ते लाभार्थकृताम् । समादिशेत्युक्ते ऐश्वर्योद्भवां चिन्तामिति ॥ २३ ॥ अन्यदप्याह—

निर्दिशेति गदिते जया-ऽध्वजा प्रत्यवेक्ष्य मम चिन्तितं च द ।

आशु सर्वजनमध्यगं त्वया दृश्यतामिति च घन्धु-चौरजा ॥ २४ ॥

निर्दिशेति 'गदिते' उक्ते पृच्छा 'जयाध्वजा' जयार्थं कृता जाता अध्वजा वा । 'प्रत्यवेक्ष्य' विचार्य मम 'चिन्तितं' हृद्गतं वदेत्युक्ते घन्धुकृता । सर्वजनमध्यगं दृष्टारमेयं वक्ति 'आशु' क्षिप्रमेव त्वया दृश्यतामिति 'चौर-जाता' तत्सरकृता चिन्ता । तथा च परासरः—“आदिशेत्युक्ते ऐश्वर्यचिन्ताम्, भणेत्युक्ते कुटुम्बचिन्ताम्, इच्छामि द्रष्टुमिति संयोगचिन्ताम्, पश्यत्वार्थं इति लाभकृताम्, निर्दिशेत्युक्तां जयपृच्छां वा, पृच्छामि तावदायंति वा मन्वह् सत्प्रत्यनेनमेति घन्धुकृताम्, अथ काले निष्पन्नैः सहसा बहुजनमध्यगतं दृश्यतामिति पृष्टेचौरकृतां जानी-यामिति ॥ २४ ॥ अथ चौरतानमाह—

अन्तःस्येऽङ्गे स्वजन उदितो बाह्यगे वाह्य एव,
पादाङ्गुष्ठा-ऽङ्गुलिकलनया दास-दासीजनः स्नात् ।

जङ्घे प्रेप्यो भवति भगिनी नाभितो हृच्च भार्या,

पाण्यङ्गुष्ठा-ऽङ्गुलिचयकृतस्पर्शने पुत्र-कन्धे ॥ २५ ॥

‘अन्तःस्येऽङ्गे’ अभ्यन्तरस्ये ‘अङ्गे’ अवयवे सृष्टे पृच्छायां चौरः ‘स्वजनः’ आत्मीय एव ‘उदितः’ उक्तः । 5
बाह्यगेऽङ्गे सृष्टे बाह्यत एवोदितश्चौरः । ‘पादाङ्गुष्ठाङ्गुलिकलनया’ पादाङ्गुष्ठे सृष्टे दासश्चौरः, अङ्गुलीषु-पादाङ्गुलीष्व-
प्येवं दासीजनः ‘स्याद्’ भवेत् । जङ्घास्पर्शने ‘प्रेप्यः’ कर्मकरो भवति । नाभितो भगिनी । हृदि ‘भार्या’ आत्मीया
जाया । पाणिः-हस्तः, हस्ताङ्गुष्ठस्पर्शने पुत्रः । अङ्गुलिचयस्पर्शने कन्या-आत्मीया तनया चौरा । एवं कृतस्पर्शने चौर-
ज्ञानम् ॥ २५ ॥ अन्यदप्याह—

मातरं जठरे मूर्ध्नि गुरुं दक्षिण-चामकौ ।

10

बाहू भ्राताऽथ तत्पत्नी स्पृष्ट्वैवं चौरमादिशेत् ॥ २६ ॥

‘जठरे’ उदरे सृष्टे ‘मातरं’ जननीं चौरां वदेत् । ‘मूर्ध्नि’ शिरसि गुरुम् । दक्षिण-चामकौ बाहू स्पर्शने
ययासङ्घं भ्राताऽथ तत्पत्नी, दक्षिणबाहुस्पर्शे भ्राता, वामे तत्पत्नी । ‘एवं’ अङ्गस्पर्शने दृष्टे ‘चौरं’ तस्करं ‘आदिशेद्’
वदेत् । तथा च परासरः—“बाह्याङ्गस्पर्शने बाह्यं चौरम्, अन्तः स्वकृतम्, तत्र पादाङ्गुष्ठे दासम्, अङ्गुलिषु
दासीम्, जङ्घयोः प्रेप्यम्, जठरे मातरम्, हस्ताङ्गुलिषु दुहितरम्, अङ्गुष्ठे सुतम्, नाभ्यां भगिनीम्, गुरुं शिरसि, 15
हृदि भार्याम्, दक्षिणवाहौ भ्रातरम्, वामवाहौ भ्रातृभार्याम्” ॥ २६ ॥ अथापहृतस्य लामाऽलामज्ञानमाह—

अन्तरङ्गमवमुच्य बाह्यं स्पर्शनं यदि करोति पृच्छकः ।

श्लेष्म-मूत्र-शकृतस्त्यजन्नथ पातयेत् करतलस्यवस्तु चेत् ॥ २७ ॥

भृशमवनामिताङ्गपरिमोदनतोऽप्यथवा,

जनघृतरिक्तभाण्डमवलोक्य च चौरजनम् ।

20

हृत-पतित-क्षता-ऽस्मृत-विनष्ट-विभन्न-गतो-

न्मुपित-मृताद्यनिष्टरवतो लभते न धनम् ॥ २८ ॥

अन्तरङ्गमिति । एवंविधैर्निमित्तैः प्रष्टा हृतं धनं न लभेत । केः ? इत्याह—‘अन्तरङ्गं’ अभ्यन्तरस्यमवयवं प्राप्तं
‘अवमुच्य’ परित्यज्य बाह्यमवयवस्य स्पर्शनं यदि पृच्छकः करोति । अथवा श्लेष्म-मूत्र-शकृतः ‘स्वजन्’ परित्यजति
तत्कालम् । अथवा करतलस्यं-पाणितलस्यं किञ्चिद् वस्तु पातयेत् ॥ २७ ॥ 25

भृशमवनामिताङ्गमिति । अथवा ‘भृशं’ अत्यर्थं अवनामिताङ्गवयवो अज्ञानानमेव परिमोदनं-चटचटाशब्द-
मुत्पादयति । तथा तत्कालं जनघृतं-लोहस्वादवितरिक्तभाण्डं (?) ‘अवलोक्य’ दृष्ट्वा । तथा ‘चौरजनं’ तस्करमवलोक्य ।
अथवा हृत-पतित-क्षता-ऽस्मृत-विनष्ट-विभन्न-गतोन्मुपित-मृतादि, एषामनिष्टरवतः-शब्दश्रवणात्, आदिप्रदृष्टान्नष्ट-कष्ट-
दष्ट-ऽनिष्ट-जीर्णशब्दश्रवणात् प्रष्टा हृतं न लभत इति । तथा च परासरः—“अन्यत्र रोगं स्पृष्ट्वा निर्दरं वा श्लेष्म-
मूत्र-पुटीपाणं कुर्यात्, हस्ताद्वा किञ्चित् पातयेत्, गात्राणि वा स्फोटयेत्, घृत-हृत-पतित-मुपित-विस्मृत-नष्ट-कष्टा- 30
ऽनिष्ट-भ्रम-गत-जीर्णशब्दप्रादुर्भावे वा स्नात्, रिक्तभाण्ड-तस्कराणां दर्शने नष्टस्यालभं विन्धात्” ॥ २८ ॥

अथ पीठार्यानां मरणा-ज्ञानमाह—

निगदितमिदं यत् तत् सर्वं तुपा-ऽस्त्रि-विपादकैः,

सह मृतिकरं पीडातार्तानां समं रुदित-धुनैः ।

“अन्तरङ्गमवमुच्य” इत्यत आरभ्य यदिदं नष्टचिन्तायां ‘निगदितं’ उक्तं तत् सर्वं तुपा-ऽस्त्रि-विपादकैः ‘सह’ 35
साकं तथा रुदित-धुनैः ‘समं’ सह ‘पीडातार्तानां’ रोगिणां ‘मृतिञ्च’ मरणं करोति । आदिप्रदृष्टान्नष्ट-मिन्न-मृत-दुग्ध-

दग्ध-पाटितशब्दैरिति । तथा च परासरः—अथो रोगाभिज्ञावत्परिदि(१)मूत्र-पुरीषोत्सर्ग-केशा-ऽस्थि-भस्म-तुप-विपादानां अशुमानां दर्शने, तथा छिन्न-भिन्न-व्यापन्न-हृत-गत-क्षुत-जग्ध-वद्ध-दग्ध-पाटित-रुदितशब्दद्वयवणे वा रोगिणां मरण-मादिशेत् ॥ अथ भोजनज्ञानमाह—

अवयवमपि स्पृष्ट्वाऽन्तःस्थं हृदं मरुदाहरे-

दतिचहु तदा भुक्तवाऽन्नं सुस्थितः सुहितो वदेत् ॥ २९ ॥

'अन्तःस्थं' अभ्यन्तरस्थितं 'हृदं' शिरामवयवं स्पृष्ट्वा 'मरुद्' वायुं 'संदरेत्' चट्टिरज् पृच्छेत् तदा स पृच्छको 'अतिचहु' अतिप्रभूतमन्नं भुक्त्वा 'सुहितः' वृत्तः सुस्थित इति वदेत् ॥ २९ ॥ अन्यदप्याह—

ललाटदर्शनाच्छफदर्शनाच्छालिजोदनम् ।

उरःस्पर्शात् पट्टिकाख्यं ग्रीवास्पर्शं च यावकम् ॥ ३० ॥

ललाटदर्शनाच्छफकथान्यानां वा दर्शनाच्छालिजोदनं पृच्छकेन मुक्तमिति वदेत् । उरः-बभ्रःस्पर्शात् पट्टिकात्रम् । ग्रीवास्पर्शं 'यावकं' यावात्रम् ॥ ३० ॥ अन्यदप्याह—

कुक्षि-कुच-जठर-जानुस्पर्शं मापाः पयस्ति-ल-यवागूः ।

आस्वादयतश्चौष्टी लिहतो मधुरं रसं ज्ञेयम् ॥ ३१ ॥

कुक्षिस्पर्शं मापा मुक्ताः । कुचौ-स्तनो तयोः स्पर्शं पयः-क्षीरोदनम् । जठरं-उदरं तत्स्पर्शने विलोदनम् ।

15 जानुस्पर्शं यवागू-यावकम् । ओष्ठौ आस्वादयतो लिहतो वा प्रष्टुर्मधुरं रसं मुक्तमिति ज्ञेयम् ॥ ३१ ॥ अन्यदप्याह—

विसृक्के स्फोटयेद्ब्रिहामम्ले चक्रं विकोपयेत् ।

कटुकेऽसौ कपाये च हिष्केत् ष्ठीवेच सैन्धवे ॥ ३२ ॥

'जिह्वा' रसनां विसृक्के स्फोटयेद्वा प्रष्ट्वाऽम्ले मुक्ते । मुखं विकोपयेत् कटुके 'असौ' पृच्छकः । कपाये मुक्ते हिष्केत् । 'सैन्धवे' लयणे मुक्ते ष्ठीवेत् ॥ ३२ ॥ अन्यदप्याह—

20 श्लेष्मत्यागे शुष्क-तिक्तं तदल्पं श्रुत्वा ऋचादं प्रेक्ष्य वा मांसमिश्रम् ।

भ्रू-गण्डोष्ठस्पर्शने शाकुनं तद् मुक्तं तेनेत्युक्तमेतन्निमित्तम् ॥ ३३ ॥

श्लेष्मणः परित्यागे शुष्कं रूक्षं तिक्तं तदल्पं च मुक्तम् । 'ऋचादे' मांसाशिनं प्राणिनं [श्रुत्वा] 'प्रेक्ष्य' दृष्ट्वा वा तन्मांसमिश्रं मुक्तम् । भ्रू-गण्डोष्ठस्पर्शने शाकुनं मांसं 'तेन' प्रष्ट्वा तद् मुक्तमिति । 'उक्तं' कथितमेतद् 'निमित्तं' चिह्नम् ॥ ३३ ॥ अन्यदप्याह—

25 मूर्द्ध-नाल-केश-हनु-शङ्ख-कर्ण-जङ्घं च पस्ति च स्पृष्ट्वा ।

गज-महिप-मेप-शकर-गो-शश-मृग-महिपमांसयुतम् ॥ ३४ ॥

मूर्द्धांस्पर्शने यथाक्रमं गजादिमांसं पक्वव्यम् । मूर्द्धां-शिरस्वत्स्पर्शने गजमांसं मुक्तं वदेत् । गण्डस्पर्शने माहि-पम् । केशस्पर्शने मेपमांसम् । हनुस्पर्शने शीकरं मांसम् । शङ्खस्पर्शने गोमांसम् । कर्णस्पर्शने शशमांसम् । जङ्घास्पर्शने मृगमांसम् । पक्षिस्पर्शने च माहिपमांसयुतमेव मुक्तमिति ॥ ३४ ॥ अन्यदप्याह—

30 दृष्टे श्रुतेऽप्यशकुने गोघा-मत्स्यामिपं वदेद् मुक्तम् ।

गर्भिण्या गर्भस्य विनिपतनमेवं प्रकल्पयेत् प्रभो ॥ ३५ ॥

अशकुने दृष्टे श्रुते अपलोकित्रे वा.....गोघामिपं मत्स्यामांसं वा मुक्तं वदेत् । एवमेव गर्भस्य पृच्छायां 'अशकुने' दुर्भिमिते दृष्टे श्रुते वा गर्भिण्याः स्त्रियो गर्भपतनं वदेत् । तथा च परासरः—'तथा स्निग्ध-हृदमभ्य-न्तपश्च स्पृष्ट्वाऽत्रिज् पृच्छेद् मुक्तमन्नं विन्यात् । तत्र ललाटस्पर्शं शूद्रानां च दर्शने शास्त्रोदनम्, उरसि संस्पृष्टे पट्टि- 35 कात्रम्, ग्रीवायां व्यापन्नम्, जठरे विलोदनम्, कुक्षौ मापोदनम्, स्तनयोः क्षीरोदनम्, जान्वोर्यावकमा-स्वादयेत्, ओष्ठौ वा परिलेदि मधुरम्, विसृक्के जिह्वा वा स्फोटयेत्, अम्ले मुखं विष्णुयेत्, कटुके हिष्केत्, कपावे

निष्ठीवेत्, तिके शुक्के श्लेष्माणसुत्सजेदिति, लयणम् । क्रव्यादानां दर्शने मांसप्रायम् । तत्र भू-गण्ड-जिह्वाष्टसंस्पर्शने शाकुनम्, हन्वोर्वांराहम्, कर्णयोदछागम्, जङ्घयोर्मांसम्, केशानामौरभ्रम्, शङ्खयोर्गव्यम्, वस्त्रि-गलयोर्माहिपम्, मूर्ध्नि कौञ्जरम्, पाटित-छिन्न-मिन्नानां दर्शने श्रवणे गोधा-भत्स्ययोर्मांसमिति ॥ ३५ ॥ अथ गर्भिण्या गर्भज्ञानमाह—

पुं-स्त्री-नपुंसकाख्ये दृष्टेऽनुमिते पुरःस्थिते स्पृष्टे ।

तज्जन्म भवति पाना-ऽन्न-पुष्प-फलदर्शने च शुभम् ॥ ३६ ॥

गर्भपृच्छायां पुरुषे 'दृष्टे' अवलोकिते 'अनुमिते' विद्वते 'पुरःस्थिते' अग्रतः स्थिते स्पृष्टे वा तस्मिन् तस्मिन् 'तज्जन्म भवति' पुंजन्म भवति । एवं स्त्रियां दृष्टायां च पुरःस्थितायां वा स्पृष्टायां स्त्रीजन्म । नपुंसकाख्ये दृष्टे स्पृष्टे पुरःस्थितेऽनुमिते नपुंसकजन्म भवति । 'पाना-ऽन्न-पुष्प-फलदर्शने च शुभं' इति पानस्य-आसवस्य अन्नस्य-भोजनादौः पुष्पाणां-क्षुप्तमानां फलानां च दर्शने 'शुभं जन्म' सुखप्रसयो भवति ॥ ३६ ॥ अन्यदप्याह—

अङ्गुष्ठेन भ्रूदरं चाङ्गुलीर्वा स्पृष्ट्वा पृच्छेद् गर्भचिन्ता तदा स्यात् ।

मध्वाज्याद्यैर्हेम-रत्न-प्रवालैरग्रस्यैर्वा मातृ-धात्र्यात्मजैश्च ॥ ३७ ॥

स्त्री स्वाङ्गुष्ठेन भ्रूयुगदुदरं वाऽङ्गुलीर्वा स्पृष्ट्वा पृच्छेत् तदा गर्भचिन्ता 'स्याद्' भवेत् । अथवा 'अग्रस्थितैः' पुरोऽवस्थितैः 'मध्वाज्याद्यैः' मधु-माक्षिकं आर्यं-घृतम्, आदिग्रहणात् पुंनामभिः शोभनफलैश्च, तथा 'हेम-रत्न-प्रवालैः' हेम-स्वर्णं रत्नानि-मणयः प्रवालं-विद्रुमम्, तथा 'मातृ-धात्र्यात्मजैश्च' माता-जननी धात्री-स्तनदायिनी आत्मजः-पुत्रः, एतैरप्यग्रस्यैर्गर्भपृच्छां जानीयात् । तथा च परासरः—“अथ स्त्री भ्रुवौ जठरमङ्गुष्ठेनाङ्गुलिं स्पृष्ट्वा 15 पृच्छेद् गर्भचिन्तां जानीयात्, तथा फल-च्छायावृक्ष-प्रवाला-ऽङ्कुर-मधु-घृत-हेम-गर्भ-प्राजापत्यं वा मातृ-धात्री-पुत्रनिर्देशनशब्दप्राप्तुमांवे गर्भपृच्छामेव” ॥ ३७ ॥ अन्यदप्याह—

गर्भयुता जठरे करगे स्याद् दुष्टनिमित्तवशात् तदुदासः ।

कर्पति तज्जठरं यदि पीडोत्पीडनतः करगे च करेऽपि ॥ ३८ ॥

'जठरे' उदरे 'करगे' हस्तगते हस्तेन स्पृष्टे स्त्री गर्भयुता 'स्याद्' भवेत् । तस्मिन्नेव पृच्छासमये 'दुष्टनिमित्त- 20 वशाद्' दुष्टनिमित्तदर्शनात् क्षुत्-पतित-मग्न-विनष्ट-द्रव्य-श्रीणादिदर्शन-श्रवणात् 'तदुदासः' गर्भपतनं भवति । अथवा तज्जठरं 'पीडोत्पीडनतः' पीडमर्हं कृत्वा कर्पति कद्रवत्, 'करगे च करेऽपि' हस्तं हस्तेन वाऽवलम्ब्य पृच्छति तथापि तदुदास इति ॥ ३८ ॥ अथ गर्भग्रहणे फालज्ञानमाह—

घ्राणाया दक्षिणे द्वारे स्पृष्टे मासोऽन्तरं वदेत् ।

धामेऽब्दौ कर्णं एवं मा द्वि-चतुर्भं श्रुति-स्तने ॥ ३९ ॥

अङ्गुष्ठेनेत्यवर्त्तते । 'घ्राणायाः' नासिकाया दक्षिणे 'द्वारे' श्रोतसि अङ्गुष्ठेन स्पृष्टे गर्भग्रहणे मासोऽन्तरं 'वदेत्' मूयात्, मासेन गर्भग्रहणं भविष्यतीति । धामे श्रोतसि स्पृष्टे 'अब्दौ' वर्षद्वयमन्तरम्, वर्षद्वयेन गर्भग्रहणं भवतीति । एवं धामे कर्णं वर्षद्वयेनेव । माःशब्देन मास उच्यते, श्रुतिः-कर्णः दक्षिणे कर्णच्छिद्रे स्पृष्टे मासे द्विभ्रं-द्विगुणम्, मासद्वयेन गर्भग्रहणं भवतीति । धामे वर्षद्वयेन स्तनस्पर्शने । माश्रुतुर्भं-चतुर्भांसिः स्तनद्वयस्पर्शनेनेति ॥ ३९ ॥ अन्यदप्याह—

वेणीमूले व्रीन् सुतान् कन्यके द्वे कर्णे पुत्रान् पञ्च हस्ते अग्रं च ।

अङ्गुष्ठान्ताः पञ्चकं चाऽनुपूर्व्यां पादाङ्गुष्ठे पाष्णिगुमेऽपि कन्याम् ॥ ४० ॥

वेणी-केसकलापः तन्मूले पृच्छायां स्पृष्टे व्रीन् 'सुतान्' पुत्रान् द्वे कन्यके जनविध्यसीति पञ्चक्यम् । 'कर्णे' कर्णगुमे स्पृष्टे पुत्रान् पञ्च । हस्तयोः स्पर्शने पुत्रत्रयं च । कनिष्ठिकाङ्गुलेरारभ्याङ्गुष्ठाङ्गुलिं यावदाङ्गुल्यां क्रमेण पुत्रपञ्चकं स्ते । तत्र कनिष्ठिकास्पर्शने एकं पुत्रम्, अनामिकास्पर्शने द्वौ, मध्यमायां त्रयः, तर्जनीयां चत्वारः, अङ्गुष्ठे पञ्च । पादाङ्गुष्ठे स्पृष्टे पाष्णिगुमेऽपि स्पृष्टे कन्यामेकां स्ते ॥ ४० ॥ अन्यदप्याह—

सव्या-ऽसव्योरुत्संस्पर्शं सूते कन्या-सुतद्वयम् ।

सृष्टे ललाटमध्या-ऽन्ते चतु-स्त्रितनया भवेत् ॥ ४१ ॥

सव्यं-दक्षिणमूरु तत्संस्पर्शं कन्याद्वयं सुतद्वयं च सूते । असव्ये-वामेऽप्येवमेव । ललाटमध्या-ऽन्ते सृष्टे यथासङ्घं चतुस्त्रितनया भवेत्, ललाटमध्ये सृष्टे चतुस्त्रितनया-चतुःपुत्राः, ललाटान्ते त्रितनया भवेत् । तथा च परासरः—
 5 “तत्र जठरस्पर्शने गर्भिणीमेव ब्रूयात्, अङ्गुष्ठेन नासाश्रोतसि दक्षिणे कुर्यान्मासान्तेन गर्भग्रहणम्, वामे द्विवर्षा-
 न्तरेण, कर्णाच्छिष्टे मासद्वयेन, वामे वर्षद्वयेन, सानयोरङ्गुष्ठेनैव सृष्टोच्चतुर्भिर्मासैः । पीठमर्द-कचान्तरे कृत्वोपरं
 कण्डूयेत्, अग्र-हस्तं हस्तेनावगृह्य वा पृच्छेद्, भ्रमरलोहिका-वधिरउदालक-कुठार-सुतपलित-भ्रमर्दर्शन-शब्दप्रादु-
 र्भावे वा स्याद् गर्भपतनं वा विन्यात् । तथाऽन्न-गान-पुष्प-फलं प्रेक्ष्य द्वि-चतुष्पदामन्यद्रव्याणां पुंसंज्ञकानां दर्शने-श्रवणे
 पुंजन्म विन्यात्, स्त्रीपुंसंज्ञानां स्त्रीपुंजन्म, नपुंसकाल्ये नपुंसकानाम् । अथ विशेषः—वेणीमूलमतिगृह्य पृच्छेत् तस्य
 10 द्वित्रान् पुत्रान् जनयिष्यसीति ब्रूयात्, ललाटमध्यं स्पृशन्तीति चत्वार्यपत्यानि, ललाटान्तं त्रीणि, कर्णयोः संस्पर्शं पञ्चा-
 पत्यानि विन्यात्, हस्ततलसंस्पर्शं त्रीणि, कनिष्ठा-ऽनामिका-मध्यमा-प्रदेशिनी-तर्जनीयङ्गानामेक-द्वि-त्रि-चतुः-पञ्चापत्यानि,
 दक्षिणोरुस्पर्शं द्वौ पुत्रौ द्वे कन्यके जनयिष्यसीति, वामस्य तिस्रः कन्यका द्वौ पुत्रौ, पादाङ्गुष्ठस्य कन्यकैका, पाण्यो-
 कन्यकैकैव” इति ॥ ४१ ॥ अथ गर्भिण्याः कस्मिन् नक्षत्रे जन्म भविष्यतीति तज्ज्ञानार्थमाह—

शिरो-ललाट-भ्रू-कर्ण-गण्डं हनु-रदा गलम् ।

सव्योऽपसव्यः स्कन्धश्च हस्तौ चिबुक-नालकम् ॥ ४२ ॥

उरः कुचं दक्षिणमप्यसव्यं हृत्पार्श्वमेवं जठरं कटिश्च ।

स्फिक्पायुसन्ध्यूरुयुगं च जानू जङ्घेऽथ पादाविति कृत्तिकादौ ॥ ४३ ॥

सूते इत्यनुवर्तते । पृच्छासमये गर्भिण्याः शिरःप्रभृतिसंस्पर्शने कृत्तिकादौ नक्षत्रे जन्म विन्यात् । ‘शिरः’
 मूर्धानं संस्पृशेत् कृत्तिकानक्षत्रे जन्म भवति, गर्भिणी सूते । ललाटे रोहिण्याम्, भ्रुवोर्मृगशिरे, कर्णयोराः
 20 द्रांयाम्, गण्डयोः पुनर्वसौ, हन्योः पुष्ये, रदाः-दन्तालेऽप्यश्लेषायाम्, गले-प्रीवायां मघासु, सव्ये-दक्षिणस्कन्धस्पर्शने
 पूर्वकल्पुन्याम्, अपसव्ये-वामस्कन्धस्पर्शने उत्तराफल्पुन्याम्, हस्तयोः स्पर्शने हस्ते, चिबुके-आस्त्रापोभागे
 चित्रायाम्, नालके-वश्रःसन्धौ स्यातौ, उरसि-वश्रसि विशाखायाम्, दक्षिणकुचस्पर्शेऽनुराधायाम्, असव्ये-वामे
 ज्येष्ठासु, हृदि मूले, पार्श्वद्वयं ‘एवं’ प्राग्वत्, दक्षिणपार्श्वे पूर्वाषाढासु, वामपार्श्वे उत्तराषाढासु, जठरे श्रवणे, कट्यां
 घनिष्ठायाम्, स्फिक्-गुदसन्धिस्पर्शने शतभिषजि, दक्षिणोरुस्पर्शने प्राग्भद्रपदायाम्, वामे उत्तरभद्रपदायाम्, जान्वो
 25 रेयलाम्, जङ्घयोरश्विन्याम्, पादयोर्भरण्यामिति । तथा च परासरः—“शिरसि सृष्टे कृत्तिकासु जन्म विन्यात्, ललाटे
 रोहिण्याम्, भ्रुवोः मृगशिरसि, कर्णयोर्द्रांयाम्, गण्डयोः पुनर्वसौ, हन्योस्तप्ये, दन्तेष्वश्लेषायाम्, प्रीवायां मघासु,
 दक्षिणांसे प्राक्फल्पुन्याम्, उत्तरायां वामे, हस्ते हस्तयोः, चिबुके चित्रायाम्, स्यातौ नालके, उरसि विशाखायाम्,
 दक्षिणे स्तनेऽनुराधायाम्, वामे ज्येष्ठासु, हृदि मूले, दक्षिणपार्श्वे प्रागाषाढासु, उत्तराषाढास्वपरपार्श्वे, जठरे श्रवणे,
 श्विष्ठासु श्रोण्याम्, स्फिक्गुदयोर्भरणे, दक्षिणे प्राक्भद्रपदायाम्, वामेनोत्तरायाम्, जानुभ्यां पौष्णे, जङ्घयोराधिने,
 30 भरण्यां पादयोः” इति ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ अथोपसंहारा [र्यमाह—]

इति विरचितमेतद् गात्रसंस्पर्शलक्षम्,

प्रकटमभिमतास्यै वीक्ष्य शास्त्राणि सम्यक् ।

विपुलमतिरुदारो वेत्ति यः सर्वमेत-

न्नरपति-जनताभिः..... ॥ ४४ ॥

[॥ अमे राण्डतोऽयं ग्रन्थः ॥]

द्वितीयं परिशिष्टम् अंगविज्ञाए सहकोसो ।

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
	अ	अग्निगवेत्स	गोत्र १५०	अज्ञजोगि	१३९
अङ्ग्राणी	देवता ६९-२०५-२२३	अग्निगहोत्त	१०१-२२२	अज्ञगी	भाण्ड १९३
अङ्ग्रीका	देवता ६९	अग्नेय	१२३	अज्ञय	पितामह २१९
अङ्करपट्टक	११६	अग्नेयया	१२८	अज्ञव	आर्य १३४-१८७
अङ्कत	अग्नि १२०	अग्नेयमाणं [पदलं]	२५३	अज्ञा	देवता २२३
अकिट्टामास	२०२	अग्नेयते	आग्निप्रति ८३	अज्ञाधित्यं	देवता २२४
अकीडित	अनुष्ठित ? १४८	अग्नेयहिति	आग्नात्यति ८४	अज्ञिया	आर्यिका ६८
अकोसीघण्य	१७८	अघोसा	१५३	अज्ञुण	वृक्ष ६३
अकसक	आम्. ६०-६५	अचपला	५९	अज्ञप्पवित	अध्यात्मवृत्त ७
अकस्रपूप	भोज्य १८२	अचला	देवता ६९	अज्ञायी	गोत्र १५०
अकस्रमालिका	आम्. ७१	अचलाय	अचलायाम् १८	अज्ञेगणासित ?	क्रिया. १४८
अकस्राम	अक्षाम ४३	अचलार्हं	१२८	अज्ञोभाताणि	९२
अकसारित ?	क्रिया. १४८	अचवले	१२५	अज्ञालय	१३७-२१४
अक्खिक्कूड	अक्खिक्कूट ७२-१२३	अक्खिरुहित	अक्खिरुहित २४९	अज्ञियगत	अट्टिकागत २१६
अक्खिगुलिका	अक्खिगुलिका-कनीमिका ६६	अक्खियकार	अक्खियकार २३९	अज्ञिफालिका	सुरा २२१
अक्खिगृधक	अक्खिगृध १७८-२०३	अक्खियहसित	अक्खियहसित ३५	अज्ञिक्खणंति	अर्यायाने १०
अक्खिवात्तिणी	अक्खिपात्रिका ६६	अक्खिणी	अक्खिणी ८७	अज्ञिस्तुत्तो	अष्टकृत्वः १८४
अक्खीगमहापास	अक्खीगमहापासलन्धि ८	अक्खी	अक्खी १४७	अज्ञिपद	अर्यपद ६
अक्खुजंत ?	२००	अक्खीइक	अक्खीइक ३७	अज्ञिमय	आम्. १६२
अक्खोहित	आस्त्रोटित २५१	अक्खीइत	अक्खीइत ४१	अज्ञिमपाघणी	अष्टमसाधनी ८
अक्खोडिय	आस्त्रोटित १८१	अक्खीणक	अक्खीणक १३६	अज्ञिमंगलक	कण्डआम्. ६५-१६३
अक्खोळ	फल ६४-७१	अक्खीउव	अक्खीउव ७८	अज्ञिमंडल	११६
अक्खेइ	अक्खयिका १८	अक्खीमल्ल	अक्खीमल्ल ७२	अज्ञिविधि	अर्यविधि ७८
अक्खुयाचार	अक्खुदाचार ४	अक्खीइत	अक्खीइत १३०-१७०	अज्ञीहिक	अष्टाहिक १२७
अग्निगिह्याणि	५८	अक्खीइत	अक्खीइत २२१	अज्ञिक	अस्थिक (?) १५
अग्निगिसंपन्न	१७३	अक्खीदण	अक्खीदण १९०	अज्ञिकमय	भाण्ड २१५-२२१
अगल	आकलय १४३	अक्खीयित	अक्खीयित १६८	अज्ञिमिजा	अस्थिमज्जा १०५
अगोलिक	गुडवर्जित भोज्य १८२	अज	अज ६३	अज्ञिसिणा	गोत्र १०
अगोलीय	गुडवर्जित भोज्य १८२	अजिगणकंचुक	अजिगणकंचुक २३०	अजिल	चतुष्पद ६९
अग्निग	९१	अजिगण्ट	अजिगण्ट २२१-२३०	अजोदित	अर्द्धोदित १४७
अग्निगिदुग्गि	देवता २०५	अजिगण्पवेगी	अजिगण्पवेगी २२१	अजण्णमणताप	अनन्यमनस्थाया ५७
अग्निगडपजीत्रि	कर्माजीत्रि १६०	अजिगणिलाल	अजिगणिलाल २२७	अजण्णमय	अनन्यमन १०
अग्निगिह	अग्निगृह १३६	अजीग	अजीग २३०	अजणभियत	अनभियि(जि)त ३०
अग्निगधर	अग्निगृह ४१	अजीगकंबल	अजीगकंबल २३०	अजणभिवुत्त	अनभिवुत्त १६२
अग्निगमास्य	देवता २०४	अजीगण्पवेगिडा	अजीगण्पवेगिडा २३०	अजणस्यक	अनुस्युक १३
अग्निगरस	गोत्र १५०	अजीगवहा	अजीगवहा १५३	अजणह	अक्षत १७
		अज	आर्य १३१-१४९	अजणंग	गुरुमजाति ६३
				अजणत्र	आम्. ६५

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
अणेतपचञ्जक	अनन्तरपश्चात्कृत	२६२	अण्देने	मुनाकि	१०७
अणेतपचरसद	अनन्तरपुरस्कृत	२६४	अतप्परं	अतः परम्	६२
अणेतोहिचिणि	अनन्तावधिनि	१	अतसी	धाम्य	१६४
अणाउत्त	अनायुक्त	१०	अतिक्रमण	५७-९२-१२८	
अणागतजोगि		१३९	अतिरिक्तमण	अतिकृपण	२४१
अणागतणि	५७-८३-१२८		अतिवृत्त	भोग्य	६४-२२०
अणादिता	देवता	६९	अतिक्रमण	१३९	
अणाधारयमाग	क्रिया.	११	अतिक्रमण	११८	
अणापस्मय	अनपत्रय	३०	अतिक्रमण	२९	
अणापकाणि	५९-१२६		अतिप्रवृत्त	अतिप्रवृत्त	९५
अणावलोदयते	अनवलोकितिके	१५	अतिक्रमण	अतिक्रमण	१०६
अणावलोक्त		४४	अतिक्रमण	अतिक्रमण	९५
अणावृष्टिसुवृष्टि	अनावृष्टि-सुवृष्टि	७	अतिक्रमण	२३६	
अणिक्क	अनिक्क	४५	अतिक्रमण	वृक्ष	६३
अणिसमरा	५८-११९-१२९		अतिक्रमण	१०२	
अणुक		११४	अतिक्रमण	५७-८१-१२८	
अणुजल	अनुज्वल	४	अतिक्रमण	११८	
अणुपुरित	अनुत्परित	२३५	अतिक्रमण	क्रिया.	१०७
अणुदत्त		२१५	अतिक्रमण	१३	
अणुपद्वैतामास		१४५	अतिक्रमण	११	
अणुपुञ्जमौ	अनुपुञ्जः	७६	अतिक्रमण	आममान	१६
अणुयोगजोगि		१३९	अतिक्रमण	५३-५५-१३८	
अणुयोगविधि		४८	अतिक्रमण	अर्थीकायतया	१३०
अणुलिख	अनुलिख	१३०-१६८-१७०	अतिक्रमण	अत्यदार	१४४
अणुलेख	दोहद्वन्द्वकार	१७२	अतिक्रमण	अत्यपीडा	२२
अणुल्लापित ?	क्रिया.	१६६	अतिक्रमण	आम्बरक	१७-६५-१६३
अणुवक्त्रहस्त्वामि	अनुव्याख्यास्त्वामि	७-१३५	अतिक्रमण	अत्येवापद्	१७
अणुवक्त्रहस्त्वामि	अनुव्याख्यास्त्वामि	५-१६४	अतिक्रमण	अत्येवत्य	९
अणुवक्त्रहस्त्वामि	अनुव्याख्यास्त्वामि	५७	अतिक्रमण	अत्येव चतुर्थी एकत्र	१०
अणुवक्त्रहस्त्वामि	अनुव्याख्यास्त्वामि	२११	अतिक्रमण	अर्थे+आयम्-अर्थेकामम्	२०
अणुव्यवक	अनुव्यवक	१०	अतिक्रमण	अर्थेव्यवक	८७
अणुविसस	अनुविसस	३	अतिक्रमण	अर्थेव्यवक	२०
अणुणि	५८-११७		अतिक्रमण	अर्थेव्यवक	२०
अणे	आमन्त्रणम्	६८	अतिक्रमण	अर्थेव्यवक	२०
अणोच्छ्राणि	अनिवर्णी	१३५	अतिक्रमण	अर्थेव्यवक	२०
अणोक्क	अनपक्रान्त	४२	अतिक्रमण	अर्थेव्यवक	२०
अणोञ्ज	गुप्तजाति	६३	अतिक्रमण	अर्थेव्यवक	२०
अणोदुग	अनुदुग	२५७	अतिक्रमण	अर्थेव्यवक	२०
अणुपत्राणि	५९-१२९		अतिक्रमण	अर्थेव्यवक	२०
अणुजोगी		६४	अतिक्रमण	अर्थेव्यवक	२०
अणुपयोगि		१२६	अतिक्रमण	अर्थेव्यवक	२०

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
अलि ?		अपचतुच्छित	अव्यकपृष्ट	अस्तायेति	आस्वादते १०७
अलितककारक	अलकककारक १६०	अर्ध्वंग	अव्यङ्ग ११४	अस्तारोध	अधारोह कर्मोत्तीविन् १५९
अलिङ्ग	भाण्ड ६५	अव्यापणमास	२०२	अस्तामित	आध्रावित १३३-१८६
अलीणमहीण	अलीनालीन ८७	अव्याधवा	देयता २०४	अस्तिगो	देवता २०४
अवक ?	१४२	अव्योआतागि	५७	अस्तोत्थ	फल २३१
अवकद्रुति	अपकपैति १०८	अव्योकद्रु	८६	अहरदं	अहरदः ५७
अवकरिसेंत	अपकपैत् ३७	अव्योयतागि	१२८	अहृत्वेद	गोत्र १५०
अवक्त्रिस्त	अव्याक्षिस्त ३८	अस	अस्य १७-५०-५४-२६४	अहिआण	अपीयान १
अवज्येयमाग ?	क्रिया. १९८	अस्य	वृक्ष ६३	अहिणी	सर्विणी ६९
अवहु	लुकाटिका ११४	अस्यिण्णा ?	५२	अहिण्का	सर्विणी ६९-२२७
अवणामित	क्रिया. २१७	असरसंपण	१७३	अधिधायति	अभिधावति ८०
अवणैत	अवनयत् ३८	असलेसा	अछेपा २०६	अधिनिप	अधिनुप १६०
अवस्थंभ	अपस्तंभ २७	असहीण	असंलीन ४६	अहिमार	फल २३३
अवस्थिया	५८	असहीणुट्टित	असंलीनोश्चित	अहिरण्णक	वृक्ष ६३
अवदातक	१५३	असज्यो	यदास्वतः १	अहिलका	परिस्पर्जीव २३७
अवमट्ट	अपमट्ट २१५	असदस्सदि	असदस्सर्तति	अंकोल	वृक्ष ६३
अवमि	रोग २०३	असंघातसंपघ	१७३	अंकोलुपुष्प	पुष्प ६३
अवरण	अपराह १६४-१७८	असामण्यं भुक्तं	१८०	अंखिणी	अक्षिणी १२२
अवरणह	अपराह १६५	असालिका	आसालिका-जलचर ६९	अंगजक	आभू. ६५
अवरसजमगप ?	२६	असलिक	वर्ण ९०-१०५	अंगगगिह	अङ्गनगृह १३८
अवलोगित	क्रिया. १७६	असित	असितरणपडिभागा ५८	अंगगधवो अङ्गायो	अङ्गसत्त्वोऽप्यायः ५
अवलोयित	अवलोकित २१५	असिलट्टी	असियडि ११५	अंगदुयारधर	अङ्गद्वारधर ८
अवसकंत	अवच्यक्त् १३५	असिगीण	अश्रद्धिणाम् १७९	अंगदेवी	११२
अवसकिअ	अवच्यफिकित १६	असीति	असीति १२७	अंगमणीअज्जाय	५७
अवसकिअग्नि	अवच्यफिकिते १७	असीमालिका	कण्ठआभू. १६२	अंगयागि	वाहुआभू. १६३
अवसकित	अवच्यफिकित २१७	असुयामाससह ?	कर्मोत्तीविन् १६०	अंगरक्खा	अङ्गरक्षा ७
अवसरित	अपच्यत् १३०	असोक्कवणिकापाल	कर्मोत्तीविन् १६०	अंगविजा	अङ्गविधा १-७
अवसच्य	अपसच्य ७६	असोयवणिया	कर्मोत्तीविन् १६०	अंगविये	अङ्गविये ७-१४
अवसिद्ध	अपसिद्ध ६७	असोयवणिया	अशोकवनिका २२२	अंगदिय	अङ्गदित ७
अवसस्य	१८६	अससअधिगत	कर्मोत्तीविन् १५९	अंगदियय	अङ्गदियय ६-१२९
अवसिस्त	अपधित १९८	अससकण्ण	वृक्ष ६३	अंगुष्पत्तीअज्जाय	१
अवह	अङ्ग ६६	अससपूतग	पशु २२७	अंगुष्पिपोट्टिया	अङ्ग ११९
अवहत्थ	२१६	अससरंस ?	कर्मोत्तीविन् १६०	अंगुष्पिमुट्टिका	आभू. ७१
अवहत्थग	६०	अससनेय	" २३०	अंगुष्पीमंडल	११६
अवंग	आभू. ६४	अससभंघ	भाण्ड २३०	अंगुष्पेयक	अङ्गुष्पिआभू. १६३
अवाद्मा	अपाचीना १८-१९	अससमच्छ	मस्त्वजाति २२८	अंगुष्पेयक	अङ्गुष्पिआभू. १६३
अवामदसा	अमावासा २०६-२०९	अससमंडल	११६	अंगुष्पेयक	अङ्गुष्पिआभू. १६३
अवाहणंत	अवारनन् ३८	अससमोदणक	१३७	अंगुष्पेयक	अङ्गुष्पिआभू. १६३
अविक्रपनुष्णा	प्राणिजवस्त्र २२१	अससवारिक	कर्मोत्तीविन् १५९	अंगुष्पेयक	अङ्गुष्पिआभू. १६३
अविधेय	७३	अससात ?	क्रिया. १७६	अंगुष्पेयक	अङ्गुष्पिआभू. १६३
अवित्रा	५८	अससातियवस्त्र	कर्मोत्तीविन् १६०	अंगुष्पेयक	अङ्गुष्पिआभू. १६३
अविस्तर	अविस्तर ३६	अससादेहित	आसादयिपति ८४	अंगुष्पेयक	अङ्गुष्पिआभू. १६३
अपेगिअ	अपेगित ४			अंगुष्पेयक	अङ्गुष्पिआभू. १६३

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	
अंतर्निजमाण	अन्तर्नीयमान	१९६	आगच्छते	क्रिया.	८४	
अंतरथा		१५३	आगण्णोति	आकर्णयति	१०७	
अंतपाल		८९	आगतविभासा	गामं पडलं	४२	
अंतर		१२६	आगताणि	सोलस	४१	
अंतरंस		१८७	आगमगिह	आगमगृह	१३६	
अंतरिज	अन्तरीय वस्त्र	६४-१६४	आगमण अज्झाय		१३०-१३५	
अंतरिय	"	२२२	आगमणजोगि		१३९	
अंतलिक्खाय	अन्तरिक्षक	१	आगमणविधिविसेस		९-१०-५९	
अंता		५८-१२१-१२९	आगमेसभइ	आगमिप्यज्जइ	१०८	
अंतोघर	अन्तगृह	३२	आगमेहिति	आगमिष्यति	८४	
अंतोणाद	अन्तर्नाद	४३	आगम्म	आगम	१९२	
अंतोवारीय	अन्तर्वायाम्	८५	आगम्मगिह		१३८	
अंदोलंति	क्रिया.	८०	आगर	आकर	२०१	
अंधक	फल	२३८	आगामिभइ		१०८	
अंधी	आन्त्रदेशजा	६८	आगारेति	आक रयति	१०७	
अंध	आध्रवृक्ष	६३	आचमणिका	आण्ड	२५५	
अंधकपूर्वि	भोज्य	७१	आचरिय	गोत्र	१५०	
अंधट्टिक	भोज्य	१८२-२४६	आचिकखति	आचेत्	८३-१०७	
अंधांपिंडी	भोज्य	७१	आचित	क्रिया.	१६५	
अंध (त) राई		५९	आच्छण	आच्छत्र	१७	
अंधाडक	वृक्ष	६३	आजीवक	गोशालकमत	२४५	
अंधाडकधूरी	भोज्य	७१	आजीवणिक		९१	
अंधासण	पर्यंतः	७८	आजोग	आयोग	२०	
अंधिल	अम्ल	२२०	आज्जेयणीय	अध्ययनीय	१४७	
अंधिलक	भोज्य	१७९	आडवक	पक्षी	२३८	
अंधिलजवागू	भोज्य	१८१	आडविक		१५९	
अंधिलि	भोज्य	७१-१७९-२४६	आडा	पक्षी	६९-२२५	
अंसकूड	अङ्ग	७२	आणावचरणिण	स्थल-जलचर	२२७	
अंसकोवकरण		१३४	आणु(णु)क	लक्षण	१७३-१७४	
अंसपीडाणि	अङ्ग	११८	आणुतास्वेला ?		२४७	
अंसवीफाणिए	अङ्ग	९९	आणेयाणि		१२८	
	आ		आतवगिह	आसपगृह	१३६-१३८	
आहल	आविल	४	आतवितक	वस्त्र	१६३	
आडर	आतुर	१२	आतिअ[ति]	आदुदाति	१०७	
आडंइत	आकुञ्चित	१९८	आतिमंइति	आचिकिरसति	८४	
आपुसण	आवेशन	१३८	आतिमूलिकाणि		५८	
आभोग	आयोग	२०	आतिमूलीया		१२१-१२८	
आकारणपवत्तणा ?		४४	आतुरगिह	आतुरगृह	१३८	
आकासविषय		११९	आतुरजोगि		१३९	
आकासाणि		५८-११८-१२८	आतुरता		१३५	
आकुंडित	आकुञ्चित	११५	आतोअसइ	आतोघशब्द	१८८	
आकोइत	आकुञ्चित	१७१	आदंसग	आदत्ता-द्वण	१९३	
				आदंसगिह	१३६	
				आदाणणक्खत्त	२०९	
				आदित्तमंडल	११५	
				आदिपंडक	ननुसकविदोप	२२४
				आदेयाणि	१२८	
				आधामरिचिताय	अध्यात्मचिन्तया	५७
				आधायित	क्रिया.	२१५
				आधार	आहार	१७८
				आधारहता	आधारवित्वा	६७-८१
				आधाररु	आधारयेत्	११
				आधारणाय	आधारणायाः	७
				आधारणो अज्झाओ		७
				आधारतित्ता	आधार्य	८१
				आधारयित्	आधार्य	१८५
				आधारयित्ता	आधार्य	४०
				आधावितक	क्रिया.	१६६
				आधिपच	आधिपत्य	११२
				आधुत्	क्रिया.	८०
				आधोधिक	आधोऽधिक	९
				आपडित	जापतित	१७१
				आपंचमंडल		११६
				आपुणेय		१२४-१४९
				आपुरायण	गोत्र	१५०
				आपूपिक	कर्माजीविन्	१६०
				आपेलग	आपीड	२५९
				आपेलचिध	आपीडचिह्न	१४९
				आफकी	वृक्षजाति	७०
				आयदक	कर्णभाभू.	१६२
				आबंधण	क्रिया.	१९८
				आयाधिक		६१
				आभरणगत	वोहद्वकार	१७२
				आभरणजोगी		६५
				आभरणजोगी अज्झाय		१४०-१६२-१६३
				आभरणपिगत	कर्माजीविन्	१६०
				आभिजण		७४-७६-१०४
				आभिजोगिक	आभियोगिक	२६८
				आभिणिबोधिक	आभिनिबोधिक	९
				आभिप्यायिक		१५७
				आभियोगिक	देवता	२०५
				आमट्ट	आसुए	२१-२४-१११-१२८
				आममत्त	आममय	१९४

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
शामधिव	शामधित भोग्य २२०	शालिगित	क्रिया. ५१-१०४	शासंदी	शासन ७२
शामलक	फल ६४	शालिगितरत	१०३	शासाहव	शास्वादित १०७
शामली	वृक्षजाति ७०	शालिगियत्रिधि	९-१०	शासाति (लि)का	कृमि २२९
शामसत्री	शामुदाति १७०	शालिगियाणि चउद्भय	११-१३८	शासार ?	२००
शामसमाग	शामुदात् १४६	शालिगैतस्स	आलिङ्गैतस्स ५१	शासालक	शासनविधेय २६
शामसंत	शामुदान् ७६	शालीपणय	आदीपनक १६९-१६८	शासासन	शाशासन १४८
शामगिला	शामुद्वय १०३-१०७	शालीचणक	आदीपनक १९२-२५४	शासित	क्रिया. २४३
शामा[स]य	६-२०३	शालुक	भोग्य १८१	शासिलेखा	अश्लेषा नक्षत्र १५६
शामागुद्वय	७-११-२१-१३८	शालेख	शालेख्य ११६	शासेक	नपुंसकविधेय २२४
शामासनद्विरुच	५६	शालोटीवेलिडा	२४७	शाहाडक	उद्भिज्ज २२९
शामाय-भङ्ग-रुच	१३	शावगित	आवसिता १४३	आहार	५८-१०७-१२८
शामेडक	पुष्पापीडक ६४	शावरित	आवृत् २४१	आहारगत	दोहद्वयकार १७२
शामोमल	गोत्र १५०	शायलिका	कण्ठआभू. १६२	आहारजोणि	१४०
शामोमद्विपत्	शामरोपधिप्रास ८	शायलिक	२०९	आहारणीहार	५८-१०८-१२८
शायतणि	५९-१२५-१२९	शायतते	आपातयति ३६	आहारणीहारजोणि	१४०
शायमणी	शाचमनी ५५-७२-२१४	शायवह	उत्सव २२३	आहारतरकाणि	१२८
शायपमुद्रिया	५९	शाविक	वस्त्र १६३	आहारमाहार	१०८
शायरगट्टयाय	शादृशार्थतया १३०	शाविधिहिति	आश्रयस्थिति ८४	आहारसम्मति	१०७
शायराग	१५२-१६८	शावुजोनिय	१२४	आहाराहारा	५८
शायिक	श्राणिजवस्त्र २२१	शावुणेया	५८	आहारिपेक्षित	आहारिमिक्षित ३४
शायुदायि षाणि	५८	शावुपथगत	अप्यथगत २२२	आहितगि	कर्मांशीविन् १०१-१६०
शायुजोगीय	अप्योनिक १४०	शायक	आश्रय ४७	आर्हचति	क्रिया. ८३
शायुपाकारिक	शायुपागारिक १५९	शासति	आसत्रय २५१	आर्हच्छिति	क्रिया. ८४
शायुप्यमागनिरेम	१०३	शासणगत	दोहद्वयकार १७२	इ	इ
शायुप्यमागे वसमन्त्रप्यमागाणि	५७	शासणगिह	शासनगृह १३६-१३८	इ	पादरुचौ अप्ययम् ४
शायोग	२०	शास्यगिह	शासनगृह १३६-१३८	इ	भोग्य १८१
शासदृश्य	रित्तदभाभू. १६२	शासनाप्याय	१८	इ	रत १३४-२३२
शासामजोणि	१४०	शासनाप्याय	आयने १६	इ	इत्येय ८०
शासामराउक	कर्मांशीविन् ८९-१५९	शासनाप्याय	१५	इ	शासन ७२
शासामयाचन	कर्मांशीविन् १६०	शासनाप्याय	५१	इ	इष्टकानाकार १६१
शासामायन	कर्मांशीविन् १६०	शासनाप्याय	८१	इ	कर्मांशीविन् १६१
शासिदुक	९२	शासनाप्याय	१३८	इ	भोग्य ७१
शासिदुपडा	द्वेषा २०६	शासनाप्याय	१३	इ	गोत्र १५०
शासिधेय	आरोदर १३६	शासनाप्याय	१४	इ	इत्येय ७८
शासिदिक	आकृषक २२०	शासनाप्याय	५१	इ	क्रिया: ३५
शासिगणा	१३५	शासनाप्याय	१५	इ	क्रिया: १८
शासिगणार	१७७-१४५	शासनाप्याय	१५	इ	इमानि ५
शासिडा	सुदुग्ध्य १३०	शासनाप्याय	१५	इ	पुण्य ६३
शासिग	२१४	शासनाप्याय	१५	इ	१३४-१९०
शासिग	२१०	शासनाप्याय	१५	इ	वध ७१
शासिग	२१०	शासनाप्याय	१५	इ	१२८

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
इत्सराणि	१२८	उक्तासित	क्रिया. १७६-२१५	उट्टिच	क्रिया. १३३
इत्सज	ऐश्वर्य ६१	उकुञ्ज	उत्कुञ्ज १८४	उडुजोगि	१४०
इत्सरभूत	५८-११९	उकुट्ट	उत्कुट्ट ९३	उडुंवर	घृत्न ६३
इत्सरा	५८-११९	उकुट्ट	उत्कुट्ट १७०	उणामाफ	सिकक ६६
इत्सरियामास	२०१	उकुट्ट	धनि १७३	उणगत	उद्यत ३३-१२४
इत्सरौपनखर	११९	उकुडुक	उत्कुडुक ३७	उणगतजोगि	१४०
इत्सापंडक	नर्पुसकविदोप ७३-२२४	उकुलिगि	भाण्ड ७२	उणपता	५८
इंगालकारक	कर्माजीविन् ९२	उकूज	उत्कूज १५५	उणमंत	उद्यमत् ३३-१३५
इंगालकोट्टक	भङ्गारकोष्टक २५४	उकूणित	उत्कूणित १२३-१४८	उणरूय	१४२
इंगालछारिगा	भङ्गारभूति १०६	उकोस	धमि १७३	उणवाणिय	कर्माजीविन् १६०
इंगालवाणिय	कर्माजीविन् ९२	उकोस	धमी २२५	उणामित	क्रिया. १६८-१७०
इंगुणि (दि)तेल्ल	२३२	उकोसस	देवता ६९	उणिक	औणिक १६३
इंचका	मत्स्यजाति २२८	उनखणत	उरखनत् ३८	उणहणभि	उर्णनाभ ७०
इंदकाइया	छुदजन्तु २३८	उक्खलिका	उदूखलिका १९१	उणहा	५८
इंदकेउ	इन्द्रध्वज १०१	उक्खली	उदूखली ७२-१४२	उणहली	चतुष्पदा ६९
इंदगोपक	छुदजन्तु १७३-२२९	उक्खलममाण	उत्तममयव् ४२	उणिह	भोज्य १८१
इंदगोविका	खलचर बहुपदा २२७	उक्खित्त	उत्थित्त १७१	उणिहपुण्णामतेल्ल	२३२
इंदणाम	१०१	उक्खित्तुत्तिक	८१	उणहोलक	वृक्ष ६३
इंदपणु	२०६	उक्खुली	भाण्ड १९३	उततुंवरमूलीय १	९
इंदपय	इन्द्रध्वज २११	उखलिका	उदूखलिका २२१	उतु	श्रतु १९१
इंदमह	इन्द्रमह १०१	उग्गाहित	उद्गहीय १४८-१७१	उत्तमजोगि	१३९
इंदवइइ	इन्द्रवर्षाविन् १०१	उग्गाडित	उद्गाडित १४८	उत्तममज्झिमसाधारणाणि	९६
इंदिआली इंदिआलि	८	उच्चपातरास	२४९	उत्तमाणंतराणि	१२८
इंदीवर	पुण्य ६३-१७३	उच्चंपति	क्रिया. १०७	उत्तमणि वीसति	५७-९३
		उच्चारित	क्रिया. १३२-१७०	उत्तमामास	१४५-२०१
इंसाभिमारित	इंस्पदभिमारित २५	उच्छंदण	क्रिया. १९३	उत्तरजोगि	१३९
इंसिलपीलित	इंस्पसम्पीडित २२	उच्छाडित	अच्छाडित १०६	उत्तरदारिक	२०६
इंसुम्पट्ट	इंस्पदुम्पट्ट २२	उच्छुद्ध	उत्थित्त १७१	उत्तरपच्चरियम	५८
	उ	उच्छुरस	१८१	उत्तरपच्छिम	१११
उउपाण	उदुपाण १६७	उज्जवणिका	उच्चानिका २४९	उत्तरपुरथियम	५८
उकरालीसं	एकचत्वारिंशत् ११७	उज्जाणगिह	उच्चानगृह १७८	उत्तराणि	५८-११०
उकड्डा	उत्कृष्टा २४-३३	उज्जाणभोज	उच्चानभोज्य २५६	उत्तरिज	उत्तरिय ६४-१६४
उकट्टित्त	शोकार्तं १२१	उज्जालक	९१	उत्ता	उक्ता ३८-२३६
उकट्टुधोकट्ट	उत्कृष्टापकृष्ट ८६	उज्जालोहत्	अज्जालोहित ३४	उत्तागपस्सिक	उत्तानवार्षिक २४९
उकट्टुति	उत्कर्षति ८०	उज्जकाणि	५९-१२८	उत्ताणरत्	१८४
उकरिसाअपरिसा	उत्कृष्ठांपकपां १०	उज्जकामास	१३०-१६९	उत्ताणसेज	उत्तानशब्दा २४९
उकस्स	उत्कर्ष १५	उज्जंत	उज्जत् १४८	उत्ताणाणि	१२८
उकंठका	उत्कण्ठा १३६	उज्जतीयति	उत्क्षीयते २५०	उत्ताणुम्मव्यकाणि	५९-१२५
उकंदित	क्रिया. १२८	उट्टपाळ	उट्टपाल कर्माजीविन् १६०	उत्तममज्झिमसाधारणाणि	५७
उकापात	उत्कापात २०६	उट्टिका	भाण्ड ७२-२१४	उत्थत	क्रिया. १४८
उकारिका	भोज्य १८२	उट्टितपट्ट	२१४	उत्थित	क्रिया. १६८-१७०

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
उदकचर	१३३	उपजुलणरूपत	२०९	उभमशिताभिन्नु	१११
उदकचास	२२२	उपगृहीत	क्रिया. १६८	उभमशित्ण	उभमज्य २३९
उदकजला	उदकयात्रा ८-९	उपगृहण	उपग्रहण ११८	उभमट्ट	उभमृष्ट २१
उदकवदुकि	कर्माजीविन् १६०	उपचिक	श्रीन्द्रियजन्तु २६७	उभमट्टाणि	९०-१२८
उदकाय	मत्स्यजाति २२८	उपगत	क्रिया. १६८-१७०	उभमस्थित	उभमस्थित १४८
उदकुण्डिका	उदकोपिका भोज्य ७१	उपगन्ध	उपनद १६८-१७०	उभमर	दे० देहली २९
उदफेचर	८०	उपगण्य	१४३	उभमहित	उभमस्थित १४८
उदगगिह	उदकगृह १३६	उपगणयण	उत्सव ९७	उभमाण	लक्षण १०३
उदगचर	१८७	उपगामित	क्रिया. १६८-१७०	उभमाणसंपण्ण	१०३
उदगपरणालि	उदकप्रणाली २४३	उपदासित	आलित्ति ? १६८-१७०	उभमाणहीण	१०३
उदगवहरी	वृक्षजाति ७०	उपमान्नीय	१५३	उभमुक्क	उभमुक्क १४८
उदग्मा	उदग्र ९८	उपपत्तीविजयोऽग्रसायो	२६९	उभरुऊ	वर्म २५९
उदत्त	१२१-१४०	उपमाणक	९८	उभणा	पुष्प ६४
उदचदेसे	२९	उपरिगह	उपरिगृह ३२	उभालक	धान्य ६६
उदपाग	१५१	उपरिद्रिमज्जोणि	उपरिमयोनि १४०	उभरणी	कच्छ १४२
उदलालद	देवता २०५	उपलगिह	उपलगृह १३७	उभरूपित	क्रिया. १४८
उदाहित	उदाहृत ४८	उपलद	उपलक्ष्य १६८	उभरहित	उल्लिखित १४८
उदुकालदास	ऋतुकालभास २०१	उपलोलित	क्रिया. १६८-१७०	उभ्रापक	कर्माजीविन् ९०
उदुणीय	ऋतुमत्या १८५	उपयति	गोत्र १५०	उभ्रालित	क्रिया. १४८
उदुपाण	१४५-२२२-२३४	उपवच	उपवृत्त १६८-१७०	उभ्रुत्त	उल्लुत्त ११४
उदुसोभा	ऋतुसोभा २५७	उपवपित ?	क्रिया. १६८	उभ्रुपूर्वित	भोज्य ७१
उदिच	औदीच्य १०५	उपविट्ट	उपविष्ट १७०	उभ्रुइत	उल्लोमित १६८
उदीरणा	११	उपविट्टरत	१८४	उभ्रुएत	उल्लोकथत् ४२
उदीपित	उद्भुत १४८	उपविट्टविधित्तसेस	५९	उभ्रुकित	क्रिया. १००
उद्वत	उद्भुत १४८	उपसक्रथिय	उपसत्यस्त १६	उभ्रुकेति	उल्लोकथति १७९
उद्वुयामास	२००	उपसरित	क्रिया. १७०	उभ्रुगित	क्रिया. ४३-१३०-१७६-२०६-२१५
उद्वू	उद्वू २५०	उपसारित	क्रिया. १६८-१७०	उभ्रुगिक	भोज्य १८२
उदभागा	५८	उपसेक	१७९-२२०	उभ्रुमित	क्रिया. १९७
उदमुष्टोमित	ऊर्ध्वोहोमित ३४	उपाणह	उपाणत् १४२-१८३	उभ्रुहित	क्रिया. १०६
उदलक ?	११६	उपपल	उपपल १५	उभ्रुकट्टिहि	उपकृष्टे १७
उद्ववित ?	क्रिया. १४७	उपपलगिह	उपपलगृह १३६	उभ्रुकसित	उपकृष्ट १९८
उद्वभागामास	२०१	उपपाडक	श्रीन्द्रियजन्तु २६७	उभ्रुकसित	उपकृष्टलित २५१
उद्विततर	१००	उप्यात अग्रसाय	२१०	उभ्रुकसित	उपकृष्टलित २५१
उदीरमाण	उद्भियमाण १९८	उप्यातक	श्रीन्द्रियजन्तु २२९-२६७	उभ्रुगृह	क्रिया. ८६
उद्वुजमाण	उद्वयमान १४७	उप्यातिका	मत्स्यजाति २२८	उभ्रुगृहणाणि	५८
उद्वुमात	परिपुण ११४	उप्युत	उत्प्लुत ३७	उभ्रुजिब्वा	क्रिया. १६९
उपह	पक्षिनाम ६९	उप्युमुभंड	माण्ड १९३	उभ्रुजालगिह	उपस्थानजालगृह १३६
उपकहृत	उपकर्मत् १४४	उभयमया	८	उभ्रुजाल	उपस्थूल २०८
उपकहृती	उपकर्मन्ती १६९	उभयोसंबिद्वरत	१८४	उभ्रुजाल	उपनामयत् ३७
उपकहृत्त	१६८	उभिलक्षणपलपनाणगकुम्बट्ट ?	१९३	उभ्रुजाल	९७
उपकहृत्ता	उपकृष्य १४५	उभमजित	उभमजित २५-१४८-२०६	उभ्रुजाल	१२२
				उभ्रुजाल	उपस्थ ११४

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
उपयूलाणि	५८-११४-१२८	उत्सवभोग्य	उत्सवभोजन १८०	ओकुंभ ?	२४३
उपदासिताणि	आलिङ्गितानि १३८	उत्सव	उत्सव २२३	ओकृण्वत्	भवकृण्वत् ४२
उपहित ?	क्रिया. १४८	उत्सात	उत्सात १५१	ओगूढ	भवगूढ ८६
उपबुधुत	उपद्रुत ५८-१२२	उत्सारित	उत्सारित १५५	ओघट्ट	भवघट्ट १४७
उपबुद्धामास	२०१	उत्साहिया	उच्छाखिका २२२	ओघट्टित	भवघट्टित १४८
उपबुधुतो अग्न्यायो	२०२-२०४	उत्सित	उच्छ्रित १३२-१७०	ओचकपाति ?	क्रिया. ८३
उपघाराणि ?	६८	उत्सिघण	आघ्राण १९३	ओचूलक	शीर्षंआभू. १६२
उपघाराण्	उपघारायेत् १०७	उत्सिष्य	आघ्रात १४८-१८६	ओद्युद्ध	भवक्षिप्त १६९
उपधि	उपधि-माया २६५	उत्सीस	उच्छीर्षं ६४	ओहीग	अपक्षीग ११४
उपधरिस्ते	उपस्पृशति १०७	उंगुणी	वृक्षजाति ७०	ओड्ड	कर्माजीविन् १६१
उपलक्षये	उपलक्षयेत् १९७	उंठणाही	क्षुद्रजन्तु २२९	ओणत	अवनत ३३-४२-१६९-१७१
उपलमिह	उपलगृह १३७	ऊरुजालक	ऊ. ६५	ओणमंत	अवनमत् ४२-१३५
उपलद्	उपलब्ध १७०	ऊहस्वित	क्रिया. १०६	ओणामित	अवनामित १६९-१७१-१८४
उपलेवमंडल	११६	ऊहस्वित	१०६	ओणिपीठित	अवनिपीठित १४८
उपवत्तिविजयो अग्न्यायो	२६४	ऊरुरिकमुत्त	ऊ. ११२	ओतारिभ	अवतारित १६९
उपवसित	उपोषित १९३	एकणासा	देवता २०५	ओतारित	" १७१
उपविद्विविहि	उपविष्टविधि ९-१०-११-१३	एकभस्स	एकभाव्य-एकवचन १५१	ओतिण्ण	अवतीर्ण ३३-१७१
उपवित्त	१५	एकभेद	गोत्र १५०	ओतिण्णोतारित	क्रिया. १११
उपवुत्त	उपवुत्त १००	एकाणसा	देवता २२३	ओदणपिंठी	भोज्य ७१
उपवत्तं	उपप्यक्कमाण ३७-१३५	एकायलिका	आभू. ७१	ओदामिक	कर्माजीविन् १६०
उपवत्तिअ	उपप्यक्तित १६	एककालि	५९	ओदावसिह	९१
उपवत्तिअग्निह्	उपप्यक्तिते १७	एकक्रमनस्कता	एकक्रमनस्कता ३५	ओदावति	अवदावति ८०
उपवत्तिअ	उपप्यक्तित १८४-१९३	एकवचन	एकवचन १५७	ओधिगिह	उपधिगृह १३६
उपवहित	उपहित २०२	एकसिरीय	एकसिरीय १४१	ओधिजिण	अवधिजिन १
उपाताधुत्तमार्णि	१२८	एकपाविट्टरत्त	१८४	ओधुत्त	अवधुत्त ८०-१४८
उपादिण्ण	उपादत्त २१७	एकैक	एकैक १२६	ओपणिव्वय	क्रिया. १९५
उपेद्रे	उपविष्ट १८४	एकपादद्विभ	एकपादद्विभ ३३	ओपविका	क्षुद्रजन्तु २२९
उपेसंत	उपविशात् १३५	एण	एतं ५६-११४	ओपुक्क	८१
उपेष्टण	उद्धत्तं १९३	एणाय	एतया २३६	ओपेसेजिक	कर्माजीविन् १६०
उच्चरक	अपवरक १९५-२२०	एतेसं	एतेपाम् १४५	ओपाधित	अवपाधित १४३
उच्चरित	उद्धरित १११	एतेसां	एतेपाम् ७३-१४१	ओम	अवम ३३
उच्चलित	उद्धलित १०६	एतरु	एतेरु २३३	ओमजित	अपमजित १२०-२१९
उच्चल्लेत्त	उद्धलत् ३८	एतुय	" २२२	ओमत्थयित	१०९
उच्चात्	उद्धत्त १२२	एतुय	" ५-३३	ओमत्थित	अधोमुत्तीकृत १७१-२१५
उच्चैल्लित	उद्धैल्लित १०८	एतुय	एतुयकल्याण ८३	ओमहित	अवमहित १६९
उच्चैदासित	उद्धैदासिक १४८	ओकट्ट	अवकट्ट १६	ओमसुत्त	अवमसुत्त १६३
उत्सणीतेत्त	२३३	ओकट्टित	" १७१-१९५	ओमसुत्त	अवमसुत्त १६२
उत्सपतेत्त	२३२	ओकट्टित	" १६९	ओमुत्त	अवमुत्त १६९-१७१
उत्समक	आभू. ६४	ओकासक	कर्गआभू. १६२	ओमुत्त	अवमुत्त १६९-१७१
उत्सिण	उष्ण १२४	ओकासक	१६०	ओमुत्त	अवमुत्त ३८
उत्सभो	उत्सवः ९८	ओकासक	१६०	ओमुत्त	अवमुत्त १६१
उत्सणिक्कामत्त	कर्माजीविन् १६०	ओकासक	१६०	ओमुत्त	अवमुत्त १६१

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
ओयवति	साधयति २४२	ओहसित	उपहसित ८१-२१५	कडिकतोरण	कटिकातोरण १३६
ओरदिभक	कर्माजीविन् १६१	ओहास	उपहास ७	कडिगेज्जक	कटिमाहाक २४९
ओराणी	आभू. ७१	ओहिजंत	अपजिहिय्व् ८१	कडित	वटित-कटपुक्त ३०
ओरिह	अवरिक १४८	ओहित	अपहत अवहित ३४	कडीगदितरत	१८४
ओरुज्ज	अनरुह ३९	ओहीण	अपहीन ४६	कडुकालमण्ड	२३७
ओरुमंत	अवरोहति ससमी एकं ३३		क	कडुमाय	चतुष्पद् ६२
ओरुड	अवरुड १४८	ककाडिका	कृकाटिका ६६-११२-१२१	कडुफोका	वृक्षजाति ७०
ओरेचित	अपरेचित १४८	ककितजगण	गोत्र १५०	कडित	कृष्ट १४८
ओलकित	अवलकित ? १४८	ककरी	पक्षी ? २३९	कड	गोत्र १५०
ओलमित ?	क्रिया. २३५	ककुलुंडि	भाण्ड २१४	कडिणधातुगत	१३३
ओल्लवित	अवल्लमित १४८	ककडी	मत्स्यविशेष १८३	कडलीकृत ?	२५९
ओलोप्त	अनलोकयत् ४२	ककय	गुडविशेष १८२	कडवीर	गुल्मजाति ६३
ओलोकित	अवलोकित १३०-१७१	ककरापिंडग	भोज्य २४६	कडनीरका	कनीनिके ९३-१२५
ओलोलित	क्रिया. ८१-१६९	ककुसु	कुकुस १०६	कडिणकार	कर्णिकार ९०
ओवट्टित	अपवर्तित १६९-१७१	ककसड	ककंदाः १८९	कडिण्डिका	कनीनिका १२५
ओवत्त	अपवृत्त १६९-१७१	ककखडाल	" ३३	कडिण्डिका	अङ्ग १३४
ओवमित	अवपतित २५८	ककखारक-ग	फल ६४-२३८	कडिण	गोत्र १२५-१५०
ओवात	अवपात १४९-२४९	ककखारणी	वृक्षजाति ७०	कडिणकोवग	कर्णभाभू. ६४
ओवातसामाणि	५७	ककखरणी	गोत्र १५०	कडिणलील	कर्णभाभू. ६५
ओवाताणि	५५-९०	ककखि	वृक्षि १५४	कडिणगूचक कर्णगूचक-कर्णमलः	१५५-१७८
ओवातिक	परिसंजाति ६९	ककछमक	स्थल-जलचर २२७	कडिणचूलिगा	कर्णचूलिका ६६
ओवातिकका	अनपातिका ६८	ककछममगर	मत्स्यजाति २२८	कडिणतिल	धान्य १६४
ओवाद्कर	अवपातकर ४	ककछा	कक्षा २०१	कडिणपालिक	कर्णभाभू. ११६
ओवारि	क्रिया. १६५	ककजरी	सर्परीवृक्ष ७०	कडिणपालीक	कर्णपाली ६६-१२४-१४१
ओवारित	अपवारित १४८	ककजोपक	कापोपग २५४	कडिणपीलक	कर्णभाभू. ६५-१८३
ओवालित	क्रिया. १४८	ककडुतरी	वख ७१	कडिणपुत्तक	अङ्ग ९३
ओवास	कर्णभाभू. १८३	ककट्ट	काष्ठ ७५	कडिणपूरक	कर्णभाभू. ६५-१८३
ओवुलीक	चतुष्पद् ६९	ककट्ट	भाभू. ६५	कडिणरालक	धान्य १६४
ओवेदग	आभू. ६५	ककट्ट	जलवाहन १६६	कडिणलोहक	कर्णभाभू. ६५
ओवेदिय	अपवेदित २१६	ककट्टसोड	दे० काष्ठसोड १५	कडिणलथक	कर्णभाभू. ११६
ओसपगिह	औपघपृह १३७	ककट्टमय	भाभू. १६२	कडिणवह्रीका	कर्णभाभू. ७१
ओसयजवाग्	भोज्य १८१	ककट्टमय पीडे	काष्ठमय पीठम् २६	कडिणवीही	धान्य १६४
ओसपीपडिपोगल	१४३	ककट्टसुह	वाहन १९३	कडिणसकल्ल	अङ्ग १५५
ओसर	१३६	ककट्टहारक	काष्ठहारक ८९	कडिणगिन्वहण	उत्सव १४३-१४४
ओसरक	अपसरक १३७	ककट्टसालुक (कंठमालक)	रोग २०३	कडिणतिनास	१८६
ओसरित	अपसरत १६९	ककट्टाधिकत	कर्माजीविन् १६०	कडिणतिलगा	तिलकप्रकार २४६
ओमारित	क्रिया. १३०-१४८-१७१	ककट्टवट्टक	कण्डभाभू. १६३	कडिणपावदिण	कन्यापावदान ३१
ओसीसर्जमिय	अवर्द्धापैतृमिमित ४७	ककट्ट-ग	सहभाभू. ६४-६५-१६३	कडिणयावदिण	उत्सव १४४
ओमुद्द	क्रिया १४८-१९७	ककट्टजरी	कडुल्लिका ७२	कडिणवातगो अज्जायो	१७५-१७६
ओसूतक	अवसुप्तक २४९	ककट्टमण्ड	श्रीमिदपजम् २६	कडिणका	कर्णभाभू. ७१
ओहन	उपहत १४८	ककट्टसकरा	वर्णशुक्तिका १०४-२३३	कडिणकार	वृक्ष ६३
ओहयहयिय	अपहृहसित ३५	ककट्टाइक	भाण्ड २१४	कडिणवहीचंय ?	५
		कडिटपकणि	कटीभाभू. १६३		

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
कण्णुपारिका	अङ्ग १२३	कम्मजोगी अङ्गाय	१५९-१६१	कसक	उद्दिञ्ज २२९
कण्णुपलक	कणीशाम्. ११६	कम्मणवखत्त	२०९	कसकी	वृक्षजाति ७०
कण्णुपीलक	कणीशाम्. १६२	कम्मण्ण ?	५	कसरि	भोज्य ७१-१७९
कण्णेपूरक	कणीशाम्. १६२	कम्मदार	१४६	कसिगोरकख	कर्माजीविन् १५९-१८५
कण्णेयाणि	५९-१२८	कम्मासवाणिज	कर्माजीविन् १६०	कसित	गोत्र १४९
कण्ह	वर्ण १०४	कम्मिक	कर्मिक ६१	कसेरक	भोज्य १८१
कण्हकराल ?	९२	कम्मियि	कस्सिश्चित ८५	कसेरक	फलजाति ७०
कण्हनीडिका	धुद्दजन्तु २२९	कन्दिहियि	” १७	कस्स ?	गोत्र ११४
कण्हगुलिका	उद्दिञ्ज २२९	कयगिहक	कृत्राहिक २४७	कस्सव	गोत्र १५०
कण्हपीलपटीमागा	१२८	कयर	पक्षिनाम ६२	कस्सामो	क्रक्षयामः २३६
कण्हतिल	रोग २०३	कयार	कचवर १०६	कंक	रोग २०३
कण्हतुलसी	वनस्पति ९२	कर	वृक्ष ६३	कंरुण	करशाम्. ६५
कण्हपडीमागे	१०४	करकी	भाण्ड ७२	कंकसालाय	कङ्कशालायाम् १३६-१३८
कण्हपिपीलिका	धुद्दजन्तु २२९	करणमंडल	५८-११६	कंगुका	पुष्प ७०
कण्हभोयक ?	९२	करणसालाय	करणशालायाम् १३८	कंगू	धान्य १६४
कण्हलुवत्त	१२८	करणोवसंहिता	१२८	कंगूक	वृक्षजाति ७०
कण्हवण्णपडिमागा	५७	करमंद	फल ६४-२३१	कंचणिका	भाण्ड ७२
कण्हविचिडका	धुद्दजन्तु २२९	करल	रोग २०३	कंची	कटीशाम्. ७१
कण्हाणि	५७-९२-१२८	करजतेह	२३२	कंचीकलापक	कटीशाम्. ६५-१६३
कण्हामास	१३०	करंडग	करणक २२१	कंचुक	वख ६४
कण्हाल ?	९२	करिण्हुका	उद्दिञ्ज २२९	कंचुकमालिका	शाम्. ७१
कण्हेरी	चतुस्पदा ६९	करिलेग	फल २३८	कंचकालक	कण्टकमय ३३
कतमर्सिस	कतमस्याम् २६४	करीस	करीप १०६-१४२	कंचकीरुख	कण्टकियुल २७
कतलिछारिका ?	२५५	करेणूयक	वख १६४	कंटासक	फल ६४
कतंब	कदम्बवृक्ष ६३	करोटक	भाण्ड ६५	कंटिका	शाम्. ७१
कतिर्मि	कतमाम् १०९	करोडी	” ७२	कंटेण	चतुस्पदा ६२
कत्तरिका	कत्तरिका १९१	कलम	वाल ९७	कंटेयुण	कण्टसूत्र ? ६४-२५८
कत्थलायण	गोत्र १५०	कलया	गोत्र १५०	कंडरा	अङ्ग ६६-११९
कदमग	ख्यल जलचर २२७	कलस	भाण्ड ६५	कंडूसी	गोत्र १५०
कधा	कथा ४०	कलहिमी	वृक्ष ? २३८	कंडे	जलवाहन १६६
कधामगक्षक	पक्षिनाम ६२	कलाय	धान्य १६४	कंठिकवाहक	७९
कपिट्ट	फल २३९	कलायभजिय	भोज्य १८२	कंदूल	पुष्प ६३
कपियतेह	२३२	कलायस	फल २३१	कंदूलि	वृक्ष २४३
कपिलक	६२	कलिमाजक	फल ६४	कंदित	क्रन्दित ४६-१६२
कप्प	गोत्र १५०	कहाडक	मत्स्यजाति २२८	कंदियविधि	९-१०
कप्पासिक	वख २२१-२३२	कवचिका	भाण्ड ७२	कंदूग	शाम्. ६५
कप्पासी	करासी ७०	कवल	चतुस्पदा ६२	कंबल	वख १७
कप्पोपक	कल्पोपग ६२	कवली	भाण्ड ७२	कंबलिक	” २२०
कमेद्दका	कृमिजाति ७०	कविट्ट	वृक्ष ६३	कंमकारक	कर्माजीविन् १६०-१६१
कर्मद्व	भाजन १०१	कर्मिजल	पक्षी ६२	कंसगिह	कांस्यगृह १३६
कम्मकठ	कर्मकठ २५६	कमी	पक्षी १९५	कंसपत्ति	भाण्ड ७२
कम्मगिह	कर्मगृह १३६-१३७	कम्पुड ?	८१		

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
कंपलोद्	धातु २३३	काचकर	काव्यकर ९१	कुटित	क्रिया १५५
कंसिक	कॉस्थिक ९०	कास	१७७	कुट्टुडदी	कोष्ठुडदी ८
काकमनुक	पक्षी २२५	कासक	कर्पक २४९	कुठारिका	भाष्य ७२
काकवाळ ?	१४२	कासमाण	१३५	कुडज	वृक्ष ६३
काकंडकवण	१०५	कासित	क्रिया १३०-१४८-१६८-१८४	कुडिला	५९-१२४-१२९
काकाक	पक्षी १४५	कासंत	काममान ३७	कुडुकालक	मत्स्यजाति २२८
काकुएदी	गोत्र १५०	काहापण	सिक्क ६६	कुडुंबक	२४३
काकुंयिका	उद्भिज २२९	काहापण	,, १३४-१८९	कुडुवापरमय	कुडुवापश्रय ३०
काणदिट्टि	कृमिजाति ७०	काज्जर	भाण्ड २२१	कुडारक	भाण्ड ६५
काणवि	वृक्षजाति ७०	कादित्त	धींसंत १४२	कुणिणय	रोग २०३
कांतंथ	कादंथपक्षी ६२-१४५-२२५	काडिका	दे० खडक्का २७	कुतिपि	उद्भिज २२९
कापुर	वरुसमान १९६	काडिसा	रोग २०३	कुडु(ड)क	कुडुक १३५
काप्यापण	गोत्र १५०	काडिभक	,, २०३	कुडिभ	क्रिया, १५७
कामजोणी	५३-५५-१३९	काडिहि	कृमिजाति ७०	कुडुलक	पक्षी ६२
कामहार	१४४	काडिबुद्धि	कृतबुद्धि १२२	कुडुता	शुद्धता १३५
कामळ	रोग २०३	काडियिरसं	कीर्त्तियिच्यामि ३४	कुडुमंड	फल ६४
कामसद्य	कामसत्य ९	काडिपिछक	कृमि ६६	कुडुमिषी	पुण्य ७०
कायतेगिच्छक	कर्मांजीविन् १६१	काडिपिठिका	कृमिजाति ७०	कुडुमारीळा	मत्स्यजाति २२८
कायवेतो	११०-१२८	काडिमिवा	,, २२९	कुडुमासपिण्डी	वृक्षमापपिण्डी ७१
काया	५८	काडिमिमड लिकारिका	११६	कुडुपक	भाभू, ६४
कायस्सिनि	कारयिव्यति १७५	काडिकिलायिभ	क्रिया २०६	कुडुपक	वृक्ष ६३
कायिमाडिका	वृक्षजाति ७०	काडिलय	रोग २०३	कुडुलि ?	२३७
काडककम्म	कर्मांजीविन् १५५	काडिट्टुपरामास	१८८	कुडुडूवा	पुण्य ७०
काडकागोणि	१३९	काडिट्टा	५९-१२६-१२९	कुडुलमरतत्त	२०९
काडगगिह	काडकगृह २५८	काडिट्टामाम	२०१	कुडुलथ	धान्य १६४
काडगिणी	कर्मांजीविनी ६८	काडिण्ण	द्विष १०६	कुडुलथदूर	भोग्य ६४
काडदभ-थ	पक्षी ६२-२२५	काडिलिम	स्त्रीय ७३	कुडुल	पक्षिनाम ६२
काडक	पक्षी ६८-२३८	काडिलेसित	हेसित १४८	कुडुलम	क्षुद्रजन्तु २३८
काडककाटिका	१५३	काडिलेज	शलाहा १३४-१९०	कुडुलमम	१८३
काडकवारासणी	भाभू, १६२	काडिलेहका	कृमि ७२-२२९	कुडुलीपंधक	भाभू, १८३
काडकमाप	२६०-२६२	काडिलित	१९०	कुडुलीर	मत्स्यजाति ६३
काडकप्यभिमाग	२६०	काडिलिमा	५८-१२८	कुडुलीरा	सर्पिणी ६९
काडकगृह	धातु २३३	काडिलिस	वृत्त ११४	कुडुलीपकुळ	२०९
काडकगोहमय	धातुयथ २२१	काडिलिक	श्रीतक १६६	कुडुलिक	१५३
"	भाभू, १६२	काडिलिणक	वीरवक १४५	कुडुलगत	२२०
काडकग्याम	काडकग्याम ६८	काडिलिसुग	वृक्ष ६३	कुडुलीक	कुडुलीक-कर्मांजीविन् १६०
काडकग्याम	भाण्ड ७२	काडिलिसदल	श्रद्ध १२३	कुडुलीकी	सुरा २२१
काडकग्याम	मत्स्यजाति ६३	काडिलिसणारे ?	१३०	कुडुलीमाटिका	१४२
काडकग्यामपिरी ?	५	काडिलिसुद	श्रद्ध ११४	कुडुलीम	धान्य १६४
काडिका	वृक्षजाति ७०	काडिलिसुकिगा	फल ७१	कुडुलीमनेत	२३२
काडिकिग	पत्र २३९	काडिलिसपारक	वृक्षिपाक ७९	कुडुलीम	क्रिया, १६९
काडिकिनी	वृक्षजाति ७०	काडिलिसोकि ?	२३९	कुडुलीम	पुण्यजाति ६३
काडिकिपय्यर	२३९	काडिलिसपरा	कृमिगा ५	कुडुलीम	भाण्ड ६५

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र			
कुंडमालिका	आभू.	७१	कोटिंब	जलवाहन	१६६	खचित	धातुवख	२३४
कुंडल	कर्म	११, ६४-१६२	कोट्टक	कोष्टक	१३६-१३७	खजकारक	कर्माजीविन्	१६०
कुंड	गोत्र	१४९	कोट्टाकार	कोष्टागार	१३८	खजगुल	गुलविशेष	१८१
कुंडिका		१९१	कोट्टाकारिक	कोष्टागारिक	१५९	खजगत	दोहदमकार	१७२
कुंयू	धुद्रजन्तु	२२९	कोट्टागार	कोष्टागार	२२२	खजापज	खाद्यपेय	१०७
कुंभ	जलवाहन	१६६	कोडित	क्रिया.	२१५	खजूर	फल	६४-२३८
कुंभकार	कर्माजीविन्	१६०	कोडिलकखणक	भासन	२३०	खटा	रुटा	१०-२६
कुंभकारिक	,	१६१	कोडिवग्ने		५९	खडुग	मौक्तिककटक	६४-११६
कुंभकंडका	फल	२३२	कोडी		१२७	खडुभायणगत		२२२
कुंभ	गोत्र	१५०	कोदिक	कुडरोग	२०३	खणता	क्षणदा	२४५
कुंभिकारीभा	धुद्रजंतु	२३८	कोतवक	ख	१६३	खणंत	खनत्	३८
कुंभीकपंडक		७३	को-यकापल	भाजन	२७	खत्तपक	क्षत्रपक सिकक	६६
कुचफणलीखावण ?		१८३	कोयलगा		८५	खत्तवंभ		१०२
कृत्तिय	भोज्य	२२०	कोद्व	घान्य	१६४	खत्तवेस्ताणि		१०२-१२८
कृडणागक		१३०	कोमारभिच्चा	कर्माजीविन्	१६१	खत्तसुद		१०२-१०३
कृडपुटी	पक्षिणी	६९	कोरेंटक	वर्ण	१०५-१४१	खत्तक		१०२
कृडमासक		१३०	कोरेंटयणपडिभागा		५८	खत्तिकोसण्ण		१६१
कृडलेख		१३०	कोलक	फल	२३१	खत्तिय	पादभाभू.	१८३
कृमंड	फल	२३१	कोलय	घान्य	२२०	खत्तियजोगि		१३९
कृमंडगा	फल	२३९	कोलफल		२३८	खत्तियज्जोसिय		१६१
कृमंडी	कुम्भाण्डी	७०	कोलिक	कर्माजीविन्	१६१	खत्तियधम्मक	पादभाभू.	६५-१६३
कृरयेला		२४७	कोलिक	वृक्ष	६३	खत्तियवेस्सेज्जाणि		५७-१०२
कृवित	क्रिया.	१५५-२१४	"	धुद्रजन्तु	२३७	खत्तियज्जाणि		५७
कृवा	रज्जुविशेष	११५	कोविडाल	वृक्ष	६३	खत्तियाणि		१०१
कृज्जर	आभू.	६५	कोविराल	"	६३	खत्तिर	वृक्ष	६३
कृगिक ?		६१	कोसक	चतुष्पद		खत्तियाण ?		१०६
कृवमी	वृक्षजाति	७०	कोसागिह	कोदापृह	१३८	खत्तुट ?		१०६
कृवसक	फल	२३८	कोसज्जापायका	कर्माजीविन्	१६१	खरइ		२०३
कृविष	वेचिच	२३६	कोसत्रकत्त	"	१६०	खराइ	५९-१२४-१२९	६४
कृला	माण्ड	३०-७२	कोसंब	वृक्ष	६३	खरलक		६४
कृलास	पर्यंत	७८	कोसिक	गोत्र	१४९	खरलणगिह		१३६
कृरनिमुचो	क्रियकृत्वः	१८६	कोमिबलगत		२१८	खरलित	खरलित	१४८
कृम	कृश	३१	कोसेज्जक	प्राणिजख	११३-२२१	खरलुक	गुल्लमणियन्ध	११४
कृमणिमज्जाण	वेदानिमोचन	१४८	कोसेज्जिका	ख	७१	खजग	खजग	९२
कृममोडि	वेदानमोडि	१४६	कोसेयपारम	"	७१	खजसीम	अद्र	१५३
कृमयाणिय	वेदानवणिग्	६७	कोसीधण्ण	१६४-१७८		खजिन	दिया	१४८
कृषठ	गोत्र	१४९	कोटक		१०६	खजि	देवता	२०४
कृषक	पुण्य	६३	कोटा	गोत्र	१४९	खज-विवाह	खजधावार	२५८
कृशिव	मौक्तिकविशेष	१४६				खजधारा	खज्जाप्रथय	२७
कृशकयाम	वृक्ष ?	२३८				खज		६७
कृशक	कर्माजीविन्	१६०	खद्वत्	खादित	८१	खज	खादित	१०७
कृशिव	क्रिया	१९४-२०३-२३९	खईमा	क्षयिच्चा	१८	खजि	खादित	१०७
कृशिम	रापन	६५	खपाणय	गोत्र	१५०	खजि	खजुयदा	६९

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
गारमगी	रत्न १९४-२१५	ग	गहेसुणं	गृहीत्वा	३९
गारलोह	घातु १३३	गजाधिपति	कर्माजीविन् १६०	गंगावतन	भोज्य ? २४६
गारवट्टिम	भोज्य १८२	गमित	क्रिया १६८	गंडक	कर्माजीविन् १६१
गालक	पशु २२७	गड्ढिक ?	६२	गंडसेल	गण्डशैल ७८
गाहिनि	खादपिप्यति ८४	गणक	कर्माजीविन् १६०	गंडीपाद	रोग २०३
गिहायत्र	गोत्र १५०	गणिकाखंसक	" १६०	गंडीवेला	२४७
गिप्यकार	क्षिप्रकार ४	गणितापटपणक ?	९७	गंडूपक	भामू. ६५
गिरिगिह	पादभामू. ७१-१६३	गणस्सरिक	गणेशरिक १२३	गंडूपक	कृमि २२९
गिरिगिमहुरपोस	ध्वनि १७३	गतवालुगवण्णरडिभारा	गजतालु. ५८	गंडूपयक	जडाभामू. १६३
गिमिन	क्रिया. १४८	गतयय	गतवयः १००	गंदित	क्रिया १४८
शीणवंस	शीणवंस १००	गति	लक्षण १७३	गंधगत	१८८
शीरपक	सृष्टिका २३३	गद्	पक्षी २३९	गंधजोणी	१४०
शीरपादप	शीरपादप ३०	गद्गोय	देवता २०४	गंधविसारद्	ग्रन्थविसारद् ४
शीररुग्ण	शीररुग्ण २७	गदम	गोत्र १५०	गंधिक	कर्माजीविन् १६०
शीरमित्रय	" ५	गदमकप्पमाण	मत्स्यजाति २२८	गंधिकनायक	" १६०
शीरस्व	क्षीराश्रवणविधि ८	गदमग	गुण्य ६३	गंधिय	५८-१२३-१२८
शीरिगिगिरण्डदुंबरिगिभा	८	गदमगिह	गर्भसूद् १३६	गंभीरा	५८-१२४-१२९
सुजंग	कुब्जाङ्ग ११७	गम्भ	ग्राम्य १७९	गागरक	मत्स्यजाति ६३
सुद्वि	खण्डित ११५	गम्भारण्णा	ग्राम्यारण्याः १८८	गादलीण	८७
सुद्वुक	बाल १६९	गम्भी ?	६	गादोपगूह	८७
सुद्वुग	हृष्टभामू. ६५	गयगिह	गजगूह १३६	गाणक	गान ९१
सुद्वुमिरिमिच	सुद्वुमिरिमिच १६७	गयगोकण्ण	पशु २२७	गाधमक	मत्स्यजाति ६३
सुद्वुक्रमत्त	सुद्वुक्रमत्त १६८	गयतालुक्कवण्ण	१०५	गामणसरत्त	२०९
सुद्वुकामु रज्जामु	२१४	गयवारी	गजवारी १३६-१३७	गालित	त्रिया. १४८
सुधित	सुधित १३०-१४८-२१५	गयमालाय	गजमालायाम् १३८	गामिहिते	गास्यति ८४
सुण	भङ्ग ११९	गयाधियक्ख	गजाप्यक्ष १५९	गितकारि	गीतकार ९१
सुउक	कर्माजीविन् १६०	गरुलक	भामू. ६४	गिरिकुमारी	देवता २२४
"	परिमर्जाति ६३	गलगंड	रोग २०३	गिरिजण्ण	गिरिजण्य २४४
सुल्लिका	उद्विज २२९	गलुक	" २०३	गिरिमेरुर	पर्वत ७८
सुत्ति	क्रिया. १५५-१७६	गल्लिका	यान २६	गिल	मत्स्यजाति ६२
सुत्ति	" १४८	गवल ?	९२	गिलि	याहन ७२-१६६-१९३
सुत्ति	सुत्ति १६२	गवलभंद् ?	२१५	गिंपी	सूदि १३
सेव	२०१	गवलम्प ?	भामू. १६२	गीवरोग	रोग २०३
सेवगतमम	२०९	गदकंदुक	सुद्वुजण्णु १३८	गीवा	पक्षी २२५
सेवुर्द ?	१७	गदम	दोहदमसार १७२	गुग्गुलुविगत	रस १३२
सेवड	भोज्य १८२	गदुण्णविद्रुं	१६१	गुज्जा	सुद्व १२६
सेवडिन	क्रिया. १४८-२१५	गदुण्णनि	५८-११८	गुदिकार्य ?	सूद्विकार्याम् १६७
सेवड	पत्र १६३-२३२	गदुण्णोपगद्दम	१२१-१२९	गुणोपत्रय	२०१
सेवडुगुत्त	पत्र ६४	गदुण्णिक	गोत्र १४९	गुण्डु (गंडू) पया	कृमि २२९
सेवड	माह ६५	गदुण्ण	पक्षी ६२	गुण्डुपाणीय	गुण्डुपाणीय १८७
सेवडमार्डिका	गुण्य ७०	गदिका	गोत्र १५०	गुण्ड	रोग २०३

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
गुलकूरक	भोज्य ६४-१७९	गोसग्ग	प्रभात २४७	कङ्कवा	पक्षी २२५
गुलरित ?	क्रिया. १४८	गोसग्गहाणक	प्रभातखान ९८-२५५	कङ्कवाकपीत्र	पक्षी २२५
गुलदधि	भोज्य २२०	गोसंघी	कर्माजीविन् १६०	कङ्काक	ध्वनि १७३
गुलमन्त्रलय	९८	गोहातक	,, १६१	कङ्किक	चक्रिक १४७
गुलमरा	भाण्ड ६५		घ	कङ्कणिका	शास्त्रादैनिका २५८
गुलिक ?	१०६	घडक	भाण्ड ६५	कङ्कसुभारंत	चक्षुरकान्तः १२०
गुलक्युष्क	१७७	घटभायण	२२२	कङ्कसुसा	चक्षुपा ५६
गृहित	क्रिया. १४८	घटी	भाण्ड ७२	कङ्कसुनाणि	चाक्षुष्काणि १९६
गोत्रकण्ठ	गोयकाव्य १४७	घणकडत ?	११८	कङ्कसुस्तं	चक्षुष्मान् १९५
गोत्र	प्राद्य-गृहीत्वा ३९	घणपिच्छिलिका ?	भाभू. ७३	कङ्कर	चक्र १३६-१४५
गोत्रेज	कण्ठभाभू. ६५	घतडण्ड	भोज्य २४६	कङ्कक	धान्य १६४
गोत्रंटक	मृत्तिका २३३	घतकूटक	,, ६४-१७९	कङ्कग	,, १६४
गोच्छक	गुप्य ६४	घयजवागू	,, १८१	कङ्कविका	,, २२०
गोत्र	दे० ? ३९	घरकोइला	चतुष्पदा ६९	कङ्क	,, १२६
गोत्रकपती	गुह्यरूपति ६२	घरपोपलिका	परिसर्पजीव २३७	कङ्कगिह	चतुष्कगृह १३६-१३८
गोत्ररति	१३७	घरिफल	२३८	कङ्कगणि	५९
गोत्रज्ञाणि	५९-१२५-१२८	घसेत	घर्षयत् ३८	कङ्कगुप्तो	चतुःशुल्बः १८४
गोत्राण	गोस्थान ५	घंटिक	१४७	कङ्कगुप्तीया	चतुःश्रितिका २४२
गोणस	सर्पजाति ६३-२३९	घंसित	घर्षित १४८	कङ्कपद्मण ?	१५४
गोतमा	गोत्र १५०	घापति	जिप्रति १०७	कङ्कप्यदरत	१८४
गोचन्द्राय	१४९-१५०	घिंघिणोपित ?	क्रिया. १४८	कङ्कुरस्सा	१२८-१६१
गोत्तम ?	१४५	घिसुम	श्रीमन् १४७-१९९	कङ्कुरसायत	चतुरसायत ११६
गोधसालक	सुरा ६४	घुक्करथ	छुद्रनन्दु २२९	कङ्कुरवेद	चतुर्वेद १०१
गोधूम	धान्य १६४	घुण्णित	घूर्णित १४८	कङ्कुराटीपतिवग्गा	५९
गोधूममन्त्रिय	भोज्य १८२	घुमनि	क्रिया. ८०	कङ्कुरला	५९
गोपच्छेलक	प्राणी ९२	घोट्टेति	घोटपति २५८	कङ्कुरतेसु ?	क्रिया. १५५
गोपाल	कर्माजीविन् १५९	घोट्टदादिकर ?	१४७	कङ्कुरकार	कर्माजीविन् १६१
गोष्का	शुल्की ११२-१६५	घोटित	घोटित ४६	कङ्कुरकोस	चर्मकोस २१६-२२२
गोष्कर	छगण १०६	घोटिल	यान २६	कङ्कुरकील	चर्मकील-भर्तोरिगः १७४-
गोमच्छ	मत्स्यजाति २२८	घोसक	कर्माजीविन् १६१	कङ्कुरकील	१५५-२०३
गोमयकीडग	परिसर्पजाति ६३	घोसवंत	१५३-१६०	कङ्कुरगडोला	कण्ड २३१
गोमेदम	रस २१५	घोसाडकी	वनस्पति ७०	कङ्कुरममय	भाण्ड २२१
गोमेपकमय	रसभाभू. १६२	घोहाशुनच्छ	मत्स्यजाति २२८	कङ्कुरमनाही	चर्मरस २२१-२३०
गोमि	श्रीन्द्रियजन्तु २२७-२३८-२६७		च	कङ्कुरमि	मत्स्यजाति २२८
गोरीराडक	कर्माजीविन् १६१	चटरमपुञ्चि	चतुर्दशपुञ्चिन् ८	कङ्कुरमिराज	,, २२८
गोछ	गोत्र १४९	चडरंसा	५८-११७	कङ्कुरगो	चयनी १०१
गोछिक	वाहन १६६	चडरुनीम	चतुर्विन् १	कङ्कुरिका	भाहारगमपदा १३६
गोछेग	,, १६६	चडरुमिहुगण	भाभू. ६४	कङ्कुरकगन	भाण्ड २१४
गोयगरमठिकारक	कर्माजीविन् १६०	चडर	पापकडविदोष १४९	कङ्कुरगानि	५७-७९-१२८
गोरपकर	गोयगाम्य १५९	चडरंडल	१३६	कङ्कुरगामम	१३०-१३२
गोविन	गोविन १४८	चडरुलगा	चक्रक २४२	कङ्कुरिका	कण्डजाति ७०

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
षडिग	क्रिया. १४८	षडिक	वृक्ष ६३	छ	
षडोड	चोलपट्ट १४२	षडिक	नपुंसक ७३	छहच्छेद	छविच्छेद १४४
षडा	भङ्ग ६०	विचिणिक	वृक्ष ७०	छक	१२६
षडला	१२५	चितितं भङ्गातो	२२३	छमुत्तो	पदकृत्वः १८४
षडणिमा	स्थल-बहुपदा २२७	चितितो भङ्गातो	२२४	छगणनीतग	छगणनीतक २६
षडित ?	१५३	चिफलक	भासन १५	छगली	भङ्ग-चोटिका ? ६६
षडक	गोत्र १४९	वीणपट्ट	वस्त्र ६४-१६३-२३२	छट्टगहणी	पट्टगहणी ८
षडाणता	५९-१२४-१२९	वीणमुग	वस्त्र ६४	छट्टसाधणी	पट्टसाधनी ८
षंद	पुष्प ७०	धीती	चिता २३४	छट्टि	रोग २०३
षंदण	वृक्ष ६३	सुकितक	भोज्य २४६	छट्टत	छट्टत ३७
षंदणरस	२३२	सुदिलीय	सुदुल्याः ९२	छण	क्षण १२१
षंदणिकातेड	२३२	सुणक	गृहधवलनद्रव्यम् १०४	छत्कारक	कर्माजीविन् १६०
षंदलेदा	देवता ६९	सुणछारिका	२५५	छत्तधारक	" १६०
षंपरुतेह	२३२	सुणिरार	कर्माजीविन् १६०	छत्तोष	वृक्ष ६३
षंपकाली	१०४	सुफ	कृमि २२९	छदेमाण	छट्टत १३५-१३७
षंपगपुष्प	पुष्प ६३	सुलमाता	सपसीमाता ६८-२१९	छपि	पदमि १९३
षाडह	चापल्य ३	सुली	भाण्ड ७२	छमिणी	वृक्षजाति ७०
षाटुष्पणविषाण	१०३	सुंणगा सोलस	सुम्बनानि पोदद ११	छलंगरी	गोत्र १५०
षाट्टिक	चातुरहिक २६१	सुवित क्रिया. ४८-१३८-१६८-१८३	न्रिया. ९-१०	छलंस	पदस २४२
षाट्ट	चापल्य ३	सुविय	४९	छलिक (छंदक) ?	१२०
षाट	भोज्य १८१	सुवियविभासापडळ	४९	छंदेति	छन्दयति १३
षार	वृक्ष ६३	सुंमल	पुष्प ६४	छंदोक	गोत्र १५०
षारकपाल	कर्माजीविन् १५९	सुंमलक	अवतंस-रोखर २४२	छंदोग	गोत्र १५०
षारायण	गोत्र १५०	सूचुका	खनाम ६६	छागलिक	कर्माजीविन् १५९
षारित	क्रिया. १४८	षेदितक ?	जाति १४९	छात	दे० सुसुक्षित ३८-१२१
षारिक	गोत्र १४९	षेति	चैत्य १४८-२३३	छातक	सुधितक १४२-१४३
षारिनि	चिता १०१-१४८	षेतिक	चैत्य ३१	छातवा	सुधालुता १३५
षारिका	" २५४	षेतित	" २६	छायत	दे० सुसुक्षितत्व ११
षारिकारक	कर्माजीविन् १६०-१६१	षेतितपाद्व	चैत्यपाद्व ३०	छाया	लक्षण १०३
षारिक	पदंत ७८	षेतितगत	चैत्यागत ४१	छायासंभ	छायासंभ २७-३०
षारिकोद्	चित्रगृह १३७-२२२	षेतिय	चैत्य १४७	छायासंपन्न	१७४
षारिकीनी	कर्माजीविन् १६०	षेलिकसुचीजा	षेलिकसूत्रजा १८	छायछायादीण	१७४
षारिकरिमा	चित्ररतिमा १८३	षेलिम	२७	छारिज	क्षारिका-रक्षा ३९
षारिकण	वर्ण १०५	षोरघाता	कर्माजीविन् १६१	छिक	सुम्बजाति ६३
षारिकणरिमागा	५८	षोरलोपहारा	" १६०	छिण	छिण १-१३१
षारिकिमा	चित्रविषा १३०	षोरगारी णगर	१६१	छिणंगाला	प्राणी २३९
षारिक	भङ्ग ११४	षोरनेला	२४७	छिण	रष्ट्र ? ७९
षारिकेत्त	चिन्वा २३५	षोरालि	भोज्य ७१	छिणगाली	सुलटा १८३
षारिकवष	विरानिपृथ १६	षोलक	सत्कारोत्सव ९७-१४३	छिर	प्राणी २३७
षारिकय	९५	षोडाभिया	सुद्रनन्द २३८	छिरा	विरा ६६
षारिकी	षिळावदेनाजा ६८	षोडोपणय	उत्सव २३३	छिक्ति	रष्ट्र १८३-१८४

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
छिंदंत	छिन्द्व् ३८	जघण्णाणि	१२८	जाणगिह	यानगृह १३६-१३८
छिंदंती	छिन्द्वी १६९	जघण्णामास	२०१	जाणजोगी अज्जाय	१६५
श्रीत	श्रुत १६८	जघाजात	यथाजात ४४	जाणसाला	यानसाला १३८
श्रीयमाण	क्षूयमाण १३५	जघाणात	यथाजात ५६	जाणिजो	जानीयात् १५-१७
श्रुधा	श्रुधा १६८	जघामाणासिक	वञ्च ? १६४	जाणिं	ज्यानिम् ५३
श्रुध	श्रुण्ण १४८	जघाविधि	यथाविधि ४६	जाणेजो	जानीयात् ३६-४४-५४
श्रुपगत	वनस्पतिप्रकार १७७	जघासुत्त	यथोक्त ४४	जातकम्म	जातकमी १४७
श्रुभगत	" १८१	जघासात्तं	यथासत्ति ६३	जातिण्वत्त	२०९
श्रुवफल	" १७७	जघोदिट्ठ	यथोदिट्ठ ४३	जातीहेह	२३२
श्रुध	सुधा १०४	जमलभूसण	१५६	जातीपट्टयुग्गत	वञ्च १६४
श्रुंठिका	चतुष्पदा ६९	जम्मणा	५८	जातीपडिरूपक	वञ्च १६४
श्रेत्तमंडल	क्षेत्रमण्डल ११६	जयकालिका	सुरा २२१	जातीपडिसो अज्जायो	१४९
श्रेलंत	सेण्टिकां कुर्वत् १३५	जयतणं ?	५४	जामवेला	२४७
श्रेलित	सेण्टित १४८-१७३	जयविजय ?	१४६	जामातुकीक	जामात्रिक ९८
श्रेलित	सेण्टिकां कुर्वत् ४६	जयसमण	पुण्य ७०	जामिलिक	वञ्च ७१
	ज	जयो अज्जायो	१९९	जारिका	जारी ६०
अहणक	कर्माजीविन् १६०	जलभिह	जलगृह १३७	जारीय	जारीयः १६
अक्खोपयाण	यक्षोपयाचन १८३	जलपरसंदण	जलपरसंदन १९७	जाला	कृमिजाति ७०
अगतियजगम्य	अगतीजगम्युत् ६	जलाउ	द्वीन्द्रियजन्तु २६७	जालिकर	क्रिया. १४८
अगल	सुरा २२१	जलामास	१४६-१८६	जावक	गोत्र १५०
अगंतक	अभिज्वालनकर्कटिका २५४	जवमनिय	भोज्य १८२	जावतिक	यावत्क २३८
अगिराक	वञ्च २३२	जवात्	यवागू १८१	जावसंथयो अज्जायो	३
अघण्य	जघन्य ४८	जसवभो	यदास्ततः ९	जिणोत्त	जिनोक्त ५
अज्जरित	क्रिया. १४८	जहण्णकाया	१२८	जिस्से	यत्थां २४९
अणक	स्थानविदोप १३८	जहण्णाणि	५७-९४	जिह्वामूलीय	१५३
अणक	कर्णभाभू. १६२	जंगम	५८-१२१	जीर्वाजीवक	पक्षिन् ६२
अण्य	यज १२१	जंगमाला	पुण्य ७०	जीर्वातायणा	गोत्र १५०
अण्यकारि	यज्ञकारिन् १०१	जंवावाणियक	कर्माजीविन् ७९	जीवितहार	१४४-१४५
अण्यजण	अन्यजन ९८	जंतुतर	अह्न ८३	जुगमथ	युगमलक ११५
अण्यसुंढ	यज्ञसुंढ १०१	जंपितविभासापडलं	४८	जुग	वाहन १६६-१९३
अण्युकाणि	अह्न १२४	जंपिताणि सत्तेय	४७	जुण्वय	जीर्णरयः १००
अण्युगसंपी	" ११४	जंतुफल	फल ६४	जुत्तग्य	१६३
अण्येया	५८-१२३	जंतुफलक	भाण्ड ६५	जुत्तग्यम्भि	युक्ताभ्यं १६
अण्योपहृतक	यज्ञोपरीतक १०१	जंतुका	आभू. ७१	जुत्तप्पमागदीहाणि	११५-१२८
अनुकार	कर्माजीविन् १६०	जंभाहृत	जृम्भापित ४७	जुत्तसंपीठित	युक्तयम्पीठित २२
अनुभग्ग	अह्न ७७	जंभाहृयाणि सत्त	११	जुत्तमासाय	९३
अनुत्ति	अह्न ६०	जंभायमाण	१३५	जुत्तोपचया	५८-११४
अत्ताज्जायो	१९९	जंभित	क्रिया. १४८-१६८-१८४	जुत्तोवचयाणि	५८-११४-१२८
अत्तुणि	अह्न ९५-१०१-११५-१२१	जंभितविमामा पडले	४७	जुत्तनीयो	१२५
अत्तुत्त	यथायुक्त ४४	जागी	पुण्य ७०	जुत्तनेयाणि	५९-१२८
अत्तण्णकाया	११७	जागू	यवागू ७१-२४७	जुत्तकटिका	प्रीन्द्रियजन्तु २६७
अत्तण्णतरका	१२८	जावितक	यावितक १६५	जुत्तगिह	शून्य १३६
अत्तण्णतरका काया	११७	जागक	दानक २६	जुत्तमालाय	शून्यमालाय १३८
अंग० ३८					

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
जुधिका	पुष्प ७०-१०४	टियपडल	३३	गन्तमाल	वृक्ष ६३
जू	यूप १०१-१४८	टियपथिय	१०	गन्ति	नसृ ६८
जुम	६४	टियविहि	९	गन्थक	दे० नलक २०२
जुन	पुव १४६	टियतिय	१८	गन्थण	दे० नलन २१४
जोदसमंडल	ज्योतिर्मण्डल ११५	टियामट्टा	१२०	गणिय - रथी	नास्ति १९
जोगखेम	योगक्षेम १३४	टियामासा	५९-१०४-१०५-१२८	गदीकुडीक	पक्षी २२५
जोगवहा	योगवाहाः १५३		ड	गदीपुत्तक	" २२५-२२८
जोन्नयितव्यं	योजयितव्यम् १८५	टभालुम	नौविरोप १४६	गदीमुत्तक	" २२५
जोगिका	यौनदेशजा ६८	डहरक	लथु ९८-१२८-१५३	गणुंसकजोगि	१३९
जोगिवाळिक ?		डहरचल	१२९-२०४	गणुंसकगणुत्त	२०९
जोगी अज्ञाय	१३८-१४०	डहराक	लथु ११९	गणुंसकाणि	५७-७२
जोगीलक्षणा वागरण	१४०-१४४	डदंत	दहत् ३८	गणुंसकामास	१६८-२०१
जोतिसिक	गोत्र १५०	डिप्पत्त	भासनविरोप १७-२६-६५	गणुत्तकित	निस्फटित २१७
जोयिजमाण	योज्यमान १९८	डुपकहारक	नौविरोप ७९	गणोक्त	नमस्कृत १५५
जोव्यन्थजोगि	१३९	डोभा	गोत्र १५०	गणोकारयित्ता	नमस्कृत्य ११२
जोव्यन्थमहिदामवयसाधारणाणि	५७	डोड्डा	" १५०	गणणाविमास	१८६
जोव्यन्थ्याणि	५७-९७-१२८		ढ	गणणामास	१३०
जोसिता	सुवती ६८	डंकराली	पक्षी २३९	गणमच्छ	मरसजाति २२८
	क्ष	डेहिका	नितम्बी ११४	गणसीह	पशु २२७
क्षणित	ध्वनित १४७	डेहिय	सुत्तपड २१५	गणरेतर	७३
क्षपित	क्षपित १४३		ण	गणल	वृक्ष ६३
क्षय	ध्वज १४२	ण्डु कुडिका	पक्षी २३८	"	मत्स्यजाति २२८
क्षयकरंभ	ध्वजस्तम्भ ३०	ण्डुद	स्यानविरोप १३६	गणलियमालिका	आमू. ७१
क्षुत्तीरंभडल	११६	णक्लत्तर्मंडल	११५	गणवसुतो	नवकृत्यः १८४
क्षंकक	आमू. ६४	णक्लत्तविजयो अज्ञायो	२०६-२०९	गणवण	उत्सव ९८
क्षंसगित	क्रिया. १४७	णक्लत्तपद	नलपद १८५	गणवणीत्त	मोच्य २२०
क्षामित	ध्यामित १४८	णक्लत्तराविमास	१८६	गणवमिक्का	पुष्प ७०
क्षामितापस्स म	२७-३०	णगत्ति	गोत्र १५०	गणवमिगा	देवता २०५
क्षीग	क्रिया. ८१-१४८	णगरगुत्तिय	कर्माजीविन् १६०	गणतकविकला	नंतकविकला १९६
क्षुत्तुरायित	क्रिया. १४८	णगरगणक्लत्त	२०९	गणतुक्का	पक्षिणी ६९
क्षुपित	" १४८	णगरदेवता	देवता २०६	गणदिविणदक	शीर्षआमू. १६२-१८३
क्षुत्तिर	मुपिर १००	णगरक्लत्त	कर्माजीविन् १६०	गणुत्तवग्गा	५९
क्षोसित	क्रिया. १४८	णगरविजयज्ज्ञाम	१६१	गणवृहक	पक्षी २२५
	ट	णगराधियक्ल	नगराध्यक्ष १५९	गणसिहा	अङ्ग १२४
टकारी	वृक्षजानि ७०	णगोथ	वृक्ष ६३	गणसेडि	मल्लेणि १२५
टेटिवालक	पक्षी २२५	णच्छक	रोग २०३	णगा	परिसर्पजाति ६२
	ठ	णटोत्तक	नात्त्राचार्य ? ६७	णगतण्यु	अनागत्य १२९
टह्य	स्थगित २४१	णट्ट	नट १४८	णगामालक	शुक्लजाति ६३
टपेण	स्थापयिन्वा १९७	णट्टकोसयो अज्ञायो	२२२	णगस्कल	वृक्ष ६३
टागज्ज्ञाय	१५९	णट्टजोगि	१३९	णगवेला	२४७
टिजविपिविसेय	५९	णट्टणट्टो अज्ञायो	२१७	णगी	७६
टिजमाधरण	१३९	णडिबुडडिका	पक्षिणी ६९	णगिक्रिया	५८-११४
टिजामास	२१	णडिमथा	८	णगुष्पमंडल	११६
टिजामास	२४			णगमिगिदिसे	न अभिनिर्दिरोत् ३८

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
गामञ्जाय	१५८	गिरसुस्रसति ?	क्रिया. १०८	गिष्णेते ?	क्रिया. १९८
गायकाणि	५९-१२६-१२८	गिक्खेवडपावण	" २१७	गितगिणका	पुप्य ७०
गाराय	नाराच ११५	गिगमणी	निर्गमनी ७	गितरिंमि	आभू. ७१
गारास ?	२१४	गिगमाणं	गिगमाज्ञाम् २५८	गित्थगित	निस्तनित १७१
गारिण्	नार्याः २९	गिगमज्जोगि	१३९	गित्थुद्द ?	क्रिया. १७१
गालक	भाण्ड ६५	गिगमाा पुफारस	११	गिदिज्जति	नदीयते-ह्यसते २४३
गालिक	फल २३९	गिगगवविधि	९-१०	गिदीण	निर्दीणं ? १७१
गालिकेर	युक्ष-फल ६३-६४	गिगगवविभासापडल	४६	गिघाणो अज्जायो	२१४
गालिमञ्जाणि	अङ्ग ७७	गिगिगण्ण	निर्गोणं १०७-१३३-१७६	गिघीसुत्त	२६२
गावा	नौ १६६	गिघुंठक ?	१५१	गिद्धगिद्धतराणि	१२८
गावाखंभ	नौस्तम्भ २७-३०	गिघक्षित	निश्चक्षित २५३	गिद्धगिदा	५८
गावाधिगत	कर्माजीविन् १६०	गिघसो	नित्यताः १५८	गिद्धम	निर्धम ३२-३३
गावाधियक्ख	नावाप्यक्ष १५९	गिघ्छालित	क्रिया. १६८	गिद्धमण	निर्द्धमन १३६
गाविक	कर्माजीविन् ७९	गिघ्छुद्द	निश्चित १६८-१७१	गिद्धलुक्ख यणं	५८-१०५-१२८-१८६
गाविकम्म	" ८९	गिघ्छेव	निक्षेप-पर्यन्त २-५	गिद्धलुक्खवणपडिमागा	५८
गासपुडा	अङ्ग ९३	गिघ्छोडण	निश्छोटन १०६	गिद्धल्लहाणि	१०७
गासाविमास	१८६	गिघ्छोलित	निस्तक्षित १६८-१७१	गिद्धवणपडिमागा	५८
गासाय पुत्तक	अङ्ग ७६	गिज्जाभक	निर्गामक ७९	गिद्धा	५८
गिकडि	निह्वति २६५	गिज्जायंतो	निर्गान् १९८	गिद्धाडित	निर्घाडित १६८-१७१
गिकड्ढति	निकर्यति ८०-१०८	गिज्जासगत	निर्घासगत १७७	गिद्धाणि	उम्मट्टाणि ११३
गिकाणित	क्रिया. १८५	गिज्जाय	निर्घ्यात ३४	गिद्धामास	१३०-१३३
गितुज	" १८४	गिट्ठिवा	सुरा २२१	गिद्धावति	निर्घावति ८०
गितुज्जक	निह्वडक ४५	गिट्ठिअमासअ	निष्ठितभापक ४	गिट्ठोत	निर्घोत १०६
गितुज्जित	निह्वडित १६९-१७१	गिटुत्त	निध्युत् १४८-१७१	गिण्यतित	निण्यतित १६९
गितुं चिमट्टि ?	३७	गिटुद्द	निध्युत् १४६	गिण्फाडित	निण्फाडित १६९
गितुंजण	निह्वजन १३०	गिटुभमाण	निधीवत् १३६	गिण्फाव	निण्पाव धान्य १६४
गिण्ड	निण्ड १३६	गिटुभंत	" ३७-१३५	गिण्फावित ?	त्रिया. १७१
गिण्डजित	क्रिया. १५७	गिटुभित	निध्युत् १६३	गिण्फालित ?	" १६८
गिण्डहित	निण्ड १९८	गिटुंघति	निधीवति ८०	गिण्फेडित	निण्फेडित १७१
गिण्डकित्त	निण्ड १६८-१७१	गिट्टूल	निधुर २०८	गिण्फामित	निण्फामित १०६
गिण्डाणित	निकाणित १८३	गिडालपसाणि	उलटपायं ११७	गिमिच्चसंमह	निमिच्चसंमह १
गिण्डुदरच्छामु	२१४	गिडालमाम्यक	आभू. ६४	गिमिच्चहियप	निमिच्चद्वय १२९
गिण्डुद	निण्ड-स्थान १३७	गिडुल ?	१६९	गिमिच्चहसित	निमीलहसित ३५
गिण्ख	निण्ख १५२	गिणादित	निनादित ४६	गिमिच्चुंत	निमीलुंत ३७
गिण्खणं	निण्खनत् ३८-१४४	गिण्णदित	१२४	गिण्मजित	निर्माजित १३०-१५७-१६८-१७१-१८४-२१५
गिण्खण्णी	निण्खण्णी १६९	गिण्णगंभीर	१२४	गिण्मट्ट	निर्मट्ट २१
गिण्खण्ण	निखात १७१	गिण्णजोगि	निण्णयोनि १४०	गिय ?	९८
गिण्खिस्सण्ण	निखिस्स ८०-१०८	गिण्णयण	निर्णयन १९८	गियस्सोति	परयति १०७
गिण्खित	निश्चित १४८	गिण्णामि	५८-१३३-१२९	गिरथकाट्टं	५९
गिण्खित्त	" १६८	गिण्णजामाण	निर्णामित १६८	गिरथ्याणं तराणि	१२९
गिण्खित्तपमाण	निश्चितपमाण १९८	गिण्णीत	निर्णायमान १९६	गिरथ्ये	१२६
गिण्खुद्द	निण्ड १४९		निर्णीत १७१	गिराक्ख	निराह १६९

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
तणाधिगत	कर्माजीविन् १६०	तस्माद्यत	११६	तिमिरक	गुल्मजाति ६३
तणित	तत १४७	तंडित	क्रिया. १४८	तिर्मिगिल	मत्स्यजाति ६२
तणुगृह	तनुनख ११७	तंत ?	१५	तिमी	" ६२
तणुत्तय	तनुत्वक् ११७	तंतुवित	तन्तुव्यूहं १९०	तिय	त्रिक २१६
तणुमज्ज	तनुमध्य ११७	तंदेसि	तंदेदो २३८	तिरिक्करजोषिका	५९
तणुलोम	तनुलोमन् ११७	तंबनिष्काव	धान्य २२०	तिरिक्करजोषिकाकृक	१७४
तणू	५८-१२८	तंबभूमी	सृष्टिका २३३	तिरिच्छजोषिया	१२५
तण्णक	तण्णक ९७-१४२	तंबमय	आभू. १६२	तिरिच्छाण	तिरक्षीन ५२
तण्णिका	तण्णिका ६८	तंबाणि	५९-१२५-१२८	तिरिच्छ्रीण	" १४
तण्हाइत	तृपित २५३	तंबाधावक	कर्माजीविन् ७९	तिरिण ?	क्रिया. १४७
तताणि	५९-१२५	तंबाराग	लेह्य-भोज्य १८२	तिरियामास	१३१-१६९
ततियलोकहितय	१२९	तंसा	५८	तिरीड	श्रीर्षभाभू. ६४
तथ	तथा २९	ताडक	पशु २२७	तिलक	ललाटभाभू. ६४-१८३
तक्षिभोयनिभा	१०	तामरस	पुष्प ६३	"	शूक्ष ६३
तपनीयतिलक	तिलकप्रकार २४६	तालखंड	प्यजनकरिदोष ? २०५	तिलकालक	रोग १५५-२०३
तपुमय	आभू. १६२	तालखंड	तालवृत्त १४६	तिलखली	तिलखली १८२
तपुम	श्रीभिद्रयजन्तु २६७	तालखंड	" १९८	तिलतेह	२३२
तपुसेहाडुक	फल ६४	तालुका	अन्न ६६	तिलपिंडी	भोज्य ७१
तप्पक	तप्पक-जलवाहन १६६	तासित	द्रामित १४८	तिलमज्जिय	" १८२
तप्पण	तर्पण १०६	तिडण	त्रिगुण १४४	तिलवेहववाका ?	१९५
तप्पणपिंडी	तर्पणपिंडी ७१	तिक्राणि	५९-१२३	तिल	धान्य १६४
तप्पणा	भाण्ड उपकरण १९१	तिबुज	१५५	तिलेमाण ?	क्रिया. १६९
"	भोज्य १८२	तिक्करक	गोत्र १५०	निपेद	गोत्र १५०
तप्यगत	त्वयगत १७७	तिक्कलोह	घातु २५९	तिह	प्यह २६१
तयो	ततः ३४	तिक्का	५८-१२२	तिंगिच्छिग	आभू. ६५
तरच्छ	तरक्ष ६२	तिक्कामाम	१८८-२०२	तिंदुक	फल ६४
तरपभट्ट	कर्माजीविन् १६०	तिक्कियग	वीक्षण १९०	तिंदुक्की	शूक्षजाति ७०
तरपथ	तरवारी ११५	तिगिच्छमरिस	यण ९०	तीनवय	शरीरतथयाः १००
तलकरिगक	आभू. ११६	तिगिच्छा	पुष्प ७०	तीवा-श्यागय-संपदा	
तलकोड	गुल्मजाति ६३	तिगिच्छाणिगताणि	६२-११९	तीला-श्यागय-साग्रवाव	१०
तलसिह	तलगृह १३६-१३८	तिगंभाग	निर्गम्याग २११	तीतिणि	फल २३८
तलवाडपोम	प्यनि १०३	तिग्रागत	निर्गमान १५५	तीलक	उद्भिज २२९
तलपक	फल ६४-२३९	तिग्यायाम	नीर्ग्यायाम २४९	तीस	१२७
तलपत्तक कर्णभाभू.	६४-११६-११२-१८३	तिगिण	१२६	तीसनिषग्गा	५९
तलम	कर्णभाभू. ६५-११६	तिण्डा	१२९	तीसाटिका	पुष्प ७०
तलपरी	कर्माजीविनी ६८	तिरितल	परिसंप्रजानि ६३	तुष्पटानि	५८-१२४-१२९
तला	वृत्तिजानि ७०	तिर्यपाळ	तीर्यपाळ-कर्माजीविन् १६०	तुष्पटामाग	१३०-१६८
तलिय	दायन ६५	तिर्यपावप	तीर्यपावप-॥ १६०	तुष्पटत्र	क्रिया. १४८
तलुगी	पुष्प ७०	तिरु ?	१४२	तुषियानि	कटुभाभू. १६३
तलि	भाण्ड ७२	तिथिमी	देवता ६९	तुषाणा	उषाणा १८४
तलुगी	प्रतुपी-कर्दिरिका ७०	तिथिमाषक	कषटभाभू. १६२	तुगिन	त्यगिन ४१
तलय	प्यह १२६	तिथिमिगिल	मन्थजाति २२८	तुष्पटनेह	२३२

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
तुल्य	तुल्यार्थं १६	धावरा	४६-१२८	द्वामाम	१३९-१३३-१८८
तुल्यजोषी	१९४	विगलगत	विगलगत १८५	दणि ?	१९०
तुवरि	धान्य १७८	वितामास	२४-१९८	दण्णपाण ?	१५१
तुंडर	फल २३८	विया	खिया. २५-३४-३६-४७-१२५	दति	दति-जलवाहन १६६
तुका	यूका ७०	वित्ति	यान ७२	ददरक	बाघ २३०
तुण	रोग २०३	धीगङ्गत्त	२०९	ददुमिलक	रोग १५५
तुण	उन २०७	धीगव	गोत्र १५०	ददुम्मग	खिया. १४७
तुणित्य	त्वणित्यसि २६०	धीगामजोषि	१३९	दधिदूर	भोग्य ६४
तुदा	ऊदा ५६	धीगामाणि	५७-६६-७२	दधिताव	भोग्य ६४-१०९-२२० २४६
तेणित	भेणित १४८	धीणा[भा]माम	१८७	दधिवण	वृक्ष ६३
तेणिय	पूतेन २३६	धीपरामास	१३१	दधिमर	दधिमरकपदार्थ १०४
तेचिरिक	गोत्र १५०	धीभागा	५९-१२८	दधकार	कर्माजीविन् १६०
तेमिगह ?	२५८	धीय	खिया: २४	ददरकडाय	ईपगुवायाम् १३०
तेरणि	वृक्षजाति ७०	धुछा	११३	ददलायते	विक्रमति ८३
तेलवणिणकरस	२३२	धूणा	रुग्ण्य	ददलिय	दलिक ८०
तेलदूर	भोग्य ६४	धूमिकासल	२२०	ददुका	प्राणी २३९
तेलनवागू	१८१	धूमिकारम	२२१	ददुमी ?	६८
तेवरक	प्रीतिद्रव्यजन्तु २६७	धूभाग	रूप १७८	ददितलंक	भाण्ड १९३
तेसं	तेणाम् ९५	धूरका	अङ्ग ६६	ददिव	द्रव्य १३४
तेसं तेसं	तेपां तेणाम् १४७	धूलणि	५८-११७-१२८	दद्वी	दर्वी-भाण्ड ७२
तेडण	फल २३८	धेविद ?	क्रिया १४८	दद्वीकर	सर्पविरोध २१८-२२७-२३९
तेडु	धुद्रजन्तु २३७			ददसुत्तो	ददरुक्कः १८४
तेडुक	पद्म ? २२७	दुककिमि	प्रीतिद्रव्यजन्तु २६७	ददसमीपहाणक	ददामीपानक ९८
तेडुभोगदो	उपभोगतः २६७	दुक्खाणक	आमू. ६४	ददसाह	ददसाह १२७
तेडुप्यारुभणा	उरसव ? ९८	दुक्खिणयत्तामास	२०१	ददसीरिका	भोग्य १८२
तेडुमर	११५	दुक्खिणजोषि	१३९	ददसामो	द्रव्यामः २३६
तेडुण	६४	दुक्खिणदारिक	२०६	ददफलिहा	ददपरिखा २२२
तेडुवं	द्वैवेवम् ६७	दुक्खिणपच्चरियमा	५८	ददरचलणा	५८
		दुक्खिणपच्छिमजोषि	१३९	ददरबला	११९
यडुणा	नकुटिका प्रकार २२१	दुक्खिणपुररियमा	५८	ददरव्यावरा	११९
यडुंन	आम्वत् ३८	दुक्खिणाचार	७४	ददरवावरेज्जा	५८
यणपाली	खनपाली ६६-२०४	दुक्खिणाणि	५७-१०९-१२८	ददंभाणव	पत्नी ६२
यणत्त	खनत् ३६	दुक्खिणामाम	१४५-१६८	ददंत्तय	ददंत्तव १८५
यणित	खनित २०६	दुक्खिणगोइमं णगरं	१६१	ददंविगिह	ददंत्तगुह १३६
यणव	१८७	दुग	दुक् १२१	ददंत्तगूयक	ददंत्तगूय-ददंत्तमल १७८
यण्य	५८-१२३-१२८	दुगकोट्टम	दुक्कोट्टक १३८	ददंत्तचूर्ण	१०४
यण्टिका	खलिका ३०	दुगलट्टी	दुक्कयट्टि ३०	ददंत्तपन्न	अङ्ग १५५
यणिका	अङ्ग ११५	दुगवडुणि	दुक्कवर्देकिन् २५५	ददंत्तपवण	ददंत्तपवन ५
यंभायणा	गोत्र १५०	दुघट्ट	दुसः १५०	ददंत्तमय	आमू. १६२
यंमित	रुग्ण्य १४८	दुदका	गोत्र १८८	ददंत्त	भाण्ड २१५-२२१
यण्ड	भाण्ड ६५	दुदधक	१८६	ददंत्तवेदी	६६
यण्डक	६५	दुदहुत्त ?	१५५	ददंत्तसिहा	अङ्ग १२५
यण्टिका	७२	दुदगणि	५७-७७-१२८	ददंत्तसेविक्का	ददंत्तश्रेणि १२४
यण्टी	७२				

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
दंतवरातिमास	१८६	दीणामाम	१६८	देवगङ्गरत्न	२०९
दंशनाथंयतया	१३०	दीणारमासक	सिद्धक	देवतायणमत्तिका	मृत्तिका २३३
दंशणियाणि	५८-१२३	दीणारी	७२	देवताविजयो अज्ज्ञायो	२०४-२०६
दायते	क्रिया.	दीणोदत्त	४२-४९-१४०	देवदूता	देवता २०४
दारकण्य	द्वारकणक	दीपिक	पशु २२०	देवयोगे सुत्तं	देवयोगभोजन १८०
दारपाल	कर्माजीविन्	दीवस्त्व	दीपवृक्ष-कल्पवृक्ष	देवहचा	गोत्र १५०
दारपिंड	द्वारपिण्ड	दीववेलिका		देवागार	२२२
दाराधिगन्त	कर्माजीविन्	दीवालिकानि	मोज्य १८२	देवाणूक	१७४
दारुक्रमाधिकारिक	॥	दीविक	चतुष्पद ६२-७२	देमंस्ति	देवो ३७
दास्या	५९-१२९	दीविकाधारक	कर्माजीविन् ९१	दीणो	माण्ड ७२
दास्यामास	१८८	दीविकाहारिक	कर्माजीविन् ९१	दीहलो अज्ज्ञायो	१७०-१७२
दास्ये	१२४	दीह-नील	सर्प २३९		घ
दालित	दारित	दीहलुत्तानि	१२८	घकंति	वृक्षजाति ७०
दालिम दालिम फल	६३-६४-२३१-२३८	दीहपदा (द्वा)	मरत्यजाति २२८	घणजाय	गोत्र १५०
दालिमपुसिक	माण्ड ६५	दीहवग्ध	श्रापद २२७	घणित	ध्वनित २३९
दालिय	दारिस	दीहमकुलिका	मोज्य १८२	"	दे० अत्यन्त ४-२३-२४
दासिधर	दासीगृह २२२	दीहाणि	११४-१२५	घणिता	मिया ६८
दाहिणाचार	७४	दीहाणुम्मानिताणि	१२८	घण्णक	चतुष्पद ६२
दाहिणामास	१३१	दुडुल	दुडुल वक्ष १६३	घण्णजोगि	३२-१४०
दिर्भंडकंबलवायक	कर्माजीविन् १६१	दुकुंड	सुपुप्सा १२२	घण्णजोगी अज्ज्ञाय	१६५
दिग्गमीव	२३९	दुपुल	दुडुल वक्ष २३२	घण्णरत्त	१८१
दिग्गपाद	२३९	दुग्गट्टाणाणि	१२५-१२९	घण्णवा	धान्यवान् १०५
दिग्घा	५८-११५	दुग्गयाणा	५९	घण्णवाणिय	कर्माजीविन् १६०
दिजाती	गोत्र १०१-१४९	दुग्गंधपरामास	१८८	घमित	ध्मात् १४८
दिभिस्सति	दास्यति १७५	दुग्गंधा	५८-१२२-१२९	घम्मक	पादवान् १८३
दिट्टिवाय	दष्टिवाद १	दुग्गंधामास	२०१	घम्मजोगी	५३-१३८
दितिका	दतिका २३०	दुदकूट	मोज्य ६४	घम्मट्ट	कर्माजीविन् १६०
दिमिलि	द्विविददेशजा ६८	दुदकवागू	" १८१	घम्मण	फल ६४
दिरल १	२३८	दुदवेलिका	२४०	घम्मणग	सर्प २३८
दिव द्वुवेत्ताणि	बर्द्धक्षेत्राणि २०७	दुदुण्हिका	दुग्गधोणिका मोज्य ७१-२४६	घम्मण	वृक्ष ६९
दिव्या	५९-१२५-१२८	दुमस्स	द्विभाष्य-द्विवचनम् १५१	घम्मसदं	घर्मसत्य ९
दिसानं	दिसि ३२	दुम्मणजो	दुग्गनस्सकः ४३	घम्मिक	धार्मिक ४
दिसादाह	दिसदाह २०६	दुम्मट्ट	दुग्गमृष्ट २२	घम्मी	पुष्क ७०
दिसावाणियग	कर्माजीविन् ७९	दुवारासालाय	द्वारासालायाम् १३६-१३७	घव	वृक्ष ६३
दिसाहूत्त	दिगभिसुत्त १४	दुवेद	गोत्र १५०	घवलपट	१०४
दिस्स	दृष्टा २४९	दुत्तिसक	कर्माजीविन् १६०	घवासी	वृक्षजाति ७०
दिहि	घटि ६	दुत्तय	दुग्गय ७९	घविका	मनुलिका विदेश १६५-१७८
दीणउद्दोगित	दीणोद्दोषित ३४	दुग्गमट्ट	१११	घंत	ध्मात् १६८
दीण्णा	१२१	दूरातिनरित	क्रिया.	घंमित	ध्वंमित १४८-१५७
दीण्णा	१३५	दूरावगाड	दूरावगाड ८०	घानक	भातक-सुमिश्र १३५-१४२
दीणपविदोगाल	१४३	देवजोगि	६२	घार्नाकुमार १	१६८
दीण्णा	५८-१२९-१४०	देवद	कर्माजीविन् १६०	घातुवोगी	३२-४९-१३२-१४०

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
परिवृद्ध	प्रतिवृद्ध १७१	पण्णाधिग	प्रज्ञाधिक ५७	पद्मलिलक	तिलकप्रकार २४६
परिमविधि	९-१०	पण्णाधिक	गोत्र १५०	पद्मव	प्रदेशविदोय १६७
परिसुंद्धित	प्रतिमुण्डित १७१	पण्णास-पण्णत्तरिवस्ससाधारणाणि	५७	पधकडीतेल्ल	२३२
परियाणि ऋट्ट	११	पण्णिक	कर्माजीविन् १६०	पधवावत	पधव्यावृत १५९
परिलोलित	प्रतिलोलित १६९-१७१	पण्णलिका	प्रणालिका ? ११६	पधावति	प्रधावति ८०
परिवग्गक	उरसव ९८	पण्ह	पाण्ह २१८	पधिकणिलय	पधिकणिलय २५८
परिविविच्चञ्च	प्रतिप्रेसेत १३	पतज्जणट्ट ?	४५	पधित	प्रधित १९१
परिवेसवर	प्रतिवेदमगूह २२०	पतिआरक्ख	प्रत्यारक्ष १५९	पधोवत	प्रधानयत् ३९
परिसराखारमणी	कण्ठभाभू. १६३	पतिगिण्हंती	प्रतिगृण्हती १६९	पण्डु	प्रणुट्ट प्रणुट्ट प्रस्णुट्ट १३०
परिसरित	प्रतिस्वत् १६९-१७१	पतिगगह	पतिगह १६८	पणुत्त	प्रणुत्त १५५
परिसामिज्जमाण ?	१९८	पतिजेट्ट	प्रतिज्येष्ठ २१९	पण्ण	भोज्य १८२
परिसायण	प्रतिशावन ११	पतिट्ठाण	प्रतिठान ३१	पण्णरूप	प्राण्यरूप १५३
परिसिद्ध	प्रतिपिद्ध १६९-१७१	पतिहारक	कर्माजीविन् १६०	पण्णकहित	प्रस्फटित १७१
परिसेज्जक	शयन ६५	पतुज्ज	वज्ज १६३	पण्णोद्धित	प्रस्फोटित १६९
परिसेधित	प्रतिपेधित १४८	पते	पतेत् ४५	पण्णट्ट	प्रणट्ट १६९-१७१
परिद्वारक	प्रतिहारक ७९	पत्तकूर	भोज्य ६४	पममितापमट्ट	प्रमार्जितापमट्ट २३
परिद्वारित	प्रतिद्वारित १६९-१७१	पत्तगत	दोहदुप्रकार १७२	पमदायं	प्रमदायान् २९
परिद्वारी	प्रतिद्वारी ८८	पत्तमज्जित	भोज्य १८२	पमह	योग २०९
पदमरुप्पिगो	प्रथमकल्पिकः ८२	पत्तभंठ	भाण्ड ६५	पमिलत्त	प्रम्लान २०३
पदमिल्लक	प्रथमक २५९	पत्तमय	भाभू. १६२	पमुक्क	प्रमुक्क १६९
पण्णालीस	पण्णवल्लारिशात् १२७	पत्तरत्त	१८१	पमुक्कित्त	प्रमुक्कित्त १६९-१७१
पण्णालीसतिवग्गा	५९	पत्तहारक	श्रीन्द्रियजन्तु २६७	पमुट्ट	प्रमुट्ट १७१
पण्णवीस	१२७	पत्तंग	वर्णसूक्तिका २३३	पमुत्त ?	क्रिया. १३०
पण्णवीसतिवग्गा	५९	पत्तवेडि	भोज्य ७१	पमुहभ	प्रमुत्तक १६
पण्णचिणी	प्रनप्पुका ६८	पत्ति	भाण्ड ७२	पम्मुभ ?	क्रिया. २१५
पण्णवग्ग	पण्णवग्ग २५७	पत्तुण्ण	वज्ज १४२-१६३	पण्हट्ट	प्रस्मृत १३०-१३९-१६९
पण्णस	वृक्ष ६३	"	भाण्ड २३०	पण्हुत्त	" १७१
"	फल २३१	पत्तेकसो	प्रत्येकदाः २१५	पण्यु	प्रतनु ११७
पण्णसक	भाण्ड ६५	पत्तेगणुत्त	१७७	पणलाहत्तविमसा पडलं	४७
"	मत्तुलिका प्रकार २२१	पत्तपरिय	प्रस्मृत ११७	पणलाहत्ताणि	४६-१२९
पण्णाली	प्रणाली ३२-३३-२२२	पत्तारहत्तु	प्रस्मृत ७	पणलापमाण	प्रचलायमान ४४-१३५
पण्णालिगह	पण्णालिगह १३६-१३८	पत्तित	प्रस्मित १९१	पणलायंत	" ३७
पण्णिवत्ते	प्रणिपत्तेत् ५६	पत्तियवपडिमा	पार्थिवप्रतिमा १८३	पण्णालार	१४४-१४५
प्रणुवीसक	१२७	पत्तयीण्ह	५९-१२४-१२९	पण्णालिगह अग्गाय	१६८
पण्णुवीसतिवग्गा	५९	पत्तयुत्त	प्रस्मृत ११६	पणुका	भाभू. ७१
पण्णुवीसपण्णासवस्ससाधारणाणि	५७	पत्तहमग्गक	उरसव ९७	पणुमक	उत्तम २२९
पण्णुवीसवस्सपमाण्णाणि	५७	पत्तग्गाह	पद्माह १४४	पणुमरत्तक	वज्ज १६४
पण्णत्तरिवस्सपमाण्णाणि	५७	पत्तदुदी	पद्दुदि ८	पणोजियर्यामि	प्रयोजियर्यामि ८
पण्णत्तरिवस्सससाधारणाणि	५७	पत्तुम	पत्र ३९-६३	पण्ण	५८-१३३-१२९
पण्णरत्त	१२७	"	खल्ल-जल्लवर २२७	पण्ण	१३०-१४४-१४६-१६८
पण्णरत्तवग्गा	५९	पत्तमक	वर्ण १०५	पण्णत्तरक	पण्णत्तरक १६
पण्णरोट्ट	६० पण्णरोट्टिका ३०	पत्ते	पत्तेत् ४५	पण्णत्तरि	पण्णत्तरि १६
पण्ण	मग्गा ९	पत्तेडि	प्रणाली २००	पण्णत्तरण्य	पण्णत्तरण्य ४४

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
परिचिका	वख ७१	परिहीन	क्रिया. १३३-१०६-१८६	पल्लदेवया	पल्लदेवता २०५
परसुन	परमृत पत्नी २३८	परिवट्ट	परिविष्ट ? १८९	पलंक	शयन १५-२६-६५-२३०
परसुयमद्	परमृतशब्द २४४	परिवचने	परिवर्त्तने ८०	पलंकसिका	पल्लवसिद्धिका १६६
पर(रि)मणिय	परिमणित २१५	परिवदित	परिवर्धित १६९	पछालु	फल २३८
परमत्यू	११०	परिवर्धितक	१००	पछालुका	वृक्ष ७०
परमायू	५८-११७-१२८	परिविष्ट	परिविष्ट १८०	पद्धथिकायो वानीमं	११-१८
परमायक	भायू, ६५	परिवेष्टित	परिवेष्टित १८१	पद्महृत्सिगाविहि	९-१०
परमोपिजिन	परमारपिजिन १	परिविकृत	परिविकृत २००	परण	भूवन २५४
परमहमारपिया ?	१९४	परिवृद्ध	परिवृद्ध ११४	परर	गोत्र १५०
परंगेतक ?	९७	परिवेष्टित	परिवेष्टित २१६	परवदत्तम	प्रवरोत्तम ३६
परंवरतदमाई	५८-११४-११८-१२८	परिव्यक्तो	परिव्यक्तः ३६	परवर्द्धित	प्रवलय ३८
परंपरतन्यू	५८-१२८	परिवर्द्धन	परिवर्द्धक ७०-१३५	परवस्मिन्म	प्रोषितस्य २९
परापालमद्	१८८	परिसदित	परिसदित १६९	पवा	प्रपा १३८-१९१
परापण	परावीय २१४	परिसम्पक	बाळ १००	पवागात	प्रपानगत २२०
परामट्ट	परामट्ट २६	परिसरणक	वख १६४	पवादित	क्रिया. १६८
परारण	परावृत्त १६९-१०१	परिमादित	परिमादित १०१	पवायित	प्रवादित १००
परादुत्त	परादुत्त ३७	परिमाहयतो	परंद्रपंकः ४	पवालक	भायू, १६३
परादुत्त	परादुत्त १०८	परिमुक्त	परिशुक्त १०१	पवालप	रत्न २१५
परिक्रम	परिक्रम ११४	परिमोक्षित ?	क्रिया. १६९	पवामगत भद्राकाले	अग्रहार्य १९३
परिक्रम	परिक्रम ३८	परिमोक्षवर्ण	प्रेव २०५	पवामो	अग्रहार्यो १९१-१९२-१९४
परिक्रम	परिक्रम ११	परिहायिसमि	परिहायित १६९	पविभाग	प्रविजात २७९
परिक्रम	परिक्रम १६२	परिहित	क्रिया. १६८	पविनलक	भोज्य १८३
परिगण	क्रिया. १०१	परिदेहक-ग	जहाभायू, ६५-११६-१६३	पविभजतु	प्रविभज्यताम् ४४
परिगण	१८	परिदेह	मरोह २-१	पविभागमो	प्रविभागदाः १५
परिगुमनि	परिगुमनि ८०	पलक	प्राणी २३७	पवियान	प्रविजात १९४
परिगुमनि	परिगुमनि ८०	पलाहीका	परिगिण ६९	पविगिन	प्रोषित ? १६९
परिगुमनि	२७९	पलात	पलायिन ६१-९८	पवियजोनि	प्रोषितोनि १३९
परिगुमनि	५८	पलातसंगम	पलायिनसंगम ६७	पवेरगति	प्रवेरते १९१-१९४
परिगुमनि	११	पलाय	पेठमोय १८२	पवेरगति	प्रवेरते १९४
परिगुमनि	परिगुमनि ३६	परिक्रमदुषणक	कर्मभायू, १६२	पवेरी	प्रवेरी वख १०
परिगुमनि	क्रिया. १६८	परिक्रम	शेठकेत ३०३	पवेरी	प्रवेरी ४२
परिगुमनि	९-१०	परिक्रम	परिक्रम ३०३	पवेरी	प्रवेरी ४२
परिगुमनि	४३	परिक्रम	परिक्रम ३०३	पवेरी	प्रवेरी ४२
परिगुमनि	क्रिया ८०	परिक्रम	परिक्रम ३०३	पवेरी	प्रवेरी ४२
परिगुमनि	२०१	परिक्रम	परिक्रम ३०३	पवेरी	प्रवेरी ४२
परिगुमनि	८९	परिक्रम	परिक्रम ३०३	पवेरी	प्रवेरी ४२
परिगुमनि	८०	परिक्रम	परिक्रम ३०३	पवेरी	प्रवेरी ४२
परिगुमनि	क्रिया. १०८	परिक्रम	परिक्रम ३०३	पवेरी	प्रवेरी ४२
परिगुमनि	१९०	परिक्रम	परिक्रम ३०३	पवेरी	प्रवेरी ४२
परिगुमनि	३३३	परिक्रम	परिक्रम ३०३	पवेरी	प्रवेरी ४२
परिगुमनि	५८-११५-११८-११८-११९	परिक्रम	परिक्रम ३०३	पवेरी	प्रवेरी ४२
परिगुमनि	११६	परिक्रम	परिक्रम ३०३	पवेरी	प्रवेरी ४२

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
पसती	गवयी ६९	पाजसूचिका	पाद्भामू. ७१	पापहिक	सर्पजाति ६३
पसत्यं षामाञ्ज्ञायं	१४६	पाउत	प्रावृत ४१	पासुदिका	पाद्भामू. ७१
पसत्यो भग्नायो	१४८	पाकदित	प्रकदित २४९	पामेच्छ	वनस्थिति ? ९२
पसन्नतरका	११२	पागुत	प्रावृत १३०-१३४-१६८-१७०	पायस	भोज्य १७९
पसन्नाणि	५८-१२८-१८१	पाघटिका	पाद्घटिका शिरभामू. ७१	पायुका	पादुका १८३
पसधे अप्यसधे	११२	पाटालिका	पुष्प ७०	पारम्मुह	पारावृत्त ३३
पसरादि	वृक्ष ७१	पाटीण	मत्स्यजाति ६३	पारावणा	गोत्र १५०
पसलचित्ता	क्षुद्रजन्तु २२९	पाडल	पुष्प ६३	पारावत	वृक्ष ६३
पसल्लिन्न	पार्थिक १८४	पाण	वृक्ष ६३	"	फल ६४
पसंस्तित्त	प्रसङ्गिप्त १७१	पाणक	सुरा ६४	पारिप्यव	पारिप्लव प्राणी २३९
पसाण्णा	उपकरण ? १९३	पाणगत	दोहदप्रकार १७२	पारियत्त	पारियात्र पर्यत ७८
पसाधक	कर्माजीविन् १६०	पाणगिह	पानगृह १३८	पारिहृत्वी	पुष्प ७०
पसाधणकवृद्ध	प्रसाधनकपट्ट ११६	पाणत्रोणि	३२-४९-१३२-१४०	पारिवत	फल २३१
पसारितामास	१९८	पाणत्रोणिगत	४२-४८	पालिका	भाण्ड ७२
पसिञ्चिका	नकुलिकाविशेष १७८	पाणत्रोणिसमुत्थान	२७	पालिभद्ग	वृक्ष ६३
पसुवेडिका	२४७	पाणवगिह ?	१३८	पालीक	भोज्य १७९
पसेव्वक	नकुलिकाप्रकार २२१	पाणहारा वामा	१२८	पालु	वृषण १२४-१२५-२१४
पस्स	पार्थ ४२	पाणि	भाण्डोपकरण ७२	पालोयणी ?	१५७
पस्सवण	निर्हारण १४६	पाणियघरिय	पानीयगृहिक	पावन्न ?	१५५
पस्संतरिया	पार्थान्तरिका २२२		कर्माजीविन् १५९-१६०	पावरणक	वृक्ष १७५
पस्से	प्रथेय १९५	पालुप्पविट्ठं	१६१	पावार	वृक्षप्रकार ६४-१६३
पहिज्जेते	प्रदीपते ८१	पातरासवेला	२४७-२४९	पावासिक	प्रवासिन् १३४-१३९
पंचकाणि	५९-१२६	पातवगिह	पादपगृह १३६	पावासिय	प्रवासिक १९०
पंचसुजो	पंचकृत्वः १८४	पातिक	त्रीन्द्रियजन्तु २६७	पावासि	प्रवासिन् ९६
पंचणलुतिवग्गा	५९-१२७	पातिज	उत्सव ९८	पावीर	स्थानविशेष १३६
पंचउत्ते	पञ्च आरामनि ११	पातुण्त	प्रावृष्वत् ३८	पासावगत	प्रासादगत २१४
पंचपंचासति वग्गा	५९	पाथमक	प्रथमक ३६	पासिकुत्ताणक	पार्थकोत्तानक ४५
पंचमन्दलिक	११६	पादकलापक	पाद्भामू. ६५-१८३	पासुत्ताणणि	३६
पंचमिका	९८	पादकिञ्चणिका	" १८३	पाहिति	पात्यति ८४
पंचमेजण	उत्सव ९८	पादखडुवग	" ६५	पांगुहिति	प्रावरित्यति ८४
पंचवण्णा	१२७	पादगोरा ?	१५३	पिबबंमण	प्रियव्राह्मण १०१
पंचसद्विवग्गा	५९-१२७	पादाजलक	पाद्भामू. ६५	पिगाणादियवंतरा ?	वृक्ष ७१
पंचसत्तियवग्गा	५९-१२७	पादपट्टिओ	पादपृष्ठिके ७७	पिचक	मत्स्यजाति २२८
पंचासत्तियवग्गा	५९	पादपुच्छा	पादमोच्छन १४२	पिट्टरा	भाण्ड १९३
पंचामवस्सप्यमाणणि	५७	पादपेसणक	उत्सव ९७	पिडरक	" ६५
पंचासीनिवग्गा	५९-१२७	पादफल	भासन ६५	पिणेषण	अपिनहन ४०
पंडक	७३	पादबंध	काव्यविशेष १४७	पिणेषण	" ३८
पंडराग	सर्पविशेष २३८	पादसुदिका	पाद्भामू. १६३	पिणेषण	" १४७
पंडु	वर्ण १०४	पादसंकी	भङ्ग ४८	पित्तरो	देवता २०४
पंडुपट्टीमणे	१०४	पादगविक	९१	पित्तकामकिच्च	पित्तकामकृत् २०८
पंडुवण्णवट्टिभारा	५८	पादोपक	भामू. १६३	पित्तुदेवता	देवता २२४
पंधा	पन्थाः २३३	पापेज	पापेज १९२	पित्तुस्सदा ?	६८
पंधोल्लग	क्षुद्रजन्तु २३८	पापदक	भामू. ६५	पित्तुस्मिया	पित्तुःपन्था ६८-२१९

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र			
चितुस्त्रिपाधीतर	विनुःश्वसुद्विहृ	२१९	पुच्छितपत्रल	३८	पुरोहित	कर्मांजीविन्	१६०	
चितुस्त्रिपाधीतरी	"	२१९	पुच्छितविधिविसेस	५९	पुत्रल	रत्न	२१५	
चित्तपगति	चित्तप्रकृति	१०४	पुच्छितलागि चटवशीसं	११-३६-३८	पुलिदि	पुलिन्ददेशमा	६८	
चित्तियपीतर		२१९	पुच्छितपविहि	९-१०	पुव्वण्ण	पूर्वाह्न	१६४-१०८	
चिद्यमित्ता	विधाय	४२	पुटिका	पुटिका	२५९	पुव्वदक्खिणकाणि	१२८	
चिद्युलाणि	११६-१४२		पुटविकाहया		५८	पुव्वदक्खिणजोगि	१४०	
चिपीलिका	त्रीन्द्रियजग्नु	२६७	पुटविधातुगत		१३३	पुव्वदक्खिणभागाणि	११०	
चिप्यरी	वृक्ष	७०	पुणोद्	पुनः	११	पुव्वदारिक	२०६	
चिप्यलफल		२३८	पुण्णा	५८-१२४		पुव्वभवविवाग	२६२	
चिप्यलमालिका	आभू.	७१	पुण्णामजोगि		१३९	पुव्वामास	१६७	
चियंगुका	पुप्य	७०	पुण्णामपेजामास	१३०-१४५		पुव्वुत्तरजोगि	१३९	
चियाणि	५८-१२८		पुण्णामनिद्	पुंनासि	२४	पुसुय ?	१८५	
चियाल	त्रियालफल	२३१	पुण्णामाणि-णि	५७-१२६		पुस्तकोक्तिरु	आभू.	६५
चियोमागा	गोत्र	१५०	पुण्णामा पण्णत्तरी		५९	पुस्तधर	पुण्यगृह	२२२
चिरिठी	पक्षिणी	६९	पुण्णामास	१३०-१६१		पुस्ततेह	२३२	
चिलम	पत्नी	६२	पुत्तक	बाल	१४२	पुस्तमाणव	कर्मांजीविन्	१४६-१६०
चिलक	रोग	२०३	पुत्तंगय	पक्षी	६२	पूक	पूय	१७७
चिलकसक	प्लक्षक	२७	पुत्तयाणि	५९-१२५-१२८		पूतणा	पक्षिणी	६९
चिठा	गोत्र	१५०	पुत्तय्या ?		११४	पूता	पूजा	२५६
चिठक	बालक	९७-१४२-१५३-१६९	पुत्तवी	पूथिवी	१२१	पूतिक ?		१५५
चिठिका	लष्वीबाला	६८	पुत्तुला	५८-१२८-१४२		पूतिकरंज	फल	२३२
चिविपिण	मत्स्यजाति	६३	पुत्तुणि		११७	पूतिकरंजतेह	२३२	
चिच्छोला	भाण्ड	७२	पुत्तुणत्त	दोहदमकार	१७२	पूतिप	पूजित	२१०
चिंदाकुली	वृक्ष	७०	पुत्तुणिह	पुण्यगृह	१३६-१३८	पूतिपं		५९
चिंदिक्	जलवाहन	१६६	पुत्तुजोगी		६४	पूतिल	फल	२३२
चीणक	भाण्ड	६५	पुत्तुक्रमय	आभू.	१६२	पूतिंगल	परिसर्पजाति	६३
चीतक	वर्ण	१०४	पुत्तुकरस		१८१-२२१	पूतीणि	१२५-१२९	
चीतवण्णपदिमागा		५७	पुत्तुमाधियक्ख	पुत्तपाध्यक्ष	१५९	पूय	भोग्य	१८२
चीतिदहोमिगत		३४	पुत्तुफितक	आभू.	७१	पूयित	पूजित	४३
चितिक	पुप्य	७०	पुत्तुष्वाग	पुप्योच्चायक	८९	पूयिय	"	४६
चीरोलकस्स खंम ?		३०	पुरच्छिमा		५८	पूयिंसा	गोत्र	१५०
चीटक	पीठक	१५-१७-१४२	पुरथियमजोगी		१३९	पूयित ?	किया.	१७१
चीटपिठी	भोग्य	७१	पुरथियमाणि		१०८-१२८	पूयिजमाण	प्रेक्षमाण	१६९
चीटपल्लक	आसन	६५	पुराण	सिक्क	६६	पूयिखत्तविभासा		७२-७३-८०
चीटिका	पीठिका	१५	पुरिमभवविमाग		२६३	पूयिखत्तामास		
चीमियतवा		१३५	पुरिमंभाणि		१०३	पूयिचुक	कण्ठमाभू.	१६३
चीतुतेह		२३२	पुरिमा		११५	पूयिचउते	प्रेक्षते	१०७
चुक्करणी	चुक्करणी	२३३	पुरिसुत्तराणि		१११-१२८	पूयिच	पूय	१४३
चुक्करपण्ण	भाण्ड	६५	पुरिसणक्खत्त		२०९	पूयिचिका	पीठिका	३१-७२-१३६
चुच्छलक	कण्ठमाभू.	१६२	पुरिसत्तरामास		१३१	पूयिचक	देवता	२०४
चुच्छिजमाण	चुच्छियमान	१९३	पुरिसावत्तय	पुण्यपथय	२०	पूयिचिच्च	प्रेतकृत्य	२०८
चुच्छिज भज्याद		११५-१३८	पुरेक्खट	पुरट्टक	१६-१४८	पूयिच	देवता	२०४
			पुरोद्दह	अमद्दार	१३८	पूयिचज	पूयिचक	२१९

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
पेयाल	रहस्य ६४-२३७				
पेयालित	क्रिया. २४१	फणिका	उपकरण ७२-२३०	यक	शामू. ६४
पेलग	आपीड २४२	फरिसा	१५३	यकुल	शुश. ६३
पेलिका	पेटा २२१	फरिसापते	स्पर्शायते ८३	यज्ञयज्ञतराणि	१२८
पेलिवागत	पेटागत २२२	फरिसाहिति	स्पर्शयति ८४	यज्ञयज्ञाणि	९२-१२६
पेला	पेटा १७८-२२१	फलक	भासन १५	यज्ञमंडलचारि	९०
पेलिका	भाण्ड ७२	फलकारक	कर्माजीविन् १६१	यज्ञसा	गोत्र १५०
पेसनकारक	कर्माजीविन् १६०	फलकी	भासन १५-१७-२६ ७२	यज्ञामास	१३०
पेसणिय	७९	फलकीय	फलक्याः ५२	यद्रलुण्ण	मोज्य १८२
पेस्सजोगि	१३९	फलगत	दोहदुमकार १७२	यद्	५८-१२२
पेस्सणिक	१२०	फलजोगी	६४	यद्यरी	यवैरदेशज्ञा ६८
पेस्समूया	५८-११९-१२९	फल-पुष्पपोट्टल	फल-पुष्पगठरिका ३०	यदिहिय	यद्विष्वनि १७३
पेस्सा	५८-१२९-१३१	फलमय	शामू. १६२	यलगणक	कर्माजीविन् १५९-१६०
पेस्सामास	२००	फलरस	१८१-२२१	यहिरमंतराणि	१२८
पेस्सेजाणि	११९	फलवाणिय	कर्माजीविन् १६०	यहुर्कत	१९४
पेस्सेयाणि	१२०	फलहारक	शामू. ६५	यहुमस्त	यहुवचन १५१-१५७
पेंडिका	भङ्ग ११९-१२५	फलाधियक्व	फलाप्यक्ष १५९	यहुवापीत	यहुप्याधिक १६१
"	मोज्य १८२	फलापस्सव	फलापधय २७	यहुस्मय	कर्माजीविन् १६०
पेंडगडी ?	२३३	फलामास	१४५	बंधगणिह	यन्धनगृह १३६
पेंडित	विण्णित ११५	फलिक	५२	बंधजोगि	१३९
पोचड	पोचड ? ९८	फलित्वाय	परित्तायाम् १३६	बंधनागारिय	कर्माजीविन् १६०
पोक्त ?	१४८	फलिहा	परिता १३७-२३३	बंध-मोक्खा	१२९
पोटाफी	पक्षिणी ६९	फलुबाग	फलोद्यायक ८९	बंधुजीवक	शुश ६३
पोट्टल	दे. गठरिका ३०	फंदरेदे ?	१४८	बंधुजे भुत्तं	बंधुमोजन १८०
पोट्टलिका	प्रन्थिका २१६	फाणित	शुद्धमिदोप १८२	बंधवत्त	महाभय १०२
पोट्टह ?	६२	फालित	क्रिया. १४८	बंधररतेजाणि	५७
पोट्टवद्	प्रोष्ठवद् २०७	फालित्त	स्फालयत् ३८	बंधमचारिका	गोत्र १५०
पोत	जलवाहन १६६	फालित्त	स्फालयत् १४४	बंधमचारिगजोगि	१३९
पोतक	वाल ९७-१४२	फासगत	१८६	बंधमथा	गोत्र १५०
पोपकम्म	पुस्तकम् २७	फासेया	५८-१२३-१२८	बंधम	प्राज्ञग १०२
पोरिस	भङ्ग १५६	फिजा	रिङ्ग् ६६-१२१	बंधमजोगि	१३९
पोरपविद् ?	क्रिया. १५२	पुट्टुट्टवत्	१०६	बंधमजोगिण्य	१६१
पोरस	६०-१३४	फुलित	शुट्टि ? ८०	बंधमणोसण	१६१
पोरपच	पुर.पत्य ११२	फुलित्त	पुनित १४८	बंधमणू	महाभय १०१
पोत	शुधिर १०६	पुमी	हृमिजाणि ७०	बंधमण्यल	भङ्ग १२५
पोयकक	मोज्य १८२	पूममाठी	मुंगलिक ७२	बंधमनिनि	महाभय १०१
पोयत्रिका	" १८२-२४६	पूमित	भ्रान्त कुडित १६८	बंधमण्य	१०५
पोयदी	रूपी युवनी ६८	पूमित्त	पुपाकारा वृष्टि २५७	बंधमवय	१०१
पोयन	बौद्ध भाषणादन ६५	पेगक	मोज्य १८२	बंधमविय	महाभय १०३
पोयहरिप्यामि	१५०	पोडित	प्यनि १७३	बंधमवुर	" १०३
प्यक	जलवाहन १६६	"	स्फोटित १४८	बंधमवुर	महाभय १०२-१०३
				बंधमवुर	१०३

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
धर्मज्ञाणि	५७-१२८	बुद्धि-मेहाओ	देवता २०५	मारदाह	पक्षिणी ६९
धर्मयाणि	१०१	बुद्धीरमण	५८-१२२	भारथिक	भारतिक २४८
बादकार	९८	बुधति	प्रवीति १९५	भारंड	पक्षी ६२
बाधिर्ग	बाह्याङ्ग १३	बुनी	अवधीद् १७	भावस्मिन्नो	भावश्रितः १२०
वारगय	द्वारगत २१४	बेभेलक	फल ६४	भासकुण	पक्षी २३९
वालक	वाल १७०	बोदमच्छक	मत्स्यजाति ६३	भासमाण	भाषमाण १६९
वालजोगि	१३९-१९४	बोडज	दे० कार्पासफल १८	भासा	२३९
वालजोम्बगव्यसाधरणाणि	५७	भ	भ	भासासद्	१८८
वालजोम्बगव्यमामण्य	१००	भक्ल-भोजकथा	भक्ष्य-भोज्यकथा ४०	भाप्य	५७
वालतिलक	निलकप्रकार २४६	भगवती	देवता ६९	भिडदी	कृमिजाति ७०
वालमुंडिका	भाण्ड २३०	भगवा	गोत्र १५०	मिक्खोद्ग	मिच्छीदन १८०
वालरीरा	प्रागिजवच्छ २२१	भगिणिपीतर	भगिनीदुहितृ २१९	मिण्ण	मिन्न ४५-१६८
वालध्ववर्णी	वालध्वजनी २३०	भग्ग	भग्ग १६८	मिण्णं सहस्सं	१२७
वालसाडि	भाण्ड २३०	भग्गाहिह	भग्गुह १३७	मिन्नमणोयोसं	४३
बाला	९७	भच्छा	भच्छा २३०	मिस	भोज्य १८१
बालाभरक ?	१७०	भज्याय	भय्यायाः १६	मिसकंटक	" १८२
बालामास	२६	भतिकम्म	भृतिकर्म कर्माजीविन् १५९	मिसमुणाल	" १८१
बालेपतुंद	कर्माजीविन् १६१	भक्षधर	भक्षगृह २२२	मिसी	भासन १५-१६-७२-१०१
बालेयागि	५७-९७	भक्षवेला	२४७	मिग्गाग	खल-जलचर २२७
बालोपणयण	१२१-१८०	भक्षवेलाका	२४७	मिग्गपत्त	भृङ्गपत्र ९२
बाहिरब्बो	वहिस्यः ९	मक्षीड	भासन २६-६५	मिग्गराय	पक्षिन् ६२
बाहिरतुंबिय	८१-९०	भदासण	भदासन १५-१६६	मिग्गार	भाण्ड २०५
बाहिरवाहिराणि	५७	भयमाभया	८	मिग्गारिका	" ७२
बाहिरम्भेतरा	५७-८६-८७-९१	भरेहते	भरिप्पयति ८४	मिग्गारी	कृमिजाति ६९
बाहिराणि	८९-९२-१२८	भंडगिह	भाण्डगृह १३७	"	सर्प २३९
बाहिरिकार्यं	बाहिरिकायाम् १९०	भंजंत	भञ्जत् ३८	मिजिक	श्रीन्द्रियजग्तु २६७
बाहुनालक	भाभू. ६५	भंहुलिका	भृत्सजानि ७०	मीराहि	सर्पजाति ६३
बाहुणाटी	अङ्ग ६६-८१-१२६	भंढण	भण्डन ४०	मीह	१२६
बाहुपल्लयिका	बाहुपर्यल्लिका २०	भंढभायण	६५	मीहज	वृक्ष ६३
बाहुपपुरण	बाहुप्रावरण ४२	भंढवापत	कर्माजीविन् १६०	मीहणि	५९
बाहुमंडलक	११६	भंढाकारिकिणी	भाण्डाणारिणी ६८	मुक्खार्यं	क्षुधायाम् ४०
बाहुविक	कर्माजीविन् १६०	भंत भग्गाणि	आण्वभग्गानि ३३	मुक्खित	क्षुधित १४८
विक	द्विक १२६	भागवता	गोत्र १५०	मुमंतरामास	१३०
विकानि	५९	भागवती	" १५०	मुंमलक	मद्यपात्र २५९
विग	द्विक २१६	भागसो	भागसः १५१	भूतहृ	भोज्य ६४
विमालक	फल २३८	भागदारक	८१	भूतविक्रिक	कर्माजीविन् १६१
विमस्स	द्विमाप्य द्विवचन १५७	भागिणेज	भागिनेय ६८-२१९	भूमकंतरवंस	७६
वित्त	फल ६४	भातुमाया	भातुमाया ६८	भूमिगिह	भूमिगृह १३६
वित्तपेल	विश्वतैल २३२	भातुपीतर	भातुदुहितृ २१९	भूमिजाग	भूमियाग २४४
विद	ब्यह २६१	भातुपै	भातुणाम् १०९	भूमिविजालय	२२७
वीणपाल	वीणपाल कर्माजीरी १६०	भामित	भामित १४८	भूमीकम्म अङ्गहाभ	९-५६
वीयकाणि	भोज्य १८२	भाजणजोणी	भाजणयोनि १२	भूमीकम्मविही	१०
वुआरेहं	भोज्याणि ४४	भायणापरस्मन्	२७	भूमीकम्मसत्सुत्तुरेसो पडलं	११

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
भूमीकम्मास् विज्ञा		मञ्जिमज्जोणि	१३९	मत	सूत १८७
भेदति	भिनत्ति ८३	मञ्जिममञ्जिमसाधारणाणि	५७-९६	मतकपडिमा	सूतकप्रतिमा १८३
भेदित	क्रिया. १४८	मञ्जिममञ्जिमसाधारणाणि	५७	मतकमोयण	सूतकमोजन १८०
भोगमिती	भोगमैत्री ६८	मञ्जिममग्धि मध्यमे	१७	मताणि	५९-१२५-१२९
भोति	शामन्त्रणम्	मञ्जिममवयव-महद्वय-साधारणाणि	५७	मतामास	१३०-२०१
भोम्म	भौम १	मञ्जिममविगाड	५७-९९	मर्तिग ?	९२
भोयणगत	दोहदप्रकार १७२	मञ्जिममविगाड	१७२	मत्तिकामय	घातुवख २२१
भोयणगिह	भोजनगृह १३६-१३८	मञ्जिममाणंतरजहण्यसाधारणाणि	५७-९६	मत्थक	अङ्ग ७६
भोयणी	भोगिनी ६८	मञ्जिममाणंतरमञ्जिमसाधारणाणि	९६	,,	पुष्पापीठ ६४
भोयणो अज्ञायो	१७६-१८२	मञ्जिममाणंतरा	११७-१२८	मत्थककंटक	मत्थककंटक श्वाभू. ६४
भोयणोपवखर	भोजनोपस्कर ३२	मञ्जिममाणंतराणि-णि	५७-९४-१२७-१२८	मत्थग	श्वभू. ६४
	म	मञ्जिममाणि	५७-९४-७६-१२८	मत्थतक	भोज्य १८२
मठक	मृदुक १८९	मग्धे विगाडा	१२१	मदणसलाका	पक्षी ६९-१९५
मठकः	,,	मट्टियापीठ्य	मृत्तिकापीठक २६	मदुक	१२४-१२८
मठड	मुकुट ६४	मठहक	मडमक ११५	मदुक्खर	१५८
मठ	मृग १६६	मडहिया	मडभिका ६८	मधअग्नि	महाअग्नि २५४
मठणी	श्वभू. ७१	मडुहारक	कर्माजीविन् १६१	मधापध	महापथ १४५
मकतण्डा	मृगतृण्या २४६	मडुवासित	बलाद् हसित ३५	मधित	मधित २००
मकरिका	श्वभू. ७१	मणवित्तअ	मनोविद् ४	मधु	सुरा ६४
मकसक ?	१६२	मणास्सला	मनःशिला १४१	मधुरक	,,
मकिप्रत	अक्षित ४५	मणाम	प्रिय १२०	,,	सुप्रश्वाम् १८३
मग	मृग ६२-१६६-२३८	मणिओ	मणितः १०	मधुरसेरक	सुरा २२१
मगमच्छ	मत्स्यजाति २२८	मणिक	८०	मधुसित्य	मधुसित्य १०४
म[ग]यंतिका	पुण्य ७०	मणिकार	कर्माजीविन् १६०	मधुस्सव	मधुस्सवल्किच ८
मगरक	श्वभू. ६४	मणित्यवो अज्ञाअ	६	मधूरा	वृक्ष ६४
मगलुद्दग	मृगलुब्धक १६०	मणिधाटकय	१३३	मयंसल	कृमिजाति ७०
मगवच्छक	वनस्पति २३८	मणिघातुगत	१३३	मयुं	मृदु ३५-३६
मगसक	छुद्रनन्तु २३७	मणियंधहत्या	६०	मयूरगीय	वख १६४
मच्छबंध	कर्माजीविन् १६०	मणिमय	श्वभू. १६२	मरकल ?	२३८
मच्छंडिक	शर्कराविशेष १८१	मणिरूवालिका	१४१	मरणजोगि	१३९
मजधरिय	१५९	मणिवर	६	मरिअ	फल २३८
मज्जमालिका	पुण्य ७०	मणिवियारभूमिकम	१०	मरुमूतिक	७८
मज्जकछाणसोमणा	९९	मणिसिपिणअ	मणिसंज्ञित १०	मलय	पर्वत ७८
मज्जगादा	१२८	मणिसुचं	५९	मलित	मर्दित ११४-१४८
मज्जत्याणि	१२०	मणिसोमागक	कण्ठश्वभू. १६३	मल्लकमूलक	भाण्ड ६५
मज्जतरसा	गोत्र १५०	मणीसमुच्चय	१२९	मल्लगत	दोहदप्रकार १७२
मज्जविगाडाणि	५८	मयुअ	मनोअ ५	मल्लगभंड	भाण्ड ६५
मज्जानिक	२२-७७-१७२	मणय	५८-१२३	मल्लमाडग	यख ६४
मज्जंतिय	२४९	मणोज	शुक्लविशेष १४१	मल्लिका	पुण्य ७०
मज्जंदीणा	गोत्र १५०	मणोरध	मनोरय २४१	मल्लुडी	सर्पिणी ६९
मज्जहायं		मणोसिलक	यख १६४	मण्यारअ	मण्यारक ५२
मज्जिमकाणि	१२८	मणोमिलवणपडिमागा	५८	मसारकट्टसारमणी	श्वभू. १६२
मज्जिमकापा	११७-१२८	मणोसिलागिर्भ	यणं १०५	मसारगट्ट	रव २१५

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
मसूर	धान्य १६४	मंजरीपुष्प	१७७	मानुस्सियाधीतरी	२१९
मसूरक	उपकरण १५-१७-६५-२३०	मंजिटा	१४१	मानुस्सियापुत्र	मानुस्सियुत्र २१९
महत्त्वविद्	महापथे १६	मंजूषा	मंजूषा २७-१६५	मायाकारक	कमांजीविन् १६१
महत्तरकाणं	महत्तरकाशाम् २५८	मंजूषिका	७२	मारदि	मारदि ८
महत्निमहापुरिस	८	मंड	वृद्ध ११४	मालाकार	कमांजीविन् १६०
महत्निमहावीर	८	मंडलक	११६	मालायोगि	३२
महत्निमहावीरवद्रमाथाय	५९	मंडलास	११६	मालुका	पक्षिणी ६९
महत्पिण्डुपीठर	महापिण्डुद्विद्व २१९	मंडलि	सर्प २१८-२२७	मास	सापधान्य १६४
महत्मातृया	पितृमाता ६८	मंडलिकारिका	कृमिजाति ६९	मासककाकणी	७२
महत्त्वजाति	५७-९९	मंडव	मण्डव १३८	मासपुराणक	९७
महत्त्वपय	महानयः १८७	मंडवा	गोत्र १५०	मासालग	दायन ५२-६५
महत्त्वपयानि	१००-१२८	मंदि	गुह्य ७०	माहकी	गोत्र १५०
महत्त्वकादं	५९	मंदिहिका	भोज्य १८२	माहिसिक	वह ७१
महत्त्वानि	१२५	मंठी	भाण्ड ७२	माहिंद	८
महाजाति	पुण्ड ७०	मंठुकटिआ	मण्डुक्रिका २३७	माहिंद	८
महाग	महाजन १२३	मंत	पर्वत ७८	मिनु	मृद् २७
महागपेयक	महाजनपेयक ११३	मंतिक	कमांजीविन् १६०	मिनुभागा	५९
महागमगिह	महानसगृह १३७	मंतुष्टित ?	क्रिया. १९१	मिन्दि	१२८
महागमिक	महानमिक ६७	मंयणी	मन्थनी १७	मिचजोणि	१३९
महागि	१२८	मंथु	भोज्य २८०	मिदुभागे	१२५
महामिसित	१	मंद्	पर्वत ७८	मिषो	मियः ३१
महापरिगृह	५८-१३२	मंय	कमांजीविन् १६०	मिषोसंलावजुषा	४०
महापरिगृहानि	१२८	माउस्महा ?	६८	मिलस्वदेवता	देवता २०६
महामत	हस्त्रिमदामात्र १५९	माउस्मिया	मानुस्वला ६८	मिलस्नु	ग्लेप्ट १४९
महामंन ?	११०	माकण्गीकणिक ?	११६	मिलिंदिक	सर्पजाति ६३
महाप्योक्त	६२	मागधयेला	२४७	मिष्ठिति	मुहति ४५
महावीर षट्माग	१-९-१३०	माड	गोत्र १४९	मिस्सका	१२८
महाग्युग	२३९	माग	लक्षण १७३	मिस्सकेमि	देवता ६९
महादिमवन	पर्वत ७८	मागक	भाण्ड ६५	मिस्सगामस	१८८
महिलास्मय	महिलापस्त्रय २७	मागमपत्र	१७३	मीण	मन्थ्यजाति २२८
महिलाय	महिलायाः २०	मागिका	भाण्ड ७२	मीमसका	गोत्र १५०
महिसपापक	कमांजीविन् १६०	मागिजगुज्व	८२	मुकगंदवन	१०४
महिसाहा	भयन ७२	मागुस्सकाणि	१२५-१२८	मुगमभिय	भोज्य १८२
महिसीराज	कमांजीविन् १६०	मागुस्सकू	१७४	मुग्गा	नकुटिकासिरोप १७८
महिंद	पर्वत ७८	माग ?	११४	मुग्गा	१६४
महु	मुरा १८१	मागन	९२	मुग्गा	१५०
महुशायन	महुशायन १४७	मानुस्वीनर	मानुस्वुद्विन् २१७	मुग्गायण	गोत्र १५०
मंगुल	भनुम ९५	मानुस्विंग	८४	मुठिक	कमांजीविन् १६१
मंगुम	पट्ट २२७	मानुस्विगी	वृह ७०	मुवाटिक	मुवाटिका ८०
मंजक	दायन १५ २६ ६५	मानुस्वेत	८२	मुनिद्वय	शाखा ५६
मंजकमेष	१४८	मानुस्वेतय	२३२	मुनिगमय	मुद्वमन्थ २५०
मंजिका	दायन २१-१३७	मानुस्विगया	मानुस्वया १३९	मुणामय	बाधू. १६२
मंजुल	वृष्ट ? २३८	मानुस्विगयापीनर	मानुस्वगुद्विन् २३९	मुणवटि	७१

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
मुक्तिक	मौक्तिक २१५	मेचक	वर्ण १०४-१६४	मुत्तगम्भिह	युक्तार्थ्ये १६
"	भाण्ड २२१	मेनुक	पक्षी १४५-२३८	मुंजइ	युनक्ति १३
मुक्तिका पठिमा	मुत्पतिमा १८३	मेदित	पुष्ट ११४	युक्किातेल	२३२
मुत्तली	प्राणविशेष २५३	मेधुण ?	६८	योगवाहा	१५५
मुदितजोगि	१३९	मेयकवण्णपडिभाग	५८	योगायरिय	१५९
मुदितसाधारयूम	२२२	मेरक	सुरा ६४		र
मुदित्वागि	५८-१२१-१२८	मेरा	मर्यादा २४१	रकिगत	भाण्ड २१४
मुदिमास	१३०	मेलक्खु	म्लेच्छ २६३	रच्छागिह	रप्यागृह १३६
मुदिक्का	आभू. ११६	मो	पादपूर्णे २५६	रच्छामि(भ)त्ति	भोज्य ७१
"	भाण्ड ७२	मोक्खर	५८-१२२	रज्जू	११५
मुदिपाणि-णि	१२५-१२९	मोक्खजोगि	१३९	रण्ण	आरण्य १७९
मुदीगा	द्राक्षाफल २३८	मोगरग	पुष्प ६३	रण्णजोगि	अरण्यदोनि १४०
मुदेयक	महुलिआभू. १६३	मोगह्ल	गोत्र १५०	रण्हक	रत्तुविशेष ११५
मुधुलक	पक्षी ६२	मोघविल्लद्धित	क्रिया. १४८	रतीसंपयुत्त	१३७
मुम्मुलक	वृमिजाति ७०	मोद्क	भोज्य १८२	रत्त	वर्ण १०४
मुयंग	युद्ध ४१	मोरकंट	९२	रत्तकंटक	शुक्मजाति ६३
सुरव	वाद्य २३०	मोरेंडक	भोज्य १८२	रत्तखसारमणि	आभू. १६२
सुख	सुत्तिका २३३	मोलि	सर्व २३९	रत्तणिष्काव	धान्य १६५-२३२
सुख	" २३३	मोहणक	१७०	रत्ततिल	" १६४
सुसल	१४९	मोहणगिह	मोदनगृह १३६	रत्तनामाध्याय	१५०
सुदफलक	सुत्तआभू. ६४			रत्तरज्जक	कर्माजीविन् १६०
सुदवासक	" १८३	यगिगक	याज्ञिक (?) ५	रत्तवण्णपट्टीभाग	५७-१०५
सुदातिमास	१८६	यजुच्चेद	गोत्र १५०	रत्तजीही	धान्य १६४
सुंगसी	चतुष्पदा ६९	यगाणा	" १५०	रत्तसाळि	" १६४
सुंचंत	सुञ्चत् ३८	यणिगक	" १५०	रथ	याहन १४६-१६६
सुंदक	भाण्ड ६५	यण्णेजामास	यथेयानर्प १४८	रथकार	कर्माजीविन् १६०
सुंदलोह	धातु २५९	यत्तप्पवहण	यात्राप्रयइण २४४	रथगिह	रथगृह १३६
सुंदिका	मृद्रीका फल ७०	यत्तानुयत्त	यत्तानुयत्त १४८	रथजातरत्त	रथजातरत्त १८४
मूलक्केत्त	२३२	यदाणअ	यदाशक ४	रथगेमिघोम	ध्वनि १०३
मूलकम्म	कर्माजीविन् १६०	यथलाभ	यथालाभ २५६	रथप्पयातकरत्त	१८४
मूलक्खणक	" १६०-१६१	यत्तुत्ताहिं	यथोक्कामिः १८८-२११	रथसालाय	रथसालायाम् १३८
मूलगोत्त	गोत्र १५०	यमगामास	२१९	रत्तस्सं	रत्तस्सम् १०
मूलजोगि	३२-४८-१३२-१४०	यमा	१५३-१५५	रत्तमणिजाणि	११८
मूलजोगिणसुरियत्त	२७	यव	१६४-१८१	रत्तमणीयाणि	५८-१२४-१२८
मूलजोगिणमय	१६२	यवजतो	यशम्भतः १३०	रत्तक	कर्माजीवी-रत्तक १६०
मूलवाणिय	कर्माजीविन् १६०	यस्स	यस्स ४६	रत्तणक्कलावग	आभू. ६५
मूलात्तास	२५	यस्सक ?	१४७	रत्तणगिह	रत्तगृह १३७
मूलिक	कर्माजीविन् १६०	यागहण	१४७	रत्तमिह	रत्तगृह १३९
मेसल	आभू. ७१	याचित्तक	क्रिया. १६६	रत्तयमायथ	मित्तक ६६
मेसलिका	कट्टीआभू. १६३	याण	याण २६	रत्तियत्तुप्प	८२
मेयइयकायग ?	क्रिया. १८६	याणुस्सय	यानोत्तव ४०	रत्त	६४
मेयइंरीय ?	९	याण	याण २४९	रत्तजोगि	१४०

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र		
रसणा	आभू. ७१	रिद्धिपत्त	ऋद्धिमास	८	लकुचि	वृक्ष ६३	
रसदुग्धी	माण्ड १९३	रिसिमंडल		११५	लकुल	पठ २३९	
रसधानुगत		१३३	रिंगमाण्ड	रिद्धि	२५९	लनखण	लक्षण १-२
रसायते	क्रिया. १०७	रनरजोगि		७०	लनखणो	अज्ञासो १७३	
रसाळ	भोज्य ७१	रनखफल		१७७	लनखये	लक्षयेत् १९७	
रसालादहि	,, २२०	रनरामास		१३०	लतागिह	लतागृह १३८	
रसेजा	५८	रणग ?		९२	लतादेवता	देवता २०६	
रसेया	१२३-१२८	रचक	हस्तआभू.	१६३	लतालट्टि	वृक्षजाति ७०	
रसोतीगिह	रसवतीगृह १३६	रचिका	वृक्षजाति	७०	लदामास	१९९	
रस्त	इस्य १९१	रचिनतेल		२३२	लभिसाण	लट्टया १९७	
रहस्य	गोत्र १५०	रट्टाणि		१२९	लयित	लयित २००	
रहस्तपडलो अज्ञासो		१८६	रण्य	रदित ४३-१५५	लवंगपुष्प	पुष्प ६३	
रंगावचर	नाटकपात्र १६०-१९१	रण्यारत	रदितारदित	३४	लतिया	पृथ १७७	
रंधगक	रन्धनक २४९	रदित	क्रिया. १६८	९-१०	लंका	अन्न ६६	
रंधित	क्रिया. १४८	रदितविधि		११-४२	लंका	कर्माजीविन् १६१	
रादण्य	सर्प २१८	रदितानि वीसं		५९	लंबा(चा)पलि	वृक्षजाति ७०	
राजपोरस	राजपुरप १९१	रहा		१५५	लाउल्लोपिक	लमितोल्लोपिक १८३	
राजमहोरक	श्यल-जलचर २२७	रधिचीक ?		१५५	लाउल्लोपिक	लायितोल्लोचित १८३-२१०	
रावण	राजादन-कल २३८	रथमय	आभू. १६२	२३९	लाजिका ?	६८	
राते	राति १०७	रथिपयमास		७८	लाही	लाउदेशजा ६८	
रातोबरोपमिम	राजोपरोधे २५८	रथी	पर्यंत ७८	लाणी	पुष्प ? १०४		
रामायण	ग्रन्थ २४८	रह	चतुष्यद ६२	लाभहारं अज्ञास्यं	१४४		
रायजोगि	१३९	रुवपरतर	कर्माजीविन् १६१	लाविका	पक्षिणी ६९		
रायण्य	राजन्य ३	रुवाकड	क्रिया. १६८	लासक	कर्माजीविन् १६१		
रायधानी	राजधानी १६१-२०१	रुविजग	धातु २३३	लासित	क्रिया. ८१		
रायपथ	राजपथ १३७	रुवेया		५८	लच्छा	कृमि २३०	
रायपुरिसजोगि		रेथित	क्रिया. १४८	५९-१२५-१२९	लिगिचिरी	वृक्षजाति ७०	
रायपोरिस	कर्माजीविन् १५९	रोगमणायि	५९-१२५-१२९	१०६	लुक्खणिद	वर्ण १०५	
रायपयमास	राजप्रसाद ६७	रोट्ट	लोह १०६	२६७	लुक्खणिदाणि	५८-१०६-१२८	
रायवभेतर	राजाभ्यन्तर ८५	रोहणिक	श्रीमिन्द्रयजन्तु २६७	२२९	लुक्खणवणपडिभा	५८-१०६-१२८	
रायमगसमासु	रच्छासु २१४	रोहणिक	धुद्रजन्तु २२९	२२५	लुक्खणि	५८-१०६-१२५-१२८	
रायविजा	१४३	रोहणिक	पक्षी २२५	६२	लुक्खामास	१६८	
रायसस्यन	धान्य १६४	रोहित	रोग	६२	लुचित	क्रिया. १३०-१४८	
रायसासव	" २२०	"	मत्स्यजाति ६२	६९	लुला	कृमिजाति ७०	
रायार्ण	राजाज्ञाय् २५८	रोहिती		७	लुलितप्पसादित	क्रिया. १४८	
रायाशुषायजोगि		१३९		१९८	लुखक	कर्माजीविन् १६०	
रायिणं	राजाभ् २१३	लडव		२३१	लेला	वस्त्र ७१	
रायिमंत	संप्रविदोप २२७	लडच		" २३८	लेझ	लेझ १४३	
रायो धजापपत्ति	राज्ञ. पयोपपत्ती ६८	लडनु		११६	लेझगत	दोहदप्रकार १७२	
राडक	धान्य १६४-२२०	लक ?		७१	लेझलुष्ण	लेझपूर्ण १८२	
रिक्तिसिक	पक्षी ६२-२३८	लकड	आभू. ७१	६३	लेवणगिह	लेपनगृह १३८	
रिट्टक	वृक्ष ६३	लकुच	वृक्ष ६३				

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
देहनिखिलवण	लेखनिलेपण ९७	वईददुद्धि	पुष्प ७०	वडम	१५३
देहपट्टिकमंडल	११६	वउत्थ	श्रोषित १९६	वडु	सृष्टत् ११४
देहिषक ?	२४९	वक	वृक ६२	वडुकि	कर्मांजीविन् १६०
होक्त्रिखणो	गोत्र १५०	वक्त्रभंड	वलकभाण्ड १४२	वणःस्मिक	८९
लोकमता	९	”	वस २२१	वणति	पुष्प ७०
लोकभिद्	लोके ३	वकय	वलकज आच्छादन ६५	वणपेलिका	भाण्ड १९३
लोकहितय	लोकहृदय ५७	वक्कल	वलकल १४२	वणपद्मकाङ्काणि	५८
लोणवाणिज	कर्मांजीविन् १६०	वक्किक्तेल्ल	वत्तिककतैल २३२	वणपक्ती	वनस्पति १२१
लोतेक ?	२०६	वक्कत्रण	वक्कण ६०-९६-१०१-१२३	वणसंड	वृक्ष ६३
लोद्द	वृक्ष ६३	वक्कत्तस्सामि	व्याख्यास्यामि १८६	वणियप्पञ्जोणि	वणिकपययोनि १३९
लोपक	पशु २२७	वक्कवाइस्सामो	व्याख्यास्यामः १३५	वण	लक्षण १७३
लोपो	” ?	वक्कत्तामि	वदयामि ४३	वणजोणि	१४०
लोममंडलक	११६	वक्कवायिस्सामि	व्याख्यास्यामि १९२	वणधानुगत	१३३
लोमवासी	भङ्ग ६६-७६-१२१	वक्कवावत्थदरत	वृक्षापल्लवधरत १८४	वणपडीभाग	१०४
लोमसिका	ककटिका ७१	वग्गवपद	व्याघ्रपद गोत्र १५०	वणमत्तिका	वर्णमत्तिका २३३
लोमसिग	फल २३८	वचाई	कृमिजाति ६९	वणयिस्सामि	वर्णयिव्यामि २३७
लोमहृत्थ	लोमहृत्थ २१०	वचगिह	वर्चोगृह १३६-१३८	वणसुत्तक	आभू. १६२
लोकक	चतुष्पद ६२	वचदेवता	वर्चोदेवता ७६-२२४	वण	वस्र ७१
”	दे० शतितधान्य ३३	वचभूसीय	वर्चोभूम्याम् २२२	वणोय	१२३
लोहित	क्रिया. ८४	वचाडक	वर्चोवत् ? २२२	वत्तसक	कर्णआभू. १८३
लोवहृत्थपाणिय	भाण्ड १९३	वचाडगत	वर्चोभूसी २१४	वतिभेदग	धुद्रजन्तु २३८
लोहकार	कर्मांजीविन् १६०	वच्छ	गोत्र १४९	वत्तगाती	सर्विणी ६९
लोहजालिका	धातुवस्र १६३-२२१-२३४	वच्छक	वाल १७०	वत्तणीपालक	वत्तनीपालक ८९
लोहभाग	भाण्ड २५९	वच्चिहिते	वाद्यिष्वति ८४	वत्तणीपालमग्गिय	वत्तनीपालमार्गिक ९०
लोहमय	भाण्ड २२१	वटक	पक्षी १९७	वत्तपुष्प	वृत्तपुष्प ८२
”	आभू. १६२	”	भाण्ड ६५	वत्तमागजोणि	१३९
लोहमंयात	१५	वटसुर	वृत्तसुर ११६	वत्तमागणि	५७-८२-१२८
लोहिष	गोत्र १५०	वट्टेलेणक	वृत्तकीडनक ११६	वत्ता	वार्ता १०
लोहितक	आभू. १६२	वट्टन्नाय	वृत्ताप्याय ११६	वत्तस्सय	वृत्तोत्सव ८१-१००
”	सर्वजाति ६३	वट्टपीडक	आसन ६५	वत्थगत	दोहदत्तकार १७२
लोहितवख	आभू. १६२	वट्टमय	वृत्तमस्रक ११६	वत्थगिह	वत्थगृह १३८
लोहितिभा	लोहितिका १८	वट्टमाणग	भाण्ड ६५	वत्थजोणि	१४०
लोहितवख	रत्न २१५	वट्टमुद्द	वृत्तमुद्द ११६	वत्थजोणी अज्जास	१६३
लोदीगत	भाण्ड २१४	वट्टलोह	धानु २३३	वत्थपादक	कर्मांजीविन् १६०
लोदीमारगत	भाण्ड २१४	वट्टलोहमय	धानुपञ्च २२१	वत्थरिहा	भाण्ड ७२
लोहासेदिनि	लामयिव्यति ८४	वट्टसीम	वृत्तगीर्ण ११६	वत्थाधिगण	वत्थाधिगण १६०
व		वट्टा	५८-१२८	वत्थि	वत्थि ९४
वट्ट	उक्कः ९	वट्टापेल	वृत्तातीह २५९	वत्थित	अवत्थुत्त ११७
वट्ट	क्रिया. १९९	वट्टी	वर्षि ६६	वत्थिसीय	भङ्ग ६०-२०४
वट्टाकरण	व्याकरण ५७	वट्टण	वस्र १६४	वत्थुद्दवगा	वत्थुद्दवगा २०६-२२४
वट्टमस्र	मत्थजानि २२८	वट्ट	वृत्त ६३	वत्थुत्तमद्	वत्थुत्तमद् १५९
वट्टमत्तोमिण	वैदपजोषिण १६१	वट्टक	उद्दित्र २२९		

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
वाधुवापतिक	कर्माजीविन् १६०	वसवा	देवता २०४	वायुज	उत्सव ४०-१२१-१४३-१९०
वाधोपजीविक	" १६०	वसायं	वसायाम् ५	वाधुजभंड	विवाहभाण्ड १७५
वदंसक	भवतंसक १७७	वसुमंतो	वसुमान् १०५	वाधेज	विवाह १३४
वधुज	विवाह १४१	वस्तधर	पवंत ७८	वापण्णा	५८
वधूमज्जण	वधूमज्जन २५५	वस्सरत्तं	घर्पारात्र ६७	वापण्णोपहुता	१२९
वद्धक	आभू. ११६	वंजण	व्यजन १	वापद्	व्यापद् ६१-८०
वद्धणक	उत्सव ९७	वंजणऽञ्जायो	१७४-१७५	वापदिं	व्यापद् ८९
वद्धमाग	वर्धमान १	वंजणात्	व्यजनान्त १५१	वापन्न	१२२
वध्व	वध्व १३७	वंजुल	वृक्ष ६३	वामगत्तामास	२०१
वध्वक	वाल १६९	वंत	वान्त १७१	वामणक	१५३
वध्वरी	भोज्य २४६	वंतं ?	१०	वामदेस	७६
वध्या	वशा १०७	वंदहे	वन्दे ६	वामद्वणाहारा	१२८
वध्वति	शुनक्ति १०७	वंदिताग्नि	११-३८-१३८	वामपक्ख	७६
वमारक	खल-जलघर २२७	वंदियविहि	९-१०-५९	वामपार	गोत्र १५०
वम्मिका	आभू. ७१	वाद्दजो	वाचयेत् १०	वामभाग	७६
वय	मज १३७-२२२	वाउक्काणी	वच्च ७१	वामसील	७६
वयसाधारणा	१००	वाउजोणीक	वायुयोनिक १४०	वामाई	११३-१२८
वारद्	परिसर्पजाति ६९	वाउव्यातिक	वातौत्पातिक १९२	वामाग्नि	५७-७५-११०
वारक	धान्य १६४-२२०	वाकपट्टिका	वल्कपट्टिका १८	वामा धणहरा	५८-११२-१२८
"	गोत्र १५०	वाकल	वल्कल ८०	वामा पाणहरा	५८-११२
वारद	वृहद् ११४	वागपट्ट	वच्च २३२	वामामास	१३१
वारत्त	रन्ध्रविशेष ११५	वागरणजोणि	६-१०	वामायाव	७६
वारमज्जण	उत्सव २५५	वागरणरागड	व्यावरणप्रकट ७	वामागट्ट	७६
वारानि	५९-१२६-१२८	वागरणोद्धि	१०	वामा सोवद्वा	५८-११२
वारादा	गोत्र १५०	वागरणोपदेसो अगज्ञाओ	७	वामिस्स	व्यामिध २५-१२८
वारियर्गडिया भरहस्त	१८२	वाचि वापेचिक ?	१४४	वामोहांग गगरं ?	१६१
वारिसधर वधधर-कञ्जुविन्	१५९-१६०	वाणर	२२७	वायुकादिकाणि	५८
वदणक	वृक्ष ६३	वाणाधिगत	कर्माजीविन् १६०	वायुण्य	१२१
वदणकाद्य	देवता २०४	वाणियककम्म	" १५९	वायुमुत्ता	कण्ठआभू. १६३
वल्लवन् ?	१४७	वाणीर	गुल्मजाति ६३	वायेजो	वाचयेत् १२९
वल्मी	१३६-२००	वाण	३३६	वायेहिति	वादियियत्ति ८४
वल्मुपाय	आभू. ६५	वात्रकण्ण	देवता २२४	वारक	भाण्ड ६५
वल्मयवाणिय	१०४	वातपुरील	उत्तिज २२९	वारमट्टिध	फल २३८
वल्मिध	कर्णमाभू. १८३	वातगुम्म	रोग २०३	वारवाण	कञ्जुकर ६४
वल्मिपरिपल्ल ?	२४०	वातचय कर्मदल	११६	वारंग	वृक्ष ६३
वल्मिपल्ल	१७७	वातपाण	२२२	वारिणील्ल	गोत्र १५०
वल्मिणो	२३२	वातमग्ग	५८-१२३-१२९	वारिस	वर्षाकालिक १०१
वल्मुर	भोज्य २२०	वातंढ	रोग २०३	वारो	विवाह ९८-१३७
वल्मुरंनि	व्यरण्यदिन ११५	वातंढअरिम्	" २०३	वारक ?	१४२-१७०
वल्मुरंन	वृषणान्तर १२५	वातंढु	प्राणी ? २२७	वारकडि	भोज्य ७१
व(क)गनेरिच्छा	२४७	वातिठ	उत्तिज ७३	वारमप	आभू. १६२-११५
वल्मवा	वध्या ५	वातिग्ग	कज ३३८	"	भाण्ड २३१

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
वालंवा	गोत्र १५०	विखिलचमणता	विखिलमनस्कता १३५	विणिकोलत	विनिकृजत् ? ३६
वालिका	कर्णभामू. ७१	विखिलचक्रिका	विखिलचक्रिका ४१	विणितूते	विनिष्ठीयति १०८
वालीणा	मत्स्यजाति २२८	विखिलस्र	क्रिया. ८०-१६८-१७१	विणियत्त	विनियुत्त ८१
वालुक	फल ६४	विखिले	विकीरेत् ४५	विणीयविणम्	विनीतविनय ४
वालुक	" २३८	विखिवंत	विक्षिप्य १३५	विणेच्छति	विनस्यति ८४
वालुंकी	वृक्षजाति ७०	विगतस्सर	विकृतस्वर ३५	विण्णात्प	विश्राय १२७
वावदारी	गोत्र १५०	विगतसंटाण	विकृतसंस्थान १७	विण्णासगट्टयाय	विन्यासनायंतया १३०
वावन्नजोणोभामास	१८८	विगलप्यमाण		विण्ढ ?	१९४
वाजारक ?	१६७	विगिलते	क्रिया. १०७	वितट्टीक	वितर्दिक ६
वाविद्ध	व्याविद्ध १०८-१३०	विचोलते	" ८०	वितत	क्रिया. ११७
वाय	व्याय-विलार ४८	विच्छिक	वृक्षिक २१०	विताणक	वख ६४-१६४-२०६
वासकडक	वासकटक १८३	विच्छित्त	विशित १६८	वितीतोस	वृत्तितोप ९३
वासपर	वासपृह २२२	विच्छिन्न	विक्षीर्ण १२२-१७१	वित्यत	विसृत ११७-१३४-१९०
वासण	वमन १४२	विच्छुद्ध	विक्षित १६८-१७१	विदू	विद्वान् १०
वासंती	पुष्प ७०-१०४	विच्छुद्धगत्त		विपत्तसु	क्रिया. १५५
वासिट्ट	गोत्र १५०	विच्छे ?		विधार	विहार २२७
वासुल्ल	स्थानविदोप २२२	विजयहार	१४४-१४६	विधावति	क्रिया. ८०
वासुल	गोत्र १४९	विजयिका	विजयवर्णा १९८	विधितिक	पञ्जाति ७०
वासुळ	पुष्प ७०-१०४	विजाणीया	विजानीयात् १४	विधीयार	वीधीयार २०६
वाहणगत	दोहदप्रकार १७२	विजता	देवता ६९	विधीयति	विधीयते १२९
वाहिज	वाहन १९३	विजा	" ६९	विपमय	विपर्यय ४५
विभङ्गमुत्ते	१२४	"	विघात् १८-४६	विपदंत	विपतत् १२२
विभाकरे	व्याकुर्वाव ४७	विजादेयता	देवता २२४	विपचीसंपदा	१०
विदूत्त	विक्रिय ६	विजाधारक	कण्ठभामू. १६२	विपाटित	विपाटित १६८-१७१
विकट्टित	विकर्पति ८०	विजातत्थाहिदुप्या	देवता २२४	विपाटित	९-१०
विकरण	१४६	विजिस्वति	क्रिया. १७५	विपिक्रियविधिसिसे	५९
विकलका	२३७	विजिहिपु	क्रिया. ८८	विपकट्टित	विप्रकर्षित १९५
विकेपण	क्रिया. १३०	विजिहिते	क्रिया. ९०	विपच्छिण	क्रिया. १०८
विकाटिका	भामू. ७१	विजिहिते	विश्रयति ८१-८५	विपपोलति	क्रिया. ८०
विद्युंत	विद्युत् ४२	विजु	विद्युत् २०६	विपजोयित	विप्रयोजित २००
विद्युगिभ	क्रिया. १८४	विजुता	विद्युत् २५४	विपयोगजोति	१३९
विद्युगित	१२३-१३०-१५५	विजुपाय	विद्युत् ५	विप्यतिचेट्टे	क्रिया. ८०
विद्युगित	विद्युगित १८३	विजोहिते	क्रिया. ११०	विप्यतिवत्त	" ८०
विद्युग	भोग्य १८२	विज्जवित	विज्जपित १६८-१७१	विप्यति	विप्रति १०१
विद्युग	विद्युग १५५	विज्जोयति	विज्जोयते २५०	विप्यलोहित	क्रिया. १५५
विद्युग	४४	विद्युत्	पेठन १९०	विप्यलोचन	" ३००
विद्युग	४४	विद्युत्	विद्युत् ६	विप्यमारित	" १०८
विद्युग	५	विद्युत्	विद्युत् १६८-१७१	विप्येस्वपांगो ह्य	११-३४
विद्युग	नपुंसक ७३	विद्युत्	विद्युत् ३३-३७-३८	विप्योदित	विप्योदित ४
विद्युग	विद्युग ४५	विद्युत्	१३९	विप्योदित	विप्योदित ४
विद्युग	विद्युग १०८	विद्युत्	क्रिया. १४८-१६८	विप्योदित	विप्योदित ४
विद्युग	विद्युग १२-३८	विद्युत्	विद्युत् ३८	विप्योदित	विप्योदित ४

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
विभाज्य	विभाज्य	विसतित्थिका	कर्माजीविन् १६१	वेणु	विष्णु २२३
विमद	विमद	विसमाणि	५८-१२४-१२९	वैतालिक	वैतालिक १४७
विमरिस	विमरि	विमलादित	विमलाकित ? ८०	वेतिया	वेदिका १५१
विमिटीसेलणाटिक ?	५	विमंचित	त्रिया. १६८	वेती	वेदी १३६
विमिमित	दे० प्रकाशित	विसाणमत्तिका	वर्णमृत्तिका २३३	वेतोपकरण	वेदोपकरण २३९
विमुक्तायं	विमुक्त्याम् २०	विसाह	विदासा २२३	वेदगुहाद्	वेदाप्यायिन् १०१
वियदप्पकाय	विद्वत्प्रकाश १३७	विसिष्ण	त्रिदीर्घ ८१	वेदपुद्ग	गोत्र १५०
वियदसंबुदा	५९-१२८	विलेसक	तिलकविदोप ६४	वेधण	वद्य ६४
वियागरिज	व्यागुर्यान् ७	विलेसकिया ओकुंतगरु	१८३	वेधव्य	वैधव्य १९७
वियागरे	" ४२	विलसाथ	विशस्त १४३	वेधमणसा	वैमनस्यान् ४३
वियाजिजमाण ?	त्रिया. १९८	विस्मयुद्	वैरययुद् १०३	वेयाकरण	गोत्र १५०
वियाणक	विवानक ११७	विस्सुम	विभुत १९२	वेलविक	वद्य ७१
वियाणिजो	विजातीयान् २४	विस्सोदण	भोग्य १०९	वेलयक	कर्माजीविन् १६१
वियाणीया	" ३३	विहक	विहाय १४७	वेलंकेत	त्रिया. ८१
वियाणेजो	" १९६	विहि	१२१	वेलंकेति	विद्वम्बयनि ८३
वियाणेय	" १६	विंश	पवंत ७८	वेलत्तिक	भोग्य १८२
विरदमति	विरणदि १९७	वी	अपि २०	वेलु	जलवाहन १६६
विरुदतरक	११८	वीजणी	उपकरण २३०	वेलुमय	२२१
विरोध	विदद ९	वीणा	वाद्य २३०	वेल्लरि	शूक्षजाति ७०
विरोह	" ९	वीयणी	उपकरण २०५	वेल्लिका ?	१४२
विरोहते	विरोहति (स० प०) ३३	वीयणीया	व्यज्निका १९८	वेसगिह	वेदयागुह १३८
विठका	विठया-बनित ६८-२०२	वीरह	पक्षिनाम ६२-२३९	वेसण	म्यानविदोप २२२
विठंविज	क्रिया. १४८	वीसाह	१४५	वेसमणकद्वय	देवता २०४
विठान	वद्य १६३	वीम	१२७	वेसिक	वैशिक १६७
विठाल	पद्य २३८	वीसतित्तम्या	५९	वेसियागत	वेदयागत २०८
विठाल	" २२७	वीदि	धान्य १६४	वेसेम्मसुरेजाणि	५७-१०३
विठित	वीरित ४५	वीन्वापिडत्या	देवता २२४	वेनेजाणि	५७
विठिदंघ	वृक्ष ६३	वुण	वृक्ष २२२	वेस्त	वैश्य १०२
विठिजरा	पुण्य ७०	वुडिदार	१४६	"	द्वेष्य १२०-२५३
विठेपिका	भोग्य ६४-१७९-१४६	वुडिदार	१४७	वेस्तमलत	वैश्यशत्र १०२
विठेकण	विठेकयन् ४२	वुडुजोणि	१४९	वेस्मजोणि	१४९
विठरी	पक्षिणी ६९	वुण्यमुस	कण्ठभाम्. १६३	वेस्मप्यवनित्रो	१०१
विधट्टण	भाण्ड १९३	वुदित	१४८	वेस्मवंस	१०२
विधरा	५८-१२४-१२९	वुदया	वेदिका ३१	वेस्मवण	देवता २०५
विधरिण	वद्य १६३	वेदहापुण्डिका	विषाकिलपुण्डिका १०४	वेस्सेयाणि	१०२
विधरिण	विधादयन् १४४	वेदकण्डा	भाम्. ६५	वेस्सोमण्णा	१६१
विधरिणी	विधादयणी १६९	वेदकण्ठोद्	घानु २४८	वेहायस	१९२
विधरुभोति	१३९	वेदकण्ठी	वृक्षजाति ७०-१४६	वेडक	अशुट्टिभाम्. १६३
विधर	उत्तम २३३	वेदण	पुण्य ७०	वेडण	व्यरुहट्ट १४८
विधिय ?	क्रिया. १९१	वेदणी	वृक्ष ७०	वेदण	भोग्य १८२
विधेयिण	विधेयिण २०५	वेदक	भाम्. ६५-११६	वेदणीक	सर्गिणी ६९
				वेदमदमण	विष्णु १४८

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र			
समोविष्ण	समुक्षिप्त	१९५	सञ्चलामास	१३०	सङ्कोसक	नलुलिकापकार	२२१	
समोव्यतिगत		१११	सञ्चट्टक	कुमि	२२९	संख	द्वीन्द्रियजन्तु	२६७
सम्मई	सम्नाति-वीरजिन	१०	सञ्चणीहारगत	१६८	संखभ	संस्कृत	१७६	
सम्मज्जित	सम्माजित	२१	सञ्चतोभइ	भासन	३१-६५	संखकार	कर्माजीविन्	१६०
सम्मट्ट	सम्मृष्ट	२४	सञ्चत्त	सर्वैव	१५८	संखचुष्ण		१०४
सम्मिका	कर्णशामू.	१८३	सञ्चरथीक ?	३०-४८-५१		संखणग	द्वीन्द्रियजन्तु	२६७
सम्मोई	सम्मुद्	१२-४०-१११	सञ्चरथीभाउपपदेसदंसक	५७		संखणा	उज्जिन	२२९
सम्मोदी	सम्मुत्	१९८	सञ्चरवह्वलिका	सर्वैपर्यस्त्रिका	१८	संखणाभि		१०४
सम्मोपिआ	सम्मुद्	३९	सञ्चरपादोवरु	सर्वैपादोपक	१४२	संखता	संस्कृता	२२०
सयओ	सयतः	६	सञ्चरवाहिरयाहिर		८९	संखभंड		२१५
सयणगत	दोहद्वप्रकार	१७२	सञ्चरसंगायवखगत		१२०	संखमय	शामू.	१६२
सयणगिह	शयनगृह	१३८	सञ्चरवेद्	गोत्र	१५०	संखमल		१०४
सयणपाली	कर्माजीविनी	६८	सञ्चरसन्धीवपरामास		१३०	संखजलय		१०४
सयणावत्यद्धरत	सयनापस्त्रधरत	१८४	सञ्चरसत्पसु		१५५	संखवाणियक	शङ्खवाणियक	१०४
सयसाइ	शतशाख	९	सञ्चराणित ?		१५८	संखा	अङ्ग ७७-१२४	
सयसाइसमुख	शतसदृशमुख	२	सञ्चोधिजिण	सर्वाधिजिन	१	संखागवलमय	भागड	२२१
सयसाइस्सत्ताभि	शतसदृशशाखिन्	२	सञ्चोसहिपच	सर्वोपधिमास	८	संखागोत्त	गोत्र	१५०
सयाहिडुत्त	सदाऽभियुक्त	१३	सस	पशु	२३८	संखावग्माणि		१२८
सयितवज्जोणि		१३९	ससपतिकाय	सस्वपतिकया	१८५	संखावामा	५८-११२	
सर	लक्षण	१७३	ससर्बिदुक	फल	६४	संखिक		१०४
सर	स्वर	१५३	ससर्बिदुकिणी	बृक्षजाति	७०	संखेणा	गोत्र	१५०
सरक-ग	भाण्ड	६५	ससित	शसित	१४८	संगमज्जोणि		१३९
सरगपतिभोयण	"	१९३	ससिसस	सच्छिद्य	५	संगमत्तिका	धर्मावृत्तिका	२३३
सरजालक	शामू.	६५	सससकजुष्णक		२३३	संगमित	सद्गमित	४१
सरंट	शारट	२२७	सससप	धान्य	१६५	संगलिका	साद्वरिका	७१
सरसंपण		१७३	ससस्यित	संशयित	१९९	संगलिकावथ	सिद्धिका	१६६-१७९
सरसमती	देवता	२२३	सससावित	क्रिया	१३३	संगतण	संहनन लक्षण	१७३
सरिक	भागड	७२	ससकारस		२३२	संवमालिका	शामू.	७१
सलाकंजणी	शालाकाजनी	७२	ससहायकारी	स्वहस्तकारी	९८	संपाड	जलवाहन	१६६
सलिलयथा	सलिलयात्र	१४८	ससहरपुष्प	पुष्प	६३	संघायमंडल		११६
सल्लईहिं	सल्लकीभिः	१७७	ससहस्त		१२७	संचित	क्रिया	१४८
सल्लकथा	कर्माजीविन्	१६१	ससहस्तदंत	मरथजाति	६३	संजुकारक	धर्माजीविन्	१६०
सल्लिका	इपालिका	६८	ससहस्सदाउजुत्त	सहस्रद्वारपुक	२	संज्ञडित	संघाणिः	११८
सली	"	२१९	ससहसपच	पुष्पजाति	६३	संज्ञाईसण		२०६
सवणगिह	सवनगृह	१३८	ससहसयमो		५९	संठाण	लक्षण	१०३
सवल्लहिक	स्वल-अलपर	२२७	ससहस्रजागरणा	सहस्रध्याकरण	८	संठिहा	गोत्र	१५०
सवाहन	विया	२०२	ससहिमिणी ?		६८	संठ		७३
सव्यभन्धीवपरामास		११०	ससहितमहका ?		१५३	संठथ	संश्रय	२५४
सव्यभन्धाकारित	धिया	११०	ससंकथा	सङ्घा	४०	संठाणका	शुद्धजन्तु	२२९
सव्यभन्धागण		१३०	ससंकम		१३६	संठित्ठिसति	संख्यास्ति	१७६
सव्यभन्धिचरण		१३०	ससंकर		७३	संठिय	संस्तुत	११६
सव्यभन्धिचरण		१६६	ससंकुचगुहित	सङ्कोचनोपिथ	४५	संठित	"	११६

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
संदूषण	वाहन १९३	संसरणमिह	१३८	सालयगप	स्वालयगत १८१
संदमाणिका	यान ७२-१६६	संसारित	क्रिया १४८	सालंकापण	गोत्र १५०
संधागिदंसण	सन्ध्यानिदर्शन १५५	संसावित	" १८६	सालाका	पक्षिणी ६९
संधावति	क्रिया ८०	संसाविता	संज्ञीयमान १९८	सालाकालिक	भोज्य १८२
संधिवाल	कर्मांजीविन् १५२	संहित	क्रिया ११५	सालाकी	कर्मांजीविन् १६१
संधिवाल	" ८८	सा	स्यात् ११-२२-३६-४७	सालि	धान्य १६४-२१९
संधी	१३६	साकरस	२२०	सालिका	जलवाहन १६६
संपटिका	भामू. ७१	साकिजा	गोत्र १५०	सालिभ	पशु २२७
संपटिपेक्त्रिता	सम्प्रतिप्रदय ४१	सासानगर	१६१	सालिभत्रिय	भोज्य १८२
संपदा	सम्प्रताः १८७	सागरस	२२१	सालिमाळिणी	देवता ६९
संपदाकालिय	१९०	सागरोयम	कालविशेष २६५	सालिया	पक्षिणी ६९
संपभिण्ण	सम्प्रभिन्न १५४	साट्टक	शाट्टक १८	साग	कर्म भामू. १८३
संपवेदेये	सम्प्रवेदेयेत् १४-१२६	साडक	वाल १६९	सासक ?	१४७
संपवेदेजो	" ५०	"	वज्र ६४-१००	सासवदूर	भोज्य ६४
संपसम्पते	सम्प्रशस्यते ३९	सातिक	मायाप्रकार २६३	सासवतेछ	२३२
संपादेत	सम्पादयत् ३८	सातिजिन	स्वादित १७०	सादबो	साधयः ५
संपापित	सम्प्राप्त १७६	साधारणजोगि	१३९	साहाभवसितवरत	१८४
संधापेतरातिमास	१८६	साधुजुच	साधुयुक्त ४	साहागामे	११२
संयुक्त	हीन्द्रियजन्तु २६७	साधुजिन्न	साधुयोग्य ५	साहिक	श्रीन्द्रियजन्तु २६७
संनिक	क्षेप्यरोग २०३	सापस्सत	सापश्रय ३१	साहुसंपन्न	सापुसम्पन्न ४
संभिन्नसोय	सम्मिन्नप्रोत्सव-लघ्वि ८	सामकृपहाणि	५७-९२	सिपुजिन्न ?	१९५
संयुधविजय	संयुधविजय २००	सामकाल	१११	सिजुरथी	सरिणी ६९
संल	द्वयालक २१९	सामली	१५३	सिजुवटिका	प्राणी २३७
संलापजोगी अन्हाय	१६७	सामवेद	गोत्र १५०	सिजूयाली	सरिणी ६९
संलापजोगीभो	संलापयोनयः ४०	सामंत	सामन्त-समीप ५	सिमिला	" ६९
संलापबंधित	संलापमन्दि ३९	सामाग	धान्य १०८	सिमिडि	प्राणी २३७
संलापविधिपद्ध	४१-४८	सामागि	५७-१५३	सिगुक्नेछ	२३२
संलावितविधिसेस	५९	सामागिय	देवता २०५	सिपन्न	वज्र १४१
संलाविजागि	११-१३८	सामामवेदिका	२४७	सिजानि	शीदनि ५६
संलाविपदिहि	९-१०	सामिदि	१३०	सिपदक	वृक्ष ६३
संरच्छ	कर्मांजीविन् १६०	सामेलरस	कर्मांजीविन् १६०	सिता	स्यात् २८
संरच्छमनोरथ	संरच्छमनोरथ १२१	सामोई	सम्पुर ४०-१११	सिनीय	दे० निःशेष्याम् ३१-३३
संरटिका	नकुटिकाविशेष १०८	सामोयागानि	६८-९१-१२८	सिपमरुच्छ	सम्प्रजाति २२८
संरिजगिया	संरिजानीयात् ३२	सार	लक्षण १०३	सिद	१०७
संरिभाणक	पुष्प ६४	सारस्य	देवता २०४	सिदियिच	भामू. ७१
संरिद्विषी	१०	[नारा] सारो अन्हायो	२१३	सिदियिच	भोज्य १८९
संरिधाणक	१९३	सारिकोरुकरण	१३४	सिदयण	सिदयण १४७
संरिभायये	संरिभाययेत् ३६	सार	वृक्ष ६३	सिप्यगिह	सिप्यगिह १३६-१३७
संरिमाहनि	२२-१२१-१२६	सालडा	पशु २३८	सिप्यसामग	कर्मांजीविन् १६१
संरिमाहनि	क्रिया ११५	सालडा	२३८	सिप्यसामग	हीन्द्रियजन्तु २६०
संरिमाहनि	११५	सालडा	२३२	सिप्यसामग	धान्य ७१-१४६-१६६-१९६

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र		
सिद्ध	श्लेष	२०३	सीकादारु	कर्माजीविन्	१६१	सुक्ष्मगवणपडिभाग	५८
सिरिकंट	पश्चिनाम	६२	सीदुंही	मत्स्यजाति	२२८	सुजोदक	सुषोदय २४५
सितिकंसग	भाण्ड	६५	सीडा	फल	२३८	सुश्रिय	शुद्धित ६
सिरिकुण्ड	कुण्ड	६५	सीत		१२४	सुद्वियम्हि	सुस्थिते १७
सिरिधर		२२२	सीतपेटक	कर्माजीविन्	१६०	सुद्वियायं	सुस्थितायाम् १८
सिरियक	शुल्मविशेष	१४१	सीतभोयण		१८०	सुणवारक	रोग २०३
सिरिवच्छ	भामू.	६५	सीतल		७३	सुणहि	चतुष्पदा ६९
सिरिविद्रुक्मद्		१७७	सीतला		५८	सुणिक ?	९८
सिरिवेट्टक	रस	२३२	सीता	अङ्ग	६६	सुण्डा	ध्रुपा २८
"	वज्रिज	२२९	सीपिंशुला	पश्चिणी	६९	सुतवितेहिं	सुतपदिः ४
सिरी	देवता	२०५	सीमंतक	अङ्ग	७६	सुतवी	श्रुतविद् ५६
सिरीय	वृक्ष	६३	सीमंतिका	सीमा	२१४-२७१	सुनःसील	शुचीशील १९४
सिरीसमालिका	भामू.	७१	सीया	शिपिका	२६	सुनिसोपक	२३९
सिरीसिख	सरीसृप	१९१	सीवण	फल	६४-२३८	सुचक	भामू. ६५
सिरोमुद्रपरमास		२६	सीवणी	श्रीपर्णीपुत्र	७०	सुचक्रिय	सूत्रकृत १
सिरोमुद्रामास		१३२	सीसमय	भामू.	१६२	सुचगुणविभासा पदलं	५६
सिळावळ	शयन	६५	सीसवत्तिया	वृक्षजाति	७०	सुचत्रक	कर्माजीविन् १६१
सिळापट्टपासाणा		२३४	सीसारकल	कर्माजीविन्	१५९-१६०	सुचत्राणिय	" १६०
सिलिंध	वृक्ष	६३	सीसावक	शीर्षभामू.	२४२	सुचिका	शुक्रिका १७३
सिलोबय	पर्वत	७८	सीसेकरण	चक्र	१६४	सुचेरक ?	२३९
सिवाणि	५८-११३-१२८		सीसोपक	शीर्षभामू.	१६२	सुस्थियागत	स्वस्तिकागत ४१
सिविण	स्वम	१८८	सीहक	वाल ? कोमल ?	१४५	सुद	शूद्र १०३
सिखणी	अङ्ग	६६	सीह्विजंभित	सिह्विजुंभित	४७	सुदखत	शूद्रक्षत्र १०२-१०३
सिस्सजोगि		१३९	सीह्वस्तमंडक	भामू.	६४	सुदजोगि	१३९
सिस्सोपकस्तावण		५	सुदत्तम	श्रुतोत्तम	१	सुदग्दोसिय	१६१
सिहा	शिक्षा	६६	सुकुमालागि		५९-१२४	सुदवंम	१०२-१०३
सिंगक	वाल	९७-१४२-१६९	सुक	वर्ण	१०५	सुदवेस	शूद्रवैद्य १०३
सिंगमय	भाण्ड	२२१	सुकपहीभाग	शुक्रमतिभाग	१०३	सुदेजाणि	५७
सिंगारवाणिया	कर्माजीविन्	१६०	सुकपण्डुपडीभाग		१२८	सुडोसण्ण	१६१
सिंगालक ?		२३८	सुखल	सुष्क ?	११४	सुडरजक	कर्माजीविन् १६०
सिगि	मल्लिकाविशेष	१७८	सुखवण्णपडिभाग		५७-१०४	सुदवसिद्ध	शुदवसितिक ७
सिगिका	छथी वाला	६८	सुकामास		२०२	सुदंसुवसास	९१
सिनी	रान्वा	१६६	सुकिळ	शुक्र	१०४	सुदाकारी	९०
सिवाटक	भोज्य	१८१	सुकल	शुष्क	४१	सुदामास	१३०-१३३
"	शूद्राटक-भाग	१३०-१८४	सुकल-मलागु	शुष्क-म्लानयोः	१४	सुपतिट्टक	भाण्ड ६५
सिदीवासी	वृक्षजाति	७०	सुकसामास		१६७	सुप	शूर्प १४२
सियुवार	शुल्मजाति	६३-१०४	सुगंधाणि		५८-१२२-१२८	सुपतिभाणं	सुपतिमानवान् ५६
सिक्किाटित ?	क्रिया	१०१	सुगंधामास		२०२	सुभिकलदुग्भिकल	सुभिशुभिक्ष ७
सीदक	भामू.	६४	सुपरा	गोत्र	१५०	सुभिकलयोगास्तेम	१६२
सीदण्डानि		१२८	सुचिम	सुचिमन्	९०	सुमंगल	दीन्द्रियजन्तु २६७
सीकचटोकी	वृक्षजाति	७०	सुजगाम	वर्ण	१०५	सुरवेद्	गोत्र १५०
						सुरगोपक	शुद्रजन्तु २३८

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
सुरापरित	कर्मांजीविन् १६०	सेड	श्वेत १५३	सेदकंठक	गुल्मजाति ६३
सुरादेवी	देवता २०५	सेडककंठ	१०४	सेरुक्त	शोकान्तं १२१
सुरालासुशोभिकमच्छक ?	२०९	सेडकगवीर	श्वेतकर्णिकार १०४	सेगिय	शोणित १७७
सुवण्णक	सिकक १८९	सेडकफलिका	श्वेतफलिका १०४	सेगियओघायण	श्रोगिउपघातन १८५
सुवण्णकाकणी	" ७२	सेडगद्मक	श्वेतगद्मक चन्द्रविक्राशिकमल १०४	सेगिसुत	शाम् ६५
सुवण्णकार	कर्मांजीविन् १६०	सेडि	सेटिका १०४	सेगीमा	श्रोगिका ८५
सुवण्णखमित	घातुवख २२१	सेडिका	पक्षी २२५	सेतगुल	शुद्धकार १७६
सुवण्णखसित	" १६३	सेडिल	१५३	सेतसा	श्रोतसा ५६
सुवण्णसुंजा	७२	सेडीका	पक्षी २३८	सेतिया	शोत्र १५०
सुवण्णसुधिगा	पुष्प ७०	सेणा	पक्षिणी ६९	सेतुरिय	शोदरि १६८
सुवण्णपट्ट	घातुवख १६३-२२१-२३४	सेणायशतिणी	सेनास्वामिनी ६८	सेतपरत्त	२२१
सुवण्णपडिपोमाल	१४२	सेणिका	शोत्र १५०	सेतमकाइय	देवता २०४
सुवण्णमासक	सिकक ६६-२३९	सेण्डी	पक्षिणी ६९	सेतमणाम	१०१
सुवण्णगाधियक्ल	सुवणांधिपाट्य १५९	सेत	वर्ण १०४	सेतमपा	१०१
सुवण्णिक	कर्मांजीविन् १६०	सेतगुलिका	उद्भिज २२९	सेतमपाइ	सेतमपायिन् १०१
सुवरी	चतुष्पदा ६९	सेतणिकाव	धान्य १६५-२३२	सेतमण	सेतपान ३१-३३-१३६
सुविण	स्वप्न १	सेततिला	धान्य १६४-२२०-२३२	सेतमणि	५९-१२५-१२८
सुविणो अज्जायो	१८६-१९१	सेतमीही	" १६४	सेतमित्ठी	वख ७१
सुवाणदेवता	देवता २०६-२२४	सेतसासय	" २२०	सेतवण्णमय	शाम् १६२
सुस्ववमाण	शुशूपमाण ५	सेतसुरा	सुरा १८१	सेतवण्णमुत्ता	शाम् ६५
सुहस्तदा	भासनविशेष १७	सेतस्सवरा	शोत्र १५०	सेतरपिता	९
सुदी	सुहय १९	सेतुवम्म	१३८	सेतरिजा	९
सुंक्रमाला	शुल्कमाला १३८	सेद	श्वेत २१८	सेतरान्त	सेतरान्त १५१
सुंक्रमालिय	शुल्कमालिक १५९	सेदणिम्मजग	श्रिया १४८	सेतहाइंठपरहीहार	८
सुंसुमारा	मन्थजाति ६२-२२८	सेदपरामास	१४६	सेतसा	श्यान् २५
सुंसुमारी	परिसर्पजाति ६९	सेदमाड	श्वेतसाटक ६४	से	
सुकमिहा	श्रुमि २३०	सेयक	पशु २२७	सेडिका	काएणधन ११५
सुकमिन्द	" २२९	सेरविलासया	२२७	सेण	हजु ११४
सुकरिका	वृक्ष ? २३८	सेलमय	घातुवख २२१	सेणुकाप	हजुटे १२७
सुविकामि	१२६	सेलुक्कल	२३८	सेणुक्कहगानि	हस शाम् १६३
सुपीका	हस शाम् १६३	सेलुट्टक	६४	सेणुक्कलावग	" ६५
सुणावावत	सूनाप्याट्ट १५९	सेवगरत्त	१८३	सेणुक्कसुग	" ६५
सुनमागध	कर्मांजीविन् १६०	सेवइति	वृक्षजाति ७०	सेणुक्कहक	" ६५
सुय ?	३९	सेवालय	सेवालय २१८	सेणुक्कहक	११६
सूरीमि	५९-१२८	सेत्रिउमिपिपितेम	५९	सेणुक्कहक	११६
सूर्य	५९-१२६	सेत्रिउमिमासापरहलं	५९	सेणुक्कहक	११६
सूर्यगमिक	वर्ण १०५	सेत्रिउमि	११-५३-१३८	सेणुक्कहक	११६
सूर्योदन	सूर्योदन १९७	सेत्रिउमि	९-१०	सेणुक्कहक	११६
सूर्या	शय्या २६	सेत्रिउमि	१४७-१६८	सेणुक्कहक	११६
सूर्यो	शोत्र १५०	सेता		सेणुक्कहक	११६

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
हृत्विज्रपिगत	हृत्पथिदृत् १५९	हृदोलक	हिंदोलक ८०	हृदियय	खल-जलचर २२७
हृत्थिक	आभू. ६४	हातु	घातु ६	हृदयत्ताणक	आभू. ६५
हृत्थिलंस	कर्माजीविन् १६०	हार	कण्ठआभू. ६५-१६२	हृदयाणि	५८
हृत्थिमच्छा	मत्स्यजाति २२८	हारट्टडग	घातु २३३	हृदमिह	१३६-१३७
हृत्थिमहामत्त	कर्माजीविन् १६०	हारट्टडमय	घातुमच्छ २२१	हृदमवंत	पर्वत ७८
हृत्थिमैठ	" १५९	हारावलि	आभू. ७१	हृदरुण्यदिपोगल	१४१
हृत (सु) मूलविहामूलीय	१५३	हारित	क्रिया १४८	हृदलेत ?	क्रिया १४८
हृत्थिमिह	हृत्थगृह १३६-१३८	"	गोत्र १४९-१५०	हृदगुलकम्पम	वर्ण १०५
हृत्थित	चतुष्पद ६२	हारीहृद	पक्षिनाम ६२	हृदगुलमन्त्रणपडिमागा	५८
हृत्थित	वर्ण १०५	हारीडगिष्काव	धान्य १६५	हृदघोडा	वृक्षजाति ७०
हृत्थितवृष्णपडिमागा	५७	हाल	गोत्र १४९	हुत्तासिणा सिहा	हुत्तादानीसिला ९१
हृत्थितापरसत	हृत्थितापश्रय ३०	हालक	परिस्पर्जाति ६३	हुंठित	क्रिया. १४८
हृत्थिताल	१४१	हासहासित	३५	हुंठामुह	अधोमुख १४३
हृत्थितालवृष्णपडिमागा	५८	हिजो	छः २३८	हुंठिम	अधस्तन १११
हृत्थितालसमप्यम	वर्ण १०५	हिट्ट	हृष्ट १२-१४७	हुंठिमजोणि	१४०
हृत्थितावरसत्र	हृत्थितापश्रय २७	हिट्टा	हृष्टता १३५	हुंठित	क्रिया १४८
हृत्थितविधि	९-१०-५९	दितपाकृत	हृदपाकृत ११८	हुंठितद	२१६
हृत्थितविमाया	३६	दितपागृत	" २४१	हृदरिणक	कर्माजीविन् १६०
हृत्थियाणि षडहस	११-३५	दितयाणि	हृदयाणि ११८	हृदण्ट्याय	४८
हृत्थीयमाण	हृत्थमान ३५	दितयागुम्भजित्तानि	१२८	हृदणत्याय	हृदणार्याय ४२
हृत्थुडोलक	आभू. ६५	दितयामास	१३०	हृदण्यति	भविष्यति ८४-९०-९१
हृत्थ्या किंचि दिग्वा	५८	दिव्यत	घस्त, रजित ४१	हृत्ता य किंचि दिग्वा	११५-१२८

तृतीयं परिशिष्टम्
अंगविज्ञान्तर्गतानां प्राकृतधातुप्रयोगाणां सङ्ग्रहः

धातुरूपम्	पत्रम्	धातुरूपम्	पत्रम्	धातुरूपम्	पत्रम्
अ					
अक्रोडित		अपकङ्क्षिता	१६९	अभिवंदहे	६
अकर्मती	१४८	अपकङ्क्षिती	१६९	अभिवंदिऊण	६
अकसारित	१६९	अपनिरत्त	१६	अभिसंगत	१६८
अकसोडित	१४८	अपपुद्ब	१६९-१७१	अभिसंयुत	१७०
अगधायते	२५१	अपणत	१६९-१७१	अभिदृष्ट	३७-१३०
अगधाहिति	८३-१०७	अपणामंत	३७	अलंकरेमाण	३८
अगह्यीण	८४	अपणामित	१७१	अलंकारेति	८३
अच्छाद्व	८७	अपणासण	१४८	अलंकारेहिते	८४
अच्छादण	१३०	अपणासित	१६९	अलंकित	१३०-१६८
अच्छायित	१९३	अपत्यद्	१३५	अह्नीण	८७
अच्छिहिते	१६८	अपमञ्जित	१११-१७६	अवकङ्क्षति	१०८
अज्ञावपु	८४	अपमट्ट	१७१-१७६	अवकङ्क्षित	१०८
अज्ञेयणासित	३	अपण्डित	१७१	अवकरिसंत	३७
अणमियित	१४८	अपण्डित	१६९-१७१	अवकिण्ण	१०८
अणवत्यद्	३०	अपवट्टित	१७१	अवनिवत्त	१६-३८
अणुगंतुण	१३५	अपवत्त	१७१	अवचत्त	१०८
अणुपुरित	८०	अपविट्ट	१७१-२००	अवजेयमाण	१९८
अणुपविट्ट	२३५	अपसारित	१६९-१७१	अवणामित	२१७
अणुलित्त	८७	अपहित	१६९-१७१	अवणंत	३८
अणुलेवण	१३०-१६८	अपंगुत	१९८	अवमट्ट	२१५
अणुवन्तइस्सामि	१९३	अपयुगंत	३८	अवमाणित	१०८
अणुवन्तइस्सामि	७	अफालित	१४५	अवयवरंत	४२
अणुवन्तरामि	७	अफोडित	१६९-२१५	अवडोकिंत	१३०
अणोडंत	१	अट्टमंगण	१९३	अवडोणित	१७६
अणहेते	४१	अट्टमुक्कित	१०६	अवडोयित	२१५
अतिडंत	१०७	अट्टमुत्तिट्टित	१४१	अवसहंत	१३५
अतिगत	८१	अट्टमुत्थित	१४५-१९८	अवसकित	१९८-२१७
अतिवत्त	१०७	अट्टमुत्थवति	१४१	अवसकिय	१६
अतिवत्त	८१	अभिजाणइ	४	अवसरित	१३०
अतिवत्त	८६	अभिजिय	१९२	अवसरित	१९८
अतिवत्त	१०७	अभिणंदित	१६८	अवस्सित	१९८
अतिवत्त	१४७	अभिणंदित्से	१४	अवंगुत	२४५
अधिआमाण	१९२	अभिणिसित्त	१५२	अवाहंगंय	३८
अधिबसिस्सति	५	अभिणीयमाण	१९८	अव्योक्कइ	८६
अधीयण	५६	अभिनिदिसे	८९	अस्ताण्णति	८३
अधीयण	१४८	अभिमत	१३०	अस्साय	१०६
अधोमहित	१४४	अभिमतंत	३४	अस्सादेहिनि	८४
अपकङ्क्षित	१६९	अभिवडित	३४	अस्तायेति	१०७

धातुरूपम्	पत्रम्	धातुरूपम्	पत्रम्	धातुरूपम्	पत्रम्
अस्माविव	१३३-१८६	आनंघति	८३	उज्झंत	१४८
अद्विजुच	१३	आमसंत	१६९	उग्नित	१५२
अद्विधानि	८०	आमसिचा	१७०-२५७	उग्नयीयति	२५०
अद्वियाप	१	आरभंत	१३५	उद्वित्त	१३१
अंदोलंति	८०	आलद्	७९	उद्वित्त	१३३
आ		आर्णिगित	१४८-१९३	उद्वित्त	१३५
आडंडित	१९८	आलोकित	१३०	उद्वुग्निहिमि	१९२
आकुंखित	१५५	आगतं	३६	उपगत	१११
आकुंखित	११५	आविष्ट	१५५	उपगमंत	३३-१३५
आकुरित	१७१	आर्णिधिहिति	८४	उपगमित	१६८
आगच्छने	८४	आग्नेय	२	उत्त	३८-८०
आगच्छणे	३६	आसञ्जिता	२५१	उत्तरंत	१३६
आगणेति	१०७	आसने	८३	उत्थत	१४८
आगत	१०७	आसाइत	१०७	उत्थित	१६८
आगमिस्सति	६०-८३	आसात्सग	१४८	उदाहरिस्सामि	४३
आगमिस्सं	१०८	आमित	२४३-२५५	उदीरण	१४८
आगमेहिति	८४	आहारित	१७६	उदीरंत	१०८
आगम	१९२	आहारेति	८३-१०७	उदीरंति	७०
आगदिति	८४	आहारेमाग	१४४	उद्वित्त	१४८
आगरेति	१०७	आहित	२१	उद्वुत्	१४८
आधिक्यति	८३-१०७	आर्हिं वति	८३	उद्वुत् वित	१४७
आग्नेयगोव	१४७	आहु	३६	उदीरमाण	१९८
आदत्त	२३५	उ		उद्वुत्तमाण	१४७
आग्नेय	१४७	उकड्ड	८६	उपकड्डंती	१६९
आग्नि	१०७	उकड्डति	८०	उपकड्डित	१६८
आगीय	१०७	उकड्डिय	१०८	उपकड्डित्ता	१६९
आग्नेति	८३	उकं (उकं)	१	उपगुहित	१६९
आनिष् [ति]	१०७	उकंदिग	१४८	उपचानित	१४८
आनिष्ठिति	८४	उकामित	१०६-२१५	उपगत	१६८-१७०
आर्दिग	६६-८३	उकग्नि	१४८	उपगद्	१६८-१७०
आघायित	२१५	उकग्नेय	३८	उपगामित	१६८
आघाहृत्ता	८४	उकच्छ्रित	२५४	उपदागित	१६८
आपारप्	१०-८०	उकसंभमाण	४२	उपलद्	१६८-१७०
आपारंतिता	८१	उकित्त	१११-१०१	उपगोडित	१६८-१७०
आपारपद्	११	उकग्नि	१४८-१०१	उपवत्	१६८-१७०
आपारपे	८०	उक्याकित	१४८	उपवप्यित	१६८
आपारिष्माण	१९३	उक्ये	९८	उपविष्ट	१०७
आपारीग	१४९	उक्यंति	१०७	उपवेमग	१४८
आपारे	१२७	उक्यारिग	१३९-१००	उपपट्ट	१४८
आपुत्	८०	उक्यंदिग	१९३	उपपरिग	१०७
आर्दिग	१०१	उक्यारिग	१०१	उपगामिग	१६८
आपद्	१६९	उक्युद्	१०-१०१	उपवेमग	७९

धातुरूपम्	पत्रम्	धातुरूपम्	पत्रम्	धातुरूपम्	पत्रम्
उपसर्गि	२४६	उपसर्गि	१८४	भोगि	३३-१०१
उपसर्गि	८३	उपसर्गि	२१७	भोगि	८०
उपसर्गि	८४	उपसर्गि	१८४	भोगि	८०-१०४
उपसर्गि	३७	उपसर्गि	१२५	भोगि	२१५
उपसर्गि	२४५	उपसर्गि	१९३	भोगि	१९५
१११-१४८	उपसर्गि	१११	भोगि	१६२	
२३९	उपसर्गि	१०९	भोगि	१६२-१०१	
१४८	उपसर्गि	३८	भोगि	३८	
१४८	उपसर्गि	१२२	भोगि	१४८	
१४८	उपसर्गि	१०८	भोगि	३९	
१४८	उपसर्गि	१४८	भोगि	३३	
१४८	उपसर्गि	१४८	भोगि	१४८-१८६	
१४८	उपसर्गि	११५	भोगि	१४८	
१६८	उपसर्गि	३७	भोगि	१४८	
१४५-१४८	उपसर्गि	१३२-१६८	भोगि	११५	
१४६	उपसर्गि	१९३	भोगि	१४८	
३४-१०६	उपसर्गि	१४८-१८६	भोगि	३४	
४३	उपसर्गि	भोगि	भोगि	१६९-१८४	
१९७	उपसर्गि	१०६	भोगि	४३	
१०९	उपसर्गि	भोगि	भोगि	८१-१६९	
१४४	उपसर्गि	१०७	भोगि	१६९	
१९८	उपसर्गि	१०७	भोगि	१६९-१०१	
१५३	उपसर्गि	७४-८४	भोगि	१५८	
८६	उपसर्गि	८४	भोगि	१४८	
१९८	उपसर्गि	भोगि	भोगि	१६९-१९५	
८३	उपसर्गि	१०१-१९५	भोगि	१४८-११५	
३७	उपसर्गि	८६	भोगि	१४८-१९७	
३४	उपसर्गि	१९९	भोगि	१४८	
१३३	उपसर्गि	७३	भोगि	८१-११५	
१४८	उपसर्गि	१९५	भोगि	८३	
१५५	उपसर्गि	८६	भोगि	३४	
१०७	उपसर्गि	१४८	भोगि		
७६-१०७	उपसर्गि	८६	भोगि		
३४	उपसर्गि	१६९	भोगि	१०७	
१०७	उपसर्गि	१६९	भोगि	८०	
१६७	उपसर्गि	३३-१०३	भोगि	८३	
१	उपसर्गि	१०७-११५	भोगि	८३	
१६६	उपसर्गि	१०७-१०७	भोगि	८३	
१७५	उपसर्गि	१०७	भोगि	१३६	
१५	उपसर्गि	३	भोगि	११-११३	
१६५	उपसर्गि	१६५	भोगि	३५	
३६	उपसर्गि	१११-१०३	भोगि	१०७	

ध्यायसूत्रम्	पत्रम्	ध्यायसूत्रम्	पत्रम्	ध्यायसूत्रम्	पत्रम्
आयामात्र	११५	अभिषेक	११८-१५५	उद्देश्य	१४४
आमिष	११७-११८	आमिषसर्ग	१७५-१९३	उद्देश्य	१३
आरोग्य	१७	गण	८०	उद्देश्य	१८-१९१
आदिनि	६०-८४	गार्हपत्य	१७	उद्देश्य	१४८
आशय	१४८	गार्हपत्य	८०	उद्देश्य	१०७
आशयसूत्रम्	११	गार्हपत्य	११	उद्देश्य	७९
आशयसूत्रम्	११-१२	गार्हपत्य	१४८	उद्देश्य	१४८
आशयसूत्रम्	६३	गार्हपत्य	८३	उद्देश्य	१८४
आशयसूत्रम्	६५	गार्हपत्य	३६	उद्देश्य	३८
आशयसूत्रम्	६५	गार्हपत्य	१४८	उद्देश्य	१६९
आशयसूत्रम्	१८६	गार्हपत्य	३-४	उद्देश्य	१६८
आशयसूत्रम्	१४८	गार्हपत्य	८४	उद्देश्य	१३५
आशयसूत्रम्	१५५	गार्हपत्य	१५५	उद्देश्य	१०८-२००
आशयसूत्रम्	१०७	गार्हपत्य	८३	उद्देश्य	१४८
आशयसूत्रम्	३६	गार्हपत्य	१४८	उद्देश्य	१३५
आशयसूत्रम्	१५५	गार्हपत्य	१४८	उद्देश्य	१४८
आशयसूत्रम्	१६२	गार्हपत्य	३९	उद्देश्य	४६
आशयसूत्रम्	१५५	गार्हपत्य	१४८	उद्देश्य	४६
आशयसूत्रम्	१४८	गार्हपत्य	१४८	उद्देश्य	४६
आशयसूत्रम्	११२-११४	गार्हपत्य	१६२	उद्देश्य	१४८
आशयसूत्रम्	२१५	गार्हपत्य	३८	उद्देश्य	८९
आशयसूत्रम्	२१५	गार्हपत्य	१४८	उद्देश्य	११०
आशयसूत्रम्	८३	गार्हपत्य	१४८	उद्देश्य	६०
आशयसूत्रम्	३८	गार्हपत्य	१०७	उद्देश्य	६०-६६
आशयसूत्रम्	२५०	गार्हपत्य	१४८	उद्देश्य	१०८
आशयसूत्रम्	१४८	गार्हपत्य	१४८	उद्देश्य	८३
आशयसूत्रम्	१२१-१४८	गार्हपत्य	८०	उद्देश्य	३६
आशयसूत्रम्	१००	गार्हपत्य	३९	उद्देश्य	४०
आशयसूत्रम्	८४	गार्हपत्य	२५८	उद्देश्य	१३६
आशयसूत्रम्	४५	गार्हपत्य	४६	उद्देश्य	१५५-१८४
आशयसूत्रम्	१४८	गार्हपत्य	१५५	उद्देश्य	१५
आशयसूत्रम्	११५	गार्हपत्य	८०-१४८	उद्देश्य	१२
आशयसूत्रम्	१३०-२१५	गार्हपत्य	१४८	उद्देश्य	७९-८९
आशयसूत्रम्	१०६	गार्हपत्य	२३५	उद्देश्य	४४-९८
आशयसूत्रम्	१५५	गार्हपत्य	८३	उद्देश्य	६५
आशयसूत्रम्	२४५	गार्हपत्य	८४	उद्देश्य	१०८
आशयसूत्रम्	१४८	गार्हपत्य	२६५	उद्देश्य	२५५
आशयसूत्रम्	१६२	गार्हपत्य	३७-१८४	उद्देश्य	१९७
आशयसूत्रम्	१४८-२१५	गार्हपत्य	१५५	उद्देश्य	१४८
आशयसूत्रम्	१३५	गार्हपत्य	८०-१५२	उद्देश्य	२५०
आशयसूत्रम्	१०	गार्हपत्य	३७	उद्देश्य	१९८

धातुरूपम्	पत्रम्	धातुरूपम्	पत्रम्	धातुरूपम्	पत्रम्
कर्मि	१४७	गिग्मलित	१०६	गिग्मजित	१५७-१८४
क्षरय	२५५	गिरिगण्य	१०७-१०६	गियक्क्षति	१०७
क्षवि	२५५	गिच्छाडित	१६८	गिराकृत	१६९
क्षंसि	१४७	गिच्छुद्	१०८-१६८	गिराणत	१६९
क्षमि	३०-१४८	गिच्छोडण	१०६	गिरिक्खति	१०७
क्षीय	८१-१४७	गिच्छोडित	१६८-१०१	गिलिक्खति	१०७
क्षुद्रायित	१४८	गिजायंत	१९९	गिलुलित	१०१
क्षुपित	१४८	गिज्जाय	३४	गिलुंचित	१६८
क्षामित	१४८	गिज्जायति	१०७	गिल्डचित	१६८
		गिद्धित	८१	गिह्किखत	१०१
द्वित	१९८	गिद्रुत	१४८-१९७	गिह्किखण	१०६
द्वेदय	१९७	गिद्रुममाग	१३६	गिह्किखत	१६२-१९८
		गिद्रुमंत	३७-१३५	गिह्किहित	१५७
द्व-क्षति	२५४	गिद्रुवति	८०	गिह्कुवित	१०१
द्वैव	३८	गिद्रुील	१६९	गिह्कुहित	१०६
		गिगादित	४६	गिह्कुलेड	१०८
गच्छति	८३	गिणायय	१९८	गिह्कोफित	१९८
गच्छित	८१	गिणामित	१६८	गिह्कोलित	१६८-१९८
गच्छदित	२१७	गिण्णीत	१०१	गिबजंत	३६
गमंसित	२५८	गिण्णत	१९८	गिबग	३६-१३५
गमोच्छ	१५५	गित्यगित	१०१	गिबसिहिति	८४
गसिजति	५६	गित्युद्	१०१	गिवासंत	३८
गदिनि	८४	गिदहत	२४६	गियुक्कु	१११
गदिस्ति	२६५	गिदिजति	२४३	गिवेसंत	१३६
गिद्वृति	८०-१०८	गिदिसे	१४-३६	गिवेसित	१४७
गिक्कायित	१९८	गिद्दीण	१०१	गिवोह्यप	१०८
गिक्कज	१८४	गिद्धावति	८०	गिवोहित	१०१
गिक्कजित	१६९-१०१	गिद्धाडित	१६८-१०१	गिवद्विजमाग	१९८
गिक्कुंजण	१३०	गिद्रोत	१०६	गिग्बदित	१०१-१९८
गिक्कुंचित	१५७	गिप्पतित	१६९	गिन्त्रत्तते	८३
गिक्कुट्टित	१९८	गिप्पीलित	२५५	गिन्वाडित	१६८
गिक्कुट्ट	१९८	गिप्फजति	२५७	गिन्वामग	२६०
गिक्खणंत	३८-१४४	गिप्फाडित	१६९	गिन्वामित	१६९
गिक्खणंती	१६९	गिप्फावित	१०१	गिन्वास्सित	१०१
गिक्खणण	१०१	गिप्पीलित	१६८	गिन्वाहित	१५५
गिक्खण्ण	१०८	गिप्फेडित	१०१	गिचिबट्ट	१०१
गिक्खत	१४८-१६८	गिपोवतं	२	गिच्युण	१२१-१९२
गिक्खिख	८०	गिदमग	१६२	गित्तण	३६-३८
गिक्खिख्यमाण	१९८	गिदमामित	१०६	गित्तरति	१०८
गिक्खुस्सति	१०८	गिमिहंत	३७	गित्तरमेति	१०७
गिगलित	२५५	गिमीहंत	३६	गित्तरपेति	१०८
गिगण	१०८	गिमीडित	१४८	गित्तिव	१६८
गिगणिस्यति	७६	गिग्मजण		गित्तीदंत	३६-३८

धातुरूपम्	पत्रम्	धातुरूपम्	पत्रम्	धातुरूपम्	पत्रम्
गिसुद	१९७		घ	पगडित	२५५
गिसेयति	१२३-१९७	ययित	२४५	पगडैत	३८
गिस्सरित	१०८-१९९	ययैत	३८	पपंगग	१९३
गिस्सरति	१०८-२४६	ययंत	३६	पपंगंत	३९
गिस्ससंत	३७-१३५	ययित	१४८	पपंगग	१४८
गिस्ससित	१५५-१६८	येयिद	१४८	पपटायण	४४
गिस्ससति	१०८		द	पपडित	३८
गिस्सारित	१०८-१६८	दुमग	१४७	पघालंविज्जमाण	१९८
गिस्सावित	१०१	दलायते	८३	पघालेयित	१९८
गिस्मित	१६२-१०१	दलिय	८०	पघट्टादित	१४८
गिस्सिपित	१०१-१८६	दरसामो	२३६	पघट्टेडित	१४५-१८४
गिस्सिपेमाण	१३५	दायते	८३	पघट्टोडित	१६८
गिस्सुंघित	२५५	दाडित	८०-१४८	पजायति	२९
गिहित	१११-१४८	दाहित	८४-२३६	पजायते	११०
गीणित	१९८	दिस्सित	१०५	पजायिरयति	१६९
गीणीयमाण	१९८	दिस्सिहित	२३६	पजादिति	६६-७९
गीरुक्कथ	१०१	दिससड	८	पजुवामंत	१९७
गीहरति	१०८	दिससते	८३-१०८	पजोवत्त	२७७
गीहरैत	१३६	दिससदिति	८४	पडिओयुत	१६९
गीहारेति	१०८	दीसति	८७	पडिगमिस्सति	१९२
गीहित	१०७	दुस्सित	१०५	पडिण्डुद	२३६
गुमज्जु	३९	देति	८३	पडिण्डुद	१६८-१००
गूण	१४८		घ	पडिदुद	१६९-१०१
गेय	१८	घणित	२३९	पडिणामित	१०१
गेछुण	४४	घयित	१४८	पडिणायित	१६९
गेह्यति	८०	घंत	१६८	पडित	१२१-१६९
ग्हाण	१९३	घंसित	१४८-१९७	पडिदिण्ण	१०१
ग्हात	८१	घावति	८०	पडिदिध	१६९
ग्हापिति	८४	घावित	१४८	पडिपिक्खिया	१५
ग्हायमाण	३८	घाहित	८४	पडिदुग्गते	८३
ग्हाहिते	८४	घुत	८०-१४८	पडिदुद	१०१
	त	धूतयत्त	२५४	पडिमुंडित	१०१
वच्छेमाण	३८	धेत सं.हेय	३२	पडिळोलित	१६९
वणित	१४७	घोवमाण	३८	पडिनिक्खिज्ज	३३
वण्हाइत्त	१२१-२४६		न	पडिसरित	१६९-१०१
वदे	१०	निवेशय्	११	पडिसामिज्जमाण	१९८
वंडित	१४८	निवेशेति	८३	पडिसामित	२४५
वसित	१४८		प	पडिसिद	१०१-१९८
वतिरण	१४७		८०-१६९	पडिसेधित	१४८
विलेमाण	१६९		२१५	पडिहरित	१६९
वुच्चित	१४८		२५४	पडिहारित	१०१
वुरिथ	२६०		८०	पडति	८३
वोगित	१४८				

धातुरूपम्	पत्रम्	धातुरूपम्	पत्रम्	धातुरूपम्	पत्रम्
पटित	८१	परिचेष्टति	८०	पविट्ट	८६
पटिहिति	८४	परिदेवत	३६	पवियात	१९४
पगामयंती	१६९	परिदेवित	१५५-१६८	पविसित	१६९
पगौवते	५६	परिधावति	८०	पविसिजु	२६५
पठंत	३६	परिपुच्छेज्ज	७६-७९	पवेकृतति	१९३
पतिनिगृह्णीती	१६९	परिपुच्छेज्जा	६०	पवेकखपि	१९४
पतित	१५५	परिभ्रमते	८०	पवेखति	१९४
पतिसिञ्जति	१२६	परिभीत	१०८	पवेदये	६७
पते	४५	परिमञ्जित	२४५	पवेदिय	१
पथारिय	११७	परिमथियत	२१५	पवेदेज्ज	४३
पथाराइतु	७	परिमद्वित	१६२	पवेदेज्जो	२४-४७
पदे	४५	परिलीढ	१३३-१७६	पवेसित	१०७-१९८
पद्यावति	८०	परिचत्ते	८०	पवेसियमाण	१९८
पधोवण	१९३	परिचद्वित	१६९	पलस्सई	१७
पधोवत	३९	परिसङ्कतो	३६	पलस्सप	११
पपतण	१४८	परिसकंत	१३५-३७	पलस्सति	२४
पपुव	१५५	परिसडित	१६९	पलस्सते	६७-८७
पप्फडित	१७१	परिसाडिय	८०	पसंखित्त	१७१
पप्फोवित्त	१६९	परिसुक्क	१७१	पसाद्वित्त	१४८
पपम्भट्ट	१४८-१७१	परिसोडित्त	१६९	पसाधिहिति	८४
पपुक्क	१६९-१७६	परिस्संत	१२१	पसापति	८३
पपुञ्जति	१०८	परिहायति	२५०	पसारित	१०८
पपुच्छिद्ध	१६९-१७१	परिहायिस्सति	१६९	पसारोति	१०८
पपुट्टे	१७१	परिहित	१३०-१९३	पसुत्त	१५५
पपुत्त	१३०	पलित	१५५	पस्से	१९५
पप्पुपु	२१५	पल्लिहित	१०६	पहत	२००
पप्पुट्ट	१३०-१७६	पल्लोहित	८१-१९७	पहिञ्जते	८१
पपुव	१७१	पल्लोयंत	४२	पाउणेति	८३
पपुळाह्व	१५५	पल्लोलित	१६९-२१७	पाउत	४१-१९३
पपुळापमाण	१३५	पल्लोलिय	८१	पागाडिय	२४५
पपुळापंत	३७	पवक्खामि	५९-८१	पागुत	१३०-१६८
पपुहिञ्जण	७	पवज्जे	९	पाठेति	८३
पपाहिति	७६-९८	पवट्टित	२५५	पातित	१४८
पपाञ्जित	१०८	पवडंत	१३५	पातुणंत	३८
पपावत्त	२५७	पवत्त	८	पावह	५
पपावधिप	१६९-१७१	पवयण सं० प्रपतन	४५	पावनि	८१-१२३
पपाह्व	२००	पवविस्सामि	९	पाविस्सपति	१९२
परिच्छिन्न	१०८	पवसित	१९३	पाविस्ससि	१९२
परिकथीण	६२	पवादित्त	१६८	पाहिति	८४
परिस्सट्ट	१४७	पवायण	१४८	पांगुहिति	८४
परिस्सवत्	१७१	पवायित	१७०	पिणिदंत	३८
परिवृत्त	११	पवासण	१७०	पिणोपण	१४७
परिवृत्त	८०	पवित्रामिपा	५६	पित्त	८१
				विचयिष्ठा	४२

धातुरूपम्	पत्रम्	धातुरूपम्	पत्रम्	धातुरूपम्	पत्रम्
विदति	८३		म	माँति	४१
विवाति	१२१	वावति		विदिँति	४५
विहित	१९८	वावते		वुवति	८७
वीणित	३८	वाग	३०-१९८	वुविदिँति	९९
वीत	१८४	वागिजते		वुवगइ	४
वीटित	१४८	वट्ट		वुगेवृग	५६
वुविट्टममाण	१९३	वागति		वुदिँति	१२१
वुविट्टत	३९-८०	वागिग			य
वुवृष्टे	७९	वागिगु		वुंजइ	१३
वुवृष्टेन्ना	३६	वागते			र
वुवृफय	३०	वरेति		वन्ति	१४८
वृथित	३९-१५५	वरेते		वरेदिँति	८४
वृथिय	४६	वविरयति		ववयते	१०७
वृथ	१४८	वविरयते		वविँति	१४८
वृथित	१०१	वनेँत		वनेँ	१०३
वृथवति	१०७-१४१	वनेँति		वृगमागइ	२५९
वृथवते	१०७	वावति		वृग	१५५-१६२
वृथवमाण	१६९	वावत		वृगावड	३४
वृथवत	४२	वावमाण		वृदित	१६८
वृथवत	१४५	वागिग		वृदुपित	२५४
वृथवति	८४	वागि		वृवावड	१६८
वृथवते	१०७	वुविरयत		वृवित	१४८
वृथित	११५	वुव		वृवित्सति	१०५
वृथवविद्व	१५२	वुंजति		वृवत	३९-१३५
वृथवति	८७-२४३	वुंजते		वृवत	३७
		वुंजित्सति		वृवण	२५५
वृथवते	८३-१०७	वृथित			ळ
वृथवति	८४	वृथित		वृथवते	१२७-१९७
वृथवति	३०	वृथित		वृथ	८०-२०७
वृथवति	१४८	वृथित		वृथवति	७७
वृथवति	३८	वृथित	म	वृथवति	३९७
वृथवति	१४४	वृथित		वृथवति	३०-९८
वृथवति	१६९	वृथित		वृथित	१९८-२०७
वृथवति	१५५	वृथित		वृथित	२४५
वृथवति	८०	वृथित		वृथित	८३
वृथवति	१४८	वृथित		वृथित	८६
वृथवति	१६८	वृथित		वृथित	१३०-१४८
वृथवति	१४८	वृथित		वृथित	१४८
वृथवति	८०	वृथित		वृथित	१०६
वृथवति	१९५	वृथित		वृथित	८४
वृथवति	१४९-६९	वृथित		वृथित	९
वृथवति	१७	वृथित		वृथित	१४८-१६६
वृथवति	१४७	वृथित		वृथित	
वृथवति	८०	वृथित		वृथित	
वृथवति	८३	वृथित		वृथित	
वृथवति	१९५	वृथित		वृथित	
वृथवति	१४९-६९	वृथित		वृथित	
वृथवति	१७	वृथित		वृथित	
वृथवति	१४७	वृथित		वृथित	

धातुरूपम्	पत्रम्	धातुरूपम्	पत्रम्	धातुरूपम्	पत्रम्
वस्त्वामि	१०८	विस्वररह्	४५	विरियणम्	११७
वस्त्वामिस्त्वामि	११२	विन्त्रिण्ण	१०८	विद्	१८
वञ्जिहिते	८४	विन्त्रित	११९	विद्	१४८
वटति	६६	विन्त्रिलत्	३८	विषत्त	१५५
वटिहिति	८४	विन्त्रिलन्न	८०-१६८	विघावति	८०
वट्टप	९	विन्त्रिलरे	४५	विधीयति	६३-१०७
वट्टीयत्	२३६	विन्त्रिलवमाण	१३६	विधीयते	१११
वचने	८३	विन्त्रिलये	१०८	विपडंत	१२२
वशियत्	११७	वित्रद्वित	१४८	विपाडित	१६८-१७१
वदे	६६	वित्रिषंत	१३५	विष्पकद्रुत	११५
वधिससति	७९	विगलिय	८०	विष्पक्रिण्ण	८०-१०८
वद्ययिस्त्वामि	२३६	विगिलते	१०७	विष्पघोलति	८०
वक्त्रानि	१०७	विघोलने	८०	विष्पज्ञोयित	२००
वदंत सं० पतव्	४५	विचलित	८०	विष्पमुक्क	११५
वचस्वति	११५	विच्छिण्ण	१२२	विष्परिचेष्टते	८०
वंत	१७१	विच्छित्त	१६८	विष्परिवसते	८०
वंदते	६	विच्छिन्न	१७१	विष्पलोटित	१५५
वदाभि	६	विच्छुद्ब	१६८-१७१	विष्पसारित	१०८
वंदिञ्ज	६	विच्छोमण	१४८	विभापूजो	४४
वंदित	३५५	विजाणेज्जो	२३५	विभावेत्तूण	८६
वाद्दय	८१	विजाणेति	८३	विभागित	१०८
वादित्र	१४५	विज्जा	१८-२१	विमिसंत	६
वारणम्	१२२	विन्त्रिस्वति	८३-१७६	विर्यंमंत	३७
वापए	१०	विन्त्रिहिति	९०	वियाकरे	६१
वापंत	२५४	विन्त्रिहिते	८१-९८	वियागरंति	१०
वापजो	१२९	विन्त्रेहिति	७५-७९	वियागरिज	७
वापेदिति	८४	विन्त्रेहिते	११०	वियागरे	३६-६०
वाविद्	१०८-१३०	विज्जवित	१६८-१७१	वियागरेज	१४९
वायति	२५७	विज्जहीयति	२५०	वियाजिज्जमाण	११८
वासित	८३	विणट्ट	१६८	विपाण	१९
वादानि	१०७	विणत्	१५५	विपाण	२४
वादित्र	१५२	विणमंत	३७-१३५	विपाणिज्जो	१४-८४
विभाकरे	४७	विणस्सिस्सति	१६९	विपाणिया	२२
विभापरे	१२-६१	विणासण	१४८	विपाणोया	२४६
विकट्टुनि	८०-१०८	विणासिज्जमाण	१९८	विपाणेज्जो	१६
विकट्टित्त	१०८	विणासित	१०८-१६८	विपाणेय	१६
विकट्टित्त	१५५	विणिट्टुत्	१०८	विरुम्भति	११७
विकट्टण	१३०	विणिक्कोलत्	३६	विरोहेत्	३३
विकट्टिय	१७	विणोच्छित्त	४२	विरोहित	१४८
विकट्टण	१५५	विण्णात्ण	१२७	विट्ठित	४४
विकट्टण	१८४	विण्ण	११७	विट्ठित	८३
विकट्टण	१३०	वित्तव	११७	विट्ठित	३७
विकट्टण	४४	वित्थत्	११७		

धातुसङ्गम्	पत्रम्	धातुसङ्गम्	पत्रम्	धातुसङ्गम्	पत्रम्
विदिदिदिदि	८४	समासोपग	१९३	संगर्भ	१४८
विद्विद्वि	१०९	समासोपग	१००	संगर्भ	१८९
विशोक्त	४३	सन्निपादे	५	संग्रहसङ्ग	१९८
विशोपि	३४	समुद्देश	८७	संग्रह	१०७
विश्रयवे	५	समुद्देशोप	९०-८०	संग्रहसङ्ग	१३९
विश्रयवे	५	समुद्देशोप	१०-८०	संग्रह	१३५
विश्रयवे	१९९	समुद्देशोप	१४९	संग्रह	१३५
विश्रयवे	१०८	समुद्देशोप	१९३	संग्रह, संग्रह	४७
विश्रयवे	८०	समुद्देशोप	८४	संग्रह	१००
विश्रयवे	१९८	समुद्देशोप	१९५	संग्रह	१०५
विश्रयवे	३०-८१	समुद्देशोप	८१-१९५	संग्रह	५
विश्रयवे	१०८	समुद्देशोप	८३	संग्रह	८४
विश्रयवे	१३३	समुद्देशोप	८३	संग्रह	८
विश्रयवे	१४८	समुद्देशोप	१४८	संग्रह	१०१
विश्रयवे	१००	समुद्देशोप	१३३	संग्रह	३४५
विश्रयवे	८३	समुद्देशोप	३५४	संग्रह	१०७
विश्रयवे	८३	समुद्देशोप	८३	संग्रह	३३३
विश्रयवे	८३	समुद्देशोप	१०५	संग्रह	३३३
विश्रयवे	१५५	समुद्देशोप	१४८	संग्रह	३५४
विश्रयवे	१४८	समुद्देशोप	८३	संग्रह	३३३
विश्रयवे	३३९	समुद्देशोप	३४९	संग्रह	३९-८३
विश्रयवे	३३९	समुद्देशोप	३४९	संग्रह	८०
विश्रयवे	१४८	समुद्देशोप	३४०	संग्रह	३५०
विश्रयवे	३३०	समुद्देशोप	१०९	संग्रह	८४
विश्रयवे	१४४	समुद्देशोप	८०	संग्रह	३५
विश्रयवे	११५	समुद्देशोप	१३३	संग्रह	७९
विश्रयवे	१५३	समुद्देशोप	४३	संग्रह	७९
विश्रयवे	११५	समुद्देशोप	८३	संग्रह	३३५
विश्रयवे	१९८	समुद्देशोप	१३	संग्रह	८३
विश्रयवे	११५	समुद्देशोप	३	संग्रह	३९-३३५
विश्रयवे	३०७	समुद्देशोप	१४	संग्रह	३५-३४५
विश्रयवे	३३९	समुद्देशोप	५५	संग्रह	३५
विश्रयवे	१९५	समुद्देशोप	३०	संग्रह	१४
विश्रयवे	३३५	समुद्देशोप	१०९	संग्रह	१४८
विश्रयवे	३५८	समुद्देशोप	११५	संग्रह	४३
विश्रयवे	४	समुद्देशोप	३३-११५	संग्रह	१४८
विश्रयवे	५५	समुद्देशोप	८३	संग्रह	१४८
विश्रयवे	८३	समुद्देशोप	३०	संग्रह	१४८
विश्रयवे	३०	समुद्देशोप	१९८	संग्रह	८७-९०
विश्रयवे	५	समुद्देशोप	३९	संग्रह	१००
विश्रयवे	१९८-१००	समुद्देशोप	११५	संग्रह	८४-३३५

ग

घ

चतुर्थ परिशिष्टम्
(१)

अंगविज्ञानव्याध्यायमध्यगतानामङ्गनाम्नां कोशः

अंगनाम	श्लोकांकः	अंगनाम	श्लोकांकः	अंगनाम	श्लोकांकः	
२ अक्षयक	४	२ अंसकूट	३०६	२ अक्षयक	२-१६०-१२८०-१०५६	
२ अक्षय ११८१-१२४६ १२८५-१२९८-१५२९-१६४१-१७२१-१७३७-१७३८-१७६२		१ अंससीड	११९४-१६०८-१७२९	२ अक्षिद्विधा	१०५३	
२ अक्षयप्रसंभर	७३६-१२४६	१ अंससीकामिय	११२८	२ अक्षय २-१६०-११८१-१२९८-१४६९-१५३९-१५७०-१६०२-१६२४-१६४१-१६७३-१७०४-१७१७-१७२१-१७२८-१७६३		
२ अक्षयदण्ड	१४७०	१ अक्षय	१०३३			
२ अक्षयकूट	३०६-१०२६	१ उदर ५-४८२-९९०-१०९६-१२००-१२८४-१६६९-१६९८-१७०४-१७३३-१७६०		२ अक्षयपुत्रिया	१९३	
२ अक्षयगुटिका	१९४	१ उदरपुरिम	६०८	२ अक्षयसम	६५७	
२ अक्षयसद	१५९९	१ उदरसंभर	७३८	२ अक्षयगोटी	१९४-१७४५	
२ अक्षयवशिन्नी	१९४	१ उर ४-४८१-५२२-११९४-१५००-१५६३-१६०१-१६४१-१६५७		२ अक्षयसीड	१५६३	
२ अक्षयकण	१७४५	१ उर १६६८-१७१८-१७२०-१७२५-१७६०		२ अक्षयसुख	२-१६६	
१ अक्षयस	१५७८			२ अक्षयसंभर	७३७	
२ अक्षयसद	१५७८	१ उरपुरिम	६९८	२ अक्षयसुखी	१७६३	
२ अक्षयसंभर	१२८६	१ उरसंभर	७३८	२ अक्षयसंधि	५६५-१५१३	
२ अक्षयसी	२-१४६९ १०२०-१७७४	१ उरसमो	१५१२	२ अक्षयसो	१००९-१०२६	
२ अक्षयसिधा	१०५३	१ उरसपना	६३८	१ अक्षयसुरिका	१०३१	
२ अक्षय १५०९-१५२९-१६२३-१६६८		२ उरसपारविणमम	६३८	२ अक्षयस	५६०-१०२५	
१ अक्षयदान	१०५८	१ उर	१२००	२ अक्षयस	१५३९-१०२५	
१ अक्षयसमु	१५९३	२ " ५-१५००-१५२१-१६६७-१७३८-१७४७-१७६३		२ अक्षयस	५२४	
२ अक्षय	९६०-१२८४			२ अक्षयस	२-११७९-११८१	
१ अक्षय	१५१३	२ अक्षयसंभर	७३६	१ अक्षयसिम	६९०	
अक्षय	१९५	२ अक्षयस	१०७३	अक्षयस	१२८०	
२ अक्षयपना	३	२ अक्षयसिमम	६३८	अक्षयस	१९०	
२ अक्षय	२-१२८०-१७५६	२ अक्षयसिम	६५८	अक्षयस	१६३३	
१ अक्षयसंभर	१२४६	२ अक्षयसिम	६९८	१ अक्षयस	१०३०	
२ अक्षय	१०७४	२ अक्षयसिम	५३३	२ अक्षयस	१५१३	
२ अक्षय	१०५३-१०५६	२ अक्षयसिम	१-४८१-९६०-११४९-११८१-१२८५-१३८०-१५१०-१६०३-१६६३-१६९४-१७१७-१७३३-१७४७-१७६३		१ अक्षयस	३०६
४ " ४-१५१०-१५३३-१५२९-१७४५				२ अक्षयस	५	
१६ अक्षय १९०-१५१०-१५३३-१५३३-१७४५-१७५३		१ अक्षयसिम	१९५-१७००-१६०३	२ अक्षयस	१३००	
२० अक्षयस	१६०३	२ अक्षयस	१७००-१५९३-१०३८-१०४६-१०४९	१ अक्षयस	१००१५९-१५३१-१५३१-१०००-१०५०-१०६०	
१ अक्षयसंभर	२०६	२ अक्षयस	१०३६-१०४६-१०५८			
१६ " १००३		२ अक्षयस	७३६	१ अक्षयस	१०३८	
१६ " १०३५		२ अक्षयस	६९८	१ अक्षयस	१६०५	
२० अक्षयसिद्ध	१६०३	२ अक्षयस	५३३	१ अक्षयस	१५६३	
२ अक्षयस	१०३३	२ अक्षयस	१-४८१-९६०-११४९-११८१-१२८५-१३८०-१५१०-१६०३-१६६३-१६९४-१७१७-१७३३-१७४७-१७६३		२ अक्षयस	१-१५१५-१६०३-१०३९-१०५३
१ अक्षय	३-९९०-१६६०					

अंगनाम	श्लोकांकः	अंगनाम	श्लोकांकः	अंगनाम	श्लोकांकः
२ गलुक	१५१९-१६३२-१७२९	२ जंतुवस्तुरिम	६९७	१ लल	१६६८
२ मंत्र	४५२४-११९४ १२४६	२ जायु	१२८४-१५१९-१६०८-	२ "	१४६९-१७२०
२ गंड	२-१९३-५२४-९६७-११४९- ११८१-१५००-१५३९-१५६३- १६२४-१६४१-१७२५-१७३३- १७४०	२ जाणुपचित्तम	१६०८	३ लाल-क	१९४-१२८५-१२८७- १०५६
२ गंडमख	६५७	२ जाणुमीम	१५३८	२ विक	१७२०
२ गंडभंवर	७३८	१ जिन्मा	१९५-१२८५-१२८०- १३३१-१३४९-१५२९- १५६३-१५७७-१६२४- १६४१-१७०९-१७२०- १७३८-१७५०-१७५६	२ यग	४-११२९-११७७-११९४- १२४६-१२९८-१५००-१५३८- १६४१-१७३३ १७४०
१ गीदन्मंत्र	७३८-१२८६	२ डेटिक	१५१९	२ यगपटी	१९६
१ गीमा	१९५-११४९-१२४६-१२८४	२ णवण	१७०९-१७५९	१ यगंतर	४८२-९९७-१६४१-१६५७
१ गीमापच्छिमभाग	६१७	२ णद	१२८५	२ यनिका	१५२९
२ गीमहेट्ट	१७२६	१ "	१००५-१७५५-१७६७	यूणा	१९४
१ गुदन्मंत्र	७३७	२० णद-ग	१२४६-१५७७-१६०१	यूरक	१९६
१ गुन	१९५-१७१७-१७३७	२० णदमिहा	१७४३	द्व	१२८५
२ गोष्क	६-१०१५-१०६७-१०७३- १२०६-१४७०-१५१२- १६३२	१ णहसेडि	१७५०	१ "	९६७-११८१-१२४६-१६२४- १७७४
२ गोष्कग	१२८४	१ णागो (णामि ?)	४८२	२ "	५२४-११४२-१६०१-१६४१
१ पाग	१३३१-१३४९	१ णामि	१९६-१०९६-१४६९- १५३८-१७२७	१ दंतमम	३-१२८७
१ चक्यु	१३३१-१३४९-१७२४	१ णामिब्रह्मन्तर	७३६	दंतवेडी	१९५
२ चउ	५	१ णामिम	१७१७	१ दंतवेडा	३
१ चिकु	१५१०	२ "	१६७३	दंतमिहा	१७५०
२ चूक	१९६	१ णामा	४८१-९६७-११४९- ११८१-१५१०-१६०२- १६२४-१७०४-१७२९	१ दंतसेडिका-डी	१७४५-१७५०
१ छगडी	१९३	२ "	१५७९-१७२७	दाडा	१९५
१ छि	१९७	१ णाम्याड	१६०२	१ देहपरित	१३३१-१३४९
२ जणुपुट-ग	१७२९-१७४३	२ "	९६७-११४९-१२९८- १३९७-१७०९-१७४६	धमगी	१९७
२ जणुगमंथि	१५१२	१ णाम्याड	१६०२	२ पओड्ड	१९६
२ जनु	४-५२२-११७९	२ "	९६७-११४९-१२९८- १३९७-१७०९-१७४६	१ पट्टि	१९५-११९४-१५००-१५१२- १५२१-१५६३-१६०८- १७१८-१७४०
२ जनुमज्जा	५२४	१ णाम्याड	१६०२	२ पट्टीपच्छिमभाग	६१७
१ जनु	१६६८	१ णाम्याड	१६०२	२ पट्टीगस्म	१०९६
२ "	१०३८-११२९-११९४- १५२९	१ णाम्याड	१६०२	२ पण्डिका	१९७
१ जनुभंवर	९९७	१ णाम्याड	१६०२	२ पण्डी	१६३६-१६७३
१ जनुचर	४८१	१ णाम्याड	१६०२	२ पण्डितल	१५६९
२ जंघन्मंत्र	७३३	१ णाम्याड	१६०२	२ पण्डितपच्छिमभाग	६१८
२ जंबा	१९६-१०१५-१०७३-१०६६- १५०९-१५२१-१६३२- १६६७-१७४७-१७६३	१ णाम्याड	१६०२	२ पदेमिगी	१७५४
२ जंबापच्छिमभाग	६१८	१ णाम्याड	१६०२	२ पवाड्ड	३-९९८-१५२१-१६६७
२ जंबापस्व	६५८	१ णाम्याड	१६०२	३० पवन्तरगुल	१५६९
२ जंबापुमि	६९८	१ णाम्याड	१६०२	२ पस्व	४-५२२-११९४-१४६९- १६९८-१७६०
२ जंबापमज्जा	५२३	१ णाम्याड	१६०२	२ पाणितल	१२८७-१५६३-१५९९- १५७७-१६०१-१६०८-१७५६
जंबोरुडदेमंत्रभाग	३०५	१ णाम्याड	१६०२	२ पाणितलन्मंत्र	७३६
२ जंबोरुडदेमंत्र	७३८	१ णाम्याड	१६०२		

अंगनाम	श्लोकांक	अंगनाम	श्लोकांक	अंगनाम	श्लोकांक
२ पाणित्रलहितय	१५८६	२ सुम	११८१-१५२९-१५९९- १६९८-१७४५	१ [वयि] सीमपुरिम	६९८
६ पाण्डेहा	१५२९	१ शुमक	१९४	यटी	१९०
२ पाद्	६-१३३१-१३३९-१४७०- १६६७-१६९८-१७०४- १७३७-१७५९	१ शुमकंतर	११४९	२ वसग	१७२९-१७६१
१० पाद्गण	१६३२	१ शुमकंतरसं	४८१	२ वयगंतर	१७५८
२ पादतल	६-१०७३-१२०६-१२८५- १५६३-१५६९-१५७७- १६०१-१६०८-१६३२- १७५६	२ शुमगन्मंतर	७३८	१ वय	१६५०
२ पादतलहितय	१५८६	१ सुमंतर	३७६-१६२४-१६५७	२ संग	२-५२४-९६६-११८१-१४६९- १४७०-१५१२-१५३९-१६४१- १७१८-१७४५
२ पादपट्टि	५२३	२ शुमामंधि	५६५-१५१२	२ संधि	१४६९
२ पादपण्डि	१०१५	१ मय्य	१०९६	१ निरपट्ट	१
२ पादपस्य	६५८	२ मडिशमिया	१०५३	१ मिर	५२२-११५०-११८१-१५००- १५०९-१५२९-१५३९-१६२३- १६६८-१७६०
२ पादहितय	१०१५	२ मजिर्गंध	१५१२-१७२९	१ मिश्यापी	१९०
२ पादगुट्ट	१०१५-१०७३-१२०६- १६६७	२ मणिबंधहृत्पसतल	४	१ मिहा	१९३
२ पादगुट्टि	१०७३-१२०६	१ मय्यकृन्ना	१-४८०-९६६-१५३८- १६२४-१६४१-१६५७- १७२१-१७२५-१७३०	१ सीता	१९४
१० " "	१६३२-१७४४	१ मय्यकन्मंतर	७३८	१ सीमंतक	१-४८०
१० पादगुट्टिपय्य	१५५८-१६१३	१ मंस (मंसु)	१५८३	१ सीम	१-९६६-१३३१-१३४९- १३२४-१६४१-१६६८-१७२१
१० पादगुट्टिपोट्टिया	१६३२	१ मंसु	३७७-१५९१-१७०५-१७५७	१ सीमगुट्ट	१०३०
१ पाद्	१७३५-१७३८-१७६१	१ सुष	३-१२९८-१६५७-१६६८- १६९८-१७०४-१७१०-१७२०- १७२१-१७२८-१७३३-१७३५- १७६२	१ सीमपरिष्कमभाग	६१७
२ पेटिका	१६३२-१७६३	१ सुषपुरिम	६९०	२ सीमपरम	६५७
१ पोप्य	५-१०१०	१ मेहु	१२००-१२९८-१७३५-१७३७	१ मोनि	१६०२-१७२४
२ पण	१०९७-१२००	१ मेहण	४८२-१०९७-१६०२-१०१७- १७३८-१७५८-१७६१	१ मोनिमसंगंतर	७३७
२ पिजा	१९५	१ मेहगन्मंतर	७३६	१ मोस	१३३१-१३४९
२ पिजापरिष्कमभाग	६१८	१ मेहु	१५२९	१ हण (णह)	१५१९
२ पिजा	१५००-१५३८-१६३३- १६७३-१७२९-१७४७-१७६३	१ रोम	१५१९	१ हणु	१९५-११४९
२ बाहा	१३२८	१ रण्टाट-ट	२-४८१-१५३९-१५६३- १७६०	१ हण्य	१३३१-१३४९
१ बाहु	१३३१-१३४९	१ संका	१९०	२ "	९९८-११२८-१४७०- १७६९
२ "	३-९१८-११०१-११९४- १५०९-१५२१-१६६७- १७२८-१७४७	१ सेहा	१९०	१० हण्यगुट्ट	१०४४
२ बाहुगुटी	१९६-११२८	१ सीम	३७७-१५२९-१७०५-१७५७- १७६७	२ हण्यग	९९८
२ बाहुगुटीपरिष्कमभाग	६१८	१ सीमवार्गी	१६७३	३ हण्यगुट्ट	१५०९
२ बाहुगुटीपरम	६५८	१ सीमवार्गी	१९६-४८२-१०९६- १५९९-१६६८	२ हण्यगुट्ट	१३२८
२ बाहुगुटीपुरिम	६९८	२ ववयन	५-१०५९-११७५-१३००- १३८४	१० हण्यगुट्टि	१३४९
२ बाहुगुटीमग	५३३	२ ववयनमंतर	७३६	१० हण्यगुट्टिपरम	१५५८-१६३३
२ बाहुगुट्ट	६५८	२ वदी	१९५	१ दिवष	१३४९-१४७९-१५८६- १६५७-१७१०-१७२०-१७३५- १७४४
२ बाहुगुट्ट	५३३	१ वयि	१०९७-११००-१५०१	१ दिवष	४८१
२ बाहुगुट्टि	१४७०-१६६०	१ वयिपुरिम	६९८	१ दिवषपुरिम	६९०
२ बाहुगुटी	१५३८	१ वयिर्गी	५-४८१-१०१७-१३००- १५०१-१७१८	१ दिवष	९९०-११९७-१३००
१ मसुर	१३३१-१३४९				
२ सुकंतर	१०७३				

अंगविज्ञानवमाध्यायप्रारम्भे निर्दिष्टानां २७० अङ्गविभाजकद्वाराणां सङ्ग्रहः

द्वारनाम	द्वारांकः	द्वारनाम	द्वारांकः	द्वारनाम	द्वारांकः
अ		इ		ए	
१० अगणिकाङ्कानि	१४४	१४ इस्सरमृता	१३६	९ गंभीरा	१८२
१० अगोथा	१०६	१० इस्मरा	१३४	४ गोन्दा	२२३
७ अचपला	२२२			च	
१६ अणागताणि	११	१० उज्जुका	२०२	४१ चउरंसा	१२०
७५ अगायकाई	२३२	१४ उण्णवा	१८५	८ चतुक्कानि	२४२
१० अणिससरा	१३५	१० उण्हा	१८७	२ चत्तालीसनिवगा	२५४
२ अणू	१२५	२ उत्तममज्झिमसाधारणानि	२९	६ चपला	२२१
५० अण्णवणाई	२३५	२० उच्चमाणि	२५	२८ चलाणि	८
५० अनिकण्णहानि	२४	१७ उत्तरपच्चरियिमा	९२	३६ चंदागता	२०३
१६ अतिवचाणि	९	१७ उत्तरपुरायिमा	९३	१० जण्णिया	१७७
२ अईसगिया	१७९	१७ उत्तरा	८९	१० जन्मणा	१७५
१३ अघोनागा	९५	५ उत्ताणुम्मथका	२२४	१० जइण्णानि	२८
१ अपरिमिते	२७०	१२ उद्धमागा	९४	२० जंगमानि	१४७
५० अपसण्णअप्रमण्णा	९८	५ उवग्गहणानि	१२९	२५ जुसोपचया	१०७
४ अप्पविग्गाहा	१६१	९ उवचूला	१०६	२ जुचत्थेया	२१६
५० अप्पसण्णा	९७	५० उवहुता	१५४	२ जोव्वणत्थमज्झिमवयसाधारणानि	३८
२६ अप्पिया	१४०			१४ जोव्वणत्थानि	३४
२० अप्पोपचया	१०८	५० एक्कानि	२३९	उ	
४ अनुदीरमगा	१५९			६ डिआमासे	२४४
५० अन्मंतरअन्मंतरानि	१३	५० ओवातसामानि	१९	७ "	२४५
५० अन्मंतरावाहिरानि	१५	५० ओवातानि	१८	८ "	२४६
५० अन्मंतरानि	१२			९ "	२४७
२६ अवयिया	१४१	२ कण्णिया	२१४	१० "	२४८
१९ अविदरा	१९३	१० कण्हवण्णपडिमागा	५९	दिआमासे अस्सितवण्णपडिमागा	६८
५० अथोभातानि	२३	५० कण्णानि	२२	दिआमासे कोरैटवण्णपडिमागा	६९
२ असोतिवग्गा	२६२	१४ करणमंडला	११७	दिआमासे विचवण्णपडिमागा	७०
३३ अंता	१५०	५ काया	१२२	दिआमासे गिदलुक्खवण्णपडिमागा	७३
१६ अंबराई	२३६	१० किलिट्टा	२२९	दिआमासे गिद्ववण्णपडिमागा	७१
		१७ किल्ला	११०	दिआमासे पंडुवण्णपडिमागा	६३
आ		१० कुडिला	२०१	दिआमासे मणोस्सिलवण्णपडिमागा	६४
१२ आकाना	१३१	१ कोटिवग्गे	२६९	दिआमासे लुक्खवण्णपडिमागा	७२
२३ आतिमुट्टिकाणि	१४८			दिआमासे सुज्जुग्गामवण्णपडिमागा	६७
६ आयवा	२०४	ख		दिआमासे हरितालवण्णपडिमागा	६५
४ आयवमुद्विता	२०५	२ खत्तेअपेसेज्जानि	४५	दिआमासे हिंयुलक्खवण्णपडिमागा	६६
१० आयुक्काधिकानि	१४३	१४ खत्तेज्जानि	४१		
२० आयुप्पमागे वस्समत्तपमागानि	४७	२४ खरा	२००	ण	
१० आयुगेया	१८९			५८ णुंसकानि	३
१० आदाणीदारा	८३	ग		२ णुत्तिवग्गा	२६४
१० आदारा	८०	२ गतवालुगवण्णपडिमागा	६१	२० णानिकिसा	१०९
१० आदारादारा	८२	५ गह्णानि	१२८	७५ णायकाई	२३१
		२ गंधेया	१६९		

द्वारनाम	द्वारांकः	द्वारनाम	द्वारांकः	द्वारनाम	द्वारांकः
ल		१९ विवरा	१९२	३० संवा वामा	१०३
१० लुम्बगिद्धा	७८	१५ विसमा	१८४	५० सामकण्ढाणि	२१
१० लुकुपलुम्बा	७७	२ धीसतियग्गा	२५०	५० सामाणि	२०
१० लुम्बरा	७६	२ येतेज्जमुदेज्जाणि	४६	११ सिवा	१०४
व		१४ येसेज्जाणि	४२	१० सीवला	१८८
२० वट्टा	११८	स		७ मुकुमाला	१९५
१० वण्णकूकाह्काणि	१४६	५० सक्करका	१६६	७२ मुक्कवण्णपडिभागा	५४
१६ वत्तमाणाणि	१०	५० सक्का	१६४	२ सुग्घा	१५७
७५ वराहं	२३०	२ सट्टिवग्गा	२५८	१० सुदेज्जाणि	४३
४ वात्तमणा	१७३	५६ सण्हा	१९९	२८ सूयी	२२८
५० वापण्णा	१५५	१ सत्तवग्गे	२६६	११ सुराहं	२३७
१७ वामाणि	५	१ सत्तसहस्सवग्गे	२६८	२ सोम्मा	२११
१६ वामा घणहरा	१०१	२ सत्तरिवग्गा	२६०	ह	
१६ वामा पाणहरा	१००	२ सट्टमणा	१७४	१८ हरितवण्णपडिभागा	५८
५८ वामा सोवद्वा	१०२	२ सट्टेया	१६७	१६ हरमा किञ्चिदिग्घा	११४
१२ वायुकाह्काणि	१४५	१२ समा	१८६	५ हिदयाणि	१२७
२८ विपदसंजुवा	१९४	१ सहस्सवग्गे	२६७	१६ इस्सा	११५

(३)

अंगविज्ञानवमाध्याये विभागशो निर्दिष्टानामङ्गनाम्नां यथाविभागं सङ्ग्रहः

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या	अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या	अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
७५	पुंजातीय अंग पृष्ठ ५९	२		वाहु	३०	२	ऊरु	६९
१	विस्तंभ	१	२	पयाहु	३२	२	शोष्क	७१
१	मत्यक	२	२	कोष्पर	३४	२	पाद	७३
१	सीस	३	२	भवहृत्पग	३६	२	पादतल	७५
१	सीमंतक	४	२	मणियं बह्व्यसतल	३८		७५ स्त्रीजातीय अंग पृ. ६६	
२	संख	६	४	अंगुष्ठ	४२	१	छगली	
१	छलाट	७	२	संघ	४४	१	सिहा	
२	अच्छी	९	२	जटु	४६	२	गंड	
२	अर्धग	११	२	पत्स	४८	२	कण्णचुटिका	
२	कणवीरक	१३	२	अक्खक	५०	२	मुमक	
२	कण्ण	१५	१	उर	५१	२	अक्खिगुटिका	
२	संघ	१७	२	यण	५३	२	वारका	
२	कचोळ	१९	५	हितय	५८	२	अक्खित्तवत्तिगी	
२	कण्णपुसक	२१	२	कुक्खि	६०	१	णामिका	
२	ओट्ट	२३	१	उदर	६१	२	वण्णवाली	
१	दंतवेला	२४	२	अक्खण	६३		थूग्गा	
१	दंतसंम	२५	१	पोरस	६४		सीवा	
१	मुह	२६	१	अक्खिसीस	६५	१	वालुक	
२	अंस	२८	२	अह	६७	२	दावा	

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या	अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या	अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
२	बाहुपस्त	१०		२० उत्तम अंग पृ. ९३			१४ यौवनस्थ अंग पृ. ९७	
२	जंघापस्त	१२	१	मथक	१	१	उदर	१
२	ऊरुपस्त	१४	१	सीस	२	१	कटि	२
२	पादपस्त	१६	२	संर	४	१	णामि	३
	१६ अनागत अंग पृ. ८३		१	गिडाल	५	२	कटिपस्त	५
१	शुद्धपुरिम	१	२	कण्ठपुत्तक	७	२	पट्टिपस्त	७
१	गिडालपुरिम	२	२	कण्ठ	९	१	पट्टिमन्त	८
१	कंठपुरिम	३	२	गंड	११	१	छोमवासी	९
१	हृदयपुरिम	४	२	ओट्ट	१३	१	मेहन	१०
२	जंतुतरपुरिम	६	१	दंत	१४	१	धरिय	११
१	उरपुरिम	७	१	णाला	१५	१	[वल्प] सीस	१२
२	बाहुणालीपुरिम	९	१	णालपुड	१६	२	फल	१४
१	यल्पपुरिम	१०	२	कणवीरक	१८		१४ मध्यमययः अंग पृ. ९९	
१	सीसपुरिम	११	२	अपंग	२०	२	बाहा	२
१	उदरपुरिम	१२	१	१४ मध्यम अंग पृ. ९४		२	बाहुणाली	४
२	जंघापुरिम	१४	१	जंतुअंतर	१	१	हृदयगुलीउदर	५
२	ऊरुपुरिम	१६	१	यणंतर	२	२	हृदयगुड	७
	५० अर्धतट अंग पृ. ८४		१	हृदय	३	२	हरथ	९
२	पादतलचर्मंतर	२	२	उदर	४	१	अंसवीफणिय	१०
२	पाणितलचर्मंतर	४	२	अंस	६	२	जंतु	१२
२	जंघचर्मंतर	६	२	आहु	८	२	धण	१४
२	ऊरुचर्मंतर	८	२	पवाहु	१०	२	२० महावयः अंग पृ. ९९	
२	कण्ठचर्मंतर	१०	२	हरथ	१२	१	गीवा	१
२	अक्षिन्नचर्मंतर	१२	२	हृदयतल	१४	१	हृदु	२
२	वक्त्रचर्मंतर	१४	२	१० जघन्य अंग पृ. ९४		२	दंत	४
१	णामिचर्मंतर	१५	२	अंगुड	४	२	ओट्ट	६
१	मेहनचर्मंतर	१६	२	पादपण्डि	६	१	णाला	७
५	हृदयसमूहचर्मंतर	२१	२	जुफ	८	२	णालापुड	९
२	कण्ठचर्मंतर	२३	२	पादाहितय	१०	२	गंड	११
१	णालिकचर्मंतर	२४	२	२ उत्तममध्यमसाधारणअंग पृ. ९५		२	कवोल	१३
२	बाहुणालीचर्मंतर	२६	२	जंतु	२	१	भुमकंतर	१४
२	हृदयचर्मंतर	२८	२	२ मध्यमानंतरमध्यसा-		१	शिडाल	१५
१	सोणिन्नचर्मंतर	२९	२	धारण अंग पृ. ९६		१	सिर	१६
१	शुद्धचर्मंतर	३०	२	वक्त्रण	२		
१	मथकचर्मंतर	३१	२	२ मध्यमानंतरजघन्यसा-		२	२ वालयौवनस्थसाधारणअंग पृ. १००	
१	गिडालचर्मंतर	३२	२	धारण अंग पृ. ९६		२	वक्त्रण	२
१	गीवचर्मंतर	३३	२	गोफ	२		२ यौवनस्थमध्यमवयःसा-	
२	गंडचर्मंतर	३५	२	१० वालेय अंग पृ. ९७		२	धारण अंग पृ. १००	
२	भुमकचर्मंतर	३७	२	पादगुड	२	२	धण	२
२	जंतुचर्मंतर	३९	२	पादगुलि	४		२ मध्यमवयोमहावयःसा-	
१	उरचर्मंतर	४०	२	गोफ	६		धारण अंग पृ. १००	
१	उदरचर्मंतर	४१	२	जंघा	८	२	जंतु	२
		२	पादतल	१०	२		

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या	अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या	अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
२	बाहुपस्त	१०	२०	उत्तम अंग पृ. ९३		१४	यौवनस्य अंग पृ. ९७	
२	जंघापस्त	१२	१	मथक	१	१	उदर	१
२	ऊरुपस्त	१४	१	सीत	२	१	कटि	२
२	पादपस्त	१६	२	संल	४	१	णाभि	३
	१६ अनागत अंग पृ. ८३		१	शिङ्गल	५	२	कटिपस्त	५
१	सुहपुरिम	१	२	कण्णपुस्तक	७	२	पट्टिपस्त	७
१	शिङ्गलपुरिम	२	२	कण्ण	९	१	पट्टिमन्त्र	८
१	कंठपुरिम	३	२	गंड	११	१	छोमवासी	९
१	हिदयपुरिम	४	२	ओट्ट	१३	१	मेहण	१०
२	जंतुरपुरिम	६	१	दंत	१४	१	वरिथ	११
१	उरपुरिम	७	१	णसा	१५	१	[वत्थि]सीस	१२
२	बाहुणालीपुरिम	९	१	णासपुड	१६	२	फल	१४
१	वत्थिपुरिम	१०	२	कण्णवीरक	१८		१४ मध्यमवयः अंग पृ. ९९	
१	सीसपुरिम	११	२	अपंग	२०	२	बाहा	२
१	उदरपुरिम	१२		१४ मध्यम अंग पृ. ९४		२	बाहुणाली	४
२	जंघापुरिम	१४	१	जतुअंतर	१	१	हल्यंगुलीउदर	५
२	ऊरुपुरिम	१६	१	धर्णतर	२	२	हल्यंगुट्ट	७
	५० अर्धतर अंग पृ. ८४		१	द्वियय	३	२	हल्य	९
२	पादतलमंतर	२	२	उदर	४	१	अंसवीकाणिय	१०
२	पाणितलमंतर	४	२	अंस	६	२	जतु	१२
२	जंघमंतर	६	२	बाहु	८	२	धण	१४
२	ऊरुमंतर	८	२	पथाहु	१०	२	२० महावयः अंग पृ. ९९	
२	कनखमंतर	१०	२	हल्य	१२			
२	अभिस्रमंतर	१२		हल्यतल	१४	१	गिवा	१
२	वखणमंतर	१४	२	१० जघन्य अंग पृ. ९४		१	हण	२
१	णाभिस्रमंतर	१५	२	अंगुट्ट	२	२	दंत	४
१	मेहणमंतर	१६	२	पादपण्डि	४	२	ओट्ट	६
५	द्विययमंतर	२१	२	जंघा	६	१	णासा	७
२	कण्णमंतर	२३	२	गुण	८	२	णासापुड	९
१	णासिक्रमंतर	२४	२	पादहितय	१०	२	गंड	११
२	बाहुणालीअमंतर	२६	२	उत्तममध्यमसाधारणअंग पृ. ९५		१	कनोल	१३
२	हल्यमंतर	२८		जतु	२	१	मुमकंतर	१४
१	सोणिस्रमंतर	२९		२ मध्यमानंतरमध्यसा-		१	शिङ्गल	१५
१	शुद्धमंतर	३०	२	धारण अंग पृ. ९६		१	सिर	१६
१	मथकमंतर	३१		वक्खण	२			
१	शिङ्गलमंतर	३२		२ मध्यमानंतरजघन्यसा-		२	२ बालयौवनस्यसाधारणअंग पृ. १००	
१	गीवमंतर	३३	२	धारण अंग पृ. ९६		२	वक्खण	२
२	गंडमंतर	३५		गोण	२		२ यौवनस्यमध्यमवयःसा-	
२	सुमगमंतर	३७	२	१० बालेय अंग पृ. ९७		२	धारण अंग पृ. १००	
१	जंतुअमंतर	३९	२	पादंगुट्ट	२	२	धण	२
१	उरमंतर	४०	२	पादंगुट्टि	४	२	२ मध्यमवयमोमहावयःसा-	
१	उदरमंतर	४१	२	गोण	६		धारण अंग पृ. १००	
		२	जंघा	८	२	जतु	२
			२	पादतल	१०	२		

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या	अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या	अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
२	बाहुपस्त	१०		२० उत्तम अंग पृ. ९३			१४ यौवनस्थ अंग पृ. ९७	
२	जंघापस्त	१२	१	मत्थक	१	१	उदर	१
२	ऊरुपस्त	१४	१	सीस	२	१	कटि	२
२	पादपस्त	१६	२	संस	४	१	नाभि	३
	१६ अनागत अंग पृ. ८३		१	गिडाल	५	२	कटिपस्त	५
१	सुहपुरिम	१	२	कण्णपुत्तक	७	२	पट्टिपस्त	७
१	गिडालपुरिम	२	२	कण्ण	९	१	पट्टिमग्ध	८
१	कंडपुरिम	३	२	गंड	११	१	लोमवासी	९
१	हिदपपुरिम	४	२	ओट्ट	१३	१	मेहण	१०
२	जंतुवरपुरिम	६	१	दंत	१४	१	वरिय	११
१	उरपुरिम	७	१	णासा	१५	१	[बलिय]सीस	१२
२	बाहुणालीपुरिम	९	१	णासपुड	१६	२	फळ	१४
१	वल्पिपुरिम	१०	२	कण्णवीरक	१८		१४ मध्यमवयः अंग पृ. ९९	
१	सीसपुरिम	११		अपंग	२०	२	बाहा	२
१	उदपुरिम	१२		१४ मध्यम अंग पृ. ९४		२	बाहुणाली	४
२	जंघापुरिम	१४	१	जतुअंतर	१	१	हृत्पंगुलीउदर	५
२	ऊरुपुरिम	१६	१	यंगंतर	२	२	हृत्पंगुट्ट	७
	५० अर्भ्यंतर अंग पृ. ८४		१	हियय	३	२	हृत्थ	९
२	पादतल्लमंतर	२	२	उदर	४	१	अंसवीकाणिय	१०
२	पागितल्लमंतर	४	२	अंस	६	२	जतु	१२
२	जंघमंतर	६	२	बाहु	८	२	यण	१४
२	ऊरुअमंतर	८	२	हृत्थ	१०	२	२० महावयः अंग पृ. ९९	
२	कण्णमंतर	१०	२	हृत्थतल	१४	१	गीवा	१
२	बाक्किअमंतर	१२		१० जघन्य अंग पृ. ९४		२	हृत्थ	२
२	वक्खणमंतर	१४	२	अंगुट्ट	२	२	दंत	४
१	णामिअमंतर	१५	२	पादपण्ह	४	२	ओट्ट	६
१	मेहणमंतर	१६	२	जंघा	६	१	णासा	७
५	हितयसमूहमंतर	२१	२	गुण्फ	८	२	णासापुड	९
२	कण्णमंतर	२३	२	पादहितय	१०	२	गंड	११
१	णासिकमंतर	२४	२	२ उत्तममध्यमसाधारणअंग पृ. ९५		२	करोल	१३
२	बाहुणालीममंतर	२६	२	जतु	१	२	भुमकंतर	१४
२	हृत्थमंतर	२८		२ मध्यमानंतरमध्यसा-		१	गिडाल	१५
१	सोमिअमंतर	२९		धारण अंग पृ. ९६		१	सिर	१६
१	गुदमंतर	३०	२	यस्सग	२		
१	मय्थमंतर	३१		२ मध्यमानंतरजघन्यसा-		२	२ यालयौवनस्थसाधारणअंग पृ. १००	
१	गिडालमंतर	३२		धारण अंग पृ. ९६		२	यस्सग	२
१	गीवमंतर	३३	२	गोण्फ	२		२ यौवनस्थमध्यमवयःसा-	
२	गंडमंतर	३५		१० यालेय अंग पृ. ९७		२	धारण अंग पृ. १००	
२	भुमगमंतर	३७	२	पादंगुट्ट	२	२	यण	२
२	जंतुअमंतर	३९	२	पादंगुट्टि	४	२	२ मध्यमवययोमहावयःसा-	
१	उरमंतर	४०	२	गोण्फ	६		धारण अंग पृ. १००	
१	उदरमंतर	४१	२	जंघा	८	२	जतु	२
.....			२	पादतल	१०	२		

चतुर्थ परिशिष्टम्

३४५

अंगुलिपोद्	३०	१०
नद	५०	२
णासा	५१	२
णासपुड	५२	२
सोणि	५३	२
कण्ण	५५	४
मेहण	५६	२

१२ आकाश अंग पृ. ११८

गिडाल	१	२
अंसपीड	३	२
जाणु	५	
जाणुपच्छिम	७	१
पादतल	९	१
पाणितल	११	१
पट्टि	१२	२

५६ दहरचल अंग पृ. ११९

हृत्पंगुलिपव्य	२८	२
पादंगुलिपव्य	५६	१

५३ दहरस्यावरेय अंग पृ. ११९

हृत्पंगुलिपव्यंतर	२८	१
पादंगुलिपव्यंतर	५६	२

दहरस्यावरेय अंग १३ मतान्तरे

जंघामज्ज	२	१
ऊरुमज्ज	४	१
बाहुमज्ज	६	२
पट्टि	७	२
पस्स	९	१
कर	११	
कम	१३	

१० ईश्वर अंग पृ० ११९

गिडाल	१	१
मत्थक	२	१
सीस	३	१
कण्ण	४	१
गंड	५	१
शुमंतर	६	१
दंत	७	१
ओट्ट	८	
णासा	९	
जिञ्जा	१०	

५० प्रेण्येय अंग पृ. ११९

पादंगुलि	१०	२
पादगह	२०	२

पादंगुलिपोट्टिया	३०	२
[पाद] तल	३२	२
पणिह	३४	२
सुल	३६	२
गोप्फ	३८	२
कंडरा	४२	२
जंघा	४४	१
पेंडिका	४६	१
जाणु	४८	१
फिया	५०	१

२६ प्रिय अंग पृ. १२०

गिडाल	१	१
मत्थक	२	२
सीस	३	१
संख	५	१
कण्ण	७	१
अस्त्रि	९	
णासिका	१०	
दंत	१२	२०
ओट्ट	१४	१
जिञ्जा	१५	१
गंड	१७	२
उर	१८	२
शण	२०	२
शणंतर	२१	२
हृत्पंगुट्ट	२३	२
हृत्थ	२५	१
णाभि	२६	

२६ मध्यस्थ अंग पृ. १२०

शुमंतर	१	
वंस	२	२
मत्थक	३	
णासिका	४	२
सुह	५	
उर	६	२
थणंतर	७	२
हितथ	८	२
.....	९	

३३ आतिमूलिक अंग पृ. १२१

पादंगुट्ट	२	
पाद	४	२
गोप्फ	६	१
जंघा	८	१

ऊरु	१०
जाणु	१२
अंस	१४
बाहु	१६
पवाहु	१८
बाहुसंधि	२०
उदर	२१
कडि	२२
कडिपस्स	२४
लोनवासी	२५
उर	२६
सिर	२७
अधर	२९
जंतु	३०
सुह	३१
सीस	३२
तल	३३

३३ अंत अंग पृ. १२१

अंगुलिअग्ग	२०
केसग्ग	२१
लोमग्ग	२२
कण्णग्ग	२४
णासग्ग	२६
कोप्पर	२८
पणिहक	३०
फिया	३२
ककाठिका	३३

२० तीक्ष्ण अंग पृ. १२२

अरग्गदंत	२०
२ दुर्गंध अंग पृ. १२२	
सिहित णासापुड	२
२ सुगंध अंग पृ. १२२	
अवगुत णासापुड	२
९ बुद्धिरमण अंग पृ. १२२	
हृत्थ	२
पाद	४
शुम	६
अस्त्रि	८
सुह	९

४ अवुद्धिरमण अंग पृ. १२२

पस्स	२
उदर	३
पट्टि	४

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या	अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या	अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
०	अधर	५	१	मैंड	९	२	उपग्रह अंग पृ० ११७	
२	बाहु	७	२	यविष्ठा	११	१	वयि	१
२	हृत्पदा	९	१	मिर	१२	१	[वयि] सीम	२
	२५ युक्तोपचय अंग पृ. ११४	२		अधर	१४		५ काय अंग पृ० ११७	
४	अंगुष्ठ	४	१	त्रिन्मा	१५	१	कायवत	१
१६	अंगुलि	२०	४	अंगुष्ठ	१९	१	मन्त्रिमकाय	२
१	गिडाल	२१	१	लोम	२०	१	मन्त्रिमोगतरकाय	३
१	चिबुक	२२	६	पाणिलेहा	२६	१	जघण्णकाय	४
२	धोट्ट	२४		१० परिमंडल अंग पृ० ११५	१	१	जघण्णतरकाय	५
१	णाग	२५	१	मायग	१		२७ तनु अंग पृ० ११७	
	१७ कृदा अंग पृ. ११४	२	२	बाहुसीस	३		पादतल	२
२	गोष्क	२	२	जायुमीम	५	२	पाणितल	४
२	जण्णमंथि	४	१	धग	७	२	कण्ण	६
२	मणिवंध	४	२	णामि	८	१	त्रिन्मा	७
१	उबल्यग	४		किया	१०	२	णइ	२७
२	[कण्ण] संधि	९	१	१४ करणमंडल अंग पृ० ११६	२०		२१ परमतनु अंग पृ० ११७	
२	सुममंथि	११	१	दक्षिणबाहुमंडल	१		अगणह	२०
२	संर	१३	१	वामबाहुमंडल	२	२०	अगडेय	२१
१	पट्टि	१४	१	बाहुसंपातमंडल	३	१	२ अणु अंग पृ० ११७	
१	उकुडा	१५	८	सत्यसंचातमंडल	४		केसलोमणइ	१
०	अवडु	१७	१	अंगुलिमंडल	१२	१	मंसु	२
	११ परंपरकृदा अंग पृ. ११४	१		अंगुट्टुगुलिमंडल	१३	१	५ हृदय अंग पृ० ११८	
०	मलुक	२		संधायमंडल	१४		पादतलहितय	२
०	जायुक	४	१०	२० वृत्त अंग पृ० ११६			पाणितलहितय	४
२	दोहिक	६	१०	हृत्पुण्ड्रपञ्च	१०	२	हितय	५
२	कोप्पर	६		पादंगुलिपञ्च	२०	१	५ ग्रहण अंग पृ० ११८	
१	केम	९	१	१२ वृत्त अंग पृ० ११६			५ उपग्रहण अंग पृ० ११८	
१	रोम	१०	१	उर	१	१	सुम	२
१	हग (णः)	११	१	ललाड	२	१	अत्रिखगह	४
	२६ दीर्घ अंग पृ० ११४	२		पट्टि	३	१	लोमवासी	५
२	बाहु	२	२	पादतल	५	१	५६ रमणीय अंग पृ० २१८	
२	पबाहु	४	२	पाणितल	७	२	भोट्ट	२
२	जया	६	२	कण्णसीड	९		दंत	४
२	ऊर	८	१	गंड	११	२	गिडाल	५
१६	अंगुलि	२४	१	त्रिन्मा	१२	२	पादतल	७
१	केम	२५	१	४१ चतुरस्र अंग पृ० ११७	१		पाणितल	९
१	पट्टि	२६	२	गिडाल	१		उर	१०
	२६ युक्तप्रमाण दीर्घ अंग पृ० ११५	२		परम	३	२		
२	सुम	२	२	पादतल	५	२		
२	अत्रिग	४	२	पाणितल	७	१		
१	णाग	६	२	पण्डितल	९	२		
१	अनु	८	३०	कटितल	११	२		
				परंपरंगुल	१३	१		

२०	अंगुलमोट	३०	१०	पार्दंगुलिपोट्टिया	३०	२	ऊरु	१०
२०	नह	५०	२	[पाद] तल	३२	२	जाणु	१२
१	णासा	५१	२	पण्डि	३४	२	अंस	१४
१	णासपुड	५२	२	मुल	३६	२	चाहु	१६
१	सोणि	५३	२	गोष्फ	३८	२	पबाहु	१८
२	कण्ण	५५	४	कंडरा	४२	२	बाहुसंधि	२०
१	मेहण	५६	२	जंघा	४४	१	उदर	२१
१२ आकाश अंग पृ. ११८				पेठिका	४६	१	कटि	२२
१	गिडाल	१	२	जाणु	४८	२	कठिबस्म	२४
२	अंसपीठ	३	२	फिया	५०	१	लोमवासी	२५
२	जाणु	५		२६ प्रिय अंग पृ. १२०				१
२	जाणुगच्छिम	७	१	गिडाल	१	१	उर	२६
२	पादतल	९	१	मत्थक	२	२	सिर	२७
२	पाणितल	११	१	सीस	३	१	अधर	२९
१	पट्टि	१२	२	संर	५	१	जनु	३०
५६ दहरचल अंग पृ. ११९				कण्ण	७	१	मुद	३१
२८	हृत्संगुलिपञ्च	२८	२	अस्त्रि	९	१	सीम	३२
२८	पार्दंगुलिपञ्च	५६	१	णासिका	१०		तल	३३
५३ दहरस्याचरेय अंग पृ. ११९				दंत	१२	२०	३३ अंत अंग पृ. १२१	
२८	हृत्संगुलिपञ्चंतर	२८	२	शोट्ट	१४	१	अंगुलिभग	२०
२८	पार्दंगुलिपञ्चंतर	५६	१	त्रिभ्ना	१५	१	केमग	२१
दहरस्याचरेय अंग १३ मत्तान्तरे				गंड	१७	२	लोमग	२२
२	जंघामग्न	२	१	उर	१८	२	कण्णग	२४
२	ऊरुमग्न	४	१	धरा	२०	२	णासग	२६
२	बाहुमग्न	६	२	पण	२१	२	कोप्पर	२८
१	पट्टि	७	२	यणंतर	२३	२	पण्डिक	३०
२	पस्त	९	१	हृत्संगुट्ट	२३	२	फिया	३२
२	कर	११		हृत्थ	२५	१	कक्राविका	३३
२	कम	१३		णाभि	२६		२० तीक्ष्ण अंग पृ. १२२	
१० ईश्वर अंग पृ० ११९				२६ मध्यस्य अंग पृ. १२०				२०
१	गिडाल	१	१	मुमंतर	१	१	भगदंत	२०
१	मत्थक	२	१	वंस	२	२	२ दुर्गंध अंग पृ. १२२	
१	सीस	३	१	मत्थक	३	१	सिद्धि न नागापुड	२
१	कण्ण	४	१	णासिका	४	२	२ सुगंध अंग पृ. १२२	
१	गंड	५	१	मुद	५	१	अत्रगुण नागापुड	२
१	मुमंतर	६	१	उर	६	२	९ शुद्धिरमण अंग पृ. १२२	
१	दंत	७	१	यणंतर	७	२	हृत्थ	२
१	शोट्ट	८		दिगथ	८	२	पार	४
१	नागा	९		९	१	मुम	६
१	त्रिभ्ना	१०		३३ आतिमूत्तिक अंग पृ. १२१	१	१	अग्नि	८
५० प्रेप्चेय अंग पृ. ११९				पार्दंगुट्ट	२		मुद	९
१०	पार्दंगुट्टि	१०	२	पाद	४	२	४ अशुद्धिरमण अंग पृ. १२२	
१०	पार्दंगुट्ट	१०	२	गोष्फ	६	१	पण	२
अंग० ४३				जंघा	८	१	उदर	३
							पट्टि	४

११ महापत्रिग्रह अंग पृ. १२२

१	उदर	१	१
२	हृत्	३	१
२	पाद	५	
२	कण्ठ	७	
१	णासा	८	१
२	अंति	१०	१
१	मुह	११	१

४ अल्पपरिग्रह अंग पृ. १२२

१	कंस	१	२
१	लोम	२	१
१	णह	३	२
१	मंसु	४	

१९ वद्ध अंग पृ. १२२

	हृत्	२	
	पाद	१	
	सिद्धा	१	
	कण्ठ	२	

२७ मोक्ष अंग पृ. १२२

	हृत्	२	
	पाद	२	
	सिद्धा		
	कण्ठ	२	

२ शान्त्रेय अंग पृ. १२३

२	कण्ठोत्	२	१
---	---------	---	---

२ रूपेय अंग पृ. १२३

२	णपण	२	१
---	-----	---	---

२ गंधेय अंग पृ. १२३

२	णामासुद	२	१
---	---------	---	---

१ स्तोत्र अंग पृ. १२३

१	त्रिन्मा	१	१
---	----------	---	---

२ स्पर्शेय पृ. १२३

१	तया	१	
१	पेरिम	२	

१ मननीय अंग पृ. १२३

१	द्विगय	१	२
---	--------	---	---

४ घातपद् अंग पृ. १२३

१	मुह	१	१
१	नापण	२	२
२	कण्ठ	४	२

२ शब्दघत् अंग पृ. १२३

	गुदा	१	
	मेहण	२	

१० घणैय अंग पृ. १२३

	केसमंसु	१	२
	उर	२	१
	पट्टि	३	१
	अंघ्रा	५	
	कच्छा	७	
	वधिसीस	८	१
	संख	१०	२

१० अश्लेय अंग पृ. १२३

	मुह	१	
	अच्छि	३	
	उर	४	
	द्विगय	५	
	तल	७	
	त्रिन्मा	८	
	तिक	१०	

प्रकारान्तरेण

	अखिल	२	२
	णामिका	३	
	कण्ठ	५	
	शिवाल	६	२
	मुह	७	१
	मत्पण	८	१
	कण्ठुपरिका	९	२
	सिस्स	१०	१

२ दर्शनीय अंग पृ. १२३

	अक्षु	१	
	लोणि	२	१

१० स्थल अंग पृ. १२३

	मण्ठ	१	
	शिवाल	२	
	गंड	४	२
	द्विगय	५	२
	उर	६	२
	करतल	८	१
	अमल	१०	१

१२ निन्न अंग पृ. १२३

१	२	वक्त्रण	२
२	२	कच्छा	४
२	२	अखिलकृद	६
२	२	कण्ठोत्	८
१	२	शीवाहेट्ट	१०
२	१	कुकुंदल	११
३	१	णामि	१२

९ गंभीर अंग(?) पृ. १२४

	१	मुह	१
	१	णासा	२
	४	कण्ठ	४
	६	बाहु	६

१५ विपम अंग पृ. १२४

	१	णासा	१
	३	अंसपीठ	३
	५	वसण	५
	७	क्रिया	७
	९	कोप्यर	९
	११	अनुग	११
	१३	खलुक	१३
	१५	मणिकंध	१५

८४ पुष्प अंग पृ. १२४

	२	गंड	२
	४	घण	४
	५	उदर	५
	६	आस	६
	८	अंजलि	८
	९	मुह	९
	८४	पुष्पाम	८४

१९ विवर अंग पृ. १२४

	१	मुह	१
	३	पालु	३
	१९	अंगुलिअंतर	१९

८ विवृतसंवृत अंग पृ. १२४

	२	अखिल	२
	४	हृत्	४
	६	पाद	६
	७	गुदा	७
	८	मेहु	८

उद्दपाल मगलुद्दग ओरिभग अरिनिप हृथिमहामसो गोसंखी गजाधिपति कोसरक्ख लेखक गणक पुरोहित संवच्छर दाराधिगत दारपाल बलगणक सेनापति गणिकालम्पक वरिसधर वत्याधिगत गनरगुत्तिय दूत जहणक पेसणकारक पतिहारक तरपभट्ट णावाधिगत तित्यपाल	पाणियवरिय पहाणवरिय सुराधरिय कट्टाधिकत तणाधिगत दीतपाल ओपेसेजिक आरामाधिगत णगररक्ख असोकवणिकापाल वाणाधिगत आभरणाधिगत उदकवट्टकि मच्छवेध नाविक वाहुविक सुवण्णकार अलत्तकारक रत्तरजक देवड उण्णवाणिय सुत्तवाणिय जतुकार चित्तकार विचाजीरी तट्टकार सुद्धरजक	लोहकार सीतपेट्टक कुंभकार मणिकार संस्कार कंसकार पट्टकार दुस्सिक रथक कोसेज धाग साम महिसयातक उत्सणिकामत्त उत्तकारक वत्थोपजीविक फल्लवाणिय मूलवाणिय धण्णवाणिय ओदुगिक कम्मासमंसवाणिज तप्पणवाणिज लोगवाणिज आपूपिक खत्तकारक पण्णक सिगारवाणिय	उत्तधारक पसाधक हृथियलंम अस्पखंस अग्निगडपजीरी आहितग्गि कुसीलक (व ?) रंगवचर गंधिक मालाकार लुण्णकार सूतमागध पुस्समागध पुरोहित धम्मट्ट मदांमंत दपकार बहुस्सम्य माणिकार कोट्टाक वत्थुपाठक वत्थुपापतिक मंतिक मंडवापत तित्यवापत आरामवावत रथकार	दारुकभाधिकारिक सामेलक्ख हृत्थारोह अत्सरोह पेस बंधनागारिय ओरलोपहार मूलक्खाणक मूलिक मूलकम्म सख्यक हेरणिक सुवण्णिक चंदण० दुस्सिक संठुकारक गोवज्जभतिकारक पृ. १६१ ओयकार ओह कुंभकारिक इड्डकार खालेपट्टुद सुत्तवत्थप कंसकारक चित्तकारक रूपक्खर	फल्लकारक सीकाहारक मङ्गहारक कोसेजवायक दियं डकंथलवायक क्रोडिक वेज वायतेमिच्छक सहकत्ता सालाकी भूतविजिक कोमारभिय विसतित्थिक त्तिप्पपारागत धम्मकार पहाविध गोदातक ओरधात मायाकारक गोरीपाठक लंखक सुट्टिक लासक चेलंबक गंडक धोसक
--	---	---	---	---	---

(७) स्थानाध्यक्षविभाग

पृ. १५९ राया राथकम्मिक अमथ अमचकम्मिक णायक आसणव्य भंडागारिक अम्मगारिक महाणम्मिक	गवाधियस्स मज्जवरिय पाणियवरिय णावाधियक्ख सुवण्णाधियक्ख हृथिमधिगत अत्सजधिगत योगापरिय गोवयक्ख पट्टिहार	गणिकखंस बलगणक गायक वरिसधर वत्थुपारिसद् आरामपाल पचंतपाल दूत संधिपाल सीसारक्ख	पतिआरक्ख मुंक्कसालिय रजक पधवावत आडविक णगराधियक्ख सुसाणवावत सुणावावत धारकपाल फलाधियक्ख पुष्पाधियक्ख	पुरोहित आयुष्पाकारिक सेनापति कोट्टाकारिक पृष्ठ २३९ सुरवति घणवति जल्लवति पोतवति णरवति णद्वति	तारावति गहवति जोतिपति जोत्तिसपति जगपति गणपति कुलपति जुह्वपति मिगपति गोपति पयापति
---	--	--	--	---	--

(८) यानविभाग

पृष्ठ ७१ सक्की सक्कीका विही	गिही मिबिडा संदमाणिका पृष्ठ १४६	जलचरयान णावा कोटिं डमालुप	पृष्ठ १६६ ख्यलचरयान सिबिका भरामण	पलंक्कमिका रथ संदमाणिका गिहि	जुग गोडिंय सकट सक्की
--------------------------------------	--	------------------------------------	---	---------------------------------------	-------------------------------

प्रमित गुहायित लचरयान वा व हिंव लिका प्यक	शुव पिंडिका कंड धेलु तुंब कुंभ दति संधाड	कट्ट सजीवयान अस्स इथि उट्ट गो महिस खर अथेलक	मक सं. मृग सिंगी असिंगी बलिवद अय एलम याचितक जाण आधावितक जाण अपहरितक जाण	सक जाण णव जाण जुण्ण जाण हुट्टित जाण सुट्टित जाण कौतक जाण विक्कीत जाण पडिख्व जाण पृष्ठ १९३	सिचिका रघ जाण जुग्ग कट्टमुह गिहि संदण सकड सकडी
--	---	---	---	---	--

(९) नगर-विभाग

पृष्ठ १६१ भगज्जोसियणगर भणोसणणगर रचियज्जोसियणगर वचिचोसणणगर इससोसित्तणगर रसोसणणगर रुज्जोसियणगर जुज्जोसणणगर शयहाणी साखानगर	चिरनिविट्टनगर अचिरनिविट्टनगर बहुउदकनगर बहुबुट्टीकनगर अप्पोदगनगर अप्पबुट्टीकणगर चोरवासणगर अज्जावासणगर अप्पणगर परणगर दीहणगर	परिमंडलणगर चतुरस्रणगर कट्टपागारपरिगतणगर इट्टपागारपरिगत- णगर दक्खिणोहाणणगर यामोहाणणगर पविट्टणगर विथिणणगर गहणणिविट्टणगर आरामबहुलणगर	उदनिविट्टणगर पव्वतणगर निव्विगंदिणगर पाणुप्पविट्टणगर बहुवाधीतणगर अध्वाधितणगर पृष्ठ १६२ अप्पुज्जोगणगर अत्तिखदंडणगर अप्पपरिकखेसणगर बहुविगहणगर	बहुपरिकखेस कारामणणगर पुरथिमदिसणगर पच्छिमदिसणगर दक्खिमदिसणगर उत्तरदिसणगर बहुअण्णपाणणगर बहुवातकणणगर बहुवातोबहुवणणगर बहुउण्हणगर आलीपणणबहुलणणगर बहुदकणणगर	बहुबुट्टिकणगर बहुदकवाहणगर बहुमकसकणणगर सत्थप्पवातबहुलणणगर भासणणणगर जुत्तोपकट्टणगर पच्चंतिमणणगर सुभिरखोयक्खलेम- गतणगर अणभित्तणणगर विस्सुत्तकित्तियणणगर रमणीयणगर
---	---	---	--	--	--

(१०) गृह-शाला घर-निलय विभाग

पृष्ठ १३६ गम्भगिह अचमंतरगिह भचगिह बबगिह उदगमिह अगिगिह भुमिगिह मोहणगिह हुवारसाला उवट्टाणजालगिह सिप्पगिह कम्मगिह रयवगिह ओचिगिह	उपलगिह हिमगिह आदंसगिह तलगिह आगमगिह चतुक्कगिह रच्छागिह दंतगिह कंसगिह पडिकम्मगिह कंससाला आतवगिह पणियगिह आसणगिह भोयणगिह	रसोसीगिह हयगिह रथगिह गयगिह पुक्कगिह जूतगिह पाववगिह खलिणगिह बंधणगिह जाणगिह पृष्ठ १३७ भगगिह जलगिह महाणसगिह रयणगिह	भंडगिह ओसधगिह चित्तगिह पृष्ठ १३८ लतगिह दगकोट्टगिह कोसगिह पाणगिह सयणगिह गयसाला रथसाला जूतसाला पाणगिह वय्यगिह लेवणगिह	सवणगिह उज्जाणगिह जाणसाला वेसगिह ण्हाणगिह अंगणगिह आतुरगिह संसरणगिह सुंकसाला करणसाला पृष्ठ २२२ भत्तघर वासघर पडिकम्मघर असोयवणिया	चित्तगिह सिरिघर ण्हाणघर पुरसघर दासीघर देयागार पृष्ठ २२३ अगिगघर णाघर पृष्ठ २५८ हणसाला तेमगिह कारुगिह पथिकणिलय
--	--	---	---	---	---

(११) स्थान-प्रदेश गृह-प्राकारादिवयव प्रादेशिकसंकेत विभाग

पृष्ठ १३६ भरजरमूल कोट्टक णट्ट इससमूल	विमाण गगण संधि समर कडिकत्तोरण	पागार चरिका वेत्ति (दि) गयवारि संकम	सयण वलभी रासि पंसु गिदमण	गिट्ट फालिखा पावीर वेदिका ओत्तर	सोमाण अचमंतरपरियरण गिहदुवारवाहा अच्छणरु पृष्ठ १३७
--	---	---	--------------------------------------	---	---

(५)

पञ्चमं परिशिष्टम्

अंगविज्ञानमध्यगतानां विशिष्टवस्तुनाम्नां विभागशः सङ्ग्रहः

मनुष्यविभागः

(१) चतुर्वर्णविभागः पृष्ठ १०२-३

वंशम्	वधवेरुम्	सुद्वंशम्	वेस्सलत्त	वेस्ससुद	सुद्वंशम्
वधमन्त	वेस्सवंशम्	सत्तिक	रत्तसुद	सुद्वेम्	
रत्तवंशम्	वंशसुद	रत्तवेस्स	सुदलत्त	सुद	

(२) जातिविभागः पृष्ठ १४९

अज्ञ	सुद्वण्ण	ववहारोपजीवी	दीववासि	ओवात	अज्ञदेमंत्तर
मिल्लसु	साम	सत्थोपजीवी	जणपदवासि	पुरत्थिमदेसीय	अणजदेमिज्ज
वंशम्	कालक	रोत्थोपजीवी	चेद्धितक	दक्षिणमदेसीय	
रत्तिय	महाकाय	णिक्कसुदवासि	आपेलचिध	पच्छिमदेसीय	
वेस्स	मज्झिमकाय	णिक्कसुददेसिज्ज	कण्ह	उत्तरदेसीय	
सुद-मिल्लसु	पञ्चवकाय	परवतवामि	कंसुक्चिध	अज्ञदेसणिसिस्त	

(३) गोत्रविभागः पृष्ठ १४९-५०

गहपतिक	संखिण्ड	वराह	मुज्जायण	लोहिष	इतिहास
दिग्गति	कुंभ	दोहल	कत्थलायण	पियोभाग	रहस्स
भाद	माहकि	कंदूसी	गहिक	पध्वयव	सुयवेद
गोल	कस्सय	भागवती	णेरित	संखिण्ड	सामवेद
हारित	गोनम	कानुरडी	वंमस	आपुरायण	यत्तुप्पेद
वंदक	अभिगरम	कण्ण	काप्पायण	चारदारी	अहम्पेद
संक्रिण्ण(कमिण)	भगव	मज्झीदीण	कप्प	वग्गपद	पूरुवेद
धामुण्ण	भागवत्त	वरक	अप्पमयमा	गिल	दुपेद
वण्ण	सदय	मूलगोत्त	माल्लकायण	देवदुष्ण	निवेद
दोषण	भोगम	मंमगोत्त	धणान	धामिणाल	सत्थवेद
कोमिक	कोकविण्ण	भेद्दुण्णुवोग	आमोसल	मुषर	छल्लंगवि
कुट्ट-कोट्ट	कवशिल	कड	माकिज्ज	धीगव	सेणिक
मगोत्त	पारायण	कण्ठव	उपरणि	वेयाकरण	गिरागति
मह्झिगणगोत्त	पारायण	वाण्णव	दोम	मीमसक	भेद्दुत्त
वंमचारिक	अभिगवेम	सेत्तम्पत्तर	वंमायण	छंदोक्क	गोत्तिय
परा	मोत्तगुत्त	नेत्थिरिक	जीयत्तायण	पण्णायिक	अज्जायी
मंदव	अट्टिमेण	मत्तारय	दुदक	कटिज्जग	आधरिय
सेट्टि	पुण्णम	बज्जाय	धणज्जाय	धणिक	जावक
वाग्गिण्ण	गदध	छंदोग	संगेण	निक्कमक	णगति
				जेत्थिगिक	वामरात

(४) योनिविभाग-अटक पृष्ठ १३८-४०

धम्मजोणि	रायाणुपायजोणि	मरणजोणि	मग्निमज्जजोणि	उत्तरजोणि	मूलजोणि
धर्यजोणि	रायपुरिसजोणि	सथितत्वजोणि	उत्तमजोणि	पच्छिमजोणि	आभरणजोणि
कामजोणि	वणियत्पधजोणि	छिण्णजोणि	पचवरजोणि	दक्षिणजोणि	धम्मजोणि
मंगमजोणि	कारुकजोणि	णट्टजोणि	अधभंतरजोणि	दक्षिणपच्छिमजोणि	वर्यजोणि
विप्ययोमजोणि	अणुवेगजोणि	विणयजोणि	धाहिजोणि	पच्छिमउत्तरजोणि	रणजोणि
मिन्नजोणि	अज्जजोणि	वंभचारिगजोणि	साधारणजोणि	पुव्वुत्तरजोणि	आरामजोणि
विराद्दजोणि	सिस्सजोणि	वंमणजोणि	णपुंसकजोणि	पुव्वदक्षिणजोणि	अधमजोणि
पावासिकजोणि	पेस्सजोणि	खत्तियजोणि	पुण्णामजोणि	उपरिट्टिमजोणि	उण्णतजोणि
पवुयजोणि	वंधमजोणि	वेस्सजोणि	धीणामजोणि	हेट्टिमजोणि	णिण्णजोणि
आममणजोणि	मोक्खजोणि	सुक्खजोणि	अणामतजोणि	आहारणीहारजोणि	रसजोणि
मिग्गमजोणि	पुण्ड्रजोणि	बालजोणि	अनिक्कजोणि	णीहारहारजोणि	वण्णजोणि
रायजोणि	आतुरजोणि	जोच्चणजोणि	वत्तमाणजोणि	पाणजोणि	वंधजोणि
			पुरिस्थिमजोणि	धातुजोणि	उदुजोणि

(५) सगण्यण (सगपण)

पृष्ठ ६८	णत्ती	पृ० २१९	संल	मातुस्सियापीतर	जोगिमिणी
पञ्जिया	पणत्तिणी	अज्जय	संली	पितुस्सियापीतर	सोदुरियमिणी
अञ्जिया	सुण्हा	पितर	मेयुण	पिच्छियपीतर	भागिजेज
गानिका	सावत्ती	पेत्तिज्ज	देवर	जातर	जोणियुत्त
मइमातुया	सहिका	मातुल	पनिजेट्ट	णणंदर	अत्तिअ
सुछमाता	मेधुणा	मातुस्सिया	भातुवयस्स	सही	भातुयुत्त
माउस्सिया	भातुज्ज्याया	पितुस्सिया	मिणिणियत्ति	भातुजा	मिणिणियुत्त
पितुस्सिया	मिणी	सुछमातुया	मातुलपुत्त	सही	धीया
अज्जा	भागिजेज्जा	अञ्जिया	मातुस्सियापुत्त	महपितुक्कपीतर	भातुपीतर
सही	पितुस्सदा	भाता	मज्जा	मातुलपीतर	मिणिमिपीतर
पुता	मातुस्सदा	मिणी	साठी	सोदरी	शुद्धा

(६) कर्मविभाग-व्यापारविभाग

पृष्ठ ७९	पृष्ठ ८१	उज्जाणवालक	भीतरकारि	मंगयथायण	मीमातरण
परिहारक	उत्तिसत्तुपिक	वणपालक	णट्टक	पृ० १५९	परिहारक
जंघावाणियक	बाहिरत्तुपिय	पुत्तुवाग	अगिक	रायपोरिस	गूण (गूर)
दिमवाणियग	पक्खरुत्तपक	फत्तुवाग	जाणक	यवहार	महाणिक
एत्तहारण	कम्पुड	वत्तनीपालग	आजीवणिक	अग्निगोरत्तव	अज्जपिय
सायणहारण	भागहारक	अंतपाल	पृ० ९२	कारुक्कम	पाणपरिय
पेयणिय	साधिगत्तर	पचंतपाल	हंतीतीकार	अनिक्कम	हण्णायपत्तव
अत्तट्टमूयिय	पृष्ठ ८८	पृष्ठ ९०	हंयालवारक	वाणियक्कम	महामण
निमानक	परिहारि	कंणिक	नीयहारक	राया	हण्णिमेत्त
कुणियथारक	मंथिवाल	सुत्तकारि	नीयवाणियक	रायमक	अज्जयाधियत्तव
वाणिक	अहमागारिक	पृ० ९१	हंयालवाणियक	अज्ज	अज्जसंदेह
हणहारक	पृष्ठ ८९	रिक्किहारिक	पृ० १४७	अज्जवाणिक	अज्जसंदेह
वाणिक	वाणिकम	वाणिक	दंरिक	अज्जवाणिय	एत्तणिक
हणहारक	कट्टहारक	उज्जाणक	अहिक	एत्तव	नेपाक
अहणकारिक	अहणकारिक	वावर	राणिक	अज्जाअट्टिय	पृ० १९०
			देवाट्टिक	मीमाणिय	अट्टियत्त

उट्टपाल	पाणियवरिय	लोहकार	छत्तधारक	दाहकआधिकारिक	फळकारक
भगलुद्धग	पद्माणवरिय	सीतपेट्टक	पसाधक	सामेलकस्त	सीकाहारक
आरतिभाग	सुराधरिय	कुंभकार	हृत्विखंभ	हृत्वारोह	मङ्गहारक
अतिनिप	कट्टाधिकृत	मणिकार	अस्सखंस	अस्मारोह	कोसेजवायक
हृत्थिमहामत्तो	तणाधिगत	संसकार	अतिगडपजीनी	पेसस	द्विबंधकंपळवायक
गोसंखी	वीतपाल	कंसकार	आहितमिग	बंधनागारिय	क्रोडिक
गजाधिपनि	ओपेसेजिक	पट्टकार	कुसीलक (व ?)	चोरलोपहार	वेज
कोसरखल	आरामाधिगत	दुस्सिक	रंगवचर	मूलकखाणक	कायतेगिच्छक
लेखक	णगररक्त	रथक	गंधिक	मूडिक	सलुकत्ता
गणक	असोकवणिकापाल	कोसेज	मालाकार	मूलकम्म	सालाकी
पुरोहित	वाणाधिगत	वाग	सुण्णकार	सत्यक	भूतविजिक
संबच्छर	आभरणधिगत	साम	सूतमागध	हेराणिक	कोमारमिच
दाराधिगत	उट्टकवट्टिक	महिस्सवातक	पुरस्समागव	सुवण्णिक	विसतिथिक
दारापाल	मच्छबंध	उरसणिकामत्त	पुरोहित	चंदण०	सिप्पधारगत
बलगणक	नाविक	छत्तकारक	धम्मट्ट	दुस्सिक	धम्मकार
सेनापनि	वाहुविक	वत्थोपजीविक	महामंत	संजुकारक	पद्माविय
गणिकालेखक	सुवण्णकार	फळवाणिय	दपकार	गोवम्हमतिकारक	गोदावक
वरिसधर	अलत्तकारक	मूलवाणिय	बहुस्सय	पृ. १६१	चोरधात
यथाधिगत	रत्तरत्तक	धण्णवाणिय	मणिकार	ओयकार	मायाकारक
णगरगुचिय	देवट्ट	ओदुगिक	कोट्टाक	ओट्ट	गोरीपादक
दूत	ठण्णवाणिय	कम्मसमंमवाणिज	वत्थुपादक	कुंभकारिक	लंसक
जहणक	सुत्तवाणिय	तप्पणवाणिज	वत्थुवापतिक	इट्टकार	सुट्टिक
पेयणकारक	जतुकार	लोगवाणिज	मंतिक	बालिगतुंद	लासक
पतिहारक	चिचकार	आरूपिक	मंडवापत	सुत्तवत्तय	बेलंबक
तरपभट्ट	चिचाजीनी	खजकारक	तिथ्यवापत	कंसकारक	गंडक
नावाधिगत	ठट्टकार	पण्णिक	आरामवावत	चित्तकारक	घोसक
तिथ्यपाल	सुदुरत्तक	विगारवाणिय	रथकार	रुवपक्खर	

(७) स्थानाध्यक्षविभाग

पृ. १५९	गयाधियक्ख	गणिकखंस	पतिभारक्ख	पुरोहित	तारावनि
राया	मज्जवरिय	बलगणक	सुंसालिय	आयुषाकारिक	गहवति
रायकम्मिक	पाणियवरिय	गायक	रत्तक	सेनापति	जोतिपनि
अमथ	णाराधियक्ख	वरिसधर	पयवावत	कोट्टाकारिक	जोतिसपति
अमथकम्मिक	सुवण्णाधियक्ख	यत्थुवारिसद	आडविक	पृष्ठ २३९	जगपति
गायक	हृत्थिमधिगत	आरामपाल	णगराधियक्ख	सुरवति	गणपति
आणगण्य	अस्समधिगत	पहंतपाल	सुप्पागभावत	धगपति	जुलपति
मोडगारिक	योमाविय	दूत	सुणावापत	जलवति	जुद्धपति
अस्मागारिक	गोवयक्ख	संधिपाल	चारकपाल	पोतवनि	मिगपति
महागणिक	परिहार	सीमारक्ख	फलाधियक्ख	णरवनि	गोपति
			सुप्पाधियक्ख	णह्वनि	पपापति

(८) यानविभाग

पृष्ठ ७१	गिही	जलचरणान	पृष्ठ १६६	पहंक्रमिका	सुग
सकडी	गिबिहा	भावा	खलचरणान	रथ	गोकिंग
मच्छिवा	संदमानिडा	बेरिंथ	गिबिहा	संदमानिका	मकड
विली	पृष्ठ १५६	कमानुय	अरामग	गिहि	सकडी

उद्घायित	झुव	कट्ट	मक सं. मृग	सक जाण	सिखिका
अणुहायित	पिंडिका	सजीवयान	सिंगी	णव जाण	रथ
जलचरयान	कंड	अस्स	असिंगी	उण्ण जाण	जाण
णावा	चेलु	इत्थि	बलिवइ	दुट्ठित जाण	जुग्ग
पोत	तुंब	उट्ट	अय	सुट्ठित जाण	कट्टसुइ
कोईव	कुंभ	गो	एल्लग	कीतक जाण	गिद्धि
सालिका	दुत्ति	महिस	याचितक जाण	विकीत जाण	संदण
तप्पक	संघाड	खर	आधावितक जाण	पडिरूव जाण	सकड
		अयेलक	अपहरितक जाण	पृष्ठ १९३	सकडी

(९) नगर-विभाग

पृष्ठ १६१	चिरनिविट्टनगर	परिमंडलगगर	उद्धनिविट्टनगर	बहुपरिकखेस	बहुसुट्टिकणगर
बंभगञ्जोसियणगर	अचिरनिविट्टनगर	चतुरखणगर	पञ्चतणगर	कारामणगर	बहुदकवाहणगर
बंभगोसण्णगर	बहुउदकनगर	कट्टयागारपरिगतणगर	निचिवगंदिणगर	पुरत्थिमदिसणगर	बहुमकसकणगर
सत्तियञ्जोसियणगर	बहुतुट्टीकनगर	इह्दयापागारपरिगत- णगर	पाणुप्पविट्टणगर	पच्छिमदिसणगर	सत्थप्पवातवहुलणगर
खत्तियोसण्णगर	अप्पोदगनगर	दक्खिणोद्दगणगर	बहुवाधीतणगर	दक्खिणदिसणगर	आसण्णगर
वइस्सञ्जोसितणगर	अप्पतुट्टीकणगर	यामोद्दगणगर	अच्चाधितणगर	उत्तरदिसणगर	जुत्तोपकट्टणगर
वेस्सोसण्णगर	चोरवासणगर	पविट्टणगर	पृष्ठ १६२	बहुअण्णपाणणगर	जुत्तोपकट्टणगर
सुइञ्जोसियणगर	अञ्जवासणगर	वित्थिणणगर	अप्पजोणणगर	बहुवातकणगर	सुभिक्खवोगक्कोम- गतणगर
सुवोसण्णगर	अप्पणगर	गहण्णविट्टणगर	अतिक्खडंडणगर	बहुवातोवहवणगर	अणभित्तणगर
रायहाणी	परणगर	आरामबहुलणगर	अप्पपरिकखेसणगर	बहुउपहणगर	विस्सुत्तकित्तियणगर
साखानगर	दीहणगर		बहुविग्गहणगर	आलीपणगबहुलणगर	रमणीयणगर
				बहुदकणगर	

(१०) गृह-शाला घर-निलय विभाग

पृष्ठ १३६	उपलमिह	रसोतीमिह	भंडमिह	सवणमिह	चित्तमिह
गच्चमिह	हिममिह	हयमिह	ओसयमिह	उज्जाणमिह	सिरिधर
अच्चमंतरमिह	आदंसमिह	रथमिह	चित्तमिह	जाणसाला	ण्हाणवर
भत्तमिह	तलमिह	गयमिह	पृष्ठ १३८	वेसमिह	पुरसघर
वच्चमिह	आगममिह	पुष्फमिह	लतामिह	ण्हाणमिह	दासीघर
उदगमिह	चतुक्कमिह	जुत्तमिह	दगकोट्टमिह	अंगणमिह	देवागार
अरिणमिह	रच्छामिह	पातवमिह	कोसमिह	आतुरमिह	पृष्ठ २२३
भूमिमिह	दंवमिह	रालिणमिह	पाणमिह	संसरणमिह	अभिगघर
मोहणमिह	कंसमिह	बंधणमिह	सयणमिह	सुंक्कसाला	णागघर
दुवारसाला	पडिक्कम्ममिह	जाणमिह	गयसाला	करणसाला	पृष्ठ २५८
उवट्टाणजालमिह	कंकसाला	पृष्ठ १३७	रघसाला	पृष्ठ २२२	ठणसाला
सिप्पमिह	आतवमिह	अम्ममिह	जूतसाला	भत्तघर	तेममिह
क्कम्ममिह	पणियमिह	जलमिह	पाणमिह	वासघर	काट्टमिह
रयतमिह	आसणमिह	महाणसमिह	वत्थमिह	पडिक्कम्मघर	पथिक्कणिय
ओधिमिह	भोयणमिह	रयणमिह	टैवणमिह	असोयवणिय	

(११) स्थान-प्रदेश गृह-प्राकारादिअवयव प्रादेशिकसंकेत विभाग

पृष्ठ १३६	विमाण	पागार	सयण	गिद्ध	सोमाण
अरजरमूल	रागण	चरिका	वलभी	फटिक्का	अच्चमंतरपरिघरण
कोट्टक	संधि	वेत्ति (दि)	रास्सि	पापीर	गिहदुपारयाट्टा
णट्ट	समर	गववारि	पंसु	पेदिक्का	अरट्टणक
इक्कसमूल	कडिक्कतोरण	संकम	गिद्धमण	ओसर	पृष्ठ १३७

चञ्चर	कृत्	दिघ	अंगण	रायपथ	उदुपाण
शंगण	तलाक	आराम	पृष्ठ २२१	महारच्छा	उद्विपपट्टग
वियङ्गपकाम	विङ्गण	तलाग	अंजर	उस्माहिया	अणगवाड
रायपथ	पस्मवण	सेनु	उद्विना	पायाद	देवायण
निवाडग	पृष्ठ १४८	पृष्ठ २१४	पल	गोपुर	संगमभूमि
खेत	जूव	पासाथ	इङ्क	भट्टालग	पृष्ठ २३३
अट्टालय	चिनि	माल	फिङ्क	पकंड	रोत्त
उदकपथ	सेतुबंध	पट्टीमंम	उखलिका	तोरण	वण्यु
वय	आयनग	मालग	पृष्ठ २२२	वार	गाम
वण्य	पृष्ठ १५२	पागार	माल	पचवत	णगर
पडली	पचवत	गोपुर	वालपाण	वासुरल	सखिवेम
अस्समोहणक	सागर	अट्टावग	उङ्क	भूम	आवास
खंम	भेदिणी	पचवत	विल	पुलुय	कुंड
आगमणसरोध	णदी	धय	णाली	पवाग	णदी
पृष्ठ १३८	वेतिय	देवतायतण	धंभ	वण्य	तलाग
आपुसण	आयाग	गिह	अंतरिया	तलाक	पुत्रपरणी
मंडव	पृष्ठ २००	कृविया	पस्मंतरिया	दहफलिङ्का	कृत्
पवा	देस	आकाम	कोट्टागार	णदी	सर
सेतुकम्म	गियण	अणपद्	अरस्म	फलिङ्का	फलिङ्क
पुरोहड	णगर	अरण्य	आयुपथ	पाकार	सिड
पृष्ठ १४५	पट्टण	सीमंतिका	पणाली	वय	पागार
चञ्चर	खेड	खेत	उदकवार	परिखा	पेडपाली
महापथ	आगर	रच्छा	वचाडक	धय	पुलुग
नित्य	गाम	गियेसण	अरिट्टागदण	सुख	वेति
उदुपाण	सण्णिवेस	रायमग	वेसण	पाली	पवा
पृष्ठ १४६	पृष्ठ २०१	कुङ्क	अंतपुर	मुसाण	पंच
जलस्थान	रायघाणी	गिङ्क	निय	वचभूमि	पचवत
णदी	पायाद	पणाली	निवाडग	मंडलभूमि	पृष्ठ २३४
समुद्र	गिह	वचाड	चडक	पवा	उदुपाण
					वीती

(१२) सिक्क विभाग

पृष्ठ ६६	दीणारमासक	रत्तरक	पृष्ठ ७२	सुवण्णगुंजा
सुवण्णमासक	अणमासक	पुराण	सुवण्णकाङ्की	दीणारी
रथयमासक	काहापण	सत्तरक	मासकाङ्की	

(१३) भाण्डोपकरणविभाग

पृष्ठ ६५	वारक	सिण्णमय	कार्लधी	माणिका	पेहिका
पुंजातीय	कलस	सेलमय	करी	गिसका	धुण्डिका
भरण	गुलमग	पृष्ठ ७२	कुट्टारिका	आयमणी	पिंजोला
अंजर	पिडरक	थीजातीय	थाली	जुली	फणिका
अलिंद	मलुगभंड	गरण	मंडी	कूमणाली	दोणी
कुंडग	पत्तभंड	अलदिका	घडी	समंठणी	उकुलिणी
माणक	रोदमय	पत्ती	दुची	मंगुणिका	पाणी
घटक	मणिमय	डवल्ली	केटा	सुहिका	अमिळा
उधारक	संखमय	थालिका	उद्विका	सलाकेजणी	पडालिका

तवी	दविउलंक	सयण	वीजणी	धूमणाली	करक
वायरीका	रसद्वयी	आसण	दंडा	अगिकारिका	कुंडिका
कुडली	छत्त	जाण	धूमणत्त	अगिकुंड	पृष्ठ २६२
वासी	उपाणह	वाहण	वीजणिया	जग्गतक	छत्त
पुरिका	पाउगा	वाथ	चामर	संदीपण	भिंणार
कवही	उग्भुमंड	माभरण	अस्समंड	दीप	पढागा
दीगिका	उभिलण	परिच्छद	भच्छा	सुडली	लोमहत्थ
कदच्छकी	फण	सत्थावरण	दित्तिका	मधअगि	वासणकडक
पृष्ठ १९१	रपसाणग	पृष्ठ २२१	अजीण	सुल्लक	चामर
उवाहण	चणपेलिका	सुत्तिक	पृष्ठ २५४	सुली	धीजणी
छत्तक	विबट्टणाग	संखागवलमय	इंगालकरोट्टक	चित्ता	पृ० २२१
त्थण	अजणी	दंतमय	इंगालसकडिका	कुंफुका	स्यगिका
कत्तरिका	पसाणग	सिंगमय	कडुच्छ	अहिमकरिका	संगुड
कुंडिका	भादंसग	अट्टिकमय	धूपघडिका	अगिणखंडक	पेला
उक्खलिका	पृष्ठ १९८	वालमय	धूमकरणाक	पृष्ठ २५५	पेलिका
पादुका	छत्त	लोहमय	धूमण	कुड	करंडग
उपाणह	भिंणार	चम्ममय	पिसायक	घडग	संकोसक
पृष्ठ १९३	धीयणिया	पृष्ठ २३०	धूमणेत्त	अरंजर	पणसक
उक्खुली	तालवोट	अजणी	खारापक	उट्टिक	यह्या
पिट्ठरा	पृष्ठ २०१	फणिका	धीजणक	आचमणिक	पसेक्क

(१४) भाजनविभाग

पृष्ठ ६५	सिरिकंसग	मुंडक	पाणजोगिमय	रूपमय	लोहीवार
पुंमोयण	थालक	पीणक	घातुजोगिमय	तंवमय	उट्टिक
वट्टक	दाळिमयूसिक	पृष्ठ ७२	मूलजोगिमय	कंसमय	आयमणी
सरक	णालक	धीभायण	पाणजोगिमय	काललोहमय	सत्थीआयमणी
थाल	मल्लकमूलक	करोडी	सिण्णियुड	सेलमय	चरक
सिरिकुंड	करोडक	कंसपत्ती	संखमय	मत्तिका मय	कट्टुंढी
पणसक	घट्टमाणग	पालिका	मूलजोगिमय	पृष्ठ २१४	पृष्ठ २२१
अदकविट्टग	अलंदक	सरिका	कट्टमय	लोही	कट्टमय
सुपट्टिक	जंतुफलक	भिंणारिका	फलमय	कडाह	उत्पमय
पुक्खरपत्तग	मंडभायण	कंचणिका	पत्तमय	अरंजर	फलमय
सरग	खोरक	कवचिका	घातुजोगिमय	उक्खली	पत्तमय
मुंढग	वट्टक	पृष्ठ १८०	सुवणमय	रकि	

(१५) भोजनविभाग

पृष्ठ ६४	पायस	पत्तहरक	पृष्ठ ७१	तक्कुठी	रसाला
पुंमोयण	परमन्न	कुल्लयवरक	डुडुण्डिका	कुम्मामपिंडी	पडिमट्टा
हर	दधिठाव	मुग्गाहरक	उदुडुण्डिका	सत्तुपिंडी	पोराली
ओदण	विलेपिक	मासहरक	समगुण्डिका	त्थणपिंडी	अंधपिंडी
अथ	दधिहरक	ओदणहरक	जाणू	इतिपिंडी	अंधकपूरी
असग	दुबहरक	अतिहरक	कसरी	ओदणपिंडी	उत्तुपूषिता
ओपण	घुवहरक	तिलहरक	अंबेटी	तिलपिंडी	अंभाडगपूरी
जेमग	सासयहरक	मूतहरक	पत्तंबेटी	पीडपिंडी	भोजन
आहार	गुलहरक	धीआहार	वाटकठी	रच्छामत्ती	पृष्ठ १७६

पाणजोगिगत	फलरस	कसाय	पाणजोगिमयभायण-	सोवञ्चिका	पलाल
मूलजोगिगत	धण्णरस	अंथिल	भोयण	पिप्पली	तंत्राराग
धातुजोगिगत	अग्गगत	कटुक	धातुजोगिमयभायण-	खारलयण	लेङ्गचुण्ण
पाणजोगिगत	पत्तगत	लवण	भोयण	चट्टभोयण	भोजन
दुद्ध	पुप्फगत	पृष्ठ १७९	मूलजोगिमयभायण-	मोदक	पृष्ठ २२०
दधि	फलगत	विस्तोदण	भोयण	पैठिक	दुद्ध
णवणीत	पुप्फगत	अतिकूरक	जयागू	पप्पड	दधि
तक	पत्तेगपुप्फ	गुल्लूरक	हुद्धजवागू	मोरीडक	तक
घत	गुल्लुकपुप्फ	घतकूरक	घयजवागू	सालाकालिक	णवणीत
मंस	मंजरीपुप्फ	विलेपि	तेहजवागू	अंबट्टिक	वुचिया
वसा	फलगत	पायस	अंथिल्लजवागू	विरथडभोयण	आमथित
मधु	रुक्कगत	कसरि	उण्हियजवागू	पोचलिक	गुल्लदधि
संखयआहार	गुम्भगत	दधिताव	ओसथजवागू	वोद्धितक	रसालादहि
असंखयआहार	यलीगत	तकूलि	आलुक	पोयलक	मंथु
सोतगुल	धुवगत	अंथेहि	कसेरक	पप्पड	परमण्ण
सक्करा	पृष्ठ १७८	अंथिलक	सिंथाडक	सकुल्लिका	दधिताव
अग्गयआहार	साहि	पालीक	भिस	पूप	तक्कोदण
अणग्गयआहार	कोह्व	पक्खिमंस	भिसमुणाल	केणक	अतिकूरक
पृष्ठ १७७	धीहि	परिसप्पमंस	चाय	अक्खपूप	मंस
मूलजोगिगत	कंयु	चनुप्पदमंस	मच्छठिका	अपविहत्त	रथिर
मूलगत	रालक	सिंमिचनुप्पदमंस	गुल	पवित्तलुक	वसा
खेचगत	वरक	आसिंमिचतुप्पदमंस	परज्जगुल	वेलातिरु	कुसण
अग्गगत	सामाग	पृष्ठ १८०	इकास	पत्तभञ्जित	कोल्लय
कंदगत	तिळ	अहमंस	पृष्ठ १८२	उल्लोपिक	उंबलिक
उजगत	मास	सुक्कमंस	तप्पणा	सिद्धथिका	साकरस
विज्ञासगत	मुग्ग	उत्सयभोयण	यदरजुण्ण	धीयक	धूमिकासल
विज्ञासगत	चणक	मतकभोयण	विकस	उक्कारिका	अंथिल
सिरिविट्टकसद	कलाव	सद्वृक्कभोयण	कलायभञ्जिया	मंथिलका	उपसेक
लता	पिप्फाव	दासीभोयण	मुग्गभञ्जिया	दीहभोयण	पृष्ठ २४६
सहकि	मसुर	वालोपणयणभोयण	जयभञ्जिया	दीहसकुल्लिका	दुद्धुण्हिका
कास	कुल्लय	देवताभोयण	गोधुमभञ्जिया	खारवट्टिक	दधिताव
सोणिय	सुचरि	मंतगहणभोयण	सात्थिभञ्जिया	खोडक	अंथेहि
पूक	यव	मंतसमावणभोयण	तिलभञ्जिया	दीवालिक	विलेपिका
लसिया	गोधुम	विज्ञासहणभोयण	अणग्गोयल्लयण	दसिरिका	कक्करापिंदग
जवागू	कुसुंभ	विज्ञासमत्तिभोयण	सामुह	भिसकंटक	गंगावत्तण
उच्चुरस	सासव	अभिणयभोयण	सैंचव	मयतक	लुक्कितक
गोलीय	अतसी	सीतभोयण	सोवच्चल	लेङ्गभोयण	वप्पडी
पत्तरस	मसुर	भिक्षलोद्ग	पंसुक्खार	फाणित	अंबट्टिय
पुप्परस	तित्त	असामणभोयण	अग्गोयल्लयण	ककच	घतउण्ह
		सहभोयण	जवसार	तिलक्खली	पोचलिका

(१६) पेयविभाग

पृष्ठ ६४	अरिट्ट	गोधसालक	खलक	दधि	दधि
पुपेय	आसव	पाणक	पाणीय	पय	धित
अपक्करस	मेरक	रस	खीर	गुल	तेल
पक्करस	मधु	जस	डुद्ध	णवणीत	फाणित

सुरा	सेतसुरा	जगल	जयकालिका	रस	चंद्रगरस
पृष्ठ १८१	पृष्ठ २२१	मथुरसेरक	पृष्ठ २५८	पृष्ठ २३२	तेलचणिकरस
पसण्णा	पसण्णा	अरिद्र	बहुपिट्टिया	गुग्गुलुविगत	कालियकरस
अयसा	णिद्रिता	अट्टकालिका	पक्का	सज्जलस	सहकाररस
अरिद्र	मथुरक	भासवासव	जातिकसण्णा	इकास	मातुलुंगरस
महु	भासव	सुरा	अरिद्रा	सिरियेट्टक	करमंदूरस
		कुसुकुंडी			सालफलरस

(१७) वस्त्रविभाग

पृष्ठ १६३	सुवण्णपट्ट	वपुवत्य	मेचक	आविक	वालमुंडिका
सरथ	सुवण्णखसित	मतकरथ	जातिपट्टणुगत	अविकपत्तुण	बालच्यणी
कोसेज	काललोहजालिक	विलात	पट्टिक	अजीणपट्ट	अजिणगकंचुका
पतुज	सकलदस	आतवितक	वट्टण	अजीणप्यवेणी	चम्मसाडी
आविक	वहियदस	ओमदित	सीसेकरण	चम्मसाडी	पृ० २३२
पत्तुण	छिण्णदस	पृ० १६४	उत्तरिज	वालवीर	रोमक
ओम	विवाठित	सेवालक	अंतरिज	पृ० २३०	दुग्गु
दुग्गु	सिचिवत	मयूरग्रीव	पच्चथरण	सजीवक	जगिक
वीणपट्ट	पावारक	करेण्यक	विताणक	पत्तुण	वीणपट्ट
कप्पासिक	कोतवक	कप्पासिकपुष्पक	परिसरणक	अजीणप्यवेणी	वागपट्ट
पट्ट	उण्णिक	पडमरत्तक	पृ० २२१	अजीणकंचल	कप्पासिक
लोहजालिका	अत्यरक	मणोसिलक	कोसेजक	वालसाडी	

(१८) आच्छादनविभाग

पृष्ठ ६४	साडक	कप्पास	थीअच्छादण	लेखा	सण्हा
पुंअच्छादण	सेदसाड	कंचुक	पउण्णा	वाउकाणी	थूला
पडसाडग	कोसेयपारथ	वारवाण	पण्णी	वेलविका	सुवुता
ओमदुगल्लग	कंचलक	विताणक	वण्णा	परत्तिका	दुग्गुत्ता
वीणसुग	उत्तरिज	पच्छत	सोमिन्तिकी	माहिसिका	अप्यग्घा
वीणपट्ट	अंतरिज	सण्णाहपट्टक	अदकोसिन्जिका	इही	महाग्घा
पावार	उत्तोस	मल्लसाडग	पसरादी	जामिलिका	अहवा
पड	वेघण	पृष्ठ ७१	पिणाणा	थीअच्छादणए-	धोनिका
			दियवंतरा	कार्यक	

(१९) भूषण-आमरण-अलंकारविभाग

पृष्ठ ६४-६५	झंकरक	कुवरक	हरथल्लुग	सुत्तक	पापदक
पुंजातीयभूषण	कडग	कण्णकोवग	अणंत	सोवण्णसुत्तग	पादलदुयग
तिरीड	खडुग	कण्णपील	खडुग	निर्मिच्छिग	परमासक
मउड	गिडालमासक	कण्णपूरक	हयमंडक	हिदपत्तणक	पादकण्णवग
सीहमंडक	तिलक	कण्णखीलक	कंकग	सण्यिक	सरजालक
अलकपरिकरोव	मुहफलक	कण्णलोडक	वेडक	मिरियेच	बाहुजालक
मलयकंडक	विसेसक	केजूर	हार	अट्टमंगलक	ऊरजालक
गारलक	अवंग	तलम	अदहार	सोणिमुत्त	पादजालक
मगरक	डुंडल	कंदूग	फलहारक	श्वणकण्णवग	अवसक
उसमक	यक	परिदेग	वेकच्छग	गंदूपक	पुत्तमकोटिलक
सीडक	मलयग	आवेदग	गेजेज	रत्तियधम्मक	कंपीकलावक
हयिक	तलपत्तक	बलयग	कट्ट	पाण्डुरग	हमुण्डक
पहकमिदुगग	दक्षसागक	हायकलावग	कट्टक	अंगजक	पृ. ७१

धीजातीयभूसण	कण्णवल्लक	सिरजामरण	हृत्थाभरण	अंजण	रूप
सिरीममालिका	खडुक	ओचूलक	हृत्थकडम	सुण्णक	तंब
णडियमालिका	मुहिका	पंदिनिणदक	कडम	अलत्तक	हारकूड
मकरिका	वेदक	अपलोकणिका	रथक	गंधवण्णक	रापु
ओराणी	कण्णवालिक	सीसोपक	सूचीक	कण्णसोघणक	सीसक
पुण्णितिका	णीपुर	फर्णाभरण	हृत्थोपक	अंजणी	काललोह
मकण्णी	कण्णुप्पलक	तलपत्तक	अंगुलिआभरण	सलाका	घट्टलोह
सकडा	पृष्ठ १६२	आवदक	अंगुलियक	कुचठावण	सेल
वालिका	प्राणयोनिगत	पलिकामदुधनक	मुदियक	कुंच	भक्तिका
कण्णवल्लीका	धातुयोनिगत	कुंडल	वैटक	सूची	कट्टमय
कण्णिका	मूलयोनिगत	जणक	कटिआभरण	पुपण	पुष्कमय
कुंडमालिका	प्राणयोनिगत	ओकासक	कंचिकलापक	गंधविपी	फलमय
सिद्धविक्र	संखमय	कण्णेत्तक	मैखलिका	सासा	पत्तमय
अंगुलिमुहिका	मुत्तामय	कण्णुपीलणक	कडिउपक	सम्मिका	पृष्ठ २४२
अक्षमालिका	दंतमय	अक्षिआभरण	जंघाआभरण	धतंसक	सुंभलक
संघमालिका	गडलमय	अंजण	गंधूयपक	ओवास	पेलक
पपुका	वालमय	धुकुटिआभरण	णीसू	कण्णपीडक	मुकुड
गिठरिगी	अट्टमय	मपी	परिदेरक	कण्णत्तक	बेटण
कंटकमालिका	मूलयोनिगत	गण्डाभरण	पादाभरण	पंदीविणदक	मालिका
धम्मपिण्डलिका	कट्टमय	हरिताल	खिंतिणिक	कूलीयंधक	बद्ध
विकालिका	पुष्कमय	हिंगुलप	खत्थियधम्मक	तिलक	सीसायक
पुकावलिका	फलमय	मणसिंख	पादमुहिका	कुंडल	पृष्ठ २५९
पिण्णमालिका	पत्तमय	ओष्ठाभरण	पादोपक	बल्लिका	सुं (सुं) मलक
हारावली	धातुयोनिगत	अलत्तक	तिलक	तलपत्तक	उरच्छक
मुधावली	सोवण्णमय	कण्ठाभरण	पृष्ठ २४६	पृष्ठ १९३	आपेलग
कंपी	रुप्पमय	बण्णमुत्तक	बालतिलक	अंजण	मालिका
रसगा	तंबमय	तिपिसाचक	कण्णातिलग	पद्दान	वहापेल
जंबूका	सीसमय	विजापारक	तवण्णितिलग	पघोवण	मुकुड
मेगला	लोहमय	असीमालिका	पट्टमत्तण	पव्वासण	तेह्ल
कंटिका	तपुमय	हार	पृष्ठ १८३	अणुलेखण	पृष्ठ २३२
संपथिका	काललोहमय	अदहार	पादकलाप	त्रिसेसकाप	कुसुंभतेल
पामुहिका	भारकूडमय	पुष्कलक	पादकिंविणीका	धूमाधिवास	अतणीतेल
वसिमका	गोमेयक	आयलिका	खत्थियधम्मक	परिधान	रुपीअतेल
पामगुथिका	लोहितवत्थ	पृष्ठ १६३	पापुका	उत्तरासंग	करंमतेल
पापहिका	एवालक	अग्निमोमाणक	उपागह	सोणिमुत्त	उण्डीपुण्णामतेल
पिंतिगिका	रत्तवण्णारमणि	अट्टमंगलक	मल्ल	मल्ल	वित्ततेल
पृ. ११६	लोहितक	पेमुदा	मुकुड	सुरभिजोग	उतणीतेल
माकण्णी इण्णिक	मुकुडकट्टिक	बापुमुणा	कूप्पाण्डीसावण(१)	हाप्योपक	घटीतेल
खक	विमलक	पुण्णमुण	पद्दान	संविधान	सायपतेल
खडुक	सेतवण्णारमणि	पदिवत्तरमणि	पयोवण	भियार	पुनिकरंमतेल
गण्णकणिक	मगारकल	कट्टेयदक	त्रिमेयदिया	छण	निगुक्केतेल
खडुक	कालवण्णारमणि	बापुआभरण	ओकुंगक	पनाग	कण्णियतेल
गण्णवणक	अंजणमूलक	अंगय	हरिगाल	ओबहव्य	सुरकतेल
परिदेरक	अक्षवण्णारमणि	मुहिय	हिंगुत्तक	पृष्ठ २२१	मूलकतेल
तकम	आप्तमणि	अपरवाहोषक	मणिल	सुरवण	

पञ्चमं परिक्रियम्

भविष्युत्कतेह तिलतेह	इंगुदीतेह पधकलीतेह	चंपकतेह चंद्रणिकापुस्ततेह	जातीतेह पीलुतेह	यूथिकातेह ओसपतेह	वकिःकतेह पुस्ततेह
-------------------------	-----------------------	------------------------------	--------------------	---------------------	----------------------

(२०) आसनविभाग

पृष्ठ १५ पल्लक फलक कट्ट पीडिका आसंदक	फलकी भिरी विंफलक मंचक महासण पीडग	कट्टखोड महट्टिका उप्पल लोहसंवात दंत अट्टिक	भूमिमय तणमय छगणपीडग पुष्प फल धीय	तण सादा मही पृष्ठ १७ डिप्फर खटा	भरयरक पवेगी कंबल सुहस्सहा कट्टपीड खेडुखंड समंथणी
---	---	---	---	--	--

(२१) शयनासनविभाग

पृष्ठ ५२ सयणासन पल्लक मसारप मंचक खटा फलिक मंचिक कणक	तलिय भूमि सिलातल फलपुष्पहरिखसेजा तिणसेजा सुककट्टसेजा जाणसेजा धीयसेजा घणपणसेजा पहरणावरणसेजा	सेलसेजा तुससेजा लोहसेजा अंनारछारिकासेजा भामसेजा मासालग पृष्ठ ६५ पुंजातीयसयणासन आसण	सवतोमइ सयणासन आसंदग महपीड बट्टपीडक डिप्फर पीडफलक सत्थिरु तलिय	मसूरक भरयरक कोट्टिम सिलातल मासाल मंचक पल्लक पडिसेजक पृष्ठ ७२	धीजातीय सय- णासन सेजा खटा भिरी आसंदी पेडिका महिसाह सिला फलकी इडका
---	---	--	---	--	---

(२२) अपथ्रयविभाग-टेका-तकिया

पृष्ठ २६ आसणापरुसय आसंदय महपीड डिप्फर फलकी भिरी कट्टपीड तणपीड मट्टियापीड छगणपीड सयणापरुसय सयण आसण पल्लक मंच मासालक मंचिका	खटा सेजा जाणापरुसय सीया आसंदय जाणक घोलि गहिका सगड सगदी याण पृष्ठ २७ पुरिसापरुसय अयुस्स गय बाजी बसम करम	दारपिधणापरुसय कीडिका दारकवाड रस्सावरण कुड्डुपरुसय लित्तडुडु अलित्तडुडु लित्तचेडिम अलित्तचेडिम लित्तफलकमय अलित्तफलकमय लित्तफलकपासित्त अलित्तफलकपासित्त खंभापरुसय खंभ पाहाण घरणिखंभ पिल्लखलंभ	णावालंभ छायारंभ दीयखलंभ दगलट्टिखंभ सेलखंभ कट्टखंभ अट्टिकखंभ रुफखापरुसय कंटकीरत्तल खीरखल चेतितापरुसय- पडिमापरुसय सेलपडिमा लोहपडिमा अट्टिपडिमा कट्टपडिमा पोत्थकम्मपडिमा चित्तकम्मपडिमा	अधोगागर- संथितापडिमा } मित्तुपडिमा दारुपडिमा हरितापस्तय तणमारय पधमारय फलमारय पुष्पमारय भायणापरुसय तुंभकारकय लोहमय पदल कोयकापल मंभ्या कट्टमापण पृष्ठ ३० अपथ्रयंभ पीटोत्तकंभ	चेतितापादव पण्णवोहल फलपोहल मूलपोहल पुष्पपोहल धववेला तेहतेला सुराडंभ अरंजर पृष्ठ ३१ सोमण मिनी सथयोभहामासण दारपिड कवाड अरंजरपेडिका बेह्या निस्सेगि चेतिक
--	---	--	---	--	--

(२३) रतविभाग

पृष्ठ १८३	गंधर्वीरत	पुंसुसकरत	वक्त्रावत्यद्	उदुणीरत	मुदितारत
दिव्यत	असुरकधारत	विगतत	पृष्ठ १८५	अशुदुणीरत	विस्सुयकित्तरत
माशुस्मरत	असुरत	अविगतत	गुदेत	वित्तदात	पक्खातारत
निरिकसजोगियरत	मतकपडिमारत	पृष्ठ १८४	णाभिरत	दुस्सीलारत	दंसणीयरूवसंपण्णारत
पुरिसरत	पथियनपडिमारत	उट्टितरत	यंततरत	अदसंबुवारत	सुगंधारत
धीरत	मुत्तिन्नापडिमारत	उचविट्टरत	पाणिरत	सभजारत	इट्टधीरत
गणुसकरत	चित्तपडिमारत	संविट्टरत	उमातारत	परभजारत	भित्तकीरत
सुंभितरत	तिरिक्खजोगि-	अवत्यद्दरत	सामारत	मित्तभजारत	शिकाणितरत
आलिंणितरत	यरत	दक्खिणपस्सरत	कालिकारत	रायपुरिसभारियारत	खयरत
सेवणारत	सगुभिरत	यामपस्सरत	दीहारत	परिचारेकारत	णक्खपइरत
अभारिकपुरिसरत	कक्खितरत	उत्ताणरत	रस्सारत	परुद्धणक्खखरोमारत	दंतखयरत
सभारिकपुरिसरत	टिट्ठीमीरत	गिक्कुजरत	धूळारत	अचिरपरुद्धणहरोमारत	गीवरत
अपतिकयीरत	पारेवनीरत	ओणतरत	क्रिसारत	सुपरिमज्जितण्हक्कत्त-	हस्तिरत
सपतिकयीरत	टिन्नगालितर	उत्तभरत	वालारत	वत्थिसीसारत	आहारितरत
अणपत्तुत्तुत्तरत	गोरत	एकभगरत	वयत्थारत	पुपुत्तपधारत	पुसुपरत
वंहाधीरत	महिस्सरत	पसल्लियथेलुफालियरत	मज्झिमारत	संसित्तभगारत	सोणियओघायणरत
दिव्यरत	अथेलक्करत	उत्ताणरत	मद्दइथारत	परिमंडलभगारत	सुहारत
अच्छारत	अस्मत्तरितरत	उभयोसंविट्ट	वंभणीरत	चतुरस्सभगारत	पडियारत
देवरत	सुगिणारत	अदसंबिट्ट	खत्तिकारत	वेसभगारत	विवाद्दरत
णागकण्णारत	चराहीरत	एकापविट्ट(द)	वेस्सीरत	अमेत्तळारत	रत्तिरत
णामत	वळवारत	पणत्तरत	सुदीरत	समेत्तळारत	दिवारत
त्रिभारितरत	उट्टीरत	कडिगहित	कसिगोरक्खभजारत	कुमारितरत	संसाकालरत
क्रिभरत	गद्मीरत	चतुप्पद	कारकभजारत	शुवतीरत	पदोसरत
पिमाद्दरत	गामीरत	रधप्पयात	यवहारिभजारत	उत्तानभगारत	अवरण्णरत
पिगायरत	महिस्सीरत	उपविट्टरत	पउत्थपत्तिकारत	णिण्णभगारत	मज्झैत्थियरत
रत्तयसरत	माशुस्सरत	सयणावत्यद्	अविद्यवारत	पसण्णारत	अद्धरत्तरत
रक्खमीरत	धीरत	आसणायपद्	अचट्टितारत	वुद्धारत	पच्चसरत
गंधप्परत	पुरिसरत	साहावत्यद्	चलचित्तारत	चित्तारत	

(२४) दोहदविभाग

पृष्ठ १७१	अरण्यगत	सद्दगतदोहद	धूणगत	वाहणगत	पक्खसंधीसु वत्त
कूचगतदोहद	भूमिगत	मणुस्सदगत	महगत	गहगत	अभंमंतरपंचमीवत्त
मशुस्सगत	णगरगत	पक्खिसद्दगत	सुप्पगत	वत्थगत	परमपंचमीवत्त
चतुप्पदगत	स्तथावारगत	चतुप्पदसद्दगत	कलगत	आभरणगत	अभंमंतर
परिसगगत	सुद्धगत	पृष्ठ १४२	पत्तगत	जाणगत	दसमीवत्त
परिमप्यगत	त्रिभूगत	परिसप्यसद्दगत	आहारगत	समयदोहद	परमदसमीवत्त
वीरिद्विहगत	सुप्पगत	दिप्पपोसगत	रत्तगतदोहद	सरदे वत्त	पायरासे वत्त
सुप्पगत	फळगत	वादि तपोसगत	पागगत	चिग्दे वत्त	पदोसे वत्त
त्रिद्विगत	महायरगत	आभरणपोसगत	भोद्यगत	पाउमे वत्त	अद्दरते वत्त
गदीगत	सुद्धिगत	गंधगत दोहद	रत्तगत	धामारते वत्त	अपरग्दे वत्त
समुत्तरगत	पच्चत्तगत	जाणगत	लेहगत	डेमते वत्त	अनिवत्तसरत्त
सत्तावगत	आसणगत	अशुदेवगत	फालगतदोहद	धम्मते वत्त	अणागत्तसरत्त
वापिगत	द्वेषगत	अत्रियगत	आन्यगत	मुक्कन्नरो वत्त	यत्तमाण्यसरत्त
पुत्तपरिगत	संगामगत	पर्यगत	मयगत	कालपरणे वत्त	

(२५) रोगविभाग

पृष्ठ २०२	बहिर	पलित	पीलक	सुल	सामदंत
ऐज	कण्णच्छेज	खरड	गलुक	छट्टि	शीवारोग
विलक	णासारोग	चम्मकील	गंड	फिका	सीसवाधि
तिलकालक	णासाठेज	कीडिग	दड्ड	अवधि	अविलवाधि
णव्यक	जिन्भारोग	किलास	कोडिक	गलंगंड	वातिक
पृष्ठ २०३	जिन्भाछेज	कट्ट	कोटित	कट्टुसालुक	पेतिरु
कीडिमक	तयादोस	सिन्भ	वातंड	(कंडमालरु) }	सैंभिक
कुण्णिगख	फासोवघात	खत	अंहरि	पट्टीरोग	पृष्ठ २०४
गंडि	कुंट	सुणवारक	वातंडअरिस	खंडोट्ट	सण्णिवातित
वण	गंडीपाद्	कामल	भगंदल	गुरुल	
काण	खंज	णील	कुच्छिरीग	करल	
अंध	कुणीक	कण्हतिल	वातगुम्म	खंडदंत	

(२६) उत्सवविभाग

पृष्ठ ९७	पचाहरणक	णिव्वदण	अधिकमणक	चेट्ट	गोसगण्हाणक
बालक	चोलक	अधिकमणक	पृष्ठ १४७	आवाह	वरपंचमज्जण
जाणक	उपणयण	तोप्यारुमणा	बलि	वीवाह	तिरिक्करजोगिमज्जण
डियपडिया	देहणिविखयण	पातिज	मंगल	चोलोपणयण	पृष्ठ २५६
पंचमिका	गणितपडपणक	णवण	यागहरण	तिथि	वायुज
सत्तमिका	पृष्ठ ९८	पंचमेजण	सेसा	उत्सव	चोल
उट्टाणक	शुलभवखण	वारैज	पृष्ठ २०८	समाय	उवणयण
मासपूरणक	बाडकार	अण्णोण	पित्तुकज	जण	उजाणभोज
पिंडवदणक	समासेयणक	जामातुकीय	पेतकिच्च	पृष्ठ २४९	पृष्ठ २६२
उवणगिमण	सुण्णिका	दसमीण्हाणक	पृष्ठ २२३	उजवणिका	सेसा
पाद्पेसणक	उपमाणक	पृष्ठ १२१	जायणविवदी	पृष्ठ २५५	जोग
परंरोगक	गोसगण्हाणक	वालोपणण	पडिभोगकम्म	वरमज्जण	जण
पदकमणक	पडिवज्जक	वायुज		वधूमज्जण	बलि

(२७) वादित्रविभाग

पृ० २३०	मसूरका	दहरक	सुरव
वीण	पखर	आलिंगा	

(२८) पर्वतविभाग

पृष्ठ ७८	हण्णि	केलास	सज्ज	मलय	चित्तूट्ट
हिमवंत	मेरु	वस्सघर	विंश	पारियत्त	अंवासण
महाहिमवंत	मंदर	वेयडु	भंत	महिंद	मेहवर
गिसड	गेलवंत	अच्छदंत			

(२९) खनिजविभाग

रत्न	गोमेदक	खारमणी	काललोह	सीसक	वर्णमूर्त्तिका
पृ० २३३	अंकामलक	धातु	वटलोह	लोह	पृ० २३३
वेरुत्थिय	सासक	पृ० २३३	कंसलोह	तंय	सुपा
फालिय	सिलप्यवाल	सुयण्णक	हारवूडग	हारवूडक	संभिका
मसारकल	पवालक	तवुक	रुवियग	सुवण्ण	पलेपक
खोहितवख	यद्दर	तंबक	पृ० २५८	काललोह	गेलकना
अंजणमू(धु)लक	मरणत	सीसक	ठउ	निक्कलोह	कडसकरा
				मुंढलोह	नेरदा

मणोसिल	वणमत्तिका	पंडुमत्तिका	देवतावयणमत्तिका	सुवण	खीरपक
पर्वण	णीलकघातुक	णदिमत्तिका	संबभूमी	जातरुच	अन्नमवाहुका
हिंदुलक	सस्मकजुणक	संगमत्तिका	सुर्य	मणस्सिला	खवण
पत्रगी	कण्डुमत्तिका	विसाणमत्तिका	कडसहरा	गोकंटक	सुदभूमी

(३०) वर्ण-रङ्गविभाग

पृष्ठ १०४	कण्ड	मेचक	काकंदवण	मणोसिलाभिभ	चित्तवण
सुह	रत्त	पृष्ठ १०५	सुलामिक	हरितालवण	मिरसवण
पंड	पीतक	गयतालुकवण	पदुमक	हिंदुलक	कोरेंटकणिम
णील	सेत				

(३१) मण्डलविभाग

पृष्ठ ११५	णापुणमंडल	उदलक	कण्णपालिक	लेहपट्टिकमंडल	मग्निमगमंडल
भद्रागमंडल	भट्टमंडल	तलकणिणक	णीपुर	सथिसंपातमंडल	सुदुलगमंडल
णान्नतमंडल	मंडलास	वदक	कण्णुपालक	अंगुलिमंडल	णस्वतमंडल
जोहूम	हेत्तमंडल	तलपत्तक	पण्णेलिक	संघायमंडल	भद्रागमंडल
भादिस	उवलेवमंडल	परिहेरक	सरुहपट्टक	करणमंडल	चंदमंडल
षड	किमिमंडलिक	तलभ	पल्लित्थिकापट्ट	पृष्ठ २३९	सूरमंडल
समयमंडल	पंचमंडलिक	कण्णलपक	अकरपट्टक	जोतिसमंडल	पृष्ठ २४२
रिसिमंडल	अपंचमंडल	खडुक	अस्ममंडल	पुडवीमंडल	पहुंकषकलग
संरामंडल	माकण्णीकणिणक	सुरिका	वातचकमंडल	पृष्ठ २४१	पाठीचक
मंडलक	लक	वेदक	सल्लरिमंडल	महामंडल	सरुहचक

(३२) नक्षत्रविभाग

पृष्ठ २०६	उत्तरादरिक्त	जातिणक्षत्त	धीगक्षत्त	गामगक्षत्त	उपकुलणक्षत्त
पुष्यदरिक्त	समनेत्त	आदागक्षत्त	णयुमरुणक्षत्त	रोडगक्षत्त	कुलोपकुलणक्षत्त
दक्षिणदरिक्त	द्विपडुवेत्त	मिसणक्षत्त	णमारणक्षत्त	कुलणक्षत्त	पमरणाक्षत्त
परिष्ठमदरिक्त	अद्वेत्त	पुरिसणक्षत्त	देयणक्षत्त		

(३३) कालविभाग

पृष्ठ २३५	उत्तयाग	पुण्यह	मागपवेला	जागुवेला	जामवेला
सुहूण	कट्टा	अवरणह	दुदवेटिका	वामपेडिका	घोरवेला
रिरम	लव	मागपम	आलोटीवेडिका	णगवेला	गोसगवेला
पण्ण	कट्टा	पातराम	आणुगामवेला	पमुवेटिका	पृष्ठ २५७
माम	पृष्ठ २४६	अणुमजसणह	दुरवेला	दीववेडिका	घातक
वाम	मगसणह	पृष्ठ २४७	पागामवेला	सामामवेटीका	घातक
मिसिमंगर	अहोरात्त	भत्तवेडिका	गंधीवेला		

(३४) व्याकरणविभाग

पृष्ठ १५३	अण्य	उच्चम	अनुच्चार	णामिसरर	पृष्ठ १५७
धराचरणा	ओगच	विगमंतीच	अनुमानिक	अधोम	एकमम
भार	अओगच	उपपत्तीच	गमागचरर	धोमपंत	सिमार
चरिण	चम	त्रिहागुतीच	धीविचरर	इणुण्णत्रिहागुतीच	बहुमस

(३५) तिर्यग्जातिविभाग

पृष्ठ ६२	कवल	सूजर	मंगुस	मनुष्यतिर्यक्सा-	सुंसुमारी
चतुष्पद	कोसक	मग	णउल	धारण	भसालिका
हरयी	पृष्ठ ६९	पसत	उंदुर	वाणर	जलचर
भस्स	चतुष्पदी	विलाल	कालक	गरसीह	पृष्ठ २२७
उट्ट	कणरु	वाणर	पयल	भस्सपूतण	कहमग
गद्दम	हल्यिणी	सस	कातोवूक	णीलमिग	हितियय
घोडग	गावी	लोपा	सरंत	गायगोकण	कच्छभक
उसम	महिंसी	पृष्ठ २३९	घरघुला	पृष्ठ ६२	आगावचराणिग
बलिबद्	वडवा	इय	थलचर	पुंजातीयमत्स्य-	पडुम
वच्छक	क्रिसोरी	गय	बुक्लचर	जाति	मिंणणाग
तण्णक	घोडिका	खर	विलसाइ	मच्छ	वमारक
सीह	अजा	उट्ट	सेलविलासय	कच्छभ	राजमहोरक
वाघ	अविला	गो	भूमिविलासय	णाग	सवलहिक
वक	कणहेरी	माहिस	वृक्षचर	मगर	कुण्ड
खग	रोहिती	वग	विराल	सुंसुमार	देवपुत्तक
रोहित	पृणिका	अच्छमल	उंदुर	तिमी	समाणाहिय
दीबिक	पसती	दीपिक	थालक	तिमिंमिगल	पृष्ठ २२८
अच्छमल	कुंरंगी	वरच्छ	घरपूपल	गिल	दुपदमच्छ
तरच्छ	मिगी	खग	अहिणूक	मंडुक	हितियमच्छ
महिस	मछुंकी	वग	तोडुक	हुलीर	मगमच्छ
गय	सुण्ही	रोहित	पचलाक	बोडमच्छक	गोमच्छ
लोपक	सीही	पसत	शैलविलाध्रय	पाटीण	भस्समच्छ
सस	वन्धी	वराह	दीहवग	गागरक	णरमच्छ
कंटेण	विकी	पृष्ठ २२६	अच्छमल	सण्दमच्छ	णदीपुत्तक
घण्णक	अच्छमछी	गो	तरच्छ	महामच्छ	चतुष्पदमत्स्य
कडुमाय	मज्जारी	महिस	सालिभ	कालाडग	कच्छम
डुरंग	उंगसी	अय	सेधक	गाधमक	सुंसुमार
सियाल	उण्हाली	पलक	दिपिक	पिबिपिण	मंडुक
सूजर	अडिला	उट्ट	विलाल	खीजातीयमत्स्य-	उदकाय
सुणय	मूस्तिका	खर	अजीणविलाल	जाति	वहुपदमत्स्य
विराल	हुंछिका	सुणक	सलभ	महुंठी	सुमारिल
णउल	ओवुलीका	सीह	गोधा	अहिणूक	सतुचिक
डुंजुर	उंदुरी	वग	उंदुर	जट्टका	दीर्घपदमत्स्य
मूसग	वाराही	तरच्छ	अयडर	अहिणी	चम्मिर
सरम	सुवरी	अच्छलभ	पृष्ठ २२७	धोमीका	घोहणुमच्छ
रु	कोली	दीबिक	भूमिविलाध्रय	मिहवाली	वडूरमच्छ
वाणर	दीपिका	गज	लोपक	हुलीर	निमि
गवपुंगव	खारका	चमरी	णउल	कच्छभी	निमिंमिगल
मेस	घरकोहला	खग	गोधा	वत्तगामी	वालीण
उरणक	चतुष्पद	हरयी	अहिणूक	मिगिला	सुंसुमार
मंडग	पृष्ठ २३८	भस्स	तोडुक	मिडुपी	कच्छमगर
छगल	अय	वराह	वाडक	वरङ्ग	गदयइपमाण
हरित	आमिल	वग		ओवानिका	रोहित
मग	सुणग	सियाल		मंडुची	विषक

णल	भिगारी	गहर	णंतुका	टेटीवालक	रिकिसिक
भीण	भरका	कुलल	उल्ल्ही	णवृहक	काक
चभिमराज	वचाई	सेण	मालुका	णदीसुत्तक	कपोत
कलाडक	इंदमोविगी	बास (ज)	सेणा	कारंडव	कपिंजल
सिंहुंडी	सुका (यूका)	सुय	सिपिंजुला	फाकमसुक	वच्छ
उप्पातिक	लिक्खा	वंशुल	कीरी	फातंब	कोट्टकवास
इंचक	कुसी	सतपत्त	मदणसलाका	णदीवुकुडी	सतपत्त
कुडुकालक	सुम्मुलका	वपिलक	सालाका	उक्कोस	वंशुल
सित्यमच्छक	जाला	पारिवय	कोकिला	कोंच	कलहिभी
परिसर्प	लुता	कपोत	पिरिटी	गीवा	सूकरिका
पृष्ठ २२६	मिउडी	दारीड	कुडपूरी	रोहिणिक	मंसुलक
अजगर	किणिही	कुकुड	भारदाई	समुद्दकाक	भाडवक
भासालिका	तला	तित्तिर	लाविका	बक	काक
गोधा	कभेइका	लावक	वट्टिका	चक्काक	मेनुक
तोडुका	उण्णामी	कयर	सेण्डी	भासीविस	सेडीका
सरंत	काणट्टी	कर्विंजल	कुकुडी	तिण्हविस	टेट्टि
पयलाक	भयंतला	कातंब	पलाडीका	पृष्ठ २२६	कालक
अहिणुक	किपिलिका	दंडमाणव	पोटाकी	मयूर	णाडुकुडिका
घडोपल	सर्पजाति	भासवाय	सउणिगा	कंक	कातंब
णाकुल	पृष्ठ २२७	कोंच	आदा	छिण्णालेंगा	पृष्ठ २३९
वंदुर	दब्बीकर	कधामञ्जरु	टिट्टिमिका	गद्द	हंस
पृष्ठ ६३	भंडलि	सरभ	णडिकुडुडिका	वीरल	कोंच
पुंजातीय सर्प-	रायिमेंत	उपक	सडिका	सेण	किण्णर
कीटजाति	भासीविस	मयूर	बलाका	उल्लक	कुकुड
भिराही	तिण्हविस	कारंडय	चक्कायी	सालक	मयूर
गोणस	वातंदविस	पिलय	पृष्ठ १४५	कपोत	कलहंस
अज	णिग्गिस	सिंरिकंड	पक्षी	वायस	भासकुण
अजगर	पृष्ठ २३९	पुसंगय	हंस	सुक	महासकुण
मिळिंदक	दीहकील	भिगताय	डुरर	कोकिल	दिग्धगीव
लोहितक	दग्गीकर	जींजीवक	चक्काक	तित्तिर	दिग्धपाद
पापहिक	मोलि	मुपुल्लक	कारंडक	वातिक	पारिष्वव
पूर्तिगाल	भिगारी	कुपुल्लक	कातंब	तेहपातिक	दंकराठी
तित्थिल	गोणस	पृष्ठ ६९	काकाक	सगुणिक	गद्द
गोमयकीडग	पृष्ठ ६२	पक्षिणी	मेनुक	परसउणिक	डुरल
डीड	पक्षी	विहरी	पृष्ठ १९५	चम्मडिल	दल्लक
पतंग	गरुड	रायहंसी	मदणसलाका	चित्तकपोतक	भास
संख	रायहंस	कलहंसी	कयी	वणकुडुड	वीरल
सुल्लक	कलहंस	कोकी	मोर	वड्डक	समधानी
हालक	चात	साडिषा	पृष्ठ २२५	पृष्ठ २३८	छिण्णंगाला
पृष्ठ ६९	रिकिसिक	पूतणा	हंस	तित्तिर	ककी
खीजातीय सर्प-	वीरल	सङ्गी	सेडिक	वट्टक	जंतु
कीटजाति	सारस	गिडी	चक्काक	लावक	पृष्ठ २२७
गोधा	चक्कायग	सेणी	चक्काकयी	परसुव	यडुपद
गोमी	बाग	कापी	आदा	सुक	गोमी
वैदिकवारिका	भारंड	पूकी		सालक	

सतपदी
ईदगोपिका
चसणिका
पृष्ठ २२९
ममर
मधुकरी
मसग
मक्खिका
किविहिका
भोपविका
कुंथु
ईदगोपक
पसलचित्त
कण्ठकीटिका
यूका
मंथुण
उप्पावका
रोहिणिका
खण्डिका
कण्ठपिपीलिका
कण्ठविच्छिका
धुण
संताणक
डंढणाही
धुक्कराथ

भगिगीकीट
पतंग
उद्धिज्ज
संखण
काकुंथिक
बदक
सिरिपेट्टक
करिण्हुक
पयुमक
सद
विलासप
कण्ठगुलिक
सेतगुलिक
खुलिक
आदाडक
कसक
वावपुरील
वावेसु
हुत्तिपि
यडुपद
ईलिका
सीकृणिक
णंदी
उदमणाभि
संतुवायक

णदीमच्छक
जलायुमच्छक
आसालिक
कीमिक
सुर
गंडुपय
सव्वट्टक
सूकमिड
पृष्ठ २३०
लिच्छ
संयुट्टिक
सूकमिद
पृष्ठ २३७
सुलठ
वराड
संखणगा
सिप्पि
गंडुपद
जलका
आसालिका
वारवत
पाण्यणिक
थिंकुण
लिक्खा
धुण
धम्मकीड

फलकीड
धण्णकीड
सुचजगलिका
कुंथु
उरणी
सुयम्मत्ता
ल्लया
कोलिक
घरपोपलिका
बहिल्लका
भिंगारी
आलका
ममर
मधुकर
तोड्ड
पतंग
मच्छिका
मगसक
छिर
कुलिल
सिगिलि
मंडूकलिका
पृष्ठ २३८
गोम्मी
कीडग
विच्छिय

सुरगोपक
ईदकाइय
उंदुर
सद
खालग
सुड्डलग
पंयोलग
वत्तिभेदग
गहकंडुग
कुंभकारीभ
बोलद्विग
कुल्लिग
धम्मणग
पंदराग
पृष्ठ २६५
परिगिदिय
पुदविकाइक
आयुक्कायिक
तेयुक्कायिक
वायुक्कायिक
वण्णकतिक्कायिक
पृष्ठ २६६
येईदिय
संल
संखणग

सिप्पिका
जलाउ
द्व किमि
णीपुर
सुमंगल
संयुक्क
तेईदिय
खुगल्लिका
उप्पाडक
उप्पातक
तणहारक
पसहारक
कुंथु
पिपीलिका
उपचिक
रोहिणिक
तेरएक
तयस
मिंथिक
पातिक
साहिक
सतप्पाय
गोमिम
हायसोड
कडमण्ड

(३६) वनस्पतिविभाग

पृष्ठ २०२
पुष्प
फल
रत्तस
गुच्छ
शुम्भ
लका
वही
पत
पवाळ
अंडुर
परोह
पृष्ठ ६३
पुंजातीय घृरा
अंब
अंबाडक
पनाम
एपुच

असोग
तिलक
लकुची
साळ
बहुल
वंडुल
पुण्णग
नागदरस
बुरबक
अंकोल
कोलिक
णगोथ
अनिसुत्तक
अहिरण्यक
कणिगहार
घार
बएणक
किंयुग

पालिमरग
सज
अजुण
कठंब
गिंब
हुदज
उंडुवर
अण्णोप
लगोथ
बड
सिण्हक
सिद्धिप
सिपुर
माग
अमग
पान
कोविदाथ

चिल्लक
बंधुजीवक
दधिपण्ण
ससिवण्ण
कोसंब
भीरय
अयकण्ण
अस्मकण्ण
धम्मण्ण
धव
दाटिम
णाटिरेर
कविट्ट
रिट्टक
पारापथ
णममाळ
कोविदाथ
कण्णर

सिरीस
एत्तोप
णल
मधुग
अंदुण
लोद
उण्होलक
धाराग
शरिर
अयमार
कर
पुंर,भरतएवार्थक
पाद्व
दुम
रथण
अमग
धाराकाप
विहरी

पृष्ठ ६३
पुंजातीय शुक्रम
कोरेंट
कण्ठीर
यिपुवार
अण्णगण
अगोम
कुंट
गेदकंटक
रभकंटक
वाणीर
टिक
सीकंडक
निमित्तक
मन
उमकोह
आगमानक

पृष्ठ ६३	दालिम	टकारी	थीपुष्प	कसेरका	भरसोत्य
पुंजातीय पुष्प	णालिकेर	वेजयंती	चंपयजाति	मुणालिका	बड
पद्म	बिह	कंगूका	महाजाति	विधित्तिका	पील
पुंढरीक	धामलक	सीसवस्त्रिया	सुवण्णजूधिका	लोमसिका	पियाल
पंकय	तिंदुक	अण्णोतिका	जूधिका	अन्नखोला	फरस
सहस्सपत्त	बदर	धवासी	तकुली	कुकुडिका	चम्मणडोला
सतपत्त	सेल्लडक	सिंदीवासी	तल्लुसी	सिंगलिका	कोलक
सफ	तलपक	समुद्बही	वासंती	धीफलपकार्यक	करमंद
कुमुद	सीवण्ण	कप्पासी	वासुला	फलपिंडी	कल्यास
उप्यल	धम्मण	रुधिका	वईदबुद्धी	फलगोच्छ	पारेवत
कुबलय	तोरण	उंगुणी	जयसमणा	फला	लउच
गद्भग	करमंद	मातुलिंगी	णवमल्लिका	फला	मातुलुंग
तणसोल्लिक	वेमेलक	णिहू	मल्लिका	फलिका	बडल
वामरस	बंटासक	भाफकी	णितण्णिका	फलमाला	जंबु
ईदीवर	जंबुफल	अरंजरवही	तिर्गिठी	फलमिजा	दालिम
श्रेणक	पारावत	उदकवही	पीतिका	फलपेसिका	पृष्ठ २३२
पाडल	अन्नखोल	कूभंडी	मगयंतिका	पृष्ठ १०४	अयकण्ण
कंदल	मातुलिंग	तवुसी	पियंगुका	मुक्किलपुष्प	पूतिकरंज
चंपगपुष्प	खजूर	पहालुका	कंगुका	सेडकण्णवीर	अहिभार
इरिकाक	कलिमागक	तुंबी	कुरुडका	वासंती	पुतिला
लवंगपुष्प	पृष्ठ ७०	कालिंगी	वण्णी	वासुला	कुंभकंडक
मोगरग	स्त्रीजातीय वृक्ष	वालुंकी	अंबमंजरी	वेइलपुष्पिका	पृष्ठ २३८
अंकोहपुष्प	गुल्मादि	कनसारणी	थीपुष्पकार्यक	जाती	भामलग
सहवरपुष्प	पिप्परी	णलिणी	पुष्पमंजरी	लाणी	जंबु
पुंपुष्पकार्यक	वेडसी	पडमिणी	पुष्पपिंडिया	जूधिका	लफल
कंटेगुण	जंबू	कमलिणी	पुष्पगोच्छी	णवमालिका	अंबाडग
संविताणक	अंबिलिका	उपलिणी	थीपुष्पसंजोग	मल्लिका	करमंद
उरणा	चिंचिणिका	पिंडालुकी	चंदा	चंपकाली	सीवण्ण
चुंमल	मंडी	घोसाडकी	तीवालिका	तणसोल्लिक	उंबर
आमेलक	सीवण्णी	ससबिंदुकिणी	पारिहृत्यी	सेडकफलिका	रातण
मत्थक	कजरी	भंडुलिका	कुभिची	पुंडरिक	तोडण
गोच्छक	केतमी	कसकी	धम्मी	सेडगह्मक	सीडा
पुष्परासी	कडूकीका	कारियल्लिका	जागी	सेडककंद	लउमु
पुष्पणगर	तिंदुरुकी	मिली	विलिजर	सिंपुवार	तुंडुव
पुष्पसोदल	घकंडी	कालिका	पोटालिका	रुफल	सिप्ल
पृष्ठ ६४	वेत्तरी	अंणकेकसका	वेजयंती	पृष्ठ २३१	सेलुफल
पुंजातीय फल	तेरणी	स्त्रीवृक्षादि	मन्नगमालिका	पणस	कोलफल
कुभंड	भरल्लसा	एकार्यक	जंगमाला	तुंब	वारमट्टिभ
मुंब	भामली	लता	खोलकमाला	कूभेड	घरिफल
कार्लिंग	सेवट्टी	लट्टी	पृष्ठ ७०-७१	अंब	करिलेग
कवसाय्ण	लचापली	छमिणी	थीफल	अंबाडक	लोमसिक
सवयिंदुक	सीकवलीकी	काणवी	मुंदिका	णीप	विद्यालक
वातुक	लिमिप्टी	दुमगुम्मलता	चल्लिका	तिंदुक	वायिगण
तपुमेत्तालुड	हिंवायोडा	पृष्ठ ७०		उदुवर	वालुंफ

पुष्पफल	मरकत	कन्धारक	कूर्मंड	रुक्म	मूल
कहोलग	मगवच्छक	तद्युसक	पृष्ठ २४३	लता	खंघ
लवंग	सिंगालक	पृष्ठ २३९	अजुण	गुम्भ	अग्न
जातीफल	अंधक	तलपक	कुडय	गुच्छ	पत्त
सुदीगा	दालिम	णालिक	कर्तव	वलय	पुष्प
खनूर	तीतिणी	कफिट्ट	सिलिंध	उदाण	फल
मरिय	विही	लकुल	कंदलि	तण	बीज
वासिका	पलाजु	कालिंग	उडुंबक	थलज	जलज
फला	वेयवसक	तुंब	पृष्ठ २६६	थलजहरित	थलज
दिरुल	मूल			कंद	

(३७) धान्यविभाग

पृष्ठ ६६	पृष्ठ १६४	रायससव	माजनगत धान्य	कोसीघण्ण	जव
पुंघण्ण	सालि	वरक	मंजूसागत धान्य	तिल	गोधूम
सालि	वीहि	चणव	पहगत धान्य	मास	मास
वीहि	कोद्व	सेतवीहि	जाणगत धान्य	सुग्ग	सुग्ग
तिल	कंगु	सेततिल	णिवेसणगत धान्य	चणक	अलसंदक
कोद्व	रालक	रत्तसालि	ओवारिगत धान्य	कलाव	चणक
वरक	तिल	रत्तवीहि	अरणगत धान्य	णिप्फाव	णिप्फाव
उरालक	मास	रत्ततिल	कीत धान्य	कुल्य	कुल्य
वीण	सुग्ग	कण्वीही	विक्कीत धान्य	मसूर	चणविका
सुग्ग	चणक	कण्वरालक	सक धान्य	शुवरि	मसूर
णिप्फाव	कलाव	कण्वतिल	मित्त धान्य	पृष्ठ २२०	तिल
जव	णिप्फाव	पृष्ठ १६५	जाचितक धान्य	सालि	अतसी
गोधूम	कुल्य	सेतणिप्फाव	णिक्खेवपरिगतधान्य	वीहि	कुसुंम
मास	जव	रत्तसासव	पोराण धान्य	कोद्व	सामात
मूदय	गोधूम	रत्तणिप्फाव	नव धान्य	कंगु	सेततिल
चणक	कुसुंम	हारीदणिप्फाव	पञ्च १७८	रालक	सेतसासव
कुल्य	अतसी	ससव	अकोसीघण्ण	मरक	तंबणिप्फाव
सण	मसूर				रायसासव

(३८) देवविभाग

पृष्ठ ६२	पिसाय	कप्पोपक	जन्वी	हला	मिस्तवेसी
देव	जक्ख	वेमाणिक	किन्नरका	सिता	भीणका
असुरलोक	रक्खस	गोज्ञग	वणप्फती	विजा	मियदंसणा
असुरेद	चंद	गोज्ञगपति	दिसा	विजाता	अचला
णाग	सुर	पृष्ठ ६९	सारका	चंदलेहा	अणादिवा
सुवण्ण	सुध	देवी	हिरी	उक्कोससा	अहुराणी
णागलोक	सुक्क	असुरी	तिरी	अम्भराया	मिस्तवेसी
भवगवासी	वहस्सति	असुरभजा	लच्छी	देवकण्णा	तिधिपी
महालोक	राहु	असुरकण्णा	किती	असुरकण्णा	सालिमारिणी
किंपुरस	भूमकेड	णागकण्णा	मेधा	ईदग्गमहिंसी	तिलोत्तिमा
गंधर्व	लोहिदंक	भवगणालया	सती	असुरग्गमहिंसी	चित्तरा
किन्नर	सणिच्छर	गंधर्वी	थिती	अहरिका	चित्तेहा
मरुत	विमाण्णिद	रक्खसी	पी	मगवती	दैघ
भूत	कप्पपती		बुदी	अलंबुमा	पृष्ठ २०४

सुर	अग्नि	णवमिगा	पल्लदेवया	बलदेव	अच्छरसा
जन्म	मारुप	सुरादेवी	सुदी	वासुदेव	अज्ञाधित्व
गंधर्व	पृष्ठ २०५	णानी	मेहा	पञ्चण	सुखाधित्व
पितर	इंद्रमि	सुवण्ण	पृष्ठ २०६	णाम	गिरिकुमारी
पेव	वंमा	असुर	रुतादेवता	अलणा	समुद्रकुमार
दारुण	इंद्र	णाग	बल्युदेवता	अज्ञा	दीवकुमार
बलय	उर्वेद	सुवण्ण	णगरदेवता	अहराणी	भारत
आदिच	बलदेव	दीवकुमार	सुप्पाणदेवता	माडया	वातकण्णा
अस्मि	वासुदेव	समुद्र	बच्चदेवता	सडणी	वरुण
अप्यावाप	काम	दिसा	उक्कुरिकुदेवता	एकाणसा	सोम
देवदूत	उदलादला	अग्नि	आरियदेवता	सिरी	ईद
अरिद्र	गिरी	वाठकुमार	मिलन्नदेवता	सुदी	पुधवी
सारस्पत	सिन्न	थणितकुमार	सुवण्ण	मेधा	सत्यधितुल्या
गदलोप	जम	विजुमार	पृष्ठ २२३	किची	विज्ञासत्याधितुल्या
वण्ह	वेस्सराण	सामाणिय	वेरममण	सरस्सनी	कुलदेवता
अप्यत्रा	वरुण	आमिभोगिक	वेण्डु	रत्तस	बल्युदेवता
वरुणकाइय	सोम	परिसोववण्ण	सिय	गंधम्व	बच्चदेवता
वेममगकाइय	मिरी	समुद्रदेवता	खंद	किपुरिस	सुमाणदेवता
सोमकायिय	अहराणी	णदीदेवता	विसाह	जवन्न	पितुदेवता
खंद	पुदवी	श्रुवदेवता	बंभा	पृष्ठ २२५	विज्ञादेवता
विसाह	एकणसा	तलामदेवता		वेमाणित	

(३९) एकार्यकविभाग

पुंफकार्यक	वीर	कुमारी	सामिणी	भगिणी	सत्यवाही
पृष्ठ ६१	विसारद	चिजा	बहुमी	भागिणेज्जा	हन्मी
अहोपुरिम	त्रिबहाव	पत्ती	पजिया	कोडुविणी	भोगमिती
महापुरम	लद्धमाण	वधू	अजिया	पितुरपहा	भदी
पुरमसीह	महाबळ	उपवधू	नानिका	माठस्सहा	पाही
पचाणपुरम	महापरकम	इथिया	महमानुया	णेयानुकासहा	कारुगिणी
रापपुरम	रूपकार्यक	पमदा	सुलमाता	हृथीरपण	सहिगिणी
पुरिमिस्पर	पृष्ठ ६८	अंगणा	माठस्सिया	महादेवी	लाही
विज्ञापुरिस	अहोमहिला	महिला	पितुरिमया	रायपत्ती	जोगिणा
शुवाग	महिळा	णारी	भजा	राथगमहिस्ती	चिलावी
जोष्यगण्य	सुमहिला	पोहही	जारी	रापोपजायपत्ती	बच्चरी
पोअह	अहोहृथी	जुववी	सही	सेणपत्ती	पुलिंदी
पुरिम	मुहृथी	जोमिता	भूणा	भोगणी	अथी
गत्तिक	हृथी	पणित्ता	णत्ति	बलवरी	दमिडी
पोहह	हारिया	रिलका	पणत्तिगी	रट्टिणी	छात्रिका
अहुग	वाडिया	त्रिजामिणी	रमा	गामिणी	उबघादणी
शुभग	विगिहा	हृद्दा	सुण्हा	अमधी	दासी
विकण	रिहिका	बंजा	सावती	दुलभी	कम्मट्टी
विग्गुप	बधिका	पिया	सहिका	परिहाती	पेसी
शूर	नणिका	मगामा	मेपुणा	हृस्परिणी	नथिका
पीर	पेणिका	दिनरिण्डा	भानुजाया	भोरुगिणी	पयावती
	कण्णा	हृमरी	मगोत्ता	घरिणी	अणे

पञ्चमं परिशिष्टम्

भोति	बंध	कमंडलु	णोलुप्यल	उपल	उत्सवपकार्यक
मालिणी	सयंभु	दम्भ	पामेच्छा	मणि	पृष्ठ ९८
भातुस्सा	पयावति	सजा	गेलकंडक	तिलापट्ट	उत्सव
भोवातिका	बंधग	मिसी	मती	गंडसेल	समास
सामोवाता	बंधरिसि	दंद	आरिट्टक	गिरिक	जण
कालस्सामा	बंधवय्य	जणोपदत्तक	कण्हाल	वद्द	छग
कालका	बंधण्णु	कृष्णवर्णीपकार्यक	कण्हमोयक	मेरुक	अब्भुदय
दिग्गमडहिया	पियबंधग	पृष्ठ ९२	डढपकार्यक	मरुभूतिक	भोज
सुज्जमडहिया	दिजाति	कण्ह	पृष्ठ ७८	धुवक	मज्जणक
आयतमडहिया	दिजातिवसभ	नील	हिमवंत	अचलित	पृष्ठ १२१
चतुरस्सा	दिजातिपुंगव	कालक	महाहिमवत	थावरक	उत्सव
अंतेपुरिका	दिजाद्दपवर	अस्तित	गिसड	सिवगाम	समास
अभोगकारिणी	विप्य	अस्तितकिसिण	रुप्पि	मुत्तगाम	विहि
सयणपाली	विप्परिसि	हरित	मंदर	भव	जण
मंडाकारिकिणी	विप्पवर	अंजण	गेलवंत	अभव	छग
तणुकी	जण	कज्जल	केलास	धित	लक्षण पृष्ठ १७३
मज्झिमिका	जणोक्त	रुग	वस्सधर	सुखित	वण
काणा	जण्णकारि	भंग	वेयद्दु	ठाणरियत	सर
नपुंसकपकार्यक	जण्णमुंड	खंजण	अच्छदंत	अकंप	गति
पृष्ठ ७३	सोम	भिगपत्त	सज्ज	णिप्पकंप	संठाण
णुंसक	सोमपा	गमल	विंस	णिक्वर	संघतण
अपुरस	सोमपाद्द	सूगर	भंत	सुदत	माण
चिह्णिक	सोमगाम	कोकिला	मलय	धामपकार्यक	उम्माण
सीतल	अरिगहोत्त	गोपच्छेलक	पारियत्त	पृष्ठ ७६	सत्त
पंडक	आहितगि	भमर	महेंद	वाम	आणुक
वातिक	अग्गिहोत्तहुत्त	भोरकंड	चित्तकूड	वामावट	पगति
किल्मि	वेद्द	वायस	अंबासण	वामसील	छाया
संकर	वेद्दग्गहाद्द	मातंग	मेस्वर	वामायार	सार
कुंभीपंडक	वेद्दपारक	भर्त्तिग	ण	वामपन्नल	अट्टाण्णनिमित्त पृ. १
इस्सापंडक	चतुवेद	गय	पव्वत	वामदेस	अंग
पक्खापन्थिल	वारिस	महिस	सेल	वामभाग	सर
विक्ख	पुव्वमास	बलाहक	सिल्लोच्चय	वामतो	लक्खण
संड	चतुस्मास	मेघ	सिहिरि	अपवाम	वंजण
णरेल	जुय	जलहर	पासाण	अपसव्व	सुधिण
पृष्ठ १०१	चित्ति	कण्हकराल	पत्थर	अवसच्च	छिण्ण (दिव्व)
आह्णणपकार्यक	अग्गिचयणी	कण्हतुलसी		अप्यग्य	भोम्म
पितामह					अंतडिक्ख

